MADHURI JULY-MAR 1923-25 G.K.U.

111024

111024

111024

वैद्यक के बढ़िया ग्रंथ

ये ग्रंथ इतने सस्ते और अच्छे आप कहीं न पाइएगा।

संस्कृत में हिंदी-टीका-सहित

चरकसंहिता

सचित्र—भाषाटीका सहित। यह वही चरकसंहिता है, जो वैद्यक-ग्रंथों में अतीव प्रसिद्ध है। जो अच्छे वैद्य हैं, उन सबके पास यह प्रसिद्ध ग्रंथ अवश्य पाया जाता है। चरक के आठों स्थान एक-से-एक उत्तम हैं, किंतु चिकित्सास्थान सबसे श्रेष्ठ है। इसमें ऐसी-ऐसी उत्तम औषधियाँ हैं, जिनके सेवन करने से मनुष्य निस्संदेह दुष्ट रोगों से, सहज ही में, छुटकारा पा जाता है। वैद्य-मात्र को यह ग्रंथ अवश्य संग्रह करना चाहिए। बड़े साइज़ के १५२० पृष्ठों की सुंदर जिल्द बँधी हुई पुस्तक का मूल्य केवल ७।।)

भावप्रकाश सटीक

तीन खंडों में। वैद्यवर भावमिश्र-संगृहीत भाषाटीका सहित। सृष्टि का क्रम; अन्न, जल, दूध, दही आदि के गुण ;-पारा, हरताल, मैनसिल आदि शोधने की विधि; शूल, गुल्म, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, प्रमेह, गलगंड, वमन, प्यास और मूर्च्छा आदि संपूर्ण रोगों की अति उत्तम ओषधियाँ इसमें छाँट-छाँटकर दी गई हैं। संस्कृतज्ञ विद्वानों एवं सद्वैद्यों को इसे अवश्य संग्रह करना चाहिए। काग़ज़ और छपाई-सफ़ाई अति उत्तम। १२२८ पृष्ठ ; मूल्य केवल ७।।)

माधवनिदान सटीक

पं० महेशदत्त-कृत भाषाटीका सहित। इसमें ज्वर, कास, श्वास और क उपकारार्थ
समस्त रोगों के लक्षण, कारण, उत्पत्ति व संप्राप्ति इत्यादि का तदनंतर भाषा-
गया है। निदान-ग्रंथों में माधवनिदान सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ है; अतए उत्तम 'नीलकंठी' ग्रंथ
ग्रंथ अवश्य संग्रह करना चाहिए। इस बार इसका नूतन थोड़ा-सा परिश्रम करने पर
अलग-अलग कर दिए हैं और मूल तथा टीका का ५२६; मूल्य १।।)

बृहत्पाकावली क

राज-वैद्य पं० गंगाप्रसादजी द्वारा संगृहीत लजी अवस्थी-कृत भाषाटीका सहित।
शुंठीपाक, गोक्षुरपाक, सालिमपाक, आम्रप फल और नष्ट जन्म-पत्र के बनाने की रीति
इत्याद [illegible] तिषियों के लिये अतीव उपयोगी है। पृष्ठ-
संख्या २६० ; मूल्य ।।।)

बृहज्ज्योतिस्सार सटीक

पं० सूर्यनारायण सिद्धांती द्वारा संगृहीत। भाषाटीका सहित। संवत्सरांतर्गत लाभ-व्यय-ज्ञान, कालहोरा, सूर्यचंद्रग्रहणफल, पंचकज्ञान, छत्रचक्र, धनुश्चक्र, शकुनज्ञान, वाणिज्यमुहूर्त, गर्भधारणमुहूर्त, विद्यारंभमुहूर्त, मुंडनमुहूर्त, कृष्णजन्माष्टमीनिर्णय और दीपमालिका व होलिकानिर्णय आदि अनेक विषय ऋषिप्रणीत ज्योतिष-ग्रंथों से संग्रह कर लिखे गए हैं। पुस्तक संग्रहणीय है। पृष्ठ-संख्या ३७४ ; मूल्य १=) जिल्द बँधी हुई पुस्तक का मूल्य १।।)

मिलने का पता—नवलकिशोर-प्रेस—लखनऊ

अन्यत्र दुर्लभ संस्कृत तथा हिंदी कोष हमारे यहाँ सुलभ

हमारे यहाँ जितने प्रकार के और अधिक संख्या में कोष प्रकाशित हुए हैं, उतने अन्यत्र कहीं प्रकाशित नहीं हुए। दूसरे, तारीफ़ यह कि जो अन्यत्र छपे हैं, उनकी क़ीमत इतनी अधिक है कि सर्व-साधारण के लिये उनका क्रय करना दुर्लभ है। यदि आपको कोषों की आवश्यकता है, तो, हमारे यहाँ से ख़रीदिए—एक-से-एक सस्ता और अच्छा कोष आपको मिल सकेगा।

संस्कृत-हिंदी कोष

१. **अमरकोष-भाषा-भाष्य समेत**—यह हिंदी जाननेवालों के लिये उसी प्रकार उपयोगी है, जिस प्रकार संस्कृतवालों के लिये। केवल अच्छी हिंदी जाननेवाले भी इस ग्रंथ की सहायता से संस्कृत-शब्दों का मतलब अच्छी तरह जान सकते हैं। इसमें जितने भी शब्द हैं, उनका अर्थ सरल हिंदी भाषा में दिया गया
। पुस्तक के आरंभ में अकारादि-क्रम से शब्दानु-
ई गई है। पुस्तक अद्वितीय, अनु-
। हिंदी-प्रेमी पाठकों, विद्या-
से बढ़कर दूसरा उप-
ल्य केवल ३)
त—यह
कों की

छपाई सब उत्तम। पृष्ठ-संख्या ७७०; मूल्य २॥), सजिल्द ३)

अमरकोष-भाषानुवाद सहित—ऊपर मूल श्लोक और नीचे एक शब्द के जितने पर्याय-वाची शब्द हैं, हिंदी में दिए गए हैं। पूरा मतलब निकलता है। पृष्ठ-संख्या ३३८; छापा सुंदर पत्थर का, मूल्य ॥=)

चतुर्वेदी संस्कृत-हिंदी कोष—संग्रह-कर्ता हिंदी के प्रसिद्ध लेखक पं० द्वारकाप्रसादजी चतुर्वेदी। इसमें अकारादि-क्रम से, एक-एक संस्कृत-शब्द के जितने भी अर्थ होते हैं, सरल हिंदी में दिए गए हैं। यह ग्रंथ परीक्षा पास करनेवालों, काव्यानुरागियों एवं लेखकों के लिये परमोपयोगी है। सजिल्द मूल्य ३)

भारतीय चरितांबुधि—'A directory of Indian classical character,' हिंदी-संसार

फलित ज्योतिष के अद्भुत ग्रंथ

जातकालंकार सटीक

पं० रामरत्नजी अवस्थी ने इसकी टीका की है। इसके पढ़ने से मनुष्य जन्म-कुंडली अर्थात् जन्म-पत्र का फल बड़ी अच्छी तरह बतला सकता है। यह ग्रंथ ऐसा है कि प्रत्येक ज्योतिषी को अपने पास रखना चाहिए। पृष्ठ-संख्या १७०; मूल्य ।)

जातकाभरण सटीक

इसके टीकाकार हैं पं० सूर्यनारायणजी सिद्धांती। श्रीढुंढिराजजी का बनाया हुआ यह ग्रंथ जन्म-पत्र बनाने और उसके फल बतलाने में अद्वितीय है। इसमें संवत्सर, अयन, पंचांग के फल, द्वादश भाव और एक स्थान में उपस्थित दो, तीन, चार, पाँच ग्रहादिकों के फल, राजयोग, अरिष्टयोग, मेषादि राशियों के दृष्टिफल, शनिचक्र, सर्वतोभद्रचक्र, सामुद्रिक और पंचमहापुरुषलक्षण एवं स्त्रीजातकादि अनेक विषय वर्णन किए गए हैं। पृष्ठ-संख्या ४६२; जिल्द बँधी हुई पुस्तक का मूल्य केवल १॥)

नीलकंठी सटीक

ज्योतिष-शास्त्र में श्रीनीलकंठजी का रचा हुआ यह 'नीलकंठी' ग्रंथ अति प्रसिद्ध है। हमारे भारतवर्ष के ज्योतिषी बहुधा अपने बालकों को यही ग्रंथ पढ़ाते हैं। यह ग्रंथ बड़ा ही कठिन है। इसकी कितनी ही टीकाएँ अन्यान्य प्रेसों में छप चुकी हैं; किंतु वे टीकाएँ मूल से भी कहीं कठिन हैं। यही सोचकर, पं० शक्तिधरजी ने ज्योतिषियों के उपकारार्थ इस कठिन ग्रंथ की टीका की है। इसमें पहले मूल, फिर संस्कृत टीका, तदनंतर भाषानुवाद और सबसे पीछे उदाहरण और प्रमाण दिए गए हैं। ऐसा उत्तम 'नीलकंठी' ग्रंथ आज तक कहीं भी नहीं छपा। जो लोग इस ग्रंथ को पढ़ेंगे, वे थोड़ा-सा परिश्रम करने पर जन्म-पत्री और वर्ष-पत्री आदि बना सकते हैं। पृष्ठ-संख्या ५३६; मूल्य १॥)

बृहज्जातक सटीक

श्रीवराहमिहिराचार्य-कृत मूल और पं० रामरत्नजी अवस्थी-कृत भाषाटीका सहित। इसमें जन्म-पत्र के संपूर्ण फल, राजयोग, नक्षत्रफल और नष्ट जन्म-पत्र के बनाने की रीति इत्यादि अनेक विषय वर्णित हैं। पुस्तक ज्योतिषियों के लिये अतीव उपयोगी है। पृष्ठ-संख्या २६० ; मूल्य ॥)

बृहज्ज्योतिस्सार सटीक

पं० सूर्यनारायण सिद्धांती द्वारा संगृहीत। भाषाटीका सहित। संवत्सरांतर्गत लाभ-व्यय-ज्ञान, कालहोरा, सूर्यचंद्रग्रहणफल, पंचकज्ञान, छत्रचक्र, धनुश्चक्र, शकुनज्ञान, वाणिज्यमुहूर्त, गर्भधारणमुहूर्त, विद्यारंभमुहूर्त, मुंडनमुहूर्त, कृष्णजन्माष्टमीनिर्णय और दीपमालिका व होलिकानिर्णय आदि अनेक विषय ऋषिप्रणीत ज्योतिष-ग्रंथों से संग्रह कर लिखे गए हैं। पुस्तक संग्रहणीय है। पृष्ठ-संख्या ३७४ ; मूल्य १=) जिल्द बँधी हुई पुस्तक का मूल्य १॥)

मिलने का पता—नवलकिशोर-प्रेस—लखनऊ

आदर्श पुरुषों के जीवनचरित्र

वेदज्ञ मैक्समूलर

संस्कृत-साहित्य-संसार के स्तंभ और पश्चिम में वेदों के प्रथम प्रचारक मैक्समूलर महोदय उन थोड़े महानुभावों में से एक हैं, जिनका जीवनचरित्र जगत्प्राणी-मात्र के लिये आदर्श हो सकता है। आपके चरित-अध्ययन से दृढ़-संकल्प, अविश्रांत परिश्रम, जीवनोद्देश्य की पूर्ति में विघ्न-बाधाओं के सामना करने की सहन-शीलता, धैर्य, उत्साह, प्रेम, उदारता, आदर्श बालक, पति, पिता आदि की शिक्षाएँ मिलती हैं। आप एक निर्धन विद्यार्थी की हैसियत से उन्नति कर प्रीवी कौंसिल के पद तक पहुँचे थे। अतः पंडित और राज-समाज दोनों के सम्मान की वस्तु थे।

आपका जीवनचरित्र हिंदी-संसार के लिये बिलकुल नया है। पुस्तक की भाषा सरल और शुद्ध तथा हृदयग्राही है, जिसके विषय में कतिपय प्रसिद्ध कवियों और लेखकों ने अपनी बहुत उत्तम अनुमतियाँ दी हैं। पुस्तक का कलेवर नवीन ढंग से सुसज्जित किया गया है। प्रत्येक विद्यार्थी तथा नवयुवक को एक बार अवश्य अध्ययन करना चाहिए। इसके लेखक हिंदी के होनहार कवि पं० सुरेन्द्रनाथ तिवारी हैं। पृष्ठ-संख्या ६३; मूल्य ।≈)

महात्मा साक्रटीज़

संपादक, चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा। इसमें महात्मा सुकरात की जीवनी के अतिरिक्त उसके प्रसिद्ध शिष्य अफ़लातून (प्लेटो) की लिखी अपॉलोज़ी, क्रीटो और फ़ीडो-नामक तीन पुस्तकों का मर्मानुवाद भी है। पुस्तक के देखने से योरोपीय दर्शन के भीतरी रहस्य विदित होते हैं। वेदांत-ज्ञान से भरी हुई इस जीवनी को एक बार अवश्य पढ़िए। काग़ज़, छपाई-सफ़ाई अति उत्तम। पृष्ठ-संख्या २४६; मूल्य ॥।)

महात्माओं का जीवनचरित्र

स्वामी परमानंदजी-रचित। इसमें दत्तात्रेयजी, शुकदेवजी, बुद्ध भगवान, भरथरी, हरिश्चंद्र, गुरु नानक, सुकरात, अफ़लातून और फैलकस आदि तेईस महात्माओं का जीवनचरित्र है। यह ग्रंथ सर्व-साधारण को तो संग्रह करना ही चाहिए; किंतु विशेषकर साधु, महात्माओं, वेदांतियों एवं भगवद्भक्तों के लिये बड़ा ही उपयोगी है। पृष्ठ-संख्या ३२४; मूल्य ॥।≈)

जीवनचरित्र मुंशी नवलकिशोरजी

पं० वंदीदीनजी दीक्षित-कृत। इसमें लखनऊ के सुप्रसिद्ध नवलकिशोर-प्रेस के अधिष्ठाता, स्वर्गवासी मुंशी नवलकिशोरजी सी. आई. ई., का विमल चरित्र जन्म से लेकर मरण-पर्यंत दोहे, सोरठे, चौपाई आदि छंदों में वर्णन किया गया है। हमारे प्रेमी ग्राहकों को इसे अवश्य देखना चाहिए। पृष्ठ-संख्या ३६; मूल्य ≈)

गुरुभक्तप्रकाश

श्रीस्वामी रामरूपजी-रचित। इसमें स्वामी चरणदासजी का जीवनचरित्र भली प्रकार दोहे, चौपाई आदि छंदों में वर्णन किया गया है। जिन सज्जनों ने उक्त महात्मा के रचे हुए 'भक्ति-सागर'-नामक ग्रंथ को कभी पढ़ा हो, उन्हें उक्त स्वामीजी के चरित्र को भी अवश्य ही पढ़ना चाहिए। विशेषकर भृगुवंशियों एवं स्वामी चरणदासजी के अनुयायियों को इस ग्रंथ की एक-एक कापी अवश्य संग्रह करनी चाहिए। पृष्ठ-संख्या २९२; मूल्य ॥≈)

मिलने का पता—नवलकिशोर-प्रेस—लखनऊ

पढ़ने योग्य अनूठे शिक्षाप्रद उपन्यास

चित्तविलास प्रथम व द्वितीय भाग

लेखक—रायबहादुर बाबू ज़ालिमसिंह, पोस्टमास्टर जनरल, ग्वालियर। यह कोई मामूली दिल खुश करनेवाला उपन्यास नहीं है; किंतु यह वह उपन्यास है, जिसके पढ़ने और मनन करने से विवेक, वैराग्य, ज्ञान, ब्रह्मतेज आदि अनेकानेक धर्म-संबंधी उपदेशों का ज्ञान प्राप्त होता है। जो धार्मिक पुरुष हैं, जो वाहियात उपन्यास पढ़ अपना अमूल्य समय बिताना नहीं चाहते, उन्हें यह उपन्यास अवश्य देखना चाहिए। दोनों भागों का मूल्य ॥)॥

ब्रह्मदर्पण

विषय नाम ही से प्रकट है। इसके पढ़ने से माया और ब्रह्म, स्वामी और सेवक, राजा और प्रजा एवं स्त्री और पुरुष के धर्मों का उपदेश मिलता है। जो मनुष्य इस उपन्यास को पढ़ेंगे, उनके बिगड़े हुए चरित्र सुधर जायँगे। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों का क्या धर्म है—क्या कर्तव्य है—यह भी इसी के पढ़ने से मालूम होगा। संक्षेप में, मतलब यह है कि बड़े-बड़े धर्मशास्त्रों एवं वेदांत के ग्रंथों का सारांश इसमें ठूस-ठूसकर भरा गया है। हिंदी-संसार में इस ढंग के उपन्यास बहुत ही कम देखने में आते हैं। पृष्ठ-संख्या १५६; मूल्य ।॥)

बंगाली दुलहिन

वंग-भाषा के सुप्रसिद्ध लेखक बाबू बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय के "देवी चौधरानी" का हिंदी-अनुवाद। प्रफुल्ल की दीन अवस्था, अपने ससुर—हरिवल्लभ—द्वारा प्रफुल्ल का ससुराल से निकाला जाना, यकायक उसके भाग्य का पलटा खाना, डाकू होकर भी भवानी पाठक की ईमानदारी और सचाई, कुछ समय बाद प्रफुल्ल का रानी बनना, अपनी बुद्धिमानी और चतुराई से अपने दुष्ट ससुर की जान बचाना, व्रजेश्वर का अपनी स्त्री—प्रफुल्ल—को रानी-रूप में न पहचानना, विना खून-ख़राबी के ही अपनी चालाकी से रानी का अँगरेज़ी फ़ौज पर विजय प्राप्त करना और अंत में अनेक गुप्त रहस्यों का प्रकट होना आदि अनेक अद्भुत चकरा देनेवाली घटनाओं से भरा हुआ यह शिक्षाप्रद गार्हस्थ्य उपन्यास है। एक बार आरंभकर, विना समाप्त किए छोड़ने को जी नहीं चाहता। अनुवादक हैं पं० शुकदेवप्रसादजी वाजपेयी। पृष्ठ-संख्या १६८; मू० ।॥)

रामप्रताप

यह कोई तिलस्मी, अय्यारी, ऐतिहासिक या गार्हस्थ्य उपन्यास नहीं है; किंतु यह वह उपन्यास है, जिसके पढ़ने से ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति होती है। इसके पढ़ने से वैराग्य, शुभ-कर्म, अनन्य-भक्ति, राजधर्म और प्रजाधर्म-संबंधी अनेकानेक उपदेशों का ज्ञान प्राप्त होता है। जो धार्मिक पुरुष हैं, वे इस उपन्यास को अवश्य पढ़ें। रायबहादुर बाबू ज़ालिमसिंहजी ने रचना की है। मू० ॥)

मिलने का पता—नवलकिशोर-प्रेस—लखनऊ

वैद्यक के बढ़िया ग्रंथ

ये ग्रंथ इतने सस्ते और अच्छे आप कहीं न पाइएगा।

भाषा में

अमृतसागर भाषा

स्वर्गवासी जयपुराधीश सवाई प्रतापसिंहजी की आज्ञानुसार चरक, सुश्रुत, वाग्भट, भावप्रकाश आदि अनेक प्रसिद्ध वैद्यक-ग्रंथों का सारांश लेकर, सद्वैद्यों द्वारा यह ग्रंथ रचा गया है। इसमें यंत्र, मंत्र, तंत्र के सिवा, संपूर्ण रोगों की उत्पत्ति, लक्षण और उनके उपाय एवं अनेक प्रकार के रस, चूर्ण, क्वाथ, अवलेह, तैल व घृत आदि के बनाने की विधि दी गई है। नवीन संशोधित संस्करण। छपाई-सफ़ाई अति उत्तम। पृष्ठ-संख्या ७२०; मूल्य २॥) सजिल्द ३)

गदतिमिरभास्कर

आज तक जितने वैद्यक के ग्रंथ नवीन छपे हैं, उन सबमें यह शिरोमणि है। चरक, सुश्रुत, वाग्भट आदि अनेक छोटे-मोटे ग्रंथों को मथकर एवं अनेक यूनानी तथा डॉक्टरी ग्रंथों की सहायता लेकर, पं० गौरीशंकर शर्मा राजवैद्य ने, हिंदी-भाषा में, इस अपूर्व ग्रंथ की रचना की है। यदि आप सदैव स्वस्थ रहना चाहते हैं, यदि आप डॉक्टरों, हकीमों और वैद्यों का वारंवार मुँह देखना नहीं चाहते हैं, यदि आप स्वयम् एक सद्वैद्य बनकर अपने पड़ोसियों की प्राण-रक्षा करना चाहते हैं, तो थोड़ा-सा लोभ त्यागकर, इस ग्रंथ को अवश्य खरीदें। आयुर्वेद की उत्पत्ति, दिनचर्या, रात्रिचर्या, ऋतुचर्या, पञ्चकषाय, चूर्ण, गुटी, अवलेह, घृत, तैल, अरिष्ट, आसव, धातु, उपधातु, विष, उपविष आदि शोधने की विधि एवं मंजन और नेत्रप्रसादनादि कितने ही लेप यह सब प्रथम खंड में हैं। मनुष्य-शरीर में जितने भी रोग होते हैं, उन सबके लक्षण, समयानुसार चिकित्सा, विस्फोटकादि रोग, विषचिकित्सा, रसायन और कल्प आदि दूसरे, तीसरे और चतुर्थ खंड में विस्तार-पूर्वक दिए गए हैं। कागज़, छपाई आदि अति उत्तम। बड़े साइज़ के ११६६ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य केवल ६) रक्खा गया है।

रसरत्नाकर भाषा

यह अपूर्व ग्रंथ समस्त रस-ग्रंथों का शिरोमणि है। इसमें पारा, गंधक, हरताल, रूपा, ताँबा, हीरा, मैनशिल, सफ़ेद अभ्रक, खपरिया, नीलाथोथा, रूपामाखी, सोनामाखी, शिलाजीतादि रसों की शोधन-विधि तथा उनके गुण; अनेक प्रकार के तैल, चूर्ण व घृत इत्यादि बनाने की विधि और प्रत्येक रोग की चिकित्सा का वर्णन भली प्रकार किया गया है। वैद्योपयोगी ऐसा उत्तम ग्रंथ आज तक कहीं भी नहीं छपा। पं० रविदत्तजी ने संस्कृत रसरत्नाकर से हिंदी में इसका अनुवाद किया है। बड़े साइज़ के ३४४ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य केवल २=) रक्खा गया है।

मिलने का पता—नवलकिशोर-प्रेस—लखनऊ

हिंदी-प्रेमियों के लिये अपूर्व अवसर

आगामी विजयादशमी तक अपूर्व लाभ उठाइए

५) की चुनी हुई उत्तम पुस्तकें ४) में लीजिए

(१)	सेवा-धर्म	१॥)
	अमेरिका-दिग्दर्शन	१)
	गांधी-दर्शन	१)
	विवाह-कुसुम	१॥)
(२)	प्रेम-पुष्पांजलि	१।)
	साहसी सुंदरी	१।॥)
	राज्य-संबंधी सिद्धांत	१।॥)
	प्रायश्चित्त	।)
(३)	सेवा-धर्म	१॥)
	भारत-गौरव	१॥)
	पैशाचिक कांड	२)
(४)	चंद्रशेखर	२)
	खरा सोना	१)
	प्रेम-पुष्पांजलि	१।)
	असहयोग का इतिहास	।॥)
(५)	सेवा-धर्म	१॥)
	संसार (उपन्यास)	१)
	कुल-कमला	।॥=)
	सीता-वनवास	॥=)
	अमेरिका-दिग्दर्शन	१)
(६)	प्रेम-पुष्पांजलि	१।)
	प्रेमकांत	१।॥=)
	वनिता-विनोद	॥=)
	जीवन-ज्योति	१।)
(७)	सेवा-धर्म	१॥)
	वीर-पुष्पांजलि	।)
	होमर गाथा	१)
	सिद्धार्थ कुमार	१।)
	उमा (उपन्यास)	१)
(८)	प्रेम-पुष्पांजलि	१।)
	राष्ट्रीय-तरंग	।-)
	इंदुमती	३॥)
(९)	विलास कुमारी	१॥)
	सेवा-धर्म	१॥)
	पार्वती	२)
(१०)	राष्ट्रीय-तरंग	।-)
	भगवान्-बुद्ध	१।)
	बंकिमचंद्र	१≡)
	गीता-सत्ययोग	१।)
	महाराष्ट्र-वीर	१)
(११)	क़ैदी की करामात	१॥)
	वीर अभिमन्यु	।॥)
	गोलमाल	१=)
	अमर	१॥=)
(१२)	टापू की रानी	१।॥)
	उपन्यास-कुसुम	१।)
	क़िले की रानी	।॥)
	प्रेम-पुष्पांजलि	१।)
(१३)	कृष्ण-कुमारी	१)
	तरंग	॥=)
	कलंकिनी	।॥=)
	भारत-दर्शन	२॥)
(१४)	वनदेवी	।॥)
	लेखन-कला	।॥)
	राज्य-संबंधी सिद्धांत	१।॥)
	वंग विजेता	१।॥)
(१५)	वक्तृत्व-कला	१।)
	मेजनी	।॥)
	राष्ट्रीय संदेश	।=)
	कर्णविध्वंस नाटक	॥=)
	पंजाब-हरण	२)
(१६)	पंजाब हत्याकांड	।॥≡)
	राष्ट्रीय-तरंग	।-)
	सेवा-धर्म	१॥)
	जीवन-ज्योति	१।)
	खरा सोना	१)
(१७)	शशिबाला	।॥)
	पृथ्वीराज	१।)
	तरंगिणी	१।)
	प्रेम-पुष्पांजलि	१।)
	सप्त-सरोज	॥)
(१८)	सेवा-धर्म	१॥)
	मनुष्य के अधिकार	॥)
	वीर-विनोद (काव्य)	२)
	बलिदान	१)
(१९)	लवकुश	१।॥)
	संसार-व्यापी असहयोग	॥=)
	सत्य निबंधावली	॥)
	सफल-गृहस्थ	।॥)
	प्रेम-पुष्पांजलि	१।)
	जापानी कुश्ती	=)
(२०)	महाराणा प्रतापसिंह	१।)
	महाराष्ट्र-वीर	१)
	सेवा-धर्म	१॥)
	भीष्म	॥)
	ज़बरदस्त की लाठी	॥)
	अनुताप	।)
(२१)	प्रेम-पुष्पांजलि	१।)
	सत्य-वीर	१॥)
	वीर-पत्नी	।-)
	वीर-बालिका	॥)
	ग्रीस का इतिहास	१=)
	रसाल-वन	।-)
(२२)	सती-विपुला	२।)
	आयर्लैंड की राज्यक्रांति	।-)
	देवी-द्रौपदी	।=)
	कंसविध्वंस नाटक	॥-)
	सेवा-धर्म	१॥)
(२३)	शकुंतला नाटक	१।)
	संसार	१)
	वेदांत रामायण	२॥)

सूचना—पाँच-पाँच रुपए का गुच्छ अलग छाँट दिया है। प्रत्येक गुच्छ के ग्राहक को १) रियायत और डाक-ख़र्च आदि ग्राहक के ज़िम्मे होगा।

पता—अनंतकुमार जैन, वीरमंदिर, आरा (ARRAH, E. I. R.)

पाकेट इत्रदान

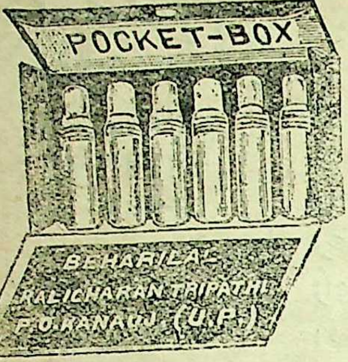

यह इत्रदान उत्तमोत्तम इत्रों से भरा हुआ होने पर भी पाकेट में रखने योग्य है। मित्रों और ऑफ़िसरों को नज़र में देने के लिये नई वस्तु है। विवाह (शादी) वग़ैरह शुभ कार्यों में भी महफ़िल का पूरा काम भी दे सकता है।

नं०१पाकेट इत्रदान फ़ैंसी शी०६ मय इत्र क़ी०४)
नं०२ „ „ ६ „ क़ी०३)
नं०३ „ „ ६ „ क़ी०२॥)

इसके अलावा हरएक क़िस्म का इत्र, तेल, तमाखू इत्यादि का सामान भी हमारे कार्यालय से मँगवा लीजिए।

पता—बिहारीलाल-कालीचरण त्रिपाठी,
पो० क़न्नौज सिटी (Kanauj City.)

RAM LALL,

DENTIST,

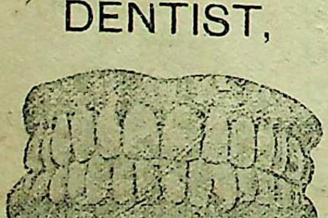

27 Aminabad Park, LUCKNOW.

ALL SORTS OF DENTAL WORKS ARE EXECUTED PROMPTLY - AT - REASONABLE RATES.

कहाँ है मिरगी, बाइ-हीस्ट्रीया ??

दौरे का जोश २४ घंटे में हटानेवाली, बच्चों, प्रसता और सगर्भा को आराम-दायिनी और पाश्चिमात्य शारीरिक वैज्ञानिकों के कुतर्क को खंडन कर आयुर्वेद की महत्ता बढ़ानेवाली पेटेंटः—

हीस्ट्रीया-वायु मुक्ता

स्वधर्म-संरक्षक देशी उम्दा चीज़ों से बनी है। इस दवा से तिमिर, भ्रमण, कमान सरकना, मूर्च्छा, गूँगापन, गुल्म, पगु या राद करना, शीत, सूनबहरी, उन्माद का तूफ़ान, दाँतों का हिलना, लक़वा, श्वास-रोधन इत्यादि-इत्यादि अपस्मार के नए और पुराने दर्द पर रामबाण है। दवाई करके अगर थक गए हों, तो एक बार आज़माओ, सैकड़ों सार्टीफ़िकेट हैं। क़ीमत रु० ५) पो० अलग, पत्र-व्यवहार हिंदी-नागरी में करना।

पता—
छगनलाल लल्लूभाई शाह देशीनामावाल,
पैलस रोड के मोखरे १, बड़ौदा

श्रीगौरांग-चरित-मानस

(हिन्दी-चैतन्य-चरित)

पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानंद श्रीकृष्णचंद्रजी ने शाके १४०७ में वंगदेश के 'नवद्वीप' में अवतार लिया था; जिनके चरित्र से हमारे बिहार, युक्त-प्रदेश, मध्य-प्रदेशादि के सज्जनगण (हिंदी में ग्रंथ नहीं रहने के कारण) अनभिज्ञ हैं। उन्हीं श्रीचैतन्य महाप्रभु का विचित्र चरित्र २०० मनोहर दोहा, चौपाई आदिक छंदों में वर्णन किया गया है। इस विषय का हिंदी में यह पहला ही ग्रंथ है।

पता—मोतीलाल झा
विष्णुपुर, पो० बेगूसराय
(मुंगेर)

पृ० ५०० चार खंड १॥)
जिल्ददार— २)
डाक-व्यय— ।≈)

हर क़िस्म की बढ़िया रबरकी मुहर
ऐसी २॥) रु०
सूची मुफ्त
जी. सी. खत्री, रबर स्टाम्प, काशी

सीधी लाइन की सादी मुहर (केवल अक्षरों की दो लाइनें, २ इंच लंबी, और आधा इंच चौड़ी तक) छापने का सामान सहित। मूल्य १) डा० ख़० ।≈) बड़ी होने से दाम अधिक होगा। हिंदी, अँगरेज़ी, उर्दू, बँगला कोई भाषा हो। अंडाकार मुहर जैसा ऊपर नमूना है, २॥) मय सामान । डा० ख़० ।≈) काम देखकर खुश होंगे।

पताः—जी० सी० खत्री, रबर स्टाम्प मेकर,

विहारी-सतसई

(संशोधित संस्करण)

यों तो "विहारी-सतसई" पर अनेक टीकाएँ तथा समालोचनात्मक ग्रंथ लिखे जा चुके हैं; लेकिन उपरोक्त ग्रंथ अन्य टीकाओं से कई बातों में विशेषता रखता है। एक—यह सबसे पुरानी टीका है और विहारी के सम-कालीन कृष्ण कवि-कृत है। दूसरे—नायक-नायिका प्रति उक्ति तथा भेद विचार-पूर्वक दरशाया गया है। तीसरे—दोहे का पूरा भाव लेकर कवित्त-सवैयों में नीचे उसकी टीका की गई है। ऐसी ही अनेक बातें हैं, जो विचारवान् पुरुष स्वयम् विचार सकते हैं।

इसकी भाषा विशेषतः व्रजभाषा और बुंदेलखंडी का मिश्रण है। उक्त कवि ने एक-एक दोहे में इतने अधिक भाव भरे हैं कि पढ़नेवालों को समझकर आश्चर्य होता है। इनकी कविता में प्रकृति-निरीक्षण, भाषा-प्रौढ़ता, भाव-गंभीरता, स्वाभाविक-वर्णन, अतिशयोक्ति की पराकाष्ठा तथा मानुषी प्रकृति का सच्चा और हृदय-ग्राही वर्णन है। पुस्तक सर्वथा देखने योग्य है। मूल्य नाम-मात्र है। पृष्ठ-संख्या २०० ; मूल्य १)

शिवराज भूषण

यदि हिंदू-शिरोमणि वीर शिवाजी की वीरता से देश-जाति-हित का पाठ पढ़ना चाहते हैं, और वीर-रस-कवि-शिरोमणि भूषण की उत्कृष्ट कविता सुनने का शौक़ है, तो शिवराज भूषण अवश्य पढ़िए। पृष्ठ-संख्या ७४ ; मूल्य ।)

मिलने का पता—नवलकिशोर-प्रेस, लखनऊ

जगत्प्रसिद्ध हिमकल्याण तैल !

तत्काल फलदायक ! महासुगंधित !!

यदि आप जीवन का सच्चा सुख देखना चाहते हैं और पवित्र तथा उपयोगी तैलों के लगाने का शौक़ रखते हैं, तो हमारा "जगत्प्रसिद्ध हिमकल्याण तैल" मँगाइए। यह तैल आजकल के तैलों की भाँति मस्तिष्क-शक्ति-नाशक मिट्टी के तैल पर विदेशी सुगंध के मिश्रण से नहीं बनाया जाता ; बल्कि ख़ालिस तिल के तैल से पवित्र और देशी औषधियों तथा जड़ी बूटियों द्वारा वैद्यक-शास्त्र के मतानुकूल परम स्वच्छता से तैयार किया गया है। इसके लगाते ही कठिन-से-कठिन सिर-दर्द पाँच मिनट के अंदर शर्तिया और समूल नष्ट हो जाता है। दिमाग़ की कमज़ोरी, चक्कर आना, बालों का पकना, गंज-रोग, आँखों में जलन और सुर्ख़ी का रहना, आग से जल जाना, प्यास लगना, नाक से ख़ून गिरना, रतौंधी, आधे सिर का दर्द, समलवायु का दर्द, मृगी, उन्माद इत्यादि दोष अल्प काल में निस्संदेह दूर होकर रुई के समान कमज़ोर दिमाग़ पत्थर के समान दृढ़ हो जाता है। दिन-भर लिखते-पढ़ते और दिमाग़ी परिश्रम करते-करते जब आप थक जाइए, तो थोड़ा-सा यह तैल लगाकर देखिए, १० मिनट के बाद ऐसा जान पड़ेगा मानो, आपने परिश्रम किया ही न था। आपका दिमाग़ तरोताज़ा और चित्त प्रसन्न हो जायगा। इस तैल की उत्तमता पर मुग्ध होकर बड़े-बड़े राजा, महाराजा, गवर्नमेंट ऑफ़िसर्स तथा वैद्य, डॉक्टर और हकीमों ने अनेकों प्रशंसा-पत्र और कई स्वर्ण-पदक आविष्कर्ता को दिए हैं, गवर्नमेंट ने भी कृपा कर आविष्कर्ता के कार्य की सरलता के लिये उसके मकान ही पर हिमकल्याण तैल के नाम पर "हिमकल्याण" नाम का पोस्ट ऑफ़िस खोल दिया है। प्रशंसा-पत्रों का पूरा विवरण बड़े सूचीपत्र में देखिए।

नाम-मात्र को तैल, किंतु गुण अमिय लजावत।
शिर के सारे रोग, मित्र यह तुरत भजावत॥
इसकी सुंदर छटा, देखि पशु-गण मस्ताने।
फिर रसिकन की दशा, कहो जग कौन बखाने॥
सांप्रत अगणित तैल, जहाँ देखो दरसाते।
निज-निज रुचि अनुसार, सभी उनके गुण गाते॥
किंतु एक ही बार, जिन्होंने इसे लगाया।
लोकोत्तर आह्लाद, पाय इसको अपनाया॥
सुलभ मूल्य गुण देखि, इसे चाहत नृप, रंका।
तत्कालहि फल देत, बजत भारत में डंका॥

हमारे तैल के विषय में प्रतिष्ठित सज्जनों की सम्मति !

कलकत्ते के स्वर्ण-पदक-प्राप्त प्रसिद्ध डॉक्टर बी० डी० शर्मन बी० ए० एच्० एम्० बी० एम्० एस्० (लंदन) एफ़्० आर्० एस्० ए० आई० ऐंड सी० (ग्लासगो) लिखते हैं—"हमने आपके जगत्प्रसिद्ध हिमकल्याण तैल की स्वयं परीक्षा करके निर्णय किया है कि यह शुद्ध तिल के तैल पर पवित्र देशी औषधियों से बना हुआ है और उन समस्त रोगों के नाश करने में पूरी शक्ति रखता है, जिनका वर्णन आपने अपने सूचीपत्र में किया है…… …… ……।"

मूल्य १ शीशी का १) अध्यापकों, छात्रों और माधुरी के ग्राहकों से आधा दाम ; किंतु इस मूल्य पर २ शीशी से कम नहीं भेज सकते। ४ शीशी लेने से १ शीशी उपहार देंगे। महसूल ज़िम्मे ख़रीदार।

राजा-महाराजाओं से स्वर्ण-पदक और प्रशंसा-पत्र पाए हुए—

पं० गदाधरप्रसाद शर्मा राजवैद्य, हिमकल्याण बिल्डिंग्स—इलाहाबाद।

One of the Biggest Firm in U. P.

NEWUL KISHORE EMPORIUM,

75, HAZRATGANJ,

LUCKNOW.

Booksellers, Stationers, Paper-merchants, dealers and repairers of fire arms and ammunition, etc.

नवलकिशोर-इम्पोरियम

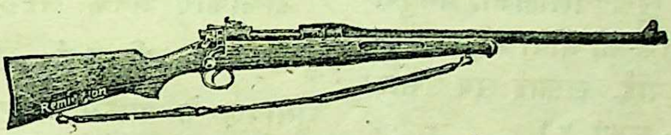

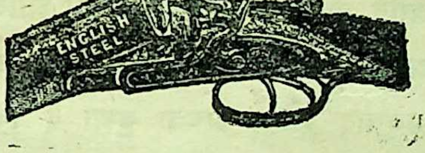
ENGLISH STEEL

.401 WINCHESTER
SELF-LOADING
SOFT POINT 200 GR.

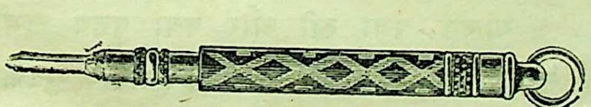

Remington-UMC
22 LONG

Remington-UMC
32 AUTOMATIC
COLT
METAL CASED

हमारे यहाँ हर प्रकार की पुस्तकें, काग़ज़, पेंसिल, लिफ़ाफ़े, होल्डर, हर प्रकार के निब, क़लमदान, नत्थियाँ व दफ़्तर का कुल सामान, खिलौने और विलायती सेंट व इत्र वग़ैरह बड़ी किफ़ायत से मिलते हैं। इनके सिवा हमारे यहाँ कारतूसी बंदूक़, पिस्तौल, टोपीदार बंदूक़, हर क़िस्म के कारतूस अथवा टोपियाँ आदि भी बिकने के लिये मौजूद रहती हैं। विलायत की तरह हर प्रकार की मरम्मत भी बहुत अच्छे-अच्छे कारीगरों द्वारा की जाती है। एक बार आज़माइए।

मैनेजर,

नवलकिशोर-इम्पोरियम, लखनऊ

गोस्वामि तुलसीदासजी के सर्वोत्तम ग्रंथ

जब तक हिंदी और हिंदू-जाति जीवित है; तब तक गोस्वामी तुलसीदासजी का नाम मिटने का नहीं। ग्रंथ-लेखक की दृष्टि से ही तुलसीदासजी ने अपनी जाति, धर्म और भाषा का जो हित किया है; वह इस देश में ही क्या, इस भू-मंडल पर किसी जाति के व्यक्ति से नहीं हुआ। धार्मिक पाठ प्रायः पाठकों को रूखा मालूम पड़ता है; किंतु गोस्वामीजी ने उसी को अपनी नव-रस-मयी कविता-द्वारा ऐसा पढ़ाया है कि कई बार पढ़ने पर भी फिर पढ़ने को जी चाहता है। काव्य का रंग, शिक्षा का संग और उस पर भी प्रेम-प्रसंग सब अक्क को दंग कर देते हैं। गोस्वामीजी के नीचे लिखे हुए सभी ग्रंथ सटीक और सुंदर छपे हुए हमारे यहाँ से मिल सकते हैं।

रामायण सटीक

टीकाकार पं० सुखदेवलालजी, मैनपुरी-निवासी। इस पुस्तक की भाषा बहुत सरल और सुंदर है। छपाई, सफ़ाई सब उत्तम। पृष्ठ-संख्या १०२६; मूल्य ५)

रामायण मूल

छपाई, सफ़ाई सब उपरोक्त पुस्तकों की तरह। केवल टीका नहीं है। पृष्ठ-संख्या ७४०; सजिल्द मूल्य ३)

रामायण मूल

मँझोला गुटका। पृष्ठ-संख्या ६००; सजिल्द १॥)

रामायण मूल

नवीन छोटा गुटका। उम्दा चिकना काग़ज़। पृष्ठ-संख्या ६६६; मूल्य १=) सजिल्द

रामायण सटीक

सचित्र और सजिल्द सबसे उत्तम है। पृष्ठ-संख्या ६००; मूल्य ५)

रामायण सटीक गुटका

टीकाकार अनेक संस्कृत तथा हिंदी-पुस्तकों के रचयिता पं० सूर्यदीनजी शुक्ल। रामायण के आरंभ में तुलसीदासजी का जीवन-चरित्र, रामायण-माहात्म्य, ब्राह्मण आदि चार वर्णों और ब्रह्मचर्य आदि चार आश्रमों के धर्म का निरूपण किया गया है। अनुवाद इतना अच्छा हुआ है कि क्या बालक, क्या स्त्री और क्या पुरुष सभी आसानी से समझ सकते हैं। सटीक गुटका की जितनी टीकाएँ आजकल दिखाई देती हैं, यह सबसे उत्तम है। इसी कारण स्कूलों में भी अब यही मँगाया जाता है। इसकी कई हज़ार प्रतियाँ थोड़े ही काल में हाथों-हाथ निकल गईं। पृष्ठ-संख्या ६००; सजिल्द मूल्य ४)

मिलने का पता—नवलकिशोर-प्रेस—लखनऊ

गोस्वामि तुलसीदासजी के अनूठे ग्रंथ-रत्न

२ विनयपत्रिका।

विनयपत्रिका सटीक

गोस्वामि तुलसीदासजी-कृत। इसमें गणेशजी, सूर्यनारायण, शिवजी, गंगाजी व हनुमान्‌जी आदि देवताओं की महिमा का निरूपण तो किया ही गया है; किंतु मुख्य करके परब्रह्म परमात्मा रामचंद्र के प्रति सैकड़ों विनय के पद हैं। रामायण की भाषा सरल है; किंतु विनयपत्रिका की भाषा रामायण से कठिन है, अतएव सर्व-साधारण इसे समझ नहीं सकते—यही समझकर **बाबू बैजनाथजी** ने अति सरल भाषा में इसकी टीका विशद-रूप से की है। रामायण-प्रेमियों को चाहिए कि इसे अवश्य ख़रीदें। पृष्ठ-संख्या ५१६; मूल्य २॥)

विनयपत्रिका सटीक

इसमें भी वही विषय हैं, जो हम ऊपर लिख चुके हैं। इसकी टीका अनेक पुस्तकों के रचयिता **पं० सूर्यदीनजी शुक्ल** ने की है। इसमें मूल कविता के थोड़े-थोड़े शब्द खड़ी पंक्ति में देकर, उसके सामने प्रत्येक शब्द का अर्थ दिया गया है। पदच्छेद, शब्दार्थ जान लेने के साथ ही टीका भी क्रम से पढ़ी जा सकती है। इसके सिवा वेदांत व भक्ति के ग्रंथों का आशय लेकर, प्रमाण के साथ, हरएक भजन का तात्पर्य (मतलब) दिया गया है। अब यह पुस्तक, सर्व-साधारण के समझने लायक़, बड़े मतलब की हो गई है। कागज़, छपाई-सफ़ाई अति उत्तम। पृष्ठ-संख्या ३०८; मूल्य १॥)

विनयपत्रिका सटीक

तुलसीदास-कृत। इसमें भी शिव, गणेशादि देवताओं की स्तुति और मुख्य करके श्रीरामचंद्र और हनुमान्‌जी के प्रति विनय के पद हैं। मूल कविता कठिन होने के कारण इसका भाषानुवाद **डुमराँव-निवासी बाबू शिवप्रकाशजी** से कराया गया है। भगवद्भक्तों एवं वेदांतियों को चाहिए कि इस पुस्तक को अवश्य देखें। पृष्ठ-संख्या ३५६; मूल्य ॥।-)

विनयपत्रिका मूल

महात्मा तुलसीदास-कृत। रामायण के बाद गोस्वामीजी की पुस्तकों में विनयपत्रिका सर्वोत्तम है। इसमें गणेशादि देवताओं और मुख्य करके श्रीरामचंद्रजी और हनुमान्‌जी के प्रति विनय के पद हैं। ये पद भक्ति-रस में सराबोर हैं। किसी एक छोटी-सी पुस्तक में इतने ऊँचे दर्जे के पद पाना बड़ा ही कठिन है। पृष्ठ-संख्या १६६; मूल्य ।-)

मिलने का पता—नवलकिशोर-प्रेस—लखनऊ

गोस्वामि तुलसीदास के अनूठे ग्रंथ-रत्न

कवितावली सटीक

मानपुर-निवासी बाबू बैजनाथजी ने इसका भाषानुवाद अति सरल भाषा में किया है। इसमें भगवान् रामचंद्र का समस्त जीवन-चरित्र अर्थात् रामायण के सातों कांडों की कथा अति मनोहर कवित्तों में वर्णन की गई है। जो लोग तुलसीदास-कृत 'मूल कवितावली' को न समझ सकते हों, उन्हें चाहिए कि इस 'सटीक कवितावली' को अवश्य खरीदें। पृष्ठ-संख्या ४२४; मूल्य १=)

गीतावली सटीक

श्रीगोस्वामि तुलसीदास-कृत। भगवान् रामचंद्र का जन्मोत्सव, बाल-लीला, विश्वामित्र-यज्ञ-रक्षण, जानकी-स्वयंवर, धनुर्भंग, परशुराम-संवाद, वन-गमन, जानकी-हरण, रावण-वध, भरत-मिलाप और राज्याभिषेक आदि की पवित्र कथाएँ यदि आप अनेक प्रकार की मनोहर राग-रागिनियों में पढ़ना चाहते हैं, तो इस पुस्तक को अवश्य देखिए। इसका भाषानुवाद मानपुर-निवासी बाबू बैजनाथजी ने किया है। पृष्ठ-संख्या ४५८; मूल्य १।)

गीतावली मूल

तुलसीदास-कृत। इसमें रामायण के सातों कांडों की संपूर्ण कथा अनेक उत्तम-उत्तम रागों में वर्णित है। संक्षेप में, मतलब यह है कि इसमें वही विषय हैं, जो हमने ऊपर लिखे हैं; भेद इतना ही है कि इसमें केवल मूल-ही-मूल है। पुस्तक सर्व-साधारण के देखने योग्य है। पृष्ठ-संख्या २३०; मूल्य।-)॥

तुलसीसतसई मूल

इसमें सात सौ दोहे हैं, जिनमें गोस्वामि महात्मा तुलसीदासजी ने, भक्ति, ज्ञान और नीति की सैकड़ों अमूल्य शिक्षा-प्रद बातें, कूट-कूटकर भरी हैं। ऐसी उत्तम पुस्तक आज तक कहीं नहीं छपी। जो तुलसी-कृत रामायण या विनयपत्रिका को पढ़ चुके हों, उन्हें तुलसीदासजी के अन्यान्य ग्रंथ भी अवश्य देखने चाहिएँ। पृष्ठ-संख्या १००; मूल्य ≡)

तुलसीसतसई सटीक

उपरोक्त अलंकारों सहित। टीकाकार बाबू बैजनाथजी। जिनमें 'मूल सतसई' के समझने की योग्यता न हो, उन्हें चाहिए कि वे इस 'सटीक सतसई' को खरीदें। सर्व-साधारण ने इसे इतना पसंद किया है कि इसकी हज़ारों कापियाँ आज तक बिक चुकी हैं। पृष्ठ-संख्या ४६२; मूल्य १।)

कुंडलिया रामायण सटीक

श्रीगोस्वामि तुलसीदास-कृत। इस अत्युत्तम रामायण में तुलसी-कृत रामायण की भाँति, सात कांडों में श्रीदशरथनंदन, कौशल्या-हृदयानंद-वर्द्धन भगवान् रामचंद्र का संपूर्ण चरित्र, जन्म से लेकर राजगद्दी-पर्यंत कुंडलिया-छंदों में वर्णन किया गया है। इसका भाषानुवाद मानपुर-निवासी बाबू बैजनाथजी ने किया है। पृष्ठ-संख्या ३२०; मूल्य ॥।)

मिलने का पता—नवलकिशोर-प्रेस—लखनऊ

साहित्य-संसार के धुरंधर विद्वानों द्वारा प्रशंसित
अद्वितीय

गंगा-पुस्तकमाला

की

कुछ उत्कृष्ट पुस्तकें

नंदन-निकुंज

[लेखक—श्रीमान् चंडीप्रसाद बी० ए०]

इसमें ६ मौलिक, हृदयग्राही, सरस उच्च कोटि की मनोरंजक कहानियों का संग्रह है। कहानियों की कल्पना अद्भुत, चरित्र-चित्रण प्रभावशाली और भाषा कवित्व-पूर्ण है। हिंदी में मौलिक कहानियाँ लिखनेवाले जो दो-एक श्रेष्ठ, सिद्धहस्त लेखक हैं, उक्त लेखक उन्हीं में से हैं। पुस्तक एक बार उठाकर आदि से अंत तक पढ़े विना छोड़ने को जी नहीं चाहता। मूल्य सादी १।), और जिल्ददार १॥=)

देवी द्रौपदी

[लेखक—कविवर पं० रामचरित उपाध्याय]

यह पुस्तक देवी द्रौपदी का जीवन-चरित है। आख्यायिका के ढंग पर लिखा गया है, जिससे इसके पाठ से उपन्यास, प्राचीन इतिहास और जीवन-चरित्र तीनों के पढ़ने का आनंद आता है। यों तो यह पुस्तक समान रूप से सबके लिये शिक्षाप्रद है, पर स्त्रियों के लिये यह पुस्तक अमूल्य रत्न है। मूल्य सजिल्द ॥=), सादी ।=)

द्विजेंद्रलाल राय

[लेखक—माधुरी के युगल संपादक]

सुप्रसिद्ध नाट्यकार स्वर्गीय डी० एल्० राय एम्० ए० को कौन नहीं जानता? उनके नाटकों के हिंदी-अनुवाद बहुत ही लोकप्रिय हुए हैं। उन्हीं का यह संक्षिप्त, किंतु सर्वांग-पूर्ण जीवन-चरित है। लेखकों के नाम ही इसकी उपयोगिता और श्रेष्ठता के प्रमाण हैं। मूल्य ।)

देव और विहारी

[लेखक—काव्य-मर्मज्ञ पं० कृष्णविहारी मिश्र बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

देव और विहारी दोनों कवियों की तुलनात्मक समालोचना इस ग्रंथ में की गई है। इस पुस्तक के पढ़ने से दोनों कवियों की कमनीय कवित्व, पांडित्य और प्रखर प्रतिभा का प्रकाश सहज ही समझ में आ जाता है। इस पुस्तक के विषय में हिंदी-संसार में जितनी हलचल हुई है, उतनी किसी भी काव्य-ग्रंथ पर नहीं हुई। भाषा बड़ी सजीव और लेख-प्रणाली परम मनोरंजिनी है। पुस्तक क्या है, कविता की करामात और सभा-चातुरी की शिक्षा की कुंजी है। मूल्य सजिल्द २), सादी १॥=)

संचालक—गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

जिस घर में कोई चित्र नहीं, वह घर पवित्र नहीं

चित्रों का भारी स्टॉक !

हिंदू और मुसलमानों को स्वतंत्रता

तब ही मिलेगी जब कि वह अपने-अपने घरों में अपने देशबंधु लीडरों की तस्वीरें लगाकर नित्य उनके दर्शन करें, ताकि आपमें और आपकी संतान में देश-सेवा का भाव बढ़े। इसलिये हमने देश के पूज्य नेताओं तथा अन्यान्य राष्ट्रीय व दूसरे-दूसरे चित्रों का भी भारी संग्रह अपने यहाँ किया है। सब चित्र बहुत सुंदर और चित्ताकर्षक हैं। एक बार कुछ मँगाकर अपने कमरे की शोभा बढ़ाइए। नीचे कुछ चित्रों के नाम और दाम लिखे जाते हैं:—

भारत-माता के सपूतों के सुंदर चित्र

अलीबंधु (जेल में)	-)	लाला लाजपतराय (जेल में)	-)	महात्मा गाँधी (रंगीन)	-)
श्रीयुत दास (सपरिवार)	-)	**महात्मा तुलसीदास**	।)	सुब्रह्मन्य आइयर (,,)	≡)
विपिन चंद्रपाल (रंगीन)	≡)			मि० हार्निमैन (,,)	=)
महाराणा प्रताप (,,)	-)	मोहम्मदअली जिन्हा (रंगीन)	=)		

अन्य राष्ट्रीय चित्र

स्वराज्य-घोषणा (रंगीन)	-)	भिखारिणी (रंगीन)	-)	स्वराज्य-दर्शन	।)
वंदेमातरम् (,,)	-)	वंदिनी (,,)	-)	हिंदुस्तान का राष्ट्रीय झंडा	≡)
सुहासिनीम् (,,)	-)	वैष्णवी (,,)	-)	शक्ति-प्रदान	।)
रिपुदलवारिणीम् (,,)	-)	ग़ाज़ी अनवरपाशा	-)	असहयोग-नौका	।)
सावित्री का त्रिरात्रिव्रत (,,)	-)	गाँधी की आँधी	=)	अहमदाबाद की कांग्रेस	।)
तिलकदर्शन	=)	असहयोगी महिलाएँ	≡)	स्वराज्य-प्रदान	≡)
ख़िलाफ़त और पंजाब	=)	रामायण	।)		

नैशनल चित्र—एक ही साथ १०० से ऊपर बहुत बढ़िया राष्ट्रीय नेताओं के चित्र—बीच में एक भाव-पूर्ण कईरंगा चित्र है, जिसमें नौका पर महात्मा गाँधी आदि पूज्य नेता बैठे हुए स्वराज्य-नौका को पार लगा रहे हैं। मूल्य ॥।), ४ एकसाथ लेने पर केवल २॥।) में।

राष्ट्रीय चित्र—यह भी नैशनल चित्र-जैसा ही सुंदर चित्र है। लेकिन इसके चित्र पहले से दूसरे प्रकार के और उससे किसी बात में कम नहीं हैं। इसका भी मूल्य ॥।) है। ४ एकसाथ लेने पर केवल २॥।) में।

रिआयत—इकट्ठे पाँच रु० के चित्र मँगानेवालों को दो आने रुपया कमीशन भी दिया जायगा।

संचालक—गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय, २०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

ऐतिहासिक-जगत् में एक अमूल्य रत्न

परीक्षार्थियों के लिये एक अपूर्व ग्रंथ

इँगलैंड का इतिहास

[लेखक—सुप्रसिद्ध हिंदी-लेखक प्रोफ़ेसर प्राणनाथ विद्यालंकार]

कैसे दुर्भाग्य की बात है कि राष्ट्र-भाषा हिंदी में इँगलैंड-जैसे स्वतंत्रता-प्रिय देश का—वर्तमान संसार की प्रधान शक्ति का—एक अच्छा-सा इतिहास भी अभी तक नहीं लिखा गया ! इँगलैंड-जैसे उन्नत देश का इतिहास हम पराधीन भारत-निवासियों के लिये कितना शिक्षाप्रद, कितना उपकारक और कितना सच्चा मार्ग-दर्शक हो सकता है, यह कहना अनावश्यक है । लेकिन तो भी हम भारत-वासी शासन-पद्धति में इँगलैंड को अपना आदर्श नहीं समझ सकते—ऐसा समझना हमारा भारी भ्रम है, क्योंकि भारतवर्ष राष्ट्रात्मक देश है और इँगलैंड एकात्मक । शासन-पद्धति तो हम स्विट्ज़रलैंड, अमेरिका और फ़्रांस से कुछ-कुछ सीख सकते हैं। परंतु शासन-पद्धति का उदय स्वतंत्रता प्राप्त होने पर ही हो सकता है। अब प्रश्न यह है कि वह कौन-सी स्वतंत्रता है, जिसकी प्राप्ति में जनता को यत्नशील होना चाहिए—संपूर्ण जातियों को अनथक परिश्रम करना चाहिए । उत्तर है 'आर्थिक स्वतंत्रता', क्योंकि आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करके समस्त स्वतंत्रता प्राप्त की जा सकती है और इस रहस्य का उद्घाटन यदि कोई देश कर सकता है, तो वह एक-मात्र इँगलैंड ही है।

दासता की विकट बेड़ियों में जकड़ी हुई—परदेशियों के प्रबल पैरों से कुचली हुई जातियों के लिये इस "आर्थिक सफलता"-रूपी हथियार का एक-मात्र आविष्कारकर्ता इँगलैंड ही है । अतः स्वतंत्रता-प्रिय आर्य-जाति के लिये यह "इँगलैंड का इतिहास" बहुत कुछ लाभदायक हो सकता है । अँगरेज़ी की ढेरों प्रसिद्ध-प्रसिद्ध पुस्तकों को पढ़कर और उनका अवलंब लेकर इस ग्रंथ-रत्न की रचना की गई है । भारतवासियों के उपयोग की दृष्टि से तो इसके जोड़ का इँगलैंड का इतिहास किसी भी भाषा में नहीं मिल सकता । इसकी हरएक सतर से हमें कुछ-न-कुछ शिक्षा अवश्य मिलेगी। यह सन् और तारीख़ों का संग्रह नहीं, बरन् सच्चा मार्ग-दर्शक इतिहास है । यह ग्रंथ हिंदी-साहित्य के गौरव को बढ़ानेवाला है। प्रत्येक सार्वजनिक-संस्था और पुस्तकालय में इसकी एक-एक प्रति रहनी चाहिए। कॉलेज के विद्यार्थियों के लिये तो यह अमूल्य ही है।

हर्ष का विषय है कि इस उत्कृष्ट और अपूर्व ग्रंथ को हिंदी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग ने अपनी मध्यमा-परीक्षा के कोर्स में नियत किया है। काग़ज़ बढ़िया। छपाई मनोहारिणी । प्रथम भाग का मूल्य २) सजिल्द २॥) दूसरा भाग भी छप रहा है।

हमारे यहाँ हिंदुस्थान-भर की हिंदी-पुस्तकें मिलती हैं। बड़ा सूचीपत्र मुफ़्त भेजा जाता है।

संचालक—गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय, २९-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

चित्र-कला का चमत्कार

भारतीय भावों का सत्कार

रंग-बिरंगे चित्रों का अपूर्व संग्रह

रमेश-चित्रावली

रचयिता—

"माधुरी" के चित्रकार बाबू रामेश्वरप्रसाद वर्मा

इस चित्रावली में बढ़िया-बढ़िया मनमोहक रंगीन पंद्रह चित्र हैं। सभी अच्छे आर्ट-पेपर पर बड़ी कुशलता से छापे गए हैं। साथ में चित्रों का परिचय भी सरस, ओजमयी व भाव-पूर्ण हिंदी-कविता में है, जिससे कि चित्र के पूरे-पूरे भाव को दर्शक हृदयंगम कर सके। कुछ चित्रों के भाव ये हैं—ललिता, कमलकुमारी, दीपक, शुकदेव को व्यास को समझाना, व्यास के विनय करने पर इंद्र का रंभा को बुलाकर शुकदेव को अपनी ओर खींचने के लिये भेजना, रंभा का अपने विचित्र हाव-भाव से शुक को मोहने के लिये प्रयत्न करना तथा निराश रंभा के मुख की उदासीनता—इत्यादि-इत्यादि।

इन चित्रों की प्रशंसा करना व्यर्थ है। जो देखता है, मुग्ध हो जाता है। वह स्वयं तो ग्राहक होता ही है, दूसरों से भी ग्राहक होने के लिये अनुरोध करता है। चीज़ ही ऐसी है। पुस्तक हर तरह से उपादेय बना दी गई है। इतने पर भी मूल्य सिर्फ़ २), डाक-ख़र्च आदि अलग। हमारे पास अब बहुत ही कम प्रतियाँ रह गई हैं इसलिये यदि आपको चित्र-कला से तनिक भी प्रेम है, तो इसकी एक प्रति आज ही पत्र डाल मँगा लीजिए; नहीं तो पीछे हाथ मलकर पछताना पड़ेगा क्योंकि इतने कम दामों में ऐसा चित्र-संग्रह कहीं मिलने का नहीं।

मनुष्य का आहार

खान-पान-विषय में, विस्तृत, कई धुरंधर विद्वानों द्वारा प्रशंसित, बिलकुल नए ढंग से डॉक्टरी, यूनानी और आयुर्वेदिक मत से अत्यंत मनोरंजन एवं सरल भाषा में लिखित, हिंदी में अपने विषय की पहली सचित्र पुस्तक है। इस पर काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा ने पदक दिया है। प्रत्येक गृहस्थ को पढ़ना चाहिए। हिंदी में इस जोड़ की इस विषय की पुस्तक अब तक नहीं थी। मूल्य केवल १)

संचालक—गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय, २९-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

स्टेज पर खेलने योग्य

कविताओं से परिपूर्ण

नाट्य-संसार के अनोखे तीन नाटक

१—मूर्ख-मंडली

[रचयिता—कविरत्न पं० रूपनारायण-जी पांडेय]

स्वर्गीय सुप्रसिद्ध नाटककार श्रीद्विजेंद्रलाल राय एम्० ए० के अत्यंत मनोरंजक और सभ्य-हास्य-रस-पूर्ण प्रहसन के आधार पर रंग-मंच पर खेले जाने के योग्य इसकी रचना की गई है। इसका आदर हिंदी-संसार ने उनके सभी नाटकों से अधिक किया है। इसे पढ़कर मारे हँसी के आप लोट-पोट हो जायँगे, हम दावे के साथ कहते हैं कि इससे बढ़कर मनोरंजक प्रहसन आपने हिंदी में न पढ़ा होगा! सभी हिंदी-पत्रों और विद्वानों ने इसकी प्रशंसा मुक्त कंठ से की है। थोड़े ही समय में इसके तीन संस्करण बिक चुके हैं। अब तक यह कम-से-कम ५० जगह खेला जा चुका है। चतुर्थावृत्ति छपकर तैयार है। छपाई-सफ़ाई बहुत उम्दा है। सजिल्द का मूल्य १), सादी का ॥=)

२—वीरपूजा

[अनुवादक—पं० रूपनारायणजी पांडेय]

बंगाल के स्टेजों पर खेलते समय, जनता पर अपूर्व प्रभाव पड़ता देख, सरकार द्वारा जिसका खेलना रोक दिया गया था, यह नाटक बंग-भाषा के सुप्रसिद्ध लेखक बा० हरनाथ बसु के उसी बँगला 'वीरपूजा' का हिंदी-अनुवाद है। इसमें वीर-रस और जातीय जोश का अच्छा समावेश है, इसे एक बार अवश्य अवलोकन करना चाहिए। मूल्य केवल १॥)

३—पूर्व भारत

[लेखक—हिंदी के प्रसिद्ध विद्वान्, कवि-श्रेष्ठ पं० श्यामविहारी मिश्र और पं० शुकदेवविहारी मिश्र]

यह एक मौलिक पौराणिक नाटक है। महाभारत के कथानक को लेकर इसकी रचना हुई है। उत्तरा-विवाह तक की कथा इसमें आ गई। मिश्र-बंधु-विनोद, हिंदी-नवरत्न आदि बीसों उत्कृष्ट ग्रंथों के रचयिता, हिंदी के मौलिक लेखक मिश्र-बंधुओं ने इसकी भी रचना की है। विद्वान् लेखक-द्वय ने नाटक के मुख्य पात्रों के चरित्रों को उज्ज्वल बनाने में बड़ा प्रयास किया है। यह पुस्तक कवित्व से कमनीय, नाटकत्व से निर्मल, सद्भावों से सुंदर और मौलिकता से मंडित है। काग़ज़ बढ़िया और छपाई भी बहुत ही सुंदर। मूल्य सादी ॥।=), सजिल्द १।)

संचालक—गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

BOOKS! BOOKS!! BOOKS!!!

The source of refreshment to mind oppressed by the indolence of the long-lezy summer-days. Benefits in two ways. Firstly, it brings energy and happiness to those who have nothing to do but to enjoy restlessly indoor games to no purpose and whiling the time away in sleeping throughout the day. Secondly, it undoubtedly increases the stock of knowledge. We give below some books selected by selves that will interest you greatly. 6¼ per cent. discount is allowed to the permanent customers of Ganga Pustakmala (Hindi Deptt.)

Novels.—

		Rs.	A.	P.
Hall-Caine.	The Bondman	3	1	0
	The Christian		1	0
	The Prodigal son	3	1	0
	Woman thou gavest me	3	1	0
	The Little Manx-Nation	3	1	0
	The Scape Goat	1	12	0
George Elliot.	Silas Marner	1	4	0
Do.	Mill on the floss	1	4	0
Daniel Defœ.	Robinson Crusœ (Described in detail) ...	1	4	0
Goldsmith.	The Vicar of Wakefield ...	1	4	0
Alexandra Dumas.	The three Musketeers	1	4	0

Books on Sexual Knowledge and science

Sexual knowledge for the young man	3	15	0
A guide to matrimonial-alliance	0	12	0
Husband wife and home	5	11	0
Married love	5	4	0

Speeches & Writings of some eminent persons

King George	1	0	0
Prince Edward	1	0	0
Gokhley	4	0	0
M. K. Gandhi	1	8	0
B. G. Tilak	2	0	0
Mohammad Ali Jinnah	2	0	0
Annie Besant	3	0	0
Swami Vevekanand	3	0	0
Sarojini Naidu	1	0	0

(For her other works, please consult the advertisements of 9th and 10th issues.)

Our Stock of English Books in general is both varied and large.

Please call at or write to—

GANGA PUSTAK-MALA KARYALAYA,
29-30, Aminabad Park, LUCKNOW.

जल्दी आर्डर भेज ग्राहकों में नाम लिखाइए

छप रहा है !!

छप रहा है !!

हिंदी-नवरत्न

अर्थात्

हिंदी-भाषा के नव सर्वोत्तम कवियों के आलोचना-पूर्ण जीवन-चरित्र

लेखक

पंडित गणेशविहारी मिश्र
,, श्यामविहारी मिश्र एम्० ए०
,, शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए०

इस पुस्तक की प्रशंसा बड़े-बड़े विद्वानों ने की है। इसमें क्रम से तुलसीदास, सूरदास, देव, विहारी, भूषण, केशव, मतिराम, चंद और हरिश्चंद्र, इन नव कवि-रत्नों के चित्र, चरित्र और आलोचनाएँ हैं। साहित्य-प्रेमी और साधारण-जन, सबको समान भाव से यह पुस्तक आनंद देगी। इस बार इसका यह दूसरा संस्करण हमारे कार्यालय से निकल रहा है। ऑक्टोबर १९२३ तक पुस्तक छपकर प्रकाशित हो जायगी। इसमें कई विशेषताएँ होंगी। अब की कबीर का चित्र, चरित्र और उनकी कविता की आलोचना इसमें बढ़ा दी गई है। गंगा-पुस्तकमाला की पुस्तकें अपनी सुंदर छपाई-सफ़ाई, अच्छे काग़ज़ तथा जिल्द की मज़बूती व ख़ूबसूरती के लिये स्वयं प्रसिद्ध हो रही हैं। सबसे बढ़कर ख़ूबी तो यह है कि उनमें एक भी अशुद्धि नहीं रहने पाती। नव-रत्न का यह संस्करण सब तरह आदर्श, अद्वितीय और सर्वांग-सुंदर होगा। मूल्य ५) के लगभग होगा। परंतु जो सज्जन सितंबर के अंत तक आर्डर के साथ ३॥) रु० भेज देंगे, उन्हें उतने ही में घर-बैठे पुस्तक मिल जायगी। डाक-ख़र्च भी न देना पड़ेगा। यह पुस्तक पटना-युनीवर्सिटी की बी० ए०-परीक्षा के कोर्स में नियत हुई है। फ़ौरन् आर्डर भेजिए।

संचालक—गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय,
२९-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

उपन्यास-सम्राट् श्रीयुत प्रेमचंदजी

की

मौलिक रचना

प्रेमाश्रम

पुस्तक क्या है, वर्तमान दशा का सच्चा चित्र है। विविध अवस्थाओं और भावों को बड़ी ख़ूबी से संयुक्त किया गया है। किसानों की दुर्दशा, ज़मींदारों के अत्याचार, पुलिस के कारनामे, वकीलों और डॉक्टरों का नैतिक पतन, धर्म के ढोंग में सरल-हृदया स्त्रियों का फँस जाना, देश-सेवियों के कष्ट और उनके पवित्र चरित्र, सरकारी नौकरी का दुष्परिणाम आदि भावों को लेखक ने इस ख़ूबी से चित्रित किया है कि एक बार शुरू करने पर बिना पूरा किए छोड़ने को दिल नहीं चाहता। सुंदर खादी की जिल्द-सहित-मूल्य केवल ३॥)

सप्तसरोज

इसमें सात अति मनोहर, उपदेश-प्रद गल्पें हैं, जिनका भारत की प्रायः सभी भाषाओं में अनुवाद निकल चुका है। हिंदी-संसार ने इसे कितना पसंद किया है इसका अनुमान केवल इसी से होगा कि साहित्य-सम्मेलन की प्रथमा परीक्षा तथा कई राष्ट्रीय स्कूलों के कोर्स में यह है। मूल्य ॥)

संग्राम

यों तो लेखक के उपन्यासों में ही नाटक का मज़ा आ जाता है फिर उनका लिखा नाटक कैसा होगा, यह बताने की आवश्यकता नहीं। प्रस्तुत नाटक में मनोभावों का जो चित्र उन्होंने खींचा है वह आप पढ़कर ही अंदाज़ा लगा सकते हैं। मूल्य १॥)

प्रेमपूर्णिमा

इसमें १५ अनूठी गल्पों का संग्रह है। प्रत्येक गल्प अपने ढंग की निराली है। भाषा की सजीवता, भाव की उत्कृष्टता और विषय की उच्चता का अनूठा संग्रह देखना हो, तो इस ग्रंथ को अवश्य पढ़िए। बीच-बीच में चित्र भी दिए गए हैं। खादी की सुंदर जिल्द-सहित मूल्य २)

सेवा-सदन

हिंदी-संसार का सर्वोत्तम, सुप्रसिद्ध सामाजिक उपन्यास। पतित-सुधार का बड़ा अनोखा मंत्र, हिंदू-समाज की कुरीतियाँ, त्यौहारों पर वेश्या-नृत्य और उसका कुपरिणाम, पश्चिमीय ढंग पर स्त्री-शिक्षा का कुफल आदि विषयों पर लेखक ने ख़ूब प्रकाश डाला है। मूल्य २)

मिलने का पता—

संचालक— गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, २९-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

खटमल की दवा

इस मूज़ी जानवर ने जहाँ ज़रा काटा, बस नींद हराम हो गई। अब बिस्तरे पर तलाश हो रही है। इधर मियाँ रोशनअली चिराग़ रोशन करके ढूँढ़ रहे हैं। अगर भागते हुए नज़र आ गए, फ़ौरन् मारे गए। क्यों जनाब, क्या इनके जान नहीं है जो आप इनके पीछे पड़े हैं, और उस पर तुर्रा यह है कि चारपाइयाँ धूप में डाली जाती हैं और उन पर गर्म पानी छिड़का जाता है, जिससे वे तड़प-तड़पकर जान देते हैं।

इस हत्या-कांड के देखने से हमको इस दवा की तलाश थी, जिससे विना तकलीफ़ खटमल भाग जावें। परमेश्वर को धन्यवाद है कि अब एक महात्माजी की कृपा से ऐसी जड़ी-बूटियों का सफ़ूफ़ हाथ आया है, जिसके इस्तेमाल करने से १०-१२ दिन में खटमल काफ़ूर हो जाते हैं। सब लोगों के लाभ के लिये क़ीमत सिर्फ़ ।) फ़ी पैकेट रक्खी गई है और ।-) के टिकट आने पर पैकेट विना और किसी ख़र्च के भेजा जा सकता है।

आजकल पार्सल का महसूल बढ़ जाने से १) से कम की वी० पी० नहीं भेजी जाती।

हर शहर में एजेंटों की ज़रूरत है।

पता—भगवानदास भार्गव ऐंड को०

नं० १४५८ नरही, लखनऊ।

अपूर्व आविष्कार

शुभ्र सुप्रसव चूर्ण

गर्भिणी जब प्रसव-काल में बिलकुल शिथिल हो जाती है और बच्चा होने की आशा नहीं रहती है उस समय इस दवा के देते ही गर्भिणी में नए बल का संचार होकर फ़ौरन् बच्चा पैदा हो जाता है।

विना तकलीफ़ अफ़ीम छोड़ने की दवा

चाहे कितना ही पुराना और कितनी ही मात्रा का खानेवाला अफ़ीमची क्यों न हो, यह दवा आदत छुटाकर ताक़त प्रदान कर नई ज़िंदगी में पैदा करती है।

पता—कविराज श्रीकृष्णचंद्र विशारद

८८, लोअर चितपुर रोड, कलकत्ता

घोटकर संगीतालय

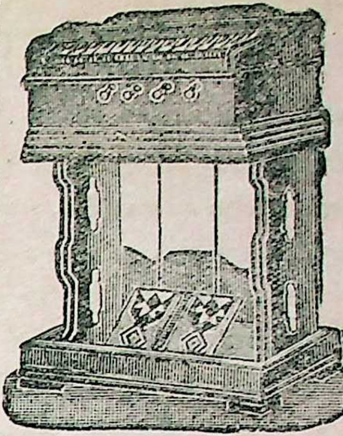

तीन महीने में हारमोनियम बजाने की तरकीब सिखा देंगे। तीन महीने में हारमोनियम सिखानेवाली पुस्तक छप रही है। इसमें गुजराती, मारवाड़ी, बंगाली और हिंदी तबले के बोल, छत्तीस राग-रागिनियों की तरकीब है। मूल्य २॥) एक महीने पहले ख़रीदारों में आगे नाम दर्ज करानेवालों को १) में ही मिलेगी। घोटकर हारमोनियम-फ़ैक्टरी में भारी-भारी क़ीमत के पैरिस रीड, फ़ोल्डिंग और हैंड हारमोनियम नए मिलते और फ़र्स्ट क्लास मरम्मत का काम होता है। एक आने का टिकट भेजकर सूचीपत्र मँगाइए।

बी० व्ही० घोटकर ऐंड कं०,

३०, अपर चितपुर रोड, कलकत्ता

भानु-कवि-कृत भारत-प्रसिद्ध

छंदःप्रभाकर

पिंगल

(पंचम संस्करण)

भारत के विद्वानों और सरकार से समादृत, साहित्य-परीक्षा और विश्व-विद्यालय पटना के बी० ए० कोर्स के लिये भी स्वीकृत हो चुका है। शीघ्रता कीजिए, हाथों-हाथ जा रहा है। मूल्य २) डाक-व्यय ।-)

मैनेजर जगन्नाथ-प्रेस, बिलासपुर, सी० पी०

हिंदी-होमियोपैथिक-चिकित्सा-सार

यह पुस्तक होमियोपैथिक-चिकित्सा सीखनेवालों के लिये सचमुच बड़ी भारी ख़ज़ाना है। क्योंकि इसमें होमियोपैथिक इलाज के नियम, हर बीमारी का लक्षण, पहिचान, कारण, इलाज, पथ्य इत्यादि-इत्यादि का पूरा हाल इतनी सरल हिंदी-भाषा में लिखा गया है कि मामूली हिंदी जाननेवाला, यहाँ तक कि स्त्रियाँ भी विना उस्ताद के इसको पढ़कर आसानी से इलाज कर सकती हैं। किताब ८०० पृष्ठों में संपूर्ण है। मूल्य सिर्फ़ ३॥) रु० डाक-महसूल ।-) एक रुपया आर्डर के साथ पेशगी भेजना चाहिए।

मिलने का पता—डा० यल० राय

पो० मुरादपुरा—पटना

हिंदी-सेवा-सदन की अपूर्व पुस्तकें

महारथी अर्जुन

आदर्श पुरुषों के चरित्र ही देश के लिये शिक्षा-ग्रहण का उत्कृष्ट साधन हैं । भारत के वीरों का स्मरण आते ही सब से पहले महारथी अर्जुन का नाम जिह्वा पर आ जाता है । इस महापुरुष ने अपने अपूर्व तप, अनुपम शौर्य, अमर्यादित साहस और प्रशंसनीय कार्यों से अपने समय में जो कर दिखाया था, वह मनुष्य-शक्ति का अप्रतिम उदाहरण अवश्य था । यदि आप अर्जुन के जन्म से लेकर मरण तक के संपूर्ण चरित्र को पढ़ना चाहते हैं तो इसे मँगाइए । इतना विस्तृत चरित्र अब तक कहीं नहीं प्रकाशित हुआ । इसके पढ़ने से प्रायः पूरे महाभारत का आनंद आ जाता है । स्थान-स्थान पर आर्ट-पेपर पर छपे हुए बढ़िया चित्रों ने विषय को और भी अधिक मनोहर बना दिया है । मूल्य १।) डाक-महसूल ।)

विश्व-विद्या-भंडार

ENCYCLOPÆDIA OF THE WISDOM OF THE EAST.

इस एक ग्रंथ में २८ विद्या और अनेक पुस्तकों का सार लिखा है जिसे विचारकर मनुष्य "सर्व-गुण-निधान" बन सकता है । यथा ईश्वर-स्तुति, चारों वर्णों और आश्रमों के धर्म-कर्म । वेद, स्मृति, षट्-शास्त्र और पुराणों का विषय-परिचय । तंत्र-शास्त्र—मारण, मोहन, वशीकरण आदि के यंत्र-मंत्र । सामुद्रिक-शास्त्र—हाथ देखकर फल कहना । स्वप्न-शास्त्र—स्वप्नों का शुभ-अशुभ फल जानना । शकुन-शास्त्र—छींक, बिल्ली, कुत्ता आदि के शकुन-फल और संवत् की तेजी-मंदी जानना । स्वर-शास्त्र—नासिका के स्वर से शुभ-अशुभ फल कहना । ज्योतिष-शास्त्र—जन्म-पत्र बनाना, फल कहना, मुहूर्त, प्रश्न और मृत्यु बताना । हठयोग-शास्त्र—योग-विधि, प्राणायाम से त्रिकालदर्शी बनना । ऐंद्रजालिक-विद्या—अर्थात् सिद्ध करामात और जादूगरी । शिल्प-शास्त्र—साबुन, रबर, मुहर, पेंसिल, तांबूल-विहार, ख़िज़ाब आदि बनाना । काम-शास्त्र—स्त्री-पुरुषों के जाति-भेद, सहवास-विधि, आसन, षट्-ऋतु-विहार । अश्व-शास्त्र—घोड़े के जाति-भेद, बुरे-भले लक्षण और औषधि । कृषि-शास्त्र—खेती से उत्तम फ़सल प्राप्त करना । नाट्य-शास्त्र—नाटक खेलने की विधि । वास्तु-शास्त्र—मकान बनाने के नियम । गान-विद्या—रागों के नाम, समय, स्वर-साधन, रस-भरे पद—ठुमरी, ग़ज़ल आदि । रसायन-विद्या—अनेक रसायनों का वर्णन । धनुर्विद्या—युद्ध-संबंधी बातें । वैद्यक-शास्त्र—रोगों की चिकित्सा तत्काल गुणकारी गुप्त नुस्खे । नीति-शास्त्र—नीति के उत्तम-उत्तम श्लोक भाषा-सहित । जल-तरण-विद्या—नदी में तैरने की विधि । ब्रह्म-विद्या—ब्रह्म-प्राप्ति का वर्णन । मिस्मरेज़िम-विद्या—मरी आत्मा को बुलाकर आश्चर्य-दायक बातें जानना । आदर्श-चरित्र—तिलक, गाँधी, मालवीयजी, लक्ष्मीबाई, शकुंतला आदि के जीवन-चरित्र । काव्य-संग्रह—पद्माकर आदि पुराने मैथिलीशरण आदि नवीन कवियों की रस-भरी कविताएँ । उपन्यास-गल्प-प्रहसन (हँसी दिलाने की बातें) भारत के बड़े-बड़े कारख़ानों के पते, पोस्टऑफ़िस, तार, रेलवे, चुंगी और चहरियों के जानने योग्य नियम, गणित के गुरु, ब्याज की जंत्री आदि कहाँ तक लिखें, देखने पर आप स्वयं प्रशंसा करेंगे । मूल्य १॥) जो कि गुण और ४२० पृष्ठों की संख्या के देखते हुए न्यवछावर-मात्र है । डाक महसूल ।)

श्रीभगवद्गीता

तुलसी-कृत रामायण के ढंग पर दोहा-चौपाई और छंदों में । इसके अंत में लोकमान्य बाल-गंगाधर तिलक के गीता के विषय में जो विचार हैं, वे भी उद्धृत किए हैं । इस पुस्तक की महात्मा गाँधी ने प्रशंसा की है । मूल्य ॥।) डाक-महसूल ≡)

पता—

मंत्री—हिंदी-सेवा-सदन, अलीगढ़ सिटी

ऐसी सस्ती घड़ियाँ आपको अन्य कहीं न मिलेंगी

नं० ५६४ चंद्रप्रभा जेबी घड़ी।

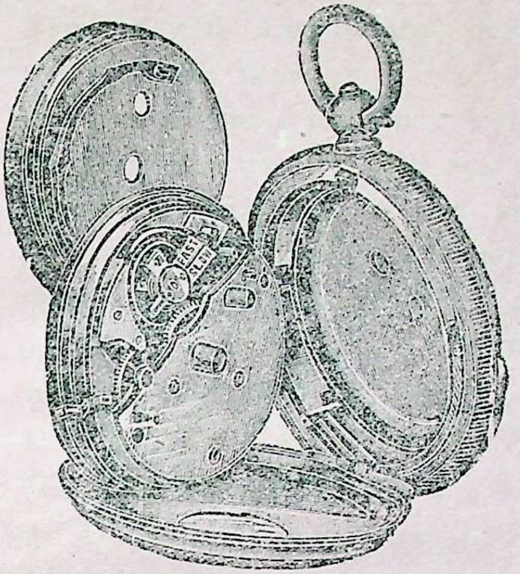

चाँदी से ज़्यादा चमकनेवाली चार ढकने की रुपए बराबर सुंदर नकाशीदार ऐसी शोभामयी घड़ी इस संसार में दूसरी नहीं। हाथ में रख लीजिए ज्योति निकलेगी। जान पड़ेगा कि आसमान का सितारा चमक रहा है—कल-पुर्ज़े खूब मज़बूत हैं—अलग चाभी चार ढक्कन होने के कारण टूटने-फूटने और ख़राब होने का रत्ती-भर भी डर नहीं है—अगर आप घड़ी लगाने के सच्चे शौक़ीन हैं तो इसे ही मँगाइए ५ वर्ष गारंटी दाम ८॥) रु० यही केमीकल सोने की दाम १२) डाक-ख़र्च ।≋) जुदा। गारंटी ४ वर्ष ‒) के स्टांप पर।

नं० १३३० आठ-रोज़ा पाकेट वाच।

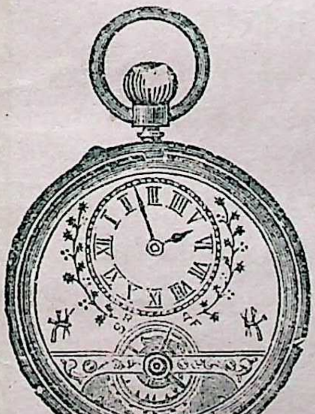

इस घड़ी में एक ही दिन चाभी दीजिए और आठ दिन तक बराबर टाइम लीजिए। घड़ी का चौथाई नीचे का हिस्सा खुला है जिससे सेकंड के पहिए का काँपना और लगातार थर्थराना अपूर्व खूबसूरती दिखाता है और ऊपरी जुयल बेल बूटेदार निहायत नफ़ीस और देखने में अत्यंत सुंदर और मज़बूत है दाम १३) रुपया डाक-ख़र्च ।≋)

३ घड़ियाँ इकट्ठी ख़रीदने से ४ घड़ियाँ भेजी जायँगी

नं० १८१ रेडियम रिष्ट वाच।

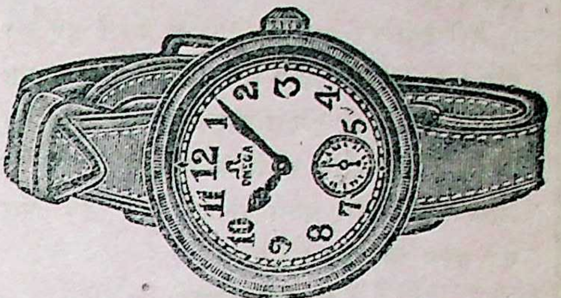

जो गुण घड़ी नं० ४६४ रेडियम पाकेट वाच में है ठीक वही गुण इसमें है। यदि फ़र्क़ है तो सिर्फ़ दो बात का। एक तो हाथ पर बाँधने की, दूसरे असली चाँदी की है। दाम १०) नेकल चाँदी की ८॥) घटिया ६॥) डाक ख़र्च ।≋) जुदा। गारंटी ३ वर्ष ‒) के स्टांप पर।

नं० ७१०३ सुनहली रिष्ट वाच।

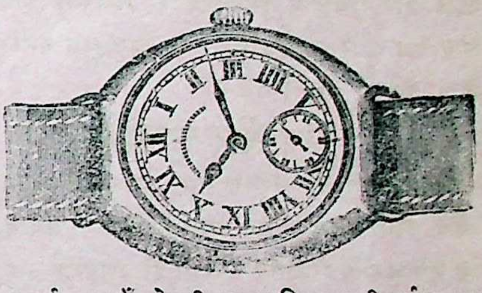

कलाई पर बाँधने की यह बढ़िया घड़ी रईस ताल्लुक़ेदार बड़े आदमियों के लायक़ बनवाई गई है जो सब सोने की-सी चमकदार, सोने को मात करनेवाली, निहायत सोफ़ियाना ढंग की है, जो एक बार ख़रीदेगा सो १०० बार मँगावेगा दाम ५ वर्ष गा० सहित १०)

नं० ४६४ रेडियम पाकेट वाच।

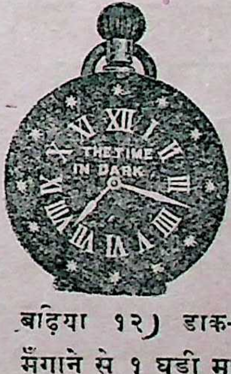

गारंटी ३॥ वर्ष ‒) स्टांप पर इस घड़ी के १२ अंकों और सेकिंड की सुइयों पर रेडियम लगा है इसलिये अंधकार के समय अक्षरों में से आप-ही-आप ज्योति निकलती है जिससे समय साफ़ दिखाई पड़ता है। दाम ७) बढ़िया १२) डाक-ख़र्च १ से ३ तक ॥) ३ घड़ी मँगाने से १ घड़ी मुफ़्त।

ऊपर छपी सब तरह की घड़ियों के
मिलने का पूरा पता

श्वेत कुष्ठ की अद्भुत जड़ी

प्रिय पाठक,

मेरी दवा एक पूज्य महात्मा की बताई हुई है। यदि एक दिन में तीन बार लगाने से श्वेत कुष्ठ आराम न हो, तो दुगुनी क़ीमत वापस। विश्वास न हो, तो एक आने का टिकट भेजकर प्रतिज्ञा-पत्र लिखवा लें। छोटे बक्स का दाम ३॥) रु० और बड़े बक्स का दाम ६) रु०।

साधुप्रदत्त

दाग़ चेचक (शीतला-माता) के दूर करने के लिये अमोघ औषध है। दाम ४।-) रु०।

चूर्ण चंद्रोदय

इसको मुँह पर मलने से सब प्रकार के दाग़, धब्बा, झाइयाँ, कील और मोहासे लुप्त हो जाते हैं। काले और कुँभलाए हुए चेहरे को मख़मल की तरह मुलायम और गुलाब की तरह ख़ूबसूरत बना देता है। क़ीमत ४।-) रु०।

अकसीर सूज़ाक

हर प्रकार के सूज़ाक नए या पुराने की हुक्मी और प्रमाणित दवा है। पहले ही दिन में मवाद, दर्द और जलन बंद होकर आराम हो जाता है। हज़ारों अच्छे हो गए हैं। क़ीमत ४।-) रु०। महसूल अलग।

नोट—पेशगी क़ीमत भेजने से महसूल माफ़; वरना ग्राहक के ज़िम्मे।

मैनेजर—साधुऔषधालय,
नं० ३३, दरभंगा (सिटी)

नपुंसकता, इंद्रिय-शिथिलता और स्वप्न-दोष की अमोघ औषध

कामविलास चूर्ण

हर तरह की नपुंसकता या धातु-संबंधी बीमारियाँ, शीघ्र वीर्य-पतन या स्वप्न-दोष होना इत्यादि की अमोघ औषध है। यह इतनी शक्तिमती है कि शक्ति-हीन आदमी भी पूर्ण बलिष्ठ होकर जीवन का आनंद उठा सकता है। और विशेष गुण एक इसमें यह है कि केशों को पकने नहीं देता और पके हुओं को रोकता है। ४० ख़ूराक की क़ीमत ७) रु०। महसूल अलग।

कामविलास तिला

बाल्यावस्था की भूल से इंद्रिय का टेढ़ापन, हस्त-क्रिया से जड़ पतला हो जाना, सिरा निकल जाना, बुढ़ापे के सबब से, ज़्यादा प्रसंग से सुस्त होकर बेकाम हो जाना इत्यादि इन सब प्रकार की इंद्रिय-संबंधी बीमारियों को विना कष्ट के दूर करके अंग परिपुष्ट बना देता है। क़ीमत फ़ी शीशी ४।-) रु०। महसूल अलग।

४० ख़ूराक कामविलास चूर्ण और एक शीशी कामविलास तिला ८=) रु०। महसूल अलग।

कामविलास वटिका

ये गोलियाँ बहुत देर तक ठहरनेवाली और संभोग के समय पूर्ण आनंद देनेवाली हैं। क़ीमत फ़ी दर्जन ४) रु०। महसूल अलग।

अकसीर आतशक

विना मुँह के और दस्त के सात दिन में अच्छी तरह आराम हो जाता है। हज़ारों अच्छे हो गए हैं। क़ीमत ५) रु०। महसूल अलग।

कुचस्तंभन

जिन स्त्रियों के स्तन ढीले और नीचे गिर गए हों, इसके व्यवहार करने से निश्चय असली हालत पर आ जायँगे। क़ीमत ४।-) रु०। महसूल अलग।

प्रदरचिकित्सा

स्त्रियों की बीमारी की औषध। लड़का उत्पन्न न होता हो और न मासिक-धर्म ठीक तरह से होता हो या उसमें कुछ कमी हो, स्वच्छ पानी निकलता हो और वायुगोला इत्यादि इन सब बीमारियों के लिये दवा अत्युत्तम है। स्त्रियों की सुंदरता और स्वरूप को ठीक तरह से रखता है। इसके व्यवहार करने से पहले ही मास में गर्भ हो जाता है और स्त्रियों को तरुण स्त्री बना देता है। दाम ४=) रु०। महसूल अलग।

मैनेजर—कामविलास कार्यालय,
नं० ३३, दरभंगा (बिहार)

[यदि हमारे कामशास्त्र की ८४ तसवीर देखकर आपका दिल फड़क न उठे, तो कहना विज्ञापन देनेवाले झूठे ही होते हैं]

सचित्र ! असली !! पुराना

५००) रु० इनाम नक़ली साबित करनेवाले को

समस्त हिंदी-संसार में मशहूर "अभ्युदय-प्रेस" में अमेरिकन सफ़ेद काग़ज़ पर शुद्धता-पूर्वक छपा हुआ है । दो पुस्तकों के ख़रीदार को डाक-व्यय माफ़ ।

बंबई, कलकत्ता, जयपुर और पूना के चित्रकारों की बनाई हुई तथा पूना में ही तीन रंगों में बढ़िया चिकने काग़ज़ पर ८४ चित्रों और आसनोंवाला

कश्मीरी कोकशास्त्र

पद्मिनी, चित्रिणी, संखिनी, और हस्तिनी तथा शशक, वृषभ, मृग और अश्व ।

इन चारों प्रकार के स्त्रियों तथा पुरुषों की पहचान, उनका वर्णन, स्त्री-पुरुष का जोड़ा, स्त्री को आयु-भर स्वस्थ, सुंदर, सौंदर्य की देवी और अपनी आज्ञा माननेवाली बनाए रखना, मन-चाही सुंदर तथा बलिष्ट संतान उत्पन्न करना, गर्भ की पुत्र-पुत्री का अथवा नेक व बद की पहचान, स्त्री-पुरुषों के जोड़े-जोड़ी का मिलान, संतान उत्पन्न न हो तो ज़रूर हो, पूरे सौ वर्ष तक हृष्ट-पुष्ट, सुंदर और स्वस्थ बने रहना, कुमारी-भेद और लक्षण, प्रेम, प्रीति, परदा, स्त्री और पुरुष का पारस्परिक संबंध, स्त्रियों का रजो-दर्शन अर्थात् ऋतु, उसका सामयिक प्रभाव, सहवास, विलासियों के लिये सहवास के नियम, गर्भाधान, चौरासी आसन, गर्भपरीक्षा, गर्भोत्पत्ति, गर्भवृद्धि, गर्भ रोकना, प्रसव और शिशुपालन, स्त्रियों के शृंगार, उनके संबंध में समस्त यौवनवर्द्धक आनंददायक मसाले, स्त्री-पुरुषों के कोकशास्त्र-संबंधी रोग और उनकी अद्भुत गुणकारी औषधियाँ, कामोद्दीपक दवाएँ, वशीकरण, स्त्री-पुरुषों की ८४ तसवीरें तथा ८४ आसनों के दिलचस्प हालात दर्ज हैं । यही नहीं, स्त्री तथा पुरुषों की गुप्त बीमारियाँ आदि कई एक ऐसी दर्ज हैं, जो कि यहाँ लिखना उचित नहीं ; पाठक समझ लें । क़ीमत ३) डा० म० ।=)

असली पुराना मिश्र का जादू सचित्र

(मिश्र-देश के प्रचलित जादू-विद्या की एक हस्त-लिखित पुस्तक का तर्जुमा)

अपनी छाया, सूर्य, शनि, चंद्रमा, मंगल आदि ग्रहों के संग करना

(मूसा फ़रऊन के समय की विचित्र बातें आप मँगाकरके देख लो)

(१) वशीकरण, (२) सूर्यवशीकरण, (३) चंद्रवशीकरण, (४) मंगल, (५) शनिवशीकरण आदि प्रत्येक ग्रह का वशीकरण और इसके सिवा अन्य कई चीज़ों के वशीकरण करने के लिये पूर्ण विधियों से युक्त चकित करनेवाले नुस्ख़े दर्ज किए हैं । उसके सिवा हर तरह के साधन रोगों पर करना, चाहे कोई रोग हो और औषधि से लाभ न होता हो । घर बैठे और देशों की सैर करना, पवन में उड़ते फिरना, जिसको चाहना बस कर लेना, दृष्टि से गुप्त हो जाना, दूसरे रूप में प्रकट होना, दूरदराज़ की वस्तु मँगवा लेना, देवपरी जिंदों को अपने अधिकार में रखना और इच्छानुसार उनसे काम लेना इत्यादि—तत्पश्चात् ऐसे साधन जो दैनिक आवश्यकताओं के लिये अत्यंत लाभकारी हैं । यदि यह पुस्तक लिखे अनुसार न हो तो वापस कर दो । क़ीमत सिर्फ़ १।।।≡) ही है । डा० म० ।–)

संसार में अद्भुत पुस्तक सच्ची करामात

ऐसी पुस्तक आज तक किसी भी भाषा या किसी देश में नहीं छपी थी, इसकी भी नक़ल लोग छापने लग गए हैं । उनसे बचो ! इसकी प्रशंसा विलायत तक छपी है । इसमें सभी बातों को प्रमाण से ठीक साबित किया है, जिन्हें लोग अब तक झूठा समझते हैं । इसमें योगविद्या, साबरीविद्या, यंत्र-मंत्र, मेस्मरेज़म, दृष्टिबंदी, अंतर्यामी, दूरदर्शी ये मोहन, वशीकरण, इच्छापूर्ण, छायापुरुष, हाज़िरात, फूँक, तत्र टोटके इत्यादि सब सैकड़ों ही पुस्तकों के मज़मून एक में । मूल्य २) है ; परंतु यह एक-एक हज़ार रुपए में सस्ती । डाक-ख़र्च ।–) सचित्र सूचीपत्र मँगवा लो ।

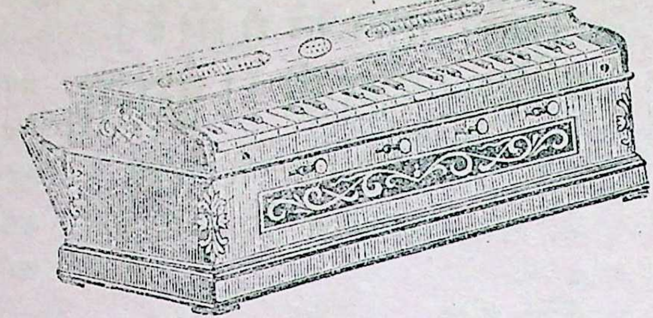

सक्सेस फ़्लूट हारमोनियम

देखने में सुंदर, मज़बूत अथच सस्ता

अगर आप सचमुच ही हाथ या पाँव का बाजा सागौन की लकड़ी का बना मज़बूत, सुंदर तथा मधुर आवाज़ का ख़रीदना चाहें, तो सक्सेस फ़्लूट हारमोनियम ख़रीदिए। आप देखते ही खुश होंगे। इसकी कारीगरी और सब सामान देखकर अनेक राजा-महाराजों ने सार्टिफ़िकेट भेजे हैं। इसकी उत्तमता देखकर सारे भारतवर्ष, बर्मा, सिलोन, सिंघापुर, जावा, मोरिशस, उत्तर और दक्षिण अफ़्रिका इत्यादि के लोग इसी को व्यवहार करते हैं। कृपाकर एक दफ़े परीक्षा कर आज़माइए। गारंटी ३ वर्ष। मूल्य ३५), ४०), ४५) औरइससे अधिक। आर्डर के साथ चौथाई क़ीमत पेशगी भेजकर अपना पूरा पता और स्टेशन का नाम साफ़ लिख भेजिए।

हिंदी हारमोनियम-शिक्षा मूल्य १) हरएक प्रकार का हाथ और पाँव का बाजा तथा सितार, इसराज, तबला, बाँसुरी, बिहाला, कनरिओनेट, करनेट, ग्रामोफोन इत्यादि वाद्य-यंत्र भी बिक्री के लिये मौजूद हैं। पता—

नेशनल हारमोनियम कंपनी,
१०-३ लोअर चितपुर रोड, कलकत्ता
(S) Telegrams—MUSICIANS, CALCUTTA.

मौक़ा न चूकिए, न पसंद होने पर, दाम वापस लीजिए, केवल एक महीने तक घड़ियों की विश्वासनीय गारंटी -) के गवर्नमेंट के टिकट पर देंगे, ३ घड़ी इकट्ठा मँगाने से ४ मिलेंगी

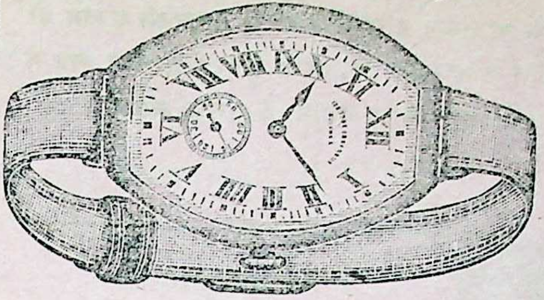

नं० ५५५ महारानी रिष्टवाच।

गारंटी १२ वर्ष -) के टिकट पर

रईस और तअल्लुक़ेदारों के फ़रमायशी आर्डरों में जानेवाली मशहूर महारानी घड़ी। घड़ियों की रानी। रिस्टेट वाचों की शिरोमणि। जगत्-प्रसिद्ध "ओमेगा फ़ैक्टरी" की बनी हुई मशीन। कल-पुर्ज़े ख़ूब मज़बूत। असली पक्के रोल्ड गोल्ड का केस। चम-चम चमकता हुआ चमकीला सुनहला रंग, जो हमेशा वैसा ही बना रहेगा। फ़ैंसी और ख़ूबसूरत डायल। देखने में प्यारी। चलने में मज़बूत। दाम १०), १२) बेस्ट क़ालिटी १४), १६), २०)

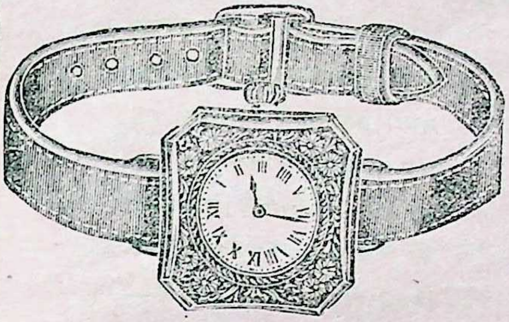

नं० ८७० प्रोफ़ेसर रिष्टवाच गारंटी १२ साल

घड़ियों की महारानी असली रोल्ड गोल्ड केस, चमचमाता हुआ रंग, ख़ूबसूरती में परियों को भी लजाती है। मज़बूती में, वेष्ट एंड वाच की मशीनरी से टक्कर लेती है। सच्चा टाइम बताने में अपना सानी नहीं रखती, गारंटी की मियाद बीत जाने पर भी यही मालूम होगा कि आज ही बनी है। दाम १०॥), १२), १४), १५), २०), २५) डाक-ख़र्च।-)

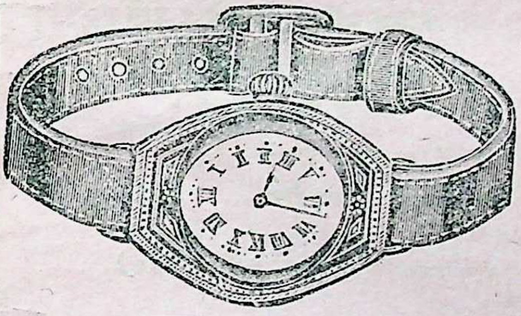

नं० ८३५ रेडियम मोहिनी रिष्टवाच गारंटी १० साल

इन बिजली की निहायत नफ़ीस हरे रंग की रेडियमवाली घड़ियों को देखकर चकित होना ही पड़ता है; क्योंकि इसमें दिन को तो सूर्य भगवान् की रोशनी से समय देखिए, रात को रेडियम की सहायता से, जहाँ शाम हुई अंधकार फैला कि रेडियम अपने आप जल उठेंगी, घड़ी के बारहों फ़िगरों पर, रेडियम लगी रहती है, जो अपने प्रकाश से घड़ी ही को क्या, कलाई को भी सरसब्ज़ कर देगी, दाम ८), १०), १२) रोल्ड गोल्ड केस की, १०), १२), १५), १६), २०), २५) डाक-ख़र्च।-)

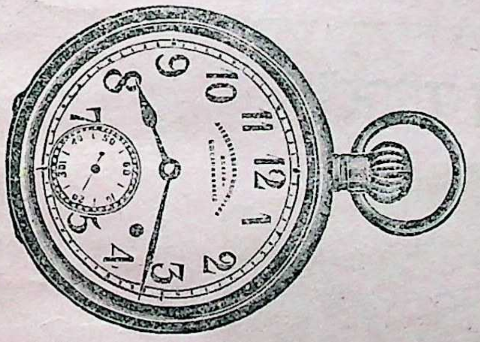

नं० ६४० इंडियन मेल पाकेट वाच गारंटी १० साल

ईस्ट इंडियन रेलवे की डाकगाड़ी के प्रधान गार्डों और मुख्य-मुख्य मोटर-कंपनियों और जहाज़ के कप्तानों ने न सिर्फ़ इस घड़ी की सुंदरता और उपयोगिता देखकर मुक्त कंठ से इसकी प्रशंसा की है, बल्कि वे लोग कहते हैं कि तेज़-से-तेज़ १०० मील फ़ी घंटे भर्राटे की रफ़्तार से जाती हुई मोटर में लगाकर बैठने से बंद नहीं होती। दाम ६) बेस्ट क़ालिटी का ६॥) सेकंड काँटेवाली छोटे साइज़ की ७) रंगूनमेल, बर्मामेल, बांबेमेल, मदरासमेल, पंजाबमेल, डेफ़ी अ.लमेल, सब तरह की घड़ियाँ हैं। दाम ६), ६॥) सेकंड काँटेवाली ७)

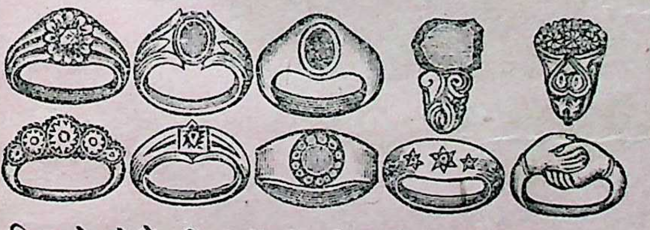

अष्टधाती, अंगूठियाँ, बिजली की शक्ति से परिपूर्ण तिस पर असली रेलवे मेल गार्ड घड़ी गारंटी १० साल की सार्टिफ़िकेट सहित इनाम—

पवित्र आठों धातु चमकते हुए, बिजली की शक्ति से परिपूर्ण पहरने से कोई भी व्याधि पास नहीं फटकती। किसी अँगूठी के नगीने के अंदर श्रीकृष्णजी अपनी परम प्यारी राधिका को कुंजवनों में मुरली बजाने की शिक्षा दे रहे हैं। किसी में गोवर्धन पर्वत नख में रक्खे हुए ब्रजमंडल को इंद्र के कोप से बचा रहे हैं। किसी में देवाधिदेव शंकरजी, सप्त ऋषियों सहित कैलास पर्वत में वार्तालाप कर रहे हैं आदि तरह-तरह के चित्र देखकर नयन संतुष्ट हो जायँगे। विचित्र बात तो यह है कि अँगूठी का नगीना सरसों के दाने के समान और भीतर के चित्र और दृश्य मीलों के मालूम होते हैं। दाम फ़ी अँगूठी १।), ६ अँगूठियाँ मँगाइएगा तो असली रेलवे मेल गार्ड घड़ी, गारंटी १० साल की इनाम मिलेगी। डाक-ख़र्च।-)

पता—मेसर्स एच० एस० शर्मा ऐंड को०, पोस्ट

बहुत सँभालकर चीज़ ख़रीदना चाहिए

कलकत्ता के बाज़ार में आजकल हारमोनियम की बहुत-सी दुकानें हो गई हैं। लेकिन डवारकीन के कारख़ाने का बना हुआ बाजा उन सब में श्रेष्ठ है—यह जिन लोगों ने हमारा बाजा बजाया है उनका मत है।

"ग्रामोला" अर्गौन रीड का—

तीन सप्तक, दोसेद रीड ..	४५)
तीन सप्तक, दोसेद बेस ...	५५)
तीन सप्तक, दोसेद जुडीस्पेशल	६०)

बहुत-से आदमी यह सोचते हैं कि रीड अच्छा होने से बाजा उम्दा उतरता है—उनकी यह धारणा भूल है। विंड-चेस्ट हारमोनियम का प्राण है। हम लोगों का "ग्रामोला" जर्मन या अमेरिकन रीड का बना हुआ है—लेकिन बढ़िया विंड-चेस्ट होने के कारण बाज़ार के पैरिस रीड के माफ़िक काम देता है।

पैरिस रीड का—

तीन सप्तक, दोसेद रीड ...	९०)
तीन सप्तक, दोसेद बेस-जुडी ...	१००)
साढ़े तीन सप्तक, दोसेद रीड ...	१२५)

आज ही आर्डर दीजिए
साथ १०) भेजिए।
बाक़ी वी० पी०।

"डवारकीन-फ़्लूट"

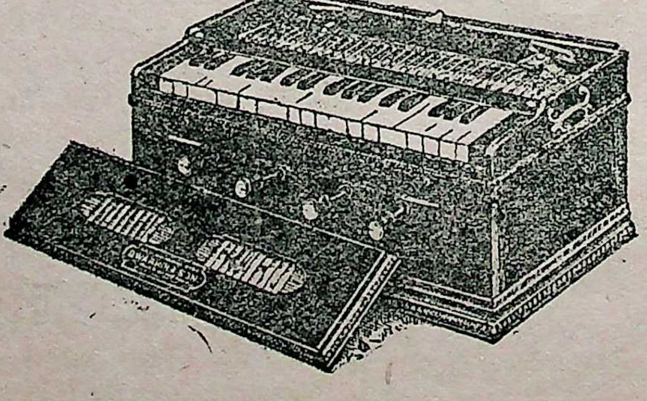

भारतवर्ष में पहले-पहल डवारकीन ही का हारमोनियम बना था—हम लोगों के हारमोनियम को आदर्श मानकर दूसरे बाजों का यथार्थ मूल्य जाँचना होता है। डवारकीन फ़्लूट हारमोनियम को भारत के संगीतज्ञ सब कोई श्रेष्ठ मानते हैं।

डवारकीन ऐंड संस, ८ नं० डलहाउसी स्कायर
कलकत्ता

तार का ठिकाना—"मिउज़िकल" टेलीफोन नं० १०५१.

लेख-सूची

पृष्ठ
१. क्या से क्या !(कविता) —[लेखक, पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय ५९३
२. हिंदी-पुस्तकालयों का संगठन—[लेखक, हिंदी-भूषण बाबू शिवपूजनसहाय ('मारवाड़ी-सुधार' और 'आदर्श'-संपादक) ५९४
३. काव्य में प्राकृतिक दृश्य—[लेखक, पं० रामचंद्र शुक्ल (हिंदी-अध्यापक काशी-विश्व-विद्यालय) ६०३
४. वृंदावन का प्रेम-महाविद्यालय ... ६१३
५. आप-बीती—[लेखक, श्रीयुत प्रेमचंद बी० ए० ... ... ६२७
६. बोतलानंद (व्यंग्य-चित्र और कविता)—[चित्रकार, श्रीयुत मोहनलाल महतो गया-वाल और कवि, मुंशी अजमेरी ... ६३२
पृष्ठ
७. मयंक-महिमा (कविता)—[लेखक, स्वर्गीय पं० बदरीनारायण उपाध्याय 'प्रेमघन'... ६३३
८. 'संजीवन-भाष्य' के कुछ अंश की संक्षिप्त आलोचना—[लेखक, श्रीयुत लक्ष्मणसिंह क्षत्रिय 'साहित्य-भूषण' ... ६३३
९. तिल (कविता)—[लेखक, श्रीयुत रामाज्ञा द्विवेदी "समीर" बी० ए० (ऑनर्स) ... ६४३
१०. जनमेजय या नाग-यज्ञ (नाटक)—[लेखक, बाबू जयशंकर 'प्रसाद' ... ६४४
११. तुम और मैं (कविता)—[लेखक, पं० सूर्यकांत त्रिपाठी ६५१
१२. ग्रीक राजनीतिक सिद्धांत—[लेखक, प्रोफ़ेसर बेणीप्रसाद एम्० ए० (प्रयाग-विश्व-विद्यालय के प्रोफ़ेसर) ६५२

बाबू कुँवर सिंह

जगदीशपुर-निवासी उज्जन-क्षत्रियकुलतिलक बाबू कुँवर सिंहकी यह सुविस्तृत जीवनी है। इस पुस्तकमें महाराजा विक्रमादित्यसे लेकर सन् १८५७के गदर और बाबू अमर सिंहके देहान्त-कालतकका इतिहास है। ऐतिहासिक पुस्तकोंके सिवा हफ्तों बाबू साहबकी जन्मभूमिमें रह कर इसका सामग्री-संग्रह किया गया है। इसमें दस रङ्गबिरङ्गे चित्र दिये गये हैं। बाबू साहबका प्रसिद्ध तिनरङ्गा शिकारी चित्र भी जिल्द पर है। बाबू कुँवर सिंहके जिस असली चित्रका दर्शन किसी भी ऐतिहासिकको नहीं हुआ था, वह भी बड़े परिश्रम और व्ययसे प्राप्त कर इस पुस्तकमें दे दिया गया है। इसके सिवा रेशमी जिल्दपर दुरङ्गा रैपर और बुक-मार्क भी दिये गये हैं। आज तक हिन्दीकी किसी भी पुस्तककी ऐसी सजावट नहीं हुई है। सचमुच इससे आपकी लाइब्रेरी जगमगा उठेगी। आज ही आर्डर दीजिये, नहीं तो दूसरे संस्करण तक पछताना पड़ेगा। इसके भूमिका-लेखक हैं आल इण्डिया कांग्रेस कमिटीके जेनरल सेक्रेटरी बाबू राजेन्द्रप्रसादजी एम० ए०, एम० एल०। केवल लागत भर मूल्य २॥) है।

मैनेजर, भारतीपुस्तकमाला, २२, सरकार लेन, कलकत्ता।

१३. अमेरिका की वर्तमान अवस्था—[लेखक, ठाकुर सूर्यकुमार वर्मा ... ६५४
१४. श्रीपुरस्थ शिला-लेख—[लेखक, पं० लोचनप्रसाद पांडेय ६५६
१५. बलिदान (कविता)—[लेखक, श्रीयुत चंडीप्रसाद 'हृदयेश' बी० ए०... ... ६६४
१६. विलंब-नय (कविता)—[लेखक, श्रीयुत 'गिरीश'... ... ... ६६४
१७. विकटा (व्यंग्य-चित्र और कविता)—[चित्रकार, श्रीयुत गुरुस्वामी और कवि, मुंशी अजमेरी ६६५
१८. संगीत-सुधा—[स्वरकार, मास्टर भोगीलाल-नरोत्तमदास और शब्दकार, पं० गोविंदवल्लभ पंत ६६६
१९. सुमन-संचय—[लेखकगण, पं० बलदेव उपाध्याय एम्० ए०, विशारद, पं० गंगाप्रसाद अग्निहोत्री, श्रीयुत मकरंद दौंड्याल, पं० लोचनप्रसाद पांडेय, पं० अमरनाथ झा एम्० ए० (प्रोफ़ेसर प्रयाग-विश्व-विद्यालय) और श्रीयुत कनकाप्रसाद चौधरी ... ६६८
२०. विज्ञान-वाटिका—[लेखक, श्रीयुत रमेशप्रसाद बी० एस्-सी०, केमिस्ट ... ६७८
२१. महिला-मनोरंजन—[लेखकगण, श्रीमती इंदुमती शर्मा, श्रीमती धर्म-शीला जायसवाल, पं० गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' और पं० भूपनारायण दीक्षित बी० ए०, एल्० टी० ... ६८३
२२. पुस्तक-परिचय ६८
२३. साहित्य-सूचना ६९
२४. विविध विषय ६९
२५. चित्र-चर्चा ७१

जीवन का आनंद

विना मादक-द्रव्य-सेवन के स्तंभन प्राप्त करो

बादशाह, नवाब, राजा, महाराजा और धनी-मानी लोगों ने ऐसी चीज़ों के लिये सारी दुनिया छान डाली, पर सफल न हुए । जीवन पर्यंत अध्ययन और अन्वेषण के अनंतर स्खलित होने से अपनी इच्छानुसार रुकावट के लिये, मैंने एक साधारण, सरल और व्यावहारिक यौगिक (वैज्ञानिक) युक्ति निकाली है ।

आनंद लूटो

किसी भी मूल्य पर सस्ता है । मूल्य १०००) लेकिन यदि आप इस पत्रिका का हवाला देते हुए, इसके भेद को गुप्त रखने के लिये अपने हस्ताक्षरों में "सादर वचन" देंगे और इसके लिये लिखेंगे, तो—

केवल { एक सौ रुपया / विदेशों के लिये १० गिनी } आज

अचूक अवसर सामने है । इसे जाने न दो और लूटो ।

जीवन का आनंद

अभी मूल्य भेजकर पत्र लिखो—

Dr : G.S.D. Sharman, G. Sc., N. Y. (U.S.A), Ps D., Ph.D. Arg D. Ped:
Vidyabhushan Yogvidya Maharnawa etc:
Specialist in Drugless Healing
Dook: L. M. Success House,
Fatepur Sikri, Agra, India.

चित्र-सूची

(क) रंगीन

पृष्ठ
१. सिंदबाद जहाज़ी—[चित्रकार, डॉक्टर अवनींद्रनाथ ठाकुर सी० आई० ई० ... ५९३
२. कृष्ण-यशोदा —[चित्रकार, श्रीयुत काशिनाथ-गणेश खातू ६४०
३. सागरिका का छुटकारा ६९६

(ख) व्यंग्य

१. बोतलानंद—[चित्रकार, श्रीयुत मोहनलाल महतो गयावाल ६३२
२. विकटा—[चित्रकार, श्रीयुत गुरुस्वामी ६६५

(ग) सादे

१. सुप्रसिद्ध देश-भक्त राजा महेंद्रप्रताप ... ६१४
२. प्रेम-महाविद्यालय-भवन (सामने का दृश्य) ६१५
३. मेकेनिकल और इंजीनियरिंग-क्लास (विद्यार्थी एंजिन तथा रंदा आदि मशीनों पर कार्य कर रहे हैं) ६१६
४. मेकेनिकल इंजीनियरिंग-क्लास—बॉयलर और एंजिन-घर (मोटर, बॉयलर और एंजिन पर काम हो रहा है) ६१७
५. लकड़ी के काम की श्रेणी (विद्यार्थी लकड़ी का काम कर रहे हैं, और हारमोनियम बना रहे हैं) ६१८
६. दरी और क़ालीन की श्रेणी (विद्यार्थी क़ालीन और दरी बुन रहे हैं) ६१९
७. वस्त्र-कला-श्रेणी (विद्यार्थी रुई धुन रहे हैं, सूत कात रहे हैं, और कपड़ा बुन रहे हैं)... ६२०
८. चीनी और मिट्टी के काम की श्रेणी (विद्यार्थी चीनी और मिट्टी के बर्तन बना रहे हैं) ... ६२१
९. ढलाई-घर (विद्यार्थी साँचे बना रहे हैं, और लोहे आदि के पुर्ज़े ढाल रहे हैं) ... ६२२
१०. कॉमर्स-क्लास (पीछे की पंक्ति टाइप कर रही है, और सामने के विद्यार्थी बुक-कीपिंग और शॉर्ट-हैंड-राइटिंग सीख रहे हैं) ६२३

अद्भुत आविष्कार ! अद्भुत आविष्कार ! !

श्रीकाशी-धाम के जगद्विख्यात काशी सुर्ती, ज़र्दा, जाफ़रानी पत्ती और पान-मसाला इत्यादि के प्रस्तुतकारक तथा विक्रेता

बदलराम लक्ष्मीनारायण का नया आविष्कार किया हुआ बदलराम मारका

पान-विलास

बदलराम लक्ष्मीनारायण का परिचय आप भली भाँति उनके बनाए हुए काशी सुर्ती, ज़र्दा इत्यादि नाना प्रकार के पदार्थों से पा चुके हैं। वे जिस परिश्रम तथा वैज्ञानिक रीति से सुर्ती, ज़र्दा तैयार करके सर्व-साधारण में यशस्वी हुए हैं, उसको पुनः उल्लेख करना हम निष्प्रयोजन समझते हैं। उन्होंने ही आज फिर सर्व-साधारण का अभाव दूर करने के लिये विलासिता की सामग्री 'पान-विलास' की गोलियों का अद्भुत आविष्कार किया है।

यह गोलियाँ ऐसी वैज्ञानिक रीति से बनाई गई हैं कि जिसको आज तक कोई नहीं बना सका। परीक्षा प्रार्थनीय है।

मूल्य, छोटी शीशी -) आना, बड़ी ।=) आना, मझली =) आना।

सुवर्ण-पदक प्राप्त

पता—बदलराम लक्ष्मीनारायण
बनारस-सिटी

पृष्ठ

११. महिला-वस्त्र-कला-श्रेणी (महिलाएँ कपड़ा बुन और सूत कात रही हैं) ६२४
१२. प्रेम-छात्रालय (भीतर का दृश्य) ... ६२५
१३. वर्क-शॉप (सामने का दृश्य) ६२६
१४. 'न्यूयार्क-वर्ल्ड' का प्रेस ६५६
१५. एक मेट्रोपोलीटन दैनिक का फ़ोटो-विभाग (देखिए, निगेटिव फ़ाइलों से ऊँची अलमारियाँ खचाखच भरी हुई हैं) ६५७
१६. समाचार-पत्र बेचनेवाला लड़का ... ६५८
१७. न्यूयार्क-टाइम्स का प्रेस आदि (कागज़ के तीन रोल अनेक मशीनों में होकर, १ मिनट में १ टन से भी अधिक की गति से, छप और मुड़मुड़ाकर अपने आप तैयार हो रहे हैं) ६५९
१८. कस्तूरा (पहाड़ी क़िस्म) ६७०
१९. सिर के सम्मुख की हड्डियों का पंजर ... ६७०
२०. सिर की हड्डियाँ ६७०

पृष्ठ

२१. कस्तूरी की थैली ६७१
२२. स्वर्गीय सेठ जे० एफ़० मदन ६७५
२३. चीनी स्त्री का पैर (एक्स-किरण से लिया हुआ फ़ोटो। केवल हड्डियाँ ही आई हैं। नीचे लंबी-लंबी लोहे की कीलें दिखलाई देती हैं। मांस या चमड़ा नहीं देख पड़ता)... ... ६७९
२४. स्वाभाविक पैर (एक्स-किरण से लिया हुआ चित्र) ६७९
२५. कृत्रिम आँख ६८०
२६. जल बरसानेवाले वायु-यान ६८१
२७. कुहरा दूर करने का बेलून ६८१
२८. बातें करनेवाला सूत्र... ... ... ६८२
२९. बातें करनेवाला सूत्र पारलोग्राफ़ ... ६८२
३०. स्वर्गीया मा साहब पाँचीबाई ६८४
३१. लाला लाजपतराय ७०१
३२. स्वर्गीय मुंशी देवीप्रसाद मुंसिफ़ ... ७०८
३३. नाभा-नरेश ७०९
३४. महाराजा पटियाला ७१०

बनाना सीखो

बरफ़, लेमनेड, जिंजरेड, आरेंजेड और सोडावाटर, सस्ता और बढ़िया पाउडर, सब तरह का शरबत, रस और शराब घर बैठे विना किसी मशीन के बनाना सीखो । विज्ञान और केमेस्ट्री के जानने की ज़रूरत नहीं। मामूली तरीक़ों से बनाना बहुत सरल और क़ीमत भी नाम-मात्र । ये बातें, रोज़गारियों, शहरवालों और गाँववालों के बराबर काम की हैं। किसी तादाद में तैयार की जा सकती हैं । हिदायतों के साथ हर नुसख़ों का दाम सिर्फ़ पाँच रुपया (विदेश के लिये ११ शिलिंग)

चूहा, चींटी, दीमक, खटमल, माछी, मक्खियाँ, मच्छड़, भुनगा, कीड़ा, पतंगा इत्यादि के नाश करने के लिये भी पूरी हिदायतों के साथ, सरल नुसख़े दिए जाते हैं । दाम हरएक का तीन रुपया बाहर का सात शिलिंग ।

जीवन की किसी आधि-व्याधि के लिये भी नुसख़े लिखे जा सकते हैं । अपनी ज़रूरत लिखकर पूछो। मूल्य भेजकर पत्र लिखो ।

डॉ० जी० एस० डी० शर्मन जी० एस्-सी०, यन० वाई (U.S.A.) पी० एस० डी०, पी० एच० डी०, (Ary:) डी० पेड,
डिपार्टमेंट, एल० एम० सक्सेस हाउस।
फतेहपुर सीकरी, आगरा

सिंदबाद जहाज़ी

[चित्रकार—डॉक्टर अवनींद्रनाथ ठाकुर सी० आई० ई०]

N. K. Press, Lucknow.

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
111025

पढ़े-लिखे बालकों के दो खिलौने

प्रत्येक गृहस्थ के यहाँ
रहना चाहिए।

हमारी पहेली बूझोगे?

पहेली-बुझौवल बालकों के दिल-बहलाव की बड़ी भारी चीज़ है। स्कूलों में पढ़नेवाले छोटे-छोटे बालक पहेली बूझने के बड़े शौक़ीन होते हैं। एक बालक कहता है—"एक संदूक़ काँटे जड़ी, जब खोलो तब चंपा-कली", तब दूसरे बालक इसके भिन्न-भिन्न उत्तर बताते हैं, और अंत में इसका सही उत्तर 'कटहल' निकलता है। इस पहेली-बुझौवल द्वारा बालकों का मन-बहलाव होने के साथ ही उनकी बुद्धि बढ़ती और उन्हें संसारी वस्तुओं का ज्ञान होता है।

हिंदी में इस विषय की कोई पुस्तक न होने के कारण, हमने "पहेली-बुझौवल" नाम की पुस्तक बहुत परिश्रम से अभी तैयार कराई है। इसमें लगभग ४०० पहेलियाँ हैं और सब पहेलियों के उत्तर भी दिए गए हैं। मूल्य केवल ॥), डाक-ख़र्च अलग। पुस्तक मोटे काग़ज़ पर, बड़े अक्षरों में, छापी गई है।

अपने बालकों का हित चाहनेवाले प्रत्येक माता-पिता और शिक्षक को यह पुस्तक उनके हाथ में देनी चाहिए।

मज़ेदार कहानियाँ

कौन बालक ऐसा होगा, जिसे कहानियाँ सुनने का शौक़ न होवे? कई बालकों को तो, रात को अपनी दादी या नानी से कहानी सुने बिना, नींद ही नहीं आती। इन कहानियों का प्रभाव भी बालकों की बुद्धि पर बहुत अच्छा पड़ता तथा उनकी कल्पना-शक्ति की उन्नति होती है।

वैसे तो हिंदी में कहानियों की पुस्तकों की कमी नहीं है; पर ऐसी पुस्तकें सचमुच ही बहुत कम हैं, जो बालकों के लिये उपयोगी होवें। "मज़ेदार कहानियाँ"-नामक पुस्तक की विशेषता यही है कि इसकी कहानियों की भाषा ऐसी सरल रक्खी गई है कि ७-८ वर्ष अवस्था के बालक भी इसे आसानी से समझ सकें। इसमें १६ कहानियाँ हैं, जिनमें से कुछ के नाम ये हैं—सात रानियाँ, केतकी का फूल, अनार शाहज़ादी, सोने का वृक्ष, बहराम चोट्टा, परियाँ और राजकुमार। इनमें से कई कहानियाँ "हातिमताई" और "अलिफ़लैला" की कहानियों के बराबर मज़ेदार हैं।

पृष्ठ-संख्या २००, मूल्य १), डाक-ख़र्च अलग।

पता—
मिश्र-बंधु-कार्यालय
दीक्षितपुरा, जबलपुर

आवश्यकता

(१) सर्व-श्रेष्ठ मासिक पत्रिका माधुरी का और सुप्रसिद्ध गंगा-पुस्तकमाला की सर्वोत्कृष्ट पुस्तकों का और भी अधिक प्रचार करने के लिये हमें और १०० एजेंटों और ट्रैवलिंग एजेंटों की आवश्यकता है। हमारे एजेंट १००)-२००) तक कमा रहे हैं। कारण, हमारी पत्रिका और किताबें हिंदुस्थान-भर में खूब मशहूर हो चुकी हैं। लाखों मनुष्य उन्हें पढ़ रहे हैं। अतएव उनकी खपत एजेंट लोग आसानी के साथ—थोड़े-से परिश्रम से ही—अन्य मासिक पत्रिकाओं और पुस्तकों की अपेक्षा कहीं अधिक, कर लेते हैं। दिखलाते ही लोग उनके ग्राहक बन जाते हैं। फिर बाहरी—हिंदुस्थान-भर के प्रकाशकों की—हिंदी-पुस्तकें भी भरपूर कमीशन पर हम उनको बेचने के लिये देते हैं। क्या ये सब सुविधाएँ और कहीं उन्हें मिल सकती हैं? लेकिन ५०) या १००) की ज़मानत ज़रूरी है। जो सज्जन ज़मानत जमा करके हमारे एजेंट या ट्रैवलिंग एजेंट बनना चाहें, वे कृपा करके हमसे एजेंटों के लिये नियम मँगा लें, और फ़ौरन् एजेंट बनकर हिंदी-सेवा के पुनीत कार्य में हमारा हाथ बटाएँ, और खुद भी रुपया कमाएँ। इस समय हमारी पत्रिका और पुस्तकों की चारों ओर धूम मची हुई है। अतएव हिंदी-प्रेमी एजेंटों के लिये हिंदी-सेवा करने, आर्थिक लाभ उठाने और प्रचार-कार्य में अपना अनुभव और अभ्यास बढ़ाने के लिये यही सबसे उपयुक्त समय है।

(२) गंगा-पुस्तकमाला के लिये एक सहकारी संपादक। संपादन-कार्य का अनुभव आवश्यक है। वेतन योग्यतानुसार ५०) से ८०) तक।

(३) गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय के बुक-डिपो-विभाग के लिये ८ क्लर्क। पत्र-व्यवहार करने तथा हिसाब-किताब रखने की दक्षता आवश्यक है। कुछ अँगरेज़ी की भी योग्यता होनी चाहिए। वेतन योग्यतानुसार ३०) तक।

(४) नवलकिशोर-प्रेस के लिये २५-३० तेज़ कंपोज़ीटर। वेतन योग्यतानुसार।

संचालक गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय

२९-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

माधुरी की ग्राहक-संख्या

आज ५३४६ हो चुकी है !

अतएव, हमारे अनुमान के अनुसार इसने प्रचार में भी हिंदी का आज तक का Record beat down कर दिया ! इतने ग्राहक क्या कभी हिंदी की किसी मासिक पत्रिका के हुए हैं ? अस्तु । अब हमें पूरा विश्वास हो गया है कि आगामी अर्थात् श्रावण की संख्या तक, जो कि "सम्मेलन-संख्या" की तरह ही हमारी एक विशेष संख्या—"तुलसी-संख्या"—होगी, माधुरी के लगभग

६००० ग्राहक हो जायँगे !!

एक साल के अंदर ही इतने ग्राहक हो जाना माधुरी की सर्वोत्कृष्टता और लोकप्रियता का बहुत भारी प्रमाण है । किसी मासिक पत्रिका के १ साल के अंदर ही ६० ० ग्राहक हो जाना हिंदी ही के नहीं, हिंदुस्थान की अन्य उन्नत भाषाओं के साहित्य के इतिहास में भी एक अभूतपूर्व घटना है । जितने ग्राहक हिंदी की अच्छी-से-अच्छी मासिक पत्रिकाओं ने १०-१०, १२-१२ वर्ष में नहीं प्राप्त किए, उससे कहीं अधिक माधुरी ने १ वर्ष में ही बना डाले ! कैसा आश्चर्यजनक व्यापार है !!

श्रावण-संख्या से ही अब हम

माधुरी की ८००० प्रतियाँ छाप रहे हैं !!!

लेकिन श्रावण-शुक्ल ७ अर्थात् १८ अगस्त तक माधुरी के ६००० ग्राहक अवश्य बना डालने की माधुरी के प्रेमी एजेंट, ग्राहक और शुभचिंतक प्राण-पण से चेष्टा करें । १ मास के अंदर माधुरी-जैसी सर्वप्रिय पत्रिका के और ६५४ ग्राहक बना डालना कौन-सी बड़ी बात है ?

पिछली संख्याएँ

माधुरी के नए ग्राहक अब ९वीं अर्थात् "सम्मेलन-संख्या" से बनाए जा रहे हैं । कारण, पहली ६ संख्याएँ तो महीनों पहले ख़त्म हो चुकी हैं ; ७वीं और ८वीं संख्याओं की केवल १७५-१७५ प्रतियाँ हमने इस उद्देश्य से बचा रक्खी हैं कि वे केवल उन्हें ही दी जायँ, जो माधुरी के ख़ुद तो ग्राहक बनें ही, साथ ही अपने किसी १ इष्ट-मित्र को भी उसका ग्राहक बनावें । अब तक प्रकाशित माधुरी की संख्याओं में से ९वीं, १०वीं और ११वीं सबसे अच्छी हैं ; अतएव उन्हें तो नए ग्राहकों को अवश्य ही लेना चाहिए । उनकी भी थोड़ी-सी ही प्रतियाँ रह गई हैं । शीघ्रता कीजिए ।

विशेष सूचनाएँ

(१) जो लोग ६ ग्राहक बनावेंगे, उन्हें, यदि वे चाहेंगे तो, माधुरी साल-भर तक मुफ़्त मिलती रहेगी ।

(२) जो हिंदी-हितैषी सज्जन हमारे ग्राहक बढ़ावेंगे, उनका नाम साल के अंत में सधन्यवाद माधुरी में प्रकाशित किया जायगा । यदि आप हिंदी-साहित्य की श्री-वृद्धि चाहते हों, तो इस पुनीत कार्य में दिल खोलकर हमारी मदद कीजिए । कहना न होगा कि बड़े-बड़े हिंदी-प्रेमी तालुक़ेदार, रईस और सुशिक्षित सज्जन हमारे ग्राहक बढ़ा रहे हैं ।

निवेदक—

मैनेजर माधुरी, लखनऊ

हिंदी-संसार के दिग्गज विद्वानों द्वारा प्रशंसित

सुप्रसिद्ध

गंगा-पुस्तकमाला

के

स्वयं स्थायी ग्राहक बनिए और अपने इष्ट-मित्रों को आग्रह करके बनाइए !

क्योंकि

(१) जो ग्रंथ भाषा और भाव दोनों में उच्च श्रेणी के, उदार भावों से परिपूर्ण, मानव-चरित्र को उन्नत करनेवाले और वृद्ध, युवक और वनिता सभी के लिये उपयोगी होते हैं, वही इसमें प्रकाशित किए जाते हैं—इसमें गंदे ग्रंथों की गुज़र नहीं होने पाती।

(२) छपने से पहले इसके ग्रंथों की भाषा खूब देख-रेख के साथ सरस, सरल, मधुर और मुहाविरेदार कर दी जाती है । ग्रंथ बहुत शुद्ध छपते हैं । संशोधन और संपादन का कार्य बड़ी योग्यता और परिश्रम के साथ किया जाता है।

(३) इसकी पुस्तकें टाइप, काग़ज़, छपाई-सफ़ाई और जिल्द-बंदी आदि सभी बातों में अनुपम होती हैं। फिर भी मूल्य अपेक्षा-कृत कम रक्खा जाता है।

(४) वर्तमान पुस्तक-मालाओं में इसका प्रचार भी सबसे अधिक है। थोड़े ही समय में इसके अधिकांश ग्रंथों के ३-३ और ४-४ संस्करण हो चुके हैं।

(५) इसके नियम स्थायी ग्राहकों के लिये जितने सुबीते के—जितने लाभदायक हैं, उतने और किसी भी माला के नहीं—

प्रवेश-फ़ी केवल ॥) ; प्रकाशित हो चुकी या होनेवाली पुस्तकें लेना या न लेना ग्राहकों की इच्छा पर निर्भर है, कोई बंधन नहीं। हिंदुस्थान-भर के हिंदी-प्रकाशकों की प्रायः सभी पुस्तकों पर एक आना रुपया कमीशन भी दिया जाता है।

इसलिये

हिंदी-साहित्य की उन्नति चाहनेवाले प्रत्येक सज्जन को इसके ग्रंथों का प्रचार करना चाहिए। कृपया शीघ्र ही ग्राहकों में नाम लिखाइए।

बड़ा सूचीपत्र -) का टिकट भेजकर मुफ़्त मँगाइए

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय

२९-३०, अमीनाबाद-पार्क

लखनऊ

गंगा-पुस्तकमाला के नए ग्रंथ

सम्राट् चंद्रगुप्त

[लेखक—लक्ष्मण-संपादक पं० बालमुकुंद वाजपेयी]

भारत के प्रथम ऐतिहासिक सम्राट् की यह संक्षिप्त, किंतु सर्वांग-पूर्ण जीवनी बड़ी खोज के साथ लिखी गई है। यह पुस्तक इतिहास-प्रेमियों के पढ़ने की चीज़ है। मूल्य ।)

बहता हुआ फूल

[अनुवादक—माधुरी-संपादक पं० रूपनारायणजी पांडेय]

वंग-भाषा के लेखकों में श्रीयुत बाबू चारु वंद्योपाध्याय का नाम खूब प्रसिद्ध है। आपने बँगला में कई उपन्यास लिखे हैं। यह उपन्यास उन्हीं के "स्रोतेर फूल" नाम के श्रेष्ठ उपन्यास का हिंदी-अनुवाद है। चरित्र-चित्रण जिस सुंदरता के साथ किया गया है, उसे देखकर आप मुग्ध हुए विना नहीं रह सकेंगे। अनुवाद साधारण बोल-चाल की भाषा में किया गया है, अतः सर्व-साधारण इसे विना कष्ट के समझ सकते हैं। बँगला-मुहाविरों को शुद्ध हिंदी-भावों में परिणत करने में जो कमाल दिखलाया गया है, वह सोने में सुगंध का काम हो गया है। उपन्यास इतना रोचक और शिक्षा-प्रद है कि एक बार हाथ में लेने पर पुनः समाप्त किए विना छोड़ने को जी नहीं चाहता। लगभग ५०० पृष्ठ के बड़े पोथे का मूल्य केवल २)

भारत-गीत

[लेखक—कवि-सम्राट् पं० श्रीधर पाठक]

पाठकजी हिंदी-कवियों के आचार्य माने जाते हैं। आपने समय-समय पर देश-संबंधी जो उपयोगी और उत्तम कविताएँ लिखी और पत्रों में प्रकाशित कराई हैं, उन्हीं का यह नयनाभिराम बड़ा संग्रह है। मूल्य ॥।)

पत्रांजलि

(द्वितीय संस्करण)

इसके पाठ से स्त्रियों को कई लाभ एक-साथ होते हैं। उन्हें पत्र लिखना आ जाता है, सदुपदेश मिलते हैं और मनोरंजन भी खूब ही होता है। जिस ढंग से इसमें स्वामी ने स्त्री को पत्र लिखे हैं, उसका स्त्रियों के चरित्र-गठन पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। इस पुस्तक को पढ़कर अनेक स्त्रियाँ सुधर गईं। एक बार अपनी कन्याओं, बहनों और बहुओं के हाथ में इसे अवश्य दीजिए। कवर पर सुंदर तिरंगा एक चित्र भी दिया गया है। मूल्य ॥)

उद्यान, हिंदी-नवरत्न, पादार्घ्य (पांडेय मुकुटधर की सरस कविताओं का संग्रह), भारतीय अर्थ-शास्त्र-नामक पुस्तकें भी छप रही हैं।

बड़ा सूचीपत्र -) का टिकट भेजकर मुफ़्त मँगाइए

संचालक गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

माधुरी के नियम

मूल्य

माधुरी का डाक-व्यय-सहित वार्षिक मूल्य ६॥),छः मास का ३॥) और प्रति संख्या का ॥।)है। वी०पी० से मँगाने में ⌐) रजिस्ट्री के और देने पड़ेंगे। इसलिये ग्राहकों को मनी-आर्डर से ही चंदा भेज देना चाहिए। भारत के बाहर सर्वत्र वार्षिक मूल्य ८), छः महीने का ४॥) और प्रति संख्या का ॥।=) है। वर्षारंभ श्रावण से होता है, और प्रति मास शुक्ल-पक्ष की सप्तमी को पत्रिका प्रकाशित हो जाती है। लेकिन ग्राहक बननेवाले चाहे जिस संख्या से ग्राहक बन सकते हैं।

अप्राप्य संख्या

अगर कोई संख्या किसी ग्राहक के पास न पहुँचे, तो अगले महीने के कृष्ण-पक्ष की सप्तमी तक कार्यालय को सूचना मिलनी चाहिए। लेकिन हमें सूचना देने के पहले स्थानीय पोस्ट-ऑफ़िस में उसकी जाँच करके डाकख़ाने का दिया हुआ उत्तर सूचना के साथ आना चाहिए। उनको उस संख्या की दूसरी प्रति भेज दी जायगी। लेकिन उक्त तिथि के बाद सूचना मिलने से उस पर ध्यान नहीं दिया जायगा, और उस संख्या को ग्राहक ॥।-) के टिकट भेजने पर ही पा सकेंगे।

पत्र-व्यवहार

उत्तर के लिये जवाबी कार्ड या टिकट आना चाहिए। अन्यथा पत्र का उत्तर नहीं दिया जा सकेगा। पत्र के साथ ग्राहक-नंबर का भी उल्लेख होना चाहिए। मूल्य या ग्राहक होने की सूचना संचालक गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ या मैनेजर नवलकिशोर-प्रेस, लखनऊ के पते से आनी चाहिए।

पता

ग्राहक होते समय अपना नाम और पता बहुत साफ़ अक्षरों में लिखना चाहिए। दो-एक महीने के लिये पता बदलवाना हो, तो उसका प्रबंध डाक-घर से ही कर लेना ठीक होगा। अधिक दिन के लिये बदलवाना हो, तो संख्या निकलने के १ महीने पेश्तर उसकी सूचना देनी चाहिए।

लेख आदि

लेख या कविता स्पष्ट अक्षरों में, काग़ज़ की एक ओर, संशोधन के लिये इधर-उधर जगह छोड़कर, लिखी होनी चाहिए। क्रमशः प्रकाशित होने लायक़ बड़े लेख संपूर्ण आने चाहिए। किसी लेख अथवा कविता के प्रकाशित करने या न करने का, उसे घटाने-बढ़ाने का, तथा उसे लौटाने या न लौटाने का सारा अधिकार संपादक को है। जो नापसंद लेख संपादक लौटाना मंजूर करें, वे टिकट भेजने पर ही वापिस किए जा सकते हैं। यदि लेखक लेना स्वीकार करते हैं, तो उपयोगी और उत्तम लेखों पर पुरस्कार भी दिया जाता है। सचित्र लेखों के चित्रों का प्रबंध लेखकों को करना चाहिए। चित्र प्राप्त करने के लिये आवश्यक ख़र्च प्रकाशक देंगे।

लेख कविता, समालोचना के लिये पुस्तकें और बदले के पत्र इस पते से भेजने चाहिए—

पं० दुलारेलाल भार्गव

गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय

२९-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

विज्ञापन

किसी महीने में विज्ञापन बंद करना या बदलवाना हो, तो एक महीने पहले सूचना देनी चाहिए।

अश्लील विज्ञापन नहीं छपते। छपाई पेशगी ली जाती है। विज्ञापन की दर नीचे प्रकाशित है—

१ पृष्ठ या २ कालम की छपाई ... ... २०) प्रति मास
१/२ ,, या १ ,, ,, ,, ... ११) ,, ,,
१/४ ,, या १/२ ,, ,, ,, ... ६) ,, ,,
१/८ ,, या १/४ ,, ,, ,, ... ४) ,, ,,

कम-से-कम आधा कालम विज्ञापन छपानेवालों को माधुरी मुफ़्त मिलती है। साल-भर के विज्ञापनों पर =) रुपया कमीशन दे दिया जाता है।

माधुरी में विज्ञापन छपानेवालों को बड़ा लाभ रहता है। कारण, इसका प्रत्येक विज्ञापन कम-से-कम २,००,००० पढ़े-लिखे, धनी-मानी और सभ्य स्त्री-पुरुषों की नज़रों से गुज़र जाता है। सब बातों में हिंदी की सर्व-श्रेष्ठ पत्रिका होने के कारण इसका प्रचार ख़ूब हो गया है, और उत्तरोत्तर बढ़ रहा है। फिर प्रत्येक ग्राहक से माधुरी ले-लेकर पढ़नेवालों की संख्या ४०-४० तक पहुँच जाती है।

यह सब होने पर भी विज्ञापन-छपाई की दर अन्य अच्छी पत्रिकाओं से हमने अपेक्षा-कृत कम ही रक्खी है। कृपया शीघ्र अपना विज्ञापन माधुरी में छपाकर लाभ उठाइए। कम-से-कम एक बार परीक्षा लीजिए।

रेट बढ़ गए ! **रेट बढ़ गए !!**

"माधुरी" में

विज्ञापन छपाइए !

माधुरी में विज्ञापन छपानेवालों को बड़ा लाभ रहता है। कारण, इसका प्रत्येक विज्ञापन अब कम-से-कम दो लाख पढ़े-लिखे, धनी-मानी और सभ्य स्त्री-पुरुषों की नज़रों से गुज़र जाता है। सब बातों में हिंदी की सर्व-श्रेष्ठ पत्रिका होने के कारण इसका प्रचार खूब हो गया है, और उत्तरोत्तर बढ़ रहा है। फिर प्रत्येक ग्राहक से माधुरी ले-लेकर पढ़नेवालों की संख्या ४०-४० तक पहुँच जाती है।

अब श्रावण-मास से माधुरी की ८००० प्रतियाँ छपेंगी। अतएव विवश होकर हमने रेट में सिर्फ़ ४) प्रति-पृष्ठ की वृद्धि की है। कारण, १४) प्रति-पृष्ठ तो हमारी लागत बैठती है। अब हम १६) प्रति-पृष्ठ की जगह २०) प्रति-पृष्ठ चार्ज करेंगे। हाँ, जिन्होंने पहले से ही विज्ञापन की छपाई भेजकर पृष्ठ रिज़र्व करवा लिए हैं, उनसे वही पुराना रेट चार्ज किया जायगा। तो भी हमारे रेट, अब भी, और पत्रिकाओं से, जो २००० भी ग्राहक नहीं रखतीं और १६) प्रति-पृष्ठ चार्ज कर रही हैं, कहीं कम हैं।

(१) विज्ञापन-छपाई की वर्तमान दर

"माधुरी" में विज्ञापन-छपाई अब निम्न-लिखित हिसाब से ली जाती है—

	प्रतिमास
१ पेज या २ कालम	२०)
½ ,, या १ ,,	११)
¼ ,, या ½ ,,	६)
⅛ ,, या ¼ ,,	४)
टाइटल का दूसरा पेज	३५)
,, ,, तीसरा ,,	३०)
,, ,, चौथा ,,	४०)
टाइटल के दूसरे पेज के सामने का पृष्ठ	३०)
पाठ्य विषय के पहले और बाद के पृष्ठ	३०)

(२) विज्ञापन-छपाई के नियम

"माधुरी" के विज्ञापन-दाताओं को चाहिए कि—

(१) प्रथम पत्र के साथ ही वह विज्ञापन भेज दें, जिसे छपाना चाहें।

(२) यह लिखें कि वह विज्ञापन कितने समय तक छपेगा।

(३) किसी संख्या में विज्ञापन बदलवाना या बंद कराना हो, तो उसके निकलने के १ मास पहले ही सूचना दें।

(४) विज्ञापन-छपाई पेशगी भेज दें, क्योंकि पेशगी लेने का ही नियम है।

छपकर तैयार है! शीघ्र मँगाइए, संभव है, फिर आपको किसी भी मूल्य में न मिल सकें । शीघ्र मँगाइए!

पंजाब-केसरी, लाला लाजपत रायजी-रचित

भारत का प्राचीन इतिहास

[History of India]

(जो उन्होंने अभी लिखकर भेजा है)

कई वर्षों से श्रीयुत लालाजी भारत का प्राचीन इतिहास लिखने की चेष्टा कर रहे थे । परंतु देश-सेवा के कार्य में संलग्न रहने के कारण वे इस अत्यंत आवश्यक कार्य को पूरा न कर सके । परमात्मा की कृपा से इधर आपको कुछ समय मिला । इतने ही में आपने आर्य-जाति के मुख उज्ज्वल करने और भारत के गौरव को बढ़ाने के लिये "भारत का प्राचीन इतिहास" लिखकर उस कमी को पूरा कर दिया, जिसका भारतीय नेता-गण वर्षों से अनुभव कर रहे थे । इसके पूर्व जितने भी भारत के इतिहास लिखे गए हैं, यह उन सबमें प्रामाणिक तथा Up to date है । यह ग्रंथ लालाजी के वर्षों के परिश्रम तथा सैकड़ों पुस्तकों के विवेचन का फल है । अतः प्रत्येक भारतवासी पुरुष को—एक बार इसे अवश्य पढ़ना चाहिए । कलकत्ते के एक बड़े प्रेस में सचित्र छपा है । पहले संस्करण के अधिक भाग के ऑर्डर आ चुके हैं । इसलिये आज ही पत्र लिखिए अन्यथा दूसरे संस्करण की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी । मूल्य २)

छप गई! शीघ्र मँगाइए

देवता-स्वरूप भाई परमानंदजी एम्० ए०-कृत पुस्तकें

भारत का सच्चा इतिहास—जिसके लिये जनता तरस रही थी, वह छपकर तैयार है । मूल्य २॥)

गीतामृत—मृत्यु के साक्षात् दर्शन करने के पश्चात् भाईजी ने इस पुस्तक में जीवन और मृत्यु के रहस्य को खोला है । गीता के १८ अध्यायों की व्याख्या, श्लोक और अर्थ भी दिए गए हैं । मूल्य २)

कालेपानी की कारावास-कहानी—कालेपानी में भारतवासियों के साथ जो निर्दयता का व्यवहार किया जाता है, उसको पढ़कर हृदय विदीर्ण हो जाता है । इसका पूर्णतः वृत्तांत इस पुस्तक में आपको मिलेगा । इसका इतना मान हुआ है कि प्रत्येक भाषा में इसका अनुवाद हो गया है । मूल्य १॥)

भारत-माता का संदेश—भारत-माता इस समय अपने बच्चों से क्या चाहती है, इत्यादि वर्तमान अवस्था पर यह एक अपूर्व पुस्तक है । मूल्य ॥)

देश-पूजा में आत्म-बलिदान—देश-सेवा की यज्ञ में जिन वीर देवियों और पुरुषों ने प्राण-आहुतियाँ दी हैं, उनका वर्णन बड़े हृदय-द्रावक शब्दों में किया गया है । अंत में देश की वर्तमान अवस्था का चित्र देकर देशवासियों से अपील की गई है । मूल्य १॥)

पंजाब-रत्न डॉ० सत्यपालजी की नई पुस्तक

पंजाब-बीती—इस पुस्तक में डॉक्टरजी ने पंजाब पर किए गए अत्याचारों को छोटी-छोटी अत्यंत मनोरंजक कहानियों में वर्णन किया है । पुस्तक बड़ी रोचक और प्रभावशाली है । मूल्य १)

हिंदी-साहित्य में अपूर्व ग्रंथ

आत्म-दर्शन

भारत-मीमांसा—विद्वानों के लिये एक अपूर्व ग्रंथ । मूल्य ४)

हिंदी में ही क्या, किसी दूसरी भाषा में भी ऐसी up to date पुस्तक आत्मा के विषय में आज तक नहीं लिखी गई । पूर्व और पश्चिम के आज तक जितने विद्वान् और तत्त्ववेत्ता हो गए हैं, उनका और वेद-शास्त्रों का मत देकर इसकी विवेचना की गई है । पुस्तक सर्वतोभावेन पढ़ने योग्य है । मूल्य १॥)

वीरांगना—(सचित्र) सर्वथा नवीन पुस्तक कन्याओं और देवियों के लिये । मूल्य ॥)

गीता (गुटका)—गीता के संपूर्ण अध्याय, उनके श्लोक तथा अर्थ-सहित सजिल्द मूल्य ।)

मिलने का पता—राजपाल, मैनेजर सरस्वती-आश्रम, लाहौर

RT-0852

माधुरी

[विविध विषय-विभूषित, साहित्य-संबंधी, सचित्र, मासिक पत्रिका]

सिता, मधुर मधु, तिय-अधर, सुधा-माधुरी धन्य ;
पै यह साहित-माधुरी नव-रस-मयी अनन्य !

वर्ष १ खंड २ | आषाढ़-शुक्ल ७, २९९ तुलसी-संवत् (१९८० वि०)— २० जुलाई, १९२३ ई० | संख्या ६ पूर्ण संख्या १२

क्या से क्या !

चौपदे

मिल रही है न खाट टूटी भी,
चैन, बेचैन बन, न क्यों खोते ।
आज हैं फूट-फूट रोते वे,
जो रहे फूल-सेज पर सोते ॥ १ ॥
आज बेढंग बन गए हैं वे,
ढंग जिनमें भरे हुए कुल थे ।
बाँध सकते नहीं कमर भी वे,
बाँधते जो समुद्र पर पुल थे ॥ २ ॥
जो रहे आसमान पर उड़ते,
आज उनके क़तर गए हैं पर ।
सिर उठाना उन्हें पहाड़ हुआ,
जो उठाते पहाड़ ऊँगली पर ॥ ३ ॥
हैं रहे डूब वे गड़हियों में,
बेतरह बार-बार खा धोखा,
सूखता था समुद्र देख जिन्हें,
था जिन्होंने समुद्र को सोखा ॥ ४ ॥
जो सदा मारते रहे पाला,
वे पड़े टाल-टूल के पाले ।
आज हैं गाल मारते बैठे
जंगलों के खँगालनेवाले ॥ ५ ॥
तप-सहारे न क्या सके कर जो,
मन उन्हीं का मरा, बहुत हारा ।
हैं लहू-घूँट आज वे पीते,
पी गए थे समुद्र जो सारा ॥ ६ ॥
सब तरह हार आज वे बैठे,
जो कभी थे न हारनेवाले ।

आप हैं अब उबर नहीं पाते,
स्वर्ग के भी उबारनेवाले ॥ ७ ॥
पेड़ को जो उखाड़ लेते थे,
हैं न सकते उखाड़ वे मोथे।
वे न हैं कूद-फाँद कर पाते,
फाँद जाते समुद्र को जो थे ॥ ८ ॥
जो जगत जाल तोड़ देते थे,
तोड़ सकते वही नहीं जाला।
वे मथे मथ दही नहीं पाते,
था जिन्हों ने समुद्र मथ डाला ॥ ९ ॥
हैं कलेजा पकड़-पकड़ लेते ;
औ' सके आँख के न आँसू थम।
क्या कहें, कुछ कहा नहीं जाता,
क्या रहे, और हो गए क्या हम ॥ १० ॥

अयोध्यासिंह उपाध्याय

हिंदी-पुस्तकालयों का संगठन

पुस्तकालयों की उपयोगिता समझाने की ज़रूरत नहीं है। पुस्तकालय वास्तव में सरस्वती के मंदिर, ज्ञान के भांडार, साहित्य के यश-स्तंभ, विद्या के कल्पद्रुम आनंद के उद्यान और शांति के आधार हैं। किसी देश की सभ्यता देखने की इच्छा हो, तो उस देश के पुस्तकालयों को देख जाइए। किसी देश की उन्नति और अवनति की जाँच करना अभीष्ट हो, तो भी उस देश के पुस्तकालयों को ही देखना पड़ेगा। पुस्तकालय ही उर्बर मस्तिष्कवालों के लिये विशुद्ध भोजनालय, देश के नवयुवकों के लिये आदर्श शिक्षालय, जिज्ञासुओं के लिये पारदर्शी आचार्य, ज्ञान-पिपासुओं के लिये निर्मल नैसर्गिक निर्झर, सांसारिक चिंताओं से व्याकुल मनुष्यों के लिये विश्राम-स्थल और व्यस्त-मस्तिष्कों के लिये मनोरंजन के सर्वोत्तम साधन तथा साहित्यिक पुरुषों की पवित्र जीवन-यात्रा के श्रेष्ठ संबल हैं।

भारतवर्ष में पुस्तकालयों की संख्या यथेष्ट नहीं है। पाश्चात्य देशों के रेलवे-स्टेशनों पर, होटलों में, गिरजाघरों में, सैरगाहों में, सरायों में, बाज़ारों में और शहरों के हरएक मुहल्ले में पुस्तकालय हैं। इँगलैंड, फ़्रांस, जर्मनी, जापान और अमेरिका आदि समुन्नत देशों में तो प्रायः घर-घर पुस्तकालय मौजूद हैं। यहाँ तक कि बड़े आदमियों के घरों में परिवार का प्रत्येक व्यक्ति अपना एक ख़ास पुस्तकालय रखता है। इन सभ्यताभिमानी देशों में एक-से-एक आदर्श पुस्तकालय हैं; जिनका पूर्ण वर्णन यहाँ असंभव है। शक्तिशाली देशों की तो बात ही निराली है, अस्तंगत-प्रताप प्राचीन 'रोम' की एक लाइब्रेरी में इस समय भी दो लाख चौरासी हज़ार पुस्तकें हैं—दो लाख पचास हज़ार मुद्रित, और शेष ३४००० हस्त-लिखित ! पाठकों को स्मरण होगा कि योरप के गत महायुद्ध के समय बेलजियम का एक प्रसिद्ध पुस्तकालय जर्मनों ने जला दिया था। उस समय सारी अख़बारी दुनिया में बड़ा कोलाहल मचा था। सुना गया था, उस पुस्तकालय में दो लाख से भी अधिक प्राचीन हस्त-लिखित ग्रंथों का संग्रह था। बेलजियम-जैसे छोटे देश की जब यह दशा है, तब औरों की बात कौन कहे। कहते हैं, किसी विदेशी संग्रहालय में संसार की सबसे बड़ी और सबसे छोटी पुस्तक रक्खी हुई है। बड़ी का नाम "वर्दी बाइबिल" है, और छोटी का "हैम्लेट"। बड़ी पुस्तक की लंबाई दस फ़ीट, मुटाई दो फ़ीट, और पृष्ठ-संख्या ३० हज़ार है। छोटी की लंबाई सिर्फ़ १/४ इंच है। उसमें सिर्फ़ ८० पन्ने हैं। छपाई साफ़-सुथरी है। सजावट सुंदर है। किंतु उसे पढ़ने के लिये सूक्ष्म-दर्शक यंत्र का प्रयोग करना पड़ता है। इस देश के पुस्तकालयों में ऐसी पुस्तकों का संग्रह नहीं किया जाता। बंबई के निर्णय-सागर-प्रेस से श्रीमद्भगवद्गीता और दुर्गा-सप्तशती आदि के बहुत ही छोटे संस्करण (तावीज़नुमा आकार के) प्रकाशित हुए हैं। आपको शायद ही किसी हिंदी-पुस्तकालय में उनके दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हो। यदि आप पूछेंगे, तो यही उत्तर मिलेगा कि "यंत्र में मढ़ाने और सफ़र में नित्य पाठ करने योग्य पुस्तिकाओं के संग्रह से क्या लाभ ?"

विदेशों की बात जाने दीजिए। वहाँ की परिस्थिति से यहाँ की परिस्थिति सर्वथा भिन्न है। अपने ही देश के अन्यान्य पुस्तकालयों को देखिए। हिंदी-पुस्तकालयों से

उनकी दशा कहीं अच्छी है । अँगरेज़ी-पुस्तकालयों की स्थिति तो सर्वत्र संतोष-जनक है । इसका कारण स्पष्ट है । सरकारी विश्व-विद्यालयों, महाविद्यालयों, अन्य सार्वजनिक संस्थाओं, राजों महाराजों और वकील-बैरिस्टरों तथा विद्या-व्यसनी धनाढ्यों के ख़ास पुस्तकालयों को छोड़कर यहाँ कुछ प्रसिद्ध सार्वजनिक अँगरेज़ी-पुस्तकालयों की थोड़ी-सी चर्चा सुन लीजिए । सन् १९१८ ई० की Indian Literary Year Book के अनुसार कलकत्ते की 'इंपीरियल लाइब्रेरी' (मेटकाफ़-हाल) में उस समय लगभग २० हज़ार पुस्तकें थीं । पटने की 'ओरियंटल पबलिक (खुदाबख़्श ख़ाँ) लाइब्रेरी' में भी अरबी-फ़ारसी की ५००० हस्त-लिखित और लगभग एक लाख रुपए की अँगरेज़ी की पुस्तकें तथा चीन फ़ारस, मध्य-एशिया और हिंदुस्तान की बनी हुई बेश-क़ीमत पुरानी तसवीरें बहुत थीं । इसी प्रकार लखनऊ की 'पबलिक लाइब्रेरी' में १४ हज़ार अँगरेज़ी की पुस्तकें और ४००० सरकारी रिपोर्टें आदि थीं । 'रॉयल एशियाटिक सोसाइटी' के शाखा-पुस्तकालय (बंबई) में भी उस समय लगभग एक लाख और इलाहाबाद की 'पबलिक लाइब्रेरी' में ३१२५० पुस्तकें थीं । आप समझ सकते हैं कि इधर के छः वर्षों में इन अँगरेज़ी-पुस्तकालयों की दशा कहाँ तक उन्नत हुई होगी । कलकत्ता-निवासी बाबू पूर्णचंद्र नाहर जैन एम्० ए०, बी० एल्० (४८, मिरर-स्ट्रीट) के घर पर एक बहुत बड़ा संग्रहालय है । उसमें प्राचीन अमूल्य चित्रों, मूर्तियों, पुस्तकों तथा सिक्कों का दर्शनीय संग्रह है । नाहरजी के पास अनेक अप्राप्य हस्त-लिखित ग्रंथ भी संगृहीत हैं । आपने ही इँगलैंड-निवासी प्रसिद्ध इतिहास-लेखक स्वर्गीय विंसेंट स्मिथ साहब और गोलोक-वासी बाबू हरिनाथ दे (१३ भाषाओं के एम्० ए० और इंपीरियल लाइब्रेरी के योग्य लाइब्रेरियन) के निजी पुस्तकालयों को नीलाम में ख़रीद लिया था । भारतीय लिंग्विस्टिक सर्वे की रिपोर्ट की केवल नव प्रतियाँ ही छपी थीं । उनमें से भी एक आपके पुस्तकालय में है । समस्त संसार के सुविख्यात पुस्तकालयों के सूचीपत्र आपके संग्रहालय में सुरक्षित हैं । कोई ऐसा प्रसिद्ध विद्वान् कलकत्ते में नहीं आता, जो नाहरजी का संग्रहालय देखकर मुग्ध न हो जाता हो । कहते हैं, पूने की 'भांडारकर ओरियंटल रिसर्च लाइब्रेरी', प्रयाग के पाणिनि-कार्यालय की 'भुवनेश्वरी-लाइब्रेरी', काशी के क्वींस कॉलेज के 'सरस्वती-भवन' तथा अदयार (मदरास) की 'थियासोफ़िकल लाइब्रेरी' में संस्कृत के प्राचीन ग्रंथों का अच्छा संग्रह है । पूने की 'भांडारकर-लाइब्रेरी' में लगभग २० हज़ार हस्त-लिखित संस्कृत और प्राकृत आदि के ग्रंथ हैं । आरे के 'जैन-सिद्धांत-भवन' में भी प्राचीन जैन-साहित्य के दुर्लभ ग्रंथों का बहुत ही बढ़िया संग्रह है । इसी प्रकार संस्कृत-भाषा के और भी कितने ही दर्शनीय संग्रहालय हैं ।

अँगरेज़ी-पुस्तकालयों की अच्छी दशा का कारण है अँगरेज़ी-राज्य और संस्कृत, प्राकृत आदि भाषाओं के संग्रहालयों का आदर केवल वे ही करते हैं, जो प्रत्न-तत्त्व-विशारद हैं, और लार्ड कर्ज़न के समय से पुरातत्त्व-शोधन-विभाग की स्थापना हो जाने के कारण उनका महत्त्व विशेष बढ़ गया है । कितने पुरातत्त्वानुसंधान के प्रेमी विदेशी विद्वान् केवल प्राचीन हस्त-लिखित संस्कृत-ग्रंथों की खोज करने के लिये ही भारतवर्ष आते हैं । किंतु अँगरेज़ी-भाषा इस समय भारत की राष्ट्र-भाषा कहलाती है, और संस्कृत-भाषा संसार की सबसे प्राचीन, समुन्नत तथा सभ्य भाषा मानी जाती है, इसीलिये इन दोनों भाषाओं के पुस्तकालयों का विशेष महत्त्व है । मैसूर, बड़ौदा, जयपुर, जोधपुर और अलवर आदि देशी रियासतों के राजकीय पुस्तकालयों में भी संस्कृत के प्राचीन ग्रंथों का ही अधिकतर संग्रह है, और वह वास्तव में बहु-मूल्य है ।

यदि अँगरेज़ी और संस्कृत-भाषाओं के ग्रंथालयों की बात छोड़ दी जाय, तो भी भारत की अन्य प्रांतीय भाषाओं के पुस्तकालयों की दशा हिंदी-पुस्तकालयों से कहीं अच्छी है । बंबई के 'मराठी-ग्रंथ-संग्रहालय (शारदा-मंदिर)' का सचित्र परिचय आज से कुछ दिन पहले प्रयाग की सरस्वती में निकला था । उस 'शारदा-मंदिर' के संरक्षक बड़ौदा-नरेश हैं, और उसमें मराठी-भाषा के लगभग चौदह-पंद्रह हज़ार ग्रंथ संगृहीत हैं । पूना, बंबई और नागपुर आदि नगरों में भी मराठी-भाषा के अच्छे-अच्छे पुस्तकालय हैं । गुजराती-भाषा के पुस्तकालयों में अहमदाबाद की 'सस्तुं-साहित्य-संवर्द्धिनी समिति' और 'गुजरात-साहित्य-सभा के पुस्तकालय

विशेष उल्लेखनीय हैं । अहमदाबाद में एक 'गुजरात-वर्नाक्युलर-सोसाइटी' है ; जो सन् १८४८ में स्थापित हुई थी । आज से ५-६ वर्ष पहले, उससे संबद्ध रजिस्टर्ड लाइब्रेरियों की संख्या सवा तीन सौ के लगभग थी, और उसके लगभग ६०० आजीवन-सदस्य थे ! सन् १८८३ में स्थापित बंगलोर-सिटी (मैसूर) की 'ओरियंटल लाइब्रेरी' के सदस्यों और नवागंतुक सज्जनों की संख्या, १९१८ ई० में, लगभग ३२ हज़ार तक पहुँच गई थी ; जिसमें लगभग ८ हज़ार तो स्त्रियाँ ही थीं ! बेजवाड़े में भी एक 'आंध्रदेशीय साहित्य-सभा' है ; जिससे तेलगू-भाषा के दो-ढाई सौ पुस्तकालय संबद्ध हैं । न-जाने हिंदी को कब ऐसा सौभाग्य प्राप्त होगा !

वंग-भाषा की तो बात ही न पूछिए । समस्त भारतवर्ष में वंग-भाषा के पुस्तकालय वर्तमान हैं । सम्मेलन के हेड क्वार्टर (प्रयाग) में 'वंग-साहित्योत्साहिनी सभा' या 'बांधव-समिति' नाम की संस्था, सन् १८७७ में, स्थापित हुई थी । उसमें आज भी हज़ारों पुस्तकें हैं । पटना, भागलपुर, आगरा, जबलपुर, दिल्ली, काशी, मथुरा, बंबई, शिमला, दार्जिलिंग, जगन्नाथ-पुरी, कटक और नैनीताल आदि अनेक स्थानों में भी वंग-भाषा के पुस्तकालय हैं । ख़ास बंगाल-प्रांत में तो लगभग एक हज़ार बँगला-पुस्तकालय हैं । तारीफ़ यह कि सबकी दशा अच्छी है । कलकत्ते की 'चैतन्य-लाइब्रेरी' आज से ३४ वर्ष पूर्व स्थापित हुई थी । इसमें आजकल लगभग १२ हज़ार पुस्तकें हैं, और १२५ से अधिक सामयिक पत्र आते हैं । श्रीमान् वर्द्धमान-नरेश इसके संरक्षक हैं । कलकत्ते में बँगला की ऐसी-ऐसी बीसों लाइब्रेरियाँ हैं । किंतु कवींद्र रवींद्र, आचार्य प्रफुल्लचंद्र, जगदीशचंद्र वसु और 'विश्वकोष'-संपादक, प्राच्य-विद्या-महार्णव नगेंद्रनाथ वसु तथा 'पृथिवीर इतिहास' के लेखक दुर्गादास लाहिड़ी के निजी पुस्तकालयों को यदि छोड़ दिया जाय, तो कलकत्ते में बँगला का सबसे बड़ा * सार्वजनिक संग्रहालय 'वंगीय साहित्य-परिषद्' ही है । इस परिषद् की स्थापना १८९३ ई० में हुई थी । २४३-१, अपर सरकुलर रोड पर इसका स्वतंत्र भवन है ; जो दुमंज़िला है । इसके पास ही कलकत्ते का जगत्प्रसिद्ध जैन-मंदिर है । परिषद् की इमारत से सटा हुआ 'रमेश-भवन' बन रहा है । ख़ास-ख़ास लोगों ने 'रमेशचंद्र दत्त' का स्मारक भवन बनाने के लिये रुपए दिए हैं । परिषद्-भवन के मुख्य द्वार पर उसके संस्थापकों (पंडित रामेंद्रसुंदर त्रिवेदी और व्योमकेश मुस्तफ़ी) की मूर्तियाँ स्थापित हैं । प्रवेश-द्वार के सामने ही संरक्षक राजों-महाराजों और वंग-साहित्य-सेवी विद्वानों के विशाल तैल-चित्र टँगे हुए हैं । नीचे पुस्तकालय और वाचनालय है । ऊपर व्याख्यानशाला और अप्राप्य वस्तुओं का संग्रहालय है । व्याख्यानशाला के उच्च मंच की दीवारों पर वंग-साहित्य-सम्राट् वंकिमचंद्र और माइकेल मधुसूदन दत्त आदि के बड़े-बड़े चित्र टँगे हुए हैं । इन्हीं चित्रों के सामने विद्यासागर महोदय का चित्र है । सभी स्वर्गीय लेखकों के चित्र चारों ओर लगे हुए हैं । राजा राममोहन राय की पगड़ी, विद्यासागर का टेबिल, वंकिमचंद्र की दावात और रमेशचंद्र दत्त की चिट्ठियाँ आदि अलभ्य वस्तुएँ, व्याख्यान-मंच से दक्षिण के कमरे में सजाकर, रक्खी हुई हैं । उत्तर के कमरे में हस्त-लिखित प्राचीन ग्रंथों का सुसज्जित संग्रहालय है । उसमें इस समय ५००० ग्रंथ हैं । हाल ही में देश-बंधु चितरंजन दास ने ४०० से भी अधिक

---

* कलकत्ते का सबसे बड़ा और बढ़िया हिंदी-पुस्तकालय सलकिया (हवड़ा) में है । इसके संस्थापक और संचालक हैं, सेठ सूरजमल नागरमल । यह संवत् १९७८ की जन्माष्टमी को स्थापित हुआ था । इस समय इसमें छः हजार से भी अधिक पुस्तकें हैं । प्रायः सभी प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाएँ इसके सुसज्जित वाचनालय की शोभा बढ़ाती हैं । इसे मैंने स्वयं देखा है । इसका भवन बड़ा भव्य और सुंदर है । चमकीली आलमारियों में जिल्द-मढ़ी सजीली पुस्तकें, विषयानुक्रम और संख्यानुक्रम से, श्रेणी-बद्ध रक्खी हुई हैं । पुराने प्रसिद्ध मासिक पत्रों तथा वर्तमान प्रसिद्ध साप्ताहिकों और दैनिकों की पूरी फ़ाइलें बड़े सुरक्षित ढँग से यहाँ रक्खी गई हैं । इसमें पाठकों की कुल संख्या आज तक १० हजार से अधिक है, और मूल्य जमा करके पुस्तकें ले जानेवाले बाहरी सज्जनों की संख्या आज तक लगभग ७०० है । सेठजी ही इसका सारा ख़र्च देते हैं, और उन्होंने इसे सर्वांगपूर्ण बनाने के लिये बीसों हजार रुपए ख़र्च करने का मंसूबा बाँधा है । सभी पुस्तक-प्रकाशकों को अपना नया सूचीपत्र इस पुस्तकालय में भेजना चाहिए ।

हस्त-लिखित ग्रंथ समर्पित किए हैं। हस्त-लिपियों में सबसे पुरानी दो हैं—एक चंडीदास-कृत 'कृष्ण-कीर्तन' की, लगभग ६०० वर्ष की, और दूसरी चैतन्य महाप्रभु के पार्श्ववर्ती सनातन गोस्वामी-रचित 'आदि-पर्व—महाभारत' की, शकाब्द १४२२, संवत् १८४३ की। इस परिषद् की ओर से एक पत्रिका भी निकलती है। अनेक महत्त्व-पूर्ण ग्रंथ भी प्रकाशित हुए हैं। उनमें एक नागराक्षरों में है। उसका नाम है, 'संगीत-राग-कल्पद्रुम', और उसका संपादन किया है, प्राच्य-विद्या-महार्णव नगेंद्रनाथ वसु ने। उसके रचयिता हैं, कृष्णानंद व्यासदेव राग-सागर। उसकी पृष्ठ-संख्या १७०० और गीत-संख्या १३८९२ है। वह तीन खंडों में छपा है। प्रथम और द्वितीय खंड में नागराक्षरों का प्रयोग किया गया है; पर तृतीय खंड बँगला में है। शुरू में इस बृहदाकार ग्रंथ का मूल्य ३०) था; पर अब परिषद् के सदस्यों के लिये १०) और सर्व-साधारण के लिये ११) कर दिया गया है। भारत में प्रचलित सभी भाषाओं के गान इसमें हैं। कहाँ तक लिखूँ, 'परिषद्' देखने ही योग्य है। बंगाल के मैमन-सिंह-नगर में बाबू केदारनाथ मजूमदार-नामक एक सज्जन के घर पर जो 'रिसर्च हाउस लाइब्रेरी' है, वह प्राचीन ग्रंथों के संग्रह में परिषद् से भी बढ़ी-चढ़ी है। वहाँ पुरानी हस्त-लिखित पुस्तकों और बँगला की पुरानी पत्र-पत्रिकाओं की फ़ाइलों का खूब संग्रह है। दो-तीन हज़ार सामयिक पुस्तकें भी हैं। पर वह ख़ासकर पुरानी पुस्तकों के लिये ही प्रसिद्ध है। किंतु ऐसे-ऐसे प्रसिद्ध घरेलू पुस्तकालय बंगाल में कई हैं।

बंगाल में पुस्तकालयों की संख्या अधिक और दशा संतोष-जनक होने का प्रधान कारण है यथेष्ट शिक्षा-प्रचार। जहाँ वसंत-पंचमी के दिन घर-घर आबाल-वृद्ध नर-नारी के मुख से भक्ति-पूर्वक निकल पड़ता है—"वीणा-पुस्तक-रंजित-हस्ते, भगवति भारति देवि नमस्ते", वहाँ अ-विद्या का अंधकार कैसे रह सकता है? बंगाल की तरह बड़ौदा-राज्य में भी शिक्षा का अच्छा प्रचार है। मैंने अपनी पुरानी डायरी में कहीं से यह नोट किया है कि "बड़ौदा के सार्वजनिक पुस्तकालय में एक लाख पुस्तकें हैं। अकेले बड़ौदा-नगर के पुस्तकालयों में सब मिलाकर डेढ़ लाख पुस्तकें हैं। नगर से बाहर, राज्य में, ४० बड़े पुस्तकालय हैं; जिनमें ४० हज़ार पुस्तकें हैं। गाँवों में १९१ पुस्तकालय हैं; जिनमें २५ हज़ार पुस्तकें हैं।" भगवन्! हिंदी-प्रधान प्रांतों ने क्या अपराध किया है?

मेरी नोट-बुक में किसी अख़बार की कतरन का एक टुकड़ा पड़ा हुआ है। उसमें लिखा है—"अनुमान है कि १५वीं शताब्दी में, सारे संसार में, केवल ४० हज़ार पुस्तकें थीं। १६वीं शताब्दी में उनकी संख्या १७ हज़ार और बढ़ गई। १७वीं शताब्दी में वह संख्या बढ़कर १,२५,००,००७ तक पहुँची। १८वीं सदी में * २० लाख और १९वीं में ८२ लाख ५० हज़ार पुस्तकें संसार-भर में थीं। किंतु बीसवीं सदी में समस्त संसार की पुस्तकों की संख्या १,२१,१०,००० तक पहुँच चुकी है! इसके अतिरिक्त १ करोड़ ५० लाख मासिक पत्र भी हैं!" इस आनुमानिक विवरण से भी यही प्रकट होता है कि पंद्रहवीं शताब्दी में—भारतवर्ष तो दासता की जंज़ीर में †

---

* १८वीं और १९वीं सदी में पुस्तकों की संख्या क्यों कम हो गई, और १७वीं सदी की पुस्तक-संख्या २०वीं सदी की पुस्तक-संख्या से क्यों अधिक थी, इस पर मैं अपने दूसरे लेख में विचार करूँगा। उस लेख में समस्त संसार के पुस्तकालयों का वर्णन रहेगा। उसमें पुस्तकालय का प्रामाणिक इतिहास, काल-क्रमानुसार उसका विकास और ह्रास, तथा अति प्राचीन काल से आज तक के पुस्तकालयों के रूप में समयानुकूल परिवर्तन आदि विषयों की विवेचना भी रहेगी। मैं अभी खोज कर रहा हूँ। इस विषय पर एक बड़ी-सी पुस्तक ही लिखना अभीष्ट है। संतोष-जनक सामग्री संग्रह कर लेने पर मैं शीघ्र पुस्तक पूरी कर दूँगा।

† यद्यपि १५वीं सदी में भारत पराधीन हो चुका था, तथापि उस समय यहाँ विद्यानुराग की न्यूनता नहीं थी। दरबारों में कवि और ग्रंथकार रहा करते थे। जनता को भी पेट की कुछ चिंता नहीं थी। हिंदुओं में धर्म-प्राणता, आज की तरह, नष्ट नहीं हो गई थी। मुसलमान-शासकों की शनैश्चर-दृष्टि से धर्म-ग्रंथों की रक्षा करनी पड़ती थी। उस समय के सुरक्षित अधिकांश ग्रंथ औरंगज़ेबी और नवाबी ज़माने में नष्ट हो गए। यदि मुसलमान-बादशाह हिंदुओं के मठों, मंदिरों और विद्यालयों के ग्रंथ-भांडारों पर भी हाथ साफ़ न करते, तो आज भारतीय साहित्य के ग्रंथों की संख्या एतद्देश-निवासियों की संख्या से भी कहीं अधिक होती। मेरा अनुमान है कि १५वीं सदी की ४० हज़ार पुस्तकों में आधी से अधिक भारत में ही रही होंगी।

जकड़ा ही हुआ था—पाश्चात्य संसार भी विशेष विद्या-विभूति-संपन्न नहीं था। पाश्चात्य सभ्यता आज उन्नति के शिखर पर पहुँची हुई मानी जाती है ; पर जिस समय भारतवर्ष के विराट् ग्रंथ-संग्रहालयों को जला-जलाकर हम्माम के हौज़ का पानी गरम किया जाता था, चाय बनाई जाती थी, उस समय वर्तमान पाश्चात्य सभ्यता पालने में झूल रही थी। किसी दिन इस भारतवर्ष में भी नालंद, कुलगंग और तक्षशिला-जैसे विश्व-विश्रुत विश्व-विद्यालय तथा काशी, नदिया और पूना जैसे विद्यापीठ मौजूद थे । उनके ग्रंथ-संग्रहालय संसार में अपना सानी नहीं रखते थे । धाराधीश भोजराज की कृपा से कभी इसी भारतवर्ष के घर-घर में पुस्तकालय रह चुके हैं, और किसानों तथा मज़दूरों तक में विद्या की चर्चा चल चुकी है । अस्तु ।

जहाँ तक मेरी जानकारी है, मैं कह सकता हूँ कि भारतेंदु-काल से पहले हिंदी के सार्वजनिक पुस्तकालयों का बहुलांश में अभाव था । यह भी कहा जा सकता है कि हिंदी-पुस्तकें भी बहुत कम थीं । सुना जाता है, स्वर्गीय श्रीशिवसिंहजी सेंगर के घर पर एक अच्छा-सा पुस्तकालय था । किंतु उसमें फ़ारसी और संस्कृत की पुस्तकें भी शामिल थीं । संभव है, अयोध्या-नरेश महाराजा मानसिंह (कविवर द्विजदेव), रीवाँ-नरेश महाराजा रघुराजसिंह, राजा लक्ष्मणसिंह और राजा शिवप्रसाद 'सितारे-हिंद' आदि कविता-विलासी साहित्य-सेवियों के पास हिंदी-पुस्तकों का ख़ासा संग्रह हो । किंतु उनके पुस्तकालयों को हिंदी-संसार नहीं देख सका । कौन कह सकता है कि भारतेंदु हरिश्चंद्र, अंबिकादत्त व्यास, प्रतापनारायण मिश्र, लल्लूलाल, शालिग्राम, श्रीनिवासदास, राधाकृष्णदास, बालकृष्ण भट्ट, केशवराम भट्ट, बालमुकुंद गुप्त, देवीप्रसाद (पूर्ण) और सत्यनारायण कविरत्न आदि हिंदी-साहित्याराधकों के पास हिंदी-ग्रंथों का संग्रह न होगा ? किंतु उन साहित्य-शिल्पियों के मंजु कर-कंजों के निरंतर स्पर्श से पवित्रीकृत पुस्तकें अब किस सार्वजनिक पुस्तकालय में सुरक्षित हैं, जहाँ पहुँचकर हिंदी-प्रेमी उनके दर्शन का सौभाग्य प्राप्त करें ? बंगाल के साहित्य-सेवी तो मरने से पहले ही अपनी ग्रंथ-संपत्ति सार्वजनिक पुस्तकालयों को सौंप जाते हैं । जहाँ तक मुझे ख़बर है, श्रद्धास्पद द्विवेदीजी के सिवा, हिंदी-संसार में किसी ने ऐसा सुकार्य नहीं किया है । हाँ, कलकत्ता-निवासी मारवाड़ी-कुलालंकार स्वर्गीय बाबू रूढ़मलजी गोयनका ने जो लाखों रुपए ख़र्च करके बड़े शौक़ से अलभ्य ग्रंथों का संग्रह किया था, वह उन्होंने हिंदू-विश्व-विद्यालय के ग्रंथालय के निमित्त माननीय मालवीयजी को समर्पित कर दिया था । उपर्युक्त स्वर्गीय हिंदी-भक्तों में जिनके वंशधर वर्तमान हैं, उनकी पुस्तकें संभवतः सुरक्षित (?) होंगी ; पर अधिक दिन तक के लिये नहीं । किंतु जो केवल अपना 'जरा-मरण-रहित यशःकाय' ही इस संसार में छोड़ गए हैं, उनके 'प्यारे खिलौने' न-जाने आज कहाँ, किस दशा में, पड़े होंगे !

जो हो, इतने बड़े आडंबर-पूर्ण निवेदन के बाद मैं अब मूल-विषय की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करता हूँ । उपर्युक्त निवेदन आगे की बातों को स्पष्ट रीति से समझने में सहायक होगा । 'माधुरी' के विज्ञ वाचक अवश्य जानते होंगे कि बुलंदशहर की नागरी-प्रचारिणी सभा के मंत्री (पंडित बाबूराम शर्मा) ने, सन् १९१८ ई० में, हिंदी-डाइरेक्टरी प्रकाशित की थी । उसकी भूमिका में शर्माजी लिखते हैं—"पत्र-पत्रिकाओं में संस्थाओं की जानकारी के लिये विज्ञापन प्रकाशित कराए गए, जिन संस्थाओं का ज्ञान था, उन्हें पत्र लिखे गए किसी-किसी संस्था को तीन-तीन, चार-चार पत्र लिखे गए, परंतु खेद है कि मंत्री महोदयों ने उत्तर तक देने की दयालुता नहीं की । × × × हर्ष की बात है कि आफ़्रिका-जैसे दूरस्थ महाद्वीप में आवश्यक सूचना और पत्रादि × × × ठीक समय पर पहुँचे, जिनके उत्तर यथासमय प्राप्त हुए ; इसके लिये हम कृतज्ञ हैं । परंतु आश्चर्य की बात तो यह है कि आफ़्रिका से तो हमें उत्साह-ध्वनि सुनाई दे, और भारत की सभा-संस्थाओं के मंत्री महोदयों के कानों पर 'जूँ' भी न रेंगे । अस्तु !"

ये शर्माजी के अविकल वाक्य क्या कहते हैं ? क्या इनसे यह ध्वनि नहीं निकलती कि 'हिंदी-पुस्तकालयों के संगठन' की बड़ी आवश्यकता है ? जब तक उनका संगठन न होगा, तब तक उनसे हिंदी का हित-साधन नहीं हो सकता । दो-चार को छोड़कर अन्य सभी हिंदी-पुस्तकालयों का कार्य शृंखला-शून्य है । उनकी व्यवस्था इतनी सदोष है कि उनकी उद्देश्य-सिद्धि में भी बाधा

पहुँचती है। अधिकांश पुस्तकालय ऐसे हैं, जहाँ बैठकर पाठक बहस भी किया करते हैं, जहाँ वाचनालय की मेज़ पर पत्र-पत्रिकाएँ अस्त-व्यस्त पड़ी रहती हैं, और जहाँ की पुस्तकें दो-चार पाठकों के हाथों में जाते-जाते रद्दी हो जाती हैं। पुस्तकाध्यक्ष और पाठक, दोनों की असावधानता से पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तकों की दुर्दशा होती है। पुस्तकालयों से पुस्तकें ले जाकर पढ़नेवाले सज्जनों के बारे में एक अँगरेज़ी के कवि ने कैसा अच्छा कहा है—

"Read slowly, pause frequently,
Think Seriously.
Keep cleanly, Return only
With the corners of the leaves
Not turned down."

अर्थात्, "पुस्तक पढ़ना हो, तो धीरे-धीरे ध्यान-पूर्वक पढ़ो, ठौर-ठौर ठहर-ठहरकर गंभीरता-पूर्वक विचार करते जाओ, पुस्तक साफ़-सुथरी रक्खो, और उसे पुस्तकालय में लौटाने जाओ, तो ऐसी अच्छी दशा में वापस करो कि कहीं उसके एक पन्ने का भी कोई कोना न मुड़ा हो।"

कवि और उपदेशक भले ही यह कहते रहें, पर हिंदी-पाठक उनकी क्यों सुनने लगे ! जो अपने कमरे की चीज़ें सँभालकर रखने में आलस्य करते हैं, उन्हें कहाँ फ़ुर्सत है कि भाड़े पर लाई हुई पुस्तक को सुरक्षित रक्खें ? हिंदी-पुस्तकालयों की पुस्तकें ख़ूब सफ़र (Suffer ?) किया करती हैं—एक ही प्रस्थान में कई घर घूम आती हैं। जो किसी पुस्तकालय का सदस्य होता है, उससे, मुफ़्त पुस्तक पढ़ने के लोभ से कई दर्ज़न सज्जन दोस्ती पैदा कर लेते हैं ! फल यह होता है कि कहीं जिल्द ग़ायब, कहीं चित्र ग़ायब, कहीं दो-चार पन्ने ग़ायब, और कहीं पुस्तक ही ग़ायब ! जहाँ पुस्तकों की ऐसी दुर्दशा है, वहाँ पुस्तकालयों की रक्षा चक्रपाणि ही कर सकते हैं।

यदि सच पूछिए, तो जो ग्रंथों का वास्तविक आदर करना नहीं जानता, उसे ग्रंथ-पाठ का अधिकार ही नहीं है। किंतु पुस्तकाध्यक्ष यदि पुस्तक की दुर्दशा पर झुँझलाकर पाठक से जवाब तलब करे, तो महाशयजी चंदा देना ही बंद कर दें, और फिर किसी दूसरे पुस्तकालय का संहार करने के लिये चवन्नी ख़र्च कर डालें ! इस प्रकार आर्थिक संकट उपस्थित होने के भय से विवश होकर अधिकांश हिंदी-पुस्तकालयों को अपनी पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं का श्राद्ध कराना पड़ता है।

पाठकों के साथ-साथ पुस्तकाध्यक्ष का भी कुछ दोष होने पर भी उसके लिये उसे कोसना अनुचित है। हिंदी-पुस्तकाध्यक्षों को यहाँ पुस्तक-रक्षा-विषयक शिक्षा नहीं दी जाती। वे साधारण वेतन-भोगी नौकर कहे जा सकते हैं, पर लाइब्रेरियन नहीं। अँगरेज़ी-पुस्तकालयों के लाइब्रेरियनों का एक एसोसिएशन (संघ) है। उसके वार्षिक अधिवेशन नियमित रूप से हुआ करते हैं। उसकी रिपोर्टें देखने से मालूम होता है कि अँगरेज़ी-पुस्तकालयों के लाइब्रेरियन सुयोग्य और मोटी तनख़्वाह-वाले होते हैं। पाठक उनका सम्मान भी करते हैं। पुस्तकालय-संबंधी प्रत्येक बात की वे पूरी जानकारी रखते हैं। पुस्तकालय में किस विषय की कितनी पुस्तकें हैं, किस कवि या लेखक की कौन-कौन पुस्तकें हैं, और कौन-कौन नहीं हैं, किस विषय की कौन-सी सर्वोत्तम पुस्तक है, किसी ख़ास विषय का ग्रंथ लिखने के लिये कौन-कौन पुस्तकें काम में लाए जाने के योग्य हैं, किस विषय पर लेख लिखने के लिये कहाँ क्या मसाला मिलेगा, और इस समय किस विषय की कौन-सी सर्वश्रेष्ठ पुस्तक कहाँ से निकली है, इत्यादि बातों का ज्ञान अधिकांश अँगरेज़ी-लाइब्रेरियनों को हुआ करता है। सुना है, काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा के पुस्तकालयाध्यक्ष पंडित केदारनाथ पाठक को भी हिंदी संसार की अनेक ज्ञेय बातों का पूरा ज्ञान है।

सच पूछिए, तो काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा ही हिंदी की पहली संस्था है, और उसका 'आर्यभाषा-पुस्तकालय' ही हिंदी का पहला पुस्तकालय है। सन् १८७६ में, कलकत्ते में, एक "हिंदू-साहित्य-समिति (Hindu Literary Society)" नाम की संस्था स्थापित हुई थी; पर उसका हिंदी से कोई संबंध न था। ता० १६ जुलाई, सन् १८९३ ई० को काशी नागरी-प्रचारिणी सभा की स्थापना हुई। इससे पहले का कोई हिंदी-पुस्तकालय सुना नहीं गया। पहले भी हिंदी-पुस्तकालय थे ज़रूर, मगर वे अधिकतर किसी एक विद्वान् की संपत्ति-मात्र थे। और, यदि कोई सार्वजनिक भी था, तो वह प्रसिद्ध अथवा सर्वप्रिय नहीं। ख़ैर, काशी की नागरी-प्रचारिणी सभा के बाद आरे की नागरी-प्रचारिणी सभा का नंबर है। यह संवत् १९५८ में स्थापित हुई थी, और इसके पुस्तका-

लय में इस समय छः हज़ार पुस्तकें, पुराने और नए मासिक पत्रों की फ़ाइलें, हिंदी की पुरानी और नई सभाओं की रिपोर्टें, और हस्त-लिखित तथा मुद्रित पुरानी पुस्तकें विशेष रूप से सुरक्षित हैं । कलकत्ते की 'बड़ा बाज़ार-लाइब्रेरी' भी सन् १९०१ में ही स्थापित हो गई थी। यह अब तक * चल रही है। इसकी अवस्था अच्छी है; पर व्यवस्था नहीं। हाँ, एक बात भूलता हूँ। सन् १८९८ ई० के सितंबर-महीने में मुज़फ़्फ़रपुर (बिहार) की हिंदी-भाषा-प्रचारिणी सभा खोली गई थी । उसके साथ एक पुस्तकालय भी था, और उस समय की स्थिति के अनुसार अच्छा पुस्तकालय था। पर हिंदी-प्रेमी होने का दम भरनेवाले यारों ने बहुत-सी पुस्तकें विना डकारे ही पचा डालीं। जो कुछ बच गईं, वे वहीं के कई पुस्तकालयों में बट गईं। जो हो, उस पुस्तकालय से तिरहुत (मिथिला)-प्रांत के प्रधान नगर मुज़फ़्फ़रपुर में हिंदी-प्रचार का काम बड़ी सफलता से हुआ था, इसमें संदेह नहीं । 'हिंदी-डाइरेक्टरी' के अनुसार जबलपुर की नागरी-साहित्य-प्रचारिणी सभा का 'विद्या-विनोद-पुस्तकालय' सन् १८९७ की जुलाई में खुला था और लश्कर (ग्वालियर) की हिंदी-साहित्य-सभा संवत् १९६० में खुली थी । इन पुस्तकालयों से भी पुराने पुस्तकालय हिंदी-संसार में हैं या नहीं, यह मैं नहीं जानता । सम्मेलन को चाहिए कि वह भारतवर्ष तथा विदेशों के हिंदी-पुस्तकालयों की विवरणात्मक सूची प्रकाशित करे उन्हें संबद्ध करे, उनके निरीक्षण के लिये अनुभवी निरीक्षकों को नियुक्त करे, उनके संगठन और संचालन की व्यवस्था करे, गमाश्तगरी और आरायज़नवीसी की तरह पुस्तकालयाध्यक्षों के लिये भी कोई उपयुक्त परीक्षा नियत करे, और उनकी एक समिति भी संगठित कर दे। इस काम में सम्मेलन को अपनी प्रांतीय शाखाओं से बड़ी सहायता मिलेगी, और प्रत्येक हिंदी-हितैषी तथा पत्र-संपादक उसे करावलंब देगा।

महासम्मेलन से अथवा प्रांतीय सम्मेलनों से संबद्ध हो जाने पर हिंदी-पुस्तकालयों का संगठन सुचारु रूप से संपादित हो सकता है । किंतु प्रांतीय सम्मेलनों पर महासम्मेलन को सदा सावधान दृष्टि रखनी पड़ेगी। पुस्तकालयों का संगठन हो जाने पर हिंदी-प्रचार के सिवा हिंदी-साहित्य-संवर्द्धन में कितनी सुगमता होगी, इसका सहज ही अनुमान किया जा सकता है । उन्हें संगठित करके उनका सुधार करना पड़ेगा। सुधार करने के समय इन बातों पर विचार करना होगा—

(१) उनकी आर्थिक अवस्था कैसी है?

(२) उनके कार्यकर्ता कैसे हैं ? वे कार्य-तत्पर और सुयोग्य हैं या नहीं ?

(३) उनके भवन कैसे हैं, और कैसे स्थान * में हैं?

---

* ख़ास कलकत्ता-शहर में बड़ा बाज़ार-लाइब्रेरी, महावीर-पुस्तकालय, माहेश्वरी-पुस्तकालय और ब्रह्मसेवक-पुस्तकालय आदि उल्लेख-योग्य हिंदी-पुस्तकालय हैं । १९१० ई० में हिंदी-साहित्य-परिषद् भी कलकत्ते में खुली थी, और एक नागरी-प्रचारिणी सभा भी। किंतु इस समय उन दोनों के अस्तित्व का पता नहीं है। उपर्युक्त पुस्तकालयों में दूसरे और चौथे को स्थान-संकोच के कारण कुछ असुविधा है; पर पहले और तीसरे को प्रशस्त व्याख्यान-शालाएँ भी मिली हैं, और मुफ़्त में मिली हैं। मैंने बंबई में तीन हिंदी-पुस्तकालयों को देखा था; जिनमें मारवाड़ी-हिंदी-पुस्तकालय की अवस्था अच्छी जान पड़ी। किंतु बंबई के हिंदी-पुस्तकालयों से कलकत्ते के हिंदी-पुस्तकालय अच्छी दशा में हैं। हाँ, ख़ास कलकत्ते के उक्त चारों पुस्तकालयों से दिल्ली (चाँदनी चौक) के मारवाड़ी-पुस्तकालय (१९१५ ई० में स्थापित) की अवस्था विशेष संतोष-जनक है । मैंने स्वयं उस पुस्तकालय में कई दिन लगातार जाकर इस बात की परीक्षा की है । उसकी व्यवस्था भी अच्छी है, जिसका श्रेय उसके संस्थापक सेठ केदारनाथ गोयनका को है । खेद है कि धनी-मानी मारवाड़ियों की अज्ञता के कारण उस पर ऋण-भार लद गया है। रंगून के मारवाड़ी-हिंदी-पुस्तकालय की भी आर्थिक अवस्था शोचनीय सुन रहा हूँ। व्यापार-प्रधान मारवाड़ी-जाति 'दान-वीर' कही जाती है, पर पुस्तकालयों के लिये वह दान-वीरता थोड़े है!

* हिंदी-पुस्तकालयों में प्रयाग के 'भारती-भवन' का मंदिर सुंदर है। स्वर्गीय लाला व्रजमोहन दास ने लगभग ४७ हज़ार की संपत्ति इसे दी थी; जिसमें से २५ हज़ार रुपए इलाहाबाद-बैंक में जमा हैं। १९१८ ई० में, इसमें, ४४३० पुस्तकें थीं । काशी-नागरी-प्रचारिणी के आर्य-भाषा-पुस्तकालय, भागलपुर के भगवान-पुस्तकालय, गया के मन्नूलाल-पुस्तकालय,

(४) उनकी पुस्तकें किस दशा * में हैं ?

(५) उनकी पुस्तक-सूची अक्षरानुक्रम, विषयानुक्रम, ग्रंथकारानुक्रम और प्रकाशकानुक्रम से अलग-अलग तैयार हुई है या नहीं ?

(६) उनके वाचनालय † और कार्यालय के बही-खाते कैसे हैं ?

(७) उनमें पुरानी और नई पत्र-पत्रिकाओं की फ़ाइलें किस तरह रक्खी गई हैं ?

(८) उनके आय-व्यय का हिसाब ठीक है या नहीं ?

(९) उनकी नियमावली और प्रबंध-शैली में क्या दोष है ?

ऐसी सब बातों पर विचार करके उनकी उन्नति के लिये प्रयत्न करना चाहिए । किंतु जब तक सम्मेलन को संबद्ध पुस्तकालयों से प्रति वर्ष नियमित आय न होगी, तब तक उनके लिये वह विशेष कुछ कर भी नहीं सकता । इसलिये प्रत्येक पुस्तकालय को अब शीघ्र ही सम्मेलन से संबद्ध हो जाना चाहिए, और सम्मेलन को भी, पुस्तकालयों के संगठन तथा संचालन के लिये, निर्णय-पूर्वक नियमोपनियमादि का निर्माण कराना चाहिए । संगठन से लाभ यह होगा कि—

(१) जब सम्मेलन का प्रस्तावित महापुस्तकालय (अथवा 'राष्ट्र-भाषा का विराट् संग्रहालय') तैयार होगा, तब वह समस्त संबद्ध पुस्तकालयों के प्रपितामह-पद पर

आदि के भवन भी बहुत अच्छे हैं । सुना है, फ़र्रुख़ाबाद, फ़ीरोज़पुर, कानपुर और भरतपुर आदि नगरों के पुस्तकालय बड़े सुंदर और स्वतंत्र भवनों में हैं । मैंने कानपुर के कई पुस्तकालयों को देखा है । उनके भवन तो उतने अच्छे नहीं हैं, और संभवतः किराए के हैं । हाँ, उनके कार्यकर्ता उत्साही जान पड़े । पुस्तकालय के लिये ऐसे स्थान में भवन रहना चाहिए, जो एकांत, शांत और स्वच्छ हो तथा भवन में हवा और रोशनी अधिक पहुँचती हो ।

* पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं की दशा, गया के मन्नूलाल-पुस्तकालय में, सबसे अच्छी है । हनुमान्-पुस्तकालय (हवड़ा), भारती-भवन (प्रयाग) और आर्य-भाषा-पुस्तकालय (काशी) तथा मारवाड़ी-पुस्तकालय (दिल्ली) में भी पुस्तकों की दशा अच्छी ही है । मन्नूलाल-पुस्तकालय को मैंने कई बार देखा है । मुझे भारत के प्रायः सभी प्रांतों के प्रधान नगरों में जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, और मैंने बड़े शौक़ से ढूँढ़-ढूँढ़कर पुस्तकालयों को देखा है; पर, तो भी, मन्नूलाल-पुस्तकालय किसी से कम नहीं जँचा, बल्कि बहुतों से अच्छा ही जान पड़ा । २७–४–१७ के पाटलिपुत्र में मैंने उक्त पुस्तकालय का पूर्ण परिचय लिखा था । सन् १९११ में माननीय मालवीयजी ने उसे खोला था । उस साल उसमें हज़ारों मुद्रित पुस्तकों के सिवा प्राचीन हस्त-लिपियाँ १,००० थीं ; जिनमें २०० केवल हिंदी-काव्य-ग्रंथ थे । उनमें सबसे सुंदर पुस्तक थी, संवत् १९३७ की लिखी श्रीरामचंद्रिका की रुद्रजीत-कृत टीका । उस पुस्तकालय की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी है । गया के सेठ सूर्यप्रसाद महाजन ने, अपने पिता की स्मृति में, लोकोपकारार्थ, उसकी सृष्टि और वृद्धि की है । इस पथ में वह धन-कुबेरों के आदर्श हैं ।

† वाचनालय का हवादार और प्रकाशमय होना तो आवश्यक है ही, उसे शांति-पूर्ण भी होना चाहिए । वहाँ, जरूरत पड़ने पर, पाठकों को काग़ज़-पेंसिल आदि लेखन-सामग्री देने की भी व्यवस्था रहनी चाहिए । अँगरेज़ी-पुस्तकालयों के पाठक अपने साथ नोट-बुक और पेंसिल वग़ैरह हमेशा रखते हैं । किंतु हिंदी-पुस्तकालयों में उपन्यासों के प्रेमी तथा अख़बारों को उलट-पलटकर इधर-उधर रख देनेवाले पाठक ही प्रायः आते हैं । वाचनालयों को केवल मनोरंजन-गृह अथवा विनोद-शाला समझनेवाले ऐसे सज्जनों को लार्ड बायरन का यह उपदेश सदा स्मरण रखना चाहिए—

" In reading authors when you find
Bright passages, that strike your mind,
And which, perhaps, you may have reason,
To think on, at another season,
Be not contented with the sight,
But take them down in black and white.
Such a respect is wisely shown,
As makes another's sense one's own. "

अर्थात् "जब तुम पुस्तकें पढ़ो, तब जो सुंदर रचनाएँ तुम्हें बहुत अच्छी जँचें, और जिन पर तुम अपने किसी अवकाश के समय अच्छी तरह विचार कर सको, उन्हें सिर्फ़ देखकर ही संतोष मत कर लो, बल्कि लिख लो । ऐसा करना बुद्धिमानी का काम और दूसरे के विचारों को अपना बना लेने का बड़ा अच्छा तरीका है ।"

प्रतिष्ठित होकर, व्यास-नंदन शुकदेव की तरह, बालक होने पर भी, सम्मेलन के नाते, गौरवास्पद समझा जायगा; और इसलिये सम्मेलन, अपने संग्रहालय-विभाग द्वारा, सब पुस्तकालयों पर प्रभाव रख सकेगा।

(२) अपने परीक्षा-केंद्रों की संख्या-वृद्धि करने में सम्मेलन को सफलता होगी।

(३) सम्मेलन के प्रस्तावों और उद्देश्यों के प्रचार तथा साफल्य में सुगमता होगी।

(४) जिन प्राचीन ग्रंथों या अप्राप्य मुद्रित पुस्तकों का संग्रह किसी प्रकार सम्मेलन के संग्रहालय में न हो सकेगा, उनका पता लगाने में सम्मेलन विशेष सफल होगा। एतदर्थ सम्मेलन के लिये यह परमावश्यक होगा कि वह समस्त संबद्ध पुस्तकालयों के सूचीपत्रों, वार्षिक कार्य-विवरणों और नियमावलियों आदि का संग्रह कर रक्खे।

(५) किसी अनिष्टकारक पुस्तक का प्रचार रोकने में सम्मेलन बहुलांश में कृतकार्य हो सकेगा। अश्लील एवं भ्रष्ट साहित्य का प्रचार रुकने से गंदी पुस्तकों के प्रकाशक सँभल जायँगे।

(६) सम्मेलन-पत्रिका का प्रचार बढ़ेगा, और सम्मेलन की लेख-मालाओं, सालाना रिपोर्टों तथा पुस्तकों की ख़ासी खपत होगी।

(७) सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशनों में प्रतिनिधियों की संख्या बढ़ेगी।

(८) हिंदी की सुविस्तृत डाइरेक्टरी तैयार करने में बड़ी सहायता मिलेगी।

(९) अन्यान्य अनेक लाभ होंगे * ; जिनसे हिंदी का पथ परिष्कृत, अधिकार दृढ़, क्षेत्र विस्तृत और भविष्य उज्ज्वल होगा।

पाठकप्रवरो, मैंने जो कुछ ऊपर लिखा है, सब संक्षिप्त रीति से, सूत्र-रूप में। यदि आप विचार करेंगे, तो सभी बातें स्पष्ट समझ में आ जायँगी। किंतु केवल समझ लेने से ही काम न चलेगा। आप तो जानते ही हैं कि सम्मेलन ने एक विशाल ग्रंथ-संग्रहालय बनवाने का इरादा किया है, और उसके लिये दो लाख रुपए की अपील प्रकाशित हुई है। यदि आपके पास द्रव्य और सात्त्विक दान की श्रद्धा हो, तो शीघ्र अपना कर्तव्य पूरा कीजिए। यदि आपके पास, या आपके किसी परिचित व्यक्ति के पास, हस्त-लिखित पोथियाँ हों, तो, अपने अभिप्राय के साथ, सम्मेलन को सूचना दीजिए। यदि आपके पास अलभ्य मुद्रित ग्रंथ हों, तो भी सम्मेलन से पत्र-व्यवहार कीजिए। यदि आप प्रकाशक हैं, तो अपनी सारी पुस्तकों के प्रत्येक संस्करण की एक-एक प्रति, अथवा जो सुलभ एवं समुपस्थित हो, सम्मेलन की सेवा में सादर समर्पित कीजिए। यदि आप लेखक और संपादक हैं, तो अपनी पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं को सम्मेलन-कार्यालय में भेजिए; साथ ही लेख और टिप्पणियाँ लिखकर, विविध सूचनाएँ प्रकाशित करके, सम्मेलन की सहायता भी कीजिए। और, यह भी याद रखिए कि यदि आप सम्मेलन के पृष्ठ-पोषक न बनेंगे, तो राष्ट्रभाषा-पद-वाच्य हिंदी का उन्नयन एवं गौरव-वर्द्धन करनेवाली सारी शक्तियाँ बिखरी हुई पड़ी रह जायँगी, और फिर हाथ मलने के सिवा कुछ हाथ न आवेगा।

सम्मेलन का संग्रहालय अब बिना बने नहीं रहेगा; क्योंकि हिंदी-संसार के कर्मवीर टंडनजी उसके लिये किए जानेवाले उद्योग के मूल में हैं। इस वर्ष न सही, कुछ वर्षों के बाद ही सही, पर उसका बनना ध्रुव हो गया। उसकी आवश्यकता सबकी समझ में आ गई। आवश्य-

---

* उदाहरणार्थ, मान लीजिए, यदि सम्मेलन को अपने संग्रहालय में दैनिक और साप्ताहिक पत्रों की फ़ाइलों का संग्रह करना हो, तो क्या वह इस कष्ट-साध्य कार्य में अपने संबद्ध पुस्तकालयों से सहायता नहीं ले सकता? प्रत्येक पुस्तकालय ख़ास-ख़ास दैनिकों और साप्ताहिकों की पूरी फ़ाइलें तैयार करके उसे प्रति वर्ष दे सकता है। सब पुस्तकालयों को सम्मेलन से पत्र-व्यवहार करके यह पहले ही निश्चित कर लेना होगा कि किसे किस पत्र की फ़ाइल देने का भार सौंपा गया है। हाँ, मासिक पत्रों की फ़ाइलों का संग्रह सम्मेलन-संग्रहालय को स्वयं करना पड़ेगा। किंतु जिन साप्ताहिकों और दैनिकों का संग्रह करना उसके लिये झंझट का काम होगा, उन्हीं पत्रों का संग्रह करने के लिये वह पुस्तकालय-विशेष से अनुरोध कर सकेगा। दैनिकों और साप्ताहिकों का संग्रह करना इसलिये आवश्यक होगा कि वे भारत-माता के रोज़नामचे हैं। किसी दिन ऐतिहासिक अनुसंधान करनेवाले विद्वानों के लिये इस देश की सामग्रियों का मूल्य आज से कहीं अधिक होगा।

कता ही आविष्कार की जननी है । अतएव यहाँ कई बातें विचारणीय हैं । क्या सम्मेलन को समस्त प्राचीन एवं नवीन ग्रंथों का संग्रह करने में असुविधा —कठिनाई— न होगी ? क्या उसे सभी पुस्तक प्रकाशकों और पुस्तकालयों के सूचीपत्रों का पारायण न करना पड़ेगा ? क्या उसे लेखकों से उनकी अपनी बनाई पुस्तकों की सविवरण सूची न माँगनी पड़ेगी ? इत्यादि । कुछ सज्जन मेरी इन बातों को पढ़कर यही कहेंगे कि "राजा होंगे तो खायँगे क्या ?"—यह तो वही मसल हुई । परंतु विचारशील पाठक इन बातों को पढ़कर स्वभावतः गंभीर और चिंताशील बन जायँगे । मेरा निवेदन यह है कि यदि आप उन असुविधाओं और झंझट-झमेलों से सम्मेलन का पिंड छुड़ाना चाहते हैं, तो कृपा करके "हिंदी-पुस्तक-कोष" की रचना करने में, उसे सर्वांग-सुंदर और सर्वथा संपन्न बनाने में, हाथ बटाइए । 'माधुरी'* के सिवा अन्यान्य पत्रों में भी आप उक्त कोष की चर्चा पढ़ चुके होंगे । वह कोष तैयार हो चला है । वह कोष श्रीमान् पंडित रामगोविंद त्रिवेदी (वेदांत-शास्त्री) के घोर परिश्रम का अनुपम फल होगा । उसमें आज तक की समस्त हिंदी-पुस्तकों का विवरणात्मक परिचय रहेगा, चाहे वे प्राचीन हों या नवीन, मुद्रित हों या अप्रकाशित, प्राप्य हों या अप्राप्य । उस कोष की सहायता, सम्मेलन के प्रस्तावित संग्रहालय की पूर्णता के लिये, अनिवार्य और पर्याप्त होगी । उसके अनुसार जिस पुस्तकालय को संपन्न बना दिया जायगा, वही हिंदी का आदर्श पुस्तकालय बन जायगा । वह प्रत्येक पुस्तकालय का अलंकार-स्वरूप होगा । उसे सर्वांग-पूर्ण बनाने के लिये उक्त शास्त्रीजी द्रव्य, श्रम और समय का समुचित सदुपयोग कर रहे हैं । अब तक उन्होंने सामग्री संग्रह करने में आशातीत सफलता पाई है, तो भी उन्हें जिन प्रकाशकों, लेखकों, पुस्तकालयों और हिंदी-हितैषियों से अभी सहायता नहीं मिली है, उनका परम कर्तव्य है कि वे शास्त्रीजी का अत्यधिक परिश्रम सार्थक करें । कुछ सज्जनों की धारणा है कि 'वह कभी पूर्ण होगा ही नहीं' । मैं कहता हूँ कि संवत् १९८० तक तो वह सर्वांग-पूर्ण होगा, अथवा हो जायगा ; क्योंकि प्रथम संस्करण की सारी त्रुटियाँ द्वितीय संस्करण में दूर हो जायँगी । फिर संवत् १९८१ से उसके वार्षिक संस्करण निकाले जायँगे । पुराने, अप्रकाशित और दुर्लभ ग्रंथों की विवरणात्मक सूची प्रस्तुत करना जितना श्रम-साध्य और समयापेक्ष है, उतना वर्तमान ग्रंथों की तालिका तैयार करना कठिन नहीं है । इसका कारण समझाने की ज़रूरत नहीं है । आशा है, उक्त पुस्तक-कोष हिंदी की उन्नति की आलीशान इमारत का सबसे सुदृढ़ स्तंभ होगा । कारण, पुस्तकालयों की सजावट करने में, हिंदी-साहित्य के अभावों की पूर्ति करने में, ग्रंथ-विशेष की रचना के लिये उपयुक्त साधन-संग्रह करने में, हिंदी के युग-परिवर्तन और क्रम-विकास पर विचार करने में, उससे यथेष्ट साहाय्य प्राप्त होगा । अतएव पुस्तकालयों की महत्ता और उपयोगिता को समझनेवाले प्रत्येक हिंदी-हितैषी को, उक्त शास्त्रीजी से, नं० २२ सरकार-लेन (भारती-प्रेस) कलकत्ते के पते से, पत्र लिखकर, कोष-संबंधी प्रश्नों के वितरणार्थ छपे हुए पर्चे मँगाने चाहिए, और उनके संतोषजनक उत्तर देकर हिंदी के हित-साधन के इतने बड़े काम में योग देना चाहिए ।

शिवपूजनसहाय

काव्य में प्राकृतिक दृश्य

उत्तरार्द्ध

खेद के साथ कहना पड़ता है कि हिंदी की कविता का उत्थान उस समय हुआ, जब संस्कृत-काव्य लक्ष्य-च्युत हो चुका था । इसीसे हिंदी की कविताओं में प्राकृतिक दृश्योंका वह सूक्ष्म वर्णन नहीं मिलता, जो संस्कृत की प्राचीन कविताओं में पाया जाता है । केशव के पीछे तो प्रबंध-काव्यों का बनना एक प्रकार से बंद ही हो गया । आचार्य बनने का ही हौसला रह गया, कवि बनने का नहीं । अलंकार और नायिका-भेद के लक्षण-ग्रंथ लिखकर अपने रचे उदाहरण देने में ही कवियों ने अपने कार्य की समाप्ति मान ली । ऐसे फुटकर पद्य-रचयिताओं की परिमित कृति में प्राकृतिक

---

* देखिए 'माधुरी' की गत दसवीं संख्या का 'विविध विषय' ।

दृश्य ढूँढ़ना ही व्यर्थ है। शृंगार के उद्दीपन के रूप में 'षट्ऋतु' का वर्णन अवश्य कुछ मिलता है; पर उसमें बाह्य प्रकृति के रूपों का प्रत्यक्षीकरण मुख्य नहीं होता, नायक-नायिका का प्रमोद या संताप ही मुख्य होता है। अब रहे दो-चार आख्यान-काव्य। उनमें दृश्य-वर्णन को स्थान ही बहुत कम दिया गया है। अगर कुछ वर्णन परंपरा-पालन की दृष्टि से है भी, तो वह अलंकार-प्रधान है। उपमा, उत्प्रेक्षा आदि की भरमार इस बात की स्पष्ट सूचना दे रही है कि कवि का मन दृश्यों के प्रत्यक्षीकरण में लगा नहीं है, उचट-उचटकर दूसरी ओर जा पड़ा है।

कोई एक वस्तु सामने आई कि उपमा के पीछे परेशान। श्याम के 'छबीले मुख' का प्रसंग आया। बस, अंधे सूरदास चारों ओर उपमा टटोल रहे हैं—

बलि-बलि जाउँ छबीले मुख की, या पटतर को को है?
या बानक उपमा दीबे को सुकबि कहा टकटोहै?

उपमाएँ यदि मिलती गईं, तब तो सब ठीक ही ठीक, एक वस्तु के ऊपर उपमा पर उपमा, उत्प्रेक्षा पर उत्प्रेक्षा लादते चले जा रहे हैं। "हरि-कर राजत माखन, रोटी", बस, इतनी ही-सी तो बात है, उस पर—

मनो बारिज ससि बैर जानि जिय गह्यो सुधांशुहि घोटी;
मनो बराह भूधर-सह पृथिवी धरी दसनन की कोटी।

एक छोटी-सी रोटी की हक़ीक़त ही कितनी, उस पर पहाड़ के सहित ज़मीन का बोझ लाकर रख दिया! उपमाएँ यदि न मिलीं, तो बस, 'शेष, शारदा' पर फिरे, उनकी इज़्ज़त लेने पर उतारू!

मलिक मुहम्मद जायसी की 'पद्मावत' यद्यपि एक आख्यान-काव्य है, पर उसमें भी स्थल-वर्णन सूक्ष्म नहीं है। सिंहल-द्वीप के गढ़, राज-द्वार, बग़ीचे आदि का वर्णन है। बग़ीचे के वर्णन में पेड़ों और चिड़ियों की फ़ेहरिस्त है; जो बहेलियों और मालियों से भी मिल सकती है। प्राप्त प्रथा के अनुसार पद्मावती के संयोग-सुख के संबंध में 'षट्ऋतु' और नागमती की विरह-वेदना के प्रसंग में 'बारहमासा' अलबत है। दोनों का ढंग वही है, जो ऊपर कहा गया है। दो उदाहरण यथेष्ट होंगे—

ऋतु पावस बरसै पिउ पावा; सावन-भादौं अधिक सुहावा।
पद्मावति चाहति ऋतु पाई; गगन सुहावन, भूमि सुहाई।
कोकिल बैन, पाँति बग छूटी; धन निसरीं जनु बीरबहूटी।
चमक बीजु, बरसै जल सोना; दादुर-मोर सबद सुठि लोना।
रँग-राती पिय-सँग निसि जागी; गरजे गगन, चौंकि गर लागी।
सीतल बूँद, ऊँच चौपारा; हरियर सब दीखै संसारा।
हरियर भूमि, कुसुंभी चोला; औ धन पिय-सँग रचा हिंडोला।

संयोग शृंगार की दृष्टि से यह वर्णन बड़ा मनोहर है। पर इसमें कवि का अपना सूक्ष्म निरीक्षण "बरसै जल सोना" में ही दिखाई पड़ता है। और सब वर्णन परंपरानुसारी ही है। अब विप्रलंभ-शृंगार के अंतर्गत असाढ़ का वर्णन लीजिए—

चढ़ा असाढ़, गगन घन गाजा; साजा बिरह दुंद दल बाजा।
धूम श्याम धौरी घन धाए; सेत धुजा बग-पाँति दिखाए।
खरग-बीजु चमकै चहुँ ओरा; बुंद-बान बरसहिं घन घोरा।
उनई घटा आइ चहुँ फेरी; कंत! उबार मदन हौं घेरी।
दादुर, मोर, कोकिला पीऊ; गिरहि बीज, घट रहै न जीऊ।
पुष्य-नखत सिर ऊपर आवा; हौं बिनु नाह, मँदिर को छावा?

पाठक देख सकते हैं कि फुटकर कहने या गाने के लिये ये पद्य कितने सुंदर हैं। पर एक प्रबंध-काव्य के भीतर दृश्य चित्रण की दृष्टि से यदि इन्हें देखते हैं, तो संतोष नहीं होता। अन्य के संबंध में स्थित किसी भाव के 'उद्दीपन'-मात्र के लिये जितना वस्तु-विन्यास अपेक्षित था, उतना जायसी ने किया, इसमें कोई संदेह नहीं। 'उद्दीपन'-रूप में दृश्य जो प्रभाव उत्पन्न करता है, वह दूसरे के—अर्थात् 'आलंबन' के—संबंध से, स्वतंत्र-रूप में नहीं। पर, जैसा कि सिद्ध किया जा चुका है, प्राकृतिक दृश्य मनुष्य के भावों के स्वतंत्र आलंबन भी होते हैं। प्राचीन कवियों ने इन्हें पात्र के आलंबन के रूप में और श्रोता के आलंबन के रूप में, दोनों रूपों में संनिविष्ट किया है। 'कुमारसंभव' का हिमालय-वर्णन श्रोता या पाठक के आलंबन के रूप में है। वाल्मीकि-रामायण में लक्ष्मण का हेमंत के अंतर्गत पंचवटी दृश्य-वर्णन पात्र और श्रोता, दोनों के भाव का आलंबन है; वर्षा और शरत् का वर्णन पात्र (राम) के पक्ष में तो 'उद्दीपन' है, किंतु रूप के सूक्ष्म विश्लेषण के बल से श्रोता के लिये आलंबन हो गया है।

एक बड़े प्रबंध-काव्य में प्राकृतिक दृश्यों का श्रोता के भाव के आलंबन-रूप में वर्णन भी आवश्यक है, और यह स्वरूप उन्हें तभी प्राप्त हो सकता है, जब उनका चित्रण ऐसे ब्योरे के साथ हो कि उनका बिंब-ग्रहण हो, उनका पूर्ण स्वरूप पाठक या श्रोता की कल्पना में उपस्थित

हो जाय। कारण, रति या तल्लीनता उत्पन्न करने के लिये प्रत्यक्ष स्वरूप का परिचय आवश्यक है। सारांश यह कि 'उद्दीपन' होने के लिये रूप का थोड़ा-थोड़ा प्रकाश क्या, संकेत-मात्र यथेष्ट है; पर 'आलंबन' होने के लिये पूर्ण और स्पष्ट स्फुरण होना चाहिए।

गोस्वामी तुलसीदासजी के भक्ति-पूर्ण हृदय में भगवान् रामचंद्र के संबंध से चित्रकूट के प्रति जो प्रेम-भाव प्रतिष्ठित था, उसके कारण उन्होंने उसके रम्य स्वरूप पर अधिक दृष्टि जमाई है। नीचे दिए हुए वर्णन में यद्यपि प्रचलित रीति के अनुसार प्रत्येक वस्तु और व्यापार के साथ दृष्टांत और उत्प्रेक्षा लगी हुई है, पर निरीक्षण बहुत अच्छा है—

सब दिन चित्रकूट नीको लागत;
बरषा-ऋतु-प्रबेस बिसेष गिरि देखत मन अनुरागत।
चहुँ दिसि बन संपन्न, बिहग-मृग बोलत सोभा पावत;
जनु सुनरेस-देस-पुर प्रमुदित प्रजा सकल सुख छावत।
सोहत स्याम जलद मृदु घोरत धातु-रँगमगे सृंगनि;
मनहुँ आदि अंभोज बिराजत सेवित सुर-मुनि-भृंगनि।
सिखर परसि घन-घटहि मिलति बग पाँति सो छबि कबि बरनी;
आदि बराह बिहरि बारिधि मनो उठ्यो है दसन धरि धरनी।
जल-जुत बिमल सिलनि झलकत नभ-बन-प्रतिबिंब तरंग;
मानहुँ जग-रचना बिचित्र बिलसति बिराट-अँग-अंग।
मंदाकिनिहि मिलत झरना झरि-झरि, भरि-भरि जल आछे;
'तुलसी' सकल सुकृत-सुख लागे मनौ राम-भक्ति के पाछे।

बाह्य प्रकृति के संबंध में सूरदासजी की दृष्टि बहुत परिमित है। एक तो ब्रज की गोचारण-भूमि के बाहर उन्होंने पैर ही नहीं निकाला, दूसरे उस भूमि का भी पूर्ण चित्र उन्होंने कहीं नहीं खींचा। उद्दीपन के रूप में केवल द्रुम, बल्ली और यमुना के किनारेवाले कदंब का उल्लेख-भर बार-बार मिलता है। गोपियों के विरह के प्रसंग में रीति के अनुसार पावस आदि का वर्णन अवश्य है; पर कहने की आवश्यकता नहीं कि उसमें पावस स्वरूप-स्थित नहीं है, वियोगिनी गोपियों के मानस-प्रदत्त रूप में है—कहीं वह कृष्ण रूप में है, कहीं चढ़ाई करते हुए राजा के रूप में, इत्यादि। जैसे—

आजु घनस्याम की अनुहारि;
उनइ आए साँवरे-से, सजनी! देखु रूप की आरि।
इंद्रधनुष मानो पीत बसन-छबि, दामिनि दसन बिचारि,
जनु बग-पाँति माल मोतिन की, चितवत हितहि निहारि।

अथवा—

तुम्हारो गोकुल हो, ब्रजनाथ!
घेरयो है अरि चतुरंगिनि लै मनमथ सेना साथ।
गरजत अति गंभीर गिरा, मनु मैगल मत्त अपार:
धुरवा धूरि उड़त रथ पायक घोरन की खुरतार।

केवल कहीं-कहीं नियत वस्तुओं का कुछ अधिक गिनती-भर मिलती है। जैसे—

बरन-बरन अनेक जलधर अति मनोहर बेष;
तिहि समय, सखि! गगन-सोभा सबहि ते सुबिसेष।
उड़त खग, बग-बृंद राजत, रटत चातक, मोर;
बहुल बिधि-बिधि रुचि बढ़ावत दामिनी घन घोर।
धरनि तृन तनु रोम पुलकित पिय-समागम जानि;
द्रुमनि बर बल्ली बियोगिनि मिलति है पहिचानि।
हंस, सुक, पिक, सारिका, अलि गुंज नाना नाद;
मुदित मंडल भेक-भेकी, बिहग बिगत बिषाद।
कुटज, कुमुद, कदंब, कोबिद कनक आरि, सुकंज,
केतकी, करबीर, बेलउ बिमल बहु बिध मंजु।

यह नामावली निरीक्षण का फल नहीं है। इसकी सूचना 'कुमुद' और 'कोविद' (कोविदार) पद दे रहे हैं। कचनार की शोभा वसंत-ऋतु में ही होती है, जब कि वह फूलता है; और कुमुद की तो पत्तियाँ भी वर्षा-काल में अच्छी तरह नहीं बढ़ी रहतीं।

यहाँ पर यह कह देना आवश्यक है कि वस्तुओं की गिनती गिनाना ही वस्तु-विन्यास नहीं है। आस-पास की और वस्तुओं के बीच उनकी प्रकृत स्थापना से दृश्य के एक पूर्ण सुसंगत रूप की योजना होती है। "मौर लगे हैं, समीर चलता है, कोयल बोलती है," इस प्रकार कहना केवल वस्तुओं और व्यापारों की गिनती गिनाना है। रीति-ग्रंथों में प्रत्येक ऋतु में वर्ण्य वस्तुओं की सूची देखकर यह तो हरएक कर सकता है। यह चित्रण नहीं है। इन्हीं वस्तुओं और व्यापारों को लेकर यदि हम इस प्रकार योजना करें—"वह देखो, मौरों से गुछी, मंद-मंद झूमती हुई आम की डाली पर, हरी-हरी पत्तियों के बीच अपने कृष्ण कलेवर को पूर्ण रूप से न छिपा सकती हुई कोयल बोल रही है!"; तो यह दृश्य अंकित करने का प्रयत्न कहा जायगा। किसी वस्तु का वर्णन जितनी ही अधिक वस्तुओं के संबंध को लिए हुए होगा, उतना ही

वह पेचीला होगा, और कवि के निरीक्षण की सूक्ष्मता प्रकट करेगा । इस दृष्टि से प्राचीन कवियों के वर्णनों का विचार करने पर इस बात का पता लग जायगा। देखिए, वाल्मीकि के 'मुक्तासकाशं' वाले श्लोक में पानी की बूँदों का आकाश से गिरना, गिरकर पत्तों की नोकों पर लगना और चिड़ियों के पंखों को बिगाड़ना, चिड़ियों का पत्तों की नोक पर लगी बूँदों को पीना, इतने अधिक व्यापार एक संबंध-सूत्र में एकत्र पिरोए हुए हैं । इसी प्रकार कालिदास ने हिमालय के पवन के साथ भागीरथी के जल-कण का फैलना, देवदारु के पेड़ों का काँपना, मोर की पूँछों का छितराना, किरातों का मृगों की खोज में निकलना और वायु-सेवन करना, इतने व्यापारों को परस्पर संबद्ध दिखाया है। पर इतनी अधिक संश्लिष्ट योजना के प्रत्यक्षीकरण के लिये विस्तृत और गूढ़ निरीक्षण अपेक्षित है। ऊपर गोस्वामी तुलसीदासजी का जो चित्रकूट-वर्णन दिया गया है, उसमें यह बात कुछ-कुछ है। "सोहत श्याम जलद मृदु घोरत धातु-रँगमगे शृंगनि" में यों ही काले बादल का नाम नहीं ले लिया है ; वह ऊपर उठे हुए शृंग पर दिखाया गया है, और वह शृंग भी गेरू के रंग में रँगा हुआ है। इसी प्रकार "जल-जुत विमल सिलनि झलकत नभ बन-प्रतिबिंब तरंग" में शिलाओं का धुलकर स्वच्छ होना, उन पर बरसाती पानी का लगना, स्वच्छता के कारण उनमें आकाश और वन का प्रतिबिंब दिखाई पड़ना, इतनी बातों की एक वाक्य में संबंध-योजना पाई जाती है।

जायसी-से कवियों के एक और झुकाव का पता लगता है । 'कवि' और 'सयाने' जब एक ही समझे जाने लगे, तब मनुष्य के व्यवसाय विशेष की जानकारी का ख़ज़ाना भी काव्यों में खुलने लगा। घोड़ों का वर्णन है, तो घोड़ों के पचासों भेदों के नाम सुन लीजिए ; जिन्हें शायद घोड़ों के व्यवसायी ही जानते होंगे। भोजन का वर्णन है, तो पूरी, कचौरी, कढ़ी, रायता, चटनी, मुरब्बा, पेड़ा, बरफ़ी, जलेबी, फेनी, गुलाबजामुन आदि जितनी चीज़ों के नाम कविजी जानते हैं, सब मौजूद ! इन व्यंजनों को सामने रखने से पाठकों को ललचाने के सिवा और क्या प्रयोजन सिद्ध हो सकता है ? पर काव्य भूख जगाने के लिये तो है नहीं। जिसे रोग आदि के कारण भोजन से अरुचि हो गई होगी, वह किसी अच्छे वैद्य के नुस्ख़े का सेवन करेगा भोजन की पत्तल का वर्णन करना प्राचीन कवि भद्दापन और काव्य-शिष्टता के विरुद्ध समझते थे। इसी से उन्होंने दृश्य-काव्य में भोजन के दृश्य का निषेध किया है। नामावली की इस प्रथा का अनुसरण जायसी, सूरदास, सूदन और महाराज रघुराजसिंह ने अधिक किया है । अस्त्र-शस्त्रों और पहरावों के नामों की फ़ेहरिस्त देखनी हो, तो सूदन का 'सुजान-चरित्र' पढ़िए । हाथी-घोड़ों, सवारियों और राजसी ठाट-बाट की वस्तुओं के नाम याद करने हों, तो महाराज रघुराजसिंह का 'राम-स्वयंवर' उठा लीजिए।

केशवदासजी को अपने श्लेष, यमक और उत्प्रेक्षा इत्यादि से फ़ुरसत कहाँ कि विस्तृत संबंध-योजना के साथ प्रकृति का निरीक्षण करने जायँ । सीधी तरह से कुछ वस्तुओं का नाम ले जायँ, यही ग़नीमत है—

फल-फूलन-पूरे, तरुवर रूरे, कोकिल-कुल कलरव बोलैं ;
अति मत्त मयूरी, पियरस-पूरी, बन-बन प्रति नाचति डोलैं।

देखिए, दंडक वन के वर्णन में श्लेष का यह चमत्कार दिखाकर आप चलते हुए—

सोभत दंडक की रुचि बनी, भाँतिन-भाँतिन सुंदर घनी।
सेव बड़े नृप की जनु लसै, श्रीफल भूरिभाव जहँ बसै।
बेर भयानक-सी अति लगै, अर्क-समूह जहाँ जगमगै।

'बेर', 'बनी', 'श्री-फल' और 'अर्क' शब्दों में श्लेष की कारीगरी दिखा दी, बस, हो गया । वन-स्थली के प्रति उनका अनुराग तो था नहीं कि उसके रूप की छटा ब्योरे के साथ दिखाते। 'भयानक' शब्द जो रक्खा हुआ है, वह 'भाव' का सूचक नहीं है ; क्योंकि न तो 'बेर' ही कोई भयंकर वस्तु है, न आक (मदार) ही। श्लेष से 'अर्क' का अर्थ सूर्य लेने से 'समूह' के कारण प्रलय-काल का अर्थ निकलता है, जो प्रस्तुत नहीं है। दंडक-वन क्या दे देता —'आनंद' दे सकता था, वह भी नहीं देता था —जो उसके रूप का विश्लेषण केशवदासजी करने जाते ? राजा की सेवा से 'श्री-फल' प्राप्त होता था, उसका ज़िक्र मौजूद है।

जब केशवदासजी का यह हाल है, तब फुटकर पद्य कहनेवाले उनके अनुयायी 'कविंदों' में प्रकृति का रूप-विश्लेषण ढूँढ़ना ही व्यर्थ है। ऋतु-वर्णन की पुरानी रीति उन्होंने निबाही है । उनके वर्णन में उद्दीपन-भर के

लिये फुटकर वस्तुएँ आई हैं; सो वे भी उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक आदि की भीड़ में छिपी हुई हैं। वसंत कहीं राजा होकर आया है, कहीं फ़ौजदार, कहीं फ़क़ीर, कहीं कुछ, कहीं कुछ। किसी ने कुछ बढ़कर हाथ मारा, तो शिशिर और ग्रीष्म-ऋतु में जो अपने शरीर की दशा देखी, उसका वर्णन कर दिया, और उपचार का नुस्ख़ा कह गए—

ग्रीषम की गजब धुकी है धूप धाम-धाम,
गरमी झुकी है जाम-जाम अति तापिनी;
भीजे खस-बीजन डुलाए ना सुखात सेद,
गात ना सुहात, बात दावा-सी डरापिनी।
'ग्वाल'' कवि कहैं कोरे कुंभन में कूपन तें
लै-लै जलधार बार-बार मुख थापिनी;
जब पियो, तब पियो, अब पियो, फेरि अब,
पीवत-हू-पीवत बुझै न प्यास पापिनी।

गरमी के मौसम के लिये एक कविजी राय देते हैं—

× × ×

सीतल गुलाब-जल भरि चहबच्चन में
डारि कै कमल-दल न्हाइबे को धँसिए।
"कालिदास" अंग-अंग अगर-अतर-संग
केसर, उसीर-नीर, घनसार घँसिए;
जेठ में गोविंदलाल चंदन के चहलन
भरि-भरि गोकुल के महलन बसिए।

मेरे कहने का अभिप्राय यह नहीं कि इन कवियों में कहीं प्रकृति का निरीक्षण मिलेगा ही नहीं। मिलेगा, पर थोड़ा, और वह भी बहुत ढूँढ़ने पर कहीं एकाध जगह। जैसे—

बृष को तरनि-तेज सहसौ किरन तपै,
ज्वालनि के जाल बिकराल बरसत है;
तचति धरनि, जग झुरत झुरनि, सीरी
छाँह को पकरि पंथी, पंछी बिरमत है।
'सेनापति' नेक दुपहरी ढरकत होत
घमका * बिषम, जो न पात खरकत है;
मेरे जान, पौन सीरे ठौर को पकरि कोऊ,
घरी एक बैठि कहूँ घामै बितवत है।

नंददासजी एक प्रसिद्ध कृष्ण-भक्त और कवि थे। पर व्रजभूमि की महिमा का बखान करते समय दृश्य अंकित करने के बखेड़े में वह भी नहीं पड़े। वहाँ चिर वसंत रहता है, इतने ही में अपना मतलब सबको समझा दिया—

श्रीबृंदाबन चिदघन, कछु छबि बरनि न जाई;
कृष्ण ललित लीला के काज गहि रह्यो जड़ताई।
जहँ नग, खग, मृग, लता, कुंज, बीरुध, तृन जेते;
नहिंन काल-गुन, प्रभा सदा सोभित रहैं तेते।
सकल जंतु अविरुद्ध जहाँ; हरि, मृग सँग चरहीं;
काम-क्रोध-मद-लोभ-रहित लीला अनुसरहीं।
सब दिन रहत बसंत कृष्ण-अवलोकनि लोभा;
त्रिभुवन कानन जा बिभूति करि सोभित सोभा।
या बन की बर बानिक या बन ही बनि आवै;
सेस, महेस, सुरेस, गनेस न पारहिं पावै।

भारतेंदु हरिश्चंद्र के समय से हमारी भाषा नए मार्ग पर आ खड़ी हुई; पर दृश्य-वर्णन में कोई संस्कार नहीं हुआ। वाल्मीकि, कालिदास आदि प्राचीन कवियों की प्रणाली का अध्ययन करके सुधार का यत्न नहीं किया गया। भारतेंदुजी का जीवन एकदम नागरिक था। मानवी प्रकृति में ही उनकी तल्लीनता अधिक पाई जाती है; बाह्य प्रकृति के साथ उनके हृदय का वैसा सामंजस्य नहीं पाया जाता। 'सत्य हरिश्चंद्र' में गंगा का और 'चंद्रावली' में यमुना का वर्णन अच्छा कहा जाता है। पर ये दोनों वर्णन भी पिछले खेवे के कवियों की परंपरा के अनुसार ही हैं। इनमें भी एक-एक-साथ कई वस्तुओं और व्यापारों की सूक्ष्म संबंध-योजना नहीं है, केवल वस्तुओं और व्यापारों के पृथक्-पृथक् कथन के साथ उपमा, उत्प्रेक्षा आदि का प्राचुर्य है। दोनों के कुछ नमूने नीचे दिए जाते हैं—

(क)

नव उज्जल जल-धार हार हीरक-सी सोहति;
बिच-बिच छहरति बूँद मध्य मुक्ता-मनि पोहति।
लोल लहर लहि पवन एक पै इक इमि आवत;
जिमि नरगन मन बिबिध मनोरथ करत, मिटावत।
कहूँ बँधे नव घाट उच्च गिरिबर-सम सोहत;
कहुँ छतरी, कहुँ मढ़ी बढ़ी मन मोहत जोहत।
धवल धाम चहुँ ओर फरहरत धुजा-पताका;
घहरति घंटा-धुनि, धमकत धौंसा करि साका।
कहुँ सुंदरी नहाति, नीर कर जुगल उछारत;
जुग अंबुज मिलि मुक्त-गुच्छ मनु सुच्छ निकारत।
धोवति सुंदरि बदन करन अति ही छबि पावत;
बारिधि नाते ससि-कलंक मनु कमल मिटावत।

---

* घमका=हवा का गिरना या ठहर जाना।

(ख)

तरनि-तनूजा-तट तमाल तरुबर बहु छाए ;
झुके कूल सों जल-परसन-हित मनहुँ सुहाए ।
किधौं मुकुर में लखत उझकि सब निज-निज सोभा;
कै प्रनवत जल जानि परम पावन फल-लोभा ।
मनु आतप वारन तीर को सिमिटि सबै छाए रहत ;
कै हरि-सेवा-हित नै रहे, निरखि नैन-मन सुख लहत ।
कहूँ तीर पर अमल कमल सोभित बहु भाँतिन ;
कहुँ सैवालन-मध्य कुमुदिनी लगि रहि पाँतिन ।
मनु दृग धारि अनेक जमुन निरखति ब्रज-सोभा ;
कै उमँगे प्रिय-प्रिया-प्रेम के अनगिन गोभा ।
कै करिकै कर बहु पीय को टेरत निज ढिग सोहई ;
कै पूजन को उपचार लै चलति मिलन मन मोहई ।
कै पिय-पद-उपमान जानि यहि निज उर धारत ;
कै मुख करि बहु भृंगन-मिस अस्तुति उच्चारत ।
कै ब्रज-तियगन-बदन-कमल की झलकति झाँई ;
कै ब्रज हरि-पद-परस हेतु कमला बहु आई ।

देखिए, यमुना के वर्णन में "सैवालन-मध्य कुमुदिनी" में दो वस्तुओं की संबंध-योजना थी ; पर आगे चलकर जो 'उत्प्रेक्षा' और 'संदेह' की भरमार हुई, तो उसमें अलग-अलग कुमुद और कमल ही रह गए, और वे भी अलंकारों के बोझ के नीचे दबे हुए ।

मैं समझता हूँ, अब यह दिखाने के लिये और अधिक प्रयास की आवश्यकता नहीं है कि वन, पर्वत, नदी, निर्झर आदि प्राकृतिक दृश्य हमारे राग या रति-भाव के स्वतंत्र आलंबन हैं, उनमें सहृदयों के लिये सहज आकर्षण वर्तमान है । इन दृश्यों के अंतर्गत जो वस्तुएँ और व्यापार होंगे, उनमें जीवन के मूल-स्वरूप और मूल-परिस्थिति का आभास पाकर हमारी वृत्तियाँ तल्लीन होती हैं । जो व्यापार केवल मनुष्य की अधिक समुन्नत बुद्धि के परिणाम होंगे, जो उसके आदिम जीवन से बहुत इधर के होंगे, उनमें प्राकृतिक या पुरातन व्यापारों की-सी तल्लीन करने की शक्ति न होगी । जैसे, "सीतल गुलाब-जल भरि चहबच्चन में" बैठे हुए कविजी की अपेक्षा तलैया के कीचड़ में बैठकर जीभ निकाल-निकाल हाँफते हुए कुत्ते का अधिक प्राकृतिक व्यापार कहा जायगा । इसी प्रकार शिशिर में दुशाला ओढ़े "गुलगुली गिलमें, गलीचा" बिछाकर बैठे हुए स्याम से धूप में खपरैल पर बैठी बदन चाटती हुई बिल्ली में अधिक प्राकृतिक भाव है । पुतलीघर में एंजिन चलाते हुए देसी साहब की अपेक्षा खेत में हल चलाते हुए किसान में अधिक स्वाभाविक आकर्षण है । विश्वास न हो, तो भवभूति और कालिदास से पूछ लीजिए ।

जब कि प्राकृतिक दृश्य हमारे भावों के आलंबन हैं, तब इस शंका के लिये कोई स्थान ही नहीं रहा कि प्राकृतिक दृश्यों के वर्णन में कौन-सा रस है ? जो-जो पदार्थ हमारे किसी-न-किसी भाव के विषय हो सकते हैं, उन सबका वर्णन रस के अंतर्गत है ; क्योंकि 'भाव' का ग्रहण भी रस के समान ही होता है । यदि रति-भाव के रस-दशा तक पहुँचने की योग्यता 'दांपत्य रति' में ही मानिए, तो पूर्ण भाव के रूप में भी दृश्यों का वर्णन कवियों की रचनाओं में बराबर मिलता है । जैसे काव्य के किसी पात्र का यह कहना कि "जब मैं इस पुराने आम के पेड़ को देखता हूँ, तब इस बात का स्मरण हो आता है कि यह वही है, जिसके नीचे मैं लड़कपन में बैठा करता था, और सारा शरीर पुलकित हो जाता है, मन एक अपूर्व भाव में मग्न हो जाता है ।", विभाव, अनुभाव और संचारी से पुष्ट भाव-व्यंजना का उदाहरण होगा ।

पहले कहा जा चुका है कि जो वस्तु मनुष्य के भावों का विषय या आलंबन होती है, उसका शब्द-चित्र यदि किसी कवि ने खींच दिया, तो वह एक प्रकार से अपना काम कर चुका । उसके लिये यह अनिवार्य नहीं कि वह 'आश्रय' की भी कल्पना करके उसे उस भाव का अनुभव करता हुआ, हर्ष से नाचता हुआ, या विषाद से रोता हुआ, दिखावे । मैं आलंबन-मात्र के विशद वर्णन को श्रोता में रसानुभव (भावानुभव सही) उत्पन्न करने में पूर्ण समर्थ मानता हूँ । यह बात नहीं है कि जब तक कोई दूसरा किसी भाव का अनुभव करता हुआ और उसे शब्द और चेष्टा द्वारा प्रकाशित करता हुआ न दिखाया जाय, तब तक रसानुभव हो ही नहीं । यदि ऐसा होता, तो हिंदी में 'नायिका-भेद' और 'नख-सिख' के जो सैकड़ों ग्रंथ बने हैं, उन्हें कोई पढ़ता ही नहीं । नायिका-भेद में केवल शृंगार-रस के आलंबन का वर्णन होता है, और 'नख-सिख' के किसी पद्य में उस आलंबन के भी किसी एक अंग-मात्र का । पर ऐसे वर्णनों से रसिक लोग बराब

आनंद प्राप्त करते देखे जाते हैं । इसी प्रकार प्राकृतिक दृश्य-वर्णन-मात्र को, चाहे कवि उसमें अपने हर्ष आदि का कुछ भी वर्णन न करे, हम काव्य कह सकते हैं । हिमालय-वर्णन को यदि हम कुमारसंभव से निकालकर अलग कर लें, तो भी वह एक उत्तम काव्य कहला सकता है । मेघदूत में—विशेषकर पूर्व मेघ में—प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन ही प्रधान है । यक्ष की कथा निकाल देने पर भी उसका काव्यत्व नष्ट नहीं हो सकता ।

ऊपर 'नख-सिख' की बात आ गई है, इसलिये मनुष्य के रूप-वर्णन के संबंध में भी दो-चार बातें कह देना अप्रासंगिक न होगा । कारण, दृश्य-चित्रण के अंतर्गत वह भी आता है । 'नख-सिख' में केवल नायिका के रूप का वर्णन होता है । पर उसमें भी रूप-चित्रण का कोई प्रयास हम नहीं पाते, केवल विलक्षण उत्प्रेक्षाओं और उपमानों की भरमार पाते हैं । इन उपमानों के योग द्वारा अंगों की सौंदर्य-भावना से उत्पन्न सुखानुभूति में अवश्य वृद्धि होती है; पर रूप नहीं निर्दिष्ट होता । काव्य में मुख, नेत्र और अधर आदि के साथ चंद्र, कमल और विद्रुम आदि के लाने का मुख्य उद्देश्य वर्ण, आकृति आदि का ज्ञान कराना नहीं, बल्कि कल्पना में साथ-साथ इन्हें भी रखकर सौंदर्य-गत आनंद के अनुभव को तीव्र करना है । काव्य की उपमा का उद्देश्य भावानुभूति को तीव्र करना है, नैयायिकों के "गोसदृशो गवयः" के समान ज्ञान उत्पन्न कराना नहीं । इस दृष्टि से विचार करने पर कई एक प्रचलित उपमान बहुत खटकते हैं—जैसे, नायिका की कटि की सूक्ष्मता दिखाने के लिये सिंहिनी को सामने लाना, जाँघों की उपमा के लिये हाथी की सूँड़ की ओर इशारा करना । ख़ैर, इसका विवेचन उपमा आदि अलंकारों पर विचार करते समय कभी किया जायगा । अब प्रस्तुत विषय की ओर आता हूँ ।

मनुष्य की आकृति और मुद्रा के चित्रण के लिये भी काव्य-क्षेत्र में पूरा मैदान पड़ा है । आकृति-चित्रण का अत्यंत उत्कर्ष वहाँ समझना चाहिए, जहाँ दो व्यक्तियों के अलग-अलग चित्रों में हम भेद कर सकें । जैसे, दो सुंदरियों की आँख, कान, नाक, भौं, कपोल, अधर, चिबुक इत्यादि सब अंगों को लेकर हमने वर्णन द्वारा दो अलग-अलग चित्र खींचे । फिर दोनों वर्णनों को किसी और के हाथ में देकर हमने उन दोनों स्त्रियों को उसके सामने बुलाया । यदि वह बतला दे कि 'यह इसका वर्णन है, और यह उसका', तो समझिए कि पूर्ण सफलता हुई । योरप के उपन्यासों में इस ओर बहुत कुछ प्रयत्न दिखाई पड़ता है ; पर हमारे यहाँ अभी इधर विशेष ध्यान नहीं दिया गया । मुद्रा चित्रित करने में गोस्वामी तुलसीदासजी अत्यंत कुशल दिखाई पड़ते हैं । मृग पर चलाने के लिये तीर खींचे हुए रामचंद्रजी को देखिए—

"जटा-मुकुट सिर, सारस-नयननि गौंहैं तकत सुभौंह सिकोरे ।"

इसी प्रकार राम के आगमन की प्रतीक्षा में शबरी—

"छन भवन, छन बाहर बिलोकति पंथ भ्रू पर पानि कै ।"

पूर्वजों की दीर्घ परंपरा द्वारा चली आती हुई जन्मगत वासना के अतिरिक्त जीवन में भी बहुत-से संस्कार प्राप्त किए जाते हैं ; जिनके कारण कुछ वस्तुओं के प्रति विशेष भाव अंतःकरण में प्रतिष्ठित हो जाते हैं । बचपन से अपने घर में या बाहर हम जिन दृश्यों को बराबर देखते आए, जिनकी चर्चा बराबर सुनते आए, उनके प्रति एक प्रकार का सुहृद्-भाव मन में घर कर लेता है । हिंदुओं के बालक अपने घर में राम, कृष्ण की कथाएँ और भजन सुनते आते हैं, इससे राम, कृष्ण के चरितों से संबंध रखनेवाले स्थानों को देखने की उत्कंठा उनमें बनी रहती है । गोस्वामीजी के इन शब्दों में यही उत्कंठा भरी है—

अब चित चेत चित्रकूटहि चलु ;
भूमि बिलोकु राम-पद-अंकित, बन बिलोकु रघुबर-बिहार-थलु ।

ऐसे स्थानों के प्रति संबंध की योजना के कारण हृदय में विशेष रूप से भावों का उदय होता है । कोई राम-भक्त जब चित्रकूट पहुँचता है, तब वह वहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य पर ही मुग्ध नहीं होता, अपने इष्ट-देव की मधुर भावना के योग से एक विशेष प्रकार के अनिर्वचनीय माधुर्य का भी अनुभव करता है । ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी रास्तों में जब झाड़ियों के काँटे उसके शरीर में चुभते हैं, तब उसके मन में सान्निध्य का यह मधुर भाव विना उठे नहीं रह सकता कि ये झाड़ उन्हीं प्राचीन झाड़ों के वंशज हैं, जो राम, लक्ष्मण और सीता के कभी चुभे होंगे । इस भाव-योजना के कारण उन झाड़ों को वह और ही दृष्टि से देखने लगता है । यह दृष्टि औरों को नहीं प्राप्त हो सकती ।

ऐसे संस्कार जीवन में हम बराबर प्राप्त करते जाते हैं। जो पढ़े-लिखे नहीं हैं वे भी आल्हा आदि सुनकर क़न्नौज, कालिंजर, महोबा, नयनागढ़ (चुनारगढ़) इत्यादि के प्रति एक विशेष 'भाव' संचित करते हैं। पढ़े-लिखे लोग अनेक प्रकार के इतिहास, पुराण, जीवन-चरित आदि पढ़कर उनमें वर्णित घटनाओं से संबंध रखनेवाले स्थानों के दर्शन की उत्कंठा प्राप्त करते हैं। इतिहास-प्रसिद्ध स्थान उनके लिये तीर्थ-से हो जाते हैं। प्राचीन इतिहास पढ़ते समय कल्पना का योग पूरा-पूरा रहता है। जिन छोटे-छोटे ब्योरों का वर्णन इतिहास नहीं भी करता, उनका आरोप अज्ञात रूप से कल्पना करती चलती है। यदि इस प्रकार का थोड़ा-बहुत चित्रण कल्पना अपनी ओर से न करती चले, तो इतिहास आदि पढ़ने में जी ही न लगे। सिकंदर और पौरव का युद्ध पढ़ते समय पढ़नेवाले के मन में सिकंदर और उसके साथियों का यवन-वेश तथा पौरव के उष्णीष और किरीट-कुंडल मन में आवेंगे। मतलब यह कि परिस्थिति आदि का कोई चित्र कल्पना में थोड़ा-बहुत अवश्य रहेगा—जो भावुक होंगे, उनमें अधिक रहेगा। प्राचीन समय का समाज-चित्र हम 'मेघदूत', 'मालविकाग्निमित्र' आदि में ढूँढ़ते हैं, और उसकी थोड़ी-बहुत झलक पाकर अपने को और अपने समय को भूलकर तल्लीन हो जाते हैं। एक दिन रात को मैं सारनाथ से लौटता हुआ काशी की कुंज-गली में जा निकला। प्राचीन काल में पहुँची हुई कल्पना को लिए हुए उस सँकरी गली में जाकर मैं क्या देखता हूँ कि पीतल की सुंदर दीवटों पर दीपक जल रहे हैं, दूकानों पर केवल धोती पहने और उत्तरीय डाले (गरमी के दिन थे) व्यापारी बैठे हुए हैं, दीवारों पर सिंदूर से कुछ देवतों के नाम लिखे हुए हैं, पुरानी चाल के चौखूँटे द्वार और खिड़कियाँ हैं। मुझे ऐसा भान हुआ कि मैं प्राचीन उज्जयिनी की किसी वीथिका में आ निकला हूँ। इतने ही में थोड़ी दूर चलकर म्युनिसिपैलिटी की लालटेन दिखाई दी। बस, सारी भावना हवा हो गई।

इतिहास के अध्ययन से, प्राचीन आख्यानों के श्रवण से, भूत-काल का जो दृश्य इस प्रकार कल्पना में बस जाता है, वह वर्तमान दृश्यों को खंडित प्रतीत होने से बचाता है, वह उन्हें दीर्घ काल-क्षेत्र के बीच चले आए हुए अतीत दृश्यों के मेल में दिखाता है, और हमारे 'भावों' को काल-बद्ध न रखकर अधिक व्यापकत्व प्रदान करता है। हम केवल उन्हीं से राग-द्वेष नहीं रखते, जिनसे हम घिरे हुए हैं, बल्कि उनसे भी, जो अब इस संसार में नहीं हैं, पहले कभी हो चुके हैं। पशुत्व और मनुष्यत्व में यही एक बड़ा भारी भेद है। मनुष्य उस कोटि की पहुँची हुई सत्ता है, जो उस अल्प क्षण में ही आत्म-प्रसार को बद्ध रखकर संतुष्ट नहीं हो सकती, जिसे वर्तमान कहते हैं। वह अतीत के दीर्घ पटल को भेद कर अपनी अन्वीक्षण-बुद्धि को ही नहीं, रागात्मिका वृत्ति को भी ले जाती है। हमारे 'भावों' के लिये भूत-काल का क्षेत्र अत्यंत पवित्र क्षेत्र है। वहाँ वे शरीर-यात्रा के स्थूल स्वार्थ से संश्लिष्ट होकर कलुषित नहीं होते—अपने विशुद्ध रूप में दिखाई पड़ते हैं। उक्त क्षेत्र में जिनके 'भावों' का व्यायाम के लिये संचरण होता रहता है, उनके 'भावों' का वर्तमान विषयों के साथ उचित और उपयुक्त संबंध स्थापित हो जाता है। उनके घृणा, क्रोध आदि भाव भी बहुत कम अवसरों पर ऐसे होंगे कि कोई उन्हें बुरा कह सके।

मनुष्य अपने रति, क्रोध आदि भावों को या तो सर्वथा मार डाले, अथवा साधना के लिये उन्हें कभी-कभी ऐसे क्षेत्र में ले जाया करे, जहाँ स्वार्थ की पहुँच न हो, तब जाकर सच्ची आत्माभिव्यक्ति होगी। नए अर्थवादी 'पुराने गीतों' को छोड़ने को लाख कहा करें, पर जो विशाल-हृदय हैं वे भूत को विना आत्मभूत किए नहीं रह सकते। अतीत-काल की वस्तुओं और व्यक्तियों के प्रति जो हमारा रागात्मक भाव होता ह, वह प्राप्त-काल की वस्तुओं और व्यक्तियों के प्रति हमारे भावों को तीव्र भी करता है, और उनका ठीक-ठीक अवस्थान भी करता है। वर्षा के आरंभ में जब हम बाहर मैदान में निकल पड़ते हैं, जहाँ जुते हुए खेतों की सोंधी महक आती है, और किसानों की स्त्रियाँ टोकरी लिए इधर-उधर दिखाई देती हैं, उस समय कालिदास की लेखनी से अंकित इस दृश्य के प्रभाव से—

त्वय्यायत्तं कृषिफलमिति भ्रूविकारानभिज्ञैः
प्रीतिस्निग्धैर्जनपदवधूलोचनैः पीयमानः ।
सद्यः सीरोत्कषणसुरभिक्षेत्रमारुह्य मालं
किंचित्पश्चाद्व्रज लघुगतिर्भूय एवोत्तरेण ॥

हमारा भाव और भी तीव्र हो जाता है—हमें वह दृश्य और भी मनोहर लगने लगता है।

जिन वस्तुओं और व्यापारों के प्रति हमारे प्राचीन पूर्वज अपने 'भाव' अंकित कर गए हैं, उनके सामने अपने को पाकर मानों हम उन पूर्व पुरुषों के निकट जा पहुँचते हैं, और उसी प्रकार के भावों का अनुभव कर उनके हृदय से अपना हृदय मिलाते हुए उनके सगे बन जाते हैं। वर्तमान सभ्यता ने जहाँ अपना दख़ल नहीं जमाया है, उन जंगलों, पहाड़ों, गाँवों और मैदानों में हम अपने को वाल्मीकि, कालिदास, या भवभूति के समय में खड़ा कल्पित कर सकते हैं; कोई बाधक दृश्य सामने नहीं आता। पर्वतों की दरी-कंदराओं में, प्रभात के प्रफुल्ल पद्म-जाल में, छिटकी चाँदनी में, खिली कुमुदिनी में हमारी आँखें कालिदास, भवभूति आदि की आँखों से जा मिलती हैं। पलाश, इंगुदी, अंकोट वनों में अब भी खड़े हैं, सरोवरों में कमल अब भी खिलते हैं, तालाबों में कुमुदिनी अब भी चाँदनी के साथ हँसती है, वानीर-शाखाएँ अब भी झुक-झुककर तीर का नीर चूमती हैं; पर हमारी आँखें उनकी ओर भूलकर भी नहीं जातीं, हमारे हृदय से मानों उनका कोई लगाव ही नहीं रह गया। अग्निमित्र, विक्रमादित्य आदि को अब हम नहीं देख सकते। उनकी आकृति वहन करनेवाला आलोक अब न-जाने किस लोक में पहुँचा होगा; पर ऐसी वस्तुएँ अब भी हम देख सकते हैं, जिन्हें उन्होंने भी देखा होगा। सिप्रा के किनारे दूर तक फैले हुए प्राचीन उज्जयिनी के ढूहों पर सूर्यास्त के समय खड़े हो जाइए। इधर-उधर उठी हुई पहाड़ियाँ कह रही हैं कि महाकाल के दर्शन को जाते हुए कालिदासजी हमें देर तक देखा करते थे; उस समय 'सिप्रा-वात' उनके उत्तरीय को फहराता था। काली शिलाओं पर से बहती हुई वेत्रवती की स्वच्छ धारा के तट पर विदिशा के खँड़हरों में वे ईंट-पत्थर अब भी पड़े हुए हैं, जिन पर अंगराग-लिप्त शरीर और सुगंध-धूम से बसे केश-कलापवाली रमणियों के हाथ पड़े होंगे।

बिजली से जगमगाते हुए नए अँगरेज़ी ढंग के शहरों में, धुआँ उगलती हुई मिलों और ह्वाइट वे लेडला की दूकान के सामने, हम कालिदास आदि से अपने को बहुत दूर पाते हैं। पर प्रकृति के विस्तृत क्षेत्र में हमारा उनका भेद-भाव मिट जाता है, हम सामान्य प्रकृति के साक्षात्कार द्वारा चिर-काल-व्यापी शुद्ध "मनुष्यत्व" का अनुभव करते हैं, किसी विशेष-काल-बद्ध मनुष्यत्व का नहीं।

यहाँ पर कहा जा सकता है कि विशेष-काल-बद्ध मनुष्यत्व न सही, पर देश-बद्ध मनुष्यत्व तो यह अवश्य है। हाँ, है। इसी देश-बद्ध मनुष्यत्व के अनुभव से सच्ची देश-भक्ति या देश-प्रेम की स्थापना होती है। जो हृदय संसार की जातियों के बीच अपनी जाति की स्वतंत्र सत्ता का अनुभव नहीं कर सकता, वह देश-प्रेम का दावा नहीं कर सकता। इस स्वतंत्र सत्ता से अभिप्राय स्वरूप की स्वतंत्र सत्ता से है; केवल अन्न-धन संचित करने और अधिकार भोगने की स्वतंत्रता से नहीं। अपने स्वरूप को भूलकर यदि भारत-वासियों ने संसार में सुख-समृद्धि प्राप्त की, तो क्या? क्योंकि उन्होंने उदात्त वृत्तियों को उत्तेजित करनेवाली बँधी-बँधाई परंपरा से अपना संबंध तोड़ लिया, नई उभरी हुई इतिहास-शून्य जंगली जातियों में अपना नाम लिखाया। फ़िलीपाइन द्वीप-वासियों से उनकी मर्यादा कुछ अधिक नहीं रह गई।

देश-प्रेम है क्या? प्रेम ही तो है। इस प्रेम का आलंबन क्या है? सारा देश, अर्थात् मनुष्य, पशु-पक्षी, नदी, नाले, वन, पर्वत-सहित सारी भूमि। यह प्रेम किस प्रकार का है? यह साहचर्य-गत प्रेम है। जिनके बीच हम रहते हैं, जिन्हें बराबर आँखों से देखते हैं, जिनकी बातें बराबर सुनते रहते हैं, जिनका हमारा हर घड़ी का साथ रहता है, सारांश यह कि जिनके सान्निध्य का हमें अभ्यास पड़ जाता है, उनके प्रति लोभ या राग हो जाता है। देश-प्रेम यदि वास्तव में अंतःकरण का कोई भाव है, तो यही हो सकता है। यदि यह नहीं है, तो वह कोरी बकवाद या किसी और भाव के संकेत के लिये गढ़ा हुआ शब्द है। यदि किसी को अपने देश से सचमुच प्रेम है, तो उसे अपने देश के मनुष्य, पशु, पक्षी, लता, गुल्म, पेड़, पत्ते, वन, पर्वत, नदी, निर्झर आदि सब से प्रेम होगा, वह सब को चाह-भरी दृष्टि से देखेगा, वह सब की सुध करके विदेश में आँसू बहावेगा। जो यह भी नहीं जानते कि कोयल किस चिड़िया का नाम है, जो यह भी नहीं सुनते कि चातक कहाँ चिल्लाता है, जो यह भी आँख-भर नहीं देखते कि आम प्रणय-सौरभ-पूर्ण मंजरियों से कैसे लदे हुए हैं, जो यह भी नहीं झाँकते कि किसानों के झोपड़ों के भीतर क्या हो रहा है, वे यदि दस बने-ठने मित्रों के बीच

प्रत्येक भारतवासी की औसत आमदनी का परता बताकर देश-प्रेम का दावा करें, तो उनसे पूछना चाहिए कि 'भाइयो ! विना रूप-परिचय का यह प्रेम कैसा ?' जिनके दुःख-सुख के तुम कभी साथी नहीं हुए, उन्हें तुम सुखी देखा चाहते हो, यह कैसे समझें ? उनसे कोसों दूर बैठे-बैठे, पड़े-पड़े, या खड़े-खड़े तुम विलायती बोली में 'अर्थ-शास्त्र' की दुहाई दिया करो; पर प्रेम का नाम उसके साथ न घसीटो । प्रेम हिसाब-किताब की बात नहीं है । हिसाब-किताब करनेवाले भाड़े पर भी मिल सकते हैं, पर प्रेम करनेवाले नहीं । एक अमेरिकन फ़ारसवालों को उनके देश का सारा हिसाब-किताब समझाकर चला गया ।

हिसाब-किताब से देश की दशा का ज्ञान-मात्र हो सकता है । हित-चिंतन और हित-साधन की प्रवृत्ति कोरे ज्ञान से भिन्न है । वह मन के वेग या 'भाव' पर अवलंबित है, उसका संबंध लोभ या प्रेम से है; जिसके विना अन्य पक्ष में आवश्यक त्याग का उत्साह हो नहीं सकता । जिसे व्रज की भूमि से प्रेम होगा, वह इस प्रकार कहेगा—

नैनन सों "रसखान" जबै व्रजके बन, बाग, तड़ाग निहारौं,
केतिक वे कलधौत के धाम करील के कुंजन-ऊपर वारौं ।

रसखान तो किसी की 'लकुटी अरु कामरिया' पर तीनों पुरों का राज-सिंहासन तक त्यागने को तैयार थे; पर देश-प्रेम की दुहाई देनेवालों में से कितने अपने किसी थके-माँदे भाई के फटे-पुराने कपड़ों पर रीझकर—या कम-से-कम न खीझकर—विना मन मैला किए कमरे का फ़र्श भी मैला होने देंगे ? मोटे आदमियो ! तुम ज़रा-सा दुबले हो जाते—अपने अंदेशे ही सही—तो न-जाने कितनी ठटरियों पर मांस चढ़ जाता !

पशु और बालक भी जिनके साथ अधिक रहते हैं, उनसे परच जाते हैं । यह परचना परिचय ही है । परिचय प्रेम का प्रवर्तक है । विना परिचय के प्रेम नहीं हो सकता । यदि देश-प्रेम के लिये हृदय में जगह करनी है, तो देश के स्वरूप से परिचित और अभ्यस्त हो जाइए । बाहर निकलिए, तो आँख खोलकर देखिए कि खेत कैसे लहलहा रहे हैं, नाले झाड़ियों के बीच कैसे बह रहे हैं, टेसू के फूलों से वनस्थली कैसी लाल हो रही है, कछारों में चौपायों के झुंड इधर-उधर चरते हैं, चरवाहे तान लड़ा रहे हैं, अमराइयों के बीच गाँव झाँक रहे हैं; उनमें घुसिए, देखिए तो, क्या हो रहा है । जो मिलें, उनसे दो-दो बातें कीजिए, उनके साथ किसी पेड़ की छाया के नीचे घड़ी-आध घड़ी बैठ जाइए, और समझिए कि ये सब हमारे देश के हैं । इस प्रकार जब देश का रूप आपकी आँखों में समा जायगा, आप उसके अंग-प्रत्यंग से परिचित हो जायँगे, तब आपके अंतःकरण में इस इच्छा का सचमुच उदय होगा कि वह हमसे कभी न छूटे, वह सदा हरा-भरा और फला-फूला रहे, उसके धन-धान्य की वृद्धि हो, उसके सब प्राणी सुखी रहें ।

पर आजकल इस प्रकार का परिचय बाबुओं की लज्जा का एक विषय हो रहा है । वे देश के स्वरूप से अनजान रहने या बनने में अपनी बड़ी शान समझते हैं । मैं अपने एक लखनवी दोस्त के साथ साँची का स्तूप देखने गया। यह स्तूप एक बहुत सुंदर छोटी-सी पहाड़ी के ऊपर है। नीचे छोटा-मोटा जंगल है; जिसमें महुए के पेड़ भी बहुत-से हैं । संयोग से उन दिनों वहाँ पुरातत्त्व-विभाग का कैंप पड़ा हुआ था । रात हो जाने से उस दिन हम लोग स्तूप नहीं देख सके; सबेरे देखने का विचार करके नीचे उतर रहे थे । वसंत का समय था । महुए चारों ओर टपक रहे थे । मेरे मुँह से निकला—" महुओं की कैसी महक आ रही है ! " इस पर लखनवी महाशय ने चट मुझे रोककर कहा—"यहाँ महुए-सहुए का नाम न लीजिए, लोग देहाती समझेंगे ।" मैं चुप हो रहा; समझ गया कि महुए का नाम जानने से बाबूपन में बड़ा भारी बट्टा लगता है । पीछे ध्यान आया कि यह वही लखनऊ है, जहाँ कभी यह पूछनेवाले भी थे कि गेहूँ का पेड़ आम के पेड़ से छोटा होता है या बड़ा !

हिंदूपन की अंतिम झलक दिखानेवाले थानेश्वर, क़न्नौज, दिल्ली, पानीपत आदि स्थान उनके गंभीर भाव के आलंबन हैं, जिनमें ऐतिहासिक भावुकता है, जो देश के पुराने स्वरूप से परिचित हैं । उनके लिये इन स्थानों के नाम ही उद्दीपन-स्वरूप हैं । इन्हें सुनते ही उनके हृदय में कैसे-कैसे भाव जाग्रत् होते हैं, वे नहीं कह सकते । भारतेंदु का इतना ही कहना उनके लिये बहुत है कि—

हाय पंचनद ! हा पानीपत !
अजहुँ रहे तुम धरनि बिराजत ?

हाय चितौर ! निलज तू भारी ;
अजहुँ खरो भारतहि मँझारी !

पानीपत, चित्तौर, क़न्नौज आदि नाम सुनते ही भारत का प्राचीन हिंदू-दृश्य आँखों के सामने फिर जाता है। उनके साथ गंभीर भावों का संबंध लगा हुआ है। ऐसे एक-एक नाम हमारे लिये काव्य के टुकड़े हैं। ये रसात्मक वाक्य नहीं, तो रसात्मक शब्द अवश्य हैं।

अब तक जो कुछ कहा गया, उससे यह बात स्पष्ट हो गई होगी कि काव्य में 'आलंबन' ही मुख्य है। यदि कवि ने ऐसी वस्तुओं और व्यापारों को अपने शब्द-चित्र द्वारा सामने उपस्थित कर दिया, जिनसे श्रोता या पाठक के भाव जाग्रत् होते हैं, तो वह एक प्रकार से अपना काम कर चुका। संसार की प्रत्येक भाषा में इस प्रकार के काव्य वर्तमान हैं, जिनमें भावों को प्रदर्शित करनेवाले पात्र, अर्थात् 'आश्रय', की योजना नहीं की गई है—केवल ऐसी वस्तुएँ और व्यापार सामने रख दिए गए हैं, जिनसे श्रोता या पाठक ही भाव का अनुभव करते हैं। यदि किसी कवि ने किसी दृश्य का पूर्ण चित्रण करके रख दिया, तो क्या वह इसीलिये काव्य न कहलावेगा कि उसके वर्णन के भीतर कोई पात्र उस दृश्य से प्राप्त आनंद या शोक को अपने शब्द और चेष्टा द्वारा प्रकट करनेवाला नहीं है ? कुमारसंभव के आरंभ के उतने श्लोकों को, जिनमें हिमालय का वर्णन हैं, क्या काव्य से ख़ारिज समझें ? मेघदूत में जो आम्रकूट, विंध्य, रेवा आदि के वर्णन हैं, उन सबमें क्या यक्ष की विरह-व्यथा ही व्यंग्य है ?

विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी की गिनती गिनाकर किसी प्रकार 'रस' की शर्त पूरी करना ही जब से कविजन अपना परम पुरुषार्थ मानने लगे, तब से यह बात कुछ भूल-सी चली कि कवियों का मुख्य कार्य ऐसे विषयों को सामने रखना है, जो श्रोता के विविध भावों के आलंबन हो सकें। सच पूछिए, तो काव्य में अंकित सारे दृश्य श्रोता के भिन्न-भिन्न भावों के आलंबन-स्वरूप होते हैं। किसी पात्र को रति, हास, शोक, क्रोध आदि प्रकट करता हुआ दिखाने में ही रस-परिपाक मानना और यह समझना कि श्रोता को पूरी रसानुभूति हो गई, बुरा हुआ। श्रोता या पाठक के भी हृदय होता है। वह जो किसी काव्य को पढ़ता या सुनता है, सो केवल दूसरों का हँसना, रोना, क्रोध करना आदि देखने के लिये ही नहीं, बल्कि ऐसे विषयों को सामने पाने के लिये, जो स्वयं उसे हँसाने, रुलाने, क्रुद्ध करने, आकृष्ट करने, लीन करने का गुण रखते हों। राजा हरिश्चंद्र को श्मशान में रानी शैव्या से क़फ़न माँगते हुए, राम-जानकी को वन-गमन के लिये निकलते हुए, पढ़कर ही लोग क्या करुणार्द्र नहीं हो जाते ? उनकी करुणा क्या इस बात की अपेक्षा करती है कि कोई पात्र उन दृश्यों पर शोक या दुःख, शब्दों और चेष्टा द्वारा, प्रकट करे ? तुलसीदासजी के इस सवैए में—

कागर कीर ज्यों भूषन चीर सरीर लस्यो तजि नीर ज्यों काई ;
मातु, पिता, प्रिय लोग सबै सनमानि सुभाय सनेह सगाई।
संग सुभामिनि भाइ भलो, दिन द्वै जनु औध हुते पहुनाई ;
राजिवलोचन राम चले तजि बाप को राज बटाऊ की नाईं।

पाठक को करुण-रस में मग्न करने की पूरी सामग्री मौजूद है। परिस्थिति के सहित राम हमारी करुणा के आलंबन हैं, चाहे किसी पात्र की करुणा के आलंबन हों या न हों।

रामचंद्र शुक्ल

वृंदावन का प्रेम-महाविद्यालय

विषय-प्रवेश

दुर्भाग्य से भारतवर्ष में ऐसे शिक्षणालयों का एकदम अभाव है, जिनकी शिक्षा कोरी शिक्षा न होकर मनुष्य के भावी जीवन-पथ को सुगम बनानेवाली हो—उन्हें पर-मुखापेक्षी न बनाकर स्वावलंबी तथा इच्छानुकूल स्वतंत्र व्यवसायी बनानेवाली हो। हम प्रायः देखते आ रहे हैं कि एक भारतीय ग्रेजुएट जब अपने शिक्षणालय की शिक्षा समाप्त कर, शिक्षा-संसार की परिधि नाँघकर, जीवन-संग्राम में प्रवेश करता है, तब उसके सामने विभिन्न प्रश्न-समूह आ खड़े होते हैं। जीवन का प्रश्न एक विवाद-ग्रस्त समस्या मालूम पड़ती है। बहुत सोचने पर भी वह यह निश्चित नहीं कर पाता कि

आख़िर किस पथ का पथिक बनना उसके लिये अधिक उपयुक्त होगा। बात यह है कि व्यवहारोपयोगी शिक्षा न प्राप्त होने के कारण उसका भविष्य अनिश्चित, उसकी कामनाएँ विशृंखलित एवं उसका जीवन-पथ विविध प्रश्न-पूर्ण होता है। ऐसी अवस्था में या तो वह किसी ऑफ़िस की क्लर्की करके अपने बहु-मूल्य जीवन को ५०-९० रुपयों के मासिक वेतन पर बेच देता है, या पुनः किसी जीविका-प्रद शिक्षणालय की शरण लेता है, और प्रचुर धन-व्यय तथा काल-व्यय के पश्चात् कहीं (आयु के लगभग आधे दिनों का बलिदान कर) उसे जीविकोपार्जन-पथ का आश्रय मिलता है। परंतु ऐसी स्थिति सर्व-साधारण जन-समुदाय के अत्यंत उच्चतम अंश की होती है। इस प्रकार यह शिक्षा भारत के लिये दिन-पर-दिन अनुपयोगी सिद्ध हो रही है। पर यदि यह शिक्षा उपयोगी हो भी, तो भी इतनी महँगी है कि भारत-जैसा दरिद्र देश इसे अपने निर्बल कंधों पर रखने में सर्वथा असमर्थ है। जो शिक्षा जीवन और संपत्ति का इतना अपव्यय करावे, और फिर भी जिससे जीवन का पथ पूर्णतया सुगम न हो, वह शिक्षा वास्तविक शिक्षा कैसे हो सकती है? संतोष की बात है कि देश के कुछ गएय-मान्य, देव-तुल्य महापुरुषों का ध्यान इस प्रश्न की ओर आकर्षित होने लगा है।

राजा महेंद्रप्रताप का त्याग

लगभग १४ वर्ष हुए होंगे, प्रसिद्ध देश-भक्त राजा महेंद्रप्रताप का ध्यान इस कमी की ओर आकृष्ट हुआ था। अतएव आपने १४ मई, सन् १९०९ ई० को एक ऐसे निश्शुल्क शिक्षा देनेवाले महा-

सुप्रसिद्ध देश-भक्त राजा महेंद्रप्रताप

विद्यालय की स्थापना की, जिसका यही मुख्य ध्येय है कि उस (विद्यालय) की शिक्षा समाप्त करने के उपरांत युवक को परमुखापेक्षी न होना पड़े; वह इच्छानुकूल स्वतंत्र व्यवसाय करके सर्वथा स्वतंत्र जीवन-लाभ कर सके। यह विद्यालय प्रेम-महाविद्यालय के नाम से प्रख्यात है। इस विद्यालय का संचालन करने के लिये आपने अपने पाँच गाँव तथा भवन के लिये अपना विशाल राज-भवन समर्पण कर दिया है। वास्तव में राजा साहब का यह त्याग सर्वथा स्तुत्य है। इस लेख में इसी प्रेम-महाविद्यालय का संक्षिप्त परिचय दिया जाता है।

प्रेम-महाविद्यालय

यह विद्यालय वृंदावन में, नगर के जन-रव से दूर, कालिंदी-कूल पर, राजा साहब के विशाल राजभवन में स्थित है। नगर के बाहर होने के कारण स्थान स्वच्छ है। विशुद्ध वायु प्राप्त होने का भी अच्छा सुबीता है। इसके सिवा विद्यालय के सामने उसका अपना उद्यान है; जो विद्यार्थियों को अपनी भीनी-भीनी सुगंधित वायु से सदैव प्रसन्न-चित्त तथा स्वस्थ रखता है। यों तो यमुना का प्रवाह वृंदावन के घाटों से प्रायः दूर ही रहता है, परंतु वर्षा-ऋतु में वह प्रायः विद्यालय के सामने आ जाया करता है, और उन दिनों यहाँ का दृश्य अत्यंत मनोहर एवं चित्ताकर्षक हो जाता है।

संगठन

यह संस्था सन् १८६० ई० के ऐक्ट के अनुसार रजिस्टर्ड है। इसका प्रबंध करने के लिये एक जेनरल कौंसिल तथा कार्य-कारिणी-सभा नियुक्त है; जिसमें बड़े-बड़े

प्रेम-महाविद्यालय-भवन

सुप्रसिद्ध विचारशील तथा देश-भक्त महानुभाव सम्मिलित हैं। जेनरल कौंसिल का अधिवेशन साल-भर में कम-से-कम एक बार तथा कार्य-कारिणी सभा की बैठक प्रति मास में कम-से-कम एक बार होती है। इसी के विचारानुरूप कार्य होता है। जेनरल मैनेजर, जो इस सभा के संयुक्त मंत्री हैं, मंत्री महोदय की अनुमति के अनुसार अवैतनिक रूप से व्यवस्था-कार्य करते रहते हैं। वर्कशॉप के सुपरिंटेंडेंट, विद्यालय के मुख्याध्यापक तथा प्रेम-संपादक के अतिरिक्त प्रेस, छात्रालय, वाचनालय तथा स्टोर, सब के लिये अलग-अलग सुपरिंटेंडेंट हैं। ये सब जेनरल मैनेजर के अधीन रहकर अपने-अपने कार्य का संपादन करते रहते हैं। पाँचों गाँवों की रियासत का प्रबंध जेनरल मैनेजर महाशय स्वयं, एक सहायक की सहायता से, करते हैं। रियासत तथा विद्यालय के, कुल मिलाकर, लगभग सौ-सवा सौ कार्यकर्ता हैं। यदा-कदा कोई-कोई कार्यकर्ता अवैतनिक रूप से भी कार्य करके अपनी उदारता का परिचय देते रहते हैं। श्रीनारायणदास बी० ए० तथा पं० गंगाप्रसाद भार्गव बी० ए०, एल्-एल्० बी० विद्यालय के औद्योगिक विभाग का और पं० द्वारकानाथ भार्गव एम्० ए०, एल्-एल्० बी० तथा श्रीविश्वंभरनाथ बी० ए०, एल्-एल्० बी० विद्यालय और कॉमर्स-विभाग का निरीक्षण-कार्य करने के लिये इंस्पेक्टर रूप से नियत हैं। बुलंदशहर के श्रीविश्वंभरनाथ बी० ए०, एल्-एल्० बी०, तथा श्रीजगनलालजी गुप्त रियासत-संबंधी अदालती कार्य के परामर्शदाता (Legal

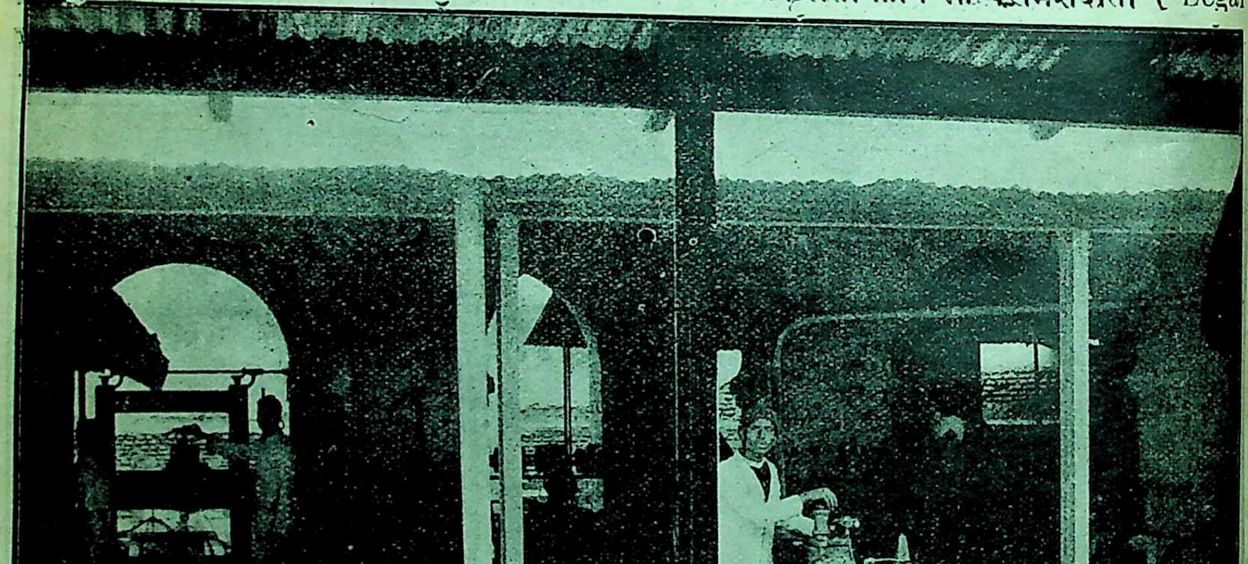

मेकेनिकल और इंजीनियरिंग क्लास

(विद्यार्थी एंजिन तथा रंदा आदि मशीनों पर कार्य कर रहे हैं)

adviser) हैं। स्वामी सच्चिदानंदजी पेंशनर एकाउंटेंट विद्यालय के ऑडीटर हैं।

शिक्षा-क्रम

शिक्षा इन तीन प्रकार की श्रेणियों द्वारा दी जाती है—

(१) विद्यालय-श्रेणियों द्वारा शिक्षा के साथ दस्तकारी

(२) शिल्प-श्रेणियों द्वारा शिल्प-शिक्षा के साथ साहित्य-शिक्षा

(३) वाणिज्य-शिक्षा

प्रथम रीति से शिक्षा देने के लिये बाल-श्रेणी तथा प्रारंभिक श्रेणी के सिवा ७ श्रेणियाँ और हैं। इनमें हिंदी, अँगरेज़ी, गणित, विज्ञान, इतिहास, भूगोल, ड्राइंग, अर्थ-शास्त्र तथा नागरिक धर्म की शिक्षा दी जाती है। बढ़ई का काम, वस्त्र बुनना तथा चीनी-मिट्टी के खिलौने बनाना, इन तीन कामों में से एक काम लेना प्रत्येक विद्यार्थी के लिये अनिवार्य है।

बाल और आरंभिक श्रेणियों को छोड़कर उक्त सभी श्रेणियों का पाठ्य-क्रम एक-एक वर्ष का है। सातवीं श्रेणी मैट्रिक्युलेशन के समान है। औद्योगिक विषय विशेष रूप से पढ़ाए जाते हैं।

दूसरी रीति की शिल्प-श्रेणियाँ इन ६ भागों में विभक्त हैं—

(१) मेकेनिकल इंजीनियरिंग

(२) लकड़ी का काम

(३) गलीचा बुनना

मेकेनिकल इंजीनियरिंग-क्लास—बॉयलर और एंजिन-घर

(मोटर, बॉयलर और एंजिन पर काम हो रहा है)

(४) कपड़े बुनना

(५) चीनी के खिलौने तथा बर्तन बनाना

(६) लोहा ढालना तथा खराद और फ़िटिंग

इनमें उक्त विषयों के सिवा आवश्यकतानुसार गणित तथा हिंदी की शिक्षा भी दी जाती है। प्रेस तथा चीनी और मिट्टी के काम में उम्मेदवार भी रक्खे जाते हैं।

तीसरे प्रकार की श्रेणी वाणिज्य-शिक्षा की है। यह अपना द्वार उन विद्यार्थियों के लिये भी खुला रखती है, जो प्रेम महाविद्यालय के विद्यार्थी नहीं हैं। ऐसे विद्यार्थी साधारणतः मैट्रिक्युलेशन-पास (अथवा जो इसी परिमाण की योग्यता रखते हों) लिए जाते हैं। इसमें टाइपराइटिंग, संक्षिप्त लेखन-कला तथा अँगरेज़ी ढंग का बहीखाता रखने (Book-keeping) की प्रारंभिक, माध्यमिक तथा उच्च तीनों प्रकार की, शिक्षा दी जाती है। नागरिक धर्म तथा अर्थ-शास्त्र, ये दो विषय प्रेम-महाविद्यालय के प्रत्येक विद्यार्थी के लिये अनिवार्य हैं, बाहरवाले विद्यार्थियों के लिये नहीं। ड्राइंग सब कक्षाओं के लिये अनिवार्य है।

महिला-वस्त्र-कला-श्रेणी

इन श्रेणियों के अतिरिक्त महिलाओं के लिये एक महिला वस्त्र-कला-श्रेणी है। इसमें सूत कातना, कपड़ा, क़ालीन तथा निवार आदि बुनना सिखलाया जाता है। हारमोनियम बजाने की शिक्षा का भी प्रबंध है।

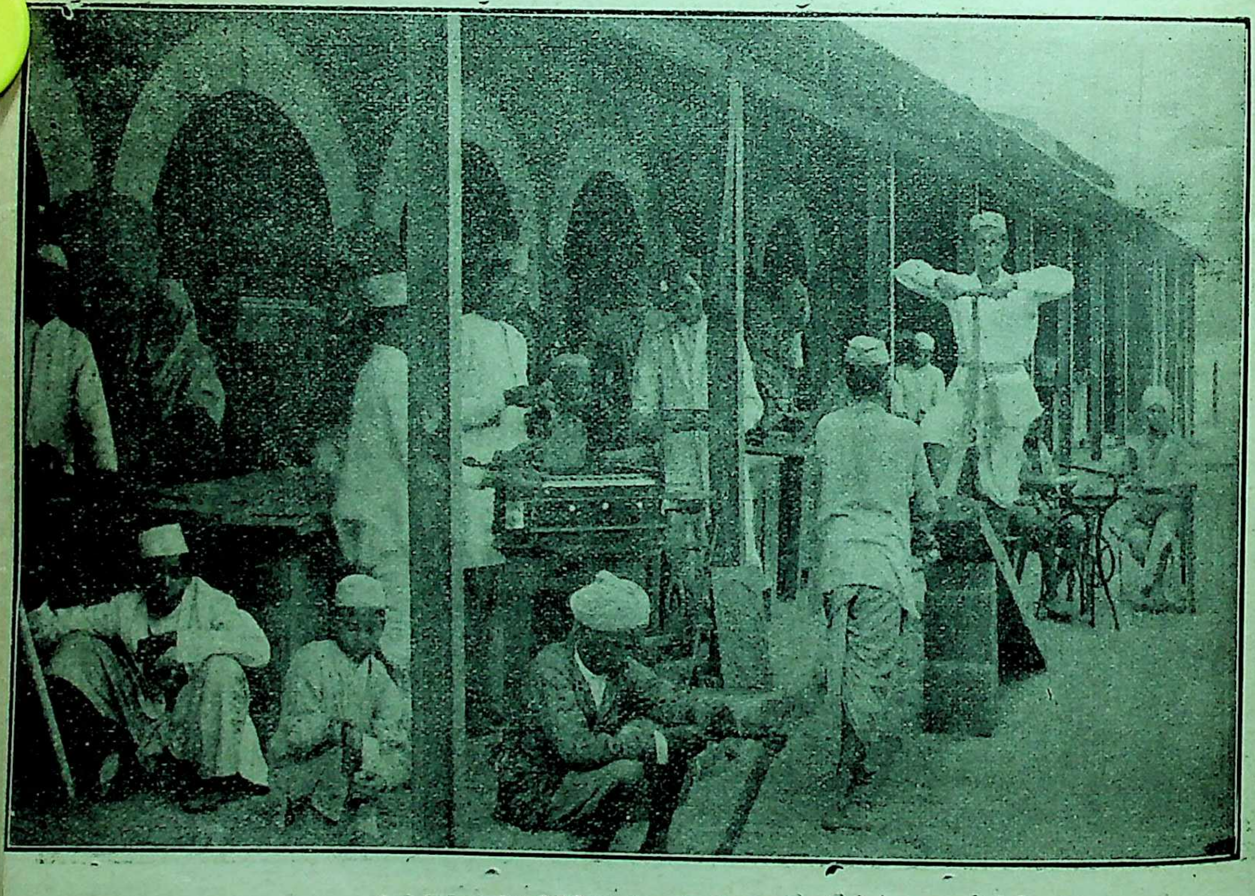

लकड़ी के काम की श्रेणी

(विद्यार्थी लकड़ी का काम कर रहे हैं, और हारमोनियम बना रहे हैं)

प्रेम-सभाएँ

विद्यार्थियों को सामयिक तथा अन्य उपयोगी विषयों पर भाषण देने और निबंध लिखने का अभ्यास कराने तथा उनमें परस्पर प्रेम और सुहृद्भाव जाग्रत् करने के लिये 'प्रेम-बाल-सभा', 'प्रेम-युवक-सभा' तथा 'प्रेम-महिला-सभा' स्थापित हैं। प्रति सप्ताह सोमवार को इनकी बैठकें होती हैं।

समय-समय पर जो विद्वान् पधारते हैं, उनके भाषण हुआ करते हैं, और यदा-कदा उपयोगी विषयों पर वादानुवाद भी, जिनसे विद्यार्थियों की मानसिक शक्तियों के विकास में अच्छी सहायता मिलती है। वर्ष-भर के साप्ताहिक अधिवेशनों में जिन विद्यार्थियों के व्याख्यान तथा निबंध सर्वोत्तम ठहरते हैं, उन्हें, अंतरंग सभा की सिफ़ारिश पर, वार्षिकोत्सव के अवसर पर, विद्यालय की ओर से, पुरस्कार भी दिया जाता है

निश्शुल्क शिक्षा तथा अन्य सुविधाएँ

समस्त शिक्षा निश्शुल्क दी जाती है। औद्योगि कार्य करने के लिये विभिन्न औज़ारों की आवश्यकता पड़ती है यदि ये औज़ार विद्यार्थियों क ख़रीदने पड़ें, तो विद्यालय के ख़र्च की यह एक म कम हो सकती है; परंतु साथ-ही-साथ विद्यार्थियों प इन औज़ारों के ख़रीदने का बोझ पड़ने पर उनकी आर्थिक कठिनाइयाँ बढ़ जायँ। अतएव विद्याल ने विद्यार्थियों की सुविधा का ध्यान रखकर ऐस प्रबंध किया है कि विद्यार्थियों को औज़ार नहीं ख़रीदने पड़ते, विद्यालय उन्हें अपनी ओर से मुफ़्त देता है इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों को औद्योगिक विषय

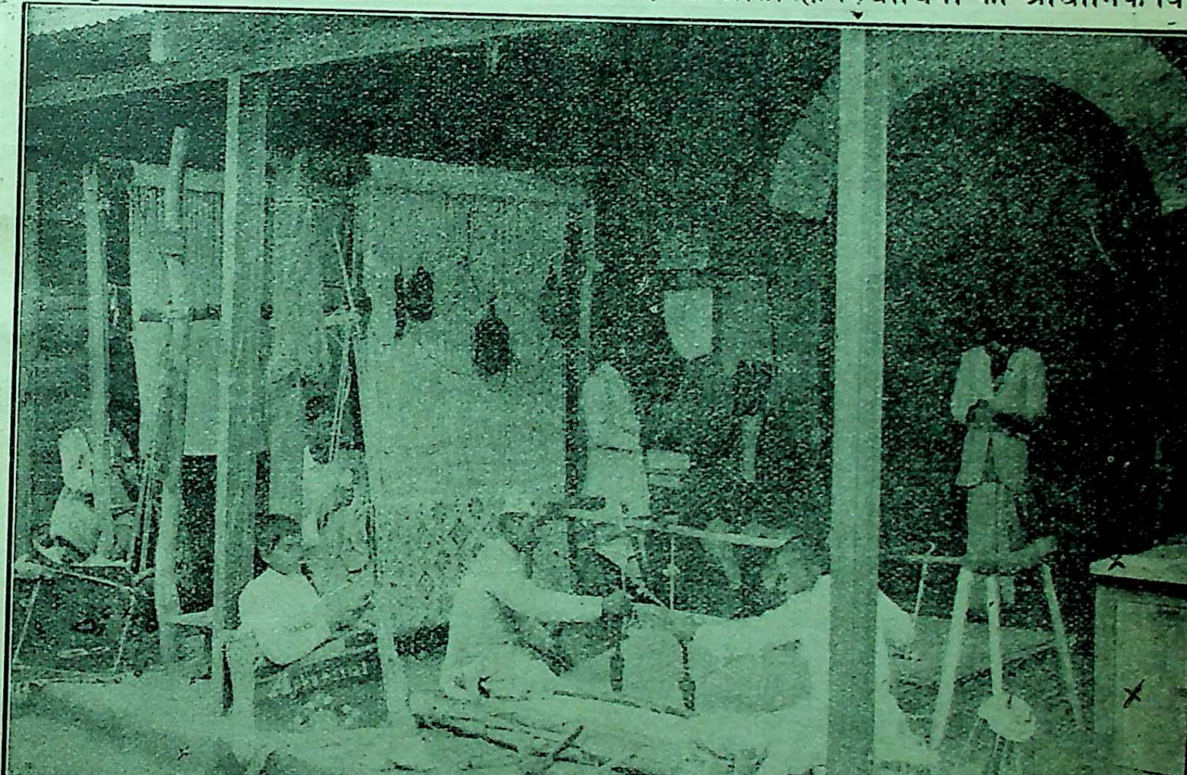

दरी और क़ालीन की श्रेणी

(विद्यार्थी क़ालीन और दरी बुन रहे हैं)

में उत्साहित करने तथा निर्धन, असमर्थ और योग्य विद्यार्थियों को अधिक प्रयत्नशील बनाने के लिये कुछ छात्र-वृत्तियाँ भी नियत हैं। एतदर्थ उन्हें यह प्रतिज्ञा-पत्र लिखना पड़ता है कि वे अपनी पढ़ाई समाप्त करने के पूर्व इस संस्था से पृथक् न होंगे। छात्र-वृत्ति १) से ७) तक दी जाती है। छात्र-वृत्ति नक़द रुपए के रूप में उसी समय दी जाती है, जब विद्यार्थी अपनी समस्त पाठ्य-पुस्तकों को प्राप्त कर चुका होता है। यदि छात्र-वृत्ति के अधिकारी विद्यार्थी के पास पाठ्य-विषय की पूरी पुस्तकें नहीं होतीं, तो उसे छात्र-वृत्ति की रक़म तक की पुस्तकें, छात्र-वृत्ति के रूप में, दी जाती हैं। इस मद में विद्यालय प्रति वर्ष २४००) के लगभग व्यय करता है—८००) विद्यालय-विभाग में तथा १६००) वर्क-शॉप-विभाग में।

शिक्षा का माध्यम हिंदी

समस्त शिक्षा का माध्यम हिंदी है। हिंदी में ही समस्त शिक्षा दी जाती है। कुछ विषय ऐसे हैं, जिन पर अभी हिंदी में पर्याप्त पुस्तकों का अभाव है ; जैसे औद्योगिक, वैज्ञानिक। इनकी शिक्षा के लिये एक विशेष प्रबंध है। अध्यापक महोदय अँगरेज़ी आदि भाषाओं में इन विषयों पर, अध्ययन करके, नोट लिखकर ले आते हैं, और उन्हीं की सहायता से हिंदी में ही इन विषयों की भी शिक्षा देते हैं। केवल मेकेनिकल इंजीनियरिंग, विज्ञान तथा चीनी के कार्य को सिखाने के लिये आवश्यकतानुसार अँगरेज़ी

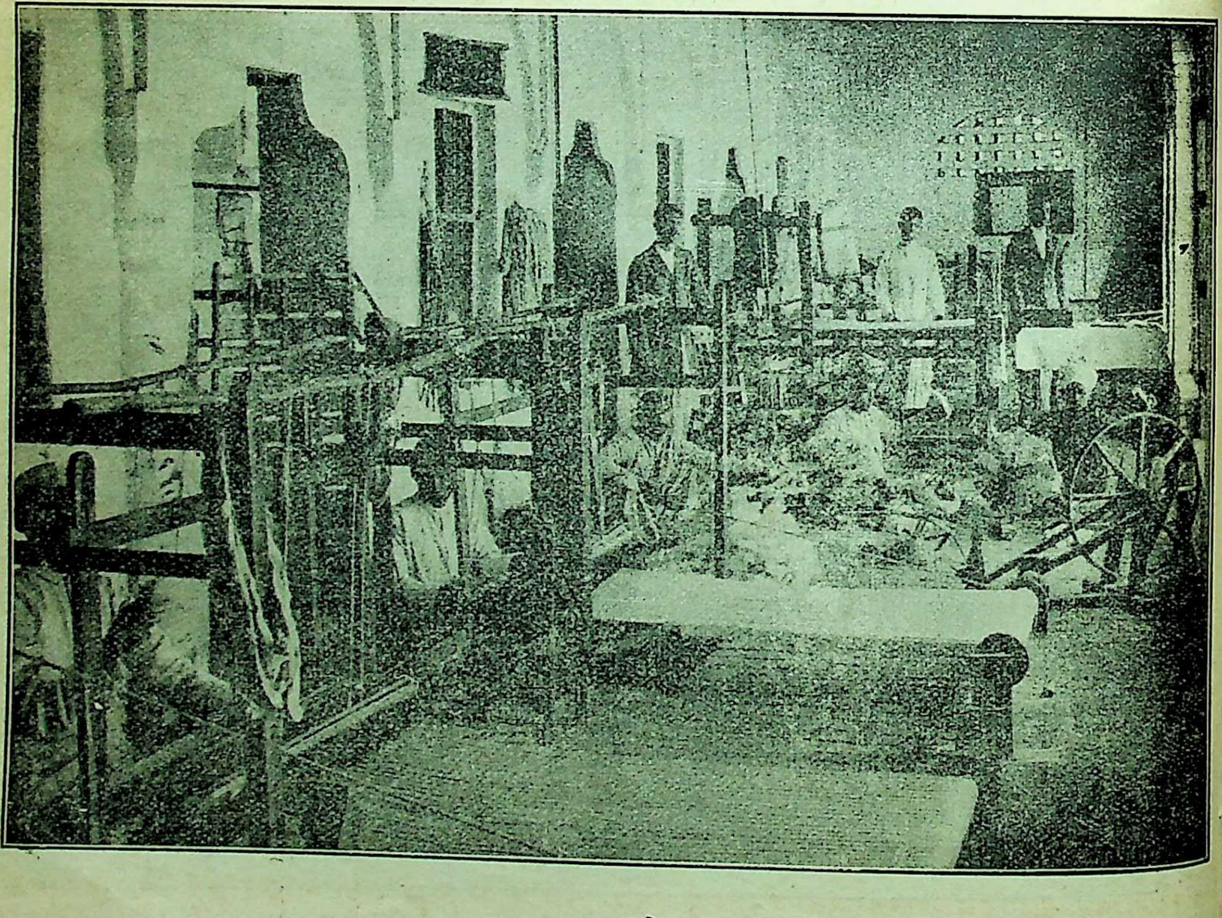

वस्त्र-कला-श्रेणी

(विद्यार्थी रुई धुन रहे हैं, सूत कात रहे हैं और कपड़ा बुन रहे हैं)

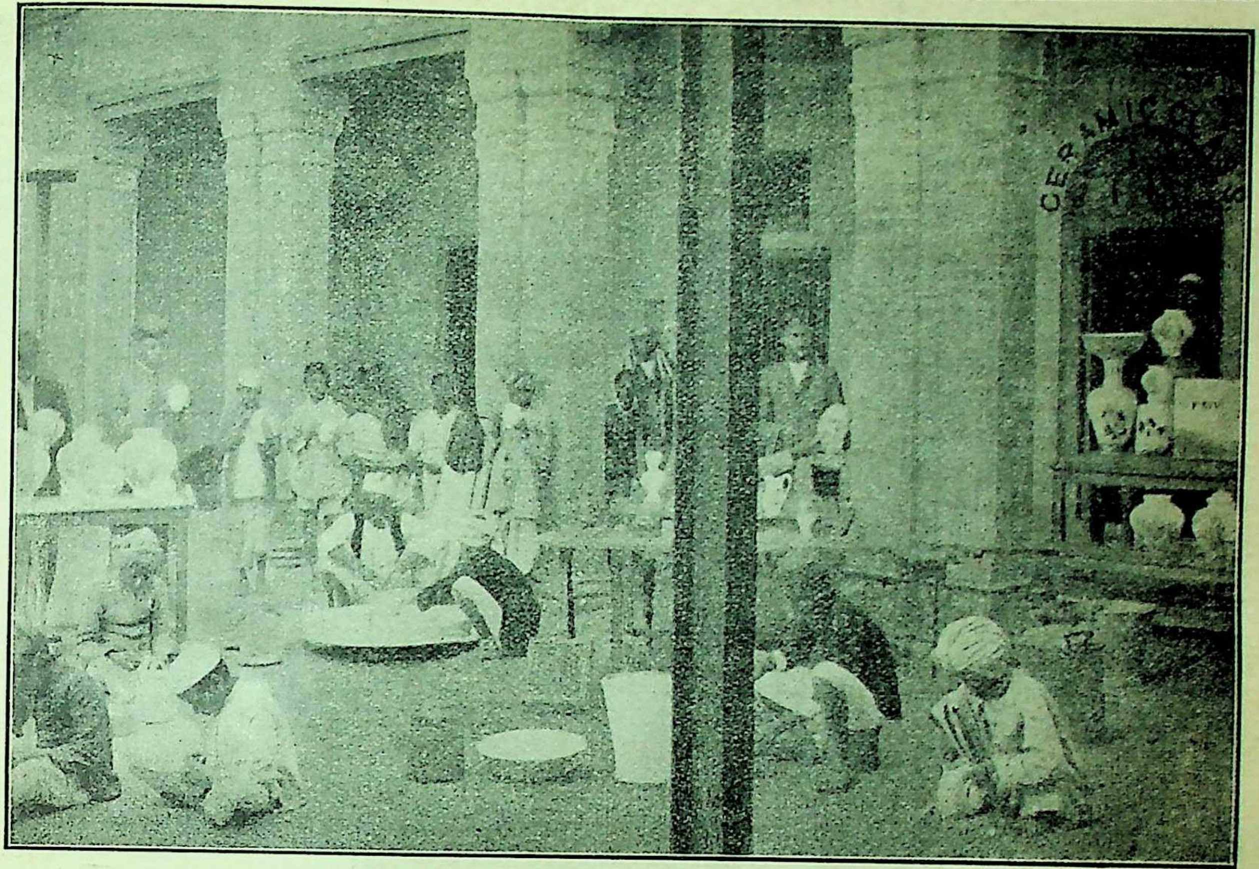

चीनी और मिट्टी के काम की श्रेणी

(विद्यार्थी चीनी और मिट्टी के बर्तन बना रहे हैं)

का आश्रय लिया जाता है। परंतु विद्यालय के अध्यापक इन विषयों की शिक्षा हिंदी में ही देने के लिये पूर्ण रूप से तल्लीन रहते हैं। आशा है, निकट भविष्य में यह पूर्ण रूप से हिंदी में ही दी जायगी।

धार्मिक स्वतन्त्रता तथा सदाचरण

विद्यालय किसी विशेष मत-मतांतर का पक्षपाती नहीं है। सभी धर्मों के विद्यार्थियों के लिये इसका द्वार खुला है। सभी विद्यार्थी अपने-अपने धार्मिक कृत्य करने में स्वतंत्र हैं। शुरू से ही विद्यालय इस विषय में सतर्क रहा है कि विद्यालय के विद्यार्थियों में सभी प्रकार के धार्मिक साहित्य का अध्ययन, अनुशीलन करने के लिये उत्साह रहे, उनमें सब प्रकार के धार्मिक विश्वासों के प्रति सहानुभूति तथा सहनशीलता और विभिन्न धार्मिक विश्वास रखनेवाले विद्यार्थियों के साथ प्रेम, समता और सौहार्द रहे। विद्यालय तथा वर्क-शॉप में पढ़ाई प्रारंभ होने से पूर्व ईश्वर-प्रार्थना करने का भी नियम है। सदाचार की ओर अध्यापकों का निरंतर ध्यान रहता है। वे मौखिक उपदेश तथा अपने सद्व्यवहारों द्वारा सदैव प्रयत्नशील रहते हैं कि विद्यालय के विद्यार्थी आदर्श सदाचारी बनें। इसीलिये विशेष रूप से ऐसा नियम रक्खा गया है कि महाविद्यालय के प्रत्येक विद्यार्थी को या तो प्रेम-छात्रालय में रहना पड़ता है, अथवा किसी ऐसे संरक्षक या प्रेम-महाविद्यालय के अध्यापक के निरीक्षण में, जिसे प्रेम-महाविद्यालय के जेनरल मैनेजर या मंत्री उचित समझें।

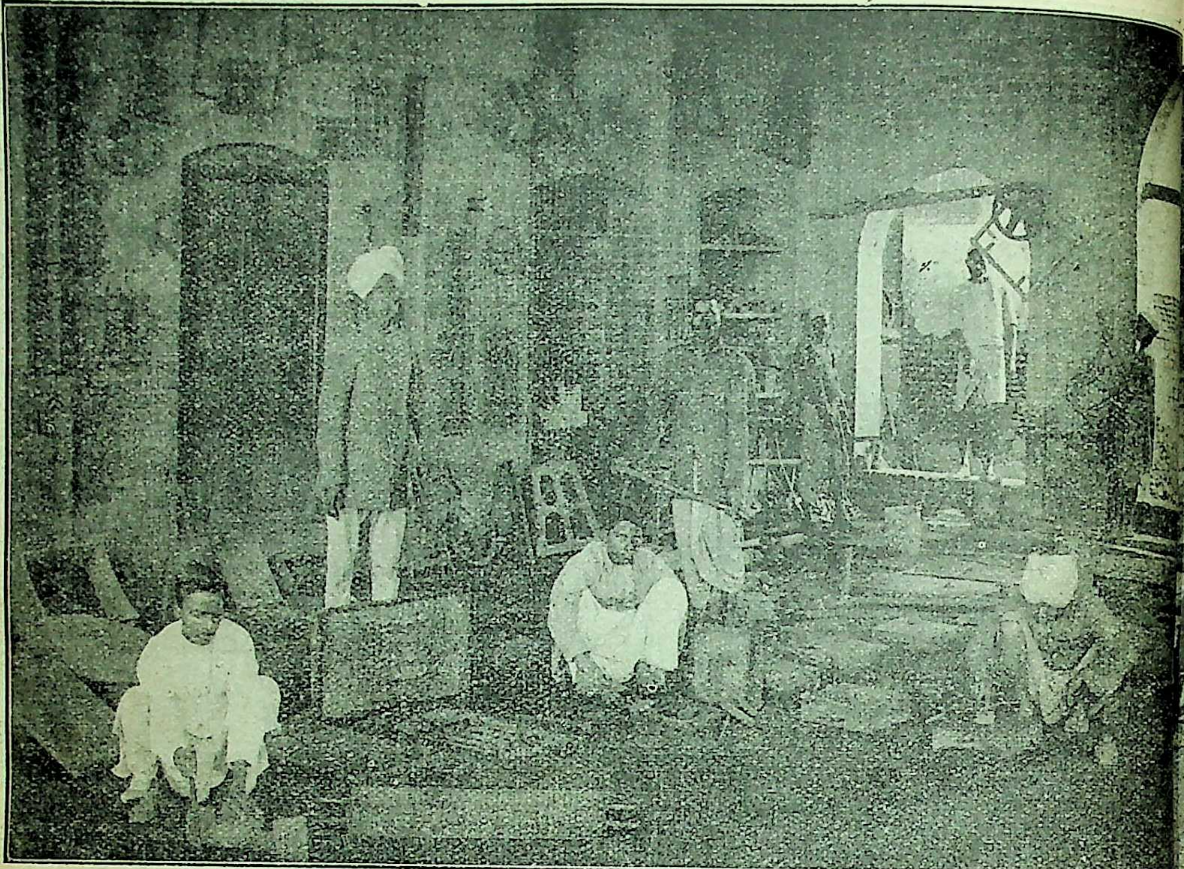

ढलाई-घर

(विद्यार्थी साँचे बना रहे हैं, और लोहे आदि के पुर्ज़े ढाल रहे हैं)

स्वास्थ्य-रक्षा

विद्यार्थियों की स्वास्थ्य-रक्षा के लिये विद्यालय का खेल-कूद की ओर समुचित ध्यान रहता है। प्रति शुक्रवार को केवल इसीलिये आधे दिन की छुट्टी रहती है। बाहर से जो टीमें आती हैं, उनके साथ भी विद्यालय के विद्यार्थियों के प्रायः हाकी, क्रिकेट तथा फ़ुटबाल के मैच होते रहते हैं। विद्यालय के विद्यार्थियों को प्रोत्साहन देने के लिये इन खेलों पर यदा-कदा पारितोषिक भी दिया जाता है। इन खेलों का सारा सामान भी विद्यार्थियों को मुफ़्त मिलता है। खेलों का प्रबंध तथा निरीक्षण करने के लिये विशेष-विशेष अध्यापक नियुक्त रहते हैं। अँगरेज़ी खेलों के अतिरिक्त देशी खेलों में विद्यालय के विद्यार्थी बड़ी दिलचस्पी प्रति दिन किसी-न-किसी प्रकार के खेल व्यायाम में भाग लेना प्रत्येक विद्यार्थी अनिवार्य है।

प्रवेश-नियम

स्थान ख़ाली होने पर प्रवेश के लिये शिक्षार्थियों की परीक्षा और फिर उनकी योग्यता के उन्हें उचित श्रेणी में भरती कर लिया आयु की साधारणतः कोई क़ैद नहीं है औद्योगिक विभाग के विद्यार्थियों के लिये कम-से-कम १२ वर्ष की अवस्था नियम है। विद्यार्थी का स्वस्थ—विशेषतया प्रकार के मानसिक और संक्रामक रोग से

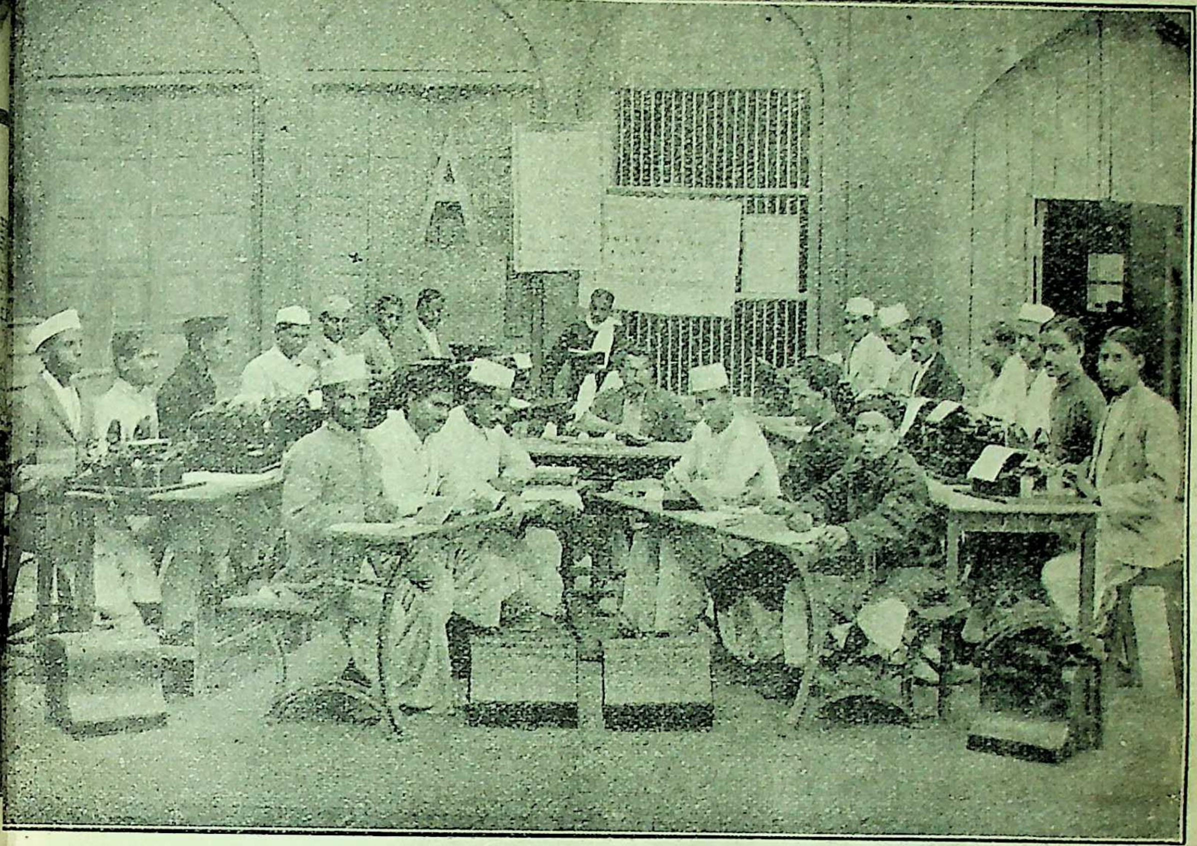

कॉमर्स-क्लास

(पीछे की पंक्ति टाइप कर रही है, और सामने के विद्यार्थी बुक-कीपिंग और शॉर्ट-हैंड-राइटिंग सीख रहे हैं)

लेना आवश्यक है। भर्ती कर लिए जाने पर किसी कार का शुल्क नहीं लिया जाता। हाँ, शिल्प तथा णिज्य-श्रेणियों में प्रवेश के समय १०) ज़मानत रूप में लिए जाते हैं। शिक्षा-कार्य समाप्त करके ब विद्यार्थी विद्यालय से पृथक् होता है, तब ये ए वापस कर दिए जाते हैं। परंतु यदि विद्यार्थी क्षा-कार्य समाप्त किए बिना ही विद्यालय से पृथक् ता है, तो उस दशा में ये ज़मानत के तौर पर मा किए गए रुपए नहीं लौटाए जाते। नए वर्ष की क्षा का प्रारंभ साधारणतः जून-मास के अंत में ता है। परंतु बाल-श्रेणी तथा शिल्प-श्रेणी में ष्ट योग्यता रखनेवाले विद्यार्थी वर्ष के बीच में प्रविष्ट हो सकते हैं। वाणिज्य-श्रेणी में प्रत्येक त्रैमासिक परीक्षा के पश्चात् १५ दिन तक प्रवेश हो सकता है। प्रवेश के लिये विद्यार्थी के पिता अथवा संरक्षक को एक फ़ार्म भरना पड़ता है, और उसके साथ-ही-साथ विद्यार्थी के सदाचारी होने के प्रमाण-स्वरूप दो प्रतिष्ठित सज्जनों के प्रमाण-पत्र, अपने प्रार्थना-पत्र के साथ, देने होते हैं। बालिकाओं को पढ़ाने के लिये विद्यालय में कोई अलग व्यवस्था नहीं है। वे विद्यार्थियों के साथ ही शिक्षा प्राप्त कर सकती हैं।

छुट्टियाँ

छुट्टियाँ वर्ष-भर में त्यौहार तथा विशेष पर्व आदि की सब मिलाकर १ मास की, वार्षिक परीक्षा के पश्चात् १५ दिन की तथा सितंबर-अक्टोबर के दिनों में १ मास

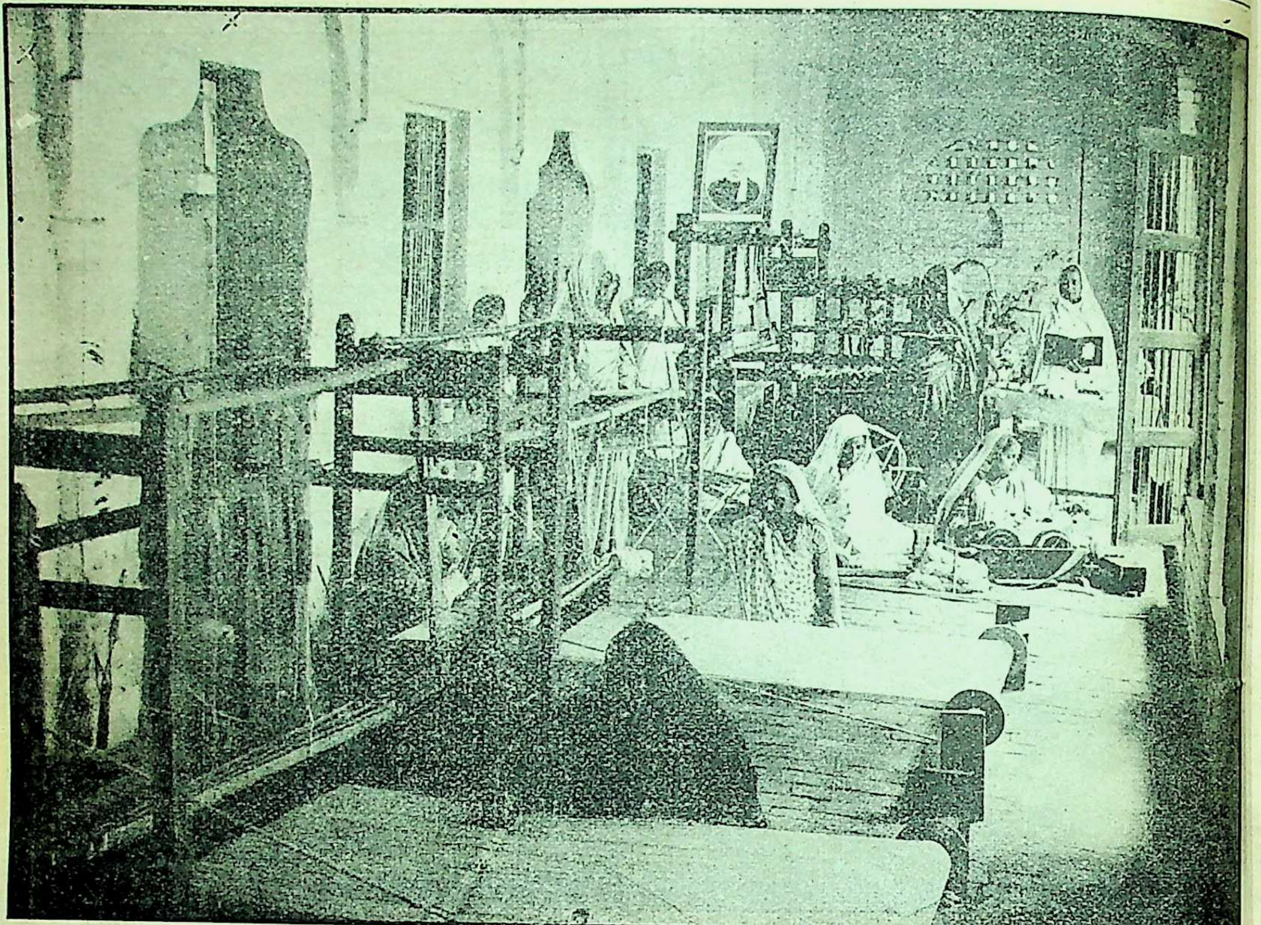

महिला-वस्त्र-कला-श्रेणी

(महिलाएँ कपड़ा बुन और सूत कात रही हैं)

की रहती हैं, और प्रति सप्ताह मंगलवार को अनध्याय रहता है।

छात्रालय

विद्यालय का अपना एक स्वतंत्र छात्रालय है। यह वहुत विशाल है। इसमें ६० विद्यार्थी, स्वास्थ्य-रक्षा के नियम और सिद्धांत के अनुसार, सुख-पूर्वक और स्वतंत्र रूप से रह सकते हैं। इसमें रहने के लिये किसी प्रकार की फ़ीस (या किराया) नहीं ली जाती। केवल १०) अमानत के रूप में लिए जाते हैं; जो, नियमानुसार छात्रालय छोड़ने और अमानत जमा करने की पूर्व प्राप्त रसीद देने पर, वापस दे दिए जाते हैं। इसमें १२ वर्ष के, या इससे अधिक आयु के, नीरोग और सदाचारी विद्यार्थी, स्थान ख़ाली होने पर, भरती किए जाते हैं। उन्हें १ चारपाई, १ मेज़, १ स्टूल, व्यायाम और खेलने का सामान, दवा और भोजनादि के बर्तन मुफ़्त मिलते हैं। परंतु लोटा, कटोरी, लैंप, विस्तरा, संदूक़ और ताला अपने पास से लेकर रखना होता है। अस्वस्थ होने पर दवाएँ विना मूल्य दी जाती हैं। देख-भाल के लिये एक अनुभवी वैद्यराज रहते हैं। मांस-भोजन, मादक द्रव्योपयोग और अश्लील गान तथा दिल्लगी का सर्वथा निषेध है। सब विद्यार्थी निश्चित समय पर व्यायाम तथा ईश्वरोपासना करते हैं। भोजन-व्यय, जो घी-दूध छोड़कर अनुमान से ८-९ रुपए के लगभग होता है, प्रत्येक मास की ५ तारीख़ तक चुका देना पड़ता है।

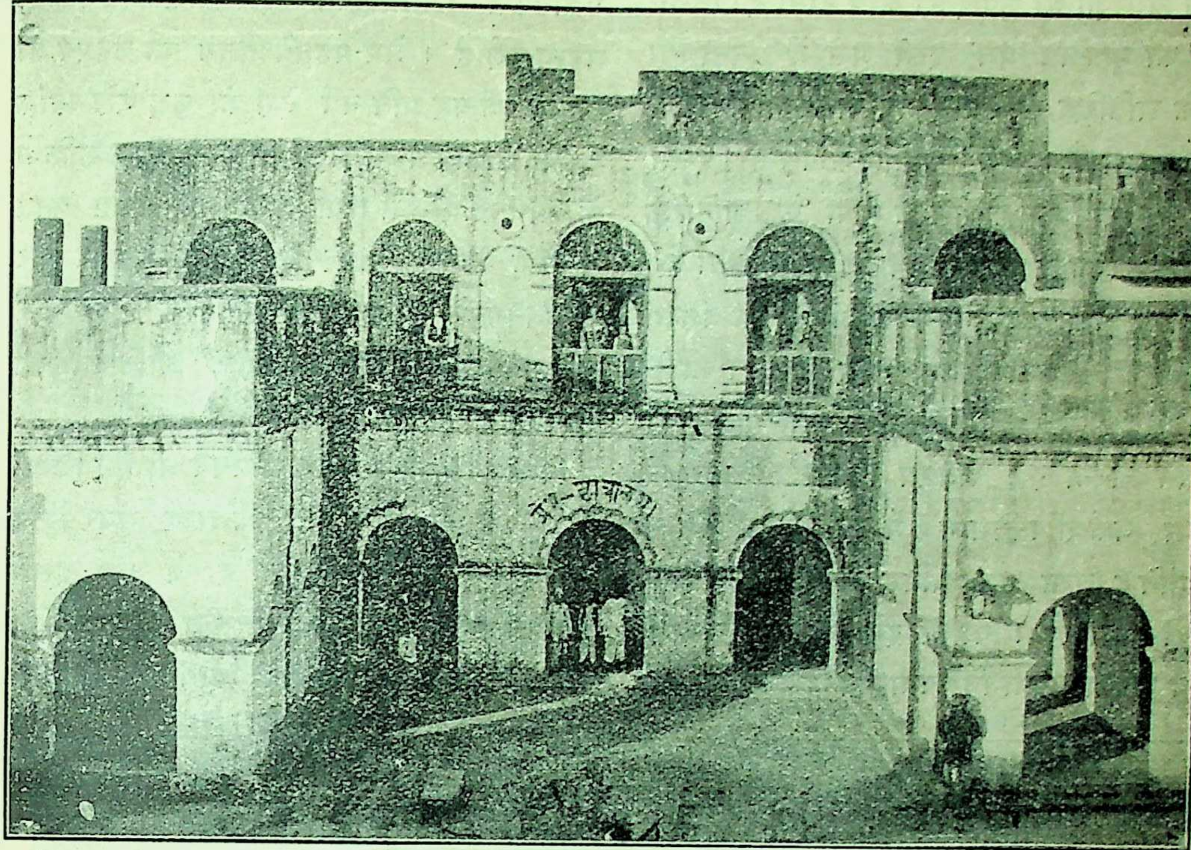

प्रेम-छात्रालय

(भीतर का दृश्य)

अतिथि-शाला

विद्यार्थियों के संरक्षकों के लिये अतिथि-शाला का प्रबंध पृथक् है। इसमें संरक्षक अधिक-से-अधिक तीन दिन तक ठहर सकते हैं। उनका भोजन-व्यय विद्यार्थी के भोजन-व्यय में सम्मिलित कर लिया जाता है। विद्यार्थियों के संरक्षकों के सिवा जो व्यक्ति दर्शक रूप से पधारते हैं, वे भी जेनरल मैनेजर की अनुमति से अधिक-से-अधिक तीन दिन तक ही ठहर सकते हैं। उन्हें भोजन बनाने के लिये बर्तन आदि दिए जाते हैं; जिन्हें स्वच्छ और सुरक्षित रखकर, जाने के पूर्व, जेनरल मैनेजर को सँभलवा देना, उनके लिये, आवश्यक होता है।

संबद्ध संस्थाएँ

विद्यालय से संबंध रखनेवाली ये चार संस्थाएँ और हैं— (१) पुस्तकालय, (२) वाचनालय, (३) प्रेस तथा (४) प्रेम-यंत्र।

पुस्तकालय में साहित्य, शिल्प, उद्योग, विज्ञान तथा गणित आदि विद्यालयोपयोगी विषयों की, हिंदी, अँगरेज़ी तथा उर्दू की, लगभग ३००० पुस्तकें हैं। ये लगभग ५०००) की होंगी। पुस्तकालय के साथ ही एक वाचनालय है; जिसमें हिंदी तथा अँगरेज़ी के दैनिक, अर्ध-साप्ताहिक, साप्ताहिक तथा मासिक, सब मिलाकर कोई ८० पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं। यह वाचनालय प्रायः ६½ बजे से ४ बजे तक खुला रहता है। विद्यार्थियों तथा अध्यापकों के अतिरिक्त सर्व-साधारण जनता भी इस वाचनालय से लाभ उठाती है। विद्यालय का अपना एक प्रेस है। इसमें विद्यालय-संबंधी हिंदी

तथा अँगरेज़ी की छपाई का कार्य होता है। विद्यालय का मुख-पत्र 'प्रेम' इसी प्रेस में छपता है। इसके अतिरिक्त, सुविधानुसार, बाहर का कार्य भी प्रेस छापता है। 'प्रेम' साप्ताहिक पत्र है। इसमें विज्ञान तथा कला-कौशल के लेखों के अतिरिक्त सामयिक विषयों पर भी विवेचन किया जाता है।

वर्क-शॉप का महत्त्व

विद्यालय का प्रधान लक्ष्य औद्योगिक शिक्षा का प्रचार तथा शिक्षित कारीगर तैयार करके कला-कौशल की उन्नति करना है। अतएव विद्यालय विभाग के सिवा वर्क-शॉप-विभाग में औद्योगिक शिक्षा सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक, दोनों प्रणालियों से दी जाती है। यों तो इस विभाग का सभी कार्य अपना-अपना विशेष महत्त्व रखता है, परंतु मेकेनिकल इंजीनियरिंग का शिक्षण-कार्य विशेष महत्त्व-पूर्ण है। प्रेम-महाविद्यालय का उद्देश्य ही यह है कि वह प्रति वर्ष देश को कुछ ऐसे व्यक्ति दे सके, जो अपनी शारीरिक तथा मानसिक शक्तियों के योग से एंजिनों तथा मशीनों से यथेष्ट काम ले सकें, उनमें आवश्यकतानुसार सुधार कर सकें, बिगड़ने पर उनकी मरम्मत कर सकें, और उनसे संबंध रखनेवाले छोटे-छोटे आविष्कार भी स्वतः कर सकें।

प्रदर्शिनी

विद्यालय में एक प्रदर्शिनी-भवन भी है। विद्यालय के जो विद्यार्थी सुंदर-सुंदर वस्तुएँ बनाते हैं, वे सब इसमें एकत्रित रहती हैं। साल में तीन बार प्रदर्शिनी होती है। जिन दिनों प्रदर्शिनी होती है उन दिनों

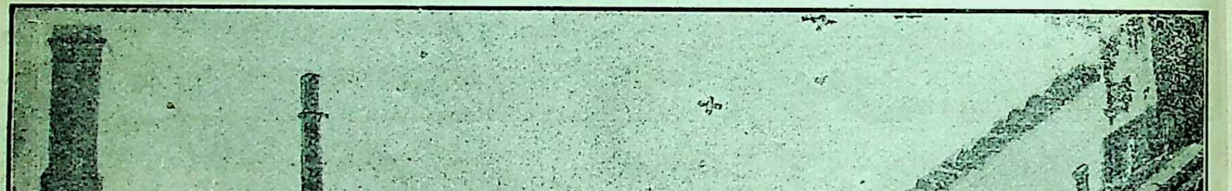

वर्क-शॉप

(सामने का दृश्य)

विद्यार्थी नई-नई तथा उत्तमोत्तम वस्तुएँ बनाने के लिये विशेष प्रयत्न-शील रहते हैं। उनकी कार्य-कुशलता पर पुरस्कार भी दिया जाता है।

विशेष वक्तव्य

विद्यालय का संक्षिप्त परिचय इन्हीं शब्दों में समाप्त किया जाता है। यह संस्था औद्योगिक शिक्षा के प्रचार द्वारा देश की कितनी सेवा कर रही है, यह इस लेख से स्पष्ट है। कार्य-विवरण देखने पर स्पष्ट झलकने लगता है कि इस संस्था का क्षेत्र वास्तव में बहुत विशाल है। इसका काम बड़ी योग्यता से चलाया जा रहा है। युक्त प्रांत के लिये यह संस्था गौरव-स्वरूप है। किंतु इतने बड़े कार्य के लिये, इसे और भी विस्तृत करने के लिये, देशवासियों की सहायता भी परम आवश्यक है। यदि इसे कुछ और आर्थिक सहायता प्राप्त हो, तो वास्तव में यह संस्था देश के लिये और भी अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकती है। आशा है, देशवासी इसे अवश्य अपनावेंगे। भगवान् करें, राजा महेंद्र-प्रताप का यह अतुल त्याग देश के लिये अतुलनीय लाभ-प्रद सिद्ध हो।

आप-बीती *

प्रायः अधिकांश साहित्य-सेवियों के जीवन में एक ऐसा समय आता है, जब पाठकगण उनके पास श्रद्धा-पूर्ण पत्र भेजने लगते हैं। कोई उनकी रचना-शैली की प्रशंसा करता है, कोई उनके सद्विचारों पर मुग्ध हो जाता है। लेखक को भी कुछ दिनों से यह सौभाग्य प्राप्त है। ऐसे पत्रों को पढ़कर उसका हृदय कितना गद्गद हो जाता है, इसे किसी साहित्य-सेवी ही से पूछना चाहिए। अपने फटे कंबल पर बैठा हुआ वह गर्व और आत्म-गौरव की लहरों में डूब जाता है। भूल जाता है कि रात को गीली लकड़ी से भोजन पकाने के कारण सिर में कितना दर्द हो रहा था, खटमलों और मच्छड़ों ने रात-भर कैसे नींद हराम कर दी थी। 'मैं भी कुछ हूँ' यह अहंकार उसे एक क्षण के लिये उन्मत्त बना देता है। पिछले साल, सावन के महीने में, मुझे एक ऐसा ही पत्र मिला। उसमें मेरी क्षुद्र रचनाओं की दिल खोलकर दाद दी गई थी।

पत्र-प्रेषक महोदय स्वयं एक अच्छे कवि थे। मैं उनकी कविताएँ पत्रिकाओं में अक्सर देखा करता था। यह पत्र पढ़कर फूला न समाया। उसी वक़्त जवाब लिखने बैठा। उस तरंग में जो कुछ लिख गया, इस समय याद नहीं। इतना ज़रूर याद है कि पत्र आदि से अंत तक प्रेम के उद्गारों से भरा हुआ था। मैंने कभी कविता नहीं की, और न कोई गद्य-काव्य ही लिखा; पर भाषा को जितना सँवार सकता था, उतना सँवारा। यहाँ तक कि जब पत्र समाप्त करके दुबारा पढ़ा, तो कविता का आनंद आया। सारा पत्र भाव-लालित्य से परिपूर्ण था। पाँचवें दिन कवि महोदय का दूसरा पत्र आ पहुँचा। वह पहले पत्र से भी कहीं अधिक मर्मस्पर्शी था। 'प्यारे भैया!' कहकर मुझे संबोधित किया गया था; मेरी रचनाओं की सूची और प्रकाशकों के नाम, ठिकाने, पूछे गए थे। अंत में यह शुभ समाचार था कि "मेरी पत्नीजी को आपके ऊपर बड़ी श्रद्धा है; वह बड़े प्रेम से आपकी रचनाओं को पढ़ती हैं। वही पूछ रही हैं कि आपका विवाह कहाँ हुआ है, आपकी संतानें कितनी हैं, तथा आपका कोई फ़ोटो भी है? हो, तो कृपया भेज दीजिए।" मेरी जन्म-भूमि और वंशावली का पता भी पूछा गया था। इस पत्र, विशेषतः उसके अंतिम समाचार, ने मुझे पुलकित कर दिया।

यह पहला ही अवसर था कि मुझे किसी महिला के मुख से, चाहे वह प्रतिनिधि द्वारा ही क्यों न हो, अपनी प्रशंसा सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। ग़रूर का नशा छा गया। धन्य है भगवन्! अब रमणियाँ भी मेरे कृत्य की सराहना करने लगीं। मैंने तुरंत उत्तर लिखा। जितने कर्ण-प्रिय शब्द मेरी स्मृति के कोष में थे, सब ख़र्च कर दिए। मैत्री और बंधुत्व से सारा पत्र भरा हुआ था।

---

* आज जिस घटना का वर्णन कर रहा हूँ, उसमें कोई असाधारणता नहीं है। ऐसी घटनाएँ हमारे जीवन में प्रायः नित्य ही होती रहती हैं। हाँ, असाधारणता उसके सुपरिणाम में है। कहीं ऐसे परिणाम इतने दुर्लभ न होते, तो संसार कितना सुखमय हो जाता।

अपनी वंशावली का विस्तृत वर्णन किया । कदाचित् मेरे पूर्वजों का ऐसा कीर्ति-गान किसी भाट ने भी न किया होगा । मेरे दादा एक ज़मींदार के कारिंदे थे ; मैंने उन्हें एक बड़ी रियासत का मैनेजर बतलाया । अपने पिता को, जो एक दफ़्तर में क्लर्क थे, उस दफ़्तर का प्रधानाध्यक्ष बना दिया । और, काश्तकारी को ज़मींदारी बना देना तो साधारण बात थी । अपनी रचनाओं की संख्या तो न बढ़ा सका, पर उनके महत्त्व, आदर और प्रचार का उल्लेख ऐसे शब्दों में किया, जो नम्रता की ओट में अपने गर्व को छिपाते हैं । कौन नहीं जानता कि बहुधा 'तुच्छ' का अर्थ उसके विपरीत होता है, और 'दीन' के माने कुछ और ही समझे जाते हैं । स्पष्ट रूप से अपनी बड़ाई करना उच्छृंखलता है ; मगर सांकेतिक शब्दों से आप इसी काम को बड़ी आसानी से पूरा कर सकते हैं । ख़ैर, मेरा पत्र समाप्त हो गया, और तत्क्षण लेटरबक्स के पेट में पहुँच गया ।

इसके बाद दो सप्ताह तक कोई पत्र न आया । मैंने उस पत्र में अपनी गृहिणी की ओर से भी दो-चार समयोचित बातें लिख दी थीं । आशा थी, घनिष्ठता और भी घनिष्ठ होगी । कहीं कविता में मेरी प्रशंसा हो जाय, तो क्या पूछना ! फिर तो साहित्य-संसार में मैं-ही-मैं नज़र आऊँ ! इस चुप्पी से कुछ निराशा होने लगी ; लेकिन, इस डर से कि कहीं कविजी मुझे मतलबी अथवा Sentimental न समझ लें, कोई पत्र न लिख सका ।

आश्विन का महीना का, और तीसरा पहर । राम-लीला की धूम मची हुई थी । मैं अपने एक मित्र के घर चला गया था । ताश की बाज़ी हो रही थी । सहसा एक महाशय मेरा नाम पूछते हुए आए, और मेरे पास की कुरसी पर बैठ गए । मेरा उनसे कभी का परिचय न था । सोच रहा था, यह कौन आदमी है, और यहाँ कैसे आया । यार लोग उन महाशय की ओर देखकर आपस में इशारेबाज़ियाँ कर रहे थे । उनके आकार-प्रकार में कुछ नवीनता अवश्य थी । श्याम वर्ण, नाटा डील, मुख पर चेचक के दाग़, नंगा सिर, बाल सँवारे हुए, सिर्फ़ सादी क़मीज़, गले में फूलों की एक माला, पैरों में एक फुलबूट, और हाथ में एक मोटी-सी पुस्तक !

मैंने विस्मित होकर नाम पूछा ।

उत्तर मिला—मुझे उमापतिनारायण कहते हैं ।

मैं उठकर उनके गले से लिपट गया । यह वही कवि महोदय थे, जिनके कई प्रेम-पत्र मुझे मिल चुके थे । कुशल-समाचार पूछा । पान-इलायची से ख़ातिर की । फिर पूछा—"आपका आना कैसे हुआ ?"

उन्होंने कहा—"मकान पर चलिए, तो सब वृत्तांत कहूँगा । मैं आपके घर गया था । वहाँ मालूम हुआ, आप यहाँ हैं । पूछता हुआ चला आया ।"

मैं उमापतिजी के साथ घर चलने को उठ खड़ा हुआ । जब वह कमरे के बाहर निकल गए, तो मेरे मित्र ने पूछा—"यह कौन साहब हैं ?"

मैं—"मेरे एक नए दोस्त हैं !"

मित्र—"ज़रा इनसे होशियार रहिएगा । मुझे तो उचक्के-से मालूम होते हैं ।"

मैं—"आपका गुमान ग़लत है । आप हमेशा आदमी को उसकी सज-धज से परखा करते हैं । पर मनुष्य कपड़ों में नहीं, हृदय में रहता है ।"

मित्र—"ख़ैर, ये रहस्य की बातें तो आप जानें; मैं आपको आगाह किए देता हूँ ।"

मैंने इसका कुछ जवाब नहीं दिया । उमापतिजी के साथ घर पर आया । बाज़ार से भोजन मँगवाया । फिर बातें होने लगीं । उन्होंने मुझे अपनी कई कविताएँ सुनाईं । स्वर बहुत सरस और मधुर था ।

कविताएँ तो मेरी समझ में ख़ाक न आईं, पर मैंने तारीफ़ों के पुल बाँध दिए । झूम-झूमकर 'वाह, वाह !' करने लगा; जैसे मुझसे बढ़कर कोई काव्य-रसिक संसार में न होगा । संध्या को हम राम-लीला देखने गए । लौटकर उन्हें फिर भोजन कराया । अब उन्होंने अपना वृत्तांत सुनाना शुरू किया । इस समय वह अपनी पत्नी को लेने के लिये कानपुर जा रहे हैं । उनका मकान कानपुर ही में है । उनका विचार है कि एक मासिक पत्रिका निकालें । उनकी कविताओं के लिये एक प्रकाशक १०००) देता है; पर उनकी इच्छा तो यह है कि उन्हें पहले पत्रिका में क्रमशः निकालकर फिर अपनी ही लागत से पुस्तकाकार छपवावें । कानपुर में उनकी ज़मींदारी भी है ; पर वह साहित्यिक जीवन व्यतीत करना चाहते हैं । ज़मींदारी से उन्हें घृणा है । उनकी स्त्री एक कन्या-विद्यालय में प्रधानाध्यापिका हैं । आधी रात तक बातें होती रहीं । अब उनमें से अधिकांश याद नहीं हैं । हाँ, इतना याद है कि हम

दोनों ने मिलकर अपने भावी जीवन का एक कार्य-क्रम तैयार कर लिया था। मैं अपने भाग्य को सराहता था कि भगवान् ने बैठे-बिठाए ऐसा सच्चा मित्र भेज दिया। आधी रात बीत गई, तो सोए। उन्हें दूसरे दिन ८ बजे की गाड़ी से जाना था। मैं जब सोकर उठा, तब ७ बज चुके थे। उमापतिजी मुँह-हाथ धोए तैयार बैठे थे। बोले—"अब आज्ञा दीजिए—लौटते समय इधर ही से जाऊँगा। इस समय आपको कुछ कष्ट दे रहा हूँ। क्षमा कीजिएगा। मैं कल चला, तो प्रातःकाल के ४ बजे थे। दो बजे रात से पड़ा जाग रहा था कि कहीं नींद न आ जाय। बल्कि यों समझिए कि सारी रात जागना पड़ा; क्योंकि चलने की चिंता लगी हुई थी। गाड़ी में बैठा, तो झपकियाँ आने लगीं। कोट उतारकर रख दिया, और लेट गया। तुरंत नींद आ गई। मुग़लसराय में नींद खुली। कोट ग़ायब! नीचे, ऊपर, चारों तरफ़ देखा, कहीं पता नहीं। समझ गया, किसी महाशय ने उड़ा दिया। सोने की सज़ा मिल गई। कोट में ५०) ख़र्च के लिये रक्खे थे; वे भी उसके साथ उड़ गए। आप मुझे ५०) दे दें। पत्नी को मैके से लाना है; कुछ कपड़े वग़ैरह ले जाने पड़ेंगे। फिर सुसराल में सैकड़ों तरह के नेग-जोग लगते हैं। क़दम-क़दम पर रुपए ख़र्च होते हैं! न ख़र्च कीजिए, तो हँसी हो। मैं इधर से लौटूँगा, तो देता जाऊँगा।"

मैं बड़े संकोच में पड़ गया। एक बार पहले भी धोखा खा चुका था। तुरंत भ्रम हुआ, कहीं अब की फिर वही दशा न हो। लेकिन शीघ्र ही मन के इस अविश्वास पर लज्जित हुआ। संसार में सभी मनुष्य एक-से नहीं होते। यह बेचारे इतने सज्जन हैं। इस समय संकट में पड़ गए हैं। और, मैं मिथ्या संदेह में पड़ा हुआ हूँ। घर में आकर पत्नी से कहा—"तुम्हारे पास कुछ रुपए तो नहीं हैं?"

स्त्री—"क्या करोगे?"

मैं—"मेरे मित्र जो कल आए हैं, उनके रुपए किसी ने गाड़ी में चुरा लिए। उन्हें बीबी को बिदा कराने सुसराल जाना है। लौटती बार देते जायँगे।"

पत्नी ने व्यंग्य करके कहा—"तुम्हारे यहाँ जितने मित्र आते हैं, सब तुम्हें ठगने ही आते हैं। सभी संकट में पड़े रहते हैं। मेरे पास रुपए नहीं हैं।"

मैंने ख़ुशामद करते हुए कहा—"लाओ दे दो। बेचारे तैयार खड़े हैं। गाड़ी छूट जायगी।"

स्त्री—"कह दो, इस समय घर में रुपए नहीं हैं।"

मैं—"यह कह देना आसान नहीं है। इसका अर्थ तो यह है कि मैं दरिद्र ही नहीं, मित्र-हीन भी हूँ; नहीं तो क्या मेरे लिए ५०) का भी इंतिज़ाम न हो सकता। उमापति को कभी विश्वास न आवेगा कि मेरे पास रुपए नहीं हैं। इससे तो कहीं अच्छा हो कि साफ़-साफ़ यह कह दिया जाय कि 'हमको आप पर भरोसा नहीं है, हम आपको रुपए नहीं दे सकते।' कम-से-कम अपना पर्दा तो ढका रह जायगा।"

श्रीमती ने झुँझलाकर संदूक़ की कुंजी मेरे आगे फेंक दी, और कहा—"तुम्हें जितना बहस करना आता है, उतना कहीं आदमियों को परखना आता, तो अब तक आदमी हो गए होते! ले जाओ, दे दो। किसी तरह तुम्हारी मरजाद तो बनी रहे। लेकिन उधार समझकर मत दो, यह समझ लो कि पानी में फेंके देते हैं।"

मैंने—मुझे आम खाने से काम था, पेड़ गिनने से नहीं—चुपके-से रुपए निकाले, और लाकर उमापति को दे दिए। फिर लौटती बार आकर रुपए दे जाने का आश्वासन देकर वह चल दिए।

सातवें दिन शाम को वह घर से लौट आए। उनकी पत्नी और पुत्री भी साथ थीं। मेरी पत्नी ने शक्कर और दही खिलाकर उनका स्वागत किया। मुँह-दिखाई के २) दिए। उनकी पुत्री को भी मिठाई खाने को २) दिए। मैंने समझा था, उमापति आते-ही-आते मेरे रुपए गिनने लगेंगे; लेकिन उन्होंने पहर रात गए तक रुपयों का नाम भी नहीं लिया। जब मैं घर में सोने गया, तो बीबी से कहा—"इन्होंने तो रुपए नहीं दिए जी!"

पत्नी ने व्यंग्य से हँसकर कहा—"तो क्या सचमुच तुम्हें आशा थी कि वह आते-ही-आते तुम्हारे हाथ में रुपए रख देंगे। मैंने तो तुमसे पहले ही कह दिया था कि फिर पाने की आशा से रुपए मत दो; यही समझ लो कि किसी मित्र को सहायतार्थ दे दिए। लेकिन तुम भी विचित्र आदमी हो।"

मैं लज्जित और चुप हो रहा। उमापतिजी दो दिन रहे। मेरी पत्नी उनका यथोचित आदर-सत्कार करती रही। लेकिन मुझे उतना संतोष न था। मैं समझता था, इन्होंने मुझे धोखा दिया।

तीसरे दिन प्रातःकाल वह चलने को तैयार हुए।

मुझे अब भी आशा थी कि वह रुपए देकर जाएँगे। लेकिन जब उनकी नई रामकहानी सुनी, तो सन्नाटे में आ गया। वह अपना बिस्तर बाँधते हुए बोले—"बड़ा ही खेद है कि मैं अब की बार आपके रुपए न दे सका। बात यह है कि मकान पर पिताजी से भेंट ही नहीं हुई। वह तहसील-वसूल करने गाँव चले गए थे, और मुझे इतना अवकाश न था कि गाँव तक जाता। रेल का रास्ता नहीं है। बैल-गाड़ियों पर जाना पड़ता है। इसलिये मैं एक दिन मकान पर रहकर ससुराल चला गया। वहाँ सब रुपए ख़र्च हो गए। बिदाई के रुपए न मिल जाते, तो यहाँ तक आना कठिन था। अब मेरे पास रेल का किराया तक नहीं है। आप मुझे २५) और दे दें। मैं वहाँ जाते-ही-जाते भेज दूँगा। मेरे पास इक्के तक का किराया नहीं है।"

जी में तो आया कि टका-सा जवाब दे दूँ; पर इतनी अशिष्टता न हो सकी। फिर पत्नी के पास गया, और रुपए माँगे। अब की उन्होंने विना कुछ कहे-सुने रुपए निकालकर मेरे हवाले कर दिए। मैंने उदासीन भाव से रुपए उमापतिजी को दे दिए। जब उनकी पुत्री और अर्धांगिनी ज़ीने से उतर गईं, तो उन्होंने बिस्तर उठाया, और मुझे प्रणाम किया। मैंने बैठे-बैठे सिर हिलाकर जवाब दिया। उन्हें सड़क तक पहुँचाने भी न गया।

एक सप्ताह के बाद उमापतिजी ने लिखा—"मैं कार्यवश बरार जा रहा हूँ। लौटकर रुपए दूँगा।"

१५ दिन के बाद मैंने एक पत्र लिखकर कुशल-समाचार पूछे। कोई उत्तर न आया। १५ दिन के बाद फिर रुपयों का तक़ाज़ा किया। उसका भी कुछ जवाब न मिला। एक महीने के बाद फिर तक़ाज़ा किया। उसका भी यही हाल! एक रजिस्टरी-पत्र भेजा। वह पहुँच गया, इसमें संदेह नहीं; लेकिन जवाब उसका भी न आया। समझ गया, समझदार जोरू ने जो कुछ कहा था, वह अक्षरशः सत्य था। निराश होकर चुप हो रहा।

इन पत्रों की मैंने पत्नी से चर्चा भी नहीं की, और न उसी ने कुछ इस बारे में पूछा।

(२)

इस कपट-व्यवहार का मुझ पर वही असर पड़ा, जो साधारणतः स्वाभाविक रूप से पड़ना चाहिए था। कोई ऊँची और पवित्र आत्मा इस छल पर भी अटल रह सकती थी। उसे यह समझकर संतोष हो सकता था कि मैंने अपने कर्तव्य को पूरा कर दिया। यदि ऋणी ने ऋण नहीं चुकाया, तो मेरा क्या अपराध! पर मैं इतना उदार नहीं हूँ। यहाँ तो महीनों सिर खपाता हूँ, क़लम घिसता हूँ, तब जाकर नगद-नारायण के दर्शन होते हैं।

इसी महीने की बात है, मेरे यंत्रालय में एक नया कंपोज़िटर बिहार-प्रांत से आया। काम में चतुर जान पड़ता था। मैंने उसे १५) मासिक पर नौकर रख लिया। पहले किसी अँगरेज़ी स्कूल में पढ़ता था। असहयोग के कारण पढ़ना छोड़ बैठा था। घरवालों ने किसी प्रकार की सहायता देने से इनकार किया। विवश होकर उसने जीविका के लिये यह पेशा अख़्तियार कर लिया। कोई १७-१८ वर्ष की उम्र थी। स्वभाव में गंभीरता थी। बात-चीत बहुत सलीक़े से करता था। यहाँ आने के तीसरे ही दिन उसको बुख़ार आने लगा। दो-चार दिन तो ज्यों-त्यों करके काटे, लेकिन जब बुख़ार न छूटा, तो घबरा गया। घर की याद आई। और कुछ न सही, घरवाले क्या दवा-दर्पन भी न करेंगे! मेरे पास आकर बोला—"महाशय मैं बीमार हो गया हूँ। आप कुछ रुपए दे दें, तो घर चला जाऊँ। वहाँ जाते ही रुपयों का प्रबंध करके भेज दूँगा।" वह वास्तव में बीमार था। मैं उससे भली भाँति परिचित भी था। यह भी जानता था कि यहाँ रहकर वह कभी स्वास्थ्य-लाभ नहीं कर सकता। उसे सचमुच सहायता की ज़रूरत थी। पर मुझे शंका हुई कि कहीं यह भी रुपए हज़म कर जाय, तो? जब एक विचार-शील, सुयोग्य, विद्वान् पुरुष धोखा दे सकता है, तो ऐसे अर्द्ध-शिक्षित नवयुवक से कैसे यह आशा की जाय कि वह अपने वचन का पालन करेगा?

मैं कई मिनट तक घोर संकट में पड़ा रहा। अंत में बोला—"भई, मुझे तुम्हारी दशा पर बहुत दुःख है। मगर मैं इस समय कुछ न कर सकूँगा। बिलकुल ख़ाली-हाथ हूँ। खेद है।"

यह कोरा जवाब सुनकर उसकी आँखों से आँसू गिरने लगे। वह बोला—"आप चाहें, तो कुछ-न-कुछ प्रबंध अवश्य कर सकते हैं। मैं जाते ही आपके रुपए भेज दूँगा।"

मैंने दिल में कहा—यहाँ तो तुम्हारी नियत साफ़ है, लेकिन घर पहुँचकर भी यही नियत रहेगी, इसका क्या प्रमाण है । नियत साफ़ रहने पर भी मेरे रुपए दे सकोगे या नहीं, यही कौन जाने ? कम-से-कम तुमसे वसूल करने का मेरे पास कोई साधन नहीं है । प्रकट में कहा—"इसमें मुझे कोई संदेह नहीं है, लेकिन खेद है कि मेरे पास रुपए नहीं हैं । हाँ, तुम्हारी जितनी तनख़्वाह निकलती हो, वह ले सकते हो ।"

उसने कुछ जवाब नहीं दिया । किं-कर्तव्य-विमूढ़ की तरह एक बार आकाश की ओर देखा, और चला गया । मेरे हृदय में कठिन वेदना हुई । अपनी स्वार्थपरता पर ग्लानि हुई । पर अंत को मैंने जो निश्चय किया था, उसी पर स्थिर रहा । इस विचार से मन को संतोष हो गया कि मैं ऐसा कहाँ का धनी हूँ, जो यों रुपए पानी में फेंकता फिरूँ ।

यह है उस कपट का परिणाम, जो मेरे कवि मित्र ने मेरे साथ किया ।

मालूम नहीं, आगे चलकर इस निर्दयता का क्या कुफल निकलता ; पर सौभाग्य से उसकी नौबत न आई । ईश्वर को मुझे इस अपयश से बचाना मंज़ूर था । जब वह आँखों में आँसू भरे मेरे पास से चला, तो कार्यालय के एक क्लर्क, पं० पृथ्वीनाथ, से उसकी भेंट हो गई । पंडितजी ने उससे हाल पूछा । पूरा वृत्तांत सुन लेने पर बिना किसी आगे-पीछे के उन्होंने १५) निकालकर उसे दे दिए । ये रुपए उन्हें कार्यालय के मुनीम से उधार लेने पड़े । मुझे यह हाल मालूम हुआ, तो हृदय के ऊपर से एक बोझ-सा उतर गया । अब वह बेचारा मज़े से अपने घर पहुँच जायगा । यह संतोष मुफ़्त ही में प्राप्त हो गया । कुछ अपनी नीचता पर लज्जा भी आई । मैं लंबे-लंबे लेखों में दया, मनुष्यता और सद्व्यवहार का उपदेश किया करता था ; पर अवसर पड़ने पर साफ़ जान बचाकर निकल गया ! और, यह बेचारा क्लर्क, जो मेरे लेखों का भक्त था, इतना उदार और दया-शील निकला ! गुरु गुड़ ही रहे, चेला शक्कर हो गए । ख़ैर, इसमें भी एक व्यंग्य-पूर्ण संतोष था कि मेरे उपदेशों का असर मुझ पर न हुआ, न सही, दूसरों पर तो हुआ । चिराग़ के तले अँधेरा रहा, तो क्या हुआ, उसका प्रकाश तो फैल रहा है । पर, कहीं बचा को रुपए न मिले (और शायद ही मिलें, इसकी बहुत कम आशा है), तो ख़ूब छकेंगे । तब हज़रत को आड़े हाथों लूँगा ।

किंतु मेरी यह अभिलाषा न पूरी हुई । पाँचवें दिन रुपए आ गए । ऐसी और आँखें खोल देनेवाली यातना मुझे और कभी नहीं मिली थी । ख़ैरियत यही थी कि मैंने इस घटना की चर्चा स्त्री से नहीं की थी ; नहीं तो मुझे घर में रहना भी मुशकिल हो जाता ।

(३)

उपर्युक्त वृत्तांत लिखकर मैंने एक पत्रिका में भेज दिया । मेरा उद्देश्य केवल यह था कि जनता के सामने कपट-व्यवहार के कुपरिणाम का एक दृश्य रक्खूँ । मुझे स्वप्न में भी आशा न थी कि इसका कोई प्रत्यक्ष फल निकलेगा । इसी से, जब चौथे दिन अनायास मेरे पास ५०) का मनीआर्डर पहुँचा, तो मेरे आनंद की सीमा न रही । प्रेषक वही महाशय थे—उमापति । कूपन पर केवल "क्षमा" लिखा हुआ था । मैंने रुपए ले जाकर पत्नी के हाथों में रख दिए, और कूपन दिखाया ।

उसने अनमने भाव से कहा—"इन्हें ले जाकर यत्न से अपने संदूक़ में रक्खो । तुम ऐसे लोभी प्रकृति के मनुष्य हो, यह मुझे आज ज्ञात हुआ । थोड़े-से रुपयों के लिये किसी के पीछे पंजे झाड़कर पड़ जाना सज्जनता नहीं है । जब कोई शिक्षित और विचारशील मनुष्य अपने वचन का पालन न करे, तो यही समझना चाहिए कि वह विवश है । विवश मनुष्य को बार-बार तक़ाज़ों से लज्जित करना भलमंसी नहीं है । कोई मनुष्य, जिसका सर्वथा नैतिक पतन नहीं हो गया है, यथाशक्ति किसी को धोखा नहीं देता । इन रुपयों को मैं तब तक अपने पास नहीं रक्खूँगी, जब तक उमापति का कोई पत्र न आ जायगा कि क्यों रुपए भेजने में इतना विलंब हुआ ।"

पर इस समय मैं ऐसी उदार बातें सुनने को तैयार न था । डूबा हुआ धन मिल गया, इसकी ख़ुशी से फूला नहीं समाता था ।

प्रेमचंद

बोतलानंद

[चित्रकार—श्रीयुत मोहनलाल महतो गयावाल]

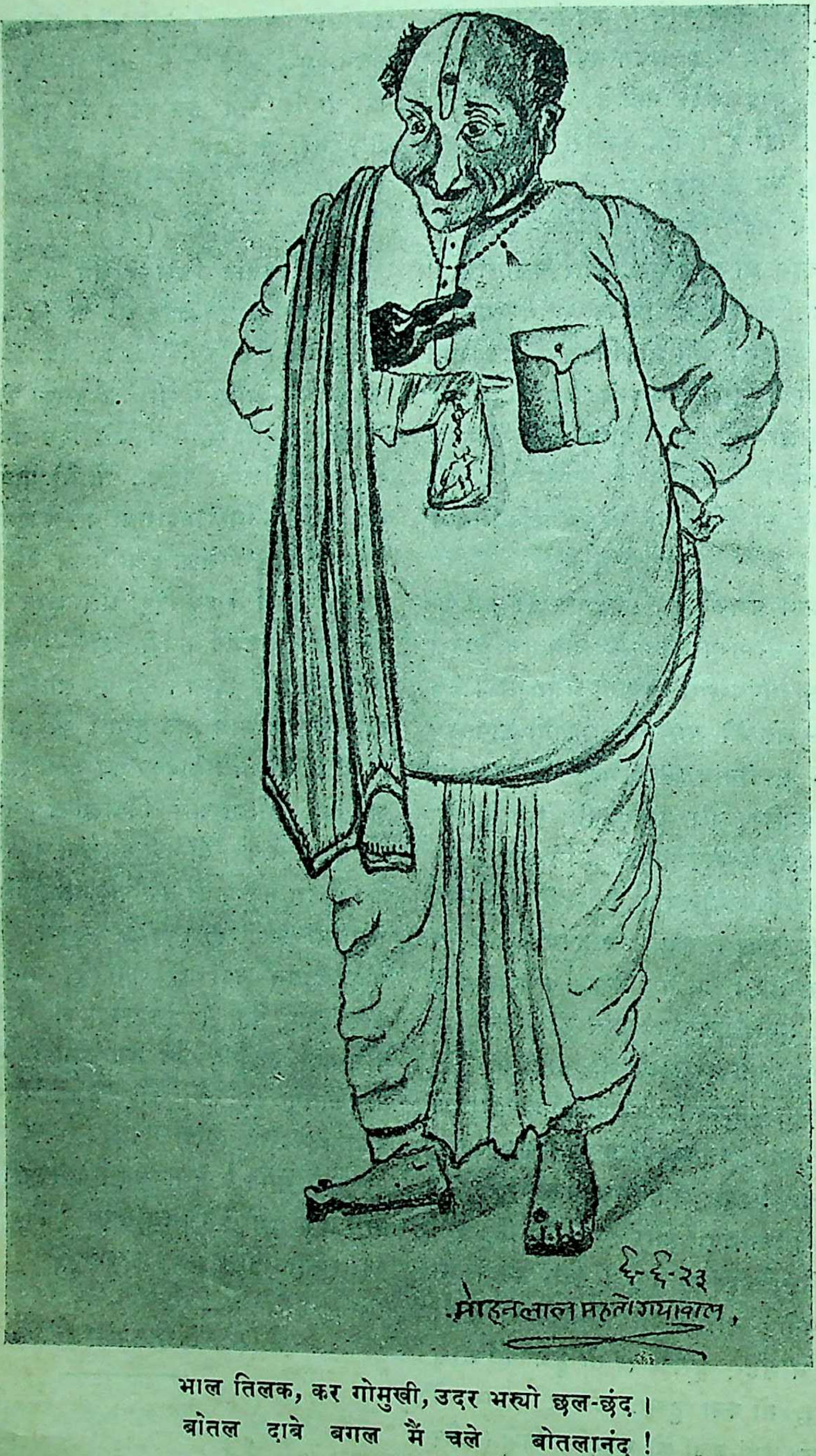
६-६-२३
मोहनलाल महतो गयावाल

भाल तिलक, कर गोमुखी, उदर भर्यो छल-छंद ।
बोतल दाबे बगल मैं चले बोतलानंद !

अजमेरी

मयंक-महिमा

(गत संख्या से आगे)

बँधा सनाका सुर का था, सँग मिला ताल का प्यारा था ;
भरे राग, अनुराग, रागिनी, लय-अलाप ढँग न्यारा था ।
सातों सुर सँग, तीन ग्राम, इक्कीस मूर्च्छनाएँ जो हैं ,
सहज सरसता उनकी सुनकर गंधर्वों के मन मोहैं ।
सुहावनी सारंगी मानो स्यामा सरस बजाती थी ;
दामा अति आनंद बढ़ाती हुई 'सरोद' सुनाती थी ।
सुर 'सिंगार' सिंगार सुरों का करके मंजु बजाता था ;
हरित 'हरेवा' हरता-सा मन मानों मोद मचाता था ।
तेवर, कोमल, आरोही, इमरोही, सुर दिखलाता था ;
गिन-गिन 'अगिन' मोहता मन मानो इसराज बजाता था ।
जल-तरंग था 'बया' बजाता, दहियर रहा सितार बजा ;
मानो द्रुत गति बोल बिलंपत मीड़ ज़मज़मों-सहित सजा ।
'पवई' हारमोनियम 'बुलबुल' रबाब का रस लाता था ;
सब का गुरु बन 'भृंगराज' बैठा बाँसुरी बजाता था ।
'पिपरोला' मृदंग की परन सुनाता, रस बरसाता था ;
संग-संग मुहँचंग बजाता 'फ़िद्दा' रंग जमाता था ।
मुदित 'भुजंगी' मंजु मजीरे की टुनकार सुनाती थी ;
सब का मेल मिलाती सब को एक रंग में लाती थी ।
टप्पा 'मैना' गाती, क्या रस-भरी गिटगिरी लेती थी ;
शोरी का दम भरती सब को मनो मुग्ध कर देती थी ।
तोड़े नाच-नाचकर 'मुनियाँ' गति की गति दिखलाती थी ;
हाव-भाव जिसके लखकर मन में मेनका लजाती थी ।
'शुक' था साधु-वाद करता 'मनहरा' हुआ-सा हरा हुआ ;
कराहता था 'कपोत' प्रेमी राग-राग से भरा हुआ ।
हो उन्मत्त घूमता 'लक्का' था वक्षस्थल ऊँचा कर ;
तान-तीर से बिंधकर 'लोटन' लोट रहा था धरती पर ।
उत्सव समारोह संगीत सहित सब साजों से सोहा ;
सभी थलों पर जिसे देखते ही जाता था मन मोहा ।
कहीं कलावत 'कोकिल' ख़याल पंचम सुर में गाता था ;
तानें तरह-तरह की लेता सदा रंग बन जाता था ।

(अपूर्ण)

(स्वर्गीय) उपाध्याय श्रीबदरीनारायण
चौधरी "प्रेमघन"

'संजीवन-भाष्य' के कुछ अंश की संक्षिप्त आलोचना

(छठी संख्या से सम्मिलित)

'संजीवन-भाष्य के कुछ अंश की संक्षिप्त आलोचना'-शीर्षक लेख के प्रथम प्रकाशित अंश में हमने समालोचक के लिये तीन बातों की आवश्यकता बतलाई थी । उन तीनों बातों में से प्रथम बात पर विचार करते हुए, शर्माजी की कतिपय भूलों का उल्लेख किया था । आज हम दूसरी बात पर यथामति विचार करते हुए संजीवन-भाष्य के कुछ अंश की आलोचना करते हैं । दूसरी बात है समालोचना में—

'पक्षपात का अभाव'

समालोचक को उचित है कि किसी ग्रंथ की समालोचना करने में कभी पक्षपात न करे । विशेषकर तुलनात्मक समालोचना करनेवाले समालोचक को तो भूलकर भी किसी तरह का पक्षपात न करना चाहिए । साधारण समालोचक जिस ग्रंथ की समालोचना करने में पक्षपात करता है, उससे सिर्फ़ उसी ग्रंथ की क्षति होती है ; पर तुलनात्मक समालोचना के समालोचक के पक्षपात करने से अनेक ग्रंथों की जो क्षति होती है, उसके बतलाने की आवश्यकता नहीं । तुलनात्मक समालोचना का समालोचक जिस ग्रंथकार का पक्ष लेता है, उसके दोषों को भी गुण बनाने की कोशिश करता है । और, उसके साथ जिस ग्रंथकार की तुलना करता है, उसके गुणों को भी दोष सिद्ध करने में कुछ कोर-क़सर बाक़ी नहीं रखता । ऐसा करने से सत्य की हत्या होने के साथ ही समालोचना का महत्त्व भी सर्वथा नष्ट हो जाता है । हमें इस बात का अत्यंत खेद है कि बिहारी-सतसई के संजीवन-भाष्यकार श्रीशर्माजी ने, कविवर श्रीविहारीलालजी का, ऐसा ही अनुचित पक्षपात किया है । आपने प्रायः सर्वत्र ही विहारीलाल को संपूर्ण कवियों से श्रेष्ठ सिद्ध करने में कोई क़सर नहीं उठा रक्खी । कहें तो कह सकते हैं कि जितना परिश्रम शर्माजी ने संजीवन-भाष्य लिखने में किया है,

उससे कहीं अधिक परिश्रम विहारीलाल के पक्षपात में किया है। विहारीलाल के साथ तुलना करने में आपने प्राकृत, संस्कृत, भाषा, फ़ारसी और उर्दू के समस्त सुप्रसिद्ध महाकवियों को प्रायः अत्यंत हीन बतलाया है। यदि संजीवन-भाष्य से पक्षपात के सब उदाहरण उद्धृत किए जायँ, तो एक बहुत बड़ा पोथा तैयार हो जाय। हम यहाँ पर कुछ उदाहरण देकर ही अपना लेख समाप्त करेंगे। मर्मज्ञ पाठक स्थाली-पुलाक-न्याय से शर्माजी के अनुचित पक्षपात को, इतने ही उदाहरणों का निरीक्षण करके, समझ जायँगे।

(१)

तीज-परब सौतिन सजे भूषन-बसन सरीर ;
सबै मरगजे-मुँह करी वहै मरगजे चीर ॥३३३॥

विहारीलालजी के इस दोहे के साथ शर्माजी महाराज—

हल्लफलह्णाणपसाहिआणँ छणवासरे सवत्तीणम् ।
अज्जाएँ मज्जणाणाअरेण कहिअं व सोहग्गम् ॥ १ । ७९ ॥
(उत्साहतरलत्वस्नान-प्रसाधितानां क्षणवासरे सपत्नीनाम् ।
आर्यया मज्जनानादरेण कथितमिव सौभाग्यम् ॥)

इस गाथा की तुलना करके इस तरह समालोचना करते हैं—

"उत्सव के अवसर पर जब उसकी दूसरी सपत्नियाँ न्हा-धोकर और सज-धजकर, अपने रूप को निखारकर और सौंदर्य को चमकाकर, अपनी मनोहरता का सिक्का बैठाने के लिये पूरे प्रयत्न से तत्पर थीं, गाथा की नायिका ने स्नान के अनादर से अपने सौभाग्य की (सिर्फ़) सूचना दी।

"पर सपत्नियों पर उसके इस सौभाग्य-गर्व की सूचना का क्या प्रभाव पड़ा, सो किसी को मालूम नहीं हुआ। संभव है, उन्होंने स्नान के अनादर का कारण उसकी शारीरिक अस्वस्थता, आलस्य, फूहड़पन या मान-कोप को समझकर इस पर ध्यान भी न दिया हो। अथवा और उलटी प्रसन्न हुई हों। या नायिका ने इसलिये ही स्नान की उपेक्षा की हो कि उसे इस मुक़ाबिले की परीक्षा में सफलता की आशा ही न हो, इत्यादि अनेक कारण इस स्नानानादर के समझे जा सकते हैं।

" चाहे कुछ भी हो, पर यह स्नान न करने की बात कुछ अच्छी नहीं हुई, ऐसा भी क्या सौभाग्य-गर्व, जो इस दशा-विशेष में अवश्य कर्तव्य-कर्म (स्नान) का भी अनादर करा दे, यह स्पष्ट ही अनौचित्य है। परंतु विहारी के ' सबै मरगजे-मुँह करी वहै मरगजे चीर ' में कुछ और चमत्कार आ गया है। बात वही है, वर्णन एक ही प्रसंग का है, " क्षणवासरे "=' तीज-परब ", "स्नानप्रसाधितानाम्"=" सजे भूषन-बसन सरीर ", " सपत्नीनाम् "=" सौतिन " ये सब एक हैं। भाषा-मात्र का भेद है। पर मरगजे चीर ने दोहे को चमका दिया है। मरगजे चीर ने सचमुच ही कमाल किया है।" इत्यादि।

यहाँ श्रीशर्माजी ने गाथा को दोहे से अत्यंत हीन प्रमाणित किया है; किंतु गाथा दोहे से ज़रा भी हीन नहीं। गाथा में इस बात का स्पष्ट उल्लेख है कि स्नान के अनादर से आर्या ने सपत्नियों से अपने सौभाग्य को कह दिया, स्पष्ट बतला दिया कि तुम चाहे जितना बनो-ठनो, किंतु प्रियतम के प्रेम का सौभाग्य मुझे ही सुलभ है, तुम लोगों को नहीं। इस तरह, डंके की चोट, अपने सौभाग्य को स्पष्ट बतलानेवाली नायिका का सपत्नियों पर क्या प्रभाव पड़ा, सो सब को स्पष्ट मालूम है, चाहे शर्माजी को न मालूम हुआ हो। सपत्नी की सौभाग्य-सूचना का प्रभाव सपत्नियों पर जो कुछ पड़ता है, वह उन पर भी पड़ा होगा। जैसे यदि कोई कहे कि अमुक मनुष्य पर वज्रपात हुआ, किंतु उस पर उसका क्या प्रभाव पड़ा, यह किसी को नहीं मालूम हुआ, तो हम कहेंगे कि जिन लोगों के परोक्ष में उस मनुष्य पर वज्रपात हुआ है, वे यह तो स्पष्ट रूप से नहीं जान सकते कि वह मनुष्य सर्वथा विनष्ट हो गया या उसके प्राण बच गए, किंतु इतना तो उन्हें अवश्य ही मालूम हो जायगा कि वज्रपात होने से वह मनुष्य यदि बच गया होगा, तो भी उसे अत्यंत कष्ट अवश्य हुआ होगा—थोड़ी-बहुत चोट तो ज़रूर ही लगी होगी। और, जिस मनुष्य पर वज्रपात हुआ है, वह मनुष्य प्राणों के बच जाने पर भी यह कभी नहीं समझ सकता कि यह वज्रपात नहीं, पुष्प-वृष्टि हो रही है। यदि गाथा की नायिका की सपत्नियाँ अंधी नहीं हैं, तो उन्हें स्पष्ट ही दिखाई दिया होगा कि स्नानानादर से नायिका अपने सौभाग्य की सूचना दे रही है। स्नानानादर का कारण शारीरिक अस्वास्थ्य, आलस्य या फूहड़पन उन्होंने कभी नहीं समझा होगा। 'कथितमिव सौभाग्यम्'-वाक्य स्पष्ट बतला रहा है कि नायिका में आलस्य, [illegible] या फूहड़पन का समारोपण नहीं

हो सकता । 'कथितमिव सौभाग्यम्'-वाक्य ही शर्माजी के इस मनमाने अर्थ का खंडन करता है। और, 'आर्यया'-शब्द तो शर्माजी की समस्त दोषोद्भावनाओं को समूल ही विनष्ट कर देता है।

शर्माजी गाथा की नायिका में स्नानानादर का अनौचित्य बतलाते हैं; किंतु हमारी समझ में दोहे की नायिका ने भी स्नान नहीं किया है। यदि उसने स्नान किया होता, तो वह मरगजे चीर को कभी न पहनती। हमें यह कहने का साहस नहीं होता कि इस नायिका के पास केवल एक ही वस्त्र है, जिसे यह रति के समय तथा अन्य समय में भी धारण करती है। और, यदि यह बात मान भी ली जाय, तो यह नायिका महा कँगली, अत्यंत निर्लज्ज और मैली साबित होती है। इससे अधिक कँगलापन और क्या होगा कि इस नायिका के पास एक चीर के सिवा दूसरा चीर नहीं है? फिर सर्वथा नंगे होकर स्नान करने से अधिक और निर्लज्जता क्या होगी? स्नानानंतर उसी (रति-मर्दित) वस्त्र को पहनना उसके मैली होने का स्पष्ट प्रमाण है। यदि शर्माजी कहें कि नायिका ने कपड़ा पहने ही स्नान * करके उस कपड़े को, थोड़ा-थोड़ा निचोड़कर, अपने शरीर पर ही सुखा लिया है, अतः यह निर्लज्ज और मैली नहीं है, तो हम इस बात को मान लेंगे। किंतु ऐसा होने से चीर के मरगजेपन में बाधा पहुँच जायगी, और चीर के मरगज़ेपन में बाधा पहुँचने से विहारीलाल के इस कवित्व में भी बाधा पहुँच जाने का बहुत कुछ भय है। यदि शर्माजी कहें कि रति-मर्दित वस्त्र को एहतियात के साथ उतारकर अलग रखने के बाद अन्य वस्त्र को धारण करके नायिका ने स्नान किया है, और स्नानानंतर, अपने सौभाग्य-गर्व को सूचित करने के लिये, उसी रति-मर्दित वस्त्र को फिर धारण कर लिया है, तो इसमें भी स्पष्ट अनौचित्य है; क्योंकि पवित्र होने के लिये स्नान करके उसने उसी अपवित्र (भ्रष्ट) वस्त्र को फिर धारण कर लिया। इस तरह स्नान के बाद फिर ज्यों-की-त्यों भ्रष्ट हो जाने से इसका स्नान करना सर्वथा निरर्थक है। इसके साथ ही इस तरह की स्नान-विधि से इसकी मूर्खता परिलक्षित होती है। कारण, इसने स्नान करके अपने अन्य सब सौभाग्य-चिह्न तो धो डाले, केवल मरगजे चीर से अपना ज़रा-सा सौभाग्य सूचित किया। गाथा की नायिका का स्नानानादर बहुत ही बुद्धिमत्ता का द्योतक है। स्नानानादर द्वारा रति-मर्दित वस्त्र के अलावा अन्य बातों से भी उसका सौभाग्य सूचित है। दोहे की नायिका की सौभाग्य-सूचना के लिये केवल रति-मर्दित वस्त्र ही है; किंतु गाथा की नायिका के पास रति-मर्दित वस्त्र तो है ही, और भी प्रचुर सामग्री है। केवल मरगजे चीर से ही जब सपलियाँ मरगजे-मुँह हो गईं, तो मरगजे चीर तथा सौभाग्य-सूचक अन्य वस्तुओं को देखकर उनका जो हाल हुआ होगा, उसके कहने की आवश्यकता नहीं। शर्माजी को गाथा की नायिका के स्नानानादर में अनौचित्य दिखाई देता है; किंतु दोहे की नायिका में स्नान करने के बाद भी—क्योंकि शर्माजी के मत में दोहे की नायिका ने अवश्य ही स्नान किया है—उसी रति-मर्दित घिनौने वस्त्र के धारण का कुछ भी अनौचित्य नहीं दिखाई देता। दोहे की नायिका में रति-मर्दित वस्त्र का कमाल तो शर्माजी को बहुत अधिक समझ पड़ता है, मगर गाथा की नायिका में स्नानानादर से जो सौभाग्य-सूचक सामग्री प्रचुर परिमाण में प्रदर्शित हो रही है, वह और उसका कमाल कुछ भी मालूम नहीं होता। हमारी समझ में 'मज्जनानादरेण कथितमिव सौभाग्यम्' यह वाक्य अपनी ध्वनि द्वारा उसी बात की स्पष्ट सूचना दे रहा है, जिस बात का उल्लेख दोहे में प्रकट रूप से हुआ है।

ऊपर दिखाए हुए कारणों से यह स्पष्ट है कि गाथा को दोहे से हीन प्रमाणित करके श्रीशर्माजी ने विहारी का पूर्ण पक्षपात किया है।

(२)

अजौं न आए सहज रँग बिरह-दूबरे गात ;
अबही कहा चलाइयत ललन चलन की बात ॥१३०॥

शर्माजी ने विहारीलालजी के इस दोहे के साथ—

'अव्वो दुक्करआरअ पुणो वि तंतिं करेसि गमणस्स ।
अज्ज वि ण होंति सरला वेणीअ तरंगिणो चिउरा ॥३।७३॥
(अव्वो दुष्करकारक पुनरपि चिंतां करोषि गमनस्य ।
अद्यापि न भवंति सरला वेण्यास्तरंगिणश्चिकुराः ॥)

इस गाथा को, तुलना करने के लिये, उद्धृत किया है। गाथा का भावार्थ लिखने के बाद आप लिखते हैं—

"विहारीलाल भी तो एक ही काइयाँ ठहरे। वह कब

---

* दिहात के ग़रीब लोग, जिनके पास एक ही धोती होती है, प्रायः इसी तरह स्नान करते हैं।

चूकनेवाले हैं । पहलू बदलकर मज़मून को साफ़ ले ही तो उड़े ! 'अज्यौं न आए सहज रँग बिरह-दूबरे गात ।'

वाह उस्ताद, क्या कहने हैं ! क्या सफ़ाई खेली है, काया ही पलट दी ! कोई पहचान सकता है ! वहाँ (गाथा में) केवल गुलझट-पड़े केश ही थे, यहाँ 'बिरह-दूबरे गात' हैं । केशों में सरलता आने की अपेक्षा 'दूबरे गात' में सहज रंग का वापस आना कहीं अधिक वांछनीय और महत्त्व-पूर्ण कार्य समझा जा सकता है ।''

यहाँ श्रीशर्माजी ने विहारी की बहुत-कुछ प्रशंसा करने के बाद दोहे को गाथा से उत्कृष्ट सिद्ध किया है । हमारी समझ में गाथा का भाव दोहे से कहीं उत्कृष्ट है । दोहे और गाथा, दोनों में कवि को यह दिखलाना अभीष्ट है कि नायक को परदेश से घर में आए अभी अत्यल्प समय व्यतीत हुआ है, अतः उसे अभी परदेश न जाना चाहिए । इसी बात को सूचित करने के लिये दोहे में 'बिरह-दूबरे गात' और गाथा में 'तरंगिणश्चिकुराः' का उल्लेख है । यदि विचार किया जाय, तो यह साफ़ साबित होता है कि गुलझट-पड़े केशों के सरल होने में जितने अल्प समय की सूचना है, 'बिरह-दूबरे गात' में सहज रंग के आ जाने की बात उतने अल्प समय की सूचना नहीं देती । गुलझट-पड़े केश थोड़े ही समय में सीधे हो सकते हैं; किंतु दुबले शरीर में सहज रंग—पहले की ऐसी पुष्टता—का आ जाना अधिक समय की अपेक्षा करता है । गाथा में 'दुष्कर-कारक' यह वाक्य भी नायक के फिर अति शीघ्र विदेश जाने को सूचित कर रहा है । 'पुनरपि चिंतां करोषि गमनस्य' में 'अबही कहा चलाइयत ललन चलन की बात' से महाविरे का ज़ोर ज़्यादा है ।

शायद शर्माजी कहें कि 'दोहे की नायिका की यह इच्छा है कि विरह से दुबला शरीर बहुत दिन में मोटा-ताज़ा होगा, तब तक नायक के घर में रहने से अधिक समय तक वियोग होने का भय नहीं है । इसलिये उसकी इच्छा के अनुसार ही उसकी सखी, नायक से, नायिका के विरह से दुबले शरीर में ज्यों-के-त्यों रंग आ जाने तक विदेश न जाने की प्रार्थना करती है । यद्यपि वह इस बात को साफ़-साफ़ नहीं कहती, तथापि उसके ऐसा कहने का अभिप्राय यही है ।'

इसके उत्तर में निवेदन है कि अगर दोहे का यही अभिप्राय समझा जाय, ऐसे अलौकिक और अनुपम अर्थ की उद्भावना की जाय, तो गाथा में भी ऐसे ही अर्थ की कल्पना क्या नहीं हो सकती ? इसी प्रकार का अद्भुत अर्थ उससे भी निकल सकता है । देखिए—

गाथा की नायिका की सखी यह अच्छी तरह जानती है कि नायिका के केश सहज कुटिल हैं, वे कभी सीधे हो ही नहीं सकते । यही समझकर वह (नायिका की सखी) नायक से नायिका के बालों का ज़िक्र करके अपना यह भाव प्रदर्शित करती है कि कम-से-कम नायिका के केशों के सरल होने तक तो आप अवश्य ही विदेश न जाइए । सखी समझती है कि इस बात को नायक सहज में ही मान लेगा, और फिर कभी विदेश न जा सकेगा । ऐसे अर्थ से भी गाथा दोहे से अत्यंत उत्कृष्ट है । यहाँ भी शर्माजी का पक्षपात स्पष्ट सिद्ध है ।

और एक बात है । विहारी का यह दोहा, जिसकी यहाँ आलोचना हुई है, विहारी ही के इस दोहे का, जिसे हम नीचे लिखते हैं, प्रबल विरोधी है—

जौ वाके तन की दसा देख्यौ चाहत आप ;
तौ बलि, नैकु बिलोकिए चलि औचक, चुप-चाप ॥३०८॥

प्रिय पाठक ! देखिए, इस ऊपर के दोहे में नायिका का अपने प्यारे नायक में कितना प्रबल अनुराग प्रदर्शित है । नायिका की सखी कहती है कि यदि आप उस वियोगिनी के शरीर की दशा देखना चाहते हैं, तो मैं बलिहारी, ज़रा अचानक और चुप-चाप चलकर देखिए । यदि आपके पहुँचने की उसे ख़बर हो गई, तो उसकी कृशता-दुर्बलता दूर होकर उसे स्वस्थता प्राप्त हो जायगी, और उसकी वियोग-दशा का आपको अनुभव न हो सकेगा ।

अब देखिए, इधर, एक दोहे में, अनुरागाधिक्य का ऐसा वर्णन है कि अपने देखने के लिये नायक के चल पड़ने की भी ख़बर पाकर नायिका की कृशता और दुर्बलता दूर हो जाती है । उधर, दूसरे दोहे में, नायिका का इतना अल्प अनुराग प्रदर्शित है कि नायक के महीनों घर में रहने पर भी नायिका के विरह-दूबरे गात में सहज रंग नहीं आते ।

दोनों में कितना प्रबल विरोध है ! इस तरह एक ही विषय की परस्पर-विरोधिनी रचनाएँ कवि की बहु-दर्शिता और उसके कवित्व के महत्त्व तथा रमणीयता की हत्या करनेवाली होती हैं । अस्तु ।

(३)

बाम बाहु फरकत मिलै जो हरि जीवन-मूरि,
तौ तोही सों भेटिहौं राखि दाहिनी दूरि ॥ १४२ ॥

इस दोहे के साथ तुलना करने के लिये शर्माजी ने निम्न-लिखित गाथा, आर्या और पद्य को उद्धृत किया है--

गाथा

"फुरिए वामच्छि तुए जइ एहिइ सो पिओ ज्ज ता सुइरन् ।
सम्मीलिअ दाहिणअं तुइ अवि एहं पलोइस्सम् ॥ २।३७ ॥
(स्फुरिते वामाक्षि त्वयि यद्येष्यति स प्रियाऽद्य तत्सुचिरम् ।
सम्मील्य दक्षिणं त्वयैवैतं प्रेक्षिष्ये ॥)

आर्या

प्रणमति पश्यति चुंबति संश्लिष्यति पुलकमुकुलितैरंगैः ।
प्रियसंगमाय स्फुरितां वियोगिनी वामबाहुलताम् ॥ ३४७ ॥

पद्यावली का पद्य

येनैव सूचितनवाभ्युदयप्रसंगा मीनाहतिस्फुटिततामरसोपमेन ।
अन्यं निमील्य नयनं मुदितैव राधा वामेन तेन नयनेन ददर्श कृष्णम् ॥

पहले श्रीशर्माजी ने गाथा और पद्यावली के पद्य का भावार्थ लिखकर अपनी आलोचना इस तरह शुरू की है—

"विहारी ने वैसे ही पुरस्कार-प्रदान की घोषणा 'वाम बाहु' के लिये कराई है; क्योंकि यहाँ शुभ सूचना उसी ने दी है। यहाँ भी पुरस्कार बहुत उचित है। जैसा जिसका काम, उसे वैसा ही इनाम। आँख ने प्रिय-दर्शन-प्राप्ति की सूचना दी थी, उसे वैसा ही इनाम देने को कहा गया। वाम बाहु प्रिय-समागम की शुभ सूचना दे रही है, सो इसके लिये इनाम भी वैसा ही बढ़िया तजवीज़ा गया है—'तौ तोही सों भेटिहौं राखि दाहिनी दूरि।'

"कितनी मनोहर रचना है, कितना मधुर परिपाक है! इन शब्दों में जितना जादू भरा है, उतना और कहीं है? और, "जो हरि जीवन-मूरि" ने तो, बस, जान ही डाल दी है, इस एक पद पर ही प्राकृत-गाथा और पद्यावली का पद्य, दोनों एक साथ क़ुर्बान कर देने लायक़ हैं।"

यहाँ श्रीशर्माजी ने गाथा और पद्यावली के पद्य को दोहे से निकृष्ट बतलाया है। हमारी समझ में पद्यावली का पद्य तो दरअसल पद-माधुर्य-विशिष्ट होने पर भी दोहे को नहीं पहुँचता। किंतु गाथा दोहे से हीन नहीं है। गाथा में जो बात बाईं आँख के लिये कही गई है, दोहे में वही बात वाम बाहु के लिये। दोहे में 'हरि जीवन-मूरि' है, और गाथा में 'प्रिय' है।

'हरि जीवन-मूरि' पर शर्माजी को बड़ा नाज़ है। आप इसी एक पद पर गाथा और पद्यावली के पद्य, दोनों को एक साथ क़ुर्बान कर देने के लायक़ कहते हैं। हम भी कहते हैं कि 'हरि जीवन-मूरि' दोहे में बहुत ही मौक़े से आया है; इसने अपने शुभागमन से इस दोहे को अत्यंत चमत्कृत कर दिया है। किंतु गाथा का 'प्रिय' भी कम प्रभावशाली नहीं है। 'प्रिय'-शब्द यद्यपि साधारणतः प्यारे के लिये व्यवहृत होता है, किंतु प्रधानतः 'प्रिय' * पति का ही पर्याय है। 'प्रिय'-शब्द 'प्रीञ्'-धातु से बनता है; जिसका अर्थ तृप्त करना है। जिसके दर्शनादि से हृदय, इंद्रिय और प्राण, सब तृप्त हो जायँ, वही प्रिय है। गाथाकार ने इसीलिये धव, भर्ता, पति प्रभृति शब्दों को छोड़कर यहाँ प्रिय का प्रयोग किया है। हमारी समझ में 'प्रिय' का प्रभाव 'जीवन-मूरि' से कम नहीं है। गाथा में एक बात दोहे से विशेष है। दोहे की नायिका वाम बाहु से यह कहती है कि 'मैं दाहिनी को दूर रखकर तुझसे ही भेट करूँगी', और गाथा की नायिका बाईं आँख से यह कहती है कि 'मैं दाहिनी आँख को मूँदकर तुझसे ही बहुत देर तक देखूँगी।' यहाँ 'सुचिरं प्रेक्षिष्ये' में जो बात है, वह केवल 'भेटिहौं' में नहीं है। प्रिय पाठक, दोहे में गाथा से विशेषता नहीं है, विशेषता है श्रीशर्माजी महाराज के पक्षपात में।

गोवर्धनाचार्य की आर्या के लिये शर्माजी अपनी राय यह ज़ाहिर करते हैं—

"हाँ, इस झमेले में गोवर्धनाचार्य तो रह ही गए। उनकी भी ज़रा सुन लीजिए। वह कुछ और ढंग से इस बात को कहते हैं। उन्होंने इस भाव को "कारक-दीपक" के प्रकाश से चमकाया है, और पेशगी इनाम दिला देने की उदारता दिखलाई है। कहते हैं—'प्रिय-संगम के लिये फड़कती हुई वाम बाहु को वियोगिनी प्रणाम करती है, आदर की दृष्टि से देखती है, चूमती है और हर्ष-पुलकित अंगों से उसे आलिंगन करती है। इस वियोगिनी को अपनी वाम बाहु के फड़कने की सत्यता पर इतना विश्वास है कि प्रिय के आगमन से पूर्व ही—शुभ सूचना की प्राप्ति पर ही—प्रिय-निवेदक बाहु को अनेक प्रकार

---

* धवः प्रियः पतिर्भर्ता । (अमरकोष)

के पुरस्कार देने लगी। आर्याकार गोवर्धनाचार्य ने इतनी विशेषता पैदा करके गाथा के मज़मून को अपनाया है।"

यदि दोहे में इतनी विशेषता होती, तो शर्माजी न-जाने कितनी प्रशंसा कर डालते। किंतु आर्या की इस विशेषता के लिये दबी ज़बान से इतना ही कहते हैं कि 'गोवर्धनाचार्य ने इतनी विशेषता पैदा करके गाथा के मज़मून को अपनाया है।' दोहे में आर्या की बनिस्बत न्यून-विशेषता होने पर भी शर्माजी तन-मन से उस पर रीझ जाते ; किंतु आर्या की इतनी अधिक विशेषता भी आपको पसंद नहीं आई। देखिए न, इस विशेषता के लिये आप क्या कहते हैं—

विहारीलाल ने आर्याकार के इस विशेषता-युक्त भाव की अपने दूसरे दोहे में मानो 'इसलाह' कर दी है, पर्याय से इस बात को प्रकट कर दिया है कि नवीनता ही लानी है, तो फिर इस प्रकार ला सकते हैं।

मृग-नैनी दृग की फरक, उर-उछाह, तन फूल ;
बिनही प्रिय-आगम उमँगि पलटन लगी दुकूल।

"आर्या की वियोगिनी को अपनी वाम बाहु के फरकने की फल-दायकता पर इतनी आस्था थी कि वह प्रिय के आने से पहले ही पुरस्कार देने लगी। और यहाँ दशा ही दूसरी है।

"मृगनयनी प्रिय के आगमन की प्रतीक्षा में तन्मय बनी बैठी है। बाईं आँख का ज़रा इशारा होते ही उसने ध्यान की आँख से देखा कि वह सामने आ ही तो रहे हैं। हृदय की इस उमंग में, संभ्रम की इस हड़बड़ी में, आँख को इनाम देना क्या, देने का वादा करना तक भूल गई। भूल क्या गई, हृदय की बढ़ी हुई उमंग ने उसे इतना अवकाश ही नहीं दिया। वह झटपट प्रिय से मिलने की तैयारी करने लगी। दुकूल बदलने लगी। कितनी तन्मयता है, कितनी उमंग है, कितना उर-उछाह है।"

यहाँ श्रीशर्माजी ने आर्याकार के विशेषता-युक्त भाव की इसलाह विहारीलाल से करवाई है। किंतु, वास्तव में, यह इसलाह विहारीलाल की नहीं, शर्माजी की है। इसीलिये ठीक कैंड़े पर नहीं उतरी। आर्या के आशय पर शर्माजी ने ध्यान ही नहीं दिया। इसीलिये आप आर्या की नायिका से दोहे की नायिका में तन्मयता, उमंग और उर-उछाह अधिक समझते हैं। किंतु, वास्तव में, यह बात नहीं है। आर्या का भाव विहारीलाल के इन दोनों दोहों से बहुत उत्कृष्ट है। पहले दोहे से तो आर्या को शर्माजी भी विशेष समझते हैं। दूसरे दोहे से भी आर्या में बहुत विशेषता है।

दोहे की नायिका, बाईं आँख का ज़रा-सा इशारा पाते ही, ध्यान की आँख से प्रिय को सामने आते देखती है; किंतु आर्या की नायिका वाम बाहु के ज़रा-से इशारे से तन्मय होकर प्रत्यक्ष देखती है कि वह आ ही तो गए। तन्मयता, उमंग और उर-उछाह के कारण प्रिय पति के शुभागमन पर प्रिय के साथ उसे जो कुछ करना उचित था, सो सब वह वाम बाहु के साथ करने लगी।

वह वाम बाहु को प्रणाम करती है, स्नेह-दृष्टि से देखती है, चूमती है और हर्ष-पुलकित अंगों से आलिंगन करती है। परदेश से आए हुए प्रिय को पहले प्रणाम करना, फिर आदर की दृष्टि से देखना, तदनंतर प्रेमाधिक्य-वश चूम लेना, तत्पश्चात् हर्ष-पुलकित अंगों से आलिंगन करना कितना सौहार्द-सूचक, उचित और स्वाभाविक है, इसे सहृदयों के हृदय ही समझ सकते हैं।

मर्मज्ञ पाठक देखें कि बाईं आँख के इशारे से प्रिय को, ध्यान-दृष्टि से, आते हुए देखकर शृंगारादि करने में विशेषता है, या वाम बाहु के इशारे से पति को प्रत्यक्ष आया हुआ समझकर प्रणामादि करने में ? दोहे की नायिका में तल्लीनता है सही, पर आर्या की नायिका की इतनी कहाँ ? दोहे की नायिका बहुत कुछ तल्लीन होकर भी इतनी तल्लीन नहीं हुई है कि उसे अपने शरीर की भी सुध न रहे। किंतु आर्या की नायिका इतनी तल्लीन हो गई है कि प्रिय के आगमन की भावना से उसको वाम बाहु ही प्राण-प्यारे के रूप में दिखाई पड़ रही है। ऐसी तल्लीनता भला और कहीं दिखाई देती है ? इस तल्लीनता के सामने दोहे की नायिका की तल्लीनता की क्या बिसात है ?

श्रीशर्माजी आर्या की इतनी उत्कृष्टता समझकर भी नहीं समझे, देखकर भी नहीं देख सके, इससे अधिक और पक्षपात क्या होगा !

(४)

छ्वै छिगुनी पहुँचो गिलत अति दीनता दिखाय ;
बलि बामन को ब्यौंत सुनि को बलि तुम्हैं पत्याय ॥२२५॥

विहारीलालजी के इस दोहे की श्रीशर्माजी ने—

निहितार्धलोचनायास्त्वं तस्याहरसि हृदयपर्यंतम् ।
न सुभग समुचितमिदमंगुलिदाने भुजं गिलसि ॥३३९॥

इस गोवर्धनाचार्य की आर्या से तुलना की है। आर्या का भावार्थ लिखकर आप इस तरह आलोचना करते हैं—

"यही भाव दोहे में भी है; पर बहुत जँचा-तुला और इससे कहीं बढ़ा-चढ़ा। 'अंगुलिदाने भुजं गिलसि' और 'छ्वै छिगुनी पहुँचो गिलत' बराबर की महाविरेबंदी है। पर दोहे में महाविरा खूब चुस्त बँधा है।"

हमें वारंवार पढ़ने पर भी दोहे का भाव आर्या से जँचा-तुला और बढ़ा-चढ़ा नहीं समझ पड़ता। हमें तो दोहे का भाव आर्या से बहुत घटिया जँचता है। आर्या में जिस खूबसूरती से 'अंगुलिदाने भुजं गिलसि' का रूप दिखलाया गया है, दोहे में उसका आभास भी नहीं। 'अंगुलिदाने भुजं गिलसि' से 'छ्वै छिगुनी पहुँचो गिलत' में महाविरे की चुस्ती हमें नहीं समझ पड़ती। अस्तु।

दोहे को उत्कृष्ट सिद्ध करने के लिये शर्माजी आर्या की अपकृष्टता को इस तरह प्रदर्शित करते हैं—

"आर्या में सिर्फ़ यही 'अंगुलिदाने भुजं गिलसि'-पद चमत्कृत है, और ऐसा मालूम होता है, इसे बाँधने को ही ऊपर की चहारदीवारी कवि ने खींची है।"

मालूम क्या होता है, इसीलिये तो आचार्य ने यह चहारदीवारी खींची ही है। इस चहारदीवारी को खींचकर गोवर्धनाचार्यजी ने अपने अपूर्व एवं अनुपम 'भाव-धन' को इतना सुरक्षित बना दिया है कि विहारीलाल के सदृश चतुर कविराज भी उसका अपहरण नहीं कर सके।

'निहितार्धलोचनायास्त्वं तस्याहरसि हृदयपर्यंतम्' की समता के लिये 'अंगुलिदाने भुजं गिलसि' बहुत ही उपयुक्त, उत्तम और हृदयहारी कथन है। विहारीलालजी 'छ्वै छिगुनी पहुँचो गिलत' की तुलना के लिये कुछ भी नहीं लिख सके। यदि इतनी ही बात है, नायक सचमुच ही उँगली पकड़कर पहुँचा पकड़ रहा है, और इतनी ही बात के लिये विहारीलालजी ने यह दोहा बनाया है, तो इसमें ज़रा भी चमत्कार नहीं, कुछ भी कवित्व नहीं।

इसके आगे शर्माजी फिर कहते हैं—

"वामनजी की कृपा से दोहा आकाश में जा पहुँचा है, और 'आर्या' बेचारी 'बलि' बनकर पाताल में पहुँच गई है। दोहे में 'अति दीनता दिखाय'-पद भी बड़ा ही चमत्कारक है। इसने वामनजी की करतूत को और अच्छी तरह चमका दिया है। आर्या के नायक-नायिका कोई साधारण व्यक्ति हैं, इसलिये वहाँ 'अंगुलिदाने भुजं गिलसि' में कोई असाधारण चमत्कार नहीं आने पाया। पर विहारी ने साक्षात् वामनावतार श्रीकृष्ण के संबंध में 'बलि-बामन को ब्यौंत सुनि को बलि तुम्हें पत्याय' कहकर कितना अनुरूप दृष्टांत दिया है, कितने पते की बात कही है! इसमें कितना असाधारण चमत्कार आ गया है!"

प्रिय पाठक, देखिए और ग़ौर करके देखिए कि यहाँ शर्माजी के पक्षपात-वामन ने दोहे को किस तरह आकाश में पहुँचा दिया है, और आर्या को पाताल में ढकेला है। क्या यह भी कोई आलोचना है? इसमें भी कोई युक्ति है? इस तरह तो सब कोई सब कुछ कह सकता है।

हम दोहे से आर्या की उत्कृष्टता पहले ही दिखला चुके हैं। उस उत्कृष्टता के अलावा आर्या में और भी कई विशेषताएँ हैं। 'निहितार्धलोचनायास्त्वं तस्याहरसि हृदयपर्यंतम्' कहकर नायिका की सखी नायक पर नायिका की आसक्ति बतलाती और 'न सुभग समुचितमीदृशमंगुलिदाने भुजं गिलसि' कहकर अपना पूर्ण चातुर्य, चमत्कार के साथ, व्यक्त करती है। उसका आशय यह है कि नायिका आपको देखते ही अपना हृदय आपको सौंप चुकी है, अतः अब आपको भी उस पर अवश्य ही कृपा करनी चाहिए। आधी नज़र से देखते ही हृदय का अपहरण हो जाना नायक के सौंदर्यातिशयत्व को स्पष्ट सूचित करता है। इतना अधिक सौंदर्य, जिस पर ज़रा-सी निगाह पड़ते ही मन बेक़ाबू हो जाय, सिवा वृंदावन-विहारी, मोर-मुकुट-धारी आनंद-कंद, नंद-नंदन के अन्यत्र कहीं नहीं हो सकता। अतः स्पष्ट है कि आर्या में भी श्रीकृष्ण-रूपी नायक का वर्णन है। इसलिये शर्माजी का यह कहना कि 'आर्या के नायक-नायिका कोई साधारण व्यक्ति हैं', सर्वथा अयुक्त है।

शर्माजी विहारी का अनुचित पक्षपात करते हुए फिर लिखते हैं—

"यदि आज कहीं जयदेव महाराज मिलते, तो उन्हें यह कविता सुनाकर पूछते कि कहिए, कैसी रही! आप अपने इस दावे को अब वापस लीजिए कि—

शृंगारोत्तरसत्प्रमेयरचनैराचार्यगोवर्धन-स्पर्धी कोपि न विश्रुतः ।

और, अधिक नहीं, तो इतना ही कह दीजिए—

शृंगारोत्तरसत्प्रमेयरचनैराचार्यगोवर्धन-
स्पर्धी कोपि विराजतेऽत्र भुवने हिंद्यां विहारी कविः ।

प्रिय पाठकगण, हमारी समझ में जयदेव महाराज का दावा बहुत ही ठीक है । शृंगारोत्तर-सत्प्रमेय रचनाओं में श्रीगोवर्धनाचार्य की बराबरी, विहारी क्या, कोई कवि नहीं कर सका, और न कर सकता है । अतः इस बात के लिये हम तो यही कहते हैं कि—

शृंगारोत्तरसत्प्रमेयरचनैराचार्यगोवर्धन-
स्पर्धी कोपि न विश्रुतस्त्रिभुवने कासौ विहारी कविः ।

(५)

श्रीशर्माजी ने—

स्वारथ-सुकृत न, श्रम वृथा, देख बिहंग बिचार ;
बाज, पराए पानि पर तू पंछीहि न मार ॥ ६३६ ॥

इस दोहे से तुलना करने के लिये—

आयासः परहिंसा वैतंसिकसारमेय ! तव सारः ।
त्वामपसार्य विभाज्यः कुरंग एषोऽधुनैवान्यैः ॥ १०० ॥

इस आर्या को उद्धृत किया है । आर्या का भावार्थ बतलाकर आप इस तरह अपनी आलोचना करते हैं—

"अब इसके मुक़ाबले में अपने विहारी का भी रंग देखिए । यहाँ भी यह साफ़ मज़मून ले उड़े हैं ।

"कुत्ता आख़िर पर-मुखापेक्षी कुत्ता ही है । टुकड़े के लालच से उससे चाहे जो कुछ करा लो—शिकार पकड़वा लो, या भेड़ों की रखवाली करा लो—वह स्वामी का द्वार छोड़कर कहाँ जाय । इसलिये उसका यह अनर्थ कार्य इतना आश्चर्य-जनक नहीं, प्रत्युत क्षंतव्य हो सकता है ।

"परंतु व्योमैकांतविहारी, स्वच्छंदचारी 'बाज़' विहंग का पराए 'पाणि' (हाथ) पर बैठकर 'पंछी' मारना अत्यंत अविवेक-पूर्ण, आश्चर्य-जनक और नितांत निंदनीय कर्म है । इसलिये बाज़ को इससे ज़रूर ही बाज़ रहना चाहिए ।

"सारमेय-शब्द के समान यहाँ भी "विहंग" पद साभिप्राय है (विहायसा गच्छतीति विहंगः)—जिसकी गति अनंत आकाश में है, जो सब जगह घूम-फिरकर पेट भर सकता है, वह इस प्रकार दूसरे का वशवर्ती बनकर अनर्थ करे, इससे बुरी बात और क्या होगी ।

"आर्या की अन्योक्ति का लक्ष्य कुलीन सेवक है, तो दोहे की अन्योक्ति का लक्ष्य कोई सर्वत्र-गति, पर अनर्थकारी गुणवान् मुसाहब है । फिर उपदेश भी कितने मधुर शब्दों में, कितने अच्छे ढंग से, दिया है—

स्वारथ-सुकृत न, श्रम वृथा, देख बिहंग बिचार ।

"सो अब सहृदय विद्वान् विचार देखें, दोहा आर्या से बढ़ गया है या नहीं ? कुत्ते और बाज़ में भूमि और आकाश का अंतर है कि नहीं ।'

शर्माजी महाराज येन-केन प्रकारेण विहारीलालजी को श्रेष्ठ सिद्ध करने में सदा कटि-बद्ध रहते हैं । यहाँ जब और कोई बात विहारी के दोहे में आर्या से उत्कृष्ट न मिली, तो आप कुत्ते की हीनता और बाज़ की उत्कृष्टता दिखाकर विहारी की कविता को श्रेष्ठ बतलाने लगे ।

हमारी समझ में इस तरह की कोई उत्कृष्टता या अपकृष्टता कविता को उत्कृष्ट या अपकृष्ट बनाने में समर्थ नहीं होती । कविता में व्यंग्य, ध्वनि आदि की विशेषता ही वास्तविक विशेषता है । इस विशेषता में जो श्रेष्ठ ठहरे, वही श्रेष्ठ है । यहाँ विहारीलालजी इस विशेषता में गोवर्धनाचार्यजी से अणु-मात्र भी आधिक्य प्रदर्शित नहीं कर सके हैं ।

जैसे कुत्ता पर-मुखापेक्षी होता है, वैसे ही पालतू बाज़ भी पर-मुखापेक्षी होता है । मांस के टुकड़े के लालच से उससे भी चाहे जिस तरह का शिकार करवा लो ; चाहे चिड़ियों को मरवा लो, चाहे ख़रगोश पकड़वा लो । दुवाल (एक तरह की चमड़े की रस्सी, जो शिकार के समय में भी शिकारी चिड़ियों के लगी रहती है) में बँधा और मज़बूत रस्सी से जकड़ा हुआ बेचारा बाज़ स्वामी का आश्रय छोड़कर कहाँ जाय । इसलिये इस (बाज़) का भी यह अनर्थ कार्य इतना आश्चर्य-जनक नहीं । इसमें बाज़ और कुत्ता, दोनों समान हैं ।

गोवर्धनाचार्य की आर्या के भाव का स्पष्ट अपहरण करके कुत्ते के स्थान में बाज़ के कथन-मात्र से विहारीलाल गोवर्धनाचार्य से श्रेष्ठ सिद्ध नहीं हो सकते । आर्या में एक बात दोहे से अत्यंत उत्कृष्ट है । सब कुछ अनुकरण करने पर भी विहारीलालजी इस बात को नहीं दिखा सके ।

आर्याकार कुत्ते को उसके पाप-कार्य से निवृत्त करते हुए स्पष्ट बतलाते हैं कि शिकार में परिश्रम और पर-हिंसा ही तेरे हिस्से में इसलिये है कि इस हरिण को, जिसे तू मार रहा है, अभी तुझको दूर भगाकर और लोग बाँट लेंगे। तू व्यर्थ ही क्यों पापभागी बनता है? ऐसा काम तुझे न करना चाहिए।

बिहारीलाल बाज़ से 'स्वारथ-सुकृत न, श्रम वृथा' कहकर भी यह नहीं बतला सके कि इस काम में क्यों स्वारथ और सुकृत नहीं है, और परिश्रम किसलिये व्यर्थ है। इस बात के लिये आपने बाज़ को विचार करने की सलाह-मात्र दी है। बाज़ यदि इतना विचारवान् होता, तो उसकी ऐसे पाप-कार्य में प्रवृत्ति ही क्यों होती? यद्यपि कभी-कभी बड़े-बड़े विचारशील भी अत्यंत अनुचित कार्य करने को उतारू हो जाते हैं, किंतु उन्हें भी उस कार्य से निवृत्त करने के लिये उस (कार्य) के दोषों को स्पष्ट बतला देने की रीति है। अनुचित कार्य करने को उद्यत होने के पहले ही विचार-शक्ति का लोप हो जाता है। जब तक उसको स्पष्ट नहीं बतलाया जाता, तब तक उसकी विचार-शक्ति को सहायता नहीं मिलती। अतः किसी को अनर्थ कार्य से निवृत्त करने के पहले उसके दोषों का स्पष्ट दिग्दर्शन बहुत ही समुचित है।

'इस काम में तेरा कुछ स्वार्थ, सुकृत नहीं है; श्रम भी व्यर्थ है।' सिर्फ़ इतना ही बतलाने से हिंसाशील, अविवेकी, मूर्ख बाज़ इस निंदनीय काम से बाज़ नहीं आ सकता। जैसे कोई किसी मार्ग से कहीं जा रहा है, और उस मार्ग से जाने में उसे ख़ंदक या कुएँ में गिरकर मर जाने का भय है, तो यदि उससे कहा जाय कि उधर न जाना, वहाँ ख़तरा है, तो इतने ही से वह चाहे न लौटे, किंतु यदि उससे यह साफ़ बतला दिया जाय कि 'इस मार्ग से जाने से तुम ख़ंदक में गिरकर मर जाओगे', तो महामूर्ख होने पर भी वह इस बात को अवश्य मान लेगा, उधर नहीं जायगा।

यही बात यहाँ दोहे और आर्या में है। दोहे में सिर्फ़ यही कहा गया है कि यह काम अच्छा नहीं है। क्यों अच्छा नहीं है, यह नहीं बतलाया गया। किंतु आर्या में 'यह काम इसलिये अच्छा नहीं है', यह स्पष्ट बतलाकर उस काम के करने से रोका गया है। किसी काम के करने में केवल विचार करने के लिये कह देने में और उसके गुण-दोषों की स्पष्ट विवेचना करके हानि-लाभ को पूर्ण रीति से बतला देने में बहुत बड़ा अंतर है।

अब सहृदय मर्मज्ञ पाठक देखें कि आर्या का उपदेश कितना उत्कृष्ट है, और यह भी देखें कि यहाँ शर्माजी ने पूर्ण पक्षपात किया है या नहीं—बिहारी के उपदेश और आचार्य के उपदेश में आकाश-पाताल का अंतर है या नहीं?

(६)

नेक उतै उठि बैठिए, कहा रहे गहि गेहु;
छुटी जात नहँ दी छनक महँदी सूखन देहु ॥३५७॥
सुभग व्यजनविचालनशिथिलभुजाभूदियं वयस्यापि।
उद्वर्तनं न सख्याः समाप्यते किंचिदपगच्छ ॥ ६६० ॥

शर्माजी ने ऊपर लिखे हुए दोहे और आर्या की तुलना की है। आर्या और दोहे का भावार्थ बतलाकर आप इस तरह आलोचना करते हैं—

"किंचिदपगच्छ और 'नेक उतै उठि बैठिए' का मतलब एक है; पर दोहे में महाविरे का ज़ोर ज़्यादा है। इसके अतिरिक्त आर्या का भाव कुछ उद्वेग-जनक है। सखी-समूह में एक तो यह कह रही है, एक पंखा झल रही है, दो-एक उद्वर्तन में लगी होंगी। फिर उद्वर्तन के समय में भी नायक का वहीं ढई मारकर डटे रहना अत्यंत अनुचित और परम स्त्रैणता का द्योतक है। इस पर भी 'किंचिदपगच्छ' ही कहा जा रहा है। इस गुस्ताख़ी पर मकान छोड़कर एकदम बाहर जाने का स्ट्रिक्ट ऑर्डर नहीं दिया जाता!

"इधर दोहे में 'महँदी' ने 'उद्वर्तन' का अनौचित्य दूर कर दिया। दोनों में बहुत अंतर हो गया। इस प्रसंग में सखी-समाज की सत्ता का पता भी नहीं चलता। 'नेक उतै उठि बैठिए, कहा रहे गहि गेहु', इस उक्ति में कितना माधुर्य है। बिब्बोक-हाव-युक्त प्रेम की मधुर भर्त्सना का कैसा सजीव चित्र है!"

शर्माजी की राय में आर्या का भाव कुछ उद्वेग-जनक है। सखी-समाज में, उद्वर्तन के समय में भी, नायक का वहीं बैठना आपको पसंद नहीं। नायक की इस बेजा हरकत से आप उसके सिर पर परम स्त्रैणता का दोष मढ़ते हैं। इतना ही नहीं, ऐसा काम करने के कारण आप नायक को गुस्ताख़ भी समझते हैं, और इसके लिये देश-निर्वासन-सदृश मकान से एकदम बाहर जाने का उग्र दंड दिलाना चाहते हैं।

हमने अपनी अल्प मति के अनुसार बहुत विचार किया ; किंतु हमें आर्या में कोई बात उद्वेग जनक नहीं दिखाई दी । यदि सखी-समाज में नायिका के पास नायक की उपस्थिति से ही उद्वेग की उत्पत्ति है, तो नायक-नायिकाओं के चरित्र में यह उद्वेग प्रायः सर्वत्र ही उपस्थित होगा ; क्योंकि नायक-नायिकाओं की एकत्र स्थिति के समय में अनेक सखियों का उपस्थित होना प्रायः सभी साहित्य-ग्रंथों में स्पष्ट वर्णित है । स्वयं विहारीलाल ने सखियों के सामने नायक के नायिका के पास बैठने का ही नहीं, रति की बातें तक करने का उल्लेख किया है । 'पति रति की बतियाँ कहीं, सखी लखी मुसकाय' इत्यादि ।

और, नायिका के उद्वर्तन के समय में भी नायक के वहीं बैठने में स्त्रैणता या गुस्ताख़ी कुछ भी नहीं है । उद्वर्तन के समय में नायक के नायिका के पास बैठने में जो रहस्य है, वह सहृदय-हृदयैक-संवेद्य है । साधारण-जन इसका अनुभव नहीं कर सकते ।

अंतरंग सखियाँ नायक-नायिकाओं के सब भेदों की जाननेवाली होती हैं । उनके सामने विशेष रति-कार्य को छोड़कर नायक और नायिका सभी कुछ कहते-सुनते और करते हैं । अतः नायक पर स्त्रैणता और गुस्ताख़ी का इल्ज़ाम नहीं लग सकता । यदि ऐसी दशा में नायक के ऊपर इस तरह के दूषण लगाए जायँगे, तो सभी स्वाधीन-भर्तृकाओं के नायक गुस्ताख़ और स्त्रैण सिद्ध होंगे ।

' नेक उतै उठि बैठिए, कहा रहे गहि गेहु ', इसमें हमें माधुर्य का आभास भी नहीं देख पड़ता । विब्बोक-हाव चाहे किसी अंश में मान भी लिया जाय, किंतु प्रेम की मधुर भर्त्सना नहीं मानी जा सकती । हमारी समझ में तो इस उक्ति में प्रेम का सर्वथा अभाव है ।

' किंचिदपगच्छ ' में जितनी सभ्यता, सुशीलता और नम्रता है, ' नेक उतै उठि बैठिए, कहा रहे गहि गेहु ' में उतनी ही असभ्यता, दुश्शीलता और उद्दंडता है । नायिका के प्राण-प्रिय नायक को उसकी अंतरंग (नायिका का हार्दिक हाल जाननेवाली) सखियाँ एकदम बाहर जाने को कैसे कह सकती हैं ?

आर्या में सात्त्विक-भावाविर्भाव का निरूपण बहुत ही उत्कृष्ट है । ज़ोर-ज़ोर और जल्दी-जल्दी पंखा झलने पर भी न सूखना सात्त्विक प्रस्वेद की अधिकता का स्पष्ट द्योतक है, और इससे नायिका का अनुरागाधिक्य भी स्प परिलक्षित है । दोहे में नाखूनों की महँदी छुड़ानेवाल अत्यल्प सात्त्विक पसीना नायिका के अल्पानुराग की स्प सूचना दे रहा है । इसीलिये तो वह नायक से उद्दंडत और अवज्ञा-सूचक शब्दों में ' नेक उतै उठि बैठिए कहा रहे गहि गेहु ' कह रही है ।

प्रिय पाठकगण, अब आप बखूबी समझ गए होंगे आर्या के भाव में उद्वेग-जनकत्व या अनौचित्य कुछ भ नहीं है । आर्या का भाव दोहे से उत्कृष्ट है । इसक उत्कृष्टता को अपकृष्टता का रूप देने से शर्माजी क पक्षपात प्रत्यक्ष प्रदर्शित हो रहा है ।

(७)

मोर-चंद्रिका स्याम-सिर चढ़ि कत करति गुमान ?
लखबी पायनि पर लुठति सुनियत राधा मान ॥६२८॥

इस दोहे से तुलना करने के लिये श्रीशर्माजी ने—

मधुमथनमौलिमाले सखि तुलयसि तुलसि किं मुधा राधाम्
यत्तव पदमदसीयं सुरभयितुं सौरभोद्भेदः ॥ ४३१ ॥
शंकरशिरसि निवेशितपदेति मा गर्वमुद्वहेंदुकले !
फलमेतस्य भविष्यति चंडीचरणाब्जरेणुमृजा ॥ ५७८

ये दोनों आर्याएँ उद्धृत की हैं । दोनों आर्याओं का भावा लिखकर आपने निम्न-लिखित आलोचना लिखी है—

"विहारीलाल ने इन्हीं दोनों आर्याओं की छाया प अपने दोहे की रचना की है । गोप-वेश विष्णु (श्रीकृष्ण) संबंध में "मोर-चंद्रिका" ही कुछ सुहावनी लगती है राधा कृष्ण के समय तुलसी की पुरानी कथा में इत स्वारस्य और औचित्य नहीं है, जितना इस मोर-चंद्रि में चमत्कार है । इसके प्रताप से विहारीलाल अपहर के अपराध से साफ़ बच गए । बात ही कुछ और हो ग नक़्शा ही बदल गया ।

"आर्याएँ बेचारी सप्तशती की गुफा से बाहर न निक और विहारी का यह दोहा सब जगह लोगों की ज़बा पर चढ़ा चक्कर लगा रहा है ! यशः पुण्यैरवाप्यते ।"

शर्माजी को श्रीकृष्णजी के संबंध में तुलसी की कथ सरस और उचित नहीं समझ पड़ती । यद्यपि आर्या तुलसी की पुरानी कथा का कुछ भी हाल नहीं कहा गया तथापि तुलसी के 'मधुमथनमौलिमाले' इस संबोधन कथन-मात्र से तुलसी की पुरानी कथा पाठकों को सुना दे श्रीशर्माजी के सदृश पंडित-प्रवर का ही काम है—

अन्ये त्वंशकला पुंसः कृष्णस्तु भगवान् स्वयम् ।

× × ×

××× दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः ।

× × ×

वनजौ वनजौ खर्वस्त्रिरामः सकृपोऽकृपः ।
अवतारा दशैवैते कृष्णस्तु भगवान् स्वयम् ।

इत्यादि शतशः वाक्य स्पष्ट विघोषित कर रहे हैं कि श्रीकृष्णचंद्रजी स्वयं भगवान् विष्णु हैं। अतः श्रीकृष्णचंद्र के संबंध में तुलसी की पुरानी क़था में नितांत स्वारस्य और अत्यंत औचित्य है। और, इसी औचित्य के कारण श्रीकृष्ण-भगवान् के संबंध में तुलसी का कथन अनेक स्थलों पर स्पष्ट किया गया है। देखिए—

कच्चित् तुलसि कल्याणि गोविंदचरणप्रिये ।
सहत्वालिकुलैर्बिभ्रद्दृष्टस्तेऽतिप्रियोऽच्युतः ॥ ७ ॥

(श्रीमद्भागवत, १० स्कंध पूर्वार्ध, ३० अ०)

बाहुं प्रियांस उपधाय गृहीतपद्मो
रामानुजस्तुलसिकालिकुलैर्मदांधैः ॥

(श्रीमद्भागवत, १० स्कंध पू०, ३० अ०)

दर्शनीयतिलको वनमालादिव्यगंधतुलसीमधुमत्तैः ।

× × ×

मालया दयितगंधतुलस्याः ।

(श्रीमद्भा०, १० स्कं० पू०, ३५ अ०)

इत्यादि प्रमाण-वाक्य स्पष्ट बतला रहे हैं कि श्रीकृष्ण के संबंध में तुलसी की कथा में अस्वारस्य और अनौचित्य समझने में ही अस्वारस्य और अनौचित्य है।

'मोर-चंद्रिका' में सब कुछ चमत्कार होने पर भी वह चमत्कार नहीं है, जो 'तुलसी' में है। तुलसी में राधा के सपत्नीत्व का आरोप, और 'मधुमथनमौलि-माला' होने के कारण गर्व की संभावना, दोनों ही अत्यंत युक्ति-संगत हैं। मोर-चंद्रिका में यह बात इस उत्तमता से नहीं सन्निवेशित हो सकती। इसी बात के लिये सुरति मिश्र ने निम्न-लिखित प्रश्नोत्तर किया है—

[प्रश्न]

गर्व सु क्यों करि जानिए कहौ चंद्रिका माहिं ?

[उत्तर]

यही गर्व निज उच्चता मानति मो-सम नाहिं ।

इस प्रश्नोत्तर से यह प्रमाणित है कि 'मोर-चंद्रिका' को त्रिभुवन-वंदनीय श्रीकृष्णचंद्रजी के सिर पर बैठने का कारण अपनी उच्चता का ही गर्व है; किंतु तुलसी को श्रीराधाजी की सपत्नी होने के कारण श्रीकृष्णजी के सिर पर बैठने का अतुलनीय गर्व है। मोर-चंद्रिका के गर्व में उतनी सरसता और औचित्य नहीं है। मोर-चंद्रिका के गर्व और तुलसी के गर्व में बहुत बड़ा अंतर है।

शर्माजी का यह कथन नितांत हास्यास्पद है कि 'आर्याएँ सप्तशती की गुफा से बाहर नहीं निकलीं।' विहारीलालजी के दोहे के समान आर्याएँ भी प्रचुर पंडितों की वाणी का विभूषण बन रही हैं। हमारी समझ में आर्याएँ दोहे से बहुत उत्कृष्ट हैं; विशेषकर प्रथम आर्या साहित्य-संसार में अपना सानी नहीं रखती। इसकी पद-पद्धति, अनुप्रास की अधिकता, भाव-गांभीर्य और लोकोत्तर चमत्कार-पूर्ण हृदयहारी कथन इतना उत्तम है कि इसकी प्रत्येक उत्तमता पर ऐसे सैकड़ों दोहे निछावर कर देने लायक़ हैं।

शर्माजी महाराज का यह क़ायदा है कि दोहे की साधारण बात को भी बड़े आडंबर के साथ बहुत उत्कृष्ट बतलाने लगते हैं; किंतु दोहे के साथ तुलना की हुई दोहे से सौगुनी उत्कृष्ट कविता को भी उत्कृष्ट बतलाने में मूक हो जाते हैं। आर्याओं में दोहे से एक बात अत्यंत उत्कृष्ट है; जिसके मानने में किसी को आना-कानी नहीं हो सकती। दोहे में मान करने का खुलासा कथन होने से काव्योत्कर्षता की कमी है। किंतु आर्याओं में यह बात ध्वनि द्वारा प्रदर्शित होने से काव्योत्कृष्टता चरम सीमा को पहुँच गई है। इन आर्याओं के साथ इस दोहे की तुलना से, तुलना ही नहीं, तुलना के बाद दोहे को उत्कृष्ट सिद्ध करने से, शर्माजी का पक्षपात स्पष्ट सिद्ध है।

(असमाप्त)

श्रीलक्ष्मणसिंह क्षत्रिय

तिल

मुख सुखमा-सागर अगम, नाविक नयन नवीन;
बूड़त बार बचाव बिधि, तिल सुदीप रचि दीन।
तिल भिल्लक बालक बसत, मुख मिष्ठान दुकान;
मालिक ही सों प्रेम करि, करिय मधुर रस-पान।
तिल-युत युवती-मुख लहत, सुखमा सहस ससंक;
अंक-बिंदु बाढ़ छबि बढ़ै, इत-उत होत कलंक।

श्रीरामाज्ञा द्विवेदी "समीर"

जनमेजय या नाग-यज्ञ

नाटक

(गत संख्या से आगे)

चौथा दृश्य

(स्थान—महल का बाहरी भाग)

(सरमा)

सरमा—पति-सुख-वंचिता हूँ। पुत्र अपमानित होकर रूठकर चला गया है। जाति के लोगों का निरादर और कुटुंबियों का तिरस्कार सहकर पेट पालने के लिये अधम दासत्व तक तो दुर्दैव करा रहा है। तब भी कौन कह रहा है कि "मैं तुम्हारे साथ हूँ।" जब किसी की सहानुभूति नहीं, जब किसी से सहायता की आशा नहीं, तब भी विश्वास ! अंधहृदय ! तुझे क्या हो गया है ? क्या करने के लिये मैं इस राज-कुल में आई हूँ, यह भी मैं नहीं जानती। होगा, मेरा कोई काम होगा। मैं उस अदृष्ट शक्ति का यंत्र हूँ ; वह, जो मेरे साथ है, कोई काम मुझसे कराना चाहता है।

(प्रमदा का प्रवेश)

प्रमदा—कलिका ! तू यहाँ क्या कर रही है ? अभी, क्या पत्नी-शाला में नहीं गई ? महारानी तुझे खोज रही होंगी।

कलिका (सरमा)—प्रमदा ! आज इस समय तो तू ही काम चला दे। मैं रात को रहूँगी। आज अश्व-पूजन होगा। रात-भर जागना होगा। नृत्य-गीत देखूँ-सुनूँगी। मेरी प्यारी बहन, आज मेरा जी बेचैन है।

प्रमदा—अरी वाह ! मैं क्यों तेरा काम करने लगी।

कलिका—मैं तेरे पैरों पड़ती हूँ। रानी ! इस समय तो मैं किसी काम की नहीं हूँ।

प्रमदा—क्या तूने कुछ माध्वी पी ली है ? कल तो अच्छी भली थी।

कलिका—नहीं बहन, मैं गौड़ी या माध्वी कुछ नहीं पीती। अच्छा, तू न करेगी, तो मैं ही आती हूँ।

(रोनी सूरत बनाती है)

प्रमदा—नहीं, मैं तो हँसी करती थी। जा, जब तेरा जी चाहे, आना। मैं जाती हूँ। (जाती है)

(सरमा गाती है)

कहा था 'हम हैं तेरे साथ', कभी कानों में तुमने नाथ।
कूद पड़े भव-कूप में, यही रहा विश्वास ;
आज अकेलापन मुझे करता बड़ा निरास।
पकड़ लो आकर मेरा हाथ, कहा था 'हम हैं तेरे साथ।'

(जाती है)

(इधर-उधर देखता हुआ काश्यप आता है)

काश्यप—संध्या हो चली है। आकाश ने धूसर अंधकार का कंबल तान दिया है। यह गोधूलि आँखों में धूल झोंककर काम करने का अभय-दान दे रही है। आंगिरस काश्यप की प्रतिहिंसा का फल, उसे अपमानित करके पुरोहिती छीनकर शौनक को आचार्य बनाने की मूर्खता का दंड, आज मिलेगा। ब्राह्मण ! आज यह शक्ति दिखला दे कि उसे 'शापादपि शरादपि', दोनों प्रकार दंड देने का अधिकार है। ओह, ऐसी पुष्कल दक्षिणा ! ऐसा महत्त्व का पद ! मुझसे सब छीन लिया गया। रोवेगा, जनमेजय, तू आठ-आठ आँसू रोवेगा। तेरे हृदय को क्षत-विक्षत करके, तेरी आत्मा को ठोकर लगाकर, मैं दिखला दूँगा कि ब्राह्मण के अपमान का क्या फल है !—अभी नहीं आया ?

(तक्षक का छिपते हुए प्रवेश)

तक्षक—कौन है ?

काश्यप—आंगिरस। तुम कौन ?

तक्षक—नाग।

काश्यप—प्रस्तुत होकर आए हो ?

तक्षक—तुम अपनी कहो।

काश्यप—मैंने सब ठीक कर दिया है। अश्व-पूजन में जानेवाले सब ब्राह्मण हमारे क्रीत हैं। वहाँ थोड़ी स्त्रियाँ ही रहेंगी। उनसे तो तुम नहीं डरते ?

तक्षक—मेरे २५ ही साथी आ सके हैं।

काश्यप—इतने से काम हो जायगा। यज्ञ का अश्व तुम ले भागना, और यदि हो सके, तो महिषी को भी—

तक्षक—(चौंककर) क्यों, उसका क्या काम है ?

काश्यप—बताऊँगा ! इस समय जाओ, सावधानी से काम करना। रक्षक थोड़े-से रहेंगे ; वे भी सोम-पान करके झूमते मिलेंगे। तुम्हें कोई डर नहीं। जाओ, अब समय हो गया है। चूकने से फिर स्थान न मिलेगा। घात में लगे जाओ।

तक्षक—अच्छा, जाता हूँ । किंतु काश्यप, अब की अंतिम दाँव है । यदि न हो सका, तो फिर तुम्हारी कोई बात नहीं मानूँगा ।

काश्यप – जाओ । विलंब न करो । (तक्षक जाता है) मरो-कटो, मुझे क्या ? घात चल गई, तो हँसूँगा, नहीं तो कोई चिंता नहीं । (जाता है)

(सरमा का पुनः प्रवेश)

सरमा—नीच ने आज फिर माया-जाल रचा है । अच्छा, आज तो सरमा जान पर खेलकर इस आर्य-बाला की मर्यादा बचावेगी । उस तिरस्कार का, जो सिंहासन पर बैठकर वपुष्टमा ने किया है, प्रतिफल देने का अच्छा अवसर मिला । मैं भी किसी से न कहकर इसको अपने ही सिर पर लूँगी ! देखूँ, क्या होता है ।

(आस्तीक का प्रवेश)

आस्तीक—आर्ये, मैं आस्तीक प्रणाम करता हूँ ।

सरमा—कल्याण हो वत्स ! तुम यहाँ कैसे ?

आस्तीक—मा ने मुझे त्याज्य पुत्र कहकर निकाल दिया है ।

सरमा—(उसके सिर पर हाथ फेरती हुई) आज से मैं तेरी मा हूँ, वत्स, दुखी न होना । तू मेरे पास रह । माणवक और आस्तीक मेरे दो बेटे थे । एक खो गया, दूसरा मिल गया ।

आस्तीक – मा, मुझे आज्ञा दो, मैं क्या करूँ ?

सरमा—आज तुम्हें बहुत बड़ा काम करना होगा । तुम पत्नी-शाला के पीछे की खिड़की के पास चलो । जब तक मेरा कंठ-स्वर न सुनना, कहीं न जाना ।

आस्तीक--जैसी आज्ञा । (दोनों जाते हैं)

(शीला और दामिनी का प्रवेश)

शीला—अहा, बहन दामिनी, अच्छे समय पर आ गईं । क्या यज्ञ-शाला में चलती हो ?

दामिनी—किंतु तुमने तो अभी तक वेश-भूषा भी नहीं की—

शीला—वेश-भूषा ! क्यों, इसकी भी कोई पद्धति है ?

दामिनी—क्यों, जब वहाँ बहुत-सी कुल-ललनाएँ और राज-कुल की स्त्रियाँ अच्छे-अच्छे गहने-कपड़ों से सजकर आवेंगी, तब क्या तुम इसी ढंग से उनमें जा बैठोगी ?

शीला—क्यों, क्या इसमें कुछ लज्जा है ?

दामिनी—अवश्य ! जहाँ जैसा समाज हो, वहाँ उसी रूप में जाना चाहिए ।

शीला—यह विडंबना है । पवित्र हृदय को इसकी क्या आवश्यकता है ? बनावटी बातें क्षणिक होती हैं ; किंतु जो सत्य है, वह स्थायी होता है । बहन दामिनी, मेरी समझ में तो स्त्रियाँ विशेष शृंगार का ढोंग करके अपनी स्वाभाविक स्वतंत्रता भी खो बैठती हैं । वस्त्र और आभूषणों की रक्षा और उनके सँभालने में जो कार्य उनको करने पड़ते हैं, वे ही पुरुषों के लिये विभ्रम हो जाते हैं ; और, लज्जा तथा भाव-भंगी का विकास नहीं होने पाता । चलने में आभूषणों के कारण सँभालकर पैर रखना, कपड़ों को बचाने के लिये उन्हें समेटकर उठाते, हटाते, खींचते हुए चलना—यह सब पुरुषों की दृष्टि को तो कलुषित करता ही है, हमारे लिये भी और बंधन हो जाता है । खुले हृदय से, स्वच्छंदता से, उठना-बैठना-बोलना भी दुष्कर हो जाता है । वेश-भूषा के नियमों में उलझकर अस्त-व्यस्त हो जाना पड़ता है ।

दामिनी—बहन, तुमने यह बड़ी भारी वक्तृता दे डाली । फिर क्या संसार में इनका व्यर्थ प्रयोग है ?

शीला—यह भी कला का अंग है ; किंतु इसमें वास्तविकता नहीं । मेरी सम्मति तो यह है कि सादगी—हृदय की पवित्रता—स्वच्छता और अपनी प्रसन्नता के लिये, जो स्वतंत्रता में बाधा न डालता हो, जो दूसरे को मनोरम करने के लिये न हो, उतना ही स्त्रीजन-सुलभ सहज शृंगार पर्याप्त है । कुटिलों का लक्ष्य बनने के लिये कठपुतली की तरह सजना व्यर्थ ही नहीं, किंतु पाप भी है ।

दामिनी—लो, यह व्यवस्था भी हो गई ; किंतु मैं इसे नहीं माननेवाली—

शीला—देखो, इसी कारण, मणि-कुंडलों के लिये, अपने पति के सामने तुम्हें कितना लज्जित होना पड़ा, और कितना बड़ा अनर्थ तुमने उपस्थित कर दिया ?

दामिनी—(सिर नीचा करके) हाँ, बहन ! यहाँ तो मुझे हार माननी ही पड़ी !—अच्छा, लो चलो ।

(दोनों जाती हैं)

(पट-परिवर्तन)

× × ×

पाँचवाँ दृश्य

(स्थान—पत्नी-शाला की पिछली खिड़की)

(आस्तीक टहल रहा है)

(योद्धा के वेश में मणिमाला का प्रवेश)

आस्तीक तुम कौन हो ?

मणि०—भाई आस्तीक ! तुम यहाँ कैसे ?

आस्तीक—अरे ! मणिमाला, तुम इस वेश में क्यों ?

मणि०—भाई ! आज विषम कांड है । पिताजी ने फिर कुछ आयोजन किया है । मैं भी आई हूँ कि देखूँ, यदि उन्हें बचा सकूँ ।

आस्तीक—मुझे भी सरमा माता ने भेजा है । किंतु तुम्हारा यहाँ रहना तो ठीक नहीं । जब कोई उपद्रव संघटित होगा, तब तुम यहाँ रहकर क्या करोगी ?

मणि०—नहीं, मैं तो आज उपद्रव में फाँद पड़ूँगी । क्यों भाई, क्या रमणी की दुर्बलता ही विदित है ; उनका साहस नहीं सुना ?

आस्तीक—किंतु

मणि०—आज किंतु-परंतु नहीं भाई ! आज मुझे विश्वास है कि पिताजी पर कोई आपत्ति आवेगी ।

आस्तीक—क्यों ?

मणि०—कुकर्म का भी कभी अच्छा परिणाम हुआ है ? (कान लगाकर सुनती है) भीतर कुछ हल्ला-सा सुनाई दे रहा है । मैं जाती हूँ ।

(जाना चाहती है । आस्तीक हाथ पकड़कर रोकता है)

आस्तीक—ठहरो मणि ! तुम न जाओ ।

मणि०—छोड़ दो भाई । मैं अवश्य जाऊँगी । वेश बदलकर इसीलिये आई हूँ ।

(हाथ छुड़ाकर चली जाती है)

(खिड़की खुलती है । एक नाग वपुष्टमा और सरमा को पकड़े हुए निकलता है । माणवक उन्हें छुड़ाता है । आस्तीक की सहायता । नाग घायल होकर गिरता है)

आस्तीक—कौन ? माणवक ?

माणवक—भाई आस्तीक ?

सरमा—यहाँ बात मत करो । शीघ्र चलो ।

आस्तीक—किंतु मणिमाला भी यहीं है ।

सरमा—आर्य स्त्रियों की हत्या नहीं करते । चलो ।

(जाते हैं)

(रक्षकों का तक्षक से युद्ध । और भी आर्य-सेना आ जाती है । तक्षक और मणिमाला बंदी होते हैं)

× × ×

छठा दृश्य

(स्थान—व्यास का आश्रम)

(वेदव्यास बैठे हैं । माणवक, आस्तीक, सरमा और वपुष्टमा भी हैं)

व्यास—ब्रह्म-चक्र के प्रवर्तन में कैसी कठोर कमनीयता है ? वत्स आस्तीक, मैंने तुमसे जो कहा था, उसको मत भूलना; परोपकार में, भलाई में, कभी पश्चात्पद न होना।

आस्तीक—भगवन् ! मैं मातृ-द्रोही हो गया हूँ । मैंने उनकी आज्ञा नहीं मानी । यह अपराध मेरे सिर पर है।

व्यास—वत्स , सत्य महान् धर्म है ; इतर धर्म क्षुद्र हैं, उसी के अंग हैं । सत्य के पालन से सर्वत्र पुण्य है। वह तप से भी उच्च है ; क्योंकि वह दंभ-विहीन है। आस्तीक, वह सत्य क्या है ? शुद्ध बुद्धि की आकाशवाणी उसी का अनाहत गान करती है । वह अंतरात्मा की सत्ता है । उसको दृढ़ कर लेने पर सब अन्य धर्म आचरित होते हैं । यदि तुम्हारा उससे पद-स्खलन नहीं हुआ, तो तुम देखोगे कि तुम्हारी माता स्वयं तुम्हारा अपराध क्षमा और अपना अपराध स्वीकार करेगी। असत्य की आज्ञा, चाहे वह किसी की हो, नहीं माननी चाहिए ; क्योंकि अंत में वही विजयी होता है, जो सत्य को परम ध्येय समझता है ।

माणवक—भगवन् , यही बात तो सर्वत्र नहीं घटित होती ! क्या इसमें अपवाद नहीं होता। यदि सत्य का फल श्रेय ही होता, यदि पाप करने से प्रत्यक्ष नरक की ज्वाला में लोग जलते, यदि पुण्य करते-करते जीवन को सुखी बना सकते, तो संसार में क्या इतना अत्याचार हो सकता?

व्यास—वत्स माणवक, विजय एक ही तरह की नहीं है, और उसका एक ही लक्षण नहीं है । परिणाम में देखोगे, तुम श्रेयस्कर मार्ग पर थे । यदि प्रतिहिंसा-वश तुमने नागों का साथ दिया था, तो उस अलौकिक प्रभुता ने उसका भी दूसरा ही तात्पर्य रक्खा था । आज यदि तुम वहाँ न होते, कोई दूसरा नाग होता, तो इस पौरव-कुल-वधू की क्या अवस्था होती ? क्या उस सम्राट् पर यह तुम्हारी विजय नहीं है, जिसके भाइयों ने तुम्हें पीटा था ? तुम्हारे सत्य ने तुम्हें विजय दिलाई ही ।

सरमा—आर्य, श्री-चरणों की कृपा से मेरी सारी भ्रांति दूर हो गई है ; किंतु एक अवशिष्ट है।

व्यास—वह क्या ?

सरमा—महारानी वपुष्टमा का परिणाम चिंता का विषय है।

व्यास—है अवश्य, किंतु कोई चिंता नहीं। विश्वात्मा उन सब का कल्याण करता है, जो सत्य पर आरूढ़ हैं।

आस्तीक—तब क्या आज्ञा है ?

व्यास—ठहरो। इस आश्रम में प्राकृतिक साधन सब पर्याप्त हैं। तुम लोग यहीं रहो। जब तुम लोगों के जाने की आवश्यकता होगी, मैं स्वयं भेज दूँगा। अच्छा, तुम लोग विश्राम करो। (जाते हैं)

वपुष्टमा—बहन सरमा, मुझे क्षमा करो। मैंने तुम्हारा बड़ा अनादर किया था। आज मुझे तुम्हारे सामने आँख उठाते लज्जा आती है। तुमने जैसी विजय मेरे ऊपर पाई है, वह अकथनीय है।

सरमा—नहीं महारानी, वह तुम्हारा सिंहासन पर का आवेश था। वास्तविक स्थिति कुछ दूसरी थी ; जो सब मनुष्यों के लिये बराबर है। वह स्त्री-जाति के सम्मान का प्रश्न था, नाग और आर्य-जाति की समस्या नहीं थी, जैसा आप कहने लगी थीं ! नाग-परिणय से तो मैं न्याय पाने की भी अधिकारिणी न थी ; किंतु क्या आपको विदित है कि कितने शुद्ध आर्यों का भी अधिकारियों के निष्पेषण से प्रतिदिन कितना अनादर होता है, जो राज-सिंहासन तक पहुँच नहीं पाते। अस्तु। अब उन बातों की चिंता क्या ?

वपुष्टमा—किंतु बहन, मैं तो किसी ओर की नहीं रही। सम्राट् की इच्छा क्या होगी, कौन जाने। आर्यावर्त-भर में यह बात फैल गई होगी कि सम्राज्ञी—

सरमा—भगवान् की दया से सब अच्छा होगा, आप चिंतित न हों। चलिए स्नान कर आवें।

(दोनों जाती हैं)

आस्तीक—क्यों माणवक, आज तो अवस्था ने तुम्हारे समस्त अपमान का बदला चुका दिया। क्या अब भी तुम इस दुखिया रानी को अपने हृदय से क्षमा न करोगे ?

माणवक—भाई ! मैं तो कभी का क्षमा कर चुका। नहीं तो अब तक वपुष्टमा को पकड़कर नागों के हवाले किया होता। मा की आज्ञा मैं टाल न सका। आस्तीक, सच पूछो, तो मैंने इस प्रतिहिंसा को आज से त्याग दिया। देखो, यह इस तपोवन में शस्य-श्यामल धरा और सुनील नभ का कैसा सम्मिलन है, जोकि एक दूसरे से कितनी दूर हैं।

आस्तीक—भाई, यह आश्रम भगवान् बादरायण का है। देखो, यहाँ की प्रत्येक लता-वल्लरियों में, पशु-पक्षियों में, तापस-बालकों में कितना स्नेह है। ये सब हिलते-डुलते, चलते-फिरते भी मानों गले से लगे हुए हैं। एक शांति का आश्वासन यहाँ के तृण को भी पुचकार रहा है। स्नेह का दुलार, स्वार्थ-त्याग का प्यार, सर्वत्र बिखर रहा है।

माणवक—भाई आस्तीक, बहुत दिन हुए, हमने और तुमने एक दूसरे को गले नहीं लगाया। आओ आज—

आस्तीक (गले लगकर) भाई ! शैशव-सहचर, वह विशुद्ध क्रीड़ा, वह बाल्य-काल का सुख, जीवन-भर का पाथेय है। क्या वह कभी भूलने का है ? आज से हम तुम फिर वही प्राचीन मित्र और भाई हैं। जी चाहता है, एक बार फिर हाथ मिलाकर उसी तरह खेल करें।

माणवक—भाई, क्या वह समय फिर आने का है ? यदि मिल सके, तो मैं ज़ोर देकर कहता हूँ कि उस १० वर्ष के लिये ९० वर्ष का जीवन भी बेच देना उपयुक्त है। आह, क्या ही रमणीय स्मृति है !

आस्तीक—किंतु भाई, हम लोगों का कुछ कर्तव्य है। दो भयंकर जातियाँ क्रोध से फुफकार रही हैं। उनमें शांति स्थापित करने का हमने बीड़ा उठाया है।

माणवक—भगवान् की कृपा से तुम सफल होगे। भाई, चिंता न करो। प्रभु की बड़ी प्रभुता है।

(दोनों प्रार्थना करते हैं)

नाथ, स्नेह की लता सींच दो, शांति-जलद-वर्षा कर दो ;
हिंसा-धूल उड़ रही मोहन, सूखी क्यारी को भर दो।
समता की घोषणा विश्व में, मंद्र मेघ-गर्जन कर दो ;
हरी-भरी हो सृष्टि तुम्हारी, करुणा का कटाक्ष कर दो।

(पट-परिवर्तन)

× × ×

सातवाँ दृश्य

(स्थान—कानन)

(मनसा और वासुकि)

वासुकि—बहन, अब क्या करना होगा ? तक्षक बंदी है। उसके साथ मणिमाला भी है। पहले के भयंकर यज्ञ

में जो बात न होने पाई थी, वही अब अनायास हो गई । अपनी मूर्खता से नागराज आज स्वयं पूर्णाहुति बनने गए ।

मनसा—भाई, मुझसे क्या कहते हो ? मैं क्या उस उत्तेजना की एक सामग्री नहीं हूँ ? हाय-हाय ! मैंने ही तो इस नाग-जाति को भड़काया । आज देख रहे हो, इसमें कितने घायल पड़े हैं । जाति के अवशिष्ट थोड़े-से लोगों में भी कितने ही बेकाम हो गए, कितने तो जलाए गए । विदित होता है, इस जाति के लिये प्रलय समीप है । इस परिणाम का उत्तरदायित्व मुझ पर है । हा, मैंने क्या किया !

(कुछ नागों का प्रवेश)

नाग--नाग-माता ! आपकी सेवा और शुश्रूषा से हम लोग अब इस योग्य हो गए हैं कि फिर युद्ध कर सकें । आज्ञा दीजिए, अब हम लोग क्या करें ? सुना है, नागराज बंदी हुए हैं । उनका उद्धार करना चाहिए ।

मनसा—वत्सगण, अब और जन-क्षय कराने का काम नहीं है । बंदी तक्षक को जनमेजय कभी का जला देता ; किंतु सुना है, उसकी रानी का पता नहीं है, इसलिये अभी कुछ नहीं हुआ ।

नागगण—तो क्या नाग-राज जलाए जायँ, और हम लोग यहाँ पड़े-पड़े आराम करें ! धिक्कार है इस जाति पर !

मनसा—उत्तेजित न हो वत्स ।

वासुकि—नहीं मनसा, सो अब न होगा । अब इस भग्न गृह को बचा रखने से क्या होगा ? इसे गिर जाने दो । दो-चार ठूठ वृक्षों पर इतनी ममता क्यों ? इन्हें सूख जाने दो । जब हरा-भरा कानन जल गया, तो इन्हें भी जल जाने दो । चलो वीरो, जो युद्ध के योग्य हैं, वे सब एक बार निर्वाणोन्मुख दीप की तरह बल उठें । यदि और को न जला सकेंगे, तो स्वयं जल जायँगे । कथा समाप्त हो जायगी ।

नाग—हम प्रस्तुत हैं ।

वासुकि—तो फिर चलो ।

मनसा—क्यों भाई, क्या तुम मेरी न सुनोगे ?

वासुकि—तुम्हारी बात ही सुनकर, बहन, आज तक यह सब हुआ । अब तुम्हारे हृदय में स्त्री-सुलभ करुणा का उद्रेक हुआ है, इसीलिये तुम मुझे फिराना चाहती हो । यही तो स्त्रियों की बात है । एक भयानक क्रूरता को, ठोकर मारकर, जगाकर, फिर उसे थपकी देकर, सुला देना चाहती हो । यह अब नहीं होने का । मरण के डर से कलंकी जीवन बचाने का दुस्साहस न करूँगा ।

मनसा—भाई, तुम्हारी मनसा तुमसे क्षमा चाहती है । जाति-नाश कराने का कलंक उसके सिर पर मत होने दो ।

वासुकि—उपाय नहीं है ।

मनसा—(कुछ सोचकर) अच्छा, सब अवशिष्ट सैनिकों को साथ लेकर तुम चलो । मैं भी चलती हूँ । यदि संधि करा सकी, तब तो ठीक है, नहीं तो सब जल मरेंगे ।

वासुकि—(हँसकर) अभी इतनी आशा है ?

मनसा—एक बार आर्यों के महर्षि बादरायण को देखूँगी । सुना है, उनकी अपूर्व महिमा है । यदि कुछ कर सकूँ ।

सब नाग—अच्छी बात है । एक बार और चेष्टा कर लीजिए । हम लोग पूर्णाहुति के लिये प्रस्तुत होकर चलते हैं । किंतु स्मरण रहे, जिस स्वतंत्रता के लिये इतना रक्त बहाया है, वह न जाने पावे ।

मनसा—विश्वास करो । अपमान-जनक संधि का प्रस्ताव मनसा न करेगी । नाग-बाला को भी मरना आता है । मुझे एक बार व्यास के आश्रम तक पहुँचना होगा । जब तक हम न आ जायँ, तुम लोग कोई साहस का कार्य न कर बैठना ।

सब नाग—जय नाग-माता की जय !

× × ×

आठवाँ दृश्य

(स्थान—यज्ञ-शाला)

(बंदी तक्षक, मणिमाला, जनमेजय, शौनक, उतंक, सोमश्रवा, शीला, चंड भार्गव इत्यादि)

जनमेजय—इतनी नम्रता और आज्ञा-पालन का यह परिणाम ! इतनी प्रतिहिंसा ! प्रभुत्व का इतना लोभ ! धन्य है भूसुरो, तुमने प्रतिशोध अच्छा लिया ।

ब्राह्मण—राजन्, जो धर्म लोभ और हठ से प्रतिपादित होता है, उसका यही परिणाम है । इंद्र ने इसमें बाधा डाली है ।

जनमेजय—चुप रहो ! लज्जा नहीं आती ? ब्राह्मण होकर ऐसा गर्हित कार्य ! महिषी को मिलकर दूषित

बनाना ! उसे छिपा देना ! यह सब मुझे लज्जित करने का उपाय है । मैं अवश्य इसका प्रतिशोध लूँगा । मेरा हृदय क्रोध से जल रहा है । इस यज्ञ में, इस अनल-कुंड में, तुम सब की आहुति होगी ।

सोमश्रवा—राजन् , सुबुद्धि से सहायता लो । प्रमत्त न बनो । हो सकता है कि पद-च्युत काश्यप का इसमें कुछ हाथ हो : किंतु समस्त ब्राह्मणों को क्यों इसमें मिलाते हो ?

जनमेजय—प्रतिफल भोगना होगा । यह क्षात्र रक्त उबल रहा है । उपयुक्त दंड तो यही है कि तुम सब को इसी यज्ञ-कुंड में जला दूँ । किंतु नहीं, मैं तुम लोगों को दूसरा दंड देता हूँ । जाओ, मेरा देश छोड़कर तुम लोग चले जाओ । आज से कोई क्षत्रिय अश्वमेध इत्यादि यज्ञ नहीं करेगा । तुम-सरीखे पुरोहितों की इस देश में आवश्यकता नहीं । जाओ, तुम सब निर्वासित हो । और, तू तक्षक, तूने आज तक इस राज-कुल के साथ जो-जो दुर्व्यवहार किए हैं, उनका यही उपयुक्त दंड है कि तू इस भ्रष्ट यज्ञ की पूर्णाहुति हो । सोमश्रवा, इसको अवशिष्ट यज्ञ-सामग्रियों के साथ इसी यज्ञ-कुंड में डाल दो ।

सोमश्रवा—जब सब ब्राह्मण निर्वासित हैं, तब मैं ही क्यों रहूँ ? और, अश्वमेध में नर-बलि की विधि नहीं । यह घातक कार्य मुझसे न होगा ।

शीला—बहन मणिमाला, मैं तुम्हारे साथ हूँ । यदि तुम्हें जलावेंगे, तो मैं भी जलूँगी ।

मणिमाला—मैं भी पिता के साथ जलूँगी बहन !

सोमश्रवा—यह अच्छा है ! यज्ञ का अवभृथ-स्नान अच्छा होगा ! ब्राह्मण निर्वासित और तक्षक, मणिमाला तथा ब्राह्मणी की यज्ञ में आहुति ! बलिहारी !

उतंक—सम्राट्, विचार से कार्य कीजिए । ऐसा न हो कि जिन्हें दंड मिलना चाहिए, उनके साथ निरपराध भी पीसे जायँ । एक ही अकारण हत्या का फल ऐसा भयानक कांड है । अब इसे न बढ़ाइए ।

जनमेजय—जाओ, तुम सब निकलो ! कोई नहीं सुनता ? इस अधम तक्षक को अभी इस यज्ञ-कुंड में डाल दो !

(व्यास के साथ मनसा, सरमा, आस्तीक और माणवक का प्रवेश । लोग तक्षक को कुंड में डालना चाहते हैं)

व्यास—ठहरो ! ठहरो !

जनमेजय—भगवन् , प्रणाम ! यह क्या ?

आस्तीक—मेरा प्रतिफल ! मेरा न्याय !

जनमेजय—तुम कौन हो ?

आस्तीक—जिस ब्रह्म-हत्या के लिये तुमने अश्वमेध किया है, मैं उसी ब्रह्म-हत्या की क्षति-पूर्ति चाहता हूँ । मैं जरत्कारु का पुत्र हूँ ।

जनमेजय—आश्चर्य ! तुम कुमार ! तुम्हारा मुखमंडल तो बड़ा सरल है, फिर भी वह क्या कह रहा है ! मैं किस लोक में हूँ !

व्यास—न्याय करना होगा सम्राट् ! यह बालक अपने पिता की हत्या की क्षति-पूर्ति चाहता है । आर्य-पट्ट के समक्ष यह बालक तुम पर अभियोग न लगाकर केवल क्षति-पूर्ति चाहता है । क्या तुम इसको भी अस्वीकार करोगे ? तब तुम दूसरों से कैसे क्षति-पूर्ति दिला सकोगे ? क्या न्याय करोगे ?

जनमेजय—मुझे स्वीकार है भगवन् ! क्या चाहते हो तुम आस्तीक ? मैं अपना रक्त तुम्हें दूँ ?

आस्तीक—नहीं, मुझे दो जातियों में शांति चाहिए । सम्राट् , शांति की घोषणा करके बंदी नाग-राज को छोड़ दीजिए । यही मेरा यथेष्ट पुरस्कार है ।

जनमेजय—(सिर झुकाकर) वही हो । छोड़ दो तक्षक को ।

व्यास—धन्य है क्षमाशील ब्रह्म-वीर्य ! ऋषिकुमार, तुम्हारे पिता को धन्य है ।

(लोग तक्षक को छोड़ देते हैं । वासुकि से सरमा का मिलन)

सरमा—और, मेरा भी कुछ विचार है । न्याय कीजिए ।

जनमेजय—कौन ? यादवी सरमा !

सरमा—हाँ, मैं ही हूँ सम्राट् !

जनमेजय—तुम्हारे लड़के को मेरे भाइयों ने पीटा था ? तुम क्या चाहती हो ?

सरमा—जब आप स्वीकार करते हैं, तब मुझे कुछ न चाहिए आर्य-राज ! केवल एक वस्तु दीजिए, और हमसे कुछ लीजिए भी ।

जनमेजय—क्या प्रतिदान !

सरमा—हाँ, लेना होगा सम्राट् !

जनमेजय—वह क्या ?

सरमा—नाग-बाला मणिमाला को अपनी वधू बनाइए ।

(जनमेजय सिर नीचा कर लेता है)

व्यास—किंतु सरमा, यह तुम अनधिकार की बात करती हो। पहले वपुष्टमा को बुलाओ। वह स्वीकृति दें।

सरमा—वही हो।

(जाकर वपुष्टमा को ले आती है)

वपुष्टमा—आर्य-पुत्र की जय हो।

जनमेजय—षड्यंत्र! यह कभी न होगा! धर्षिता स्त्री को कौन स्वीकार करेगा?

व्यास—तुम करोगे सम्राट्! जब स्त्रियों की रक्षा का भार पुरुषों ने लिया है, और उनको केवल अपनी सीमा में स्वतंत्रता मिली है, तब उनकी अरक्षित अवस्था में उन पर अत्याचार होने का अपराध उनके रक्षकों पर लगेगा। क्या अबला होने के कारण यही सब ओर से अपराधिनी है? नहीं, यह पवित्र है। प्रभात के कमल-वन से निकले हुए मलय-पवन की तरह शुद्ध है। इसे स्वीकार करना होगा। वपुष्टमा, आगे बढ़ो।

वपुष्टमा—नाथ! दासी चरण की शपथ करके कहती है कि वह पवित्र है।

(पैर पकड़ती है)

जनमेजय—(व्यास की ओर देखकर) उठो महिषी, उठो। (उठाता है)

वपुष्टमा—आर्य-पुत्र! सरमा-देवी की बात माननी ही होगी। आओ बहन मणिमाला।

सरमा—मणिमाला, तुम सौभाग्यवती हो—प्रेम-शृंखला बनकर इन दोनों क्रुद्ध जातियों को बाँध दो।

शीला—बहन! मणि! आज मेरी भविष्य-वाणी सफल हुई। कौन जानता था कि तपोवन का केवल एक दृष्टि में वर्धित क्षुद्र प्रेमांकुर इतना महान् फल देगा!

जनमेजय—सचमुच मनुष्य नियति का अनुचर है।

(रानी मणिमाला के हाथ बंधन-मुक्त करके जनमेजय को पकड़ा देती हैं, और कहती हैं—"यह निर्मल कुसुम तुम्हारे समस्त संताप को हरण करके मस्तक को शीतल करे।" मणिमाला लज्जित होती है)

मनसा—आर्य-राज! इस जाति की महत्ता देखकर मैं मुग्ध हूँ। मेरा समस्त विद्वेष तिरोहित हो गया। मैं चाहती हूँ, आज से नाग-जाति विद्वेष भूलकर आर्यों से मित्र-भाव का व्यवहार करे, और आर्यगण भी अनार्य कहकर उन्हें अपने से बहुत दूर न मानें। आज से मैं आस्तीक के नाम पर प्रतिज्ञा करती हूँ कि कोई नाग आर्यों से विद्रोह का आचरण न करेगा।

व्यास—जब संबंध-सूत्र में राज-कुल भी बँध गया, तब भिन्नता कैसी? इस प्रचंड वीर जाति के क्षत्रिय होने में क्या संदेह है।

जनमेजय—ऐसा ही होगा।

सब—जय, नाग-माता की जय!

व्यास—ब्रह्म-मंडली, इन अपने सम्राट् को क्षमा करो!

जनमेजय—मेरा अपराध क्या है भगवन्?

व्यास—इस षड्यंत्र का मूल काश्यप अपने दंड को पा गया। यज्ञ-शाला के विप्लव में से भागते समय किसी नाग ने उसकी हत्या कर डाली है। सम्राट्, इन ब्राह्मणों ने तुम्हारा कोई अपराध नहीं किया। इनकी क्षमा को देखो कि तुमने अकारण इन्हें निर्वासन की आज्ञा दी, पर इन्होंने शाप भी न दिया। धन्य है! क्षमाधन, त्यागी और तपस्वी ब्राह्मणो, तुम धन्य हो! ब्राह्मणत्व का सुंदर ज्वलंत उदाहरण तुमने दिखला दिया।

जनमेजय—भगवान् की जैसी आज्ञा। (सब से) क्षमा कीजिए।

शौनकादि—सम्राट्, तुम सदैव क्षम्य हो; क्योंकि तुम्हारे सुशासन से हम आरण्यक लोग अपना स्वाध्याय शांति से करते हैं। क्या तुम्हारा एक भी अपराध हम नहीं सहन कर सकते। सहनशील होना ही तो तपोधन, उत्तम ब्राह्मणों का लक्षण है। किंतु मानूँगा, व्यासदेव, तुम्हारी ज्ञान-गरिमा को, तुम्हारी वृत्ति को, तुम्हारी शांति को मानूँगा। आज तक अवश्य कुछ ब्राह्मण तुम्हें दूसरी दृष्टि से देखते थे, किंतु, नहीं, तुम सर्वथा स्तुत्य हो। तुम्हारा अगाध पांडित्य ब्राह्मणत्व के योग्य ही है। धन्य हो!

व्यास—सम्राट्, तुमने मुझसे एक दिन पूछा था कि क्या भविष्य है? देखा नियति का चक्र! यह ब्रह्म-चक्र आप ही अपना कार्य करता है। मैंने तुम्हें मना किया था, कहा था कि यज्ञ में विघ्न होगा। फिर भी तुमने उसे किया ही। किंतु जानते हो, यह क्या है? यह मानवता के साथ ही धर्म का क्रम-विकास है। यज्ञों का कार्य हो चुका। बालक सृष्टि खेल कर चुकी। उसी परिवर्तन के लिये यह कांड उपस्थित हुआ है। अब उसे धर्म-कार्यों में विडंबना

76324

की आवश्यकता नहीं । शुद्ध और समीप ले जानेवाले उपनिषद् और आरण्यक-संवाद सरस्वती और यमुना के तट पर हो रहे हैं । इन्हीं महात्मा ब्राह्मणों की विशुद्ध ज्ञान-धारा से यह पृथ्वी अनंत काल तक सिंचेगी, परमात्मा की उपलब्धि होगी, कल्याण और शांति का प्रचार होगा।

सब—भगवान् की वाणी सत्य हो।

व्यास—विश्वात्मा का उत्थान हो। प्रत्येक हृत्तंत्रियों में पवित्र पुण्य का साम-गान हो।

(नेपथ्य में गान)

जय हो उसकी, जिसने अपना विश्व-रूप-विस्तार किया ;
आकर्षण का प्रेम-नाम से सब में सरल प्रचार किया।
जल, थल, नभ का कुहक बन गया जो अपनी ही लीला से,
प्रेमानंद-पूर्ण गोलक को निराधार आधार दिया।
हम सब में जो खेल कर रहा अति सुंदर परछाईं-सा ;
आप छिप गया आकर हममें, फिर हमको आकार दिया।
पूर्णानुभव कराता है जो 'अहमिति' से निज सत्ता का,
'तू मैं ही हूँ' इस चेतन का प्रणव-बीच गुंजार किया।

(यवनिका-पतन)

समाप्त

जयशंकर 'प्रसाद'

तुम और मैं

तुम तुंग हिमालय-शृंग, और मैं चंचल-गति सुर-सरिता ;
तुम विमल हृदय-उच्छ्वास, और मैं कांत कामिनी-कविता।
तुम प्रेम, और मैं शांति ;
तुम सुरा-पान-घन अंधकार,
मैं हूँ मतवाली भ्रांति।
तुम दिनकर के खर किरण-जाल, मैं सरसिज की मुसकान ;
तुम वर्षों के बीते वियोग, मैं हूँ पिछली पहचान।
तुम योग, और मैं सिद्धि ;
तुम हो रागानुग निश्छल तप,
मैं शुचिता सरल समृद्धि।

(२)

तुम मृदु मानस के भाव, और मैं मनोरंजिनी भाषा ;
तुम नंदन-वन-घन-विटप, और मैं सुख-शीतल-तल शाखा।
तुम प्राण, और मैं काया ;
तुम शुद्ध सच्चिदानंद ब्रह्म,
मैं मनोमोहिनी माया।
तुम प्रेममयी के कंठ-हार, मैं वेणी काल-नागिनी
तुम कर-पल्लव-झंकृत सितार, मैं व्याकुल विरह-रागिनी।
तुम पथ हो, मैं हूँ रेणु ;
तुम हो राधा के मन-मोहन,
मैं उन अधरों की वेणु।

(३)

तुम पथिक दूर के श्रांत, और मैं बाट-जोहती आशा ;
तुम भव-सागर दुस्तार, पार जाने की मैं अभिलाषा।
तुम नभ हो, मैं नीलिमा ;
तुम शरत्-सुधाकर-कला-हास,
मैं हूँ निशीथ-मधुरिमा।
तुम गंध कुसुम-कोमल-पराग, मैं मृदु-गति मलय-समीर।
तुम स्वेच्छाचारी मुक्त पुरुष, मैं प्रकृति प्रेम-जंज़ीर।
तुम शिव हो, मैं हूँ शक्ति ;
तुम रघुकुल-गौरव रामचंद्र,
मैं सीता अचला भक्ति।

(४)

तुम हो प्रियतम मधु-मास, और मैं पिक-कल-कूजन-तान।
तुम मदन पंच-शर-हस्त, और मैं हूँ मुग्धा अनजान ;
तुम अंबर, मैं दिग्वसना ;
तुम चित्रकार घन-पटल श्याम,
मैं तड़ित्तूलिका-रचना।
तुम रण तांडव-उन्माद-नृत्य, मैं युवति-मधुर-नूपुर-ध्वनि।
तुम नाद-वेद-ओंकार-सार, मैं कवि-शृंगार-शिरोमणि।
तुम यश हो, मैं हूँ प्राप्ति ;
तुम कुंद-इंदु-अरविंद शुभ्र,
तो मैं हूँ निर्मल व्याप्ति।

सूर्यकांत त्रिपाठी

ग्रीक राजनीतिक सिद्धांत

(४)

अरस्तू के उत्तराधिकारी

तत्कालीन परिस्थिति

अरस्तू के बाद ग्रीस के नगर-राज्यों की स्वतंत्रता बिलकुल नष्ट होने लगी। कुछ दिन पीछे नगर-राज्य मिट ही गए, और उनके स्थान पर विशाल देश-राज्य स्थापित हुए। सिकंदर की मृत्यु के पश्चात् मक़दूनिया का साम्राज्य कई भागों में बँट गया। तथापि प्रत्येक भाग समस्त प्राचीन नगर-राज्यों से अधिक विस्तृत था। ईसवी संवत् के पूर्व, दूसरी सदी में, रोम ने ग्रीस पर अधिकार कर लिया। ग्रीस भी उस विशाल साम्राज्य का भाग हो गया, जो उस समय योरप-निवासियों को सार्वभौमिक मालूम होता था। मक़दूनिया के राज्य में, अर्थात् रोमन-साम्राज्य में, न जन-सत्ता थी, न स्थानिक स्वराज्य था, और न सच्चा राजनीतिक जविन था। वे कारण और वह परिस्थिति नष्ट हो गई, जिसने तीन शताब्दियों तक ग्रीस में राजनीतिक विचारों की गंगा बहाई थी। राजनीतिक पंथ से बहुत कुछ दूर हटकर ग्रीक मस्तिष्क विशुद्ध दर्शन और अंशतः सामाजिक आलोचना में लग गया। अब जो कुछ राजनीतिक विचार दिखाई पड़ते थे, वे मात्रा और महत्त्व में भूतपूर्व विचारावली से बहुत कम थे, और अन्य प्रकार के विचारों से बहुत मिश्रित थे। इस काल में जो कोई राजनीतिक परिस्थिति पर विचार करता था, उसकी दृष्टि सब से पहले विशाल मक़दूनिया-राज्य या रोमन-साम्राज्य की ओर जाती थी। नगर-राज्यों के विषय में कहने-सुनने की कोई बात न थी। कुछ ऐसा मालूम होता था, मानो सारा भूमंडल एक छत्र के नीचे आ रहा है। सार्वभौमिक राज्य ही आदर्श राज्य है, ऐसी धारणा होती थी। अस्तु। अरस्तू के उत्तराधिकारियों में सार्वभौमिकता की कल्पना विशेष रूप से दिखाई पड़ती है।

एपीक्युरस

एपीक्युरस ने जो पंथ चलाया, उसमें ये लक्षण स्पष्ट ही मिलते हैं। एक और सिद्धांत उसके मत में पाया जाता है, जो डेढ़ हज़ार वर्ष पीछे अत्यंत महत्त्व पूर्ण हो गया। राज्य की उत्पत्ति कैसे हुई, इस प्रश्न का उत्तर एपीक्युरियन मत में यह दिया गया है—"बहुत दिन हुए, सब लोगों ने मिलकर यह इक़रारनामा लिखा था कि हम राज्य की स्थापना करते हैं। उस राज्य में न कोई अत्याचार करेगा, और न किसी पर अत्याचार किया जायगा। इस इक़रारनामे से राज्य की स्थापना हुई है, और यह इक़रारनामा राज्य का सर्व-प्रधान क़ानून है।" एपीक्युरस द्वारा प्रघोषित सामाजिक पट्टे का यह सिद्धांत महाभारत के सामाजिक समय से और सोलहवीं-सत्रहवीं सदी के पट्टावादियों के मत से बहुत मिलता-जुलता है।

स्टोयिक

उन दिनों स्टोयिक मत था एपीक्युरियन मत से अधिक प्रबल। स्टोयिक लोग सारे विश्व के तत्त्व की आलोचना करते थे। उन्हें सारी प्रकृति में एक महान् शक्ति की करामात दिखाई देती थी, एक महान् नियम का प्रचार दिखाई पड़ता था। प्राकृतिक सर्व-व्यापी नियम के आधार प ही यह नक्षत्र-मंडल और भू-मंडल स्थिर है। वही निय सारी मनुष्य-जाति को भी लागू है। वास्तव में स मनुष्य एक ही प्रकार के हैं। सब मनुष्यों को मिलकर ए सार्वभौमिक राज्य बनाना चाहिए, और उसी की छत्र-छाया में शांति-पूर्वक रहना चाहिए। इस सार्वभौमिक राज्य में एक ही तरह का क़ानून और एक ही तरह क व्यवस्था रहे। यानी संसार एक विशाल नग है, और साधारण नगर उसके कुटुंब हैं। राज्य-प्रणाली में एक-सत्ता, कुलीन-सत्ता और जन-सत्ता इन तीनों के तत्त्वों का समावेश रहना चाहिए। इस सम्मिश्रण से बहुत-सी बुराइयाँ, जो एक-सत्ता या कुलीन-सत्ता या जन-सत्ता में होती हैं, ह जायँगी।

सिनिक

सिनिक लोग भी "वसुधैव कुटुंबकम्" के पक्षपाती थे। सार्वभौमिक राज्य उनको भ इष्ट था। परंतु उनका विशेष मह राजनीतिक-राज्य में नहीं, अन्यत्र है।

रोमन राजनीतिक सिद्धांत

कह चुके हैं कि जब रोम ने ग्रीस को राजनीति में पराजित किया, तभी ग्रीस ने रोम पर मानसिक विजय प्राप्त कर ली। रोमन विद्वान् ग्रीस के शिष्य होने में अपना गौरव समझने लगे। प्रधानतः रोमन प्रतिभा व्यावहारिक प्रतिभा थी। देशों की विजय, व्यवस्था तथा क़ानून बनाने में उन्होंने अपनी लगभग सारी शक्ति ख़र्च कर दी। दार्शनिक अथवा राजनीतिक विचार जो कुछ उन लोगों में थे, वे सब ग्रीस से लिए गए थे। अतएव उन विचारों की मीमांसा यहीं कर सकते हैं।

सिसरो

रोमन साहित्य में सिसरो का नाम अत्यंत प्रसिद्ध है। वक्तृत्व-शक्ति में सिसरो का दर्जा ग्रीक-वक्ता डिमास्थनीज़ से ही कम है। पद-लालित्य, शब्द-विन्यास और ओजस्विता में वह, लैटिन साहित्य में, अद्वितीय है। परंतु उसके सारे ग्रंथों और व्याख्यानों में एक भी मौलिक विचार नहीं है। जो कुछ है, सब ग्रीस का प्रतिबिंब। राजनीति में सिसरो पर स्टोयिक मत का प्रभाव बहुत पड़ा था। विश्व में नियम की व्यापकता, सार्वभौमिक राज्य की आवश्यकता, क़ानून और व्यवस्था की एकता, ये सब बातें सिसरो ने स्टोयिक मत से ली हैं। एक स्थान पर उसने आदर्श राज-पद्धति की विवेचना की है। वहाँ भी वह स्टोयिक मत पर ही पहुँचा है; अर्थात् आदर्श राज-पद्धति में एक-सत्ता, कुलीन-सत्ता और जन-सत्ता, इन तीनों के तत्त्व मिलाने चाहे हैं।

पालीवायस

सिसरो के पहले सर्वोत्तम रोमन इतिहासकार पालीवायस ने भी यही मत प्रकट किया था। जन्म से पालीवायस ग्रीक था; परंतु रोम में रहने लगा था, और एक प्रकार से रोमन ही हो गया था। ग्रीस की अधोगति और रोम की उन्नति की तुलना करके वह इसी नतीजे पर पहुँचा कि रोमन राज-पद्धति की तरह आदर्श राज-पद्धति में भी तीनों प्रकार की सत्ताओं का समावेश रहना चाहिए; अर्थात् वंश-क्रमागत अथवा निर्वाचित राजा होना चाहिए। राजा को कुलीन अथवा वृद्ध पुरुषों की सहायता से शासन करना चाहिए। महत्त्व-पूर्ण मामलों का निर्णय जन-सभा के द्वारा होना चाहिए।

ईसाई राजनीतिक विचार

रोमन लेखकों में इसी प्रकार के अन्य राजनीतिक विचार भी पाए जाते हैं; परंतु उनमें न कोई मौलिकता है, और न कोई महिमा।

जिस समय रोमन साम्राज्य उन्नति की पराकाष्ठा पर था, उसी समय रोमन साम्राज्य के अंतर्गत पेलस्टाइन में ईसामसीह ने ईसाई-मत चलाया। थोड़े दिनों में ईसाई लोग योरप और इटली में भी अपने धर्म का प्रचार करने लगे। पुराने धर्मों के अनुयायी स्वभावतः नए ईसाई-मत के विरोधी थे, और सम्राटों को उसका नाश करने के लिये उत्तेजित करते थे। ईसाई लोग अभी संख्या और बल में कम थे। वे सम्राट् के कोप से डरते थे। अतएव उन्होंने इस मत का प्रतिपादन किया कि सब लोगों को सम्राट् के प्रति भक्ति रखनी चाहिए। राज-भक्ति का सिद्धांत इस समय से शुरू होकर किसी-न-किसी रूप में उन्नीसवीं सदी तक प्रचलित रहा। ईसाई लोग धर्म-प्रचार और आत्म-रक्षा के लिये इतने उत्सुक थे कि उन्होंने विधर्मी सम्राट् की भक्ति पर ज़ोर ही नहीं दिया, तत्कालीन सामाजिक कुरीतियों का भी खंडन भी नहीं किया। उन्होंने दासता के विरोध में आवाज़ नहीं उठाई। ईसाई राजत्व-प्रथा और व्यापक साम्राज्य से ही परिचित थे। अतएव उनके तत्कालीन लेखों में कुलीन-सत्ता अथवा जन-सत्ता, नगर-राज्य अथवा राष्ट्र, का कोई उल्लेख नहीं है। आगे चलकर अवश्य संत अगस्टाइन ने कहा कि राजा को क़ानून का पालन करना चाहिए। और, रीम्ज़ के हिंकमार ने उपदेश दिया कि राजा की सत्ता परिमित होनी चाहिए, क़ानून बहुत सोच-समझकर बनाने चाहिए; परंतु जब वे एक बार बन गए, तब उनका पालन, राजा और प्रजा, सभी को करना चाहिए। इस समय के पश्चात् ईसाइयों ने जिन राजनीतिक विचारों का प्रचार किया, उनका संबंध मध्यकालीन योरप के इतिहास से है। परंतु उनका एक सिद्धांत था, जो उस समय तथा आगे चलकर अत्यंत प्रभावशाली सिद्ध हुआ, और जिसका उल्लेख आवश्यक है। ईसाई-धर्म के अनुसार ईश्वर के सामने प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों के लिये उत्तरदाता है। पाप या पुण्य का परिणाम प्रत्येक आत्मा को स्वयं ही भोगना पड़ता है; या तो सदा के लिये स्वर्ग में आनंद करना होता है, या

व्यक्ति-वाद

सदा के लिये नरक-यंत्रणा भोगनी पड़ती है। इस परलोक पर ज़ोर देकर ईसाई-धर्म ने व्यक्ति-वाद का प्रचार किया।

वेणीप्रसाद

अमेरिका की वर्तमान अवस्था

(४)

> Honest and independent Journalism is the mightiest force evolvedby modern civilization. With all its faults—and what human institution is faultless ?—it is indispensible to the life of a free people.
>
> Hon. Alton B. Parker

समाचार-पत्र

संसार-भर में कहीं के निवासियों को समाचार-पत्र पढ़ने का उतना शौक़ नहीं है, जितना अमेरिका-निवासियों को। वहाँ पर समाचार-पत्रों का पढ़ना भोजन करने से भी अधिक ज़रूरी समझा जाता है। वहाँ के निवासियों को चाहे एक वक़्त भोजन न मिले, मगर अख़बार पढ़ने को ज़रूर चाहिए। जहाँ राज्य शासन अच्छा न हो, परंतु समाचार-पत्र निकलते हों, और, जहाँ का राज्य-शासन तो अच्छा हो, परंतु समाचार-पत्र न प्रकाशित होते हों, ऐसे दो देशों में से पहले प्रकार के देश में, जहाँ से समाचार-पत्र निकलते हैं, रहना ही अमेरिकन लोग पसंद करेंगे। वहाँ के लोगों का विश्वास है कि देश के शासन का अच्छा या बुरा होना जनता की राय पर बहुत-कुछ निर्भर है, और जनता की राय का प्रकट होना समाचार-पत्रों के ही द्वारा संभव है। अमेरिकन लोग प्रातःकाल जगकर हाज़िरी खाने के भी पहले अपनी मेज़ पर अख़बारों को देखना चाहते हैं। सुबह उठकर हाज़िरी खाने को भले ही न मिले, परंतु अख़बार पढ़ने को ज़रूर मिलना चाहिए। परमात्मा ने जिनको धन दिया है, वे तो एक नहीं, अनेक समाचार-पत्र मँगवाते हैं; परंतु जो निर्धन और ग़रीब हैं, वे भी रोज़ कम-से-कम एक अख़बार ज़रूर ख़रीदते हैं। यहाँ तक कि वहाँ के मज़दूर भी विना अख़बार पढ़े नहीं रह सकते। वहाँ जिसको पढ़ने के लिये अख़बार नहीं मिलता, वह अपने को निकम्मा, गूँगा, बहरा और अंधा समझता है।

अमेरिकन समाचार-पत्रों के संपादक अपने को बहुधा प्रकट नहीं करते। वे चुप-चाप काम करने के आदी हैं। नाम प्रकट करना वे संपादकीय सभ्यता के प्रतिकूल समझते हैं। कर्नल हेनरी वाटरसन और मि० आर्थर ब्रिसवेन के समान बहुत ही कम संपादक हैं, जिनके नाम का परिचय जनता को है। मि० ब्रिसवेन अमेरिका में उसी तरह प्रसिद्ध हैं, जिस तरह इँगलैंड में "टाइम्स"-पत्र के स्वामी लॉर्ड नार्थक्लिफ़ थे। परंतु वहाँ के संपादकों के चुप-चाप काम करने पर अपने को गुप्त रखने से यह नहीं समझ लेना चाहिए कि वे अयोग्य हैं, अथवा उनका वेतन कम है। हमारे देश के लोगों को यह सुनकर आश्चर्य होगा कि वहाँ पर कई-एक समाचार-पत्रों के संपादकों का वेतन संयुक्त-राज्य, अमेरिका, के प्रेसिडेंट के वेतन से कहीं अधिक है! वहाँ पत्रों के प्रचार का यह हाल है कि कई-एक समाचार-पत्रों के ८० लाख से भी अधिक ग्राहक हैं।

अमेरिकन लोगों को इस बात का दृढ़ विश्वास है कि संपादकों के हाथ में ही संसार के राज्य-शासन की बाग़-डोर है; क्योंकि संपादक अपनी लेखनी के प्रभाव से जनता के विचारों को अपनी ओर आकर्षित कर सकता है। असल में बात भी यह ठीक है। वहाँ की गवर्नमेंट पर समाचार-पत्रों का अच्छा प्रभाव है। गवर्नमेंट समाचार-पत्रों का रुख़ देखकर बहुत-कुछ काम करती है। गवर्नमेंट को जनता के विचारों का पता समाचार-पत्रों द्वारा ही लगता है। यदि वहाँ समाचार-पत्र न हों, तो वहाँ की गवर्नमेंट को, हमारे देश की गवर्नमेंट के समान, जनता के भावों को, अँधेरे में, ख़ुफ़िया पुलिस की निगाह से ही टटोलना पड़े।

एक समाचार-पत्र में एक से अधिक संपादक काम करते हैं। कुछ अख़बारों को छः-सात संपादकों तक की ज़रूरत पड़ती है। इन संपादकों को विषय बाँट दिए जाते हैं। वे अपने-अपने विषय के लिये लेखों और समाचारों का संग्रह करते हैं। कुछ समय पहले संपादकगण अपने पत्रों में अपने विचार

प्रकट करते थे, और लोग उनको ध्यान से पढ़ते भी थे। परंतु अब संपादकीय विचारों की क़दर घट गई है। कुछ प्रभावशाली संपादकों के विचारों के सिवा साधारण पत्रों के विचारों पर ध्यान देना तो दूर रहा, उन बेचारों के विचारों को लोग पढ़ते तक नहीं हैं। इसलिये संपादकीय विचारों को प्रकाशित करने की जगह समाचारों को, संग्रह करके, प्रकाशित करने का प्रयत्न दिन-दिन वहाँ बढ़ता जाता है। वहाँ संपादक लोग जब कभी यह चाहते हैं कि हमारे विचार भी लोग पढ़ें, तब वे ख़ास तौर पर एक सूचना प्रकाशित करके अपने ग्राहकों से यह प्रार्थना करते हैं—"इस अंक में जो विचार मैंने प्रकट किए हैं, उनको कृपा कर अवश्य पढ़िएगा।" तब कहीं लोग इस ओर ध्यान देते हैं।

समाचारों का संग्रह करने में समाचार-पत्रों के संचालक बड़ी रक़म ख़र्च करते हैं। प्रत्येक समाचार-पत्र के संचालक की यह प्रबल इच्छा और प्रयत्न होता है कि ग़ैरमामूली और ताज़ी-से-ताज़ी ख़बर समाचार-पत्र में सब से पहले प्रकाशित हो। वहाँ पर यह विचार दिन-दिन प्रचार पाता जा रहा है कि किसी विषय पर अपने निजी विचार प्रकट करने की अपेक्षा उस विषय की सच्ची बातें ही प्रकाशित की जायँ; क्योंकि सच्ची बातों के प्रकट हो जाने से जो प्रभाव पबलिक पर पड़ता है, वह प्रभाव उस विषय की आलोचना करने से, या उस पर किसी व्यक्ति-विशेष का मत प्रकट होने से, नहीं पड़ता। कुछ दिन हुए, एक अमेरिकन पत्र ने मज़दूर-संघ के संबंध में अपने विचारों को न प्रकट करते हुए केवल तत्संबंधी सच्चे समाचारों को प्रकाशित करके लोक-मत को अपने अनुकूल बना लिया था। वह इस प्रकार की कामियाबी हासिल करके मज़दूरों का जितना उपकार कर सका, उतना उपकार अपने विचारों को प्रकट करके कभी नहीं कर सकता था।

नेपोलियन का कथन है कि किसी बात को बार-बार दुहराना अवश्य लाभ-दायक प्रमाणित होता है। इस बात को अमेरिकन समाचार-पत्रों के संपादक ख़ूब अच्छी तरह समझते हैं। किसी बात का बार-बार कहना यद्यपि बहुधा बुरा प्रतीत होता है, तथापि यदि कोई बात बार-बार कही जाय, तो फल अवश्य कुछ-न-कुछ होता है। अतएव वहाँ के समाचार-पत्र जब किसी बात के पीछे पड़ जाते हैं, तब उस बात को बार-बार दुहराते हैं; उसके संबंध के जो समाचार उन्हें मिलते हैं, उनको तुरंत प्रकाशित करते हैं; और, यह क्रम वे तब तक जारी रखते हैं, जब तक उन्हें सफलता प्राप्त न हो जाय, या उसका कुछ-न-कुछ परिणाम न निकल आवे। योरप के गत महायुद्ध के अवसर पर अमेरिकन पत्रों में समर की उपयोगिता अथवा सैनिकता पर प्रतिदिन समाचार और संपादकीय विचार प्रकाशित होते रहे, और उनका प्रभाव जनता पर इतना अधिक पड़ा कि सेना के लिये मनुष्य-संग्रह करने में बड़ी आसानी हुई।

अमेरिकन लोग कहा करते हैं कि दैनिक पत्र तो समाचारों के लिये हैं। यदि विचार और लेख पढ़ना हो, तो मासिक पत्र और पुस्तकें पढ़िए। दैनिक पत्रों में लेखों की ज़रूरत नहीं। और, इसी कारण अमेरिकन पत्रों के लिये समाचार पहुँचाने का वहाँ सब से अच्छा प्रबंध है। जिन दैनिक पत्रों में ताज़ी-से-ताज़ी, महत्त्व-पूर्ण ख़बरें सब से पहले छपती हैं, उन्हीं पत्रों की वहाँ ख़ूब बिक्री होती है। 'न्यूयार्क-ट्रिब्यून' के संपादक होरस ग्रीलीलो का कथन है कि समाचार-पत्रों में वे कुल समाचार छापे जाने चाहिए जो छापे जाने के योग्य हों। एक अमेरिकन का कथन है कि "अगर किसी समाचार-पत्र के संपादक के पास यह समाचार भेजा जाय कि अमुक पुरुष को कुत्ते ने काट खाया, तो संपादक तुरंत उत्तर देगा कि यह कोई समाचार नहीं है। कुत्ते तो हमेशा मनुष्य को काटा ही करते हैं। हाँ, अगर कोई आदमी कुत्ते को काटे, तो तुरंत इस समाचार की सूचना दीजिए। मैं उसे अवश्य छापूँगा।' एक समय एक अमेरिकन पत्र में यह समाचार छपा कि अमुक मनुष्य ने अमुक प्रकार की १७ बड़ी-बड़ी मछलियाँ खा लीं। बस, इस समाचार के छपते ही बहुत-से समाचार-पत्र-संपादकों ने उसे अपने-अपने पत्र में उद्धृत कर दिया। आश्चर्य-जनक घटनाओं को बड़े लंबे-लंबे मोटे अक्षरों के हेडिंग देकर छापना वहाँ बहुत पसंद किया जाता है। समाचार-पत्र पढ़नेवाले लोग बहुधा हेडिंग पढ़कर ही अख़बार का मतलब समझ लेते हैं, और केवल हेडिंग पढ़ने को ही अख़बार ख़रीदते हैं।

वहाँ पर अच्छे और बुरे समाचार-पत्र की परख समाचारों के शीघ्र प्रकाशित होने से की जाती है। वहाँ

कहावत है कि "यदि कभी नरक का द्वार खुलनेवाला हो, तो जिस समाचार-पत्र में वहाँ के समाचार सब से पहले प्रकाशित होंगे, वही पत्र सर्वोत्तम समझा जायगा।" वहाँ रिपोर्टरों (संवाद-दाताओं) की योग्यता संपादकों से भी बढ़कर समझी जाती है। संवाद-दाता ही वहाँ के पत्रों की जान हैं। जिस पत्र के संवाद-दाता योग्य हों, वही पत्र श्रेष्ठ गिना जायगा, और उसी की खपत भी ख़ूब होगी। वहाँ पर लाखों रुपए संवाद-दाताओं के वेतन और यात्रा में ख़र्च किए जाते हैं। समाचार-पत्रों के दफ़्तर में तारों का ताँता बँधा रहता है। खेल-तमाशों की ख़बरें बड़ी तेज़ी के साथ छापी जाती हैं, और उन्हें लोग बड़े शौक़ से पढ़ते भी हैं। किसी खेल के ख़तम होते ही, दस मिनट बाद, अख़बार में ख़बरें छपकर बाज़ार तक पहुँच जाती हैं! खेल के मैदानों में टेलीफ़ोन या तार लगा रहता है, और वहाँ से संवाद-दाता समाचार-पत्र के दफ़्तर को बराबर समाचार पहुँचाता है। ये समाचार लगातार कंपोज़ होते रहते हैं। उधर खेल की समाप्ति, इधर कंपोज़ ख़तम! दस मिनट में ही पत्र ने छपकर समाचार घर-घर पहुँचा दिया। जिस तेज़ी से समाचार अख़बार के दफ़्तरों में पहुँचते हैं, और जिस तेज़ी से प्रेस में काम होता है, उसका अनुमान करना कठिन है। जिस प्रकार जादूगर अपना खेल करता है, वही दशा वहाँ के पत्रों की है।

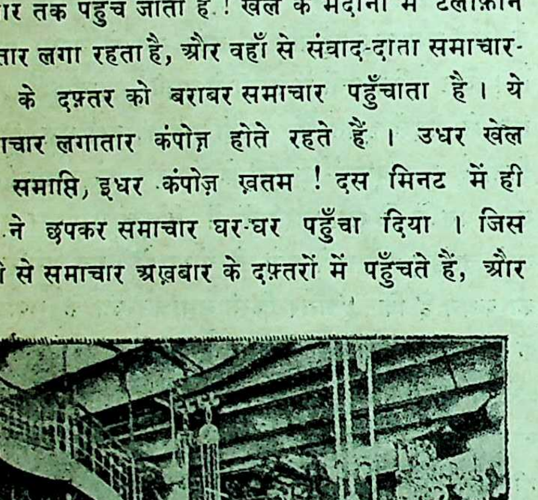

'न्यूयार्क़-वर्ल्ड' का प्रेस

अमेरिकन समाचार-पत्रों में भाषा की ओर कुछ विशेष ध्यान नहीं दिया जाता। भाषा सरल, सुगम, सब के समझने योग्य काम में लाई जाती है। समाचार-पत्रों में ऐसी कठिन भाषा का प्रयोग नहीं किया जाता, जिसको समझने के लिये कोष देखने की ज़रूरत पड़े। वहाँ इस बात का ध्यान रक्खा जाता है कि साधारण पढ़े-लिखे लोग भी समाचार-पत्रों को पढ़कर उन्हें समझ सकें। वहाँ के पत्र-संपादक कठिन-से-कठिन विषयों को सरल भाषा में समझाने का प्रयत्न करते हैं, और इसी कारण कम-पढ़े मज़दूर लोग भी वहाँ समाचार-पत्रों से बहुत लाभ उठाते हैं।

संवाद-दाताओं का काम समाचार-संग्रह करना है। पत्र का संपादन करना उनका काम नहीं। न वे समाचारों का संग्रह करने में अपनी कोई राय देते हैं, और न समाचार-संबंधी आलोचना करते हैं। वे केवल ऐसे समाचारों का संग्रह करते हैं, जो स्वयं अपनी महत्ता पबलिक पर प्रकट करते हैं। संसार में कहाँ पर क्या हो रहा है, बस, इसी बात की खोज में संवाद-दाता रात-दिन लगे रहते हैं। ख़बरों का संग्रह करना-भर संवाद-दाता का काम है। उन्हें काट-छाँटकर उचित स्थान पर संपादक प्रकाशित करते हैं। महत्त्व की ख़बरें आम तौर पर पत्र के पहले पृष्ठ पर दी जाती हैं। जिस प्रकार दूकानदार अपनी दूकान की अच्छी-अच्छी चीज़ें दूकान के आगे के हिस्से में रखता है, उसी प्रकार वहाँ के समाचार-पत्र महत्त्व की ख़बरें पहले पृष्ठ पर प्रकाशित करते हैं।

अमेरिकन लोगों को अपने नाम का बहुत बड़ा ख़याल है। वे समाचार-पत्रों में अपने नाम को छपा हुआ देखकर बहुत प्रसन्न होते हैं, ख़ासकर जब वह समाचार पहले ही पृष्ठ पर छपा होता है। अमेरिकन लोगों की इस नाम प्रकाशित होने की आतुरता की हँसी उड़ाने के तौर पर कहा जाता है कि "अमेरिकन लोग शुक्रवार को इसलिये मरना पसंद करते हैं कि शनैश्चर की सुबह को मौत की ख़ास ख़बरों में उनका नाम छपे।" बड़े-बड़े समाचार-पत्रों के दफ़्तरों में बड़े-बड़े नगरों से तार लगे हुए हैं। वहाँ से बराबर, बिना किसी रोक-टोक के, समाचार पहुँचते रहते हैं। प्रत्येक नगर और गाँव तक में वेतन-भोगी संवाद-दाता रहते हैं। वे नियमानुसार नित्य स्थानीय समाचार पहुँचाया करते हैं। संसार का ऐसा कोई भी बड़ा नगर न होगा, जहाँ अमेरिका के

किसी-न-किसी बड़े समाचार-पत्र का संवाद-दाता न हो। गत योरप के महायुद्ध के समय अमेरिकन समाचार-पत्रों ने बहुत भारी-भारी वेतन देकर प्रत्येक युद्ध-क्षेत्र में अपने संवाद-दाता भेजे थे। वे लोग वहाँ से युद्ध के केवल समाचार ही न भेजते थे, उन्होंने युद्ध-संबंधी चित्रों और नक़्शों के पाने का भी प्रबंध किया था।

अमेरिकन समाचार-पत्रों के दफ़्तरों में एक पुस्तकालय अवश्य होता है। इस पुस्तकालय में संपादन-कला-संबंधी सामग्री के अलावा समाचार-पत्रों और मासिक पुस्तकों से कटे हुए उपयोगी लेखों की विषयानुसार फ़ाइलें भी मौजूद रहती हैं; जिनमें से आवश्यकता पड़ने पर तुरंत आवश्यक लेख देखे जा सकते हैं। संसार के प्रसिद्ध-प्रसिद्ध पुरुषों, इमारतों और रमणीय स्थानों के फ़ोटो भी मौजूद रहते हैं। जिस समय जिसकी ज़रूरत होती है, उसी समय उसे तुरंत, बिना किसी विशेष परिश्रम अथवा खोज-तलाश के, काम में ले आते हैं। इस विभाग का काम यह रहता है कि जो वस्तु जब माँगी जाय, वह तभी तुरंत दी जाय। यदि योरप में कोई राजा मर जाय, अथवा कोई जापानी राजनीतिज्ञ संसार में न रहे, अथवा कोई बड़ा प्रसिद्ध शिल्पी या विद्वान् इस असार संसार को त्यागकर परलोक सिधार जाय, तो उसकी मृत्यु के कुछ घंटे बाद ही उसका चित्र और चरित्र समाचार-पत्रों में प्रकाशित होकर घर-घर पहुँच जायगा।

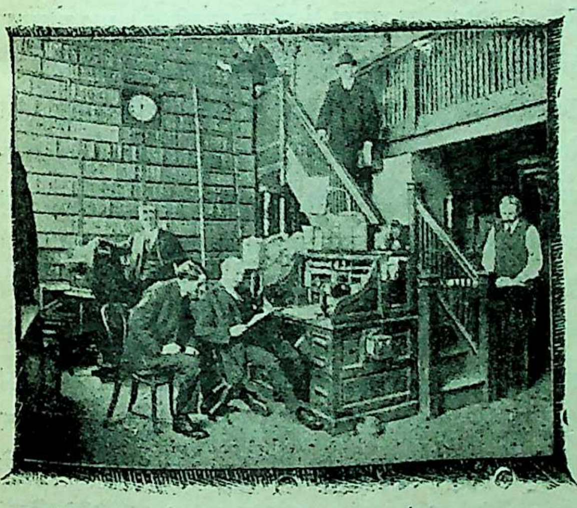

एक मेट्रोपोलीटन दैनिक का फ़ोटो-विभाग
(देखिए, निगेटिव फ़ाइलों से ऊँची अलमारियाँ खचाखच भरी हुई हैं)

चित्रों का प्रकाशित करना अमेरिकन पत्र बहुत आवश्यक समझते हैं। कोई ऐसा अमेरिकन पत्र आप न देखेंगे, जिसमें दो-चार चित्र न हों। चित्रों का संग्रह करने के लिये वहाँ के समाचार-पत्र-संचालकों को बड़ा परिश्रम और ख़र्च करना पड़ता है। जगह-जगह फ़ोटो-ग्राफ़रों को भेजकर चित्र मँगाए जाते हैं। एक-दो फ़ोटो-ग्राफ़र तो संपादकीय स्टाफ़ में नौकर ही रहते हैं; जो वहाँ ज़रूरत होते ही तुरंत फ़ोटो ले आते हैं। यों तो अमेरिकन पत्रों में हर प्रकार के चित्र छपते हैं, परंतु स्त्रियों के—ख़ासकर उनके 'फ़ैशन' के—चित्र बहुतायत से छापे जाते हैं। नित्य-प्रति के व्यवहार, खेल-कूद, तमाशे, जलसे और क्लब आदि से संबंध रखनेवाले चित्र छापने का बहुत ख़याल रहता है। बहुत-से समाचार-पत्र ख़बरें भी चित्रों ही द्वारा देते हैं। समाचारों और लेखों के प्राप्त करने में जितनी कठिनता नहीं होती, उतनी कठिनता चित्रों की तलाश और संग्रह करने में होती है। परंतु हर तरह का कष्ट उठाकर और प्रचुर धन ख़र्च करके वहाँ के समाचार-पत्र-संचालक पत्र को सर्वोत्तम बनाने का प्रयत्न और परिश्रम करते हैं।

अमेरिका के सारे प्रसिद्ध-प्रसिद्ध समाचार-पत्र एसोसिएटेड-प्रेस के मेंबर हैं। इस एसोसिएशन का यह काम है कि वह संसार के कोने-कोने तक की ख़बरें, जहाँ मानव शक्तियाँ कुछ भी कार्य करती हैं, संग्रह करके, अपने मेंबरों के पास भेजने का प्रबंध करे। समाचार-पत्रों के मालिकों ने समाचार-संग्रह की इस विशाल दैवी शक्ति का संगठन सहयोगी समितियों के सिद्धांत पर किया है। एसोसिएशन का प्रत्येक मेंबर उसका हिस्सेदार है; परंतु जो कुछ लाभ होता है, उसे कोई भी हिस्सेदार नहीं लेता। एसोसिएशन में जो कुछ ख़र्च पड़ता है, उसे सब मेंबर आपस में बाँट लेते हैं। अमेरिकन-प्रेस-एसोसिएशन के इस समय ९५० मेंबर हैं। प्रत्येक मेंबर को बोर्ड ऑफ़ डाइरेक्टर्स में मत देने का अधिकार है, और इसी बोर्ड ऑफ़ डाइरेक्टर्स के बहु-मत से जेनरल मैनेजर चुना जाता है। उसे समाचारों का संग्रह करने और भेजने का अधिकार रहता है।

समाचार-संग्रह करने के लिये इस संस्था ने संसार को चार भागों में बाँट दिया है। ये चारों विभाग एक दूसरे से संबंध रखते हैं। इन विभागों के नाम हाउस-एजेंसी,

वाक्र-एजेंसी और रूटर-एजेंसी हैं, और ये तीनों विभाग अमेरिकन एसोसिएटेड-प्रेस से संबंध रखते हैं। हाउस-एजेंसी, जिसका हेड क्वार्टर पेरिस में है, फ्रांस, इटली, स्पेन, पुर्तगाल, बेलजियम, उत्तरी आफ़िका और दक्षिणी अमेरिका के समाचार पहुँचाती है। वाक्र-एजेंसी, जिसका हेड क्वार्टर बर्लिन में है, जर्मनी, आस्ट्रिया, हंगरी, स्लैव और स्कंडिनेवियन राष्ट्र के समाचार भेजती है। रूटर-एजेंसी बृटिश-साम्राज्य, जापान, चीन और पूर्वी देशों में जो अमेरिकन टापू हैं, उनके समाचार देती है। और, ख़ास संयुक्त-राज्य अमेरिका, अलस्का, फ़िलिपाइन्स, हवाइन टापू, मेक्सिको और मध्य-अमेरिका की रियासतों के समाचारों का प्रबंध एसोसिएटेड-प्रेस स्वयं करता है। एसोसिएटेड-प्रेस ने टेलीग्राफ़ और टेलीफ़ोन का भी बहुत कुछ स्वयं प्रबंध किया है। क़रीब ४० हज़ार मील तार इस संस्था ने अपना लगा रक्खा है।

समाचार-पत्र बेचनेवाला लड़का

अमेरिका के दैनिक पत्रों में इतवार के दिन का पत्र ख़ास तौर पर दिलचस्प होता है। यह नित्य के पत्रों के मुक़ाबले में तिगुना होता है। इतवार के दिन के पत्र में सात-आठ विभाग होते हैं। पहले विभाग में आम समाचार, दूसरे में खेल-तमाशों का हाल, तीसरे में घर की ज़रूरी बातें, चौथे में सोसाइटी और फ़ैशन, पाँचवें में साहित्य, छठे में नाटक, सातवें में हास्यमय विनोदात्मक चित्र और आठवें में विज्ञापन रहते हैं। बहुधा इनमें रंगीन चित्र भी प्रकाशित होते हैं। ये पत्र आठ पृष्ठ से लेकर दो सौ पृष्ठ तक के होते हैं। ये इतवार के पत्र बहुधा मासिक पत्रों से भी, लेखों और चित्रों के ख़याल से, बढ़े-चढ़े रहते हैं। इन पत्रों में बहुधा ऐसे सुंदर चित्र प्रकाशित होते हैं, जिनको लोग बड़े शौक़ से ख़रीदते हैं।

अमेरिकन समाचार-पत्र केवल समाचार और लेख प्रकाशित करके ही संतोष नहीं करते। वे देश-हित के और भी अनेक काम करते हैं। वे समाज की सेवा के लिये एक प्रकार की संस्थाएँ हैं। वे ग़रीबों को मुफ़्त बर्फ़ और दूध देते हैं; गरमी के दिनों में शहरों में बाहर हवा खिलाने का प्रबंध करते हैं; पढ़नेवालों को उन्नत स्कूलों और कॉलेजों का पता बताते हैं। यह विभाग प्रत्येक अच्छे समाचार-पत्र के दफ़्तर में रहता है; जहाँ से विना कुछ लिए या एहसान जताए हुए ख़ुशी के साथ, जो हाल दरियाफ़्त किया जाय, वह बताया जाता है। वहाँ पर कुछ समाचार-पत्रों ने यहाँ तक प्रबंध कर रक्खा है कि यदि उस नगर में, जहाँ से समाचार-पत्र प्रकाशित होता है, कोई यात्री सैर को आवे, तो वहाँ से शहर की मशहूर-मशहूर जगहों और उत्तम-उत्तम इमारतों आदि को दिखाने का प्रबंध कर दिया जाता है, और जो बात वह जानना चाहे, उसे बता दिया जाता है। और, इस सेवा के बदले में कहा जाता है कि "आप फिर आइए, और हमारे योग्य जो सेवा हो, कहिए।" वहाँ पर 'स्टेट' नाम का एक पत्र है। उसने किसानों के लाभ के लिये एक "कृषि-प्रयोग-शाला" खोल रक्खी है। एक गोशाला भी खोली गई है। वहाँ विना कुछ लिए ही किसानों को कृषि-संबंधी अनुभव तथा दूध और मक्खन तैयार करने के तरीक़े मुफ़्त बताए और सिखाए जाते हैं। समाचार-पत्र के दफ़्तरों में हर बात के जानकार नौकर रहते हैं। उनके ग्राहक जो बात दरियाफ़्त करते हैं, उसी का उत्तर समाचार-पत्र के ऑफ़िस से दिया जाता है। हमारे यहाँ, भारत में, तो समाचार-पत्रों के संपादक पत्रों का उत्तर तक देना अपनी शान के ख़िलाफ़ समझते हैं। अगर छपने के लिये कोई लेख भेजा जाय, तो पुरस्कार मिलना तो दूर रहा, लेख वापस करने के लिये डाक के टिकट माँगे जाते हैं। और, अगर भूल से किसी ने टिकट न भेजे, तो लेख भी ग़ायब! फिर चाहे आप दस पत्र लिखिए, जवाब भी नदारत!

लोगों को सलाह-मशविरे देने का काम भी वहाँ के समाचार-पत्र ख़ास तौर पर करते हैं। बहुधा नवयुवक

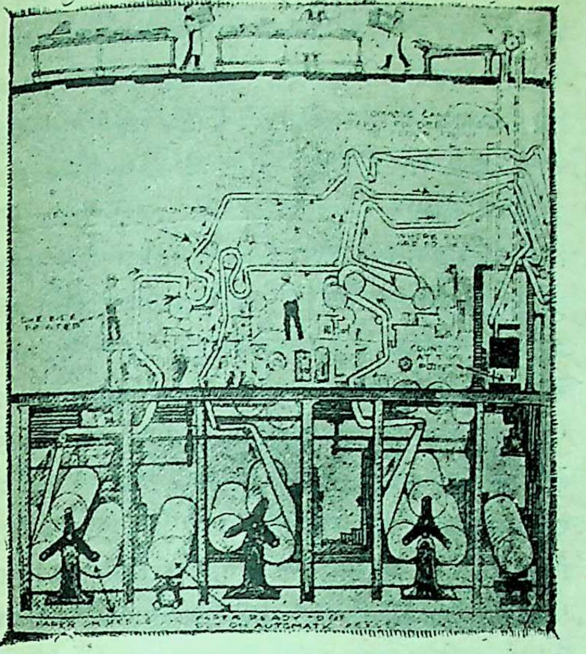

न्यूयार्क-टाइम्स का प्रेस आदि

(काग़ज़ के तीन रोल अनेक मशीनों में होकर, १ मिनट में १ टन से भी अधिक की गति से, छप और मुड़मुड़ाकर अपने आप तैयार हो रहे हैं)

स्त्रियाँ और युवा पुरुष संसार-प्रवेश अथवा विवाह के संबंध में बहुत-सी बातें, समाचार-पत्रों द्वारा अपने विचारों और शंकाओं को प्रकट करके, जान लेते हैं। नौकरी, व्यापार, व्यवसाय, यात्रा या शिक्षा, कोई भी ऐसा काम नहीं है, जिसकी जानकारी वहाँ समाचार-पत्रों द्वारा न प्राप्त कर ली जाती हो।

वहाँ पर बहुत-से ऐसे पत्र हैं, जिनके दिन में दस-बारह संस्करण तक निकलते हैं ; अर्थात् घंटे-घंटे-भर पर वहाँ समाचार-पत्र प्रकाशित होते हैं। इन पत्रों में व्यवसाय-संबंधी समाचार बहुतायत से छपते हैं। इस प्रकार के सर्व-व्यापी पत्रों को चलाने के लिये बीस-तीस लाख रुपयों की ज़रूरत पड़ती है। 'न्यूयार्क-टाइम्स'-पत्र का दैनिक ख़र्च ३० हज़ार रुपए से कम नहीं है। इस पत्र का कार्यालय आकाश से बातें करता है। बड़े-बड़े समाचार-पत्रों के दफ़्तरों में दो हज़ार मनुष्यों से कम काम नहीं करते। प्रत्येक विभाग के कार्यकर्ता विशेषज्ञ होते हैं। उच्च कोटि के एक पत्र (संपादकीय विभाग) में कम-से-कम चीफ़ एडीटर, मैनेजिंग एडीटर, न्यूज़-एडीटर, मेक-अप-एडीटर, टेलीग्राफ़-एडीटर, स्पोर्टिंग-एडीटर, एक्सचेंज-एडीटर, ड्रामेटिक एडीटर, एडीटोरियल राइटर्स, सोसाइटी-एडीटर, रेल-रोड-एडीटर, संडे-एडीटर, सिटी-एडीटर, इतने आदमी काम करते हैं।

पचास वर्ष पहले अमेरिकन पत्रों के संचालक अपने ग्राहकों से पत्र के मूल्य के बदले में लकड़ियों के गट्ठे, अंडों की टोकरियाँ अथवा आलू आदि पदार्थ ले लिया करते थे। पर वह समय अब निकल गया। अब तो केवल विज्ञापनों से इतनी आमदनी हो जाती है कि एक पत्र उसी से मज़े में चलाया जा सकता है। जिस समाचार पत्र के जितने अधिक ग्राहक होते हैं, उसे उतने ही अधिक विज्ञापन छापने को मिलते हैं। इसी कारण समाचार-पत्र-संचालक, जहाँ तक हो सकता है, अपने पत्रों का मूल्य कम रखते हैं। कोई-कोई पत्र-संचालक तो लागत से भी कम मूल्य पर पत्र बेचते हैं, और इस कमी को विज्ञापनों की आमदनी से पूरा करके बहुत लाभ उठाते हैं।

ठाकुर सूर्यकुमार वर्मा

श्रीपुरस्थ शिला-लेख

(२)

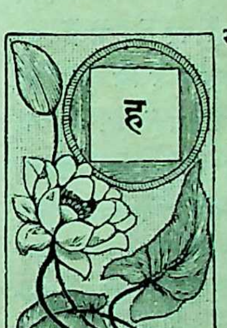

हमने अपने पूर्व लेख*में यह बतलाया है कि श्रीपुर में कई एक शिला-लेख मिले हैं। गंधेश्वर-मंदिर में जो शिला-लेख पाया गया है, उसमें महाशिवगुप्त के पाँच पूर्वजों के नाम आए हैं। हमारे वर्णित शिला-लेख में महाशिवगुप्त के वंश के विषय में और कोई नई बात नहीं मालूम होती ; क्योंकि इसमें केवल उसके पितामह तक के ही समय का हाल दिया गया है। पर छठे श्लोक † से केवल इतना जाना जाता है कि

---

* देखो फाल्गुन संख्या, पृष्ठ १८६

† दुर्धर्षवैरिवरवारणदारणेषु
सीरायुधः स इव कंसनिषूदनस्य ।
राजाधिकारधवलः सबलो बभूव
यस्याग्रजोऽप्यनुचरश्चरतो रणेषु ॥ ६ ॥

Even his elder brother shining with regal power became his follower in battles and (through him)

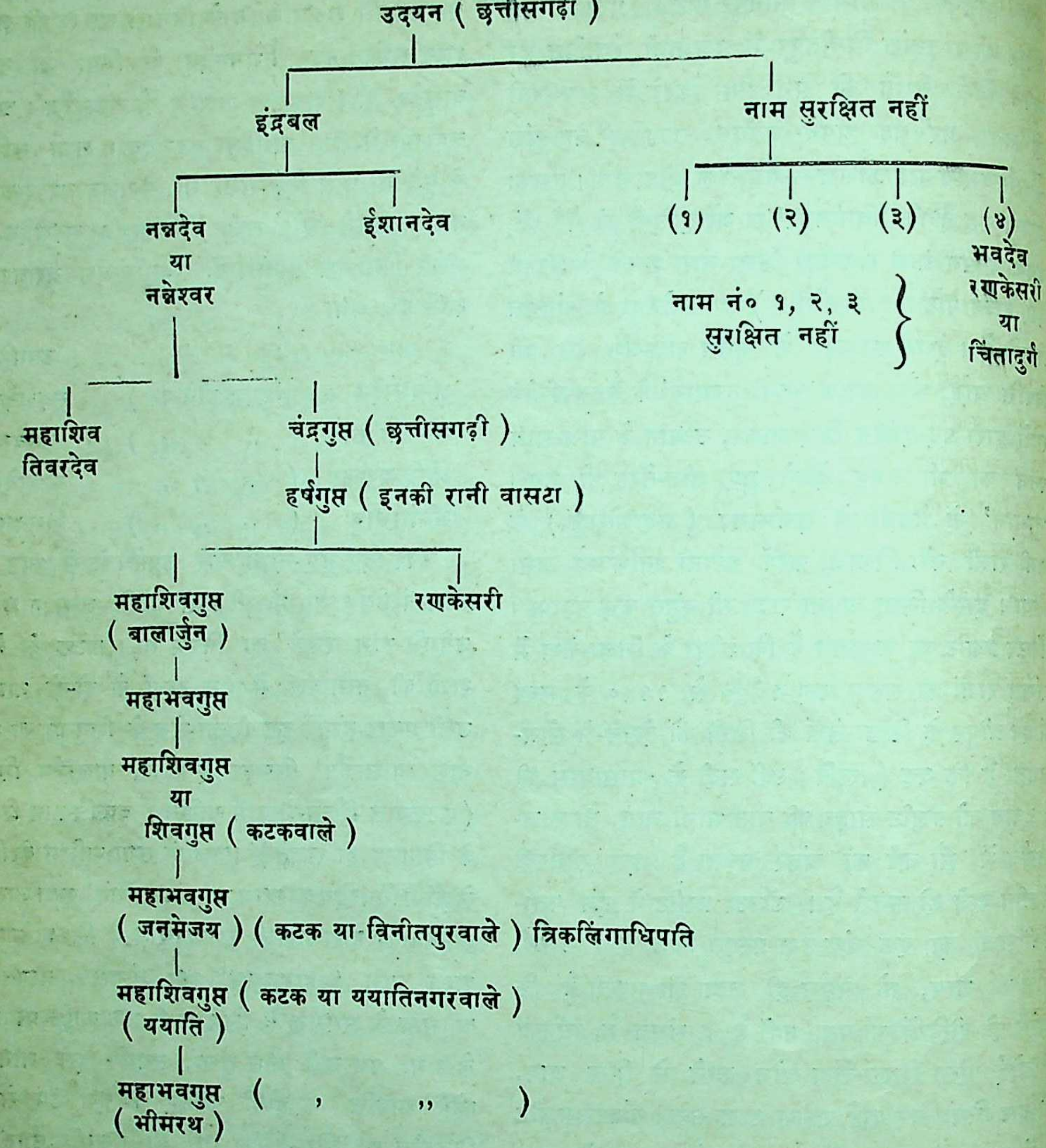
उदयन (छत्तीसगढ़ी)
इंद्रबल
नाम सुरक्षित नहीं
नन्नदेव या नन्नेश्वर
ईशानदेव
(१)
(२)
(३)
(४) भवदेव रणकेसरी या चिंतादुर्ग
नाम नं० १, २, ३ सुरक्षित नहीं
महाशिव तिवरदेव
चंद्रगुप्त (छत्तीसगढ़ी)
हर्षगुप्त (इनकी रानी वासटा)
महाशिवगुप्त (बालार्जुन)
रणकेसरी
महाभवगुप्त
महाशिवगुप्त या शिवगुप्त (कटकवाले)
महाभवगुप्त (जनमेजय) (कटक या विनीतपुरवाले) त्रिकलिंगाधिपति
महाशिवगुप्त (कटक या ययातिनगरवाले) (ययाति)
महाभवगुप्त (, ,,) (भीमरथ)

हमारे इस श्रीपुर के शिला-लेख से स्पष्ट है कि बालार्जुन 'महाशिवगुप्त' यथेष्ट श्री-शक्ति-संपन्न रहा, और उसने सत्कीर्ति तथा सफलता के साथ 'श्रीपुर' में राज्य किया । संभवतः उसके पुत्र के राजत्व-काल में विजय-लक्ष्मी रूठ गई, और उसे पैतृक राजधानी श्रीपुर त्यागने की विपत्ति से ग्रस्त होना पड़ा । बालार्जुन महाशिवगुप्त के इस पुत्र का नाम कदाचित् महाभवगुप्त रहा होगा । इस महाभवगुप्त का कोई लेख या दान-पत्र अब तक नहीं मिला । जिसको पैतृक राजधानी त्यागनी पड़ी हो, जो वैरिवृंद-कृत दारुण पराभव के अपमानाग्नि से विदग्ध हो, जो विपत्ति की चरम सीमा में पहुँचकर भाग्य-परीक्षार्थ आत्मगोपन-पूर्वक बल-संचय करता हो, उसे शिला-लेख या दान-पत्र में अपनी 'करुण कहानी' अंकित करने कराने का विचार ही असह्य बोध होता । अवश्य ही वह वैसा करता, यदि उसने अपनी उस विताड़ित अवस्था में भी छोटे-मोटे शत्रु पर जय-लाभ किया होता । परंतु उसके पुत्र शिवगुप्त ने अपने पिता के स्थापित नवीन दुर्ग में अपने को सबल और सुरक्षित पाकर स्वपूर्वजों के विगत वैभव को प्राप्त करने की चेष्टा आरंभ की । यद्यपि वह स्वयं

'त्रिकलिंगाधिपति' का गौरव-वर्द्धक पद धारण न कर सका, तथापि उसके पुत्र तथा पौत्र के उस आख्या से अलंकृत होने का मूल-कारण उसी की रण-कुशलता और नीति-निपुणता थी। राजा जनमेजय ने 'त्रिकलिंग' पर जय प्राप्त करके 'त्रिकलिंगाधिपति' कहलाने का गौरव प्राप्त किया, और अपने पूर्वजों के नाम को फिर से जगाया।

कलचुरी-वंशीय कर्णदेव (त्रिपुरीवाले) के सन् १०४२ ई० के दान-पत्र में, जो बनारस में मिला है, उसके दानकर्ता कर्णदेव के नाम के साथ 'त्रिकलिंगाधिपति' का विशेषण भी लिखित है। सन् १०४२ से सन् ११७४ ई० तक कर्णदेव के उत्तराधिकारी अपने नाम के साथ 'त्रिकलिंगाधिपति' जोड़ते रहे हैं। परंतु * पाटना (ज़िला संबलपुर) में पाए गए एक दान-पत्र में सोम-वंशीय राजा की चेदि-वंशीय राजों पर विजय-प्राप्ति की बात लिखी है। ज्ञात होता है, कर्णदेव की संतानों से जनमेजय के उत्तराधिकारियों का परस्पर युद्ध होता रहा है।

जनमेजय के वंशधर अपने पूर्वजों की प्रिय राजधानी 'श्रीपुर' को हैहयों या चेदियों से पुनः प्राप्त करने के उद्योग में अवश्य रहे होंगे।

इन सोम-वंशीय राजों के दान-पत्रों और लेखों से प्रकट होता है कि उनकी प्रधान और प्रथम राजधानी श्रीपुर में थी। पुनः जब वे उड़ीसा की ओर चले गए, तब ययातिनगर या विनीतपुर में राजधानी स्थापित की गई। कई दान-पत्रों में 'श्रीमतो विजयकटकात्' लिखा है। इसका अर्थ किया गया है—From the victorious Katak, the Capital इस अर्थ के अनुसार कई विद्वान् प्रसिद्ध नगर 'कटक' को सोम-वंशियों की राजधानी मानते हैं, और 'ययातिनगर' तथा 'विनीतपुर' को भी वे 'कटक' के ही अन्य नाम समझते हैं। रायबहादुर हीरालाल 'विजयकटकात्' का अर्थ From the victorious Camp लगाते हैं; क्योंकि जनमेजय के शासन के तीसरे वर्ष के दान-पत्र में 'कटकात्' नहीं, बल्कि उसके स्थान पर "स्कंधावारात्" लिखित है। उन्होंने अनेक प्रमाणों से यह सिद्ध किया है कि महानदी-तट का वर्तमान विनका (जो सोनपुर के राज्य में है) सोम-वंशियों का "विनीतपुर" और 'ययातिनगर' है। राजा ययाति ने अपने राजत्व के ८-९ वर्ष के पश्चात् 'विनीतपुर' का नूतन नामकरण करके, उसे अपने नाम के स्मारक में, 'ययातिनगर' की नवीन आख्या प्रदान की।

उड़ीसे के सोम-वंशीय राजों के कुल १३ दान-पत्र मिले हैं। उनमें—

४ राजधानी से दिए गए थे।
३ प्रमोदोद्यान (Pleasure garden) से,
३ मुरिसिंगा-ग्राम से (विनका से ११ मील पर यह स्थान है),
१ सोनपुर से, और
१ वामंडा-पाटी से।
१३

वामंडा-पाटी से जो दान-पत्र दिया गया था, उसे सोम-वंशीय राजा के अधीनस्थ एक मांडलिक (Fendatory) ने दिया था। पर उसने अपने राजा की राजधानी का नाम 'ययातिनगर' बतलाया है *।

एक बात जो और इस लेख में ध्यान देने योग्य है, वह है उन वृत्तिधारी ब्राह्मणों के निवास-स्थान की दूरी। वे ब्राह्मण मध्य-देश और श्रावस्ती-जैसे सुदूर प्रदेश से आए हुए थे। मध्य-देश, हिमालय तथा विंध्य, और विनशन तथा प्रयाग के मध्यवर्ती देश का नाम था। श्रावस्ती-मंडल अवध-प्रदेश के वर्तमान "सेहत-मेहत" के आस-पास का भूमि-खंड था। ये ब्राह्मण ख़ास सरवार से इस सुदूर उत्कल-प्रदेश में क्योंकर आए, यह एक प्रश्न हो सकता है। इसका उत्तर यह है कि श्रीजगदीशपुरी को जाने का प्रधान मार्ग रत्नपुर, विनका तथा

---

*Journal Bengal Asiatic Society, 1905, Vol. 1 page 6.

* ओं स्वस्ति। श्रीययातिनगरे परममाहेश्वरपरमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वरसोमकुलतिलकत्रिकलिंगाधिपतिश्रीमहाशिवगुप्तराजदेवपादानुध्यातपरममाहेश्वरपरमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वरसोमकुलतिलकत्रिकलिंगाधिपतिश्रीमहाभवगुप्तराजदेवमहीप्रवर्द्धमानकल्याणविजयराज्ये त्रयोदशसंवत्सरं अत्रांके १३ **वामांडापाट्टी**समावासकात्परममाहेश्वरमठरवंशोद्भवकुलतिलककालेश्वरीवरलब्धप्रसादपंचदशपल्लिकाधिपति समाधिगतपंचमहाशब्दमांडलिकराणकश्रीपुंजवोड़सुतः कुशली इत्यादि इत्यादि।

सोनपुर और संबलपुर होकर था । और, इसी कारण सुवंश-जात तथा साक्षर द्विज पंडित इन-इन स्थानों के राजों के अतिथि रहा करते थे। वे समय और सुयोग पाकर, मार्ग की दूरी तथा चोर, डाकू, बदमाशों के भय से, जन्म-भूमि की माया-ममता को शिथिल कर यहीं 'उपनिवेश' स्थापित कर लेते थे । अब भी इन स्थानों में उन ब्राह्मणों के वंशज यत्र-तत्र पाए जाते हैं ।

लोचनप्रसाद पांडेय

बलिदान

(१)

लोक-परलोक को न सोक उर-ओक बीच,
काढ़ि मन-मंदिर ते मोह-मद-द्वेस-लेस ;
संपति सुरेस की असेस सुख-साज वारि,
कीजै पुनि प्रेम-कुंज मंजु मधि त्यों प्रवेस ।
गेह तजि ताकी देहरी पै देह दीजै डारि,
एते बलिदान सों करौ जो बलिदान देस ;
तो पै सुर-धाम छाँड़ि धावै रस-धाम आपु
बैठे बनि द्वारपाल तेरे द्वार द्वारिकेस ।

(२)

नेह निज देह को बिदेह बनि दीजै तजि,
अंग त्याग तीरथ की भसम रमाओ जू ;
सेवा के सितार पै अपार अनुराग-राग
अंतर कुटीर पै निरंतर बजाओ जू ।
देस-हित लीजै पुनि पावन बिराग बेस,
त्यों ही हृदयेस द्वेष दूषन दुराओ जू ;
जीवन अनित्य जानि, मृत्यु-पद भृत्य मानि,
नित्य सत्य सुंदर समाधि में समाओ जू ।

(३)

एक ओर पुन्य की अनी पै जननी है, पुनि
एक ओर ठाढ़्यो पाप प्रेत निज सेन साज ;
त्यों ही बल बाँकुरे अखंड मही-मंडल के
जूझिहैं, प्रचंड रन-दुंदुभी रही है बाज ।
बेर की न बेर, बढ़ि बेगि चलि दीजै तहाँ,
बंधन बिछोरि छोरि लोक के अनेक काज ;
भीति तजि मीच की सनेह कुरु-खेत बीच
देस-हित कीजै बंधु प्रान-बलिदान आज ।

(४)

मोह, मद, मार मारि, जारि मन-मंदिर ते
तामें नित नेह-नेम पावन बढ़ाए ते ;
आस अभिलाष के न हास पै हिरावै हिय,
त्यों ही पुनि पूरन प्रतीति के दिढ़ाए ते।
पाप की पराजय को प्रकट्यो परोपकार,
सोई हृदयेश पुन्य पाठ के पढ़ाए ते ;
बीसौ बिसे बंधु बिसवास करि लीजै आपु,
होत जगदीस बस सीस के चढ़ाए ते।

(५)

आसन न चाहौं पाकसासन को मेरी अंब,
संपति कुबेर की न नेकु ललचाऊँ मैं ;
त्यों ही ऋद्धि-सिद्धि के विलास-परिहासन में
भूलिकै न वैसो हिय आपनो हिराऊँ मैं।
भागि जग चंचल ते अंचल तिहारे बैठि
एती अभिलाष आस पूरी करि पाऊँ मैं ;
प्रानन की मूरि पद-पंकज की तेरे धूरि
भूरि-भूरि आँखिन में पूरि-पूरि लाऊँ मैं।

श्रीचंडीप्रसाद (हृदयेश)

विलंब-भय

बैठ अकेली शांत कुंज में करने दो मुझको श्रृंगार;
नलिनी नाथ, कृपा कर मेरे ऊपर करो न अत्याचार।
घबराहट में मुझे न डालो जल्दी-जल्दी होकर अस्त;
बिगड़ेगा श्रृंगार कहीं, तो विपद्-ग्रस्त होऊँगी व्यस्त।
सोचूँगी, विलंब कर डालो, बीत रहा है सारा काल;
तो जल्दी की तैयारी में हो न सकेगी छटा रसाल।
लौट जायगा नायक मेरा देख नितांत मुझे छवि-हीन;
रह जाऊँगी मैं अबला फिर, अस्वीकृता कुमारी दीन।
भ्रमण किया है गगन-प्रांत में होगे अब नितांत ही श्रांत;
कहीं गमन का नाम न लो फिर, अपने को यों करो न क्लांत।
हो जिस जगह, वहीं पर ठहरो अब तो करो तनिक विश्राम;
मेरी भी घबराहट हर लो एक संग कर दो-दो काम।
फिर ऐसा श्रृंगार करूँ मैं, मम यौवन-वसंत-रस-स्वाद—
चखकर वरण करें व्रज-वल्लभ निज श्रीचरणों में साह्लाद।

गिरीश

विकटा

[चित्रकार—श्रीयुत गुरु स्वामी]

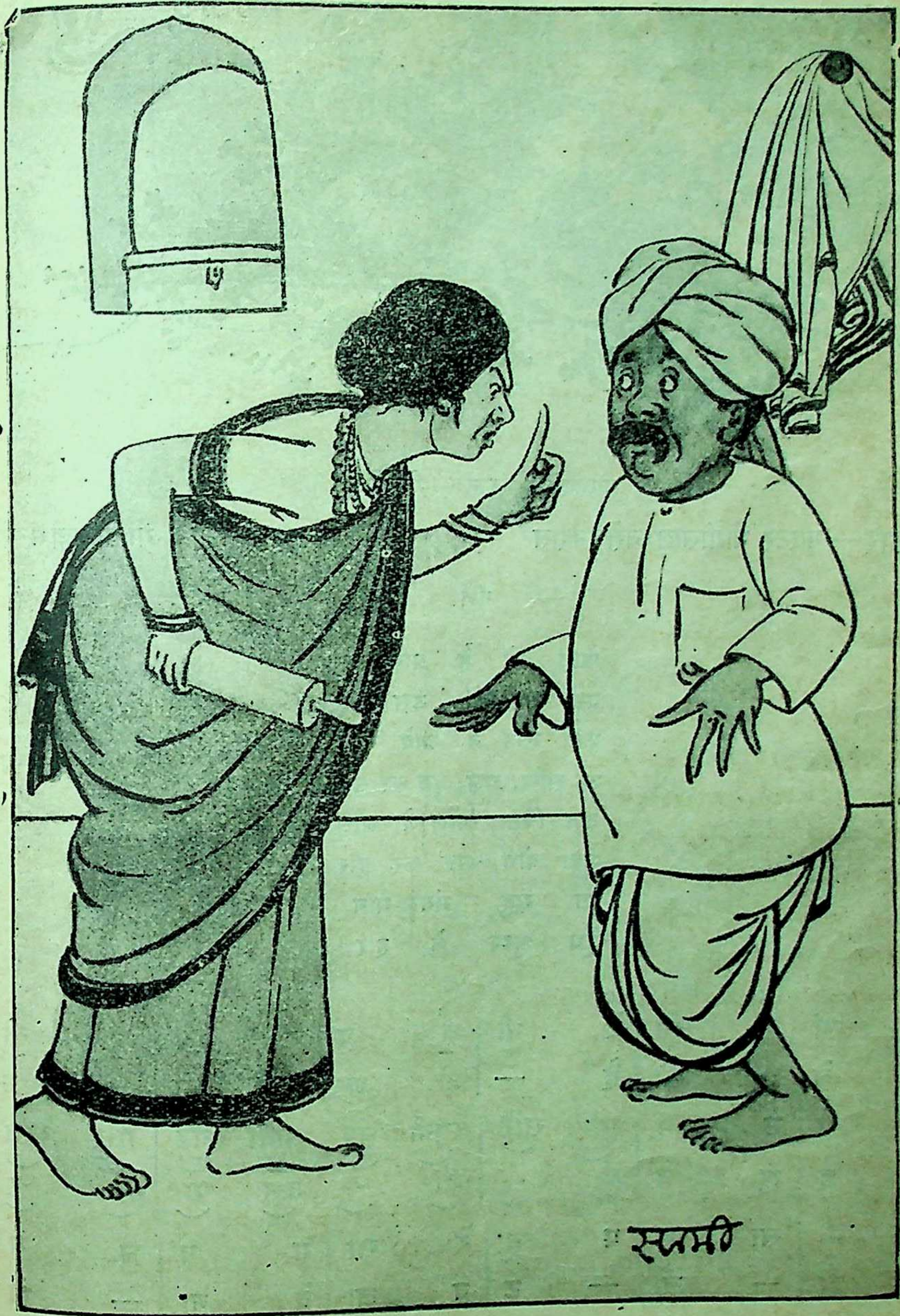

तमकि तर्जनी तानिकै, डारि डरावनि डीठ,
विकटा बेलन लै चली पूजन को पिय-पीठ !

अजमेरी

संगीत-सुधा

[आसावरी—एकताल (विलंबित)]

स्वरकार—मास्टर भोगीलाल नरोत्तमदास

शब्दकार—पं० गोविंदवल्लभ पंत

गीत

आने को है प्राणाधार,
वह सुन वंशी उस पार।
कहीं लौट न जावे नाथ,
उठ सखि, चल, द्रुत कर सोलह शृंगार।
तज चिंता, पोंछ ले आँसू,
जूड़ा बाँध, मुक्त कर द्वार।
गा मृदु मंगल-गान,
गूँथ पुष्प के हार।

४		×		०		२		०		३	
म	सां	—	सां	रें	नी॒	ध॒	प	म	प	ध॒	नी॒
आ	ने	—	को	है	—	प्रा	णा	—	धा	—	र
ध॒	प	म	प	सांनी॒	सांरें	सांनी॒	ध॒प	सांनी॒	ध॒प	मग॒	रेसा
व	ह	सु	न	वं-	--	शी-	--	उस	पा-	--	-र
रे	नी॒	सा	म	प	ग॒	रे	सा	म	प	ध॒	म
क	हीं	—	लौ	—	ट	न	जा	वे	ना	—	थ
प	नी॒	ध॒	प	मप	ध॒प	मप	ध॒प	नीध॒	पम	ग॒रे	-सा
उ	ठ	स	खि	चल	द्रुत	कर	सो-	लह	शृं-	गा-	-र

अंतरा

४		×		०		२		०		३	
प	प	ग॒	म	प	नी॒	ध॒	प	सां	—	सां	—
त	ज	चिं	ता	पों	—	छ	ले	आँ	—	सू	—
रें	नी॒	ध॒	प	सांरें	गरें	सांनी॒	धप	धप	मप	मग	रेसा
जू	—	ड़ा	—	बाँ-	-ध	मु-	-कु	कर	द्धा-	--	-र
गं॒	गं॒	गं॒रेंसांनी॒	ध॒	रें	रें	रेंसांनी॒ध॒	प	सां	मं	गं॒	रें
गा	—	मृ...	डु	मं	—	ग...	ल	गा	—	—	न
सां	नी॒	ध॒	प	धम	पनी	धप	मप	धसां	-सां	सांनी	धप
गूँ	—	—	थ	पु-	-ष्प	के-	--	हा-	--	--	-र

सुमन-संचय

१. शिव-महिम्नःस्तोत्र का रचना-काल

दार्शनिक भावों की दृष्टि से, अथवा भाषा के लालित्य के अभिप्राय से, शिव-महिम्नःस्तोत्र समग्र शिव-स्तोत्रों की अपेक्षा अधिक लोकप्रिय है । वास्तव में, इस स्तोत्र में ईश्वर की सत्ता आदि अनेक विषयों पर दार्शनिक विचार प्रकट किए गए हैं, तथा उनकी सिद्धि के प्रकार का भी उपपादन किया है । छंद 'शिखरिणी' होने से इस स्तोत्र में अद्भुत मनोहरता तथा सुंदरता का समावेश पाया जाता है । इन्हीं कारणों से स्तोत्र के अंत में भक्तों का यह उद्गार * कि शिव से बढ़कर कोई देवता नहीं, और न महिम्नःस्तोत्र से बढ़कर कोई स्तुति है, इस स्तोत्र के विषय में साधारण जनता के अंतस्तल के भावों को प्रदर्शित करने में पर्याप्त है । इसी स्तोत्र के रचना-काल का निर्णय नीचे किया जाता है ।

इस स्तोत्र में आजकल ४० श्लोक मिलते हैं । परंतु मधुसूदन सरस्वती ने केवल ३२ पद्यों पर ही टीका लिखी † है ; जिससे जान पड़ता है कि उस समय इस स्तुति के इतने ही पद्य बनाए गए थे । उससे भी प्राचीन शिला-लेख के आधार पर शुरू के केवल ३१ ही पद्य प्राचीन ठहरते हैं । इंदौर-राज्य के अंतर्गत मालवा-देश में, श्रीनर्मदा तट पर, श्रीअमरेश्वरनाथ महादेव का मंदिर है । उस मंदिर की दीवार पर महिम्नःस्तोत्र के ३१ पद्य खु मिले हैं । यह लेख विक्रम-संवत् ११२० का है । इस जान पड़ता है कि आज से आठ सौ वर्ष पहले महिम्न स्तोत्र के केवल ३१ ही पद्य मूल-भूत थे ; शेष पद्य पाठकों ने अपनी इच्छानुसार बढ़ा दिए हैं । अंतिम ९ श्लो में तो केवल ग्रंथ-कर्ता का नाम तथा स्तोत्र-पाठ के फ का उल्लेख है । निश्चय ही यह अंश मूल स्तोत्र रचना के अनंतर जोड़ दिया गया होगा ।

महिम्नःस्तोत्र के टीकाकारों ने 'पुष्पदंत'-नाम किसी गंधर्व को इसका रचयिता बतलाया है । प मदरास की कितनी ही हस्त-लिखित प्रतियों में कुमारि भट्टाचार्य ही इसके कर्ता लिखे गए हैं * । एक टीका ने कुमारिल को शिव के पुत्र सुब्रह्मण्य का अवतार मा कर इस स्तोत्र का लेखक माना है । ये बातें इस स्तो की प्राचीनता तथा अतिशय आदर को सूचित करती हैं डी० सी० भट्टाचार्य ने प्रबंधचिंतामणि के आधार 'ग्रहिल' को इसका रचयिता माना † है । परंतु अ किसी ग्रंथ से इसकी पुष्टि न किए जाने के कारण मत भी उतना उपयुक्त नहीं जान पड़ता ।

प्रबंधचिंतामणि में इस स्तोत्र का एक पद्य मिल है । इससे इसका समय १२वीं शताब्दी के इ

---

* महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः । (श्लो० ३७)

† निर्णयसागर-प्रेस का संस्करण ।

* कैटेलाग ऑफ़ संस्कृत मैन्युस्क्रिप्ट्स (मदरास),

† इंडियन एंटिकेरी (वर्ष १९१

कभी नहीं हो सकता। परंतु एक और प्रमाण की उपलब्धि से इसकी प्राचीनता स्थिर की जा सकती है। राजशेखर (दशम शताब्दी के आरंभ में) ने अपनी काव्य-मीमांसा * के आठवें अध्याय में 'काव्यार्थयोनि' का विचार किया है। इसमें उसने 'न्याय-वैशेषिक' के सिद्धांत को दिखलानेवाले महिम्नःस्तोत्र के निम्न-लिखित पद्य को, उदाहरण के रूप में, उद्धृत किया है †।

"न्यायवैशेषिकीयः—स किं सामग्रीक ईश्वरः कर्ता इति पूर्वपक्षः। निरतिशयैश्वर्यस्य तस्य कर्तृत्वमिति सिद्धांतः। अत्र—

किमीहः किंकायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च।
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः
कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः।"

यह श्लोक आजकल के पाठ के अनुसार पाँचवाँ है। इसके मूल-स्तोत्र का सत्य अंश होने में किसी प्रकार का संदेह उपस्थित नहीं किया जा सकता। दसवीं शताब्दी के आरंभ में यह स्तोत्र इतना प्रसिद्ध था कि राजशेखर ने पूर्वोक्त पद्य उद्धृत करते समय इसका नाम लेने की आवश्यकता नहीं समझी। अतएव यह स्तोत्र दसवीं शताब्दी से भी अधिक प्राचीन है।

स्तोत्र का एक पद्य सुबंधु (छठी शताब्दी में) की वासवदत्ता के गद्य के सर्वथा अनुकूल है। मुद्रित पुस्तकों का ३२वाँ श्लोक ‡ सर्व साधारण में अत्यंत प्रसिद्ध है। श्लोक का भाव यथार्थ में रमणीय है। वासवदत्ता में भी ठीक ऐसे ही भाव की अवतारणा पाई जाती है ×। अतएव यदि स्तोत्र के उस पद्य को वासवदत्ता के गद्य की छाया पर रचा गया मानें, तो स्तोत्र छठी शताब्दी के पहले का कभी सिद्ध नहीं हो सकता। वासवदत्ता महाकवि सुबंधु की मौलिक कल्पना का भांडार है। स्तोत्र में प्रायः अन्य अच्छे भावों को अपनाना कोई असंभव नहीं जान पड़ता। तथापि इससे स्तोत्र के समय पर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता। ऊपर कहा गया है कि ११वीं शताब्दी में केवल प्रारंभ के ३१ ही पद्य थे; अतएव ३२वाँ श्लोक—वासवदत्ता की छाया मानते हुए भी—पीछे का ही सिद्ध होता है। अतएव इस भाव-साम्य से रचना के प्रश्न को कुछ भी सहायता नहीं मिलती। केवल इतना ही ज्ञात होता है कि स्तोत्र आठवीं या नवीं शताब्दी में बना होगा—दसवीं के अनंतर का कभी नहीं हो सकता।

बलदेव उपाध्याय

× × ×

२. कृषि-उद्धार

(१)

सधन, विज्ञ, भारत के वासी,
भारत-कृषि-उद्धार करो;
वही हमारी सुखदात्री है,
इसमें कुछ संदेह नहीं।

(२)

अन्न, वस्त्र, सुख की सामग्री,
जो कुछ जग में मिलती है;
धरती है उन सब की दात्री,
खेती उसका साधन है।

(३)

हैं किसान भारत-सुखदाता,
उनका कृषि-अज्ञान हरो;
हो यथेष्ट उत्पन्न अन्न, बस,
सुंदर यत्न करो ऐसा।

(४)

कृषि-विज्ञान-ज्ञान फैलाओ,
उसका पूर्ण प्रचार करो;

---

* काव्य-मीमांसा—गायकवाड़-ओरियंटल-सीरीज़ के प्रथम ग्रंथ—की भूमिका, पृष्ठ १५।

† काव्य-मीमांसा, पृ० ३७।

‡ असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिंधुपात्रे
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी;
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति।

× वासवदत्ता (वाणी-विलास का संस्करण), पृ० ३०६। आवश्यक गद्यांश यह है—त्वत्कृते याऽनया यातनानुभूता, सा यदि नभः पत्रायते, सागरो मेलानंदायते, ब्रह्मा लिपिकरायते, भुजगपतिर्वा कथकायते, तदा कथमप्यनेकैर्युगसहस्रैरभिलिख्यते कथ्यते वा। (मेलानंद=दावात)।

अर्थ—तुम्हारे लिये इस बालिका ने जितनी यातना भोगी, वह यदि आकाश कागज़ हो जाय, सागर दावात बने, तथा ब्रह्मा लिखनेवाला या शेष-नाग कहनेवाला हो, तो किसी तरह अनेक युग-सहस्र में उसका वर्णन हो सकता है।

कृषि-विज्ञान भूमि को करता
कामधेनु, यह निश्चित है ।

(५)

शस्य-युक्त धरती कृत-युग में
हरी-भरी ही रहती थी ;
तब के ऋषि-मुनि सेवा उसकी
करते थे निज हाथों से ।

(६)

वर्तमान में भी वह वैसी
कामधेनु बन सकती है ;
यदि वैसी सेवा हम उसकी
करें ; यही आवश्यक है ।

(७)

धनी लोग धन-दान करें, तो
ज्ञानी, ज्ञान-प्रदान करें ;
कामधेनु हो भारत की भू,
भारतवासी सुख पावें ।

गंगाप्रसाद अग्निहोत्री

× × ×

२. कस्तूरा

जितनी भी प्रकृति-निर्मित सुंदर और अद्भुत वस्तुएँ हैं, चाहे वे सजीव हों या निर्जीव, उनका ज्ञान हम स्वयं देखकर बृहत् रूप में प्राप्त कर सकते हैं । परंतु संसार में बहुत-सी वस्तुएँ ऐसी भी हैं, जिनका देखना सभी को अति दुर्लभ भी है । जैसे रूस के उत्तरी भाग में जो बर्फ़ के जानवर निवास करते हैं, उनको सभी देशों के लोग नहीं देख सकते । तथापि मनुष्य ने उनके ज्ञान के लिये लेखन-पठन-कला का बहुत ही अच्छा तरीक़ा निकाला है ।

आज हम भी अपने पाठकों को इसी कला द्वारा एक ऐसे ही पशु का हाल सुनाते हैं, जो रूस के रेनडियरों की भाँति ख़ास-ख़ास शीत-प्रदेशों में ही पाया जाता है । इस पशु का नाम है कस्तूरा ।

कस्तूरी तो बहुत-से लोगों ने देखी और चखी होगी, पर इसके जन्म-दाता — कस्तूरे — के विषय में कम ही जानते होंगे ।

चित्र देखने से पाठकों को ज्ञात होगा कि कस्तूरा एक प्रकार का हिरन है ; जिसकी

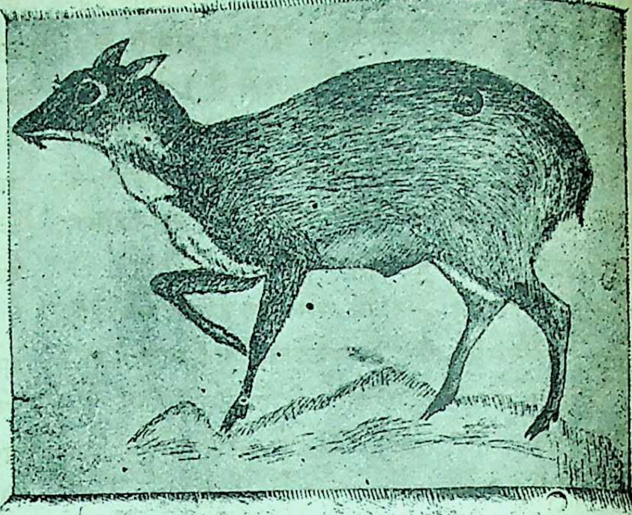

कस्तूरा
(पहाड़ी क़िस्म)

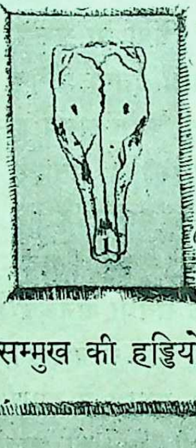

सिर के सम्मुख की हड्डियों का पंजर

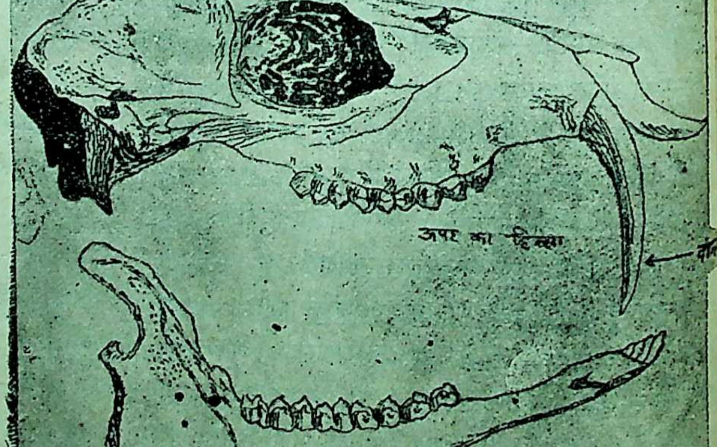

सिर की हड्डियाँ

उँचाई २० इंच के लगभग होती है, और लंबाई नाक से पूँछ तक लगभग ४० इंच। इसकी पूँछ उल्लेखनीय है। उसका आकार एक लंबे अंडे की तरह होता है। सिरे पर भूरे बालों का एक गुच्छा-सा लगा रहता है। कान बहुत लंबे होते हैं; जिनका आकार भेड़ के कानों का-सा होता है। इसके बदन की बनावट ऐसी सुंदर होती है कि देखते ही बनती है। बदन काले-भूरे रंग का होता है; जिस पर पीले रजत के-से धब्बे लगे रहते हैं। सफ़ेद बर्फ़ में जब कस्तूरा दिन के समय खड़ा रहता है, तो उसका यह कबरैला शरीर ऐसा चमकीला दिखलाई देता है, मानों अग्नि की लपट निकल रही हो। बाल इसके एक प्रकार के गूदे के-से बने होते हैं; जिसके कारण उनमें चिकनाई और एक प्रकार की उलझाहट-सी बनी रहती है।

काश्मीर में कस्तूरे का रंग बहुधा पीला-सा होता है; जिसके ऊपर सफ़ेद-भूरे रंग के ठप्पे-से होते हैं।

यह तो हम पहले ही कह आए हैं कि कस्तूरा अधिक-से-अधिक शीत-प्रदेशों में निवास करता है। यह बर्फ़ से पूर्ण आच्छादित हिमालय में अधिकतर पाया जाता है। वहाँ यह अपने रहने के लिये कंदराओं को ऐसी ढालू और भयानक हिमाच्छादित चट्टानों पर ढूँढ़ता है, जहाँ कदाचित् पक्षियों के सिवा और कोई जानवर तक नहीं जा सकता। यह अपनी खोह के आस-पास एक छोटा-सा स्थान भी खोदकर बना लेता है, जहाँ दिन में पड़ा रह सके।

इन शीत-प्रदेशों में जब, सरदी के दिनों में, बहुत बर्फ़ गिरने लगती है, तो यह ऊपर चट्टानों से, चारे के लिये, निचले भागों में उतर आता है। परंतु तो भी समुद्र की सतह से लगभग ८००० फ़ीट की उँचाई से कभी नीचे नहीं उतरता। गरमी के दिनों में तो १२००० फ़ीट ऊँचे पर्वतों में ही निवास करता है।

कस्तूरे के दाँत और खुर अद्भुत और पैने होते हैं। उन्हीं से यह बर्फ़ को खोद-खोदकर नीचे दबी हुई घास को निकाल लेता है। इसका चारा यही हिम से ढकी कोमल घास या दूसरे कोमल फूल हैं। यह दिन-भर में केवल दो बार, प्रातःकाल और सूर्यास्त के समय, अपने चारे की खोज में बाहर निकलता है। इसके अगले पैर छोटे, परंतु इस प्रकार की बनावट के होते हैं कि जहाँ चाहे, वहीं छलाँग मारकर अटक जाता है। इसीलिये इसको अँगरेज़ी में श्योर-फुटेड (Sure-footed) कहते हैं।

कस्तूरा तपस्वी प्रकृति का पशु है। यह पशु कभी रेनडियरों की भाँति दल-बद्ध नहीं दिखाई देता। सदा अकेला ही रहता है। केवल वर्ष में मार्च और एप्रिल के महीनों में कभी-कभी इसका जोड़ा एकसाथ दिखलाई देता है। बच्चे एक वर्ष के पश्चात् अपनी मा से अलग हो जाते हैं।

कस्तूरे का शिकार करना कोई दिल्लगी की बात नहीं है। शिकारी बहुधा मार्च-एप्रिल में ही, चरने के समय, इसको मार सकते हैं। नैपाल के कुछ पहाड़ी लोग इसको पकड़कर पालते भी हैं; परंतु बहुत कम। हौगसन साहब ने एक ऐसे ही पालतू जोड़े का बयान, बहुत ही सुंदर शब्दों में, लिखा है।

कस्तूरी की थैली कस्तूरे के पेट के निचले भाग में होती है। यह थैली प्रायः प्रत्येक चतुष्पद पशु के पाई जाती है। इसको तीती भी कहते हैं। परंतु हमने आज तक केवल दो ही पशुओं की तीती को मनुष्य के लिये लाभ-दायक सुना है— (१) रीछ की और (२) इसी कस्तूरे की। भालू की तीती उतनी मूल्यवान् नहीं होती; परंतु कस्तूरे के विषय में हमें कुछ नहीं कहना है।

कस्तूरी की थैली

कस्तूरे के मारने के पश्चात् यदि बहुत देर तक यह तीती न निकाल ली जाय, तो कस्तूरी उसके समस्त शरीर में फैल जाती है; जिससे न तो कस्तूरी ही हाथ आती है, और न मांस ही खाने के योग्य रह जाता है।

कस्तूरी का व्यापार बहुत ही मूल्यवान् है। पर कुछ लोग अब छल-कपट भी करने लगे हैं। वे कस्तूरे के रक्त को कुछ कस्तूरी मिलाकर सुखा देते हैं। वह सूखने के बाद कस्तूरी-सा जान पड़ता है। यह नक़ली कस्तूरी बहुत ही हानिकारक वस्तु है।

मकरंद ढौंड्याल

× × ×

४. ब्याधा-शब्द

हमने एक लेख में इस शब्द के प्रयोग के विषय में कुछ लिखा है । उस दिन संध्या के समय लड़के 'कादंबरी' का हिंदी-अनुवाद पढ़ रहे थे । उसमें एक स्थल पर 'ब्याधा'-शब्द के प्रयोग पर हमारा ध्यान आकृष्ट हुआ । लड़कों से लेकर हम स्वयं पुस्तक को देखने लगे । इसके अनुवादक हैं बाबू गदाधरसिंहजी, सरिश्तेदार कलेक्टरी, मिर्ज़ापुर ; जो 'हिंदी-कोविद-रत्नमाला' के एक प्रधान रत्न हैं । पुस्तक का प्रकाशन इंडियन-प्रेस, प्रयाग ने किया है । उस ग्रंथ के ९वें पृष्ठ में 'ब्याधा'-शब्द का प्रयोग दो बार किया गया है । यथा—

"मैं उस कोलाहल को सुनकर बहुत डरा, और काँपने लगा, और अपने पिता के डैने के नीचे जा छिपा और वहीं से ब्याधा लोगों की बातें सुन रहा था ।

* * *

जब मृगया का कोलाहल बंद हुआ और जंगल में सन्नाटा हो गया तब मैं धीरे-धीरे पिता के डैने के नीचे से निकलकर खोते के बाहर सिर निकालकर, जिधर शब्द होता था उसी ओर देखने लगा, तो क्या देखता हूँ कि यमराज के भाई-ऐसे, पाप के सारथी-ऐसे, नरक के द्वारपाल-ऐसे विकट रूप, एक सेनापति के संग, यमदूत की तरह, बहुत-से ब्याधा चले आते हैं ।"

उसी पुस्तक के पृष्ठ १३२ में देखिए—

"जब नींद उचटी तो देखा कि सामने एक ब्याधा खड़ा है ।

* * *

ब्याधा ने उत्तर दिया कि मैं चांडाल हूँ ।'

युक्तप्रांत-निवासी एक प्रसिद्ध हिंदी-लेखक की रचना में 'ब्याधा'-शब्द का प्रयोग कई स्थलों में किया गया है, यह स्पष्ट है । 'कादंबरी' का यह अनुवाद एफ़० ए० में पाठ्य-पुस्तक है ।

मध्य-प्रदेशीय हिंदी की पुरानी तीसरी पुस्तक में भी 'ब्याधा'-शब्द व्यवहृत है—

"इसके उपरांत उस ब्याधा ने चावल के कणों को छीटकर जाल फैलाया ।" (पृष्ठ १५३)

"इसको सोच-विचारकर सब पक्षी जाल को लेकर उड़े । इसके बाद वह ब्याधा बहुत दूर से उन जाल के अपहारकों को देखकर यह मन में सोचता था कि ये पक्षी जब गिरेंगे, तब मेरे वश में पड़ेंगे । कबूतरों ने जब देखा कि ब्याधा लौट गया, तो कहा कि महाराज, अब क्या करना चाहिए ।" (पृष्ठ १५९)

ब्याधा-शब्द का प्रयोग मुरादाबाद-निवासी श्रीयुत पं० ज्वालाप्रसाद मिश्र 'विद्या-वारिधि'-कृत रामायण की टीका में भी किया गया है । यथा—

इक दिन एक बधिक चलि आवा ;
अद्भुत पक्षी नृपहिं दिखावा ।

एक दिन एक ब्याधा आया और एक अद्भुत पक्षी राजा को दिखाया ।

(तुलसीकृत सटीक रामायणम् (तृतीयावृत्ति),
पृष्ठ १७२, २३८ नंबर के दोहे की छठी चौपाई ।
वेंकटेश्वर-प्रेस, बंबई की छपी प्रति)

उसी टीका के "रामायण-कोष", पृष्ठ २० में लिखा है—

बधिक—ब्याधा

इससे अधिक उदाहरण देने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती ।

लोचनप्रसाद पांडेय

× × ×

५. महाकवि ग़ालिब

"पूछते हैं वो कि ग़ालिब कौन है ?
कोई बतलाओ कि हम बतलाएँ क्या ?"

संस्कृत के विद्वान् जिस आदर से कालिदास और भवभूति के काव्यों और नाटकों को पढ़ते हैं, अँगरेज़ी-भाषा-भाषी जिस उत्साह से शेक्सपियर और मिल्टन के नाम लेते हैं, हिंदी में सूर तथा तुलसी के ग्रंथ जिस आनंद से देखे जाते हैं, उसी आदर, उसी उत्साह, उसी आनंद से उर्दू के ज्ञाता लोग ग़ालिब और आतिश की कविता पढ़ते हैं । चाहे देहलवी हों चाहे लखनवी, ग़ालिब की शायरी को सभी उच्च कोटि की मानते हैं । यद्यपि आज़ाद, हाली, हसरत मोहानी और इल्यासबरनी के लेखों के बाद मेरा कुछ लिखना धृष्टता है, तथापि नसीम के इस शेर को याद कर माधुरी के पाठकों के विनोदार्थ कुछ निवेदन करता हूँ—

"पर बहरे-सखुन सदा है बाक़ी ;
दरया नहीं कारबंद साक़ी ।"

कविता अगाध है, कहनेवाले अनेक हैं । फिर भी विषय का अंत नहीं ।

उर्दू में कवि अपने तख़ल्लुस से ही प्रसिद्ध हैं। अनेकों को ज्ञात है कि आतिश का नाम ख़्वाजा हैदरअली था। आज़ाद का नाम सय्यद मुहम्मदहुसैन और अनीस का मीर बबरअली था। दाग़ मिरज़ाख़ाँ थे, और ज़ौक़ शेख़ मुहम्मद इब्राहीम। मीर का नाम मीर तक़ी था। इसी तरह ग़ालिब का असल नाम असदुल्लाख़ाँ था। उनके दादा समरक़ंद से हिंदुस्तान आए थे। उनके पिता मिर्ज़ा अब्दुल्लाबेग का आगरे के रईस ख़्वाजा गुलामहुसेनख़ाँ की लड़की से ब्याह हुआ। ग़ालिब का जन्म १२१२ हि० (सन् १७९६ ई०) में हुआ। बचपन में वह आगरे ही में रहे। अभी वह बच्चे ही थे कि उनके पिता मर गए, और जब वह नौ बरस के हुए, तब उनके चाचा भी क़ज़ा कर गए। ग़ालिब की आरंभिक शिक्षा का भार शेख़ मोअज़्ज़म के ऊपर था। फिर अब्दुस्समद नाम के एक पराशिया-निवासी विद्वान् से उन्होंने फ़ारसी सीखी, और उन्हीं से कविता-प्रेम पाया। ग़ालिब फ़ारसी के आजन्म प्रेमी रहे। यहाँ तक कहा जाता है कि वह स्वयं उर्दू-दीवान की अपेक्षा फ़ारसी-दीवान को उत्तम समझते थे। वह एक अपने ख़त में कहते हैं—"मेरे फ़ारसी के वे क़सीदे, जिन पर मुझको नाज़ है, कोई उनका लुत्फ़ नहीं उठाता।" और फिर—

"फ़ारसी बींन ता बि बीनी नक़्श हाये रंग-रंग;
बुगज़र अज़ मजमूआ-ए-उर्दू कि ब रंगे-मनस्त"

तुम अनेक प्रकार के रंगों का अनुभव करना चाहते हो, तो मेरी फ़ारसी-कविता पढ़ो; अर्थात् फीकी उर्दू-कविता को मत देखो। आरंभ में फ़ारसी-ग़ज़लों पर उनकी इतनी प्रीति थी कि उर्दू का नाम भी न लेते थे। लेकिन ख्याति की गति न्यारी ही है। उनकी फ़ारसी की ग़ज़लें अब बहुत कम पढ़ी जाती हैं। उर्दू-दीवान के कारण ही उनका नाम भारतवर्ष के कवियों में चिर-स्मरणीय रहेगा।

क्या कारण है कि ग़ालिब की कविता इतनी जन-प्रिय है, और इतने दिन बीतने पर भी उसकी माँग बढ़ती ही जाती है? कविता उस लाकोत्तर-शक्ति का नाम है, जिसके प्रभाव से साधारण-से-साधारण और नए-से-नए भाव हृदय-ग्राहिणी भाषा में वर्णन किए जाते हैं। यह शक्ति सभी बड़े आदमियों में रहती है। कोई अपने भावों को शब्दों के द्वारा प्रकट करते हैं, कोई गीतों में, कोई चित्रों में, और कोई मूर्तियों में। ग़ालिब उन इने-गिने महाकवियों में हैं, जो शब्द-विन्यास के फंदे में न पड़कर बोल-चाल की, चुभती हुई, हृदय पर असर डालनेवाली भाषा में हृद्गत भावों को बताते हैं। नीचे के उदाहरणों से यह बात स्पष्ट हो जायगी। एक बात और है। अँगरेज़ी के रोमैंटिक कवियों का एक विशेष लक्षण यह कहा गया है कि वे सभी बातें स्पष्ट नहीं कहते, कुछ शब्दों के सहारे केवल एक इशारा दे देते हैं।

स्थानाभाव-वश हम ग़ालिब की कविता के कुछ ही उदाहरण देते हैं। यह तो सभी जानते हैं कि उर्दू में कविता प्रधानतया प्रेम के विषय पर ही होती है। कभी-कभी 'अकबर'-जैसे गूढ़ तत्त्व और हास्य-जनक विषयों पर कहनेवाले भी पैदा हो गए हैं। ग़ालिब ने भी प्रेम पर अनेक ग़ज़लें कही हैं।

या रब, वह न समझे हैं, न समझेंगे मेरी बात;
दे और दिल उनको, जो न दे मुझको ज़बाँ और।

(मुझमें वर्णन करने की शक्ति अगर नहीं है, तो हे ईश्वर, उनको ऐसा दिल दे कि विना कहे हुए वह मेरी दशा समझ लें। मैं तो लाचार हूँ, बोलना मुझे आता नहीं, उनको तो समझने की शक्ति दे।)

मुहब्बत थी चमन से, लेकिन अब यह बेदिमाग़ी है
कि मौजे-बूए-गुल से नाक में आता है दम मेरा।

(फूलों को मैं एक दिन प्यार करता था। पर इस विरक्ति की, विरह की, अवस्था में फूल की सुगंधि से मैं घबड़ाता हूँ। भूली हुई बात याद आ जाती है, पुराने सुख और भोग की स्मृति आ जाती है।)

दोस्त ग़मख्वारी में मेरी सई फ़रमाएँगे क्या?
ज़ख्म के बढ़ने तलक नाखुन न बढ़ आएँगे क्या?

(मेरे दोस्त मेरा उपकार करना चाहते हैं। मैं अपने हृदय के घाव को न बढ़ाऊँ, इसलिये वे मेरे नाखून काट रहे हैं। तो क्या घाव के बढ़ने तक मेरे नाखून भी बढ़ न जायँगे, और मैं ज़ख़्म को बढ़ा न सकूँगा क्या? अर्थात् मेरे मित्रों का श्रम वृथा है।)

बेनयाज़ी हद से गुज़री, बंदापरवर, कब तलक
हम कहेंगे हाले-दिल, और आप फ़रमाएँगे 'क्या'?

(इस क्रूरता की भी कोई सीमा है कि मैं तो अपने हृदय की बात आपको सुनाऊँ, और आप अनसुनी कर पूछते हैं—"हाँ, क्या कहते हो?")

बाग़ में मुझको न लेजा, वरना मेरे हाल पर
हर गुलेतर एक चश्मे-ख़ूँ-फ़िशाँ हो जायगा।
तू मुझे भूल गया हो तो पता बतला दूँ ;
कभी फ़ितराक़ में तेरे कोई नख़्चीर भी था।

(तेरे प्रेमी बहुत हैं, मुझे यदि भूल गया है, तो मैं याद दिला दूँ कि एक समय मैं भी तेरा शिकार रह चुका हूँ।)

मय वो क्यों बहुत पीते बज़्मे-ग़ैर में यारब,
आज ही हुआ मंजूर उनको इम्तहाँ अपना।

(वह दूसरे के प्रेम में इतने आसक्त हो गए हैं कि उनको किसी बात की सुधि-बुधि नहीं रही है। इसी भाव को रूपकालंकार के सहारे कवि कहता है—उनको क्या पड़ी थी कि दूसरे प्रेमी की सभा में जाकर इतनी शराब पी रहे हैं? क्या उनको अपने जीवन की परीक्षा आज ही लेनी है?)

घर जब बना लिया तेरे दर पर कहे बग़ैर ;
जानेगा अब भी तू न मेरा घर कहे बग़ैर ?

(कब तक तुम बहाने करोगे कि "तुम्हारे घर का हमें पता नहीं है"? अब तो तुम्हारे दरवाज़े पर हमने घर बना लिया है।)

आता है मेरे क़त्ल को, पर जोशे-रश्क से
मरता हूँ उसके हाथ में तलवार देखकर।

(वह मुझे मारने आ रहे हैं। उनके हाथ में तलवार है। तलवार ही को देखकर उसके इस भाग्य को देखकर कि नायिका के हाथ में है, मैं मारे द्वेष से मर रहा हूँ।)

नज़र लगे न कहीं उसके दस्तोबाज़ू को ;
ये लोग क्यों मेरे ज़ख़्मे-जिगर को देखते हैं ?

(नायिका के तीर के लगने से मेरे हृदय पर जो चोट लगी है, उसे और लोग क्यों देखते हैं ? कहीं ऐसा न हो कि औरों को इस तीर का पता लग जाय, और वे नायिका के हाथ और बाहों पर नज़र लगावें। अर्थात् चोट इतनी गहरी है कि उसके देखने ही से तीर लगानेवाले के हाथ और बाहु की शक्ति का अंदाज़ हो जाता है। मुझे चोट लगी तो लगी, नायिका को इसका दंड न मिलने पावे।)

दिल ही तो है, न संगो ख़िश्त, दर्द से भर न आए क्यों ?
रोएँगे हम हज़ार बार, कोई हमें सताए क्यों ?

(मेरे दिल में दर्द होना स्वाभाविक ही तो है। कोई पत्थर या धूल तो नहीं, दिल ही तो है। किसी को क्या पड़ी है कि मुझे सताए ? एक बार नहीं, हम हज़ार बार रोएँगे।)

उनके देखे से जो आ जाती है मुँह पै रौनक़,
वह समझते हैं कि बीमार का हाल अच्छा है।

(मैं उनके प्रेम के न मिलने से बीमार हूँ। कहीं उन को दूर से अगर देख लिया, तो इसी दर्शन से मेरे मुँ पर प्रसन्नता झलकने लगती है। इस आनंद और प्रसन्नता को देखकर वह यह समझते हैं कि मुझे कोई दुःख नहीं है, मेरी चिकित्सा करने की आवश्यकता नहीं है। उनकी इस नादानी और कठोरता को देखिए !)

गो हाथ को जुंबिश नहीं, आँखों में तो दम है ;
रहने दो अभी साग़रो, मीना मेरे आगे।

(शरीर में शक्ति नहीं रही ; पर अभी मरा नहीं हूँ। देखने की शक्ति अब भी है। अभी से संसार के दर्शन से रहित न कर दो।)

कहता है कौन नालए-बुलबुल को बेअसर ?
परदे में गुल के लाख जिगर चाक हो गए।

(कौन कहता है कि बुलबुल के रोने का असर नहीं होता ? छिपे हुए फूल को देखिए कि उस रोने को सुनकर कलेजा लाख टुकड़े हो गया। बाहर से नायिका क्रू और तटस्थ मालूम हो, यह संभव है ; पर यथार्थ में प्रेमी के शोक से वह भी संतप्त अवश्य होती है।)

ग़ालिब का विवाह बहुत छोटी उम्र में हुआ। वह अपने घर में अपनी पत्नी से प्रसन्न रहते थे कि नहीं, यह निश्चय नहीं है। फिर दुःख इसका था कि उनके सात बच्चे पैदा हुए, सातों मर गए। एक बच्चे को गोद लिया, वह भी मर गया। इससे उनका समय दुःख में कटता था। फिर बुढ़ापे में कुछ शारीरिक बीमारियों से भी कष्ट सहना पड़ा। यह स्मरण करने पर आश्चर्य नहीं होता कि उन्होंने लिखा—

मय से ग़रज़ निशात है किस रू-सियाह को ;
इक गूना-बेख़ुदी मुझे दिन-रात चाहिए।

अपनी फ़ारसी-मसनवी में वह कहते हैं—"मैं दुःख में था, शराब ने मेरा दुःख हटा दिया। सारा संसार गुलोलाला और गुलाब की ख़ुशबू में मस्त था। केवल मैं अँधेरी कोठरी में अकेला सोच में पड़ा था। मेरी मन की अभिलाषा मन ही में रह जाती थी। यदि मैं मोतियों की माला के लिये डोरा ठीक करता था, तो मोती टूट जाते थे। शराब तैयार होती थी, तो प्याला टूट जाता था।"

ग़ालिब में जाति-गत अथवा धर्म-गत द्वेष बिलकुल नहीं

था। उनके सब से प्रिय शिष्य मुंशी हरगोपाल तफ़्ता थे। एक पत्र में उनको ग़ालिब ने लिखा था—"तुम जानते हो, मैं तुम्हें पुत्रवत् मानता हूँ, और तुम्हारी कविता को अपना मानसिक पोता।"

जब दिल्ली का कॉलेज खुला, तो ग़ालिब की इच्छा हुई कि फ़ारसी की प्रोफ़ेसरी करें। इस उद्देश्य से एक अँगरेज़ ऑफ़िसर से मिलने गए। ऑफ़िसर से भेंट हुई; पर ग़ालिब को वह सम्मान नहीं प्राप्त हुआ, जो साधारणतः प्राप्त हुआ करता था। बस, कवि ने ऑफ़िसर से कहा—"मैं चला। मैंने सोचा था इस नौकरी से मेरा सम्मान और होगा; पर जिस नौकरी की दरख़्वास्त से ही अपमान होता है, वह नौकरी मुझे नहीं चाहिए।" लेकिन वह अँगरेज़ी-राज्य के आजन्म ख़ैरख़्वाह रहे।

ग़ालिब केवल महाकवि ही न थे। उनके गद्य के लेख भी बड़े मार्के के हैं। उनके पत्र, जो कि उर्दूए-मुअल्ला के नाम से छपे हैं, उर्दू-गद्य के उत्तम आदर्श हैं। हाली, मीर मेंहदी, मजरूह और आज़ाद इत्यादि ने इसी गद्य को आदर्श मानकर स्वयं लिखा है। मुंशी हरगोपाल तफ़्ता को ग़ालिब लिखते हैं—"जब किसी मित्र का पत्र मुझे मिलता है, तो मैं यही समझता हूँ कि वह मित्र स्वयं आया है। शायद कोई दिन ऐसा गुज़रता हो कि मुझे चिट्ठियाँ न मिलें। इस तरह, चिट्ठी पढ़ने और उत्तर लिखने में मेरे दिन आनंद से कटते हैं।"

ग़ालिब १५ फ़रवरी सन् १८६६ में, देहली में, मरे, और अमीर ख़ुसरू के साथ शेख़ निज़ामुद्दीन औलिया के मक़बरे के पास उनकी क़ब्र है। कवि का जीवन सुखमय नहीं होता। मृत्यु होने पर वह सुख का अनुभव करता है। यही आशा लोगों को रहती है। पर सच क्या है, कौन कह सकता है?

है ग़ैब ग़ैब जिसको समझते हैं हम शहूद ;
हैं ख़्वाब में हनोज़, जो जागे हैं ख़्वाब में।

अमरनाथ झा

× × ×

६. स्वर्गीय सेठ जे० एफ़० मदन

पारसी-समाज बड़ा उन्नत है। उसमें बड़े बड़े धनाढ्य और विद्वान् पड़े हुए हैं। ब्रृटिश-भारत के भीष्माचार्य दादाभाई नौरोज़ी और अद्वितीय शिल्प-व्यापारी जमशेदजी नसरवानजी ताता आदि पारसी-समाज के ही अमूल्य रत्न थे। इन पंक्तियों में हम उसी समाज के एक पुरुष-रत्न स्वर्गीय सेठ जे०एफ़०मदन का परिचय देना चाहते हैं। आपका पूरा नाम था—जमशेदजी फ़रामजी मदन। आप एकमात्र हिंदुस्तानी बायस्कोप व्यवसायी और अनेक पारसी

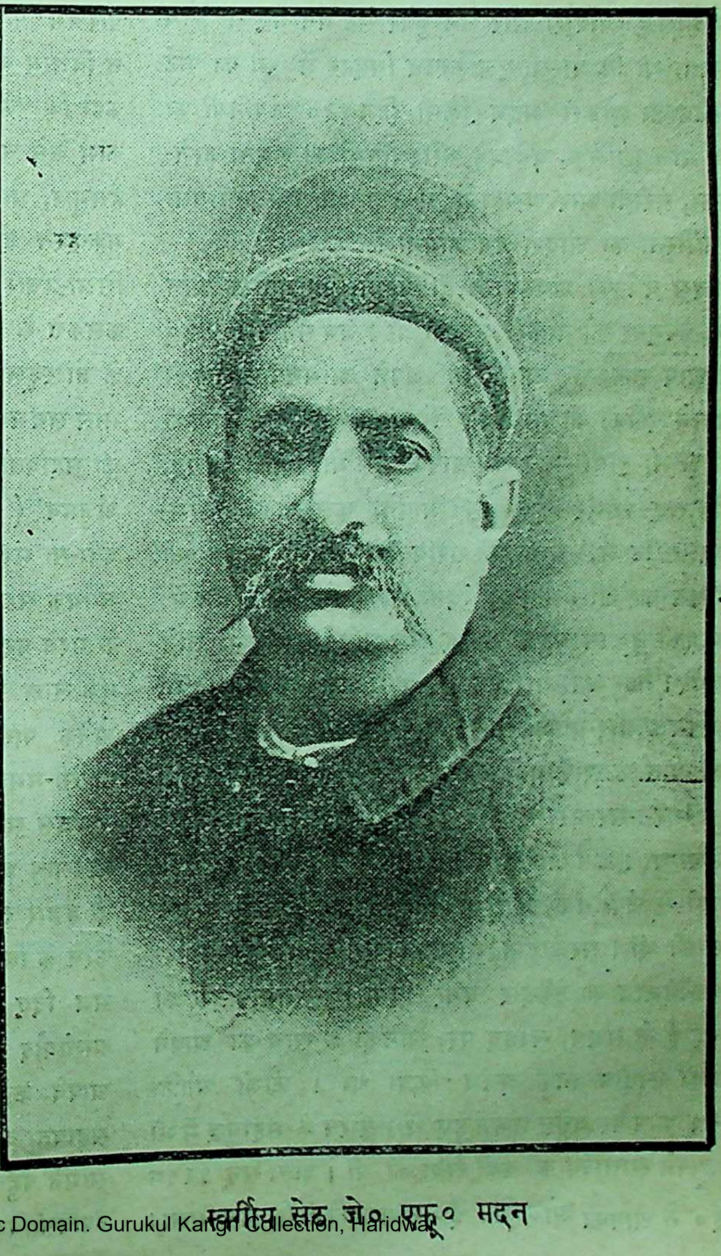

स्वर्गीय सेठ जे० एफ़० मदन

थिएटरों के संचालक थे। आपका जन्म बंबई में ७ एप्रिल सन् १८५६ ई० को हुआ था। वहीं के सर जमशेदजी जीजी-भाई के निश्शुल्क विद्यालय में आपने प्रारंभिक शिक्षा पाई थी। संभवतः इसीलिये आपको फ़्री स्कूलों और ग़रीब छात्रों की सहायता करते रहने का आजीवन स्वाभाविक व्यसन रहा। आप निश्शुल्क शिक्षा के बड़े भारी हिमायती थे।

आप एक निर्धन पिता के परम पुरुषार्थी, अध्यवसायी, उद्यमशील और स्वावलंबी पुत्र थे। अपने पौरुष के बल से ही आप चार रुपए के एक अत्यंत साधारण नौकर से जगत्प्रसिद्ध व्यापारी और धन-कुबेर सेठ बन गए। कौन जानता था कि पारसी एलफ़िंस्टन थिएटर में स्त्री का पार्ट करनेवाला छोकरा मदन किसी दिन ५७ कंपनियों का एक-मात्र मालिक, बड़े-बड़े करोड़पतियों की समता करनेवाला, ग़रीबों और असहायों का उदार आश्रय-दाता तथा दानवीरता का आदर्श बन जायगा?

दस वर्ष की अवस्था में ही आपने, ४) मासिक वेतन पर, थिएटर की नौकरी कर ली थी। जब सन् १८७४ ई० में आप कलकत्ते आए, तो अपने अभिनय-कौशल से आपने दर्शकों को मुग्ध कर दिया। धीरे-धीरे आपकी तरक़्क़ी भी होती गई। जब आपके पास थोड़ी पूँजी हो गई, तो, सन् १८८५ ई० में, आपने, कलकत्ते के धरमतल्ला-स्ट्रीट में, अँगरेज़ी शराब और खाद्य पदार्थों की दूकान कर ली। थोड़े ही दिनों में, अँगरेज़ों के समाज में, आपकी दूकान बहुत प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित समझी जाने लगी। फिर क्या था, धड़ल्ले से काम चल निकला। दिल्ली, लखनऊ और दार्जिलिंग आदि स्थानों में आपकी दूकान की सात शाखाएँ बड़ी धूम-धाम से खुल गईं।

भारत-सरकार ने, सन् १९०३ में, तिब्बत-मिशन भेजा था। उस अभियान में, सिपाहियों के लिये, सिलीगुड़ी से चंपी तक, खाद्य पदार्थों की कई दूकानें आपने खोली थीं। सरकार ने संतुष्ट होकर आपको कमसरियट-विभाग का ठेकेदार बना दिया। सीमांत-प्रदेश की चढ़ाई के समय, सरहद पर, सैनिकों के खाद्य का आपने बड़ा संतोष-जनक प्रबंध किया था। फ़ौजी ऑफ़िसर आप पर बहुत प्रसन्न हुए थे। योरप के महायुद्ध में भी आपने साम्राज्य की बड़ी सेवा की थी। अतः सन् १९१८ ई० में आपको ओ० बी० ई०-नामक फ़ौजी ख़िताब मिला। युवराज-स्वागत-फ़ंड में भी आपने पचास हज़ार का दान दिया था। गत सम्राट्-जन्म-महोत्सव के अवसर पर आप सी० बी० ई० की उपाधि से सम्मानित किए गए थे।

आप पर लक्ष्मी की विशेष कृपा थी। आपकी लक्ष्मी-पात्रता के संबंध में लोग यहाँ तक कहा करते हैं कि 'आपके छूने से मिट्टी भी सोना हो जाती थी।' वास्तव में आप आदर्श धनी थे। आजकल के धनिकों की तरह आलसी, धन-मदांध, स्वार्थी और अहंकारी नहीं थे। एक बार जब आप घोर परिश्रम के कारण अस्वस्थ हो गए, तब आपके मित्रों ने विश्राम करने की सलाह दी। आपने उनसे छूटते ही कहा कि "मैं आराम करूँगा, तो मेरे आश्रित ग़रीबों का काम कैसे चलेगा?" आप बड़े दीन-वत्सल, मिलनसार, हँसमुख, और मधुर-भाषी थे। बाढ़ और अकाल में आप मुक्त-हस्त होकर देश-भाइयों की सहायता करते थे। शिक्षा-प्रचार के लिये आप प्रायः दान देते ही रहते थे। कलकत्ते के निकट बेलगछिया और बहेला में बंगालियों के जो स्कूल हैं, वे आप ही की उदारता से खुले हैं। प्रति-मास लगभग पाँच हज़ार रुपए आप असहाय विद्यार्थियों की सहायता में ख़र्च करते थे। कलकत्ते के 'ज़रथोस्ती अंजुमन' (पारसी सामाजिक सभा) के लिये आपने एक बड़ा-सा मकान बनवा दिया था, और डेढ़ लाख रुपए की आर्थिक सहायता भी प्रदान की थी। अपनी एक लड़की के मरने पर, उसकी यादगार में, परोपकारार्थ, आपने एक लाख रुपया दान-स्वरूप निकाल दिया था। अन्य अनेक पारसी-संस्थाओं के भी आप पृष्ठ-पोषक थे। पारसी-समाज में आपकी बड़ी प्रतिष्ठा थी।

जिस समय आपने थिएटर की नौकरी छोड़कर स्वतंत्र व्यवसाय आरंभ किया था, उस समय आपके पास सिर्फ़ दो हज़ार रुपए थे। आपके पिता ने, लड़की की शादी करने के लिये, कुछ सहायता माँगी। आपने सब रुपए भेज दिए। आप कहा करते थे कि "माता-पिता के आशीर्वाद से ही मेरा काम बेरोक-टोक चलता रहेगा।" आपने कई बार प्रकारांतर से बँगला-थिएटरों की भी सहायता की थी। आप हरएक मज़हब के देवालय के सामने पहुँचते ही सिर झुका लेते थे। इससे आपकी व्यावसायिक और धार्मिक उदारता स्पष्ट प्रकट होती है।

आप अधिकतर गुप्त दान ही किया करते थे। पूछनेवालों से कहा करते थे कि "मेरे मर जाने पर ही मेरे दानों के विषय में जानने का उपयुक्त समय आवेगा"। आप हर महीने के पहले रविवार को, ग़रीबों को बाँटने के लिये, ५००) संकल्प करके रख देते थे। आप नियम-पूर्वक प्रतिदिन प्रातःकाल उठते ही गो-माता के दर्शन किया करते थे।

आप ता० ३० दिसंबर सन् १९२२ ई० शनिवार को कलकत्ते के Palace of Varieties-नामक अपने Cinema House में गए थे। उस दिन की कुल आमदनी २००००) आपने लेडी रीडिंग द्वारा स्थापित भारतीय महिला-फ़ंड में दे दी थी। दर्शक की हैसियत से आपका वही अंतिम दिन था। उसी दिन से आप अस्वस्थ हुए। फिर कभी किसी तमाशे में नहीं गए। गत ता० २८ जून सन् १९२३ ई० की रात को, आठ बजे, ९८ वर्ष की अवस्था में, ९ पुत्रों और ५ कन्याओं को छोड़कर तथा असंख्य दीन-दुखियों को अनाथ कर आप इस संसार से बिदा हो गए। आपके उठ जाने से इस देश की बड़ी हानि हुई। सिनेमा, थिएटर और बायस्कोप का व्यवसाय आप विदेशियों के हाथ से बहुत कुछ बचाए हुए थे। यहाँ तक कि सीलोन और बर्मा तक में आपकी कंपनियाँ मौजूद हैं। कलकत्ते का 'शांति-स्तंभ' तो आपकी दान-शीलता का स्मारक ही है, पारसी-समाज की ओर से पचास हज़ार रुपए और आपकी स्मृति-रक्षा में व्यय करने के लिये निकाले गए हैं। इन स्मारकों के अतिरिक्त आपने ग़रीबों के रहने के लिये कलकत्ते में एक विशाल भवन बनवाने को लाखों रुपए दिए हैं—यह भी आपका दर्शनीय स्मारक होगा। आपकी रथी के साथ कलकत्ते के प्रत्येक समाज के प्रतिष्ठित रईस और बड़े-बड़े अँगरेज़ी ऑफ़िसर समाधि-स्थल तक गए थे। भगवान् आपकी आत्मा को शांति दें, और अपने परिश्रम तथा पराक्रम से स्वभाग्य-विधाता बननेवाले आप-जैसे अनेक पुरुषों को भारत में उत्पन्न करें।

कनकाप्रसाद चौधरी

× × ×

७. 'सौदामिनी' का अर्थ

संस्कृत से जिन्हें कुछ भी परिचय होगा, वे अवश्य जानते होंगे कि 'सौदामिनी' शब्द बिजली के अर्थ में प्रयुक्त होता है। अमर-कोष में भी विद्युत् के पर्यायवाची शब्दों में 'सौदामिनी' पाया जाता है; यथा—'तडित् सौदामिनी विद्युत्।' यह सब ठीक है, परंतु इस शब्द पर कुछ नया प्रकाश डाला जायगा। अमर-कोष के पूर्वोक्त पद्यांश पर टीका लिखते समय 'भानुजि' ने 'सौदामिनी' का विवरण यह लिखा है—सुदामा मेघः तत्र भवः, अर्थात् मेघ में पैदा होने के कारण विद्युत् को सौदामिनी के नाम से पुकारते हैं। दूसरा विवरण मेघदूत के पूर्वार्ध में, ३७वें श्लोक की टीका में, मल्लिनाथ ने दिया है—सुदामा पर्वतः तेन एकदिक्, अर्थात् सुदामा-नामक पर्वत के एक ओर चमकनेवाली बिजली को 'सौदामिनी' कहते हैं। पाणिनि के 'तेनैकदिक्' (४। ३। ११२) के अनुसार यह विवरण बिलकुल ही उचित है। परंतु इन दोनों विवरणों में दूसरा ही उचित तथा प्रामाणिक सिद्ध होता है।

भागवत, रामायण तथा महाभारत में 'तडित् सौदामिनी यथा', 'विद्युत् सौदामिनी यथा' आदि वाक्य मिलते हैं; जिससे स्पष्ट सूचित होता है कि 'सौदामिनी'-शब्द संज्ञावाचक नहीं, बल्कि विशेषण-मात्र है। यदि ऐसा न होता, तो एक ही पद्य में विद्युत् तथा सौदामिनी का प्रयोग 'पुनरुक्ति'-दोष से ख़ाली नहीं होता। अतएव यह विशेषण ही है। श्रीधर स्वामी ने जो विवरण इस शब्द का लिखा है, वही सब से प्रामाणिक है *। सुदामानाम कश्चित् स्फटिकपर्वतः ××× स्फटिकमयपर्वतप्रांतभवा हि विद्युत् अतिस्फुटा भवति तद्वत्। अर्थात् सुदामा-नामक कोई स्फटिक-पर्वत है; वह बिजली अत्यंत चमकीली जान पड़ती है, जो स्फटिक-पर्वत के प्रांत से होकर चमकी हो। श्रीधर स्वामी के पूर्वोक्त विवरण से स्पष्ट जान पड़ता है कि सौदामिनी-शब्द संज्ञा-शब्द नहीं है। जिस प्रकार अँगरेज़ी में b'old bornn' तथा 'red gold' कहने का फ़ैशन है, उसी भाँति हमारे यहाँ बिजली को 'सौदामिनी' कहने की चाल थी।

बलदेव उपाध्याय

---

* इंडियन एंटिकेरी, साल १९१२, पृ० २४४

विज्ञान-वाटिका

१. वायु-यान की उड़ान

वायु-यान की उन्नति आजकल दिन-दिन अधिक होती जा रही है। इसका कारण यह है कि भविष्य में वायु-यान पर बहुत-से दायित्व-पूर्ण कार्य निर्भर हैं। गत दो-तीन वर्षों में लोगों का ध्यान इस बात की ओर अधिक आकृष्ट हुआ है कि क्या करने से वायु-यान की यात्रा निरापद हो सकती है। वायु-यान को अधिक तेज़ चाल से ले जाने की ओर भी लोगों का ध्यान बराबर रहा है। आजकल गैसोलीन-मोटर द्वारा चालित कोई भी वायु-यान घंटे में १५० मील से अधिक नहीं जाता। घंटे में २०० मील चलनेवाले वायु-यान कई जगह बन रहे हैं। संभवतः अब गैसोलीन का व्यवहार उठ जायगा, और उसकी जगह पर दबी हुई हवा (Compressed Air) का व्यवहार होगा। दबी हुई हवा उतनी जगह भी नहीं घेरेगी, जितनी गैसोलिन-वाला मोटर घेरता है। किंतु वह वायु-यान को अधिक वेग से ले जाने में समर्थ होगी।

कुछ लोग वायु-यान पर चढ़कर आकाश में ऊँचे-से-ऊँचे स्थान तक जाना चाहते हैं। सन् १९२० में प्रसिद्ध उड़ाके स्रोएडर ३३,११३ फ़ीट ऊँचे तक उड़े थे। २९ सितंबर, १९२१ को लेफ़्टिनेंट जे० ए० मैक्रेडी ४०.८०० फ़ीट की उँचाई तक पहुँचे थे। इनके मत में आकाश ही यातायात का सुविधा-जनक पथ है। इसमें समय तथा ख़र्च, दोनों की बचत के साथ ही आराम और आनंद अधिक हैं। महाशय ल्यारीवर्जेस, दो यात्रियों के साथ, २१,९०९ फ़ीट की उँचाई से सैर करके अभी-अभी लौटे हैं।

निरापद यात्रा के लिये भी बहुत कुछ किया जा रहा है। अब तक लोग यात्रा करने के पहले वायु-मंडल की अवस्था का पता लगा लेते थे। यदि आँधी आदि का भय होता था, तो अपनी यात्रा स्थगित कर देते थे। किंतु इधर इस विषय के भी आविष्कार हो रहे हैं कि वायु-यान आँधी के झोंकों को सह सके। वायु-यान के सामने उन्नति का अभी विस्तृत मैदान पड़ा है।

× × ×

२. आश्चर्य-जनक लकड़ी

हज़ारीबाग़ के निकट रहनेवाले एक कृषक के लड़के को एक अद्भुत लकड़ी मिली है। इस आश्चर्य-जनक लकड़ी में यह गुण है कि यदि वह अँधेरे में रख दी जाय, तो चमकने लगती है। हज़ारीबाग़ की रसायन-शाला में इस लकड़ी की परीक्षा हो रही है। अब तक जो मालूम हुआ है, वह यह है कि प्राकृतिक उपाय से उस पर Calcium Sulphate जम गया है, और इसी के कारण वह लकड़ी अँधेरे में चमकती है। इसकी पुष्टि इससे और होती है कि जब लकड़ी का एक टुकड़ा काटकर देखा, तो अंदर का हिस्सा चमकता हुआ नहीं पाया गया। जो कुछ हो, यह एक आश्चर्य का विषय है।

× × ×

३. पक्षियों की सफ़ाई

पक्षी अपनी सफ़ाई में प्रकृति की सहायता लेते हैं। हंस के शरीर में एक प्रकार का तैलमय पदार्थ होता है। उसी से वे अपनी सफ़ाई का काम करते हैं। यह तैलाक्त पदार्थ

उनकी पूँछ के पास के पंखों की जड़ में जमा रहता है। प्रसाधन के पहले वे अपने मुँह को साफ़ कर लेने के लिये पूँछ के पास के पंखों की जड़ में अपना मुँह रगड़ने लगते हैं। मैना आदि कई पक्षियों के पंखों में कीड़े लगने से वे मर जाते हैं। किंतु उल्लू के पंखों में कीड़े लगने से वह अपने पैर के तेज़ नखों द्वारा कीड़े-लगे स्थान को नोचकर साफ़ कर लेता है। कबूतर और बाज़ अपने शरीर के एक प्रकार के नरम पंख से सफ़ाई का काम करते हैं। ये पंख इतने नरम और ख़स्ता होते हैं कि खींचने से चूर-चूर हो जाते हैं। इसके बाद वे चोंच से शरीर के पंखों के ऊपर और जड़ में इस चूर्ण को लगा लेते हैं। काक, कबूतर, गौरैया आदि पक्षी पोखरों के पास जाकर अपने डैनों से शरीर पर पानी छिड़कते हैं। मुर्ग़ी कूड़े पर लोट-पोटकर अपनी सफ़ाई करती है। पक्षियों की सफ़ाई में कुछ भी ख़र्च नहीं होता।

× × ×

४. चीन-देश की स्त्रियों के पैर

हमारे यहाँ के कवियों ने स्त्रियों के मुख ही को सब अंगों से सुंदर माना है। किंतु चीन-देश के कवि स्त्रियों के पैरों की सुंदरता की ओर अधिक आकृष्ट जान पड़ते हैं। वहाँ की स्त्रियाँ पैर छोटे करने के लिये बचपन ही से लोहे के जूतों का इस्तेमाल करने लगती हैं। इससे उनके पैर बहुत छोटे हो जाते हैं। जिस स्त्री के पैर जितने छोटे होते हैं, वह उतनी ही सुंदर समझी जाती है। लोहे के जूतों के व्यवहार से पैर कैसे विकृत हो जाते हैं, यह चित्र देखकर (जो एक्स-किरण से लिया गया है) पाठक सहज ही जान सकते हैं। एक्स-किरण के द्वारा लिए गए चित्रों में केवल हड्डियों का ही चित्र आता है। मांस उसके चारों ओर छाया की तरह दिखाई पड़ता है। चित्र लेते समय स्त्री को लोहे के जूतों के बदले चमड़े ही के जूते पहनाए गए थे। पाठक देख सकते हैं कि पैर की एँड़ी तथा कनिष्ठ उँगली का अग्र-भाग परस्पर छू रहा है। अँगूठे को छोड़कर सभी उँगलियाँ झुक गई हैं, और तलवा केवल पाँच इंच का रह गया है। तुलना करने के लिये पैर की स्वाभाविक अवस्था का भी एक चित्र दिया गया है। दोनों की तुलना करने से पाठक देखेंगे कि स्वाभाविक पैर का तलवा १० इंच लंबा, अर्थात् चीनी स्त्री के तलवे से दुगना, है। चीनी स्त्रियों को अपने पाँच इंच लंबे पैर पर सारा भार देकर चलना-फिरना पड़ता है। समूचा शरीर केवल कुछ उँगलियों के अग्र-भाग पर खड़ा रहता है। इसलिये, प्राणितत्त्वज्ञों की सम्मति के अनुसार, घोड़े की-जैसी तेज़ दौड़ने की शक्ति इनके भी होनी चाहिए। किंतु वास्तव में वे ऐसा नहीं कर सकतीं। नहीं कहा जा सकता कि पैर की इस विकृतावस्था

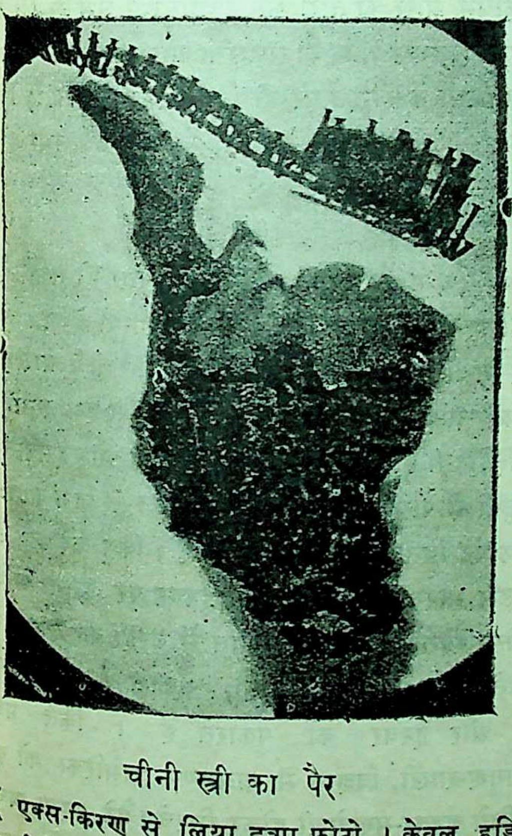

चीनी स्त्री का पैर

(एक्स-किरण से लिया हुआ फ़ोटो। केवल हड्डियाँ आई हैं। नीचे लंबी-लंबी लोहे की कीलें दिखलाई ती हैं। मांस या चमड़ा नहीं देख पड़ता)

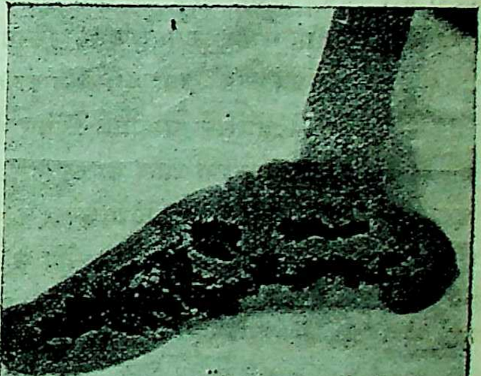

स्वाभाविक पैर

(एक्स-किरण से लिया हुआ चित्र)

से शरीर की सुंदरता कितनी बढ़ती है; किंतु इससे शरीर को जो तकलीफ़ पहुँचती है, उसका सहज ही में अनुमान किया जा सकता है।

× × ×

५. कृत्रिम आँख

अमेरिका में, हज़ार में चार मनुष्यों की एक आँख नक़ली होती है। किंतु असली और नक़ली आँखों में भेद समझना आसान काम नहीं है। नक़ली आँखें असली-जैसी ही जान पड़ती हैं। वहाँ ऐसी निपुणता के साथ मनुष्य की आँखों का जाल होने लगा है कि केवल दृष्टि-शक्ति को छोड़कर असली और नक़ली आँख में और किसी प्रकार का भेद नहीं रहता। पहले-पहल जब नक़ली आँखों का प्रचार हुआ था, तब उनका तिल स्थिर रहता था। उस समय किसी ने ऐसी कल्पना नहीं की थी कि यह तिल इच्छानुसार हिलाया-डुलाया भी जा सकता है। कृत्रिम आँख की उन्नति के साथ-साथ सुदक्ष मनुष्यों ने आँख की इस प्रधान असुविधा को भी दूर कर दिया है। अब नक़ली आँख का तिल भी असली आँख के तिल के साथ, समान भाव से, घूमता-फिरता है।

अब तक जो असंभव जान पड़ता था, उसी को संभव होते हुए देखकर किसे आश्चर्य न होगा? चार हज़ार वर्ष पहले मिसर के लोग कृत्रिम आँख का व्यवहार करते थे, इसका प्रमाण मिला है। वे शीशे के बदले सोने की आँखों का व्यवहार करते थे। पतले सोने के पोले ख़ोल की सहायता से आँख बनाकर उस पर मीनाकारी करके आँख का तिल बना लेते थे। इसका भी प्रमाण मिला है कि ढाई हज़ार वर्ष पहले रोमन लोग कृत्रिम आँख का व्यवहार करते थे। उनकी नक़ली आँख मिट्टी की बनती थी। हलकी मिट्टी की आँख बनाकर, उस पर रंग लगाकर, वे आँख का तिल बनाते थे।

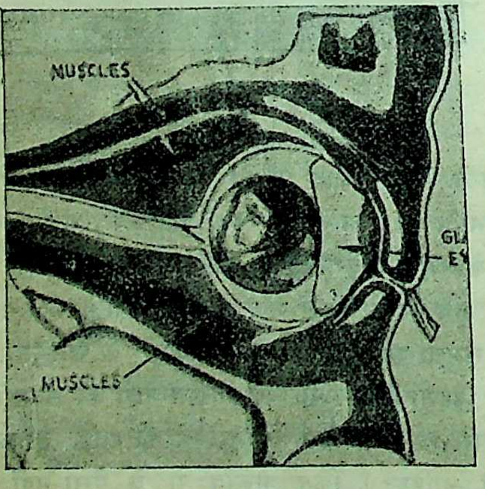

कृत्रिम आँख

आजकल की कृत्रिम आँख शीशे की बनती है। उजले शीशे के साथ रंगीन शीशा मिलाकर, सुदक्ष नेत्र-शिल्पी, अति चतुरता के साथ सजीव आँख की अविकल नक़ल बना रहे हैं। जो सचल तिल-युक्त कृत्रिम आँख का व्यवहार करना चाहते हैं, उनके लिये विशेष प्रकार की आँख बनती है। ऐसी कृत्रिम आँख एक सोने के गोलक के ऊपर लगी रहती है। जिनकी एक आँख नष्ट हो गई है, किंतु आँख की पेशी तथा दर्शनेंद्रिय का प्रधान स्नायु ठीक है, वे ही चलती हुई तिल-युक्त आँख का व्यवहार कर सकते हैं। कारण, ऐसी आँख लगाने के समय सोने के गोलक को उक्त प्रधान स्नायु के सि के साथ मिलाकर इस प्रकार लगा देना पड़ता है, जिस में कृत्रिम आँख का तारा भी इच्छानुरूप घूम सके। इस प्रकार की कृत्रिम आँख की सफलता आँख बनाने की अपेक्षा आँख बैठाने के कौशल पर ही निर्भर रहती है। कुछ दि में असली आँखें भी बनने लगें, तो आश्चर्य क्या है!

× × ×

६. कृत्रिम वर्षा

संपादक महाशय, आधा जुलाई समाप्त हो गया; कि अभी तक यथेष्ट वर्षा नहीं हुई। चारों ओर वर्षा के लिये हा कार मचा हुआ है। आप तो पंखे के नीचे आराम बैठकर 'माधुरी' का संपादन करते हैं। किंतु हम लोगों जैसी बीतती है, वह हमी जानते हैं। लोहे और इसपात भट्ठियों के पास इस दारुण ग्रीष्म-काल के दिन के छः आठ घंटे बिताना कोई खेल नहीं है। किंतु करें क्या!

हम भारतवासी ठहरे; हमें ईश्वर पर इतना अ भरोसा रहता है कि हरएक बात में उन्हीं की दुहाई लगते हैं। वृष्टि नहीं होती, आकाश की ओर दे हैं, और ईश्वर को पुकारते हैं। किंतु प्र रजोगुण-शाली, विज्ञान में अग्रगण्य अमेरिका को के लिये ईश्वर-मुखापेक्षी होकर निश्चेष्ट बैठे रहना अ नहीं लगता। कार्नल-विश्वविद्यालय के रसायना डॉक्टर [illegible] बैनक्रष्ट और मिस्टर फ्रैंसिस

इच्छानुसार जल बरसाने में कृतकार्य हुए हैं। इन दो वैज्ञानिकों की अक्लांत चेष्टा से कृषि की एक भारी असुविधा दूर हो चली है। समय पर वर्षा न होने के कारण, पानी के अभाव से, साल-भर का परिश्रम अब नष्ट नहीं होगा। केवल यही नहीं, इनके उद्भावित उपाय के अनुसार यदि विस्तृत रूप से काम किया जाय, तो कुछ दिनों में संसार की आब-हवा बदल दी जा सकती है। मरु-भूमि को शस्य-श्यामल क्षेत्र में परिणत करना, निदाघ-तप्त दिन को शांत, शीतल करना, और मेघ से घिरे हुए आकाश को स्वच्छ बनाना भी इस आविष्कार से संभव हो गया है।

दो वायु-यानों की सहायता से बैनक्रुष्ट और बैरन ने इस अद्भुत व्यापार को कार्य-रूप में परिणत किया है। एक वायु-यान के नीचे असंख्य वैद्युतिक तार लगे हुए हैं। यह जहाज़ बादल में प्रवेश करता है. और ऋण (Negative)-विद्युत् के वर्षण द्वारा हलके जल-कणों को जमा कर भारी मेघ के रूप में परिणत करता है। यहाँ यह कह देना आवश्यक है कि प्रत्येक मेघ-खंड बहुत छोटे-छोटे जल-कणों की समष्टि-मात्र हैं। ये इतने हलके होते हैं कि माध्याकर्षण-शक्ति के जल-कण खिंचाव के कारण ज़मीन पर नहीं गिर सकते। दूसरा वायु यान ऋण-विद्युत् द्वारा बने हुए जल-कणों पर धन-विद्युत् (Positive) से संचरित बालू बरसाता है। इस प्रकार जल-कण इतने भारी हो जाते हैं कि ज़मीन पर गिरने लगते हैं, अर्थात् वर्षा होने लगती है।

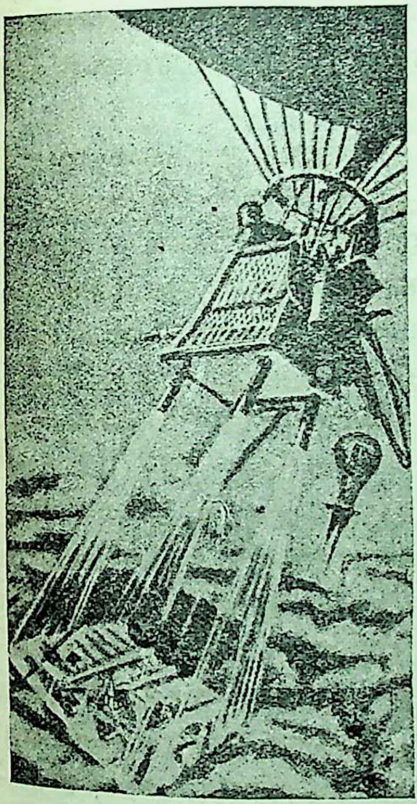

जल बरसानेवाले वायु यान

× × ×

७. कुहरा दूर करने का बेलून

अमेरिका में निर्मल आकाश बहुत दुर्लभ है। जिस दिन वहाँ के रहनेवाले सूर्य का दर्शन पाते हैं, उस दिन आनंद में आपे से बाहर हो जाते हैं। बहुत दिनों से वहाँ के वैज्ञानिक बहुत समय तक साफ़ आकाश पाने की चेष्टा कर रहे हैं। इतने दिनों के बाद उनकी चेष्टा सफल हुई है। कुहरे को साफ़ करने के लिये आजकल आकाश में बेलून छोड़ा जाता है। इस बेलून से बड़े ज़ोरों के साथ विद्युत्-संचरित पानी बरसता रहता है। साथ ही कुहरा फटकर आकाश स्वच्छ हो जाता है।

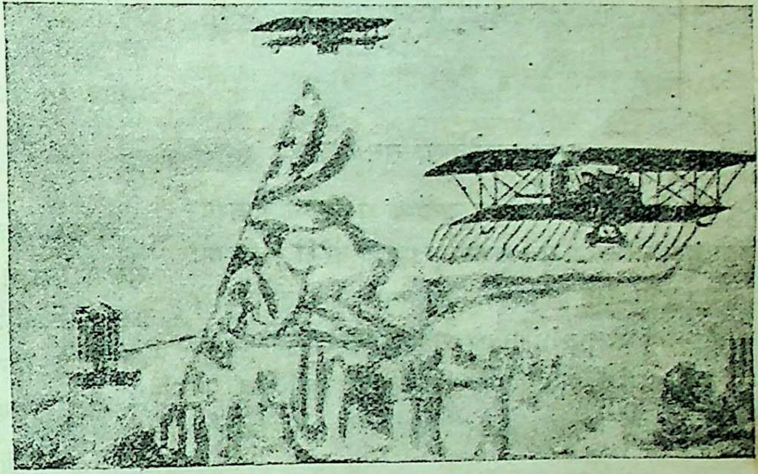

कुहरा दूर करने का बेलून

× × ×

८. बात करनेवाला सूत्र

स्वीज़लैंड के एक महाशय ने एक वैद्युतिक यंत्र का आविष्कार किया है। इस यंत्र में मनुष्य से कही हुई बातें सूत्र पर लिपि-बद्ध हो जाती हैं। उस यंत्र के मुँह में बातें कहने से शब्द-तरंग एक अबरख़ की झिल्ली को आघात कर उसे स्पंदित करती है। यह स्पंदन एक Sapphire की सुई को परिचालित करता है। सुई की नोक एक पतले छोटे उस्तरे-जैसी होती है। उक्त सुई की नोक के द्वारा सेलूलायेड (Celluloid) के सूत्र के ऊपर निशान बनता है। मनुष्य बोलता जाता है, और सूत्र पर निशान बनता जाता है।

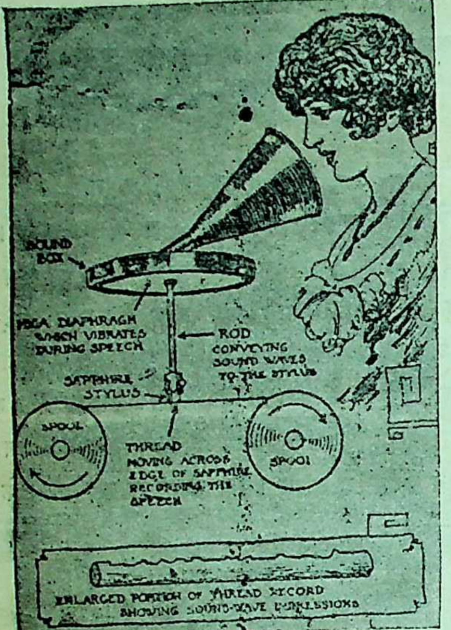
SOUND BOX
MICA DIAPHRAGM WHICH VIBRATES DURING SPEECH
ROD CONVEYING SOUND WAVES TO THE STYLUS
SAPPHIRE STYLUS
SPOOL
THREAD MOVING ACROSS EDGE OF SAPPHIRE RECORDING THE SPEECH
SPOOL
ENLARGED PORTION OF THREAD RECORD SHOWING SOUND-WAVE IMPRESSIONS

बातें करनेवाला सूत्र

यदि फिर किसी को उन बातों के सुनने की आवश्यकता हुई, तो उन्हें सुन सकता है। शब्द-तरंगों से निशान किया हुआ सूत्र फिर वैद्युतिक यंत्र की सहायता से घूमते-घूमते Sapphire की सुई के नीचे आता है, तो सुई स्पंदित होती है, और वह स्पंदन अबरख़ की झिल्ली को फिर परिचालित करता है। तब यंत्र के मुँह से फ़ोनोग्राफ़ की-सी आवाज़ निकलती है। उसे आप सुन सकते हैं। इस यंत्र के आविष्कार से अब लोग कहने लगे हैं कि पत्र के बदले इस प्रकार का सूत्र ही भेज दिया जायगा। संपादकों के पास, लंबे-लंबे लेखों के बदले, जो बातें कहनी हुईं, उन्हें इस प्रकार के सूत्र में भरकर लेखक भेजा करेंगे। वे यंत्र की सहायता से सूत्र को उलटी ओर घुमाकर लेखकों के वक्तव्य सुन लेंगे। ऐसा होना असंभव नहीं है; क्योंकि इसी बीच में अनेक ऑफ़िसों में साहबों के पास ऐसा यंत्र रहने लगा है। वे चिट्ठियों के उत्तरों को इसी यंत्र में छोड़ जाते हैं। टाइपिस्ट समय पाकर उन्हें 'टाइप' कर देता है।

बातें करनेवाला सूत्र पारलोग्राफ़

इस यंत्र का नाम पारलोग्राफ़ (parlograph) है। इससे जो शब्द सुनाई देते हैं, वे घर में साफ़-साफ़ सुन पड़ते और समझे जाते हैं। देखें, भारतवर्ष में ऐसी मशीन कब तक आती है ?

× × ×

९. नीम से लाभ

नीम का वृक्ष दूषित वायु को संशोधित करता है। उसके पास के घरों में रहना लाभदायक है। वसंत में नीम बहुत फ़ायदे की चीज़ साबित हुई है। प्लेग की भी वह उत्कट ओषधि है। नीम की हरी पत्तियों को नमक के साथ पीसकर, उसकी छोटी-छोटी गोलियाँ बनाकर खाने से प्लेग का आक्रमण नहीं होता। वरदा-राज्य (?) में बहुत-से नीम के वृक्ष हैं। प्लेग के प्रकोप के समय जिन मनुष्यों ने भागकर उनके नीचे आश्रय लिया था, उनमें से अधिकांश को प्लेग नहीं हुआ। कुष्ठ-रोग में भी नीम से लाभ होता है। कुछ लोग फाल्गुन-चैत्र में नीम की कोमल पत्तियाँ घी में भूनकर खाते हैं। इससे खून साफ़ हो जाता है। जिनका खून ख़राब हो गया हो, वे यदि नीम का व्यवहार करें, तो अवश्य फ़ायदा होगा।

× × ×

१०. तार के विना विद्युत्-शक्ति का स्थानांतर

अब तक एक स्थान से दूसरे स्थान को विद्युत्-शक्ति (Electrical Power) भेजने के लिये तार व्यवहृत होते थे। किंतु अब ऐसी परीक्षा चल रही है, जिससे विना तार के ही विद्युत्-शक्ति स्थानांतरित की जा सके।

रमेशप्रसाद

महिला मनोरंजन

१. स्त्री-कर्तव्य

स्त्रियों का प्रधान कर्तव्य है अपने बालकों का पोषण तथा गृहस्थी का काम। स्त्रियों को अपने बच्चों को दाई-नौकरों के ऊपर नहीं छोड़ना चाहिए। ऐसा करने से बच्चे बिगड़ जाते हैं। मूर्ख दाई बच्चों को पढ़ी माता के समान उच्च शिक्षा तथा अच्छे उपदेश नहीं देगी। इस तरह लड़का बुरे आदर्श का हो जायगा। एक बात बच्चों के लिये यह भी आवश्यक है कि उन्हें बुरे संग में न पड़ने दिया जाय; क्योंकि बच्चा जैसे संग में रहेगा, वैसा ही उसका आदर्श होगा। उनको अपनी ही देख-भाल में रखना चाहिए। अगर मा न हो, या कोई और पढ़ी-लिखी स्त्री घर में देख-भाल करनेवाली न हो, तो किसी दूसरी स्त्री को रक्षिका बनाकर उसी की देख-भाल में बच्चों को रखना चाहिए। जब तक स्त्री पाँच वर्ष तक बच्चों को नहीं पालेगी, बच्चों का सुधरना कठिन है। यद्यपि पुरानी पुस्तकों में लिखा है कि धाय ही बच्चों को पाँच वर्ष तक पालती थी, परंतु तब धाय भी पढ़ी-लिखी तथा अच्छे आदर्श की होती थी। इसलिये यदि बच्चे को धाय की रक्षा में रक्खे, तो पढ़ी तथा अच्छी धाय की रक्षा में। तब बच्चा कभी मूर्ख न होगा।

स्त्रियों का दूसरा कर्तव्य है गृहस्थी का काम करना। स्वामिनी का प्रधान कर्तव्य घर का प्रबंध करना है। घर का प्रबंध ठीक न रहने से हानि होती है। स्वामिनी का धर्म है कि सब से पहले गर्भवती स्त्री को खिलावे, फिर बीमारों को, तब बच्चों को। उसके बाद अतिथियों तथा घर के पुरुषों को खिलावे। फिर बहुओं तथा दाई-नौकरों को खिलाकर अंत में स्वयं खाय। रात को सब के अंत में आप सोना चाहिए। सोने के पहले सारे घर में रोशनी लेकर घूम लेना चाहिए। देख ले कि कहीं कोई किंवाड़ तो नहीं खुला है, या कोई वस्तु तो बाहर नहीं पड़ी है। इन कामों को स्वयं करना चाहिए। किसी के विश्वास पर न छोड़ना चाहिए। इन कामों को स्वयं न करने से हानि होती है। स्वामिनी को, सवेरे, सब से पहले उठकर नित्य-कर्म करने के बाद घर के दाई-नौकरों को जगाना चाहिए। फिर बहू-बेटियों को जगाकर कुछ थोड़ा-सा पढ़े। उसके बाद सब को जल-पान कराकर रसोई का प्रबंध करे। फिर सब को खिलाकर आराम करे। अगर प्रत्येक गृह-देवियाँ इस प्रकार नियम से काम करें, तो कभी किसी को कष्ट न हो।

भारत में बहुत-से मनुष्य ऐसे हैं, जो भूखों मरते हैं। ऐसे भी बहुत-से घर हैं, जहाँ दो-चार सेर अन्न रोज़ फेंक दिया जाता है। ऐसे गृहों की स्वामिनियों से सविनय प्रार्थना है कि वे उस अन्न को भूखों के लिये, अपना प्रधान कर्तव्य समझकर, भिजवा दिया करें, तो उन भूखों का उपकार हो, और पुण्य भी हो। अगर इस तरह प्रत्येक मनुष्य एक दूसरे का उपकार करे, तो भारत का शीघ्र ही उद्धार हो जाय। स्त्रियों का मुख्य कर्तव्य है पातिव्रत-धर्म का पालन। जो स्त्रियाँ इस कर्तव्य का पालन नहीं कर सकतीं, वे किसी कर्तव्य का पालन नहीं कर सकतीं;

और न उनके बच्चों का पालन ही ठीक तरह से हो सकता है। न उनके बच्चे ही सुधर सकते हैं। पहले स्त्रियाँ जब पतिव्रता होती थीं, उनके लड़के राम-कृष्ण के समान वीर तथा स्वनाम-धन्य होते थे। अगर फिर भी स्त्रियाँ वैसी ही मन-वाणी-काया से पूर्ण पतिव्रता हों, तो कोई आश्चर्य नहीं कि उनकी संतान थोड़े ही दिनों में भारत का उद्धार कर ले। मेरी सब स्त्रियों से सविनय प्रार्थना है कि वे सर्वथा अपने पातिव्रत-धर्म और कर्तव्य का पालन करें।

श्रीइंदुमती शर्मा

× × ×

२. स्त्री-शिक्षा

गृहस्थी वास्तव में एक गाड़ी है; जिसके स्त्री और पुरुष दोनों दो पहिए हैं। जब तक ये दोनों पहिए दुरुस्त न होंगे, तब तक इस गाड़ी का अच्छी तरह चलना कदापि संभव नहीं। अगर पुरुष सच्चे धर्मात्मा, पढ़े-लिखे, ज्ञानवान्, गृहस्थी के कामों को अच्छी तरह जाननेवाले हैं, और स्त्रियाँ लड़ाका, बात-बात में गाल फुलानेवाली, फूहर तथा निर्लज्ज हैं, तो गाड़ी ठीक नहीं चल सकती। अगर स्त्री ऐसी होगी, तो गृहस्थी शीघ्र मिट जायगी। इसी तरह अगर स्त्री लायक़, अच्छी, पढ़ी-लिखी और समझदार है, और पुरुष मूर्ख, बदमिजाज़, बदमाश या शैतान है, तो भी गृहस्थी अच्छी तरह नहीं चल सकती। हाँ, यह ज़रूर होगा कि स्त्रियों के सुघड़ होने से गृहस्थी का जल्दी नाश न होने पावेगा; क्योंकि गृहस्थी का बहुत बड़ा भाग स्त्रियों ही पर अवलंबित है।

गृहिणी से ही गृहस्थी है। अगर गृहिणी नहीं, तो गृहस्थी कैसी? स्त्री-पुरुष, दोनों से गृहस्थी है। इसलिये दोनों को पक्की शिक्षा मिलनी चाहिए। फिर पुरुषों की तरह स्त्रियों को भी क्यों नहीं शिक्षा दी जाती? मैं देखती हूँ, आज भी अधिकांश स्त्रियाँ एक तरह से मूर्ख और अबला हैं। परंतु पुरुष तो इन लोगों से भी गए-बीते हैं, बिलकुल अक़्ल के पीछे लट्ठ लेकर पड़े हैं। आशा है, पुरुष मुझे क्षमा करेंगे कि मैं स्त्री होकर अपने मुख से ये कटु वचन निकालती हूँ।

मैं समझती हूँ, कोई भी जाति कितनी ही अच्छी क्यों न हो, जब तक उसकी स्त्रियों को अच्छी शिक्षा नहीं मिलेगी, तब तक उस जाति की उन्नति होना असंभव है। एक छोटा-सा बच्चा अपनी मा की गोद ही से शिक्षा ग्रहण करने लग जाता है। कैसा अच्छा होता, जो स्त्रियों को भी पूरी शिक्षा मिलती, और उनकी संतानें भी उनसे अच्छी शिक्षा ग्रहण करके लायक़ निकलतीं। निस्संदेह स्त्री और पुरुष के समान अधिकार हैं। दोनों को शिक्षा पाने का बराबर हक़ है।

हमारे देश-भाइयों को उचित है कि वे अपनी योग्यता दिखलाकर स्त्रियों को शिक्षित और उन्नत बनावें। स्त्री-शिक्षा ही के अभाव से इस समय भारत की पूर्ण उन्नति में रोड़े अटक रहे हैं। अब भारत-संतानों को अपनी माता के शोक के आँसू पोंछकर ऐसा करना चाहिए कि वह आनंद के आँसू बहावे।

आशा है, मेरी यह प्रार्थना निष्फल न होगी, स्त्रियों को और भी अधिक शिक्षित बनाने का व्यापक प्रयत्न किया जायगा, और उन्हें उनके अधिकार देने में आनाकानी न होगी।

धर्मशीला जायसवाल

× × ×

३. स्वर्गीया मा साहब पाँचीबाई

स्वर्गीया मा साहब पाँचीबाई

यह चित्र मा साहब पाँचीबाई का है। राजपूताने में प्रायः माजी साहबा के नाम से राज्य की राज-माता का बोध होता है। पर आप अपनी धार्मिकता, उदारता और कौशल के कारण इधर मा साहब के नाम से प्रसिद्ध थीं। जो कोई दीन-दुखी शरण में आता था, वह इन माता के निकट आश्रय पाता था। आपका जन्म जयपुर में, खंडेलवाल श्रावक धर्मदासजी के घर, सं० १९२६ में, हुआ था, और विवाह, सं० १९३८ में, झालरापाटन के सुप्रसिद्ध व्यापारी सेठ बालचंदजी सेठी के साथ। आप सेठजी की चतुर्थ पत्नी थीं। जिस समय आप ब्याह कर आईं, उस समय सेठजी की प्रथम पत्नी की संतान सेठ दीपचंदजी—जिनके पुत्र भँवरलालजी और पौत्र कैलाशचंद (बड़े बाबू और छोटे बाबू) आज विद्यमान हैं—मौजूद थे। सेठजी के यहाँ आपकी कोख से मानिकचंदजी, लालचंदजी और नेमीचंदजी ने जन्म लिया। एक कन्या भी हुई। उसका नाम अनूपकुमारी था (इस समय विद्यमान नहीं है)। संवत् १९५६ में सेठजी का स्वर्ग-वास हो गया।

सेठजी का स्वर्ग-वास होने के बाद आपने अपना वैधव्य-जीवन व्यतीत किया। सारे कारबार को आपने, बड़ी होशियारी से, प्रधान मुनीम लूनकरनजी और गंगारामजी की सहायता से, चलाया; अपने पति के नाम और संपत्ति में खूब वृद्धि की; कई जगह नई-नई दूकानें खुलवाईं; कपड़े की मिल चलाई; और अन्य अनेक व्यापारों से घराने की प्रतिष्ठा बढ़ाई। आपके सब पुत्रों के पैर में सोना पड़ा हुआ है। यहाँ तक कि आपके मुनीम लूनकरनजी को भी पैर में सोना धारण करने की प्रतिष्ठा प्राप्त है। यह सब कुछ होने पर भी आपने वैधव्य-जीवन एक धार्मिक स्त्री की भाँति बिताया। सोने-जवाहिर की कौन कहे, पति के स्वर्ग-वासी होने के बाद आपने कभी चाँदी का छल्ला तक नहीं पहना। सादे वस्त्र पहने रहती थीं। प्रतिदिन श्रीशांतिनाथजी के मंदिर में प्रातःकाल २-३ घंटे व्यतीत करती थीं। नित्य स्वाध्याय का नियम था। सेठजी के संग्रह किए हुए शास्त्र इनके जीवन के अवलंब थे। आप जैन-धर्म की अनुयायिनी होकर भी किसी धर्म का अपमान नहीं करती थीं। अपमान करना दूर रहा, प्रत्येक धर्म के सच्चे और शांत अनुयायी का आपने सम्मान किया। यह बात आपको अपने पति से प्राप्त हुई थी। आपने पति के बाद छोटे-छोटे बालकों को पाला-पोसा, बड़ा किया, और व्यवहार-निपुण बनाने की भर-सक कोशिश की। सब के विवाह अपने घर की प्रतिष्ठा के अनुसार किए। इस तरह सांसारिक कर्तव्यों को निबाहते हुए घर की बड़ी प्रतिष्ठा बढ़ाई। आपका व्यवहार सब पर प्रभाव डालनेवाला था। योग्य कार्य-कर्ताओं को आप पूर्ण पुरस्कार देती थीं। आपने एक-एक समय में ३०-३०, ४०-४० हज़ार का पुरस्कार दिया, और अपने मुनीम तथा गुमाश्तों की क़दर की। आप ग़रीब, अनाथ और बेवाओं की भी ख़बर लेती थीं। गुप्त रीति से भी अनेकों की सहायता करती थीं। आपने पाँच बार भारत में तीर्थ-यात्रा की। जगह-जगह धर्मशालाएँ भी बनवाईं। आप आहार, वस्त्र, औषधि आदि का दान किया ही करती थीं। इस तरह आपका जीवन एक उपयोगी और आवश्यक जीवन था।

आपके पुत्र सेठ मानिकचंदजी रायबहादुर, ताज़िरुलमुल्क और वाणिज्य-भूषण हैं। सेठ लालचंदजी वाणिज्य-भूषण बड़े सुयोग्य व्यक्ति हैं। नेमीचंदजी बड़े भारी सज्जन और विचक्षण हैं। पौत्र भँवरलालजी बड़े विचार-शील और सत्पुरुष हैं। ये चारों सज्जन व्यापार में खूब दिलचस्पी लेते हैं। आप केवल कमाने की मशीन नहीं हैं, बल्कि उदार और साहित्य-प्रेमी सज्जन हैं। राजपूताना-साहित्य-सभा के स्थापित होने में आपका बड़ा भारी हिस्सा है। पौत्र विमलचंद और कैलाशचंद पढ़ते-लिखते हैं। दो छोटे-छोटे प्रपौत्र और दो छोटी-छोटी पौत्रियाँ हैं। सब पुत्र-वधू और पौत्र-वधू पढ़ी-लिखी और चतुर हैं। इस प्रकार आपने अपने कुटुंब को सुख-समृद्धि और एकता के सूत्र में बँधा हुआ छोड़कर, एक लाख का दान करके, वैशाख-कृ० ८ रविवार को प्रातःकाल, श्रीशांतिनाथ भगवान् के चरणों की अर्चना में केसर चढ़वाकर, इस नश्वर शरीर को त्याग दिया! इन देवी (मा साहब) के उठ जाने से श्रीयुत मानिकचंदजी, लालचंदजी, नेमीचंदजी और भँवरलालजी के सिर पर से अनन्य छत्र जाता रहा। प्रभु इन्हें धैर्य दें, और स्वर्गीय आत्मा को शांति। पाटन की एक दयालु देवी गईं। प्रभु इस परिवार को उनके चरणों का अनुसरण करने की शक्ति दें।

गिरिधर शर्मा

× × ×

४. स्त्रियों का देश

दक्षिणी अमेरिका में 'पेरेगुए' नाम का एक देश है। उसमें पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों की संख्या इतनी अधिक है कि वह स्त्रियों का देश कहलाता है। एक अमेरिकन यात्री ने उसकी राजधानी के बड़े बाज़ार का हाल इस प्रकार लिखा है —'एक बड़ी-सी चौकोर जगह पर नगर का सब से बड़ा बाज़ार है। सौदा बेचनेवाले पुरुष नहीं, स्त्रियाँ ही हैं। बाज़ार में मछलियाँ, अनेक प्रकार की तरकारियाँ और मांस बहुतायत से था। औरतें रोटियों के ढेर सामने लगाए हुए बेच रही थीं। रोटी के अतिरिक्त मक्खन की थालियाँ, पनीर की तश्तरियाँ और पत्थर के बरतनों में रक्खी हुई बालाई भी बिक रही थी। गन्ने के रस से बनी हुई एक प्रकार की मदिरा भी बिक्री के लिये तैयार थी। स्त्री-सौदागरों और स्त्री-दूकानदारों से बाज़ार भरी हुई थी। ख़रीदने का काम भी औरतें ही कर रही थीं। बाज़ार में इतना शोर-गुल मचा हुआ था कि कानों के परदे फटे जाते थे। वहाँ बाज़ार से ख़रीदने-वालों के यहाँ सामान ले जाने के लिये गाड़ियों या कुलियों का प्रबंध नहीं है। ख़रीदार-स्त्रियाँ अपना सामान रखने के लिये स्वयं टोकरियाँ या बरतन लाती हैं। मालूम होता है, वहाँ इस काम के लिये बड़े-बड़े तसले बहुत पसंद किए जाते हैं। प्रायः प्रत्येक स्त्री एक-एक तसला लिए हुए थी; जिसे वह सिर पर रखकर चलती थी। हाँ, सिर और तसले के बीच में वे एक छोटा-सा रूमाल भी रख लेती हैं, और फिर उसे सँभालने के लिये हाथ लगाने की आवश्यकता नहीं पड़ती। मध्य और निम्न श्रेणी की स्त्रियाँ नंगे पैर रहती हैं।''

वहाँ की स्त्रियाँ सफ़ेद या किसी हलके रंग का घाँघरा और कामदार कुर्ती पहनती हैं। गरम देश होने के कारण स्त्रियाँ घर में इन दो वस्त्रों के अतिरिक्त और कुछ नहीं पहनतीं। बाहर जाते समय एक सूती ओढ़नी, जो प्रायः सफ़ेद रंग की होती है, इनके ऊपर पहन लेती हैं। इससे उनका सिर और कंधे ढक जाते हैं। वे माँग नहीं काढ़तीं, बालों में कंघी करके और खींचकर पीछे की ओर बाँध लेती हैं। फूल उन्हें बहुत प्रिय हैं—जूड़े और कानों में बहुधा फूल खोंसे रहती हैं। साधारण तौर से स्त्रियाँ बहुत सुंदर होती हैं; पर नंगे पैर चलने से उनके पैरों की उँगलियाँ बहुधा ख़राब हो जाती हैं।

बर्मा की तरह वहाँ भी स्त्री और पुरुष, सभी तंबाकू पीते हैं। ऐसे व्यक्ति प्रायः कम दिखाई पड़ते हैं, जिनके मुख में सिगरेट या सिगार न लगा हुआ हो।

पुरुषों के संबंध में वही अमेरिकन यात्री लिखता है —''पेरेगुए में इतने कम मनुष्य दिखाई देते हैं कि उनके संबंध में लिखना मैं भूल ही गया था। याद आने पर भी उनके संबंध में मुझे बहुत थोड़ा कहना है। क़द में यद्यपि वे छोटे होते हैं, पर प्रायः ख़ूब हृष्ट-पुष्ट हैं। वे काहिल तो हैं, पर घोड़े की सवारी में बड़े दक्ष हैं। वे सफ़ेद क़मीज़ और ढीले पाजामे पहने हुए नंगे पैर घूमा करते हैं। पर जो अमीर तथा सुशिक्षित हैं, वे योरपियन पोशाक पहनते हैं।''

स्त्रियाँ ही मज़दूरी भी करती हैं। बग़ीचों और खेतों में भी वे ही काम करती हैं। सुबह आठ बजे से लेकर दो बजे तक, जब कि थर्मामीटर का पारा १०० डिग्री से भी ऊपर पहुँच जाता है, प्रायः सभी आराम करते हैं। उस समय भी ये स्त्रियाँ नंगे-पैर और नंगे-सिर धूप में बोझा ढोती हैं, और दूसरे प्रकार के काम करती रहती हैं।

पेरेगुए के स्त्री-प्रधान देश होने का क्या कारण है? युद्ध। सन् १८७० के लगभग इस छोटे-से देश को दक्षिणी अमेरिका के तीन बड़े बड़े देशों के साथ लोहा बजाना पड़ा। उरूगुए, ब्रेज़िल और आरजेंटाइन, इन तीनों देशों ने मिलकर पेरेगुए के साथ पाँच वर्ष तक ऐसा घोर युद्ध किया कि बेचारा तबाह हो गया। आदमियों की कौन कहे, लड़के तक उस युद्ध में बड़ी वीरता से लड़े, और काम आए। इसका परिणाम यह हुआ कि स्त्रियों तथा वृद्ध पुरुषों के अतिरिक्त देश-भर में कोई न रहा। तब से अब तक मनुष्यों की यह कमी बहुत कुछ पूरी हो चुकी है; पर अभी संतोष-जनक नहीं है।

भूपनारायण दीक्षित

× × ×

५. लंदन की अध्यापिकाएँ

लंदन में ४००० महिलाएँ अध्यापन-कार्य से पृथक् की गई हैं। उनमें से जो महिला यह प्रमाणित कर देगी कि वह अपने पति से पृथक् है, उसके साथ रियायत की जायगी; अर्थात् उसे अध्यापन-कार्य देने के लिये पुनर्विचार किया जायगा, और जहाँ तक संभव होगा, उसे वह कार्य पुनः दिया जायगा।

पुस्तक-परिचय

१. पुस्तकें

लाला हरदयाल के स्वाधीन विचार—अनुवादक, संग्रहकर्ता तथा प्रकाशक, श्रीयुत नारायणप्रसाद अरोड़ा बी० ए०, पटकापुर, कानपुर । आकार २०×३० सोलह-पेजी । पृष्ठ-संख्या २१२, कागज़, छपाई-सफ़ाई साधारणतया अच्छी, जिल्द सादी, और मूल्य १)

इस पुस्तक में प्रसिद्ध देश-भक्त लाला हरदयाल के स्वाधीन विचारों तथा तद्विषयक उनके अँगरेज़ी लेखों का अनुवाद है । भारतीय शिक्षित-समाज में लालाजी के इन अँगरेज़ी लेखों का बड़ा आदर है । जिन दिनों ये लेख अँगरेज़ी के 'मॉडर्न रिव्यू' आदि पत्रों में प्रकाशित होते थे, उन दिनों बड़े चाव से पढ़े जाते थे—अँगरेज़ी के पाठकों में सर्वत्र इनकी बड़ी चर्चा रहती थी । हैं भी ये प्रभावोत्पादक । इन्हें पढ़कर ही बहुत-से युवकों में देश-भक्ति का भाव उत्पन्न हुआ है । यह पुस्तक लालाजी के इन्हीं लेखों का संग्रह है । संग्रह अच्छा हुआ है । राष्ट्रीय साहित्य-निर्माण के लिये ऐसे उत्तमोत्तम संग्रह-ग्रंथों की आवश्यकता है । अनुवाद की भाषा सरल और रोचक है । पुस्तक मनन करने और उसके आदेश अमल करने योग्य हैं ।

× × ×

स्वामी रामतीर्थ का राष्ट्रीय संदेश—अनुवादक और प्रकाशक दोनों वही । आकार-प्रकार भी वही । पृष्ठ-संख्या १२०, जिल्द सादी, और मूल्य ।॥)

यह पुस्तक परमहंस स्वामी रामतीर्थ के अँगरेज़ी निबंधों का अनुवाद है । ये निबंध स्वामीजी ने उस समय लिखे थे, जब वह अमेरिका में थे, और जब उन्हें अपने वतन—भारत—की याद आती थी, तो उसकी स्मृति में घंटों रोया करते थे । कुछ निबंध तो उन्होंने उसी अवस्था में (रोते हुए) लिखे हैं । ऐसा कौन सहृदय व्यक्ति होगा, जो विदेश जाने पर देश की याद करके अपने हृदय में एक अभूतपूर्व वेदना का अनुभव न करेगा ? परंतु जो सच्चे देश-भक्त होते हैं, उनकी आत्माएँ तो ऐसी अवस्था में रो उठती हैं । स्वामी रामतीर्थ परमहंस होकर भी अपूर्व देश-भक्त थे । अँगरेज़ी में तो आपके उपदेशों के संग्रह-स्वरूप कई ग्रंथ हैं । अब हिंदी में भी लखनऊ की रामतीर्थ-पब्लिकेशन-लीग उन्हें प्रकाशित कर रही है । परंतु यह पुस्तक उस समय प्रकाशित हुई थी, जब स्वामीजी के इन लेखों का अनुवाद कहीं प्रकाशित नहीं हुआ था । यह तीसरा संस्करण है । इसकी भाषा सरल और रोचक है । अँगरेज़ी-कविताओं का अनुवाद स्वर्गीय 'पूर्ण' कवि का किया हुआ है । अतएव उनमें मौलिकता का आनंद आता है । पुस्तक संग्रहणीय है ।

× × ×

देश-भक्त मेज़िनी—प्रकाशक, श्रीसतीदास मूदड़ा, 'प्रणवीर'-पुस्तक-माला, नागपुर ; लेखक, श्रीयुत राधामोहन-गोकुलजी । आकार २०×३० सोलह-पेजी । कागज़, छपाई-सफ़ाई सुंदर, पृष्ठ-संख्या २१६, और मूल्य १॥)

यह पुस्तक दृढ़ देश-भक्त, इटली के उद्धारकर्ता महात्मा

मेज़िनी का जीवन-चरित है । इटली को स्वतंत्र करने में जितना त्याग, कष्ट और बलिदान महात्मा मेज़िनी ने किया, उतना इटली के देश-भक्तों में से और किसी ने नहीं किया । इसीलिये महात्मा मेज़िनी को 'इटली का उद्धार-कर्ता' कहा जाता है । महामना मेज़िनी केवल दृढ़ देश-भक्त ही न थे, एक दार्शनिक महात्मा भी थे । उनका सिद्धांत था—'कोई भी मनुष्य तब तक देश-भक्त नहीं हो सकता, जब तक कि वह मनुष्य-भक्त न हो ।' उन्हीं महात्मा मेज़िनी का यह जीवन-चरित है । ऐसे जीवन-चरित्र युवकों के चरित्र-निर्माण में बड़े सहायक होते हैं । लेखक का श्रम प्रशंसनीय है । हिंदी-भाषा-भाषी युवकों को तो यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए ।

× × ×

भारत-भक्त एंड्रयूज़—प्रकाशक, सुब्बय्या शास्त्री न्याय-तीर्थ, गांधी-हिंदी-पुस्तक-भंडार, कालबादेवी-रोड, बंबई ; लेखक, श्रीयुत 'एक भारतीय हृदय' । आकार २०×३० सोलह-पेजी । पृष्ठ-संख्या ३३२, कागज़, छपाई-सफ़ाई सुंदर, और मूल्य विना जिल्द का २)

ऐसा कौन शिक्षित भारतीय होगा, जो भारत-भक्त महामना एंड्रयूज़ के नाम से परिचित न हो ? कारण, महात्मा एंड्रयूज़ ने भारत की अतुलनीय सेवा की है । आपके विषय में महात्मा गांधी का विश्वास है कि 'सी० एफ़० एंड्रयूज़ से अधिक सच्चा, उनसे बढ़कर विनीत और उनसे अधिक भारत-भक्त इस भूमि में दूसरा देश-सेवक विद्यमान नहीं ।' आपकी भारत-भक्ति का इससे बढ़कर प्रमाण और क्या हो सकता है ? यह पुस्तक आप ही का जीवन-चरित्र है । लेखक महाशय हिंदी के सुलेखक हैं, और अपने चरित-नायक के विषय में बहुत कुछ जानकारी भी रखते हैं । अतएव आप महामना एंड्रयूज़ का जीवन-चरित्र लिखने के उपयुक्त अधिकारी भी थे । आपका लिखा यह जीवन-चरित वास्तव में पढ़ने योग्य हुआ है । पुस्तक संग्रहणीय है ।

× × ×

राजनीति-विज्ञान—प्रकाशक, हिंदी-पुस्तक-एजेंसी, १२६ हरिसन-रोड, कलकत्ता ; लेखक, सुखसंपत्तिराय भंडारी । आकार २०×३० सोलह-पेजी । कागज़, छपाई-सफ़ाई अच्छी । पृष्ठ-संख्या २२४, और मूल्य १।=)

हिंदी में राजनीति-शास्त्र-विषयक ग्रंथों का अभाव है, यद्यपि युग राजनीतिक है । अँगरेज़ी के विभिन्न ग्रंथों के आधार पर इस पुस्तक की रचना की गई है । राजनीतिक साहित्य-निर्माण के लिये ऐसे ग्रंथों की बड़ी आवश्यकता है । अब तक लेखक महाशय की कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, फिर भी, खेद है कि यह पुस्तक भाषा-दोष से ख़ाली नहीं । पुस्तक राजनीति-प्रेमी पाठकों के पढ़ने और मनन करने योग्य है ।

× × ×

सुहागिनी (उपन्यास)—प्रकाशक, हरिदास एंड कंपनी, कलकत्ता ; लेखक, पं० चंडिकाप्रसाद मिश्र । आकार २०×३० सोलह-पेजी । कागज़, छपाई-सफ़ाई सुंदर, पृष्ठ-संख्या ३३६, और मूल्य सादी का ३।)

यह एक सामाजिक मौलिक उपन्यास है । इसमें हिंदू-समाज की जटिल रूढ़ियों पर स्वतंत्रता-पूर्वक प्रकाश डाला गया है । घटनाओं के वर्णन के साथ-साथ लेखक ने उनके संबंध में अपने व्यक्ति-गत विचार मर्मस्पर्शिनी भाषा में प्रकट किए हैं । लेखक के उद्गारों पर पाठक का हृदय सचमुच द्रवीभूत हो जाता है । भाषा बड़ी उच्च और हृदय-ग्राही है । अतुल, सावित्री तथा कुमुदिनी का चरित्र अच्छा चित्रित हुआ है । हिंदू-समाज-सुधार के लिये ऐसे उपन्यासों की बड़ी आवश्यकता है । इसमें विभिन्न घटनाओं के १८ सादे तथा २ रंगीन चित्र भी हैं, जो साधारणतः अच्छे हैं । इसकी भूमिका लेखक के परम मित्र 'वर्तमान' संपादक पं० रमाशंकर अवस्थी ने लिखी है । उन्हीं को यह उपन्यास समर्पित भी हुआ है । उनका एक चि भी है । इसके नाम और शैली बँगला-उपन्यासों के ढंग की है । कारण यह है कि इसके पूर्व मिश्रजी के क बँगला से अनुवादित उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं । यह आपकी मौलिक कृति है, तथापि इसका बँगला-शैली पर प्रवाहित होना एक प्रकार से स्वाभाविक था । हमारा ख़याल है, यदि मिश्रजी ने इसे हिंदी की शैली पर लिखा होता, तो इसका हिंदी-संसार में कहीं अधिक आदर होता । आशा है, मिश्रजी अब से जो उपन्यास लिखेंगे, उनमें इस बात का ध्यान रक्खेंगे । हम इस क्षेत्र में मिश्रजी का स्वागत करते हैं ।

× × ×

मिलन—प्रकाशक और लेखक, पं० रामनरेश त्रिपाठी

हिंदी-मंदिर, प्रयाग । आकार २०×३० सोलह-पेजी । काग़ज़, छपाई-सफ़ाई सुंदर, पृष्ठ-संख्या ४०, और मूल्य ।)

यह एक देश-भक्ति-पूर्ण, कवितामय प्रेम-कहानी है। पथिक की भाँति इसकी भी वर्णन-शैली बड़ी रोचक और हृदयग्राही है। हिंदी-संसार में त्रिपाठीजी की इस पुस्तक का भी बड़ा आदर है। ४ वर्ष के अंदर इसके चार संस्करण हो चुके हैं । कविता-प्रेमियों को इसका अवश्य अवलोकन करना चाहिए ।

× × ×

भीष्म-पितामह—प्रकाशक, श्रीयुत दीनानाथ सिगतिया, हिंदी-साहित्य-प्रचार-कार्यालय, १६२-१६४, ; हरिसन-रोड, कलकत्ता । लेखक, श्रीशिवपूजनसहाय हिंदी-भूषण । आकार २०×३० सोलह-पेजी । काग़ज़, छपाई-सफ़ाई अच्छी, पृष्ठ-संख्या १००, और मूल्य ।।=)

यह नीति-शास्त्र-निष्णात बाल-ब्रह्मचारी भीष्म-पितामह का संक्षिप्त जीवन-चरित है । लेखक ने इसे कहानी के रूप में लिखा है, अतएव वर्णन-शैली बड़ी रोचक हो गई है। भाषा भी सुंदर है । अंदर ४ सादे चित्र हैं । चौथे चित्र में कृष्ण का अपना प्रण छोड़कर, रथ का पहिया लेकर, भीष्म पर आक्रमण करना तथा पाँचवें चित्र में अर्जुन को भीष्म की शर-शय्या के सिरे को बाणों द्वारा उचकाते हुए देखकर उनकी ओर कृष्ण की विभिन्न भाव-पूर्ण मुख-मुद्रा का चित्रण बड़ा हृदयग्राही है। पुस्तक संग्राह्य है।

× × ×

प्रेम—प्रकाशक और अनुवादक, श्रीयुत सिंघई पन्नालाल जैन, हिंदी-पुस्तक-भंडार, ९३, लोअर चीतपुर-रोड, कलकत्ता। आकार २०×३० सोलह-पेजी । कागज़, छपाई-सफ़ाई सुंदर, पृष्ठ-संख्या ५६, और मूल्य ।।)

यह पुस्तक श्रीयुत अश्विनीकुमार दत्त की बँगला-पुस्तक का हिंदी-अनुवाद है । सज-धज तथा शैली में प्रेम-मंदिर, आरा की प्रेमकली की नक़ल की गई है । टाइटिल पेज पर रामेश्वरप्रसाद वर्मा द्वारा अंकित एक चित्र है । पुस्तक अच्छी है ।

× × ×

गीता की भूमिका—प्रकाशक, श्रीकृष्ण पांडेय, भारत-पुस्तक-एजेंसी, ११, नारायणप्रसाद बाबू-लेन, कलकत्ता । अनुवादक, पं० देवनारायण द्विवेदी । आकार २०×३० सोलह-पेजी । कागज़, छपाई-सफ़ाई सुंदर, पृष्ठ-संख्या ११०, और मूल्य १)

योगी अरविंद ने अलीपुर के कारा-गृह से मुक्त होकर अपने अँगरेज़ी 'कर्मयोगिन्' तथा बँगला 'धर्म' में गीता की नवीन व्याख्या, धारावाहिक रूप में, प्रकाशित की थी। यह पुस्तक उसी व्याख्या का अनुवाद है । अरविंद के विचार और उनकी भाषा इतनी उच्च होती है कि साधारण पाठक उसे समझने में प्रायः अक्षम रहते हैं । इस अनुवाद के भी इस दोष से रिक्त होने में संदेह है। क्या ही अच्छा होता कि अनुवादक महाशय बँगला-भाषा का अच्छा ज्ञान प्राप्त करके इस महत् कार्य को हाथ में लेते!

× × ×

भगवान् की लीला—प्रकाशक, श्रीबजरंगलाल लोहिया, हिंदी-साहित्य-कार्यालय, ५१-५२, बड़तल्ला-स्ट्रीट, कलकत्ता । अनुवादक, श्री 'आधार-यंत्र' । आकार १७×२७ सोलह-पेजी । कागज़, छपाई-सफ़ाई अच्छी, पृष्ठ-संख्या १३४, और मूल्य ।।)

यह पुस्तक भी योगी अरविंद के आध्यात्मिक निबंधों का अनुवाद है । अनुवाद साधारणतः अच्छा हुआ है । भाषा कहीं-कहीं हिंदी-महाविरों से दूर हट गई है । पुस्तक अच्छी है । अध्यात्म-प्रेमी पाठकों के पढ़ने योग्य है। प्रकाशक महोदय ने आठ आना पुस्तक-माला प्रकाशित करना आरंभ किया है । यह उस माला का प्रथम पुष्प है । प्रयास अच्छा है ।

× × ×

प्रजा के अधिकार—प्रकाशक वही । आकार-प्रकार भी वही । अनुवादक, श्रीप्रजावादी । पृष्ठ-संख्या १४२, कागज़, छपाई-सफ़ाई पूर्ववत्, और मूल्य ।।)

यह उक्त माला का द्वितीय पुष्प है । इसमें व्यक्ति-गत स्वतंत्रता, अदालतों में जाँच की स्वतंत्रता, प्रेस की स्वतंत्रता, सभा करने का अधिकार, शस्त्र और सेना में भरती होने की स्वतंत्रता तथा पबलिक सर्विस में स्वतंत्रता आदि विषयों पर कुल ९ निबंध हैं ।

इन निबंधों के मूल-लेखक श्रीयुत एस्० सत्यमूर्ति हैं । सत्यमूर्ति महाशय कांग्रेस के अच्छे व्याख्याता तथा राजनीति के अच्छे पंडित हैं । अतएव आपके विचार मनन करने के योग्य हैं ।

× × ×

वंदी-जीवन—प्रकाशक, श्रीजितेंद्रनाथ सान्याल बी० ए०, १७३, चक, इलाहाबाद। अनुवादक, पं० लक्ष्मीप्रसाद पांडेय। आकार २०×३० सोलह-पेजी। कागज़, छपाई-सफ़ाई सुंदर, पृष्ठ-संख्या १०८, और मूल्य ।॥)

इस पुस्तक का दूसरा नाम है, उत्तर-भारत में क्रांति का उद्योग। इसमें यह दिखलाया गया है कि योरपियन महायुद्ध के समय भारत में क्रांति की कैसी तैयारी की गई थी। इसके मूल-लेखक श्रीयुत शचींद्रनाथ सान्याल हैं। सान्याल महाशय को इस विषय में बड़ी जानकारी प्राप्त है। कारण, वह भी इसी कारण वंदी-जीवन भोग चुके हैं। यह प्रथम भाग है। इसी विषय में अभी इस पुस्तक के दो भाग और प्रकाशित होंगे। उनमें न केवल उत्तर-भारत के, बल्कि समस्त ब्रिटिश-शासित भारत के अन्यान्य प्रदेशों की तद्विषयक अवस्था पर प्रकाश डाला जायगा। वंदी-जीवन का यह प्रथम भाग रोचक, देश-भक्ति-पूर्ण तथा रोमांचकारी है। असल में यह भाग मूल-वृत्तांत की भूमिका-मात्र है।

× × ×

देश-भक्त पार्नेल—प्रकाशक, पं० विश्वंभरनाथ वाजपेयी। लेखक, पं० चंद्रबलिमणि त्रिपाठी बी० ए०। आकार २०×३० सोलह-पेजी। कागज़, छपाई-सफ़ाई साधारणतः अच्छी, पृष्ठ-संख्या १३६, और मूल्य ।=)

कोई ग्यारह वर्ष हुए होंगे, प्रयाग के स्वर्गीय पं० ओंकारनाथ वाजपेयी ने ओंकार-आदर्श-चरितमाला नाम से एक पुस्तक-माला प्रकाशित करना आरंभ किया था। वाजपेयीजी ने अपने उद्योग के बल पर इसकी अच्छी उन्नति की थी। आपने इस माला में संसार के ४०० महात्माओं के जीवन-चरित प्रकाशित करने का संकल्प किया था। खेद है, बीच ही में आपने स्वर्ग-यात्रा कर दी। अब तक इस माला में ३२ चरित प्रकाशित हो चुके हैं। यह ३०वाँ पुष्प आयर्लैंड के प्रसिद्ध देश-भक्त पार्नेल का जीवन-चरित्र है। आयर्लैंड में मिस्टर चार्ल्स स्टुअर्ट ने बड़ा काम किया है। लेखक ने आपका यह जीवन-चरित मिस्टर आहलारी ओकामन-लिखित पार्नेल महाशय के विस्तृत जीवन-चरित्र के आधार पर लिखा है। नवयुवकों को इसका अध्ययन करके अवश्य लाभ उठाना चाहिए।

× × ×

संसार का सर्व-श्रेष्ठ महापुरुष—प्रकाशक, श्रीबैजनाथ केडिया, हिंदी-पुस्तक-एजेंसी, १२६, हरिसन-रोड, कलकत्ता। संग्रहकर्ता तथा अनुवादक, पं० छविनाथ पांडेय बी०ए०, एल्-एल्०बी०। आकार २०×३० सोलह-पेजी। कागज़, छपाई-सफ़ाई साधारण, पृष्ठ-संख्या १४८, और मूल्य ॥)

महात्मा गाँधी के विषय में प्रसिद्ध विदेशी समाचार-पत्रों तथा गण्य-मान्य पुरुषों की क्या सम्मति है, इसी का दिग्दर्शन कराना इस पुस्तक का मुख्य विषय है। सम्मतियाँ विदेशीय होने के कारण अँगरेज़ी में थीं। इसमें उन सब का अनुवाद है। इसके आद्योपांत अवलोकन से वास्तव में महात्माजी को संसार का सर्व-श्रेष्ठ महापुरुष स्वीकार करना पड़ता है। अधिकांश भारतीय जनता तो यों ही महात्माजी पर इतनी भक्ति रखती है, जितनी ईश्वर के अतिरिक्त वह और कदाचित् किसी पर नहीं रखती। उनका त्याग, उनकी तपश्चर्या, उनकी देवोपम प्रकृति और निस्स्वार्थ स्वदेश-सेवा ने भारतवासियों के हृदयों में इतना विशाल स्थान प्राप्त कर लिया है कि वे उन्हें ऋषिवर् मानते हैं। हाँ, भारत में कुछ पुरुष ऐसे भी मिलेंगे, जिन्हें महात्माजी की महती तपश्चर्या पर विश्वास नहीं, जिनका हृदय उनके बलिदान पर अभी तक नहीं पसीजा। सो ऐसे अंध नरों के लिये अकेली इस पुस्तक का क्या, ऐसी सहस्रों पुस्तकों का अवलोकन व्यर्थ है। कारण, स्वार्थ के नाम पर उन्होंने अपनी आत्मा को बेच दिया है। जब तक उनके व्यक्ति-गत स्वार्थों का नाश नहीं होगा, तब तक उनका हृदय महात्माजी की महत्ता को कभी स्वीकार नहीं कर सकता। पुस्तक अच्छे ढंग से लिखी गई है। अनुवाद की भाषा अच्छी है, हालाँकि कहीं-कहीं उसमें प्रांतिकता का दोष पाया जाता है। उदाहरण—१००वें पेज की ७वीं पंक्ति का "और बदन पतली है" वाक्य। पुस्तक अध्ययन करने योग्य है। हिंदी-पुस्तक-एजेंसी की सस्ती ग्रंथ-माला का यह तृतीय पुष्प है। ऐसी सस्ती पुस्तकें प्रकाशित करने के लिये एजेंसी के संचालक केडिया महाशय धन्यवाद के पात्र हैं।

× × ×

श्रीकृष्ण-विज्ञान—प्रकाशक, श्रीपारीक-हितकारिणी-सभा, जयपुर। लेखक, पुरोहित श्रीयुत रामप्रताप। आकार १७×२७ सोलह-पेजी। कागज़, छपाई-सफ़ाई साधारण, पृष्ठ-संख्या लगभग २००, और मूल्य १॥)

यह श्रीमद्भगवद्गीता का हिंदी-पद्यानुवाद है। पद्यों की

भाषा बोल-चाल की, खड़ी बोली, है । अनुवाद अच्छा हुआ है । एक श्लोक का अनुवाद यथासंभव एक ही छंद में किया गया है, और उसके पढ़ने से श्लोक का संपूर्ण भाव हृदयंगत हो जाता है । संस्कृत से अनभिज्ञ होने पर भी जो गीता का पाठ नित्य करते हैं उन्हें इसका अवश्य अवलोकन करना चाहिए । अच्छा होता कि पुस्तक के प्रारंभ में पुस्तक-विषयक गण्य-मान्य सज्जनों तथा विद्वानों की जो सम्मतियाँ दी गई हैं, वे अंत में, काव्य-विषय से अलग, दी जातीं ।

× × ×

मायावी (नाटक)—प्रकाशक और लेखक, श्रीयुत ज्ञानदत्त सिद्ध, श्रीसिद्ध-हिंदी-प्रचारक-कार्यालय, जयपुर (राजपूताना) । आकार २०×३० सोलह-पेजी । काग़ज़, छपाई-सफ़ाई सुंदर, पृष्ठ-संख्या ७६, और मूल्य ॥)

लेखक के कथनानुसार यह एक सामाजिक नाटक है । भाषा में प्रायः सर्वत्र सिद्ध महाशय के प्रांत—जयपुर (राजपूताना)—की भाषा की पुट है । नाटक के परिचय में लिखा है—अतुल शिक्षा-प्रद । सो इस नाटक के खेले जाने पर यह अतुल शिक्षा-प्रद सिद्ध होगा, इसमें संदेह है । नाट्य-शास्त्र तथा नाट्य-साहित्य का अध्ययन और अनुभव प्राप्त किए विना इस प्रकार मौलिक नाटक लिखने का प्रयास करना अनधिकार-चेष्टा है ।

× × ×

स्वास्थ्य-कुंजी—लेखक तथा प्रकाशक, डॉक्टर बाबूराम गर्ग एल्०एम्० एस्०, मुज़फ़्फ़रनगर । आकार २०×३० सोलह-पेजी । काग़ज़, छपाई-सफ़ाई साधारण, पृष्ठ-संख्या १७४, और मूल्य १।)

इसमें स्वास्थ्य-रक्षण के सिद्धांतों के अनुसार भोजन, वायु, जल, व्यायाम, मकान, स्त्रियाँ और स्वास्थ्य, व्यक्ति-गत स्वास्थ्य, लगनेवाले रोग और उनसे बचने के उपाय तथा मादक-वस्तु-निषेध-पर लेखक ने अपने अनुभव-पूर्ण विचार प्रकट किए हैं । पुस्तक अच्छी है । विचार उत्तम हैं । गृहस्थों को इसके अवलोकन से अवश्य लाभ उठाना चाहिए । भाषा साधारण है ; परंतु विराम तथा अर्ध-विराम की अशुद्धियाँ सर्वत्र—प्रायः प्रत्येक वाक्य में—भरी पड़ी हैं ।

× × ×

भारत में कृषि-सुधार—प्रकाशक, श्रीयुत बैजनाथ केडिया, हिंदी-पुस्तक-एजेंसी, १२६, हरिसन-रोड, कलकत्ता । लेखक, प्रोफ़ेसर दयाशंकरजी दुबे एम्० ए०, एल्-एल्० बी० । आकार २०×३० सोलह-पेजी । काग़ज़, छपाई-सफ़ाई अच्छी, पृष्ठ-संख्या २७६, और मूल्य १॥।)

भारतीय किसानों की दशा कितनी शोचनीय है, यह किसी से छिपा नहीं । किसी भी सभ्य देश के किसान इतने दरिद्र नहीं हैं, जितने कि भारतीय किसान । परंतु ऐसे कितने हृदय हैं, जो भारतीय किसानों की इस दुरवस्था पर तरस खाकर अपना समय उनके सुधार के उपायों तथा उन्हें संपन्न बनाने के साधनों के अन्वेषण में लगाते हैं ? कितने विद्वानों का ध्यान भारत की इस ७२ फ़ी-सदी जन-संख्या के दुख-दर्दों की ओर आकृष्ट हुआ है ? भारतीय किसानों की दरिद्रता का रोना तो वर्षों से रोया जा रहा है, परंतु उनकी इस दरिद्रता को दूर करने के साधनों के अन्वेषण में कितने विद्वानों ने अपनी निद्रा भंग की है ? खेद है, उत्तर नितांत असंतोष-प्रद मिलता है । समय के प्रवाह ने—और किसान-समुदाय की इस नितांत अधोगति ने भी—कुछ विद्वानों का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया है । हमें हर्ष है कि उन विद्वानों में इस पुस्तक के लेखक श्रीयुत पं० दयाशंकरजी दुबे का एक विशेष स्थान है । आपने कृषक-समस्या का अनुभव और अध्ययन न केवल ग्रंथों द्वारा प्राप्त किया है, बल्कि गाँवों में जा-जाकर उनकी दुर्दशा स्वयं अपनी आँखों देखी है, और उनकी दुरवस्था का सच्चा अनुभव प्राप्त किया है । महीनों तक, स्वतंत्र रूप से, आप केवल यही सोचते रहे हैं कि किस प्रकार—किन साधनों के द्वारा—भारतीय किसानों की आर्थिक दशा शीघ्र सुधारी जा सकती है । इसके अतिरिक्त, आपने तद्विषयक लगभग ४३ हिंदी तथा अँगरेज़ी के ग्रंथों, ११ कमीशन-रिपोर्टों, १२ भारत-सरकार तथा प्रांतीय सरकार की घोषणाओं तथा १२ हिंदी-अँगरेज़ी के पत्रों का अध्ययन करके, उनकी सहायता से, भारतीय किसानों की आर्थिक दशा को शीघ्र सुधारने की यह व्यावहारिक योजना तैयार की है । इसमें संदेह नहीं कि आपने इसके तैयार करने में जो श्रम किया है, वह सर्वथा आदरणीय है । हम भारत के घर-घर में—विशेषकर किसानों में—इसका अध्ययन तथा मनन किए जाने की कामना रखते हैं ।

× × ×

जातियों को संदेश—प्रकाशक, नाथूराम प्रेमी, हिंदी-ग्रंथ-रत्नाकर-कार्यालय, हीराबाग़, बंबई ; अनुवादक, श्रीयुत ठाकुर कल्याणसिंहजी शेखावत बी० ए० । आकार २०×३० सोलह-पेजी । काग़ज़, छपाई-सफ़ाई अच्छी, पृष्ठ-संख्या ११८, और मूल्य ॥-)

फ़्रांस-देशवासी महात्मा पाल रिचर्ड ने अँगरेज़ी में "To the Nations"-नामक एक बहुत सुंदर ग्रंथ लिखा है । रिचर्ड महाशय ने इस ग्रंथ में समस्त जातियों को—विशेषकर योरपियन जातियों को—धर्म-नीति-सार विश्व-बंधुत्व के सिद्धांत का संदेश देकर विश्व-व्यापी शांति की आकांक्षा प्रकट की है । कविवर रवींद्रनाथ ठाकुर ने रिचर्ड महाशय के विश्व-व्यापी शांति के उदार और उच्च भावों पर अपनी सार-गर्भित भूमिका लिखी है । पुस्तक दो खंडों में विभक्त है । पहले खंड के विषय गत कल का झूठ, आज का भ्रम, आगामी कल (भविष्य) की वास्तविकताएँ, क़ैदी जातियों का दिन, विशाल संध्या, भावी उषःकाल हैं, और दूसरे खंड के—जातियों का क़ानून, जातियों का आदर्श, जातियों की उन्नति, जातियों के अधिकार, संसार की शांति तथा मनुष्य-ज्ञान । इसमें इन्हीं विषयों पर छोटे-छोटे सार-गर्भित तथा दार्शनिक निबंध हैं । इनमें वर्णित रिचर्ड महाशय के उदार विचारों की जितनी सराहना की जाय, थोड़ी है । परंतु, हमें तो विश्व-व्यापी शांति का सुखद भविष्य अभी स्वप्नवत् प्रतीत होता है । कारण, हम देखते हैं कि अभी तक Might is right (जिसकी लाठी उसकी भैंस) के सिद्धांत का पूर्ववत् बोल-बाला बना हुआ है । जब तक संसार का कोई भी राष्ट्र पराधीन रहेगा, जब तक सत्ता के नाम पर मनुष्यता के अधिकारों की हत्या होती रहेगी, तब तक विश्व-व्यापी शांति स्वप्न है—मृग-तृष्णा है । भगवान् करे कि निकट भविष्य आशा-पूर्ण हो, भारत और भारतेतर राष्ट्र स्वाधीन हों, तभी हम इस विश्व-व्यापी शांति की आकांक्षा के फलवती होने की आशा कर सकने में समर्थ होंगे, इससे प्रथम नहीं । पुस्तक का अनुवाद अच्छा हुआ है । उच्च-शिक्षा-प्राप्त नवयुवकों को इसके अध्ययन से अवश्य लाभ उठाना चाहिए ।

× × ×

महावीर गेरीबाल्डी—प्रकाशक, साहित्य-परिषद्, गुरुकुल-विश्व-विद्यालय, काँगड़ी । लेखक, श्रीइंद्र विद्या-वाचस्पति । आकार २०×३० सोलह-पेजी । काग़ज़, छपाई-सफ़ाई साधारण तथा अच्छी, पृष्ठ-संख्या १९६, और मूल्य १।)

कदाचित् ऐसा कोई भी शिक्षित भारतीय न होगा, जो स्वाधीनता के परम पुजारी, वीर योद्धा, इटली के महामना गेरीबाल्डी के नाम से परिचित न हो । इटली को स्वतंत्र करने में जितना त्याग और बलिदान महात्म मेज़िनी का है, गेरीबाल्डी की वीरता भी उससे क आदरणीय नहीं । बस, ये दो ही मुख्य योद्धा थे, जिन्हों इटली को स्वतंत्र करने के प्रयत्नों में ही अपने जीवन क वास्तविक सार्थकता का अनुभव किया । प्रस्तुत पुस्तक उन्ह वीर गेरीबाल्डी का जीवन-चरित्र है । ऐसे महापुरुषों क जीवन-चरित्र नवयुवकों के लिये विशेष शिक्षा-प्रद होते हैं । यह जीवन-चरित्र भी अच्छे ढंग से लिखा गया है । भाष रोचक और मर्म-स्पर्शिनी है । पुस्तक के अंदर वीर गेरीबाल्ड के चित्र के अतिरिक्त महापुरुष महात्मा मेज़िनी, मह कवि अलफ़ायरी, धुरंधर लेखक मनज़ोनी, प्रजाप मैनिन, तत्त्व-दर्शी गयोबर्टी, नीति-धुरंधर कावूर तथ राजा विक्टर इमैनुअल के ८ चित्र हैं । नवयुवकों क इसका अध्ययन कर अवश्य लाभ उठाना चाहिए ।

× × ×

उत्तरी ध्रुव की भयानक यात्रा—प्रकाशक, बेलवेडि यर-स्टीम-प्रिंटिंग-वर्क्स, इलाहाबाद । लेखक, पं० रामनरेश त्रिपाठी । आकार २०×३० सोलह-पेजी । काग़ज़, छपाई-सफ़ साधारण, पृष्ठ संख्या १२०, और मूल्य ।।)

अँगरेज़-जाति अनुसंधान से कितना प्रेम रखती है यह उत्तरी ध्रुव की भयानक यात्रा से भली भाँति स्पष्ट है इस यात्रा में अँगरेज़ यात्रियों ने नाना प्रकार के कष्ट उठाए इस पुस्तक में इसी यात्रा की कष्ट-कहानियों का वर्ण किया गया है । त्रिपाठीजी ने इसे एक अँगरेज़ी पुस्त के आधार पर लिखा है । उस पुस्तक का ना भी प्रकट कर दिया जाता, तो अच्छा होता । पुस्त अच्छे ढंग से लिखी गई है । भाषा रोचक है । आप आने पर मनुष्य को धैर्य और साहस के साथ उस किस प्रकार सामना करना चाहिए, पाठकों को इस अध्ययन से यह पाठ अवश्य लेना चाहिए ।

× × ×

टॉलसटॉय की आत्मकहानी—प्रकाशक, चौध शिवनाथसिंह शांडिल्य, ज्ञान-प्रकाश-मंदिर, पो० माछ

ज़िला मेरठ। अनुवादक, श्रीयुत उमरावसिंहजी कारुणिक बी० ए०। आकार २०×३० सोलह-पेजी। काग़ज़, छपाई-सफ़ाई अच्छी, पृष्ठ-संख्या ९४, और मूल्य ॥=)

यह पुस्तक टॉल्सटॉय की संसार-प्रसिद्ध पुस्तक My Confession-नामक अँगरेज़ी पुस्तक का हिंदी-अनुवाद है। प्रारंभ के १६ पृष्ठों में उनका संक्षिप्त जीवन-परिचय भी दे दिया गया है। महात्मा टॉल्सटॉय के इस पुस्तक में वर्णित विचार सर्वथा आदरणीय हैं। अनुवाद की भाषा कहीं-कहीं खटकती है। भूमिका की १२वीं पंक्ति का "जिस दशा का चित्र टॉल्सटॉय ने इस पुस्तक में खैंचा है" वाक्य यदि इस प्रकार होता 'टॉल्सटॉय ने इस पुस्तक में जिस दशा का चित्र खींचा है", तो अच्छा था। फिर भी पुस्तक महत्त्व-पूर्ण है। टॉल्सटॉय के विचारों से परिचय प्राप्त करने के उत्सुक पाठक इसका अवलोकन कर लाभ उठा सकते हैं।

× × ×

रणधीर और प्रेम-मोहिनी—लेखक, स्वर्गीय लाला श्रीनिवासदासजी। प्रकाशक, हिंदी-पुस्तक-एजेंसी, १२६, हरिसन-रोड, कलकत्ता। मूल्य ॥=); आकार २०×३० सोलह-पेजी। पृष्ठ-संख्या १४८, काग़ज़ ऐंटिक और छपाई-सफ़ाई सुंदर।

लाला श्रीनिवासदास भारतेंदु-काल के लेखक थे। इन्हें कई भाषाओं का अच्छा ज्ञान था। यह नाटक वियोगांत है। लालाजी ने इसमें बेईमान खुशामदी नौकरों का अच्छा ख़ाका खींचा है। सच्चे मित्र का चरित्र भी अच्छा अंकित किया है। प्लॉट पुराने ढर्रे का होने पर भी मनोरंजक है। नाटक का यह दूसरा संस्करण है, और अर्से के बाद हुआ है। एक प्राचीन सुलेखक की कीर्ति को पुनरुज्जीवित करके हिंदी-पुस्तक-एजेंसी ने प्रशंसनीय कार्य किया है। अनेक नवीन लेखक लालाजी का नाम भी शायद न जानते होंगे। उन्हें यह नाटक अवश्य देखना चाहिए।

× × ×

अत्याचार का परिणाम—लेखक, पं० विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक। प्रकाशक, भीष्म ऐंड ब्रदर्स, पटकापुर, कानपुर। मूल्य ॥।-); आकार २०×३० सोलह-पेजी। पृष्ठ-संख्या १२८। काग़ज़, छपाई-सफ़ाई अच्छी।

यह एक सामाजिक नाटक है। लेखक ने एक बँगला-नाटक के आधार पर इसकी रचना की है। प्लॉट, भाषा, कल्पना आदि सब सामग्री प्रभावोत्पादक है। गान कुछ और अच्छे होते, तो अच्छा होता। कहीं-कहीं कुछ अस्वाभाविक हो गया है। जैसे मामा का लोभवश अपनी बहन, बहनोई और भांजों से अत्यधिक निष्ठुरता का व्यवहार करना। तथापि नाटक अच्छा है। स्टेज पर सफलता के साथ खेला भी जा चुका है।

× × ×

ओड़छे की रानी—लेखक, शिवनारायण श्रीवास्तव (नयन), और प्रकाशक, श्रीकैलास-साहित्य-मंदिर, चिरगाँव. झाँसी। पृष्ठ १२०, और आकार २०×३० सोलह-पेजी। काग़ज़ ऐंटिक ; छपाई-सफ़ाई अच्छी। मूल्य ॥)

यह बुंदेलखंड-ग्रंथमाला का पहला ग्रंथ है। सत्य-घटना-मूलक धार्मिक नाटक है। नाटक-रूप में लिखा जाने पर भी नाटक नहीं कहा जा सकता। कृष्ण-भक्त ओड़छे के राजा मधुकरशाह और राम-भक्त उनकी रानी की भक्ति को लेकर इसकी रचना की गई है। हमारी राय में नयनजी कविता के मैदान में ही अधिक अग्रसर हों, तो अच्छा हो। नाटक लिखना सब का काम नहीं है। नाटक का एक उद्देश्य मनोरंजन भी है—कोरी वैराग्य और भक्ति की बातें लिख देने से काम नहीं चलता। पढ़ने के लिये नाटक बुरा नहीं है। खेलने के लायक़ होने में संदेह है।

× × ×

२. पत्र-पत्रिकाएँ

कवि—मासिक। संपादक, कविवर 'त्रिशूल'; प्रकाशक, श्रीयुत रामनारायण रावत, सरहरी, पो० पीपीगंज, गोरखपुर। आकार २०×३० अठ-पेजी। काग़ज़, छपाई-सफ़ाई साधारण, पृष्ठ-संख्या ४०, और वार्षिक मूल्य ३)

इसको प्रकाशित होते यद्यपि लगभग ढाई वर्ष हो गए, तथापि अनियमित रूप से प्रकाशित होने के कारण यह कुछ विशेष उन्नति नहीं कर सका। अब छपने का प्रबंध संतोष-जनक हो गया है। आशा है, साहित्य-मर्मज्ञ, सुप्रसिद्ध सुकवि त्रिशूलजी की संपादकता में 'कवि' उत्तरोत्तर उन्नति करता रहेगा। छपने के स्थान-परिवर्तन के साथ-साथ अब इसका रूप, रंग-ढंग तथा संपादन भी पहले की अपेक्षा अधिक रोचक हो गया है। वैशाख का अंक इस समय हमारे सामने है। इस अंक में साहित्य और युगधर्म-नामक लेख छोटा, किंतु सुंदर और सुपाठ्य

है । कविताएँ भी अच्छी हैं । विनोद की भी अच्छी सामग्री है । हम इसकी हृदय से उन्नति चाहते हैं । कविता-प्रेमियों को इसे अवश्य अपनाना चाहिए ।

× × ×

निगमागम-चंद्रिका—मासिक । प्रकाशक, श्रीयुत एच्० एन्० बागची, भारतधर्म-प्रेस, बनारस । संपादक का नाम लिखा नहीं । आकार २२×२९ अठ-पेजी । काग़ज़, छपाई-सफ़ाई साधारण, पृष्ठ-संख्या २८, और वार्षिक मूल्य २॥)

यह श्रीभारतधर्म-महामंडल की सचित्र त्रैमासिक मुख-पत्रिका है। इसके लेख धार्मिक तथा कविताएँ धार्मिक और साहित्यिक रहती हैं । स्वामी दयानंदजी के लेख प्रत्येक अंक में रहते हैं । धार्मिक साहित्य के प्रेमी इसका अवलोकन कर लाभ उठा सकते हैं ।

× × ×

एज्युकेशन—अँगरेज़ी मासिक । संपादक, श्रीयुत देवीप्रसाद खत्री । प्रकाशक, श्रीयुत विश्वेश्वरप्रसाद, जेनरल सेक्रेटरी यू० पी० सेकंडरी एज्युकेशन एसोसिएशन, प्रयाग । आकार २०×२६ अठ-पेजी । काग़ज़, छपाई-सफ़ाई साधारणतः अच्छी । पृष्ठ-संख्या ४८, और मूल्य ३) वार्षिक । ५०) या इससे कम वेतन पानेवाले शिक्षकों से २)

× × ×

यह यू० पी० सेकंडरी एज्युकेशन एसोसिएशन का मासिक मुख-पत्र है । इसमें शिक्षा-संबंधी उपयोगी और गंभीर लेख रहते हैं । अँगरेज़ी हाई स्कूलों के शिक्षकों को इसे अवश्य अपनाना चाहिए ।

× × ×

कॉलिजियन—अँगरेज़ी पाक्षिक । संपादक और प्रकाशक, श्रीयुत एन्० एन्० दे, ३३, डिक्सन-लेन, कलकत्ता । आकार २०×३० अठ-पेजी । काग़ज़, छपाई-सफ़ाई अच्छी, पृष्ठ-संख्या ४०, और मूल्य ६) वार्षिक ।

इसमें उच्च शिक्षा-संबंधी, स्वतंत्र विचारों से पूर्ण, सार-गर्भित लेख रहते हैं । संपादन अच्छा होता है । कॉलिजिएट विद्यार्थियों तथा अध्यापकों को इसका अवश्य अवलोकन करना चाहिए ।

लेबर—अँगरेज़ी मासिक । संपादक और प्रकाशक, श्रीयुत निर्मलचंद्र सेन गुप्त बी० ए०, १२, छक्कू खानसामा-लेन, कलकत्ता । आकार २०×३० अठ-पेजी । काग़ज़, छपाई-सफ़ाई साधारण, पृष्ठ-संख्या ३८, और मूल्य ४) वार्षिक ।

यह बंगाल तथा आसाम प्रांत के डाक तथा रेलवे मेल सरविस एसोसिएशन का मासिक मुख-पत्र है । इसमें डाक-विभाग तथा रेलवे मेल सरविस विभाग से संबंध रखनेवाले लेखों के अतिरिक्त संघ-शक्ति पर पठनीय लेख रहते हैं ।

× × ×

आमार देश—बँगला मासिक । संपादक और प्रकाशक, श्रीशिशिरकुमार मित्र बी० ए०, आमार देश-कार्यालय, शिशिर पब्लिशिंग हाउस, कॉलेज-स्ट्रीट-मार्केट, कलकत्ता । आकार १७×२७ अठ-पेजी । काग़ज़, छपाई-सफ़ाई सुंदर, पृष्ठ-संख्या ४८ और मूल्य ३) वार्षिक ।

यह बालकोपयोगी सचित्र बँगला मासिक पत्र है। प्रति मास कम-से-कम एक रंगीन चित्र, ७-८ सादे चित्र तथा २-३ व्यंग्य-चित्र रहते हैं । पाठ्य-विषय में ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, मनोविनोद, शिक्षा, प्रश्नोत्तर, चुटकिले कहानियाँ तथा कविताएँ, सभी कुछ रहता है । संपादन अच्छा होता है । बालोपयोगी देशी भाषाओं के पत्रों में इसका ख़ास स्थान है ।

× × ×

सरणी—बँगला द्वैमासिक । संपादक और प्रकाशक, श्रीसुधाकांत राय चौधरी, इंडियन पब्लिशिंग हाउस, २२, कार्नवालिस-स्ट्रीट, कलकत्ता । आकार २०×३० अठ-पेजी । काग़ज़, छपाई-सफ़ाई साधारणतः अच्छी, पृष्ठ-संख्या २४, और वार्षिक मूल्य २॥)

इसमें साहित्यिक, सामाजिक लेख अधिक रहते हैं। सभी सार-गर्भित और सुपाठ्य होते हैं । गल्प, प्रहसन, नाटक, गद्य-काव्य तथा कविता आदि सभी सामग्री उच्च कोटि की रहती है ।

× × ×

शारदा—मराठी मासिक । संपादक और प्रकाशक, श्रीयुत केशवरघुनाथ काशीकर, शुक्रवार पेठ, घर नंबर १५५, पूना । आकार २०×३० अठ-पेजी । काग़ज़, छपाई-सफ़ाई अच्छी, पृष्ठ-संख्या ६४, और वार्षिक मूल्य ४)

यह पूने के भारतीय साहित्य-मंदिर की सचित्र मासिक मुख-पत्रिका है । इसमें साहित्य, शिक्षा, समाज, कला, नीति, धर्म आदि विषयों के सुपाठ्य लेख प्रकाशित होते हैं । इसका जन्म अभी हाल ही में हुआ है । आशा है, आगे चलकर अच्छी उन्नति करेगी ।

साहित्य-सूचना

इस कॉलम में हम हिंदी-प्रेमियों के सुबीते के लिये प्रति मास नई-नई उत्तमोत्तम पुस्तकों के नाम देते रहते हैं। गत मास में नीचे-लिखी पुस्तकें अच्छी प्रकाशित हुईं—

(१) "बहता हुआ फूल", बँगला के 'स्रोतेर फूल'-नामक उपन्यास का पं० रूपनारायण पांडेय-कृत अनुवाद। मूल्य २)

(२) "लिमिटेड कंपनियाँ", श्रीईश्वरदास जालान-लिखित व्यापारिक पुस्तक। मूल्य १।)

(३) "आज़ादी या मौत", मुं० अब्दुलसमी साहब-लिखित नाटक। मूल्य ।॥)

(४) "बनवीर", बँगला के 'राज-भक्ति'-नामक उपन्यास का पं० नरोत्तम व्यास-कृत अनुवाद। मूल्य १॥)

(५) "ज्ञानयोग (दूसरा भाग)", श्रीजगन्मोहन वर्मा द्वारा अनुवादित विवेकानंद का प्रसिद्ध ग्रंथ। मूल्य २॥)

(६) "कलियुग की सती", मुं० अब्दुलसमी साहब-लिखित नाटक। मूल्य ।॥)

(७) "सरस्वतीचंद्र (पहला खंड)", गुजराती के प्रसिद्ध उपन्यास का पं० नरोत्तम व्यास-कृत अनुवाद। मूल्य २)

(८) "यंग इंडिया (तीन भाग)", महात्मा गाँधी के अँगरेज़ी लेखों का पं० छविनाथ पांडेय-कृत अनुवाद। मूल्य ४॥)

(९) "मेरी काश्मीर-यात्रा", पं० मथुराप्रसाद पांडेय-लिखित। मूल्य ॥=)

(१०) "कृषक-दुर्दशा", पं० ईश्वरीप्रसाद शर्मा का लिखा नाटक। मूल्य ॥=)

(११) "प्रेम-पुष्पांजलि"। मूल्य ।-)

(१२) "प्रेत-तर्पण", बँगला के एक उपन्यास का बाबू श्रीकृष्ण हसरत-कृत अनुवाद। मूल्य २)

(१३) "भक्त सुदामा", श्रीआनंदप्रसाद कपूर-लिखित नाटक। मूल्य १)

(१४) "गोधन", श्रीगिरीशचंद्र चक्रवर्ती-लिखित। मूल्य ४)

(१५) "रामचरित-मानस", पं० महावीरप्रसाद मालवीय-कृत टीका-सहित रामायण। मूल्य ८)

(१६) "दुःख का मीठा फल", पं० रामेश्वरप्रसाद शर्मा का लिखा उपन्यास। मूल्य ।॥=)

(१७) "प्रेमाश्रम", श्रीप्रेमचंद-लिखित उपन्यास का दूसरा संस्करण। मूल्य ३॥)

(१८) "कौटिल्य-अर्थ-शास्त्र", श्रीप्राणनाथ विद्यालंकार द्वारा अनुवादित चाणक्य का प्रसिद्ध ग्रंथ। मूल्य ४)

(१९) "जीवन-मरण-रहस्य", ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह-लिखित। मूल्य ।=)

(२०) "सीधे पंडित", ठा० प्रसिद्धनारायणसिंह का लिखा उपन्यास। मूल्य १॥)

विविध विषय

१. निवेदन

हर्ष की बात है कि इस संख्या से माधुरी का प्रथम वर्ष निर्विघ्न समाप्त होता है। हम सहायता के लिये अपने लेखकों, कवियों, ग्राहकों और सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं। हमारी सारी सफलता उन्हीं की कृपा-दृष्टि का सुफल है।

माधुरी की आगामी संख्या नव वर्ष की प्रथम संख्या होगी। उसे हम विशेष संख्या—तुलसी-संख्या—के रूप में निकालेंगे। अस्तु।

इसमें संदेह नहीं कि यहाँ पर हम अपने कृपालु लेखकों से कुछ निवेदन करना चाहते हैं। हिंदी-संसार के लब्ध-प्रतिष्ठ, प्रतिभाशाली लेखकगण माधुरी के जन्म से ही हम पर कृपालु रहे हैं। माधुरी की सर्व-प्रियता ने भी उनके हृदय में अपना एक विशेष स्थान कर लिया है। इसलिये वे निरंतर अपनी कृपाओं द्वारा हमको उपकृत करते रहते हैं। परंतु, जिस गति से वे हम पर कृपा कर रहे हैं, उससे अब हमें कुछ असुविधा होने लगी है। हमारे पास लेखों का इतना अधिक संग्रह हो गया है कि क्रमशः उसका कम होना दूर रहा, वह उत्तरोत्तर बढ़ता ही जाता है। इसके अतिरिक्त हमारे पास बड़े-बड़े लेख या लेख-मालाएँ अधिक आई हैं। इन बातों का परिणाम यह हुआ है कि बहुतेरे लेख महीनों से पड़े हुए हैं, और उन्हें प्रकाशित करने की पूर्ण इच्छा रहने पर भी हम उन्हें शीघ्र ही प्रकाशित करने में असमर्थ हो रहे हैं। उधर हमारी इस असमर्थता का उन लेखकों पर बड़ा बुरा प्रभाव पड़ा है। वे हमारी स्थिति से अपरिचित होने के कारण कुछ-का-कुछ समझ बैठे हैं, जिससे हमें भी आत्म-क्लेश पहुँचा है। इसलिये अपने लेखक-समुदाय से हम यह निवेदन करते हैं।

एक तो, जब तक कोई असाधारण तथा विशेष महत्त्व-पूर्ण विषय समक्ष उपस्थित न हो, तब तक वे माधुरी के लिये लेख न लिखें। कोई बहुत महत्त्व-पूर्ण विषय सामने आ जाय, जिस पर लिखे बिना वे आत्म-संवरण न कर सकते हों, तभी उस विषय पर लिखें।

दूसरे, जहाँ तक संभव हो, लेख बड़ा न होने दें। बड़ा होने के कारण हम उसे समय पर, शीघ्र, प्रकाशित न कर सकेंगे। इसके सिवा उसके कारण अन्यान्य लेखों के शीघ्र प्रकाशित होने के अधिकार को क्षति पहुँचेगी। अगर विषय ऐसा हो कि उसे संक्षेप में—छोटे लेख के रूप में—देने से उसके महत्त्व को धक्का लगता हो, या वह समझाया न जा सकता हो, तो उसका विषय-विभाग करके उसे लेख-माला का रूप दे दें। लेकिन तो भी इसका अवश्य ध्यान रक्खें कि वह (लेख-माला) भी इतनी विशाल-काय न हो जाय कि हम उसे पूरे एक खंड में भी समाप्त न कर सकें!

इधर कई मास से हमें अनेक कंपोज़ किए हुए लेख भी, स्थानाभाव के कारण, रोक देने पड़े हैं। उदाहरणार्थ पं० कृष्णविहारी मिश्र का 'प्रत्यालोचना का उत्तर' शीर्षक लेख हमें ज्येष्ठ की संख्या के लिये ही प्राप्त हो गया था; लेकिन बड़ा होने और स्थान की कमी के

कारण अब भाद्रपद की संख्या में दिया जा सकेगा। अस्तु। कृपालु लेखक धैर्य रक्खें। हम उनके स्वीकृत लेख क्रमानुसार अवश्य प्रकाशित करेंगे। स्थानाभाव के कारण जिन लेखकों के लेख निश्चित संख्या में न प्रकाशित हों, वे हमारी विवशता का ध्यान रखकर हमें क्षमा करें।

× × ×

२. क्लर्क का कार्टून

हमें मालूम हुआ है कि गत संख्या में प्रकाशित 'क्लर्क-गधा'-नामक व्यंग्य-चित्र का अवलोकन कर क्लर्क-समुदाय के कुछ व्यक्तियों को मानसिक क्लेश पहुँचा है। मगर वास्तव में उसे प्रकाशित करने का यह अभिप्राय नहीं था कि उसे देखकर वे यह समझें कि उनके प्रति हमारी कोई बुरी धारणा है। इस व्यंग्य-चित्र का असल अभिप्राय तो क्लर्क-समुदाय की दुर्दशा दिखलाकर परोक्ष रूप से उन पर सहानुभूति प्रकट करना था। उसमें तो क्लर्क-जीवन की एक झलक का दिग्दर्शन कराया गया है। क्लर्क-जीवन कितना आत्म-सम्मान-रहित और दुःखद हो गया है, यह बतलाने की आवश्यकता नहीं। सब पर प्रकट है। समाज के अन्य अंगों की भाँति उसका यह अंग भी संशोधनीय है। क्लर्क-जीवन की इस स्थिति में व्यक्ति की क्या अवस्था होती है, यही चित्रांकण का मूल-भाव है। अतएव उसके अवलोकन से क्लर्कों को चाहिए यह कि वे अपनी ऐसी पोज़ीशन बनाएँ, जिससे उनकी स्थिति ऐसी कष्टकर न हो। संभव है, आपत्ति करने का कारण गधे की उपमा हो। परंतु यह कारण भी भ्रम-पूर्ण है। पाश्चात्य देशों के पत्रों में तो लॉर्ड-परिवार के व्यक्तियों पर भी व्यंग्य-चित्रों द्वारा भद्दे-से-भद्दा मज़ाक़ किया जाता है। इस दृष्टि से यह व्यंग्य बहुत ही साधारण है। फिर भी, यदि क्लर्क-समुदाय को उसके कारण कुछ मानसिक क्लेश पहुँचा हो, तो उसके निकट हम क्षमा-प्रार्थी हैं।

× × ×

३. पुश्तैनी व्यवसाय

कई मास हुए, अँगरेज़ी के 'डेली मेल' ने मिस्टर सिडनी बी० इवांस का उदाहरण देते हुए गर्व प्रकाशित किया था कि संसार में इँगलैंड ही एक ऐसा देश है, जहाँ चार-चार पुश्त तक लोग एक ही व्यवसाय में लगे रह सकते हैं, और बड़ी योग्यता के साथ पुश्तैनी व्यवसाय के कार्य का संपादन करते हैं। परंतु यदि गंभीरता-पूर्वक 'डेली मेल' की इस गर्वोक्ति पर विचार किया जाय, तो वह भ्रम-मूलक ठहरती है। मिस्टर सिडनी बी० इवांस का उदाहरण केवल चार पुश्त का है। वह इटन-विद्यालय में ड्राइंग-मास्टर के पद पर नियुक्त थे। बुढ़ापे के कारण उन्हें विद्यालय छोड़ना पड़ा। उनके प्रपितामह इसी पद पर २७ वर्ष, पितामह ३१ वर्ष, पिता ४६ वर्ष और वह स्वयं १६ वर्ष रहे। मिस्टर सिडनी का यह उदाहरण केवल इँगलैंड के लिये अभिमान-जनक हो सकता है। समस्त संसार के आगे, तुलनात्मक दृष्टि से, इस उदाहरण को सर्वोच्च ठहराना 'डेली मेल' की अक्षम्य अज्ञता है। भारतवासियों के लिये तो यह उदाहरण कोई विशेष मूल्य नहीं रखता। हिंदू-धर्म का मूल-भाग वर्णाश्रम-धर्म ही एक ऐसा उदाहरण है, जिससे यह स्पष्ट है कि पुश्तैनी व्यवसाय भारत के लिये कोई विशेष महत्त्व की बात नहीं, अनिवार्यतः आवश्यक किंवा एक अत्यंत साधारण बात रही है। यद्यपि युग-परिवर्तन के कारण अब यहाँ सर्वत्र वर्णाश्रम-धर्म का यथाविधि पालन नहीं होता, तथापि अब भी एक-दो नहीं, सहस्रों कुटुंब तो ऐसे मिलेंगे ही, जो अब तक पूर्ववत् पुश्तैनी व्यवसाय करते आ रहे हैं। ब्राह्मण-वर्ण का ही उदाहरण लीजिए। यद्यपि देश की सर्वतोमुखी दुर्दशा ने इस वर्ण को अछूता नहीं छोड़ा है, इस वर्ण का अपढ़ एवं अशिक्षित-समुदाय वास्तव में कर्तव्य-च्युत हो गया है, तथापि, अब भी, इस वर्ण का शिक्षित-समुदाय पुश्तैनी व्यवसाय करने का जीता-जागता उदाहरण रखता है। आज भी इस वर्ण के द्वारा देश का शिक्षण-कार्य अधिकांश रूप से होता है। अध्यापक, उपदेशक, वक्ता, लेखक, कवि तथा इतर वर्णों के वैवाहादिक संस्कारों के कर्ता-धर्ता कर्म-निष्ठ ब्राह्मण ही विशेष रूप से हैं। रही यज्ञादिक कर्मों की बात। सो देश की अवस्था के अनुसार यह व्यवस्था भी अव्यवहार्य-सी हो गई है। यदि देश स्वाधीन होता, तो इस अंश में भी त्रुटि न रहती। परंतु दूसरे रूप से यह अंग भी सर्वांश में हीन नहीं है। प्राचीन काल में राजसूय तथा अश्वमेध यज्ञादि होते थे; अब राष्ट्रीय यज्ञ होते हैं, और उनमें यह वर्ण यथेष्ट कर्तव्य-पालन कर रहा है।

रही एक ही पद पर रहने तथा एक ही कार्य के संपादन

करने की बात। सो इस विषय में भी खोज करने पर दर्जनों प्रमाण मिल सकते हैं।

हाँ, जब से पाश्चात्य-जगत् से भारत का संबंध हुआ है, तब से अलबत्ता पुश्तैनी व्यवसाय करने में भारत को एक विशेष धक्का लगा है। यदि हम किसी अंश में पुश्तैनी व्यवसाय न करने के दोषी ठहरें भी, तो भी इसके कारण भारतवासी बहुत कम अंश में हैं। मूल-कारण तो भारत पर ब्रिटिश सरकार की शासन-विषयक रीति-नीति ही है।

× × ×

४. पं० प्यारेलाल मिश्र की शोक-जनक मृत्यु

अत्यंत शोक की बात है कि हिंदी-संसार के चिर परिचित पं० प्यारेलाल मिश्र एम्० एल्० ए०, बैरिस्टर का, छिंदवाड़े में, गत ९ जुलाई सन् १९२३ को, ४ बजे स्वर्ग-वास हो गया। मिश्रजी को हिंदी-साहित्य से बड़ा प्रेम था। बैरिस्टरी पास करने के प्रथम आप स्व० श्रीबालमुकुंद गुप्त से पूर्व कलकत्ते के भारत-मित्र के संपादक थे। इसके अतिरिक्त बंबई के श्रीवेंकटेश्वर-समाचार-पत्र के संपादकीय विभाग में भी आपने योग्यता-पूर्वक कार्य किया था। विलायत जाने पर क़ानूनी ज्ञान प्राप्त करने के साथ-साथ मातृ-भाषा हिंदी का भी आपने समुचित ध्यान रक्खा, और वहाँ विलायती संवाद-पत्रों के इतिहास का भरपूर अध्ययन करके हिंदी में इसी विषय की एक लेख-माला लिखी; जो उन्हीं दिनों क्रमशः सरस्वती में और पुनः एक स्वतंत्र पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुई। आपने क़ानून पर भी हिंदी में एक छोटी, किंतु उपयोगी पुस्तक लिखी है। आप हिंदी के एक सुयोग्य लेखक थे। आपके असामयिक स्वर्गारोहण से हिंदी-साहित्य को वास्तविक क्षति पहुँची है। हिंदी-संसार का एक सुयोग्य विद्वान् उठ गया। हम मिश्रजी की इस असामयिक मृत्यु पर हार्दिक शोक प्रकट करते हुए उनके कुटुंबियों के प्रति अपनी वास्तविक समवेदना प्रकट करते हैं।

× × ×

५. कुछ जानने-योग्य बातें

१—जर्मनी में एक ऐसा मनुष्य है, जो अपनी पीठ की ओर अपना मुख फेर लेता है!

२—फ़ारिस में प्रथा है कि जब किसी पुरुष की मृत्यु हो जाती है, और उसके कुटुंबी जन रोदन करते हैं, तो उनके आँसू एक बोतल में सुरक्षित रख लिए जाते हैं!

३—किसी ने हिसाब लगाकर बतलाया है कि भारत-वासी साल-भर में दो अरब रुपए की तंबाकू पी जाते हैं!

४—कलकत्ते में एक बकरी के ऐसा विचित्र बच्चा पैदा हुआ था, जिसके मुँह एक था, परंतु पैर १२ और पूँछें ३! बच्चा पैदा होने के पश्चात् मर गया!

५—स्वर्गीय अर्ल केरीसफ़ोर्ड की प्राचीन संग्रहीत ११ पुस्तकें ३५५५० पौंड अर्थात् लगभग सवा पाँच लाख रुपए में बिकी हैं!

६—न्यूयार्क (अमेरिका) में एक बिलकुल नवीन प्रकार की ट्रामगाड़ियाँ ईजाद हुई हैं। उनमें केवल एक आदमी, किसी भी ओर से, बैठ सकता है। बैठ जाने पर दरवाज़ा बंद हो जाता है। यह दरवाज़ा पुरुष के उतरने के समय तभी खुलता है, जब निश्चित स्थान पर एक निश्चित सिक्का डाल दिया जाता है!

७—मिस ग्रैस्टी नाम की एक २२ वर्षीया युवती ने ५२ मील की यात्रा १२ घंटे में तय की है!

८—हाल ही में एक ऐसी विचित्र नाव का आविष्कार हुआ है, जो चमड़े के बेग में रहती है। साइकिल के हवा भरनेवाले पंप से इसमें हवा भरी जाती है। हवा भर जाने पर यह फूलकर नाव के रूप में परिणत हो जाती है। वज़न में इतनी हलकी है कि डूबने का बिलकुल डर नहीं है। इसमें २-३ पुरुष बैठ सकते हैं। यह इस ढंग से बनाई गई है कि यदि रबड़ फट भी जाय, और हवा निकल जाय, तो भी किसी पुरुष के डूबने का डर नहीं है। इसका मूल्य ६०) से १००) तक है!

९—अमेरिका में कपड़ा धोने की एक ऐसी मशीन का आविष्कार हुआ है, जो बिजली से चलती है। इसमें केवल मैला कपड़ा और साबुन डाल दिया जाता है। इसके पश्चात् कपड़े छाँटने, साबुन लगाने, धोने, इस्तिरी करने, सुखाने तथा तह करके दे देने तक का समस्त कार्य वह स्वयं कर लेती है। इँगलैंड की प्रदर्शिनी में यह मशीन आई है। इसका मूल्य ३०,०००) है!

१०—एक फ़्रांसीसी तत्त्ववेत्ता को २४०० वर्ष की पुरानी रोटी ज्यों-की-त्यों मिली है!

११—मुल्तान के एक इंजीनियर ने कुछ दवाओं से ऐसी गैस तैयार की है, जिसके छिड़कने से १५ दिन तक भूख नहीं लगती!

१२—सन् १९१२ ई० से सन् १९२२ ई० तक, दस वर्षों में भारतीय जल तथा स्थल-सेना का कुल व्यय इस प्रकार हुआ—

सन्	रुपए
१९१२-१३	२९ २५,००,०००
१९१३-१४	२९,८४,००.०००
१९१४-१५	३०,६५,००,०००
१९१५-१६	३३,३९,००,०००
१९१६-१७	३७,४९ ००,०००
१९१ -१८	४३ ५८,००,०००
१९१८-१९	६६,७२.००,०००
१९१९-२०	८६,९८ ०० ०००
१९२०-२१	८७,३८,००,०००
१९२१-२२	६९,८१,००,०००

१३—अमेरिकन सरकार ने अपने यहाँ की रुई की फ़सल की जो रिपोर्ट प्रकाशित की, उससे प्रकट है कि वहाँ सन् १९२१ ई० की अपेक्षा सन् १९२२ ई० में ३३,३८,००० एकड़ ज़मीन अधिक बोई गई थी, और २५,००,००० एकड़ अधिक ज़मीन से रुई उत्पन्न हुई थी। प्रति-एकड़ १२४ पौंड की अपेक्षा १४१ पौंड उपज हुई। गत वर्ष के हिसाब से इस वर्ष की फ़सल ·२ और सन् १९२१ ई० से ·५ अधिक तथा १० वर्ष के औसत से ·२७५ कम हुई।

१४—गत मार्च-मास में जावा से ४८,६०१ टन चीनी का निर्यात हुआ। पहली एप्रिल को वहाँ चीनी का स्टाक १९५०० टन था। अब चीनी की भावी बाज़ार-दर क्यूबा की फ़सल पर निर्भर है। गत वर्ष इस समय क्यूबा में चीनी का स्टाक २३,००,००० टन था। इस वर्ष उसकी समस्त मंडियों में कुल मिलाकर १४,०९,००० टन ही है। यदि फ़सल ३७,००,००० टन से कम हुई, तो समस्त संसार में चीनी का दुर्भिक्ष होगा!

१५—इन दिनों अधिकांश कोयला आफ़्रिका से ही भारत में आ रहा है। बात यह है कि आफ़्रिका की सरकार ने अपने यहाँ के कोयले के व्यापारियों पर भारत में कोयला भेजने के लिये ७ शिलिंग ६ पेनी की रियायत कर दी है। इसका परिणाम यह हुआ है कि भारतीय कोयले का व्यापार नष्ट हो रहा है। सरकार ने अब तक इस ओर ध्यान नहीं दिया।

१६—एप्रिल और मई की भारतीय आयात निर्यात की रिपोर्ट से मालूम हुआ है कि इन महीनों में सोना-चाँदी छोड़कर ७८,१२,००,००० का माल आया. और ६०,६४,००,००० का माल गया। ९,९९,००,००० का सोना तथा २,४१,००,००० की चाँदी आई। सरकार की ओर से ५२,१०.००० रुपए बाज़ार में आए। ९,६४,००,००० रुपए भारत का पावना रहा।

१७—वायु-यान-कांग्रेस में मेजर जी० एच्० स्कॉट ने बतलाया है कि ५०,००,००० क्यूबिट फ़ीट का वायु-यान, जिसकी गति ८० मील प्रति घंटे हो, २०० यात्री तथा ११ टन डाक ले जा सकता है। वही वायु-यान कहीं मार्ग में रुके बिना इँगलैंड से मिस्र की २५०० मील की यात्रा तय करके पुनः मिस्र से बंबई आ सकता है।

१८—गत २२ जून को चुनार से काशी तक की, १५ मील की, तैरने की बाज़ी बदी गई थी। तैराकों के दल में १४ आदमी थे। सब से प्रथम तैराक श्रीआशुतोषदत्त (कलकत्ता-निवासी) ने ६ घंटे १० मिनट में यह यात्रा तय की।

१९—कोलमना (कनाडा) में एक ऐसी गऊ है, जिसका मूल्य आजकल ३,२८,००० रुपए है। यह एक वर्ष में २१ मन घी और ३८६ मन दूध देती है! ३०० पुरुषों ने एक दिन में इसका दूध पिया है। यह बड़ी सीधी है। गऊ क्या है, सचमुच कामधेनु है!

२०—कुष्ठ-रोग के विशेषज्ञ सर लेनार्ड राजर्स ने हिसाब लगाकर बतलाया है कि समस्त संसार में कोढ़ियों की संख्या ३०,००,००० है। इनमें से योरप में ७.०००, आफ़्रिका में ५,२५,८००, चीन में १०,००,००० तथा हिंदुस्तान में भी १०,००,०.०० हैं। आपने अपने विशेष अनुभव से बतलाया है कि आफ़्रिका ही कुष्ठ-रोग का विशेष स्थान है। यह बीमारी यहीं से समस्त संसार में फैली है। आपने घोषित किया है कि ३० वर्ष में यह रोग हिंदुस्तान से सदा के लिये बिदा हो जायगा। कारण, चालमोगरा तेल-नामक इसकी ऐसी अव्यर्थ महौषधि मिल गई है, जो हिंदुस्तानी कोढ़ियों को फ़ायदा करती है। भगवान् करे, लेनार्ड महोदय की भविष्य-वाणी सत्य प्रमाणित हो!

२१—इस वर्ष के प्रथम तीन महीनों में अमेरिका के संयुक्त-राज्य को १८,७०,००,००० पौंड की आमदनी हुई!

२२ – दिल्ली के कुछ व्यापारियों ने विलायत से १,००,००० रुपए का कृत्रिम घी मँगवाया है । यह डब्बों में आया है । प्रत्येक डब्बे पर 'वनस्पति का विशुद्ध घी' लिखा है । यह बाज़ार के घी से सस्ता, १ रुपए का २ सेर मिलेगा । लोग इस कृत्रिम घी से सावधान हो जायँ !

२३—आगरा आदि स्थानों में हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के डेप्युटेशन को अब तक लगभग २०००) की रक़में मिली हैं ।

× × ×

६. युद्ध की आशंका

गत योरप के महायुद्ध में प्रचुर धन-जन नाश होने तथा योरप के राष्ट्रों में सब से अधिक ऋणी होने के बाद भी इँगलैंड की युद्ध-पिपासा अभी तक शांत नहीं हुई है । साम्राज्य-वृद्धि की लोलुपता उसमें अब भी ज्यों-की-त्यों विद्यमान है । इधर ब्रिटिश-सरकार सिंगापुर में जंगी जहाज़ों का एक बड़ा केंद्र बना रही है, उधर वाशिंगटन की शस्त्र-त्याग-परिषद् ने अँगरेज़ी बंदर हाँग-काँग की उन्नति के प्रतिकूल अपना निर्णय किया है । इस पर भी ब्रिटिश-सरकार ने सिंगापुर में अपना जंगी जहाज़ी बृहत् केंद्र स्थापित करने के लिये ९५,००,००० पौंड व्यय करना स्वीकार किया है । अमेरिका और चीन में ग्रेट ब्रिटेन के इस निश्चय पर असंतोष फैल रहा है । चीनी राजनीति-विशारद तो स्पष्ट रूप से यहाँ तक कह रहे हैं कि सिंगापुर का अँगरेज़ी जंगी जहाज़ी केंद्र बनना इँगलैंड और जापान के भावी युद्ध की प्रस्तावना है । उनकी धारणा है कि फिर महायुद्ध होगा । परंतु इस बार के भावी युद्ध का क्षेत्र प्रशांत महासमुद्र होगा । साम्राज्य-वृद्धि की लोलुपता देखें अभी क्या-क्या दृश्य दिखलाती है !

× × ×

७. आस्ट्रिया की स्थिति

गत योरप के महायुद्ध ने आस्ट्रियाकी परिस्थिति को अत्यंत शोचनीय और दुर्दशा-ग्रस्त बना दिया था । इस अवस्था में उसके शुभ-चिंतक राष्ट्र तक उसे ऋण देते हुए हिचकिचाते थे । आस्ट्रियन काग़ज़ी रुपयों का महत्त्व इतना घट गया था कि उनकी पूछ बहुत कम हो गई थी। लोग उन पर अविश्वास करने लग गए थे । लोगों का यहाँ तक अनुमान था कि आस्ट्रिया संभवतः शीघ्र दिवालिया हो जायगा । बात यह थी कि महायुद्ध का परिणाम उसके लिये अत्यंत भयावह सिद्ध हुआ, उसने उसकी स्थिति को नितांत जर्जरित कर दिया । इसके सिवा वहाँ कम्यूनिज़्म ने भी प्रवेश पा लिया था । परंतु आस्ट्रियन सचमुच बड़े दूरदर्शी निकले, उन्होंने अपनी बुद्धिमत्ता से स्थिति को ज्यों-त्यों करके सँभाल लिया। अब उसकी स्थिति अच्छी हो चली है । अन्य राष्ट्रों में उसकी साख भी पूर्ववत् स्थापित हो चली है । आस्ट्रिया की इस समयानुकूल उन्नति-शीलता का समस्त श्रेय वहाँ के अधिनायकों को है; जिन्होंने अपने देश की डूबती हुई नाव को किनारे लगा दिया ।

× × ×

८. बलगरिया की क्रांति

बलगेरिया की अवस्था अब निकट-भविष्य में शांति-पूर्ण हो जाने योग्य हो गई है । मो० स्टैंबोलिस्की, जिनके कुटिल शासन से बलगेरियन जन-समुदाय बिलकुल तबाह हो चला था, अपने कारनामों का यथेष्ट पुरस्कार पा चुके हैं, और अब सफलता-पूर्वक उनके कुशासन का व्यूह विच्छिन्न हो गया है । उनके अत्याचारों से ऊब कर कुछ साहसी व्यक्तियों ने, गुप्त रूप से, संगठित और सुदृढ़ षड्यंत्र का निर्माण किया, और उसके द्वारा उनके दुर्दमनीय कुशासन का सदा के लिये अंत कर दिया। आशा है, अब वहाँ शीघ्र शांति स्थापित हो जायगी। अब बालकन प्रायद्वीप में युद्ध-कांड उपस्थित होने की कोई आशंका नहीं है ।

× × ×

९. केनिया की समस्या

केनिया की समस्या पर अभी तक कोई समझौता नहीं हुआ । शीघ्र समझौता होने की कोई आशा भी नहीं है । लार्ड एंपथिल ने एक समाचार-पत्र में एक पत्र प्रकाशित किया था । उसमें उन्होंने नितांत पक्षपात-पूर्ण बातें कही हैं । उनका कहना है—"साम्राज्य के अंतर्गत जहाँ हिंदुस्तानी अधिक हैं, वहाँ उनके साथ सद्व्यवहार और जहाँ हिंदुस्तानी कम हैं, वहाँ उनके साथ दुर्व्यवहार करना उचित हैं ।" इधर भारत-मंत्री सब विषयों में जातीयता की दृष्टि से अँगरेज़ों को भारतवासियों से श्रेष्ठतर तथा स्वाभाविक शासक मानते हैं । श्रीयुत श्रीनिवास शास्त्री यद्यपि दत्त-चित्त होकर इस प्रश्न को सुलझाने

लगे हैं, तथापि अधिकारी-वर्ग पर अपना प्रभाव स्थापित करने में वे सर्वथा असफल हुए हैं। आपने लार्ड एंपथिल महोदय के कथन का प्रतिवाद करते हुए कहा है कि "यदि लार्ड एंपथिल के विचारानुसार काम लिया जाय, तो केनिया वंश-परंपरा तक ऐसा स्थान रहेगा, जहाँ ब्रिटिश-नागरिकता की क़ब्र खुदी रहेगी, तथा अल्प-जनाधिपत्य का कुत्सित सिद्धांत प्रचलित रहेगा।"

समझौता न होने के कारण पार्लियामेंट ने औपनिवेशिक ख़र्च की स्वीकारी पर होनेवाली बहस को २४ जुलाई तक स्थगित कर दिया है। श्रीयुत सी० एफ़० एंड्रयूज़ ने, जो केनिया की स्थिति का पर्यवेक्षण करने गए थे, इस पर अपनी सम्मति प्रकट करते हुए कहा है कि "इससे यह मालूम होता है कि राजकीय औपनिवेशिक शासन-पद्धति करने से अभी तक समस्या हल नहीं हो सकी है, और ऐसा प्रयत्न किया जा रहा है कि आधुनिक केनिया के व्यवस्थापक चेंबर में, जाति-गत मताधिकार-नियम रखने के प्रस्ताव पर भारतीय प्रतिनिधि राज़ी हो जायँ।" अस्तु। स्पष्ट है कि अभी तक स्थिति संतोष-जनक नहीं है! क्या ही अच्छा हो कि इस प्रश्न पर समस्त भारतवर्ष में राष्ट्रीय महासभा तथा कौंसिलों के द्वारा सुदृढ़ आंदोलन किया जाय।

× × ×

१०. लाला लाजपतराय का स्वास्थ्य

भारत के देश-भक्तों में गण्य-मान्य, राष्ट्रीयता के प्रबल समर्थक, पंजाब-केसरी लाला लाजपतराय कारागार-प्रवास के अस्वास्थ्यकर जल-वायु के कारण बहुत दिनों से सख़्त बीमार हैं। ख़बर मिल रही है कि उनका दाहना फेफड़ा ख़राब हो गया है। हरारत बराबर बनी रहती है, और खाँसी बढ़ रही है। भारत में ऐसा कौन शिक्षित भारतीय होगा, जो लालाजी की बहु-मूल्य एवं अद्वितीय देश-सेवाओं से अपरिचित हो। अतएव लालाजी की बीमारी का समाचार जब से मिला है, तभी से समस्त शिक्षित भारत-संतान उनके स्वास्थ्य-समाचारों के जानने के लिये व्यग्र हैं। परंतु जब से मालूम हुआ है कि उनका स्वास्थ्य बहुत ख़राब है, तब से तो अखिल भारत-संतान की व्यग्रता और भी बढ़ गई है। माननीय मालवीयजी ने इसीलिये लालाजी से भेंट करने के लिये इच्छा प्रकट की थी। परंतु भारत-सरकार ने जिन शर्तों पर मालवीयजी का लालाजी से भेंट करना स्वीकार किया, वे शर्तें सर्वथा अग्राह्य थीं। सुपरिंटेंडेंट ने मालवीयजी को ज्यों ही लालाजी से भेंट करने की शर्तें बताईं, त्यों ही मालवीयजी ने उनको सुनकर एक अभूतपूर्व वेदना का अनुभव किया। इसी बीच में उन्हें ज्ञात हुआ कि उन अपमान-जनक शर्तों पर भेंट करना लालाजी ने स्वयं अस्वीकृत कर दिया है। लालाजी की इस अस्वीकृति की बात सुनते ही माननीय मालवीयजी लौट आए। नहीं कहा जा सकता कि लालाजी से मालवीयजी की भेंट होने के संबंध में सरकार ने इतनी अमानुषिक कठोरता का आश्रय क्यों लिया? मालूम होता है कि निश्चय ही लालाजी की अवस्था के संबंध में सरकार कुछ छिपाना चाहती है, तभी तो उसने मालवीयजी-सरीखे शांत और देव-तुल्य पुरुष को लालाजी से नहीं मिलने दिया।

लाला लाजपतराय

हाल ही में पं० नाथूराम-नामक एक महाशय ने, जो

उसी कारागार से १ वर्ष की कड़ी क़ैद की सज़ा भुगतकर लौटे हैं, प्रकट किया है कि 'लालाजी अब योरपियन बारिक में रक्खे गए हैं। उनकी यथासंभव रक्षा की जाती है। उनका कमरा टट्टियों से घिरा हुआ रक्खा गया है; जिसमें नियमित रूप से पानी का छिड़काव होता रहता है। दो पंखा खींचनेवाले भी हैं। रात में लालाजी के संबंधियों के दिए हुए बिजली के पंखे का उपयोग होता है। जितना दूध वे पी सकते हैं, उतना दूध दिया जाता है। आजकल बुख़ार का टेंपरेचर नार्मल से कम है। वे चिंता नहीं करते हैं, इत्यादि।' यदि पं० नाथूरामजी का कथन यथार्थ है, तब तो सरकार की इस भयातुरता का कोई कारण नहीं है, जिससे वह लालाजी से भेंट नहीं करने देती। जब तक किसी बहुत ही विश्वस्त पुरुष की भेंट द्वारा लालाजी के स्वास्थ्य का ठीक-ठीक संवाद न मिले, तब तक हम भारतवासियों की चिंता-युक्त व्यग्रता कम नहीं हो सकती। आज हम कोटि-कोटि भारतवासियों की दृष्टि लालाजी की मंगल-कामना की ओर लगी हुई है। भगवान् करें, लालाजी का स्वास्थ्य यथासंभव शीघ्र अच्छा हो जाय।

× × ×

११. संयुक्त-प्रांत की शासन-रिपोर्ट

संयुक्त-प्रांत की शासन-रिपोर्ट भी प्रकाशित हो गई है। पाठकों की जानकारी के लिये उसकी ख़ास-ख़ास बातें यहाँ लिखी जाती हैं—

गत मनुष्य-गणना से मालूम हुआ कि इस प्रांत की जन-संख्या ४,६५,१०,६६८ है। यह १९११ की गणना से १४,८६,६९६ कम है—सनातनधर्मी हिंदू सन् ११ की गणना से सैकड़ा पीछे १२ से भी अधिक घट गए हैं। आर्य-समाजी और ईसाई संख्या में बढ़े हैं। मर्दों से औरतें कम हो गई हैं।

इस वर्ष सरकार को ज़मीन की मालगुज़ारी से ६,८६,००,०००) मिलने चाहिए थे; पर आमदनी ६,२६,००,०००) ही हुई। गरानी आदि के कारण सरकार ने ८ लाख रुपए माफ़ कर दिए, और ४९ लाख रुपए लोगों पर बाक़ी हैं। इस साल सरकार की ओर से किसानों को तक़ावी में ४५ लाख ८१ हज़ार रुपए बाँटे गए। इज़ाफ़ा-लगान के मुक़द्मे १७,२९० से घटकर १६,१०५ ही हुए। मगर बाक़ी मालगुज़ारी के मुक़द्मे १,६८,३९७ से बढ़कर १,८६,७२३ हो गए।

अपराध बढ़ गए। उनकी संख्या १,३४,००७ से बढ़कर १,४३,७८४ हो गई। सरकार की राय में इसका कारण असहयोग-आंदोलन ही है। नक़ली सिक्के आदि बनाने के ५९ अभियोग चले। ख़ूनों की संख्या ६९६ से बढ़कर ७३५ हो गई। ७६ आदमियों को ज़हर दिया गया। १२७७ डाके पड़े। ८०९ जगह लूट हुई। ५४,०६१ चोरियाँ हुईं। अलीगढ़, गोरखपुर, आगरा, मेरठ और सहारनपुर में लूट अधिक हुई, और फ़ैज़ाबाद, अलीगढ़, गोरखपुर, सहारनपुर, मेरठ, रायबरेली के ज़िलों में डाके अधिक पड़े। जरायम-पेशा लोग २५,५१४ से बढ़कर ३५,९०२ हो गए। १०९ को फाँसी, ३३८ को कालेपानी और १७,४६२ को सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई। १,४७७ को, जिनमें २५८ बालक थे, बेंत की सज़ा मिली। क़ैदियों के भोजन और रक्षा आदि में २,९४,२७,०००) रु० ख़र्च हुए। हर क़ैदी के पीछे ११६॥=) का औसत पड़ा। जेल के कारख़ानों से ४,४७,०४६) की आमदनी हुई। इस साल १० लाख पीछे २१४ क़ैदी मरे। पेचिश और कालरे से ही अधिक मौतें हुईं। २६ मौतें लू लग जाने के कारण हुईं।

इस वर्ष बड़ौत, ज़िला मेरठ, में म्युनिसिपालिटी क़ायम हुई। प्रांत के कुल म्युनिसिपल बोर्ड ८५ हो गए। सब बोर्डों को, ऋण आदि के अलावा, १,१२,१८,०००) की आमदनी हुई। चुंगी की आमदनी घटकर ३०,१७,०००) ही रह गई। सन् १९२१-२२ में बोर्डों को १,४७,३७,०००) ख़र्च करने पड़े। अधिकतर म्युनिसिपलिटियों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। आगरे, बनारस और कानपुर की म्युनिसिपलिटियों की स्थिति तो बहुत ही ख़राब है। सन् १९२१-२२ में ज़िला-बोर्डों की आमदनी १ करोड़ ५२ लाख ८१ हज़ार और ख़र्च १ करोड़ ८४ लाख ६५ हज़ार था।

सन् १९२१-२२ में कुल २,०६१ पुस्तकें प्रकाशित हुईं। इनमें ५८ फ़ी-सदी हिंदी की हैं। सन् १९२०-२१ की अपेक्षा इस वर्ष अँगरेज़ी की ६५ और उर्दू की ४१ पुस्तकें कम निकलीं; लेकिन हिंदी की २३३ पुस्तकें अधिक रहीं। राजनीतिक साहित्य का ही अधिक प्रचार हुआ। बोल्शेविज़्म पर दो पुस्तकें प्रकाशित हुईं। ईसाई-धर्म की १०२, हिंदू-धर्म की २८० और मुसलमानी मज़हब की ३५ पुस्तकें छपीं। ७१ नए उपन्यास और ४६ नए

नाटक निकले। जीवनियाँ ३६ निकलीं ; जिनमें १० तो महात्माजी की ही हैं। इतिहास और अर्थ-शास्त्र पर कम पुस्तकें लिखी गईं। सन् १९२१-२२ में ५२५ सामयिक पत्र और समाचार-पत्र प्रकाशित होते रहे। उनमें अँगरेज़ी के ९७, उर्दू के १९५ और हिंदी के २२६ थे। ९ अँगरेज़ी के, ४ उर्दू के और १२ हिंदी के पत्र २,००० से अधिक छपते थे। दो ही पत्र ऐसे थे, जिनका प्रचार १०,००० से अधिक था।

सन् १९२१-२२ में सरकार की आय कम हो गई। प्रांत में शांति न थी। राजनीतिक आंदोलन ज़ोर पकड़ता गया। पंजाब की स्थिति का प्रभाव भी इस प्रांत पर पड़ा। सरकार ने दमन से काम लिया। असहयोग के कारण आबकारी की आमदनी घटकर १ करोड़ ४८ लाख ५९ हज़ार ही रह गई। इस वर्ष प्रांत में १७,९५,४४५ आदमी मरे, और १५,६०,६०२ पैदा हुए। १४,६६७ हैज़े से, १,४३९ चेचक से, २४,००९ प्लेग से, १३,६१,९२० बुख़ार से और १७,३०१ पेट की बीमारियों से मरे। ६८२ मर्दों और १,६७९ औरतों ने आत्म-हत्या कर डाली। इस साल अस्पतालों की संख्या बढ़कर ६६२ और उनसे सहायता पानेवाले रोगियों की संख्या घटकर ५७,१८,७२४ हो गई। सरकारी स्कूलों की संख्या बढ़कर २१,५६६ हो गई ; पर विद्यार्थी घटकर ९,६५,०५९ ही रह गए। प्राइवेट स्कूलों और उनके विद्यार्थियों की संख्या भी घटकर क्रमशः ३,०११ तथा ६४,५०७ रह गई। शिक्षा-विभाग का ख़र्च बढ़कर २ करोड़ ९८ लाख १३ हज़ार हो गया। लड़कियों के स्कूल १,६४१ और उनमें पढ़नेवाली लड़कियाँ ६०,७११ थीं।

× × ×

१२. उपयोगी खाद

पृथ्वी की उर्वरा-शक्ति बढ़ाने के लिये पाश्चात्य देशों में रासायनिक प्रक्रिया से ज़ोरदार खाद बनाई जाती है। पर वह महँगी होती है। यहाँ के मामूली हैसियत के किसान उसका उपयोग नहीं कर सकते। अब यहाँ भी ऐसी खाद बनाने की चेष्टा की जा रही है, जो पृथ्वी की उर्वरा-शक्ति को तो ख़ूब बढ़ावे, पर सस्ती हो। बँगलोर के एग्रीकल्चरल फ़ॉर्म में ऐसी ही खाद बनाने की चेष्टा चल रही है। तंबाकू की राख, गोबर और लकड़ी की राख ऐसे पदार्थ हैं, जिनमें विलायती रासायनिक प्रक्रिया से प्रस्तुत खादों के ही गुण मौजूद हैं। इन चीज़ों के विश्लेषण से मालूम हुआ है कि तंबाकू की राख में २९·९६ पुटाश होती है। गोबर में १६·४९ भाग पुटाश, १·४० भाग फ़ास्फ़ोरिक एसिड और ३·५० भाग चूना होता है। ऐसे ही लकड़ी की राख में ४·३७ भाग पुटाश, ३·६६ भाग राख और ३६·६० भाग चूना है। ये चीज़ें यों ही फेंक दी जाया करती हैं। प्रयोग करके देखा गया है कि तंबाकू और लकड़ी की राख बड़े काम की चीज़ है। हरी लकड़ी की राख सूखी लकड़ी की राख से अधिक उपयोगी होती है। आशा है, हमारे यहाँ के किसान इन सस्ती और उपयोगी खादों से अवश्य लाभ उठावेंगे।

× × ×

१३. भारतवासियों की आयु

अन्य देशों के लोगों की आयु का औसत बढ़ रहा है ; मगर भारतवासियों की आयु घटती जाती है। सन् १८४१ में एक अँगरेज़ की आयु का औसत ४०·१७ था ; पर १९१० में वह ५१·५० हो गया। इँगलैंड आदि में अब भी १०० वर्ष से अधिक आयु के अनेक मनुष्य पाए जाते हैं। पर भारत में पूरे ५० वर्ष की आयु होना भी भाग्य की बात समझी जाने लगी है। सन् १८९१ में एक भारतवासी की आयु का औसत २४·५९ था। सन् १९०१ में २३·६३ हो गया। सन् १९११ में २२·५९ ही रह गया। अब शायद और भी कम हो गया होगा। २० वर्ष में ही आयु के औसत में २ वर्ष घट गए! क्या यह चिंता की बात नहीं है? इसमें संदेह नहीं कि दरिद्रता, चिंता, रोग-शोक और मानसिक अवनति का ही यह कुफल है।

× × ×

१४. ब्रिटिश और बोल्शेविक सेना की संख्या

इस वर्ष कहाँ कितनी ब्रिटिश-सेना रहेगी, इसका लेखा प्रकाशित हुआ है —

ग्रेट बिटेन में	१,०८,०००	स्टेट्स सेटलमेंट में	१६,०००
भूमध्य-सागर में	४,०००	चीन में	४,०००
राइन में	११,०००	इराक में	२,०००
टर्की में	५,०००	मिस्र आदि में	१३,०००
भारत में	७१,०००	वेस्ट इंडीज़ में	२,०००

महायुद्ध से प्रथम एशिया में ब्रिटिश-सेना कम थी; अब उससे अधिक रहेगी। मध्य-पूर्व में इसके अलावा

१०००० भारतीय सेना है। इस सेना-समूह के लिये भिन्न-भिन्न देश इँगलैंड को निम्न-लिखित धन देते हैं—

मारिशस	५६,००० पौंड	हाँगकाँग	४,४३,००० पौंड
सीलोन	७२,००० ,,	मिस्र	१,५०,००० ,,
स्टेट्स सेटलमेंट	४,४६,००० ,,	भारत	७,५०,००० ,,
		जर्मनी	१२,५०,००० ,,

इस प्रकार अपने साम्राज्य-वाद की पुष्टि के लिये ग्रेट ब्रिटेन रोज़ाना ११,४३३ पौंड ख़र्च करता है !

अब बोल्शेविकों की सेना का हाल सुनिए। सन् १९२३ के आरंभ से बोल्शेविक-सेना घटकर ८ लाख रह गई थी। इसमें १ लाख ५० हज़ार अस्थायी सैनिक थे। इस समय बोल्शेविक सेना में २ लाख ८० हज़ार पैदल, ६० हज़ार सवार, ७०,००० विशेष सैनिक और ३० हज़ार जल-सेना है। अस्थायी सेना में चेका की सीमा पर ५० हज़ार यूनिट और चेका में ६० हज़ार यूनिट हैं। बोल्शेविकों के पास २० लाख रायफ़लें, १४½ हज़ार मशीनगनें, ५ हज़ार ७ सौ हलकी मशीनगनें, ३६०० तोपें और ३० लाख गोले हैं। १ अरब के लगभग और छोटे-मोटे शस्त्र हैं। सेना के एक डिवीज़न में १५,००० पैदल और ६,५०० सवार रखना निश्चित हुआ है। तदनुसार एक डिवीज़न में ३ पैदल पल्टनें, ३ सवार पल्टनें, ३ मैदानी तोपख़ाने, ३ हाविट्ज़र तोपख़ाने और इंजीनियर सैपर आदि रहते हैं। रूस में हवाई-जहाज़ों के २३ कारख़ाने हैं। इस समय ५ में ही काम होता है। इनमें २ मास्को में, १ पेट्रोग्राड में, १ पेंजा और १ ओड़ेसा में है। सन् १९२४ के आरंभ तक १०,००० हवाई जहाज़ बन जाने की आशा है। हवाई जहाज़ चलाना सिखाने के लिये रूस में ४ स्कूल हैं। सब से अच्छा स्कूल मास्को में है। उसमें ५० जर्मन शिक्षक हैं। मज़दूरों को सैनिक शिक्षा देने के लिये भी रूस में कई स्कूल हैं।

× × ×

१५. अद्भुत फूलोंवाला वृक्ष

मैक्सिको (अमेरिका) में एक अद्भुत फूलोंवाला वृक्ष होता है। उसके फूलों के बीच से जो डंठल-सा निकलता है, उसका आकार आदमी के हाथ और पुट्ठे के सदृश होता है। जैसे मनुष्य की उँगलियों में नाख़ून निकलते हैं, वैसे इनमें नोकें रहती हैं। फूलों का रंग लाल होता है, और वे किसी ख़ूनी के रक्त-रंजित हाथ-जैसे दूर से प्रतीत होते हैं। जापान में भी एक ऐसा न रंगी का पेड़ होता है; जिसकी उँचाई अक्सर ५ फ़ीट से अधिक नहीं होती। अँगूठे-सहित आदमी के पंजे के आकार के इसके फल होते हैं। यह प्रकृति की विचित्रता है ! मनुष्य-निर्मित अजायब-घरों में इस उन्नति के युग में भी ऐसी विचित्र वस्तुओं का संग्रह नहीं हो सका है, जैसी यदा-कदा निर्जन जंगलों में नज़र पड़ जाती हैं।

× × ×

१६. भारत में सरकारी तौर से इँगलैंड से कितना माल ख़रीदा गया ?

लंदन में एक भारतीय ट्रेड कमिश्नर रहता है। भूत-पूर्व ट्रेड कमिश्नर मिस्टर डी० टी० चेडविड ने एक हिसाब प्रकाशित किया है कि हाई कमिश्नर ने भारत-सरकार, प्रांतीय सरकारों और देशी राज्यों के लिये इँगलैंड से कितना माल कब ख़रीदा है। हिसाब का स्थूल संक्षिप्त विवरण यों है—

माल	सन् १९२०-२१	सन् १९२१-२२
स्टांप	३,६६,००० पौंड	३,३९,००० पौंड
तार और डाक का सामान	९,३२,००० ,,	९,७२,००० ,,
शासन-विभाग के लिये	४,७९,००० ,,	४,१५,००० ,,
स्टेशनरी और छपाई	२,१६,००० ,,	२,१६,००० ,,
स्थल-सेना और हवाई		
सेना के लिये	५४,३६,००० ,,	४१,७२,००० ,,
सामुद्रिक सामग्री	४,०१,००० ,,	२,१४,००० ,,
स्टेटरेल्वे का सामान	३७,५७,००० ,,	२८,७२,००० ,,
देशी राज्यों के लिये	९,९२,००० ,,	१९,३८,००० ,,
फुटकल	६,६८,००० ,,	६,७०,००० ,,
समुद्र-मार्ग में हानि	३,००० ,,	५,००० ,,
कुल	१,३२,९५,००० पौंड	१,१८,१३,००० ,,

कुछ दिनों से भारत में भी सरकार के लिये उत्तरोत्तर अपेक्षाकृत अधिक सामान ख़रीदा जाने लगा है। देखिए—

सन्	माल की क़ीमत
१९१४-१५	२,६२,९१,०००) रुपए का
१९१५-१६	२,५४,८९,०००) ,,
१९१६-१७	२,९७,१३,०००) ,,
१९१७-१८	३,५४,०२,०००) ,,
[illegible]	५१,८,८६,०००) ,,

१९१९-२० ५,२३,८४,०००) रुपए का
१९२०-२१ ५,९०,८३,०००) ,,

ख़ैर, नहीं से यह भी ग़नीमत है। विलायत में पौंडों का ख़रीदा जाता है, तो यहाँ रुपयों ही का सही। इसमें संदेह नहीं कि सरकार और देसी राज्य अवलंब और प्रोत्साहन दें, तो यहाँ भी अच्छा, मज़बूत और फ़ैंसी सब तरह का सामान बनने लगे। सरकार और देसी राज्यों को भी कम क़ीमत में मिल जाय।

× × ×

१७. आकाश-मार्ग से लंबी यात्रा

अब विमानों का युग आ गया है। रेल, जहाज़ आदि से यात्रा करने में जितना समय लगता है, उससे कहीं कम समय में विमान की यात्रा समाप्त हो जाती है। समय की बचत तो होती ही है, विमान की यात्रा कम कौतूहल-जनक भी नहीं होती। योरप और अमेरिका के लोग समय की बड़ी क़दर करते हैं, इसलिये रेल और जहाज़ से न जाकर वे आकाश-मार्ग से ही यात्रा किया करेंगे। ख़बर मिली है कि विलायत में एक कंपनी क़ायम हुई है। उसके हवाई जहाज़, रेलवे की ट्रेनों की तरह, नित्य लंदन से बर्लिन (जर्मनी) और मास्को (रूस) को रवाना हुआ करेंगे। लंदन से रोज़ाना तीन विमान उड़ा करेंगे। यथा—सबेरे ८½ बजे, ९½ बजे और रात को १२½ बजे। ९½ का विमान एक्सप्रेस होगा, और बर्लिन की यात्रा करेगा। वहाँ इसके यात्री उतर पड़ेंगे। उनमें से रूस जानेवाले यात्री रेल पर कोनिंग्सबर्ग तक जायँगे। वहाँ से फिर विमान पर बैठकर सोवियट रूस के हेडक्वार्टर मास्को को जायँगे। जिस दिन लंदन से यात्री चलेंगे, उसके दूसरे ही दिन मास्को पहुँच जायँगे। रात्रि का विमान एमस्टरडम होता हुआ हंबर्ग से डेनमार्क की राजधानी कोपनहेगन पहुँचेगा। इसमें २४ घंटे का सफ़र होगा। उधर बर्लिन से एक विमान मंचेस्टर को आया करेगा। जो कि सुबह ८½ बजे बर्लिन से चलकर शाम को ५—५५ मिनट पर लंदन और ८¼ बजे मंचेस्टर पहुँचेगा। यह विमान-यात्रा ३० एप्रिल से शुरू हो गई थी। उल्लिखित परिवर्तन १ जून से हुआ है। बर्लिन से लंदन का किराया ९½ पौंड है। अभी यह यात्रा केवल व्यापारी और यात्रियों के लिये जारी हुई है। युद्ध-काल में ये ही जहाज़ शत्रु-पक्ष पर बम बरसाने का काम भी करेंगे। संभवतः आकाश-मार्ग से लंदन और भारत की यात्रा भी शीघ्र ही शुरू होनेवाली है। उसमें ३-४ दिन से अधिक नहीं लगेंगे। इस तरह इस युग में महीनों की राह दिनों की कर दी गई है।

× × ×

१८. कम सोना स्वास्थ्य को ठीक रखता है

यहाँ प्रायः देखा जाता है कि निश्चिंत लक्ष्मी-पात्र लोग अधिक समय सोने में ही बिता देते हैं। शायद यही कारण है कि उनमें से फ़ी-सदी ९० से भी अधिक को अजीर्ण-अपच, क़ब्ज़, भूख की कमी आदि की शिकायत बनी ही रहती है। मगर पाश्चात्य देशों में, ख़ासकर अमेरिका में, इसके विपरीत धनी और विद्वान् लोग अपना अधिक-से-अधिक समय व्यापार में, वैज्ञानिक आविष्कार में या और किसी उपयोगी काम में ख़र्च करके परिमित समय ही सोने के लिये रखते हैं। अमेरिका के रत्न एडीसन साहब को शायद हमारे सभी पाठक जानते होंगे। इन्होंने दर्जनों नए-नए आविष्कार करके अपनी कीर्ति जगत्-भर में फैला दी है। उनके आविष्कार केवल विज्ञान के गौरव की घोषणा करनेवाले ही नहीं हैं, उनसे व्यापार-संसार में भी अद्भुत क्रांति उत्पन्न हो गई है। एडीसन साहब अपने आविष्कारों की बदौलत बेशुमार दौलत पैदा कर चुके हैं। अब आप ७६ वर्ष के बूढ़े भी हो चुके हैं। इस देश का कोई इतना धन कमा चुका होता, तो इस उम्र में ख़ूब आराम करना ही अपना कर्तव्य समझता। मगर आपको आश्चर्य होगा, एडीसन साहब अब भी उसी तरह, एक प्रकार से रात-दिन, काम करते रहते हैं। वह इतने तंदुरुस्त और चुस्त हैं, उनमें इतनी फ़ुर्ती है कि जवान जान पड़ते हैं। यह महाशय २४ घंटे में सिर्फ़ ४ घंटे सोते हैं। इनके कार्यालय में और भी सैकड़ों वैज्ञानिक विद्वान् काम करते हैं। वे लोग भी स्वामी के अनुकरण पर सोने के घंटे घटा रहे हैं। उन लोगों को विश्वास हो गया है कि सोना भी एक आदत है, जो बढ़-घट सकती है। अभ्यास बढ़ाकर आदमी घंटे-दो घंटे ही सोकर भी तंदुरुस्त रह सकता है। हमारे देश के आलसियों को इससे कुछ शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए।

× × ×

१९. मिस्र में नया शासन-विधान

पाठकों को मिस्र के असंतोष और राजनीतिक आंदोलन

की प्रगति का हाल, अख़बारों के ज़रिए, समय समय पर मालूम होता रहता है। वहाँ के नेता जगलुलपाशा को देश-निकाले का दंड मिला, और मार्शल-ला जारी किया गया, तथापि वहाँ शांति नहीं हुई, बल्कि अशांति की आग उत्तरोत्तर अधिक भड़कती गई। अंत को ब्रिटिश राजनीतिज्ञों ने मिस्र को स्वराज्य देना ठीक ठहराया। उसकी स्कीम बनी, और वहाँ के नरम-दल ने उसका स्वागत किया। रूटर के तारों से मालूम हुआ, मिस्र के लोग इस नवीन शासन-विधान से संपूर्ण संतुष्ट हैं, और ख़ुशी मना रहे हैं। मगर असल बात और ही कुछ थी। वहाँ का राष्ट्रीय दल, जो वफ़द कहलाता है, उसके प्रतिनिधि-मंडल की कार्य-कारिणी कमेटी ने घोषणा की है कि यह शासन-विधान नाकाफ़ी, पोला और पेंचदार है। घोषणा-पत्र में कहा गया है—"यह विधान ऐसा है कि विदेशी सत्ता मज़े से हमारे शासन में दस्तंदाज़ी कर सकती है। व्यक्ति-गत भाषण और लेखन की स्वतंत्रता का कुछ ज़िक्र ही इसमें नहीं है। मिस्र की सीमा का भी कुछ निर्णय नहीं किया गया है। सुडान की सीमा भी नहीं तय है। सब से अधिक आपत्ति के योग्य बात यह है कि अब भी मिस्र में मार्शल-ला और फ़ौजी अदालतें क़ायम हैं।" मिस्र को दी गई स्वतंत्रता का यही रूप है। जगलुलपाशा के नेतृत्व में चलनेवाला यह राष्ट्रीय दल इसे ब्रिटन की चाल बतलाता है, और वास्तविक स्वतंत्रता प्राप्त किए विना दम लेना नहीं चाहता। वर्तमान युग की राजनीति की पालिसी कुछ ऐसी है कि कोई बड़ी शक्ति अपने हाथ में आए हुए दूसरों के देश को अपने लाभ के लिये स्वतंत्र होने देना नहीं चाहती। यही सर्वत्र असंतोष का मूल-कारण है। सचाई, समता, स्वतंत्रता और स्वार्थ-त्याग का साम्राज्य जब तक संसार में स्थापित नहीं होता, तब तक यथार्थ शांति के दर्शन नहीं हो सकते। साम्राज्य-वादी राष्ट्र चाहे जब इस सत्य सिद्धांत के आगे सिर झुकावें, किसी-न-किसी दिन उन्हें ऐसा करना ही पड़ेगा, यह निश्चित है।

× × ×

२०. ढाई सौ वर्ष की आयु के वृद्ध योगी की विचित्र बातें

गत वर्ष कुछ प्रतिष्ठित साहसी अँगरेज़ वैज्ञानिकों का एक जत्था हिमालय के सर्वोच्च शिखर (गौरीशंकर) पर चढ़ने के लिये गया था। भारत से तिब्बत में जाने के लिये प्रकृति-निर्मित कुछ घाटियाँ हैं; जो हिमालय को विदीर्ण कर पूर्व से पश्चिम तक विस्तृत हैं। उनमें अधिक सुगम घाटी ज्ञानसी नाम की है। यह बंगाल के उत्तर दार्जिलिंग के पास है। उक्त जत्था इसी मार्ग से गया था। मेजर क्रास (एक सैनिक ऑफ़िसर) भी इस जत्थे में थे। इन्होंने गोआपांजिम नाम के स्थान में, जो कि बंबई के दक्षिण भारत के पश्चिमी समुद्र-तट पर है, एक व्याख्यान हाल में दिया है। इस स्थान में पुर्तगीज़ों का राज्य है। पुर्तगीज़ गवर्नर भी सभा में उपस्थित थे। मेजर क्रास ने उल्लिखित यात्रा में देखी हुई बहुत-सी विचित्र बातें और तिब्बत की अद्भुत रीति-नीति का मनोरंजक वर्णन किया है। उनमें से दो-चार बातें संक्षेप में यहाँ लिखी जाती हैं। मेजर के पास एक दाई नौकर हुई थी, और वह वहाँ की सब से रूपवती स्त्री थी। मगर असल में वह कुरूपा थी। वह कहते हैं, तिब्बत में एक स्त्री के अनेक पति होते हैं। एक ही स्त्री सब भाइयों की पत्नी होती है। उस दाई के ८ पति थे। २६ वर्ष की अवस्था में ही उसके ११ संतानें हो चुकी थीं। एक स्त्री के पति के २२ भाई हैं। वह स्त्री २३ पुरुषों की स्त्री है। वहाँ की स्त्रियाँ मुँह कभी नहीं धोती हैं। मेजर क्रास को वहाँ एक २४० वर्ष के वृद्ध साधु के दर्शन तिब्बतियों ने कराए। उनमें अद्भुत शक्ति थी। थियासफ़ी मत को चलानेवाली मेडम ब्लैवस्की को इन्हीं महात्मा ने धर्मोपदेश किया था। उच्च कोटि के गणित के इंटेगॅल और डिफ़रेंशियल कालक्युलस सिद्धांत प्रसिद्ध विद्वान् न्यूटन ने ही निकाले हैं। आश्चर्य है कि न्यूटन का नाम तक न जाननेवाले यह महात्मा उक्त सिद्धांतों से पूर्ण परिचित हैं। इन योगी में ग़ायब हो जाने की शक्ति है। मेजर साहब ऐसी कुछ करामातों को देखकर चकित हो गए। मगर योग-बल से कुछ भी परिचित हिंदू जानता है कि ये सब साधारण सिद्धियाँ योग की आरंभिक दशा के शोबदे-भर हैं। योग-बल की महिमा अपार है। योगी चाहे जो कर सकता है। नई सृष्टि की रचना भी उसके लिये कुछ बड़ी बात नहीं है। विश्वामित्र का चरित्र पुराणों में पढ़नेवाले इस बात को जानते हैं। ख़ैर, साहब ने कहा कि वह योगी इस समय हिमालय के सब से बड़े योगी हैं। वह अपने शरीर को चाहे जितना बढ़ा सकते हैं। योग-शक्ति से ही उनकी इतनी आयु हुई है। योगी ने बात-चीत के

सिलसिले में कुछ होनहार भी कहा। उनके कथनानुसार सन् १९२७ में एक बहुत बड़ा भयानक समर फिर होगा। तदनंतर कई वर्ष तक घोर दुर्भिक्ष पड़ेगा। साहब कहते हैं—योगी ने उनके सामने ही एक बालक की प्रेत-बाधा दूर कर दी, अपनी दृष्टि से एक भारी शिला को चूर-चूर कर दिया। अंत को मेजर साहब ने अपने व्याख्यान के उपसंहार में कहा कि तिब्बत के लिये भी एक दिन महायुद्ध होगा।

× × ×

२१. गेहूँ की फ़सल

भारत-सरकार की ओर से चौथी बार जो सन् १९२२-२३ की गेहूँ की फ़सल का अनुमान प्रकाशित किया गया था, उसमें भारत के उन सब स्थानों की फ़सल का ब्योरा था, जो गेहूँ की फ़सल के केंद्र कहे जाते हैं। पाठकों की जानकारी और मनोरंजन के लिये उसका संक्षिप्त सारांश दिया जाता है। अंदाज़न् ३ करोड़ ४ लाख ९२ हज़ार एकड़ में गेहूँ बोया गया था। अब की पिछले साल से ७ फ़ी-सदी गेहूँ की खेती बढ़ी है। १ करोड़ ७ लाख ६४ हज़ार टन गेहूँ की उपज कूती गई थी। पिछले साल ९८ लाख ३८ हज़ार टन ही उपज हुई थी। अब की १० फ़ी-सदी अधिक पैदावार होने की आशा थी। फ़सल की हालत साधारणतः अच्छी बतलाई गई है। तुलना करके लिखा गया है कि पिछले साल से इस साल हैदराबाद में ८२ फ़ी-सदी, मध्य-प्रदेश में ५२ फ़ी-सदी, मध्य-भारत तथा बरार में ४६ फ़ी-सदी, ग्वालियर में ४९ फ़ी-सदी, दिल्ली में ३९ फ़ी-सदी, सिंध में २७ फ़ी-सदी, राजपूताने में २१ फ़ी-सदी, पश्चिमोत्तर सीमा-प्रांत में १३ फ़ी-सदी, बंगाल में ११ फ़ी-सदी और पंजाब में ७ फ़ी-सदी फ़सल अधिक होने की आशा है। इसी तरह अजमेर-मेरवाड़े में ३३ फ़ी-सदी, बिहार-उड़ीसे में ५ फ़ी-सदी, बंबई एवं युक्तप्रांत में ३ फ़ी-सदी कमी हो सकती है।

× × ×

२२. चीन की दीवाल

चीन में एक बहुत बड़ी तथा ऊँची दीवाल है। इसका कुछ हिस्सा रेलवे-लाइन बनाने के लिये तोड़ा गया था। तोड़नेवाले ठेकेदारों ने इस काम को मुफ़्त कर दिया; किंतु दीवाल से पुराने समय की मुद्रा और गहने, जो छिपाकर रक्खे हुए थे, इतने निकले कि दीवाल को मुफ़्त तोड़नेवाले ठेकेदार नफ़े ही में रहे। न मालूम उस दीवाल में अब तक कितनी धन-संपत्ति छिपी हुई है!

× × ×

२३. मुंशी देवीप्रसादजी का स्वर्ग-वास

पं० प्यारेलाल मिश्र के स्वर्गारोहण का संवाद पाए अभी १५ दिन भी नहीं हुए, 'माधुरी' प्रकाशित होते-होते, मुंशी देवीप्रसादजी के स्वर्ग-वास का भी संवाद मिल गया! हिंदी-संसार के लिये इससे अधिक शोक की बात और क्या हो सकती है? मुंशी देवीप्रसादजी हमारे देश के इसलामी राजत्व-काल के इतिहासज्ञों में से अग्रगण्य थे। हिंदी से आपको बड़ा प्रेम था। आपने कोई ५०-६० ऐतिहासिक ग्रंथ लिखे हैं। आपका जन्म माघ-शुक्ल १४ शुक्रवार, संवत् १९०४ को हुआ था। आपके पिता का नाम मुंशी नत्थनलालजी था। आपसे ही मुंशी देवीप्रसादजी ने उर्दू और फ़ारसी की शिक्षा पाई। हिंदी अपनी माता से सीखी। माता की हिंदी-शिक्षा का मुंशीजी पर बड़ा प्रभाव पड़ा। जब कुछ और वयस्क हुए, तो इनके पिताजी ने भी इन्हें हिंदी की शिक्षा दी। शुरू में आपको रियासत टोंक तथा इसके पश्चात् अजमेर में, उर्दू और फ़ारसी में, काम करना पड़ा। अजमेर में आप संवत् १९३४ तक रहे। फिर संवत् १९३६ में जोधपुर के महाराज के यहाँ आ गए। जोधपुर-दरबार में रहकर कुछ दिनों बाद आप मुंसिफ़ हो गए। मुंसिफ़ी का कार्य आपने बड़ी योग्यता-पूर्वक किया: रियासत-भर में आपकी बड़ी प्रतिष्ठा हो गई। इस पद पर रहकर आपने बड़ी उन्नति की। मारवाड़-राज्य के क़ानून सर्व-प्रथम आपने ही बनाए थे, इस कारण राज्य के लोगों ने प्रेम-पूर्वक आपका नाम 'क़ानूनी' तथा 'क़ानून की माता' रक्खा था। ६ मनुष्य-गणनाओं के अनुभव से आपने मारवाड़ की हिंदू-मुसलिम-जातियों की एक ऐसी रिपोर्ट लिखी थी, जो देसी राज्यों की रिपोर्टों में पहली ही महत्त्व-पूर्ण रिपोर्ट है। इस ग्रंथ पर मारवाड़-दरबार की ओर से आपको प्रशंसा-पत्र-सहित २००) का पुरस्कार प्राप्त हुआ था। आपकी उर्दू-पुस्तकों में से 'गुलदस्तए अदब', 'तालीम निसवाँ' तथा 'तवारीख़ क़ौम-मारवाड़' पर संयुक्त-प्रांतीय सरकार ने भी ५००) पुरस्कार-स्वरूप दिए थे। आपने बड़े परिश्रम और व्यय से सन् ६२२ ई० से लेकर सन् १९२२ ई०

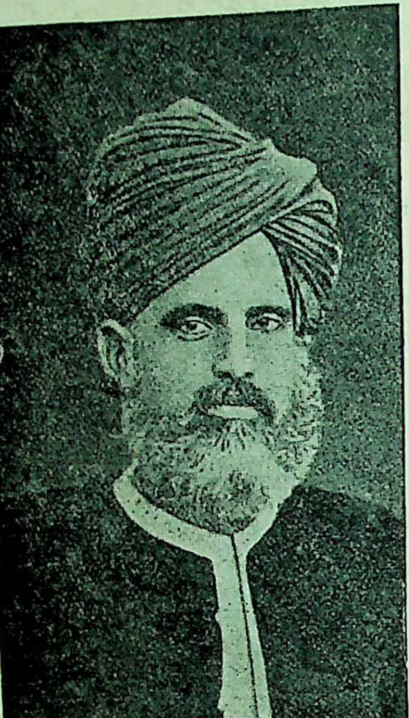

स्वर्गीय मुंशी देवीप्रसादजी

तक की एक बड़ी महत्त्व-पूर्ण ऐतिहासिक जंत्री तैयार की है ; जो अभी अप्रकाशित है ।

साहित्य-सेवा का कार्य आपने १६ वर्ष की अवस्था से ही प्रारंभ कर दिया था । संवत् १९२० ई० में आपने पहला उर्दू-ग्रंथ 'ख़्वाब राजस्थान' लिखा । पुनः इसी का हिंदी-अनुवाद 'स्वप्न राजस्थान' के नाम से प्रकाशित हुआ । रियासत का अदालती काम पहले उर्दू में होता था, परंतु आपने अपने प्रयत्न से हिंदी को उसका स्थान दिया । एतदर्थ आपको अपने मित्रों के व्यंग्य-वचन भी सुनने पड़े, परंतु आपने उनकी यत्किंचित् पर्वा नहीं की । आपके स्वर्गारोहण से हिंदी-संसार की तो महान् क्षति हुई है, परंतु साथ-ही-साथ, अखिल भारतीय ऐतिहासिक संसार की भी कुछ कम क्षति नहीं हुई । आप उन पुरुष-सिंहों में से थे, जो एक साधारण कुटुंब में जन्म लेकर अपनी प्रतिभा, उद्योग-शीलता, परिश्रम और सादगी के बल से राष्ट्र और मातृ-भाषा के लिये बहु-मूल्य सिद्ध होते हैं । लगभग १० वर्ष हुए होंगे, आपके पुत्र श्रीयुत पीतांबरदत्तजी का देहांत हो गया था । पुत्र के देहांत से मुंशीजी के हृदय को बड़ी ठेस लगी । आपके पौत्र मुंशी पुरुषोत्तमदासजी ही आपके एक-मात्र उत्तराधिकारी हैं । माधुरी के जन्म से आप बड़े प्रसन्न हुए थे । रुग्ण रहते हुए भी आप उसके लिये लेख लिखना अपना "कर्तव्य" समझते थे । मृत्यु के कुछ दिन पहले ही आपने एक लेख लिखकर भेजा था । बहुत दिनों से आप हस्त-लिखित ऐतिहासिक पुस्तकों का एक बड़ा पुस्तकालय खोलने का उपक्रम कर रहे थे, पर भगवान् ने यह व्रत पूरा नहीं होने दिया ! आप केवल तीन दिन बीमार रहे, और गत १५ जुलाई को स्वर्ग-वासी हुए । आपने अपने जीवन में, सार्वजनिक संस्थाओं को, सब मिलाकर लगभग ८६,०००) का दान किया है । हमें देवीप्रसादजी के स्वर्ग-वास पर हार्दिक दुःख है । हिंदी-संसार का एक ऐतिहासिक दिग्गज विद्वान् उठ गया ! भगवान् मुंशीजी की आत्मा को शांति प्रदान करें, और मुंशी पुरुषोत्तमदासजी को धैर्य ।

× × ×

२४. नाभा-नरेश का शोचनीय परिणाम

देशी नरेशों में नाभा-नरेश श्रीरिपुदमनसिंहजी विद्या, बुद्धि स्वातंत्र्य-प्रियता आदि सद्गुणों के लिये प्रसिद्ध हैं । नाभे और पटियाले का झगड़ा अर्से से चला आ रहा है । इन दोनों निकट-संबंधी नरेशों के मनोमालिन्य का ऐसा कुफल होगा, यह किसी ने स्वप्न में भी नहीं सोचा था । हाल में मालूम हुआ है कि नाभा-नरेश ने स्वेच्छा से गद्दी छोड़ दी है । उनके पुत्र, जो अभी ४ वर्ष के ही हैं, २१ वर्ष के (बालिग़) होने पर गद्दी पर बैठेंगे । तब तक राज्य का रक्षणावेक्षण भारत-सरकार करेगी । बात यह थी कि पटियाला-राज्य की ओर से ८ अभियोग नाभा नरेश पर लगाकर भारत-सरकार से विचार की प्रार्थना की गई । जस्टिस स्टुअर्ट के हाथ में मामला गया । उनके विचार में कुछ अभियोग साबित नहीं हुए, और कुछ साबित हो गए । सुनते हैं, ५० लाख रुपए क्षति-पूर्ति के पटियाले को दिलाना तय हुआ । सरकार का कहन है कि सारी शरारत नाभा नरेश की थी । वह पटियाले के कर्मचारियों और निवासियों को अकारण तंग और क़ैद कराकर अत्याचार कराते थे । इस मुक़द्दमे का फ़ैसल अपने विरुद्ध सुनकर उसके भयंकर परिणाम और ब

नामी से डरकर राजा साहब ने स्वयं गद्दी छोड़ दी है। इसके विरुद्ध शिरोमणि-कमेटी ने प्रकाशित किया है कि "राजा साहब ज़बरदस्ती गद्दी छोड़ने को विवश किए गए हैं। वह अकालियों के आंदोलन के समर्थक थे, अँगरेज़ों से दबते न थे, स्वतंत्र विचार के थे, प्रसिद्ध विद्रोही राजा महेंद्रप्रतापसिंह के बहनोई थे। इसी तरह के अनेक कारणों से गवर्नमेंट को वह खटक रहे थे। सरकार सन् १९१२, १९१५ और १९१७ में कई बार उन्हें गद्दी से उतारते-उतारते रह गई। इस बार गवर्नमेंट को नाभे-पटियाले के ख़ानगी झगड़े से लाभ उठाने का अच्छा मौक़ा हाथ लग गया, और उसने अपने मन की कर डाली। राजा साहब पर दबाव डालकर गद्दी छोड़ने का पत्र लिखा लिया गया है।" असल बात क्या है, सो हम नहीं कह सकते। गत ८ जुलाई को पोलिटिकल एजेंट ने फ़ौज और मशीन-गनों के साथ जाकर राज-भवन पर क़ब्ज़ा भी कर लिया है। राजा साहब, युवराज और रानी के साथ, देहरादून को रवाना कर दिए गए हैं। इस घटना से सिखों में घोर असंतोष की आग भड़क उठी है। उन्होंने एक भारी सभा करके इस मन-मानी का प्रतिवाद करते हुए यह घोषणा की है कि वे सरकार को हर तरह से—सत्याग्रह तक करके—विवश करेंगे कि नाभा-नरेश को वह गद्दी पर फिर बिठावे। हमारी राय में सरकार को इस विषय पर फिर विचार करके काम करना चाहिए। पटियाला-नरेश भी नहीं चाहते कि नाभा-नरेश राज्य-च्युत कर दिए जायँ। अतएव सरकार को चाहिए कि वह नाभा-नरेश को गद्दी से न हटावे। अगर हटावे ही, तो राज्य का प्रबंध अपने हाथ में न लेकर उनके कुछ निकट-संबंधी राजों की समिति बनाकर उसे, तब तक के लिये, सौंप दे, जब तक राजकुमार बालिग़ न हो जायँ। गवर्नमेंट भले ही इस मामले में निर्दोष हो, और वह इस काम को नेक-नियती से कर रही हो, लेकिन राज्य का प्रबंध अगर वह अपने हाथ में लेगी, तो उसकी बदनामी अवश्य होगी, और लोग तरह-तरह की शंकाएँ करेंगे। अच्छा तो यह हो कि "चैंबर आफ़ प्रिंसेज़" को यह मामला सौंप दिया जाय। हम फिर यही निवेदन करेंगे कि सरकार सिख-जाति को असंतुष्ट होने का अवसर न दे। अकालियों को सत्याग्रह के लिये विवश करना उचित और विवेकशलिता का परिचायक न होगा। लोग कहते हैं, जब राजा साहब को मोटर पर बिठाकर देहरादून को ले गए, तब उनकी आँखों में आँसू भरे हुए थे। उनकी हालत इस समय पागलों की-सी हो रही है। बाल नोचते हैं, हाथ पटकते हैं। अगर ये बातें सच हैं—और लोग इन्हें सच ही मानते हैं, और मानेंगे—तो सरकार का यह कहना कि वह ख़ुशी से गद्दी छोड़ रहे हैं, पबलिक के हृदय में स्थान नहीं पा सकेगा। नाभा-नरेश ने जिन शर्तों पर गद्दी छोड़ी है, वे निम्न-लिखित हैं—

नाभा-नरेश

(१) मेरा ख़िताब और सलामी उसी तरह क़ायम रहेगा, पर अपनी रियासत का शासन-भार मैं भारत-सरकार को सौंप दूँगा।

(२) मैं आगे रियासत के बाहर रहूँगा, और सरकार की आज्ञा लेकर धार्मिक कार्यों के लिये रियासत में आ सकूँगा।

(३) जब मेरा लड़का बालिग़ हो जायगा, तो भारत-सरकार उसे गद्दी दे देगी। उस समय तक भारत-सरकार मेरे लड़के की शिक्षा का भार लेगी।

महाराजा पटियाला

(४) पटियाला-रियासत को हर्जाने के तौर पर पचास लाख रुपए देने में मुझे कोई उज़्र नहीं है, पर उचित रक़म भारत-सरकार ही ठीक करेगी। यह रक़म रियासत के ख़ज़ाने से ली जायगी, क्योंकि उसे मैंने काढ़ा नहीं है।

(५) मेरी प्रार्थना है कि मुझे उम्र-भर तीन लाख रुपया सालाना खाने-ख़र्चने को रियासत से मिलता रहे। मैं रियासत के कामों में दख़ल नहीं दूँगा।

(६) जो हुज़ूर वायसराय साहब इस प्रबंध को मंज़ूर कर लें, तो पिछली शिकायतें रद्द कर इसे आख़िरी फ़ैसला समझें।

भारत-सरकार ने जो तीन शर्तें और बढ़ाई हैं, उनमें से दो ये हैं—

(१) मैं सदा नमकहलाल राजभक्त (?) रहूँगा।

(२) मैं पंजाब में नहीं आ सकूँगा।

६ जुलाई को इन शर्तों की मंज़ूरी भेजी गई और उसे लौटाने के लिये महाराजा ने भरसक कोशिश की, पर खेद है कि अहलकारों के सामने इस समय नाम-मात्र के महाराजा बेबस हैं।

हमें आशा है, लार्ड रीडिंग की सरकार प्रजा के मत को इस मामले में उपेक्षा की दृष्टि से न देखेगी; और, नाभा-नरेश को, यदि वे सचमुच दोषी ही हैं, इतना बड़ा कठोर दंड देने की व्यवस्था नहीं करेगी। उसे सोच लेना चाहिए कि सिख-जाति ने ब्रिटन का बड़ा उपकार किया है। उसे असंतुष्ट करना धर्म, नीति, राजनीति या पालिसी की दृष्टि से कदापि ठीक न होगा।

× × ×

२५. वंगीय साहित्य-सम्मेलन

अभी हाल में, नैहाटी में, चतुर्दश वंगीय साहित्य-सम्मेलन बड़ी धूम-धाम से हो गया है। उसके एक सप्ताह पहले काँठालपाड़ा में, जो कि नैहाटी से बहुत ही निकट है, एक सप्ताह पहले, वंकिम-साहित्य-सम्मेलन भी हुआ है। यह दो-दो सम्मेलनों का इस तरह पास-ही-पास एक ही पक्ष के भीतर होना उसी दलबंदी का फल है, जिसने भारत को कई शताब्दियों से तबाह कर रक्खा है। दोनों ही सम्मेलनों में यथेष्ट साहित्यिक पधारे थे। किंतु वंकिम-साहित्य-सम्मेलन, केवल प्रतिद्वंद्विता के कारण होने से, बहुत जल्दी में किया गया था। इस कारण उसमें बाहर के बंगाली साहित्यिक कम पहुँचे थे। कलकत्ते के भी कुछ

ही साहित्य-सेवी पहुँच सके थे। मगर दूसरे सम्मेलन में कलकत्ते के और बाहर के यथेष्ट प्रतिनिधि, साहित्य-सेवी, संपादक और दर्शक उपस्थित हुए थे। बंकिम-सम्मेलन के मूल-सभापति हुए थे बाबू विपिनचंद्रपाल। चतुर्दश वंगीय साहित्य-सम्मेलन के मूल सभापति हुए थे बर्दवान के महाराज सर विजयचंद महताब बहादुर। बंकिम-साहित्य-सम्मेलन के शाखा-सभापतियों में इतिहास-शाखा के श्रीरामाप्रसादचंद्र, दर्शन-शाखा के महोमहोपाध्याय प्रमथनाथ तर्क-भूषण, और साहित्य-शाखा के क्षीरोदप्रसाद विद्या-विनोद सभापति थे। इसी तरह चतुर्दश वंगीय साहित्य-सम्मेलन की दर्शन-शाखा के श्रीयुत पंडित पंचानन तर्क-रत्न, साहित्य-शाखा के श्रीयुत अमृतलाल वसु, इतिहास-शाखा के कुमार डॉक्टर नरेंद्रनाथ लाटा और विज्ञान-शाखा के श्रीयुत जगदानंदराय सभापति हुए थे। दोनों सम्मेलन अच्छे हुए—विशेषकर चतुर्दश वंगीय साहित्य-सम्मेलन। पंचदश वंगीय साहित्य-सम्मेलन हुगली-ज़िले के राधापुर-ग्राम में होगा। यह ग्राम सुप्रसिद्ध राजा राममोहनराय की जन्म-भूमि है।

चतुर्दश वंगीय साहित्य-सम्मेलन के मूल-सभापति राजा साहब ने वंग-भाषा-प्रेमियों के आगे एक अच्छा प्रस्ताव रक्खा है। वह उन्हीं के शब्दों में यहाँ उद्धृत किया जाता है—

"आप लोगों के विचार के लिये एक निवेदन उपस्थित करना मैं बहुत ज़रूरी समझता हूँ। ××× इस तरह के वार्षिक सम्मेलन को सजीव बनाए रखना ही अगर हम लोगों को अभीष्ट हो, बँगला-भाषा में बंगाली हृदय को सजग रखना ही अगर हमारा ध्येय हो, तो जिसमें उसकी उत्तरोत्तर उन्नति की जा सके, वही कर्तव्य है। किंतु ऐसा करने का यही उपाय नहीं है कि हर वार्षिक अधिवेशन में केवल सुंदर प्रबंध आदि पढ़-सुनकर, घर लौटकर, केवल सम्मेलन की कार्यवाही छपाकर साल-भर तक चुप-चाप निश्चेष्ट बैठे रहें। ऐसा करने से काम नहीं चलने का। बँगला-भाषा और बँगला-साहित्य को दर-असल ऊँचे आसन पर बिठाने के लिये हमें साहित्य-क्षेत्र के शिरोमणि विद्वानों को धन आदि से सम्मानित करते हुए उनकी ओर सर्व-साधारण का ध्यान आकृष्ट करने की राह खोजनी और निश्चित करनी होगी। बर्दवान में जब अष्टम साहित्य-सम्मेलन हुआ था, तब स्वागत-कारिणी के सभापति की हैसियत से मैंने जो वक्तृता दी थी, उसमें इस ओर इशारा था। आज आप लोगों की अनुमति लेकर इसी विषय को कुछ विस्तार के साथ मैं कहना चाहता हूँ। मेरी आज की इस वक्तृता का ख़ास मतलब वही है। मैं चाहता हूँ कि हमारे इस ग़रीब देश में, साहित्यिक लोगों का उत्साह बढ़ाने के लिये, Noble Prize की तरह किसी पुरस्कार के देने की व्यवस्था संभव न होने पर भी, हर साल कम-से कम ४०००) रुपए का कोई पुरस्कार निर्दिष्ट करना उतना कठिन न होगा। यह पुरस्कार प्रयोजन के अनुसार चार या उससे अधिक भागों में बाँटा जा सकता है। जैसे साहित्य, विज्ञान, इतिहास, दर्शन आदि। हर साल जब सम्मेलन हो, तब एक कार्य-कारिणी समिति सम्मेलन की ओर से इस पुरस्कार के लिये बनाई जाय, और उस साल के मूल-सभापति, शाखा-सभापतिगण, वंगीय साहित्य-सम्मेलन के संचालन के सभापति और मंत्री उस समिति के मेंबर हों सकें। साल-भर में बँगला-भाषा में जो ग्रंथ प्रकाशित हों, उनमें से छाँटकर सर्व-श्रेष्ठ ग्रंथों पर ये चार पुरस्कार (एक-एक हज़ार के) दिए जायँ, और किसे पुरस्कार मिलना चाहिए, इसका निर्णय वह समिति करे। पुरस्कार किसे मिलेगा, इसकी घोषणा सम्मेलन के प्रधान सभापति दूसरे दिन कर दें।"

यही राजा साहब का प्रस्ताव है, और बहुत अच्छा है। राष्ट्र-भाषा हिंदी के सेवकों ने सर्व-प्रथम जो आदर्श उपस्थित किया है, उसका अनुसरण अन्य प्रांतिक भाषाएँ भी करें, तो बड़ी अच्छी बात है। हमारी राय में यदि राजा साहब ही हर साल इतने रुपए ख़र्च कर डालें, तो उनके लिये कोई बड़ी बात नहीं है। उनकी कीर्ति अमर हो जायगी। आशा है, राजा साहब यह भार चंदे पर न छोड़कर अपने ही ऊपर ले लेंगे।

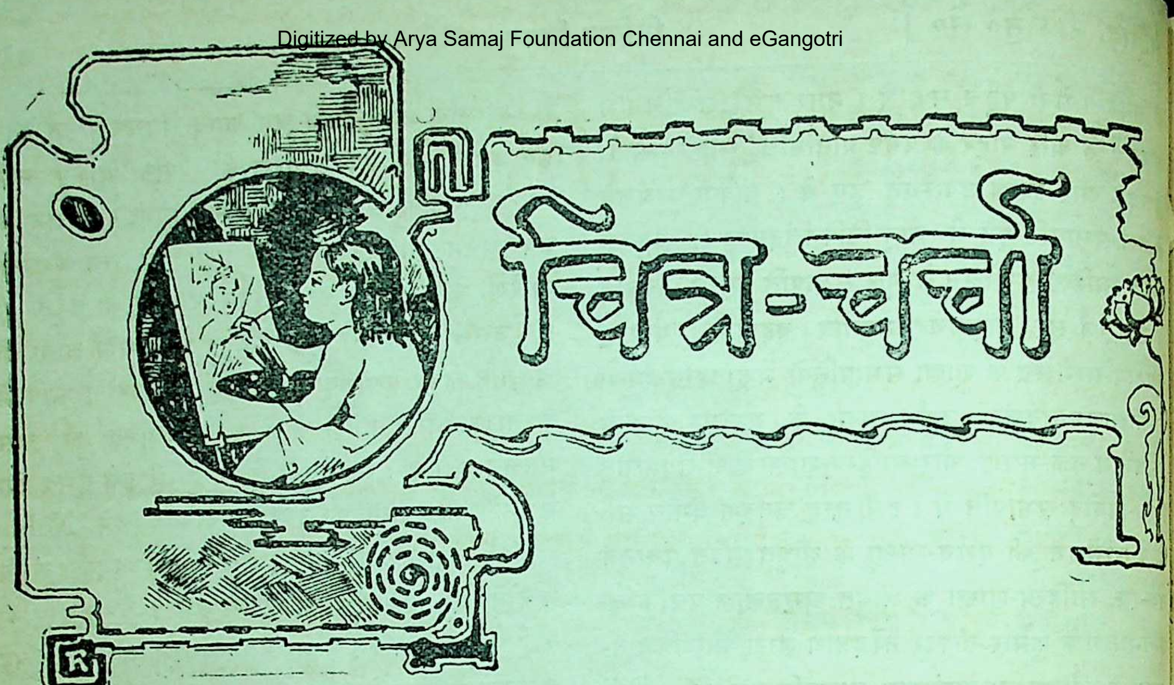

चित्र-चर्चा

१. रंगिन चित्र

पहले रंगीन चित्र में कुशल चित्रकार ने, जो अपनी चित्रण-कला की बदौलत भारत तथा इँगलैंड में अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुके हैं, अलिफ़लैला के सिंदबाद जहाज़ी की किसी यात्रा का एक सुंदर दृश्य चित्रित किया है। यह चित्र हमें Indian Society of Oriental Art की कृपा से प्राप्त हुआ है। एतदर्थ सोसाइटी को धन्यवाद।

दूसरा रंगीन चित्र कृष्ण-यशोदा का है। यशोदा रानी नंद-नंदन श्रीकृष्णचंद्रजी को गोद में लिए दुलरा रही हैं। माधुरी के लब्ध-प्रतिष्ठ चित्रकार खातूजी ने इस भाव का चित्रांकण वास्तव में बड़ी खूबी के साथ किया है।

तीसरा रंगीन चित्र सागरिका का है। इंद्रजालिक (बाज़ीगर) महल में आग लगने का तमाशा दिखाता है। रानी वासवदत्ता सागरिका (जिसे उसने क़ैद कर रक्खा था) को छुड़ाने का इसलिये आग्रह करती है कि आग में कहीं वह भी न जल जाय। राजा उदयन यह ख़बर पाकर महल की ओर दौड़ जाते हैं। रानी भी पीछे जाती है। उनके पीछे वसुभूति, जो सागरिका के साथ उसके पिता के यहाँ से इसलिये आया था कि उदयन को आकर रत्नावली (सागरिका) अर्पण कर दे; क्योंकि सिद्ध ने कहा था कि यह जिसकी स्त्री होगी, वह चक्रवर्ती होगा, और इसी से वासवदत्ता के जल मरने की झूठी ख़बर उड़ाकर, यौगंधरायण मंत्री ने, अपने स्वामी उदयन के लिये, उसे माँगा था। जहाज़ सागर में टूट गया। एक सौदागर ने सागरिका की रक्षा की। वसुभूति सागरिका को पहचानता है। उसके मुख सागरिका को अपनी बहन जानकर रानी वासवदत्ता उ अपने पति को अर्पण कर देती और उसका बंधन खो देती है। उसी समय का यह चित्र है।

२. व्यंग्य-चित्र

पहला व्यंग्य-चित्र उन महापुरुषों (!) पर है, ऊपर से बड़े साधु, कर्मनिष्ठ तथा सच्चरित्र देख पड़ते परंतु जिनके आचरण नितांत पतित होते हैं। ऐसे व्यक्तियों से समाज को महान् क्षति पहुँचती है। देखिए मस्तक में त्रिपुंड धारण किए हुए, और दाहने हाथ गोमुखी के भीतर, माला की गुरिया सरकाते हुए यह महाशय शराब की बोतल बग़ल में दबाए कितनी प्रसन्नता साथ चले जा रहे हैं! चित्रण अच्छा हुआ है। केवल मुखाकृति से ही बोतलानंद महाशय के मन के सम भाव छल-कपट, शराब पीने की उत्सुकता और उस पश्चात् क्षणिक आनंदानुभव आदि व्यक्त हो जाते हैं।

दूसरा व्यंग्य-चित्र इस युग के मूर्ख पति और कर्क-पत्नियों पर है। जैसा पति, वैसी पत्नी, दोनों अपनी-अप आकृतियों से अपना परिचय दे रहे हैं। परंतु स्त्री ब विकट है, क्रोध के आवेश में आकर, पति की मान-प्रति सब ताक़ में रखकर, बेलना लेकर पति को मारने धमकी दे रही है, और पति महाशय भी उसके रोब ऐसे आ गए हैं कि सोलहो आने कापुरुष बन गए हैं!

शौक़ीनों के नाम खुली चिट्ठी

प्रायः शौक़ीन लोग स्वदेशी कपड़े को यह कहकर नहीं ख़रीदते हैं कि स्वदेशी कपड़ा अच्छा नहीं मिलता और दाम भी ज़्यादा लगते हैं । उन्हीं महाशयों के लिये ख़र्च व कोशिश से विलायती कपड़े को मज़बूती व सुंदरता में मात करनेवाला तिस पर भी क़ीमत सस्ता शुद्ध स्वदेशी कपड़ा तैयार कराया है और ज़ोर के साथ शौक़ीनों से अपील करते हैं कि एक बार हमारे रेशमी व सूती कपड़े को देश-कल्याण व रुपए की बचत के लिये मँगा देखिए । फिर तो आप सदा के लिये विदेशी कपड़ा छोड़कर स्वदेशी ही पहिनेंगे । हम सचाई के लिये गारंटी देते हैं कि जो माल आपको न पसंद हो उसे वापस भेजकर रुपया मँगा लीजिए ।

प्योर रेशमी सिल्क

(सूट व कोट का सर्वोत्तम कपड़ा)

यह सिल्क विलायती भागलपुरी बनारसी रेशम से मज़बूत मुलायम चमकीला टिकाऊ देखने में मनोहर जिसको राजा रईस ताल्लुक़ेदार ऑफ़िसर वकील प्रोफ़ेसर मास्टर तथा स्टुडेंट इत्यादि से लेकर मामूली मनुष्य तक पहिन सके इसलिये इसकी क़ीमत भी मज़बूती के लिहाज से बहुत ही कम रक्खी है। एक कपड़ा मुद्दत तक काम देता है। मू० सिर्फ़ सात गज़ के थान का २८), बढ़िया का ३२) रु० ।

अंडी सिल्क (रेशमी खद्दर)

यह अंडी जगत्प्रसिद्ध आसाम के चर्खे से कते रेशम से तैयार कराई है । देखने में सुंदर अत्यंत सस्ती मुलायम जिसकी मज़बूती से मुक़ाबला करनेवाला दुनिया में आज तक कोई रेशम बना ही नहीं जिसका बना कपड़ा १० वर्ष तक तो ख़राब ही नहीं होता तिस पर ७ गज़ के थान का दाम १२) से १५)

स्वदेशी ढाका

(रेशमी धारी के डोरिया)

नई-नई फ़ैशन सुंदर धारी कपड़े में महीन व चिकना विलायती को शर्मिंदा करनेवाला फ़ैंसी डोरिया ढाका की पुरानी कारीगरी की याद दिलाता है फिर भी मूल्य में सस्ता टिकाऊ होने से हरएक आदमी ख़रीद सकता है। मूल्य १२ गज़ के थान का ११) रु० से १५) रु० तक ।

स्वदेशी मलमल

हमारी मलमल सुंदर महीन चिकनी होते हुए भी विलायती से दूनी मज़बूत और मूल्य में सस्ती है । गरमियों में कुरता चादरा डुपट्टा आदि के बड़े काम की है । मूल्य १२ गज़ के थान का ५) से ७) रु०

ज़नानी साड़ियाँ व डुपट्टे

स्वदेशी संसार में श्रीमतियों के लिये साड़ी डुपट्टों का अभाव देखकर व खद्दर पहिनना असंभव समझकर हमने सुंदर रंगीन धूपछाँह अलपाका की तर्ज़ पर सादा व पाँचापाड़ धारीदार व प्लेन आदि कई डिज़ाइन की साड़ियाँ तैयार की हैं। मूल्य १० गज़वाली साड़ी के जोड़े का ६) रु० से ८) रुपए तक । डुपट्टे ३ गज़ के १॥ गज़ अर्ज़ के २) रु० से ३॥) रुपए तक ।

मिलने का पता—

मैनेजर, दि स्वदेशी क्लाथ सप्लाई स्टोर, नं० ५, इटावा

हिंदी में अपूर्व ग्रंथों का अवतार।

अंतस्तल

बिलकुल नए ढंग की रचना । आयुर्वेदाचार्य पं० चतुरसेन शास्त्री ने इस मौलिक ग्रंथ में सुख, दुःख, स्मृति, भय, क्रोध, लोभ, निराशा, आशा, घृणा, प्यार, लज्जा, अतृप्ति, आदि मानसिक भावों को एक अनोखे ढंग से चित्रित किया है । इसकी भूमिका सुप्रसिद्ध समालोचक पं० पद्मसिंहजी शर्मा ने लिखी है । वे लिखते हैं:—"अंतस्तल एक सच्चे जादू की पिटारी है, मानस भावों के चित्रों का विचित्र एलबम है, अंदरूनी बायसकोप की चलती, फिरती—जीती-जागती—तसवीरें हैं; जिनके दृश्य दिल की आँखों से ही देखे जा सकते हैं । × × × × × × × काग़ज़ पै रख दिया है कलेजा निकाल के × × अंतस्तल के चतुर चितेरे ने बड़े कौशल से बड़ी सफ़ाई से मानसिक भावों के विविध रंग-रूप के विचित्र चित्र खींचकर कमाल का काम किया है । मैं उन्हें इस सफलता पर बधाई देता हूँ । अंतस्तल हिंदी में निःसंदेह अपने ढंग की एक नई रचना है । यह पाठक और लेखक दोनों के काम की चीज़ है । समझदार पाठकों के लिये यह शिक्षाप्रद मनोविनोद की सामग्री है और लेखकों के लिये भाव-चित्रण के दिग्दर्शन का बढ़िया साधन । ×××" इससे पाठक समझ सकेंगे कि यह ग्रंथ कितना अच्छा है । मू० ॥=)

अरबी काव्य दर्शन

हिंदी में अरबी के साहित्य का परिचय करानेवाला यह सबसे पहला ग्रंथ है । अरबी बहुत ही प्रौढ़ भाषा है । बड़े-बड़े धुरंधर लेखकों ने इसके साहित्य को पुष्ट किया है । अपने मुसलमान भाइयों के प्राचीन साहित्य को जानने के लिये हमें इसको अवश्य पढ़ना चाहिए । अरबी भाषा के पंडित बाबू महेशप्रसादजी साधु मौलवी फ़ाज़िल ने इसे लिखा है । अरबी कविता का इतिहास, उसकी उत्पत्ति और क्रम-विकाश, उसकी प्रकृति और उसके ख़ास-ख़ास कवियों की विविध प्रकार की रचनाओं का अनुवाद इसमें दिया गया है । नीति, वीरता, शृंगार आदि सभी विषयों के पद्य हैं और वे बड़े ही मार्मिक हैं । सहृदय सुकवि जन उन्हें पढ़कर बहुत प्रसन्न होंगे । मू० १)

साहित्य-मीमांसा

आलोचनात्मक साहित्य में यह ग्रंथ अपूर्व और अद्वितीय है । बँगला के एक सुप्रसिद्ध ग्रंथ का यह बढ़िया अनुवाद है । इसे पढ़कर पाठक आर्य साहित्य की महत्ता, उसकी विशेषताएँ और उसके सौंदर्य को जान सकेंगे । और साथ ही पाश्चात्य साहित्य से उसकी तुलना भी कर सकेंगे । साहित्य किसे कहते हैं, आर्य साहित्य की प्रकृति, आर्य और अँगरेज़ी साहित्य, शेक्सपियर और भाव-प्रकृति, प्राच्य और पाश्चात्य कवियों का सृष्टिभेद, आर्य साहित्य में सृष्टि की संपूर्णता, साहित्य में रक्तपात, रंग-भूमि में रक्तपात-दर्शन से अनिष्ट, हिंदू आदर्श, पारसी कंपनियाँ और थिएटर, साहित्य में देवत्व, पशुत्व, मनुष्यत्व, और वीरत्व आदि अनेक अध्यायों और प्रकरणों में यह ग्रंथ विभक्त है । इस विषय पर इतना अच्छा और पठनीय ग्रंथ यह पहला ही है । लेखकों, कवियों और विद्वानों को इसकी एक-एक प्रति अवश्य ख़रीद लेना चाहिए । मू० १।=)

कालिदास और भवभूति

महाकवि कालिदास के शाकुंतल और भवभूति के उत्तररामचरित नाटकों की तुलना-मूलक अपूर्व और अद्भुत समालोचना । इसके लेखक सुप्रसिद्ध नाटक-लेखक श्रीद्विजेंद्रलाल राय हैं । संस्कृत के विद्वानों और विद्यार्थियों के समान हिंदी के लेखक और कवि भी इससे बहुत लाभ उठा सकते हैं । उक्त दोनों ग्रंथों की अब तक इससे अच्छी निष्पक्ष समालोचना शायद ही किसी ने की होगी। मू० १।)

द्विजेंद्र नाटकावली

वर्तमान समय के सर्व-श्रेष्ठ नाटककार के उच्च श्रेणी के नीचे लिखे नाटक अवश्य पढ़िए ।

दुर्गादास	१=)	शाहजहाँ	१)
मेवाड़पतन	।॥=)	उस पार	१=)
नूरजहाँ	१=)	भारतरमणी	।॥=)
राणा प्रताप	१।)	सीता	॥-)
सिंहलविजय	१=)	पाषाणी	॥)
चंद्रगुप्त	१)	भीष्म	१।)

नोट—अन्य पुस्तकों का परिचय पाने के लिये सूचीपत्र मँगाइए ।

मैनेजर, **हिंदी-ग्रंथ-रत्नाकर-कार्यालय**, हीराबाग़, गिरगाँव, **बंबई.**

भारत-सरकार से रजिस्ट्री किया हुआ

५७००० एजेंटों द्वारा बिकना दवा की सफलता का सबसे अच्छा प्रमाण है।

सुधासिन्धु

(बिना अनुपान की दवा)

यह एक स्वादिष्ठ और सुगंधित दवा है, जिसके सेवन करने से कफ, खाँसी, हैज़ा, दमा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट का दर्द, बालकों के हरे-पीले दस्त, इनफ़्लुएंज़ा इत्यादि रोगों को शर्तिया फ़ायदा होता है। मूल्य ॥), डा०-ख़० १ से २ तक ।≈)

दद्रुगजकेसरी

(दाद की दवा)

बिना जलन और तकलीफ़ के दाद को २४ घंटे में आराम करनेवाली सिर्फ़ यही एक दवा है। मूल्य फ़ी शीशी ।) डा०-ख़० १ से २ तक ।≶), १२ लेने से २।) में घर बैठे देंगे।

बालसुधा

दुबले-पतले और सदैव रोगी रहनेवाले बच्चों का मोटा और तंदुरुस्त बनाना हो, तो इस मीठी दवा को मँगाकर पिलाइए। बच्चे इसे खुशी से पीते हैं। दाम फ़ी शीशी ।॥), डाक-ख़र्च ।≶)

पूरा हाल जानने के लिये बड़ा सूचीपत्र मँगाकर देखिए। मुफ़्त मिलेगा।

पता—सुख-संचारक कंपनी, मथुरा

परमपूजनीय श्रीमायानंद चैतन्य-कृत

भगवद्गीतोपनिषद् !

यह भगवद्गीता की अपूर्व 'समश्लोकी' टीका नूतन प्रकाशित हुई है। इसमें चातुर्वर्ण्य, वर्णसंकर, गुण-परिवर्तन इत्यादि रूप कर्म के गूढ़ रहस्यमय सिद्धांतों का जो उत्तम स्पष्टीकरण किया गया है वह नितांत मौलिक और अभूतपूर्व ही है। ग्रंथकार की नवविचार-प्रचुर प्रतिभाशाली विचार-प्रणाली गीता पर अश्रुतपूर्व प्रकाश डालती है। यह पुस्तक पढ़ने से ही ज्ञात होगा। हिंदी-साहित्य-भंडार में इस प्रकार की बहु-मूल्य टीका अभी तक विद्यमान नहीं है ! क्राउन सोलह-पेजी, पृष्ठ-संख्या १५०, टाइप बड़ा, छपाई सुंदर। मूल्य १=), डाक-व्यय अलग।

श्रीमायानंद चैतन्य-कृत 'दिव्यदृष्टि' के प्रेमियों को तो यह ग्रंथ अवश्यमेव पठनीय, मननीय तथा संग्रहणीय-है। बड़ा तथा नया पाँचवाँ संस्करण, मूल्य १)

यह सुप्रसिद्ध ग्रंथ लेनेवालों को 'भगवद्गीतोपनिषद्' १) में ही मिलेगा। डाक-व्यय अलग पड़ेगा।

मिलने का पता—

रामचंद्र लक्ष्मण देसाई

फ़ोटोग्राफ़र, लश्कर, ग्वालियर

व्यापारियों के हित की बात

हमारे यहाँ से देशी, जापानी, और अँगरेज़ी सूत हर प्रकार का जैसे ऊनी, रेशमी, मरसेराइज़ और मोज़े इत्यादि बीनने का सामान जैसे हील्ड्स (Healds) रीड्स (Reeds) पिकर्स (Pickers) और शटर्स (Shutters) इत्यादि बहुत बढ़िया और सस्ते मूल्य में मिलते हैं।

हिंदी और अँगरेज़ी में पत्र-व्यवहार करो।

पता:—

रत्तीलाल, भीखा भाई

पो० गिरगाँव, बंबई

तुलसी-ग्रंथावली

गो० तुलसीदासजी की त्रिशत-वार्षिक जयंती के, जो श्रावण शुक्ला ७, १९८० (१८ अगस्त १९२३) को होगी, उपलक्ष में काशी नागरीप्रचारिणी सभा ने उनके समस्त ग्रंथों का संग्रह छापकर प्रकाशित करना निश्चित किया है। इस ग्रंथावली के पहले खंड में रामचरितमानस, दूसरे खंड में शेष ११ ग्रंथ अर्थात् दोहावली, गीतावली, विनयपत्रिका, कवित्त रामायण, रामाज्ञा, रामलला नहछू, बरवै रामायण, जानकीमंगल, वैराग्यसंदीपनी, पार्वतीमंगल और कृष्णावली; तथा तीसरे खंड में गो० तुलसीदास के संबंध के लेख तथा उनका चित्र रहेगा। ये तीनों भाग त्रिशत-वार्षिक जयंती के पूर्व छपकर तैयार हो जायँगे और ग्राहकों के पास अगस्त १९२३ के पहले सप्ताह में भेज दिए जायँगे। अलग-अलग खंडों का मूल्य प्रति खंड २॥) रु० होगा। जो लोग तीनों खंड एकसाथ लेंगे, उनसे इनका मूल्य ६) रु० लिया जायगा। गो० तुलसीदासजी का एक रंगीन चित्र, जो १० इंच लंबा और ८ इंच चौड़ा है और जो १४ इंच लंबे तथा ११ इंच चौड़े कागज़ पर छापा गया है, प्रकाशित हो गया है। इसका मूल्य ।) है, पर जो लोग इस चित्र की १०० या उससे अधिक प्रतियाँ मँगवाएँगे उन्हें वह २०) सैकड़े में दिया जायगा। चित्रों के अलग-अलग मँगवाने में डाक-व्यय बहुत अधिक पड़ेगा अतएव यह उचित होगा कि भिन्न-भिन्न स्थानों से कुछ व्यक्ति अधिक प्रतियाँ मँगवाकर अपने स्थान के लोगों को उन्हें ।) प्रति में लेने का अवसर दें।

नवीन पुस्तकें

ज्ञानयोग—दूसरा भाग	मूल्य	२॥)
संक्षिप्त हिंदी-व्याकरण	,,	।।।=)
अशोक की धर्मलिपियाँ—पहला खंड	,,	३)

शीघ्र प्रकाशित होनेवाली पुस्तकें

(१) हुमायूँनामा	मूल्य	१॥)
(२) सूरसुधा	,,	१)
(३) कर्तव्य	,,	१)

मंत्री, नागरीप्रचारिणी सभा, बनारस सिटी

समन्वय

उच्च कोटि का धार्मिक मासिक पत्र।

दर्शन, समाज, शिक्षा आदि संबंधी उत्तमोत्तम लेखों से भी विभूषित।

"सरस्वती" की राय—

"छपाई सुंदर है। वार्षिक मूल्य ३) है। इसका विषय आध्यात्मिक है, पर विषयों की विवेचना बड़ी सुंदर रीति से की जाती है।......हमें विश्वास है कि हिंदी-साहित्य के प्रेमी इस पत्रिका का उचित आदर करेंगे"—

देखिए "प्रभा" क्या कहती है—

"वर्तमान भारत के आचार्य स्वामी विवेकानंद और उनके गुरुदेव के उपदेशामृत से लाभ उठाने के लिये समन्वय अवश्य पढ़ना चाहिए। पत्र का संपादन अच्छा होता है और उसके लेख आत्मा को ऊँचा उठानेवाले होते हैं। हमें आशा है कि हिंदी-भाषा-भाषी समन्वय को अवश्य अपनावेंगे।"

माधुरी—

"पत्र में बहुत सुंदर सार-गर्भ लेख रहते हैं। सामयिकता की भी मात्रा यथेष्ट होती है। धार्मिक ज्ञानोपार्जन का यह एक सुलभ साधन है। इस विषय का हिंदी में यही एक पत्र है, यह कहना भी अनुचित न होगा।......पत्र का संपादन भी योग्यता के साथ" इ०।

ग़रीब छात्रों और निःशुल्क वाचनालयों के लिये २) अग्रिम रुपया भेजकर ग्राहक बनिए या वी० पी० भेजने की आज्ञा आज ही लिख भेजिए।

व्यवस्थापक "समन्वय"

नं० २८ कालेज स्ट्रीट मार्केट, कलकत्ता।

वैद्यक की शिक्षा

सर्व-साधारण को विदित हो कि नवलकिशोर-विद्यालय में व्याकरण आदि के साथ-साथ वैद्यक की पढ़ाई का भी पूर्ण प्रबंध हो गया है। विद्यालय के साथ एक छात्रालय भी है। साधारण परिचर्या के लिये भृत्य भी नियुक्त है। अनुपपन्न (ग़रीब) विद्यार्थियों को ४) या ५) छात्र-वृत्ति भी दी जाती है जो विद्यार्थी यहाँ आना चाहें, जुलाई में आवें।

निवेदक—

मैनेजर परिहर

नवलकिशोर-प्रेस

लखनऊ

पीयूष सिन्धु

कफ, खांसी,
दमा, हैजा, पेचिस,
पेटदर्द, संग्रहणी, केहोना
वच्चोंके दस्त, इनफ्लुएंजा
आदि रोगोंकी स्वादिष्ट
विना अनोपान कीदवा
मू० ।।) दरजन ४)

सुन्दरशृंगार महौषधालय मथुरा

दाद का काल

विना किसी जलन और कष्ट के पुराने-से-पुराने और हर तरह के दाद को सिर्फ़ २४ घंटे में जड़ से खोनेवाली दाद की शर्तिया दवा। मू० फ़ी शीशी ।) आना डा०-ख़० १ से ४ तक ।।) एक दर्जन एकसाथ लेने से घर बैठे १।।।-)

बाल-पुष्ट सीरप

पतले, दुबले और कमज़ोर बच्चों के सब रोग दूर करके उनको ताक़तवर और तंदुरुस्त बनानेवाली मीठी दवा। मू० फ़ी शीशी ।।) आ०, डा०-ख़० १ से ३ तक ।।) आ०, एक दर्जन एकसाथ लेने से घर बैठे ४।।≡)

श्रीमान् भगवतीप्रसादजी त्रिपाठी म्युनिसिपल कमिश्नर रायबरेली से लिखते हैं—"मैं आपका बनाया "बाल-पुष्ट सीरप" ५ वर्ष से प्रयोग में लाता हूँ। इसके कारण हमारा तमाम व्यय जो हकीमों और डॉक्टरों में हुआ करता था, बंद हो गया। बेशक इससे लड़के तंदुरुस्त रहते हैं और बच्चों के दाँत निकलने के लिये यह एक रामबाण है। कृपा कर ३ शीशी "बाल-पुष्ट सीरप" शीघ्र रवाना कीजिए।"

मिलने का ठिकाना—

सुंदर श्रृंगार महौषधालय,

क (ब्रांच) मथुरा।

पं० ठाकुरदत्त शर्मा वैद्य के आविष्कृत चार रत्न ॥

रजिस्टर्ड **अमृतधारा** रजिस्टर्ड

जगत प्रसिद्ध यह एक ही औषधि प्रायः सब रोगों को खाने या लगाने से दूर करती है। ज्वर, खांसी, नज़ला, ज़ुकाम, इन्फ्ल्यूएंजा, प्लेग, न्यूमोनिया, हैज़ा, अजीर्ण, सर्प बिच्छू आदि के डंक, वात पित्त कफ़ के रोग, शिर कान नाक दान्त पेट जोड़ चोटादि की पीडायें सर्व तुरन्त नष्ट होती हैं। मूल्य १) अर्धशी० ।) नमूना ।)

अमृतधारा मरहम

सब प्रकार के घाव, चोट, रगड़, फुन्सी, दाद, चंबल, एगज़ीमा, खाज, छपाकी, छाले, हाथ पांव का फटना, कुत्ते के काटे के घाव, अर्श, मस्से, मच्छर भिड़ आदि के डंक, आग ऊष्ण जल वा तेज़ाब आदि से जलना सब इस से दूर हो जाते हैं। मू० ।)
[तीनों चीज़ों में "अमृतधारा" सम्मिलित की गई है]

अ मृ त धा रा

अ मृ त धा रा

अमृतधारा सोप

यह अद्वितीय है क्योंकि यह साबुन रोज़ के बरतने के वास्ते अति उत्तम है, और साथ ही यह चर्मज रोगों को भी गुणकारी है। पित्ती, खुजली, दाद, चम्बल, मुखझाई, मुहासा आदि शीघ्र दूर करता है मैल भी दूसरे साबों से अधिक उतारता है। सुगंधि भी बड़ी अच्छी है। मूल्य ॥।=) डिब्बा ३ टिकिया ।=)
सविस्तर वर्णन के वास्ते "अमृत" पुस्तक मुफ़्त मंगायें।

अमृतधारा की मीठी टिकियां

कई मनुष्यों (विशेषकर बालकों) के लिये तो औषधि खाना कठिन होता है इसी वास्ते यह मीठी टिकिया तैयार की गई है। जो कि मिठाई के तौर पर बालक तक भी बड़े आनन्द से खाते हैं। हर प्रकार की विलायती गोलियों और टिकियों से अधिक लाभकारी हैं। बालकों को शूल दस्त अजीर्ण ज्वर खांसी पसली आदि रोगों में दे सकते हैं मूल्य १०० टिकिया केवल ।)

पताः—अमृतधारा. लाहौर.

शुद्ध और शास्त्रोक्त

आयुर्वेदिक औषधियों का संग्रह

हर प्रकार की दवाइयाँ

सस्ते दामों में

चुनी हुई अद्भुत औषधियाँ

स्वर्णघटित मकरध्वज १६) तो०, स्वर्ण वसंतमालती ८) तो०, चंद्रप्रभावटी २) तो०, च्यवनप्रास ८) सेर, शुद्ध शिलाजीत १॥) तो० और महानारायण तैल १६) सेर।

मलेरिया की गोलियाँ ॥) में १००

हज़ारों रोगियों में परीक्षित अनेक प्रशंसापत्र-प्राप्त यह गोलियाँ मलेरिया ज्वर, और जाड़ा-बुखार में जादू का-सा असर दिखाती हैं। ऐसी अव्यर्थ औषधि यह पहली बार निकली है।

कोई भी औषधि आवश्यक हो, लिखिएः—

मारवाड़ी रिलीफ़ सोसाइटी, ७-१, जगमोहन मल्लिक लेन, कलकत्ता।

डॉक्टर एस्० के० बर्मन का

नए वर्ष संवत् १९८० का पंचांग

कई उपयोगी विषय तथा मनोहर चित्रों सहित

५०,००० पचास हज़ार छपा है और बँट रहा है

विनामूल्य वितरण

पंचांग

SKB

आज ही अपना नाम व पूरा पता लिख भेजिए, पंचांग वापसी डाक से मुफ़्त आपकी सेवा में भेजा जावेगा। बँट जाने पर हताश होना पड़ेगा।

प्लेग रोकनेवाली गोली

इसके सेवन से प्लेग के विषैले कीड़े शरीर में प्रवेश नहीं करने पाते

प्लेग के कीड़े, साँस, थूँक, मल में पहुँचकर खून में विकार पैदा करते हैं। यदि तुरंत इलाज न किया जावे तो खून में असर पहुँच जाने पर रोगी का बचना कठिन हो जाता है। इसलिये जहाँ-जहाँ प्लेग की बीमारी हो वहाँवालों को "प्लेग रोकनेवाली" गोली मँगा रखना चाहिए। इसका असर पहुँचते ही प्लेग के कीड़े भागते हैं। समय रहते इसके सेवन से लाखों रोगी इस भयानक रोग के शिकार होते-होते बचे हैं जिस स्थान में प्लेग का डर हो प्लेग रोकनेवाली गोली रोज़ सबेरे खा लेने से फिर प्लेग होने का डर नहीं रहेगा।

मूल्य ३६ गोली ॥।) बारह आने महसूल ६ डिब्बी तक ।=) छै आने। ६० गो० डिब्बी १=) एक रु० दो आने। महसूल छै आने।

अर्क़ कपूर

(हैज़े की अनमोल दवा)

यदि आप हैज़े के भयानक प्रकोप से बचना चाहते हों और साथ ही दूसरों की भी जीवन-रक्षा करना चाहते हों तो आज ही १ शीशी अर्क़ कपूर मँगा रखिए। गर्मी के मौसम में गृहस्थ-मात्र को हैज़े से सावधान रहना चाहिए। कारण, यह रोग आधी रात के बाद ऐसे बेमौक़े हठात् होता है। जब कि इसका उचित प्रतिकार करना कठिन ही नहीं असंभव हो जाता है। अर्क़ कपूर के गुण की लाखों मनुष्य मुक्त कंठ से प्रशंसा करते हैं। समय पर यदि यह दवा दी जावे तो सौ में नब्बे रोगी अवश्य बच जाते हैं। मूल्य ।=) छै आने। महसूल ४ शीशी तक ।=) छै आने।

डा: एस, के, बर्मन ५, ६, ताराचंद दत्त स्ट्रीट, कलकत्ता। नं० १४

एजेंट—डॉक्टर गंगाराम जैटली, चौक, लखनऊ

मुफ़्त ! मुफ़्त !! मुफ़्त !!!

दमे की दवाई

चाहे कैसा पुराना दमा का रोग क्यों न हो, शर्तिया दूर हो जाता है । सिर्फ़ ।-) के टिकट डाक-व्यय के लिये आने से दवा मुफ़्त भेजी जाती है ।

पता—**बैजनाथ जैतिली,**
हटिया,
कानपुर ।

* * *

West End Watches at concession rates!

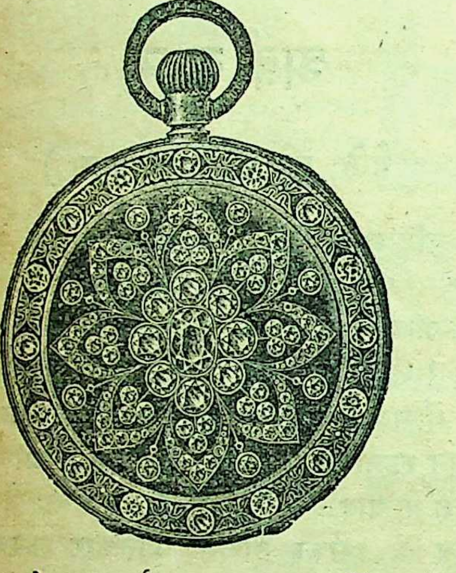

Catalogue free on application.
Please write to or call at :—

M. KAZIM & Co.,
33, Aminabad Park,
LUCKNOW.

* * *

सबसे अच्छी और सस्ती

"हरी-इमली"

की

ब्ल्यू स्याही

का नमूना मुफ़्त और भाव

मँगा देखिए ।

पताः—"हरी-इमली" ऐंडकं०
गोपीगंज
बनारस-स्टेट

(एजंटों) की ज़रूरत है नियम मँगाकर देखो

CUTCH MAGIC BALM
TRADE MARK
PRICE Re.1
Made in India
भारतवर्ष प्रस्तुत

कच्छमेजिक बाम

रजिस्टर नं० १००६

हिस्टीरिया, बायुगोला, सिर छाती पेट, क़ब्ज़ियत, कमर का दर्द, खाँसी, दमा, लक़वा, दाद, खुजली, खरी (खरजुवा) बवासीर, सिंदिया (सर्दी-गर्मी), चोट, घुमनी (चक्कर) ज़हरीले मच्छर का डंक, फ़ीलपा वग़ैरह के लिये एक मात्र दवा। ऊपर लिखी हुई बीमारियों पर आराम होने के सार्टीफ़िकेट डॉक्टर, कविराज, और बीमार लोगों के आए हुए हैं जिनको देखने की इच्छा हो तो नीचे लिखे पते पर देख सकते हैं । एक दर्जन का मूल्य ६।।।) और एक शीशी का मूल्य ।।।) वी० पी० पोस्टेज-अलग—सेवन-विधि बोतल के साथ है। दवा सर्वत्र मिलती है। एजेंटों की ज़रूरत है।

सोल एजेंट—

लीलाधर लवजी ऐंड कंपनी १० इज़रा स्ट्रीट कलकत्ता।

एजेंट-स्वामी औषधालय-नजीबाबाद।

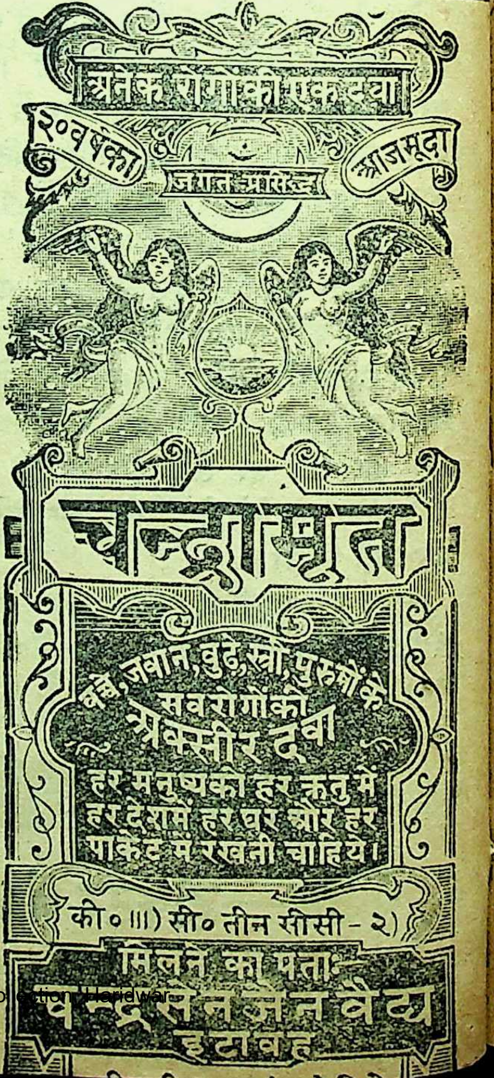
अनेक रोगों की एक दवा
२० वर्ष का
आजमूदा
जगत प्रसिद्ध
चन्द्रामृत
बच्चे, जवान, बुढ्ढे, स्त्री, पुरुषों के
सब रोगों की
अक्सीर दवा
हर मनुष्य को हर ऋतु में
हर देश में हर घर और हर
पाकेट में रखनी चाहिये।
की० ।।।) सी० तीन सीसी - २)
मिलने का पता:
चन्द्रसेन जैन वैद्य
इटावह

पुस्तकें ख़रीदने का अपूर्व सुअवसर

व्यर्थ का समय न खोइए !

हिंदी-संसार

पैसे की बचत कीजिए !!

की कहीं से भी प्रकाशित किसी भी नवीन पुस्तक

की यदि आपको कभी आवश्यकता पड़े

तो

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

को एक पत्र डाल दीजिए

अब आपको इधर-उधर—बीसों जगह—भटकने की ज़रूरत नहीं रही

क्योंकि

हिंदुस्थान-भर में हिंदी-पुस्तकों की हमारी ही सबसे बड़ी दूकान है

हमारी दूकान में राष्ट्रीय, धार्मिक, नाटक, काव्य, उपन्यास, इतिहास, प्रहसन, गल्प, विज्ञान, खेती, मनोरंजन आदि-आदि सभी विषयों की हिंदी-पुस्तकों का बहुत बड़ा संग्रह है। हमारे यहाँ २५० से भी कहीं ज़्यादा हिंदी-प्रकाशकों के ग्रंथ रहते हैं, १५० प्रकाशकों के तो हम सोल-एजेंट हैं।

माधुरी की साहित्य-सूचना

में जिन पुस्तकों की सूचना प्रकाशित होती है—वे सब पुस्तकें भी हमारे ही यहाँ मिलती हैं।

अपने ढंग का अकेला तथा नया और बड़ा सूचीपत्र छपकर तैयार है। डाक-व्यय के लिये एक आने का टिकट भेजकर मुफ़्त मँगा लीजिए।

बिलकुल नया, बड़ा सूचीपत्र डाक-व्यय के लिये -) का टिकट भेजकर मुफ़्त मँगाइए

हमारा पता नोट कर लीजिए—

संचालक—गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, २९-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

गोरस और गोवर्द्धन-शास्त्र

हिंदी-भाषा में डेअरी-विषयक ऐसा सर्वांग-पूर्ण दूसरा ग्रंथ नहीं है। यह गृहस्थों का सहायक और डेअरी-फ़ार्मों के संचालकों का सच्चा मार्ग-दर्शक है। इसके द्वारा गोशालाओं के प्रबंधक भी अपनी उन्नति आसानी से कर सकते हैं। इसमें गोशाला, चारा-दाना, गऊ की रक्षा, दूध और उसके गुण-धर्म, दही, मक्खन, घी, क्रीम, दूध की परीक्षा, पशुओं के साधारण रोग, पशुओं की उत्पत्ति का वर्णन, दूध देनेवाले पशुओं की प्रसिद्ध जातियाँ, डेअरी का हिसाब-किताब रखने की रीति आदि-आदि कई एक उपयोगी अध्यायों का वर्णन है। दूध, क्रीम-संबंधी अन्य भिन्न जातियों के जानवरों के चित्र भी दिए गए हैं। डेअरी-फ़ार्म तथा गोशाला से संबंध रखनेवाले और गऊ पालनेवाले प्रत्येक गृहस्थ को इसे मँगाकर पढ़ना चाहिए।

हिंदी-साहित्य-सम्मेलन ने अपनी मध्यमा की परीक्षा में इसे स्वीकृत किया है। मूल्य केवल २)। अधिक प्रतियाँ—इकट्ठी लेने पर—बुकसेलरों को कमीशन भी दिया जाता है।

हमारे शरीर की रचना

स्वास्थ्य की रक्षा करने के लिये, शरीर की बनावट और अंगों की रचना का जानना परमावश्यक है। इसलिये डॉ॰ त्रिलोकीनाथ वर्मा-कृत उपर्युक्त उपयोगी पुस्तक पढ़िए। इसमें सैकड़ों चित्रों की सहायता से, संपूर्ण मनुष्य-शरीर की बनावट तथा उसके सब अंगों की रचना और लक्षण का अत्यंत मनोरंजक तथा सरल भाषा में वर्णन किया गया है। यह ग्रंथ पढ़ने में उतना ही रोचक है, जितना कोई अच्छा उपन्यास। स्त्रियों को पुरुषों की अपेक्षा यह अधिक आवश्यक है कि शरीर की रचना जानें। इसमें शरीर के धातुओं की रचना पर अति उत्तम विधि से विचार किया गया है। भारतवर्ष की किसी अन्य भाषा में ऐसी पुस्तक अब तक नहीं रची गई है। इसमें लगभग समस्त पारिभाषिक शब्द हिंदी और संस्कृत में दिए हुए हैं। पुस्तक के अंत में हिंदी-पारिभाषिक शब्दों के अँगरेजी तुल्यार्थ कोष-रूप में दिए गए हैं। पुस्तक में सुंदर रंगीन और हाफ़टोन ३१२ चित्र आर्ट-पेपर पर छपे हैं। पृष्ठ-संख्या ८२६ है, और सुंदर जिल्द बँधी हुई है। मूल्य पहले भाग का २॥), दूसरे भाग का ४)

बिलकुल नया, बड़ा सूचीपत्र डाक-व्यय के लिये -) का टिकट भेजकर मुफ़्त मँगाइए

संचालक गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय, ३० अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

आर्थिक स्वावलंबन की आवश्यकता

दरिद्रता को दूर हटाने और भारतवर्ष को
स्वाधीन बनाने के लिये आर्थिक
विषयों का अध्ययन करो !

राजनीतिक स्वराज्य काफ़ी नहीं होगा

भारतीय अर्थ-शास्त्र

लेखक—

कई भारतीय ग्रंथों के रचयिता, भूतपूर्व प्रेम-संपादक और प्रेम-महाविद्यालय के अर्थ-शास्त्र-शिक्षक

श्री० भगवानदासजी केला

भारतीय अर्थ-शास्त्र-परिषद् की संपादक-समिति द्वारा संपादित इस अमूल्य ग्रंथ का प्रत्येक शिक्षा-संस्था में यथेष्ट स्वागत होना चाहिए। इस विषय की शिक्षा विना सब शिक्षा अधूरी है। पुस्तक बड़ी सजधज के साथ शीघ्र ही छपकर तैयार होगी—आधी छप चुकी है। मूल्य लगभग २॥) होगा। पर प्रकाशित होने के पहले ही जो सज्जन २) मनीआर्डर से भेजकर अपना नाम ग्राहकों में लिखा लेंगे, उन्हें इतने ही में यह पुस्तक घर-बैठे मिल जायगी। प्रेम-महाविद्यालय में पढ़ाने के लिये यह पुस्तक स्वीकृत हो चुकी है।

बिलकुल नया, बड़ा सूचीपत्र डाक-व्यय के लिये -) का टिकट भेजकर मुफ़्त मँगाइए

पता—गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय, २६-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

कुछ नई उपयोगी पुस्तकें

हिंद	(नाटक)	१)
कन्या-विक्रय	(,,)	१)
परोपकार	(,,)	१)
देश-भक्त	(,,)	।॥)
भारत-विजय	(,,)	।॥)
सत्यनारायण	(,,)	१।)
सम्राट् परीक्षित	(,,)	१)
फ़न तमासबीनी	(,,)	।=)
स्वराज्य की माँग		१॥)
भोज-प्रबंध (काव्य)		।॥)
गांधी-दर्शन		≈)
हरिकीर्तन-भजनावली		-)॥
हितकारक		≡)

बहता हुआ फूल	(उपन्यास)	२)
चरित्र हीन	(,,)	३।)
चरित्र चित्रण	(,,)	१॥)
परशुराम	(,,)	२)
शर्मिष्ठा	(,,)	।॥)
पतितोद्धार	(,,)	१≡)
दानवी लीला	(,,)	१।)
प्रोत्साहन	(,,)	॥-)
निकुंज	(गल्प-संग्रह)	१॥)
कुसुम-संग्रह	(,,)	१॥)
भजनावली		)॥
जीवन-वेद		१)
भारत में सर्कारी नौकरियाँ		।॥)
बोलशेविक रूस		।=)

देशभक्त पार्नेल	(जीवनी)	।=
महाराष्ट्र नेता रामदास	(,,)	≡)
Lokmanya Tilak	(,,)	-)
महाराज जॉर्ज पंचम	(,,)	।=
द्विजेंद्रलाल राय	(,,)	।
सम्राट्-चंद्रगुप्त	(,,)	।
बा० कार्त्तिकप्रसाद खत्री	(,,)	≈
मन की लहर		)
संसार की क्रांतियाँ		१।≈)
वाणिज्य-भंडार		)
माधवजी का स्वराज्य		≈)
सामान्य नीति		≡)
इँगलैंड के स्वराज्य का इतिहास		।-

मंजरी	**१≡)**	**अमेरिकन संयुक्त-राज्य की शासन-प्रणाली**	**१।)**	**रवींद्र-दर्शन**	**॥=)**
कालिदास	**।॥)**			**औद्योगिनी**	**।॥)**
पत्रांजलि	**॥)**	**तपस्वी तिलक**	**२)**	**मराठे और अँगरेज़**	**३)**
देश की बात	**२॥)**	**सन् ५७ का ग़दर**	**१॥)**	**सम्राट् अशोक**	**१॥)**
बद्री-केदार-यात्रा	**।)**	**काश्मीर-यात्रा**	**॥=)**	**तंत्र-कौमुदी**	**॥)**

राजनीति-विज्ञान	१।=)
हमारा देश	१)
रहिमन-विलास	।≈)
आदर्श विद्यार्थी	।)
कालेज हॉस्टल	।)
आर्य-दरबार	≡)
उन्नति	॥≈)
केशव कौमुदी	२।)
साहित्यालोचन	२)
सौर साम्राज्य	।॥≈)

सारनाथ का इतिहास	१॥)
रोम-साम्राज्य	२॥)
देशी करघा	।॥≡)
स्वतंत्रता का संदेश	=)
मातृभाषा	॥)
मि० विसेंट का अंतिम पत्र	-)
अथ गयाकृत्यम्	।≡)
मैथिल-भक्त-प्रकाश	।)
किसानो उठो	।)
रासपंचाध्यायी और भ्रमर-गीत	॥)

प्रयाग-माहात्म्य	≈)
आनंद-भंडार	)॥
विलायती दंपति	≡)
काशी-दर्शन	-)
हम गुलाम क्यों ?	)
घर का वैद्य	≈)
संसार-विजयी	≡)
बालक-विनोद	॥)
श्रीसमय-प्रबंध-पदावली	।≈)
अडान में तरबूज़ की काश्त	।≈)

बिलकुल नया, बड़ा सूचीपत्र डाक-व्यय के लिये -) का टिकट भेजकर मुफ़्त मँगाइए

मिलने का पता—संचालक गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय

२९-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

होमियोपैथिक-चिकित्सा

के

व्याख्यानों का संग्रह

घर बैठे पाठकों को विना कुछ फ़ीस के ही होमियोपैथिक चिकित्सा का ज्ञान करानेवाली अपूर्व पुस्तक

शिकागो (अमेरिका), लंडन, कलकत्ता, बंबई के सिवा और एक या दो स्थानों में होमियोपैथिक कॉलेज हैं, इन्हीं में से एक कॉलेज के बारहों मास में जितने व्याख्यान दिए गए, उनका हिंदी में उल्था कर पुस्तकाकार छाप दिया गया है। डॉक्टर लोगों को रसायन-शास्त्र, शरीर-विद्या, रोग-निदान, स्वास्थ्य-तत्त्व, चिकित्सा-प्रणाली, खाद्य-तत्त्व, जिह्वा, मल, मूत्र आदि की परीक्षा करना आदि शास्त्रों में पूर्ण ज्ञान रखना चाहिए। इन विषयों का ज्ञान इन व्याख्यानों के पढ़ने से आसानी से हो जायगा। साधारण किताबों के पढ़ने से जो ज्ञान मिलता है, उसका काम में लाना कठिन है। लेकिन ये व्याख्यान ठीक उसी ढंग पर लिखे गए हैं, जिस ढंग से छात्रों को शिक्षा दी गई या समझाई गई है। इसलिये इसमें हरएक बात उदाहरण के साथ समझाई गई है। इसके सिवा नवीन डॉक्टरों से होनेवाली ग़लतियाँ बात-चीत के ढंग पर बतलाई गई हैं। इस किताब को पढ़कर आप शीघ्र ही सर्दी, खाँसी, निमोनियाँ, बुख़ार, कालरा, प्लेग, गनौरिया, गर्मी, कमज़ोरी, स्मृति-हीनता, तमाम शिशु-रोग, अट्ठाइस क़िस्म के स्त्री-रोग आदि-आदि सब बीमारियों की निश्चित-चिकित्सा कर सकिएगा। ऐसी किताब का दाम बहुत होना चाहिए, लेकिन प्रचार के लिये कुछ सजिल्द प्रतियों का दाम केवल २॥) रुपए ही रक्खा है।

प्रशंसा-पत्र

रामचंद्रप्रसाद, दुमका

आपकी किताब के मँगाने के बाद मैंने तीन रुपए की होमियोपैथिक दवाएँ मँगाईं, और अपने परिवार में ही उसी के अनुसार प्रैक्टिस करने लगा। मुझे उसमें इतनी सफलता हुई कि मैं नौकरी छोड़कर डॉक्टरी ही करने लगा, अब इसमें मुझे पहले से अधिक आमदनी होती है।

शीतलप्रसाद, कलकत्ता

हम एक होमियोपैथिक कॉलेज में भर्ती हुए थे। इसके बाद आपकी किताब हमें मिली। उसके पढ़ने से मालूम हुआ कि मुझे कॉलेज में पढ़ने की कुछ भी ज़रूरत नहीं रह गई। आपकी किताब के अनुसार एक-एक ख़ुराक दवा देने से बहुत पुरानी-पुरानी बीमारियाँ छूट जाती हैं, जिससे मुझे बड़ा आश्चर्य होता है।

नोटः—ऐसे-ऐसे प्रशंसा-पत्र बहुत-से हैं। स्थानाभाव के कारण सब नहीं छापे जा सकते हैं। परंतु आप लोगों से निवेदन है कि आप लोग चाहे जिस पेशे के हों, इस किताब को पढ़कर अपने और अपने देश-भाइयों को लाभ पहुँचावें।

बिलकुल नया, बड़ा सूचीपत्र डाक-व्यय के लिये -) का टिकट भेजकर मुफ़्त मँगाइए

पुस्तक मिलने का पता—संचालक गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय
२९-३० अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

भारत पर बोल्शेविकों की चढ़ाई

यदि रूस के बोल्शेविकों के विषय में पूर्ण रीति से जानना हो कि यह कौन हैं, और इनका मत तथा उद्देश्य क्या है, तो निम्न-लिखित पुस्तकें मँगाकर अवश्य पढ़ें—

बोल्शेविकों की करतूत

क्या आपने बोल्शेविकों का नाम सुना है ? क्या आप जानते हैं कि बोल्शेविज़्म क्या है, और क्यों धीरे-धीरे समस्त संसार में फैल रहा है। रूस में राज्य-क्रांति क्यों हुई ? प्रजागण में इतना असंतोष क्यों उत्पन्न हुआ ? यदि आप इन सभी विषयों से अवगत होना चाहते हैं, तो आज ही हमारे यहाँ से इसे मँगाकर पढ़िए। मुग्ध हो जाइएगा। मूल्य ॥।≈)

बोल्शेविज़्म

भूमिका-लेखक काशी के प्रसिद्ध विद्वान्

बाबू भगवानदास गुप्त

आप भूमिका में लिखते हैं "ग्रंथ को आद्योपांत देखा और देखकर प्रसन्न हुआ। ऐसे विषय का ज्ञान भारतवर्ष के उद्धार में श्रम करनेवालों के लिये बहुत उपयोगी किंवा आवश्यक है"। इसमें रूस की पहली राज्य-क्रांति से लेकर बोल्शेविज़्म की उत्पत्ति, लेनिन की विजय और बोल्शेविक संप्रदाय के संगठन तक का शृंखला-बद्ध वर्णन दिया गया है। पुस्तक का अंतिम अध्याय "क्या बोल्शेविज़्म भारत में आवेगा?" मौलिक और स्वतंत्र विचारों से परिपूर्ण है। बढ़िया काग़ज़ पर छपी हुई, सुंदर कवर-सहित मूल्य १।≈)

रूस का षड्यंत्र

ज़ार के ज़माने में रूस की प्रजा पर कैसे-कैसे भयानक अत्याचार हुआ करते थे, और इन अत्याचारों का अंत करने के लिये वहाँ के निहिलिस्ट किस प्रकार दृढ़ता के साथ कार्य करते थे, इसका रोमांचकारी वर्णन इस ३१४ पृष्ठों की सुंदर छपी हुई पुस्तक में किया गया है। दाम २)

रूस का राहु

इस पुस्तक में, इतिहास और उपन्यास दोनों का मज़ा मिलेगा। रूस में 'रासपुटिन' नाम का एक बड़ा प्रभावशाली, परंतु साथ ही अत्यंत दुराचारी, धर्माचार्य हो गया है। रूस के अंतिम सम्राट् निकोलस और उनकी सम्राज्ञी पर इस आदमी ने ऐसी जादू की लकड़ी फेरी थी कि वह उन्हें जिधर घुमा देता, उधर वे घूम जाते। अंत में, इसके प्रभाव से रूस-भर परेशान हो उठा, और रूस के उद्धार के लिये कुछ लोगों ने मिलकर उसका वध कर डाला। टाइटिल पर रासपुटिन का चित्र है। मूल्य ।≈)

रूस की राज्य-क्रांति

रूस की राज्य-क्रांति पर यह एक बहुत अच्छी पुस्तक है। रूस में कैसा भारी परिवर्तन हुआ, और उसके कौन-कौन सूत्रधार थे, इसका पता इसके अध्ययन से अच्छी तरह लगेगा। पुस्तक सचित्र और रेशमी जिल्द सहित है। बढ़िया एंटिक पेपर पर बहुत अच्छी छपी है। इसमें ३६ अध्याय हैं, और २३ पूरे पेज के सुंदर चित्र हैं। इस पर भी मूल्य केवल २॥)

रूस में युगांतर

यदि आप रूस-सरीखे महाशक्तिशाली राज्य का पतन, जर्मनी के सम्राट् क़ैसर और रूस के सम्राट् ज़ार की चालें, रूस के भिन्न-भिन्न क्रांतिकारी दलों के उपद्रव और महात्मा लेनिन तथा ट्राटज़्की के नेतृत्व में भयानक बोल्शेविक क्रांति की झलक देखना चाहते हैं, योरपीय महायुद्ध के वास्तविक कारण, रूस-जापान-युद्ध का आनंद एवं योरप का वर्तमान इतिहास जानना चाहते हैं, तो एक बार इस पुस्तक को मँगाकर अवश्य अवलोकन कीजिए। सुंदर कई हाफ़टोन-चित्रों से सुशोभित पुस्तक का मूल्य २)

बिलकुल नया, बड़ा सूचीपत्र डाक-व्यय के लिये —) का टिकट भेजकर मुफ़्त मँगाइए

संचालक गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय, ३० अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

हिंदी में

कवि-सम्राट् डॉ० रवींद्रनाथ ठाकुर

कृत

उपन्यास

गौरमोहन

(दो भागों में)

यह 'गोरा'-नामक सामाजिक उपन्यास का हिंदी-अनुवाद है। इसमें सामाजिक उलझनों का खासा चित्र खींचा गया है। शिक्षित लड़कियों के उन्नत विचार, चरित्र-नायक की दृढ़ता, धर्म-परायणता, स्वदेश-वत्सलता और अंत में उन्नति-पथ पर जा पहुँचना सचमुच प्रशंसनीय है। इस उपन्यास में नए और पुराने विचारों का खासा मिश्रण है। मूल्य ४)

मुकुट

भाई-भाई में परस्पर अनबन होने का परिणाम क्या होता है, इसी को इस पुस्तक में दर्शाया है। बड़ा शिक्षाप्रद उपन्यास है। मूल्य ।)

विचित्रवधू-रहस्य

यह "बऊ ठाकुरानीर हाट"-नामक उपन्यास का हिंदी-अनुवाद है। महाराज प्रतापादित्य का बात-बात पर असीम क्रोध करना, युवराज उदयादित्य की और महाराज के चाचा वसंतराय की सरलता, युवराज्ञी सुरमा की लानत-मलामत और अंत में देह-त्याग, महाराज के जमाई राजा रामचंद्र राय का लड़कपन, रमाई भाँड़ की नादानी और महाराज के चाचा की वधिक के हाथ हत्या एवं राजकुमारी विभा का आत्मोत्सर्ग आदि एक-से-एक बढ़कर घटनाएँ हैं। मूल्य १)

गल्प-गुच्छ

अर्थात् छोटी-छोटी उच्च कोटि की कहानियों का संग्रह। वैसे कहानियाँ तो बहुत लोग लिखते हैं, पर इनमें कुछ और ही मज़ा है। लीजिए, शीघ्रता कीजिए। मूल्य सिर्फ़ ॥।)

राजर्षि

इसमें बतलाया है कि राज्य के लोभ से सगा भाई अपने पूज्य बड़े भाई से किस प्रकार शत्रुता ठानता है, मंदिर का पुजारी हठ में आकर किस प्रकार अपने भूपाल के प्रति विद्रोहाचरण करता है, और राजा फिर भी क्षमा करता है। अंत में पापियों को स्वयं अपनी करनी पर पछताना पड़ता है। मूल्य १।)

आश्चर्यघटना

(नौका डूबी)

इसमें नलिनी और कमला दोनों ही के चरित्र विभिन्न हैं। पर हैं दोनों ही भली। नलिनी पढ़ी-लिखी होने पर भी दुनियादारी से परिचित नहीं और कमला साधारण लिखना-पढ़ना जानती हुई गृहस्थी के कामों में साक्षात् गृहलक्ष्मी है, और यही कारण है कि आरंभ में क्लेश सहकर भी अंत में वह सुख की गृहस्थी की अधिकारिणी हुई। उच्च शिक्षा-प्राप्त नलिनी और रमेश दोनों ही झमेले में पड़ गए। न इधर के रहे, न उधर के। बड़ा विचित्र कथानक है। घटनाओं का वैचित्र्य पढ़नेवाले को चक्कर में डालता है। मूल्य १॥)

डाकघर

इसकी तारीफ़ करना व्यर्थ है। कहानी के बहाने एक विषय पर विचार किया गया है। ज़रा ध्यान देने पर असल बात समझ में आ जाती है। बड़ी मज़ेदार कहानी है। विषय को समझाने के लिये आवश्यकतानुसार टिप्पणियाँ दे दी गई हैं। मूल्य।-)

बिलकुल नया, बड़ा सूचीपत्र डाक-व्यय के लिये -) का टिकट भेजकर मुफ़्त मँगाइए

संचालक गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय, २० अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

इंडियन प्रेस की पुस्तकें

फिर से छपकर तैयार हैं

रामचरितमानस (सटीक) ६)

कविता-कलाप	३)	किरातार्जुनीय	२)	महाराष्ट्र-जीवन-प्रभात	१।।)
आदर्श महिला	२)	नाट्य शास्त्र	।)	स्वर्ण-लता	१।।।)
सीताचरित	१।।।)	नूतन चरित्र	१।।)	भारतवर्ष के धुरंधर कवि	।=)
ऋद्धि	१।।।)	अनाथ बालक	१)	भारतवर्षमें पश्चिमी शिक्षा	।=)
पतिव्रता	१)	पार्वती और यशोदा	।।=)	सुशीलाचरित	१।।)

नई पुस्तकें

नई पुस्तकें

संक्षिप्त सूरसागर

(भूमिका और टिप्पणी-सहित)

जो लोग सूरसागर की बड़ी मोटी-सी जिल्द ख़रीद नहीं सकते, और जिनको समग्र सूरसागर की सैर करने को समय नहीं है, उन्हें इस संग्रह-ग्रंथ से बड़ा लाभ होगा। भक्त-प्रवर सूरदास के छँटे हुए बढ़िया-बढ़िया पदों का इसमें समावेश हो गया है। पाठ भी शुद्ध है। फिर एक और सुबीता यह है कि कथा का सिलसिला टूटने नहीं पाया है। स्थान-स्थान पर तुलसीदास, कबीर, दादू, हरिचंद्र और रसखान प्रभृति प्रसिद्ध हिंदी-कवियों की उक्तियाँ, सूरदास की कृति से तुलना करने के लिये, उद्धृत कर दी गई हैं। आरंभ में सूरदासजी का संक्षिप्त परिचय भी दे दिया गया है। मूल्य २।।)

मानस-सूक्तावली

इसमें गोस्वामी तुलसीदासजी की उन अनूठी उक्तियों का संग्रह है, जिनका उपयोग लोग-बाग अक्सर, बातचीत के समय, किया करते हैं। ये रामचरितमानस के शुद्ध पाठ से छाँटकर एकत्रित की गई हैं। बातचीत करते समय मौक़े से इन उक्तियों का प्रयोग कर देने से भाषण सुंदर और सरस हो जाता है। बड़े काम की चीज़ है। सुंदर सजिल्द प्रति का मूल्य १)

पत्र-पुष्प

यह छः कहानियों का संग्रह है। कहानियाँ एक-से-एक बढ़कर चित्ताकर्षक हैं। एक बार पुस्तक हाथ में लेने पर समाप्त किए बिना छोड़ने को जी नहीं चाहता। भाषा टकसाली है। पढ़ने में मौलिक कहानियों का मज़ा आता है। हिंदी-अँगरेज़ी के अनेक सामयिक पत्रों ने इसकी प्रशंसा की है। सजिल्द प्रति का मूल्य १।।)

मौलाना हाली और उनका काव्य

परलोक-गत कवि हाली ने उर्दू-कविता की धारा में एकदम परिवर्तन कर दिया था। मुसलिम जाति की जागृति में आपकी कविता का विशेष स्थान है। आपकी कविता में ओज है, तेज है, माधुर्य है, और मुर्दार लोगों के लिये वह हंटर का काम देती है। उन्हीं विख्यात कविवर की चुनी हुई, कविताओं का यह संग्रह पंडित ज्वालादत्तजी शर्मा ने किया है। साथ में आवश्यक टीका-टिप्पणी भी है, और आरंभ में कवि का संक्षिप्त जीवनचरित। पुस्तक के अंत में कठिन शब्दों का अर्थ भी दे दिया गया है। सामयिक पत्रों ने मुक्तकंठ से इस संग्रह की सराहना की है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १)

बिलकुल नया, बड़ा सूचीपत्र डाक-व्यय के लिये -) का टिकट भेजकर मुफ्त मँगाइए

मिलने का पता—**संचालक गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ**

नई ख़बर

इसे भी पढ़िए, शायद

आपका हित हो

नया समाचार

फूलवहरी या श्वेतकुष्ठ लाइलाज बीमारी है, सभी जानते हैं । लेकिन हमने इसका एक बहुत अच्छा इलाज निकाला है ; जिससे सफ़ेद दाग़ एक ही हफ़्ते में बिलकुल ग़ायब हो जाते हैं । आज़माकर देखिए । अगर आपको ज़रूरत है तो एक बक्स मँगवा लीजिए जिसमें तीन प्रकार की दवाई है । दो लगाने की और एक खाने की । मूल्य २।॥≡)

मिलने का पता—

दी ग्रेट ईस्टर्न लेपरा क्योरिंग ब्यूरो

पो०— बेगू सराय (मुँगेर)

◆ ◆ ◆

देशी दवाखाना।

भारतभैषज्य भाण्डार

नं० ७८ काटन स्ट्रीट (बड़ाबाजार) कलकत्ता

यहाँ पर आयुर्वेदोक्त समस्त औषधि हर वक़्त तैयार मिलती है । धातु, उपधातु, भस्म, रस, गोली, चूर्ण, आसव, अरिष्ट, अवलेह, पाक, घृत, तैल, वटी, मोदक इत्यादि और पसारठ की सब चीज़ें जड़ी, बूटी, तथा सब रक़म का क्षार, सत, असली कस्तूरी, पवित्र केसर, पीपल चौसठ प्रहरी, भीमसेनी कपूर, गोरोचन, शुद्ध शिलाजीत इत्यादि बहुत-सी चीज़ें सर्वदा तैयार मिलती हैं और संपूर्ण रोग आराम किए जाते हैं। बाहर के लोगों को वी० पी० पोस्ट द्वारा दवा भेजते हैं और (आढ़त पर) कलकत्ता से सब प्रकार का माल बाहर भेजते हैं। सूचीपत्र मुफ़्त भेजते हैं, पत्र लिखिए। कार्याध्यक्ष महादेव शर्मा ।

पता—भारत-भैषज्य-भांडार

नं० ७८ काटन स्ट्रीट, कलकत्ता

◆ ◆ ◆

असल रुद्राक्ष माला

दस दाना नमूना तथा रुद्राक्ष महात्म्यम मुफ़्त मंगा देखिये।

राम दास एण्ड को०

३ चोर बागान स्ट्रीट।
कलकत्ता

◆ ◆ ◆

एक लाख आदमी मरते हैं

हर साल सिर्फ़ दाँत की बीमारी से एक लाख आदमी मरते हैं । इसलिये आप आज से ही अगर टैनल साहब के दँत-रस का इस्तेमाल शुरू कर दें तो ६० बरस की आयु तक दाँत मज़बूत रहेंगे । सिर्फ़ चार बूँद के मलने से दाँत हीरे की तरह चमकने लगते हैं । दिन-भर मुँह में ख़ुशबू आती है, पीब आना बंद हो जाता है और हिलते हुए दाँत तक जम जाते हैं । आज से आप इरादा कर लें कि सिर्फ़ टैनल साहब के दँत-रस से दाँत साफ़ करेंगे और आप ख़ुद ही लिखेंगे कि इससे अच्छी चीज़ दाँत के वास्ते आज तक नहीं बनी । क़ीमत बड़ी शीशी जो तीन महीने के लिये है १) रु० वी० पी० से १।≡); १) से कम का वी० पी० नहीं भेजा जाता है ।

डॉ० एम्० एन्० टैनल,
गोकुलपुरा,
आगरा ।

अगर आप १००) माहवार कमाना चाहते हैं तो हमारा दँत-रस बेचिए, ।-) वाली शीशी देखते-देखते बिक जाती है ।

◆ ◆ ◆

बिजली

दाद, खाज, फोड़े, फुन्सी, आदि सर्व प्रकार के चर्म-रोगों के लिये अचूक महौषध । दो दिन में शर्तिया आराम । विशेष प्रशंसा व्यर्थ है, एक दफ़े आज़माकर देखिए मूल्य फ़ी डिब्बी ।), दर्जन २॥), डाक-महसूल अलग ।

एजेंटों की आवश्यकता है ।

अग्रवाला ब्रादर्स, १३८-२, हरिसन-रोड, क़लकत्ता

◆ ◆ ◆

कृषि-संबंधी पुस्तकें

१. खाद और उनका व्यवहार	।)
२. लाख की खेती	।)
३. धान की खेती	।)
४. नींबू नारंगी	-)
५. मूँगफली की खेती	-)
६. कपास की खेती	॥)
७. पौंड़ा, गन्ना, ऊख	॥)
८. कृषि-सिद्धांत	।)
९. कृषिसार	१)

पता—कृषि-भवन, प्रयाग

CROWN COOKER

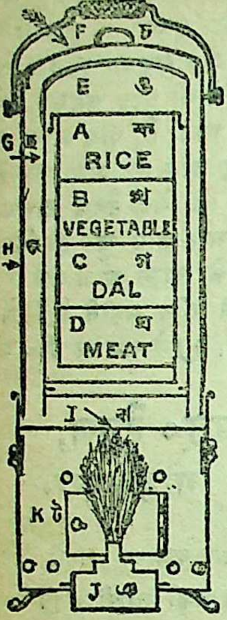

(Invented by the renowned E. B GENIUS, Mr. G. K. PAUL) has been the talk of the day as the Crown of all other Cookers, (made of Brass and Galvanized sheets both).

At one's ten minutes cost itself cooks several palatable dishes collectively.

Prices from Rs. 8 and upwards.

Price list free from MANAGER,

CROWN COOKER,
54, Canning Street,
OR
276, Bow Bazar Street,
CALCUTTA.

Telegraphic address:—
RAJ HANSA, CALCUTTA.

Don't waste money after worthless Harmonium. Buy only

MOHINI FLUTE

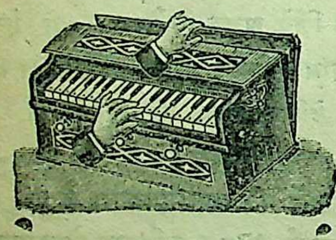

Guaranteed 3 years

Too well known to need introduction. The only Harmonium best suited for the Indian Music and climate. Sweet, strong and handsome. Price single reeds Rs. 25, 30 and 35. Double reeds Rs. 40, 45 and 50, SITAR, ESHRAJ AND TABLAS at moderate prices. Catalogue free. Order with Rs. 5 in advance and mention nearest Railway Station.

BEWARE FROM IMITATION.

To be had only of—

MOHINI FLUTE & Co.,
9/2 (M) Arpuli Lane, CALCUTTA.

बढ़िया हारमोनियम

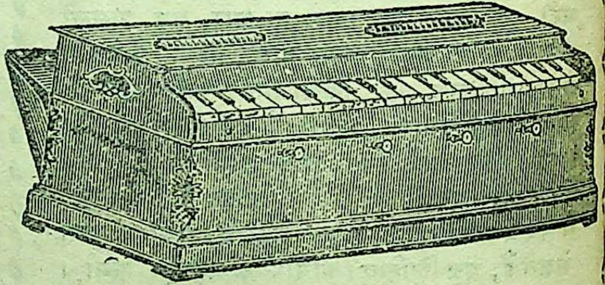

हमारे कारख़ाने में बढ़िया तथा मज़बूत हारमोनियम तैयार किए जाते हैं। सुप्रिष्टरिभर द्वारा अच्छे कारीगर के हाथ का बना हुआ मौजूद रहता है। जिन लोगों ने एक बार हमारे यहाँ से हारमोनियम मँगवाया है वे फिर दूसरी जगह से नहीं मँगा सकते। कितने ही प्रशंसा-पत्र आ चुके हैं, आपकी सुविधा के लिये मूल्य कम रक्खा गया है—

सिंगेल २०-२२-२५-३०-५० डबल ३५-४०-४५-५५ से लेकर १५० सेकेंड ५५-१०० टेबिल ६० से २५० पर्यंत। परीक्षा कीजिए। सूचीपत्र पत्र लिखने से भेजा जायगा।

पता— लकीफ़्लूट को०—
नं० ३ रामचंद्र घोष लेन (M)
विडिन स्क्वार पो० आ० कलकत्ता
तार का पता—हिनाफ़्लूट, कलकत्ता.

मीरा बाई

मीरा बाई का जीवन-चरित्र और शब्द

दाम ॥)

बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद

तेलों का राजा
सुंदरी-सोहाग तैल
(रजिस्टर्ड)

जब से हमने यह तेल निकाला है, बाज़ार के सब तेल इसके सामने फीके पड़ गए हैं। इसकी मंद-मंद सुगंध चौबीसों घंटे तरह-तरह की मनभावनी ख़ुशबू बदला करती है। इसके लगाने से बालों की जड़ें मज़बूत होती हैं। दिमाग़ की कमज़ोरी और ख़ुश्की दूर हो जाती है। आँखों की रोशनी बढ़ती है। बाल घुंघराले और चमकदार हो जाते हैं। गिरे हुए बालों की जगह नए बाल पैदा हो जाते हैं। इसके सिवा यह मिट्टी के तेल या नुक़सान करनेवाली चीज़ों से पाक है और बाल सफ़ेद होने से बचाता है। इसके लगाने से स्त्री-पुरुष दोनों ख़ुश रहते हैं। ऐसा तेल जिसमें सब गुण मौजूद हैं, मँगाने में आप क्यों देर करते हैं। एक शीशी का आज आर्डर भेजिए।

दाम एक शीशी का १), ३ शीशी का २॥), डाक-ख़र्च अलग।

सैकड़ों में से एक प्रशंसा-पत्र लिखा जाता है —

जहाँगीराबाद के राजा की रानी साहिबा बाराबंकी से लिखती हैं कि "आपका तेल बहुत दिन हुआ, मँगवाया था, परंतु छुट्टी न मिलने के कारण प्रशंसा-पत्र न भेज सकी। आपका तेल सचमुच बहुतही अनमोल है। मुझको सर्वदा नज़ला और सिर में दर्द रहता था, मगर जब से आपका सुंदरी सोहाग तैल लगाने लगी, सब दुःख जाता रहा। सिर के बाल भी कुछ लंबे हुए हैं, सिर में दर्द अब बिलकुल नहीं होता है। मैंने आपका तेल थोड़े ही दिन व्यवहार किया है। परंतु इससे लाभ बहुत हुआ है। ईश्वर आपके कारख़ाने को बढ़ती दें। कृपाकर ६ शीशी तेल भेज दीजिए। कारण, हमारे सब तेल शेष हो गए हैं।

मिलने का पता——एस० ए० बी० बक्शी ऐंड को०, पोस्ट बक्स नं० २२४,
७०, कालूटोला स्ट्रीट, कलकत्ता।

छप गया !!

शीघ्रता करें

छप गया !!

हिंदी-संसार में विलक्षण हलचल मचानेवाला एक ग्रंथ-रत्न
अर्थ-शास्त्र के मर्मज्ञ-शिरोमणि विश्व-विख्यात

चाणक्य

का बनाया हुआ असली राजनीति-शास्त्र अर्थात्

कौटिल्य अर्थ-शास्त्र

का
सरल और सार-गर्भित हिंदी-अनुवाद

अनुवादक—हिंदी-संसार के परिचित प्रो० प्राणनाथजी विद्यालंकार—

पाठकों को चाणक्य का परिचय कराना सूर्य को दीपक दिखाना है। कौन ऐसा भारतवासी है, जो चाणक्य के नाम से परिचित नहीं, जिसने अपनी प्रबल राजनीति के बल से मौर्य चंद्रगुप्त को भारत का प्रसिद्ध सम्राट् बनाया था। प्रस्तुत ग्रंथ उसी के बनाए हुए असली राजनीति-शास्त्र का सरल हिंदी-अनुवाद है। इस पुस्तक में तत्कालीन राजनैतिक तथा सामाजिक अवस्था का जीता-जागता चित्र खींचा गया है। भारत के सुप्रसिद्ध नेता पंजाब-केसरी ला० लाजपतरायजी का यह मत है कि "इस पुस्तक में वर्णित विषयों से तत्कालीन-अवस्था का ऐसा चित्र मिलता है कि उसने विद्या-प्रेमी मनुष्यों के विचारों में प्राचीन आर्य लोगों की राजनीति-व्यवस्था के विषय में एक भारी क्रांति उत्पन्न कर दी है।" भारत के प्राचीन इतिहास-विज्ञ-शिरोमणि "विंसेंट स्मिथ" का मत है कि "चंद्रगुप्त का राज्य-प्रबंध ऐसा पूर्ण था कि उसकी उपमा प्राचीन संसार के किसी दूसरे देश में नहीं पाई जाती।" यहाँ तक कि वह इसको यूनानियों और अकबर के प्रबंध से भी अधिक पूर्ण पाता है जिसका ज्वलंत उदाहरण वह कौटिल्य अर्थ-शास्त्र को मानता है। सारांश यह है कि भारत के प्राचीन इतिहास की बहुत-सी उलझनें केवल इसी एक ग्रंथ से सुलझ गईं। संस्कृत-साहित्य में यह एक ही ग्रंथ है जो कि प्राचीन भारत की आर्थिक, राजनैतिक तथा सामाजिक सभ्यता को विस्तृत-रूप से प्रकट करता है। विद्वानों का ध्यान ज्यों-ज्यों इस ओर बढ़ता जाता है, त्यों-त्यों इसका महत्त्व भी दिन-पर-दिन बढ़ता जाता है। भारत में समय आनेवाला है जब कि कोई भी राष्ट्रीय या सरकारी संस्था ऐसी न होगी, जिसमें यह ग्रंथ पाठ्य-पुस्तक न हो। शरीर के लिये जैसे भोजन आवश्यक है, वैसे ही प्राचीन आर्यों के रहन-सहन को समझने के लिये यह ग्रंथ आवश्यक है। पुस्तक बहुत सुंदर टाइप में पुष्ट काग़ज़ पर छपी है। बढ़िया कपड़े की जिल्द-सहित मूल्य केवल ४) है। पुस्तक धड़ाधड़ बिक रही है, इसलिये शीघ्रता करें।

पंचसायक—ज्योतीश्वराचार्य-कृत संस्कृत ३।), अनंगरंग—महाकवि कल्याणमल-कृत १॥), रतिरहस्य—सटीक ३॥), नागरसर्वस्व ४), रतिरत्नदीपिका—अँगरेज़ी अनुवाद सहित ३) और कुचुमार-तंत्र ।)

इनके अतिरिक्त पृथ्वी-भर के छपे संस्कृत तथा हिंदी-ग्रंथ मिलने का पता—

मोतीलाल बनारसीदास

मालिक—पंजाब संस्कृत पुस्तकालय, सैदमिट्ठा, लाहौर

मौसम आ गया ! शीघ्रता कीजिए !! समय न खोइए !!!

शाल ! शाल ! शाल !

असल दाम १८)-रियायती आधा दाम ९)

यह शाल स्वदेशी असल काशमीरी ऊन का बहुत मुलायम व चिकना और हलका होने पर भी इतना गर्म है कि घोर शीत-काल में एक लिहाफ़ की बराबर शरीर की ठंड से रक्षा करता है। बहुत मज़बूत और पायदार है। यत्न-पूर्वक रक्खा जावे, तो उम्र-भर के लिये काफ़ी है। इस पर गर्द, मैल या दाग़ नहीं जमता। इस कारण मनोहर पक्के रंग व सुंदरता में कभी फ़र्क़ नहीं आता। ये बहुत ही सोफ़ियाने, आम-पसंद, फ़ैशनेबिल शिक्षित व सभ्य स्त्री-पुरुषों के बर्तने योग्य हैं। पुराने ढंग के ५००) रुपए के शाल दुशाले भी इसके आगे तुच्छ जँचते हैं। राजों और रईसों के योग्य होने पर भी अत्यंत सस्ते होने के कारण साधारण मनुष्य भी ख़रीद सकते हैं। ख़ालिस ऊनी होने के लिये कारख़ाने की ओर से १०००) की गारंटी है। इस साल यह माल बहुत अधिक संख्या में तैयार होने के कारण जल्दी निकासी की ग़रज़ से आधे दाम में देते हैं। ग्राहकों को ऐसा सुयोग आगे कभी मिलना असंभव है। अभी मँगा लेने से बहुत ही लाभ है। सरदी का मौसम आ जाने पर पूरे दाम १८) में भी शायद न मिल सकेगा। ध्यान रहे कि इसके जोड़ का इतना बढ़िया व सस्ता शाल भारतवर्ष-भर में कहीं भी न मिलेगा। लगभग ३० रंग के मौजूद हैं। जिस रंग का चाहिए आर्डर में स्पष्ट लिखिए। वरना हम अपनी राय से बहुत उत्तम आम-पसंद रंग भेजेंगे। यही शाल ख़ासकर स्त्रियों के लिये अत्यंत सुंदर व मनमोहक रेशमी बेलबूटे किनारी, कोनों व पल्लों पर कढ़े हुए का दाम ३) अधिक होगा। डाक-ख़र्च व पैकिंग एक शाल का ।॥) आना अधिक लगेगा। दो या ज्यादा शाल मँगाने से कुल ख़र्च माफ़। किंतु ६ नग से अधिक किसी को भी इस रियायती मूल्य में न भेजेंगे ! ग्राहकों के इतमीनान के लिये पारसल के साथ नापसंद होने पर वापसी का इक़रार-पत्र भेजा जाता है। उसके अनुसार कुछ भी संदेह होने पर ३ दिन तक वी० पी० द्वारा लौटाकर अपनी पूरी रक़म फेर सकते हैं।

Rs. 9/- पूरी व बड़ी नाप, लंबा ३ गज़, चौड़ा १॥ गज़। Rs. 9/-

थोक एजेंट—ब्रजबासीलाल वैश्य

ब्रांच नं० (२१८) ऊलेन डिपो, बल्देव बिल्डिंग, झाँसी

Jhansi, U. P.

४८
२६

दीवाली और बड़े दिनों पर दो उपहार

[अवश्य मँगाइए]

१ विनय-पत्रिका

(बड़े अक्षरों में सटीक व सचित्र)

टीकाकार पं० महावीरप्रसाद मालवीय । मूल्य २।।) सजिल्द ३)

इसमें गोस्वामीजी के ३ चित्र भी हैं जो भिन्न-भिन्न अवस्था के हैं। दो चित्र रंगीन स्याही से छपे और एक चित्र ३ रंगों में छपा है। शंका-समाधान, कथानकों की टिप्पणी, अलंकार, रस और ध्वनि सब कुछ दिया है। अंत में राग-परिचय भी है। सफ़ेद उम्दा काग़ज़ पर छपाई शुद्ध और साफ़। इसके अलावा २ और भी चित्र हैं।

२ रामचरित-मानस

(बड़े अक्षरों में सटीक, सचित्र व सजिल्द)

टीकाकार पं० महावीरप्रसाद मालवीय । मूल्य ८)

जितने आर्डर बड़े दिन के पहले आ जायँगे उन्हें हम इस भारी पोथी को ६) में ही दे देंगे—यानी २) घटा देंगे—इसके बाद यही पुस्तक १०) की हो जायगी। क्योंकि अब इसमें पहले से चित्र बढ़ गए हैं। दो तिरंगे चित्र और दो एकरंगे चित्र और लग गए—यानी अब कुल चार तिरंगे और पाँच एकरंगे हो गए गोस्वामीजी की सविस्तार जीवनी और मानस-पिंगल भी अंत में दिया है और अलंकार, रस, ध्वनि और शंका-समाधान भी सरल टीका के साथ है—डाक-महसूल अलग।

मैनेजर बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

भारतवर्ष का इतिहास

लेखक—श्रीमन्मथनाथ राय एम्० ए०, एल्० टी०

मूल्य १॥) रु० मात्र । डाक-व्यय अलग ।

कुछ सम्मतियाँ :—

Dr. D. B. Spooner, B. A., Ph. D., Director-General of Archaeology in India, Simla: "I have been struck with the judicious character of your account".

Dr. Radha Kumud Mukerji, M.A., P.R.S., Ph. D., University Professor of Indian History, Lucknow University: "I have found it to be singularly up-to-date both in the matter presented and in the manner and plan of presentation. It should rank very high among the numerous Matriculation text books of Indian History."

Dr. Shafaat Ahmad Khan, M. A., D. Litt., University Professor of Modern Indian History, Allahabad University: "It is fairly well written and will be very useful to the students".

Dr. Tara Chand, M.A., D. Phil., Principal, K.P. College, Allahabad: "I am impressed with its freshness of outlook and statement".

Professor J.N. Samaddar, B.A., F.R. Hist. S., University Reader in Ancient Indian History, Patna University: "I appears to be an excellent production".

मिलने का पता

मेसर्स नंदकिशोर ऐंड ब्रदर्स, बुकसेलर्स,

३८/१६२ **चौक, बनारस सिटी ।**

जेबी-घड़ी मुफ़्त ।

ओटो मुश्क हिना

हरएक शौक़ीन को घर में हमेशा रखने लायक़ देशी इत्र क़ीमत एक शीशी की १२ आने । १ दर्जन लेनेवाले को १ रास्कोप घड़ी इनाम

दाद-विनाशक

दाद और खुजली के लिये अक्सीर मलहम, क़ीमत ।) चार आना ।

२४ डब्बी एकसाथ लेने से एक रास्कोप घड़ी इनाम, न लेने से १॥।) दर्जन ।

१३६/१६८ **किंग जार्ज कारोनेशन कं०, बंबई नं० ४**

नैपाल हिमालय मुश्क डिपो

नीचे लिखी चीज़ें थोक और अलाहिदा दी जाती हैं ।

एक नं० मुश्क	...	३०) तोला
दो नं० ,,	...	२४) तोला
तीन नं० ,,	...	२०) तोला

दवा के लिये मोती ४) रु० से ४०) रु० तोले तक

ख़ालिस, शोधित शिलाजीत	४) ८) और १) तोला
गोरोचन	१०) से १२) तोला तक
सुवर्ण मकरध्वज ...	१०) तोला
विशुद्ध भीमसेनी कपूर	॥) से २॥) तोला तक

प्रोप्राइटर,

मोहनदास लक्ष्मीदास नैपाली

९६, हरिसन रोड, कलकत्ता ।

Barman's Agency Service.

अलौकिक गुण

अंब्रोसिया

अद्भुत आविष्कार

इस वनस्पति की दवा से अंतड़ियों तथा फेफड़े से संबंध रखनेवाला क्षयरोग, ब्रुंकाइटिस, दमा, बच्चों की हंपन (उल्टी साँस), कफ, गंडमाला, आदि-आदि रोग शीघ्र और अवश्य अच्छे हो जाते हैं । मात्रा २० बूँद । एक औंस टिंक्चर की क़ीमत २) रु० । काढ़ा बनाकर पीने के लिये पत्तों में भी मिल सकती है, जो चाय तथा काफ़ी के समान पिए जा सकते हैं ।

विशेष हाल के लिये पत्र लिखिए:—

राय ऐंड कंपनी,

होमियोपैथिक और बायोकेमिक दवाख़ाना,

१३६/१६७ भरूचा बिल्डिंग, प्रिंसेज़ स्ट्रीट, बंबई ।

छप गया ! **कृष्णचरित्र** छप गया !!

ले० स्वर्गीय बाबू बंकिमचंद्र चटर्जी और अनुवादक "हास्य-रसावतार" पं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी

जिस ग्रंथ-रत्न की बहुत दिनों से माँग थी वह छपकर तैयार है। श्रीकृष्ण भगवान् के चरित्र पर ऐसा समालोचनात्मक ग्रंथ दूसरा नहीं है। मूल्य भी ५०० से अधिक पृष्ठ के सजिल्द ग्रंथ का केवल २॥)

१—**स्वाधीनता के सिद्धांत**—ले० आयर्लैंड के सत्याग्रही वीर टेरेन्स मैक्स्विनी। मूल्य १)
२—**कर्मयोग**—ले० बंगाल के प्रसिद्ध कर्मयोगी श्रीअश्विनीकुमार दत्त। मूल्य ॥।)
३—**सरल गीता**—ले० "भारतमित्र"-संपादक पं० लक्ष्मणनारायण गर्दे। मूल्य १॥); सजिल्द १॥।=)
४—**मधुर मिलन**—ले० हिंदी के प्रसिद्ध विद्वान् पं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी। मूल्य ॥=)

मूल्य ॥-) **अहंकार** अनुवादक
पृ० सं० ३०० प्रेमचंदजी

राजनीतिक उपन्यासों के लिखने में विक्टर ह्यूगो ने जितनी ख्याति प्राप्त की है, धार्मिक उपन्यासों में अनातोले ने भी उनसे कम प्राप्त नहीं की है। अनातोले का "अहंकार" पढ़िए। ऐसा अनूठा धार्मिक उपन्यास आपने न पढ़ा होगा। पुस्तक कैसी है, इसी से समझ लीजिए कि प्रेमचंदजी-जैसे प्रसिद्ध उपन्यास-लेखक ने इसको अनूदित करना पसंद किया।

तीन भागों में **यंग इंडिया** पृ० २५००, मूल्य ४॥)

पुस्तक क्या है असहयोग की गीता है। घर-घर में एक-एक प्रति रहनी चाहिए। सजिल्द का ।), अधिक।

सब प्रकार की हिंदी-पुस्तकें मिलने का पता—

१०/७६ **हिंदी-पुस्तक-भवन नं० १८१, हरिसन-रोड, कलकत्ता**

तेलों का राजा
सुंदरी-सोहाग तैल
(रजिस्टर्ड)

जब से हमने यह तेल निकाला है बाज़ार के सब तेल इसके सामने फीके पड़ गए हैं। इसकी मंद-मंद सुगंध चौबीसों घंटे तरह-तरह की मनभावनी ख़ुशबू बदला करती है। इसके लगाने से बालों की जड़ें मज़बूत होती हैं। दिमाग़ की कमज़ोरी और ख़ुश्की दूर हो जाती है। आँखों की रोशनी बढ़ती है। बाल घुंघराले और चमकदार हो जाते हैं। गिरे हुए बालों की जगह नए बाल पैदा हो जाते हैं। इसमें मिट्टी का तेल या नुक़सान करनेवाली चीज़ नहीं डाली जाती और बाल सफ़ेद होने से बचते हैं। इसके लगाने से स्त्री-पुरुष दोनों ख़ुश रहते हैं। ऐसा तेल जिसमें सब गुण मौजूद हैं, मँगाने में आप क्यों देर करते हैं। एक शीशी का आज ही आर्डर भेजिए।

दाम एक शीशी का १), ३ शीशी का २॥), डाक-ख़र्च अलग।

सैकड़ों में से एक प्रशंसा-पत्र लिखा जाता है—

जहाँगीराबाद के राजा की रानी साहिबा बाराबंकी से लिखती हैं कि "आपका तैल बहुत दिन हुआ, मँगवाया था। परंतु छुट्टी न मिलने के कारण प्रशंसा-पत्र न भेज सकी। आपका तैल सचमुच बहुत ही अनमोल है। मुझको सर्वदा नज़ला और सिर में दर्द रहता था, मगर जब से आपका सुंदरी-सोहाग तैल लगाने लगी, सब दुःख जाता रहा। सिर के बाल भी कुछ लंबे हुए हैं, सिर में दर्द अब बिलकुल नहीं होता है। मैंने आपका तैल थोड़े ही दिन व्यवहार किया है। परंतु इससे लाभ बहुत हुआ है। कृपाकर ६ शीशी तेल और भेज दीजिए।

मिलने का पता—एस्० ए० वी० बक़्शी ऐंड को०, पोस्ट बक्स नं० ११४,
७०, कौलूटोला स्ट्रीट, कलकत्ता।

१७२/१३२

हिंदी-ग्रंथ-रत्नाकर के नये ग्रंथ-रत्न

हाल ही छपकर तैयार हुए हैं

नीतिविज्ञान

लेखक—श्रीयुत बाबू गोवर्द्धनलालजी एम्० ए० बी० एल्० । आचार-शास्त्र पर अभी तक हिंदी में कोई ग्रंथ नहीं था । यह इस विषय का सबसे पहला ग्रंथ है और लेखक के बहुत वर्षों के अध्ययन और मनन का फल है । इस विषय पर अँगरेज़ी आदि भाषाओं में जो ग्रंथ हैं वे युरोपीय सभ्यता और वहीं के रीति-रिवाजों को ध्यान में रखकर लिखे गए हैं । परंतु यह ग्रंथ हिंदु-सभ्यता, हिंदु-साहित्य और हिंदु-धर्मों का अध्ययन करके लिखा गया है । इस कारण यह सर्वथा मौलिक है । इसमें सदाचार या आचरण की वैज्ञानिक आलोचना की गई है, और बताया गया है कि वास्तविक सदाचार क्या है, और उसकी उत्पत्ति प्राणि-मात्र में किस प्रकार होती है ? धर्मों और मज़हबों से इसकी कितनी मित्रता है और कितनी शत्रुता, इस पर बहुत विस्तार से चर्चा की गई है । मज़हबों ने संसार में अब तक जो-जो अत्याचार किए हैं, उनका वर्णन पढ़कर रोमांच हो आता है । संसार को सभ्य बनाने का दावा करनेवाले ईसाई-धर्म के पापों का तो इसमें खूब ही भंडाफोड़ किया गया है । जुदा-जुदा देशों के सभ्य और असभ्य जातियों के ब्याह-शादी-संबंधी रीति-रिवाजों का प्रकरण बड़ा ही दिलचस्प है । वैज्ञानिक ग्रंथ होने पर भी इसके पढ़ने में खूब जी लगता है । इसकी प्रत्येक बात कुतूहल-वर्द्धक है । सब बातें बड़ी सरलता से समझाई गई हैं । हमें आशा है कि हिंदी के प्रेमी इस नये ज्ञान के साधन को अवश्य अपनावेंगे । पृष्ठ-संख्या ४०० । छपाई और काग़ज़ बढ़िया । मूल्य २।) राज-संस्करण के ३)

प्राचीन-साहित्य

महाकवि रवींद्रनाथ ठाकुर के निबंधों का अनुवाद । इसमें १ रामायण, २ धम्मपद, ३ कुमारसंभव और शकुंतला, ४ शकुंतला, ५ मेघदूत, ६ कादंबरी और ७ काव्य की उपेक्षिता ये सात निबंध हैं और इनमें कालिदास, वाल्मीकि, बाण आदि महाकवियों की रचनाओं की तथा उनके काव्यों के पात्रों की अनूठी और अपूर्व आलोचना की गई है । विशेष प्रशंसा करने की आवश्यकता नहीं । रवींद्रनाथ बाबू का नाम ही इसके लिये काफ़ी है । संस्कृत-काव्य-प्रेमियों और संस्कृत के उच्च श्रेणी के विद्यार्थियों को इसे अवश्य पढ़ना चाहिए । मू० ॥=)

समाज

यह भी रवींद्र बाबू के एक निबंधसंग्रह का अनुवाद है । इसमें १ आचार का अत्याचार, २ समुद्रयात्रा, ३ विलास की फाँसी, ४ नक़ल का निकम्मापन, ५ प्राच्य और प्रतीच्य, ६ अयोग्य भक्ति, ७ पूर्व और पश्चिम तथा ८ चिट्ठी-पत्री ये आठ निबंध हैं । हिंदी में सामाजिक विषयों पर विचार-पूर्ण आलोचनाओं का अभाव देखकर हमने इसे प्रकाशित किया है । पाठक पढ़कर अवश्य प्रसन्न होंगे । मू० ॥।=)

अंजना

हिंदी के लब्धप्रतिष्ठ गल्प-लेखक, श्रीयुत 'सुदर्शन' का यह सबसे पहला नाटक है । आशा है कि उनकी गल्पों के समान यह भी आदर के साथ पढ़ा जायगा । यह एक पौराणिक कथा के आधार पर द्विजेंद्र बाबू के ढंग पर लिखा गया है । मू० १)

जननी और शिशु

अर्थात् जच्चा और बच्चा । लेखक—बाबू सूरजभानजी वकील । स्त्रियोपयोगी उत्तम पुस्तक । मूल्य ॥-)

नोट—हमारी पुस्तकें भारत के सभी प्रसिद्ध बुक्सेलरों के यहाँ मिलती हैं ।

१८/४४

हमारा पता—हिंदी-ग्रंथ-रत्नाकर-कार्यालय, हीराबाग़, गिरगाँव, बंबई

जगत्-प्रसिद्ध, तत्काल फल देनेवाली आयुर्वेदीय चमत्कारक औषधियाँ
साध्य रोगों का शर्तिया इलाज, फ़ायदा न हो तो मूल्य वापस

केशकांति तैल--केश व दिमाग़ के हक़ में आज तक ऐसा महासुगंधित अपूर्व गुणकारी तैल ईजाद नहीं हुआ। इसके लगाने से दिमाग़ शीतल होता है, चित्त प्रसन्न होता है, मन की अस्थिरता, चक्कर आना, दिमाग़ की कमज़ोरी, मूर्च्छा, हाथ-पैर की जलन आदि रोग आराम होते हैं, बाल स्याह (काले) होकर रेशम के समान हो जाते हैं, चेहरा सुर्ख़ हो जाता है। एक दिन लगाने से कई दिन तक इसकी सुगंधि रहती है। एक बार अवश्य परीक्षा कीजिए। मूल्य १ शीशी ॥।), १२ शीशी ८) रु०, -) का टिकट भेजने से नमूना मुफ़्त भेजा जाता है।

बालपोषण—कमज़ोर, पतले बच्चों को मोटा-ताज़ा, ताक़तवर बनाने व सर्व रोगों की हुक्मी दवा। बच्चे इस मीठी दवा को खुशी से पीते हैं। मूल्य १ शीशी ॥), १ दर्जन ५) रु०

प्रदरनाशक—सफ़ेद, नीला, पीला आदि सर्व प्रदर, बहुमूत्र, सर्व योनिरोग व स्त्रीरोग की शर्तिया दवा। मूल्य १ बक्स १॥) रु०

सर्वरोगांतक वटी—कफ, खाँसी, हैज़ा, दमा, शूल, संग्रहणी, पेट-दर्द, सर्व प्रकार के ज्वर आदि सर्व रोगों की अक्सीर दवा। मूल्य १ बक्स ॥), १ दर्जन ५) रु०

मलेरिया ज्वर वटी—मलेरिया, जाड़े के बुख़ार, इकतरा, तिजारी और वात-ज्वर की अक्सीर दवा है। मू०।)

दंत-मंजन--दंत, ओष्ठ, मुख, मसूढ़ा आदि रोगों से रक्षा करनेवाला खुशबूदार मंजन। मूल्य १ डिबिया ≡), ६ डिबिया १)

नोट-(१) विशेष हाल जानने के लिये सूचीपत्र मुफ़्त मँगाइए, (२) डाक, पैकिंग-ख़र्च ज़िम्मे ग्राहकों के होगा, (३) कमीशन-एजेंटों की हर जगह ज़रूरत है।

पताः—वैद्य सुरेंद्रबालादेवी गुप्ता, स्त्रीबालोपकारक औषधालय,
चँदौसी यू० पी०

१४/४६

को स्वर्ण-पदक प्राप्त

हिंदी-शॉर्ट-हैंड

३) में घर बैठे केवल चार महीने के परिश्रम से २००) महीने तक कमाइए। महाराज अलवर के यहाँ एक सज्जन १५०) मासिक पर और दो १००) पर नियुक्त हुए हैं। कुल बड़ी रियासतों में इनकी बड़ी माँग है। ४०) से १००) तक की माँगें मेरे पास आई हुई हैं। कांग्रेस तथा हिं० सा० सम्मेलन की कुल काररवाई इसी प्रणाली द्वारा ली जाती है। पत्र द्वारा मुफ़्त सहायता दी जाती है। बनारस में हिंदी कमर्शियल कॉलेज खुलनेवाला है जिसमें हिंदी-शॉर्ट-हैंड, हिंदी तथा अँगरेज़ी टाइप-राइटिंग और हिंदी-बहीखाता की शिक्षा दी जायगी। भर्ती होना हो तो पत्र-व्यवहार कीजिए। हिंदी-शॉर्ट-हैंड की पुस्तक मूल्य २) कुंजी मूल्य १)

पुस्तक मिलने का पता—

निष्कामेश्वर मिश्र बी०ए०, एल्-टी०,
लाहौरी टोला, बनारस सिटी।

१/२८/१

हर क़िस्म की बढ़िया रबर की मुहर
ऐसी २॥) रु.
सूची मुफ्त
जी. सी. खत्री, रबर स्टाम्प. काशी

सीधी लाइन की सादी मुहर (केवल अक्षरों की दो लाइनें, २ इंच लंबी, और आधा इंच चौड़ी तक) छापने का सामान सहित। मूल्य १) डा० ख़० ।≡) बड़ी होने से दाम अधिक होगा। हिंदी, अँगरेज़ी, उर्दू, बँगला कोई भाषा हो। अंडाकार मुहर जैसा ऊपर नमूना है, २॥) मय सामान। डा० ख़र्च ।≡) काम देखकर खुश होंगे।

पताः—**जी० सी० खत्री, रबर स्टांप मेकर,**
बनारस सिटी।

१६/२४

देश, देह और
द्रव्य के लिये

झंडू की

शुद्ध, सुंदर, सुघड़,
सलामत, सुगमता-
वाली, अचूक, सस्ती

आयुर्वैदिक दवाइयों

के व्यवहार करने के लिये हम आपसे क्यों आग्रह करते हैं ?

कई कारण:—

१—शास्त्रीय पाठ—

हमारे यहाँ प्रायः सभी दवाइयाँ प्राचीन आयुर्वैदिक ग्रंथों के पाठ के अनुसार तैयार की जाती हैं। देश की वस्तु, देश की पूँजी और देश की मज़दूरी, पुराना अनुभव, पूरी शुद्धता और ख़ास देख-रेख—हमारी दवाओं के बनाने में इन सभी साधनों से काम लिया जाता है।

२—सत्त्व और रूप—

हमारे यहाँ की औषधियाँ अंतिम ढंग के यंत्रों-द्वारा, शुद्धता और पवित्रता पर पूरा ध्यान रखकर, ताज़ी और गुणदायक वस्तुओं से तैयार की जाती हैं। इसी कारण देखते ही व्यवहार करने को तबियत चटपटाने लगती है।

३—सोने का पदक—

अखिल भारतवर्षीय आयुर्वैदिक सम्मेलन मदरास सन् १९१२, कलकत्ता सन् १९१४ और पूना सन् १९१७ की प्रदर्शनी में, तीन बार हमारी दवाइयों की श्रेष्ठता के लिये हमें सोने के पदक मिले हैं।

४—प्रशंसा और प्रचार—बारह वर्ष की कारवाई में राजा-महाराजा और लोकमान्य तिलक आदि महामान्य पुरुषों ने हमारे कारख़ाने को देखकर हमारी दवाइयों की प्रशंसा की है। बड़ोदा आदि कई राज्यों और बहुत-से सरकारी दवाख़ानों में हमारी दवाइयाँ जाती हैं। साधारण स्थिति के लोगों में तो इनका प्रचार बहुत ही अधिक है और बढ़ता जा रहा है। बहुत-सी थोड़े दाम की, परंतु उपयोगी दवाइयाँ, बाल-बच्चेवाले घरों में घड़ी-घड़ी होनेवाली छोटी-छोटी बीमारियों के लिये अकसीर दवा के रूप में अनेक घरों में संग्रह रक्खी जाती हैं। हमारा सूचीपत्र मँगाकर, जिस औषधि की आवश्यकता हो, मँगाइए और व्यवहार कीजिए। फिर आपको डॉक्टर ढूँढ़ने की भी ज़रूरत न रहेगी।

शारीरिक और मानसिक मेहनत करनेवालों के लिये

तंदुरुस्ती, और ताज़गी देनेवाली दो अमूल्य औषधियाँ

च्यवन-प्राश
ढाई रुपए रत्तल,

फ़ौरन् व्यवहार कीजिए

द्राक्षासव
दो रुपए का डेढ़ रत्तल

पताः—झंडू फ़र्मास्युटिकल वर्क्स लिमिटेड,
एल्फ़िंस्टन रोड, बंबई, नं० १३।

१३६
१७१

आयुर्वैदिक दवाइयों का सूचीपत्र आज ही मँगाइए।

तीन महीने में हारमोनियम सिखानेवाली किताब । इससे घर बैठे आप मरम्मत भी कर सकते हैं। किताब बहुत सहल है। मूल्य १।)

कलकत्ते में सबसे उम्दा बाजे की दूकान--क़ीमती बाजे में किसी तरह की शिकायत निकालनेवाले को १००) इनाम

हमारे यहाँ बड़े-बड़े राजा-महाराजाओं के लिये सोने-चाँदी के चाभी के हारमोनियम हर समय तैयार रहते हैं । क़ीमत सिंगल रीड १८), २०), २२) से ५०) तक। डबल रीड ३०), ३५), ४०), ४५) से ३००) तक। फ़ोल्डिंग ६०), १००), १२५), १५०) से ५००) तक। ग्रामोफोन ५०), ६०), ७०) से ३००) तक। ताँबे की डुग्गी और तबले क़ीमत १२), १५), १८), २०)। पीतल की बाँसुरी, सितार, इसराज और बाजे के मुतअल्लिक़ जितनी भी चीज़ें हैं, सब मिलेंगी। पैकारियों के लिये कलकत्ते में सब दूकानों से ख़ास रियायत की जाती है। परीक्षा प्रार्थनीय है।

पता—बी० व्ही० घोटकर,

तार का पता
GHOTKER

१६०/६० Barman's Advertising Service

३०, अपर, चितपुर रोड, कलकत्ता।

प्रोफ़ेसर गज्जर की "आयोनिक औषधियाँ"

ऐग्यू मिक्श्चर—मलेरिया, ढेंगू आदि के लिये फ़ीव्हर ड्राप्स (ज्वर-बिंदु)—अति उत्तम और सस्ता मू०	१)
इन्फ़्ल्युएंज़ा और निमोनिया प्रतिरोधक और निवारक मू०	१)
लीव्हर सल्यूशन (सबसे अच्छी दस्तावर दवा) मू० ...	१।)
ब्लड प्योरिफ़ाइंग मिक्श्चर (खून साफ़ करने की दवा) मू०	१।)
टानिक सल्यूशन (सबसे अच्छा टानिक मू०	१॥),२॥)
स्टैंडर्ड यू०डी०जेफलोन—सबसे सस्ता	१।),१॥)
स्टैंडर्ड हेअर डच	३)
,, पेन रिलीवर (दर्द आराम करनेवाली दवा) मू०	॥)
,, बाम	।),॥)
,, बालामृत	॥)
,, एंब्रोकेशन	१)
,, गजरेल हेअर आइल (सुवासित तेल)	॥)
,, हर एक प्रकार की टिकिया	॥)
स्टैंडर्ड बी० पी० टिंचर	२॥)

खाँसी की गोलियाँ, दंतमंजन, दाद का मलहम, आदि विशेष हाल, तथा सविस्तार सूचीपत्र के लिये लिखिए।

एम्० जे० गज्जर, एम्० ए०, एफ्० सी० एस्०,

१३८/२७३

गज्जर स्टैंडर्ड केमिकल वर्क, बंबई नंबर ४

THE U. I. C. PAPER MILLS CO., LTD.,

LUCKNOW.

One of the oldest paper Mills in India managed and financed by Indians only under purely Indian directorate. Manufacturers of various varieties of paper. For free samples, terms and agency proposals for unrepresented areas apply to—

THE SECRETARY.

अपर इंडिया कूपर पेपर मिल कंपनी लिमिटेड,

लखनऊ।

भारतवर्ष में यह सबसे पुरानी मिल है, जिसका प्रबंध भी भारतवासियों के हाथ में है और मूल धन भारतवासियों ही का है। इस मिल में हर प्रकार का काग़ज़ तैयार होता है, जो कि भारतवर्ष की अन्यान्य मिलों से पायेदार और बढ़िया होता है। नमूने के लिये, और जिन शहरों में एजेंसी नहीं है, वहाँ की शर्तों के लिये, सेक्रेटरी से पत्र-व्यवहार कीजिए।

निवेदक—
सेक्रेटरी।

१४/१४

CROWN COOKER

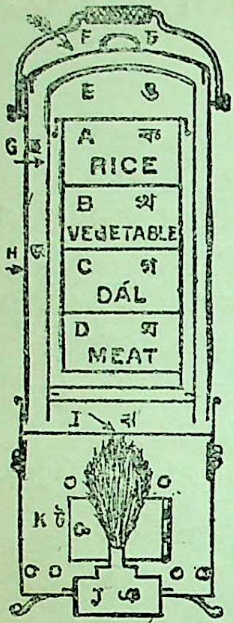

(Invented by the renowned E. B. GENIUS, Mr. G. K. PAUL) has been the talk of the day as the Crown of all other Cookers, (made of Brass and Galvanized sheets both).

At one's ten minutes cost itself cooks several palatable dishes collectively.

Prices from Rs. 8-and upwards.

Price list free from MANAGER,

CROWN COOKER,
54, Canning Street,
OR
276, Bow Bazar Street, } **CALCUTTA.**

Telegraphic address:—
"RAJ HANSA," CALCUTTA.

१४८ / ११६

देशी दवाखाना।

भारत भैषज्य भाण्डार

नं० ७८ काटन स्ट्रीट (बड़ाबाजार) कलकत्ता

यहाँ पर आयुर्वेदोक्त समस्त ओषधि हर वक़्त तैयार मिलती हैं। धातु, उपधातु, भस्म, रस, गोली, चूर्ण, आसव, अरिष्ट, अवलेह, पाक, घृत, तैल, वटी, मोदक इत्यादि और पसारठ की सब चीज़ें जड़ी, बूटी, तथा सब रक़म का क्षार, सत, असली कस्तूरी, पवित्र केसर, पीपल चौंसठ प्रहरी, भीमसेनी कपूर, गोरोचन, शुद्ध शिलाजीत इत्यादि बहुत-सी चीज़ें सर्वदा तैयार मिलती हैं और संपूर्ण रोग आराम किए जाते हैं। बाहर के लोगों को वी० पी० पोस्ट द्वारा दवा भेजते हैं और (आढ़त पर) कलकत्ता से सब प्रकार का माल बाहर भेजते हैं। सूचीपत्र मुफ़्त भेजते हैं, पत्र लिखिए। कार्याध्यक्ष महादेव शर्मा।

२८ / १२३ पता—भारत-भैषज्य-भांडार
नं० ७८ काटन स्ट्रीट, कलकत्ता

कृषि-संबंधी पुस्तकें

१. खाद और उनका व्यवहार	।)
२. लाख की खेती	।)
३. धान की खेती	।)
४. नींबू नारंगी	०)
५. मूँगफली की खेती	-)
६. कपास की खेती	॥)
७. पौंड़ा, गन्ना, ऊख	॥)
८. कृषि-सिद्धांत	।)
९. कृषिसार	१)

२८ / ८४ पता—कृषि-भवन, प्रयाग

असल
रुद्राक्ष माला

दस दाना नमूना तथा रुद्राक्ष महात्म्य मुफ़्त मंगा देखिये।

राम दास एण्ड को०
३ चोर बागान स्ट्रीट।
कलकत्ता

जगत्प्रसिद्ध हिमकल्याण तैल !

तत्काल फलदायक ! महासुगंधित !!

यदि आप जीवन का सच्चा सुख देखना चाहते हैं और पवित्र तथा उपयोगी तैलों के लगाने का शौक़ रखते हैं, तो हमारा "जगत्प्रसिद्ध हिमकल्याण तैल" मँगाइए। यह तैल आजकल के तैलों की भाँति मस्तिष्क-शक्ति-नाशक मिट्टी के तैल पर विदेशी सुगंध के मिश्रण से नहीं बनाया जाता ; बल्कि ख़ालिस तिल के तैल से पवित्र और देशी औषधियों तथा जड़ी-बूटियों द्वारा वैद्यक-शास्त्र के मतानुकूल परम स्वच्छता से तैयार किया गया है। इसके लगाते ही कठिन-से-कठिन सिर-दर्द पाँच मिनट के अंदर शर्तिया और समूल नष्ट हो जाता है। दिमाग़ की कमज़ोरी, चक्कर आना, बालों का पकना, गंज-रोग, आँखों में जलन और सुर्ख़ी का रहना, आग से जल जाना, प्यास लगना, नाक से ख़ून गिरना, रतौंधी, आधे सिर का दर्द, समलवायु का दर्द, मृगी, उन्माद इत्यादि दोष अल्प काल में निस्संदेह दूर होकर रुई के समान कमज़ोर दिमाग़ पत्थर के समान दृढ़ हो जाता है। दिन-भर लिखते-पढ़ते और दिमाग़ी परिश्रम करते-करते जब आप थक जाइए, तो थोड़ा-सा यह तैल लगाकर देखिए, १० मिनट के बाद ऐसा जान पड़ेगा मानो, आपने परिश्रम किया ही न था। आपका दिमाग़ तरोताज़ा और चित्त प्रसन्न हो जायगा। इस तैल की उत्तमता पर मुग्ध होकर बड़े-बड़े राजा, महाराजा, गवर्नमेंट ऑफ़िसर्स तथा वैद्य, डॉक्टर और हकीमों ने अनेकों प्रशंसा-पत्र और कई स्वर्ण-पदक आविष्कर्ता को दिए हैं, गवर्नमेंट ने भी कृपा कर आविष्कर्ता के कार्य की सरलता के लिये उसके मकान ही पर हिमकल्याण तैल के नाम पर "हिमकल्याण" नाम का पोस्ट ऑफ़िस खोल दिया है। प्रशंसा-पत्रों का पूरा विवरण बड़े सूचीपत्र में देखिए।

नाम-मात्र को तैल, किंतु गुण अमिय लजावत।
शिर के सारे रोग, मित्र यह तुरत भजावत॥
इसकी सुंदर छटा, देखि पशु-गण मस्ताने।
फिर रसिकन की दशा, कहो जग कौन बखाने॥
सांप्रत अगणित तैल, जहाँ देखो दरसाते।
निज-निज रुचि अनुसार, सभी उनके गुण गाते॥
किंतु एक ही बार, जिन्होंने इसे लगाया।
लोकोत्तर आह्लाद, पाय इसको अपनाया॥
सुलभ मूल्य गुण देखि, इसे चाहत नृप, रंका।
तत्कालहि फल देत, बजत भारत में डंका॥

हमारे तैल के विषय में प्रतिष्ठित सज्जनों की सम्मति !

कलकत्ते के स्वर्ण-पदक-प्राप्त प्रसिद्ध डॉक्टर बी॰ डी॰ शर्मन बी॰ ए॰ एच्॰ एम्॰ बी॰ एम्॰ एस्॰ (लंदन) एफ्॰ आर्॰ एस्॰ ए॰ आई॰ ऐंड सी॰ (ग्लासगो) लिखते हैं—"हमने आपके जगत्प्रसिद्ध हिमकल्याण तैल की स्वयं परीक्षा करके निर्णय किया है कि यह शुद्ध तिल के तैल पर पवित्र देशी औषधियों से बना हुआ है और उन समस्त रोगों के नाश करने में पूरी शक्ति रखता है, जिनका वर्णन आपने अपने सूचीपत्र में किया है………………।"

मूल्य १ शीशी का १) अध्यापकों, छात्रों और माधुरी के ग्राहकों से आधा दाम ; किंतु इस मूल्य पर २ शीशी से कम नहीं भेज सकते। ४ शीशी लेने से १ शीशी उपहार देंगे। महसूल ज़िम्मे ख़रीदार।

राजा-महाराजाओं से स्वर्ण-पदक और प्रशंसा-पत्र प्राप्त हुए—

पं॰ गदाधरप्रसाद शर्मा राजवैद्य, हिमकल्याण बिल्डिंग्स—इलाहाबाद।

शुद्ध और शास्त्रोक्त

आयुर्वेदिक औषधियों का संग्रह

हर प्रकार की दवाइयाँ

सस्ते दामों में

चुनी हुई अद्भुत औषधियाँ

स्वर्णघटित मकरध्वज १६) तो०, स्वर्णवसंतमालती ८) तो०, चंद्रप्रभावटी २) तो०, च्यवनप्राश ८) सेर, शुद्ध शिलाजीत १॥) तो० और महानारायण तैल १६) सेर।

मलेरिया की गोलियाँ ॥) में १००

हज़ारों रोगियों में परीक्षित अनेक प्रशंसापत्र-प्राप्त यह गोलियाँ मलेरिया ज्वर, और जाड़ा-बुख़ार में जादू का-सा असर दिखाती हैं। ऐसी अव्यर्थ औषधि यह पहली बार निकली है।

कोई भी औषधि आवश्यक हो, लिखिए:—

१४८/११३ **मारवाड़ी रिलीफ़ सोसाइटी, ७-१, जगमोहन मल्लिक लेन, कलकत्ता।**

West End Watches at concession rates!

Catalogue free on application.
Please write to or call at:—
M. KAZIM & Co.,
33, Aminabad Park,
LUCKNOW.
२२/६०५

व्यापारियों के हित की बात

हमारे यहाँ से देशी, जापानी, और अँगरेज़ी सूत हर प्रकार का जैसे ऊनी, रेशमी, मरसेराइज़्ड और मोज़े इत्यादि बुनने का सामान जैसे हील्ड्स (Healds) रीड्स (Reeds) पिकर्स (Pickers) और शटर्स (Shutters) इत्यादि बहुत बढ़िया और सस्ते मूल्य में मिलते हैं।

हिंदी और अँगरेज़ी में पत्र-व्यवहार करो।

पता:—

रत्तीलाल, भीखा भाई

पो० गिरगाँव, बंबई
१८/६६

समन्वय

उच्च कोटि का धार्मिक मासिक पत्र।

दर्शन, समाज, शिक्षा आदि-संबंधी उत्तमोत्तम लेखों से भी विभूषित।

"सरस्वती" की राय—"छपाई सुंदर है। वार्षिक मूल्य ३) है। इसका विषय आध्यात्मिक है, पर विषयों की विवेचना बड़ी सुंदर रीति से की जाती है। ......हमें विश्वास है कि हिंदी-साहित्य के प्रेमी इस पत्रिका का उचित आदर करेंगे"—

देखिए "प्रभा" क्या कहती है—"वर्तमान भारत के आचार्य स्वामी विवेकानंद और उनके गुरुदेव के उपदेशामृत से लाभ उठाने के लिये समन्वय अवश्य पढ़ना चाहिए। पत्र का संपादन अच्छा होता है और उसके लेख आत्मा को ऊँचा उठानेवाले होते हैं। हमें आशा है कि हिंदी-भाषा-भाषी समन्वय को अवश्य अपनावेंगे।"

माधुरी—"पत्र में बहुत सुंदर सार-गर्भ लेख रहते हैं। सामयिकता की भी मात्रा यथेष्ट होती है। धार्मिक ज्ञानोपार्जन का यह एक सुलभ साधन है। इस विषय का हिंदी में यही एक पत्र है, यह कहना भी अनुचित न होगा। ......पत्र का संपादन भी योग्यता के साथ" इ०।

ग़रीब छात्रों और निःशुल्क वाचनालयों के लिये २) अग्रिम रुपया भेजकर ग्राहक बनिए या वी० पी० भेजने की आज्ञा आज ही लिख भेजिए।

व्यवस्थापक "समन्वय"

२०/८५ नं० २८ कॉलेज स्ट्रीट मार्केट, कलकत्ता।

◆ ◆ ◆

मुफ़्त! मुफ़्त!! मुफ़्त!!!

दमे की दवाई

चाहे कैसा पुराना दमा का रोग क्यों न हो, शर्तिया दूर हो जाता है। सिर्फ़ ।-) के टिकट डाक-व्यय के लिये आने से दवा मुफ़्त भेजी जाती है।

पता—**बैजनाथ जैतिली,**
हटिया,
कानपुर।

२२/१४

पीयूषसिन्धु

कफ, खांसी,
दमा, हैजा, पेचिस,
पेटदर्द, संग्रहणी, केहोना
बच्चोंके दस्त, इनफ्लुएंजा
आदिरोगोंकी स्वादिष्ट
विना अनोपान कीदवा
मू०।।) दरजन ४)

सुन्दरश्रृंगारमहौषधालय मथुरा

दाद का काल

विना किसी जलन और कष्ट के पुराने-से-पुराने और हर तरह के दाद को सिर्फ़ २४ घंटे में जड़ से खोनेवाली दाद की शर्तिया दवा। मू० फ़ी शीशी ।) आना डा०-ख़० १ से ४ तक ॥) एक दर्जन एकसाथ लेने से घर बैठे १॥।-)

बाल-पुष्ट सीरप

पतले, दुबले और कमज़ोर बच्चों के सब रोग दूर करके उनको ताक़तवर और तंदुरुस्त बनानेवाली मीठी दवा। मू० फ़ी शीशी ॥) आ०, डा०-ख़० १ से ३ तक ॥) आ०, एक दर्जन एकसाथ लेने से घर बैठे ४॥≡)

श्रीमान् भगवतीप्रसादजी त्रिपाठी म्युनिसिपल कमिश्नर रायबरेली से लिखते हैं—"मैं आपका बनाया "बाल-पुष्ट सीरप" ४ वर्ष से प्रयोग में लाता हूँ। इसके कारण हमारा तमाम व्यय जो हकीमों और डॉक्टरों में हुआ करता था, बंद हो गया। बेशक इससे लड़के तंदुरुस्त रहते हैं और बच्चों के दाँत निकलने के लिये यह एक रामबाण है। कृपा कर ३ शीशी "बाल-पुष्ट सीरप" शीघ्र रवाना कीजिए।"

मिलने का ठिकाना—

सुंदर श्रृंगार महौषधालय,
क (ब्रांच) मथुरा।

२०/५४

अनेक रोगोंकी एक दवा

२० वर्षका आजमूदा

जगत प्रसिद्ध

चन्द्रामृत

बच्चे, जवान, बूढ़े, स्त्री, पुरुषों के सब रोगोंकी अक्सीर दवा

हर मनुष्यको हर ऋतु में हर देशमें हर घर और हर पाकेट में रखनी चाहिये।

की० ॥।) सी० तीन सीसी - २)

मिलने का पताः—

चन्द्रसेन जैन वैद्य

इटावह

बड़ी सूची मुफ्त मंगा देखिये

२२/पृ७

आयुर्वेदीय सचित्र मासिक पत्र

धन्वंतरिः

इसमें प्राचीन और अर्वाचीन वैद्यक-संबंधी सारगर्भित और विवेचना-पूर्ण लेख निकलते हैं। यह पत्र वैद्यों के अतिरिक्त सर्व-साधारण एवम् रोगियों के लिये भी विशेष उपयोगी है। वार्षिक मूल्य २) उपहार में २) की उपयोगी वैद्यक पुस्तकें मुफ़्त। नमूना मुफ़्त मँगाकर देखो।

पता—वैद्य बाँकेलाल गुप्त श्रीधन्वंतरि-कार्यालय,

३४/१३८ विजयगढ़ (ज़ि० अलीगढ़)

भारत-सरकार से रजिस्ट्री किया हुआ!

२७००० एजेंटों द्वारा बिकना दवा की सफलता का सबसे अच्छा प्रमाण है।

सुधासिन्धु

(विना अनुपान की दवा)

यह एक स्वादिष्ट और सुगंधित दवा है, जिसके सेवन करने से कफ़, खाँसी, हैज़ा, दमा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट का दर्द, बालकों के हरे-पीले दस्त, इनफ़्लुएंज़ा इत्यादि रोगों को शर्तिया फ़ायदा होता है। मूल्य ॥), डा०-ख़० १ से २ तक।=)

दद्रुगजकेसरी

(दाद की दवा)

विना जलन और तकलीफ़ के दाद को २४ घंटे में आराम करनेवाली सिर्फ़ यही एक दवा है। मूल्य फ़ी शीशी।) डा०-ख़० १ से २ तक।≈), १२ लेने से २।) में घर बैठे देंगे।

बालसुधा

दुबले-पतले और सदैव रोगी रहनेवाले बच्चों का मोटा और तंदुरुस्त बनाना हो, तो इस मीठी दवा को मँगाकर पिलाइए। बच्चे इसे ख़ुशी से पीते हैं। दाम फ़ी शीशी ॥।), डाक-ख़र्च।≈)

पूरा हाल जानने के लिये बड़ा सूचीपत्र मँगाकर देखिए। मुफ़्त मिलेगा।

१८/५ पता—सुख-संचारक कंपनी, मथुरा

One of the Biggest Firm in U. P.

NEWUL KISHORE EMPORIUM,

75, HAZRATGANJ,

LUCKNOW.

Booksellers, Stationers, Paper-merchants, dealers and repairers of firearms and ammunition, etc.

नवलकिशोर-इम्पोरियम

हमारे यहाँ हर प्रकार की पुस्तकें, काग़ज़, पेंसिल, लिफ़ाफ़े, होल्डर, हर प्रकार के निब, क़लमदान, नरिथयाँ व दफ़्तर का कुल सामान, खिलौने और विलायती सेंट व इत्र वग़ैरह बड़ी किफ़ायत से मिलते हैं। इनके सिवा हमारे यहाँ कारतूसी बंदूक़, पिस्तौल, टोपीदार बंदूक़, हर क़िस्म के कारतूस अथवा टोपियाँ आदि भी बिकने के लिये मौजूद रहती हैं। विलायत की तरह हर प्रकार की मरम्मत भी बहुत अच्छे-अच्छे कारीगरों द्वारा की जाती है। एक बार आज़माइए।

मैनेजर,

नवलकिशोर-इम्पोरियम, लखनऊ

H. MAJUMDAR
THE INDIAN ACADEMY OF ART
An Illustrated Journal of Fine Arts

आनंद-संवाद ! आनंद-संवाद !!

"शिल्पी हेमेंद्रनाथ"

दूसरा खंड भी प्रकाशित हो गया

जिनके चित्रों को देखते ही हृदय में अपार आनंद उपजता है—जिन्होंने कलकत्ता, बंबई, मदरास, शिमला प्रभृति प्रदर्शिनी के सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार को प्राप्त कर चित्रण-शक्ति का अद्भुत परिचय दिखाया है—सौंदर्य-सृष्टि में जो कल्पना को जागृत तथा आत्मा को स्पर्श कर सकते हैं, वही परिकल्पना के सर्वश्रेष्ठ चित्रकार श्रीयुत यच० मजुमदार के सुप्रसिद्ध बारह चित्रों का यह अपूर्व संग्रह है। देखते ही आप मुग्ध हो जायँगे—आज ही नीचे लिखे हुए पते से मँगाइए। दाम पहला खंड १॥) वी० पी० से १॥।-) दूसरा खंड १॥।) वी० पी० से २)

मैनेजर, दि इंडियन एकाडेमी ऑफ़ आर्ट

३० / १३६ २४ नं० बिडनस्ट्रीट, कलकत्ता।

RUBBER STAMPS
OF ALL
Sizes & Shapes
IN
English, Urdu and Hindi
MADE BY
Bhola Nath & Co.,
STATIONERS & PAPER MERCHANTS,
LUCKNOW.

Brass Badges and Seals in any language made to order.

१२/५

सरदार-कंपनी
ग्रैमोफ़ोन-एजेंट
नं० ३१ अमीनाबाद पार्क, लखनऊ

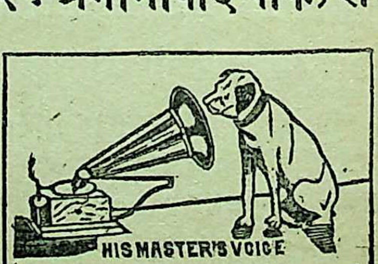
HIS MASTER'S VOICE

सब प्रकार के ग्रैमोफ़ोन और उनके रिकार्डों के लिये हमारा सूची-पत्र मुफ़्त मँगाइए।

१२/२७

व्यर्थ समय न खोइए ! पैसे की बचत कीजिए !!

पुस्तकें ख़रीदने में विशेष सुभीता

हिंदी-संसार की कहीं से भी प्रकाशित किसी भी पुस्तक

की यदि आपको कभी आवश्यकता पड़े,

तो

हमें एक पत्र डाल दीजिए।

अब आपको इधर-उधर—बीसों जगह—भटकने की ज़रूरत नहीं रही,

क्योंकि

हिंदुस्थान में हिंदी-पुस्तकों की हमारी ही सबसे बड़ी दूकान है।

हमारी दूकान में राष्ट्रीय, धार्मिक, नाटक, काव्य, उपन्यास, इतिहास, प्रहसन, गल्प, विज्ञान, खेती, मनोरंजन आदि-आदि सभी विषयों की हिंदी-पुस्तकों का बहुत बड़ा संग्रह है। हमारे यहाँ २०० से भी कहीं ज़्यादा हिंदी-प्रकाशकों के ग्रंथ रहते हैं। १५० प्रकाशकों के तो हम सोल-एजेंट ही हैं। इसलिये सब प्रकार की पुस्तकें एक ही स्थान—

हमारे यहाँ से—मँगाने से डाक-ख़र्च तथा समय दोनों की बचत होती है।

हमारे यहाँ इस बात की बड़ी सावधानी रक्खी जाती है कि ग्राहकों को किसी प्रकार की हानि न उठानी पड़े, उनको हर हालत में लाभ ही हो। अतः हम पत्र पहुँचते ही पुस्तकें तुरंत रवाना करते हैं। यदि किसी कारणवश विलंब होने की संभावना रहती है तो भी पत्र द्वारा सूचना शीघ्र ही दे दी जाती है।

माधुरी की साहित्य-सूचना

में जिन पुस्तकों की सूचना प्रकाशित होती है, वे सब पुस्तकें भी हमारे ही यहाँ से मिलती हैं।

अपने ढंग का अनोखा तथा बिलकुल नया और बड़ा सूचीपत्र छपकर तैयार है। डाक-व्यय के लिये एक आने का टिकट भेजकर मुफ़्त मँगा लीजिए।

हमारा पता नोट कर लीजिए—

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, २६-३० अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

गृहस्थों के लिये दो रत्न

गोरस और गोवर्द्धन-शास्त्र

हिंदी-भाषा में डेअरी-विषयक ऐसा सर्वांग-पूर्ण दूसरा ग्रंथ नहीं है । यह गृहस्थों का सहायक और डेअरी-फ़ार्मों के संचालकों का सच्चा मार्ग-दर्शक है । इसके द्वारा गोशालाओं के प्रबंधक भी अपनी उन्नति आसानी से कर सकते हैं । इसमें गोशाला, चारा-दाना, गऊ की रक्षा, दूध और उसके गुण-धर्म, दही, मक्खन, घी, क्रीम, दूध की परीक्षा, पशुओं के साधारण रोग, पशुओं की उत्पत्ति का वर्णन, दूध देनेवाले पशुओं की प्रसिद्ध जातियाँ, डेअरी का हिसाब-किताब रखने की रीति आदि-आदि कई एक उपयोगी अध्यायों का वर्णन है । दूध, क्रीम-संबंधी अन्य भिन्न जातियों के जानवरों के चित्र भी दिए गए हैं । डेअरी-फ़ार्म तथा गोशाला से संबंध रखनेवाले और गऊ पालनेवाले प्रत्येक गृहस्थ को इसे मँगाकर पढ़ना चाहिए । हिंदी-साहित्य-सम्मेलन ने अपनी मध्यमा की परीक्षा में इसे स्वीकृत किया है । मूल्य केवल २), अधिक प्रतियाँ—इकट्ठी लेने पर—बुकसेलरों को कमीशन भी दिया जाता है ।

हमारे शरीर की रचना

स्वास्थ्य की रक्षा करने के लिये, शरीर की बनावट और अंगों की रचना का जानना परमावश्यक है । इसलिये डॉ० त्रिलोकीनाथ वर्मा-कृत उपर्युक्त उपयोगी पुस्तक पढ़िए । इसमें सैकड़ों चित्रों की सहायता से, संपूर्ण मनुष्य-शरीर की बनावट तथा उसके सब अंगों की रचना और लक्षण का अत्यंत मनोरंजक तथा सरल भाषा में वर्णन किया गया है । यह ग्रंथ पढ़ने में उतना ही रोचक है, जितना कोई अच्छा उपन्यास । स्त्रियों को पुरुषों की अपेक्षा यह अधिक आवश्यक है कि शरीर की रचना जानें । इसमें शरीर के धातुओं की रचना पर अति उत्तम विधि से विचार किया गया है । भारतवर्ष की किसी अन्य भाषा में ऐसी पुस्तक अब तक नहीं रची गई है । इसमें लगभग समस्त पारिभाषिक शब्द हिंदी और संस्कृत में दिए हुए हैं । पुस्तक के अंत में हिंदी-पारिभाषिक शब्दों के अँगरेज़ी तुल्यार्थ कोष-रूप में दिए गए हैं । पुस्तक में सुंदर रंगीन और हाफ़टोन ३१२ चित्र आर्ट-पेपर पर छपे हैं । पृष्ठ-संख्या ८२६ है, और सुंदर जिल्द बँधी हुई है । मूल्य पहले भाग का २।।।), दूसरे भाग का ४)

बिलकुल नया, बड़ा सूचीपत्र डाक-व्यय के लिये -) का टिकट भेजकर मुफ़्त मँगाइए

संचालक—गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

जिस घर में कोई चित्र नहीं, वह घर पवित्र नहीं

चित्रों का भारी स्टॉक !

हिंदू और मुसलमानों को स्वतंत्रता

तब ही मिलेगी, जब आप अपने-अपने घरों में अपने देश-बंधु लीडरों की तस्वीरें लगाकर नित्य उनके दर्शन करेंगे, जिससे आपमें और आपकी संतान में देश-सेवा का भाव बढ़ेगा। इसलिये हमने देश के पूज्य नेताओं तथा अन्यान्य राष्ट्रीय और विविध चित्रों का भी भारी संग्रह अपने यहाँ किया है। सब चित्र बहुत सुंदर और चित्ताकर्षक हैं। एक बार कुछ चित्र मँगाकर अपने कमरे की शोभा बढ़ाइए। नीचे कुछ चित्रों के नाम और दाम लिखे जाते हैं—

देशभक्तों के सुंदर चित्र

अली-बंधु (जेल में) -)
लाला लाजपतराय (,,) -)
महाराणा प्रताप रंगीन) -)
ग़ाज़ी अनवरपाशा -)
श्रीयुत दास (सपरिवार) -)
सुब्रह्मन्य अइयर (रंगीन) =)
देश-बंधु चितरंजनदास(,,) -)

अन्य राष्ट्रीय चित्र

स्वराज्य-घोषणा (रंगीन) -)
वंदेमातरम् (,,) -)
सुहासिनीम् (,,) -)
रिपुदलवारिणीम् (,,) -)
वंदिनी (,,) -)
भिखारिणी (रंगीन) -)
वैष्णवी (,,) -)
स्वराज्य-प्रदान (,,) =)
असहयोगी महिलाएँ =)
तिलक-दर्शन =)
स्वराज्य-दर्शन I)
हिंदुस्थान का राष्ट्रीय झंडा =)
अहमदाबाद की कांग्रेस I)
गाँधी की आँधी =)
खिलाफ़त और पंजाब =)

दीपमालिका का अपूर्व और विराट् उपहार ! !

जो महाशय दिवाली तक इस कार्यालय को हमारी बाहरी या पुस्तकों का बड़ा आर्डर भेजेंगे, उन्हें ऊपर लिखे चित्र उपहार में—मुफ़्त—दिए जायँगे। उपहार के चित्र बहुत कम रह गए हैं, चिट्ठियाँ धड़ाधड़ आ रही हैं—शीघ्रता करें—ऐसा मौक़ा फिर न मिलेगा। ब्यौरा इस प्रकार है—

५) से १०) तक की पुस्तकों पर ॥I) के चित्र
१०) ,, १५) ,, ,, ,, ,, २I) ,, ,,
१५) ,, २०) ,, ,, ,, ,, ३॥I) ,, ,,

चित्र अलग रजिस्ट्री से या बैरंग भेजे जायँगे या पुस्तकों की वी० पी० के साथ।

ध्यान रहे कि यह उपहार माला के स्थायी ग्राहकों तथा बुकसेलरों के लिये नहीं है। हाँ, माला के स्थायी ग्राहक चाहें तो अपना कमीशन न लेकर यह उपहार ले सकते हैं।

संचालक गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय, २९-३० अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

चित्र-कला का चमत्कार

रंग-बिरंगे चित्रों का अपूर्व संग्रह

भारतीय भावों का सत्कार

रमेश-चित्रावली

रचयिता—

"माधुरी" के चित्रकार बाबू रामेश्वरप्रसाद वर्मा

इस चित्रावली में बढ़िया-बढ़िया मनमोहक रंगीन पंद्रह चित्र हैं। सभी अच्छे आर्ट-पेपर पर बड़ी कुशलता से छापे गए हैं। साथ में चित्रों का परिचय भी सरस, ओजमयी व भाव-पूर्ण हिंदी-कविता में है, जिससे कि चित्र के पूरे-पूरे भाव को दर्शक हृदयंगम कर सके। कुछ चित्रों के भाव ये हैं—ललिता, कमलकुमारी, दीपक, शुकदेव को व्यास का समझाना, व्यास के विनय करने पर इंद्र का रंभा को बुलाकर शुकदेव को अपनी ओर खींचने के लिये भेजना, रंभा का अपने विचित्र हाव-भाव से शुक को मोहने के लिये प्रयत्न करना तथा निराश रंभा के मुख की उदासीनता—इत्यादि-इत्यादि।

इन चित्रों की प्रशंसा करना व्यर्थ है। जो देखता है, मुग्ध हो जाता है। वह स्वयं तो ग्राहक होता ही है, दूसरों से भी ग्राहक होने के लिये अनुरोध करता है। चीज़ ही ऐसी है।

पुस्तक हर तरह से उपादेय बना दी गई है। इतने पर भी मूल्य सिर्फ़ २), डाक-ख़र्च आदि अलग। हमारे पास अब बहुत ही कम प्रतियाँ रह गई हैं इसलिये यदि आपको चित्र-कला से तनिक भी प्रेम है, तो इसकी एक प्रति आज ही पत्र डाल मँगा लीजिए; नहीं तो पीछे हाथ मलकर पछताना पड़ेगा क्योंकि इतने कम दामों में ऐसा चित्र-संग्रह कहीं मिलने का नहीं।

प्रेम

प्रसिद्ध देश-भक्त और प्रेममय-मूर्ति बाबू अश्विनीकुमार दत्त की सजीव लेखनी से लिखे हुए बँगला "प्रेम" का यह हिंदी-अनुवाद है। इसमें अश्विनी बाबू ने सृष्टि के आदि से लेकर आज तक के संसार के समस्त प्रेमियों और उनके विभिन्न प्रेमों का ऐसा ख़ाका खींचा है कि आप इस पुस्तक को पढ़कर सचमुच आनंदलहरी में एकबारगी ही डूब जायँगे। यदि अपने सूखे जीवन को पवित्र प्रेमामृत पिलाना चाहें, तो आज ही इसको मँगाकर पढ़ें। इसके भूमिका-लेखक हैं कलकत्ता युनिवर्सिटी के हिंदी-लेक्चरार पं० गंगापति-सिंह बी० ए०। पुस्तक सचित्र है। मूल्य केवल ॥)

बिलकुल नया, बड़ा सूचीपत्र डाक-व्यय के लिये ᠆) का टिकट भेजकर मुफ़्त मँगाइए

संचालक—गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय, २९-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

साहित्य-संसार के [illegible] विद्वानों द्वारा प्रशंसित

सर्वश्रेष्ठ गंगा-पुस्तकमाला में

शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाली दो उत्कृष्ट पुस्तकें

प्रेम-प्रसून

लेखक, श्रीमान् प्रेमचंदजी । इनके विषय में विशेष लिखना व्यर्थ है । थोड़े ही समय में इन्होंने हिंदी-संसार में अच्छी ख्याति प्राप्त कर ली है । इनकी रचना जैसी स्वाभाविक, रोचक और भाव-पूर्ण होती है, वैसी ही शिक्षाप्रद, उत्साहवर्द्धक तथा गंभीर भी । प्रेम-प्रसून इन्हीं की गल्प-पुस्तक है । इसमें शाप, त्यागी का प्रेम, मृत्यु के पीछे, यही मेरी मातृ-भूमि है, लागडाँट, चकमा, आप-बीती, आभूषण, राज्यभक्त, अधिकार-चिंता, दुराशा, गृहदाह आदि एक-से-एक बढ़कर अनूठी गल्पों का संग्रह है । अब तक इनके जितने गल्प-संग्रह छपे हैं, उनमें यह संग्रह सबसे बढ़कर है । प्रेमचंदजी के प्रत्येक प्रेमी को इसे स्वयं पढ़कर अपने परिवार को भी पढ़ाना चाहिए । लगभग ३०० पृष्ठों के पोथे का मूल्य सिर्फ़ १।) छपाई साफ़-सुथरी । काग़ज़ ऐंटिक ।

नारी-उपदेश

लेखक, स्व० गिरिजाकुमार घोष । इस पुस्तक में नारियों के जानने-योग्य—नारी-पूजा, नारी-महत्त्व, नारी-चर्या, बड़ी-बूढ़ियों का सम्मान, गृहिणी, पति-पत्नी की लड़ाई, लज्जा, सुंदरता, गहनों की पिटारी, आभूषण, प्रेम, सच्चा वैराग्य, परदे की उत्पत्ति, मैत्रेयी-याज्ञवल्क्य-संवाद आदि—बीसों उपदेश-प्रद विषयों का वर्णन बड़ी ख़ूबी के साथ, सरल भाषा में, किया गया है । इस पुस्तक के पढ़ने से आपके घर की नारियाँ लक्ष्मी और घर स्वर्ग बन जायगा । मूल्य ॥)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय, २९-३० अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

अन्य पुस्तकों के लिये हमारा नया और बड़ा सूचीपत्र -) का टिकट भेजकर मुफ़्त मँगाइए ।

लीजिए ! तैयार हो गई !! जल्दी मँगाइए !!!

READ AND LAUGH

जिसके लिये हिंदी-संसार वर्षों से तरस रहा था, वही हास्य-रस की प्रसिद्ध पुस्तक

लंबी दाढ़ी

दुबारा छपकर अभी-अभी प्रेस से आ रही है। मूल्य केवल १)

दाढ़ीवालों को भी प्यारी है, बच्चों को भी,
बड़ी मासूम, बड़ी नेक है लंबी दाढ़ी ;
अच्छी बातें भी बताती है हँसाती भी है,
लाख दो लाख में बस एक है लंबी दाढ़ी।

हास्य और व्यंग्य की अन्य पुस्तकें—

मूर्ख-मंडली ।।=) कॉलेज-होस्टल ।) हास्य-मंजरी ।।) लोक-रहस्य ।।=) गोलमाल १=)

आज ही पत्र भेजिए—संचालक गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय

२९-३० अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

साहित्य-संसार के सर्वोपयोगी ग्रंथ

गोविंद-ग्रंथमाला

इस पुस्तक में कवि गोविंदगिल्लाभाई (जिनकी जीवनी माधुरी के ८वें अंक में निकल चुकी है) के बनाए व्रज-भाषा के निम्न-लिखित चौदह ग्रंथ संग्रह किए गए हैं—१. विष्णुविनयपचीसी २. परब्रह्मपचीसी ३. विवेकविलास ४. लच्छनबत्तीसी ५. शिखनखचंद्रिका ६. राधारूपमंजरी ७. भूषणमंजरी ८. शृंगारषोड़शी ९. श्रीराधामुखषोड़शी १०. पयोधरपचीसी ११. नैनमंजरी १२. छविसरोजिनी १३. प्रेमपचीसी १४. प्रबोधपचीसी १५. कठिन शब्दों का कोष—बंबई के टाइप में उत्तम काग़ज़ पर छपे हुए विलायती कपड़े के जिल्द बँधे ४९० पृष्ठ के बड़े ग्रंथ का मूल्य दो रुपया-मात्र ।

गाँधीगौरव

इसमें भारत के सर्वमान्य नेता जेल-प्रवासी महात्मा गाँधी की जन्म से लेकर आज तक की समस्त उल्लेखनीय घटनाएँ ऐसी सरल, सुंदर, मर्मस्पर्शी और ओजस्विनी कविता में लिखी गई हैं कि सारा गाँधी-चरित्र हस्तामलक हो जाता है। आरंभ में महात्माजी का सपत्नीक रंगीन चित्र देखने को मिलता है। काव्य सामयिक है; शब्द-चित्र सुंदर हैं; पढ़ने, सुनने और गाने लायक़ है। काव्य का प्रायः कुल स्थल अतिशय ओजस्वी है। वीर-रस इसका भाव-प्रधान है। मूल्य केवल ॥)

तंत्रकौमुदी

कलकत्ता हाईकोर्ट के भूतपूर्व जज स्वनाम-धन्य जस्टिस बुडरफ के अथक परिश्रम और प्रयत्न की बदौलत शिक्षित देश-वासियों का ध्यान इस शास्त्र की ओर आकृष्ट हुआ है। हिंदी में अभी तक इस विषय की एक भी प्रामाणिक पुस्तक हमारे देखने में नहीं आई। विद्वान् लेखक ने हिंदी के इस बड़े अभाव की पूर्ति की है। लेखक महोदय अपने विषय के पारदर्शी विद्वान् हैं। हिंदी-प्रेमियों के सुभीते के लिये मूल्य सिर्फ़ ॥), डाक-ख़र्च अलग। परिश्रम को देखते मूल्य बहुत थोड़ा रक्खा गया है।

सचित्र

अभागा

फ़्रांस के प्रसिद्ध औपन्यासिक, नाट्यकार और कवि विक्टर ह्यूगो-रचित जगत्-प्रसिद्ध उपन्यास "लामिज़र-बिल्स" का हिंदी-अनुवाद। यूरोप के कितने ही प्रसिद्ध लेखकों की राय में इस उपन्यास के जोड़ का संसार में कोई दूसरा उपन्यास नहीं। यूरोपीय भाषाओं में अब तक इसके हज़ारों संस्करण हो चुके हैं, और फ़्रांस का तो प्रत्येक घर इस पुस्तक से सुशोभित हो रहा है। मूल पुस्तक के लेखक ने इसे तीन वर्ष के कठिन परिश्रम से लिखा था। पुस्तक क्या है, मानव-हृदय के भावों का क्रीड़ा-क्षेत्र है, कवि की कल्पना कितनी ऊँची उठ सकती है और मानव-चरित्र कितना मनोहर हो सकता है, इसका सच्चा चित्र इस पुस्तक में है, एक बार पुस्तक आरंभ करके बिना समाप्त किए आप नहीं रह सकते। छपाई-सफ़ाई ख़ूब सुंदर, बढ़िया चित्रों से सुशोभित पुस्तक का मूल्य १॥)

भारत-रत्न

इसमें भारत के पचीस प्रसिद्ध और आदरणीय महापुरुषों के जीवन-चरित और उनके सुंदर हाफ़टोन-चित्र दिए गए हैं। बड़े-बड़े अनुभवी लोगों का कहना है कि महापुरुषों के चरित को आदर्श मानकर चलने से ही मनुष्य के जीवन का उद्देश सफल हो सकता है; अतएव प्रत्येक हिंदी-प्रेमी को भारत-रत्न की एक प्रति ख़रीदकर पढ़नी चाहिए। मूल्य १॥)

अन्य पुस्तकों के लिये हमारा नया, बड़ा सूचीपत्र -) का टिकट भेजकर मँगा देखिए।

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, २९-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

OUR ENGLISH BOOK NEWS.

GRAND REDUCTION IN THE PRICE OF

"FREEDOM THROUGH DISOBEDIENCE"

BY **C. R. DASS.**

The actual price is **annas 8,** now sold for **annas 6.**

Please note that in order to clear out the large stock this great reduction has been made. Please hurry up to avoid disappointment as this book is worth reading.

Historical books :—

Rulers of India series :—

Akbar at Rs. 2-3-0, (Malleson). Aurangzeb Rs. 2-3-0, (Lanepoole). Asoka Rs. 3-15-0, (Smith).

Warren Hastings at Rs. 2-3-3, (Trotter). Wellesly at Rs. 2-3-0, (Hutton).

	Rs.	a.	p.
Lord Chelmsford's Viceroyalty	1	0	0
History of Delhi, the Capital of India	2	0	0
Medieval India (Lanepoole)	1	5	0
History of Rome (Shunkburgh)	3	4	0
Shivaji, the Marhatta (Rawlinson)	2	13	0
World at War (Nelson Frazer)	0	14	0
World Revolution (Webster)	15	12	0
World History (Viscount Bryce	1	12	0
India at the death of Akbar (Moreland)... ...	10	8	0
The Students' History of India (Smith) ...	2	8	0
Early History of India (Smith)	14	0	0
Government of India (Ilbert)	9	3	0
Ascendency of France (Wakeman)	7	7	0
Revolutionary Europe (Stephens)	7	7	0
The Reminiscences of the Russian Resolution(Philips)	15	12	0
The Spirit of Russia in two Volumes (Mesaryk) ...	30	10	0.

Complete works of Swami Vivekanand in 7 Volumes, 21 0 0
Complete works of Swami Ram Tirth in 3 Volumes, 6 0 0
Works of Sir Rabindra Nath Tagore, list on application.
Lives of Great men of India at annas 4 each (list on application).

Our Stock of English Books in general is both varied and large.

College books are also coming in

GANGA PUSTAK-MALA KARYALAYA,
29-30, Aminabad Park, LUCKNOW.

नई पुस्तकें ! नई पुस्तकें !! नई पुस्तकें !!!

गल्प-गुच्छ

अर्थात्

डॉक्टर रवींद्रनाथ ठाकुर की छोटी-छोटी कहानियों का संग्रह

इसमें आप छोटी-छोटी कहानियाँ पढ़िए और साथ ही भारतवासियों की घरेलू ज़िंदगी का चित्र देखिए। देखिए तो "मुर्दे की मौत" किस तरह होती है; शिकारी कांतिचंद्र का जीवन "लुधा" की कृपा से किस प्रकार मरुस्थल में परिणत होने से बाल-बाल बच जाता है। 'विचारक' यानी न्यायकर्ता की ज़िंदगी भी देख लीजिए कि कैसी थी; 'मध्यवर्तिनी' के धैर्य की परीक्षा कीजिए कि दुःख सहकर भी उसने सौत से कैसा बर्ताव किया और अभागे सुंदर की करतूत का मुलाहज़ा फ़रमाइए कि दूसरा विवाह करके क्या से क्या हो गया! 'समस्या-पूरण', 'प्रायश्चित्त', 'सुभा' और 'अत्याचार' एक-से-एक बढ़कर कहानियाँ हैं। और 'क्षुधित पाषाण' में तो दुहरा चमत्कार है। जैसी विचित्र कहानी है, उससे बढ़कर भाषा है। मूल्य सिर्फ़ ॥।) बारह आने।

संक्षिप्त सूरसागर

भूमिका और टिप्पणी-सहित

इसका संपादन इतिहासाचार्य बाबू वेणीप्रसाद, एम्० ए०, ने किया है। जो लोग सूरसागर की मोटी-सी जिल्द ख़रीद नहीं सकते और जिनको समग्र सूरसागर की सैर करने को समय नहीं है, उन्हें इस संग्रह-ग्रंथ से बड़ा लाभ होगा। इसमें भक्तप्रवर सूरदास के छँटे हुए बढ़िया-बढ़िया पद हैं। कथा का सिलसिला नहीं टूटने पाया। स्थान-स्थान पर तुलसीदास, कबीर, दादू, हरिश्चंद्र और रसखान प्रभृति प्रसिद्ध हिंदी-कवियों की उक्तियाँ, सूरदास की कृति से तुलना करने के लिये, उद्धृत कर दी गई हैं। आरंभ में सूरदासजी का संक्षिप्त परिचय भी है। सभी सामयिक पत्रों ने इस पुस्तक की प्रशंसा की है। पृष्ठ-संख्या पौने पाँच सौ से ऊपर। सजिल्द प्रति का मूल्य २॥) दो रुपए आठ आने।

मानस-सूक्तावली

इसमें गोस्वामी तुलसीदासजी की उन अनूठी उक्तियों का संग्रह है, जिनका उपयोग लोग-बाग अक्सर, बात-चीत के समय, किया करते हैं। ये रामचरितमानस से छाँटी गई हैं। बात-चीत करते समय मौक़े से इन उक्तियों का प्रयोग कर देने से भाषण सुंदर और सरस हो जाता है। छोटे आकार के ३०० के लगभग पृष्ठ हैं। सजिल्द प्रति का मूल्य १) एक रुपया।

गौरमोहन

डॉक्टर रवींद्रनाथ ठाकुर के "गोरा"-नामक उपन्यास का वंग-भाषा-भाषी समाज में बहुत आदर है। गौरमोहन उसी प्रसिद्ध उपन्यास का हिंदी-अनुवाद है। इसका विषय सामाजिक है। इसको पढ़ते जाइए और हिंदू-समाज की गुत्थियों को देखिए कि कैसी उलझी हुई हैं। शिक्षिता लड़कियों के उन्नत विचार, चरित-नायक की दृढ़ता, धर्मप्राणता, स्वदेश-वत्सलता और अंत में उन्नत पथ पर जा पहुँचना सचमुच प्रशंसनीय है। कथा-भाग का प्रत्येक पात्र अपनी विशेषता रखता है। पुस्तक दो भागों में है। सजिल्द है। ८०० से ऊपर पृष्ठ हैं। मूल्य ४) चार रुपए।

पत्र-पुष्प

यह छः कहानियों का संग्रह है। कहानियाँ एक-से-एक बढ़कर चित्ताकर्षक हैं। एक बार पुस्तक हाथ में लेने पर समाप्त किए बिना छोड़ने को जी नहीं चाहता। भाषा टकसाली है। मौलिक कहानियों का मज़ा है। हिंदी-अँगरेज़ी के अनेक पत्रों ने इसकी प्रशंसा की है। सजिल्द प्रति का मूल्य १॥) एक रुपया आठ आने।

मौलाना हाली और उनका काव्य

परलोक-गत कवि हाली ने उर्दू-कविता की धारा में एकदम परिवर्तन कर दिया था। मुसलिम-जाति की जागृति में आपकी कविता का विशेष स्थान है। आपकी कविता में ओज है, तेज है और माधुर्य है। मुर्दार लोगों के लिये वह हंटर का काम देती है। उन्हीं विख्यात कविवर की चुनी हुई कविताओं का यह संग्रह पंडित ज्वालादत्तजी शर्मा ने किया है। साथ में आवश्यक टीका-टिप्पणी भी है और आरंभ में है कवि का संक्षिप्त जीवनचरित। पुस्तक के अंत में कठिन शब्दों का अर्थ दे दिया गया है। सामयिक पत्रों ने इस संग्रह की सराहना की है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १) एक रुपया।

मध्य-प्रदेश और बरार का इतिहास

इस पुस्तक में मध्य-प्रदेश और बरार-प्रदेश का बहुत ही प्रामाणिक इतिहास है। उस प्रदेश से संबंध रखनेवाली सभी प्राचीन और अर्वाचीन महत्त्व-पूर्ण बातें इसमें आ गई हैं। हिंदी में यह पुस्तक अपने ढँग की अनूठी है। पृष्ठ-संख्या ३०० से ऊपर। सजिल्द प्रति का मूल्य १॥।) पौने दो रुपए।

पुस्तकें मिलने का पता—मैनेजर, इंडियन-प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

छपकर तैयार है!

हिंदी में नयी और अनोखी चीज़

अभी छपी है !!

सुधारणा और प्रगति

मि० कोज़ियर ने अँगरेज़ी में इस पुस्तक को लिखकर बड़ा यश प्राप्त किया है। इसी पुस्तक के मराठी-अनुवाद को बड़ौदानरेश द्वारा संस्थापित "श्रीसयाजी-साहित्यमाला" ने प्रकाशित कर अपने अपूर्व साहित्य-प्रेम का परिचय दिया है। लीजिए, उसी अपूर्व और उच्च श्रेणी की पुस्तक का हिंदी-अनुवाद बहुत ही सुंदरता से छपकर तैयार है! इसमें आधिभौतिक शास्त्र, सुधारणा का मार्ग, परिस्थिति का समीकरण, समाज-रचना, धर्म-साधन, जनता-धर्म, राजकीय अनुशासन, आदि आवश्यक और उपयोगी विषयों को वैदिक, नैतिक तथा ऐतिहासिक उदाहरणों द्वारा ऐसी विवेचनात्मक दृष्टि से वर्णन किया है कि लेखक की अपूर्व प्रतिभा, मनन-शक्ति एवम् अगाध ज्ञान पर आश्चर्य-चकित होना पड़ता है। पुस्तक विचारकों, मननशीलों और विद्वानों के मनन करने की एक अनोखी चीज़ है। यदि आप देश, धर्म, समाज और जाति की उन्नति करना चाहते हैं, तो सबसे पहले इस पुस्तक को पढ़कर अपना मार्ग निश्चित कीजिए, आपको अवश्य सफलता प्राप्त होगी। मूल्य सादी २॥) सजिल्द ३)

सभा की अन्य पुस्तकें

(जिनकी प्रशंसा प्रायः समस्त हिंदी-पत्रों ने मुक्तकंठ से की है)

१ सरस्वतीचंद्र—यह वही गुजराती के प्रसिद्ध उपन्यास-सम्राट् का अनुवाद है, जिसकी जोड़ का उपन्यास आज तक किसी भी देश-भाषा में नहीं निकला है। मूल्य १॥।) सजिल्द का २।)

२ राई का पर्वत—भारत के हृदय-सम्राट् महात्मा गाँधीजी के सत्याग्रह-आश्रम के पाठ्य-क्रम में निर्दिष्ट एक अपूर्व नाटक का हिंदी-अनुवाद। मूल्य १॥।) सजिल्द २।)

३ जयाजयंत—उच्च भावना से पूर्ण यह अपूर्व नाटक, चरित्र-निर्माण के लिये एक बहुत ही आदर्श पुस्तक है। जिस कवि की प्रतिभा पर महात्मागाँधीजी तक मोहित हैं, उसी कवि न्हानालाल की यह अपूर्व कृति है। हिंदी में आज तक ऐसा नाटक निकला ही नहीं है। मूल्य १।) सजिल्द १॥)

४ व्यावहारिक विज्ञान—इस पुस्तक के भिन्न-भिन्न निबंधों में आवश्यक और उपयोगी विज्ञान को व्यवहार के लिये ऐसी सुगम रीति से चित्र देकर समझाया है कि कठिन बात भी आसानी से समझ में आ जाती है। मूल्य १।=) सजिल्द २)

५ पार्लामेंट—यह अपने विषय की पहली ही राजनीतिक पुस्तक है। मूल्य ॥।=) सजिल्द १=)

६ सर्विया का इतिहास—ले० श्रीमान् झालावाड़-नरेश। मू० ।-)

७ स्त्री-चरित्र-संगठन—मू० ॥) सजिल्द ॥=)

८ शुश्रूषा—रोगी-सेवा की अनोखी पुस्तक। मू० १)

९ अर्थ-शास्त्र—मूल पुस्तक अजमेर के राजकुमार-कॉलेज में पढ़ाई जाती है। मू० १।) सजिल्द १॥)

१० पंच-स्तुति—पंच-देवों की सरल पद्यों में अपूर्व स्तुति। मूल्य ।) राजसंस्करण ॥)

॥) प्रवेश-फ़ी लेकर स्थायी ग्राहक बनाए जाते हैं और सभा की पुस्तकें उनको पौने मूल्य में दी जाती हैं। पुस्तक-विक्रेता और लेखक महाशय हमसे पत्र-व्यवहार करें। सभा का पूरा 'परिचय' मुफ़्त मिलता है, आज ही पत्र लिखकर मँगा लें।

मिलने का पता—

मंत्री, राजपूताना हिंदी-साहित्य-सभा,
झालरापाटन शहर (राजपूताना)

एक नज़र इधर भी !!

विना उस्ताद के वैद्य-विद्या सिखानेवाला ग्रंथ

चिकित्सा-चंद्रोदय

पाँच भाग

पहला भाग पृष्ठ-संख्या ३४० मूल्य ३) सजिल्द ३।।)   तीसरा भाग पृष्ठ-संख्या ५०० मूल्य ४।) सजिल्द ५)
दूसरा भाग पृष्ठ-संख्या ६०० मूल्य ५) सजिल्द ५।।)   चौथा भाग पृष्ठ-संख्या ४३२ मूल्य ३।।) सजिल्द ४।।)
पाँचवाँ भाग (छप रहा है दिसंबर १५ तक प्रकाशित हो जायगा)

चिकित्सा-चंद्रोदय का प्रचार घर-घर में

आज भारत के हिंदी जाननेवाले प्रत्येक प्रांत में इस ग्रंथ का प्रचार ज़ोरों से हो रहा है। पहले जो लोग चढ़ी उ में आयुर्वेद पढ़ना चाहते थे, पर हिंदी में कोई सबकी समझ में आसानी से आ जानेवाला ग्रंथ न होने से मन मारक रह जाते थे, वे ही आज अपने पुराने हौसले मिटा रहे हैं। वैद्य और अवैद्य, गृहस्थ और संन्यासी, गुरु और शिष् प्रोफ़ेसर और स्टूडेंट, जज और वकील, तहसीलदार और पेशकार, सेठ और मुनीम-गुमाश्ते—हर पद, हर रुतबे और ह पेशे के आदमी इस ग्रंथ को धड़ा-धड़ मँगा और पढ़ रहे हैं। इतना ही नहीं, अगले भागों के लिये ज़ोर से तकाज़े भी क रहे हैं। इसी से २-३ साल में ही इस ग्रंथ के चार भाग निकल गए। कई के तो नवीन संस्करण हो गए। पाँचे और छठे भाग प्रेस में छप रहे हैं।

इसका पढ़ना सभी को आवश्यक है

जो वैद्य का धंधा करना चाहते हैं, जो चिकित्सा-व्यवसाय से जीविका उपार्जन करना चाहते हैं, उन्हीं लिये इसके पढ़ने की ज़रूरत हो, यह बात नहीं है। आयुर्वेद के विना जाने मनुष्य अपनी जीवन-रक्षा कर न सकता, सदा नीरोग रहकर दीर्घायु भोग नहीं सकता, इसी से महर्षियों ने चारों वर्णों को इसके पढ़ने की ज़ोर से र दी है। इच्छा हो, वे वैद्य का धंधा करें, इच्छा हो और कोई उद्यम करें, पर इस परमावश्यक विद्या को पढ़ें ज़रूर।

दरिद्र दूर हो सकता है

जिन लोगों के घर में अभाव है, जिन पर दरिद्र-देव की कृपा है, जो पराई गुलामी के लिये मारे-मारे फिरते हैं, इसे घंटे-दो घंटे रोज़, फ़ुरसत के समय, पढ़ते रहने से एक दिन सच्चे वैद्य बनकर और मनमाना धन पैदा करके दरिद्र भगा सकेंगे, इसमें ज़रा भी शक नहीं। अतः इस ग्रंथ को अवश्य पढ़ें। बीस-पचीस रुपए उधार लेकर भी इसे मँग और सदा को अपना दुःख दूर करें।

प्रत्येक भाग में क्या-क्या विषय है ?

पहला भाग—इस भाग में आयुर्वेद की जटिल परिभाषा, रोग जानने की तरकीबें, नाड़ी-परीक्षा, मल, मू जिह्वा आदि परीक्षा, महीनों पहले रोगी-अरोगी की मृत्यु जानने की विधियाँ, शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों का स वर्णन, वातादिक दोषों का विचार, अच्छी-बुरी दवाओं की पहचान, जुलाब देने की विधि आदि हज़ारों बातें हैं, जिन जानना वैद्य को ज़रूरी है। इन बातों के जाने विना केवल दवाओं के नुसख़े जान लेने से कोई वैद्य हो नहीं सक अतः पहले यही भाग पढ़ना चाहिए। दाम ३४० सफ़ों की पुस्तक का ३) सजिल्द का ३।।)।

दूसरा भाग—सब रोगों में ज्वर राजा है और इसका वर्णन भी बड़ा लंबा-चौड़ा है। उसी ज्वर की चिकित्सा मय निदान, कारण और लक्षणों के इस भाग में लिखी गई है। ऐसा कोई भी ज्वर नहीं, जिसका इलाज इ न हो। ज्वर के लिये और किसी भी ग्रंथ के देखने की ज़रूरत न होगी। ज्वर के सिवा बालकों के प्रायः सभी रोगों इलाज, गर्भिणी, प्रसूता आदि स्त्रियों के ज्वर, अतिसार आदि का इलाज तथा अनेक प्रकार के विष और रस इत्यादि शोधन-विधि तथा यंत्र बनाने की विधि मय चित्रों के दी हैं। जिसने भी यह भाग देखा, दिल से मोहित हो गय इस भाग में प्रायः ६०० सफ़े हैं। मूल्य अजिल्द का ५) सजिल्द का ५।।)

तीसरा भाग—इस भाग में अतिसार, संग्रहणी, बवासीर, मंदाग्नि, अजीर्ण, हैज़ा, कृमिरोग, पांडु उपदंश और सोज़ाक आदि रोगों की पूरी चिकित्सा मय उनके निदान और लक्षणों के लिखी है। इन रोगों के

शेष दूसरे सफ़े पर देखिए—

पढ़नेवाले को और ग्रंथ देखने की ज़रूरत न होगी। मूर्ख-से-मूर्ख भी इन रोगों का इलाज कर सकेगा, यदि उसे हिंदी पढ़ना-समझना आता होगा। इस भाग में ५०० सफ़े हैं। मूल्य अजिल्द का ४।), सजिल्द का ५)

चौथा भाग—आजकल भारत के सौ में नब्बे पुरुषों को प्रमेह और नपुंसकता ने अपना शिकार बना रक्खा है। इस भाग में उन्हीं दोनों रोगों पर खूब लंबा-चौड़ा विचार किया गया है। दोनों रोगों पर अमीरी और ग़रीबी सैकड़ों तरह के नुसख़े दिए हुए हैं। इस भाग को पास रखकर हर कोई अपने प्रमेह और नपुंसकत्व को नाश करके संसार का सुख लूट सकता है। एक-एक नुसख़ा लाख-लाख रुपयों को भी सस्ता है। जिस पुरुष ने इस भाग को न देखा, हमारी समझ में, उसने रमणी-भोग का सुख कुछ भी न देखा। बहुत क्या—प्रत्येक पुरुष के देखने योग्य है। इसमें सफ़े ४३२ हैं। मूल्य अजिल्द का ३।।।), सजिल्द का ४।।)

पाँचवाँ भाग—यह भाग तैयार हो रहा है। जगदीश कृपा करें, तो दिसंबर के दूसरे सप्ताह में यह निकल जायगा। इस भाग में स्थावर और जंगम दोनों तरह के विषों की विस्तृत चिकित्सा है। इस भाग को रखकर, हर कोई मनुष्य को हर तरह के विष से बचा सकेगा। जिस गाँव या घर में यह भाग होगा, वहाँ कोई भी मनुष्य ज़हर खाकर या साँप, बिच्छू, कनखजूरे, चूहे, छिपकली, मेंढक, मच्छर, बर्र आदि से काटे जाने पर मर न सकेगा, बशर्ते कि उसकी आयु हो और ठीक इसकी विधि से इलाज किया जाय। हमने उस दिन "वर्तमान" कानपुर के ख़बर के कागज़ में पढ़ा कि एक वर्ष में ५७००० मनुष्य केवल सर्प के काटने से एक ही प्रांत में काल के गाल में समा गए। इसी से बीच में हमने यह भाग लिखा है। जिसको इस भाग का अभ्यास हो जायगा, वह गाँव-गाँव में देवता की तरह पुजेगा और लक्ष्मी उसकी दासी होकर रहेगी। हर गृहस्थ को इन जानवरों का भय रहता है; अतः घर-घर में इस भाग का होना ज़रूरी है; क्योंकि मनुष्य-देह बड़ी दुर्लभ है। साधारण लोग नहीं जानते कि एक मामूली जानवर—छोटे-से चूहे और मच्छर से प्राण चले जाते हैं। इस भाग में साँप, बिच्छू आदि से बचाने के कौड़ियों के मोल के अचूक उपाय लिखे हैं।

स्त्री रोगों की चिकित्सा

भी इस भाग में लिखी गई है। आजकल जिस तरह मर्द प्रमेह आदि के पंजों में फँसे हैं; उसी तरह औरतें प्रदर-रोग, सोम-रोग, नष्ट आर्तव आदि अनेकों प्राण-नाशक रोगों की शिकार हो रही हैं। इन रोगों के कारण भारतीय लाखों अबलाएँ अकाल मृत्यु से मरती हैं; पर वे अपने रोगों का हाल किसी से भी कहती नहीं। इन्हीं रोगों के कारण हज़ारों-लाखों घर संतानहीन पड़े हैं। इसी से हमने इस भाग में स्त्रियों के प्रदर-रोगों की चिकित्सा, नष्टार्तव चिकित्सा, बंध्या-चिकित्सा और अनेक प्रकार के योनि-रोगों की चिकित्सा बड़ी ख़ूबी से लिखी है। इस भाग को पढ़कर प्रत्येक पढ़ी-लिखी स्त्री अपने रोग को समझकर ख़ुद अपना इलाज कर सकेगी। जो लोग इस भाग का अभ्यास करके स्त्रियों के रोगों की चिकित्सा करेंगे, वे मनमाना धन कमाते हुए यश के भागी होंगे। अतः यह भाग हर मनुष्य के काम का है। चाहे वह वैद्य का धंधा करे या न करे। बहुत कम मनुष्य हैं, जिनके घरों में स्त्रियाँ न हों। जिनके घरों में माँ, बहन, बेटी और पत्नी प्रभृति स्त्रियाँ हैं, उन्हें तो यह पाँचवाँ भाग ज़रूर ही रखना चाहिए।

मूल्य ?

मूल्य के संबंध में जब तक ग्रंथ छप न जाय, कुछ भी लिख नहीं सकते। पर इतना कह सकते हैं कि इसका मूल्य ५) से ज़ियादा न होगा।

सुभीता

जो सज्जन १५ दिसंबर तक इसके लिये कार्ड डाल देंगे, और साथ ही एक रुपया पहले भेज देंगे; उन्हें असल क़ीमत से।।) कम में यह ग्रंथ मिलेगा। डाक-ख़र्च ख़रीदारों को ही देना होगा। १५ दिसंबर के बाद जिनकी चिट्ठियाँ आवेंगी, उन्हें पूरी क़ीमत देनी होगी। मान लीजिए, इस भाग का मूल्य ५) रहा, तो पहले १) भेजकर ग्राहक हो जानेवाले को ३।।) और डाक-ख़र्च के लिये वी० पी० किया जायगा।।।) असल क़ीमत से काट देंगे और १) आया हुआ बाद दिया जायगा।

नोट—जो सज्जन पाँचों भाग एकसाथ मँगावेंगे, उन्हें दो आना रुपया कमीशन भी मिलेगा—पर जो पाँचवें भाग के लिये १) भेज देंगे, उनको पाँचवें भाग पर।।) की कमी के सिवा दस्तूर मुताबिक़ कमीशन भी मिलेगा; यानी पाँचों भागों पर दुअन्नी रुपया कमीशन मिलेगा।

सूचना—हमारा ३० साल का अजमूदा तिला नामर्दी २० साल के नामर्द को भी गारंटी के साथ मर्द बनाता है। मूल्य ५) शीशी।

☞ मँगाने का पता—हरिदास ऐंड कंपनी, २०१, हरिसन रोड, कलकत्ता।

"अरे, तू इतनी लंबी हो गई"

"हिमानी"

इस्तेमाल करने का अच्छा तरीक़ा।

भारतीय सुंदरता की कुलफी

इसके व्यवहार करने से चेहरा मुलायम, ठंढा, साफ़ और खूबसूरत रहता है और साथ-ही-साथ मुहासे, चेचक के दाग़ आदि हटाती है। इसमें किसी तरह का दूषित पदार्थ यानी चर्बी, वैसलीन आदि नहीं हैं।

सुंदरता की कुलफी हर बिसातख़ाने और केमिस्टों के यहाँ ॥) में मिलती है।

खुशबू की बहार

अद्वितीय केश तैल "निरुपमा"

इसमें किसी तरह का खनिज तैल नहीं मिला है, जो आजकल के केश तैलों में मिलाया जाता है। अच्छी जड़ी-बूटियों से बना है।

मूल्य बड़ी शीशी १) मात्र

एक दर्जन ९॥) डाक-व्यय अलग

बंगाल परफ्यूमरी इंडास्ट्रियल वर्क्स में बना है।

१६२ / १८१

रूमाल के लिये "कुमकुम"

की परीक्षा कीजिए

काशमीरी स्वदेशी ख़ुशब, टिकाऊ और मनोमुग्धकर है।

एक आउंस शीशी	१।) स्टैंडर्ड
,, ,, ,,	२।) रायल
हेअर लोशन	१)

सोलएजेंट

शर्मा बनर्जी ऐंड को०

४३ स्ट्राण्ड रोड, कलकत्ता।

Barman's Advertising service.

साहित्य-संबंधी प्रतियोगी पारितोषिक

में

आप शामिल होना चाहते हों, तो आज ही पत्र लिखकर हिंदी के उत्कृष्ट साप्ताहिक पत्र "शिक्षा" के ग्राहक बन जाइए, और पारितोषिक पाने के नियम पढ़ लीजिए।

सितंबर का पारितोषिक बँट गया

पहला पारितोषिक १५) दूसरा १०) और तीसरा ५) दो सज्जनों में बाँटे गए हैं। पाँच पारितोषिकों में पाँच सज्जनों को "पुण्य-कीर्तन" नाम की पुस्तक मिली है।

आप भी इसमें शामिल हों

यदि पारितोषिक के भागी हुए तो लाभ में रहेंगे। इस बार यदि आप पारितोषिक न भी पा सकें तो हताश होने की ज़रूरत नहीं। संभव है, आगे का पारितोषिक आप ही को मिले। इसीलिये आपको शीघ्रता करनी चाहिए। साहित्य की चर्चा और पारितोषिक कितनी अच्छी योजना है।

मैनेजर "शिक्षा"

खड्ग-विलास-प्रेस, पटना

१६
१४७

कुंतलीन

अब तक बने हुए सब तेलों से पवित्र और फ़ायदेमंद।

इसके लगाने से बाल काले और मुलायम होकर खूब बढ़ते हैं, जो और तेलों के लगाने से कभी नहीं हो सकता।

सबसे अच्छी चीज़ का व्यवहार करो जिससे पीछे पछताना न पड़े।

एच्० बोस, परफ़्यूमर, कलकत्ता

१७०/१२५

कोकोलाइन

ट्वाइलेट सोप

इसके लगाने से चेहरा सुंदर और चमकने लगता है। शौक़ीनों को हमारे साबुन और "कुंतलीन" तैल की एक बार परीक्षा करनी चाहिए।

आज ही मँगाओ।

ग्लेसरीन	१)
सफ़ेद गुलाब ...	१।)
बकुल	१)
चंदन	१)
टर्किशबाथ	२॥)

१७०/१२५

एच्०बोस (मालिक कोकोलाइन सोप कं०) ६१, बऊ बाज़ार, कलकत्ता।

शीघ्रता कीजिए !

साहित्य-परिषद्-ग्रंथमाला के अमूल्य रत्न

शीघ्रता कीजिए !

हिंदी-साहित्य की बहुमूल्य तथा सर्वोत्तम पुस्तकें बहुत सस्ते दामों में

देखिए—विद्वान् लेखक परिषद् की पुस्तकों के संबंध में क्या लिखते हैं—

(१) गैरीवाल्डी—लेखक श्रीपं० इंद्रजी विद्यावाचस्पति । पृष्ठ-संख्या १८८, ६ सुंदर रंगीन चित्रों सहित—मूल्य १)

I—हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के भूतपूर्व सभापति पं० जगन्नाथप्रसादजी चतुर्वेदी लिखते हैं कि "श्रीपं० इंद्रजी ने इस पुस्तक की रचना कर मातृ-भूमि और मातृ-भाषा का महान् उपकार किया है । वास्तव में ऐसी ही पुस्तकों से देश का कल्याण हो सकता है । यह पुस्तक रोचक और सबके पढ़ने योग्य है । इसमें इटली के उद्धारक और स्वतंत्रता के उपासक महावीर गैरीवाल्डी का चरित्र बड़ी मार्मिकता से खींचा गया है ।"

II—हिंदी की सुप्रसिद्ध पत्रिका श्रीशारदा लिखती है कि "इस पुस्तक की भाषा ऐसी फड़कती हुई और सजीव है कि इसमें उपन्यास का-सा आनंद आता है । मनोरंजन के साथ-साथ उपदेश की मात्रा भी खूब है । गैरीवाल्डी की जीवन-घटनाओं से जो उपदेश सर्व-साधारण के सामने रखे जा सकते हैं वे चलती हुई भाषा में, तुले हुए शब्दों में रक्खे गए हैं । यह पुस्तक भाषा के लालित्य, भाव की भंगी तथा विषय के समुचित वर्णन के अभिप्राय से हिंदी-साहित्य में अनूठी है । मेरा आग्रह है कि पाठक इसे अवश्य पढ़ें ।"

(२) प्राचीन भारत में स्वराज्य—लेखक प्रो० धर्मदत्तजी विद्यालंकार, सिद्धांतालंकार । पृष्ठ-संख्या २०० । मूल्य १)

भारत के प्राचीन इतिहास के प्रसिद्ध वेत्ता तथा बंगाल के प्रसिद्ध विद्वान् प्रो० विधुभूषणदत्तजी (डबल) एम्० ए० लिखते हैं, कि "प्राचीन भारत के राजनैतिक गौरव को दिखानेवाला हिंदी-साहित्य में यह पहला ही ग्रंथ है । यह ग्रंथ शुद्ध ऐतिहासिक तथा निष्पक्षपात दृष्टि से लिखा गया है । इसमें प्राचीन संस्कृत-ग्रंथों, विदेशी यात्रियों, तथा शिला-लेखों के आधार पर यह सिद्ध किया गया है कि प्राचीन काल में भी प्रजातंत्र-प्रतिनिधि-सत्तात्मक शासन-प्रणालियाँ भारत में प्रचलित थीं । हमारे पूर्वज आर्य इनसे नावाक़िफ़ न थे । यह पुस्तक प्रत्येक देशाभिमानी के लिये पढ़ने लायक़ है ।"

अँगरेज़ी की सुप्रसिद्ध पत्रिका मौडर्नरिव्यू ने भी इस पुस्तक की मुक्त-कंठ से प्रशंसा की है ।

(३) विवाह का वैदिक आदर्श—लेखक श्रीपं० नंदकिशोरजी विद्यालंकार । मूल्य ॥=)

भारत के प्रसिद्ध नेता तथा विद्वान् बाबू भगवानदासजी लिखते हैं, कि "विवाह-विषयक यह बहुत ही उत्तम और विचारणीय पुस्तक है । इसमें विवाह-संबंधी सभी बातों पर वैज्ञानिक तथा समाज-शास्त्र की दृष्टि से प्रकाश डाला गया है । इस पुस्तक में भिन्न-भिन्न देशों तथा भिन्न-भिन्न जातियों की विवाह-पद्धति को बताकर वैदिक-विवाह-पद्धति को ही श्रेष्ठ बताया गया है । इस पुस्तक का समाज में अधिकाधिक प्रचार होना चाहिए ।"

(४) संत जीवनी—लेखक बाबू गिरजाकुमार घोष । पृष्ठ-संख्या १००; मूल्य ।)

इस पुस्तक में गोस्वामी तुलसीदास, बाबा नानक, तथा तुकाराम आदि संतों तथा महात्माओं की जीवनियाँ बड़ी सरल और सुंदर भाषा में लिखी गई हैं ।

(५) बिखरे हुए फूल—लेखक श्रीपं० बुद्धदेवजी विद्यालंकार । पृष्ठ-संख्या ६०; मूल्य ।=)

नोट—(१) यह परिषद् व्यापारियों, पुस्तक-विक्रेताओं (Book sellers) तथा अपने Agents (एजेंट्स) को काफ़ी कमीशन देती है । व्यापारी, पुस्तक-विक्रेता, तथा एजेंट लोग पत्र-व्यवहार करें ।

पता—मैनेजर साहित्य-परिषद्, डा० गुरुकुल काँगड़ी, ज़िला बिजनौर

बहुत सँभालकर चीज़ ख़रीदना चाहिए

कलकत्ते के बाज़ार में आजकल हारमोनियम की बहुत-सी दुकानें हो गई हैं। लेकिन डवारकीन के कारख़ाने का बना हुआ बाजा उन सबमें श्रेष्ठ है— यह जिन लोगों ने हमारा बाजा बजाया है उनका मत है।

"ग्रामोला" अर्गौन रीड का—

तीन सप्तक, दो सेट रीड ... ४५)

तीन सप्तक, दो सेट बेस ... ५५)

तीन सप्तक, दो सेट जुडीस्पेशल ६०)

बहुत-से आदमी यह सोचते हैं कि रीड अच्छा होने से बाजा उम्दा उतरता है—उनकी यह धारणा भूल है। विंड-चेस्ट हारमोनियम का प्राण है। हम लोगों का "ग्रामोला" जर्मन या अमेरिकन रीड का बना हुआ है—लेकिन बढ़िया विंड-चेस्ट होने के कारण बाज़ार के पैरिस रीड के माफ़िक काम देता है।

पैरिस रीड का—

तीन सप्तक, दो सेट रीड ... ९०)

तीन सप्तक, दो सेट बेस-जुडी ... १००)

साढ़े तीन सप्तक, दो सेट रीड ... १२५)

आज ही आर्डर दीजिए
साथ १०) भेजिए।
बाक़ी वी० पी०।

"डवारकीन-फ़्लूट"

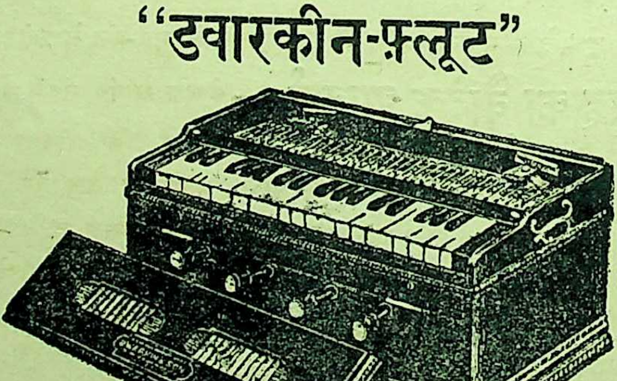

भारतवर्ष में पहले-पहल डवारकीन ही का हारमोनियम बना था—हम लोगों के हारमोनियम को आदर्श मानकर दूसरे बाजों का यथार्थ मूल्य जाँचना होता है। डवारकीन फ़्लूट हारमोनियम को भारत के संगीतज्ञ सब कोई श्रेष्ठ मानते हैं।

डवारकीन ऐंड संस, ८ नं० डलहाउसी स्क्वायर
कलकत्ता
तार का ठिकाना—"मिउज़िकल" टेलीफोन नं० १०५१.

११०
हपू

लेख-सूची

पृष्ठ
१. **अनुरोध** (कविता)—[लेखक, श्रीयुत सियारामशरण गुप्त ४०१
२. **कुसुम-चयन** (कविता)—[लेखक, पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय ४०१
३. **भू-संपत्ति और भूमि-कर**—[लेखक, श्रीयुत जगन्मोहन वर्मा ४०२
४. **लाहौर**—[लेखक, लाला संतराम बी० ए० ४१३
५. **आधुनिक नेता** (व्यंग्य-चित्र और कविता)—[चित्रकार, श्रीयुत रामेश्वरप्रसाद वर्मा ४२४
६. **अंतिम शब्द** (कहानी)—[लेखक, पं० विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक ४२५
७. **प्रभात** (कविता)—[लेखक, श्रीयुत "कुसुम" ४३२
८. **फूल**—[लेखक, प्रिंसिपल चंद्रमौलि सुकुल एम्० ए०, एल्० टी० (कान्यकुब्ज-संपादक) ४३३
पृष्ठ
९. **महाकवि भास**—[लेखक, विद्या-वाचस्पति पं० शालग्राम शास्त्री साहित्याचार्य, विद्या-भूषण, वैद्य-भूषण और कविराज ... ४३६
१०. **समुद्री बीमा**—[लेखक, श्रीयुत जी० एस्० पथिक बी० कॉम० ... ... ४५४
११. **दीप-मालिका** (कविता)—[लेखक, बाबू जगन्नाथदास (रत्नाकर) बी० ए० ... ४६०
१२. **जन-सत्ता-वादी राज्यों में समाचार-पत्र**—[लेखक, श्रीयुत नारायणप्रसाद अरोड़ा बी० ए० ... ... ४६०
१३. **पुष्प-हार** (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत कृष्णानंद गुप्त ४६६
१४. **तिल** (कविता)—[लेखक, श्रीयुत रामाज्ञा द्विवेदी "समीर" बी० ए० (ऑनर्स) ... ४६८
१५. **कर्बला**—[लेखक, श्रीयुत प्रेमचंद बी० ए० ४६९

हिंदी-साहित्य में एक अनूठा रत्न

ज्ञानोदय-ग्रंथमाला का प्रथम पुष्प

कालिदास और शेक्सपियर

साहित्य-संसार में भला ऐसा कौन होगा, जिसने कालिदास और शेक्सपियर का नाम न सुना हो। कौन ऐसा साहित्य-सेवी होगा, जो इनकी सुमधुर और चमत्कारिणी लेखनी से प्रभावित न हुआ हो। प्रस्तुत पुस्तक में इन्हीं दोनों कवि-सम्राटों की प्रतिभाओं का दिग्दर्शन कराया गया है। यदि आपको प्राच्य और पाश्चात्य प्रतिभाओं का कौतुक देखना है, यदि आप प्रकृति के सौंदर्य का पूर्ण रस-स्वादन करना चाहते हैं, यदि आप मनुष्य-प्रकृति से पूर्णतया परिचित होना चाहते हैं, यदि आप अंतर्जगत् और बहिर्जगत् का समुचित ज्ञान संपादन करना चाहते हैं, यदि आप इन दोनों कवि-कुल-गुरुओं के भाव, भाषा और काव्य के संबंध में कुछ भी जानने की इच्छा रखते हैं और यदि आप इनकी आनंदोत्पादिनी तथा चमत्कारिणी उक्तियों तथा युक्तियों से लाभ उठाना चाहते हैं, तो शीघ्र लौटती डाक से ऑर्डर भेजिए। मूल्य २)

नोट—"श्रीयुत रामदासजी गौड़ एम्० ए०, श्रीयुत पं० कृष्णविहारीजी मिश्र बी० ए०, एल्-एल्० बी० प्रभृति लोगों ने इस पुस्तक की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है।"

आलम-केलि—(खंड-काव्य) सुप्रसिद्ध आलम और शेख़ का यह वही ग्रंथ है, जिसके लिये सवा दो सौ वर्ष से काव्य-रसिक लालायित हो रहे थे। यदि आपको काव्य से कुछ भी प्रेम है और कविता-कानन की सैर करना चाहते हैं, तो आप ला० भगवानदीन द्वारा संपादित इस आलम-केलि को अवश्य मँगाइए। टिप्पणी देने से ग्रंथ और भी सुगम और सरल हो गया है। दाम भी केवल १) है।

४ २
१३७

पता:—ज्ञानोदय-ग्रंथमाला कार्यालय, काशी।

पृष्ठ

१६. तुलसीदास (कविता)—[लेखक, श्रीयुत गोपालशरणसिंह ४७८
१७. गँवार गाँहक (व्यंग्य-चित्र और कविता)—[चित्रकार, श्रीयुत मोहनलाल महत्तो ... ४७९
१८. संगीत-सुधा—[स्वरकार, "निषाद" और शब्दकार, महात्मा सूरदास ४८०
१९. सुमन-संचय—[लेखकगण, पं० अंबिकाप्रसाद वाजपेयी (स्वतंत्र-संपादक), श्रीयुत उमेशप्रसादसिंह, श्रीयुत राजेश्वरप्रसाद-नारायणसिंह, पं० बटुकनाथ शर्मा एम्० ए०, साहित्योपाध्याय, पं० अक्षयवट मिश्र (विप्रचंद), संस्कृत-प्रोफ़ेसर पटना-विश्वविद्यालय, श्रीयुत पन्नालाल भैया 'छैल', श्रीयुत रामाज्ञा द्विवेदी "समीर" बी० ए० (ऑनर्स), पं० देवीदत्त मिश्र और श्रीयुत कुँअर शिवनाथसिंह सेंगर ४८२
२०. विज्ञान-वाटिका—[लेखक, श्रीयुत रमेशप्रसाद बी० एस्-सी०, केमिस्ट ४९२

पृष्ठ

२१. महिला-मनोरंजन—[लेखकगण, श्रीयुत "वनफूल" और श्रीयुत गोपीनाथ वर्मा ... ४९७
२२. पुस्तक-परिचय—[लेखकगण, विद्या-वाचस्पति पं० शालग्राम शास्त्री साहित्याचार्य, विद्या-भूषण, वैद्य-भूषण और कविराज, पं० गिरिजाप्रसाद द्विवेदी, श्रीयुत राधाकांत भार्गव, श्रीयुत "सत्य-सेवक", पं० रामस्वरूप शर्मा 'शार्दूल', हिंदी-प्रभाकर और श्रीयुत कालिदास कपूर एम्० ए० ... ... ५०१
२३. साहित्य-सूचना ५०९
२४. विविध विषय ५१०
२५. चित्र-चर्चा ५२७
२६. कौंसिल के उम्मेदवार (व्यंग्य-चित्र)—[चित्रकार, श्रीयुत मोहनलाल महत्तो ५२८

हिंदी-संसार में एकदम नई चीज़—

सचित्र

आरब्य उपन्यास

अलिफ़लैला की कहानियाँ—भाव में, भाषा में, घटनाओं में, चरित्र-चित्रण में, उपदेश में, मनोरंजन में—सभी साहित्यिक विषयों में अद्वितीय है। इसलिये, संसार की समस्त सभ्य भाषाओं में इस पुस्तक का अनुवाद मौजूद है। हिंदी में इसका कोई भी सर्वांग-सुंदर अनुवाद न था; इसीलिये यह पुस्तक बड़ी सज-धज से खंड-खंड कर प्रकाशित हो रही है। प्रत्येक खंड लगभग ८० पृष्ठों का और कहानी समाप्त ही है। साथ ही उसमें कई एकरंगे तथा बहुरंगे चित्र भी दिए गए हैं। अनुवाद बड़ा ही सरल, सरस तथा सुंदर हो रहा है। पाठकों के सुबीते के लिये मूल्य भी बहुत कम रक्खा गया है अर्थात् ग्राहक-श्रेणी में नाम लिखा लेने पर प्रत्येक खंड डाक-ख़र्च सहित ॥) की वी०पी० से भेजा जाता है। काग़ज़ की इस महँगी में इतनी सस्ती और ऐसी सचित्र पुस्तक दूसरी नहीं है।

हिंदी-पाठकों और पुस्तकालयवालों को यह सुअवसर कदापि न त्यागना चाहिए।

१५०
३५६

पता—लक्ष्मीविलास-प्रेस,
नं० ११, [illegible] लेन, कलकत्ता।

चित्र-सूची

(क) रंगीन

पृष्ठ
१. मदन-दहन—[चित्रकार, राजपूताना-आर्ट-स्टूडियो, जयपुर ४०१
२. प्रेमिका—[चित्रकार, श्रीयुत देवीप्रसाद राय चौधरी ४४०
३. कृष्ण-दर्शन—[चित्रकार, श्रीयुत काशिनाथ-गणेश खातू ४८०

(ख) व्यंग्य

१. आधुनिक नेता—[चित्रकार, श्रीयुत रामेश्वरप्रसाद वर्मा ४२४
२. गँवार गाँहक—[चित्रकार, श्रीयुत मोहन-लाल महत्तो ४७६
३. कौंसिल के उम्मेदवार—[चित्रकार, श्रीयुत मोहनलाल महत्तो ५२८

(ग) सादे

१. पंजाब-विश्वविद्यालय-भवन ४१३
२. फ़ोर्मेन-क्रिश्चियन-कॉलेज ४१४
पृष्ठ
३. श्रीमद्दयानंद-एंग्लो-वैदिक-कॉलेज ... ४१५
४. गवर्नमेंट-कॉलेज ४१५
५. किंग एडवर्ड-मेडिकल-कॉलेज ४१६
६. पंजाब-चीफ़्स कॉलेज ४१७
७. अजायबघर ४१८
८. ज़मज़मा या भंगियों की तोप ४१९
९. बड़ा डाकघर ४२०
१०. हाईकोर्ट ४२१
११. पंजाब-क्लब ४२१
१२. रोमन-केथोलिक-केथड्रल ४२२
१३. रेलवे-चर्च ४२२
१४. नॉर्थ-वेस्टर्न रेलवे के दफ़्तर ४२३
१५. सेंट्रल मॉडल स्कूल ४२३
१६. क़ैसर के कनिष्ठ पुत्र प्रिंस ज़ोआशिम ... ४८५
१७. आदिकालीन समय-निर्देश (घास की रस्सी बनाकर उसमें समान दूरी पर गाँठें दे दी जाती थीं, एक गाँठ से दूसरी गाँठ तक की रस्सी जलने में जितना समय लगता था, वह एक घंटा या समय का कोई निश्चित भाग माना जाता था ।) ४६३

वारांगना-रहस्य

इसमें वेश्याओं के समस्त भेद, उनकी पुरुषों को फँसाने की समस्त चालें, किस समय वे कैसा भाव बनाती हैं, महफ़िल से किस तरह प्रेमियों को फँसा लाती हैं, उन्हें आरंभ से कैसी शिक्षा दी जाती है, आँखों का कटाक्ष, भावों का परिवर्तन—किस समय किस ढंग से उन्हें काम करना पड़ता है ; दो प्रेमियों के एकसाथ उपस्थित रहने पर वे क्या करती हैं, नौकर तथा स्वतंत्र वेश्याओं के कार्यों का भेद, धूर्त पुरुष किस तरह वेश्याओं के जाल में न फँसकर उन्हें ही फँसा लेते हैं, वेश्याओं की जवानी से लेकर बुढ़ापे तक के सभी कार्य, अनेक षड्यंत्र कितने ही वे प्रपंच जो नित्य होते हैं, लिखे हैं । साथ ही वेश्यासक्त स्वामी की सती, साध्वी, सुशीला का अद्भुत चरित्र देखकर आप दंग रह जायँगे। बड़ी ही उपदेश-प्रद और चित्ताकर्षक पुस्तक है । जितने प्रकार की वेश्याएँ होती हैं—सबका पूरा-पूरा हाल इसमें मिलेगा । मूल्य ६ भागों का ४॥) सजिल्द ५)

अन्य पुस्तकें—भीमसिंह सचित्र १॥), पृथ्वीराज १।), सिकंदरशाह १॥=), ध्रुव-चरित्र ।=), महात्मा गांधी १)

१४८/१४५ पता—पाठक एंड कंपनी, नं० ५७ वाराणसी घोष स्ट्रीट, कलकत्ता ।

पृष्ठ

१८. नाइटहुड के ज़माने में समय-निर्देश (मोम-बत्ती पर निशान बनाकर एक निशान से दूसरे निशान तक जलने के समय को समय का एक भाग मानकर समय-निर्देश होता था।) ... ४६३
१९. सबसे पहली घड़ी ४६४
२०. कार्य-व्यस्त मनुष्यों के लिये स्मृति-घड़ी ... ४६५
२१. १२५ फ़ीट ऊँचा पानी छिड़कनेवाला नए प्रकार का फ़ायर-ब्रिगेड ४६५
२२. ऊँचे-से-ऊँचे मकानों की आग बुझानेवाला फ़ायर-ब्रिगेड ४६६
२३. बड़ी नाकवाला विचित्र बंदर ४६६
२४. याकोहामा का दृश्य (इसमें अधिकांश मकान लकड़ी के थे। यह सारा शहर नष्ट हो गया है) ५१३
२५. याकोहामा में अँगरेज़ों की बस्ती (यह शहर से दूर है) ५१४
२६. टोकियो का सदर रेलवे-स्टेशन (भूकंप के कारण प्रायः नष्ट हो गया है) ५१५
२७. टोकियो-नगर के वाटर-वर्क्स के जल साफ़ करने के तालाब (भूकंप के कारण ये बिलकुल नष्ट हो गए हैं) ५१६
२८. टोकियो का इंपीरियल थिएटर (भूकंप और आग के कारण नष्ट हो गया) ५१६
२९. आशाकुशा-उद्यान का मीनार (भूकंप से यह गिर पड़ा, और इसके गिरने से ७०० आदमी दबकर मर गए) ५१६
३०. टोकियो में जापान-सम्राट् का राज-प्रासाद (इसमें भी आग लग गई थी ; किंतु विशेष क्षति नहीं हुई) ५१६
३१. बाबू-बाज़ार, आरा ५१७
३२. आरा-बाढ़ के समय नहर का दृश्य (नहर के ऊपर का पुल टूट गया है) ५१८
३३. पिरौंटा-बाज़ार, आरा (सूर्यास्त के समय मारवाड़ी-रिलीफ़-सोसाइटी के केंद्र पिरौंटा का दृश्य) ५१९
३४. मिस्टर बोनरला ५२१

बाबू कुँवर सिंह

जगदीशपुर-निवासी उज्जन-क्षत्रियकुलतिलक बाबू कुँवर सिंहकी यह सुविस्तृत जीवनी है। इस पुस्तकमें महाराजा विक्रमादित्यसे लेकर सन् १८५७के गदर और बाबू अमर सिंहके देहान्त-कालतकका इतिहास है। ऐतिहासिक पुस्तकोंके सिवा हफ्तों बाबू साहबकी जन्मभूमिमें रह कर इसका सामग्री-संग्रह किया गया है। इसमें दस रङ्गबिरङ्गे चित्र दिये गये हैं। बाबू साहबका प्रसिद्ध तिनरङ्गा शिकारी चित्र भी जिल्द पर है। बाबू कुँवर सिंहके जिस असली चित्रका दर्शन किसी भी ऐतिहासिकको नहीं हुआ था, वह भी बड़े परिश्रम और व्ययसे प्राप्त कर इस पुस्तकमें दे दिया गया है। इसके सिवा रेशमी जिल्दपर दुरङ्गा रैपर और बुक-मार्क भी दिये गये हैं। आज तक हिन्दीकी किसी भी पुस्तककी ऐसी सजावट नहीं हुई है। सचमुच इससे आपकी लाइब्रेरी जगमगा उठेगी। आज ही आर्डर दीजिये, नहीं तो दूसरे संस्करण तक पछताना पड़ेगा। इसके भूमिका-लेखक हैं आल इण्डिया कांग्रेस कमिटीके जेनरल सेक्रेटरी बाबू राजेन्द्रप्रसादजी एम० ए०, एम० एल०। केवल लागत भर मूल्य २॥) है।

मैनेजर, भारतीपुस्तकमाला, २२, सरकार लेन, कलकत्ता।

श्रीरामदयालु आयुर्वेदोक्त औषधालय तथा चिकित्सालय

अजमेर

२५ वर्ष से अधिक समय हुआ इस औषधालय की शास्त्रोक्त रीति से बनाई हुई विशुद्ध, पवित्र और गुणकारक औषधियों से अब तक लगभग, ९००००० (नव लक्ष) रोगी लाभ उठा चुके हैं। देश-पूज्य माननीय मालवीयजी-जैसे नेता, सरस्वती के संपादक श्रद्धेय पंडित महावीरप्रसादजी द्विवेदी-जैसे विद्वानों, राजपूताना के चीफ़ मेडिकल ऑफ़िसर एवं बंगाल के सर्जन जनरल आदि बड़े-बड़े सर्जनों ने इस संस्था की मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। अस्तु, अनेक मित्रों के बारबार के आग्रह पर हम इस औषधालय का परिचय सर्व-साधारण को कराते हैं। इसमें सब प्रकार की शोधित, मारित और जारित रस, धातु, उ० धातु तथा रत्न आदिक से बनी हुई औषधियाँ एवं आसव, अरिष्ट, अवलेह, क्वाथ, चूर्ण, गटिका, तैल, घृत, मुरब्बे, माजूम, ख़मीरे, पाक, शर्बत, अर्क़, जवाहिर मोहरा, दिवाल मुश्क आदि आयुर्वेदीय एवं यूनानी औषधियाँ शास्त्रोक्त विधि से बड़ी सावधानी एवं स्वच्छता-पूर्वक तैयार की जाती हैं। हीनवीर्य औषधियाँ कभी काम में नहीं लाई जातीं। बाहर के रोगियों के पत्रों पर पूरा-पूरा ध्यान दिया जाकर रोग के अनुसार औषधियों की योजना करके वे बाहर भिजवाई जाती हैं।

जनता की जानकारी के लिये सहस्रों प्रशंसा-पत्रों में से केवल दो-चार की कुछ पंक्तियाँ नीचे दी जाती हैं। आशा है, वे ही पर्याप्त होंगी :—

देश के पूज्य नेता पं० मदनमोहन मालवीयजी लिखते हैं—"इस औषधालय की प्रशंसा में जितने सज्जनों ने जो कुछ लिखा है, मैं उन सबका पूर्णतया समर्थन करता हूँ। मैं चाहता हूँ कि उत्तर-भारत के वैद्यगण आपके उदाहरण पर चलें।"

एच० बी० राबिन्सन्, आई० एम्० एस्० लेफ़्टिनेंट कर्नल, चीफ़ मेडिकल ऑफ़िसर, राजपूताना, तथा सर्जन जनरल, गवर्नमेंट ऑफ़ बंगाल, लिखते हैं—"मैं चाहता हूँ कि मेरे स्टाफ़ के कई डॉक्टर अपने अस्पतालों को इतनी उत्तमता से रक्खें।"

डबल्यू० वॉट्सन् लेफ़्टिनेंट कर्नल, आई० एम्० एस्०, सी० आई० ई०, चीफ़ मेडिकल ऑफ़िसर, राजपूताना, लिखते हैं—"यह आदर्श औषधालय जितना अधिक लोक-प्रिय है, उसके लिये यह सर्वथा योग्य है। मैंने आयुर्वेदीय औषधियाँ और उनके बनाने का तरीक़ा स्वयं देखा है, और जिस उत्तमता के साथ प्रत्येक औषधि तैयार की जाती है उससे मैं अत्यंत प्रभावित हुआ हूँ। वैद्यराज अपनी चिकित्सा और शुद्धता के लिये राजस्थान-भर में प्रसिद्ध हैं।"

विशेष विवरण जानने के लिये यहाँ का बड़ा सूचीपत्र मँगवाइए, जो विना मूल्य ही भेजा जाता है।

(१) च्यवनप्राश अवलेह—यह आयुर्वेद की परम प्रसिद्ध महौषधि है, जिसके सेवन से कास, श्वास, रक्त-पित्त, क्षय आदि में अपूर्व लाभ होता है। मस्तिष्क-शक्ति को बढ़ाने में एवं राजयक्ष्मा-जैसे भयंकर रोग में, जब धातुओं का निरंतर क्षय होता रहता है, च्यवनप्राश अपना चमत्कार अवश्य दिखाता है। शरीर को हृष्ट-पुष्ट बनाने में यह रसायन "डॉक्टरी काडलिवर ऑइल" से कहीं अधिक गुणकारी है। हम ज़ोर देकर कहते हैं कि इससे अच्छा च्यवनप्राश आपको अन्यत्र नहीं मिलेगा। २० तोले की ४० मात्रा का मूल्य ४)

(२) रतिवल्लभ मोदक—चंद्रोदय, मोती, याकूत अंबर आदि अनेक बहु-मूल्य रत्न और रसों से सिद्ध इन गोलियों के ४० दिन सेवन करने से नपुंसकत्व, प्रमेह, वीर्य-विकार तथा सब प्रकार की शारीरिक क्षीणता सदा के लिये निर्मूल होती है। ये गोलियाँ अपूर्व वाजीकरण, रतिशक्तिवर्धक और अपूर्व बल संचार करनेवाली हैं। मूल्य ४० दिन की मात्रा का नं० १, ५०) नं० २, २५)

(३) स्वर्णघटित सारस्वत अरिष्ट—मस्तिष्क शक्ति को बढ़ाने में, कंठ और दिमाग़ के रोगों का नाश करने में, स्वर को मधुर बनाने में और स्मृति बढ़ाने में यह आयुर्वेद की सर्व-श्रेष्ठ महौषध है। संपादक, विद्यार्थी, वकील, गवैये आदि को परम उपकारी है। मूल्य २ औंस की शीशी के १।॥)

(४) गोस्तन्यासव—यह औषध अंगूर, सेब, अनार आदि अनेक फलों के रस से सिद्ध किया हुआ परम स्वादिष्ट, बलकारक और हृदय को शक्ति देनेवाला है। शरीर में रुधिर बढ़ाकर सूखे चेहरों पर तुरंत सुर्ख़ी लाता है। मूल्य एक बड़ी बोतल का ४॥)

(५) अग्निसंदीपन चूर्ण—मंदाग्नि को नाश करके पाचन-शक्ति बढ़ाने में अद्वितीय है और बहुत ही स्वादिष्ट है। १० तोले का मूल्य ॥)

(६) सरस्वती पाक—उन्माद, मूर्छा और दिमाग़ की बीमारियों को दूर करता है। मूल्य ४) सेर।

मैनेजर, श्रीरामदयालु आयुर्वेदोक्त औषधालय, अजमेर (राजपूताना)

हमें आवश्यकता है

गंगा-पुस्तकमाला की सर्वोत्कृष्ट पुस्तकों का और भी अधिक प्रचार करने के लिये और २५ ट्रैवलिंग एजेंटों की। एजेंट बनकर काम करनेवालों के सुबीते के लिये हमने दो तरह के एजेंट रखना निश्चय किया है—१५ कमीशन पर और १० वेतन पर। परंतु दोनों तरह के एजेंटों के लिये १००) या ५०) की नक़द ज़मानत देना ज़रूरी है।

कमीशन पर काम करनेवालों को गंगा-पुस्तकमाला की प्रत्येक नई प्रकाशित पुस्तक की कम-से-कम सिर्फ़ २० प्रतियाँ प्रकाशित होने की तारीख़ से लेकर दो महीने के अंदर ही बेचनी होंगी। पूर्व प्रकाशित या बाहरी पुस्तकों का बेचना न बेचना उन्हीं की इच्छा पर अवलंबित रहेगा। उन्हें प्रति मास गंगा-पुस्तकमाला और माधुरी के १५-१५ स्थायी ग्राहक बनाना पड़ेंगे। माधुरी के जितने ग्राहक वे बनावेंगे, पारिश्रमिक-स्वरूप उन्हें उतने ही रुपए मिलेंगे। गंगा-पुस्तकमाला की पुस्तकों पर ३३$\frac{१}{३}$ % कमीशन दिया जायगा, और बाहर की सब पुस्तकों पर वही जो स्थायी एजेंटों को दिया जाता है। जो ऑर्डर उनके द्वारा प्राप्त होंगे, उन पर भी उन्हें =) रुपया कमीशन दिया जायगा और बुकसेलरों के ऑर्डरों पर २) सैकड़ा।

कमीशन पर जो काम करना नहीं चाहते, उनमें से १००) जमा करनेवालों को २०) और ५०) जमा करनेवालों को १५) मासिक वेतन दिया जायगा। साथ में ट्रैवलिंग-एलाउएंस (Travelling Allowance) भी मिलेगा; परंतु १५) रु० मासिक से अधिक नहीं। वेतन पर काम करनेवाले प्रत्येक एजेंट को हर महीने माला की १००) की पुस्तकें साथ में रखकर बेचनी होंगी, और इन पर उन्हें कुछ भी कमीशन न मिलेगा। हाँ, अधिक बेचने पर अवश्य मिलेगा। बाहरी पुस्तकों के ऑर्डरों पर उन्हें भी =) रुपया कमीशन और बुकसेलरों के ऑर्डरों पर २) सैकड़ा कमीशन दिया जायगा।

उपर्युक्त नियम बहुत संक्षेप में दिए गए हैं। इसलिये जिन लोगों को काम करना हो, वे नीचे-लिखे पते से)॥ का टिकट भेजकर छपे हुए विस्तृत नियम मँगा लें।

विशेष वक्तव्य—हमारी माधुरी और किताबें हिंदुस्थान-भर में मशहूर हो चुकी हैं। लाखों मनुष्य उन्हें पढ़ रहे हैं। अतएव एजेंट लोग आसानी के साथ—थोड़े-से परिश्रम से ही—उनकी ख़ूब खपत कर लेते हैं। यह बात किसी भी हिंदी-प्रेमी से छिपी नहीं है।

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय

२९-३० अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

माधुरी की कलेवर-वृद्धि !

ग्राहक-संख्या आज ७३३७ हो चुकी है !!

माधुरी ने, हमारे अनुमान के अनुसार, लेख, चित्र, छपाई-सफ़ाई आदि की तरह प्रचार में भी हिंदी का, आज तक का, Record beat down कर दिया ! और वह भी एक साल के अंदर ही !! इतनी जल्दी इतने ग्राहक हो जाना माधुरी की सर्वोत्कृष्टता और लोकप्रियता का बहुत भारी प्रमाण है।

हिंदुस्थान-भर में अब केवल बँगला की एक मासिक पत्रिका के माधुरी से अधिक—कोई ८०००—ग्राहक हैं, लेकिन हमारा विश्वास है कि हिंदी-प्रेमियों की गुण-ग्राहकता और सहायता से बहुत शीघ्र ही माधुरी की

ग्राहक-संख्या १०,००० तक पहुँचेगी !!!

और इसका प्रचार उक्त बँगला-पत्रिका से भी अधिक हो जायगा। ईश्वर वह दिन शीघ्र लावें। अस्तु।

३००० ग्राहक हो जाने पर हमने, अपने वादे के अनुसार, माधुरी में १२० पृष्ठ और ३ रंगीन, ३० सादे तथा २ व्यंग्य-चित्र देना शुरू कर दिया था। और, उसी वादे के अनुसार अब हम, ६००० से अधिक ग्राहक हो जाने पर, इसकी आगामी मास से फिर कलेवर-वृद्धि कर रहे हैं। अधिकांश माधुरी-प्रेमी ग्राहकों और पाठकों के आज्ञानुसार अब इसमें प्रति मास

१५० पृष्ठ और ३ रंगीन, ५० सादे तथा २ व्यंग्य-चित्र रहा करेंगे।

सो हिंदी-संसार के निकट हमने जो प्रतिज्ञा पार साल की थी, वह भी, ईश्वर की अपार कृपा से,

माधुरी की पिछली संख्याएँ

पहली ६ संख्याएँ—ये संख्याएँ महीनों से अप्राप्य हैं। हम इनके कोई २,००० ऑर्डर ख़ारिज कर चुके हैं; लेकिन, फिर भी, ऑर्डर आने बंद नहीं हुए हैं। लोग इन संख्याओं के सेटों को २५) २५) तक में लेने को तैयार हैं। विवश होकर हमने पुराने ग्राहकों से इन संख्याओं को तिगने-चौगने मूल्य पर लेकर उनकी बहुत सुंदर जिल्दें बँधवा ली हैं। ऐसे हमारे पास कुछ ही सेट हैं। एक सेट का मूल्य रक्खा गया है २०)। जो लोग चाहें, २०) मनी-ऑर्डर से भेजकर १ सेट मँगा लें।

७-१२ संख्याएँ—इन संख्याओं के सजिल्द, सुंदर सेट का मूल्य ८) है।

इनके अलावा गत प्रथम वर्ष की कुछ फुटकर संख्याएँ भी अभी मिल सकती हैं। लेकिन ध्यान रहे, हमारे पास इनकी बहुत कम प्रतियाँ हैं—

दूसरी (भाद्रपद की) संख्या	२)	सातवीं (माघ की) संख्या	१)
तीसरी (आश्विन की) ,,	२)	नवीं (चैत्र की) ,,	॥)
छठी (पौष की) ,,	२)	दसवीं (वैशाख की) ,,	॥)

इनमें से जिस-जिस संख्या की आवश्यकता हो, फ़ौरन् मँगा लें; अन्यथा फिर पछताना पड़ेगा।

ख़ास रियायत

जो लोग अब प्रथम वर्ष की ९वीं संख्या से लेकर दूसरे वर्ष की १२वीं संख्या तक ग्राहक बनेंगे, उन्हें ये १६ संख्याएँ १०॥) की जगह ७॥) में ही दे दी जायँगी। किंतु यह रियायत अब केवल ८० सज्जनों के साथ की जायगी। कारण, ९, १०, ११, १२ संख्याओं की बहुत कम प्रतियाँ हमारे पास रह गई हैं।

विशेष सूचनाएँ

(१) जो लोग ६ ग्राहक बनावेंगे, उन्हें, यदि वे चाहेंगे तो, माधुरी साल-भर तक मुफ़्त मिलती रहेगी।

(२) जो हिंदी-हितैषी सज्जन हमारे ग्राहक बढ़ावेंगे, उनका नाम माधुरी में सधन्यवाद प्रकाशित किया जायगा। यदि आप हिंदी-साहित्य की श्री-वृद्धि चाहते हों, तो इस पुनीत कार्य में दिल खोलकर हमारी मदद कीजिए। कहना न होगा कि बड़े-बड़े हिंदी-प्रेमी ताल्लुक़ेदार, रईस और सुशिक्षित सज्जन हमारे ग्राहक बढ़ा रहे हैं।

निवेदक—

मैनेजर माधुरी, लखनऊ

अभी अचूक अवसर !

फिर रेट बढ़ जायँगे !

विज्ञापन-दाताओं के लिये अभी

भारी रियायत !

आगे रेट बढ़ा दिए जायँगे ! !

कारण ?

इसके बताने की ज़रूरत मालूम नहीं पड़ती । क्योंकि आज हिंदी-संसार के छोटे-से शिक्षित बालक से लेकर बड़े-बूढ़े तक—क्या श्रमजीवी, क्या राजे-महाराजे—सभी यह कहने को तैयार हैं कि माधुरी के जोड़ की हिंदी में कोई मासिक पत्रिका नहीं है । इसीलिये इसकी **ग्राहक-संख्या** बहुत शीघ्र बढ़ी है, और बढ़ रही है । लोगों की बढ़ी हुई माँग पूरी करने के लिये जनवरी से हमें शायद माधुरी की

८,००० की जगह १२,००० प्रतियाँ

छापनी पड़ेंगी । विज्ञापन-दाताओं को तो इससे इतना लाभ हुआ है कि जिसका ठिकाना नहीं । इसका सबसे बढ़िया सबूत हमारे पास यह है कि जितना स्थान पहले १५०) साल पर उठा था, उतना ही अब वे ही लोग ४००) देकर आगे के लिये रिज़र्व करा रहे हैं—जिन लोगों ने इम्तिहानन् अपना विज्ञापन ४-६ मास के लिये छपवाया था, वे ही अब दो-दो सफ़े साल-भर के लिये रिज़र्व करा रहे हैं, और चार-चार सफ़े तक लेने को तैयार हैं । यही कारण है कि जितना विज्ञापन माधुरी में छपता है, उतना अन्य किसी पत्र-पत्रिका में नहीं छपता, और न कभी छपा ही है । (माधुरी के विज्ञापन-पृष्ठ गिन डालिए ।)

हमारी इस अचिंतित सफलता तथा विज्ञापन-दाताओं के विशेष लाभ का कारण क्या है ? यही कि हमारे रेट बहुत सस्ते हैं । अभी माधुरी के ८,००० प्रति मास छपने पर हमारा ख़र्च १४) प्रति पेज पड़ता है । परंतु हम २०) प्रति पेज विज्ञापन-छपाई ही चार्ज कर रहे हैं । अब जब माधुरी १२,००० छपेगी, तो हमारा ख़र्च २०) प्रति पेज पड़ेगा । इसलिये तब हमको ३०) प्रति पेज विज्ञापन-छपाई लेनी पड़ेगी ।

अतः विज्ञापन-दाताओं के लिये अभी यह **अचूक अवसर** है कि **दिसंबर के अंतिम सप्ताह** तक अपना विज्ञापन भेजकर स्थान तय कर लें । तब तक हम उनका विज्ञापन, किसी निश्चित समय के लिये, वर्तमान रेट पर ही ले लेंगे । आगे तय करनेवालों से नवीन रेट चार्ज किए जायँगे ।

जो पुराने विज्ञापन-दाता हैं, जिनका निश्चित समय ख़तम हो रहा है या दो-एक मास में हो जायगा, उन्हें भी चाहिए कि आगे के लिये अभी से जगह रिज़र्व करा लें । अन्यथा रेट बढ़ जाने पर हम किसी भी तरह की रियायत नहीं कर सकेंगे ।

रेट आगे के पृष्ठ पर देखिए ।

मैनेजर माधुरी, लखनऊ

छोटे बच्चों की ताकत बढ़ाने में मशहूर

नक़लों से सावधान

डोंगरे
का
बालामृत

इसके पीने से बालक ताक़तवर और पुष्ट होते हैं।

इसे बालक आनंद के साथ पीकर आराम पाते और प्रसन्न रहते हैं।

मालिक—के०टी०डोंगरे कं०, गिरगाँव-बंबई।

आप ही के लिये हित की बात

निराशा का कारण दूर हो गया

कृपया इधर ध्यान दीजिए

स्टार ऐग्यू मिक्श्चर

ऋतु-परिवर्तन के साथ दवाइयों के गुण में भी परिवर्तन होता है। इसी कारण नाना प्रकार के विकार उत्पन्न हो जाते हैं। बहुत-सी दवाएँ केवल किसी ख़ास ऋतु में गुणदायक होती हैं। इसी से वे हमेशा काम नहीं दे सकतीं। किंतु अब **निराशा का कारण दूर हो गया** क्योंकि **स्टार ऐग्यू मिक्श्चर** ऐसी रीति से और ऐसी दवाइयों से बना है कि वह हर एक ऋतु में, हर एक तरह के बुख़ार पर **शर्तिया** और **तत्काल** फ़ायदा पहुँचाता है। इसमें किसी तरह का हानिकारक पदार्थ नहीं रहता। इसी से यह प्रत्येक कुटुंब में व्यवहार किया जा सकता है। इसके गुण ऐसे हैं कि मौक़े पर काम पड़ने के लिये प्रत्येक गृहस्थ को इसे अपने घर में अवश्य रखना चाहिए। मूल्य एक शीशी का ॥।) डाक-महसूल अलग।

रोगनाशक शक्तिवर्धक

स्टार नेक्टर

कामोत्तेजक गुणदायक

अनुपम शक्ति बढ़ानेवाली, नष्ट पुरुषत्व को फिर से लौटा लानेवाली, समस्त औषधियों से अधिक गुण देनेवाली और उत्तम यही **एक-मात्र दवा** है। इसके सेवन से पाचन-क्रिया शुद्ध होकर हर एक तरह के रोग जैसे कुष्ठरोग, क्षयरोग, निमोनिया, नपुंसकता आदि से उत्पन्न होनेवाली कमज़ोरी दूर हो जाती है। यह एक-मात्र अमृततुल्य **स्वादिष्ठ-टानिक** है। ये दोनों अमृततुल्य दवाएँ वैज्ञानिक रीति से तैयार की गई हैं और सैकड़ों सार्टिफ़िकेट मौजूद हैं। व्यापारियों के लिये ख़ास रियायत। एजेंसी के लिये पत्र-व्यवहार कीजिए। कृपया दवा लेते समय हमारा ट्रेडमार्क देख लीजिए।

१३६
१६६

पता—स्टार फ़ार्मेसी, परेल, बंबई।

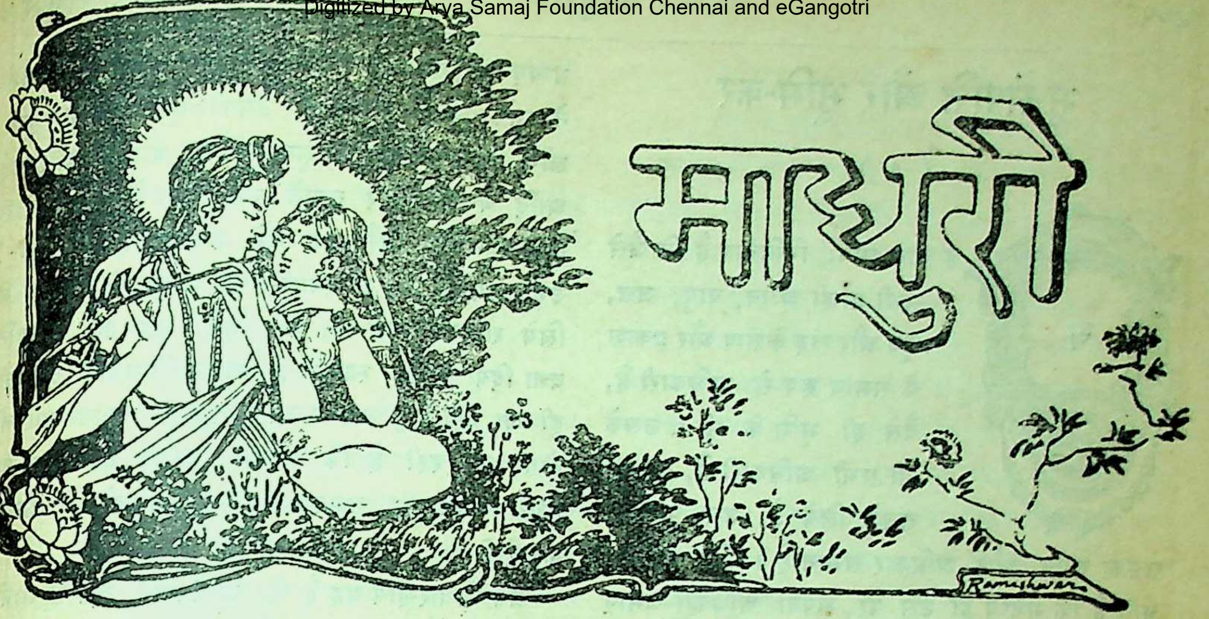

माधुरी

[विविध विषय-विभूषित, साहित्य-संबंधी, सचित्र, मासिक पत्रिका]

सिता, मधुर मधु, तिय-अधर, सुधा-माधुरी धन्य ;
पै यह साहित-माधुरी नव-रस-मयी अनन्य !

वर्ष २ खंड १ — कार्त्तिक-शुक्ल ७, ३०० तुलसी-संवत् (१९८० वि०) — १५ नवंबर, १९२३ ई० — संख्या ४ पूर्ण संख्या १६

अनुरोध

जब इस तिमिरावृत मंदिर में
उषालोक कर चुके प्रवेश,
तब तुम हे मेरे हृदयेश !
हाथ बढ़ाकर इस दीपक की
ज्वाला कर देना निश्शेष ;
यही प्रार्थना है सविशेष ।
जब यह कार्य समाप्त कर चुके
देह होमने के उपरांत,
स्वयं प्रकाशित हो यह प्रांत,
पूर्ण प्रभा में कर निमग्न तब
कर देना प्रदीप यह शांत ;
देर न करना जीवन-कांत !

सियारामशरण गुप्त

कुसुम-चयन

(चतुर्दशपदी)

जो न बने वे विमल लसे विधुमौलि-मौलि पर,
जो न बने रमणीय सज रमा-रमण-कलेवर,
वर वृंदारक-वृंद पूज जो बने न वंदित,
जो न सके अभिनंदनीय को कर अभिनंदित,
जो विमुग्धकर हुए वे न बन मंजुल माला,
जो उनसे सौरभित प्रेम का बना न प्याला,
करके नृप-कुल तिलक-मुकुट-रत्नों को रंजित,
कर न सके जो कलित कुसुम-कुल-महिमा व्यंजित,
जो न सुवासित हुआ तेल उनसे वह आला,
जिसने सुखमय व्यथित जीव-जीवन कर डाला,
जो न गौरवित हुए परस वे गुरु-पद-पंकज,
जो न लोक-हितकरी बनी उनकी सुंदर रज,
तो किसी काल में क्यों करे विकच कुसुम-चय का चयन :
कर आकुलित मन-मानस भाव-भरा भावुक सुजन ?

अयोध्यासिंह उपाध्याय

भू-संपत्ति और भूमि-कर

(१)

यह बात प्रायः निर्विवाद है कि जैसे सभी प्राणी अग्नि, वायु, जल, सूर्य और चंद्र के ताप और प्रकाश के समान रूप से अधिकारी हैं, वैसे ही भूमि के भी। उसके भी सभी अधिकारी हैं, वह भी सबके लिये है, उस पर भी सबका स्वत्व और अधिकार समान है। फिर यह क्या बात है कि मनुष्य ही उस पर अपना अधिकार जमाए बैठे हैं? उन्होंने उन बड़े-बड़े जंगलों को साफ़ कर दिया, जहाँ किसी समय में वन्य पशु कुलाँचें भरते और आनंद से क्रीड़ा करते थे। आज वहीं हरी-भरी खेती लहराती देख पड़ती है। इतना ही नहीं, वह मानव-जाति-भर की सम्मिलित या समष्टि-गत संपत्ति नहीं रही; लोगों ने उसे अपनी व्यक्ति-गत या वैयक्तिक संपत्ति बना रक्खा है। कहने को तो मनुष्य महाभूत (शरफ़ुल मख़लूक़ात) कहलाता है, पर स्वार्थ की मात्रा उसमें इतनी अधिक आ गई या भरी हुई है कि विजातियों की तो बात ही क्या, वह अपनी ही जातिवालों से दिन-रात मार-काट मचाए रहता है, भाई भाई के रक्त का प्यासा है। जन-श्रुति है कि 'जन, ज़मीन, ज़र, तीनों झगड़े के घर', अर्थात् स्त्री, भूमि और रुपए, ये तीनों झगड़े के कारण हैं। आधुनिक लोभी और रक्त-पिपासु नर-पतियों की तो चाल ही अनोखी हो रही है। उनके ढंग ही निराले देख पड़ते हैं। भूमि तो भूमि, वे समुद्र के लिये भी अपने भाइयों का रक्त बहाते और स्वच्छ समुद्र के जल को मानव-रक्त से कलुषित करते हैं। वह समय भी समीप जान पड़ता है, जब आकाश-गत वायु-मंडल के लिये भी वे परस्पर लड़ेंगे, और विशुद्ध वायु या गगन-मंडल को भी कलुषित करेंगे। यह सब क्यों? स्वार्थ, केवल स्वार्थ! सहस्रों धर्माचार्य हुए, और होते जाते हैं; बुद्ध-देव आए और चले गए; महावीर स्वामी का आविर्भाव और तिरोभाव हुआ; ईसा मसीह आए और यह कहकर चले गए कि 'यदि कोई तुम्हारे बाएँ गाल पर थप्पड़ मारे, तो दाहना भी उसके सामने कर दो।' लोगों ने उनकी शिक्षा ग्रहण की, उनकी मूर्ति बनाकर पूजा, लोगों को उनका उपदेश सुना-सुनाकर बौद्ध, जैन, ईसाई आदि बनाया और बनाते चले जाते हैं; पर हाय रे लोकैषणा और वित्तैषणा, तूने उनका पिंड न छोड़ा! उनके उपदेश को, जो स्वार्थ-रूपी अग्नि को बुझाने के लिये शीतल जल-सा था, तूने घृत की आहुति बना दिया। वह स्वार्थ की आग नित्यप्रति दहकती ही जा रही है; उसकी ज्वाला इतनी ब्रह्मांड-व्यापिनी होती जा रही है कि जान पड़ता है, किसी-न-किसी समय वह समस्त मानव-समाज को भस्मीभूत कर देगी।

अब विचारणीय यह है कि 'भू-संपत्ति' कब से मानी जाने लगी? क्या इसका आरंभ मानव-जाति के विकास के साथ हुआ? आदिम मनुष्य तो वन्य पशुओं की भाँति रहते थे, पेड़ों से फूल-फल तोड़कर खाते थे। वे स्वयं पशुओं से डरते थे। पशु पालना तो उन लोगों ने पीछे से सीखा था। फिर विना पशुओं के वे कृषि कैसे करते थे? वे तो धातुओं से भी अनभिज्ञ थे। इसमें संदेह नहीं कि कृषि-कर्म का आरंभ मानव-जाति ने उस समय किया जब उसने धातुओं का ज्ञान प्राप्त कर लिया, और पशुओं को अपने अधीन कर उनको पालने लगी। इतना ही नहीं, उस समय मनुष्य व्रात्य-अवस्था को अतिक्रमण कर, घर बनाकर, एक स्थान पर रहने लगे थे। ऋग्वेद में एक मंत्र है। उसे देखने से यह पता चलता है कि सरस्वती नदी के किनारे नहुष का राज्य था, वहाँ उनकी प्रजा की हरी-भरी खेती लहराती थी, और सरस्वती-नदी उस समय समुद्र में गिरती थी। इससे अनुमान होता है कि उस समय, जहाँ अब राजपूताने की मरु-भूमि है, वहाँ समुद्र लहराता था। समुद्र के सूखकर मरु-भूमि बनने के संबंध में आधुनिक भू-गर्भ-शास्त्र के पंडितों का मत है कि प्रालेय (Glacier Period)-काल से पूर्व ऐसा हुआ था। इससे यह अनुमान किया जा सकता है कि आर्य-जाति में कृषि कर्म का आरंभ कितने काल से हुआ है। उस समय तो आर्यों ने न केवल कृषि-कर्म की ही उन्नति की थी, बल्कि वे राज-सत्ता भी स्थापित कर चुके थे। उनकी राज-सत्ता उसके बहुत पूर्व उन सब अवस्थाओं को पार कर चुकी थी, जिनके

अन्य जातियों ने पीछे से पार किया, और कितनी ही जातियाँ अब पार कर रही हैं।

महाभारत के शांति-पर्व में 'राज-सत्ता' के विकास के आरंभ के संबंध में, जिसे भू-संपत्ति का आरंभ कहना अनुचित न होगा, इस प्रकार लिखा मिलता है—

"नैव राज्यं न राजासीन्न दंडो न च दंडिकः ;
धर्मेणैव प्रजाः सर्वा रक्षंतिस्म परस्परम् ।"

अर्थात् आरंभ में न तो राज्य था और न कोई राजा, न दंड-विधान था और न कोई दंड देनेवाला ही। सब प्रजाएँ धर्म-पूर्वक एक दूसरे की रक्षा करती थीं। यही मनुष्य-जाति की सभ्यता की आदिम और सर्वोच्च अवस्था है। इसी को लक्ष्य कर, मनुष्य-समाज में जितने निःस्वार्थ नियम बने हैं, या धर्मों का उपदेश आचार्यों ने किया है, वे सब बनते हैं या बनेंगे, होते हैं या होंगे, बनाए और किए जाते हैं। यही समस्त मानव-जाति का उद्देश है, लक्ष्य है। यही वह स्वर्ग है, जिससे आदम निकाला गया, जिसको पुनः प्राप्त करने के लिये अब तक मनुष्य-जाति ने सहस्रों बलिदान दिए, अनेक चेष्टाएँ और प्रयत्न किए, पर कृतकार्य नहीं हुईं, न आगे होने की संभावना है। बुरा हो उस शैतान और उस बीज का, जिसके उकसाने और जिसे खाने से मनुष्य-जाति सदा के लिये स्वर्ग से च्युत हुई। बाइबिल आदि में जिस बात को आलंकारिक रूप से लिखा गया है, उसे हिंदुओं के पुराणों और इतिहासों में स्पष्ट शब्दों में इस प्रकार वर्णन किया गया है—

"पाल्यमानास्तथान्योन्यं नरा धर्मेण भारत ;
खेदं परमुपाजग्मुस्ततस्तान् मोह आविशत् ।
ते मोहवशमापन्ना मनुजा मनुजर्षभ ;
प्रतिपत्तिविमोहाच्च धर्मस्तेषामनीनशत् ।
नष्टायां प्रतिपत्तौ च मोहवश्या नरास्तथा ;
लोभस्य वशमापन्नाः सर्वे भरतसत्तम ।
अप्राप्तस्याभिमर्षंतु कुर्वंतो मनुजास्ततः ;
कामोनामापरस्तत्र प्रत्यपद्यत वै प्रभो ।
ताँस्तु कामवशं प्राप्तान् रागोनामाभिसंस्पृशत् ;
रक्ताश्च नाभ्यजानंत कार्याकार्ये युधिष्ठिर ।
अगम्यागमनं चैव वाच्यावाच्यं तथैव च ;
भक्ष्याभक्ष्यं च राजेंद्र दोषादोषं च नात्यजन् ।
विप्लुते नरलोके वै ब्रह्म चैवं ननाश ह ;
नाशाच्च ब्रह्मणो राजन् धर्मो नाशमथागमत् ।"

अर्थात् वे लोग एक दूसरे का धर्म-पूर्वक पालन करते हुए रहते थे ; पर कालांतर में जाकर उनमें परस्पर * खिन्नता उत्पन्न हो गई, और खेद के आ जाने से मोह हुआ। मोह-वश होने से उनमें परस्पर की प्रतिपत्ति जाती रही, और प्रतिपत्ति का नाश होने से उनमें लोभ आ गया। फिर उससे काम (कामना), और काम से राग उत्पन्न हुआ। राग उत्पन्न होने से उनका विवेक और अगम्यागमन, वाच्यावाच्य, भक्ष्याभक्ष्य, दोषादोष का विचार जाता रहा ; जिससे ब्रह्म (समदर्शिता) का नाश हो गया। ब्रह्म के नष्ट होने से धर्म का नाश हो गया।

फिर तो सब लोग ईर्ष्या-द्वेष के वशीभूत होकर एक दूसरे का नाश करने लगे। महाभारत में लिखा है—

"अराजकाः प्रजाः पूर्वं विनेशुरिति नः श्रुतम्;
परस्परं भक्षयंतो मत्स्या इव जलेकृशान् ।"

अर्थात् हम सुनते हैं, उस समय कोई राजा नहीं था, और प्रजा, मछली जैसे अपने से दुर्बल मछलियों को खा जाती है, वैसे ही परस्पर एक दूसरे का नाश करने लगी थी, बड़ी अव्यवस्था फैल गई, कोई उनको नियम में चलानेवाला नहीं था। फिर तो सब लोगों ने मिलकर परस्पर की रक्षा के लिये यह समय (प्रतिज्ञा) किया कि—

"वाक्शूरो दंडपरुषो यश्च स्यात्पारजायिकः ;
यः परस्वमथादद्यात्त्याज्या नस्तादृशा इति ।
तास्तथा समयं कृत्वा समयेनावतस्थिरे ।"

अर्थात् जो मुँहजोर और कठिन अत्याचार करता हो, या पर-स्त्री-गमन करे, जो दूसरे की संपत्ति को ले ले, उससे हम लोग असहयोग करेंगे। यह सबने परस्पर प्रतिज्ञा की।

पर इस प्रकार प्रतिज्ञा करने पर भी वे उस पर स्थिर

---

* जान पड़ता है, आदि में 'खेद' नहीं, बल्कि 'भेद' पाठ था, जिसका अर्थ अपने और पराए में भेद होता है। इसी भेद से मोह आदि की क्रमशः उत्पत्ति हुई।

रह न सके, उनम अशांति बनी ही रही। वे आप अपनी रक्षा का उपाय न कर सके। निदान उनको प्रजापति के पास जाना पड़ा। वहाँ सबने प्रजापति से अपने दुःख कहे, और उनसे उपाय पूछा। प्रजापति ने उन्हें मनु के पास भेजा। उन लोगों ने जाकर मनु से प्रार्थना की; पर मनु ने उनकी प्रार्थना स्वीकार न करके कहा —

"बिभेमि कर्मणः पापाद्राज्यं हि भृशदुस्तरम्;
विशेषतो मनुष्येषु मिथ्यावृत्तेषु नित्यदा।"

अर्थात् मैं पाप-कर्म से डरता हूँ। राज्य का काम बहुत कठिन है, विशेषकर मनुष्यों का शासन करना; क्योंकि वे सदा मिथ्या वृत्तिवाले होते हैं।

अब तो प्रजा बहुत घबराई, और मनु से बोली—

"तमब्रुवन्प्रजा मा भैः कर्तॄनेनो गमिष्यति;
पशूनामधिपं चाशद्धिरण्यस्य तथैव च।
धान्यस्य दशमं भागं दास्यामः कोषवर्द्धनम्;
यं च धर्मं चरिष्यंति प्रजा राज्ञा सुरक्षिताः;
चतुर्थं त्वस्य धर्मस्य त्वत्संस्थं वै भविष्यति।
तेन धर्मेण महता सुखं लब्धेन भावितः;
पाह्यस्मान्सर्वतो राजन् देवानिव शतक्रतुः।"

अर्थात् पाप अपने करनेवाले ही को लगा करेगा। आपके कोष के लिये हम पशु और हिरण्य (धातु) का पचासवाँ और धान्य का दसवाँ भाग देते रहेंगे। राजा से रक्षित होकर प्रजा जो कुछ धर्मानुष्ठान करेगी, उसका चतुर्थांश फल आपको मिलेगा। उस पुण्य से सुखी रहकर आप हम लोगों की रक्षा कीजिए।

यह तो हिंदुओं के धर्म-ग्रंथों के अनुसार भू-संपत्ति और भूमि-कर का इतिहास हुआ, अब पाश्चात्य अर्थ-नीतिज्ञों की भी सम्मतियों को देखिए कि वे क्या कहते हैं, और इससे उनका कहाँ तक मेल या विरोध देख पड़ता है।

सबसे पहले हम चार्ल्स ज़ीड की सम्मति यहाँ उद्धृत करते हैं। यह फ़्रांस-देश के प्रसिद्ध अर्थ-नीतिज्ञ माने जाते हैं। आपके लिखे अर्थ-नीति (Political Economy)-नामक ग्रंथ का अनुवाद अनेक भाषाओं में हो चुका है। अँगरेज़ी में तो इसके दो-दो अनुवाद हो चुके हैं। आप इसी ग्रंथ में लिखते हैं *—

"भू-संपत्ति को सभी क़ानूनों में केवल संपत्ति ही नहीं स्वीकार किया गया, बल्कि वह सर्वोत्कृष्ट संपत्ति मानी जाती है। जब हम साधारणतः संपत्ति-शब्द का व्यवहार करते हैं, तो सब लोग यही समझते हैं कि वक्ता का अभिप्राय संपत्ति-शब्द से भू-संपत्ति है।

यद्यपि इस विषय पर आधुनिक विद्वानों में मत-भेद है, पर यह निर्विवाद है कि 'भू-संपत्ति' को थोड़े ही दिनों से लोग संपत्ति मानने लगे हैं, और यह हो नहीं सकता कि यह विना कठिनाई के संपत्ति मानी गई हो।

हमें यह जान पड़ता है कि 'भू-संपत्ति' को संपत्ति-पद प्राप्त करने के पहले निम्न-लिखित छः अवस्थाओं को क्रमशः पार करना पड़ा है—

(१) यह स्पष्ट है कि उन लोगों को, जो शिकार पर जीवन-निर्वाह करते हैं, या जो अपने पशुओं के झुंड को लिए व्रात्य-रूप में विचरते रहते हैं, भू-संपत्ति की कोई आवश्यकता नहीं रहती। इसका आरंभ तो केवल कृषि-कर्म के साथ होता है। कृषि-कर्म भी जब आरंभिक दशा में होता है, तो उस अवस्था में (भी) 'भू-संपत्ति'

---

* Not only is private property in land sanctioned by all legislations to-day, but landed property is considered the type of property *par Excellance.* When we speak of property without qualification every one knows that it is landed property, that is meant.

Still we may hold it as certain, in spite of numerous controversies on the subject of late, that property in land is of relatively recent date, and that it was not without difficulty that it was established.

We may distinguish in evolution of landed property six successive stages which we shall briefly indicate:—

(1) It is obvious that landed property has no *renson dolre* among tribes who live by hunting or among pastoral peoples at the nomadic stage. It can come into existence only with agriculture. And even in the early phases of agricultural life, property in

76324

सुप्रतिष्ठित नहीं होती। इसके दो प्रधान कारण हैं—एक तो यह कि उस समय भूमि इतनी अधिक होती है कि किसी को अपने भाग की भूमि अलग करने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। दूसरा यह कि कृषि-कर्म उस समय प्रारंभिक अवस्था में होता है, और कृषक अपने खेत को काट लेने के बाद ही छोड़ देते हैं, और दूसरी भूमि खेत के लिये साफ़ करते हैं। [जंगली जातियों में यह देखा जाता है कि वे जंगल काटकर साफ़ करती हैं, और वहाँ खेती करती हैं, दस-पाँच वर्ष के बाद वे उसे छोड़ देती हैं, और जंगल के अन्य भाग को काटकर साफ़ कर खेत बनाती और वहाँ खेती करती हैं। इस प्रकार वे जंगल साफ़ करती, वहाँ खेती करती, और फिर उसे छोड़कर दूसरे भाग को साफ़ करती रहती हैं। नेपाल की तराई में थारुओं के संबंध में इसी प्रकार की बातें सुनी जाती हैं।] उस समय भूमि को यदि इकट्ठा नहीं बोते, तो भी उसका विभाग नहीं किया जाता। वह सब समाज की या जथे-भर की होती है। बोनेवाला केवल उसकी उपज पाता है।

(२) धीरे-धीरे जब लोग व्रात्य-दशा से शालीन-दशा को प्राप्त होते और एक स्थान पर जमकर रहते हैं। तब आबादी घनी हो जाती है, और लोगों को खेत की उपज बढ़ाने के लिये नए-नए उपायों को काम में लाना पड़ता है। यह मानव-जाति की सभ्यता का दूसरा सोपान है। पहले सोपान को अतिक्रमण कर उसे दूसरे पर पैर रखना पड़ता है। इस अवस्था में भूमि पर नैमित्तिक अधिकार होता है, और यथासमय उसका विभाग होता रहता है। यद्यपि भूमि सदा समाज की संपत्ति होती है, पर उसे गाँव-भर के सब घरों के मुखिए मिलकर परस्पर बराबर-बराबर बाँट लेते हैं। यह बँटवारा सदा के लिये नहीं होता, बल्कि कुछ—परिमित—काल के लिये हुआ करता है। पहले-पहल प्रतिवर्ष इस प्रकार का बँटवारा (बंदोबस्त) हुआ करता है। कारण, कृषि का काम वर्ष-भर में आरंभ होकर समाप्त हो जाता है। ज्यों-ज्यों कृषि की प्रणाली विशेष उन्नत होती जाती है, किसानों को अपनी क्रिया का पूर्णतया संपादन करने के लिये विशेष काल की आवश्यकता पड़ती जाती है, त्यों-त्यों क्रमशः अधिक समय तक के लिये उनको एक ही खेत जोतने दिया जाया करता है।

(३) धीरे-धीरे ऐसा समय आ जाता है, जब खेतों के नैमित्तिक संविभाग की प्रथा लुप्तप्राय हो जाती है। ऐसे लोग, जिन्होंने श्रम करके अपने खेतों को अच्छा बना लिया है, उसको फिर मिलाकर विभाग कराने पर राज़ी नहीं होते; क्योंकि यद्यपि फिर बँटवारे की प्रथा गाँववालों के कल्याण के लिये होती हैं, पर इससे उनकी हानि यह है कि उनको समय-समय पर अपने अतिरिक्त श्रम के फल से वंचित रह जाना पड़ता है। इस प्रकार कुटुंब या कौटुंबिक संपत्ति की प्रथा सुप्रतिष्ठित होती है। उस समय गाँव के प्रत्येक कुटुंब को अपने-अपने अंश

---

land is not an institution. This is due to two causes: first, land is over-abundant, and no one needs to mark off his share; secondly, agricultural methods being as yet primitive, the cultivator leaves his field as soon as it is exhausted for another. Land is cultivated, if not in common, at least without division; it belongs to society as a whole, or rather, to the tribe. The fruits of it only belong to the producer.

(2) Gradually, however, population becomes more sedentary and more closely attached to the soil. It also becomes denser and has to adopt more productive methods of cultivation. The first phase then is succeeded by a second, the temporary possession together with *periodical redistribution.* The land, though always considered as belonging to society, is divided equally among the heads of families. This division is not final, but only for a certain length of time. At first the period is one year, as this is the ordinary cycle for agricultural operations. As agricultural methods improve and cultivators require more time for maturing of their labours, the periods become gradually longer.........

(3) A time comes when these periodic divisions fall into disuse. Those who have improved their lands do not willingly submit to an operation which, for the good of the community, deprives themat intervals of the surplus value due to their labour. Thus there arises the institution of family ownership, each family

की भूमि के ऊपर पूर्ण स्वत्वाधिकार प्राप्त हो जाता है । वह संपत्ति वैयक्तिक संपत्ति नहीं होती । उसको बेचने आदि का अधिकार स्वामी को नहीं होता, कुटुंब का मुखिया न तो भूमि को बेच सकता है, न उसे किसी को दे सकता है, और न अपने मरने के समय अलग कर सकता है । कारण, वह सम्मिलित या समष्टिगत संपत्ति मानी जाती है ।

(४) यद्यपि यह नियम सर्वत्र के लिये लागू नहीं है, बल्कि आकस्मिक है, पर मानव-समाज के इतिहास के बाहर नहीं है । यह चौथी दशा है—जय और पराजय । संसार में ऐसा कोई देश नहीं मिलेगा, जहाँ दूसरी जातियों ने आकर बल-पूर्वक अपना अधिकार न कर लिया हो । विजेता लोग वहाँ के स्वामी हो जाते हैं, और विजित उनके दास या प्रजा । विजेतागण कृषि करने का श्रम नहीं उठाते । वे केवल भूमि के स्वामी बन जाते और भूमि वहाँ के अधिवासियों को शर्तबंदी पर जोतने को दे देते हैं । यह शर्तबंदी लगभग स्वत्वाधिकार ही के होती है ; पर उसमें कुछ शर्तें लगी रहती हैं । जैसे जोतनेवाले को कुछ काम करना पड़ेगा, उसे उस लिये अधिपति को कुछ कर देना पड़ेगा, और वह बि अधिपति की आज्ञा लिए उसे अलग न करेगा । इत्यादि

(५) इस दशा में पहुँचकर व्यक्तित्व और नैति साम्य का उदय होता और मांडलिक प्रथा का लोप हो जाता है । इस प्रकार की दशा फ्रांस में उस सम संघटित हुई थी, जब वहाँ राज्यक्रांति हुई थी । इ स्थिति में पहुँचकर भूमि पर 'सामान्य स्वत्व' उत्प हो जाता है, और उसके स्वामी को स्वामी के सब स्व मिल जाते हैं । पर यह सामान्य स्वत्व वह स्वत्व नहीं है जो स्वामी को अपनी स्थायी संपत्ति पर प्राप्त होता है

(६) इस अवस्था में पहुँचकर भू-स्वामी को स्था संपत्ति के स्वामी के सब स्वत्व या अधिकार प्राप्त हो जाते हैं, और भू-संपत्ति स्थायी संपत्ति बन जाती है इस स्थिति में किसी को अपनी भूमि पर केवल अधिका ही नहीं होता, बल्कि वह उसे स्थायी संपत्ति की भाँ इच्छानुसार बेच या अलग भी कर सकता है ।

---

henceforth being the obsolute owner of its share of land. This is not individual property, for the right of disposal does not exist. The head of the family can neither sell the land, nor give it away, nor dispose of it at death, since it is considered collective estate.

(4) The evolution of landed property passes also through a phase which, though accidental in its nature, has never been omitted in the history of human societies I refer to *Conquest*. There is not a single territory on the earth's surface which has not at some time or other been taken by force from the people who inhabited it and appropriated by the conquering race. The conquerors, it is true, just because they were conquerors and masters, did not trouble to cultivate the land. Appropriating simply legal ownership, the "Eminent domain" as it used to be called, they left the actual possession of the soil to the subject population, by way of *tenure* This tenure was more or less akin to veritable ownership, but was always limited by conditions under which it was granted to the cultivator, by the servitudes with which he w burdened, by the dues which he had to pay his over-lord, and by the fact that he w unable to obviate the land without latte consent.

(5) The growth of individualism and Civil equality, and the disappearance of th Tendal system, particularly which came und the influence of the French Revolution, broug about a fifth phase, that marks our own epo It is characterised by the final establishme of free ownership of land, with all the attr butes which the right of ownership impli Still, even this free ownership of land is n identical in all points with the ownership movable property.

(6) To assimilate the ownership of land property to that of movable property, a to mark the final stage of this evolution, on one step remained. It consisted in maki the ownership of land mobile, so that individual could not only possess land, b dispose of it as easily as movable property

(७) इसके अनंतर सातवीं अवस्था के आने की आशा है। इसमें भू-संपत्ति विभाज्य हो जाती है, और उसके हिस्सेदार होते हैं। यह हिस्सेदारी या तो किसी बही में लिखी जाती है, या इसके लिये उनको सनद अथवा परचे मिलते हैं।"

पूर्वोक्त सात अवस्थाओं में पहली, दूसरी और तीसरी अवस्था स्वाभाविक है। चौथी अवस्था से भूमि-कर आरंभ हो जाता है। हमारे यहाँ के ग्रंथों में इस अवस्था के पूर्व ही भूमि-कर के आरंभ का कारण यह मिलता है कि जब प्रजाओं में परस्पर राग-द्वेष उत्पन्न हुआ, तो उन्हें किसी ऐसे व्यक्ति को अपना राजा बनाने की आवश्यकता पड़ी, जिसे उन लोगों ने भूमि की उपज का एक अंश बलि या पुरस्कार के रूप में देना स्वीकार किया। पाँचवीं और छठी अवस्था एकदेशीय है, सार्वदेशिक नहीं। ये अवस्थाएँ भारतवर्ष में कभी संघटित नहीं हुईं। सातवीं अवस्था, जिसकी संभावना या आशंका 'ज़ीड' महोदय ने की है, अँगरेज़ों की कृपा से भारत-वासियों को विना किसी प्रकार की चेष्टा किए ही प्राप्त हो गई है। बड़ी-बड़ी रियासतें पट्टीदारी या हिस्सेदारी के कारण खंड-खंड हो गईं; बड़े-बड़े ज़मींदार, जो किसी समय में अत्यंत प्रभावशाली या राज-सम्मानित समझे जाते थे, उनकी संतानें इसी अनुग्रह के कारण आज इधर-उधर ठोकरें खाती अथवा दासत्व का पट्टा गले में बाँधे फिरती हैं।

हम आगे चलकर यह दिखलाने का उद्योग करेंगे कि सामंत और ज़मींदारी आदि की प्रथाएँ इस देश में कैसे आरंभ हुईं।

आरंभ में छोटे-छोटे राजा थे, और वे परस्पर युद्ध किया करते थे। उनमें जो बलवान् होता था, वह दूसरे को परास्त कर अपने वश में कर लेता था। ऐसे पराजित राजा उसके सामंत हो जाते थे। इस प्रकार एक-एक राजा के अधीन अनेकानेक सामंत हो गए। फिर कालांतर में इन राजों में भी परस्पर विजयाकांक्षा उत्पन्न होने लगी। तब उनमें जो अत्यंत पराक्रमी हुआ, वह सर्वोपरि गिना जाने लगा। उसे लोग चक्रवर्ती कहते थे, और उसके अधीन राज्य उसके मांडलिक कहलाते थे। इस प्रकार मंडल के अंतर्गत मंडल बनते गए, और प्रत्येक अधीनस्थ राजा अपने से ऊँचे अधिपति को अपने कोश की आय का एक अंश देता गया। इस प्रकार उत्तरोत्तर श्रेष्ठ अधिपतियों के कोश दो प्रकार से बढ़ते गए—एक तो उस कर से, जो उन्हें अपनी प्रजा से मिलता था, दूसरे उस कर से, जो उन्हें अपने अधीनस्थ मांडलिकों और सामंतों से मिलता था। युधिष्ठिर के काल में जो व्यवस्था थी, उसका उल्लेख महाभारत में इस प्रकार है—

> "ग्रामस्याधिपतिः कार्यो दशग्राम्यस्तथापरः ;
> द्विगुणाया शतस्यैवं सहस्रस्य च कारयेत्।
> तत्र ह्यनेकपायत्तं राष्ट्रं भवति भारत ;
> शाखानगरमर्हस्तु सहस्रपतिरुत्तमः।"

अर्थात् गाँव का एक अधिपति हो। ऐसे दस ग्रामाधिपों का एक 'दशप'-नामक अधिपति हो। दो दशपों का एक 'विंशतिप' हो। पाँच विंशतिप का एक 'शतप' और दस 'शतप' का एक 'सहस्रप' या 'सहस्राधिप' हो। इस प्रकार राष्ट्र में अनेक अधिपति एक के अधीन दूसरे रहें, और सहस्रपति का प्रधान स्थान किसी शाखा-नगर या क़सबे में रहे।

यहाँ सबसे छोटा जो एक-ग्रामाधिप था, उससे लेकर सहस्रप तक की वृत्ति का प्रबंध इस प्रकार लिखा गया है—

> "यानि ग्राम्यानि भोज्यानि ग्रामिकस्तानुपाश्नियात् ;
> दशपस्तेन भर्तव्यस्तेनापि द्विगुणाधिपः।
> ग्रामं ग्रामशताध्यक्षो भोक्तुमर्हति सत्कृतः।"

अर्थात् गाँव के कर का जो लाभ है, उसे ग्रामिक ले। उसी से—अर्थात् अपने ग्राम के कर से—दशप, और उसी से विंशतिप की जीविका हो। शताध्यक्ष को एक गाँव पूरा मिले।

इससे यह जाना जाता है कि गाँव कभी विभाज्य नहीं माना गया, और किसी 'स्मृति' में 'भू-संपत्ति' ऐसी संपत्ति नहीं मानी गई, जिसको उसका स्वामी बेच सकता, या जिसे उसके मरने पर उसके उत्तराधिकारी बाँट सकते। हाँ, राजा ऐसे शत्रु की निजी संपत्ति को, जो उसकी अधीनता स्वीकार न करता हो,

---

(7) We might perhaps expect a further stage in this evolution, a stage in which landed property would be represented by a share *i. e.* registered little or even [illegible] bearer.

हराकर अपनी निज की संपत्ति में मिला लेता था, और उसमें से वह दूसरों को दान कर सकता या पुरस्कार में दे सकता था। सारांश यह कि ग्राम के आधिपत्य की प्राप्ति के दो प्रकार थे—

१—राजा से [(क) परंपरा-गत, (ख) प्रदत्त]
२—जीतने से

पर यह संपत्ति किसी दशा में 'विभाज्य' या 'देय' नहीं समझी जाती थी। यह प्रथा मुसलमानों के काल तक लगातार चली आई। उस समय भी एक ग्राम का एक ही अधिपति होता था ; यह भले ही था कि कई गाँवों का एक ही ज़मींदार होता था ; पर एक गाँव के दो ज़मींदार नहीं होते थे। गाँव उस समय विभाज्य या देय नहीं समझा जाता था। न इसकी गणना स्थिर संपत्ति में थी। स्थिर संपत्ति में केवल घर, वाटिका, वृक्ष आदि माने जाते थे। मुसलमान-काल तक गाँव स्थिर संपत्ति नहीं माने गए थे। अँगरेज़ी-राज्य में ही उनकी गणना स्थिर संपत्ति में हुई है।

अब भूमि-कर के संबंध में मीमांसा की जाती है। हमारे धर्म-ग्रंथों में, आरंभ में, भूमि-कर 'धान्य का दशांश' माना गया था। इसके निर्धारण का हेतु केवल रक्षा बतलाई गई थी। पर आगे चलकर इसकी मात्रा में भेद पड़ता गया, और अंत में जाकर वह दशांश से 'तृतीयांश' हो गई। इसी कारण लोक-व्यवहार में शस्य या फ़सल का नाम 'तिहाई' पड़ गया। महाभारत में 'कर' लगाते समय दो बातों पर ध्यान रखने की शिक्षा दी गई है—

"फलं कर्म च संप्रेक्ष्य ततः सर्वं प्रकल्पयेत् ;
फलं कर्म च संत्यज्य न कश्चित्संप्रवर्तते।"

अर्थात् फल और कर्म के ऊपर ध्यान रखकर सब प्रकार के कर लगाने चाहिए। फल और कर्म को त्यागकर कोई काम नहीं करता। सारांश यह कि भूमि-कर या 'लगान' लगाने में कर्म अर्थात् श्रम और उसके लाभ या फल के ऊपर ध्यान रखना चाहिए। जिससे कृषक को अपने कर्म (काम) और लागत का फल मिले।

पाश्चात्य अर्थ-नीतिज्ञों में 'रिकार्डो'-नामक इँगलिस्तान का अर्थ-नीतिज्ञ सबसे प्रधान माना जाता है। इसी ने सबसे पहले 'भूमि-कर' की समस्या के रहस्य का उद्घाटन किया है। योरप के अन्य सब अर्थ-नीतिज्ञ न्यूनाधिक इसी के सिद्धांत के आधार को लेकर चले हैं। उसका कथन * है—

"भूमि-कर भूमि की उपज का वह अंश है, जो भू-स्वामी को भूमि की मौलिक और अक्षय शक्ति से काम लेने के बदले में दिया जाता है।

जब किसी देश में लोग पहले-पहल बसते हैं, तो वहाँ उर्वरा भूमि बहुत अधिक रहती है। उस समय वहाँ के अधिवासियों को अपने भरण-पोषण के लिये उसका अत्यंत अल्प भाग कृषि के लिये पर्याप्त होता है ; और सचमुच अधिवासियों के पास जो पूँजी होती है, तदनुसार वे उतने ही को जोत-बो सकते हैं। उस समय भूमि-कर नहीं होता, भूमि के लिये कोई कुछ नहीं देता। कारण, भूमि इतनी रहती है कि जो जहाँ चाहे, वहाँ जोत-बो सकता है। उस समय वह किसी की संपत्ति नहीं होती। धीरे-धीरे जन-संख्या बढ़ती जाती है, और लोग मध्यम श्रेणी की भूमि जोतना आरंभ करते हैं। उस समय भूमि-कर की प्रथा का आरंभ होता है, और उत्तम श्रेणी की भूमि पर कर लगता है ; अर्थात् उत्तम और मध्यम श्रेणी की भूमियों के गुणों के भेद और बलाबल के आधार पर कर लगाया

---

* Rent is that portion of the produce of the earth which is paid to the landlord for the use of the original and indestructible powers of the soil.

On the first settling of a country in which there is abundance of rich and fertile land, a very small portion of which is required to be cultivated for the support of the actual population or indeed can be cultivated with the capital which the population can command. there will be no rent, for no one would pay for the use of land when there was an abundantquantity not yet appropriated, and therefore at the disposal of whosoever might chose to cultivate it ....when with the progress of society land of the second degree of fertility is taken into cultivation, rent immediately commences on that of the first quality and the amount of that rent will depend on the difference in the quality of these two portions of

जाता है। फिर जब निकृष्ट श्रेणी की भूमि में भी कृषि होने लगती है, तब मध्यम श्रेणी की भूमि पर कर लग जाता है, और इसके कर का भी आधार मध्यम और निकृष्ट श्रेणी की भूमियों के गुणों का बलाबल ही होता है। उस समय उत्तम श्रेणी की भूमि का कर बढ़ जाता है। ऐसी अवस्था में प्राचीन भूमि पर यथेष्ट धन ख़र्च किया जाता है, और उस पर कर भी लगता है। कारण, कर सदैव उस उपज का अंतर होता है, जो समान श्रम और व्यय से (भूमियों में) हुआ करता है। ऐसी भूमि को, जो सबसे अधिक उपजाऊ होती और जिसमें सब प्रकार की सुविधा पड़ती है, लोग पहले जोतते हैं।"

हिंदू-ग्रंथ देखने से जान पड़ता है कि भूमि-कर पहले उपज का दशांश था। उस समय ९ भाग उपज भूमि को जोतनेवालों के लिये छोड़ दी गई थी। इस कर के स्थापन का कारण 'भूमि की उर्वरा-शक्ति' न थी, जिसके आधार पर 'कर' का लगाया जाना पाश्चात्य विद्वानों ने माना है। उस समय भूमि का कोई स्वामी भी न था, जिसे, भूमि की उर्वरा-शक्ति को काम में लाने के लिये, किसान भूमि की उपज का कोई भाग देते। दशांश तो उन लोगों ने राजा को अपनी रक्षा के बदले में देना स्वीकार किया था। भारतवर्ष के राजा इतने अन्यायी न थे कि भूमि की उर्वरा-शक्ति से लाभ उठाने के बदले में अपनी प्रजा से 'भूमि-कर' लेते, और रक्षा तथा न्याय के मूल्य-स्वरूप कर के बोझे के नीचे दबाकर उनको चकनाचूर कर देते। उस समय के राजा यह बात अच्छी तरह समझते थे कि भूमि यद्यपि परिमित है, फिर भी यह प्रकृति का एक अंग है: इससे लाभ उठाने के सभी वैसे ही अधिकारी हैं, जैसे कि धूप, वायु, अग्नि आदि प्रकृति के अंशों से सब लाभ उठाते हैं। इसी कारण उस समय भूमि का कुछ भी मूल्य न था, और न हिंदू-शास्त्रों में उसे स्थिर संपत्ति और विभाज्य माना गया है। स्थिर संपत्ति तो वह मानी गई, जो भूमि से संलग्न हो, जिसे बिना छिन्न-भिन्न किए कोई स्थानांतर में न ले जा सके; जैसे घर, वाटिका, वृक्ष इत्यादि। वह भी संपत्ति उसी की मानी जाती थी, जिसने उसे लगाया, बनाया या बोया हो। किंतु यदि वे प्राकृतिक हैं, तो उनसे लोग उपयोग-मात्र उठाने के अधिकारी थे। उदाहरण-स्वरूप पर्वत, वन, नदी आदि पर की ऐसी वस्तुएँ राष्ट्र की संपत्ति मानी जाती थीं। इससे यह स्पष्ट है कि हिंदुओं के भू-कर-विधान का आधार पाश्चात्यों के भू-कर-विधान के आधार से नितांत विभिन्न है। यही कारण है कि पाश्चात्य देशों में, या जहाँ पाश्चात्यों का संसर्ग हुआ, प्रजा पर नक़दी का कर लगाया गया है, और उस कर को यथासमय, ज्यों-ज्यों महँगी बढ़ती गई, बढ़ाने का प्रयत्न किया गया है। वहाँ यह मानकर 'कर' की कल्पना हुई है कि भूमि पर भू-स्वामी का वैयक्तिक अधिकार है; भूमि राज्य का अंश नहीं है।

भारतवर्ष में, जैसा कि ऊपर दिखलाया जा चुका है, भूमि-कर पहले उपज का दशांश था। पीछे ज्यों-ज्यों रक्षा का भार बढ़ता गया, और राजों को अपनी प्रजा के लिये विशेष सुख-सामग्री आदि जुटाने के लिये अधिक व्यय की आवश्यकता पड़ती गई, त्यों-त्यों प्रजा कर को बढ़ाती गई। महाभारत के देखने से पता चलता है कि उस समय छठा भाग भूमि-कर था; जिसे बलि कहते थे। व्यासजी युधिष्ठिर से कहते हैं—

"आदाय बलिषड्भागं यो राष्ट्रं नाभिरक्षति,
प्रतिगृह्णाति तत्पापं चतुर्थांशेन भूमिपः।"

अर्थात् षष्ठांश बलि को लेकर जो राजा राष्ट्र की रक्षा नहीं करता, उस राजा को प्रजा के पाप का चतुर्थांश मिलता है।

यह षडंश बलि भी रक्षा के बदले में ली जाती थी—भूमि को जोतने का कर नहीं थी।

मौर्य-काल में यह षड्भाग बलि तृतीयांश और चतुर्थांश हो गई थी। कौटिल्य के अर्थ-शास्त्र में, कोशाभिसंहरणाध्याय में, लिखा है—

---

land. When land of the third quality is taken into cultivation, rent immediately commences on the second and it is regulated as before by the difference in productive powers. At the same time the rent of the first quality will rise...... ...In such case capital will be preferably employed on the old land and will equally create rent, for rent is always the difference between the produce obtained by the employment of two equal quantities of capital and labour........,The most fertile and most favourably situated land will be first cultivated.

हराकर अपनी निज की संपत्ति में मिला लेता था, और उसमें से वह दूसरों को दान कर सकता या पुरस्कार में दे सकता था। सारांश यह कि ग्राम के आधिपत्य की प्राप्ति के दो प्रकार थे—

१—राजा से [(क) परंपरा-गत, (ख) प्रदत्त]
२—जीतने से

पर यह संपत्ति किसी दशा में 'विभाज्य' या 'देय' नहीं समझी जाती थी। यह प्रथा मुसलमानों के काल तक लगातार चली आई। उस समय भी एक ग्राम का एक ही अधिपति होता था ; यह भले ही था कि कई गाँवों का एक ही ज़मींदार होता था ; पर एक गाँव के दो ज़मींदार नहीं होते थे। गाँव उस समय विभाज्य या देय नहीं समझा जाता था। न इसकी गणना स्थिर संपत्ति में थी। स्थिर संपत्ति में केवल घर, वाटिका, वृक्ष आदि माने जाते थे। मुसलमान-काल तक गाँव स्थिर संपत्ति नहीं माने गए थे। अँगरेज़ी-राज्य में ही उनकी गणना स्थिर संपत्ति में हुई है।

अब भूमि-कर के संबंध में मीमांसा की जाती है। हमारे धर्म-ग्रंथों में, आरंभ में, भूमि-कर 'धान्य का दशांश' माना गया था। इसके निर्धारण का हेतु केवल रक्षा बतलाई गई थी। पर आगे चलकर इसकी मात्रा में भेद पड़ता गया, और अंत में जाकर वह दशांश से 'तृतीयांश' हो गई। इसी कारण लोक-व्यवहार में शस्य या फ़सल का नाम 'तिहाई' पड़ गया। महाभारत में 'कर' लगाते समय दो बातों पर ध्यान रखने की शिक्षा दी गई है—

"फलं कर्म च संप्रेक्ष्य ततः सर्वं प्रकल्पयेत् ;
फलं कर्म च संत्यज्य न कश्चित्संप्रवर्तते।"

अर्थात् फल और कर्म के ऊपर ध्यान रखकर सब प्रकार के कर लगाने चाहिए। फल और कर्म को त्यागकर कोई काम नहीं करता। सारांश यह कि भूमि-कर या 'लगान' लगाने में कर्म अर्थात् श्रम और उसके लाभ या फल के ऊपर ध्यान रखना चाहिए। जिससे कृषक को अपने कर्म (काम) और लागत का फल मिले।

पाश्चात्य अर्थ-नीतिज्ञों में 'रिकार्डो'-नामक इँगलिस्तान का अर्थ-नीतिज्ञ सबसे प्रधान माना जाता है। इसी ने सबसे पहले 'भूमि-कर' की समस्या के रहस्य का उद्घाटन किया है। योरप के अन्य सब अर्थ-नीतिज्ञ न्यूनाधिक इसी के सिद्धांत के आधार को लेकर चले हैं उसका कथन * है—

"भूमि-कर भूमि की उपज का वह अंश है, जो भू-स्वामी को भूमि की मौलिक और अक्षय शक्ति से काम लेने के बदले में दिया जाता है।

जब किसी देश में लोग पहले-पहल बसते हैं, तो वहाँ उर्वरा भूमि बहुत अधिक रहती है। उस समय वहाँ के अधिवासियों को अपने भरण-पोषण के लिये उसका अत्यंत अल्प भाग कृषि के लिये पर्याप्त होता है ; और सचमुच अधिवासियों के पास जो पूँजी होती है, तदनुसार वे उतने ही को जोत-बो सकते हैं। उस समय भूमि-कर नहीं होता, भूमि के लिये कोई कुछ नहीं देता। कारण, भूमि इतनी रहती है कि जो जहाँ चाहे, वहाँ जोत-बो सकता है। उस समय वह किसी की संपत्ति नहीं होती। धीरे-धीरे जनसंख्या बढ़ती जाती है, और लोग मध्यम श्रेणी की भूमि जोतना आरंभ करते हैं। उस समय भूमि-कर की प्रथा का आरंभ होता है, और उत्तम श्रेणी की भूमि पर कर लगता है ; अर्थात् उत्तम और मध्यम श्रेणी की भूमियों के गुणों के भेद और बलाबल के आधार पर कर लगाया

---

* Rent is that portion of the produce of the earth which is paid to the landlord for the use of the original and indestructible powers of the soil.

On the first settling of a country in which there is abundance of rich and fertile land, a very small portion of which is required to be cultivated for the support of the actual population or indeed can be cultivated with the capital which the population can command there will be no rent, for no one would pay for the use of land when there was an abundantquantity not yet appropriated, and therefore at the disposal of whosoever might chose to cultivate it ....when with the progress of society land of the second degree of fertility is taken into cultivation, rent immediately commences on that of the first quality and the amount of that rent will depend on the difference in the quality of these two portions

जाता है। फिर जब निकृष्ट श्रेणी की भूमि में भी कृषि होने लगती है, तब मध्यम श्रेणी की भूमि पर कर लग जाता है, और इसके कर का भी आधार मध्यम और निकृष्ट श्रेणी की भूमियों के गुणों का बलाबल ही होता है। उस समय उत्तम श्रेणी की भूमि का कर बढ़ जाता है। ऐसी अवस्था में प्राचीन भूमि पर यथेष्ट धन ख़र्च किया जाता है, और उस पर कर भी लगता है। कारण, कर सदैव उस उपज का अंतर होता है, जो समान श्रम और व्यय से (भूमियों में) हुआ करता है। ऐसी भूमि को, जो सबसे अधिक उपजाऊ होती और जिसमें सब प्रकार की सुविधा पड़ती है, लोग पहले जोतते हैं।"

हिंदू-ग्रंथ देखने से जान पड़ता है कि भूमि-कर पहले उपज का दशांश था। उस समय ९ भाग उपज भूमि को जोतनेवालों के लिये छोड़ दी गई थी। इस कर के स्थापन का कारण 'भूमि की उर्वरा-शक्ति' न थी, जिसके आधार पर 'कर' का लगाया जाना पाश्चात्य विद्वानों ने माना है। उस समय भूमि का कोई स्वामी भी न था, जिसे, भूमि की उर्वरा-शक्ति को काम में लाने के लिये, किसान भूमि की उपज का कोई भाग देते। दशांश तो उन लोगों ने राजा को अपनी रक्षा के बदले में देना स्वीकार किया था। भारतवर्ष के राजा इतने अन्यायी न थे कि भूमि की उर्वरा-शक्ति से लाभ उठाने के बदले में अपनी प्रजा से 'भूमि-कर' लेते, और रक्षा तथा न्याय के मूल्य-स्वरूप क़र के बोझे के नीचे दबाकर उनको चकनाचूर कर देते। उस समय के राजा यह बात अच्छी तरह समझते थे कि भूमि यद्यपि परिमित है, फिर भी यह प्रकृति का एक अंग है : इससे लाभ उठाने के सभी वैसे ही अधिकारी हैं, जैसे कि धूप, वायु, अग्नि आदि प्रकृति के अंशों से सब लाभ उठाते हैं। इसी कारण उस समय भूमि का कुछ भी मूल्य न था, और न हिंदू-शास्त्रों में उसे स्थिर संपत्ति और विभाज्य माना गया है। स्थिर संपत्ति तो वह मानी गई, जो भूमि से संलग्न हो, जिसे विना छिन्न-भिन्न किए कोई स्थानांतर में न ले जा सके ; जैसे घर, वाटिका, वृक्ष इत्यादि। वह भी संपत्ति उसी की मानी जाती थी, जिसने उसे लगाया, बनाया या बोया हो। किंतु यदि वे प्राकृतिक हैं, तो उनसे लोग उपयोग-मात्र उठाने के अधिकारी थे। उदाहरण-स्वरूप पर्वत, वन, नदी आदि पर की ऐसी वस्तुएँ राष्ट्र की संपत्ति मानी जाती थीं। इससे यह स्पष्ट है कि हिंदुओं के भू-कर-विधान का आधार पाश्चात्यों के भू-कर-विधान के आधार से नितांत विभिन्न है। यही कारण है कि पाश्चात्य देशों में, या जहाँ पाश्चात्यों का संसर्ग हुआ, प्रजा पर नक़दी का कर लगाया गया है, और उस कर को यथासमय, ज्यों-ज्यों महँगी बढ़ती गई, बढ़ाने का प्रयत्न किया गया है। वहाँ यह मानकर 'कर' की कल्पना हुई है कि भूमि पर भू-स्वामी का वैयक्तिक अधिकार है ; भूमि राज्य का अंश नहीं है।

भारतवर्ष में, जैसा कि ऊपर दिखलाया जा चुका है, भूमि-कर पहले उपज का दशांश था। पीछे ज्यों-ज्यों रक्षा का भार बढ़ता गया, और राजों को अपनी प्रजा के लिये विशेष सुख-सामग्री आदि जुटाने के लिये अधिक व्यय की आवश्यकता पड़ती गई, त्यों-त्यों प्रजा क़र को बढ़ाती गई। महाभारत के देखने से पता चलता है कि उस समय छठा भाग भूमि-कर था ; जिसे बलि कहते थे। व्यासजी युधिष्ठिर से कहते हैं—

> "आदाय बलिषड्भागं यो राष्ट्रं नाभिरक्षति ,
> प्रतिगृह्णाति तत्पापं चतुर्थांशेन भूमिपः।"

अर्थात् षष्ठांश बलि को लेकर जो राजा राष्ट्र की रक्षा नहीं करता, उस राजा को प्रजा के पाप का चतुर्थांश मिलता है।

यह षडंश बलि भी रक्षा के बदले में ली जाती थी—भूमि को जोतने का कर नहीं थी।

मौर्य-काल में यह षड्भाग बलि तृतीयांश और चतुर्थांश हो गई थी। कौटिल्य के अर्थ-शास्त्र में, कोशाभिसंहरणाध्याय में, लिखा है—

---

land. When land of the third quality is taken into cultivation, rent immediately commences on the second and it is regulated as before by the difference in productive powers. At the same time the rent of the first quality will rise... ...In such case capital will be preferably employed on the old land and will equally create rent, for rent is always the difference between the produce obtained by the employment of two equal quantities of capital and labour........,The most fertile and most favourably situated land will be first cultivated.

"कोशमकोशः प्रत्युत्पन्नार्थकृच्छ्रं संगृह्णीयात् । जनपदं महांतमल्पप्रमाणं वा देवमातृकं प्रभूतधान्यं धान्यस्यांशं तृतीयं चतुर्थं वा याचेत यथासारम्। मध्यमवरं वा दुर्ग-सेतुकर्म-वणिक्-पथ-शून्यनिवेश-खनि-द्रव्य-हस्ति-वनकर्मोपकारिणं प्रत्यंतमल्प-प्राणं वा न याचेत। धान्यपशुहिरण्यादि निविशमानाय दद्यात् । चतुर्थमंशं धान्यानां बीजभक्तशुद्धं हिरण्येन क्रीणीयात् । अरण्यजातं श्रोत्रियस्वं च परिहरेत् । × × × × × × चतुर्थमंशं धान्यानां षष्ठं वन्यानां तूल-लाक्षा-क्षौम-वल्कल-कार्पास-रौम-कौशेय-कौषधगंधं पुष्पफलशाकपण्यानां काष्ठ-वेणु-मांस-वल्लूराणां च गृह्णीयुः । दंताजिनस्यार्द्धम् ।"

अर्थात् जब राजा का कोश क्षीण हो, धन का कष्ट हो, उस दशा में वह इस रीति से (धन का) संग्रह करे। जनपद चाहे बड़ा हो या छोटा, यदि वहाँ केवल वर्षा के कारण अन्न की उपज अच्छी होती हो, तो वहाँ उपज का तृतीयांश या चतुर्थांश माँगकर प्रजा से ले। मध्यम * और अवर को तथा दुर्ग † सेतुकर्म, वणिक्पथ, शून्य-निवेश (नई आबादी) खान, द्रव्य-वन और हस्ति-वन के काम में उपकारी (सहायता करनेवालों) और जो सीमा पर रहते हों, या अल्प-प्राण हों, उनसे कुछ न माँगे। नए बसनेवालों को धान्य, पशु और धन (हिरण्य) दे। उपज का जो अंश बीज और भक्त (खाने के लिये जो वर्ष-भर के लिये पर्याप्त हो) अलग कर देने से बचे, उसका चौथा भाग दाम देकर मोल ले। अरण्य में उत्पन्न होनेवाली वस्तु और जो श्रोत्रियों के लिये है, जैसे नीवार आदि, उसको त्याग दे। × × × × धान्य का चतुर्थांश, वन की उपज का षष्ठांश ले। रुई, लाख, क्षौम, वल्कल (वृक्ष की छाल का वस्त्र), कार्पास, रौम, कौशेय, कौषध (ओषधि), गंध, पुष्प, फल, शाक आदि (जो बाज़ार में बिकने के लिये हों) तथा काठ, बाँस, मांस और वल्लूर का षष्ठ भाग ले।

इससे यह प्रकट है कि राजा के लिये उपज का तृतीयांश या चतुर्थांश जो कर-स्वरूप लेने का विधान है, वह आपद्धर्म है ; अर्थात् राजा ऐसी अवस्था में अपनी प्रजा से तृतीयांश या चतुर्थांश ले सकता है, जब उसे अर्थ-संकट हो। किंतु उस दशा में भी उसे अपनी प्रजा से याचना करनी चाहिए। इससे यह कभी आशय नहीं निकलता कि तृतीयांश या चतुर्थांश उस समय का था, बल्कि राज-कर षष्ठांश ही था। राजा षष्ठांश ही ले सकता था। हाँ, आपद्दशा में, जैसे जब अन्य राजों से युद्ध करना होता, या ऐसे ही अन्य कारणों से उसे अर्थ-संकट का सामना करना पड़ता, तब वह अपनी प्रजा से ऐसी भूमि की उपज की चौथाई या तिहाई माँगता था, जिसमें विना सिंचाई किए, केवल वर्षा के जल से, अच्छी फ़सल उपजती थी।

यहाँ पर यह भी दिखला देने की आवश्यकता है कि उस समय गाँवों का प्रबंध क्या था। गाँव उस समय दो प्रकार के थे। एक वे, जो बसे हुए थे, जिनका प्रबंध उन सामंतों के अधीन था, जो राजा को अपनी आय का भाग देते थे। दूसरे वे, जो नए बसाए जाते थे। पुराने बसे हुए गाँवों के भी दो भेद थे। एक करद, दूसरे अकरद। करद गाँव वे थे, जिनका प्रबंध राजा के अधीन था। और, अकरद वे थे, जिनका प्रबंध उनका स्वामी करता था। अकरद गाँवों में उनके अधिपति को 'भोग' का स्वत्व था, और करद गाँवों में राजा भोग के स्वत्व का भागी था।

गाँव के बसाने के संबंध में कौटिल्य लिखते हैं—

"भूतपूर्वमभूतपूर्वं वा जनपदं परदेशापवाहनेन स्वदेशाभिष्यंदवमनेन वा निवेशयेत् । शूद्रकर्षकप्रायं कुलशतावरं पंचशतकुलपरं ग्रामं क्रोशद्विक्रोशसीमानमन्योन्यारक्षं निवेशयेत्। नदीशैलवनगृष्टिदरीसेतुबंधशाल्मलीशमीक्षीरवृक्षानंतेषु सीम्नां स्थापयेत् । अष्टशतग्राम्यां मध्ये स्थानीयं चतुःशतग्राम्या द्रोणमुखं द्विशतग्राम्या खार्वटिकं दशग्रामी संग्रहेण संग्रहणं स्थापयेत । अंतेष्वंतपालदुर्गाणि जनपदद्वाराण्यंतपालाधिष्ठितानि स्थापयेत् । तेषामंतराणि वागुरिकशबरपुलिंद

---

* "षंडो मध्यमः । इक्षवः प्रत्यवरं ।" बाग़ की चीज़ें जो लोग अपने काम के लिये बोवें, वे मध्यम हैं। ईख प्रत्यवर या अवर है।

† "शुल्कं दंडः पौतवं नागरिको लक्षणाध्यक्षो मुद्राध्यक्षः सुरा सूनासूत्रं तैलं घृतं क्षारं सौवर्णिकः पण्यसंस्था वेश्या द्यूतं वास्तुकं कारुशिल्पिगणो देवताध्यक्षो द्वारबहिरिकादेयं च दुर्गम् । पुष्पफलवाटषंडकेदारमूलवापास्सेतुः । स्थलपथो वारिपथश्च वणिक्पथः । सुवर्णरजतवज्रमणिमुक्ताप्रवालशंखलोहलवणभूमिप्रस्तररसधातवः खनिः । पशुमृगद्रव्यहस्तिवनपरिग्रहो वनम् ।"

चांडालारण्यचरा रक्षेयुः । ऋत्विगाचार्यपुरोहितश्रोत्रियेभ्यो ब्रह्मदेयान्यदंडकराण्यभिरूपदायकानि प्रयच्छेत्। अध्यक्षसंख्यापकादिभ्यो गोपस्थानिकानीकस्थचिकित्सकाश्वदमकजंघारिकेभ्यश्च विक्रयाधानवर्जम्। करदेभ्यः कृतक्षेत्राण्यैकपुरुषकाणि प्रयच्छेत्। अकृतानि कर्तृभ्यो नादेयात्। अकृषतामाच्छिद्यान्येभ्यः प्रयच्छेत्। ग्रामभृतकवैदेहका वा कृषेयुः। अकृषंतोऽपहीनं दद्युः। धान्यपशुहिरण्यैश्चैनाननुगृह्णीयात्तान्यनुसुखेन दद्युः। अनुग्रहपरिहारौ चैभ्यः कोशवृद्धिकरौ दद्यात्। कोशोपघातकौ वर्जयेत्। अल्पकोशो हि राजा पौरजानपदानेव ग्रसते।"

अर्थात् जहाँ पहले गाँव रहा हो, पर उजड़ गया हो, और जहाँ कभी बस्ती न रही हो, वहाँ दूसरे देश अथवा स्वदेश से, जहाँ बस्ती घनी हो, लोगों को बुलाकर बसाया जाय। ग्राम में दो सौ घर से कम और पाँच सौ घर से अधिक घर न हों, और ये प्रायः शूद्रों और कृषकों के घर रहें, जो एक दूसरे की रक्षा करें। गाँव की सीमा कोस-दो कोस की हो। गाँव की सीमा नदी, पर्वत और वन तक रहे; नहीं तो सीमा पर गृष्टि, दरी, सेतु-बंध, सेमल, शमी या क्षीर-वृक्ष रहें। आठ सौ गाँवों के मध्य एक स्थानीय, चार सौ के मध्य एक द्रोणमुख, दो सौ के मध्य एक खार्वटिक और दस-दस गाँवों में एक संग्रहण बनाए जायँ। जनपद की सीमा पर अंतपालों के दुर्ग रहें। वे अंतपाल जनपद के नाके पर रहें। अंतपालों के बीच में वागुरिक, शबर, पुलिंद, चांडाल और अरण्यचर रक्षार्थ रहें। ऋत्विक्, आचार्य, पुरोहित और श्रोत्रियों को यथायोग्य ब्रह्म-देय दंड और कर-रहित 'दाय' दे। अध्यक्ष, संख्यापक आदि को तथा गोप, स्थानिक, अनीकस्थ, चिकित्सक, अश्वदमक, जंघारिकों को भी दाय दे। यह दाय 'विक्रय और आधान-वर्ज' हों; अर्थात् न बेचे जा सकें और न रिहन हो सकें। जो खेत बन गए हों, उन्हें कर देनेवालों को एक-पुरुषक * दिया जाय। जो खेत न बने हों, उन्हें बनानेवालों से न लिया जाय। जो कृषि न करे, उससे खेत लेकर दूसरों को दे दिए जायँ। अथवा वे ग्राम-भृतकों (जैसे नाई, धोबी आदि) और वैदेहकों को जोतने को दे दिए जायँ। जो खेत में कृषि न करे, उससे अपहीन (हर्जाना) लिया जाय। (यदि जोतें तो) उनको धान्य, पशु, हिरण्य अनुग्रह-स्वरूप दिए जायँ, और उनको वे सुख से लौटा दें। यह अनुग्रह (तक़ावी) और परिहार (छूट) ऐसा हो कि कोश बढ़ता रहे। यदि कोश को हानि की आशंका हो, तो न दिया जाय। जिस राजा का कोश अल्प होता है, वह पौरों और जानपदों को निगल जाता है।

यह तो हुई नई बस्ती की बात, अब यह बतलाने की आवश्यकता है कि उस समय आय के कितने द्वार थे।

"समाहर्ता दुर्गं राष्ट्रं खनिं सेतुं वनं व्रजं वणिक्पथं चावेक्षेत।"

इसका मतलब यह है कि समाहर्ता दुर्ग, राष्ट्र, खनि, सेतु, वन, व्रज, वणिक्पथ नामक विभागों का निरीक्षक या बड़ा अफ़सर होता था। इनमें से प्रत्येक विभाग के अनेक भेद थे। दुर्ग-विभाग के शुल्क, दंडादि २० भेद थे। राष्ट्र के सीता, भाग, बलि, कर, वणिक् आदि १२ भेद थे। खनि के सोना आदि भेद और सेतु के पुष्प, फल, वाट, केदार, मूलवाप आदि कई भेद थे। पशुवन, मृगवन, द्रव्यवन, हस्तिवन, ये वन के भेद थे। व्रज के गो, महिष, अज, अविक, खर, उष्ट्र, अश्व, अश्वतर आदि भेद थे। स्थल-पथ और वारि-पथ, ये वणिक्-पथ के भेद थे।

इनमें राष्ट्र के अंतर्गत भाग, बलि और कर-नामक आय थीं, जिनमें भाग नाम की वह आय थी, जो छोटे-छोटे सामंतों से मिलती थी। बलि नाम की आय वह थी, जिसे बड़े-बड़े लोग उपहार-स्वरूप भेजते थे। और कर नाम की आय वह थी, जो राजा के निज अधिकृत देश से मिलती थी। जहाँ से राजा को कर मिलता था, उसी भूमि को वह अन्यों को दाय में दे सकता था। इसीलिये श्रोत्रिय आदि राज-कर्मचारियों को दंड और कर-रहित भूमि देने का विधान ऊपर किया गया है। ये अकरद कहलाते थे, और अपना काम करते हुए अपने 'भोग' को वहाँ से, जो उस स्थान की परिस्थिति के अनुसार होता था, लेते थे।

अब इस समय उस काग़ज़ के ऊपर भी ध्यान देने की आवश्यकता है, जिसे समाहर्ता तैयार कराता था।

समाहर्ता * जनपद की चार बहियाँ रखता था—ग्रामाग्र, क्षेत्राग्र, गृहाग्र और कुलाग्र।

---

* 'एक-पुरुषक' के यह भी अर्थ होते हैं कि एक पुरुष के साथ बंदोबस्त हो, कुटुंब-भर के साथ नहीं।

* "समाहर्ता चतुर्धा जनपदं विभज्य ज्येष्ठमध्यमकनिष्ठविभागेन ग्रामाग्रं परिहारकमायुधीयं धान्यपशुहिरण्यकुप्यविष्टिकरप्रतिकरमिदमेतावदिति निबंधयेत् × × × सीमावरोधेन ग्रामाग्रम्। कृष्टाकृष्टस्थलकेदारारामषंडवाटवनवास्तुचैत्य-

ग्रामाग्र—इसमें गाँवों के भेद (ज्येष्ठ, मध्यम, कनिष्ठ), उनमें कितनी छूट दी गई है, कितने सैनिक हैं, कितना धान्य, पशु, हिरण्य, कुप्य (वन्य उपज), विष्टि (मज़दूर)-कर, प्रतिकर मिल सकता है, यह लिखा रहता था। इसमें गाँवों की सीमा भी लिखी जाती थी।

क्षेत्राग्र—इसमें कितना कृष्ट और कितना अकृष्ट है, कितना स्थल और कितना केदार है, आराम, पंड-वन, वाट-वन, वास्तु, चैत्य, देव-गृह, सेतु, बंध, श्मशान, सत्र, प्रपा, पुण्य-स्थान, विवीति (चरी), पथ आदि की गणना, गाँव की सीमा के क्षेत्रों की मर्यादा, अरण्य और पथ का प्रमाण तथा कितना संप्रदान, विक्रय, अनुग्रह, परिहार दिया गया है, यह सब लिखा जाता था।

गृहाग्र—इसमें कितने घर करद हैं, कितने अकरद, उनमें कितने ब्राह्मण, कितने क्षत्रिय, कितने वैश्य, कितने शूद्र हैं, कितने कृषक, गो-रक्षक, वैदेहक, कारु-कर्म करनेवाले और दास हैं, कितने मनुष्य और कितने चतुष्पद हैं, कितना हिरण्य, कितना विष्टि, कितना शुल्क और कितना दंड से आता है, इत्यादि विवरण रहता था।

कुलाग्र—इसमें कितने कुल हैं, उनमें कितनी स्त्री और कितने पुरुष हैं, कितने बालक और कितने वृद्ध हैं, वे अमुक-अमुक काम करते हैं, उनके चरित्र, आजीव, आय और व्यय का क्या लेखा है, यह सब रहता था।

अर्थ-शास्त्र के देखने से जान पड़ता है कि चंद्रगुप्त के काल ही में ब्रह्म-देय दंड-कर-रहित थे। और, करद को, जो एक पुरुष होता था, विक्रेय और आधान्य माना जा चुका था। पर करद अपने स्वत्व को करद ही के हाथ आधान और विक्रय कर सकते थे, और ब्रह्मदेयिक ब्रह्मदेयिक के हाथ *। अन्यथा उनको पूर्व-साहस-दंड देना पड़ता था। पर ये करद समस्त ग्राम के अधिपति नहीं, एक प्रकार के ठेकेदार होते थे। उनको भूमि के कुछ खेत या टुकड़े, उनके जीवन तक या एक पीढ़ी तक के लिये, दिए जाते थे। गाँव का पूरा स्वत्व रखनेवाले भागद और अकरद होते थे। उनको अपने स्वत्व का विक्रय और आधान करने का अधिकार नहीं था। यदि होता, तो इसका उल्लेख अर्थ-शास्त्र में अवश्य होता। इससे यह भी निश्चय होता है कि उस समय कृषक से खेत की उपज का ही अंश लिया जाता था। हाँ, नई बस्ती में, जहाँ एक पुरुष के ठेके की प्रथा करदों के लिये थी, 'हिरण्य' (नक़दी) भले ही लिया जाता था।

ऐसा अनुमान होता है कि मुसलमान-काल के पूर्व तक यही प्रथा प्रचलित थी और, राजा लोग करदों (ठेकेदारों) से हिरण्य और शेष से उपज का षष्ठांश लेते थे।

पृथ्वीराज-दिग्विजय एक ऐतिहासिक काव्य है। उसमें कवि जोनराज ने लिखा है—

> "गणनातिगन्युपवनानि वापिका-
> स्सरसीः प्रपाश्च दधती वसुंधरा;
> दिननायकस्य जगदेकचक्षुषः-
> प्यधुनाश्नुते दशमभागदश्यताम्।"

अर्थात् वसुंधरा पर असंख्य उपवन, वापी, सरोवर आदि हैं; पर देखो संसार का एक-मात्र चक्षु दिननायक सूर्य अब उसका दशांश रस ग्रहण करता है। इसी प्रकार राजा समृद्ध प्रजा के शस्य का दशांश लेता है।

आईन-अकबरी के देखने से प्रकट होता है कि अकबर के राज्य-काल के आरंभ में और उसके पूर्व यह प्रथा थी कि * समाहर्ता जो इस काम पर नियत होता था, वह देशानुसार अन्नों के भाव को विचार-पूर्वक देखकर उपज के अंश का मूल्य लिया करता था। उस समय भूमि की उपज का तृतीयांश या चतुर्थांश भूमि-कर था। अकबर ने पाँच वर्ष तक तो इस प्रबंध को चलने दिया, पर छठे वर्ष से उसने जिंसवार लिखवाना आरंभ किया, और उन्नीस वर्ष तक उसी रीति से उपज का तृतीयांश और

देवगृहसेतुबंधश्मशानसत्रप्रपापुण्यस्थानविवीतिपथिसंख्यानेन क्षेत्राग्रम्। तेन सीम्नां क्षेत्राणां च मर्यादारण्यपथिप्रमाणसंप्रदानविक्रयानुग्रहपरिहारनिबंधान् कारयेत्। गृहाणां च करदाद संख्यानेन। तेषु चैतावच्चातुर्वर्ण्यमेतावंतः कर्षकगोरक्षकवैदेहकारुकर्मकरदासाश्चैतावच्च द्विपदचतुष्पदमिदं चैष हिरण्य-विष्टिशुल्कदंडस्समुत्तिष्ठतीति। कुलानां च स्त्रीपुरुषाणां बालवृद्धकर्मचरित्राजीवायव्ययपरिमाणं च विद्यात्।"

* "करदाः करदेष्वाधानं विक्रयं वा कुर्युः। ब्रह्मदेयिका ब्रह्मदेयिकेषु। अन्यथा पूर्वसाहसदंडः।"

* همواره کار دانان آگاه برنشستی و نرخ غلّہا بہاے ملک بار
گرفتے و زر نقدی کرده ازآن ارز غلّه گرفتے
آیین اکبری جلد اول صفحه ۲۷۳ مطبوعه نولکشور پریس

चतुर्थांश मूल्य लेता रहा। इस प्रकार पचीसवें वर्ष से उसने अपने समस्त साम्राज्य के लिये देश के अनुसार दरबंदी बनवाई, और तब से यह कर नक़दी हो गया। अकबर ने भूमि के चार भेद किए थे—पोलच, परोटी, चच्चर और बंजर। इन सबमें पोलच पर तो छठे वर्ष से ही नक़दी कर लग गया था; पर पचीसवें वर्ष के बाद अकबर ने आईन बनाकर दस्तूर के लिये यथाशस्य (जिस के अनुसार) कर की दर नियत की, और उसी समय से दरबंदी के अनुसार भारतवर्ष में उपज के स्थान में नक़दी राज-कर लेने की प्रथा चली। अकबर के समय में जो देशानुसार निर्ख़नामा बना था, वह अकबरनामा जिल्द २ के आरंभ में दिया हुआ है। पाठक उसे वहीं देख लें।

जगन्मोहन वर्मा

लाहौर

[उत्तरार्द्ध]

मोराँ की मसजिद

यह मसजिद शाह-आलमी दरवाज़े के अंदर, पापड़मंडी बाज़ार में है। मोराँ महाराजा रणजीतसिंह की रखैल एक यवन-सुंदरी थी। उसने महाराज के हृदय पर ऐसा अधिकार प्राप्त कर लिया था कि उससे बड़े-बड़े सरदार भी डरते रहते थे। महाराज स्वयं उसके घर पर आते थे। उसके नाम की मोहर तक थी। उसके नाम की मोहर मोराँ-शाही कहलाती थी। यह मसजिद सन् १८०९ ई० में बनी थी।

बादामी बाग़

यह बाग़ क़िले के उत्तर में है। ब्रिटिश-राज्य के आरंभ में यह सार्वजनिक बाग़ था। अँगरेज़ स्त्री-पुरुष इधर वायु-सेवनार्थ जाया करते थे। इस बाग़ का निरीक्षण पुराने 'लाहौर-क्रॉनिकल'-नामक अँगरेज़ी समाचार-पत्र के संपादक श्रीयुत हेनरी कोप के अधीन था। बाद को लारेंस-बाग़ के बनने से यह बाग़ उजड़ गया। बादामी बाग़ की नींव महाराज रणजीतसिंह ने रक्खी थी। मस्ती और शेराँवाला दरवाज़ों के बीच 'गल-बादाम' नाम की एक मुसलमान राजकुमारी की क़ब्र थी। उसी के नाम पर इसका नाम बादामी बाग़ पड़ा। अब बाग़ का कोई भी चिह्न नहीं है।

लाहौर के कॉलेज

लाहौर पंजाब में विद्या का केंद्र है। यहाँ पंजाब-

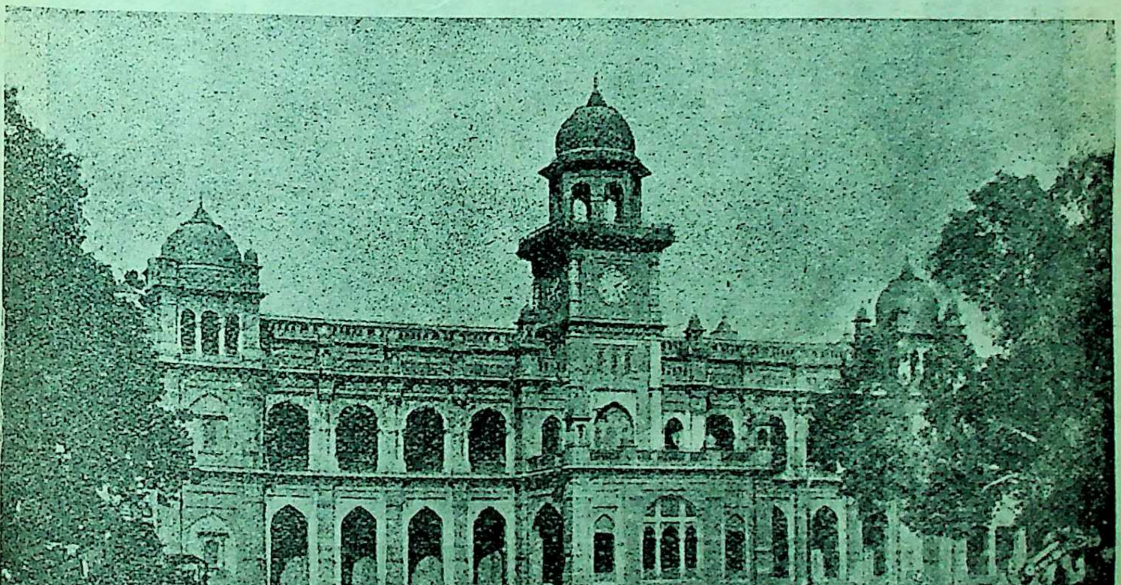

पंजाब-विश्वविद्यालय-भवन

विश्वविद्यालय, ग्यारह कॉलेज और अनेक हाई स्कूल हैं। कॉलेजों के नाम ये हैं—

फ़ोर्मैन-क्रिश्चियन-कॉलेज, दयानंद-ऐंग्लो-वैदिक-कॉलेज, गवर्नमेंट-कॉलेज, सनातनधर्म-कॉलेज, दयालसिंह-कॉलेज, इसलामिया-कॉलेज, ओरियंटल-कॉलेज, मेडिकल-कॉलेज, सेंट्रल-ट्रेनिंग-कॉलेज, चीफ़्स कॉलेज, किनर्ड-कॉलेज, और लॉ-कॉलेज।

फ़ोर्मैन-क्रिश्चियन-कॉलेज

सन् १७४६ ई० में अमेरिका के परदेशीय मिशन-समिति के दो सदस्य—पादरी न्यूटन और फ़ोर्मैन—लाहौर आए थे। उन्होंने 'रंग-महल'-नामक भवन में पहला अँगरेज़ी-स्कूल खोला। यही स्कूल उन्नति करते-करते, सन् १८८६ ई० में, कॉलेज बन गया। कुछ समय के बाद यह मकान छोटा समझा गया। इसलिये बड़े डाकघर के पास, ठंडी सड़क पर, कॉलेज के लिये नई इमारत बनाई गई। अब यह कॉलेज बहुत रौनक़ पर है।

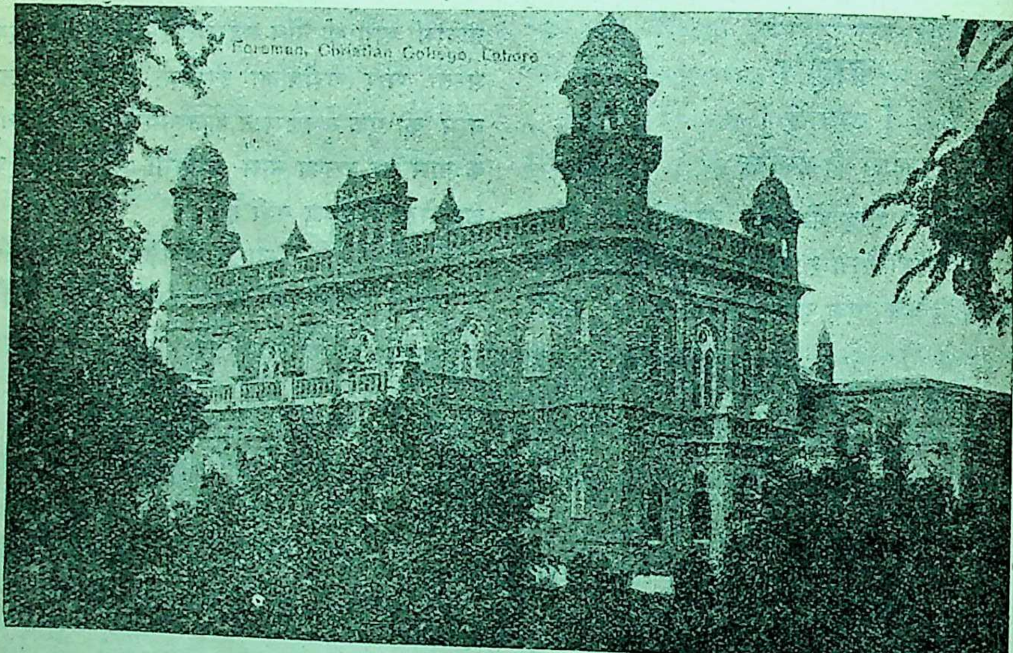

फ़ोर्मैन-क्रिश्चियन-कॉलेज

दयानंद-ऐंग्लो-वैदिक कॉलेज

दयानंद-ऐंग्लो-वैदिक-कॉलेज की नींव सन् १८८५ ई० में रक्खी गई थी। पंजाब में आर्यसमाजियों की

यह एक महत्त्व-पूर्ण संस्था है। जितने विद्यार्थी इस कॉले में शिक्षा पाते हैं, उतने अन्य किसी भी कॉलेज नहीं। इसकी एक बड़ी विशेषता यह है कि य पाश्चात्य शिक्षा के साथ-साथ प्राचीन वैदिक धर्म भी शिक्षा दी जाती है। युनिवर्सिटी की शैली संस्कृत के पठन-पाठन का अच्छा प्रबंध है। कॉलेज अपने संचालकों के सुप्रबंध और त्याग के कारण थो ही समय में अच्छी उन्नति कर ली है। इस नवीन सुंदर भवन को देखते ही मालूम हो जाता है यह कोई हिंदू-संस्था है। यहाँ का प्राचीन संस्कृत-खो विभाग पं० भगवद्दत्तजी बी० ए० की अध्यक्षता में ब उपयोगी कार्य कर रहा है।

ओरियंटल-कॉलेज

ओरियंटल-कॉलेज का मूल लाहौर की संस्कृ पाठशाला थी। इसको सन् १८६३ में शिक्षा-सभा स्थापित किया था। यह एक प्राइवेट संस्था थी। पी से गवर्नमेंट ने भी इसे सहायता देना स्वीकार क लिया। तब से बढ़ते-बढ़ते यह वर्तमान ओरियंटल-कॉले के रूप में परिणत हो गई। पीछे से इसमें अरबी-फ़ार की शिक्षा का भी प्रबंध हो गया। सन् १८७० ई०

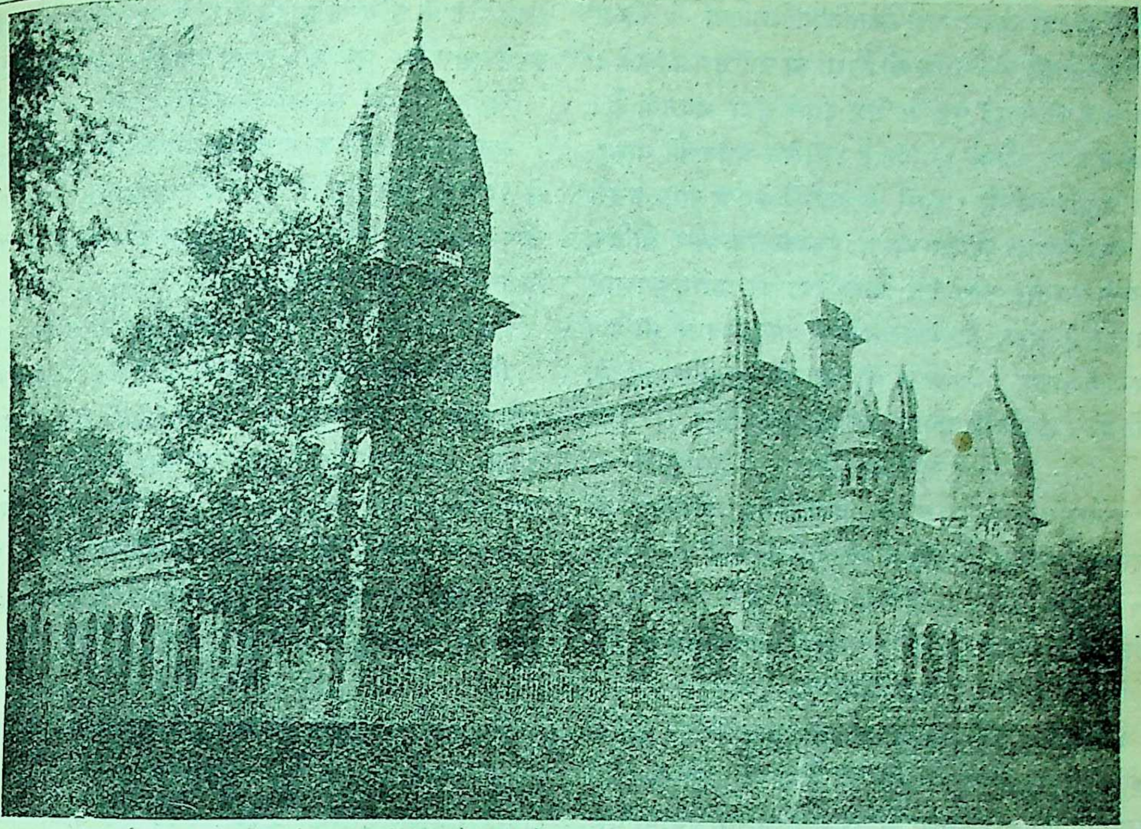

श्रीमद्दयानंद-एंग्लो-वैदिक-कॉलेज

युनिवर्सिटी ने इसे कॉलेज बनाकर अपने हाथ में ले लिया। यहाँ संस्कृत, अरबी, फ़ारसी और पंजाबी की उच्च शिक्षा का अच्छा प्रबंध है।

गवर्नमेंट-कॉलेज

गवर्नमेंट-कॉलेज सन् १८६४ ई० में खोला गया था। तब तक पंजाब विश्वविद्यालय की स्थापना नहीं हुई थी,

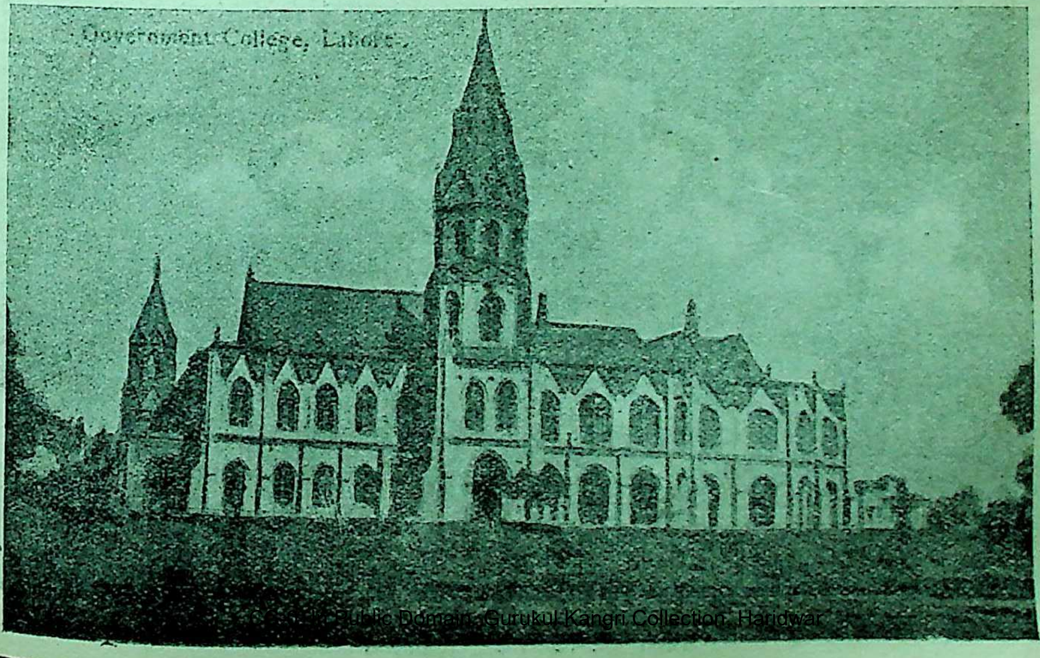
Government College, Lahore.

इसलिये इसका संबंध कलकत्ता-विश्वविद्यालय से किया गया। इसमें पदार्थ-विज्ञान की शिक्षा का सर्वोत्तम प्रबंध है।

कॉलेज की पढ़ाई एक गाथिक ढंग के सुंदर भवन में है। उसमें एक बड़ा ऊँचा घंटाघर है। कॉलेज-भवन की वास्तु-भूमि बहुत ऊँची है। क्लासों के कमरों के अलावा इसमें एक बड़ा विशाल परीक्षा-भवन, पुस्तकालय और भौतिक विज्ञान, रसायन-शास्त्र एवं जीव-विद्या की प्रयोग-शालाएँ तथा एक बड़ा जीव-शास्त्र-संबंधी अजायबघर भी है। इसकी इमारत ३½ लाख की लागत से, पाँच वर्ष में, बनी थी। इसके छात्रावास भी बड़े अच्छे हैं।

दयालसिंह-कॉलेज

दयालसिंह-कॉलेज सरदार दयालसिंह मजीठिया की वदान्यता का फल है। इसकी इर्द-गिर्द की नींव सन् १९१० ई० में रक्खी गई थी। यहाँ ब्राह्म-समाज के सिद्धांतों की भी शिक्षा दी जाती है। कॉलेज का भवन निसबत-रोड पर है।

इसलामिया-कॉलेज

इसलामिया-कॉलेज की स्थापना सन् १८९२ ई० में हुई थी। यहाँ प्रायः ९९ फ़ी-सदी विद्यार्थी मुसलमान हैं। विश्वविद्यालय की शिक्षा के साथ-साथ मुसलमानी-धर्म की भी शिक्षा दी जाती है। यहाँ अरबी और फ़ारसी की शिक्षा पर विशेष ज़ोर दिया जाता है। यह ब्रंडथ और रेलवे-रोड के बीच आठ एकड़ भूमि पर बना हुआ है। इसके साथ जे० ए० वी० क्लास भी है।

सनातनधर्म-कॉलेज

सनातनधर्म-कॉलेज सनातनधर्मावलंबियों के उद्योग से १५ मई, सन् १९१६ ई०, में स्थापित हुआ था। यह लोवर माल पर स्थित है। यहाँ संस्कृत की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

किनर्ड-कॉलेज

किनर्ड-कॉलेज पहले लड़कियों का एक हाई स्कूल था। इस स्कूल की स्थापना सन् १८७९ ई० में हुई थी। सन् १९१३ ई० में इसने कॉलेज का रूप धारण किया। यहाँ लड़कियों के लिये बी० ए० तक की शिक्षा का प्रबंध है। कॉलेज का उद्देश्य स्त्रियों को ईसाई-धर्म पर आश्रित उच्च शिक्षा देना और उन्हें अच्छी नागरिका बनाना है। इसमें प्रत्येक धर्म की छात्रियाँ भरती हो सकती हैं।

सेंट्रल-ट्रेनिंग-कॉलेज

सेंट्रल-ट्रेनिंग-कॉलेज में शिक्षार्थियों को शिक्षा-दान की विधि सिखलाई जाती है। इसमें सबसे बड़ी श्रेणी बी० टी० है। उससे उतरकर क्रमशः एस्० ए० बी०, जे० ए० बी०, एस्० बी० और जे० बी० हैं। यह सन् १८८१ ई० में स्थापित हुआ था। इसमें भरती होने के लिये लड़कों

KING EDWARD'S MEDICAL COLLEGE, LAHORE.

किंग एडवर्ड-मेडिकल-कालेज

को बड़ा उद्योग करना पड़ता है । यह कॉलेज लड़कों के प्रवेश पर अनावश्यक कड़े बंधन लगाकर अपने महत्त्व को बढ़ाने और देश के नवयुवकों को विद्या से वंचित रखने की निंदनीय चेष्टा कर रहा है ।

किंग एडवर्ड-मेडिकल-कॉलेज

किंग एडवर्ड-मेडिकल-कॉलेज की स्थापना सन् १८६० ई० में हुई थी । इसके साथ एक बहुत बड़ा अस्पताल भी है । कुछ वर्ष पहले इसमें भरती होने के लिये विद्यार्थी बड़े लालायित रहते थे । परंतु जब से पंजाब-सरकार ने योग्यता के स्थान में भिन्न-भिन्न धार्मिक संप्रदायों के लिहाज़ से डॉक्टरी नौकरियाँ मिलने का नियम प्रचारित किया, तब से हिंदू-विद्यार्थियों के लिये इसका आकर्षण बहुत कम हो गया है । इस कॉलेज की इमारतें बड़ी ही विशाल और महत्त्व-पूर्ण हैं । यहाँ शस्त्र-चिकित्सा के अत्युत्कृष्ट साधन मौजूद हैं ।

लॉ-कॉलेज

लॉ-कॉलेज लॉ-स्कूल के नाम से सन् १८७० ई० में खोला गया था । इसमें मुख़्तारी और प्लीडरी की शिक्षा दी जाती थी । सन् १९०९ ई० में यह स्कूल कॉलेज बना दिया गया । अब इसका प्रिंसिपल भी सारे समय के लिये रक्खा गया, और यह दूसरे कॉलेजों की तरह नियमपूर्वक लगने लगा । हाल में गोल-बाग़ के निकट पुराने सेनेट-हॉल के सामने इसका नवीन भवन बनाया गया है ।

पंजाब-चीफ़्स कॉलेज

पंजाब-चीफ़्स कॉलेज का उद्देश्य पंजाब के राजों और नवाबों के संबंधियों, अच्छे कुलों के युवकों और कोर्ट-ऑफ़् वार्ड्स की अभिभावकता में अप्राप्त-वयस्कों की शिक्षा है । इसकी इमारतें गवर्नमेंट-हाउस के पास ३,८५,५२० रुपए की लागत से बनी थीं । लार्ड डफ़रिन ने ३ नवंबर, सन् १८८६, को इसकी नींव रक्खी थी । यहाँ पंजाब-विश्वविद्यालय की मैट्रिक-परीक्षा तक पढ़ाई होती है, पर नाम इसका कॉलेज ही है ।

पंजाब-क़ौमी-विद्यापीठ

उपर्युक्त कॉलेजों के अतिरिक्त सन् १९२१ ई० में यहाँ एक पंजाब-क़ौमी-विद्यापीठ स्थापित हुआ है । यह राजनीतिक असहयोग-आंदोलन का फल-स्वरूप है । इसके अधीन एक कॉलेज और एक स्कूल है । स्कूल में औद्योगिक शिक्षा पर ज़ोर दिया जाता है । कॉलेज का उद्देश्य उच्च कोटि के देश-भक्त और त्यागी विद्वान् उत्पन्न करना है । इसका सरकारी विश्वविद्यालय से कुछ भी संबंध नहीं है । महाविद्यालय और विद्यालय प्रसिद्ध जातीय भवन, 'ब्रेडला हॉल' के निकट हैं ।

Chiefs College, Lahore

पंजाब-चीफ़्स कालेज

केंद्रस्थ अजायबघर

यह अजायबघर पंजाब-सार्वजनिक पुस्तकालय के निकट और नवीन सेनेट-हॉल के सामने है। बड़ी सुंदर और चित्ताकर्षक इमारत है। सन् १८६४ में, लाहौर में, पंजाब की स्वाभाविक और कृत्रिम वस्तुओं की एक प्रदर्शिनी हुई थी। यह इमारत उसी के लिये बनाई गई थी।

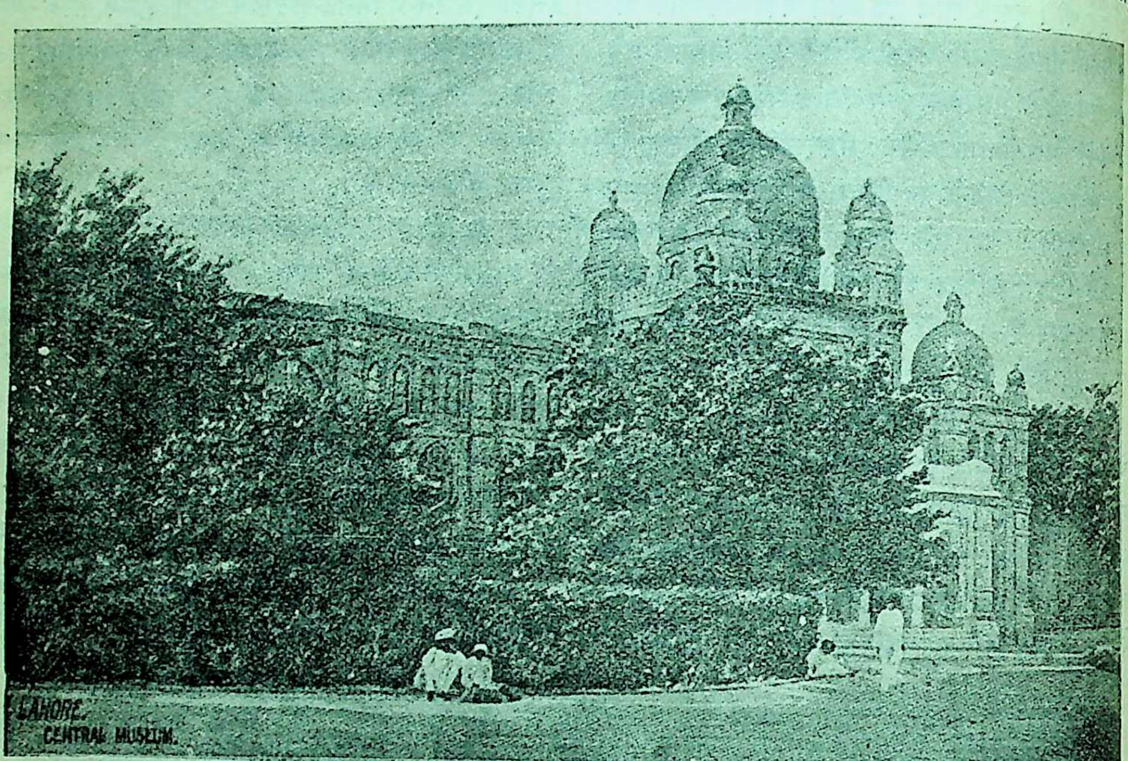

अजायबघर

अजायबघर देखने के लिये समय नियत है। भीतर जाने के लिये एक घूमनेवाली चरख़ी से गुज़रना होता है। यह चरख़ी दर्शकों की संख्या लिखती जाती है।

भीतर प्रवेश करने पर दाईं ओर के कमरे में खानों, जीवों और वनस्पतियों की कच्ची उपजों के नमूने हैं। इसमें अनेक प्रकार के अंडे, हाथी का सिर, मगर-मच्छ, लोमड़ी, भेड़िए, साँपों के शव और संसार की नाना जातियों के लोगों के चित्र हैं। यहाँ एक तीन इंच के कुत्ते का शव भी सुरक्षित है।

सिंह-द्वार में प्रवेश करते ही सामने के कमरे में पंजाब के ग्राम्य और सामाजिक जीवन के दृश्य, मिट्टी की मूर्तियों द्वारा, दिखलाए गए हैं। किसान कहीं हल और कहीं रहट चला रहे हैं। कहीं विवाह हो रहा है द्वार के साथ ही लकड़ी के बहुत बढ़िया दरवाज़े हैं यह कारीगरी के उत्कृष्ट नमूने हैं। सामने दीवारों प सिख-गुरुओं और वीरों के सुंदर चित्र, प्राचीन हस्त-ले और कुछ बौद्ध-मूर्तियाँ हैं।

बाईं ओर के लंबे कमरे में प्रांत की प्राचीन अ वस्तुएँ तथा शिल्प और कारीगरी के उत्कृष्ट नमूने र गए हैं। इसमें पुराने ढंग की कढ़ी हुई फुलकारियाँ, खे छींटें आदि कपड़े, मुलतान और बहावलपुर आदि मिट्टी के बर्तन, काँच की चीज़ें और कोहनूर-नामक की नक़ल मौजूद है। यहाँ कुछ पुराने शस्त्र, सितार त बाजे भी हैं।

इसके आगे एक और कमरा है। इसमें केवल बौ मूर्तियाँ ही रक्खी हुई हैं। उनमें बुद्ध-देव के जीवन अनेक घटनाएँ दिखलाई गई हैं। कुछ मूर्तियाँ मनुष्य डील से भी बड़ी हैं। इनमें से अनेक खंडित हैं। कहते बौद्ध-मूर्तियों का जैसा उत्तम संग्रह इस अजायब में है, वैसा अन्यत्र कहीं नहीं। यहाँ प्राचीन सिक्के अधिक संख्या में हैं।

भंगियोंवाली तोप

अजायबघर के बाहर, युनिवर्सिटी-हॉल के सामने, एक उठे हुए चौतरे पर, एक बहुत बड़ी और पुरानी तोप है। इसे भंगियों की तोप कहते हैं। इसका असली नाम ज़मज़मा है। अहमद शाह दुर्रानी के प्रधान मंत्री शाह वली ख़ाँ के आदेशानुसार शाह नज़ीर ने इसे सन् १७५७ ई० में, लाहौर में, ढाला था। यह ताँबे और पीतल के मिश्रण की बनी है। इसके बनाने के लिये—'जज़िये' के रूप में—धातु का एक-एक बर्तन लाहौर के प्रत्येक हिंदू-घर से लिया गया था। अहमद शाह ने सन् १७६१ ई० में, पानीपत की लड़ाई में, इसका उपयोग किया था। काबुल को लौटते समय वह इसे लाहौर में, अपने प्रतिनिधि ख़्वाजा उबेद के पास, छोड़ गया। इसके साथ की दूसरी तोप चनाब-नदी में डूब गई। सन् १७६२ ई० में हरीसिंह भंगी ने ख़्वाजा उबेद पर आक्रमण करके, लाहौर के पास ख़्वाजा-सैद नाम के गाँव में, उसके शस्त्रागार पर अधिकार कर लिया। उस समय ज़मज़मा तोप भी उसके हाथ आई, और तब से उसका नाम भंगियोंवाली तोप हो गया।

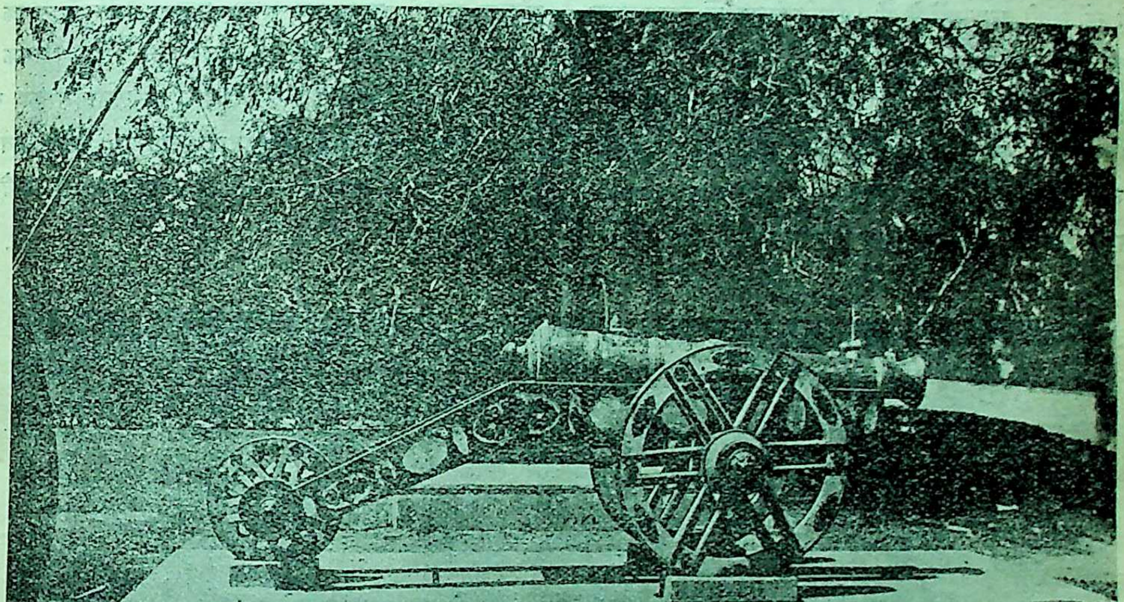

ज़मज़मा या भंगियों की तोप

यह तोप गूजरसिंह तथा लहनासिंह भंगी, चड़तसिंह, सुकेर चकिया, अहमद ख़ाँ, पीर मुहम्मद ख़ाँ और सरदार झंडासिंह भंगी आदि कई शक्ति-शाली मनुष्यों के हाथ में पड़कर गुजराँवाला, रामनगर, गुजरात और अमृतसर आदि स्थानों में घूमती रही। फिर अमृतसर में, सन् १८०२ ई० में, यह महाराज रणजीतसिंह के हाथ लगी। उन्होंने कसूर, सुजानपुर, वज़ीराबाद और मुलतान में इसका उपयोग किया। सन् १८१८ ई० में, मुलतान की लड़ाई में, यह ख़राब हो गई। तब इसे निकम्मी समझकर लाहौर लाया गया। यह सन् १८७० ई० तक दिल्ली-दरवाज़े के पास पड़ी रही, और फिर वहाँ से अपने वर्तमान स्थान में लाई गई।

तोप के मुँह के गिर्द यह लेख है—

بامر در دوران شه ولي خان وزير
ساخت توپ زمزمه نام قلعه گیر
عمل شاه نظیر

अर्थ—दुर्रां दौराँ शाह वली ख़ाँ की आज्ञा से वज़ीर ने दुर्गों को लेनेवाली यह ज़मज़मा-तोप बनवाई। शाह नज़ीर का काम।

तोप की पीठ पर, मध्य भाग में, एक लंबा फ़ारसी-लेख है। उसमें बताया गया है कि अहमद शाह दुर्रानी की आज्ञा से यह भुजंग के समान भीषण और पर्वत के समान बृहत्काय तोप वज़ीर ने बनवाई। यह आकाश के दुर्ग को भी नष्ट कर देनेवाली है।

यह तोप १४ फ़ीट और ४¼ इंच लंबी है। इसके मुख का छिद्र ६½ इंच है।

चिड़ियाघर

चिड़ियाघर मियाँ मीर की सड़क पर, ठंडी सड़क की समाप्ति पर, है। इसमें नाना प्रकार के तोते, मोर, मुर्ग़े, बंदर, जल-पक्षी, लाल रंग की मछलियाँ, ख़रगोश, लोमड़ी, रीछ, बाघ और चीते हैं। इनके अतिरिक्त आफ़्रिका के दो भयंकर सिंह भी हैं। इनके पिंजड़े बहुत ऊँची लोहे की सलाख़ों के हैं। चिड़ियाघर में सुबह-शाम दर्शकों की भीड़ रहती है।

लारेंस-बाग़

चिड़ियाघर के पास ही लारेंस-बाग़ है। यह वायु-सेवन के लिये एक उत्तम स्थान है। यहाँ के मांटगोमरी-हॉल में अँगरेज़ स्त्री-पुरुष नृत्य किया करते हैं।

ठंडी सड़क पर लॉर्ड लारेंस और महारानी विक्टोरिया की मूर्तियाँ हैं। लारेंस के पुतले पर लिखा हुआ है—"तुम लेखनी द्वारा शासित होना चाहते हो, या खड्ग द्वारा।"

इनके अतिरिक्त लाहौर में वर्तमान काल की और भी अनेक दर्शनीय इमारतें हैं। उनमें से अधिक प्रसिद्ध ये हैं—

बड़ा डाकघर। यह ठंडी सड़क पर है।

पंजाब-हाईकोर्ट। यह डाकघर के बिलकुल निकट है।

पंजाब-क्लब। यह चिड़ियाघर के सामने विक्टोरिया की मूर्ति के पीछे है।

इनके सिवा रोमन केथोलिक ईसाइयों का गिरजा, लाहौर-रेलवे चर्च, नार्थ-वेस्टर्न-रेलवे के दफ़्तर, सेंट्रल मॉडल स्कूल, रावी का नया पुल, रावी की सड़क पर आर्य-प्रतिनिधि-सभा का गुरुदत्त-भवन, ठंडी सड़क पर बड़ा तारघर, नवाँकोट की सड़क पर जनार्दन का नया शालामार-बाग़, पागलख़ाना, सेंट्रल जेल, हवाघर (आबज़र्वेटरी) और टाउन-हॉल आदि इमारतें भी देखने के योग्य हैं।

LAHORE GENERAL POST OFFICE.

बड़ा डाकघर

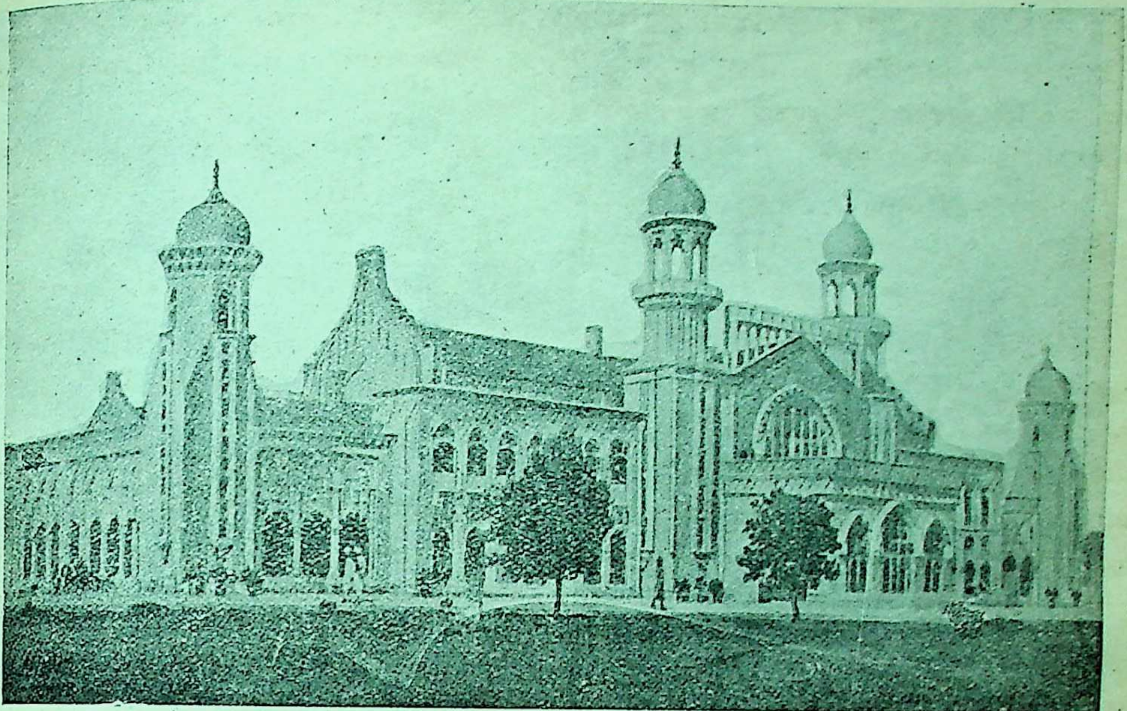

हाईकोर्ट

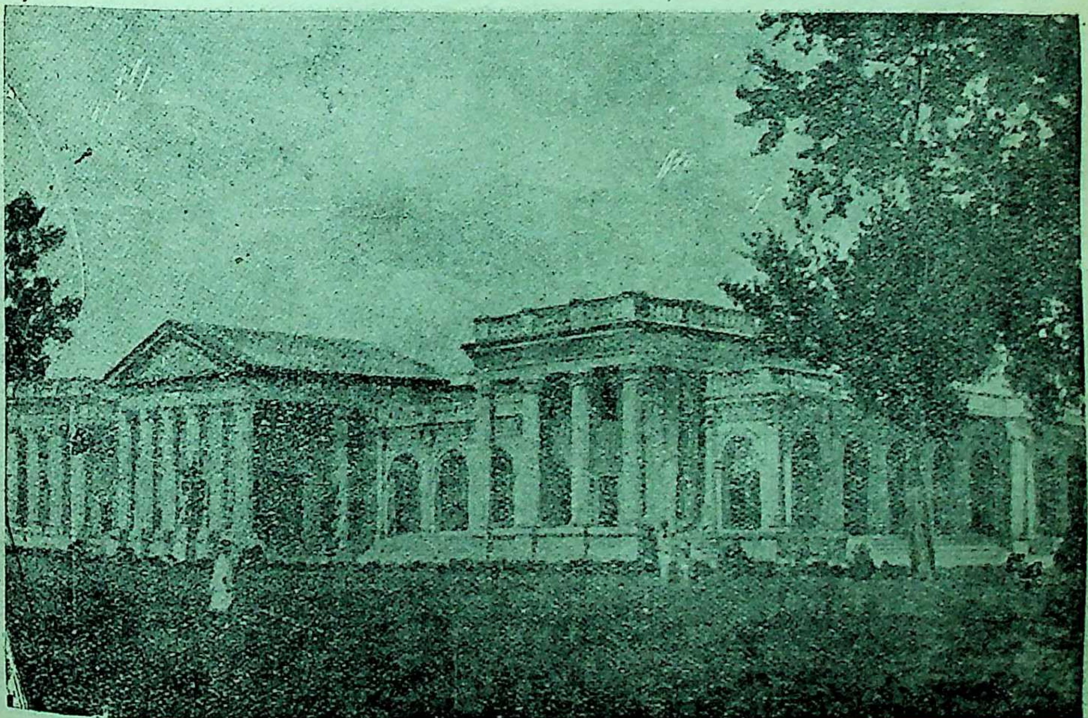

पंजाब क्लब

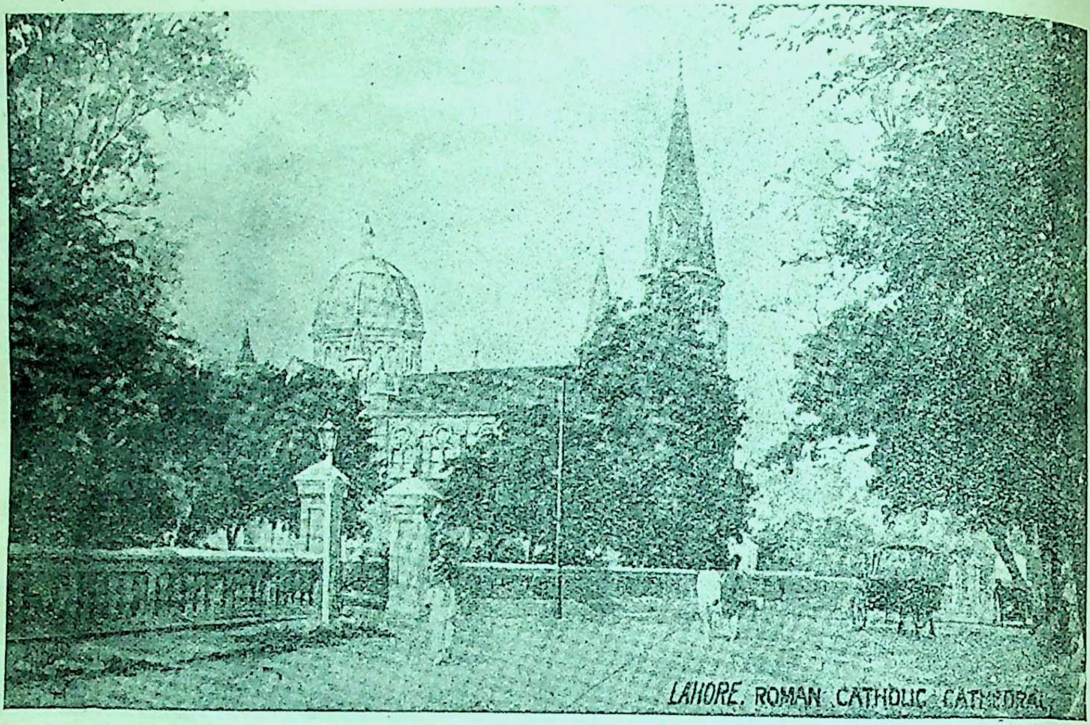
LAHORE. ROMAN CATHOLIC CATHEDRAL

रोमन-केथोलिक-केथड्रल

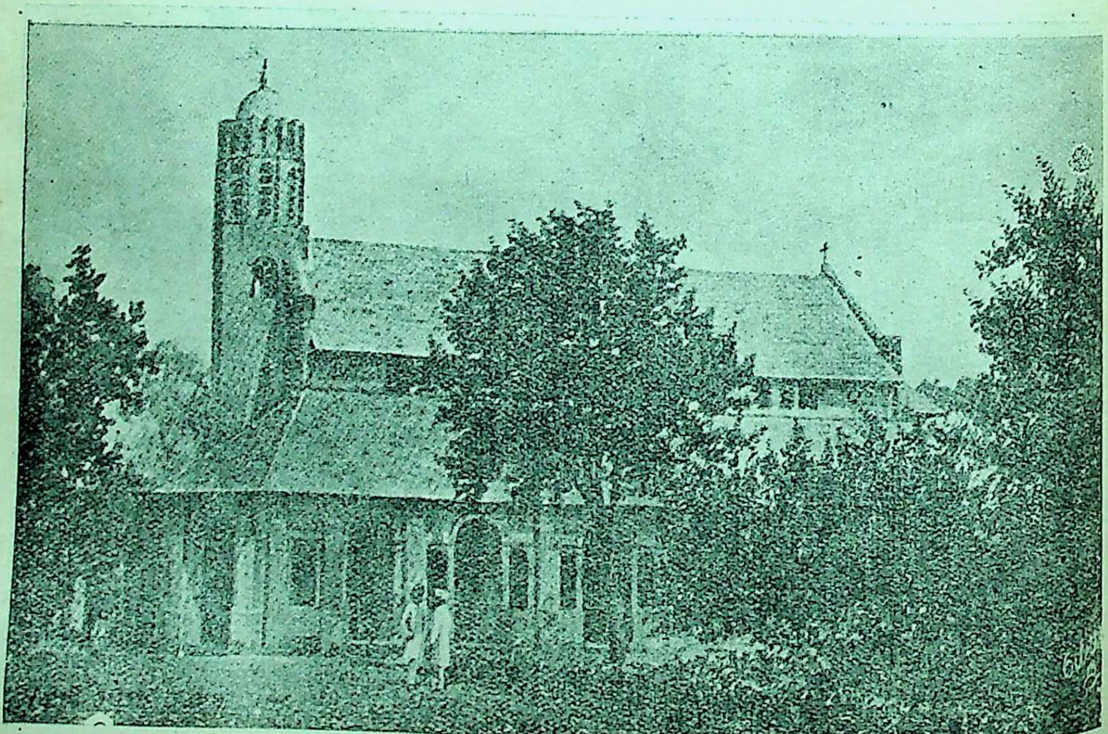

रेलवे-चर्च

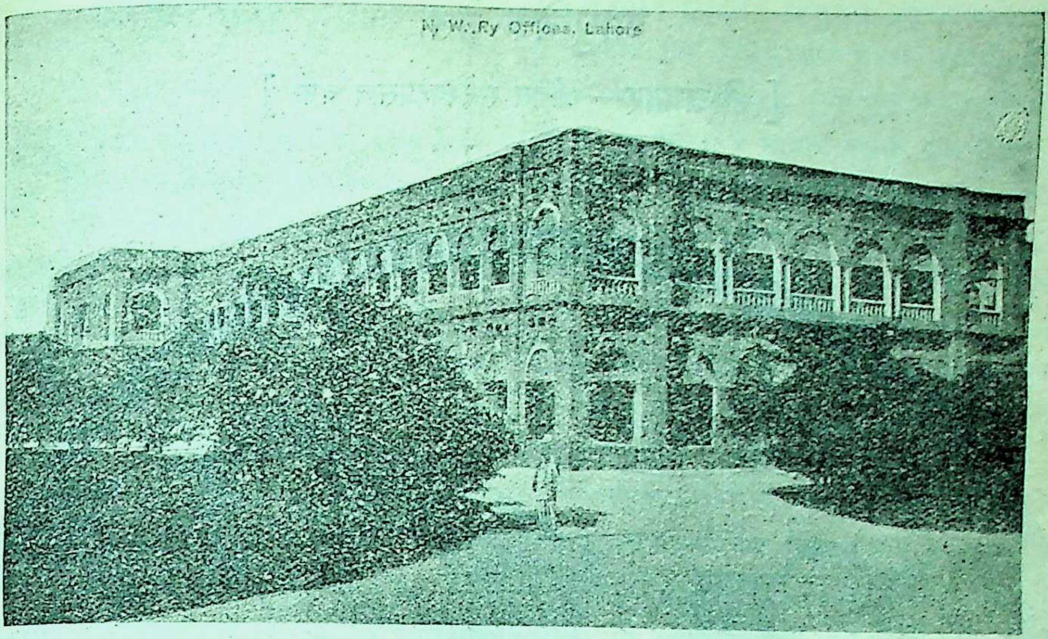
N. W. Ry Offices, Lahore

नॉर्थ-वेस्टर्न रेलवे के दफ़्तर

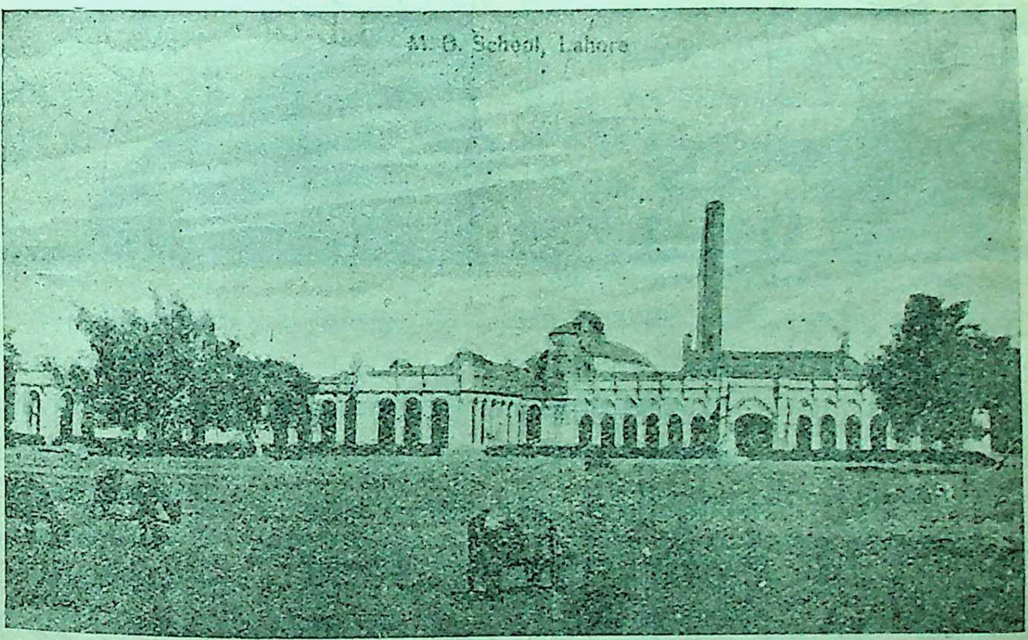
M. B. School, Lahore

सेंट्रल मॉडल स्कूल

लाहौर में आनेवाले यात्रियों को इस लेख में वर्णित चीज़ों को अवश्य देखना चाहिए ; क्योंकि इनसे मनोरंजन के साथ-साथ ऐतिहासिक जानकारी भी प्राप्त होती है ।

संतराम

आधुनिक नेता

[**चित्रकार**—श्रीयुत रामेश्वरप्रसाद वर्मा]

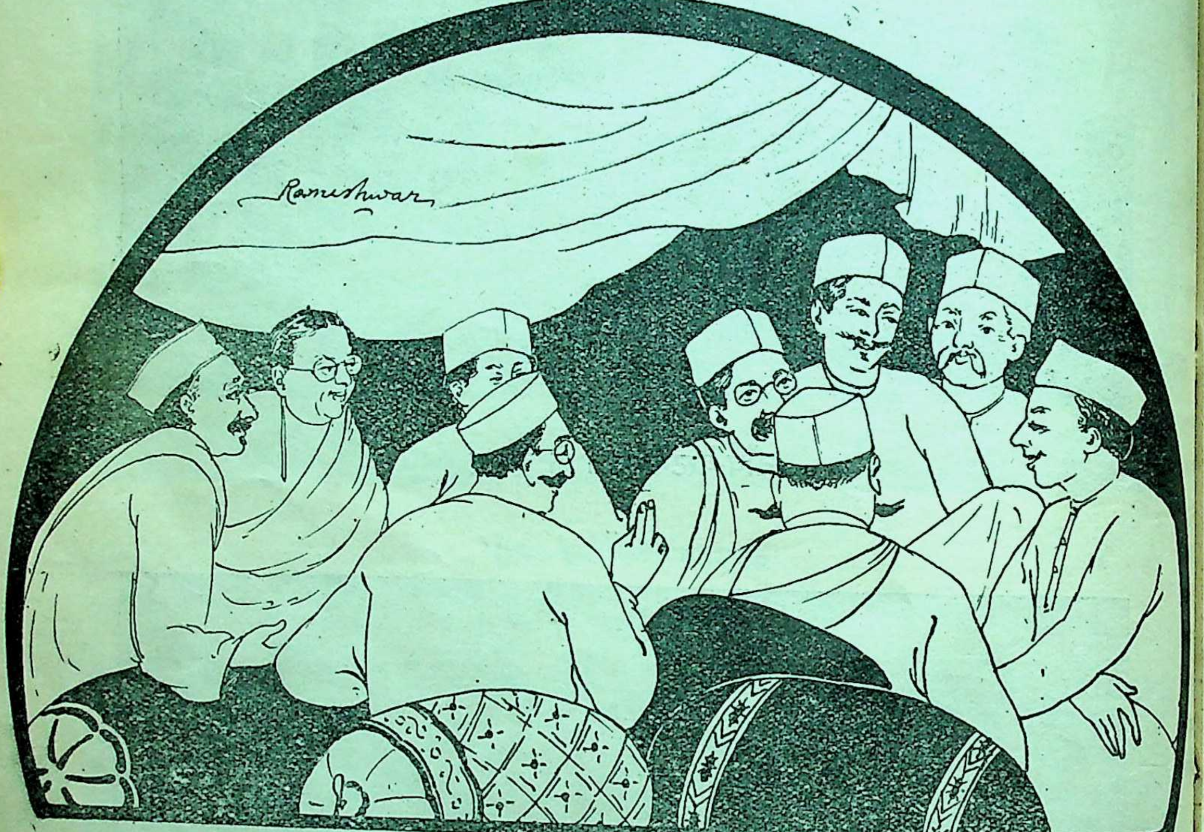

गद्दी-तकिए से लगे नेता करते राज्य ;
कष्ट कठिन झेले विना कैसे मिले स्वराज्य ?
कैसे मिले स्वराज्य, कठिन कंटकमय पथ है ;
टूटा पहिया पड़ा, खड़ा ख़तरे में रथ है !
स्वतंत्रता की उछल-कूद है तब तक भद्दी,
जब तक छुटती नहीं गुलगुली सुख की गद्दी ।

अंतिम शब्द

(१)

लाला बद्रीदास एक लंबी साँस लेकर अपने छोटे पुत्र जानकीदास से बोले—बेटा कुछ भी हो, परंतु बुलाकीदास तुम्हारा बड़ा भाई है, इसका ध्यान सदैव रखना ।

जानकीदास सिर झुकाकर बोले—यदि आप यह बात न भी कहें, तो भी मुझे इसका ध्यान सदा रहेगा; पर भाई साहब का जैसा स्वभाव है, उससे यह आशा नहीं कि वह शांति-पूर्वक कार्य करेंगे ।

बद्रीदास तकिए के सहारे बैठकर बोले—बेटा, मेरी अवस्था इस समय सत्तर बरस के लगभग है । मैंने बीस बरस की अवस्था से पैसा कमाना शुरू कर दिया था । मैंने जिन कष्टों तथा दुःखों से धन एकत्र किया है, उन्हें मैं ही जानता हूँ । मैं तुम्हें अपने समस्त जीवन के अनुभव का निचोड़ बताए देता हूँ कि चाहे सारा संसार तुम्हारा शत्रु क्यों न हो जाय, तुम कभी सच्चा और सीधा मार्ग न छोड़ना, और सदैव नम्र रहना । ऐसा करने से पहले चाहे तुम्हें कष्ट मिले, पर अंत को अवश्य सुख मिलेगा ।

जानकीदास—मैं प्राण-पण से आपका उपदेश पालन करने की चेष्टा करूँगा ।

बद्रीदास—बड़ी प्रसन्नता की बात है । यदि तुम ऐसा करोगे, तो तुम्हारा विकट-से-विकट शत्रु भी अंत को तुम्हारे आगे सिर झुकावेगा । मेरा तो अब चल-चलाव लग रहा है । मैं अब केवल चार-छः दिन का मेहमान हूँ । इस रोग से मुक्त होने की कोई आशा नहीं । यह रोग मृत्यु का दूत है । मैंने अपने जीवन में सब प्रकार के दुख-सुख देख लिए । मेरे हृदय में किसी बात की इच्छा-अभिलाषा नहीं है । यदि कोई है, तो केवल यह कि मेरे पीछे तुम दोनों भाई सुख-शांति से रहो ।

जानकी०—यदि ईश्वर की इच्छा और आपका आशीर्वाद है, तो ऐसा ही होगा ।

बद्रीदास—होगा, निश्चय होगा, और वह केवल तुम्हारी ओर से । मुझे विश्वास है कि तुम इस बात की चेष्टा करोगे । इसीलिये मैं तुमसे इतनी बातें कह रहा हूँ । बुलाकीदास से मुझे कोई आशा नहीं । इसी कारण मैंने उससे कुछ नहीं कहा ; पर एक बार कहने की इच्छा अवश्य है, मानना न मानना उसका काम है ।

जानकी०—मेरी भी इच्छा है कि एक बार आप उनसे भी ये सब बातें कह दें ।

बद्रीदास—कहूँगा, अवश्य कहूँगा, विना कहे मैं सुख से न मर सकूँगा । यह मैं जानता हूँ कि वह मानेगा नहीं । उसने कभी किसी की नहीं मानी ; पर कदाचित्—कदाचित् मरते हुए बूढ़े पिता का अंतिम उपदेश उसे याद रहे, इसी आशा से कहूँगा ।

जानकीदास नेत्रों में आँसू भरकर बोले—पिताजी, आप बार-बार मृत्यु का नाम न लें । जो कुछ ईश्वर की इच्छा है, वह तो होगी ही, फिर उसे रटने से क्या लाभ ? आपका भी चित्त घबराता है, दूसरों को भी दुःख होता है ।

बद्रीदास के होठों पर विषाद-युक्त मंद मुसकान की रेखा दौड़ गई । उन्होंने कहा—मेरा चित्त मृत्यु से नहीं घबराता, मैं तो उसका स्वागत करने के लिये तैयार बैठा हूँ । इस प्रकार मरने में भी सुख है, आनंद है—परंतु यदि कोई इस बात का विश्वास दिला दे कि मेरे पीछे मेरे घर में सुख-शांति का वास रहेगा ।

जानकी०—जो होगा, होता रहेगा । आप उसके लिये इतने चिंतित क्यों होते हैं ?

बद्रीदास—नहीं, चिंता कोई नहीं, केवल यह अभिलाषा है कि मेरा लगाया हुआ वृक्ष हरा-भरा रहे, सूखने न पावे । बस, केवल इतनी ही अभिलाषा है, अंतिम इच्छा है ।

जानकी०—अब इच्छाओं-अभिलाषाओं को छोड़िए, और अपना चित्त ईश्वर की ओर लगाइए ।

बद्रीदास—ईश्वर का ध्यान तो रहता ही है, वह तो रोम-रोम में बसा हुआ है—वह तो सबका मालिक ही है । इस बुलाकीदास ने * * * हाँ, ईश्वर तो मालिक ही है । हे राम ! हे कृष्ण !—

जानकी०—आप भाई साहब की ओर से चिंता मत कीजिए । आपके सामने वह चाहे जो करें, पर मुझे विश्वास है कि आपके बाद वह मुझे अपने पुत्र के समान समझेंगे ।

बद्रीदास—समझें तो अच्छा ही है। इससे बढ़कर और कौन बात हो सकती है ? परंतु बेटा, बुलाकी से मुझे इस बात की बहुत कम आशा है। मैं उसका स्वभाव अच्छी तरह जानता हूँ।

जानकी०—जब मैं उनका आज्ञा-पालक रहूँगा, तो वह फिर कुछ न करेंगे।

बद्रीदास—ईश्वर ऐसा ही करें; परंतु मुझे संतोष नहीं होता। देखो, किसी समय उससे कहूँगा। वैसे तो सैकड़ों बार कहा है, समझाया है; पर अंतिम बार कहके देखना है।

(२)

लाला बद्रीदास बड़े रईस आदमी हैं। आपकी संपत्ति छः-सात लाख की है। आपकी दो बड़ी-बड़ी मिलें हैं। एक आटा पीसने की, और दूसरी कपास ओटने की। लाला बद्रीदास अपनी जवानी में एक साधारण स्थिति के आदमी थे। अपने बाहु-बल और पराक्रम ही से उन्होंने इतना धन कमाया है।

आजकल बद्रीदास बीमार हैं। केवल बीमार ही नहीं, लोग कहते हैं, सख़्त बीमार हैं। चिकित्सकों तथा उनके इष्ट-मित्रों की धारणा है कि लाला बद्रीदास का अंत-समय उपस्थित है। इस रोग से मुक्त होना यदि असंभव नहीं, तो अत्यंत कठिन अवश्य है। लाला बद्रीदास का भी यही विश्वास है कि अब उनका अंत-समय आ गया। जब से उनको यह विश्वास हुआ, तब से वह बड़े उद्विग्न रहते हैं। उनकी उद्विग्नता मृत्यु-भय के कारण नहीं है। वह इस कारण से उद्विग्न नहीं हैं कि उनके हृदय में संसार-सुख लूटने की अभिलाषा शेष है। वह इसलिये भी दुखी नहीं हैं कि उनके पीछे उनके परिवार की क्या दशा होगी; क्योंकि अपने परिवार के लिये वह इतना धन छोड़े जा रहे हैं, जो उसे उनके पीछे सुख-पूर्वक रख सकता है। उनके हृदय में यदि कोई चिंता है, तो केवल इस बात की कि उनके पीछे कोई बंधन न रहने से उनका परिवार तितर-बितर न हो जाय। केवल यही एक चिंता उनकी मृत्यु-शय्या को उनके लिये कष्टदायक बनाए हुए है। इस आशंका को हृदय में रखकर वह मरना नहीं चाहते। यदि उनके हृदय से यह काँटा निकाल दिया जाय, तो वह सुख-पूर्वक मर सकते हैं।

जानकीदास से उपर्युक्त बात-चीत होने के दो दिन बाद बुलाकीदास को एकांत में बुलवाकर कहा—बेटा बुलाकी, मेरा तो अंत-समय उपस्थित है; रात को हूँ, तो दिन की आशा नहीं; दिन में हूँ, तो रात की आशा नहीं। पता नहीं, किस समय दम निकल जाय।

बुलाकी०—पिताजी, आप व्यर्थ ही ऐसी बातें करते हैं। डॉक्टरों का कहना है कि आपकी दशा कुछ अधिक ख़राब नहीं है, आपका उठ खड़ा होना कुछ कठिन नहीं है।

यह बात बुलाकीदास ने केवल पिता को धैर्य बँधाने के लिये कही, अन्यथा वह अच्छी तरह जानते थे कि अब उनके पिता का अंत-समय अत्यंत निकट है।

बद्रीदास—ये सब कहने की बातें और लोकाचार है। मैं अपनी दशा भली भाँति जानता हूँ—ख़ैर। मैंने तुम्हें इसलिये बुलवाया है कि तुमसे कुछ बातें कहूँ।

बुलाकीदास ने कुछ उत्सुक होकर कहा—कहिए।

बद्रीदास—यदि आज तुम्हारी माता जीवित होती, तो मैं निश्चिंत होकर सुख-पूर्वक मर सकता; पर भाग्य में तो इस अंत-समय में शांति मिलना बदा नहीं था।

लाला बद्रीदास की आँखें अश्रु-पूर्ण हो आईं। उन्होंने एक दीर्घ निःश्वास ली। तत्पश्चात् बोले—तुम्हारी माता जीवित रहती, तो मेरे बाद वह तुम दोनों भाइयों को एक सूत्र में बाँधे रखती; परंतु अब कोई ऐसा आधार नहीं है। अतएव अब मुझे केवल तुम दोनों भाइयों की सज्जनता पर ही निर्भर होना पड़ रहा है।

बुलाकीदास अपने पिता का तात्पर्य समझ गए पर बात का शीघ्र अंत करने के लिये बोले—तो आप चाहते क्या हैं ?

बद्रीदास—केवल इतना कि मेरे पीछे तुम दोनों भाई मिल-जुलकर रहो। सब काम वैसे ही रहें, जैसे अब है। घर में फूट न हो, सदैव सुख-शांति का साम्राज्य बना रहे। जानकी यद्यपि तुमसे केवल तीन वर्ष छोटा है, पर वह तुमको मेरे बाद मेरे ही स्थान पर समझेगा। उसने मुझे विश्वास दिला दिया है। पर तुम्हारी ओर से अभी मैं निश्चिंत नहीं हुआ। यदि तुम भी अपने हृदय में यह बात जमा दो, तो मुझे पूर्ण शांति मिल जाय।

बुलाकीदास के मुख पर एक व्यंग्य-पूर्ण मुसकिराहट दौड़ गई। उन्होंने कहा—आप इस चिंता में क्यों पड़े हैं? जो होना होगा, होगा। आप अपना चित्त शांत रखिए।

बद्रीदास—चेष्टा करता हूँ, पर नहीं होता, रात-दिन यही ध्यान रहता है। तुम बच्चे नहीं हो, तुम्हारी अवस्था ३५ वर्ष की है। तुम्हारे पुत्र-पुत्रियाँ भी हैं। तुम एक पिता के हृदय को समझ सकते हो। इसीलिये तुमसे कहता हूँ। मेरे ये अंतिम वाक्य, अंतिम उपदेश, अंतिम प्रार्थना—जो कुछ समझो—यही है। मैं इसके सिवा और कुछ भी नहीं कहना चाहता।

बुलाकीदास सोचने लगे, यह बुड्ढा कितना मोह-जाल में फँसा हुआ है। आप तो मर रहा है, पर भविष्य पर भी अपना सिक्का जमाए रखना चाहता है। मरते हुए आदमी को भविष्य की क्या चिंता?

ज़ाहिरा अपने पिता से कहा—पिताजी, साफ़ बात तो यह है कि मेरी और जानकी की निभना कठिन है; पर मैं आपको इतना विश्वास दिलाता हूँ कि मैं निभाने की पूर्ण चेष्टा करूँगा, और अपनी ओर से कोई ऐसी बात न करूँगा, जिससे आपस में फूट हो।

बद्रीदास ने पुत्र के इस कथन का तात्पर्य समझ लिया। वह जान गए कि बुलाकीदास अपनेको किसी प्रकार बाध्य नहीं करना चाहते। वह नैराश्य की एक लंबी साँस लेकर बोले—ईश्वर को जो मंजूर है, वही होगा। मुझे जो कुछ कहना था, कह चुका, अब तुम जानो, तुम्हारा काम। इस अंत-समय में शांति से मरना मेरे भाग्य में बदा नहीं है। ख़ैर, कभी-कभी इस मरते हुए पिता के अंतिम शब्द स्मरण कर लिया करना।

डूबते हुए को तिनके का सहारा भी मिलने से वह अपने बचने की आशा को हृदय से लगाए रहता है। मनुष्य की आशाएँ, चाहे वे मिथ्या हों चाहे सत्य, उसे दुःख झेलने के लिये प्रस्तुत करती हैं। आशा ही को हृदय से लगाकर मनुष्य बड़े-बड़े दुःखों को झेल जाता है।

बद्रीदास को जब चारों ओर निराशा दिखाई पड़ने लगी, तब उन्होंने केवल इस बात पर अपनी आशा को जीवित रक्खा कि मेरे पीछे मेरे अंतिम शब्द याद करने ही से, संभव है, इसके हृदय पर कुछ प्रभाव पड़े। मनुष्य के न रहने पर उसकी और उसकी बातों की स्मृति का अधिक प्रभाव पड़ता है। आशा के इसी छाया-चित्र को बद्रीदास ने अपने सामने रखकर उससे अपने हृदय को, अपनी चंचल और अधीर आत्मा को, शांति देने की चेष्टा की। बद्रीदास ने पुत्र की बात के उत्तर में एक दीर्घ निःश्वास लेकर कहा—बेटा, मुझे जो कुछ कहना था, सो कह चुका। अब जो तुम्हारी इच्छा हो, और जो तुम उचित समझो, वह करना।

(३)

लाला बद्रीदास का स्वर्गवास हो गया। इधर उनका दम निकल रहा था, और उधर बुलाकीदास कोठरी में ताला डलवा रहे थे। उनके इस कार्य पर लोगों को आश्चर्य हुआ, दुःख हुआ; पर किसी ने भी उनसे कुछ कहने का साहस नहीं किया। उनके अन्न से पलनेवालों का तो इतना साहस हो ही नहीं सकता था, पर उनके इष्ट-मित्रों ने भी इस पर कोई आपत्ति नहीं की। जानकीदास भी उनके इस कार्य को मौन-व्रत धारण किए देखते और मन-ही-मन हँसते रहे।

पिता का स्वर्गवास होने के पंद्रह दिन बाद बुलाकीदास ने जानकीदास को बुलाकर कहा—क्रिया-कर्म से छुट्टी मिल गई, अब हमारा-तुम्हारा बटवारा हो जाना चाहिए। जानकीदास तो यह समझे ही बैठे थे कि बटवारा शीघ्र ही होगा। रुपए-पैसे की कोठरी में ताला डलवाने का मतलब इसके सिवा और क्या हो सकता था? अतएव उन्होंने बड़े विनम्र-भाव से आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा—बटवारा! मेरी समझ में तो बटवारे की कोई आवश्यकता है नहीं।

बुलाकीदास रुखाई से बोले—तुम्हारी समझ में न हो, मेरी समझ में तो है।

जानकीदास—क्यों, ऐसी आवश्यकता क्या है?

बुलाकीदास—इसलिये कि मेरी ऐसी ही इच्छा है।

जानकीदास—पिताजी की तो मरते समय तक यही इच्छा रही कि उनके बाद हम लोग मिल-जुलकर रहें।

बुलाकीदास—हाँ, उनकी ऐसी ही इच्छा थी; पर मैं इसके विरुद्ध हूँ। तुम भी होशियार हो, अपना काम देख-भाल सकते हो, इस कारण यही ठीक है कि हम और तुम अलग-अलग अपना-अपना रास्ता देखें।

जानकीदास—पर मैं तो बटवारा नहीं चाहता।

बुलाकीदास—मगर मैं तो चाहता हूँ।

जानकीदास—पिताजी के अंतिम शब्द याद कीजिए।

बुलाकीदास—वह सब मूर्खता और भावुकता है। उनके जीवन में मैंने कोई कार्य उनकी इच्छा के विरुद्ध नहीं किया, सदैव उनको संतुष्ट रक्खा; परंतु अब उनके पीछे मैं अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने के लिये स्वतंत्र हूँ।

जानकी०—मगर इससे पिताजी की आत्मा को कष्ट होगा।

बुलाकी०—मैं फिर कहता हूँ कि यह सब ढकोसला है; बटवारा अवश्य होगा।

जानकीदास—मैं पिताजी के बाद अब आप ही को पिता की जगह समझता हूँ।

बुलाकीदास—बड़ी प्रसन्नता की बात है। मैं भी तुमको अपने छोटे भाई की ही तरह समझूँगा।

जानकीदास—तो बटवारे की क्या आवश्यकता है?

बुलाकीदास—बटवारा तो अवश्य होगा।

जानकीदास ने देखा, बुलाकीदास उनकी प्रार्थनाओं से रस्सी की तरह और भी अधिक ऐंठे जा रहे हैं। उन्होंने विवश होकर कहा—जैसी आपकी इच्छा। पर इस कार्य से मुझे अत्यंत दुःख होगा।

बुलाकीदास ने जानकीदास की इस बात को जैसे सुना ही नहीं।

(४)

जब से बुलाकीदास ने होश सँभाला, तब से उन्होंने जानकीदास को कभी भ्रातृ-स्नेह-पूर्ण दृष्टि से नहीं देखा। बुलाकीदास की महत्त्वाकांक्षाएँ इतनी बढ़ी-चढ़ी थीं कि उन्होंने अन्य सब भावनाओं को दबा दिया था। जब उनको यह ध्यान आता था कि यदि जानकीदास न होता, तो केवल वही इस सब संपत्ति के स्वामी होते, तब जानकीदास के प्रति उनके हृदय में एक भयानक हिंसा का भाव उत्पन्न हो आता था। इस हिंसा-भाव का उनके ऊपर इतना प्रभाव था कि जिस बात से जानकीदास को कष्ट और दुःख पहुँचता, उसी से उन्हें सुख मिलता था। पिता के मरने के समय कोष में ताला डलवाने के कारणों में से जानकीदास को मानसिक कष्ट पहुँचाना भी एक कारण था। बुलाकीदास ने सोचा था कि यदि क्रिया-कर्म से छुट्टी पाते ही बटवारा न कराया, तो मेरा बुलाकीदास नाम नहीं। इस दुष्ट को भी तो मालूम हो कि कोई भाई मिला था। कैसा ढों है, कितना सज्जन बनता है! कैसा भोलापन दिखला है, जैसे कुछ जानता ही नहीं, और पेट में कतर चलती हैं। मैं तो साफ़ आदमी हूँ; जो भीतर है, व बाहर। मुझे कपट नहीं आता। जिसे हृदय से श समझूँगा, उसके साथ प्रकट में भी शत्रु ही का- व्यवहार करूँगा।

बुलाकीदास जानकीदास से कटु व्यवहार करने प बड़ा गर्व करते थे। वह समझते थे कि शुद्ध-हृदयता औ कपट-शून्यता के अर्थ यही हैं कि जिससे घृणा क उसे पग-पग पर कष्ट पहुँचाने की चेष्टा करता र अपने इस स्वभाव को वह बड़ा भारी गुण समझते थे।

बटवारे की बात पक्की हो गई। सरकार की ओर एक अफ़सर बटवारा करने के लिये नियुक्त हुआ। ब वारा होने में एक सप्ताह लगा। इस अवसर पर जित कटुता उत्पन्न की जा सकती थी, उसमें बुलाकीद ने कुछ क़सर नहीं रक्खी। मगर जानकीदास व्यवहार बड़ा विनम्र और शिष्ट था। बुलाकीद के स्वभाव के लिये जानकीदास की नम्रता आ पर घी का काम करती थी। वह समझते थे, जान दास अपनी साधुता दिखाकर उन्हें दूसरों की दृष्टि में बु बनाना चाहते हैं, और आप अच्छे बनना चाहते हैं।

बटवारे में यह दशा हुई कि जो चीज़ें संख्या में केव एक थीं, उनके दो-दो टुकड़े किए गए। इस अवसर प अगर जानकीदास कहते कि भाई साहब, यह चीज़ द टुकड़े करने से न आपके काम की रहेगी और न मे काम की। अतएव इसे आप ही रखिए।, तो बुलाकीद जल-भुनकर राख हो जाते थे। एक बार तो उन्हों यहाँ तक कह डाला कि मुझे तुम्हारा भाग गो-मांस समान है। मैं केवल अपना भाग लूँगा। यह कहकर व बड़े गर्व से उपस्थित लोगों की ओर देखने लगे। उन्हों समझा कि उनके इस व्यवहार पर लोग उन्हें न्याय-प्रि लोभ-हीन और स्पष्ट-वादी समझकर मन-ही-मन उन प्रशंसा करते होंगे। इस प्रकार बटवारा होने पर व अपनी विजय और जानकीदास की पराजय समझ मन-ही-मन प्रसन्न थे।

इधर जानकीदास के हृदय में, बड़े भाई के इस व्य हार से, वैराग्य उत्पन्न हो चला था। वह सोचते थे

जब सगे भाई का यह व्यवहार है, तब संसार में और किससे अच्छे व्यवहार की आशा की जा सकती है? बुलाकीदास के इस कार्य पर उनके इष्ट-मित्र मुँह पर तो उनकी प्रशंसा करते थे। कहते थे—यह आपने अच्छा किया, जो बटवारा कर लिया। कुछ ऊँच-नीच हो जाता, तो उसे कोई कुछ न कहता, सब आप ही को दोष देते, वह तो छोटा भाई बनकर छूट जाता। आजकल का समय देखते हुए यही ठीक था। अब उसका भाग अलग हो गया, चाहे रक्खे चाहे खोवे, आपको क्या!

इष्ट-मित्रों की इन बातों से बुलाकीदास ने अपने इस कार्य को बहुत ही उचित समझा। परंतु जब किसी तटस्थ न्याय-प्रिय मनुष्य से बात-चीत होती, तब वे ही इष्ट-मित्र कहते थे—अजी बुलाकीदास न-जाने कैसे आदमी हैं, बेकार ही छोटे भाई से अलग हो गए! वह बेचारा तो अलग होने को राज़ी न था। बुलाकीदास ने ज़बरदस्ती अलग होकर व्यर्थ ही उससे शत्रुता मोल ली। जानकीदास बड़ा सज्जन आदमी है। इतना सब कुछ हो गया, पर वह अब भी जब बात पड़ती है, तब यही कहता है कि मैं उन्हें अपने पिता के तुल्य समझता हूँ।

(५)

ऊपर लिखी घटना के बाद छः वर्ष व्यतीत हो गए। इस बीच में बुलाकीदास तथा जानकीदास में उतना ही संबंध रहा, जितना दो साधारण रिश्तेदारों में होता है। यद्यपि जानकीदास चाहते थे कि घनिष्ठता उत्पन्न हो, पर बुलाकीदास ऐसा व्यवहार रखते थे कि घनिष्ठता उत्पन्न ही नहीं हो सकती थी। अतएव, ऐसी दशा में, जानकीदास को भी विवश होकर अपने व्यवहार को परिमित सीमा के भीतर रखना पड़ता था।

जानकीदास ने कपास ओटने की एक नई मिल खोली थी। कुछ दिन तो वह मिल चली, पर पीछे से ऐसी स्थिति आ पड़ी कि पूँजी की कमी के कारण उसका चलना कठिन हो गया। उस मिल को चलाना बहुत ही ज़रूरी था; क्योंकि जानकीदास ने अपनी पूँजी का बहुत बड़ा हिस्सा उसमें लगा दिया था। यदि वह बंद कर दी जाती, तो सब पूँजी बट्टे-खाते पड़ी जाती थी। उसको चलाने के लिये रुपयों की आवश्यकता पड़ी। जानकीदास के पास रुपए नहीं थे। वह बड़े असमंजस में पड़ गए। कई दिन तक बड़े चिंतित रहे। अंत को एक दिन अपनी पत्नी से बोले—न हो, एक बार भैया से ही कहूँ। पत्नी मुँह बनाकर बोली—हाँ, भैया तुम्हें रुपए गिन देंगे!

जानकीदास—गिन क्यों न देंगे? बहुत करेंगे, ब्याज ले लेंगे। इससे अधिक और क्या हो सकता है।

पत्नी—वह कभी न देंगे। तुम अपने इष्ट-मित्रों से क्यों नहीं ले लेते?

जानकीदास—मेरे इष्ट-मित्रों में इस समय दो-एक के सिवा किसी की स्थिति ऐसी नहीं है कि इतने रुपए दे सकें। जो दो-एक ऐसे हैं भी कि शायद दे सकें, उनसे माँगने का मेरा साहस नहीं होता। आज तक किसी से माँगा नहीं। सोचता हूँ, अगर माँगा, और किसी ने इनकार कर दिया, तो बड़ी लज्जा मालूम होगी। मेरी तो यही इच्छा है कि एक बार भैया ही से कहूँ। वह इनकार भी कर देंगे, तो कोई चिंता नहीं। वह मेरे बड़े हैं, उनसे क्या लज्जा?

पत्नी—जब वह तुम्हें अपना छोटा नहीं मानते, तो तुम्हें क्या ग़रज़ पड़ी है कि तुम उन्हें बड़ा मानो? यह तो वही कहावत हुई कि "मान न मान, मैं तेरा मेहमान।" कुछ आत्म-गौरव भी होना चाहिए। जब वह तुम्हें कुछ ध्यान में नहीं लाते, तो तुम क्यों चिमटते हो? जानकीदास कुछ झेंपकर बोले—इसमें आत्म-गौरव को घसीटना व्यर्थ है। आत्म-गौरव ग़ैरों के सामने काम में लाया जाता है, अपनों के—ख़ासकर बड़ों के—सामने आत्म-गौरव नहीं चलता।

पत्नी—जो चलाना चाहते हैं, वह सभी जगह चलाते हैं। मेरे चाचा ने एक बार अपने पिताजी से दस रुपए माँगे थे। पिताजी ने उत्तर दिया—'क्या मेरे घर में टकसाल है? जवान हो गए, पढ़-लिख गए, अब कमाओ-धमाओ। मुझ बुड्ढे का मुँह क्यों ताकते हो?' यह बात मेरे बाबाजी ने वैसे ही हँसकर कह दी थी। इसके बाद वह रुपए देने लगे, पर चाचा ने नहीं लिए। उन्होंने बहुतेरा कहा-सुना, चाचा रुपए लेने को किसी तरह राज़ी नहीं हुए। उसके बाद चाचा ने फिर कभी भूलकर बाबा से एक पैसा नहीं माँगा। मरते-मरते मर गए, दुख भोगे, तंगी सही, पर बाबा से कभी नहीं माँगा। जिनमें आत्म-गौरव होता है, वे उसे सब जगह बरतते हैं, चाहे अपना हो चाहे पराया।

परंतु जानकीदास को यह आदर्श पसंद न आया। उन्होंने उस समय पत्नी से केवल इतना कहकर पिंड छुड़ाया कि अच्छा देखा जायगा।

दूसरे दिन जानकीदास बुलाकीदास के पास गए। बुलाकीदास ने उनको देखकर रुखाई से कहा—कहो, सब कुशल तो है?

जानकीदास—जी हाँ, सब आपकी कृपा है।

बुलाकीदास अपना काम करने लगे। जानकीदास कुछ देर तक चुपचाप बैठे रहे। फिर बोले—आपके पास एक काम से आया था।

बुलाकीदास—किस काम से?

जानकीदास—मैंने एक मिल खोली है—कपास ओटने की—आपने चाहे सुना भी हो।

बुलाकीदास—हाँ, सुना तो है।

जानकीदास—उसको चलाने के लिये इस समय कुछ रुपयों की आवश्यकता थी। मेरे पास इस समय इतने रुपए नहीं हैं।

बुलाकी०—तो फिर मैं क्या करूँ?

एक प्रकार से बुलाकीदास ने जानकीदास का तात्पर्य समझ लिया, और उसका उत्तर 'तो फिर मैं क्या करूँ' इन शब्दों में दे दिया। परंतु जानकीदास ने इन शब्दों पर ध्यान न देकर कहा—आप रुपयों का प्रबंध कर देते, तो अच्छा था।

बुलाकीदास सूखी हँसी हँसकर बोले—मेरे पास इतने रुपए कहाँ से आए?

जानकीदास—आप प्रबंध कर सकते हैं।

बुलाकीदास—मैं तुम्हारे लिये भीख माँगूँ, या उधार लूँ? मुझे इन झगड़ों से क्या मतलब?

जानकीदास—मैं सूद दे दूँगा।

बुलाकीदास—मगर मुझे सूद लेना हो, तब न? जब सूद ही देना है, तो दुनिया पड़ी है, चाहे जहाँ से ले आओ।

जानकीदास—दुनिया-भर की दूसरी बात है, आपकी दूसरी। दुनिया-भर से माँगने का मेरा साहस नहीं पड़ता।

बुलाकी०—जब इतने निःस्पृह हो, तो ऐसा काम क्यों करते हो, जो तुम्हारे बूते न हो सके?

जानकीदास—आपसे तो मुझे बड़ी आशा थी।

बुलाकीदास—यह सब तुम्हारी नासमझी है। मुझसे तुम्हें कोई आशा न रखनी चाहिए।

जानकीदास को यह बात बड़ी बुरी लगी। उन्होंने कुछ आवेश में आकर कहा—अच्छी बात है, देखा जायगा।

यद्यपि 'देखा जायगा', इन वाक्यों से जानकीदास का यह तात्पर्य था कि रुपयों का और प्रबंध कर लिया जायगा, पर बुलाकीदास ने इसका कुछ और ही तात्पर्य समझा। उन्होंने मुँह बनाकर कहा—देखा क्या जायगा, मैं तुम्हारे दरवाज़े पर कभी माँगने न आऊँगा, और जो आऊँ, तो तुम मुझे दुतकार देना।

जानकीदास अपना-सा मुँह लेकर लौट आए। उन्हें पत्नी की बात याद आई। सोचा, उसने ठीक ही कहा था। उसकी बात न मानकर आया, और व्यर्थ ही अपनी बात गँवाई।

(६)

जानकीदास बड़ी विकट स्थिति में पड़ गए। उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ कि उनका सर्वस्व स्वाहा हुआ जाता है। मिल चलाने के लिये रुपए नहीं हैं। अगर मिल नहीं चलाई जाती, तो जो कुछ है, वह भी सब नष्ट हुआ जाता है। अतएव उन्होंने लज्जा को तिलांजलि देकर एक मित्र से अपनी कष्ट-कथा कही। उस मित्र ने उन्हें कुछ सहायता दी। कुछ रुपए उन्होंने स्त्री के क़ीमती गहने गिरों रखकर प्राप्त किए। यद्यपि इन दोनों कार्यों से उन्हें महान् मानसिक क्लेश हुआ, पर करते क्या? आवश्यकता और स्थिति सब कुछ करा लेती है। थोड़े ही समय में जानकीदास का काम खूब चल निकला। धीरे-धीरे उन्होंने मित्र का ऋण भी चुका दिया, और स्त्री के गहने भी छुड़ा लिए। इसी प्रकार उनकी प्रतिदिन उन्नति होती गई।

इधर काल-चक्र ने बुलाकीदास पर अपना वार किया। उन्होंने अपना काम तो खूब बढ़ा लिया, पर उस काम में उतनी आमदनी नहीं हुई, जितनी की आशा थी। उधर ख़र्च यथेष्ट था। इसका कारण एक यह भी था कि बुलाकीदास किसी का विश्वास न करते थे। सारा संसार उन्हें बेईमान और धूर्त दिखलाई पड़ता था। इसका परिणाम यह हुआ कि जब लोगों ने यह देखा कि उनकी ईमानदारी का मूल्य समझनेवाला ही कोई नहीं, उलटे वे संदेह की दृष्टि से देखे जाते हैं, तो कुछ ने, जो अपने सिद्धांत पर अधिक दृढ़ थे, बेईमानी तो नहीं की, पर काम की ओर अधिक ध्यान देना और परिश्रम करना कम कर दिया। और, कुछ

ने, जो सिद्धांत के पक्के न थे, चिढ़कर बेईमानी शुरू कर दी। उन्होंने सोचा, यह बड़ा सयाना बनता है, और दुनिया-भर को बेईमान समझता है, तो हम भी इस पर क्यों न हाथ साफ़ करें। देखें, यह कितना चालाक है। इन्हीं सब कारणों से ऐसी परिस्थिति हो गई कि बुलाकीदास का दिवाला होने की नौबत आ गई। अब बुलाकीदास बहुत घबराए। उनके हाथ-पैर फूल गए। जो जितना ही अधिक घमंडी और अहंकारी होता है, वह उतना ही असफलता से डरता है, और असफल होने पर उतना ही भीरु तथा कायर हो जाता है। यही दशा बुलाकीदास की भी हुई। उन्होंने स्थिति सँभालने की बड़ी चेष्टा की, बहुत दौड़े-धूपे। जिनसे कभी सीधे मुँह बात नहीं करते थे, उनसे भी उन्होंने सहायता माँगी, पर कोई आशा-जनक बात नहीं हुई।

बुलाकीदास की पत्नी ने उनसे कहा—न हो, जानकी से सहायता लो। वह तो बेचारा सदा तुमसे हेल-मेल रखने की कोशिश में रहता है, तुम्हीं उससे फटे रहते हो। मुझे पूरा भरोसा है कि वह तुम्हारी सहायता करेगा। आजकल उसकी चढ़ती कला भी है।

बुलाकीदास पत्नी की बात सुनकर कुछ क्रोध में आकर बोले—उस नीच से मैं सहायता माँगूँगा? चाहे मेरा सर्वस्व चला जाय, पर मैं उससे एक पैसा न लूँगा! जिसको मैंने दुतकार दिया था, उसी से सहायता माँगूँ? गली-चलतों से मैं सहायता माँगने के लिये तैयार हूँ, पर उससे कुछ न कहूँगा।

मगर बुलाकीदास स्थिति सँभालने का कुछ प्रबंध न कर सके। सब ओर से निराश होकर एक बार उनका ध्यान फिर जानकीदास की ओर गया। सोचा, यदि उस समय उसकी सहायता कर दी होती, तो आज मुझे इतना कष्ट न भोगना पड़ता। यदि मैं जाऊँ, तो मुझे विश्वास है कि वह इनकार नहीं करेगा। वह तो बहुत कुछ लिपटना चाहता है, पर मैं ही उसे मुँह नहीं लगाता।

बहुत कुछ सोच-विचार करने पर बुलाकीदास ने यही स्थिर किया कि चाहे वह दिवालिए ही क्यों न हो जायँ, पर जानकीदास से सहायता के लिये प्रार्थना न करेंगे। इस समय जानकीदास के ऊपर उनका क्रोध और घृणा और भी अधिक हो गई; क्योंकि जानकीदास की दशा अच्छी थी, और वह इस समय कष्ट में थे।

इधर जानकीदास बुलाकीदास की दशा सुनकर बड़े चिंतित हुए। उन्होंने सारा हाल अपनी पत्नी से कहा। पत्नी ने कुछ हँसकर कहा—तुमसे उन्होंने जो व्यवहार किया था, उसका ईश्वर ने यह बदला दिया है।

जानकीदास—तो इस समय मुझे क्या करना चाहिए?

पत्नी—करोगे क्या, अपने घर में आराम से बैठे रहो। जब वह तुम्हारे पास आवें, कुछ कहें-सुनें, तब देखा जायगा।

जानकीदास ने कहा—यही ठीक है। मैं भी चाहता हूँ कि उनका अभिमान नष्ट करूँ। यदि उन्होंने मुझसे सहायता माँगी, तो सहायता मैं अवश्य करूँगा; पर उनका अभिमान भी नष्ट हो जायगा।

दूसरे दिन उन्हें पता लगा कि बुलाकीदास चाहे आत्म-हत्या भले ही कर लें, पर उनसे सहायता न माँगेंगे। यह सुनकर उन्हें बड़ी चिंता हुई। रात-भर इसी उधेड़-बुन में रहे कि क्या करें। वह चाहते थे कि भाई की सहायता की जाय; पर प्रश्न यह था कि वह उस सहायता को स्वीकार कैसे करेंगे। उन्होंने सोचा, अगर मैं ख़ुद जाकर उनसे कहूँ कि मेरे योग्य जो कार्य हो, बतलाइए, तो ठीक होगा। पर पीछे से उन्हें ध्यान आया कि ऐसा करने से वह और भी अधिक चिढ़ जायँगे। समझेंगे कि यह मुझे लज्जित करने और इस प्रकार अपना बदला लेने के लिये आया है। फिर सोचा, किसी और आदमी के द्वारा सँदेसा भिजवाऊँ; पर यह भी ठीक नहीं। भैया बड़े हठी हैं, वह इसे भी पसंद न करेंगे। इसी प्रकार बहुत कुछ सोचा, पर कोई बात न सूझी। अंत को ऊबकर उन्होंने कहा—हटाओ भी झगड़ा। यदि उन्हें सौ दफ़े ग़रज़ होगी, तो मुझसे सहायता माँगेंगे। नहीं तो मुझे क्या? जैसा किया, वैसा भोगें। मेरे ही साथ उन्होंने कौन बड़ी नेकी की है? पग-पग पर उन्होंने मुझे अपमानित और लज्जित करने की चेष्टा की। अंत को ऐसे समय पर भी, जब मेरा सर्वनाश होने को था, उन्होंने सहानुभूति का एक शब्द कहना तो अलग, उलटे मुझे नासमझ बनाया।

परंतु इस विचार के बाद ही उन्हें पिता के अंतिम शब्द याद आए कि 'बेटा, कुछ भी हो, बुलाकीदास तुम्हारा बड़ा भाई है, इसका ध्यान सदैव रखना।' इन शब्दों के याद आते ही एकदम उनका जी भर आया, और आँखों से अश्रु-पात होने लगा। उन्होंने सोचा,

चाहे जैसे हो, भैया को इस कष्ट से बचाना ही होगा ; परंतु इस युक्ति से कि उनकी सहायता भी हो जाय, और उन्हें यह भी पता न लगे कि किसने सहायता दी है।

(७)

बुलाकीदास अपनी कोठी के कमरे में बैठे चिंता-सागर में मग्न थे। वह सोच रहे थे कि यदि कल तक रुपयों का प्रबंध न हुआ, तो दिवाला निकल जायगा ! सारा मान, सारी मर्यादा मिट्टी में मिल जायगी ! पिता का नाम डूब जायगा ! क्या करूँ, कहाँ जाऊँ ? इस समय ईश्वर भी मुझे भूल गया ! हाय, मैं कैसे लोगों को मुँह दिखाऊँगा !

यह सोचते-सोचते उनकी आँखों से आँसू बहने लगे, हिचकी बँध गई। सोचा, अब आत्महत्या करने के सिवा और कोई उपाय नहीं है। वह बैठे ऐसी ही बातें सोच रहे थे कि कमरे के द्वार पर से नौकर ने कहा—सरकार !

बुलाकीदास ने झटपट रूमाल से आँसू पोंछकर, अपनेको सँभालकर, कहा—क्या है ?

नौकर—सरकार, एक चिट्ठी है।

बुलाकीदास—ले आओ।

नौकर ने आकर एक लंबा और मोटा लिफ़ाफ़ा दिया। बुलाकीदास ने लिफ़ाफ़ा खोला। लिफ़ाफ़े के अंदर से ८० हज़ार रुपए के नोट और एक छोटा-सा पत्र निकला। पत्र में लिखा था—

"श्रीमन्, मुझे पूर्ण आशा है कि आप इस तुच्छ भेंट को स्वीकार करेंगे।

आपका एक परम हितैषी"

बुलाकीदास के शरीर में बिजली दौड़ गई। वह तुरंत खड़े हो गए, और नोटों को काँप रहे हाथों से लिफ़ाफ़े में रखते हुए बोले—यह पत्र कौन लाया है ?

नौकर—एक आदमी।

बुलाकीदास—उसे तुरंत मेरे सामने लाओ।

नौकर बाहर चला गया, और लौट आकर बोला—सरकार, वह तो चला गया।

बुलाकी०—एँ, चला गया ?

नौकर—हाँ सरकार।

बुलाकी०—तुम उसे पहचानते हो ?

नौकर—नहीं सरकार, मैं नहीं पहचानता। आज ही उसे देखा, बिलकुल नया आदमी था।

बुलाकीदास अवाक् रह गए। बड़ी देर तक सोचते रहे। अनुमान लगाते रहे कि यह काम किसका हो सकता है ? पर कुछ समझ में न आया। अंत को हँस-कर बोले—यह ईश्वर की दी हुई सहायता है। अब क्या, अब तो पौ-बारह हैं !

(८)

दूसरे दिन जानकीदास बुलाकीदास के पास आए। बुलाकीदास ने उन्हें देखते ही भौंहें चढ़ा लीं। जानकी-दास ने कहा—भैया, मैंने सुना—

जानकीदास इतना ही कह पाए थे कि बुलाकीदास कड़क-कर बोले—जो कुछ सुना, ठीक सुना। यह सब शत्रुओं की चाल थी। पर मैं ऐसा-वैसा आदमी नहीं हूँ। उड़ती चिड़िया पहचानता हूँ। मैंने पहले ही से प्रबंध कर लिया था। अब आज सबके मुँह धुआँ हो जायँगे। तुम शायद इसलिये आए होगे कि कदाचित् मैं तुमसे कुछ सहायता माँगूँ। पर याद रक्खो, बुलाकीदास अपनी बात का पक्का है। मैं फिर तुमसे कहता हूँ कि ऐसा अवसर कभी न आवेगा कि तुम्हें मेरी सहायता करनी पड़े।

जानकी०—भैया, मैं इस योग्य ही नहीं कि आपकी कुछ सहायता कर सकूँ।

बुलाकी०—दुनियादारी की बातें न बघारो। मैं तुम्हें खूब समझता हूँ। तुम ऊपर से 'म्याऊँ-म्याऊँ' करते हो, पर तुम्हारे पेट में छुरी चलती है। मेरे सर्वनाश का दृश्य देखकर अपनी आँखें ठंडी करने आए होगे। क्यों !

जानकीदास—भैया ऐसा मत कहिए। ईश्वर ऐसा न करे। आप तो व्यर्थ ही मेरे संबंध में ऐसे-ऐसे विचार बना लिया करते हैं। मैं तो आपको सदा पिता के तुल्य समझता हूँ, और समझता रहूँगा।

बुलाकी०—बड़े साधु हो ! क्या कहने हैं ! अच्छा तो अब देख-सुन लिया। यह विश्वास रक्खो कि बुलाकीदास का कभी बाल भी बाँका नहीं हो सकता।

जानकीदास—ईश्वर न करे।

थोड़ी देर में जानकीदास उठकर चल दिए। यद्यपि बड़े भाई का व्यवहार पहले की अपेक्षा और भी अधिक कटु था, परंतु फिर भी उनके मुख पर प्रसन्नता तथा मुसकिराहट थी, और हृदय में संतोष।

विश्वंभरनाथ कौशिक

प्रभात

[१]

प्रकृति-नटी का पट-परिवर्तन
हुआ प्रभात पुनीत ;
वसुंधरा के तप-निकुंज में
छिड़ा विकल संगीत।

[२]

हुआ सुनहरी रवि-किरणों से
पूरित विश्व-कुटीर ;
चलने लगी शांति को देती
शीतल मंद समीर।

[३]

पूर्व-दिशा के शुष्क अधर पर
दौड़ गई मुसकान ;
फिर तो लगीं दिशाएँ हँसने
सभी बनीं अम्लान।

[४]

जगत निरखने लगा उषा का
वंकिम भ्रुकुटि-विलास ;
करने लगी देखकर रवि को
नलिनी किंचित् हास।

[५]

मधु मकरंद लगे बरसाने
मुख खोले अरविंद ;
छुटे कमलिनी के कारा से
बंदी रसिक मलिंद।

[६]

किया नियति ने अंध जगत् को
शुचि प्रकाश का दान ;
विश्व-विपिन में छिड़ा पक्षियों
का कलकल कल-गान।

[७]

जुड़ने लगी पास कलिका के
भक्त भ्रमर की भीर ;
लतिकाएँ लहलहा उठीं फिर
पाकर जीवन नीर।

[८]

मिला विरह-विधुरा चकई का
चकवा—जीवन-प्राण ;
दुख की घोर काल-रजनी का
हुआ सुखद अवसान।

"कुसुम"

फूल

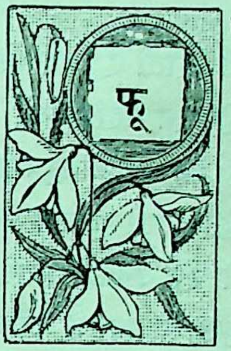

फूल किसको प्यारे नहीं लगते? उन्हें देखते ही किसकी हृदय-कली नहीं खिल उठती? उनकी रंग-विरंगी—श्वेत, नीली, पीली, लाल—पँखड़ियों को देखकर किसका हृदय गद्गद नहीं हो उठता? उनकी सुवास किसके मन में नहीं बस जाती? उनकी शोभा निहारकर जब अकवि की भी चित्त-वृत्तियाँ कवित्व-संपन्न-सी भासित होने लगती हैं, तब सूक्ष्म भावों के प्रकट करनेवाले शक्ति-संपन्न सुकवियों का क्या कहना है? सच पूछिए, तो कवियों को जितना मसाला फूलों से मिला है, और मिलता है, उतना शायद ही और कहीं से मिला हो, या मिलता हो। संस्कृत की कविता और तदनुरूप भाषा की कविता कमल की उपमाओं से भरी है। पद-पद्म-पराग, कर-कमल, पुंडरीकाक्ष, नीलोत्पल-दल-श्याम, मुखाब्ज, हृत्पंकज आदि की भरमार तो है ही, कुमुदिनी, चंपक, केतकी, कुंद, जपा, प्रियंगु, किंशुक आदि की उपमाएँ भी स्थल-स्थल पर अत्यंत हृदय-ग्राहिणी हैं। फ़ारसी-उर्दूवालों ने भी 'गुलो बुलबुल' से अपनी भाषा को और भी सरस बना दिया है। अँगरेज़ी में भी इस बात की कमी नहीं है।

आदमियों की बात जाने दीजिए, देवता भी फूलों से अत्यंत संतुष्ट होते हैं। यथा—

"मल्लिकादिसुगंधीनि मालत्यादीनि वै प्रभो !
मयाऽऽहृतानि पूजार्थं पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम् ।"
"हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयोः—"

मूर्ति-पूजा का नाम सुनकर नाक-भौं सिकोड़नेवाले लोग भी मज़ारों और मक़बरों पर फूलों की मालाएँ चढ़ा आते हैं।

फूलों की ऐसी क़दर क्यों होती है? इसके लिये अदृष्ट कारण जो कुछ हो, हम नहीं जानते; परंतु दृष्ट कारण तो यही है कि उनकी सुषमा से नयनेंद्रिय की तृप्ति होती है, उनकी सुवास से घ्राणेंद्रिय की परम तृप्ति होती है, उनके कोमल, स्निग्ध स्पर्श से त्वचा को सुख मिलता है, और उनके सुस्वादु मकरंद से रसनेंद्रिय को हर्ष होता है। चार-चार इंद्रियों को एकसाथ मुग्ध करनेवाला गुण पुष्प से अधिक और कहाँ मिलता है?

साधारण रीति से तो हम कह सकते हैं कि परमात्मा ने फूल हमारे लिये या अपने लिये बनाए हैं; क्योंकि फूलों को हम सूँघते हैं, उनसे गुलक़ंद आदि दवाएँ बनाते हैं, उनका अर्क़ और इतर निकालते हैं, अगस्त, गोबी आदि को खाने के काम में लाते हैं, और देवतों पर चढ़ाते हैं। परंतु सूक्ष्म-दृष्टि से देखा जाय, तो फूल प्रधानतः उन पौदों की भलाई के लिये हैं, जिनमें वे लगते हैं। फूल फल का पूर्व रूप है; फल का गर्भ फूल में रहता है। जैसे कोई अमूल्य, कोमल पदार्थ रुई या रेशम में लपेटकर पेटी के भीतर रक्खा जाता है, वैसे ही पौदे का अत्यंत आवश्यक भाग, अर्थात् भावी फल का गर्भ, कोमल पँखड़ियों में लपेटकर 'ढोढ़ी' के भीतर सुरक्षित रहता है।

आइए, प्रथमावस्था से लेकर फूल की परीक्षा करें। पहले नन्हीं-सी ढोढ़ी, हरे रंग की, कुछ गोलाकार, हर तरफ़ से ढकी निकलती है। इस हरी चादर से उसकी रक्षा होती है। पानी, ओस, पाला आदि उसके भीतरी अवयवों को नहीं सता सकते, ढुलककर नीचे गिर जाते हैं। धूप का प्रभाव एकाएक उन भीतरी अवयवों पर नहीं पड़ता। कीड़े-मकोड़े भी उन्हें शीघ्र नहीं काट सकते! ज्यों-ज्यों भीतर वृद्धि होती जाती है, यह ऊपरी हरी चादर मुख के पास से हटती जाती है, और कली की मुसकिराहट शुरू हो जाती है। शनैः-शनैः ओढ़ने की हरी चादर बिछाने की चादर बन जाती है, पँखड़ियाँ खिलने लगती हैं और भीतर के आवश्यकीय अवयव दिखलाई देने लगते हैं।

अब इन आंतरिक अवयवों में जगत्कर्ता की कारीगरी देखिए। कोई फूल उठाकर निरीक्षण कीजिए, तो उसमें आपको केसर के पतले लच्छे मिलेंगे। ये लच्छे भी दो तरह के होंगे। किनारे-किनारेवाले एक तरह के, और बीचवाला दूसरी तरह का। यह बीचवाला लच्छा किनारेवाले लच्छों से या तो कुछ बड़ा होगा, या कुछ छोटा। इन लच्छों को केसर कहते हैं। किनारेवाले लच्छे पराग-केसर कहलाते हैं; क्योंकि इन्हीं से पराग या पुष्प-धूलि निकलती है। वह पीले रंग के चूर्ण के समान पुष्प पर झड़ती है। यह पराग ही पुष्प का वीर्य है। इसी के द्वारा पुष्प में गर्भ-स्थिति होती है। इसके पैदा करनेवाले पराग-केसर के लच्छे पुरुष या नर हैं। बीच का लच्छा स्त्री है, और वह गर्भ-केसर कहलाती है। इसी के निचले भाग में गर्भ रहता है। वहीं बीज, अर्थात् फल, की उत्पत्ति होती है। जैसे चल जीवों में गर्भाधान

के लिये पुरुष और स्त्री का समागम आवश्यक है, वैसे ही पुष्प में भी। यह समागम किस प्रकार होता है ?

गर्भ-केसर के लच्छे का ऊपरी भाग कुछ मोटा-सा होता है, अर्थात् उस पर एक चपटा लट्टू-सा लगा रहता है। ध्यान-पूर्वक उँगली से छूकर देखा जाय, तो मालूम होगा कि इस लट्टू पर गोंद या लासे की तरह कोई चिपचिपी चीज़ लगी है। पराग का जो कण इस लट्टू पर पड़ता है, वह चिपक जाता है, और चिपचिपे पदार्थ के रासायनिक गुण के प्रभाव से फूटकर अपना आवश्यक रस, उसी गर्भ-केसर की पतली नली के द्वारा, गर्भ-स्थान तक भेज देता है। वहाँ फल या बीज पुष्ट होकर यथा-समय पकता है।

भीतर ज्यों-ज्यों गर्भ की पुष्टि होती है, त्यों-त्यों बाहर की पँखड़ियाँ म्लान हो-होकर झड़ती जाती हैं, और ठीक समय पर फल, छीमी या दाना बाहर निकल आता है। डंठल के पुष्ट हो जाने पर उसे बाह्य आवरण की आवश्यकता नहीं रहती।

गर्भ-स्थिति के लिये पराग के एक या अनेक कणों की ही आवश्यकता होने पर भी, उसके लाखों कण होते हैं, जो व्यर्थ जाते हैं। परंतु यह सब इसलिये होता है कि पराग की कमी के कारण पुष्प में वंध्यात्व न हो।

गर्भ-केसर के सिरे तक पराग के पहुँचाने का काम मुख्यतः दो प्रकार होता है। एक तो वायु के द्वारा, और दूसरा भ्रमरों, मधुमक्खियों, चींटियों तथा अन्य कीड़ों के द्वारा। वायु से डाली हिलती है, या पराग ही उड़कर गर्भ-केसर पर पड़ जाता है। मक्खियाँ आदि, पुष्पों के रंग-बिरंगेपन से सुगमता के साथ उनका पता पाकर, उनकी सुगंध से आकृष्ट होकर, मधु के लोभ से उनके भीतर घुसती हैं। घुसने में उनके परों, पैरों और मस्तक आदि में पराग के कण लग जाते हैं, और ये ही कण गर्भ-केसर के सिरे पर झड़ या चिपक जाते हैं। किसी-किसी फूल में गर्भ-केसर का सिरा ऐसे स्थान में होता है कि वहाँ तक वायु के द्वारा पराग का पहुँचना कठिन है। वहाँ ये छोटे जंतु ही पराग पहुँचाते हैं।

जब एक पुष्प का पराग उसी पौदे के दूसरे पुष्प की गर्भ-केसर पर, या दूसरे पौदे के फूल की गर्भ-केसर पर पड़ता है, तब फल या दाने में अधिक वृद्धि होती है। वनस्पतियों में भी सगोत्रीय कन्या का विवाह न होने से बहुत उन्नति होती है। चूँकि मक्खियाँ एक फूल से उड़कर दूसरे फूल पर जाती हैं, इसलिये इनके द्वारा असमानगोत्रा-समागम बहुत सरलता से होता है।

यही नहीं, इस विषय में इतनी बारीकियाँ विद्वानों ने मालूम की हैं कि उनके वर्णन में पोथे-के-पोथे तैयार हो गए हैं। यद्यपि ऊपर का वर्णन साधारणतः बहुत प्रकार के फूलों के लिये सही है, तथापि विशेषताएँ भी हैं। जैसे किसी-किसी फूल (कमल) में पराग-केसर की बहुतायत होती है; परंतु गर्भ-केसर नहीं होती। बीच की कर्णिका (बोंड़री) पर ही गर्भ-यंत्र के मुँह रहते हैं। किसी जाति (कुम्हड़े आदि) में एक ही पौदे में दो तरह के फूल होते हैं—नर और मादा। नर-फूलों में फल नहीं होता। मादा-फूलों में होता है। किसी जाति (पपीते आदि) में नर-पौदे अलग और मादा-पौदे अलग होते हैं, और किसी जाति (मकई) में फल या भुट्टी, अर्थात् कुकड़ी। जो मादा है, वह

नीचे लगती है, और पराग पैदा करनेवाले ज़ीरे की बाली पौदे की चोटी पर लगती है। कुकड़ी के चारों ओर जो रेशम के-से केश होते हैं, वे ही इस पौदे की गर्भ-केसर हैं। इस प्रकार विचित्रताओं का अंत नहीं मिलता।

यद्यपि मक्खियाँ सेवा-भाव से प्रेरित होकर फूलों में नहीं जातीं, किंतु स्वार्थ-वश—रस पीने के लिये, शहद इकट्ठा करने के लिये—जाती हैं, तथापि उनसे पौदों का बड़ा काम निकलता है। और, स्वार्थ म भी परार्थ करनेवाले इन जीवों के प्रलोभन के लिये ही पुष्प में मकरंद होता है, विविध रंग की पँखड़ियाँ होती हैं तथा सुवास होती है। एक बात यह भी देखने के योग्य है कि श्वेत पुष्प प्रायः रात्रि को खिलते हैं। कवियों ने चंद्रमा का नाम कुमुद-बांधव रक्खा है; क्योंकि रात्रि को चंद्रमा का उत्कर्ष होता है, और रात्रि ही में कुमुदिनी फूलती है। बेला, चमेली आदि अन्य श्वेत पुष्प भी प्रायः रात्रि ही में खिलते हैं। रात्रि में रंगदार फूलों का रंग नहीं दिखलाई देता; परंतु श्वेत पुष्प दिखलाई देते हैं। अतः मक्खियाँ आदि उनसे आकृष्ट होकर रात्रि में उनका रस लेने जाती हैं।

हम फूलों के विषय में जहाँ तक निरीक्षण और विचार करते हैं, उस बड़े कारीगर की कारीगरी ही देखते हैं, और उस कारीगरी का अंत न पाकर सहसा यही सोचने के लिये विवश हो जाते हैं कि “परमात्मन्, तेरे विना इस कला-कौशल की अनंतता और किसमें हो सकती है!”

चंद्रमौलि सुकुल

महाकवि भास

रूपक अर्थात् दृश्य-काव्य के क्षे
में महाकवि भास का आ
बहुत ऊँचा है। यह तो न
कहा जा सकता कि इनसे प
भारतीय संस्कृत-कवियों मे
किसी ने नाटक आदि लिखे
नहीं, किंतु इसमें कोई स
नहीं कि आज इनसे प्रा
किसी कवि का लिखा कोई रूपक उपलब्ध नहीं ह
भास की अतिप्राचीनता के कारण और उनके ग्र
का विलोप या तिरोभाव हो जाने के कारण संस्कृ
विद्वानों में भी आज बहुत कम लोग उनसे परि
हैं। श्रीयुक्त गणपति शास्त्री के परिश्रम से यद्यपि भ
के कुछ ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं, परन्तु संस्कृत के पण्डि
में अब भी बहुत कम लोगों ने उनके ग्रन्थों का अ
शीलन किया है। आज हम इन्हीं महाकवि के सम्ब
की कुछ बातें पाठकों की भेंट करना चाहते हैं।

भास के अनन्तरवर्ती प्राचीन कवियों ने उन्हें 'मु
कहा है; जो उनकी प्राचीनता और पूज्यता का प्र
प्रमाण है। ईसा की बारहवीं शताब्दी में जयानक
लिखे 'पृथ्वीराज-चरित' के प्रथम सर्ग का ती
श्लोक है—

“सत्काव्यसंहारविधौ खलानां दीप्तानि वह्नेरपि मानसानि
भासस्य काव्यं खलु विष्णुधर्मान् सोप्याननात्पारतवन्मुमोच

इसकी टीका करते हुए पन्द्रहवीं सदी में जोनराज
लिखा है—“सोऽग्निरपि भासमुनेः काव्यं विष्णुध
मुखात् त्यक्तवान् नादहदित्यर्थः।” इस १२वीं सदी
पुस्तक-दाह से मुसलमानों के उस पैशाचिक अत्या
की भी सूचना मिलती है, जिसमें भारतीय साहित्य
सर्वनाश हुआ था। संभव है, अग्नि-दाह से किसी प्र
बचे हुए भास मुनि के काव्यों को, किसी सहृदय साधु
मुसलमानी प्रभाव से बाहर—दक्षिण भारत में—
चाने का प्रयत्न किया हो। मदरास-प्रान्त के मणिक
मठ में प्राचीन ताल-पत्रों पर लिखे हुए ये काव्य श्री
गणपति शास्त्री को मिले हैं। (हमारे पास इसी प्र
की एक 'भेलसंहिता' की पुस्तक आई है; जि

हिन्दुस्थान-भर में केवल एक खण्डित प्रति ताल-पत्रों पर तेलगू-अक्षरों में लिखी हुई तंजोर के राजकीय पुस्तकालय में रक्खी थी । इसके कहीं दो-दो चार-चार पत्रे खण्डित हैं, कहीं-कहीं अध्याय-के-अध्याय ग़ायब हैं । ये सब साहित्य के भग्नावशेष, बेज़बान के ही, पुराने दिनों की याद दिलाते हैं) ।

जिस प्रकार महर्षि वाल्मीकि और व्यास की कृतियों में बहुत-से आर्ष प्रयोग पाए जाते हैं, वैसे ही महाकवि भास के काव्यों में भी पाए जाते हैं । इससे एक बात यह भी सिद्ध होती है कि भास का समय महर्षि पाणिनि से पूर्व है । कालिदास, बाण और भवभूति आदि जो कवि पाणिनि के पीछे हुए हैं, उन्होंने पाणिनीय व्याकरण का अनुसरण किया है । भास के काव्यों को ध्यान-पूर्वक देखने से प्रतीत होता है कि उस समय पाणिनीय व्याकरण का प्रचार नहीं था ।

चन्द्रगुप्त आदि कुछ राजों का उल्लेख देखकर ऐतिहासिक लोग पातञ्जल महाभाष्य को ईसा से पूर्व दूसरी शताब्दी में बना बताते हैं । इसके पूर्व पाणिनीय सूत्रों पर 'संग्रह' नाम का विस्तृत ग्रन्थ विद्यमान था । व्याकरण महाभाष्य के देखने से ही यह बात स्पष्ट हो जाती है कि 'संग्रह' इस महाभाष्य से भी बहुत बड़ा था । इतने बड़े ग्रन्थ की उत्पत्ति, प्रचार और विलीयमान दशाओं में कम-से-कम दो-तीन सौ वर्ष लगे होंगे । इस 'संग्रह' से पूर्व पाणिनि-सूत्रों पर कात्यायन के वार्तिक पढ़ाए जाते थे । विशेषतः उन्हीं की व्याख्या 'संग्रह' में थी । यदि इन वार्तिकों की उत्पत्ति और प्रचार का काल केवल सौ वर्ष मान लिया जाय, तो भी ईसा से, कम-से-कम, छः सौ वर्ष पूर्व पाणिनि-सूत्रों का निर्माण-काल सिद्ध होता है । भास मुनि का समय उनसे भी पूर्व है । अतः आज से लगभग तीन हज़ार वर्ष पहले भास मुनि का होना निश्चित होता है ।

एक बात और भी है । दक्षिण-भारत के शाङ्कर मठों में जो आचार्य-परम्परा के ताम्र-पत्र विद्यमान हैं, उनसे शारीरक मीमांसा-भाष्य के निर्माता आदि भगवान् श्रीशङ्कराचार्य का समय लगभग तेईस सौ वर्ष पूर्व सिद्ध होता है । यद्यपि कुछ ऐतिहासिक लोगों की धारणा है कि शङ्कराचार्य आठवीं सदी में हुए थे ; परन्तु यदि इस मत को ठीक मान लें, तो उनकी उत्पत्ति और अलौकिक प्रसिद्धि का कोई विशेष कारण नहीं रह जाता । भगवान् शङ्कर के जीवन की सबसे बड़ी विशेषता है चक्रवर्ती बौद्ध-धर्म का निराकरण करके वैदिक-धर्म को प्रतिष्ठित करना । यदि यह बात उनके जीवन से अलग करके देखा जाय, तो फिर कुछ रह ही नहीं जाता । आठवीं सदी में बौद्ध-धर्म की उतनी प्रबलता और व्यापकता का कोई प्रमाण नहीं मिलता । न तो उस समय बौद्ध-राजों का प्राधान्य था, न प्रजा में बौद्ध-धर्म का एकच्छत्र साम्राज्य था, न उस समय बौद्धों के विहारों का प्राचुर्य था, और न पग-पग पर टक्कर देनेवाले धुरन्धर बौद्ध-विद्वान् मौजूद थे । फिर उस समय शङ्कराचार्य ने शास्त्रार्थों में परास्त किसे किया, उन्होंने दिग्विजय किसका किया, और बौद्ध-धर्म का निराकरण करके वैदिक-धर्म की स्थापना कहाँ की ? २१ करोड़ बौद्धों को शुद्ध करके वैदिक-धर्मावलम्बी बनाने की बात उस समय कैसे चरितार्थ हुई ? विक्रमादित्य और हर्षवर्धन-जैसे प्रबल प्रतापी हिन्दू-सम्राटों के बाद बौद्ध-धर्म का साम्राज्य किसने स्थापित किया ? कालिदास से लेकर श्रीहर्ष के समय (१२वीं शताब्दी) तक के बने काव्यादिकों में हिन्दू-धर्म का ही प्राधान्य पाया जाता है । फिर यह कैसे मान लें कि उस समय बौद्ध-धर्म का प्राबल्य था ? यदि यह कुछ नहीं था, तो उस समय भगवान् शङ्कर के अवतार का क्या प्रयोजन ? उस समय होकर भी उन्होंने क्या किया ? यह अलौकिक प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा कैसे प्राप्त की ? वस्तुतः आदि-शङ्कराचार्य तभी अवतीर्ण हुए, जब बौद्ध-धर्म का प्रताप-मार्तण्ड प्रचण्ड दशा में था । इससे दक्षिण के मठों में स्थित ताम्र-पत्रों में निर्दिष्ट समय ही ठीक जँचता है । हाँ, उन्हीं ताम्र-पत्रों से आठवीं शताब्दी में नृसिंह स्वामी या नृसिंहावतार स्वामी नाम के किन्हीं महात्मा का शङ्कराचार्य की गद्दी पर बैठना सिद्ध होता है । इन्होंने दिग्विजय की यात्रा भी की थी । संभव है, इन्हीं की कई बातों के प्रमाण पाकर कुछ ऐतिहासिक जीव इन्हें आदि-शङ्कराचार्य समझ बैठे हों । परन्तु न तो यह आदि-शङ्कराचार्य हैं, न शारीरक-भाष्य के निर्माता ही । भगवान् आदि-शङ्कराचार्य का समय २२ सौ वर्ष से भी अधिक प्राचीन है ।

इनके बनाए ब्रह्मसूत्र-भाष्य में महर्षि गोतम-कृत

न्याय-सूत्रों का कई जगह उल्लेख है। इससे स्पष्ट है कि गोतम-सूत्र शङ्कराचार्य से भी प्राचीन हैं, एवं उनके समय में उक्त सूत्रों का प्रचार और प्रतिष्ठा पर्याप्त थी। तब से अब तक इन पर टीका-टिप्पणी होती रही, और पठन-पाठन भी इनका बराबर बना रहा। यदि उक्त सूत्रों के प्रचार का समय दो सौ वर्ष भी मान लें, तो गोतम मुनि का समय कम-से-कम २५ सौ वर्ष प्राचीन सिद्ध होता है। परन्तु महाकवि भास के समय इन सूत्रों की सत्ता नहीं थी। यदि होती, तो जिनका उल्लेख भगवान् शङ्कराचार्य ने भी आदर-पूर्वक किया है, अवसर पड़ने पर, भास मुनि भी उन्हीं का नाम लेते। उन्हें छोड़कर किसी दूसरे न्याय का नाम लेना एकदम अस्वाभाविक है।

भास के 'प्रतिमा-नाटक' में एक परिवर्तित कथा है कि जब रावण तपस्वी का वेष बनाकर सीता-हरण के लिये आश्रम में आया, तब श्रीरामचन्द्रजी वहीं थे। वह दूसरे दिन दशरथ का श्राद्ध करने के लिये सीता से कुछ बात-चीत कर रहे थे। उन्हें अपना परिचय देते हुए उसने कहा कि—

"भोः काश्यपगोत्रोऽस्मि साङ्गोपाङ्गं वेदमधीये, मानवीयं धर्मशास्त्रम्, माहेश्वरं योगशास्त्रम्, बार्हस्पत्यमर्थशास्त्रम्, **मेधातिथेर्न्यायशास्त्रम्**, प्राचेतसं, श्राद्धकल्पं च।"

इससे स्पष्ट है कि भास के समय मेधातिथि का न्याय-शास्त्र प्रचलित था, जो गोतम के न्याय के बाद विलुप्त हो गया। आज पतञ्जलि का बनाया योग-शास्त्र प्रचलित है, उस समय महेश्वर का बनाया विद्यमान था। आज चाणक्य (कौटिल्य) का बनाया अर्थ-शास्त्र मिलता है, तब बृहस्पति का बनाया मौजूद था। प्रचेता का बनाया श्राद्धकल्प भी आज नहीं मिलता। यदि भास की कृपा न होती, तो इन शास्त्रों के नाम भी न सुनाई देते। मानवीय धर्म-शास्त्र के सिवा आज इनमें से कोई शास्त्र उपलब्ध नहीं है (मनुस्मृति के टीकाकार मेधातिथि गोतम के बाद हुए हैं। उन्होंने कोई न्याय-शास्त्र नहीं बनाया)। इन सब बातों से स्पष्ट है कि महाकवि भास गोतम से भी पहले थे और चन्द्रगुप्त के समय में होनेवाले कौटिल्य (चाणक्य) के भी पूर्वज थे। इससे सिद्ध है कि उनका समय लगभग तीन हज़ार वर्ष प्राचीन है।

यह कहना ठीक नहीं है कि महर्षि पाणिनि से पहले यहाँ नाटक आदि दृश्य-काव्य थे ही नहीं। "पाराशर्य-शिलालिभ्यां भिक्षुनटसूत्रयोः ४ । ३ । ११०" यह पाणिनि-सूत्र ही बता रहा है कि उस समय नट-सूत्र अवश्य थे। फिर इन सूत्रों के उदाहरण-रूप नाटक यहाँ न हों, यह कैसे हो सकता है? लक्ष्यों का लक्षणों से पहले होना स्वभाव सिद्ध है। यह और बात है कि उस समय वर्तमान नाट्य-शास्त्र ही प्रचलित था, या और कोई। परन्तु कुछ था अवश्य; क्योंकि भास ने 'नाटक', 'त्रोटक', 'हल्लीश', 'प्रकरण', 'स्थापना', 'विष्कम्भक', 'प्रवेशक' आदि नाट्य-शास्त्र के पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग किया है।

बहुत लोगों की धारणा है कि जैसे वाल्मीकि और व्यास श्रव्य-काव्यों के मार्गदर्शी माने जाते हैं, वैसे ही भास दृश्य-काव्यों के मार्गदर्शी हैं। अतएव इनके परवर्ती आचार्यों ने 'मुनि' कहकर इनका उल्लेख किया है। कालिदास-जैसे कविचक्र-चूडामणि ने भी इनके शब्दों और भावों का बहुधा निःसङ्कोच भाव से अनुसरण किया है। श्रीयुक्त गणपति शास्त्री ने प्रतिमा-नाटक के 'उपोद्घात' में ऐसे बहुत-से पद्य उद्धृत किए हैं।

'मालविकाग्निमित्र' के आरम्भ में कालिदास ने नट के द्वारा एक प्रश्न कराया है कि 'भास-जैसे महाकवियों के बनाए नाटकों के होते हुए आज वर्तमान कवि कालिदास की कृति का आदर क्यों किया जाता है! यह प्रश्न ही घोषित कर रहा है कि कालिदास के समय में भास के नाटकों का कितना प्रचार था, लोग उन्हें कितने आदर और महत्त्व की दृष्टि से देखते थे। अस्तु।

अतिप्राचीन भारतीय विद्वान्, आज की भाँति, ग्रन्थों में अपना नाम नहीं लिखा करते थे। उन दिनों 'स्वनाम-नामाऽऽददते न साधवः' का पूरा साम्राज्य था। प्राचीन आर्ष-ग्रन्थों में कहीं भी ग्रन्थकर्ता के नाम का उल्लेख नहीं मिलता। कालिदास ने भी अपने काव्यों में कहीं नाम-निर्देश नहीं किया। लेकिन नाटकों में सूत्रधार के द्वारा कवि का नाम सूचित कर देने की चाल कालिदास से पहले ही चल चुकी थी। शूद्रक और कालिदास आदि ने उसी का अनुसरण किया है। परन्तु भास के समय में इस प्रथा का प्रचार नहीं हुआ था। उन दिनों के आचार्य किसी नाटक-पात्र के द्वारा अपने नाम-धाम के उल्लेख को भी 'टट्टी की ओट में शिकार' समझते थे। वे इसे भी लज्जा-जनक समझते रहे। भास के नाटकों में कहीं कवि के नाम तक का उल्लेख नहीं है। परन्तु महाकवि बाण-भट्ट ने भास के नाटकों की एक विशेषता बताई है।

“**सूत्रधारकृतारम्भै**र्नाटकैर्बहुभूमिकैः ;
सपताकैर्यशो लेभे **भासो** देवकुलैरिव ।”

राजशेखर ने सूक्तिमुक्तावली में लिखा है—

“**भास**नाटकचक्रेपिच्छेकैः क्षिप्ते परीक्षितुम् ;
स्वप्नवासवदत्तस्य दाहकोभून्न पावकः ।”

इससे पता चलता है कि ‘स्वप्नवासवदत्त’ भास का बनाया हुआ है । आज ‘स्वप्नवासवदत्त’ के साथ जो अन्य रूपक उपलब्ध हुए हैं, उन सबकी लेख-शैली बिलकुल एक है, और बाण की बताई विशेषता इन सबमें मौजूद है, अतः निःसन्देह ये सब महाकवि भास की ही कृति हैं ।

नवीन अलङ्कार-शास्त्र में सूत्रधार और स्थापक के कर्तव्यों का जो निर्देश किया है उसमें—

“रूपकस्य कवेराख्यां गोत्राद्यपि स कीर्तयेत् ।
ऋतुं च कञ्चित्”

यह अंश पीछे जोड़ा गया प्रतीत होता है । प्राचीनतम नट-सूत्रों में संभवतः इतना ही रहा होगा कि—

“पूर्वरङ्गं विधायैव सूत्रधारो निवर्तते ;
प्रविश्य स्थापकस्तद्वत् काव्यमास्थापयेत्ततः ।”

भास के रूपकों में केवल इसी अंश का पालन किया गया है । इनकी अधिकांश स्थापनाओं में एक ही छाया है । साहित्यदर्पणकार विश्वनाथ कविराज ने भास कवि के रूपक देखे थे या नहीं, इसमें सन्देह है ; क्योंकि उनके लक्षणों से भास की कृतियों का ठीक-ठीक सामञ्जस्य नहीं मिलता ।

महाकवि भास के समय में मन्दिर भी थे, और उनमें मूर्तियों की पूजा भी हुआ करती थी । राजा-महाराजों की मूर्तियाँ भी बनाई जाती थीं, और इतनी उत्तमता से बनाई जाती थीं कि जिनसे असली सूरत का तुरन्त ज्ञान हो जाता था । संभव है, बौद्ध-काल में इसी प्राचीन शिल्प-कला ने बौद्ध-रूप धारण किया हो । उन दिनों ज्योतिष के फलित-भाग के भी लोग क़ायल थे । ‘प्रतिमा-नाटक’ में लिखा है कि श्रीरामचन्द्रजी के वनवास और राजा दशरथ की मृत्यु के बाद जब भरत को उनके मामा के यहाँ से बुलवाया गया, तो उस समय राजधानी (अयोध्या) में घुसने से पहले एक ‘भट’ उनके पास पहुँचा और उसने कहा कि—

“उपाध्यायास्तु भवन्तमाहुः । × × × एकनाडिकावशेषः कृत्तिकाविषयः । तस्मात् प्रतिपन्नायामेव रोहिण्यामयोध्यां प्रवेक्ष्यति कुमारः ।”

अर्थात् अभी एक घड़ी कृत्तिका-नक्षत्र बाक़ी है । इसके बाद जब रोहिणी-नक्षत्र आ जाय, तब आप अयोध्या में प्रवेश करें । यह सुनकर भरत ने, समय बिताने के लिये, एक मन्दिर में प्रवेश किया । वहाँ जाकर वह किसी प्रतिमा को प्रणाम करने लगे, तो पुजारी ने उन्हें रोककर कहा कि ये सब क्षत्रिय महाराज हैं । इन्हें देवता न समझिए । यदि आप ब्राह्मण हों, तो इन्हें प्रणाम मत कीजिए । उन्हीं पत्थर की मूर्तियों में एक ओर दशरथ की मूर्ति देखकर भरत ने चौंककर पुजारी से पूछा कि क्या यहाँ जीवित राजों की प्रतिमाएँ भी रक्खी जाती हैं ? पुजारी बोला कि ‘नहीं ।’ इसके बाद भरत जब कुछ और पूछने लगे, तो उसने कहा कि—

“येन प्राणाश्च राज्यं च स्त्री-शुल्कार्थे विसर्जिताः ;
इमां दशरथस्य त्वं प्रतिमां किं न पृच्छसे ।”

(प्रतिमा-नाटक, ३ अंक, ९ श्लोक)

भास के समय में किसी हद तक पर्दे का रवाज भी था ।

वनवास के समय श्रीरामचन्द्रजी ने सीता से कहा है कि—

“मैथिलि, अपनीयतामवगुण्ठनम्—
‘स्वैरं हि पश्यन्तु कलत्रमेतत्
बाष्पाकुलाक्षैर्वदनैर्भवन्तः ;
अदोषदृश्या हि भवन्ति नार्यो ,
यज्ञे विवाहे व्यसने वने च ।”

(प्रतिमा०, १ अंक, २९ श्लोक)

श्राद्ध, मूर्ति-पूजा और ज्योतिष आदि की ये सब बातें व्यास और वाल्मीकि ने भी कही हैं । जो लोग उन्हें प्रक्षिप्त बताते हैं, उनको भास से कुछ शिक्षा लेनी चाहिए ।

किन्हीं लोगों का ध्यान है कि भास कवि दाक्षिणात्य थे ; क्योंकि उनके ‘अविमारक’-नामक नाटक में मामा की लड़की के साथ विवाह का उल्लेख है, जो आज भी महाराष्ट्र आदि में प्रसिद्ध है । परन्तु यह युक्ति ठीक नहीं है । ‘अविमारक’ की कथा का आधारभूत मातुलकन्या-विवाह उन क्षत्रियों में दिखाया गया है, जिनमें महाभारत के समय भी उत्तर-भारत में वह प्रथा विद्यमान थी । सुभद्रा और अर्जुन का विवाह इसी प्रकार का था ।

'विष्णुसेन' अथवा 'अविमारक' राजा कुन्तिभोज के भानजे थे । कुरङ्गी (कुन्तिभोज की कन्या) के साथ उनका विवाह भी 'सुभद्राहरण' की कोटि का ही था । अतः इस युक्ति के सहारे भास मुनि का दाक्षिणात्य होना सिद्ध नहीं होता । यह ठीक है कि भास के ग्रन्थ दक्षिण-भारत में ही प्राप्त हुए हैं; परन्तु मुसलमानी आक्रमण के कारण उत्तर-भारत में अब प्राचीन ग्रन्थ मिलते ही कहाँ हैं ? कालिदास के समय में जब इनका अभिनय यहाँ होता था, तो उत्तर-भारत में इनका होना भी निर्विवाद सिद्ध है ।

संस्कृत में एक प्रसिद्धि है—

"नाटकान्तं कवित्वम् ।"

कविता की चरम सीमा नाटक है । कवित्व-शक्ति की परा काष्ठा की परीक्षा नाटक में होती है । इस उक्ति से स्पष्ट हो जाता है कि संस्कृत में नाटक लिखना कितना कठिन काम समझा जाता है । यहाँ नाटक लिखनेवाले को सबसे पहले अपने कार्य को पाँच अवस्थाओं में बाँटना पड़ता है । १—आरम्भ, २—यत्न, ३—प्राप्त्याशा, ४—नियताप्ति, और ५—फलागम । नाटक में इन अवस्थाओं को इसी क्रम से रखना पड़ता है । इसके बाद कवि जिस इतिहास को नाटक का रूप देना चाहता है, उसे इन पाँच अवस्थाओं में विभक्त करता है । उक्त अवस्थाओं के साथ इतिहास के ठीक-ठीक मिल जाने से यथाक्रम पाँच सन्धियाँ तयार होती हैं । उनके नाम हैं, १—मुख, २—प्रतिमुख, ३—गर्भ, ४—विमर्श, और ५—निबर्हण । इनमें से मुख-सन्धि के १२ अङ्ग होते हैं—१—उपक्षेप, २—परिकर, ३—परिन्यास, ४—विलोभन, ५—युक्ति, ६—प्राप्ति, ७—समाधान, ८—विधान, ९—परिभावना, १०—उद्भेद, ११—करण, और १२—भेद । इसी प्रकार अवशिष्ट चारों सन्धियों के भी अङ्ग होते हैं । इन पूर्वोक्त अवस्थाओं, सन्धियों और उनके अङ्गों के पृथक्-पृथक् लक्षण साहित्य-शास्त्र में वर्णित हैं । इन सब रूपों में से अभीष्ट इतिहास को निकालना पड़ता है । यह सब होने पर भी यदि रस अछूता रह सका, कथा अक्षुण्ण बनी रही और विन्यास में कौतूहल तथा चमत्कार कम न होने पाया, तब तो नाटक ठीक बना समझिए, वरना "सब गुड़ गोबर" । इन सबके सिवा एक बात और है, और वह बड़ी मुशकिल है । नाटक की प्रत्येक बात में स्वाभाविकता का होना निहायत ज़रूरी है । कोई बात अस्वाभाविक हुई कि खटकने लगी । नाटक का कोई पात्र यदि भील है, तो उसकी भाषा से, वेष से, शरीर से, भाव-भङ्गी और रंग-ढंग से, सबसे वही भीलपन झलकना चाहिए । देवर्षि, ब्रह्मर्षि, राजा, रानी, दास, दासी, डाकू, चोर, सेनापति, कोतवाल, मल्लाह और चाण्डाल तक की बोल-चाल तथा मानसिक भाव वैसे ही होने चाहिए, जो बिलकुल स्वाभाविक मालूम हों । यह काम बड़ा कठिन है । जिसकी भावना का वेग इतना तीव्र है कि ज़रा ध्यान करते ही इन्द्र-लोक की समृद्धियों और नारकीय यातनाओं के साङ्गोपाङ्ग चित्र उसकी आँखों के सामने नाचने लगते हैं, जिसका प्रकृति-परिशीलन इतना प्रबल है कि वह बात-की-बात में सम्पूर्ण जड़ और चेतन-जगत् के हृदय में घुसकर उसके छिपे-से-छिपे भाव का स्फुट अनुभव करने लगता है, जिसकी मनीषा उन सबमें से समुचित सार निकाल सकती है, और जिसकी वाणी उसका शब्द-मय चित्र खींचकर सहृदय पुरुषों को रसमय कर सकती है, वही महापुरुष 'कवि' कहलाने योग्य है। जिसकी प्रतिभा स्वतन्त्र और कल्पना स्वयम्भू है, वही 'कवि' हो सकता है । इसी से लोग कालिदास आदि कवियों को योगी कहा करते हैं, और यही कारण है कि वेद में ईश्वर की स्तुति करते हुए 'कवि'-शब्द के साथ कई साभिप्राय विशेषण लगाए हैं । यथा—"कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूः ।"

भास मुनि में ये सब बातें पूर्ण रूप में पाई जाती हैं। आपके रूपक स्वाभाविकता की मूर्ति हैं । 'बाल-चरित' में नन्द गोप और वसुदेव की बात-चीत लिखने में आपने कमाल किया है । नन्द गोप की प्राकृत भाषा और उनके भोले-भाले सात्त्विक भावों को देखने से मालूम होता है कि उन्हें लिखते समय कवि के हृदय में वस्तुतः नन्द गोप की आत्मा का आवेश हो गया था । इधर वसुदेव के क्षत्रियोचित ओजस्वी भाव और उधर नन्द गोप का भोलापन, दोनों की गङ्गा-यमुना खूब बही है । वसुदेव ने कृष्ण को नन्द गोप के हवाले करके जब यह पूछा कि—

"वयस्य नन्द गोप, अस्य सुतस्य किं करिष्यति भवान् ?"

अर्थात् मित्र नन्द, तुम इस बच्चे का क्या करोगे ? उस जगह क्या कहते हैं—

"सुणादुभट्टा एकास्सिं गेहे गच्छिअ खीरं पिबइ, अस्सिं

गेहे गच्छिअ दधिं भक्खइ, अवरस्सिं गेहे गच्छिअ णवणीदं गिलइ, अस्सिंसि गेहे गच्छिअ पाअसं भुञ्जइ, इदरस्सिं गेहे गच्छिअ तक्कघटं पलोअदि, किं बहुणा अम्हाणं घोसस्स पदी होइ।"

अर्थात् सुनिए मालिक, यह एक घर में जाके दूध पिएगा। दूसरे में जाके दही खायगा। तीसरे में मक्खन सड़प्प करेगा। चौथे घर में खीर खायगा। औरों में मट्ठे के घड़े देख-देखकर लुढ़कावेगा। अधिक क्या कहूँ, हमारे घोष (गोत्रज) का पति होगा। यदि आजकल का कोई नाटककार इस घटना का उल्लेख करता, तो किसी कॉलेज में कृष्ण को भर्ती कराने की बात ज़रूर कहता। परन्तु उसमें यह स्वाभाविकता कहाँ? इसी 'बालचरित' के दूसरे अङ्क में कंस का व्यामोह, अन्तःपुर में चण्डाल-युवतियों का दिखाई देना एवं शाप की प्रत्यक्ष मूर्ति, इन सबमें भी भास की कल्पना शक्ति का समुज्ज्वल कौशल जगमगा रहा है। यदि आप भास के 'स्वप्नवासवदत्त' के साथ कालिदास के 'अभिज्ञान-शाकुन्तल' का मिलान करके देखें, तो पता चले कि महाकवि श्रीकालिदास ने भास मुनि का कितना अनुसरण किया है। शूद्रक के 'मृच्छकटिक' में तो भास के 'दरिद्र चारुदत्त' की हू-ब-हू नक़ल पाई जाती है। भास की सरस, मधुर और सरल भाषा को देखकर बहुत-से लोग समझते हैं कि उस समय संस्कृत सर्व-साधारण की भाषा थी। पर इतना तो हम भी मानते हैं कि उन दिनों संस्कृत सर्व-साधारण में समझी अवश्य जाती थी।

जो लोग यह समझते हैं कि संस्कृत में दुःखान्त-नाटक (Tragedy) लिखे ही नहीं जाते थे, उन्हें भास-कृत 'ऊरुभङ्ग' देखना चाहिए। इस रूपक की रचना दुःखान्त हुई है।

पाश्चात्य नाट्य-कला-विशारदों में किसी रूपक के भीतर दूसरे रूपक के सन्निवेश को बड़ा महत्त्व दिया जाता है। अर्वाचीन संस्कृत नाटकों में भवभूति और जयदेव की कृतियों में यह बात विद्यमान है, और भास के अतिप्राचीन 'बालचरित' में भी कृष्ण ने गोपियों के साथ 'हल्लीश' का आयोजन किया है। आज भी नाट्य-शास्त्र में 'हल्लीश' की वही परिभाषा मौजूद है, जो भास के समय में थी—

"हल्लीशे एक एवाङ्कः सप्ताष्टौ दश वा स्त्रियः;
वागुडाजैकपुरुषः कैशिकी वृत्तिरुज्ज्वला।
मुखान्तिमौ तथा सन्धी बहुताललयस्थितिः।"

अभी भास के १३ (बल्कि साढ़े बारह) ग्रन्थ उपलब्ध हुए हैं। इनमें से एक का नाम है पञ्चरात्र। इसमें भास मुनि ने अपनी स्वतन्त्र प्रतिभा और करुणा-पूर्ण हृदय का अपूर्व परिचय दिया है। इससे पता चलता है कि महाभारत के अत्यन्त अनुचित और अन्याय-पूर्ण युद्ध से आपके कोमल हृदय में गहरी चोट लगी थी। आपकी राय में जब पाण्डव लोग १२ वर्ष का वनवास और १ वर्ष का अज्ञातवास पूरा करके लौट आए थे, तब दुर्योधन को उनका आधा राज्य लौटा देना ही उचित था। इसके बाद जो उसने अपनी कुबुद्धि के कारण बात बढ़ाकर महाभारत का युद्ध रचा, वह होना ही नहीं चाहिए था। इसी आधार पर आपने महाभारत की कथा को कुछ बदलकर 'पञ्चरात्र' की रचना की है।

इसकी कथा का संक्षेप यों है—दुर्योधन ने यज्ञ किया, और अन्त में गुरु द्रोणाचार्य से इच्छानुरूप यज्ञ-दक्षिणा लेने का अनुरोध किया। बहुत कहने पर, बात पक्की करके द्रोणाचार्यजी ने कहा कि—

"येषां गतिः क्वापि निराश्रयाणां संवत्सरैर्द्वादशभिर्न दृष्टा;
त्वं पाण्डवानां कुरु संविभागमेषा च भिक्षा मम दक्षिणा च।"

अर्थात् जिन बेचारे आश्रय-हीन पाण्डवों का बारह बरस से कहीं ठिकाना नहीं है, तुम उनका हिस्सा दे दो, बस यही मेरी भिक्षा है और यही दक्षिणा है। इस पर और सब तो राज़ी हो गए, परन्तु शकुनि ने घोर विरोध किया। अन्त में शकुनि की सलाह से यह तय हुआ कि यदि 'पञ्चरात्र' अर्थात् पाँच रात्रि (यानी पाँच दिन) के अन्दर पाण्डवों का पता लग जाय, तो उन्हें आधा राज्य दिया जा सकता है। इस पर द्रोण ने निराश होकर कहा—

'ये कर्तुकामैश्छलनं भवद्भिः संवत्सरैर्द्वादशभिर्न दृष्टाः;
ते **पञ्चरात्रेण** मयोपनेया वरं ह्यदत्तं त्रिशदान्तरेण।"

परन्तु उसी समय विराट् के यहाँ से दूत ने आकर कहा कि "सौ कीचकों को किसी ने, विना किसी शस्त्र के मार डाला है। उनके शोक के कारण राजा विराट् इस यज्ञ में शामिल नहीं हो सके।" यह सुनते ही धीरे से भीष्म ने द्रोण से कहा कि आप 'पञ्चरात्र' की शर्त मंजूर कर लीजिए। पाण्डवों का पता चल गया। विना शस्त्र लिए सौ कीचकों को मार डालना सिवा भीमसेन के और किसी का काम नहीं है। इधर द्रोणाचार्यजी ने दुर्योधन

की 'पाँच रात्रि'वाली शर्त मंजूर की, और उधर भीष्म के कहने से विराट् के ऊपर दुर्योधन ने चढ़ाई बोल दी। वहाँ घोर युद्ध हुआ, और अर्जुन ने सबके छक्के छुड़ा दिए। पाण्डव लोग पहचान लिए गए, और द्रोणाचार्य बोले कि—

> "इत्यर्थं वयमानीताः **पञ्चरात्रोऽपि** वर्तते ;
> धर्मेणावर्जिता भिक्षा धर्मेणैव प्रदीयताम् ।"

इस पर दुर्योधन ने कहा कि—

> "बाढं दत्तं मया राज्यं पाण्डवेभ्यो यथापुरम् ;
> मृतेऽपि हि नराः सर्वे सत्ये तिष्ठन्ति तिष्ठति ।"

अंत में द्रोणाचार्यजी ने—

> "हन्त सर्वे प्रसन्नाः स्मः प्रवृद्धकुलसंग्रहाः"

कहकर ग्रन्थ समाप्त किया, और महाभारत का युद्ध गुरु द्रोणाचार्य की कृपा से, होते-होते बच गया । इस घटना से कुछ लोग यह भी कल्पना करते हैं कि द्रोणाचार्य ही जन्मान्तर में भास मुनि हुए थे, और उन्होंने अपने हृद्गत भावों को इस रूप में प्रकाशित किया । जो कुछ भी हो, हम इस पर विवाद बढ़ाना नहीं चाहते ।

परन्तु एक बात कहे बिना हम नहीं रह सकते । इसे सुनकर पाठकों को आश्चर्य होगा, और दुःख भी । कोई-कोई भावुक सहृदय मर्मान्तिक वेदना का अनुभव करेंगे । परन्तु समालोचक का कठिन कर्तव्य पालन करने के लिये हमें उसकी चर्चा करनी ही पड़ेगी । पाठकगण धैर्य रखके और जिगर थामके सुनें ।

इस पापी कलियुग में एक महाशय ऐसे पैदा हुए हैं, जिन्होंने इन्हीं भास मुनि की पगड़ी उछालने और इज़्ज़त बरबाद करने की क़सम खाई है । आप सत्तू बाँधकर भास के पीछे पड़े हैं और "अपर पञ्चरात्र" नाम का एक "लघु काव्य" लिखकर अपना मनोरथ सफल करना चाहते हैं । आपका परिचय है—"पं० रामदत्त पन्थ (?) साहित्योपाध्याय, प्रोफ़ेसर ऑफ़् संस्कृत, बरेली-कॉलेज ।" टाइटिल-पेज से लेकर अनेक जगह दुहराई, तिहराई हुई, आप ही के शब्दों में, आपकी प्रतिज्ञा है कि—

"अत्र किल कौर्माचलः कवी रामदत्तपन्थः पुरो भुवि वाणीविलासचतुराणामन्तरवाणिवराणां भासमुनेः पञ्चरात्रमात्रमुद्दिश्य सोत्साहं **प्रतिजानीते**—

> कृतं **भासोपहासार्थं** धृतमत्र विपश्चिताम् ;
> हसेयस्तेऽत्र संलक्ष्य तं वा मां वा वचक्रम (?) मिति ।"

अर्थात् भास मुनि के केवल पञ्चरात्र को लक्ष्य करके रामदत्त पन्थ **पृथ्वी-भर के समस्त विद्वानों के सामने** उत्साह-सहित प्रतिज्ञा करता है कि (मैंने) भास के **उपहास** के लिये (यह ग्रन्थ) बनाकर विद्वानों के सामने रक्खा है । इसके वचक्रम (?) को देखकर लोग (विद्वज्जन) भास का उपहास करेंगे, या मेरा उपहास करेंगे । पुस्तक के आरम्भ में आपने "वञ्चना-शू सूचना" लिखी है, जिसमें दो-एक बातों के बाद फि यही प्रतिज्ञा दुहराई गई है । इसके आगे सूत्रधार की उक्ति का अँगरेज़ी-अनुवाद (Translation of th Sutradhara's speech) जोड़ा है । यह सूत्रध की 'स्पीच' का अशुद्ध अनुवाद किसी विशेष अभिप्राय जोड़ा गया प्रतीत होता है ।

इसके आगे आपने 'सतामभ्यर्थनाऽग्रतः' (?) लि है, जिसमें अपने गुरु के लड़के का बनाया, इसी पुस्त का, एक लम्बा अशुद्धि-पत्र लगाया है । उसके अन आपका 'दृश्यं लघु काव्यम्" शुरू होता है । इसे आ सम्राट् पञ्चम जॉर्ज, उनकी एसेंबली (assembly और उनके अफ़सरों के सामने अवतीर्ण कराया है इसमें सूत्रधार ने मतलब की (दृश्य-काव्योपयोगी कोई बात न कहकर पहले तो अँगरेज़ों की तारीफ़ पुल बाँधे हैं, फिर पन्थजी की राजभक्ति की दुहाई है । आगे आपकी लिखी ४-४ आनेवाली किताबों नोटिस दिया है, और साथ ही आपके शब्दों में 'राजद्रो (हमारे शब्दों में देशभक्त) लोगों को कोसा भी है

लेखक का हृदय इस एक घटना से ही स्पष्ट हो ज है, और ग्रन्थ लिखने का तात्पर्य भी साफ़ समझ में जाता है । संभव है, आपकी इस कृति से कुछ देश-द्रो लोग प्रसन्न हों, और विवेक-हीन नौकरशाही के नौ इस पुस्तक को 'Original' (मौलिक) समझकर आ गले में किसी उपाधि का तौक़ लटका दें, अथवा किसी तरह आपकी पीठ ठोंक दें; परन्तु संस्कृतज्ञ-ज आपके इस कुकृत्य को सदा गर्हित और नीच-भाव समझती रहेगी ।

हमारा यह अभिप्राय कदापि नहीं है कि हम श्री रामदत्त पन्थजी को भास या कालिदास से छोटा करें । हम तो कहते हैं कि ईश्वर करे, आप वाल्मीकि से भी बढ़कर हो जायँ; परन्तु हमारा नम्र वि

तो यही है कि न तो पूज्य पुरुषों का उपहास करने से किसी की योग्यता बढ़ सकती है और न शान्त रहने से वह घट सकती है। आज भास और कालिदास का नाम संसार में सूर्य के समान चमक रहा है, यद्यपि उन्होंने अपने किसी पूर्वज का उपहास करने के लिये कोई ग्रन्थ नहीं लिखा। आपमें यदि योग्यता है, तो अच्छे-से-अच्छा ग्रन्थ लिखकर संसार के सामने रखिए। आपका नाम अमर हो जायगा। लेकिन विजातियों, विदेशियों और विधर्मियों को खुश करने के लिये अपने पूज्य पूर्वजों की पगड़ी उछालना कहाँ की बुद्धिमानी है? और वह भी किस क्षुद्र प्रयोजन के लिये? हा, धिक्!!

आपने अपनी 'सतामभ्यर्थनाऽग्रतः' (?) के अन्त में एक पद्य लिखा है, जिसका तात्पर्य यह है कि 'दोष दिखाना खलों का काम है। सज्जन लोग गुण ही देखा करते हैं।' हम आपसे पूछना चाहते हैं कि कविचक्र-चूडामणि श्री-कालिदास तक के पूज्य वृद्ध भास मुनि का **उपहास** लिखते समय क्या यह पद्य आपको याद था? या अपने दोष छिपाने के लिये ही इससे ढाल का काम लेना चाहते हैं?

आपने अपने काव्य को विद्वन्मण्डली के सामने रखकर और चैलेंज देकर पूर्वोक्त प्रतिज्ञा—'कृतं भासोपहासाय धृतमग्रे विपश्चिताम्'—की है और आशा की है कि—

"साधुत्वे साधुवादो वाऽसाधुत्वे साधुशासनम्;
श्रमापनुत्तये कर्तुः कृत्येऽलंकीर्तिशालिनाम्।"

अर्थात् यदि काम अच्छा हो, तो साधुवाद (शाबाशी) से कर्ता का श्रम दूर होता है, और यदि कुछ बुराई हो तो 'शासन' (हिदायत या तंबीह) से भी वही काम होता है। हम आपकी इसी आज्ञा और आशा के अनुसार आपकी सेवा में कुछ निवेदन करने का साहस करते हैं। बहुत संभव है, आपको हमारी बात सुनने में कड़वी मालूम हो; परन्तु यदि जी कड़ा करके, चिरायते के काढ़े की तरह, आप इसे गले के नीचे उतार गए, तो बुख़ार आपका ज़रूर दूर हो जायगा, और अपने स्वरूप का ज्ञान हो जाने से आपका हित भी होगा।

कुछ पर्वतीय ब्राह्मणों को हमने अपने नाम के आगे 'पन्त' लिखते देखा है; परन्तु श्रीरामदत्तजी ने इस ग्रन्थ में आद्यन्त अपने को 'पन्थ' लिखा है। क्या हम पूछ सकते हैं कि आप अपने को 'परिपन्थं च तिष्ठति' का उदाहरण क्यों बनाते हैं?

भास ने अपने ग्रन्थ का नाम 'पञ्चरात्र' रक्खा है, और एक विशेष घटना (पूर्वोक्त) का उल्लेख करके उसकी सार्थकता सिद्ध की है, एवं ग्रन्थ के अन्त तक 'पञ्चरात्रोऽपि वर्तते' कहकर उसका निर्वाह किया है। सभी दृश्य-काव्यों के लेखक अपने ग्रन्थ के नाम को विशिष्ट घटनाओं द्वारा समर्थित करते हैं। हम श्रीयुत 'पन्थ' जी से पूछते हैं कि आपके 'अपर पञ्चरात्र' के 'अपर'-शब्द की उपादेयता का कौन-सी घटना समर्थन करती है? क्या आपकी पुस्तक में एक भी बात ऐसी है, जिससे इस शब्द की उपयोगिता सिद्ध होती हो? यदि नहीं, तब तो फिर यह 'अजागलस्तन' की तरह व्यर्थ ही रहा! कथा तो आपने सब भास ही के यहाँ से उड़ाई है। नई कोई बात है ही नहीं। फिर इस अनाथ 'अपर'-शब्द का समर्थन कौन करेगा? हमारी सम्मति में तो भास का **उपहास** लिखने से पहले आपको नाटकों के नाम-निर्देश का रहस्य किसी से सीख लेना चाहिए था।

हम आपको चुनौती देते हैं कि आप अपने 'मौलिक'-काव्य में से एक भी ऐसी घटना बताइए, जिसे आपने भास के 'पञ्चरात्र' से चुराया या नक़ल न किया हो। कथा सब आद्यन्त भास के घर की। कल्पना सब भास की। अच्छे पद्य और भाव सब भास से चुराए हुए। यहाँ तक कि नाम भी वही 'पञ्चरात्र'। उस पर नाज़ यह कि 'कृतं भासोपहासाय'!! 'किमाश्चर्यमतः परम्'!!!

पाठकगण, यदि कोई अपने लड़के का नाम 'लघु मनुष्य' रक्खे, तो आप उसे क्या कहेंगे? यद्यपि नवजात शिशु लघु मनुष्य अवश्य है, परन्तु क्या इस नाम से नामकरण करनेवाले को आप बातमीज़ कह सकेंगे? दृश्य-काव्यों के संस्कृत में अनेक भेद होते हैं। साहित्य-शास्त्र की परिभाषाओं के अनुसार कवि लोग 'नाटक', 'प्रकरण', 'नाटिका', 'व्यायोग', 'हल्लीश', 'ईहामृग', 'त्रोटक', 'सट्टक', 'प्रहसन' आदि नाम रखते हैं। परन्तु श्रीयुक्त पन्थजी ने लिखा है—'दृश्यं लघु काव्यम्'। 'लघु मनुष्य' की तरह इस 'लघु काव्यम्' के नाम-निर्देश से ही आपके साहित्य-ज्ञान की योग्यता फटी पड़ती है।

यह संभव था कि यदि भास के 'पञ्चरात्र' में कोई विशेषण लिखा होता, तो आप झटसे उसकी नक़ल कर देते। परन्तु जीर्ण-शीर्ण ताल-पत्रों पर लिखी तीन हज़ार वर्ष की पुरानी इस पुस्तक में वैसा कोई शब्द मिला

नहीं । यद्यपि भास के अन्य ग्रन्थों में 'प्रतिमा-नाटक', 'मध्यम-व्यायोग' आदि शब्द मिलते हैं । अब पन्थजी इसके लिये शब्द लावें, तो कहाँ से ? अधिक-से-अधिक आपने साहित्यदर्पण के कुछ लक्षण मिलाए होंगे । उनमें से कोई फ़िट नहीं हुआ । आख़िर बेचारे चुप हो बैठे, और 'लघु काव्यम्' लिखकर सन्तोष किया । क्यों पन्थजी महाराज, क्या इसी बुद्धि-वैभव के भरोसे आप भास का उपहास करने चले हैं ?

किसी विषय में दृढ़ संकल्प का नाम 'प्रतिज्ञा' है । महाकवि भास के 'प्रतिज्ञा यौगन्धरायण' में वत्सराज के मन्त्री यौगन्धरायण ने प्रतिज्ञा की है—

"सुभद्रामिव गाण्डीवी नागः पद्मलतामिव ;
यदि तां न हरेद्राज । नास्मि यौगन्धरायणः ।
यदि तां चैव तं चैव तां चैवायतलोचनाम् ।
नाहरामि नृपं चैव नास्मि यौगन्धरायणः ।"

अर्थात् यदि मैं वासवदत्ता आदि को हरण न कर लाऊँ, तो यौगन्धरायण नहीं । इस बात में वक्ता की दृढ़ता और एक कार्य में सर्वतोभावेन उसकी तत्परता पाई जाती है । संसार में कोई प्रतिज्ञा ऐसी नहीं हो सकती, जिसमें प्रतिज्ञा-कर्ता की दृढ़ता किसी एक ओर न पाई जाती हो । अब ज़रा पन्थजी की प्रतिज्ञा का मुलाहिज़ा कीजिए—

"......रामदत्तपन्थः सोत्साहं **प्रतिजानीते**—
कृतं भासोपहासाय धृतमग्रे विपश्चिताम् ;
हसेयुस्तेऽत्र संलक्ष्य **तं वा मां वा** वचक्रमम् इति ।"

क्या इस 'तं वा मां वा' को प्रतिज्ञा कहा जा सकता है ? जहाँ विकल्प (वा) है, वहाँ दृढ़ता कैसी ? और दृढ़ता के विना प्रतिज्ञा कहाँ ? यदि कोई कहे कि 'या तो मैं तुम्हें मार लूँगा, या तुम मुझे मार लोगे', तो इसे प्रतिज्ञा कौन कहेगा ? 'देवदत्त या तो मर जायगा, या जीता रहेगा' क्या इस वाक्य को कोई प्रतिज्ञा कह सकता है ? यदि नहीं, तो फिर श्रीपन्थजी का यह कहना कि—'इस पुस्तक को देखकर लोग या तो भास की हँसी करेंगे, या मेरी'—प्रतिज्ञा कैसे कहा जा सकता है ? इस संशयात्मक वाक्य का नाम प्रतिज्ञा क्योंकर हुआ ? संशय और निश्चय विरोधी धर्म हैं । प्रतिज्ञा में निश्चय की प्रतीति होती है, और विकल्प में संशय की । ये दोनों एक कैसे हो सकते हैं ? श्रीपन्थजी बरेली-कॉलेज के संस्कृत-प्रोफ़ेसर हैं । आप छात्रों को 'प्रतिज्ञा'-शब्द क्या अर्थ बताते होंगे ?

"गर हमी मक़्तब अस्त हमी मुल्ला ;
कारे तिफ़्लाँ तमाम ख़्वाहद शुद ।"

आपने उक्त प्रतिज्ञा-पद्य को आरम्भ में ही तीन ज लिखा है, और आपके 'अशुद्धि-पत्र' में कहीं इसका ना निशान तक नहीं है, अतः आप ज़रूर इसे शुद्ध सम हैं ; परन्तु व्याकरण के अनुसार 'वचक्रमम्' अशुद्ध है यहाँ 'वच' के आगे विसर्ग ('वचःक्रमम्') का हो आवश्यक है । यह तो 'प्रथमग्रासे मक्षिकापातः' हुआ व्याकरण-सम्बन्धी अन्य अशुद्धियाँ हम आगे दिखावें यहाँ तक आपके टाइटिल-पेज की बात हुई । इस आगे आपकी 'वञ्चना-शून्य सूचना' है । इस 'वञ्च शून्य' को देखकर हमें उस नोटिस की याद आ गई, जि में "**असली काशमीरी** कोक-शास्त्र" लिखा रहता है इस सूचना के अन्त में आप फ़रमाते हैं—

'तदित्थं महाकवेरस्य पञ्चरात्रमात्रमुद्दिश्य अपरपञ्चरा मिदं कृतं **भासोपहासाय**......प्रहासोन्मुखा विद्वांसः प रात्र अपरपञ्चरात्रे च निविश्य न पुनस्तस्य महाकवित्व निविश्य प्रसादं **विषादं** वा समुपलभ्य **हसेयुरुपहसे**रिति मुहुरभ्यर्थयते रामदत्तपन्थः—"

लोगों को 'प्रसाद' (प्रसन्नता) में हँसते सबने दे होगा ; परन्तु श्रीपन्थजी 'विषाद' होने पर भी लोगों हँसने की प्रार्थना करते हैं ! यह है आपके प्रकृति-परि की लियाक़त !! इसी के भरोसे आप भास का उपह करने को उतारू हुए हैं !!!

अब ज़रा आपके 'लघु काव्यम्' की भी बानगी देखि भास के काव्यों में 'पञ्चरात्र' को आपने सबसे समझा है । इसीलिये अपनी 'प्रतिज्ञा' और 'सूचना' कई जगह 'पञ्चरात्र-मात्र' की दुहाई दी है । हम भी इन्हीं दोनों (पञ्चरात्र और अपर-पञ्चरात्र) का मुक़ाबि करके ऊँट को पहाड़-तले से निकालना चाहते हैं ।

'नाटकान्तं कवित्वम्' की चर्चा हम पहले कर चुके नाटक आदि दृश्य-काव्यों का मङ्गलाचरण लिखना एक मार्के की बात समझी जाती है । इसमें स्तुति प्रार्थना इस प्रकार लिखी जाती है, जो प्रस्तुत घट अधिक-से-अधिक सम्बन्ध रखती हो । इतना ही उस मङ्गलाचरण को सुनकर नाटक की वि

घटनाओं, ख़ासकर पात्रों और आरम्भ तथा अन्त की दशाओं की ओर भी साफ़ इशारा समझ में आना चाहिए। इन सब बातों के होते हुए भी शब्द-रचना जहाँ तक हो सके, सरल, स्पष्ट और थोड़ी होनी चाहिए। साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान् इस पहले श्लोक से ही समझ लेते हैं कि कवि ने अपने काम में कहाँ तक सफलता प्राप्त की है। समझदार लोग "पूत के पैर पालने में" ही परख लेते हैं।

भास के 'पञ्चरात्र' की कथा का संक्षेप हम पहले बता चुके हैं। इसमें प्रधान पात्र श्रीद्रोणाचार्यजी हैं। उन्हीं ने अपने उद्योग से पाण्डवों को राज्य दिलाया है। द्रोणाचार्यजी की यह प्रवृत्ति क्यों हुई? इस पर भास मुनि ने उनके मुँह से यह कहलाया है कि—

"धर्ममालम्बमानेन दुर्योधनेनाहमेवानुगृहीतो नाम—
अतीत्य बन्धूनवलङ्घ्य मित्रा-
ण्याचार्यमागच्छति शिष्यदोषः ;
बालं ह्यपत्यं गुरवे प्रदातु-
र्नैवापराधोऽस्ति पितुर्न मातुः।"

अर्थात् यदि दुर्योधन धर्म-पूर्वक आधा राज्य पाण्डवों को दे दे, तो उसका सबसे बड़ा अनुग्रह मुझ पर होगा; क्योंकि शिष्य के दोषों का उत्तरदाता गुरु ही होता है। छोटी उम्र के बच्चे को योग्य गुरु के सिपुर्द करके माता-पिता तो छूट गए। अब यदि उसमें कोई दोष उत्पन्न होता है, तो उसका ज़िम्मेदार गुरु ही होगा। तात्पर्य यह कि दुर्योधन मेरा शिष्य है। यदि उसने कोई अन्याय किया, तो लोग मुझे और मेरी शिक्षा को ही दोष देंगे। यद्यपि धर्मात्मा युधिष्ठिर और वीर अर्जुन के शिक्षक श्रीद्रोणाचार्यजी पर कोई दोष नहीं लग सकता, तथापि उनके इस अत्यन्त उदार विचार और निःस्वार्थ परोपकार के भाव को अङ्कित करके महाकवि भास ने उनके चरित्र को परम पवित्र और उज्ज्वल बना दिया है। यही यहाँ इनके प्रधान-पात्रत्व का कारण है। पात्रों में दूसरा नंबर अर्जुन और भीम का है; जिन्होंने विराट्-नगर में सब कौरवों को परास्त किया। इनके प्रतिद्वन्द्वी कर्ण, शकुनि और दुर्योधन हैं। धर्म-प्रधान पात्रों में भीष्म और युधिष्ठिर हैं। विराट्-नगर में उत्तर ने युद्ध किया है, और अभिमन्यु के साथ उत्तरा का विवाह भी हुआ है। यह सब कथा इस 'पञ्चरात्र' में वर्णित है। अब इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए, आप भास मुनि के मङ्गलाचरण को देखिए। इस एक श्लोक में आपने विराट्-स्वरूप भगवान् कृष्ण का स्मरण करके सूत्रधार के द्वारा, सब लोगों को आशीर्वाद दिलाया है; परन्तु अपनी कथा और पात्रों की सूचना किस सुन्दरता से व्यञ्जित की है, इसे पाठक स्वयं देख लें। सुनिए—

"द्रोणः पृथिव्यर्जुनभीमदूतो
यः कर्णधारः शकुनीश्वरस्य ;
दुर्योधनो भीष्मयुधिष्ठिरः स—
पायाद् विराडुत्तरगोऽभिमन्युः।"

जो "द्रोण" अर्थात् कृष्ण-वर्ण (श्रीकृष्ण) हैं, जो पृथिवी में अर्जुन और भीम के दूत बने, जो 'शकुनीश्वर' (पक्षि-राज=गरुड़) के 'कर्णधार' (नेता) हैं, जिनसे युद्ध करना दुर्घट ('दुर्योधन') है, जो 'भीष्म' (भयानक) और युद्ध में 'स्थिर' (युधिष्ठिर) रहते हैं, जो 'विराट्'-रूप हैं, जो 'ब्रह्मपुच्छं प्रतिष्ठाः' इत्यादि श्रुतियों के अनुसार सब संसार में उत्तरगामी ('उत्तरग') हैं, और 'यज्ञो वै विष्णुः' इत्यादि वेद-वाक्यों के अनुसार यज्ञ-रूप ('अभिमन्यु') हैं, वह (भगवान् कृष्ण) आपकी रक्षा करें।

यह तो हुआ इस श्लोक का मङ्गलाचरण-सम्बन्धी अर्थ। अब प्रकृत कथा से सम्बन्ध रखनेवाला अर्थ सुनिए—"द्रोणः पायात्"=द्रोण रक्षा करें, अर्थात् महाभारत-जैसे संहारक संग्राम को रोककर गुरु द्रोण संसार की रक्षा करें। जो द्रोण 'पृथिव्यर्जुनभीमदूतः' पृथिवी के लिये—आधे राज्य के लिये—अर्जुन और भीम के (निःस्पृह धर्मात्मा युधिष्ठिर के नहीं) दूत बने। जो 'शकुनि' और 'ईश्वर' (राजा दुर्योधन) के 'कर्णधार' (नेता) हैं, अथवा जो शकुनि और दुर्योधन का कान पकड़नेवाले ('कर्णधार') हैं। जिन्होंने शकुनि और दुर्योधन के कान पकड़कर सन्धि करा दी।—अथवा जो 'कर्णधार'=कर्ण की रोक-थाम करनेवाले और शकुनि दुर्योधन के कान पकड़नेवाले हैं। जो दुर्योधन' (दुर्दम) हैं। जो भीषण युद्ध में स्थिर रहते हैं. अथवा भीष्म और युधिष्ठिर जिनके प्रिय पात्र हैं। 'विराट्' और 'उत्तर' पर जिन्होंने चढ़ाई की एवं पाण्डवों के वनवास से जिनका 'मन्यु' (अनुताप) 'अभि'=वृद्ध हुआ, वह गुरु द्रोण रक्षा करें।

अब इस श्लोक में प्रकृत रूपक के पात्रों का सन्निवेशौचित्य देखिए । प्रधान पात्र द्रोण का नाम सबसे पहले लिया गया। उद्योग का विषय-पृथिवी —उसके बाद आई । दूसरे नंबर के पात्र और गुरु द्रोण के प्रिय पात्र अर्जुन, भीम उसके बाद आए । यद्यपि अर्जुन से भीम आयु में बड़े थे, परन्तु विराट्-नगर के युद्ध में और द्रोण के प्रेम में अर्जुन ने प्राधान्य प्राप्त किया था, अतः भीम से पहले उनका नाम लिया गया । इसके बाद इनके प्रतिद्वन्द्वी सब झगड़ों की जड़—उपद्रवियों के गुट्ट—कर्ण, शकुनि और दुर्योधन का नाम लिया गया । इसके अनन्तर धार्मिक रूप से इस झगड़े का निपटारा सूचित करने के लिये भीष्म और युधिष्ठिर का नाम-कीर्तन किया गया, और आगे एक ही पद —'विराडुत्तरगोऽभिमन्युः' में विराट् के नगर की गड़बड़, उत्तर का युद्ध, अभिमन्यु की वीरता और उत्तरा के साथ उसके विवाह की सूचना दे दी गई ।

अब पाठक स्वयं विचार लें कि भास मुनि ने इस छोटे-से पद्य में कितना कमाल दिखाया है । ज़रा-सा श्लोक, जिसमें केवल इने-गिने बारह पद हैं, उसमें इन सब पूर्वोक्त भावों का समावेश, और वह भी कितनी सरल भाषा में, फिर आद्यन्त औचित्य का पालन, क्या यह कोई साधारण बात है ? हम इसका फ़ैसला ज्ञान-सम्पन्न सहृदय पाठकों पर ही छोड़ते हैं ।

अब भास का उपहास करनेवाले श्रीयुक्त पन्थजी का मङ्गलाचरण सुनिए—

> "हरिरेव बली न सावलेपो
> न बलिर्येन कदर्थितोर्थितश्च ;
> असमीच्य यदापदं पतन्तीं
> कुरुराजोऽपि कृतेऽत्र पाण्डवानाम् ।१।
> सदयोऽपि न चापरः परोऽस्मात्
> यदयं वारिणि वारणं जुगोप ;
> न समोऽस्य च भक्तवत्सलो यत्—
> कुरुराजापनयाद् ररक्ष कृष्णाम् । २ ।
> क नु वास्य समो भवेद् वदान्यः
> यददात् सद्मनि सम्पदः सुदाम्नः ;
> गतिरस्तु स चात्र मादृशानाम्
> निखिले कर्मणि सर्वतोऽबलानाम् । ३ ।"

यह किसी नाटक का नान्दी है, या 'गोपालसहस्रनाम' का पाठ ? इसे मङ्गलाचरण कहें, या विधवाओं ('सर्वतोऽबलाओं') का विलाप ? अच्छे कवि यथाशक्ति नान्दी को छोटा बनाते हैं; परन्तु आपका यह स्तोत्र-पाठ 'शैतान की आँत' की तरह बढ़ता ही चला जा रहा है !! और वह भी बेमतलब, बेउसूल !!! भास मुनि ने जहाँ केवल बारह पद लिखे हैं, वहाँ आपने पूरे 'साठ-एक-इकसठ' पद ठूसे हैं । 'च', 'एव', 'अपि', 'अत्र' आदि शब्दों की निरर्थक भरमार की है ; परन्तु जो ख़ूबी छोटे-से पद्य में भास ने पैदा की है, उसका गन्ध भी आपको नहीं छू गया । शायद आप उसे समझे तक नहीं हैं ।

आपकी इन बारह पङ्क्तियों में छः वाक्य हैं । पहली दो पङ्क्तियों का एक वाक्य है । इसका अर्थ है, 'हरि' (विष्णु) ही बली हैं । गर्व-युक्त नहीं हैं ; क्योंकि इन्होंने राजा बलि को कदर्थित नहीं किया, बल्कि उससे भिक्षा माँगी । सुना आपने ? 'हरि' को बली सिद्ध करने के लिये पन्थजी कैसी पाताल से कौड़ी लाए हैं ? गर्व-हीन भिख-मंगा होना बली होने की दलील है । क्या आपने पन्थजी के सिवा कोई और भी कवि देखा है, जो ऐसी घटना से किसी को 'बली' साबित कर सके ! बलिहारी ! बलिहारी ! !

आगे चलिए—

> "असमीच्य यदापदं पतन्तीं
> कुरुराजोऽपि कृतेऽत्र पाण्डवानाम् ।"

इस टुकड़े का अगले-पिछले वाक्यों से कुछ सम्बन्ध नहीं है, अतः इसे एक वाक्य मानना पड़ेगा। परन्तु इसमें क्रिया का कहीं पता नहीं है । शब्द सब बेमेल, बे-जोड़ ? अब चाहे पाठक झटका करें, चाहे श्रोता सिर पटका करें, पन्थजी ने तो एक पहेली का गोल-मोल पिण्ड बनाकर लोगों के सामने रख दिया । भला कोई बूझे तो सही ! जब तक पहले वाक्य से दो-एक श तोड़कर इसमें जोड़े न जायँ, तब तक इसका कोई नहीं हो सकता । परन्तु कविता के वाक्य कोई पारि के सूत्र तो हैं ही नहीं, जिनमें आप इच्छानुसार अनु कर लें । आप चाहते तो यह हैं कि "पतन्तीम् आप असमीक्ष्य,पाण्डवानां कृते कुरुराजोऽपि येन न कदर्थि अर्थितश्च" ऐसा वाक्य बने, और पिछले पाँच शब्द वाक्य से तोड़कर इसमें जोड़ दिए जायँ; परन्तु जो वा समन्वित होकर निराकाङ्क्ष हो चुका, उससे नीचे

कर शब्द छुटाना संभव नहीं । निदान, यह दो लाइनों का टुकड़ा असम्बद्ध और निरर्थक ही रहा ।

और सुनिए—

"सदयोऽपि न चापरः परोऽस्मात्
यदयं वारिणि वारणं जुगोप ।"

अर्थात् हरि के सिवा कोई दयावान् भी नहीं है ; क्योंकि इन्होंने पानी में हाथी की रक्षा की । यहाँ 'चापरः परः' लिखकर आपने इस पद्य को बिलकुल 'चापर' ही कर दिया ! "अस्मात्परः सदयोऽपि न" केवल इतना ही अर्थ अभीष्ट है; परन्तु आपने 'अपरः, परः' ये दोनों समानार्थक शब्द लिखकर अपनी अज्ञता का परिचय दिया है । संस्कृत का साधारण विद्यार्थी भी यह बात समझ सकता है ।

अगले वाक्यों का अर्थ है—"हरि के समान कोई भक्त-वत्सल नहीं ; क्योंकि इन्हों ने दुःशासन के 'अपनय' (?) से द्रौपदी की रक्षा की ।" (अपनय का अर्थ हटाना या अलग करना होता है । पन्थजी ने 'अनय' (अन्याय) के अर्थ में उसका प्रयोग किया है, अतः यहाँ 'अवाचकत्व'-दोष है ।) 'हरि के समान कोई दानी कहाँ होगा ? जो इन्होंने सुदामा के घर में सम्पत्ति दी ।'

पन्थजी महाराज, यह आप 'अपर पञ्चरात्र' की नान्दी बना रहे हैं, या हरि का जीवन-चरित लिख रहे हैं ? आपकी इन अंड-बंड बातों से प्रकृत रूपक की कथा का क्या सम्बन्ध ? बलि के छलन, गज और ग्राह के युद्ध, द्रौपदी के चीर-हरण और सुदामा की सम्पत्ति से 'पञ्चरात्र' की कथा का क्या तअल्लुक़ ? क्या ये सब 'पञ्चरात्र' के पात्र हैं ? यदि नहीं, तो आप यह अनाप-शनाप क्या बक रहे हैं ? यदि आप बुरा न मानें, तो हम आपको नेक सलाह देते हैं कि दृश्य-काव्य लिखने के पहले आप किसी साहित्य-तत्त्वज्ञ विद्वान् से कोई नाटक पढ़ लीजिए, और यह समझने की कोशिश कीजिए कि नाटक के मङ्गलाचरण में क्या-क्या खूबियाँ होनी चाहिए, एवं प्रकृत घटना से उसका सम्बन्ध किस तरह दिखाना चाहिए ? भास-जैसे आदर्श पुरुषों का उपहास करने का तो कभी नाम भी न लीजिए । उस रास्ते की ओर हरगिज़ क़दम न बढ़ाइए । यहाँ 'अंगूर खट्टे' हैं ।

और सुनिए—

"गतिरस्तु स चात्र मादृशानाम्"

और टुकड़ों की तरह इसमें भी 'चात्र' व्यर्थ है । उसके विना वाक्य अच्छा बन सकता है ; परन्तु बेचारे पन्थजी 'चात्र' की चकती जोड़े विना छन्द कैसे पूरा करें ? इस वाक्य में आपने हरि से अपनी 'गति' के लिये प्रार्थना की है ; किन्तु यह स्पष्ट नहीं किया कि आप 'दुर्गति' चाहते हैं या 'सद्गति' ? तो भी हम यही प्रार्थना करते हैं कि ईश्वर आपको 'सद्गति' दे । परन्तु पन्थजी महाराज, एक बात तो बताते जाइए । 'स मादृशानां गतिरस्तु', यह आपके अन्तिम समय की प्रार्थना हो सकती है । 'अपर पञ्चरात्र' के मङ्गलाचरण में इस मर्सिए का क्या काम ? यहाँ मङ्गल के समय आपने यह अमङ्गल की बात क्यों छेड़ी ? इस बेवक़ की रागिनी से लोग आपको क्या समझेंगे ? आप ही बताइए कि आपकी यह बेसुरी तान सुनकर लोग आपको हँसेंगे, या भास को ? जो छन्द यहाँ आपने पसन्द किया है, वह गाने की अपेक्षा रोने और विलाप करने में ज़ियादह मौज़ूँ होता है । हमारी राय में तो 'उपहास' की अपेक्षा यदि आप मर्सिया लिखा करें, तो ज़ियादह मुनासिब हो ।

पाठकगण, आप इतने से ही समझ गए होंगे कि श्रीपन्थजी की कविता किस दर्जे की होती है । उसमें कल्पना और भावों की नवीनता का गन्ध तक नहीं होता । संस्कृत की शब्द-रचना नौसिखुए विद्यार्थियों की-सी होती है । आपके इस काव्य से चाहे सम्राट् पञ्चम जार्ज प्रसन्न हों, चाहे उनके ऑफ़िसर लोग गद्गद हो उठें, परन्तु संस्कृतज्ञ विद्वान् आपके और भास के इन मङ्गलाचरणों का मिलान करके ही आगे कुछ न सुनना चाहेंगे । उनकी दृष्टि में तो आपके इन रद्दी पद्यों के साथ भास के पूर्वोक्त मङ्गलाचरण की तुलना करना भी अन्याय होगा । कहाँ राजा भोज, कहाँ भोजा तेली !!

'पञ्चरात्र' जिस कोटि का रूपक है, उसमें न तो नटी होती है, न नान्दी । केवल मङ्गलाचरण होता है । भास मुनि ने सूत्रधार ही का प्रवेश कराया है, नटी का नाम तक नहीं लिया । न नान्दी लिखा । किन्तु ग्रन्थ के आदि में "नान्द्यन्ते ततः प्रविशति सूत्रधारः" लिखा है । इसमें "नान्द्यन्ते" क्रिया है, जो पात्रों के एक विशेष कार्य की सूचना देती है । परन्तु साहित्य-ज्ञान-शून्य पन्थजी ने इस 'नान्द्यन्ते' को सप्तमी विभक्ति, समझा, और उसकी नक़ल करते हुए 'अपर पञ्चरात्र' में नान्दी लिखने के बाद 'नान्द्यन्ते सूत्रधारः' लिख मारा । आपने इसमें नटी को भी बुलाया

है, और बुरी तरह बुलाया है। ये दोनों बातें आपकी साहित्य-ज्ञान-शून्यता का परिचय देती हैं। मालूम नहीं, आप कैसे 'साहित्योपाध्याय' हैं !

हम पहले कह चुके हैं कि दृश्य-काव्यों में स्वाभाविकता की अत्यन्त आवश्यकता है । पाठकगण, यदि कोई कवि भगवान् रामचन्द्र और योगिराज जनक की सभा में वशिष्ठ, वाल्मीकि आदि महर्षियों के सामने लैटिन, ग्रीक और अँगरेज़ी-भाषा के नाटक खिलवाए, तो लोग उसे पागल कहेंगे, या और कुछ ? अब आप ही निर्णय कीजिए कि श्रीयुक्त पन्थजी महाराज ने सम्राट् पञ्चम जार्ज, उनकी एसेम्बली (assembly) और उनके ऑफ़िसर लोगों के सामने जो यह संस्कृत-भाषा का नाटक खिलवाया है, इससे हम क्या समझें ? क्या यह मान लें कि ये सब अँगरेज़ लोग संस्कृत के धुरन्धर विद्वान् हैं ? या यह समझें कि चापलूसी की पिनक में आपको स्वाभाविकता का यह औचित्य सूझा ही नहीं ?

यद्यपि आजकल दर्शकों में बहुत-से ऐसे होते हैं, जो नाटक की भाषा से पूर्ण परिचित नहीं होते, परन्तु जिन प्रधान पुरुषों को कवि अपना दर्शक बनाता है, उन्हें तो उस भाषा का विशेषज्ञ होना ही चाहिए ।

आपके सूत्रधार की 'स्पीच' तो बिलकुल तूफ़ाने-बदतमीज़ी की टोकरी है । इसमें सबसे पहले तो अँगरेज़ों की तारीफ़ के पुल बाँधे हैं । फिर पन्थज़ी की राजभक्ति का बखान और आपकी बनाई ४-४ आनेवाली किताबों की नोटिसबाज़ी है। आगे सूत्रधार कहने लगा कि 'मैं इन अँगरेज़ों की सभा से कुछ कहना चाहता हूँ ।' मगर कहने की बात भूल गया । बोला कि 'विज्ञाप्यं तावद् विमृशामि' (कहने की बात सोच लूँ) । परन्तु यह विज्ञाप्य उसे अन्त तक न सूझा । बेसिर-पैर की बहुत-सी अंड-बंड बातें बककर वह 'विज्ञाप्य' को विना बताए ही चलता बना । इसी 'विज्ञाप्य' को सोचते२ वह बोल पड़ा कि 'मैं शराबी की तरह मरा जाता हूँ ।' सुनिए—

"विज्ञाप्य-ज्ञापने व्यग्रः श्रव्य-श्रवणविस्मितः ;
सस्मितो जोषमास्थाय **सुरासेवीव संस्थितः** ।"

'सम्' पूर्वक 'स्था' धातु का अर्थ है मरना । दश-कुमारचरित' में 'संस्थिते (मृते) पितरि' लिखा है । और, कवियों ने भी इसी तरह लिखा है । परन्तु श्रीपन्थजी को यह बात नहीं सूझी । सूझे तो तब, जो आपने साहित्य का कोई ग्रन्थ पढ़ा हो । आपने तो 'साहित्योपाध्याय' की पदवी सन् ५७ के ग़दर में लूटी थी ।

इसी के आगे आपका शराबी सूत्रधार कहता है कि 'यह कुछ और मुझे खींचे लेता है । इस 'अदृष्ट-पूर्व' दृश्य से मैं 'विमोहित' (यानी बेहोश) हुआ जाता हूँ ।'

"इदमन्यत् किमपि बलादाकर्षतीव माम् ;
अदृष्टपूर्वेणानेन दृश्येनास्मि विमोहितः ।"

शायद पाठक समझते होंगे कि इसके आगे पन्थजी ने कोई अद्भुत सीन दिखाया होगा । कोई ऐसी चमत्कार सीनरी होगी, जिसे देखकर सब लोग मोहित हो जायँ, और उसे 'अदृष्टपूर्व' (कभी न देखा हुआ) समझें। परन्तु श्रीपन्थजी से ऐसी आशा करना उनकी बुद्धि प ज़ुल्म करना है ।

आपका सूत्रधार जिसे 'अदृष्टपूर्व दृश्य' कहकर वाय वैला मचा रहा है, जिससे बेहोश हुआ जा रहा है, वह क्या दृश्य है, इसे पन्थजी के श्रीमुख से ही सुनिए—

"यदायान्ति द्विजा**श्चेमे** लक्ष्यया लक्ष्यलक्षणाः ।"

ज़रा इस 'श्चे—मे'—का तो मुलाहिज़ा कीजिए! मानों मुर्ग़ी के चूज़े चिचिहा रहे हों । समझे आप ? वह अद्भुत दृश्य कौन-सा है ? सिर्फ़ 'तीन ब्राह्मण तिलक लगाए हुए आ रहे हैं ।'

"बहुत शोर सुनते थे पहलू में दिल का ;
जो चीरा तो यक क़तरए ख़ूँ न निकला ।"

इस बात को यहीं छोड़कर यह सूत्रधार कुछ कामातु पुरुषों की-सी बातें ('सविधे दयिता यस्य दवोपि दवायते' इत्यादि) कहकर नटी को पुकारने लगा, और बोला कि 'ख़बरदार, गाने-बजाने का कुछ काम न ('कृतं कृतं गीतरागाभियोगेन') । नटी ने जब पू कि 'आख़िर मैं क्या करूँ', तो आप फ़र्माते हैं कि 'इ ब्राह्मणों की सूरत देखती रहो ।' '...इदमेव दृष्टव्यं (तावद् दृश्यताम् यदायान्ति इमे ब्राह्मणाः ।'

देखा आपने ? यह सूत्रधार की 'स्पीच' है, या ' का मुरब्बा ?' व्याकरण के अनुसार 'दृष्टव्यम्' अ है । यहाँ 'द्रष्टव्यम्' होना चाहिए । सबसे मज़ा तो यह है कि जिन ब्राह्मणों की बाबत

इतना शोर-गुल मचा रहे हैं, वे अभी रङ्गभूमि (स्टेज) पर आए ही नहीं हैं। उनका प्रवेश बहुत आगे जाकर होगा। मालूम नहीं कि श्रीपन्थजी ने कभी कोई नाटक देखा भी है, या नहीं ! अच्छा तो यह होता कि आप वहाँ जाकर पात्रों के प्रवेश की कुछ बातें सीख लेते।

पन्थजी ने इन ब्राह्मणों के तिलक का जो वर्णन किया है, ज़रा उसे भी सुन ही लीजिए। कोई सज्जन माथे पर ऊर्ध्वपुण्ड्र लगाए और सिर पर पगड़ी बाँधे हैं। उन्हें देखकर आप फ़र्माते हैं—

"विशालभाले धृत ऊर्ध्वपुण्ड्रः
प्रविश्य चाधः सितवेष्टनस्य ;
विपश्चितः कस्यचिदत्र वृन्दे
सत्कर्मणां साधुफलोदयाय ।
हिमालयादापततो धरित्र्यां
गङ्गाप्रवाहस्य बिभर्ति लीलाम् ।९।"

अर्थात् सफ़ेद पगड़ी के 'नीचे घुसकर' ('प्रविश्य चाधः') ऊर्ध्वपुण्ड्र हिमालय से गिरती हुई गङ्गा के सदृश मालूम होता है। समझे आप ? पन्थजी का हिमालय तो आकाश में अधर लटक रहा है और उसकी दुम में से गङ्गा निकली पड़ती है ! मुट्ठी-भर की पगड़ी तो हुई हिमालय पहाड़ !!, और दो-ढाई इञ्च का तिलक हुआ १७ सौ मील लंबी गङ्गा की धारा !!! परन्तु तिलक की तो तीन लाइनें होती हैं। एक तो हुई गङ्गा, और बाक़ी दो ? वे क्या हुईं ? संस्कृत-साहित्य में 'हीनोपमा' और 'अधिकोपमा' दोष माने जाते हैं। यदि कोई किसी की कुत्ती को देखकर कहे कि यह तो आपकी प्रत्यक्ष कुल-देवी है—'शुनीयं गृहदेवीव प्रत्यक्षा प्रतिभासते'—तो यह जाति-गत हीनोपमा-दोष होगा। पगड़ी का पहाड़ और तिलक की गङ्गा भी उसी दर्जे की है। यहाँ परिमाण-गत अधिकोपमा है। परन्तु पन्थजी तो साहित्य के तमाम दोषों से मुसतसना हैं। इसीलिये आपने अपने यहाँ सब दोषों को गिन-गिनकर स्थान दिया है।

ज़रा इस श्लोक की बढ़ी हुई टाँगों (चरणों) को तो देखिए। आपने यह छः चरणों का एक श्लोक बनाया है !! इसके आगे '९' की संख्या दी है। आप इसे एक ही समझते हैं। इसके अगले-पिछले श्लोकों में दूसरे छन्द हैं। उनसे इसका सम्बन्ध नहीं हो सकता। इस पुस्तक में और भी अनेक अशुद्ध छन्द हैं। दूसरे अङ्क के १४वें श्लोक में आपने दो छन्दों की क़लम चढ़ाई है। पहले दो चरण ११-११ अक्षरों के हैं, और पिछले दो १२-१२ अक्षरों के !! क्यों पन्थजी महाराज, क्या 'श्रुतबोध' भी भूल गए ? क्या इसी ज्ञान-गरिमा के भरोसे आप भास का उपहास करने चले हैं ?

संस्कृत के नाटकों में विशेषतः स्त्रियाँ तथा अन्य कई पात्र ऐसे होते हैं, जिनकी प्राकृत भाषा होना आवश्यक है। इसका यह मतलब नहीं कि पुराने समय की स्त्रियाँ निरी मूर्ख होती थीं। यदि यह होता, तो वे नाटकों में पुरुषों की संस्कृत-भाषा समझकर उसका उत्तर-प्रत्युत्तर कैसे करतीं ? आवश्यकता पड़ने पर कहीं२ वे प्राकृत बोलते२ संस्कृत भी बोलने लगती हैं। भास के 'पञ्चरात्र' में ही बृहन्नला ने प्राकृत बोलते२ युद्ध की ऊर्जित कथा संस्कृत में कही है। इसी प्रकार नाटकों में चाण्डालों की भाषा चाण्डाली (प्राकृत-भेद), भील आदि की आभीरी, शकार की शकारी, विदूषकों की प्रायः अवन्तिका एवं उच्च कोटि के पात्रों (रानी आदि) की भाषा शौरसेनी प्राकृत होती है। ये नियम केवल स्वाभाविकता के आधार पर बनाए गए थे। आज भी यहाँ शिक्षित पुरुषों की भाषा खड़ी बोली होती है, और घर में स्त्रियाँ उनसे प्रान्तीय भाषा में बात-चीत करती हैं। दोनों दोनों की भाषा समझते हैं; परन्तु बोलते अपनी२ हैं। प्राचीन समय में संस्कृत और प्राकृत में इतना ही भेद था, जितना आज परिष्कृत हिन्दी और प्रान्तीय बोलियों में है। प्राकृत को सरल, कोमल और सुगम समझा जाता था। अतएव नियम था कि—"स्त्रीषु नाऽप्राकृतं वदेत्"—स्त्रियों में प्राकृत भाषा का ही प्रयोग करे।

पन्थजी प्राकृत के ज्ञान से बिलकुल कोरे मालूम होते हैं। आपने 'पञ्चरात्र' की सब जगह तो नक़ल की, परन्तु प्राकृत-भाषा के अंशों को एकदम उड़ाते गए। रानी, कञ्चुकी, बृहन्नला, दासी और चौकीदारों से भी आपने सर्वत्र संस्कृत बुलवाई है। क्यों पन्थजी महाराज, क्या ये सब-के-सब साहित्योपाध्याय थे ? प्राकृत से प्राण छुड़ाने के लिये आपने दूसरे अङ्क में ब्राह्मणों का दूत बनाकर चपरासियों से उनकी दुर्गति कराई है। आपके 'अपर पञ्चरात्र' में गिने हुए केवल चार अक्षर ('अज्जउत्त') प्राकृत के हैं। ये अक्षर नटी ने सूत्रधार से कहे ही थे

कि झट उसने उसका मुँह पकड़ लिया और बोला—“...अभ्यस्ताखिलदर्शनानाम् आदर्शभूतायास्ते नैतदनुरूपम्...यतः—

रसिकानां रसास्वादे सत्पात्रे प्राकृतं वचः ;
‘प्रपानकरसे हन्त तृणपातायते किल ।”

पन्थजी विना निरर्थक अव्ययों को ठूसे छोटे-से-छोटा श्लोक भी नहीं बना सकते । इस पद्य में भी ‘हन्त’ और ‘किल’ का पेबंद लगा हुआ है । आठ अक्षर का चरण, और चार अक्षर व्यर्थ !! सेर-भर की लोमड़ी, और ढाई सेर की पूँछ !!! आपका सूत्रधार नटी से कहता है कि ‘तुम तो समस्त दर्शनशास्त्रियों—फ़िलासफ़रों—की आदर्श हो । (अर्थात् साक्षात् सरस्वती हो) । तुम प्राकृत क्यों बोलती हो ? रसास्वाद में प्राकृत भाषा बहुत खटकती है । ‘प्रपानकरस’ में कूड़े-करकट की तरह मालूम होती है ।

हम भी मानते हैं कि रसास्वाद में प्राकृत-भाषा खटकती है ; परन्तु उसी को खटकती है, जिसे प्राकृत समझने की तमीज़ नहीं है, और जो नीचे लिखी संस्कृत-टिप्पणी के सहारे प्राकृत का अर्थ किया करता है । इसी तरह हिन्दी में संस्कृत के शब्द भी लोगों को खटकते हैं; परन्तु यह खटकना उन्हीं की मूर्खता का परिचायक है, न कि भाषा-दोष का । संस्कृत के हज़ारों नाटकों में से ऐसा एक भी न मिलेगा, जिसमें नटी तथा अन्य स्त्रियों ने प्राकृत न बोली हो । क्या हम मान लें कि आज तक के सब नाटककार मूर्ख थे, और उन सबकी नटियाँ कुपात्र थीं ? आज पन्थजी ही सच्चे नाटककार पैदा हुए हैं, और यह एक आप ही की नटी ‘सत्पात्र’ है ? नटी तो हुई ‘अभ्यस्ताखिलदर्शनों की आदर्शभूत’= सरस्वती, अब द्रौपदी को पन्थजी कौन-सा पद देंगे ? हमारी सम्मति में तो इन बातों से पन्थजी का प्राकृत भाषा का अज्ञान फूट-फूटकर निकल रहा है । इससे भास का उपहास होता है या पन्थजी का ? हम चाहते हैं कि श्रीपन्थजी हाथ में गङ्गा-जल और कुश लेकर, पूर्व को मुँह करके, जनेऊ पकड़कर, अपनी आँख को अन्दर की ओर करके, अपने हृदय को टटोलकर, अपने प्राकृत-ज्ञान पर ईश्वर को साक्षी मानकर स्वयं इसका निर्णय करें । ईमानदारी से कही हुई आपकी बात को हम शिरोधार्य करेंगे ।

भास के ‘पञ्चरात्र’ में सूत्रधार की छोटी, किंतु भावपूर्ण प्रस्तावना के बाद तीन ब्राह्मणों का प्रवेश है । पन्थजी ने भी अपने सूत्रधार की लंबी और बेमतलब ‘स्पीच’ के बाद उसी तरह तीन ब्राह्मणों का प्रवेश कराया है । जिस तरह भास ने इन ब्राह्मणों के द्वारा दुर्योधन के यज्ञ का वर्णन कराया है, पन्थजी ने भी अपनी बोली में उसी की नक़ल की है । भास ने दुर्योधन के यज्ञ में अग्नि लगने की बात इन्हीं ब्राह्मणों के द्वारा चलाई है; श्रीपन्थजी ने भी ख़ूब आग लगाई है । परन्तु यहाँ नक़ल करने में एक भूल हो गई । भास ने अग्नि लगने का कारण बताने और उसका औचित्य निबाहने में जो कुशलता दिखाई थी, पन्थजी को वह नहीं सूझी । आपने विना कुछ कारण बताए ही आग लगाना शुरू कर दिया, और यहाँ तक आग लगाई कि रानियों के कपड़े जलाए, नौकर-चाकरों के शरीर जलाए, राजों को नंगा करके रास्तों में दौड़ाया, उनसे पानी भरवाया, रनिवास तक जलाया; पर यह न बताया कि आग लगी क्यों । भास की दो पङ्क्तियों की प्रधान बात को आपने आग लगाने के बाद, इशारे से, बताने की चेष्टा की है; किन्तु आपकी आग में पड़कर वह इस तरह ख़ाक हुई कि किसी काम की न रही । इस पुस्तक के अन्त में, नान्दी की तरह फिर पन्थजी ने स्तोत्र-पाठ किया है, और “पिता” पञ्चम जार्ज को दुआ देकर उसे समाप्त किया है ।

यदि हमसे कोई पूछे कि इस पुस्तक से भास का उपहास हुआ या नहीं, तो हम तो निःसंकोच होकर यही कहेंगे कि यदि कोई दुधमुहा छोकरा अपना झुनझुना उठाकर भीमसेन की गदा का उपहास कर सकता है, यदि कोई गँवार नक़ली पिस्तौल लेकर अर्जुन के अग्नि-बाणों का उपहास कर सकता है, यदि गंदी मोरी गङ्गा की धारा का उपहास कर सकती है, और यदि कोई काना कौआ पक्षिराज गरुड़ का उपहास कर सकता है, तो यह रद्दी पुस्तक भी भास मुनि का उपहास कर सकती है । लेख बढ़ जाने के कारण इसकी व्याकरण-सम्बन्धी अशुद्धियों की सूची हम यहाँ नहीं देते । यदि पुस्तक शुद्ध करने के अभिप्राय से पन्थजी पूछेंगे, तो हम अवश्य बता देंगे । जिन लोगों ने पन्थजी की यह पुस्तिका देखी हो, उनसे हम अनुरोध करते हैं कि वे भास मुनि का ‘पञ्चरात्र’ एक बार अवश्य देखें, और फिर अपनी राय क़ायम करें ।

भास की नक़ल आपने किस तरह की है, इस बात को हम कथा के आरम्भ—इसी अग्नि-काण्ड—के एक ही पत्रे (७-८ पृष्ठ) में से दिखावेंगे। पाठकगण यदि चाहें तो इतने से ही सन्तुष्ट हो जायँ, और चाहे इन दोनों पुस्तकों का आद्यन्त मिलान करके स्वयं देख लें। भास ने लिखा है—

> “शकटी च घृतापूर्णा सिच्यमानाऽपि वारिणा ;
> नारीवोपरता पत्या बालस्नेहेन दह्यते।”

श्रीपन्थजी लिखते हैं—

> “सत्रसम्भारशकटी सिच्यमानाऽपि वारिणा ;
> सतीव योषिद् विधवा भर्तृस्नेहेन दह्यते।” (पृ० ७, श्लोक २३)

यहाँ आपनें पूर्वार्ध में ‘शकटी, सिच्यमानापि वारिणा’ ये शब्द ज्यों-के-त्यों उठाए हैं। केवल ‘घृतापूर्णा’ को बदलकर ‘सत्रसम्भार’ किया है। उत्तरार्ध में ‘स्नेहेन दह्यते’ फिर ज्यों-का-त्यों उड़ाया है। केवल ‘नारी’ के स्थान में उसका पर्याय ‘योषित्’ रख दिया है। परन्तु यहाँ ‘योषित्’ व्यर्थ हो गया। न तो पुरुष ‘सती’ होते हैं, न ‘विधवा’ ही। ये दोनों धर्म स्त्री-मात्र-गामी हैं। फिर इनके साथ ‘योषित्’ का क्या काम ?

साहित्यज्ञ लोग इन दोनों पद्यों का मिलान करके तारतम्य की परीक्षा करें। भास के पद्य में एक ओर ‘शकटी’ है, और दूसरी ओर मृतवत्सा नारी। एक घी से भरी है, और दूसरी (नारी) स्नेह से पूर्ण। एक (शकटी) में भौतिक आग लगी है, और दूसरी पुत्र-वियोग के दावानल से धधक रही है। एक ठंडे पानी से सींची जा रही है, और दूसरी को, पति अथवा सम्बन्धियों के द्वारा, फिर पुत्र-प्राप्ति की आशा दिलाकर सान्त्वना दी जा रही है; परन्तु न इसी की आग बुझती है, न उसी की। शकटी की आग न बुझने का कारण घी है, और नारी की दुःखाग्नि शान्त न होने का कारण स्नेह है। यज्ञ में यह शकटी इस तरह जल रही है, जैसे मृतवत्सा नारी हो।

अब पन्थजी का पद्य देखिए। आपने सन्तान की मृत्यु के स्थान में ‘योषित्’ को ‘विधवा’ करके जड़ ही साफ़ कर दी है। परन्तु इतना ज्ञान आपको कहाँ, जो यह समझ लें कि आपकी इस ‘विधवा’ के साथ ‘सिच्यमानाऽपि वारिणा’ व्यर्थ हुआ जाता है। मृतवत्सा को जैसे दूसरे पुत्र की आशा दिलाकर सान्त्वना दी जाती है, इसी प्रकार विधवा होने पर यदि कोई दूसरे पति की बात, भले आदमियों में, ज़बान पर लावे, तो निःसन्देह पीटा जाय। फिर ‘सती’ विधवा के साथ इस प्रकार का व्यवहार पन्थजी के सिवा और कौन करेगा ? सती के विधवा होने पर तो किसी सान्त्वना के वचन का अवकाश ही नहीं रह जाता। वहाँ ‘सिच्यमानाऽपि वारिणा’ का विषय ही नहीं है। सती को तो भौतिक अग्नि की भी आवश्यकता नहीं होती। उसे भस्म करने के लिये तो पति का अनिष्ट-श्रवण ही पर्याप्त है। अतः पन्थजी के परिवर्तन में एक अंश उपमान में न्यून रह जाता है। भास के यहाँ वह सर्वाङ्ग-पूर्ण है। आख़िर चोरी चोरी ही है !! ‘स्वाभाविकाऽकृत्रिममन्यदेव’—परन्तु यहाँ आपकी ‘पन्थ’-उपाधि सार्थक हो गई।

पानी से सींचे जाने पर भी जलते रहने का कारण ‘घृतापूर्णत्व’ है। भास के पद्य में वही सारे भाव की जान है। परन्तु पन्थजी ने चोरी करते समय यही तत्त्व का शब्द (‘घृतापूर्णा’) छोड़ दिया। रत्न छोड़कर कौड़ियों का ढेर उठा ले गए। कोई आपसे पूछे कि पानी से सींचे जाने पर भी यह ‘शकटी’ क्यों जली जा रही है ? क्या इसी प्रकार की भद्दी नक़ल और चोरी में आप भास मुनि-जैसे आदर्श, पूज्य पुरुषों का उपहास करेंगे ?

भास ने लिखा है—

> “दह्यमानस्य वृक्षस्य सानिलेन मखाग्निना ;
> कोटरान्तरदेहस्थाः खगाः प्राणा इवोद्गताः।”

यज्ञ की अग्नि से जलते हुए वृक्ष के कोटर में से घबराकर पक्षी उड़े। इस पर भास मुनि उत्प्रेक्षा करते हैं कि मानों शरीर के भीतर से वृक्ष के प्राण निकल भागे हों। ‘प्राणपखेरू’ का उड़ना प्रसिद्ध है। यहाँ पक्षियों (पखेरुओं) में प्राणों की उत्प्रेक्षा कितनी मार्मिक है, इस पर किसी टीका-टिप्पणी की आवश्यकता नहीं है।

अब पन्थजी की नक़ल देखिए—

> “दह्यमानात्तरोः केचिद् बान्धवा इव पक्षिणः ;
> शोचन्तः खेषु निर्यान्ति प्राणिनां गतिरीदृशी।”

अर्थात् जलते हुए वृक्ष से कोई (?) पक्षी बान्धवों के सदृश आकाशों (‘खेषु’) में निकलते हैं। प्राणियों की गति ऐसी ही होती है।

सहृदय सज्जन स्वयं विचार लें कि यहाँ भास की उत्प्रेक्षा और पन्थजी की उपमा में क्या भेद है। आपका मतलब यह है कि जलते हुए बान्धव को छोड़कर सब बान्धव इसी प्रकार चलते बनते हैं। हम तो समझते हैं कि ऐसे बान्धवों को धिक्कार है, जो अपन बान्धव को विपत्ति में पड़ा छोड़कर चलते बनते हैं। यहाँ मरने का या मुर्दा जलाने की तो कोई बात पन्थजी के किसी शब्द से प्रकट नहीं होती। फिर 'तरु' अभी दग्ध भी नहीं हुआ, 'दह्यमान' है। ऐसी दशा में 'बान्धवों' का छोड़कर चल देना नीचता नहीं, तो और क्या है? पन्थजी के सिवा ऐसे बान्धवों की उपमा और कौन देगा? वस्तुतः यहाँ पक्षियों को 'बान्धव' बताना ही ग्राम्यत्व का सूचक है। पन्थजी की आँखों में उँगली डालकर यह कौन बतावे कि पेड़ में आग लगने पर कोई ('केचित्') पक्षी नहीं उड़ा करते, बल्कि सब उड़ जाते हैं। आपके 'खेपु' को तो देखिए। पन्थजी महाराज, अब फिर से तर्कसंग्रह पढ़िए। तब आपको मालूम होगा कि आकाश एक और व्यापक पदार्थ है। 'अशुद्धि-पत्र' में आपने कहीं२ अशुद्ध को और अशुद्ध कर दिया है। उसमें इस 'खेपु' की जगह 'इव' बनाया है; परन्तु 'शोचन्तः' के विसर्ग को नहीं हटाया। पहले तो व्याकरण के अनुसार 'शोचन्तः इव' रह नहीं सकता, दूसरे इस वाक्य में 'इव' पहले से ही 'बान्धवा इव' में मौजूद है। अब यह दूसरा 'इव' किस मर्ज़ की दवा है?

भास ने लिखा है—

"बल्मीकमूलाद् दहनेन भीता-
स्तटोत्करैः पञ्च समं भुजङ्गाः;
समं विपन्नस्य नरस्य देहाद्
विनिःसृताः पञ्च यथेन्द्रियाणि।"

अर्थात् बल्मीक (बाँबी) के किनारों से एकसाथ पाँच साँप अग्नि से डरकर निकले। मानों मरे हुए आदमी के शरीर से एकसाथ निकली हुई पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ हों। यहाँ बाँबी का ढेर मुर्दे की तरह है, और उसके किनारों पर बने हुए बिल आँख, नाक, कान आदि के छेदों के समान हैं। इनमें रहनेवाली तेजोमय ज्ञानेन्द्रियों से चमकते हुए साँपों की तुलना की गई है।

अब इसी बात को श्रीपन्थजी के मुखारविन्द से सुनिए—

"बिलेभ्यो बहिरायान्ति दग्धशाखस्य शाखिनः;
शाखाः पुनरिवाहर्तुं पञ्चशीर्षा इवोरगाः। ३२।"

पाठकगण, इसका अर्थ ज़रा ध्यान से सुनिए। 'दग्धशाखस्य'=जिसकी शाखाएँ जल चुकी हैं (उस) 'शाखिनः'=वृक्ष के 'बिलेभ्यः'=बिलों से 'बहिरायान्ति'=बाहर आते हैं "शाखाः पुनरिवाहर्तुम्"=मानों फिर शाखाएँ लाने के लिये 'पञ्चशीर्षा इवोरगाः"=पाँच सिर के साँपों की तरह।

सहृदयगण, यदि आप न समझे हों, तो फिर एक बार पढ़ जाइए, और ख़ूब ध्यान से देखिए कि हमने अर्थ करने में पन्थजी का कोई शब्द छोड़ तो नहीं दिया। आप श्लोक को ख़ूब समझने के बाद हमें बताइए कि 'पाँच सिरवाले साँपों की तरह, शाखाएँ लाने के लिये, जले हुए वृक्ष के बिलों में से', ये कौन बाहर आ रहे हैं? क्या इस श्लोक में कर्ता का कहीं पता है? क्या इस पद्य का कुछ अर्थ हो सकता है? यह कविता है या बावले की बड़? भास ने 'पञ्चसमं भुजङ्गाः" लिखा था। उसकी नक़ल करते हुए आपने 'पञ्चशीर्षा इवोरगाः' यह वाल्मीकीय रामायण का टुकड़ा ज्यों-का-त्यों चुराकर चिपका दिया। परन्तु यह आपको नहीं सूझा कि यहाँ 'इव' ने 'सब गुड़ गोबर' कर दिया। यह बात गाँव के गँवार भी जानते हैं कि 'बिल' पृथ्वी में हुआ करते हैं; परन्तु पन्थजी वृक्षों में बिल बनाते हैं। शायद अमरकोष के भरोसे आप कविता करने बैठे हैं।

'पुनः शाखाः आहर्तुमिव' इस उत्प्रेक्षा का अवलम्ब क्या है? वह कौन-सी बात है, जिसे देखकर आपने यह समझा है कि शाखाओं को फिर से वापस लावेंगे? हाँ, यह तो बताइए कि पाँच सिर के साँपों की उपमा आपने किसे दी है? ये शेष-नाग के नाती-पोते कहाँ इकट्ठे किए हैं? भास ने तो पाँच इन्द्रियों से पाँच साँपों की समता दिखाई है, परन्तु आपके ये पाँच सिर किससे जोड़े जायँगे?

नदी के किनारे एक ढाक का पेड़ है। उसकी एक शाखा पानी की ओर झुकी हुई है। उस शाखा का एक पत्ता पानी के ऊपर वायु से चञ्चल हो रहा है। इस पर भास मुनि उत्प्रेक्षा करते हैं—

"अवनतविटपो नदीपलाशः
पवनवशाच्चलितैकपर्णहस्तः ;
दवदहनविपन्नजीविताना—
मुदकमिवैष करोति बान्धवानाम् ।"

पाठकगण, इसके शब्दों और अर्थ की ओर ध्यान-पूर्वक दृष्टि दीजिए। देखिए, कैसा सुन्दर चित्र खींचा है। भास मुनि कहते हैं कि यह शाखा नहीं, बल्कि अपनी इच्छा से पानी की ओर झुके हुए इस पेड़ की बाहु है, और यह पत्ता नहीं बल्कि इसका हाथ है। पानी के ऊपर, वायु लगने से जो पत्ता हिल रहा है, सो मानो यह वृक्ष अपने जले हुए कुटुम्बियों का जल-दान कर रहा है। इस उत्कृष्ट कल्पना पर टिप्पणी व्यर्थ है। अब ज़रा पन्थजी का भी जल-दान देख लीजिए—

"तरुर्विगतबान्धवो निपततां दलानामयं
बहिर्निपततस्तनोर्मदविकारनामाम्भसः ;
छलेन च रुदन् यथा विदधदम्बुदानक्रियां
विभाति न सचेतनाः कथमिमे तरूणां गणाः ।"

भास मुनि की कविता में इतना प्रसाद-गुण होता है कि वह सुनते ही हृदयङ्गम हो जाती है ; परन्तु पन्थजी के श्लोकों को देखने से मालूम होता है, मानो कबड़िए की दूकान में बेमेल चीज़ें एक जगह ठूस दी हों। जब तक शब्दों को इधर-उधर करके ज़बर्दस्ती जोड़ा न जाय, तब तक वे किसी मतलब के नहीं। फिर आप छोटे-से-छोटा पद्य भी बिना व्यर्थ शब्द ठूसे पूरा नहीं कर सकते। इस पद्य की भी वही दुर्दशा है। पेड़ों में से टपकनेवाले पानी को 'मद' कहते हैं। आपने उसके लिये एक ढाई मील लम्बा व्यर्थ शब्द बनाया "मदविकारनामाम्भसः"। इसमें 'विकार' और 'नाम' तो एकदम ग्राम्यत्व के सूचक हैं। 'यथा'-शब्द का किसी से सम्बन्ध ही नहीं बनता। फिर यह दूसरा चरण 'व्रीडाव्यञ्जक अश्लील' है। 'शरीर में से टपकता हुआ मद के विकार का पानी' क्या हुआ करता है, इस बात को पन्थजी ज़रा अपनी आँखें बन्द करके सोचें तो सही। वृक्षों के लिये 'तनु'-शब्द का प्रयोग करना भी अज्ञान का सूचक है। पहले चरण में जो 'निपतताम् दलानाम्' है, उसका सम्बन्ध तीसरे चरण में जाकर 'छलेन' के साथ है। मतलब यह कि 'विगत-बान्धव तरु' गिरते हुए पत्तों और मद के बहाने रोता हुआ ('निपततां दलानां, तनोर्बहिर्निपततः मदविकारनामाम्भसश्चच्छलेन रुदन्') जल-दान करता हुआ मालूम होता है ('अम्बुदानक्रियां विदधद् विभाति')। इसके आगे आप फ़र्माते हैं कि—'इमे तरूणां गणाः सचेतनाः कथं न ?' अर्थात् ये वृक्षगण चेतन कैसे नहीं हैं ? आपका मतलब यह है कि जब मरे हुए बान्धवों को रोते और उनका जल-दान करते हैं, तो चेतन क्यों नहीं ? परन्तु पन्थजी महाराज, यह बेचारा श्लोक तो आप ही की जान को रो रहा है। इसे तो आपने जल-दान के योग्य ही न छोड़ा। गिरते हुए पत्तों और टपकते हुए मद को तो आपने 'छलेन रुदन्' से आँसू बताया है, और कुछ सामग्री है नहीं, तब यह जल-दान (अम्बुदान-क्रिया) काहे से करेगा ? भास के सदृश न तो आपके यहाँ कहीं नदी का नाम-निशान है, न बाहु और हाथ का कोई ज़िक्र। न भास की तरह आपके यहाँ कोई ऐसी विशेष-क्रिया है, जिससे जल-दान सूचित हो। है तो सिर्फ़ रोना-ही-रोना—जो एक प्रकार से धर्मशास्त्र में निषिद्ध है। फिर यह जल-दान का रूपक आप किसके बल पर खड़ा करने चले हैं ? लम्बाई में तो आपने भास से दूना श्लोक कर दिया ; पर व्यर्थ शब्दों से उसे लाद दिया। मतलब की एक बात भी न कह सके। उस पर निर्लज्जता यह कि "समस्त संसार के विद्वानों को चैलेंज देकर **भास मुनि का उपहास करने पर तुले हुए हैं।**" यदि यों ही पूज्य, आदर्श पुरुषों का उपहास हो जाया करे, तब तो—

"लीलालुण्ठितशारदापुरमहासम्पन्नराणां पुरो
विद्यासद्मविनिर्गलत्कणमषो वल्गन्ति चेत्पामराः ;
अद्यश्वः फणिनां शकुन्तशिशवो दन्तावलानां वृकाः
सिंहानां च सुखेन मूर्धसु पदं धास्यन्ति शालावृकाः ।"

अन्त में हम श्रीयुक्त पन्थजी से सादर सविनय सबहुमान प्रार्थना करते हैं कि वह अपने टाइटिल-पेज के इस पद्य को फिर से पढ़ लें—

"साधुत्वे साधुवादो वाऽसाधुत्वे साधुशासनम् ;
भ्रमापनुत्तये कर्तुः कृत्येऽलंकीर्तिशालिनाम् ।"

शालग्राम शास्त्री (साहित्याचार्य)

समुद्री बीमा

(भाग २, संख्या ४ से आगे)

(२)

लॉयड्स का इक़रारनामा बीमा-संसार में बड़ा व्यापक है। उससे बीमा इक़रारनामा-संबंधी सभी शर्तों का ज्ञान अच्छी तरह हो जाता है। आजकल लॉयड्स का इक़रारनामा प्रामाणिक माना जाता है, और सब समितियाँ थोड़ा-बहुत उसका अनुकरण करती हैं। लॉयड्स-संघ तथा उसके सदस्यों के अलावा अन्यान्य समितियाँ भी, जिनके संचालक लॉयड्स-संघ के सदस्य नहीं हैं, अपने संगठन की परिस्थिति के अनुसार लॉयड्स के इक़रारनामे को घटा-बढ़ाकर अपने निज का इक़रारनामा तैयार करती हैं। भारत के एक परतंत्र देश होने के कारण उसका जहाज़ी बेड़ा और बीमा-समितियाँ होना दुर्लभ है। जिन लोगों ने थोड़ी-बहुत इस ओर चेष्टा की है वे विपत्ति में फँसे हुए हैं। अभी ये बातें भारतवर्ष के लिये कठिन हैं। इस श्रेणी के व्यापार का अधिकार तो भारत को उस समय प्राप्त होगा, जब वह स्व-शासित देश होगा। जब तक भारतवासियों को आर्थिक स्वाधीनता, सेनाधिकार और विदेशों में समानता का पद नहीं प्राप्त होता, तब तक इन व्यवसायों पर विदेशियों का अधिकार होना स्वाभाविक है। परंतु समय परिवर्तनशील है। भारतीय अपने जन्म-सिद्ध अधिकार किसी-न-किसी प्रकार प्राप्त करने की चेष्टा कर रहे हैं, और व्यापारिक क्षेत्र में स्वातंत्र्य प्राप्त करने के लिये दिन-पर-दिन उनका क़दम आगे बढ़ रहा है। व्यापारिक स्वत्व प्राप्त होने पर ही देश स्वतंत्र हो सकता है। बिना आर्थिक स्वाधीनता के देश की सच्ची स्वाधीनता कोसों दूर है। भारत का अंतरराष्ट्रीय व्यापार, उसके स्व-शासित होने पर ही, लाभ के साथ, सब देशों के साथ होगा, और उस समय उसका जहाज़ी बेड़ा और समुद्री बीमा-समितियाँ उसी प्रकार विभिन्न देशों के साथ व्यवसाय करने के लिये संगठित होंगी, जिस प्रकार आज अँगरेज़ी समितियाँ इस व्यवसाय को चला रही हैं।

अब हम पुनः अपने मुख्य विषय पर आने के लिये लॉयड्स-इक़रारनामे की शर्तों पर विस्तृत रूप से विचार करेंगे। उसके प्रत्येक जुमले पर विचार करना उपयुक्त होगा। लॉयड्स के इक़रारनामे के मुख्य वाक्य निम्न-लिखित हैं—

१—बीमा करानेवाले एक व्यक्ति का तथा एक से अधिक व्यक्तियों का नाम।

२—'खोया या न खोया' शब्द।

३—प्रवास का विवरण और जोखिम की अवधि।

४—जहाज़ और उसके स्वामी का नाम।

५—रोकने तथा ठहरने की स्वाधीनता और 'गुमराह' का शब्द।

६—मूल्य का फ़िक़रा।

७—ख़तरा या जोख़िम—जिसका बीमा कराया गया है—की तफ़सील।

८—नालिश और मेहनताने का फ़िक़रा।

९—संबंध-विच्छेद का फ़िक़रा।

१०—बीमे का चंदा और दर का फ़िक़रा।

११—याददाश्त (बयान)।

१२—बीमा करनेवालों के हस्ताक्षर, और उनकी प्रत्येक की जोखिम के प्रति ज़िम्मेदारी।

ये हैं मुख्य बातें, जिनका जानना प्रत्येक व्यापारी के लिये अत्यंत आवश्यक है। अब हम इन्हीं जुमलों पर अलग-अलग विचार करेंगे।

१—एक व्यक्ति तथा एक से अधिक व्यक्तियों का फ़िक़रा। इस फ़िक़रे में यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि वे सब व्यक्ति, जो इक़रारनामा करने के योग्य हैं, बीमे के इक़रारनामे के फ़िक़रे में शुमार किए जा सकते हैं। इस फ़िक़रे में "सबके वास्ते, और सबों के नाम, और दूसरे प्रत्येक व्यक्ति, एक या एक से अधिक" का भी उल्लेख है; जो ऐसे प्रत्येक व्यक्ति की रक्षा करता है, जिसका बीमे से, उसके ख़तम होने पर या उसके जारी रहने के समय में, संबंध है।

२—खोया या न खोया शब्द। यह शब्द बीमा करानेवाले को उस माल के नुक़्सान से बचाता है, यदि वह सच्चे विश्वास से उसका बीमा कराता है, जो जहाज़ पर है, और वह विदेशी बंदरगाह से चल दिया है, और बीमा कराते समय उसे अपने माल के नष्ट हो जाने का कुछ भी ज्ञान नहीं है। बीमा करानेवाला इस स्थिति में निर्दोष है, और समिति से हानि-पूर्ति कराने का अधिकार रखता है। यह शब्द सब इक़रारनामों में होता है, यद्यपि वह हर समय लागू नहीं होता; क्योंकि कई एक विद्वान् लेखकों की राय है कि इस प्रकार के नुक़्सान की पूर्ति करना अनुचित है, और वह नए इक़रारनामे में शामिल न होना चाहिए। परंतु साख क़ायम रखने के लिये अँगरेज़ी बीमा-समितियाँ ही नहीं, अन्यान्य विदेशी समितियाँ भी अपने इक़रारनामों में इस शब्द को रखती और इसका उपयोग संगठन के अनुसार थोड़ा-बहुत करती हैं। यदि बीमा करानेवाले को माल नष्ट हो जाने की ख़बर है, और वह यदि उसे छिपाकर अनुचित लाभ उठाने की ग़रज़ से बीमा कराता है, तो इस प्रकार का इक़रारनामा तुरंत रद हो जाता है। उसी तरह यदि बीमा करनेवाले महाजन तथा बीमा-समिति को यह मालूम है कि अब जहाज़ बिना किसी विघ्न के प्रवास समाप्त कर चुका है, अब किसी जोखिम की आशंका नहीं है, और तब भी वह महाजन या समिति बीमा करे, तो उसे बीमे का चंदा वापस करना होगा।

३—प्रवास का विवरण और जोखिम की अवधि। यह फ़िक़रा "………से………तक" होता है। दोनों के बीच का स्थान बंदरगाहों का नाम लिखने के लिये ख़ाली रहता है। इस फ़िक़रे में प्रवास का संपूर्ण विवरण लिखा जाता है, और जोखिम उस स्थान से शुरू होती है, जहाँ से बीमा कराया जाता है, और वहाँ ख़तम होती है, जहाँ जहाज़ का प्रवास समाप्त होता है, या जहाँ तक के लिये बीमा कराया गया है। इस फ़िक़रे में एक बात और विचारने की है, और उसका यहाँ पर उल्लेख कर देना ज़रूरी होगा। वह यह है कि यदि बीमा हो गया है और जहाज़ ने यात्रा शुरू नहीं की या बीमा पहले से हो गया और माल लदा नहीं, और उसका बीमा प्रवास प्रारंभ होने पर है, किंतु इसी बीच में माल नष्ट हो जाय, तो बीमा करानेवाले को क्या करना चाहिए? ऐसे मौक़ों में बड़ी कठिनाइयाँ उपस्थित होती हैं। किंतु निर्दोष व्यवसाय-संचालन के उद्देश्य से यदि बीमा हो गया है, और जहाज़ रवाना नहीं हुआ, तो ऐसे मौक़े के लिये दोनों ओर के लोगों में पहले से किसी प्रकार का अहदनामा हो जाता है; जिसके अनुसार प्रवास के पूर्व माल नष्ट हो जाने पर दोनों में से एक फ़रीक़ अहदनामे के अनुसार ज़िम्मेदार होता है। सुव्यवस्थित व्यव-

साय-संचालन के लिये इसमें और भी नया सुधार हो गया है. और अब "......से......तक" के स्थान पर इन दोनों अक्षरों के साथ-साथ "जहाज़ के प्रवास प्रारंभ होने के स्थान से समाप्त होनेवाले स्थान तक की जोखिम" भी लिखा जाता है। इससे, माल चाहे जहाज़ पर चढ़ाया जाय या न चढ़ाया जाय, बीमा करानेवाला संरक्षित रहता है, या उस बीच में अगर नुक़्सान हो जाय, तो भी बीमा करानेवाला इस शर्त के द्वारा संरक्षित रहता है । कोई-कोई बीमा-समितियाँ तो इस शर्त में और भी आगे बढ़ गई हैं। वे इस फ़िक़रे में यहाँ तक स्पष्ट लिखती हैं कि "यह जोखिम प्रवास प्रारंभ होने के बंदरगाह के गोदाम से प्रवास समाप्त होने के बंदरगाह के गोदाम तक" है, जब तक कि उसका मालिक या उसका प्रतिनिधि उस माल को न छुड़ा ले।

४—जहाज़ और उसके स्वामी का नाम । इस फ़िक़रे में प्रवास के जहाज़ और उसके स्वामी का (जिसने प्रवास का बीमा किया है) नाम लिखा जाता है ।

५—जहाज़ के रोकने तथा ठहरने की स्वाधीनता और गुमराह का फ़िक़रा । इस फ़िक़रे में प्रायः इस प्रकार लिखा जाता है—"यह नियम लागू होगा कि उक्त प्रवास का जहाज़ इस प्रवास में बिना किसी पाबंदी के आगे बढ़ सकता है, प्रवास कर सकता है, और किसी स्थान पर या बंदरगाह पर रुक या ठहर सकता है।" बीच का स्थान जो ख़ाली होता है, उसमें बंदरगाहों का नाम लिखा जाता है; जहाँ पर उसे रुकने और ठहरने की स्वाधीनता है । इन बंदरगाहों का उल्लेख फिर भी इस कारण किया जाता है कि जहाज़ कहीं गुमराह (स्थानांतरित) न हो जाय, अर्थात् दूसरा रास्ता न पकड़ ले। यदि जहाज़ किसी विशेष कारण से गुमराह हो जाय, तो वह क्षंतव्य है । यदि प्रवास को चले हुए जहाज़ के लिये गुमराह होने के पक्ष में शर्त है. तो फिर कोई हर्ज नहीं। और, यदि यह शर्त न हो, तो उस समय यह मानी हुई बात है कि जहाज़ का दूसरा मार्ग ग्रहण करना उसका गुमराह होना समझा जायगा। पर इस शर्त के न होने पर जहाज़ कभी गुमराह न होगा। जब जहाज़ अपने प्रवास के निश्चित मार्ग को त्यागकर दूसरा मार्ग ग्रहण करता है, जो गुमराह की शर्त न होने पर नियम-विरुद्ध है, तब जोखिम में तुरंत परिवर्तन हो जाता है, और उस समय जहाज़ का गुमराह होना समझा जाता है। यदि जहाज़ प्रवास का प्रारंभ न करे, या ठीक समय पर अपने स्थान पर न पहुँचे, तो भी वह गुमराह समझा जाता है। किसी भी प्रकार की अनुचित और अनियमित देर (चाहे प्रवास के प्रारंभ की हो या बीच की) के द्वारा नुक़्सान होने पर बीमा-समिति हानि-पूर्ति की ज़िम्मेदार होती है। निम्न-लिखित कारण उपस्थित होने पर जहाज़ का गुमराह होना क्षंतव्य है—

क—यदि बीमे के इक़रारनामे में ख़ास तौर पर गुमराह की शर्त का उल्लेख है।

ख—यदि नैतिक या भौतिक, दोनों में से किसी शक्ति के प्रयोग की आवश्यकता है।

ग—ऐसी आकस्मिक आवश्यकता, जिसका पूरा करना लाज़िमी है।

घ—किसी प्राणी की रक्षा के लिये देर होने पर।

ङ—जहाज़ के किसी व्यक्ति के लिये औषध-संबंधी सहायता प्राप्त करने के लिये देर होने पर।

च—राज्य के शत्रुओं से बचने के अवसर पर, या राज्य के शत्रुओं और समुद्री चोर-डाकुओं से आत्म-रक्षा करने के अवसर पर।

छ—मौसिम ख़राब होने पर।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि जहाज़ के कप्तान को बलवाई लोग या हवा की ख़राबी दूसरा मार्ग ग्रहण करने के लिये बाध्य करती है। ऐसी दशा में जहाज़ का गुमराह होना क्षमा के योग्य है।

६—मूल्य का फ़िक़रा। इस फ़िक़रे में, जब इक़रारनामा मूल्य का होता है, माल के उस मूल्य का उल्लेख होता है, जो मूल्य दोनों फ़रीक़ों की रज़ामंदी पर स्वीकृत होता है। यदि बीमे का इक़रारनामा मूल्य का नहीं है, और खुला या कोरा इक़रारनामा है, तो यही लिखा जाता है कि "इसका मूल्य..............निर्धारित होगा।" कोरा या खुला बीमा होने पर उस समय मूल्य निर्धारित किया जाता है, जब कि माल नष्ट हो जाय, और बीमा करानेवाला अपने माल का मूल्य निर्धारित कर नष्ट हुए माल का मूल्य माँगता हो। यदि मूल्य दोनों में से किसी प्रकार के इक़रारनामे में उचित से अधिक लगाया जाय, और बीमा करनेवाले को धोका देकर ठगने की इच्छा से बीमा किया जाय, तो इस प्रकार का इक़रारनामा रद समझा जायगा। मूल्य निर्धारित करने के प्रति इस नियम का उपयोग होता है कि नुक़्सान पूरा हुआ है या अधूरा। उसके निर्धारित करने के समय माल की पहली क़ीमत, ख़र्च, बीमे का चंदा और कमीशन ही केवल न जोड़ा जायगा, बल्कि उचित मुनाफ़ा भी। और, खुले या कोरे इक़रारनामे में बीजक की क़ीमत और ख़र्च जोड़कर मूल्य निर्धारित होगा। किराए के विषय में वह वास्तविक किराया ही लौटाया जायगा, जिसे चंदे के साथ बीमा-समिति प्राप्त करती है।

७—समुद्र का ख़तरा या जोखिम (जिसका बीमा हुआ है) की तफ़सील का फ़िक़रा। इस फ़िक़रे में ख़तरा तथा जोखिम का विस्तारपूर्वक स्पष्ट वर्णन होता है; जिसके द्वारा बीमा करानेवाले की रक्षा की जाती है। लॉयड्स के इक़रारनामे का फ़िक़रा समुद्र के सब ख़तरों की जोखिम लेता है। उसके इक़रारनामे के फ़िक़रे में स्पष्ट रूप से समुद्र के ख़तरे, युद्ध के आदमियों का ख़तरा, अग्नि से नुक़्सान, चोर तथा डाकुओं से नुक़्सान, राज्य के शत्रुओं द्वारा जहाज़ के पकड़े जाने पर नुक़्सान तथा अन्य सब प्रकार के नुक़्सानों का पूर्ण उल्लेख होता है। लॉयड्स-संघ उन सबकी पूर्ण ज़िम्मेदारी लेता है। यहाँ पर समुद्र के ख़तरों से तात्पर्य आकस्मिक ख़तरों से है, न कि साधारण वायु के वेग तथा साधारण लहरों से। ख़तरे के लिये तो कोई आकस्मिक घटना होनी चाहिए। जहाज़ का समुद्र में डूब जाना और समुद्र के तत्त्वों द्वारा प्रहार होना आकस्मिक घटनाएँ हैं। अग्नि लगने पर उसके नुक़्सान की पूर्ति उस दशा में की जायगी, जब उसका बीमा विशेष रूप से अग्नि लगने की जोखिम का उल्लेख कर कराया गया है। इसलिये बीमा करानेवाले को सभी ख़तरों का अलग-अलग बीमा कराना चाहिए; क्योंकि "समुद्र के ख़तरे" से ही सब तरह के नुक़्सानों की पूर्ति नहीं होती। "समुद्र का ख़तरा"- वाक्य के द्वारा क़ानूनी दृष्टि से बहुत कम संरक्षण है। जहाज़ में सूराख़ वग़ैरह होने की अवस्था में उसके अंदर पानी आ जाने तथा उसके द्वारा माल नष्ट

हो जाने से तब बीमा-समिति ऐसे नुक़्सान की पूर्ति नहीं करेगी, जब सूराख़ वग़ैरह किसी ज़ोरदार टक्कर से हुआ हो ; क्योंकि इस प्रकार सूराख़ वग़ैरह होना जहाज़ के लिये एक मामूली-सी बात है। इस कारण जोखिम के लिये प्रत्येक विषय का उल्लेख होना आवश्यक है। समुद्र के ख़तरे में एक जहाज़ का दूसरे जहाज़ से टकराना, चट्टान से टक्कर खाना (उस समय चाहे तूफ़ान हो या अच्छा मौसिम हो) और किसी प्रकार के प्रहार से सूराख़ों के द्वारा पानी का आना शुमार किया जाता है; पर फिर भी बीमा कराते समय जोखिमों का अलग-अलग विवरण होना लाभ-दायक है।

८—नालिश और मेहनताने का फ़िक़रा। बीमा करानेवाले व्यक्ति को, उसके प्रतिनिधि या कर्मचारी को, या जिसके सिपुर्द माल किया जाय, उस व्यक्ति को यह क़ानूनी अधिकार है कि प्रवास में किसी प्रकार का नुक़्सान होने या आफ़त आने पर अपने माल की रक्षा करे, और उस कार्य में जो कुछ व्यय हो, उसे समिति से वसूल करे। उसे समिति से इस धन को वसूल करने का पूर्ण अधिकार है। बीमा करनेवाले महाजन तथा बीमा-समितियाँ अपने बीमे के अंश के अनुसार इस नुक़्सान को आपस में बाँटकर अदा करती हैं। इस आकस्मिक विघ्न से रक्षा बीमे के इक़रारनामे से प्रायः जुदा है, पर व्यवहार में अब यह फ़िक़रा भी इक़रारनामे में आ गया है। वर्तमान समय में तार तथा बेतार के तार द्वारा माल के मालिक को अपने माल की ख़बर हर समय मिलती रहती है, और कोई ऐसी बुरी घटना उपस्थित होने पर समिति की कार्यवाही के पूर्व ही वह अपने माल को बचाने की चेष्टा करता है।

९—संबंध-विच्छेद का फ़िक़रा। यह फ़िक़रा ऊपर के फ़िक़रे से ही संबंध रखता है ; क्यों यह स्पष्ट प्रकट करता है कि बीमा करानेवा और बीमा करनेवाला, दोनों में से किसी कोई भी कार्यवाही बीमा किए हुए माल के प्र करने या उसकी हिफ़ाज़त करने के प्रति संब विच्छेद करनेवाली नहीं समझी जायगी। य फ़िक़रा लॉयड्स के सब इक़रारनामों में त अन्यान्य बीमा-समितियों के इक़रारनामों में प्रधा रूप से होता है।

१०—बीमे का चंदा और दर का फ़िक़रा। इ फ़िक़रे में चंदे की प्राप्ति-स्वीकार और उसके ले देने का उल्लेख किया जाता है। बीमे का चंदा क है? वह तो एक बदला है; जिसे बीमा करानेवा बीमा करनेवाले को इक़रारनामे की शर्त के अ सार माल की हानि-पूर्ति की जोखिम पर देता है लॉयड्स के इक़रारनामे में, इस फ़िक़रे में, य स्पष्ट लिखा होता है कि चंदा जमा कर दि गया है; जिससे विदित होता है कि बीमा हो समय चंदा पहले से जमा कर दिया गया है। पर व्यवहार में, इँगलैंड-जैसे देशों में, बीमा होते सम वहाँ के दलाल चंदा समिति को नहीं देते। दल पीछे से चंदा जमा किया करते हैं। भारत में यदि दलाल द्वारा बीमा-समिति से बीमा करा जाय, तो दलाल बीमा होते समय समिति चंदा नहीं देते। समिति, बीमा होने पर, चंदे की रसीद बीमा करानेवाले को देती और यदि उसे दलाल से चंदे का रुप न प्राप्त हो, तो वह बीमा करानेवाले से कु नहीं कह सकती। बीमा समिति उस हालत चंदा रखती है, जब जोखिम शुरू होनेवाली है अन्यथा चंदा लौटा दिया जाता है। यदि स जोखिम पूरी न हो, प्रारंभ होकर कहीं बीच

रुक गई हो, तो किसी अंश में भी बीमा-समिति से चंदा लौटाने को नहीं कहा जा सकता। उस हालत में भी चंदा नहीं लौटाया जा सकता, जब जहाज़ बंदर पर नाव लेते समय नष्ट हो गया हो। यदि गुमराही का अनुचित दोष लगाकर इक़रारनामा रद कर दिया गया हो, तो भी चंदा नहीं लौटाया जा सकता। यदि बीमा-समिति अनुचित व्यवहार द्वारा इक़रारनामे को रद कर दे, तो बीमा करानेवाले को चंदे का रुपया वापस मिलेगा। यदि बीमा करानेवाले से कोई बात बिना जाने प्रकट करने से रह गई हो, और उससे बीमा रद हो गया हो, तो बीमा करानेवाला अपना चंदा वापस ले सकता है। कोरे इक़रारनामे में जब ख़तरों के लिये माल के मूल्य से, उचित चंदे से, अधिक चंदा लिया जाता है, तब अधिक चंदा लौटा दिया जाता है; पर वह उस समय नहीं लौटाया जाता, जब मूल्य के इक़रारनामे में वस्तु का मूल्य अधिक निर्धारित किया जाता है। जब इक़रारनामे की जोखिम एक बार शुरू हो जाती है, तब भी चंदा नहीं लौटाया जा सकता।

११—याददाश्त (बयान)। यह फ़िक़रा विशेष सूचना के रूप में होता है। माल के विषय में बीमा-समिति की कई हिदायतें होती हैं। वे सब इस स्थान पर सूचित की जाती हैं। यह ध्यान में रखने की बात है कि यह फ़िक़रा सभी इक़रारनामों में होता है, और दोनों पक्षों में तय हुई बीमा-संबंधी शर्तों का बयान करता है। नाज, मछली, फल, आटे और बीज इत्यादि पर हानि-पूर्ति की औसत से मुक्त होने की ज़िम्मेदारी दी जाती है, सिवा इसके कि इसका ख़ास तौर पर उल्लेख हो, या जहाज़ नष्ट हो गया हो।

शक्कर, तमाखू, शहद, चमड़े इत्यादि पर ५१ पौंड औसत से मुक्त होने की ज़िम्मेदारी होती है, सिवा इसके कि ले जानेवाला जहाज़ नष्ट हो गया हो।

क—नाज, फल, आटा, बीज, मछली इत्यादि वस्तुएँ, जो बिगड़ या नष्ट हो जानेवाली प्रकृति की हैं, उनके लिये बीमा करनेवाला ख़ास औसत या जहाज़ के नष्ट हो जाने पर ही हानि-पूर्ति करने का ज़िम्मेदार होगा।

ख—जो वस्तुएँ कम बिगड़ने या नष्ट होनेवाली प्रकृति की हैं, जैसे शक्कर, तमाखू, शहद, कपड़ा इत्यादि, उनके लिये तब बीमा करनेवाला नुक़्सान की पूर्ति करने का ज़िम्मेदार होगा, जब नुक़्सान ५) प्रति सैकड़ा उनके मूल्य पर हो।

ग—दूसरी सब प्रकार की वस्तुओं के लिये जहाज़ और किराए के सहित बीमा करनेवाला उस हालत में हानि-पूर्ति करेगा, जब नुक़्सान ३) सैकड़े से अधिक हुआ हो, या कोई ख़ास औसत निर्धारित हो। तब बीमा करनेवाला पूरे नुक़्सान की पूर्ति करेगा, फिर चाहे वह नुक़्सान कितना ही थोड़ा क्यों न हो।

१२—बीमा करनेवालों के हस्ताक्षर और उनमें से प्रत्येक की ज़िम्मेदारी। ऊपर जिन शर्तों का वर्णन किया गया है, वे सब इस फ़िक़रे में आ जाती हैं। इस फ़िक़रे में विशेष औसत और दोनों पक्षों की ज़िम्मेदारियों का विस्तृत वर्णन होता है, सब प्रकार की सूचनाएँ दी जाती हैं, और प्रत्येक पक्ष अपनी जोखिम का स्पष्ट शब्दों में वर्णन कर इक़रारनामे को पूरा करता है।

इस प्रकार सब फ़िक़रे भर जाने पर दोनों पक्ष अपनी-अपनी ज़िम्मेदारियों के नीचे हस्ताक्षर करते हैं।

जी० एस० पथिक

दीप-मालिका

आतुर न होहु ऊधौ, आवति दिवारी अबै ,
वैसियै पुरंदर-कृपा जो लहि जाइगी ;
होत नर ब्रह्म ब्रह्म-ज्ञान सौं बतावत जो ,
कछु इहिं नीति की प्रतीति गहि जाइगी ।
गिरिबर धारि जौ उबारि ब्रज लीन्ह्यौ बलि,
तौ तौ भाँति काहू यह बात रहि जाइगी ;
नातरु हमारी भारी बिरह-बलाय-संग
सारी ब्रह्म-ज्ञानता तिहारी बहि जाइगी ।
आवत दिवारी, बिलखाइ ब्रजवारी कहैं,
अब कैं हमारैं गाम गो-धन पुजैहै को ?
कहै 'रतनाकर' बिबिध पकवान चाहि,
चाह सौं सराहि चख चंचल चलैहै को ?
बिबिध निहोरि, जोरि हाथ, निज साथ लाइ,
दमकति दिव्य दीप-मालिका दिखैहै को ?
कूबरी के कूबर तैं उबरि न पावैं कान्ह,
इंद्र-कोप-लोपक गुबर्द्धन उठैहै को ?

जगन्नाथदास (रत्नाकर)

जन-सत्ता-वादी राज्यों में समाचार-पत्र

The histories of United States of America and Newzealand present good examples of the progress of Democracies.

बड़े देशों में जन-सत्ता का होना समाचार-पत्रों पर निर्भर है। प्राचीन राजनीतिक विचारक कहा करते थे कि आत्म-शासन करनेवाले नागरिकों का समाज उतना ही बड़ा हो सकता है, जहाँ तक एक मनुष्य की वाणी पहुँच सकती है। कारण, वाणी ही के द्वारा वाद-विवाद हो सकता है । परंतु इस कथन में यदि वे इतना और बढ़ा देते, तो अनुचित न होता कि जहाँ अधिकतर लोग एक-दूसरे के पास रहते हैं, केवल वहीं वे मौखिक शब्दों द्वारा उन वृत्तांतों का राजनीतिक ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं, जो वाद-विवाद को लाभ-दायक और बुद्धिमत्ता-पूर्ण बनाने के लिये आवश्यक होते हैं। पिछली शताब्दी में छापेख़ाने की उन्नति ने समाचार-पत्रों के क्षेत्र को बहु-विस्तृत करके सार्वजनिक वाद-विवाद का महत्त्व बढ़ा दिया है। आजकल तो बिजली के तार समाचारों और उन पर जन-समुदाय की सम्मतियों को इतनी जल्दी एक बड़े और बहु-जन-संख्यक देश में फैला देते हैं कि लोग समाचारों और उन पर की हुई टीका-टिप्पणियों को एक ही साथ प्राप्त कर लेते हैं। इसलिये लोगों से जो प्रार्थनाएँ की जाती हैं, अथवा जो तर्क उनके सामने उपस्थित किया जाता है, वह उन पर लगभग उतना ही प्रभाव पैदा करता है, जितना जन-साधारण की सभा में किसी अच्छे वक्ता की वाणी उत्पन्न करती है।

पूर्व युग में यह बात समस्त स्वतंत्र देशों में मान ली गई थी कि साधारण समय में सब लोगों को समाचारों का प्रचार और उन पर वाद-विवाद करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए ; किंतु यदि वे इस शक्ति का दुरुपयोग करें, तो न्यायकारियों को उन्हें दंड देने की भी आज्ञा होनी चाहिए। पहले-पहल मिल्टन के समय में बिना लाइसेंस (आज्ञा) के प्रकाशन-कार्य होता था । जन-सत्ता-वादी सरकार के उपासक सदा इसके लिये प्रयत्नशील रहे कि समाचार-प्रकाशन की स्वतंत्रता सुरक्षित बनी रहे; क्योंकि जन-सत्ता का ठीक-ठीक व्यवहार होने के लिये इसका होना परमावश्यक है । निदान इस पर इतना ध्यान दिया गया कि लगभग समस्त आधुनिक स्वतंत्र राष्ट्रों के राज्य-संगठन में यह बात मान्य हो गई। जन-सत्ता-वादी सरकार पर विश्वास इस प्राचीन कहावत पर निर्धारित रहा कि "लोग सत्य बातों को जानते रहें और उन पर वाद-विवाद करने की उन्हें स्वतंत्रता हो, तो सब काम ठीक होता रहेगा ।" यह मानी हुई बात है कि यदि प्रेस स्वतंत्र होगा, तो उस पर सच्ची बातें प्रकाशित करने का विश्वास किया जा सकता है, क्योंकि झूठी बातें शीघ्र ही मालूम हो जाती हैं, और उनको प्रकाशित करनेवाले समाचार-पत्र पर अविश्वास होने लगता है । जो लोग यह जानते हैं कि जनता सदा सत्य बात जानने की इच्छुक रहती है, उनकी पारस्परिक स्पर्धा सत्य और झूठ का अंतर बताती रहती है। स्वतंत्र वाद-विवाद से सब बातों की छान-बीन होती रहती है।

लोग तर्क सुनते हैं, और उनकी ओर उनका ध्यान आकर्षित होता है । लोग यह बात जान जाते हैं कि सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग किस प्रकार करना चाहिए । संभव है कि कुछ समय के लिये वे उचित पथ से बहक जायँ ; परंतु किसी प्रकार के बंधन की अपेक्षा साधारण स्वतंत्रता से सदा अच्छे कार्य होंगे । स्वतंत्र देशों में सिद्धांतों पर अब कोई दोषारोपण नहीं करता, चाहे उनसे समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति होती हो, जिनकी पूर्ति होने की उनसे आशा थी । इस प्रकार प्रेस की स्वतंत्रता को यदि प्रजा-सत्ता का नाविक कहें, तो अत्युक्ति न होगी ।

यहाँ पर यह कह देना अनुचित न होगा कि लोग प्रेस का जितना पक्ष ले रहे थे, वह उसके योग्य था । पिछले अनेक वर्षों में एक के पश्चात् दूसरा देश इस बात का प्रयत्न करता रहा है कि वह राजों और विशिष्ट समुदायों से पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करे । इस कार्य में प्रेस जनता के पक्ष की एक बड़ी प्रबल शक्ति रहा है । उसने बुराइयों और अत्याचारों का भंडा-फोड़ किया है । उसने स्वेच्छाचारी कार्य-कर्ताओं को दोषी ठहराया है, और उनकी स्वार्थ-पूर्ण तथा मूर्खता से भरी हुई नीति की निंदा की है । उसने जनता के जगाने में स्वतंत्रता के भक्तों की सहायता की है । इसीलिये वह लोगों की सहानुभूति और विश्वास का पात्र हुआ ; क्योंकि उसने जनता की सम्मति-शक्ति को एकत्रित किया और राष्ट्र-भर को उसका दिग्दर्शन कराया । विना उसके सरकारी शस्त्र-शक्ति पर जन-समुदाय की विजय कदापि न हो सकती ।

एक समय ऐसा आ गया, जब वे डर और कठिनाइयाँ दिखलाई देने लगीं, जिनका पहले ध्यान भी नहीं किया गया था । यह मालूम हो गया कि अपनी बात को बहुसंख्यक लोगों तक पहुँचाने की शक्ति का उपयोग, विविध उद्देश्यों की पूर्ति के लिये, कई प्रकार से किया जा सकता है । कुछ उदाहरण नीचे दिए जाते हैं—

प्राचीन राज्य-प्रणालियों में यह प्रथा थी कि जिन सच बातों पर असत्य का वे प्रचार करना चाहते थे, उन्हें अपने समाचार-पत्रों के द्वारा प्रकाशित करा दिया करते थे, यद्यपि लोग उन बातों की सत्यता में कम विश्वास करते थे, जो सरकारी समाचार-पत्रों द्वारा प्रकाशित होती थीं । प्रिंस बिस्मार्क ने पहले-पहल इस तरकीब का खूब व्यवहार किया । वह ग़ैर-सरकारी पत्रों को अच्छी सहायता देकर अपने मत का प्रचार करता था, और अपने विचारों को लोगों के गले मढ़ देता था । इस प्रकार मोल लिए हुए पत्रों से उसका काम खूब निकला, और उसकी स्थिति सुदृढ़ हो गई । इस उदाहरण का दूसरे देशों ने भी अनुकरण किया । अस्तु । इस ढंग से प्रकट रूप में प्रेस की स्वतंत्रता का अपहरण नहीं हुआ ; परंतु सत्यता का स्रोत अपने उद्गम-स्थान से ही विषैला हो गया ।

संयुक्त-राज्य अमेरिका और इँगलैंड-सरीखे देशों में, जहाँ बहुत समय से स्वतंत्रता के सिद्धांतों की उपासना की जाती है, कुछ ऐसे उग्र पत्र-संपादक थे, जो शासकों और राजनीतिज्ञों की हत्या करने का समर्थन करते थे ! क्या ऐसा करने की आज्ञा दी जा सकती है ? क्या राजनीतिक उद्देश्य होने से किसी का वध करने की उत्तेजना को न्याय-युक्त कहा जा सकता है ? लगभग चालीस वर्ष हुए, इस प्रश्न का उत्तर अमेरिका ने 'जोहन मोसट'-नामक एक जर्मन अराजक को दंड देकर दे दिया है । जिस देश में अन्याय को दूर करने के लिये विधिवत् साधन मौजूद हैं, वहाँ राजनीतिक व्यक्ति का वध होना जन-सत्ता के प्रति केवल एक बड़ा अपराध ही नहीं, बल्कि जन-सत्ता-वाद के नाम पर एक अमिट कलंक है ।

दूसरा प्रश्न यह उठा था कि विशेष अवस्थाओं का विचार किए विना सदा सत्य रहनेवाले सिद्धांतों का प्रयोग करना भी कठिन है । कारण, रोक-टोक के अभाव से किसी प्रकार का संकोच न करनेवाले लोग झूठी बातें छापकर सार्वजनिक शांति-भंग करते और लोगों को भड़काते हैं । उनकी इन बातों का पता लगाना और उनका खंडन करना भी किसी समय बड़ा कठिन हो जाता है । कभी-कभी तो ये लोग किसी-किसी की निंदा करके खूब रुपया ठग लेते हैं । इस प्रकार के उदाहरणों से यह प्रमाणित होता है कि यद्यपि अनियमित प्रकाशन-कार्य स्वतंत्र-सरकार का जीवन है, परंतु उसका दुरुपयोग भी हो सकता है ।

समाचार-पत्रों के सस्ते होने से जन-समुदाय में जो आशा उत्पन्न हुई थी, वह कई कारणों से कम हो गई है । बड़े-बड़े शहरों में जन-संख्या के बढ़ जाने, हर श्रेणी के

लोगों में पढ़ने की रुचि उत्पन्न होने और भिन्न-भिन्न विषयों के समाचार जानने की इच्छा से समाचार-पत्रों के विशेष अधिकता से पढ़े जाने और उनका प्रचार बढ़ जाने से दैनिक और साप्ताहिक पत्रों का आकार भी बढ़ गया, और राजनीतिक विषयों के अतिरिक्त उनमें अन्य विषयों के भी अनेक समाचार रहने लगे । दूसरी बात यह हुई कि यदि पत्र सफल हो गया, तो उसके स्वामी को आर्थिक लाभ भी अच्छा होने लगा । इसलिये समाचार-पत्र-प्रकाशन एक प्रकार का लाभ-दायक व्यापार भी हो गया । इन समाचार-पत्रों के अधिकतर पाठक उस श्रेणी के थे, जिनकी शिक्षा बहुत कम थी, और जिनको उच्च प्रकार का ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा भी बहुत कम थी । वे मामूली रोज़-मर्रा की बातों को जानने के लिये अधिक उत्सुक रहते थे । जैसे, कहाँ भयंकर आग लगी, कहाँ भीषण हत्या हुई, किस बड़े आदमी का विवाह हुआ इत्यादि । इसलिये कुछ देशों में एक नए प्रकार के समाचार-पत्र उत्पन्न हो गए ; जिनको उपर्युक्त प्रकार के पाठकों से अच्छी सहायता मिली । कारण, एक तो वे अर्ध-शिक्षित थे, दूसरे उनमें समालोचना करने की शक्ति भी नहीं थी । इसके अतिरिक्त वे बहुत-सी बातों की चिंता भी नहीं करते थे । पढ़े-लिखे लोगों की सम्मति से मुक्त होकर इस प्रकार के पत्र साधारण लोगों को अधिक रुचिकर होने लगे, और एक श्रेणी के लोगों को दूसरी श्रेणी के लोगों के विरुद्ध भड़काकर उनके क्रोध और पक्षपात को उत्तेजित करने लगे । इन पत्रों के समाचारों में इस प्रकार के दोषारोपण और मिथ्या बातें रहती थीं, जिनको उनके बहुत कम पाठक झूठ समझ पाते थे । ऐसे समाचार-पत्रों के अधिकतर पाठक अर्ध-शिक्षित होते थे, इसलिये उन मिथ्या और तर्क-हीन बातों के फैलाना बड़ा सुगम था, जिनके वास्तविक रहस्य को प्रकाशित करने का कोई उपाय ही न था ।

इस प्रकार के समाचार-पत्रों का प्रचार होने के कारण विचारवान् लोग यह सोचने लगे कि समस्त संसार के प्रेसों में एक प्रकार का ऐसा परिवर्तन हो रहा है, जिसका नैतिक और राजनीतिक प्रभाव अशुभ है । इस प्रकार समाचार-पत्र दो अंकों में बट गए । व्यापारिक और स्वतंत्र विचारक ।

व्यापारिक-पत्र वे हुए, जो उन व्यक्तियों के हाथ समाचार बेचने लगे, जो उन समाचारों को ख़रीदना चाहते थे । वे अपने किसी अंक के किसी खंड-विशेष का कुछ स्थान उन विज्ञापन-दाताओं के हाथ बेचने लगे, जो अपने माल को सर्व-साधारण की दृष्टि के सामने रखना चाहते थे । उनकी मति-गति से यह तो स्पष्ट हो गया कि उनका उद्देश्य एक व्यापारिक कार्य करना है, और आर्थिक लाभ ही उसका अभीष्ट है ।

स्वतंत्र विचारक पत्र वे हुए, जो एक सलाहकार और पथ-प्रदर्शक का कार्य करने लगे । वे लोगों की सम्मति को बनाते और उनके कार्यों पर प्रभाव डालते रहे । वर्तमान समस्याओं पर टीका-टिप्पणी करना उनका कार्य रहा । वे कुछ विचारों का समर्थन करते रहे, और किसी विशेष नीति का विरोध । किसी विशेष नीति का समर्थन करते हुए अमुक पत्र लिखता है कि उसके कार्य की उत्पत्ति सार्वजनिक हित की दृष्टि और निष्काम भाव से समाज-सेवा करने की इच्छा से हुई है, बहुधा यही भाव समाचार-पत्रों के मालिकों और संपादकों को कार्य करने के लिये उकसाता है ; किंतु वास्तविक और अप्रकाशित उद्देश्य स्वार्थ-पूर्ण और नीच भी हो सकता है । अतएव कभी-कभी ऐसा भी हुआ कि पत्र-संचालक या उनके मित्र राष्ट्र के किसी कार्य-विशेष से आर्थिक लाभ उठाने की इच्छा ही से किसी नीति-विशेष का समर्थन करने लगे अथवा उन लोगों से धन की सहायता प्राप्त करने लगे, जो चाहते थे कि समाचार-पत्र उनके पक्ष में कुछ लिख दें । इसलिये जन-साधारण के लिये यह जानना असंभव हो गया कि किसी विशेष कार्य में किसी समाचार-पत्र के, किसी विशेष नीति के समर्थन का वास्तविक उद्देश्य क्या है । निदान, बहुत-सी दशाओं में ऐसे पत्रों की स्वार्थ-रहित देश-भक्ति ही की बातें मान ली जाती रहीं । साधारण पाठक जिस प्रकार उन समाचारों में विश्वास कर लेते हैं, जिन्हें वे पढ़ते हैं, उसी तरह वे उन सम्मतियों और तर्कों को भी ठीक मान लेते हैं, जो उन समाचारों के साथ प्रकाशित होते हैं । इसलिये यह बहुत संभव है कि जिस प्रकार एक समाचार-पत्र विज्ञापन के लिये स्थान बेचता है, और कभी-कभी समाचार भी बेचता है (अर्थात् कुछ समाचार फैलाने के लिये उसे धन मिलता है), उसी प्रकार वर्तमान कार्यों पर टीका-टिप्पणी और विशेष जीविका का प्र

पादन करते हुए उसका गुप्त रहस्य कुछ और ही होता है।

अब हम राजनीतिक समाचार-पत्रों की उन्नति की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं।

स्वतंत्र देशों में बड़े-बड़े समाचार-पत्र ही समाचारों का प्रचार करने और राजनीतिक विषयों पर सम्मति प्रकट करने का एक-मात्र और आवश्यक उपाय रहे हैं, और अब भी हैं। दैनिक पत्र विशेष घटनाओं का वर्णन करते हैं, और उन घटनाओं के संबंध में प्रसिद्ध पुरुषों की मौखिक और लिखित सम्मति प्रकट करते हैं। और, जैसा ऊपर कहा जा चुका है कि समाचार-पत्र इन घटनाओं का वर्णन करते हुए किसी ख़ास बात के कहे जाने पर अपनी टीका भी करते हैं। इस प्रकार वे अपने पाठकों के मन पर अपने राजनीतिक विचारों का प्रभाव डालते हैं। ये राजनीतिक विचार बहुधा पत्र के स्वामी अथवा उसके संपादक के होते हैं। यह दलबंदी है। बहुधा पाठक इस बात को जानते हुए भी कोई आपत्ति नहीं करते। जब तक सत्य न तो छिपाया जाय और न तोड़-मरोड़कर प्रकट किया जाय, तब तक कोई हानि नहीं होती। जिस प्रकार एक सार्वजनिक वक्ता किसी मंच पर खड़े होकर अपने दल के पक्ष का समर्थन करता है, उसी प्रकार एक समाचार-पत्र भी अपने दल के विचारों का पूर्ण प्रचार करके उसके पक्ष का समर्थन करता है। वक्ता और समाचार-पत्र, दोनों ही से निष्पक्ष होने की आशा न करनी चाहिए। हमें इतने ही से संतुष्ट हो जाना चाहिए कि वे साधारणतः ईमानदार हैं, बातों को तोड़ते-मरोड़ते नहीं, और न अपने विपक्षी की अवस्था का मिथ्या वर्णन ही करते हैं।

यदि प्रत्येक समाचार-पत्र सत्य की छान-बीन करे, पूर्ण सत्य और सिवा सत्य के अन्य कुछ न कहे, सब सम्मतियों को प्रकाशित होने के लिये समान अवसर दे, और इस तरह सर्व-साधारण को उन भिन्न-भिन्न सम्मतियों को जाँचने का मौक़ा दे, तो जहाँ तक राजनीति का संबंध है, ऐसे समाचार-पत्रों से लाभ-ही-लाभ होगा। इससे जन-साधारण में विचार करने की शक्ति आवेगी, और वे अपनी सम्मति स्वयं बनावेंगे। यद्यपि कभी-कभी वे भूलें करेंगे, परंतु इन भूलों के लिये वे केवल अपने ही को दोषी समझेंगे। किंतु वर्तमान संसार में ऐसे गुणों का होना कठिन है।

आजकल तो इतना ही पर्याप्त है कि जिस समय किसी दल-विशेष का पत्र किसी घटना या व्याख्यान का वर्णन करे, उस समय उसे दूसरे दलों के साथ न्याय करने को भी ध्यान रखना चाहिए। ऐसा करने से स्वयं उस पत्र को लाभ होगा; क्योंकि एक तो उसकी प्रतिष्ठा होगी, और दूसरे विपक्षी-दल के लोग भी उसे पढ़ेंगे। इसके अतिरिक्त अपने दल के प्रति भी उस पत्र की ज़िम्मेदारी होती है, जो उसे अपने पक्ष की पूँजी समझता है। यदि वह पत्र आँख बंद करके चलने लगे, अथवा व्यक्ति-गत आक्षेपों और गाली-गलौज पर उतारू हो जाय, तो उसकी प्रतिष्ठा कम हो जाती है, और लोग उसके कहने पर कुछ ध्यान भी नहीं देते, बल्कि उलटे उसी मनुष्य का लाभ होता है, जिसकी वह निंदा करता है, और उसकी प्रतिष्ठा बढ़ जाती है। विपक्षी को यदि आप हानि पहुँचाना चाहते हैं, तो उसी के वचनों अथवा कामों की भूलों को लोगों के सामने रखिए। कुछ थोड़े-से समझदार लोग ऐसे होते हैं, जो घटनाओं को देखकर अपनी सम्मति स्वयं निश्चित कर लेते हैं। उन पर किसी की निंदा और प्रशंसा का प्रभाव नहीं पड़ता। ये ही लोग बहुधा साधारण लोगों पर अपना प्रभाव डालते हैं।

पिछली शताब्दी के मध्य भाग तक जो समाचार-पत्र केवल राजनीतिक बातों से संबंध रखते थे, वे एक दल-विशेष के मुख-पत्र ही रहते थे, और अपने दल के नेताओं की प्रत्येक बात जानते रहते थे। बहुधा उनका संपादक एक स्वतंत्र और ओजस्वी व्यक्ति होता था। वह अपनी मन-मानी करता था। अपनी इच्छा के अनुसार कभी किसी की प्रशंसा कर देता था, और कभी किसी की निंदा। किंतु प्रत्येक दशा में जन-साधारण की सम्मति प्रकट करना और उनको उचित पथ बतलाना ही एक पत्र का मुख्य कर्तव्य था, लाभ प्राप्त करने की इच्छा उसके राजनीतिक भावों पर अपना प्रभाव अवश्य डालती थी; किंतु राजनीतिक सिद्धांतों का समर्थन और समाचारों की बहुतायत से लोगों को स्वयं निर्णय करने का अवसर देना ही उसका मुख्य उद्देश्य रहता था।

कुछ दिनों के पश्चात् पत्रों ने एक दूसरे अंग में उन्नति की। यद्यपि कुछ पत्रों का अब भी यह दावा है कि वे सत्य बातों को ही प्रकाशित करते हैं, और निस्स्वार्थ भाव से लोगों को परामर्श देते हैं, परंतु अब पत्र-संचालन मुख्यतया एक

व्यापारिक कारबार हो गया है। जिस प्रकार और काम लाभ की दृष्टि से किए जाते हैं, उसी प्रकार पत्र भी लाभ ही के दृष्टि से निकाले जाते हैं। पत्र का स्वामी उसके संपादक को दबाए रखता है। संपादक एक विद्वान् पुरुष होता है, उसे अपनी योग्यता पर अभिमान होता है, और बहुधा उसके कुछ विशेष विचार होते हैं, जिनका वह प्रचार करना चाहता है। पत्र का स्वामी एक व्यापारी आदमी होता है, और यद्यपि वह शक्ति और धन की इच्छा रखता है, परंतु उसे राजनीतिक विचारों की अपेक्षा लाभ का अधिक ध्यान रहता है। संपादक और उसके सहायक चाहें जन-साधारण की सेवा के शुद्ध भाव ही से कार्य करते हों, और जो कुछ वे लिखते हों, उसमें उन्हें पूर्ण विश्वास भी हो, परंतु पत्र के स्वामी को पत्र का प्रचार बढ़ने से लाभ अवश्य होना चाहिए, और प्रचार-वृद्धि के द्वारा विज्ञापनों से और भी अधिक आमदनी होनी चाहिए। जब सत्य बातों को प्रकाशित करने, लोगों को उत्तम उपदेश देने और पत्र का प्रचार करने में विरोध उपस्थित होता है, तो पत्र के प्रचार के उद्देश्य से उसी मार्ग का अवलंबन किया जाता है, जिससे ग्राहकगण प्रसन्न होते हैं। यह देखकर कि जन-साधारण की सम्मति किस ओर जा रही है, पत्र तत्कालीन भावों के साथ-साथ चलेगा, और कभी-कभी उन्हें बढ़ा भी देगा। और, यदि बुद्धिमानी से काम लिया जायगा, तो किसी भाव का उदय होते ही उस ओर चल पड़ेगा। लाभ की दूसरी दशा उस समय उपस्थित होती है, जब कोई संप्रदाय विशेषकर अपने निजी लाभ के लिये पत्र की सहायता चाहता है। एक संप्रदाय कुछ पत्रों को ले लेता है, और उनसे आर्थिक लाभ प्राप्त करने के अतिरिक्त उनकी शक्ति को अन्य कारबारों की उन्नति करने में लगता है, और राजनीतिक नेताओं की अभिलाषाओं को भी बढ़ाता है। जब पत्र की नीति उसके सच्चे विचारों से नहीं, किंतु गुप्त उद्देश्यों से निर्धारित होती है, तब ऐसी दशा में जन-साधारण, जो गुप्त उद्देश्यों से अनभिज्ञ होते हैं, भ्रम में पड़ जाते हैं। कुछ थोड़े-से ही ऐसे देश हैं, जहाँ सार्वजनिक जीवन की अवनति के साथ-साथ पत्रों की शैली का भी पतन हो गया है, और उपर्युक्त प्रकार के दोषों ने गंभीर स्थिति प्राप्त कर ली है। परंतु यह भय सदा उपस्थित रहनेवाला है।

समाचार-पत्र की शक्ति का दूसरा दुरुपयोग उस समय मालूम होता है, जब कोई एक व्यक्ति या कई मनुष्यों का एक समुदाय किसी एक पत्र से अथवा कई पत्रों से अपनी निजी राजनीतिक उन्नति का काम लेता है। जिस प्रकार एक राजनीतिज्ञ व्याख्यानों द्वारा अपना प्रभाव जमा लेता है, अथवा निर्वाचकों के वोट प्राप्त कर लेता है, उसी प्रकार पत्रों के स्वामी भी अपने पत्रों द्वारा वही काम कर लेते हैं। यहाँ पर यह विचार उत्पन्न होता है कि ज़ब वास्तविक बातें मालूम हो जाती हैं, तब ऐसे समाचार-पत्रों का प्रभाव कम हो जाता है ; क्योंकि समझदार पाठक पत्र के स्वामी के कार्य का उद्देश्य समझ जाते हैं, और उनकी दृष्टि में वह पत्र गिर जाता है। किंतु यह भी संभव है कि वास्तविक बातें कभी न मालूम हों। राजनीतिक बातों के अतिरिक्त यदि पत्र में आकर्षित करनेवाली अन्य बातें अधिक होती हैं, और उसके पाठक बहुत होते हैं, तो जो सहायता वह किसी राजनीतिक समुदाय या किसी व्यक्ति-विशेष को देता है, वह अपना काम करती और लोगों के हृदयों पर अपना प्रभाव डालती रहती है। दूसरे यह बात भी स्मरण रखनी चाहिए कि पत्र के पाठकों में अधिकतर लोग न तो पूरी-पूरी जानकारी रखते हैं, और न इतने समझदार ही होते हैं कि वे समझ जायँ कि उनके साथ कैसी चाल चली जा रही है।

जब कोई समाचार-पत्र किसी भी उद्देश्य से लोगों की सम्मति और उनके वोटों पर अपना प्रभाव डालना और उन्हें एक विशेष मार्ग की ओर ले जाना चाहता है, तो वह दो तरीक़ों से काम लेता है। ए तरीक़ा तो तर्क का है। वह किसी नीति का समर्थन करेगा या विरोध, किसी दल के नेता की प्रशंसा करे या गाली-गलौंज की शरण लेकर उसकी निंदा उसका कार्य ठीक उसी तरह का होगा, जैसा किसी स में किसी वक्ता का होता है। अनुभव से मालूम हुआ है कि जिस देश में किसी दल-विशेष की सरकार होती है, वहाँ इस प्रकार का समर्थन आदि करना अनिवार्य है। परंतु य कार्य न्याय-युक्त सीमा के अंदर ही होना चाहिए। इ जिस प्रश्न पर विचार किया जाता है, उसका त निकल आता है, और उसकी ओर लोगों का ध्यान आ हो जाता है। यदि मिथ्या-भाषण और दोषारोपण

काम न लिया जाय, तो यह तरीक़ा ठीक है, और इसमें कोई हर्ज भी नहीं है। राजनीतिक युद्ध में कड़ी चोटें सहनी ही पड़ती हैं।

दूसरे तरीक़े में अधिक चालाकी से काम लिया जाता है, और उसका प्रभाव भी अधिक होता है। घटनाओं को देखकर ही अधिकतर लोग अपनी सम्मति बनाते हैं। इसलिये जो समाचार-पत्र चाहता है कि उसके विचारों का प्रचार हो, वह घटनाओं ही को लेकर अपना मामला तैयार करता है। कभी-कभी वह घटनाओं को मान लेता है। जैसे वह किसी व्यक्ति या राजनीतिक संघ के उद्देश्यों अथवा इरादों के सिद्धांत को लोगों के सामने उपस्थित करता है, और फिर उस सिद्धांत को एक वास्तविक बात मानकर उसी पर दोषारोपण की नींव रखता है। कभी-कभी वह घटनाओं का आविष्कार भी कर लेता है। जैसे कोई अफ़वाह सुन ली, या स्वयं ही प्रचारित कर दी, और फिर उस अफ़वाह का इस प्रकार ज़िक्र किया कि मानों वह एक वास्तविक घटना है, और उसका ख़ूब ज़ोर-शोर से प्रचार किया, यहाँ तक कि बार-बार कहकर उसे लोगों के हृदयों पर जमा दिया। किंतु इस उपाय का उपयोग बड़ी सावधानी से करना होता है; क्योंकि संभव है, झूठी घटनाओं का भेद खुल जाय। यदि इसी तरह कई बार घटनाओं का भेद खुल जाय, और वे असत्य प्रमाणित हों, तो पत्र की प्रतिष्ठा कम हो जाती है।

तर्क और झूठी घटनाओं के वर्णन आदि दोनों उपायों की अपेक्षा एक अधिक सुगम और प्रभावशाली उपाय घटनाओं के चुनने का है। हरएक विवाद में बहुत-सी ऐसी घटनाएँ होती हैं, जिनसे दोनों पक्षों के समर्थन का काम लिया जा सकता है। यदि कोई पत्र होशियारी से क्रमानुसार ऐसे समाचार चुनकर प्रकाशित करता है, जो एक ही परिणाम की ओर ले जाते हैं, और दूसरी ओर ले जानेवाले सारे समाचारों को या तो बिलकुल दबा देता है या संक्षिप्त रूप से कहता है, तो उस पर सरासर झूठ बोलने का दोष नहीं लगाया जा सकता। यद्यपि वास्तव में वह झूठ बोलता है; क्योंकि वह अपने पाठकों के सामने उन समस्त घटनाओं को नहीं उपस्थित करता, जिनके द्वारा वे स्वतंत्र सम्मति क़ायम कर सकें। सत्य को दबा रखना भी उतना ही दोष-पूर्ण है, जितना झूठ की ओर संकेत करना। यह निष्क्रिय मिथ्या-वर्णन क्रियात्मक वर्णन की अपेक्षा जितना अधिक बुद्धिमत्ता-पूर्ण है, उतना ही सरल भी है; क्योंकि यहाँ दोषों का पकड़ा जाना अत्यंत कठिन है। दल-विशेष के वक्ता और पत्र विना जाने ही उसकी ओर चले जाते हैं। किंतु उसका प्रभाव अधिक होता है, और बहुधा जान-बूझकर उसका प्रयोग किया जाता है। प्रायः समाचार-पत्र अपना पक्ष-समर्थन करने के लिये ऐसे समाचार-भर देते हैं, जिनसे उनके विपक्षी का कार्य महाघृणित प्रतीत होता है, और दूसरे पक्ष की एक बात का भी ज़िक्र नहीं करते। इससे लोगों को वास्तविक घटनाएँ जानने और उन पर अपनी ठीक-ठीक राय क़ायम करने का अवसर नहीं मिलता। इस प्रकार का कार्य निस्संदेह निंदनीय कहा जा सकता है।

एक वक्ता का व्याख्यान थोड़े लोग सुन सकते हैं; परंतु समाचार-पत्र के वाचक और श्रोता बहुत-से हो सकते हैं। समाचार-पत्रों का होना इसलिये भी परमावश्यक है कि उनमें राजनीतिक समाचारों के अतिरिक्त ऐसी बहुत-सी बातें होती हैं, जिनकी आवश्यकता कुछ लोगों को अपने व्यापार के लिये होती है, और कुछ लोगों को केवल उत्सुकता-पूर्ति के लिये। दूसरी बात यह है कि जन-साधारण को सार्वजनिक कामों में इतना अधिक उत्साह नहीं होता कि वे सार्वजनिक सभाओं में जायँ, अथवा व्यवस्थापक-सभाओं की कार्यवाही पढ़ें। इसलिये केवल समाचार-पत्र ही उनकी राजनीतिक शिक्षा का एक-मात्र साधन हैं, और कदाचित् वे केवल समाचार-पत्रों के अतिरिक्त और कुछ पढ़ते भी नहीं। समाचार-पत्र अपने तर्क को प्रतिदिन और प्रतिसप्ताह अपने पाठकों के सामने रखते हैं, और अपने तर्क की पुष्टि में ऐसी अनेक घटनाओं का वर्णन करते हैं, जिनसे उनके पाठकों पर ख़ूब प्रभाव पड़े।

पिछले पचास वर्षों में बड़े-बड़े समाचार-पत्रों की शक्ति की वृद्धि में बहुत उन्नति हुई है। समाचार-पत्रों के पाठकों की संख्या बढ़ गई है, और लोगों को पत्र पढ़ने की बान भी अधिक पड़ गई है। पत्रों का क्षेत्र भी विस्तीर्ण हो गया है; क्योंकि वे सारे संसार के समाचार देते और नए-नए विषयों का वर्णन करते हैं। इसीलिये उनकी आय भी बढ़ गई है। परंतु साथ ही ख़र्च भी अधिक हो गया है। इस समय एक पत्र

चलाने के लिये पहले की अपेक्षा अधिक पूँजी की आवश्यकता होती है। इसलिये बड़े-बड़े समाचार-पत्र बढ़ गए हैं, और छोटे-छोटे ग़ायब हो गए हैं। नए समाचार-पत्र थोड़े निकलते हैं; क्योंकि एक अच्छा दैनिक पत्र चलाने के लिये अधिक धन की आवश्यकता होती है, और कुछ जोखिम भी उठानी पड़ती है। लगभग प्रत्येक देश के बड़े-बड़े शहरों में बड़े-बड़े समाचार-पत्रों की संख्या कम है, किंतु उनका प्रभाव अधिक। इसका यह कारण नहीं है कि उनके लेख बड़े अच्छे होते हैं। कहीं-कहीं तो दशा बिलकुल इसके विपरीत है। इसके अतिरिक्त समाचारों की अपेक्षा अग्र-लेखों का प्रभाव कम पड़ता है। सबसे अधिक विशेष बात यह है कि पत्र की नीति देखी जाती है, और उसकी मर्यादा तथा प्रतिष्ठा का विचार किया जाता है। यह मर्यादा और प्रतिष्ठा पत्र को अपने कार्य के विस्तार से प्राप्त होती है। समाचार-पत्र वह शक्ति है, जिसे कोई भुला नहीं सकता।

नारायणप्रसाद अरोड़ा

पुष्प-हार

(१)

उस समय गोविंद की अवस्था ११ साल की थी। शांता भी ८ वर्ष की बालिका थी। दोनों छुटपन से एक ही आँगन में खेले थे। एक ही प्रकाश के स्पर्श से वे नन्ही-नन्ही कलियाँ विकसित हुईं, और एक ही वायु-मंडल में रहकर उन कलियों में सौरभ का संचार हुआ। गोविंद शांता के विना रह नहीं सकता था, और शांता गोविंद के विना अकुला उठती थी। लोग कहते थे, प्रकाश और छाया का जोड़ा है। दोनों एकसाथ उठते-बैठते थे, एकसाथ खाते-पीते थे, घर के सामने की सड़क पर एक ही साथ धूल में खेला करते थे। पढ़ने के लिये स्कूल भी साथ-साथ जाते थे। यदि कभी गोविंद को स्कूल से आने में देर हो जाती, तो शांता चौराहे पर खड़ी-खड़ी उसकी राह देखा करती। साथ की लड़कियाँ चली जातीं, तब भी वह खड़ी रहती, गोविंद को साथ लेकर घर जाती। एक दिन उसको स्कूल से लौटने में देर हो गई। शांता रूठ गई। वह उस दिन गोविंद से बोली नहीं। उसका यह क्रोध ईर्षा से था, अथवा वह अकेली खेलती रही, इसलिये नाराज़ हुई, पता नहीं। किंतु उस दिन से गोविंद ने बाहर खेलने जाना छोड़ दिया। घर के पास ही एक बाग़ था। उसमें अमरूद खूब थे। सबेरा होने के पहले ही दोनों बाग़ में जा पहुँचते, वहीं खेला करते। प्रकाश की किरणें बाग़ के झुरमुट में से झाँककर उनकी क्रीड़ा को देखा करतीं। कहीं दोनों ने गुलाब के फूल तोड़े। बाज़ी लगाई—देखें कौन कितने फूल तोड़ता है। फूल चुने, और तोड़-मरोड़कर वहीं बिखरा दिए। फिर बेले के हार गूँथना शुरू किया, अथवा तितलियों के पकड़ने की बाज़ी लगी। माली के लाख मना करने पर भी गोविंद अमरूद के पेड़ पर चढ़ जाता। शांता डरती, कहीं डाल टूट न जाय। किंतु माली बदमाशी करता है, कच्चे अमरूद लाकर देता है। गोविंद के तोड़े हुए फल मीठे होते हैं। इच्छा होते हुए भी वह गोविंद को पेड़ पर चढ़ने से मना न करती। संध्या के समय जब पक्षी अपने घोसलों में लौटने लगते, सूर्य की किरणें वृक्षों की पत्तियों पर स्वर्ण-रेणु छितरा देतीं, उस समय भी दोनों बाग़ में खेला करते। सूर्य क्षितिज के नीचे जाने के पहले ही बाग़ में अपनी छाया छोड़ जाते। अँधेरा होने लगता। घर का पुराना नौकर रामदास दोनों को ढूँढ़ता हुआ बाग़ में आता। उसके पैरों की आहट पाते ही दोनों घर भाग जाते।

एक दिन की बात है। शांता और गोविंद, दोनों बाग़ में खेल रहे थे। उस दिन प्रातःकाल से ही पूर्व-दिशा ने बादलों के एक हलके घूँघट में अपना मुँह छिपा रक्खा था। क्षितिज से कुछ ऊपर बादलों की दो-तीन टोलियाँ घूम रही थीं। किसी के अलक्ष्य करों ने उनकी कोरों पर सुनहरा मुलम्मा कर दिया। किंतु शांता को रहस्यमयी प्रकृति के इस दृश्य को देखने का समय न था। उसकी गुड़िया का ब्याह था। वह उसी को सजाने में लगी हुई थी। बाग़ में मौलसिरी का एक पेड़ था। शांता और गोविंद सबेरे यहाँ खेलने आया करते हैं, यही सोचकर मानों वह पेड़ उतनी जगह को फूलों से सजा दिया करता था। माली ने उन फूलों को बीना, और

शांता को दे दिए। फूलों को लेकर शांता माला बनाने बैठी। माला बनाई जा रही थी गोविंद के गुड्डे के लिये। ब्याह की रीति और रस्मों का पालन नियमानुसार होता था, उसी प्रकार जैसे कि शांता ने एक दिन रामलीला में देखा था। शांता की जय-माला तैयार हो गई। कन्या का शृंगार हो गया; किंतु वर का अब तक पता नहीं। गोविंद ने उस दिन ख़ास तौर से एक गुड्डा तैयार करवाया था; किंतु उसकी मा ने अब तक बनाकर नहीं दिया। सायत टली जाती थी। खेल में गड़बड़ होते देख शांता ने उस माला को गोविंद के ही गले में डाल दिया। 'लो, हमारा-तुम्हारा ब्याह हो गया'।—यह कहकर शांता हँसने लगी। हास्य की उस धीमी लहर में उसको रामदास के खाँसने की आवाज़ सुनाई दी। दोनों घर के भीतर भाग गए। वे दिन कैसे सुखमय थे, उसी प्रकार जैसे कि स्वप्न। लड़कपन की यह नाव हँसी-ख़ुशी की मौजों में वायु के हलके-हलके थपेड़े खाकर कैसे मज़े में चलती थी!

(२)

इसी प्रकार पाँच साल बीत गए। शांता अब वह अधखिली कली नहीं रही। रूप की पँखड़ियाँ एक-एक करके खिलने लगीं। पानी बरस जाने के बाद जैसे प्रकृति निखर जाती है, सौंदर्य की ज्योति से उसी प्रकार उसका शरीर मँज गया। कैशोर यौवन के क्षेत्र में पैर रखने की राह ढूँढ़ रहा था; किंतु सकुचाता था। और कोई उपाय न देख उसने अपना वह लजीलापन आँखों को सौंप दिया। हृदय की आंतरिक भावनाएँ अपने पंख को फैलाकर उड़ने के लिये छटपटा रही थीं; किंतु रास्ता अब भी नहीं मालूम था।

शांता अब ब्याह के योग्य हो गई, इस बात का पता सबसे पहले लगा उसकी मा को। वह कई बार अपने पति को इस बात की याद दिला चुकी थी; किंतु 'अभी कुछ दिन और ठहर जाओ', यही कहकर रामकिशोर टाल दिया करते थे। एक दिन जब वह भोजन करने के लिये आए, तो उनकी पत्नी ने फिर वही बात छेड़ी—'तुम्हें तो तनिक भी चिंता नहीं। ऐसे कामों में ज़रा दौड़-धूप करनी पड़ती है।' शांता पास ही के कमरे में बैठी हुई एक रेशमी रूमाल में फूल काढ़ रही थी। वह मन लगाकर अपना काम कर रही थी। मा के शब्दों की भनक उसके कानों में पड़ी। उत्सुकता ने प्रश्न किया—'वह कौन-सा काम है?' उसने सुना पिता मा से कह रहे हैं—'मैंने आज तुम्हारे प्रस्ताव को गोविंद के पिता के सामने रक्खा था। उन्होंने स्वीकार भी कर लिया है।'

'ऊह!' शांता की उँगली में सुई चुभ गई। उसकी आँखें थीं सुई के ऊपर, किंतु हृदय था कहीं और।

'तो फिर इसी महीने में शांता का ब्याह हो जाना चाहिए।'

सुनकर शांता की हृदय-तंत्री झनझना उठी। गोविंद के साथ उसका ब्याह होगा, यह कभी उसने सोचा नहीं, कभी इच्छा नहीं प्रकट की। छुटपन में वह गोविंद को गोविंद कहती थी, और अब भी गोविंद उसके लिये गोविंद ही है। उसके प्रेम का क्षितिज पहले ही-सा परिमित और मेघ-हीन था। वह गोविंद को कितना प्यार करती है, यह उसने कभी अंदाज़ा नहीं। उसके भाव-सिंधु की गंभीरता में आज लहरें उठीं। मन किसी अज्ञात माधुर्य के स्पर्श से विह्वल हो उठा। अभी तक वह यों ही गोविंद के साथ हँसती थी, खेलती थी। 'हम भिन्न-भिन्न पथ के दो पथिक हैं'—यह बात कभी उसके ध्यान में नहीं आई। आज उसने सोचा—'यदि कहीं गोविंद से मेरा साथ छुट जाता, तो?'

इतने में कमरे के भीतर किसी की छाया पड़ी। शांता ने सिर उठाकर देखा, गोविंद मौजूद है।

इन दिनों गोविंद शांता से बहुत कम मिलता-जुलता था। 'आजकल पढ़ने से अवकाश नहीं मिलता', न आने का यही बहाना था। वह आता था सिर्फ़ इतवार के दिन, और वह भी उसकी मा के पास। कई दिनों बाद अचानक गोविंद को देखकर शांता पूछ बैठी—'आज पढ़ने से फ़ुर्सत कैसे मिल गई?'

'जब पढ़ने में जी न लगा, तभी छुट्टी है। हाँ, तुमसे एक बात कहनी है।'

'कहो।'

किंतु बात-चीत अधूरी ही रह गई। शांता के कान में आवाज़ पड़ी 'शांता!' शांता के हृदय में उथल-पुथल मच गई। आज यह पहला दिन था, जब गोविंद के सामने उसके गुलाबी गाल लज्जा के मारे लाल हो गए। वह सकपकाना-सी होकर उठ खड़ी हुई। गोविंद शांता के

इस भाव-परिवर्तन को समझा नहीं। उसने कहा—'सुनो, सिर्फ़ एक छोटी-सी बात है।'

'देखो न, मा बुला रही हैं', कहकर शांता कमरे के बाहर चली गई।

(३)

कुछ दिन बाद गोविंद के साथ शांता का ब्याह हो गया। किंतु वह ब्याह का सुख अधिक दिनों तक नहीं भोग पाई। उन दिनों शहर में हैज़े का बड़ा ज़ोर था। अचानक गोविंद को हैज़ा हो गया। दिन-भर उसकी अवस्था ख़राब रही। दूसरे दिन उसकी मृत्यु हो गई। शांता रोई, किंतु स्वामी के लिये नहीं। स्वामी को तो उसने अभी पहचाना भी न था। ब्याह के मर्म को तो उसने अभी समझा भी न था। उस चिर नवीन बंधन से उसके जीवन में अभी कुछ भी नवीनता नहीं आई थी। वह रोई अपने छुटपन के साथी गोविंद के लिये। रोते-रोते उसने अपनी आँखें सुजा डालीं। माता ने समझाया, सखी-सहेलियों ने ढाढ़स बँधाया; किंतु शांता के व्यथित चित्त को शांति न मिली। कई दिन बीत गए। धीरे-धीरे उसकी अवस्था ख़राब होने लगी। सफ़ेद वस्त्र से ढका हुआ उसका वह मुरझाया हुआ शरीर ठीक ऐसा मालूम पड़ता था, जैसे पाले की मारी हुई कमलिनी। उसने कमरे से बाहर निकलना छोड़ दिया। सहेलियाँ उसके दुःख में सहानुभूति दिखाने आतीं, मुहल्ले की बड़ी-बूढ़ी औरतें उसकी माता के पास आकर उसके अभाग्य की चर्चा किया करतीं; किंतु वह कमरे में बंद रहती, तकिए में मुँह छिपाए रोया करती। उसके इस दुःख के रोने में कभी-कभी सुख का आभास झलक आता था। वह स्वयं नहीं समझती थी कि यह परिवर्तन कैसे हो जाता है। रोते-रोते अचानक दरवाज़े की ओर ताकने लगती—'गोविंद अभी तक मनाने नहीं आया।' इस रोने में उसको सुख मिलता था। वह भूल जाती कि गोविंद जहाँ गया है, वह स्थान उसके रोने की आवाज़ की पहुँच से परे है। कभी-कभी ऐसा होता कि जब कोई उसे बुलाने आता, तो वह चौंक उठती। दौड़कर किंवाड़ खोल देती। क्षण-भर के बाद ही उसकी कल्पना का स्रोत फिर भँवर में पड़ जाता। घंटों बैठी हुई किसी की प्रतीक्षा किया करती। जब थक जाती, तो रोने लगती। झुँझलाकर गोविंद के पहनने-ओढ़ने के कपड़ों को ठीक करने लगती, उसकी पढ़ने की किताबों की धूल झाड़ा करती, उनको अलमारी में सजाकर रखती। किंतु इन पुस्तकों को पढ़नेवाला नहीं है, यह सोचकर उसका कलेजा मुँह को आने लगता। वह रोने लगती। एक दिन वह गोविंद का बक्स खोलकर बैठी। ढेर-के-ढेर कपड़े रक्खे हुए थे। वह रोती और कपड़े निकालती जाती थी। सब कपड़े निकाल-निकालकर बाहर रक्खे। सबसे नीचे की तह में उसे एक डिबिया मिली। उसे खोलकर देखा—सूखे हुए मौलसिरी के फूलों का हार था। देखकर शांता चौंक उठी। फूलों से अब भी एक प्रकार की भीनी-भीनी गंध निकल रही थी। शायद यह पहला ही मौक़ा था, जब बंद कर देने के बाद डिबिया खोली गई। शांता ने हार बाहर निकाला। फूलों की धूल बन गई। एक लाल रेशमी डोरा उसके हाथ में रह गया। पाँच साल पहले की एक घटना उसको याद आई। गोविंद के गले में इस हार को डालते हुए उसने कहा था—'लो, हमारा-तुम्हारा ब्याह हो गया।' उसे सुध आई उस दिन की, अ एक दिन लोगों को दिखाने के लिये सचमुच ही उसके ब्याह का ढोंग रचा गया था। उसके चार-पाँच दिन बाद ही उसके संतोष और सुख की चूड़ियाँ फूटी थीं। उसने रंगीन वस्त्र उतारकर सफ़ेद धोती पहनी थी। उसने अपने विधवा-वेश की ओर देखा, और देखा अलंकार-शून्य अपने हाथों को। उसकी आँखें डबडबा आईं। छुटपन के साथी के साथ-साथ उसने जो कुछ खो दिया है, उसका आज ज्ञान हुआ। फूलों की धूल अब भी उसके सामने थी। "नाथ, इन फूलों की सुगंधि के बिखरने के पहले ही, तुम्हारे जीवन-पुष्प की पँखड़ियाँ बिखर गईं" कहती हुई संज्ञा-हीन होकर वह वहीं गिर पड़ी!

कृष्णानंद गुप्त

तिल

रूप, रंग, रचि, चतुरई बिधि हरख्यो अति हीय।
हिल्यो हाथ चुइ बुंद मसि, बन्यो बदन-तिल तीय।
रंग, रूप-रचि अति रुचिर, बिधि बिचार पुनि कीन्ह।
लगै काहु की डीठि जनि, दीन डिठौना चीन्ह।

श्रीरामाज्ञा द्विवेदी 'समीर'

कर्बला

उपक्रम

मोहर्रम के महीने में, सारे हिंदुस्तान में, ताजिए उठते हैं, आलम निकाले जाते हैं, मेले लगते हैं, मर्सिए गाए जाते हैं, ताज़ियों पर शर्बत चढ़ाया जाता है, लोग हरे-हरे वस्त्र धारण करते हैं, वेश्याएं तक विलास और आभूषणों का त्याग कर देती हैं। यह कहना ज़रा भी अत्युक्ति-पूर्ण नहीं है कि समस्त भारत में यह उत्सव जितना सर्वमान्य है, उतना शायद ही और कोई उत्सव हो। किंतु, हमारे अशिक्षित भाइयों का तो कहना ही क्या, शिक्षित-समुदाय में भी ऐसे बहुत कम लोग होंगे, जो इस उत्सव का ऐतिहासिक महत्त्व समझते हों, और उन घटनाओं से परिचित हों, जिनकी याद इस उत्सव द्वारा ताज़ा की जाती है। लोग इसे एक गुप्त रहस्य-सा समझते हैं। आज हम हिंदुओं के आगे इस रहस्य का पर्दा उठाने की चेष्टा करते हैं।

(१)

हज़रत मोहम्मद की मृत्यु के बाद कुछ ऐसी परिस्थिति हुई कि ख़िलाफ़त का पद उनके चचेरे भाई और दामाद हज़रत अली को न मिलकर उमर फ़ारूक़ को मिला। हज़रत मोहम्मद ने स्वयं व्यवस्था की थी कि ख़लीफ़ा सर्व-सम्मति से चुना जाय, और सर्व-सम्मति ने उमर फ़ारूक़ को चुना। इनके बाद अबूबकर चुने गए। अबूबकर के बाद उसमान को यह पद मिला। उसमान अपने कुटुंबवालों के साथ पक्षपात करते थे। उन्होंने ऊँचे राजकीय पद उन्हीं को दे रक्खे थे। उनकी इस अनीति से बिगड़कर कुछ लोगों ने उनकी हत्या कर डाली। उसमान के संबंधियों को संदेह हुआ कि हज़रत अली की ही प्रेरणा से यह हत्या हुई है। अतएव उसमान के बाद अली ख़लीफ़ा तो हुए, किंतु उसमान के एक आत्मीय संबंधी ने, जिसका नाम मुआविया था, और जो शाम-प्रांत का सूबेदार था, अली के हाथों पर बैयत न की, अर्थात् अली को ख़लीफ़ा नहीं स्वीकार किया। अली ने मुआविया को दंड देने के लिये सेना नियुक्त की। लड़ाइयाँ हुईं; किंतु पाँच वर्ष की लगातार फ़ौजकशी के बाद अंत को मुआविया ही की विजय हुई। हज़रत अली अपने प्रतिद्वंद्वी के समान कूट-नीतिज्ञ न थे। वह अभी मुआविया को दबाने के लिये एक नई सेना तैयार करने की फ़िक्र ही में थे कि एक हत्यारे ने उनका वध कर डाला।

मुआविया ने वचन दिया था कि मैं अपने बाद अपने पुत्र को ख़लीफ़ा न नामज़द करूँगा, बल्कि हज़रत अली के ज्येष्ठ पुत्र हसन को ख़लीफ़ा बनाऊँगा। लेकिन जब उसका अंत-काल निकट आया, तो उसने अपने पुत्र यज़ीद को ख़लीफ़ा बना दिया। हसन इसके पहले ही मर चुके थे। उनके छोटे भाई हज़रत हुसैन ख़िलाफ़त के उम्मेदवार थे; किंतु मुआविया ने यज़ीद को अपना उत्तराधिकारी बनाकर हुसैन को निराश कर दिया।

यज़ीद को अब सबसे ज़्यादा भय हुसैन का था, जो हज़रत अली के बेटे और हज़रत मोहम्मद के नवासे थे। उनकी माता का नाम फ़ातिमा ज़ोहरा था; जिनका स्थान मुसलिम-विदुषियों में सबसे श्रेष्ठ है। हुसैन बड़े विद्वान्, सच्चरित्र, शांत-प्रकृति, नम्र, सहिष्णु, मानी, उदार और धार्मिक पुरुष थे। उनके चरित्र का प्रधान अंग उनकी प्रगाढ़ धार्मिकता थी। वह वीर थे; ऐसे वीर कि अरब में कोई उनकी जोड़ न था। किंतु वह राजनीति के दाँव-पेंच और कुत्सित व्यवहार से परिचित न थे। यज़ीद राजनीति में पक्का था। उसने अपने पिता अमीर मुआविया से कूट नीति की शिक्षा पाई थी। उसके गोत्र (क़बीले) के लोग सब कूट-नीति के पंडित थे। धर्म को वे केवल स्वार्थ का एक साधन समझते थे। भोग-विलास और ऐश्वर्य-भोग का उनको चसका पड़ चुका था। ऐसे प्राणियों के सामने व्रतधारी हुसैन की न चल सकती थी, और न चली।

यज़ीद ने मदीने के सूबेदार को लिखा कि तुम हुसैन से मेरे नाम पर बैयत, अर्थात् उनसे मेरे ख़लीफ़ा होने की शपथ, लो। मतलब यह कि वह गुप्त रीति से उन्हें क़त्ल करने का षड्यंत्र रचने लगा। हुसैन ने बैयत लेने से इनकार किया। यज़ीद ने समझा, हुसैन बग़ावत करना चाहते हैं, अतएव वह उनसे लड़ने के लिये

शक्ति-संचय करने लगा। कूफ़ा-प्रांत के लोगों को हुसैन से प्रेम था। वे उन्हीं को अपना ख़लीफ़ा बनाने के पक्ष में थे। यज़ीद को जो यह बात मालूम हुई, तो उसने कूफ़ा के नेताओं को धमकाना और नाना प्रकार के कष्ट देना शुरू किया। तब कूफ़ा-निवासियों ने हुसैन के पास, जो उस समय मदीने से मक्के चले गए थे, सँदेसा भेजा कि आप आकर हमें इस संकट से मुक्त कीजिए। हुसैन ने इस सँदेसे का कुछ उत्तर न दिया। वह राज्य के लिये खून नहीं बहाना चाहते थे। इधर कूफ़ा में हुसैन के प्रेमियों की संख्या बढ़ने लगी। लोग उनके नाम पर बैयत करने लगे। इन लोगों की संख्या थोड़े ही दिनों में २० हज़ार तक पहुँच गई। इसी बीच में इन्होंने दो पैग़ाम और भेजे; किंतु हुसैन ने उनका भी कुछ उत्तर न दिया। अंत को कूफ़ावालों ने एक अत्यंत आग्रह-पूर्ण पत्र लिखा; जिसमें हुसैन को हज़रत मोहम्मद और दीन-इसलाम के वास्ते अपनी सहायता को बुलाया था। बहुत अनुनय-विनय के बाद लिखा था—"अगर आप न आए, तो कल क़यामत के दिन अल्लाहताला के हुज़ूर में हम आप पर दावा करेंगे, और कहेंगे—इलाही, हुसैन ने हमारे ऊपर अत्याचार किया था; क्योंकि हमारे ऊपर अत्याचार होते देखकर यह ख़ामोश बैठे रहे। और, सब लोग फ़र्याद करेंगे कि ऐ ख़ुदा, हुसैन से हमारा बदला दिला दे। उस समय आप क्या जवाब देंगे, और ख़ुदा को क्या मुँह दिखावेंगे?"

धर्म-परायण हुसैन ने यह पत्र पढ़ा, तो उनके रोएँ खड़े हो आए, और उनका दिल पानी-पानी हो गया। गालों पर आँसू बहने लगे। तुरत उन लोगों के नाम एक आश्वासन-पत्र लिखा कि "मैं शीघ्र ही तुम्हारी सहायता को आऊँगा।" अपने चचेरे भाई मुसलिम के हाथ उन्होंने यह पत्र कूफ़ावालों के पास भेज दिया।

मुसलिम सफ़र की कठिनाइयाँ झेलते हुए कूफ़ा पहुँचे। उस समय कूफ़ा का सूबेदार एक शांत पुरुष था; जिसने लोगों को समझाया कि "शहर में कोई उपद्रव न होने पावे। मैं उस वक़्त तक किसी को न छेड़ूँगा, जब तक कोई मुझे दिक़ न करेगा।"

यज़ीद को मुसलिम के कूफ़ा पहुँचने की ख़बर मिली, तो उसने एक दूसरे सूबेदार को कूफ़ा में नियुक्त किया; जिसका नाम 'ओबैद बिन ज़ियाद' था। यह बड़ा निठुर और कुटिल प्रकृति का मनुष्य था। इसने आते-ही-आते कूफ़ा में एक सभा की, और उसमें घोषणा की कि "जो लोग यज़ीद के नाम पर बैयत लेंगे, उनके ऊपर ख़लीफ़ा की कृपा-दृष्टि होगी; पर जो लोग हुसैन के नाम पर बैयत लेंगे, उनके साथ किसी तरह की रिआयत न की जायगी। हम उसे सूली पर चढ़ा देंगे, और उसकी जागीर या वृत्ति ज़ब्त कर लेंगे।" इस घोषणा ने यथेष्ट प्रभाव डाला। कूफ़ावालों के कलेजे काँप उठे! ज़ियाद को वे भली भाँति जानते थे। उसी दिन मुसलिम भी मस्जिद में नमाज़ पढ़ाने के लिये खड़े हुए, तो किसी ने उनका साथ न दिया। जिन लोगों ने पहले हुसैन के नाम आवेदन-पत्र भेजे थे, उनका अब कहीं पता न था। सभी के हौसले पस्त हो गए थे। मुसलिम ने एक बार कुछ लोगों की मदद से ज़ियाद को घेर लिया। लेकिन ज़ियाद ने अपने एक विश्वास-पात्र सेवक के मकान की छत पर चढ़कर लोगों को यह सँदेसा दिलाया "कि जो लोग यज़ीद की मदद करेंगे, उन्हें जागीर दी जायगी, और जो लोग बग़ावत करेंगे, उन्हें ऐसा दंड दिया जायगा कि उनके नाम को रोनेवाला भी न रहेगा।" नेतागण यह धमकी सुनकर दहल उठे, और मुसलिम को छोड़-छोड़कर दस-दस बीस-बीस आदमी बिदा होने लगे। यहाँ तक कि वहाँ मुसलिम अकेला रह गया। विवश होकर उसने एक वृद्धा के घर में शरण लेकर अपनी जान बचाई। दूसरे दिन जब ओबैदुल्लाह को मालूम हुआ कि मुसलिम अमुक वृद्धा के घर में छिपा हुआ है, तो उसने ३०० सिपाहियों को उसे गिरफ़्तार करने के लिये भेजा। मुसलिम ने तलवार खींच ली, और शत्रुओं पर टूट पड़े। पर अकेले आदमी थे। थोड़ी देर में ज़ख़्मी होकर गिर पड़े। उस वक़्त सूबेदार से उनकी जो बातें हुईं, उनसे विदित होता है कि वह कैसे वीर पुरुष थे। गवर्नर उनकी निडर बातों से और भी गरम हो गया। उसने तुरत उन्हें क़त्ल करा दिया।

(२)

हुसैन, अपने पूज्य पिता की भाँति, फ़क़ीरों का-सा सरल जीवन व्यतीत करने के लिये बनाए गए थे। कोई चतुर आदमी होता, तो उस समय दुर्गम पहाड़ियों में जा छिपता,

और यमन के प्राकृतिक दुर्गों में बैठकर चारों ओर से सेना एकत्र करता । देश में उनका जितना मान और लोगों को उन पर जितनी भक्ति थी, उसके देखते २०-२५ हज़ार सेना एकत्र कर लेना कठिन न था । किंतु वह अपनेको पहले ही से हारा हुआ समझने लगे । यह सोचकर कहीं भागते न थे कि शत्रु मुझे ज़रूर खोज निकालेगा । सेना जमा करने का भी प्रयत्न न करते थे । यहाँ तक कि जो लोग उनके साथ थे, उन्हें भी अपने पास से चले जाने की सलाह देते थे । यही नहीं, उन्होंने यह कभी नहीं कहा कि मैं ख़लीफ़ा बनना चाहता हूँ ; बल्कि सदैव यही कहते रहे कि मुझे लौट जाने दो, मैं किसी से लड़ाई नहीं करना चाहता । उनकी आत्मा इतनी उच्च थी कि वह सांसारिक राज्य-भोग के लिये संग्राम-क्षेत्र में उतरकर उसे कलुषित नहीं करना चाहते थे । उनके जीवन का उद्देश्य आत्म-शुद्धि और धार्मिक जीवन था । वह कूफ़ा आने को इसलिये नहीं सहमत हुए थे कि वहाँ अपनी ख़िलाफ़त क़ायम करें ; बल्कि इसलिये कि वह अपने धर्मावलंबियों की मुसीबत को किसी तरह देख न सकते थे । वह कूफ़ा जाते समय सब संबंधियों से स्पष्ट शब्दों में कहते थे कि मैं शहीद होने जा रहा हूँ । यहाँ तक कि वह एक स्वप्न का भी उल्लेख करते थे, जिसमें उनके नाना ने उनको स्वर्ग आने का निमंत्रण दिया था, और वह उनके आने की प्रतीक्षा कर रहे थे । उनकी टेक केवल यह थी कि मैं यज़ीद के नाम पर बैयत न करूँगा । इसका कारण यही था कि यज़ीद शराब-ख़ोर, व्यभिचारी और इसलाम-धर्म के नियमों का पालन न करनेवाला था । यदि यज़ीद ने उनकी हत्या कराने की चेष्टा न की होती, तो वह शांति-पूर्वक मदीने में ज़िंदगी-भर पड़े रहते । पर समस्या कुछ ऐसी थी कि उनके जीवित रहते हुए यज़ीद को अपना स्थान सुरक्षित नहीं मालूम हो सकता था । उसके निष्कंटक राज्य-भोग के लिये हुसैन का उसकी राह से सदा के लिये हट जाना परमावश्यक था । और, चूँकि ख़िलाफ़त एक धर्म-प्रधान संस्था थी, इसलिये उसे हुसैन के रण-क्षेत्र में आने का इतना भय न था, जितना उनके शांति-सेवन का ; क्योंकि शांति-सेवन से जनता पर उनका प्रभाव बढ़ता जाता । इस बात की पुष्टि इसी से होती है कि यज़ीद ने यह भी कहा था कि हुसैन का केवल उसके नाम पर बैयत लेना ही काफ़ी नहीं है, उन्हें उसके दरबार में भी आना चाहिए । यज़ीद को उनकी बैयत पर विश्वास न था । वह उन्हें किसी भाँति अपने दरबार में बुलाकर उनके जीवन-कांड को समाप्त कर देना चाहता था । इसलिये यह धारणा कि हुसैन अपनी ख़िलाफ़त क़ायम करने के लिये कूफ़ा गए, निर्मूल सिद्ध होती है । वह कूफ़ा इसलिये गए कि अत्याचार-पीड़ित कूफ़ा-निवासियों की सहायता करना चाहते थे, और उन्हें प्राण-रक्षा के लिये कोई जगह नज़र नहीं आती थी । यदि वह ख़िलाफ़त के उद्देश्य से कूफ़ा जाते, तो केवल अपने कुटुंब के ७२ प्राणियों के साथ न जाते, जिनमें बाल, वृद्ध, सभी शामिल थे । कूफ़ावालों पर कितना ही विश्वास होने पर भी वह अपने साथ ज़्यादा आदमियों को लाने का प्रयत्न करते । इसके सिवा उन्हें पहले से यह बात ज्ञात थी कि कूफ़ा के लोग अपने वचन पर दृढ़ रहनेवाले नहीं हैं । कई बार इसका प्रमाण मिल चुका था कि वे थोड़े से प्रलोभन पर भी अपने वचनों से विमुख हो जाते हैं । हुसैन के इष्ट-मित्रों ने उनका ध्यान कूफ़ावालों की दुर्बलता की ओर खींचा भी, पर हुसैन ने उनकी सलाह न मानी । वह शहादत का प्याला पीने के लिये, अपनेको धर्म की बेदी पर बलि देने के खिये, विकल हो रहे थे । इसी से हितैषियों के मना करने पर भी कूफ़ा को चले । दैव-संयोग से यह तिथि वही थी, जिस दिन कूफ़ा में मुसलिम शहीद हुए थे । १८ दिन की कठिन यात्रा के बाद वह 'नाहनेवा' के समीप, कर्बला के मैदान में पहुँचे; जो फ़रात-नदी के किनारे था । इस मैदान में न कोई बस्ती थी, न कोई वृक्ष । कूफ़ा के गवर्नर की आज्ञा से वह इसी निर्जन और निर्जल स्थान में डेरे डालने को विवश किए गए ।

शत्रुओं की सेना हुसैन के पीछे-पीछे मक्के ही से आ रही थी । और सेनाएँ भी चारों ओर फैला दी गई थीं कि हुसैन किसी गुप्त मार्ग से कूफ़ा न पहुँच जायँ । कर्बला पहुँचने के एक दिन पहले 'हुर' की सेना मिली । हुसैन ने हुर को बुलाकर पूछा कि "तुम मेरे पक्ष में हो, या विपक्ष में ?" हुर ने कहा—"मैं आपसे लड़ने के लिये भेजा गया हूँ ।" जब तीसरा पहर हुआ, तो हुसैन नमाज़ पढ़ने के लिये खड़े हुए, और उन्होंने हुर से पूछा कि "तू क्या मेरे पीछे खड़ा होकर नमाज़ पढ़ेगा ?" हुर ने हुसैन के पीछे खड़े होकर

नमाज़ पढ़ना स्वीकार किया। हुसैन ने अपने साथियों के साथ हुर की सेना को भी नमाज़ पढ़ाई। हुर ने यज़ीद की बैयत ली थी। पर वह सद्-विचारशील पुरुष था। हज़रत मोहम्मद के नवासे से लड़ने में उसे संकोच होता था। वह बड़े धर्म-संकट में पड़ा था। वह सच्चे दिल से चाहता था कि हुसैन मक्का लौट जायँ। वह प्रकट रूप से तो हुसैन को ओबैदुल्लाह के पास ले चलने की धमकी देता था, पर दिल से उन्हें अपने हाथों कोई हानि नहीं पहुँचाना चाहता था। उसने खुले हुए शब्दों में हुसैन से कहा—"यदि मुझसे कोई ऐसा अनुचित कार्य हो गया, जिससे आपको कोई कष्ट पहुँचा, तो मेरे लोक और परलोक, दोनों ही बिगड़ जायँगे। और, अगर मैं आपको ओबैदुल्लाह के पास न ले जाऊँ, तो कूफ़ा में नहीं घुस सकता। हाँ, संसार विस्तृत है; क़यामत के दिन आपके नाना की कृपा-दृष्टि से वंचित होने की अपेक्षा यही कहीं अच्छा है कि किसी दूसरी ओर निकल जाऊँ। आप मुख्य मार्ग को छोड़कर किसी अज्ञात मार्ग से कहीं और चले जायँ, मैं कूफ़ा के गवर्नर अर्थात् 'आमिल' को लिख दूँगा कि हुसैन से मेरी भेंट नहीं हुई; वह किसी दूसरी तरफ़ चले गए। मैं आपको क़सम दिलाता हूँ कि अपने ऊपर दया कीजिए और कूफ़ा न जाइए।" पर हुसैन ने कहा—"तुम मुझे मौत से क्या डराते हो? मैं तो शहीद होने के लिये चला ही हूँ।" उस समय यदि हुसैन हुर की सेना पर आक्रमण करते, तो संभव था कि उसे परास्त कर देते; पर अपने इष्ट-मित्रों के अनुरोध करने पर भी उन्होंने यही कहा कि "हम लड़ाई के मैदान में अग्रसर न होंगे, यह हमारी नीति के विरुद्ध है।" इससे भी यही बात सिद्ध होती है कि हुसैन को अब अपनी आत्मरक्षा का कोई उपाय न सूझता था। उनमें फ़क़ीरों का-सा संतोष था: पर योद्धाओं का-सा धैर्य न था; जो कठिन-से-कठिन समय पर भी कष्ट-निवारण का उपाय निकाल लेता है। उनमें महात्मा गाँधी का आत्म-समर्पण था; किंतु शिवाजी की दूरदर्शिता न थी।

(३)

इधर तो हुसैन और उनके आत्मीय तथा सहायक गण अपने-अपने ख़ीमे गाड़ रहे थे, और उधर ओबैदुल्लाह—कूफ़ा का गवर्नर—लड़ाई की तैयारी में दत्त-चित्त था। उसने 'उमर बिन साद' नाम के एक योद्धा को बुलाकर हुसैन की हत्या करने के लिये नियुक्त किया, और इसके बदले में 'रे'-सूबे के आमिल का उच्च पद पेश किया। उमर बिन साद विवेक-हीन प्राणी न था। वह भली भाँति जानता था कि हुसैन की हत्या करने से मेरे मुख पर ऐसी कालिमा लग जायगी, जो प्रलय तक न धुल सकेगी; किंतु रे-सूबे का उच्च पद उसे असमंजस में डाले हुए था। उसके संबंधियों ने समझाया कि "तुम हुसैन को क़त्ल करने का बीड़ा न उठाओ; इसका परिणाम अच्छा न होगा।" उमर ने जाकर ओबैदुल्लाह से कहा भी कि "मेरे सिर पर हुसैन के वध का भार न रखिए", लेकिन 'रे' की गवर्नरी छोड़ने को वह तैयार न हो सका। अतएव जब ओबैदुल्लाह ने साफ़-साफ़ कह दिया कि "रे का उच्च पद हुसैन की हत्या किए विना नहीं मिल सकता; अगर तुम्हें यह सौदा महँगा जँचता हो, तो कोई ज़बरदस्ती नहीं है। किसी और को यह पद दिया जायगा।", तो उमर का आसन डोल गया। वह इस निषिद्ध कार्य के लिये तैयार हो गया। उसने अपनी आत्मा को ऐश्वर्य-लालसा के हाथ बेच दिया। ओबैदुल्लाह ने प्रसन्न होकर उसे बहुत कुछ इनाम-इक़राम दिया, और ४ हज़ार सैनिक उसके साथ नियुक्त कर दिए। उमर बिन साद की आत्मा अब भी उसे क्षुब्ध करती रही। वह सारी रात पड़ा अपनी अवस्था या दुरवस्था पर विचार करता रहा। वह जिस विचार से देखता, उसी से अपना यह कर्म घृणित जान पड़ता था। प्रातःकाल वह फिर कूफ़ा के गवर्नर के पास गया। उसने फिर अपनी लाचारी दिखाई। लेकिन 'रे' की सूबेदारी ने उस पर फिर विजय पाई। जब वह चलने लगा, तो ओबैदुल्लाह ने उसे कड़ी ताक़ीद कर दी कि हुसैन और उनके साथी फ़रात-नदी के समीप किसी तरह न आने पावें, और एक घूँट पानी भी न पी सकें। हुर की १००० सेना भी उमर के साथ आ मिली। इस प्रकार उमर के साथ ५ हज़ार सैनिक हो गए। उमर अब भी यही चाहता था कि हुसैन के साथ लड़ना न पड़े। उसने एक दूत उनके पास भेजकर पूछा कि "आप अब क्या निश्चय करते हैं?" हुसैन ने कहा—"कूफ़ावालों ने मुझसे दग़ा की है। उन्होंने अपने कष्ट की कथा कहकर मुझे यहाँ बुलाया, और अ वे मेरे शत्रु हो गए हैं। ऐसी दशा में मैं मक्के लौट जा

चाहता हूँ, यदि मुझे ज़बरदस्ती रोका न जाय।" उमर मन में प्रसन्न हुआ कि शायद अब कलंक से बच जाऊँ। उसने यह समाचार तुरत ओबैदुल्लाह को लिख भेजा। लेकिन वहाँ तो हुसैन की हत्या करने का निश्चय हो चुका था। उसने उमर को उत्तर दिया कि "हुसैन से बैयत लो। और, यदि वह इस पर राज़ी न हों, तो मेरे पास लाओ।"

शत्रुओं को, इतनी सेना जमा कर लेने पर भी, सहसा हुसैन पर आक्रमण करते डर लगता था कि कहीं जनता में उपद्रव न मच जाय। इसलिये इधर तो उमर बिन साद कर्बला को चला, और उधर ओबैदुल्लाह ने कूफ़ा की जामा-मसजिद में लोगों को जमा किया। उसने एक व्याख्यान देकर उन्हें समझाया कि "यज़ीद के ख़ानदान ने तुम लोगों पर कितना न्याय-युक्त शासन किया है, और वे तुम्हारे साथ कितनी उदारता से पेश आए हैं! यज़ीद ने अपने सुशासन से देश को कितना समृद्धि-पूर्ण बना दिया है! रास्ते में अब चोरों और लुटेरों का कोई खटका नहीं है। न्यायालयों में सच्चा, निष्पक्ष न्याय होता है। उसने कर्मचारियों के वेतन बढ़ा दिए हैं। राजभक्तों की जागीरें बढ़ा दी गई हैं। विद्रोहियों के कोट तहस-नहस कर दिए हैं, जिसमें वे तुम्हारी शांति में बाधक न हो सकें। तुम्हारे जीवन-निर्वाह के लिये उसने चिरस्थायी सुविधाएँ दे रक्खी हैं। ये सब उसकी दयाशीलता और उदारता के प्रमाण हैं। यज़ीद ने मेरे नाम फ़रमान भेजा है कि मैं तुम्हारे ऊपर विशेष कृपा-दृष्टि करूँ, और जिसे एक दीनार वृत्ति मिलती है, उसकी वृत्ति १०० दीनार कर दूँ। इसी तरह वेतन में भी वृद्धि कर दूँ, और तुम्हें उसके शत्रु हुसैन से लड़ने के लिये भेजूँ। यदि तुम अपनी उन्नति और वृद्धि चाहते हो, तो तुरत तैयार हो जाओ। विलंब करने से काम बिगड़ जायगा।"

यह व्याख्यान सुनते ही स्वार्थ के मतवाले नेता लोग, धर्माधर्म के विचार को तिलांजलि देकर, समर-भूमि में चलने की तैयारी करने लगे। 'शिमर' ने चार हज़ार सवार जमा किए, और वह उमर बिन साद से जा मिला। रिकाब ने दो हज़ार, हसीन ने चार हज़ार, मसायर ने तीन हज़ार और अन्य एक सरदार ने दो हज़ार योद्धा जमा किए। सब-के-सब दल-बल साजकर कर्बला को चले। उमर बिन साद के पास अब पूरे २२ सहस्र सैनिक हो गए। कैसी दिल्लगी है कि ७२ आदमियों को परास्त करने के लिये इतनी बड़ी सेना खड़ी हो जाय। उन ७२ आदमियों में भी कितने ही बालक और कितने ही वृद्ध थे। फिर प्यास ने सभी को अधमरा कर रक्खा था।

किंतु शत्रुओं ने अवस्था को भली भाँति समझकर यह तैयारी की थी। हुसैन की शक्ति न्याय और सत्य की शक्ति थी। यह यज़ीद और हुसैन का संग्राम न था। यह इसलाम की धार्मिक जन-सत्ता का पूर्व इसलाम की राज-सत्ता से संघर्ष था। हुसैन उन सब व्यवस्थाओं के पक्ष में थे, जिनका हज़रत मोहम्मद द्वारा प्रादुर्भाव हुआ था। मगर यज़ीद उन सभी बातों का प्रतिपक्षी था। दैवयोग से इस समय अधर्म ने धर्म को पैरों-तले दबा लिया था; पर यह अवस्था एक क्षण में परिवर्तित हो सकती थी, और इसके लक्षण भी प्रकट होने लगे थे। बहुतेरे सैनिक जाने को तो चले जाते थे, लेकिन अधर्म के विचार से, सेना से, भाग आते थे। जब ओबैदुल्लाह को यह बात मालूम हुई, तो उसने कई निरीक्षक नियुक्त किए। उनका काम यही था कि भागनेवालों का पता लगावें। कई सिपाही इस प्रकार जान से मार डाले गए। यह चाल ठीक पड़ी। भगोड़े भय-भीत होकर फिर सेना में जा मिले।

इस संग्राम में सबसे घोर निर्दयता जो शत्रुओं ने हुसैन के साथ की, वह पानी का बंद कर देना था। ओबैदुल्लाह ने उमर को कड़ी ताक़ीद कर दी थी कि हुसैन के आदमी नदी के समीप न जाने पावें। यहाँ तक कि वे कुएँ खोदकर भी पानी न निकालने पावें। एक सेना फ़रात-नदी की रक्षा करने के लिये भेज दी गई। उसने हुसैन की सेना और नदी के बीच में डेरा जमाया। नदी की ओर जाने का कोई रास्ता न रहा। थोड़े नहीं, छः हज़ार सिपाही नदी का पहरा दे रहे थे। हुसैन ने यह ढंग देखा, तो स्वयं इन सिपाहियों के सामने गए, और उन पर प्रभाव डालने की कोशिश की। पर उन पर कुछ असर न हुआ। लाचार होकर यह लौट आए। उस समय प्यास के मारे इनका कंठ सूखा जाता था, स्त्रियाँ और बच्चे बिलख रहे थे; किंतु उन पाषाण-हृदय पिशाचों को इन पर दया न आती थी।

शहीद होने के तीन दिन पहले हुसैन और अन्य प्राणी प्यास के मारे बेहोश हो गए। तब हुसैन ने अपने प्रिय बंधु अब्बास को बुलाकर, उन्हें २० सवार तथा ३० पैदल देकर, उनसे कहा—"अपने साथ २० मश्कें ले जाओ, और पानी से भर लाओ।" अब्बास ने सहर्ष इस आदेश को स्वीकार किया। वह नदी के किनारे पहुँचे। पहरेदार ने पुकारा—"कौन है ?" इधर उस पहरेदार का एक भाई भी था। वह बोला—"मैं हूँ तेरे चचा का बेटा, पानी पीने आया हूँ।" पहरेदार ने कहा—"पी ले।" भाई ने उत्तर दिया—"कैसे पी लूँ ? जब हुसैन और उनके बाल-बच्चे प्यासों मर रहे हैं, तो मैं किस मुँह से पी लूँ ?" पहरेदार ने कहा—"यह तो जानता हूँ, पर करूँ क्या, हुक्म से मजबूर हूँ !" अब्बास के आदमी मश्कें लेकर नदी की ओर गए, और पानी भर लिया। रक्षक-दल ने इनको रोकने की चेष्टा की, पर ये लोग पानी लिए हुए बच निकले।

हुसैन ने फिर अंतिम बार संधि करने का प्रयास किया। उन्होंने उमर बिन साद को सँदेसा भेजा कि "आज तुम मुझसे रात को, दोनों सेनाओं के बीच में, मिलना।" उमर निश्चित समय पर आया। हुसैन से उसकी बहुत देर तक एकांत में बातें हुईं। हुसैन ने संधि की तीन शर्तें बताईं—(१) या तो हम लोगों को मक्के वापस जाने दिया जाय, (२) या सीमा-प्रांत की ओर शांति-पूर्वक चले जाने की अनुमति मिले, (३) या मैं यज़ीद के पास भेज दिया जाऊँ। उमर ने ओबैदुल्लाह को यह शुभ सूचना सुनाई, और वह उसे मानने के लिये तैयार भी मालम होता था; किंतु शिमर ने ज़ोर दिया कि दुशमन चंगुल में आ फँसा है, तो उसे निकलने न दो ; नहीं तो उसकी शक्ति इतनी बढ़ जायगी कि तुम उसका सामना न कर सकोगे। उमर मजबूर हो गया।

मोहर्रम की ९वीं तारीख़ को, अर्थात हुसैन की शहादत से एक दिन पहले, कूफ़ा के दिहातों से कुछ लोग हुसैन की सहायता करने आए। ओबैदुल्लाह को यह बात मालूम हुई, तो उसने उन आदमियों को भगा दिया, और उमर को लिखा कि "अब तुरत हुसैन पर आक्रमण करो ; नहीं तो इस टालमटोल की तुम्हें सज़ा दी जायगी।" फिर क्या था, प्रातःकाल २२हज़ार योद्धाओं की सेना हुसैन से लड़ने चली। जुगनू की चमक बुझाने के लिये मेघ-मंडल का प्रकोप हुआ।

हुसैन को मालूम हुआ, तो वह घबराए। उन्हें य अन्याय मालूम हुआ कि अपने साथ अपने साथियों और सहायकों के भी प्राणों की आहुति दें। उन्होंने इन लोगों को इसका एक अवसर देना उचित समझ कि वे चाहें, तो अपनी जान बचावें ; क्योंकि यज़ीद को उन लोगों से कोई शत्रुता न थी। इसलिये उन्होंने उमर साद को पैग़ाम भेजा कि हमें एक रा के लिये मोहलत दो। उमर ने अन्य सेना-नायकों परामर्श करके मोहलत दे दी। तब हज़रत हुसैन ने अपने समस्त सहायकों तथा परिवारवालों को बुलाक कहा—"कल ज़रूर यह भूमि मेरे ख़ून से लाल हो जायगी। मैं तुम लोगों का हृदय से अनुगृहीत हूँ कि तुमने मेरा साथ दिया। मैं अल्लाहताला से दुआ करता हूँ कि वह तुम्हें इस नेकी का सवाब दे तुमसे अधिक वीरात्मा और पवित्र हृदयवाले मनुष्य संसार में न होंगे। मैं तुम लोगों को सहर्ष आज्ञा देता हूँ कि तुममें से जिसकी जहाँ इच्छा हो, चला जाय मैं किसी को दबाना नहीं चाहता। न किसी को मजबू करता हूँ। किंतु इतना अनुरोध अवश्य करूँगा कि तुम में से प्रत्येक मनुष्य मेरे आत्मीय जनों में से एक एक को अपने साथ ले ले। संभव है, ख़ुदा तुम्हें तबाही से बचा ले ; क्योंकि शत्रु मेरे रुधिर का प्यासा है। मुझे पा जाने पर उसको और किसी की तलाश न होगी।"

यह कहकर उन्होंने इसलिये चिराग़ बुझा दिया कि जानेवालों को संकोचवश वहाँ न रहना पड़े। कितना महान् पवित्र और निस्स्वार्थ आत्म-समर्पण है !

किंतु इस वाक्य का समाप्त होना था कि सब लोग चिल्ला उठे—"हम ऐसा नहीं कर सकते। ख़ुदा वह दिन न दिखावे कि हम आपके बाद जीते रहें। हम दूसरों को क्या मुँह दिखावेंगे ? उनसे क्या यह कहें कि हम अपने स्वामी, अपने बंधु तथा अपने इष्ट-मि को शत्रुओं के बीच में छोड़ आए, उनके साथ ए भाला भी न चलाया, एक तलवार भी न चलाई ! ह आपको अकेला छोड़कर कदापि नहीं जा सकते। ह अपनेको, अपने धन को और अपने कुल को आप चरणों पर न्योछावर कर देंगे।"

इस तरह ९वीं तारीख़, मोहर्रम, की रात आधी कटी। शेष रात्रि लोगों ने ईश्वर-प्रार्थना में काटी। हुसैन ने एक रात की मोहलत इसलिये नहीं ली थी कि समर की रही-सही तैयारी पूरी कर लें। प्रातःकाल तक सब लोग सिजदे करते और अपनी मुक्ति के लिये दुआएँ माँगते रहे।

(४)

प्रभात हुआ—वह प्रभात, जिसकी संसार के इतिहास में उपमा नहीं है! किसकी आँखों ने यह अलौकिक दृश्य देखा होगा कि ७२ आदमी २२ हज़ार योद्धाओं के सम्मुख खड़े हुसैन के पीछे सुबह की नमाज़ इसलिये पढ़ रहे हैं कि अपने इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ने का शायद यह अंतिम सौभाग्य है। वे कैसे रणधीर पुरुष हैं, जो जानते हैं कि एक क्षण में हम सब-के-सब इस आँधी में उड़ जायँगे, लेकिन फिर भी पर्वत की भाँति अचल खड़े हैं; मानो संसार में कोई ऐसी शक्ति नहीं है, जो उन्हें भय-भीत कर सके। किसी के मुख पर चिंता नहीं है, कोई निराश और हताश नहीं है। युद्ध के उन्माद ने, अपने सच्चे स्वामी के प्रति अटल विश्वास ने, उनके मुख को तेजस्वी बना दिया है। किसी के हृदय में कोई अभिलाषा नहीं है। अगर कोई अभिलाषा है, तो यही कि कैसे अपने स्वामी की रक्षा करें। इसे सेना कौन कहेगा, जिसके दमन को २२ सहस्र योद्धा एकत्र किए गए थे। इन ७२ प्राणियों में एक भी ऐसा न था, जो सर्वथा लड़ाई के योग्य हो। सब-के-सब भूख-प्यास से तड़प रहे थे। कितनों के शरीर पर तो मांस का नाम तक नहीं था, और उन्हें विना ठोकर खाए दो पग चलना भी कठिन था। इस प्राण-पीड़ा के समय ये लोग उस सेना सें लड़ने को तैयार थे, जिसमें अरब-देश के वे चुने हुए जवान थे, जिन पर अरब को गर्व हो सकता था।

उन दिनों समर की दो पद्धतियाँ थीं। एक तो सम्मिलित, जिसमें समस्त सेना मिलकर लड़ती थी, और दूसरी व्यक्ति-गत, जिसमें दोनों दलों से एक-एक योद्धा निकलकर लड़ते थे। हुसैन के साथ इतने कम आदमी थे कि सम्मिलित-संग्राम में शायद वह एक क्षण भी न ठहर सकते। अतः उनके लिये दूसरी शैली ही उपयुक्त थी। एक-एक करके योद्धागण समर-क्षेत्र में आने और शहीद होने लगे। लेकिन इसके पहले अंतिम बार हुसैन ने शत्रुओं से बड़ी ओजस्विनी भाषा में अपनी निर्दोषिता सिद्ध की। उनके अंतिम शब्द ये थे—

"ख़ुदा की क़सम मैं पद-दलित और अपमानित होकर तुम्हारी शरण न आऊँगा, और न मैं दासों की भाँति लाचार होकर यज़ीद की ख़िलाफ़त को स्वीकार करूँगा। ऐ ख़ुदा के बंदो! मैं ख़ुदा से शांति का प्रार्थी हूँ, और उन प्राणियों से, जिन्हें ख़ुदा पर विश्वास नहीं है, जो ग़रूर में अंधे हो रहे हैं, पनाह माँगता हूँ।"

इधर हुसैन अपने डेरों की ओर आए, और उधर उमर बिन साद ने पहला तीर चलाकर समर की घोषणा कर दी।

शेष कथा आत्म-त्याग, प्राण-समर्पण, विशाल धैर्य और अविचल वीरता की अलौकिक और स्मरणीय गाथा है; जिसके कहने और सुनने से आँखों में आँसू उमड़ आते हैं, जिस पर रोते हुए लोगों को १३ शताब्दियाँ बीत गईं, और अभी अनंत शताब्दियाँ रोते बीतेंगी।

हुर का ज़िक्र पहले आ चुका है। यह वही पुरुष है, जो एक हज़ार सिपाहियों के साथ हुसैन के साथ-साथ आया था, और जिसने उन्हें इस निर्जल मरुभूमि पर ठहरने को मजबूर किया था। उसे अभी तक आशा थी कि शायद ओबैदुल्लाह हुसैन के साथ न्याय करे। किंतु जब उसने देखा कि लड़ाई छिड़ गई, और अब समझौते की कोई आशा नहीं है, तो अपने कृत्य पर लज्जित होकर वह हुसैन की सेना से आ मिला। जब वह अनिश्चित भाव से अपने मोरचे से निकलकर हुसैन की सेना की ओर चला, तब उसी की सेना के एक सिपाही ने कहा—"तुमको मैंने किसी लड़ाई में इस तरह काँपते हुए चलते नहीं देखा।"

हुर ने उत्तर दिया—"मैं स्वर्ग और नरक की दुबधा में पड़ा हुआ हूँ; और सच यह है कि मैं स्वर्ग के सामने किसी चीज़ की हस्ती नहीं समझता, चाहे कोई मुझे मार डाले।"

यह कहकर उसने घोड़े के एड़ लगाई, और हुसैन के पास आ पहुँचा। हुसैन ने उसका अपराध क्षमा कर दिया, और उसे गले से लगाया। तब हुर ने अपनी सेना को संबोधित करके कहा—"तुम लोग हुसैन की शर्तें क्यों नहीं मानते? कितने खेद की बात है कि तुमने

स्वयं उन्हें बुलाया, और जब वह तुम्हारी सहायता करने आए, तो तुम उन्हीं को मारने पर उद्यत हो गए ! वह अपनी जान लेकर चले भी जाना चाहते हैं, किंतु तुम लोग उन्हें कहीं जाने भी नहीं देते ? सबसे बड़ा अन्याय यह कर रहे हो कि उन्हें नदी से पानी नहीं लेने देते ! जिस पानी को पशु और पक्षी तक पी सकते हैं, वह भी उन्हें मयस्सर नहीं !''

इस पर शत्रुओं ने उन पर तीरों की वर्षा कर दी, और हुर भी लड़ते हुए वीर-गति को प्राप्त हुए। उन्हीं के साथ उनका पुत्र भी शहीद हुआ।

आश्चर्य होता है, और दुःख भी, कि इतना सब कुछ हो जाने पर भी हुसैन को इन नर-पिशाचों से कुछ कल्याण की आशा बनी हुई थी। वे जब अवसर पाते थे, तभी अपनी निर्दोषिता प्रकट करते हुए उनसे आत्म-रक्षा की प्रार्थना करते थे। दुराशा में भी यह आशा इसलिये थी कि वह हज़रत मोहम्मद के नवासे थे, और उन्हें आशा होती थी कि शायद अब भी मैं उनके नाम पर इस संकट से मुक्त हो जाऊँ। उनके इन सभी संभाषणों में आत्म-रक्षा की इतनी विशद चिंता व्याप्त है, जो दीन चाहे न हो, पर करुण अवश्य है, और एक आत्मदर्शी पुरुष के लिये, जो स्वर्ग में इससे कहीं उत्तम जीवन का स्वप्न देख रहा हो, जिसको अटल विश्वास हो कि स्वर्ग में हमारे लिये अकथनीय सुख उपस्थित हैं, शोभा नहीं देती। हुर के शहीद होने के पश्चात् हुसैन ने फिर शत्रु-सेना के सम्मुख खड़े होकर कहा—

''मैं तुमसे निवेदन करता हूँ कि मेरी इन तीन बातों में से एक को मान लो—

(१) मुझे यज़ीद के पास जाने दो कि उससे बहस करूँ। यदि मुझे निश्चय हो जायगा कि वह सत्य पर है, तो मैं उनकी बैयत कर लूँगा।''

(इस पर किसी पाषाण-हृदय ने कहा—''तुम्हें यज़ीद के पास न जाने देंगे। तुम मधुर-भाषी हो, अपनी बातों में उसे फँसा लोगे, और इस समय मुक्त होकर देश में विद्रोह फैला दोगे।'')

(२) ''जब यह नहीं मानते, तो छोड़ दो कि मैं अपने नाना के रौज़े की मुजाविरी करूँ।''

(इस पर भी किसी ने उपर्युक्त शंका प्रकट की।)

(३) ''अगर ये दोनों बातें तुम्हें अस्वीकार हैं, तो मुझे और मेरे साथियों को पानी दो ; क्योंकि प्राणी-मात्र को पानी लेने का हक़ है।''

(इसका भी वैसा ही कठोर और निराशा-जनक उत्तर मिला।)

इस प्रश्नोत्तर के बाद हुसैन की ओर से बुरीर मैदान में आए। उधर से मुआक़िल निकला। बुरीर ने अपने प्रतिपक्षी को मार लिया, और फिर खुद सेना के हाथों मारे गए। बुरीर के बाद अब्दुल्लाह निकले और दस-बीस शत्रुओं को मारकर काम आए।

अब्दुल्लाह के बाद उनका पुत्र, जिसका नाम वहब था, मैदान में आया। उसकी वीर-गाथा अत्यंत मर्मस्पर्शी है और राजपूताने के अमर वीर-वृत्तांत की याद दिलाती है। वहब का विवाह हुए अभी केवल १७ दिन हुए थे। हाथ की मेंहदी तक न छूटी थी। जब उसके पिता शहीद हो गए, तो उसकी माता उससे बोली—

''मी ख़्वाहम कि मरा अज़ ख़ूनेख़ुद शरबते दिही ह
शीरे कि अज़ पिस्ताने मन ख़ुरदः बर तो हलाल गरदद।''

कितने सुंदर शब्द हैं, जो शायद ही किसी वीर-माता के मुँह से निकले होंगे। भावार्थ यह है—

''मेरी इच्छा है कि तू अपने रक्त का एक घूँट मुझे दे, जिसमें कि यह दूध, जो तूने मेरे स्तन से पिया है, तुझ पर हलाल हो जाय।''

वहब के शहीद हो जाने के बाद क्रम से कई योद्धा निकले, और मारे गए। इसलामी-पुस्तकों में तो उनकी वीरता का बड़ा प्रशंसात्मक वर्णन किया गया है। उनमें से प्रत्येक ने कई-कई सौ शत्रुओं को परास्त किया। ये भक्तों के मानने की बातें हैं। जो लोग प्यास से तड़प रहे थे, भूख से जिनकी आँखों-तले अँधेरा छा जाता था, उनमें इतनी असाधारण शक्ति और वीरता कहाँ से आ गई ? उमर बिन साद की सेना में 'शिमर' बड़ा क्रूर और दुष्ट आदमी था। इस समर में हुसैन और उनके साथियों के साथ जिस अपमान-मिश्रित निर्दयता का व्यवहार किया गया, उसका दायित्व इसी शिमर के सिर है। यह धार्मिक संग्राम था, और इतिहास साक्षी है कि धार्मिक संग्रामों में पाशविक प्रवृत्तियाँ अत्यंत प्रचंड रूप धारण कर लेती हैं, लड़ाई के साधारण नियमों को पैरों-तले रौंदा जाता है। पर इस संग्राम में ऐसे प्रतिष्ठित प्राणियों के साथ जितनी घोर दुष्टता और दुर्जनता दिखाई

उसकी उपमा संसार के धार्मिक संग्रामों में भी मुशकिल से मिलेगी। हुसैन के जितने साथी शहीद हुए, प्रायः उन सभी की लाशों को पैरों-तले रौंदा गया, उनके सिर काटकर भालों पर उछाले और पैरों से ठुकराए गए। पर कोई भी अपमान और बड़ी-से-बड़ी निर्दयता उनकी उस कीर्ति को नहीं मिटा सकती, जो इसलाम के इतिहास का आज भी गौरव बढ़ा रही है। इसलाम के साहित्य और इतिहास में उन्हें वह स्थान प्राप्त है, जो हिंदू-साहित्य में अंगद, जामवंत, अर्जुन, भीष्म आदि को प्राप्त है। सूर्यास्त होते-होते सहायकों में कोई भी नहीं बचा।

अब निज कुटुंब के योद्धाओं की बारी आई। इस वंश के पूर्वज हाशिम नाम के एक पुरुष थे। इसीलिये हज़रत मोहम्मद का वंश हाशिमी कहलाता है। इस संग्राम में पहला हाशिमी जो क्षेत्र में आया, वह अब्दुल्लाह था। यह उसी मुसलिम नाम के वीर का बालक था, जो पहले शहीद हो चुका था। उसके बाद कुटुंब के और वीर निकले। जाफ़र, इमाम हसन के तीन बेटे, अब्बास के कई भाई, हज़रत अली के कई बेटे और सब बारी-बारी से लड़कर शहीद हुए। हज़रत अब्बास से हुसैन ने कहा—"मैं बहुत प्यासा हूँ।" संध्या हो गई थी। अब्बास पानी लाने चले; पर रास्ते में घिर गए। वह असाधारण वीर पुरुष थे। हाशिमी लोगों में इतनी वीरता से कोई नहीं लड़ा। एक हाथ कट गया, तो दूसरे हाथ से लड़े। जब वह हाथ भी कट गया, तो ज़मीन पर गिर पड़े। उनके मरने का हुसैन को अत्यंत शोक हुआ। बोले—"अब मेरी कमर टूट गई।" अब्बास के बाद हुसैन के नौजवान बेटे अली-अकबर मैदान में उतरे। हुसैन ने अपने हाथों उन्हें शस्त्रों से सुसज्जित किया। आह, कितना हृदय-विदारक दृश्य है! बेटे ने खड़े होकर हुसैन से जाने की आज्ञा माँगी, पिता का वीर हृदय अधीर हो गया। हुसैन ने निराशा और शोक से अली-अकबर को देखा, फिर आँखें नीची कर लीं, और रो दिए। जब वह शहीद हो गया, तो शोक-विह्वल पिता ने जाकर लाश के मुँह पर अपना मुँह रख दिया, और कहा—"बेटा, तुम्हारे बाद अब जीवन को धिक्कार है।" पुत्र-प्रेम की, इहलोक की ममता की आदर्श पर, धर्म पर, गौरव पर कितनी बड़ी विजय है!

अब हुसैन अकेले रह गए। केवल एक सात वर्ष का भतीजा और हसन का एक दुधमुँहा पोता बाक़ी था। हुसैन घोड़े पर सवार महिलाओं के ख़ीमों की ओर आए, और बोले—"बच्चे को लाओ; क्योंकि अब उसे कोई प्यार करनेवाला न रहेगा।" स्त्रियों ने शिशु को उनकी गोद में रख दिया। वह अभी उसे प्यार कर रहे थे कि अकस्मात् एक तीर उसकी छाती में लगा, और वह हुसैन की गोद ही में चल बसा। उन्होंने तुरत तलवार से गढ़ा खोदा, और बच्चे की लाश वहीं गाड़ दी। फिर अपने भतीजे को शत्रुओं के सामने खड़ा करके बोले—"ऐ अत्याचारियो, तुम्हारी निगाह में मैं पापी हूँ; पर इस बालक ने तो कोई अपराध नहीं किया? इसे क्यों प्यासों मारते हो?" यह सुनकर किसी नर-पिशाच ने एक तीर चलाया, जो बालक के गले को छेदता हुआ हुसैन की बाँह में गड़ गया। तीर के निकलते ही बालक की क्रीड़ाओं का अंत हो गया।

हुसैन अब रण-क्षेत्र की ओर चले। अब तक रण में जानेवालों को वह अपने ख़ीमे के द्वार तक पहुँचाने आया करते थे। उन्हें पहुँचानेवाला अब कोई मर्द न था। तब आपकी बहन ज़ैनब ने आपको रोकर बिदा किया। हुसैन अपनी पुत्री सक़ीना को बहुत प्यार करते थे। जब वह रोने लगी, तो आपने उसे छाती से लगाया, और तत्काल शोक के आवेग में कई शेर पढ़े; जिनका एक-एक शब्द करुण-रस में डूबा हुआ है। उनके रण-क्षेत्र में आते ही शत्रुओं में खलबली पड़ गई; जैसे गीदड़ों में कोई शेर आ गया। हुसैन तलवार चलाने लगे, और इतनी वीरता से लड़े कि दुश्मनों के छक्के छूट गए। जिधर उनका घोड़ा बिजली की तरह कड़ककर जाता था, लोग काई की भाँति फट जाते थे। कोई सामने आने की हिम्मत न कर सकता था। इस भाँति सिपाहियों के दलों को चीरते-फाड़ते वह फ़रात के किनारे पहुँच गए, और पानी पीना चाहते थे कि किसी ने कपट-भाव से कहा—"तुम यहाँ पानी पी रहे हो, उधर सेना स्त्रियों के ख़ीमों में घुसी जा रही है। इतना सुनते ही लपककर इधर आए, तो ज्ञात हुआ कि किसी ने छल किया है। फिर मैदान में पहुँचे, और शत्रु-दल का संहार करने लगे। यहाँ तक कि शिमर ने तीन सेनाओं को मिलकर उन पर हमला करने की आज्ञा दी। इतना ही नहीं, बग़ल से और पीछे से भी उन पर तीरों की बौछार होने लगी। यहाँ तक कि ज़ख़्मों से चूर होकर वह ज़मीन

संगीत-सुधा

सारंग—तीन ताल

स्वरकार—"निषाद"] [शब्दकार—महात्मा सूरदास

गीत

बिनु गोपाल बैरिन भईं कुंजैं ।
तब वे लता लगत अति सीतल,
अब भईं बिषम ज्वाल की पुंजैं ।
बृथा बहत जमुना, खग बोलत,
बृथा कमल फूलैं, अलि गुंजैं ;
"सूरदास" प्रभु को मग जोवत,
अँखियाँ अरुन भईं ज्यों गुंजैं ।

स्थायी

३				×			—	२				०			
प	री	सा	—	प	—	नि	सां	रीं	रीं	सां	नि	प	—	म	—
बि	नु	गो	—	पा	—	ल	बै	रि	न	भ	ईं	कुं	—	जैं	
प	म	री	सा	नि	सा	नि	सा	रेंम	पनी	सांरें	सांनी	प	—	म	—
बै	रि	न	भ	ईं	कुं-	जैं	बै	रि-न-	न-	भ-	ईं-	कुं	—	जैं	—

अंतरा

	रे	म	सा	रे	प	म	रे	सा	रे	म	रे	म	पनि	सांरें	रें	रें
१.	त	ब	वे	—	ल	ता	—	ल	ग	त	अ	ति	सी-	--	त	ल
२.	बृ	था	—	ब	ह	त	ज	मु	ना	—	ख	ग	बो-	--	ल	त
३.	सू	—	र	दा	—	स	प्र	भु	को	—	म	ग	जो-	--	व	त
	नि	नि	प	प	म	म	रे	रे	रें	रें	सां	नि	प	—	म	—
१.	अ	ब	भ	ईं	बि	ष	म	ज्वा	—	ल	की	—	पुं	—	जैं	—
२.	बृ	था	—	क	म	ल	फू	—	लैं	—	अ	लि	गुं	—	जैं	—
३.	अँ	खि	याँ	अ	रु	न	भ	ईं	—	ज्यों	—	गुं	—	जैं	—	

संकेत

स्वर

१—जिन स्वरों के नीचे बिंदु हो, वे मंद्र-सप्तक के, जिनमें कोई बिंदु न हो, वे मध्य-सप्तक के, तथा जिनके शीर्ष में बिंदु हो, वे तार-सप्तक के समझिए। जैसे—सा, सा, सां।

२—जिन स्वरों के नीचे लकीर हो, उन्हें कोमल समझिए। जैसे—रे, ग, ध, नी। जिनमें कोई चिह्न न हो, वे तीव्र हैं। जैसे—रे, ग, ध, इत्यादि।

३—मध्यम-कोमल का चिह्न "म" और मध्यम तीव्र का चिह्न "मे" है।

ताल

१—सम का चिह्न × यह है, ताल के लिये अंक समझिए, और खाली का द्योतक ० है।

२—जब ‿ इस चिह्न में एक स्वर रहे, तो उसे आधी मात्रा समझिए। जैसे—स। जब एक से अधिक हों, तो वे एक मात्रा में गाए या बजाए जायँगे। जैसे—सारे।

३—जिस स्वर के आगे बिंदु हो, उसे डेढ़ मात्रा समझिए। जैसे—ग.।—यह दीर्घ मात्रा का चिह्न है। जिस स्वर के आगे यह चिह्न हो वह एक मात्रा-काल तक अधिक गाया या बजाया जायगा।

"एक तंदुरुस्ती हज़ार न्यामत है"

REGISTERED.
बदलराम का बनाया हुआ
EXHIBITION MEDALS
काशी सुर्ती, जर्दा

क्यों

आप बजारू सुर्ती, ज़र्दा इत्यादि व्यवहार करके अपना अमूल्य स्वास्थ्य नष्ट करते हैं।

जो तृप्ति और सुख आपको बदलराम के बनाए हुए सुर्ती, ज़र्दा और जाफ़रानी पत्ती इत्यादि से मिलेगा वह और किसी के बनाए हुए ज़र्दा-सुर्ती से नहीं मिल सकता। जिन्होंने एक बार बदलराम का बनाया हुआ ज़र्दा व्यवहार किया है, वह कदापि दूसरे स्थान से माल नहीं मँगाते—

सर्वश्रेष्ठ काशी सुर्ती, ज़र्दा, जाफ़रानी पत्ती, नस, नानाप्रकार के पान के मसाले, पानविलास और खमीरा तंबाकू के प्रस्तुत कारक—

"बदलराम लक्ष्मीनारायण, सुवर्ण-पदक-प्राप्त, बनारस-सिटी"

सुमन-संचय

१. क्या चंद्रगुप्त शूद्र था ?

सम्राट् चंद्रगुप्त मौर्यके विषयमें यह कहा जाता है कि वह महापद्म नंदकी दासी मुरासे उत्पन्न हुआ था, और यह बात परंपरासे इसी रूपमें चली आ रही है। अतएव यदि कोई कहे कि चंद्रगुप्त शूद्र नहीं था, तो संभव है कि उसकी बात सुननेको कोई राज़ी न हो ; परंतु यह बात बहुत दिनोंसे हमारे ध्यानमें आई हुई है कि चंद्रगुप्त क्षत्रिय था। इसलिये आज हम इस विषय पर अपने कुछ विचार प्रकट करते हैं।

चंद्रगुप्तके शूद्र होनेका क्या प्रमाण है ? पुराणोंमें क्षत्रियोंका अंत नंदोंसे मानकर जो यह लिखा है कि "शूद्रा महीपाला भविष्यंति", उससे लोगोंमें यह विचार बद्ध-मूल हो गया कि नंदके बाद क्षत्रिय राजा हुए ही नहीं, और जो हुए वे शूद्र थे। चंद्रगुप्त भी नंदोंको मारकर सिंहासनपर बिठलाया गया था, इसलिये इसका शूद्र होना स्वयंसिद्ध-सा मान लिया गया था। इस समय हमारे लिये यह बतलाना तो कठिन है कि क्रमानुसार इसके शूद्रत्वकी पुष्ट करनेवाली और-और कौन-सी बातें हुईं; परंतु विशाखदत्तके मुद्राराक्षससे इसका अप्रत्यक्ष समर्थन हुआ है। कारण, वहाँ चाणक्यने चंद्रगुप्तको "वृषल" संबोधन से याद किया है, और वृषलका अर्थ शूद्र बतलाकर लोगोंने चंद्रगुप्तको शूद्रत्वका सार्टीफ़िकेट दे दिया है।

परंतु इन अधूरे प्रमाणोंपर चंद्रगुप्तको शूद्र मानना बड़ा भारी ऐतिहासिक अन्याय है। बहुत संभव है कि चंद्रगुप्तने अपनेको शूद्र प्रसिद्ध कर महापद्म नंदकी नौकरी कर ली हो, और चंद्रगुप्तके मगध-सम्राट् होनेपर पुराणों में वह प्रकारांतरसे शूद्र लिखा गया हो। परंतु यह किस प्रकार संभव है कि जिस समय शूद्रोंके और विशेषकर दासी-पुत्रके प्रति ब्राह्मणोंका आदर-भाव न हो, उस समय चाणक्य या विष्णुगुप्त कौटिल्य शूद्रको राज-सिंहासन पर बिठलावे ? यही नहीं, चंद्रगुप्तके सिंहासनासीन होनेको शस्त्रों, शास्त्रों और पृथ्वीका उद्धार समझनेवाला कौटिल्य कभी शूद्रको सिंहासनपर बिठलावेगा, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। परंतु अर्थ-शास्त्रमें कौटिल्यने अपने विषयमें कहा है—

"येन शास्त्रञ्च शस्त्रञ्च नन्दराजगता च भूः,
अमर्षेणोद्धृतान्याशु तेन शास्त्रमिदं कृतम् ।"

इससे दो कल्पनाएँ की जा सकती हैं। या तो चंद्रगुप्त शूद्र नहीं था, या उस समयके ब्राह्मण शूद्रों पर बड़े ही दयालु होते थे, और मदरासी ब्राह्मणोंकी भाँति उनकी छाया पड़नेसे ही अपनेको अपवित्र नहीं

मानते थे। हम समझते हैं कि पिछली कल्पना ब्राह्मण-शूद्र-इतिहासके किसी उदाहरणसे ठीक न ठहरेगी।

मुद्राराक्षसमें 'वृषल'-शब्दका जो प्रयोग चाणक्यसे चंद्रगुप्तके लिये कराया गया है, उससे भी यह सिद्ध नहीं होता कि वह शूद्र था। 'वृषल'-शब्द पहले-पहल हमें ऋग्वेदके दसवें मंडल के ३९वें सूक्त के ११वें मंत्रमें मिलता है। यहाँ उसका अर्थ शूद्र नहीं, बल्कि बहिष्कृत या पतित है। इसके बाद महाभारतके शांति-पर्वमें भी 'वृषल'का अर्थ शूद्र नहीं, बल्कि धर्मलोपी बतलाया गया है। मनुस्मृतिमें पौंड्र, द्रविड़, चीन आदि जातियोंको गिनाकर कहा है—

"शनकैस्तु क्रियालोपादिमाः क्षत्रियजातयः।
वृषलत्वं गता एताः ब्राह्मणादर्शनेन च॥"

अर्थात्, ये क्षत्रिय-जातियाँ क्रियाके लोप और ब्राह्मणोंके अदर्शनसे वृषलत्वको प्राप्त हो गई हैं। इससे क्या कोई यह कह सकता है कि ये शूद्र-जातियाँ हैं? बौद्ध लोग भी हीन कर्म करनेवाले ब्राह्मण को वृषल (वसल) मानते हैं। जान पड़ता है, पातित्य की प्रथम श्रेणीवाले व्रात्य और द्वितीय श्रेणीवाले वृषल कहलाते थे; क्योंकि मनुस्मृतिके दसवें अध्यायके २२वें श्लोकमें कहा गया है कि—"क्षत्रिय-जातिके व्रात्यसे झल्ल, मल्ल, लिच्छिवी, नट, करण, खश और द्राविड़ उत्पन्न हुए हैं।" इसके पहले २०वें श्लोकमें बतलाया गया है कि सजातीय स्त्रीसे द्विजोंके जो पुत्र होते हैं और अपने धर्म-कर्म का आचरण नहीं करते, वे सावित्रीके अधिकारी नहीं रहते, और उनकी संज्ञा 'व्रात्य' होती है। श्रीकृष्णके विरोधी भी उन्हें व्रात्य कहकर उनकी निंदा किया करते थे। इन बातोंसे सिद्ध होता है कि क्रिया-हीन द्विजातियोंकी संज्ञा ही 'व्रात्य' और 'वृषल' होती है। अतएव 'वृषल' संबोधित होनेसे भी चंद्रगुप्त शूद्र नहीं हो जाता।

अब देखना चाहिए कि चंद्रगुप्तमें क्षत्रियत्वकी क्या बात थी। चंद्रगुप्तने तक्षशिलाके विश्वविद्यालयमें शिक्षा पाई थी, और वह यवनोंके साथ कुछ समय तक विदेशोंमें भी रहा था। वह विद्वान्, बुद्धिमान् और वीर था। कारण, उसने यवनोंको पंजाबसे मार ही नहीं भगाया था, बल्कि उन्हें दबकर संधि करनेको बाध्य किया था। उसका मंत्री कौटिल्य विलक्षण राजनीतिज्ञ था, यह सच है; परंतु कौटिल्यकी सहायता पानेका वह सर्वथा अधिकारी था। जैन-ग्रंथोंमें चंद्रगुप्त क्षत्रिय और जैन बतलाया गया है; परंतु इसके अतिरिक्त उसके क्षत्रिय होनेके और भी प्रमाण हैं। बौद्ध-ग्रंथ महावंशकी टीकामें लिखा है कि बुद्धके जीवन-कालमें ही कुछ शाक्य विडूडभसे उत्पीड़ित होनेके कारण हिमालय-प्रदेशमें चले गए थे, और वहाँ उन्होंने मोरियानगर (मौर्यनगर) बसाया था। यह स्थान मोरोंकी बोलीसे सदा गूँजा करता था, इसीलिये इसका नाम मौर्यनगर रक्खा गया। बौद्धोंका मत है कि बुद्ध और सम्राट् अशोक एक ही वंशके थे; क्योंकि अशोक चंद्रगुप्तका पौत्र था, जो मोरियानगरकी रानी का बेटा था।

महावंश-टीका में पिप्पलीवनके मौर्योंका भी वर्णन मिलता है। दीर्घनिकाय-नामक ग्रंथमें वैशालीके लिच्छिवियों और कपिलवस्तुके शाक्योंके साथ ही अल्लकप्पाके बुलियों, रामगामके कोलियों और पिप्पलीवनके मौर्योंको भी क्षत्रिय-संघ कहा है। पिप्पलीवनके मौर्योंको भी गौतम-बुद्धकी राख मिली थी, इसलिये उनके क्षत्रिय होनेमें संदेह नहीं किया जा सकता। उस समयके लिच्छिवियों, शाक्यों, मल्लों आदिमें अस्थि या राख लेनेकी प्रबल इच्छा थी, और इसका कारण यही नहीं था कि वे बौद्ध थे, बल्कि वे बुद्धकी तरह अपनेको भी क्षत्रिय समझते थे। कुशीनरमें बुद्धकी राखके लिये अपना दावा पेश करनेके समय ये कहते थे कि बुद्ध क्षत्रिय थे, और हम भी क्षत्रिय हैं, इसलिये हम उनकी अस्थि या राख पानेके हक़दार हैं।

इन बातोंसे किसी निरपेक्ष मनुष्यके मनमें यह संदेह उत्पन्न हुए विना नहीं रह सकता कि चंद्रगुप्त शूद्र न होगा। पुरातत्त्वान्वेषियोंका कर्तव्य है कि वे इस विषय-पर अधिक प्रकाश डालें।

अंबिकाप्रसाद वाजपेयी

× × ×

२. वैदिक विमान

पुराण, रामायण, महाभारत आदि ग्रंथों में विमान-संबंधी बहुत-सी बातें लिखी हुई हैं। बहुत प्राचीन समय में देवता विमान का व्यवहार करते थे, इसलिये भारत-वासी उन्हें आदर की दृष्टि से देखते थे। कभी-कभी देवगण जब किसी राजा पर प्रसन्न हो जाते थे, तब उन्हें भी

विमान का व्यवहार करने की आज्ञा दे देते थे । रावण कुबेर के पुष्पक-विमान को ज़बरदस्ती छीन लाया था। पुराने समय के विमान सब जगह, सब दिशाओं तथा जल, स्थल और आकाश में चलते थे।

आज तक वेदों में विमान के होने का कोई प्रमाण नहीं पाया गया था । वैदिक युग की कोई बात यदि पुराणों में पाई जाती हो, पर वेदों में न पाई जाती हो, तो वह सहसा विश्वसनीय नहीं होती । परंतु ऋग्वेद में भी विमान-संबंधी बातें पाई जाती हैं । उदाहरण-स्वरूप कुछ प्रमाण नीचे दिए जाते हैं—

सोमापूषणारजसो विमानं
सत्यचक्रं रथं विश्वमिन्वम् ;
विषुवृतं मनसा युज्यमानं तं
जिन्वेथो वृषणापंचरश्मिम् ।

(ऋक् २।४०।३)

अर्थात्, हे अभीष्टवर्षी सोम और पूषा, तुम लोग रंजित अर्थात् चित्रित विमान-युक्त हो । तुम्हारे रथ सर्वत्र-गामी, अबाध-गति, इच्छानुसार चलनेवाले, सप्तचक्र और पंचपक्ष-विशिष्ट हों, और तुम लोग प्रीतिकर हो ।

इस प्रकार ऋग्वेद में चित्रित विमान का उल्लेख है । यह विमान सब जगह, सभी दिशाओं में, इच्छानुसार, अबाध गति से जा सकता था । इस विमान में पाँच पहिए और पाँच पंख थे । पहियों से शायद ज़मीन पर चलता और पंखों से आकाश में उड़ता था । शायद दोनों ओर दो-दो और पीछे एक पंख होता था ।

अवसिंधुं द्यौरिव स्वादुद्रप्सो न श्वेतो मगस्तुविष्मान् ;
गंभीरशंसो रजसो विमानः सुपारक्षत्रः सतो अस्य राजा ।

(ऋक् ७ । ८७ । ६)

अर्थात्, वरुण ने समुद्र को आकाश-जैसा स्थापित किया है । वह जल-बिंदु की नाईं उजले, मृग-जैसे बलवान्, अत्यंत प्रशंसित, चित्रित अंतरिक्ष-विमान-युक्त और समस्त सत्पदार्थों के राजा हैं ।

सहस्रोतिः शतमघो विमानो रजसः कविः इंद्राय पवते मदः ।

(ऋक् ९ । ६२ । १४)

अर्थात्, अनेक प्रकार के द्रुतगामी, चित्रित विमान-युक्त कर्म-कुशल सोम इंद्र के लिये निकाला गया है ।

अंतरिक्ष प्रां रजसो विमानमिम-
शिक्षां पूर्वशीं वसिष्ठः ।

उपत्वारातिः सुकृतस्य तिष्ठंति
वर्तस्व हृदयं तप्यते मे ।

(ऋक् १० । ९५ । १७)

अर्थात्, चित्रित विमान-युक्त, वशीकरण करने में सक्षम, अंतरिक्ष-चारिणी उर्वशी को मैं कुछ उपदेश दे रहा हूँ, तुम्हारे सुकृत का सुफल तुम्हारे ही पास रहे । फि आओ, मेरा हृदय जल रहा है ।

राजा पुरूरवा विमान पर चढ़कर आकाश में भ्रम कर रहे हैं, इससे यह स्पष्ट प्रकट है ।

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृष्टा
येन स्वः स्तंभितं येन नाकः ।
यो अंतरिक्षे रजसो विमानः
कस्मै देवाय हविषा विधेम ।

(ऋक् १० । १२१ । ५)

अर्थात्, जिन्होंने प्रचंड और समुन्नत आकाश औ पृथ्वी को दृढ़ रूप से स्थापित किया है, जिन्होंने स्व और देव-लोक को स्तंभित किया है, जिन्होंने चित्रि विमान पर गमन किया है, उनमें से किस देवता हव्य द्वारा पूजा करें ?

उक्त ऋक् से जान पड़ता है कि उस समय विमा भ्रमण एक असाध्य-साधन का उपाय समझा जाता थ क्योंकि ऋषि पूछ रहे हैं कि उक्त तीन देवतों में किस देवता की पूजा करें ? जो इस प्रकार भ्रमण क सकते थे, वे भारतवासियों की दृष्टि में देवता समझे जा थे । संभवतः इसी समय से स्वर्ग या सुमेरु-देशवा देववत् पूजित होते हैं । इसीलिये ऋषि सोचते हैं किसकी पूजा करूँ ।

विश्वावसुरमितन्नो गृणातु देव्यो
गंधर्वो रजसो विमानः ।

(ऋक् १० । १३९५)

अर्थात्, देवलोक-वासी, चित्रित-विमानचारी गंध विश्वावसु इन विषयों का उपदेश दें ।

इससे जान पड़ता है कि देवलोक-वासी गंधर्व वि पर भ्रमण करते और इसलिये भारतवासियों सम्मानित होते थे । गंधर्वगण संभवतः सुमेरु-प्रदेशवा मंगोलियन जाति के होंगे ।

उमेशप्रसाद

× × ×

३. शरद-शोभा

(१)

छाए कास-कुसुम विकास आस-पास पाय,
भौंर-भीर भारी मिलि मालती मगन है ;
फूले हैं कुमुद-फूल, फूलि रहे पारिजात,
कुंद त्यों मुकुंद फूलो मोहे लेत मन है ।
अमल अकास, खिली चाँदनी बिहँसि रही,
मंद दुति कहूँ-कहूँ उयो उड़ुगन है ;
सरद सरोवरन कमल, अमल जल,
आनँद-मगन मही, मंडित गगन है ।

(२)

बरन हरन भयो सेत देस-देस मानो,
अंबर, अवनि छीर-नीर बरसत है ;
होंत अधरात ही तें प्रात को भरम अहो,
जानि परभात कोकी कोक सुमिरत है ।
रहि-रहि कूजि' उठैं उपवन पंछीगन,
कुमुदहिं सोक होत, कंज हरषत है ;
मौन होत पौन है निसा में मेरी जान, कहूँ
चाँदनी में मोहित-सो समै बितवत है ।

(३)

मनि मराल, खंजन दृगन, चक्रवाक उर-देस ;
भौंरा नूपुर, कर कमल, सरद सुंदरी-भेस ।

(४)

घन पयान पावस गए, तिमिर-हरन दुतिराज ;
रस-बरसा जल-थल बिमल, सरद सुंदरी काज ।

राजेश्वरप्रसादनारायणसिंह

× × ×

४. क़ैसर के कनिष्ठ पुत्र का भयंकर प्रयत्न

मेजर सी० ई० रसेल की नवप्रकाशित 'True Adventures of the Secret Service'-नामक पुस्तक से योरप के गत महायुद्ध के संबंध में बहुत-सी विचित्र बातें मालूम हुई हैं । यह महाशय अमेरिकन संयुक्त-राज्य में जासूसी-विभाग के एक अफ़सर हैं, और युद्ध के समय अमेरिकन सेना के साथ फ़्रांस में बहुत दिनों तक रहे हैं। यदि इनकी कही हुई बातें सच हों, तो यह स्वीकार करना पड़ेगा कि क़ैसर और उनके पुत्र वैसे कायर और डरपोंक नहीं थे, जैसे सभ्य-देशों में अभी तक समझे जाते हैं। विशेषकर क़ैसर के कनिष्ठ पुत्र प्रिंस जोआशिम (Joachim) की साहसिकता और वीरता शत्रुओं के भी सराहने-योग्य है ।

क़ैसर के कनिष्ठ पुत्र प्रिंस जोआशिम

जिस समय लाखों जर्मन मित्र-सेना की तोपों को भेंट चढ़ रहे थे, उसी समय प्रिंस जोआशिम फ़्रांस के ला रोशेल (La Rochelle)-नामक स्थान में गुप्त-चर की तरह अपना भीषण कर्तव्य, बड़ी चतुरता और वीरता से, पाल रहे थे । युद्ध में घायल होने से उनका शरीर पीला पड़ गया था । वह इतने दुर्बल हो गए थे कि मालूम होता था, उन्हें क्षय-रोग ने धर दबाया है । सन् १९१८ ई० के जुलाई मास में वह ला रोशेल में ठहरी हुई अमेरिकन सेना में स्विस रेडक्रास आहत-सेवक के रूप से फ़्रेटाग (Freytag) नाम रखकर प्रविष्ट हुए । जर्मन-सरकार ने क़ैदियों की देख-रेख करने के लिये विशेष प्रार्थना

के साथ उन्हें भेजा था। उस समय स्वप्न में भी किसी को यह शंका न हुई कि यह व्यक्ति और कोई है, और यहाँ दूसरे अभिप्राय से आया है। इसका कारण यह था कि उनके पास स्विट्ज़रलैंड के बहुत-से विश्वास करने योग्य प्रमाण-पत्र थे। इसके अतिरिक्त उनका स्वभाव बहुत ही अच्छा था। थोड़े ही दिनों में वह सेना में सर्व-प्रिय बन बैठे। शरीर इतना दुर्बल होने पर भी उनके काम में कभी शिथिलता नहीं देखी गई। इसी प्रकार किसी प्रकार का संदेह हुए बिना कितने ही सप्ताह बीत गए।

सेना के भांडार-भागों को जलाने का प्रयत्न कई बार पकड़ा गया, और अपराधियों को यथोचित दंड भी दिया गया। एक दिन एक अफ़सर ने सेनापति को सूचना दी कि आठ रात से बराबर पेट्रोल के ख़ज़ाने में आग लगाने का प्रयत्न किया जा रहा है। भाग्य से आग बढ़ने के पहले ही बुझा दी जाती है। यदि अपराधी शीघ्र पकड़े न गए, तो एक-न-एक दिन समस्त अमेरिकन-सेना का नाश निश्चित समझना चाहिए। कोई दियासलाई लेकर जाने नहीं पाता। हरएक जर्मन-क़ैदी की अच्छी तरह तलाशी ली जाती है। किंतु सब प्रकार का प्रबंध रहने पर भी यह घटना नहीं रुकती।

सेनापति ने इस ख़बर को सुनकर चारों तरफ़ बड़ा कड़ा नियम जारी कर दिया, और आग लगानेवाले को पकड़ने के लिये शक्ति-भर कोई उपाय बाक़ी नहीं रक्खा। उस समय सेना के साथ तीन हज़ार जर्मन-क़ैदी थे। उन लोगों का सारा प्रबंध अमेरिकनों ही के हाथ में था। लोगों को यह निश्चय हो गया था कि यह काम इन्हीं क़ैदियों में से किसी का है; किंतु इस पर भी ठीक पता लगाने की कोई सूरत नज़र न आई। अंत को लाचार होकर गुप्त-चरों में से तीन चुनकर समर-स्थल पर भेजे गए, और वहाँ नए पकड़े हुए क़ैदियों के साथ रक्खे गए। उनके साथ वैसा ही बर्ताव किया जाने लगा, जैसा और क़ैदियों के साथ किया जाता था; जिसमें वे हरएक क़ैदी के पास जा सकें। इसके अतिरिक्त उन्हें सबसे गंदा सफ़ाई का काम दिया गया।

इधर यह प्रबंध हो रहा था, उधर कपट-वेष-धारी स्विस आहत-सेवक महाशय को सब तरह की स्वतंत्रता थी। उनके ऊपर कोई संदेह न होने के कारण शहर में जाने और जो चाहे सो ख़रीदने का उन्हें पूरा अधिकार था। उनको इस बात का विशेष रूप से अधि ख़याल रहता था कि क़ैदियों के पास किसी तरह के कृ न आने पावें, और इसलिये वह उन लोगों को कोई-न कोई दवा दिया करते थे। पहले-पहल क़ैदी बने हु गुप्त-चरों को कुछ भी पता न लगा; किंतु धीरे-धीरे उ लोगों को कुछ बातें दिखलाई पड़ने लगीं। फ़्रेटाग (प्रच्छ प्रिंस जोआशिम) तीन क़ैदियों को सदा अलग ले जा कर बात-चीत किया करते थे। उनकी बात-चीत अन लोगों से तो सबके बीच में ही होती थी, किंतु उन तीनों से अलग।

इसके अनंतर अफ़सरों को ख़बर लगी कि क़ैदियों में से तीन सदा अपना ऊपरी कपड़ा (blouse) खो बैठा करते हैं। वे वे ही तीन थे। और भी पता लगा कि यह घटना तभी होती है, जब उन्हें कृमि दूर करने की दवा दी जाती है, और आग लगाने का प्रयत्न भी तभी पकड़ा जाता है, जब एक या दो ऐसे कपड़े ग़ायब होते हैं। इन सब बातों से बहुत कुछ संदेह उत्पन्न होता था; किंतु ठीक प्रमाण न मिलने से कुछ भी नहीं किया जा सकता था। फिर आग लगी। अब तो बड़ी सनसनी फैल गई। लोग सोचने लगे, यदि इन लोगों को हवा ने कभी कुछ भी सहायता दी, तो बस जर्मनों ने बाज़ी मार ली, और अमेरिकन लोग घर के रहे, न घाट के।

किंतु ईश्वर की जो इच्छा होती है, वही होता है। ठीक इसी समय फ़्रेटाग पर इनफ़्लुएंज़ा ने आकर आक्रमण किया। इन लोगों ने डॉक्टर और दाई को उनकी देख-रेख के लिये नियुक्त किया; किंतु वह किसी से कुछ सहायता नहीं लेना चाहते थे। दाई ने उनके हृदय का हाल जानने का बहुत कुछ प्रयत्न भी किया, किंतु कुछ फल न हुआ। तब दाई ने दूसरा उपाय निकाला। क़ैदियों से जाकर कहा—"फ़्रेटाग बीमार हैं, उनके बदले मैं तुम लोगों की देख-रेख करने आई हूँ।" उसने ख़ासकर उन तीनों पर विशेष ध्यान देना शुरू किया। एक दिन उनमें से एक ने दाई से कहा कि कीड़ा दूर करने के लिये जो ओषधि फ़्रेटाग मुझे देते थे, उसकी मुझे फिर ज़रूरत है। उसने फ़्रेटाग से दाई के द्वारा कहलाया कि आपने जो ओषधि दी थी, वह तीव्र नहीं थी। आप परीक्षा करके देखिए, [illegible] दोनों का परिमाण भिन्न होना चाहिए। दाई ने फ़्रेटाग से इस संदेश को ज़रा और बढ़ा-चढ़ाकर

कहा। उन्होंने कहलाया कि "उससे कह दो, वह अभी उसे काम में न लावें। मैं अच्छा होने पर परीक्षा करके स्वयं बतलाऊँगा।"

जब इन सब बातों का मेजर रसेल को पता लगा, तो उन्होंने उन ओषधियों की स्वयं परीक्षा करने का निश्चय किया, और अपने मित्र डॉक्टर से सहायता माँगी। किंतु वह उन ओषधियों का नाम सुनते ही बोल उठे—"महाशय, यदि आप इन दोनों की मिलावट में ज़रा-सी भी असावधानता करेंगे, तो धड़ाके के साथ आप आकाश में उड़ जायँगे। इन दोनों के मिलते ही अग्नि लग जाती है।" यह सुनते ही सारा षड्यंत्र मेजर साहब के ध्यान में आ गया।

बात यह थी कि फ़्रेटाग ने सब क़ैदियों को एसिड से कपड़े साफ़ करना सिखलाया था। इस काम में केवल प्रथम ओषधि काम में आती थी। यह ओषधि कपड़े में लगाकर छोड़ दी जाती थी। फ़्रेटाग अपने तीन सिद्ध गणों को एक शीशी में दूसरी दवा दे दिया करते थे। इस शीशी के ऊपर काग़ज़ की डाट लगी रहती थी। वे तीनों मौक़ा पाकर उस शीशी को प्रथमौषधि-सिंचित वस्त्र में लपेटकर किसी जलनेवाली वस्तु पर फेंक आते थे। वह एसिड धीरे-धीरे काग़ज़ जलाकर कपड़े में आ जाती थी, और दूसरी एसिड से मिलते ही आग लगा देती थी।

धीरे-धीरे फ़्रेटाग अच्छे हुए। उन्होंने उठते ही उन ओषधियों की परीक्षा शुरू कर दी। एक दिन वह अपने कमरे में अकेले इन ओषधियों की परीक्षा कर रहे थे, और गुप्त-चर लोग छिपे हुए सब देख रहे थे। परीक्षा करते-करते उन्हों ने ठीक पता लगा लिया कि किसका कितना परिमाण रहना चाहिए। देखते-देखते जिस कपड़े पर परीक्षा की गई थी, वह जलने लगा। उसी समय सिपाहियों ने उन्हें पकड़ लिया। पकड़े जाने पर भी उनका धैर्य विचलित न हुआ। वह उसी तरह बराबर निर्भीक दिखलाई पड़े। पहले तो उन्होंने सब दोषारोपों को मिथ्या बतलाया, किंतु यह मालूम होने पर कि सब भंडा फूट गया है, उन्होंने दूसरी ही राह पकड़ी। साफ़ कह दिया कि "अब अधिक बखेड़े की क्या ज़रूरत है? मुझे बाहर ले जाकर गोली मार दीजिए।" उनके साथियों का उनके प्रति जैसा नम्र बर्ताव था, उससे और उनके उच्च गुणों से मेजर रसेल को मालूम हुआ कि यह अवश्य किसी ऊँचे कुल का है। उन्होंने बहुत कुछ उपाय किया; किंतु उस धीर पुरुष के मुख से एक अक्षर भी न निकाल सके। मेजर साहब ने उन्हें अपने सामने बिठलाया, और कहा—"आप मुझे अपना परिचय नहीं देते, इसका फल यह होगा कि आप साधारण अपराधियों की तरह फाँसी पर लटका दिए जायँगे।" उन्होंने तुरंत जवाब दिया—"यही तो उचित होगा।" मेजर साहब ने कहा—"आपको साधारण क़ैदियों के साथ काम करना होगा।" इसका भी उत्तर वैसा ही मिला। उन्होंने कहा—"उन्हीं के साथ रख दीजिए।" मतलब यह कि मेजर रसेल ने हर तरह से हिलाया-डुलाया; किंतु उसका उन पर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा। वह बड़े धैर्य से सब बातें करते रहे। कंठ-स्वर में भी कोई परिवर्तन लक्षित न हुआ।

ऐसे विचित्र पुरुष को मार डालना अच्छा न होगा, यह समझकर वह अफ़सर की तरह क़ैद में रक्खे गए। जब जर्मन लोगों की ओर से उनको छुड़ाने के लिये बहुत प्रयत्न होने लगे, तब यह बात और भी दृढ़ हो गई कि यह साधारण मनुष्य नहीं है। उनका वास्तविक परिचय कैसे मिला, और कैसे और जर्मन-षड्यंत्रों का पता लगा, यह सब लिखने में लेख विशाल-काय हो जायगा। मेजर रसेल ने अपनी पुस्तक में इसका विस्तृत विवरण दिया है। उसका सारांश यह है कि मित्र-सेना-पतियों को कुछ भी पता नहीं लग रहा था कि जर्मन लोग आगे के लिये क्या तैयारी कर रहे हैं। इसको जानने के लिये वे व्याकुल थे। फ़्रेंच लोग प्रयत्न करके हार गए थे। अमेरिकन जासूस-मंडली ने इसके पता लगाने का बीड़ा उठाया। एक जासूस अपनेको सेना से भागा हुआ बताकर स्पेन की जर्मन-समिति से, जो Council of five के नाम से प्रसिद्ध है, जा मिला, और उन लोगों के कहने से प्रिंस जोआशिम को छुड़ाने के लिये प्रयत्न करने लगा। एक दिन वह प्रिंस जोआशिम को लेकर सेना से भागा। इधर तो पहले ही से सब ठीक था। दिखलाने के लिये उन दोनों के पीछे खूब गोलियाँ छोड़ी गईं। उनको लिए हुए वह फिर स्पेन में पहुँचा। वहाँ जर्मन-मंडली में खूब हिल-मिल गया। फल यह हुआ कि इधर-उधर करता हुआ जर्मन-सेना में पहुँच गया। वहाँ

का हाल अच्छी तरह समझकर फिर अपनी सेना में आ गया। सच पूछा जाय, तो इसी के प्रयत्न से जर्मनों का वास्तविक हाल मिला, और वे इस तरह परास्त हुए।

यद्यपि इसमें प्रिंस जोआशिम की कोई सहायता नहीं थी, तथापि उन्हीं की कृपा से जासूस-मंडली अपना मतलब निकाल सकी। बात यह थी कि उनको क़ैद से छुड़ा देने से उस गुप्त-चर पर उन्हें विश्वास हो गया था, अतएव उन्होंने उसे जर्मन-सेना में जाने दिया था। जो हो, मेजर रसेल की पुस्तक से यह तो साफ़ विदित होता है कि प्रिंस जोआशिम डरपोक या भीरु नहीं थे। पीछे से उन्होंने आत्म-घात कर लिया। कितने ही लोगों का कहना है कि उनका दिमाग़ बिगड़ गया था; किंतु मेजर रसेल का कहना है कि उन्हें इस बात का बड़ा दुःख हुआ कि मातृ-भूमि के पतन में वह साधन बनाए गए। यदि वह भ्रम में पड़कर गुप्त-चर को जर्मन-सेना में न धसने देते, तो ऐसा कभी न होता।

बटुकनाथ शर्मा

× × ×

५. हिंदी में अंध-परंपरा

ईश्वर की कृपा से हिंदी दिन-दूनी, रात-चौगुनी, उन्नति करती जा रही है। इसमें नए-नए शब्द और नए-नए महाविरों की भरमार होती जा रही है। अब लोग 'काटो तो ख़ून नहीं' के बदले 'काटो तो पसीना नहीं', 'पेट में बिल्ली कूदने लगी' और 'पेट में चूहा उछलने लगा' के बदले 'पेट में घोड़ा कूदने लगा' लिखने लगे हैं। इसी प्रकार के कई महाविरे बन गए हैं, जिन्हें सुनकर हँसी आती है। किंतु इस विषय का विवेचन किसी दूसरे लेख में किया जायगा। इस समय हम अंध-परंपरा पर कुछ लिखना चाहते हैं। हिंदी में जो अंध-परंपरा चल निकली है, व्याकरण तथा व्युत्पत्ति-क्रम से सर्वथा अशुद्ध प्रयोगों का प्रचार बढ़ रहा है, उसके संशोधन और निवारण का अब तक कोई उपाय नहीं किया गया। आशा है, हिंदी के विद्वान् इधर भली भाँति ध्यान देंगे। उदाहरण लीजिए। बहुत-से लेखक लिखते हैं—'यह काम कोई भी नहीं कर सकता', 'उसे कोई भी नहीं देख सकता।' अब यह विचार करना है कि यह शुद्ध है या अशुद्ध? इसकी व्युत्पत्ति इस प्रकार—है 'कः+अपि=कोपि,' जिसका प्राकृत 'कोवि,' अपभ्रंश 'कोइ' और हिंदी 'कोई' है। 'कः' का अर्थ हुआ 'कौन', और 'अपि' का अर्थ हुआ 'भी', मिलाकर हुआ 'कौन भी' अर्थात् 'कोई'। दोनों के मिलने से पूर्ण-रूप से निश्चय का भाव प्रकट हो गया। फिर जब निश्चयात्मकता प्रकट हो ही गई, तब फिर 'भी' जोड़ना व्यर्थ है। जिस प्रकार संस्कृत में 'कः+अपि+अपि=कोप्यपि', उसी प्रकार हिंदी में 'कोई भी' शब्द अशुद्ध सिद्ध है। बहुत-से लोगों का कहना है कि 'कोई भी' में 'भी' ज़ोर देने के लिये आया है। अच्छा, तब 'ई' किसलिये आया है? बात यह है कि ज़ोर ही देने के लिये 'ई' आया है। इसी प्रकार 'यह बात और भी नहीं हो सकती', 'अभी भी उसकी तकलीफ़ वैसी ही है।', ये दोनों वाक्य भी निस्संदेह अशुद्ध हैं। इनकी व्युत्पत्ति यों है—'कदा+अपि=कदापि,' जिसका प्राकृत 'कहिंवि,' हिंदी 'कब+ही,' और फिर उसका 'कभी' बन गया। कारण, संस्कृत में एक नियम है 'झयो होऽन्यतरस्याम्', अर्थात् यदि किसी वर्ग के आगे 'ह' हो, तो उसका उसी वर्ग का चतुर्थ वर्ण हो जाता है। जैसे संस्कृत में 'तद्+हविः=तद्धविः', यों ही 'वाक्+हरिः=वाग्घरिः'। इसी प्रकार हिंदी में भी 'कब+ही=कभी', और 'अब+ही=अभी' सिद्ध हुआ। अब सोचने की बात यह है कि जो ज़ोर देने के लिये दोनों में 'ही' आ ही गया, तो फिर दुबारा 'भी' की क्या ज़रूरत है? हाँ, यदि संस्कृत में 'कदा+अपि+अपि= कदाप्यपि' और 'अद्य+अपि+अपि=अद्याप्यपि' शुद्ध हैं, तो 'कभी भी' और 'अभी भी' शुद्ध हो सकते हैं। अतः जिस प्रकार वे दोनों संस्कृत-पद अशुद्ध हैं, उसी प्रकार हिंदी में भी 'कभी भी' और 'अभी भी', ये पद अशुद्ध सिद्ध हो गए। आश्चर्य तो इसका है कि ऐसी-ऐसी सैकड़ों अशुद्धियाँ हिंदी के बड़े धुरंधर विद्वान् तक करते हैं, जो शब्दों की उत्पत्ति और व्युत्पत्ति भली भाँति जानते और आचार्य माने जाते हैं।

बहुत-से लोग संदेह करते हैं कि ऐसी अशुद्धियाँ हिंदी में कैसे घुस पड़ीं? इसका भी उत्तर सुनिए। जब उपन्यासों का बाज़ार गरम हुआ, तब सैकड़ों उपन्यास केवल काशी से प्रकाशित हुए। बहुधा उ उपन्यासों के लेखक अर्ध-शिक्षित ही थे। उनकी

संस्कृत में न थी उन्हीं लोगों से 'कभी भी', 'अभी भी', 'कोई भी' इत्यादि शब्दों की उत्पत्ति हुई। कुछ दिनों के बाद इनकी गिनती 'ईडियम' में हो गई, और ये शुद्ध समझे जाने लगे।

इसी तरह बहुत-से लोग 'इनने', 'इन्होंने' और 'उनने', 'उन्होंने' का भेद भी नहीं समझते। जहाँ जी चाहता है, वहाँ इनका व्यवहार कर देते हैं। लेकिन ये अशुद्ध हैं। किसी शब्द में बहु-वचन दो कारणों से आता है। एक प्रतिष्ठा के लिये—'जैसे गुरुजी आए', दूसरा झुंड के लिये—जैसे 'हाथी आए'। इसी प्रकार जब किसी की प्रतिष्ठा के लिये कोई बात कहनी पड़ेगी, तब कहेंगे—'इनने किया', और 'उनने कहा'। जब झुंड के लिये बहु-वचन कहना पड़ेगा, तब कहेंगे—'इन्होंने किया' और 'उन्होंने कहा' इत्यादि। इसी प्रकार बहुत-से लोग 'माधुर्यता', 'चातुर्यता' इत्यादि लिखते हैं। यहाँ भी संस्कृत-नियम ही का सहारा ठीक होगा। जैसे, 'माधुर्य=मिठास', और 'चातुर्य=चतुराई'। इस जगह यदि 'मिठासास' और 'चतुराराई' शुद्ध हैं, तो 'माधुर्यता' और 'चातुर्यता' शब्द भी शुद्ध समझे जायँगे।

हिंदी-शब्दों के लिंगों में भी यही झंझट है। जिन शब्दों के लिये पाणिनि तथा कोशकार चिल्ला-चिल्लाकर कहते हैं कि ये शब्द पुंलिंग हैं, उन्हीं शब्दों को कुछ हिंदीवाले स्त्री-लिंग लिख देते हैं। यदि उनसे पूछा जाय कि ये शब्द स्त्री-लिंग क्यों हैं, तो वे उत्तर देते हैं कि 'इन शब्दों का व्यवहार ऐसा ही होता आया है।' सोचने की बात है कि जिसने पहले उन शब्दों को स्त्री-लिंग लिखा होगा, उसने ज़रूर ग़लती की होगी। कारण, उस समय संस्कृत-व्याकरण तथा कोशों के सिवा हिंदी में कोई व्याकरण और कोश नहीं थे, जिनके अनुसार लोग लिखते।

हमको उस समय बड़ी हँसी आती है, जब लोग 'दाढ़ी' और 'मूछ' शब्दों को स्त्री-लिंग लिखते हैं। अरे बाबा, जिस दाढ़ी और मूछ के कारण मनुष्य पुरुष कहलाता है, उसी को स्त्री-लिंग कहते हो? हाय री अंध-परंपरा!

इसी प्रकार बहुत-से लोग लिखते हैं—'मैंने वहाँ पर जा देखा', 'तुम कहाँ पर रहते हो', 'यहाँ पर सभी बातें अच्छी हैं।' इन वाक्यों में विचारणीय विषय यह है कि संस्कृत में 'तत्र', प्राकृत में 'तत्थ' और 'तहिं' और अपभ्रंश में 'तहाँ' होता है। किंतु 'तहाँ' पुरानी हिंदी हो गई, इसलिये नई पुस्तकों में 'वहाँ' मिलता है। इस जगह पर व्युत्पत्ति के नियम से 'तस्मिन्' के स्थान में 'तत्र' आदेश होता है। इसमें 'तद्' और 'स्मिन्' (सप्तमी एकवचन 'ङि०' के स्थान में) विभक्ति है, इसलिये 'तस्मिन्' और 'तत्र'-पद विभक्ति-युक्त हैं। इनके प्राकृत और अपभ्रंश के शब्द 'वहाँ' में भी विभक्ति वर्तमान है। तो फिर वहाँ के आगे 'पर' अधिकरण-विभक्ति जोड़ना अवश्य अशुद्ध है। हाँ, यदि संस्कृत में 'तत्रत्र' या 'तस्मिन्स्मिन्' शुद्ध है, तो 'वहाँ पर' भी शुद्ध हो सकता है। किंतु व्युत्पत्ति विचारने पर सरासर इसे अशुद्ध ही कहना पड़ता है, और है भी। इसी प्रकार 'कहाँ पर' 'यहाँ पर' आदि भी निस्संदेह अशुद्ध हैं। किंतु अंध-परंपरा ऐसी चल पड़ी है कि बहुत-से लोग आँख मूँदकर ऐसा ही लिखते हैं।

एक भेड़ियाधसान और भी है। बहुत-से लोग हिंदी में लिखते हैं—'उस पेटी में से दस रुपए निकाल लो।' इस स्थान में वक्तव्य यह है कि 'में' और 'से' दोनों विभक्तियों का एक ही पद में रहना अयुक्त है। 'में' अधिकरण का चिह्न और 'से' यहाँ अपादान का चिह्न है। व्याकरण का यह दृढ़ तथा अटल नियम है कि विभक्ति के आगे विभक्ति नहीं जोड़ी जा सकती। इसीलिये संस्कृत में 'मंजूषायाः' अथवा 'मंजूषायां', दोनों में एक ही शुद्ध है, न कि 'मंजूषांयाः'। इसलिये निश्चय हो गया कि 'उस पेटी में से दस रुपए निकाल लो', यह अशुद्ध है। इस जगह 'इस पेटी से दस रुपए निकाल लो' ऐसा लिखना ही शुद्ध है। इसलिये 'इन लड़कों में से एक को चुन लो' के बदले 'इन लड़कों में एक को चुन लो', ऐसा ही लिखना ठीक है।

स्वर्गीय बाबू बालमुकुंदजी गुप्त कहा करते थे कि 'कारण'-शब्द के आगे 'से' लगाना भी अशुद्ध है; क्योंकि 'कारण' और 'से' दोनों का अर्थ एक ही है। इसलिये 'मेरे पैरों में दर्द है, इस कारण से मैं वहाँ न जा सकूँगा' के बदले 'इस कारण' ऐसा ही लिखना शुद्ध है, इस 'कारण से' लिखना ठीक नहीं। उनका यह भी कहना था कि 'वह'-शब्द एक-वचन और बहु-वचन दोनों में आ सकता है। भेद इतना ही है कि 'वह जाता था', यहाँ एक-वचन में 'वह'-शब्द आया है, और किसी एक मनुष्य को प्रतिष्ठा देने के लिये 'वह कहते थे' यह लिखा जायगा।

कारण, जब एक को प्रतिष्ठा देनी हो, तब क्रिया में ही बहु-वचन रखना ठीक है; किंतु जब झुंड के लिये बहु-वचन कहना है, तब 'वे कहते थे' ऐसा लिखना ठीक होगा।

अक्षयवट मिश्र

× × ×

६. शरद-शोभा

कासन सों, बासन सों, सुमन-सुबासन सों,
बिधु के प्रकासन सों ओस दरसो परै ;
अंबर सों, औनि सों, सु अंबर सों, कंबर सों,
बारिज सों प्रेम पुंज पूरो परसो परै।
'छैल' कबि कहै बन-बेलिन नवेलिन सों,
ब्रज ब्रज-बीथिन बिनोद बरसो परै ;
सागर सों, सर-सरितान सों सदैव स्वच्छ,
सीतल समीर सारदीय सरसो परै।

पन्नालाल भैया 'छैल'

× × ×

७. अरुणिमा और विप्रलब्धा

(क)

आली के इंत अरुनई, आई है अँग-अंग ;
लाली ही लावत हरित, पान मेंहदी संग।
केलि-थकी कामिनि चरन, दाबति एँड़ी देखि ;
केलि*किधौं कौहर† फरत, कहि-कहिं रही बिसेखि।

(ख)

तन ग्रीखम, बरखा नयन, बारिज-बदन हिमंत ;
सरद गंड, भूषन सिसिर, पग-पग बसत बसंत।
छुन रुमाल, छुन चादरो, चूमति, चैन परै न ;
छटपटाति तिय पिय-बिरह, रहि न जात दिन-रैन।

रामाज्ञा द्विवेदी 'समीर'

× × ×

८. चाँदनी

निशा नीरव है। आकाश हँस रहा है। घने वन से बहती हुई सरल सरिता अपने मधुर गान में तल्लीन है। विटप सुनते हैं, मुग्ध होते हैं, झूम उठते हैं, और झुककर लहराते हुए अंचल को पकड़ना चाहते हैं; परंतु वह मुसकिराती हुई कहती है, "व्यर्थ है"—और इठलाती हुई, कटाक्ष करती, एक ओर निकल जाती है। पहाड़ियाँ आश्चर्य-चकित विशाल नेत्रों से घूरती हैं।

* * *

सरल प्रवाह अपने गान का स्वर भर रहा है। वह उसका बंदी है। वह उसका सहचर है। वह चल है, फिर भी उस मधुर गान का बंदी है। चाँदनी लहराती है। वह उससे अठखेलियाँ करती है, बड़े-बड़े मैदानों में दौड़ती हुई सघन प्रांतरों में वन-कुंजों से छिपकर झाँकती है। चंद्रमा उसे देख लेता है। चाँदनी झेप जाती है।

* * *

वह दौड़कर धारा-प्रवाह में कूद पड़ती है। उल्लसित युग्म करों से जल उछालती है। स्नान करती है, जल-मग्न होती है, तैरती है, और फिर तट पर खड़ी हो केश छिटकारती है। विटप-शाखाएँ हिल जाती हैं। उसकी हीरे की मुँदरी चमक उठती है। वह ऊपर देखने लगती है। चंद्रमा हँस देता है। चाँदनी चुप-चाप ठिठक जाती है।

* * *

वह सरोवरों की ओर जाती है। तट पर खड़ी हो भौचकी-सी देखने लगती है। नलिनियाँ खिलखिलाकर हँस देती हैं। कमल वेदना प्रकट करते हैं।

* * *

सामने संगमरमर का शिवालय है। वह प्रफुल्लित हो उठती है, और दौड़कर शिवालय में आश्रय लेती है। थोड़ी देर विश्राम करने पर वह चारों ओर दृष्टि फैलाकर देखती है। संगमरमर पर कटी हुई झँझरियों से सहस्र हँसता हुआ चंद्र दिखाई पड़ जाता है। चापलूस तारे मिच मिलाती हुई आँखों से अनुमोदन करते हैं। चाँदनी हँस देती है।

देवीदत्त मिश्र

× × ×

९. क्या बौद्ध लोग हिंदू नहीं हैं ?

गत अगस्त-मास में, काशी में, जातीय संगठन के लि हिंदू-महासभा का जो अधिवेशन हुआ, उसमें सिखों जैनियों, आर्य-समाजियों और अनेक अन्य संप्रदायवाल की भाँति हमारे बौद्ध भाइयों ने भी सम्मिलित हो की कृपा की थी। यह बात कई विधर्मियों—विशेष हमारे अनेक मुसलमान भाइयों—को अच्छी न लगी। किसी-किसी ने तो यहाँ तक कह डाला कि हिं लोग मुसलमानों के विरुद्ध अपना बल बढ़ाने के लिये अहिंदू बौद्ध-मतावलंबियों को अपने साथ ले रहे हैं। विधर्मियों का यह आक्षेप सर्वथा निर्मूल है।

---

* केला। † माहर = एक लाल रंग का जहरीला फल।

लोग वास्तव में हिंदू ही हैं। हिंदू-धर्म में दो मुख्य विशेषताएँ हैं—(१) वर्ण-व्यवस्था, और (२) आवागमन। हिंदू-धर्म की ये दोनों विशेषताएँ बौद्धों के धर्म-ग्रंथों में भी बराबर अपनाई गई हैं; जैसा कि निम्न-लिखित उदाहरणों से भली भाँति विदित होगा—

(१) 'महावग्ग' में लिखा है कि श्रीबुद्ध भगवान् मार पर विजय प्राप्त कर चुकने के कुछ ही दिनों बाद अजपाल-बट के नीचे बैठे हुए थे। उस समय एक ब्राह्मण ने आकर उनसे प्रश्न किया—"गौतम ! ब्राह्मण किसे कहते हैं, और किन गुणों से मनुष्य ब्राह्मणत्व को प्राप्त होता है ?" यह ब्राह्मण जातीय अभिमान में इतना चूर रहता था कि ब्राह्मण को छोड़कर किसी दूसरे वर्ण के मनुष्यों से सिवा 'हूँ-हूँ' करने के स्पष्ट शब्दों में बात तक नहीं करता था। इसी से उसका नाम 'हुंहुँक' पड़ गया था। बुद्ध भगवान् ने उत्तर दिया—

"यो ब्राह्मणो वा कितपापधम्मो
निहुंहुँको निक्कसावो यतत्तो ;
धम्मेन सो (ब्राह्मणो) ब्रह्मवादं वेदय्य
यस्सुस्सदानत्थि कुहिंं च लोकेति।"

अर्थात् जो पापधर्म (?) नहीं करता, किसी से 'हूँ-हूँ' नहीं करता, कषाय-राहित यतात्मा है, वेदांती है, जिसने ब्रह्मचर्य-पालन किया है, जिसको इस लोक में कोई विचलित करनेवाला नहीं, वही ब्राह्मण है, और वही ब्रह्मचर्य का उपदेश कर सकता है।

यदि बुद्ध भगवान् वर्ण-विभाग को माननेवाले न होते, तो इतनी व्याख्या करने के बदले केवल इतना ही कह देते कि ईश्वर की सृष्टि में सब मनुष्य बराबर हैं, न कोई ब्राह्मण है, न कोई क्षत्रिय। अथवा ऐसा ही और कोई उत्तर दे देते।

(२) बुद्ध भगवान् ने अपने पूर्व-जन्मों की जो कथाएँ कही हैं, वे 'जातक'-नाम से विख्यात हैं। पाली-भाषा के 'जातक'-ग्रंथ में प्रायः ५०० से अधिक ऐसी कथाओं का संग्रह है, और उस ग्रंथ की भूमिका में स्वयं बुद्ध भगवान् के मुखारविंद से यह कहलाया गया है कि बुद्ध सदा भारतवर्ष ही में जन्म लिया करते हैं। भारतवर्ष में भी प्रायः मध्य-देश (आधुनिक युक्त-प्रांत) ही में, और मध्य-देश में भी केवल क्षत्रिय या ब्राह्मण ही के यहाँ ; किसी वैश्य या शूद्र के यहाँ कदापि नहीं। कारण, यद्यपि चारों वर्ण समान भाव से एक ही विराट्-समुदाय के चार अन्योन्याश्रित अंग हैं, और अपना-अपना महत्त्व रखते हैं, तथापि बाहु-बल और मस्तिष्क-शक्ति—शस्त्र और शास्त्र – द्वारा देश और धर्म की रक्षा और परित्राण करना मुख्यतः क्षत्रिय और ब्राह्मण, इन्हीं दो वर्णों का परंपरा-गत जन्म-सिद्ध कार्य रहा है। शेष दो वर्ण इस कार्य में उनके अनुवर्ती और साथ देनेवाले रहे हैं। इससे सिद्ध होता है कि श्रीबुद्ध भगवान् वर्ण-व्यवस्था के अतिरिक्त आवागमन को भी मानते थे।

हमारे मुसलमान भाई तो उपर्युक्त प्रमाणों के न रहते हुए भी यह नहीं कह सकते थे कि बौद्ध लोग हिंदू नहीं हैं ; क्योंकि वे तो सैकड़ों वर्षों से बौद्धों को हिंदू ही मानते आए हैं। उदाहरणवत् मुग़ल-सम्राट् अकबर के कृपा-पात्र और अमात्य सुविख्यात मुसलमान विद्वान् अबुलफ़ज़्ल ने स्व-रचित 'आईन-अकबरी' में हिंदुओं के नव मुख्य संप्रदाय गिनाए हैं, और उनमें बौद्ध-संप्रदाय को भी सम्मिलित किया है। यथा—

१. नैयायिक, २. वैशेषिक, ३. वेदांती, ४. मीमांसक, ५. सांख्य, ६. पातंजल, ७. जैन, ८. बौद्ध, ९. नास्तिक (चार्वाक)। साथ ही उन्होंने अच्छी जानकारी के साथ बुद्ध भगवान् के जीवन-चरित और उनके संप्रदाय के सिद्धांतों का संक्षिप्त उल्लेख भी किया है। यह भी लिखा है कि इस संप्रदाय के साधु, जिन्हें अरब और ईरान के लोग बख़्शी (भिक्षु=भिक्खु) और तिब्बतवाले लामा कहते हैं, अब पीगू (बर्मा), धनासरी (तिनासरिम) और तिब्बत से इधर नहीं पाए जाते। काश्मीर में इस संप्रदाय के कतिपय वृद्ध पुरुषों से उनका साक्षात् भी हुआ था।

आधुनिक भूगोल आदि पाठ्य-पुस्तकों, मनुष्य-गणना की रिपोर्टों और गज़ेटियर आदि अन्य सरकारी पुस्तकों में बौद्धों, जैनों, सिखों, आर्य-समाजियों और ब्रह्म-समाजियों को हिंदुओं से अलग गिनाने की चाल से हिंदू-समुदाय का बड़ा अहित हुआ है। उसी चाल का यह परिणाम हुआ है कि कभी-कभी लोगों को ऐसे भ्रम हो जाया करते हैं।

शिवनाथसिंह सेंगर

विज्ञान-वाटिका

१. समय-निर्देश

प्रायः सभी सभ्य-देशों के मनुष्य घड़ी का व्यवहार जान गए हैं । आजकल घड़ी मनुष्य के उन आवश्यक पदार्थों में एक है, जिनके बिना उनका एक क्षण भी निर्वाह नहीं हो सकता । किंतु जब घड़ी का आविष्कार नहीं हुआ था, तब लोग किस प्रकार समय जान सकते थे ? यह एक ऐसा प्रश्न है, जो प्रायः हमारे मन में उठा करता है ।

यद्यपि समय-निर्देश का प्रधान साधन सूर्य है; किंतु, फिर भी, यह प्रश्न उठता है कि जिस समय सूर्य बादल से ढके रहते थे, उस समय किस प्रकार समय जाना जाता था ? मनुष्य जिस समय जंगलों में शिकार करके आहार-संग्रह करते और गिरि-गह्वरों में रहते थे, उस समय भी उन्होंने अपनी सुविधा के लिये दिन-रात को कई भागों में बाँट लिया था । समय जानने के लिये वे घास की एक रस्सी बनाकर उसमें समानांतर पर एक-एक गाँठ दे रखते थे । रस्सी के एक सिरे में आग लगा देने से वह धीरे-धीरे जलती रहती थी । एक गाँठ से दूसरी गाँठ तक जलने में जो समय लगता था, वही उनका एक घंटा, या समय का कोई भाग, होता था । शायद उन लोगों को मिनट या सेकिंड की आवश्यकता नहीं होती थी, इसलिये समय को मिनटों तथा सेकिंडों में बाँटना उन्होंने व्यर्थ समझा होगा । कुछ देशों में लोग मोमबत्ती पर निशान बना देते थे । एक निशा
से दूसरे निशान तक मोमबत्ती के जलने पर समय क
एक निर्दिष्ट भाग पूरा हुआ समझा जाता था।

आजकल जो घड़ी व्यवहार में आ रही है, उसक
जन्म तेरहवीं शताब्दी में हुआ था; किंतु वह घ
आधुनिक घड़ी का एक सामान्य आभास-मात्र थी
तीन सौ वर्ष बाद आजकल की-सी एक घड़ी बनी
उसका घेरा एक रकाबी के बराबर था। वह दिन-भ
में डेढ़ घंटे के लगभग ग़लत चलती थी, और दाम
अधिक नहीं, केवल छः हज़ार रुपए था !

इसके कुछ दिन बाद सुअर के बालों से 'हेयर-स्प्रि
(बाल-कमानी) बनने लगी। पहले यह स्प्रिंग मोटी हो
थी; किंतु इस समय बाल से भी पतली होती है
हीरे के एक टुकड़े में छेद कर उसी के बीच से इस्पात क
तार खींचकर 'हेयर-स्प्रिंग' बनती है । आध सेर इस्पा
के मोटे तार का दाम अधिक-से-अधिक २४) रु० है
किंतु उससे जो 'हेयर-स्प्रिंग' बनती हैं, उनकी क़ीम
२ लाख ४८ हज़ार रुपए के लगभग और लंबाई
मील होती है।

एक घड़ी के २११ भाग होते हैं । उन्हें बनाने
लिये ३,७७३ प्रकार की भिन्न-भिन्न प्रणालियाँ हैं । घ
के कल-पुर्ज़ों में एक-तिहाई केवल स्क्रू हैं । कुछ
इतने छोटे हैं कि एक अंगुश्ताने में प्रायः २०,०
आ सकते हैं । काग़ज़ पर रखने से ये सोने
कण-जैसे जान पड़ते हैं । यदि ऐसे ५ लाख
लिए जायँ, तो शायद उनका वज़न आध सेर भी

होगा। एक-एक स्क्रू का वज़न इतना कम है कि उसका अंदाज़ा नहीं लगाया जा सकता। चुन्नी (पत्थर) काग़ज़ के समान पतला काटकर और गोल बनाकर घड़ी में जगह-जगह बिठाया जाता है। यह गोल चुन्नी का आलपीन के सिरे से बड़ा नहीं होता। इसमें एक सूराख़ रहता है, जिसमें घड़ी के किसी चक्के का पतला धुरा घूमता है।

घड़ी मेन-स्प्रिंग की सहायता से चलती है। वह दो फ़ीट लंबी होती है; किंतु ऐसी मज़बूती के साथ लपेटी रहती है कि यदि एकाएक खुलकर लग जाय, तो दोनों आँखों को निकाल डाले। मेन-स्प्रिंग टूट जाने से घड़ी बंद हो जाती है।

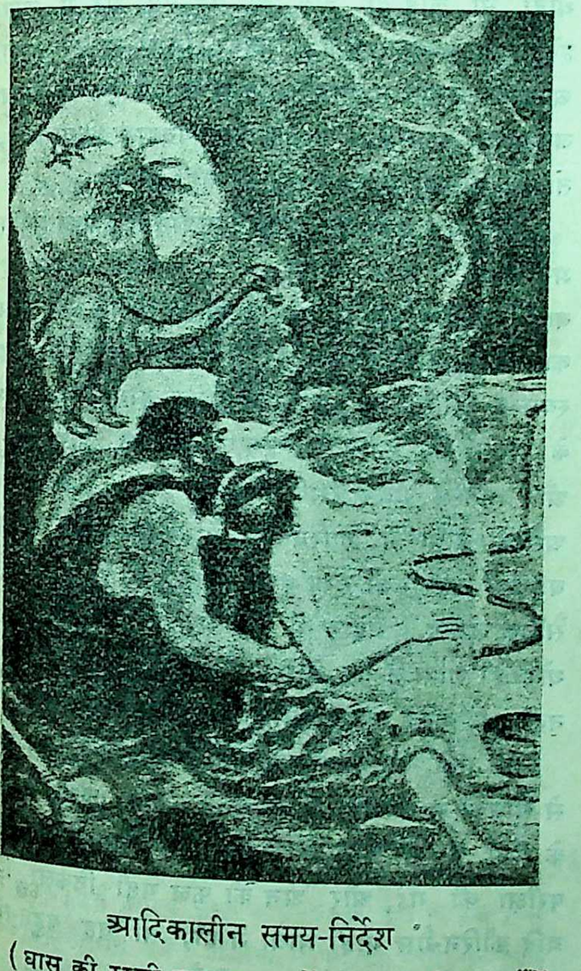

आदिकालीन समय-निर्देश

(घास की रस्सी बनाकर उसमें समान दूरी पर गाँठें दे दी जाती थीं, एक गाँठ से दूसरी गाँठ तक की रस्सी जलने में जितना समय लगता था, वह एक घंटा या समय का कोई निश्चित भाग माना जाता था।)

घड़ी के विषय में लोगों के मत भिन्न और विचित्र हैं। कुछ लोग सोचते हैं कि यदि घड़ी के काँटे उल्टे घुमाए जायँ, तो घड़ी ख़राब हो जाती है। जिन घड़ियों में घंटा बजता है, उनके अतिरिक्त और किसी घड़ी में यह बात ठीक नहीं उतरती। जेब-घड़ी के काँटे उल्टी ओर घुमाने से उसका कोई नुक़सान नहीं होता।

एक प्रकार की दुष्प्राप्य मछली का तेल घड़ी के कल-क़ब्ज़ों में दिया जाता है। व्यवहार करने के पहले विविध प्रकार से तेल की परीक्षा कर ली जाती है। इस तेल का एक बूँद घड़ी को वर्ष-भर चलाने के लिये यथेष्ट है। बहुत दिनों की चेष्टा तथा परीक्षा के बाद इस तेल का आविष्कार हुआ है। पहले यह जलाने के काम में आता था।

अमेरिका में, घड़ी के एक बड़े कारख़ाने में, दो बड़ी-

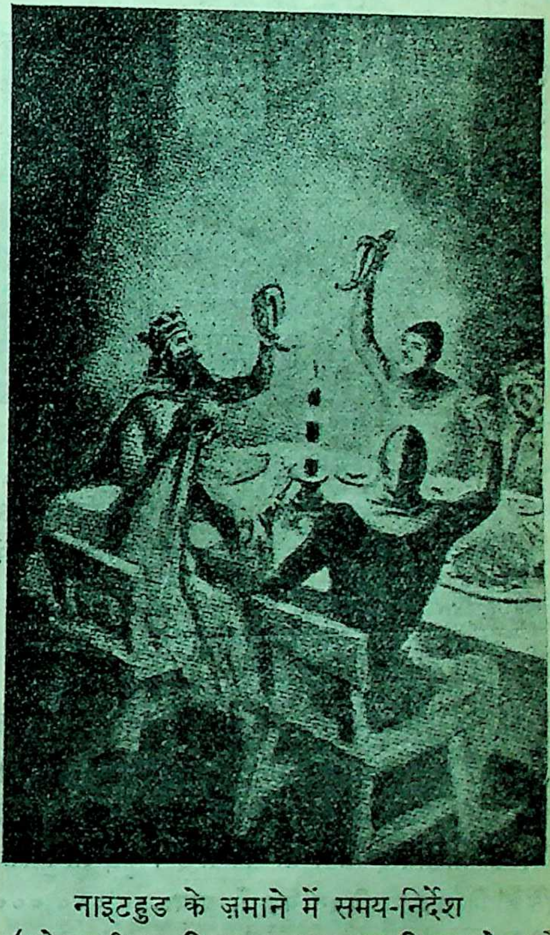

नाइटहुड के ज़माने में समय-निर्देश

(मोमबत्ती पर निशान बनाकर एक निशान से दूसरे निशान तक जलने के समय को समय का एक भाग मानकर समय-निर्देश होता था।)

बड़ी घड़ियाँ समय बतलाने के लिये रक्खी गई हैं। ये घड़ियाँ दो वायु-शून्य घरों में हैं। कांक्रीट के खंभे पर दोनों वायु-शून्य घर बने हैं, इसलिये घड़ियों में किसी प्रकार का धक्का लगने का डर नहीं है। हज़ार वर्ष में, इन घड़ियों के समय में, एक सेकिंड का भी अंतर नहीं पड़ा। ज्योतिर्विद् इन्हीं के समय को ठीक मानते हैं।

बहुत दिनों से स्विट्ज़रलैंड घड़ी बनाने का केंद्र माना जाता है। यहाँ एक-एक परिवार घड़ी का एक-एक भाग बनाता था। फिर घड़ी के भिन्न-भिन्न भाग एक कारख़ाने में जाकर जमा होते थे, और वहाँ समूची घड़ी 'फ़िट-अप' होती थी। संयुक्त-राज्य में इस समय घड़ी बनाने के आठ बड़े-बड़े कारख़ाने हैं। उनमें एक वर्ष में एक लाख घड़ियाँ बनती हैं, जिनका दाम ६ करोड़ रुपए होता है।

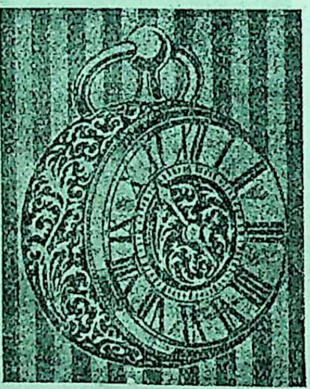

सबसे पहली घड़ी

आजकल की घड़ियों में सबसे आवश्यक पदार्थ 'बैलेंसिंग (Balancing) है। बैलेंसिंग एक प्रकार से घड़ी की जान है। यदि घड़ी का बैलेंस-व्हील (Balance-wheel) और हेयर-स्प्रिंग ठीक हुआ, तो घड़ी ठीक समय देगी। घड़ी में प्रायः सब तरह की गड़बड़ बैलेंस-व्हील के कारण होती है। हेयर-स्प्रिंग इस प्रकार से बनाया जाता है कि गरमी और जाड़े में एक ही गति से चले।

× × ×

२. युद्ध से लाभ

जो लोग यह समझते हैं कि युद्ध से केवल हानि ही होती है, वे भूल करते हैं; क्योंकि गत योरपियन युद्ध में कुछ ऐसी बातों का पता चला है, जो मनुष्यों के लिये ईश्वर का आशीर्वाद कही जा सकती हैं। कुछ लोग कहा करते हैं कि गत योरपियन युद्ध में प्रायः ३०,०००,००० मनुष्यों का प्राण-नाश हुआ; किंतु उस युद्ध से जो लाभ हुआ, उससे इस संख्या से कहीं अधिक मनुष्यों के प्राण बचाए जा सकते हैं।

युद्ध में ज़हरीले गैसों से बहुत प्राण-हानि हुई थी; किंतु पता लगा है कि ये ज़हरीले गैस ही उन बीमारियों की औषधियाँ हैं, जिनकी दवा अब तक आविष्कृत नहीं हुई थी। श्वास नली की इनफ़्लुएंज़ा, ब्रॉंकाइटिज़, न्युमोनिया और टुबरक्युलसिस आदि बीमारियाँ इन गैसों द्वारा बड़ी आसानी से दूर होती हैं।

इनफ़्लुएंज़ा ही को लीजिए। अब तक डॉक्टरों को इस बीमारी का कोई प्रतिकार नहीं मालूम हुआ था। यह बीमारी बड़ी शीघ्रता के साथ फैलती और बहुतों की जान लेती है। किंतु पता लगा है कि क्लोरिन (Chlorine)-गैस इस बीमारी के कीड़ों को मारने में सक्षम है। इनफ़्लुएंज़ा के रोगी के घर में यदि यह गैस थोड़ी भी छोड़ दी जाय, तो वह २४ घंटे में चंगा हो जायगा। यदि स्कूल, थिएटर, गिर्जा-घर, सभा या अन्य बंद जगहों में, जहाँ बहुत-से मनुष्य एक ही समय जमा हुआ करते हैं, इस गैस का व्यवहार किया जाय, तो उक्त बीमारी के फैलने का डर नहीं रहता।

क्लोरिन एक ज़हरीला गैस है। लड़ाई में इसका प्रयोग मनुष्यों को मारने के लिये होता था। उस समय यह बात किसी के ध्यान में नहीं आई थी कि इस गैस का यदि थोड़ी मात्रा में व्यवहार किया जाय, तो यह स्वास्थ्य के लिये यथेष्ट लाभ-दायक होगी। १९१ के वसंत में, फ़्रांस में, इनफ़्लुएंज़ा का ज़ोर हुआ, और बहुत-से सैनिक इसके शिकार हुए। उस समय अधिक मात्रा में क्लोरिन-गैस में साँस लेने के कारण बहुत-से मनुष्यों की मृत्यु हुई। किंतु देखा गया कि जो सैनिक लड़ाई के मैदान में पीछे थे, और जिन्होंने केवल थोड़ी ही मात्रा में गैस सूँघी थी, उनमें एक की भी मृत्यु नहीं हुई, बल्कि उनकी बीमारी भी शीघ्र ही जाती रही।

यही नहीं, यह भी देखा गया कि इस गैस के प्रभाव से सैनिकों में ब्रॉंकाइटिज़, न्युमोनिया तथा अन्य फेफड़े के रोगों में भी कमी हो गई। इसके बाद कई बार परीक्षा की गई, और अंत को फल यही निकला कि यदि क्लोरिन-गैस थोड़ी मात्रा में हो, तो वह बहुत-सी बीमारियों के कीड़ों को नष्ट करती है।

युद्ध समाप्त होने के समय लिविसाइट (Lewisite)-नामक एक नई गैस का आविष्कार हुआ। यह संखिया और [illegible] के संयोग से बनती है, और

इतनी ज़हरीली होती है कि यदि इसकी एक बूँद किसी मनुष्य के शरीर पर गिर पड़े, तो उसकी तुरंत मृत्यु हो जाय ; किंतु थोड़ी मात्रा में देने से यह गैस पागलपन [Paresis and locomotor ataxia] दूर करने की एक उत्तम ओषधि है। ये रोग अब तक असाध्य समझे जाते थे; किंतु पागलपन के २१ रोगियों पर इधर इस गैस का प्रयोग किया गया, और वे सब-के-सब नीरोग हो गए।

× × ×

३. अलार्म-घड़ी

हमारे देश में अलार्म-घड़ी का उतना प्रचार नहीं है, जितना पाश्चात्य देशों में। यहाँ पर ऐसी घड़ी केवल उन विद्यार्थियों के पास रहती है, जिन्हें परीक्षा देनी होती है। अन्य मनुष्यों को अलार्म-घड़ी का व्यवहार करते बहुत कम देखा जाता है। किंतु अमेरिका आदि देशों में, जहाँ मनुष्यों को प्रत्येक क्षण एक-एक काम करना होता है, ऐसी घड़ी बड़ी सहायक सिद्ध हुई है। अलार्म-घड़ी ठीक समय पर बजकर यह याद दिला देती है कि आपको इस समय कोई काम करना है। आपके पास इतने काम हैं कि उनके जंजाल में पड़कर आप भूल गए हैं कि इस समय आपको कौन सा काम करना है। इस असुविधा को दूर करने के लिये एक नए प्रकार की घड़ी का आविष्कार हुआ है। इसके चारों तरफ़ कार्ड रखने के दराज़ बने रहते हैं। आप अपने काम को जिस समय करना चाहते हैं, एक कार्ड में उस काम का नाम लिखकर उसके पासवाले दराज़ में लगा दीजिए। समय पर घड़ी बजेगी। आप कार्ड निकालकर पढ़ लीजिए, उसी पर आपका काम लिखा रक्खा है।

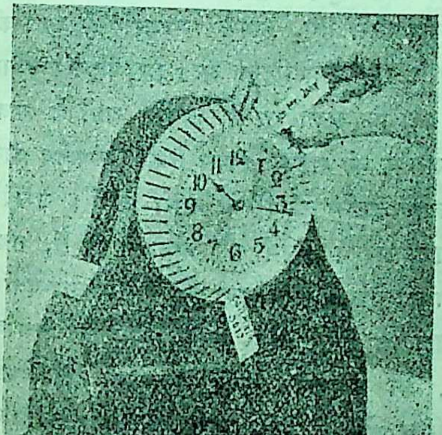

कार्य-व्यस्त मनुष्यों के लिये स्मृति-घड़ी

× × ×

४. नए प्रकार के फ़ायर-ब्रिगेड

भारतवर्ष के बड़े-बड़े शहरों में आग बुझाने के लिये जो फ़ायर-ब्रिगेड हैं, वे आग के बहुत निकट नहीं ले जाए जा सकते ; क्योंकि उन्हें बहुत निकट ले जानेवाला मनुष्य आग की गरमी को नहीं सह सकता। संयुक्त-राज्य, अमेरिका में एक नए प्रकार का फ़ायर-ब्रिगेड व्यवहार में लाया जा रहा है। उसे आग के बहुत पास तक ले जा सकते हैं। उसमें गाड़ी के पीछे एक नल लगा रहता है, जिससे पानी फ़ौवारे-सा निकलता है, और आग बुझानेवाले के लिये छाते

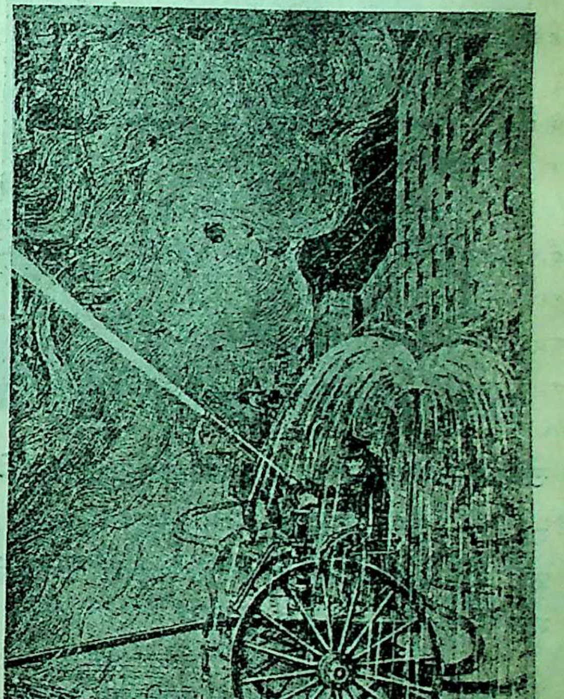

१२५ फ़ीट ऊँचा पानी छिड़कनेवाला नए प्रकार का फ़ायर-ब्रिगेड

का काम करता है । इस जल के कारण आग की गरमी आग बुझानेवाले को कष्ट नहीं पहुँचाती । वह आग के बहुत पास जाकर इच्छानुसार जल छिड़ककर आग बुझा सकता है । इस दमकल से १२५ फ़ीट ऊँचे तक पानी छिड़का जा सकता है ।

किंतु इतने ही से अमेरिका के घरों की रक्षा आग से नहीं हो सकती; क्योंकि वहाँ २२–२३ मंज़िलोंवाले भी मकान हैं। यदि ऊँचेवाले खंड पर आग लग गई, तो

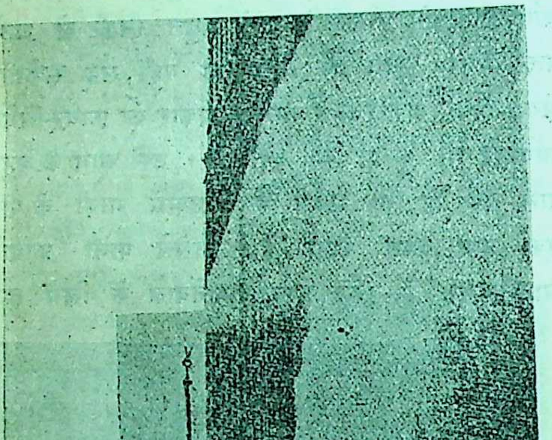

ऊँचे-से-ऊँचे मकानों की आग बुझानेवाला फ़ायर-ब्रिगेड

यह फ़ायर-ब्रिगेड काम न देगा । इसके लिये एक ४५ फ़ीट ऊँची दमकल बनी है । उसी के द्वारा ऊँचे-से-ऊँचे मकानों की आग बुझाई जाती है ।

× × ×

५. एक विचित्र बंदर

नीचे जिस बंदर की तसवीर दी गई है, वह संसार-भर में विचित्र है । यह बोर्नियो-द्वीप में पाया जाता और ऐसे अगम्य स्थान में रहता है कि इसे पकड़ना बड़ा कठिन है । अब तक केवल यही एक पकड़ा गया है । इसकी नाक देखने योग्य है ।

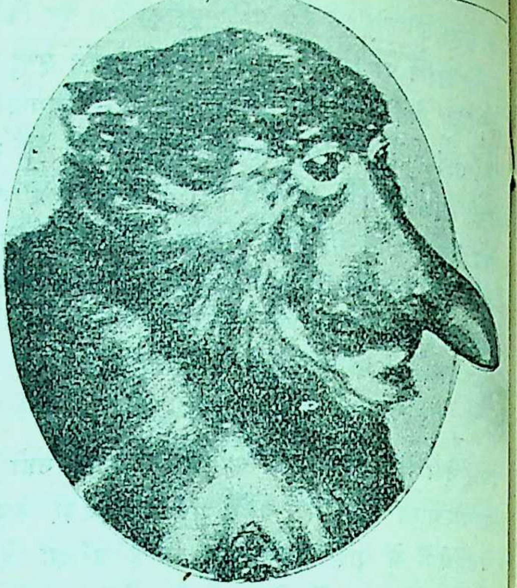

बड़ी नाकवाला विचित्र बंदर

× × ×

६. अद्भुत प्रतियोगिता

योरप और अमेरिका विचित्र देश हैं । वहाँ जो कु होता है, उसमें कुछ-न-कुछ विचित्रता अवश्य पाई जा है । कुछ मास हुए, हमने 'माधुरी' में मूछों की प्रति योगिता के विषय में लिखा था। उस दिन एक समाचा पत्र में पढ़ा कि अमेरिका ने अपने यहाँ के सबसे ब सूरत मनुष्य को गहरी रक़म देकर पुरस्कृत किया है यह देखकर इटली की स्त्रियाँ आगे बढ़ीं । उन्होंने क कि जब ईश्वर ने स्त्रियों को सुंदरता दी है, तब उन सुंदरता की एक प्रतियोगिता हो । समाचार-पत्रों में ब बड़े विज्ञापन छपाए गए, और निश्चित दिन बहुत- स्त्रियाँ, जो अपनेको सुंदर समझती थीं, प्रतियोगि में शामिल होने के लिये आने लगीं । कुछ ही समय निश्चित स्थान स्त्रियों से ठसाठस भर गया । परीक्ष ने पहला पुरस्कार जिस स्त्री को दिया, उसकी अ केवल ९६ वर्ष की थी ! द्वितीय पुरस्कार जिस स्त्री मिला, उसकी आयु बहुत अधिक नहीं, केवल ७३ वर्ष थी । ये दोनों स्त्रियाँ अपूर्व सुंदरी हैं ! यदि भारतवर्ष ऐसी प्रतियोगिता होती, तो उसका न-मालूम क्या ह होता । हमारा ख़याल है कि यहाँ तीस वर्ष से ऊपर स्त्रियाँ बुड्ढी कहकर निकाल दी जातीं ।

रमेशप्रसा

महिला मनोरंजन

१. टर्की में स्त्रियों की जागृति

टर्की की स्त्रियाँ चिरकाल से परदे में रहती आई हैं । किंतु अब वे परदे से निकलकर समाज के बहुत-से कामों का भार ले रही हैं । स्त्रियों में शिक्षा-विस्तार का भी प्रयत्न हो रहा है । उनके लिये कांस्टेंटिनोपल तथा अन्यान्य शहरों में प्राथमिक तथा उच्च श्रेणी के विद्यालय स्थापित हुए हैं । कांस्टेंटिनोपल-विश्वविद्यालय में स्त्रियों की शिक्षा के लिये एक विशेष विभाग खुला है । सरकारी ख़र्च से बहुत-सी स्त्रियाँ योरप के भिन्न-भिन्न देशों में शिक्षा प्राप्त करने के लिये भेजी गई हैं ।

तुर्की स्त्रियों की प्रधान हितैषिणी श्रीमती हालिडे अदीब हनूम हैं । पाश्चात्य देशों में इन्हें टर्की की 'जोन ऑफ़ यार्क' कहते हैं ; क्योंकि तुर्क-जाति के पुनरुत्थान में इनका भी हाथ है । यह कमालपाशा के मित्रों में हैं । राज्य के गंभीर विषयों में कमालपाशा इनकी सलाह लेते हैं ।

श्रीमती हनूम के पिता राज्य-च्युत सुलतान अब्दुल हमीद के कोषाध्यक्ष थे । वह उदार मत के मनुष्य थे, इसलिये उन्होंने अपनी लड़की को पाश्चात्य-भाषा की उच्च शिक्षा देने में कमी नहीं की । इसका फल यह हुआ कि टर्की-जैसे देश में जन्म लेकर भी हनूम ग्रेजुएट हो गईं ।

इन्होंने अब्दुल हमीद के निर्वासन के बाद से स्वदेश के स्त्री-समाज का नेतृत्व ग्रहण कर राजनीतिक आंदोलन में भाग लिया है । पहले यह अँगरेज़ों की बड़ी हितैषिणी और भक्त थीं ; किंतु पीछे पाश्चात्य-जातियों की ऐसी शत्रु हो गईं कि अँगरेज़ों ने इन्हें क़ैद कर निर्वासित करने की चेष्टा की । मगर इन्होंने चालाकी से वेष बदलकर, भागकर, अपनी रक्षा कर ली ।

यह अपूर्व स्त्री, कवि, लेखक, शिक्षक, कूट-राजनीतिक और सैनिक हैं । यथार्थ शिक्षा पाकर, परतंत्र देश में जन्म लेकर, नाना प्रकार की प्रतिकूल अवस्थाएँ रहने पर भी, स्त्रियाँ किस प्रकार अपना रास्ता सुगम कर ले सकती हैं, इसका बहुत बढ़िया दृष्टांत श्रीमती हनूम हैं ।

× × ×

२. स्त्रियों का संघ

कुछ दिन हुए, कलकत्ते में स्त्रियों का एक संघ (League of Women Workers) स्थापित हुआ है । इस अनुष्ठान को सफल बनाने के लिये अँगरेज़, पारसी, बंगाली इत्यादि अनेक जातियों की स्त्रियाँ चेष्टा कर रही हैं । इस संघ का कार्य-क्षेत्र चारों ओर बहु-विस्तृत होगा ।

इस संघ के उद्देश्य में पुरुष-विद्रोह का लेश-मात्र भी आभास नहीं मिलता । अपनी अवस्था को सुधारने के लिये स्त्रियाँ धैर्य तथा संयम के साथ प्रयत्न करेंगी । वे पुरुषों से विद्रोह करना नहीं चाहतीं ; अपने अधिकार पर डटे रहना ही उनका लक्ष्य है । इसलिये आशा की जाती है कि यह स्त्री-संघ स्त्री-समाज और देश का उपकार करने में समर्थ होगा । ईश्वर इसे सफलता दें ।

× × ×

३. पर-राष्ट्र-विभाग में स्त्री

डेलीमेल के एक संवाद-दाता का कहना है कि रशिया के पर-राष्ट्र-विभाग का संचालन प्रधान रूप से एक स्त्री के हाथ में है। इनका नाम सिमानोवा है। इनकी उम्र तीस वर्ष के लगभग है। इनकी आँखों में सरलता भरी है; किंतु स्वभाव बड़ा उग्र है। सज़ा देने के समय सिमानोवा निष्ठुर और निर्मम हो जाती हैं। इनके आदेश से बहुत-से मनुष्य गोली से मार डाले गए हैं। गत ६ महीने में २० हज़ार रूसी इस रमणी की आज्ञा से आर्कैंजेल में निर्वासित कर दिए गए हैं। सिमानोवा का नाम रशिया का बच्चा-बच्चा जानता है।

× × ×

४. महिला-वकील

कटक के सुप्रसिद्ध नेता तथा बिहार के भूतपूर्व मंत्री माननीय मधुसूदन दास की एक संबंधी कुमारी सुधांशु-बाला हाजरा हैं। गत वर्ष इन्होंने बी० एल्० की परीक्षा पास कर पटने में 'प्रैक्टिस' करने की अनुमति चाही थी; किंतु उस समय पटना-हाईकोर्ट के विचारपतियों ने अनुमति नहीं दी। इसलिये श्रीमती हाजरा ने प्रिवी-कौंसिल में अपील की। इतने में भारतीय व्यवस्थापिका सभा में स्त्रियों को 'प्रैक्टिस' करने का अधिकार देना स्वीकृत हुआ। इस अधिकार को पाकर फिर इन्होंने दर्ख़्वास्त दी, और अब इनका नाम वकीलों की श्रेणी में दर्ज हो गया है। यह प्रथम भारतीय महिला-वकील हैं।

× × ×

५. स्त्री-डॉक्टर का आविष्कार

डॉक्टर श्रीमती लुइस पियर्स 'जांस हपकिंस-कॉलेज' की ग्रेजुएट हैं। इन्होंने राकफ़ेलर-इंस्टीटयूट में दस वर्ष तक काम किया है। इन्होंने पक्षाघात तथा निद्रा-रोग की एक ओषधि का आविष्कार किया है। डॉक्टर पियर्स इस दवा को लेकर बेलजियन कंगो में गई थीं। वहाँ चार महीने से यह उक्त रोगों की दवा कर रही हैं। इन्हें सफलता भी प्राप्त हुई है।

× × ×

६. स्त्री-इंजीनियर

स्त्रियाँ जितना समय घर में बिताती हैं, उतना पुरुष नहीं बिताते। यदि घर ख़राब हुआ, तो जितना दुःख स्त्रियों को होता है, उतना पुरुषों को नहीं। इसलिये पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों का इंजीनियर होना अधिक लाभ-दायक जान पड़ता है। किंतु वास्तव में ऐसा नहीं देखा जाता। अमेरिका के "वीमेन-सिटिज़न" नामक पत्र में श्रीमती मार्जरी शूलर ने लिखा है कि "स्त्रियाँ इंजीनियर क्यों नहीं देखे जाते? यदि स्त्रियाँ इंजीनियर हों, तो इसमें दोष ही क्या है? अमेरिका के युनाइटेड स्टेट्स के इंजीनियरों में प्रतिशत एक स्त्री का औसत है। स्त्रियाँ ही गृहस्थी का काम करती हैं; किंतु उन्हें घर बनाते नहीं देखा जाता। घर का नक़्शा बनाते हुए भी स्त्रियाँ नहीं पाई जातीं। यह आश्चर्य की बात है। अस्तु। हमें यह देखकर प्रसन्नता हुई कि कुमारी एलिना मैनिंग ने स्त्रियों को एक नया मार्ग दिखलाया है। यह इस देश की सुविख्यात स्त्री-इंजीनियरों में हैं।"

भारतवर्ष की स्त्रियाँ सब देशों से पिछड़ी हुई हैं। फिर भी यहाँ की स्त्रियाँ शिक्षा देने का काम, डॉक्टरी, वकालत आदि करने लगी हैं। देखें, उनमें इंजीनियर कब होती हैं!

× × ×

७. देश-विदेश की स्त्रियाँ

चीन—बीस वर्ष आंदोलन करने के बाद मध्य-चीन की स्त्रियों ने वोट देने का अधिकार पाया है। आजकल उयं-च्युं-कू नाम की एक स्त्री वहाँ की आईन-सभा की एक सभ्य हुई हैं। दक्षिण-चीन की स्त्रियाँ भी अपना अधिकार पाने के लिये प्राण-पण से चेष्टा कर रही हैं।

अमेरिका—श्रीमती सारा फ़ारले नाम की एक वृद्ध स्त्री ने पैंसिलवेनिया के सरकारी विद्यालय से उद्भिद्-विद्या में डिग्री प्राप्त की है। उनके दो लड़के भी युनिवर्सिटी के ग्रेजुएट हैं। उनके तेरह नाती भी हैं। उक्त कॉलेज से एक और वृद्ध महिला—श्रीमती सुशन पोर्टरफ़ील्ड—ने भी उपाधि प्राप्त की है। अमेरिका की स्त्रियों के ज्ञानार्जन-प्रेम के ये ज्वलंत उदाहरण हैं।

अमेरिका युक्त-राष्ट्र के भूतपूर्व प्रेसीडेंट विल्सन की कन्या कुमारी मार्गरेट विल्सन ने व्यवसाय-क्षेत्र में प्रवेश किया है। इन्होंने विज्ञापन का एक बड़ा कारबार खोला है।

इंडियाना की श्रीमती वारिंगटन को युक्त-राष्ट्र की प्रधान अदालत में 'प्रैक्टिस' करने का अधिकार मिल गया है। इसके पहले केवल एक स्त्री को इस अदालत में प्रैक्टिस करने की आज्ञा मिली थी।

श्रीमती विला सिबार्ट कैथर को इस वर्ष पुलिट्जर-पुरस्कार मिला है । उनके उपन्यास का नाम "हमारा एक आदमी" है । यह पुरस्कार ३०००) रु० से भी अधिक का है, और प्रत्येक वर्ष उसी उपन्यास-लेखक को दिया जाता है, जो अमरिका के सामाजिक, पारिवारिक और राष्ट्रीय जीवन के उच्च आदर्श का चित्र उत्तमतापूर्वक खींच सकता है ।

आईसलैंड—कुमारी वियर्सन आईसलैंड की आईन-सभा में सदस्य निर्वाचित हुई हैं । १९१५ ई० से इस बर्फ़ीले देश की स्त्रियाँ वोट का अधिकार प्राप्त कर उसका उपयोग कर रही हैं ।

जेनेवा—अंतरराष्ट्रीय बालकों के हित-साधक-संघ में एक प्रस्ताव यह पास हुआ था कि बालकों को बायस्कोप के बुरे चित्रों (moving picture) से बचाना चाहिए । इसके लिये एक केंद्रिक संस्था स्थापित हुई है, जो संसार के बायस्कोप के चित्रों को देखकर अपनी राय देगी कि किस कंपनी के चित्र लड़कों के देखने योग्य हैं, और किसके नहीं ।

भारतवर्ष—इस वर्ष कुमारी सी० एच्० वसु वर्तमान और मध्य युग की भाषा-संबंधी परीक्षा में आक्सफ़ोर्ड-विश्वविद्यालय से, द्वितीय विभाग में, उत्तीर्ण हुई हैं ।

"वनफूल"

× × ×

८. अमेरिका की स्त्रियाँ

वास्तव में अमेरिका के युक्त-राष्ट्र की स्त्रियों को आज तक क़ानून का पूरा अधिकार नहीं मिल सका है । आलाबामा-प्रदेश में स्त्रियाँ अपनी संतानों की अभिभाविका नहीं होने पातीं ; क़ानून के मुताबिक़ पुरुष ही अभिभावक माने जाते हैं । आर्कांस-प्रदेश में स्त्रियाँ अपने मा-बाप की संपत्ति में भी पुरुष के बराबर हिस्सा नहीं पातीं । पैतृक संपत्ति पर पुत्री की अपेक्षा पुत्र का अधिकार अधिक होता है । फ़्लोरिडा-प्रदेश में संतानों की कमाई पर पिता का ही पूरा अधिकार होता है ; माता उसमें हस्तक्षेप नहीं कर सकती । इस प्रदेश में, संतान द्रव्योपार्जन किस प्रकार करे, इस विषय में पिता के मत को ही प्रधानता दी जाती है, माता के मत की उपेक्षा की जाती है । लुसियाना-प्रदेश में विवाहिता स्त्री की गणना क़ानूनन् नाबालिग़ या पागल की श्रेणी में की जाती है । यहाँ की स्त्रियाँ व्यवसाय आदि में भी हाथ नहीं डाल सकतीं । म्यासाचुसेट्स-प्रदेश में स्त्रियाँ जूरियों के आसन पर नहीं बैठने पातीं । वर्जीनिया-प्रदेश में विवाहिता स्त्रियों का परिश्रम-पूर्वक कमाया हुआ धन भी पति की तहवील में चला जाता है ।

युक्त-राष्ट्र में इन अन्यायी क़ानूनों के विरुद्ध आंदोलन चल रहा है । वहाँ के वक्ता तथा लेखक अपनी वक्तृताओं और लेखों द्वारा इस अन्याय का विरोध कर रहे हैं । उनका कहना है कि जब तक ये सब क़ानून अमेरिका से नहीं उठ जायँगे, तब तक स्त्रियाँ यह समझेंगी कि वे बहुत पुराने विलायती क़ानून के अधीन रहकर ही अपना जीवन बिता रही हैं ।

× × ×

९. विलायत में विवाह-विच्छेद (तलाक़) का क़ानून

विलायत में तलाक़-प्रथा का क़ानून संशोधित होकर पार्लियामेंट में पास हो गया । इस क़ानून के अनुसार यदि पति व्यभिचारी प्रमाणित हो जाय, तो उसकी स्त्री उसे छोड़ दे सकती है ।

× × ×

१०. बड़ौदे में स्त्री-शिक्षा

इस समय बड़ौदे में ३७२ बालिका-विद्यालय हैं । इन विद्यालयों में लगभग ३०.३३१ बालिकाएँ शिक्षा प्राप्त करती हैं । दूसरे स्कूलों में भी ३१.४६८ स्त्रियाँ विद्योपार्जन कर रही हैं । बड़ौदे में ख़ास स्त्रियों के लिये एक कॉलेज भी है ।

बड़ौदे में एक गुरुकुल केवल कन्याओं के लिये है । इसकी स्थापना आज से दो वर्ष पहले हुई थी । कविरत्न पंडित शंकर शर्मा तथा उनकी पत्नी सौभाग्यवती श्रीमती इच्छा-देवीजी ने इसके लिये बड़ा उद्योग किया है । यहाँ कन्याएँ ब्रह्मचारिणी बनकर सांगोपांग वेदादि शास्त्रों का अभ्यास करती हैं । कन्याओं को केवल विवाह की वस्तु समझनेवाले इसे कलियुग की महिमा कहकर चौंक उठेंगे । उनके विचार में कन्याओं को ब्रह्मचारिणी बनाना और फिर वेद पढ़ाना वज्रपात ही के समान होगा । यह गुरुकुल उक्त दंपति की देख-रेख में बड़ी उत्तमता से चल रहा है । कन्याएँ संस्कृत में अच्छी योग्यता प्राप्त कर सकती हैं, इसका प्रमाण उक्त गुरुकुल है । इस गुरुकुल में प्रत्येक रविवार को आर्य-समाज के

लोग जमा होते और पंडितजी के उपदेशों से लाभ उठाते हैं । कन्याओं को योग्य बनाने का यह प्रयास बहुत ही उत्तम तथा अनुकरणीय है । सरकारी अस्पताल के सामने, किराए के मकान में, अभी यह संस्था चल रही है ; परंतु ईश्वर की कृपा से शीघ्र ही एक स्वतंत्र मकान में चली जायगी, यह निश्चित है । लड़कियों को गृह-कार्य आदि में पूर्ण रूप से योग्य और चतुर बना देना इस संस्था का उद्देश्य है ।

सूरसागर-तालाब के ऊपर एक भव्य-भवन में महारानी गर्ल्स हाई स्कूल है । यहाँ पर्दे की प्रथा न होने से सैकड़ों लड़कियाँ इस स्कूल में उच्च शिक्षा प्राप्त करती हैं । इस स्कूल के तीन विभाग हैं । एक विभाग बंबई-युनिवर्सिटी की मैट्रिक-परीक्षा के लिये लड़कियों को तैयार करता है । दूसरे विभाग का कर्वे के महिला-विश्वविद्यालय से संबंध है । तीसरा विभाग गृह-शिक्षा देता है । जो लड़की मैट्रिक पास करना चाहती है, वह चाहे, तो बंबई-युनिवर्सिटी अथवा कर्वे-युनिवर्सिटी की परीक्षा में बैठ सकती है । अन्य लड़कियाँ गृह-शिक्षा का कोर्स ले सकती हैं । गृह-शिक्षा-कोर्सवालियों को सीना, गाना, बेल-बूटे काढ़ना, बच्चे की सँभाल, कपड़े धोना, भोजन पकाना इत्यादि काम सिखलाए जाते हैं । साथ ही गुजराती-भाषा में भूगोल, इतिहास और साहित्य का ज्ञान भी कराया जाता है । अँगरेज़ी भी तार-चिट्ठी पढ़ने लायक़ सिखा देते हैं । इस स्कूल की कन्याएँ Girl Guilding का भी कार्य सीखती हैं ।

भारतवर्ष में स्त्री-शिक्षिकाओं का बड़ा अभाव है, इस कमी को देखकर ही फ़ीमेल-ट्रेनिंग-कॉलेज की स्थापना हुई है । इसमें गुजराती किताबें पढ़ने पर तीन साल तक शिक्षा का कार्य सिखलाया जाता है । इसका भी मकान बहुत भव्य है । इस संस्था में मध्यम और उत्तम वर्गों में हिंदी अनिवार्य है । इसकी उपयोगिता को देखते हुए कहना पड़ता है कि ऐसे ही और भी ट्रेनिंग-कॉलेजों के खुलने की आवश्यकता है ।

× × ×

११. मिसर का महिला-डेलिगेशन

अखिल-विश्व-महिला-सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिये जो महिला-डेलिगेशन इस बार इटली गया है, उसकी अभ्यर्थना के लिये अनेक बड़े-बड़े घरानों की मुस्लिम महिलाएँ एकत्र हुई थीं । बड़े-बड़े उच्च पदाधिकारी पुरुष भी इस सभा में उपस्थित थे । महिला-डेलिगेशन की सभा-नेत्री ख़ातून हूदा शेरा, सैयदा नबूई मूसा और सैयदा जीजनबूई और उनके साथ अनेक महिला-सहचरी उक्त डेलिगेशन में शामिल हुई थीं । उन्हें बिदा करने के लिये मिसर के प्रधान मंत्री महमूदपाशा भी उपस्थित थे । "अल-अख़बार"-नामक संवाद-पत्र की एक महिला-प्रतिनिधि संपादकों की ओर से उन्हें अभिनंदित करने के लिये भेजी गई थीं । उन्होंने सब संपादकों का यह संदेशा कहा कि "आप लोगों की यात्रा सफल हो, इसके लिये देश के सभी संपादक एक स्वर से मंगल की प्रार्थना ईश्वर से करते हैं ।" उक्त संपादक-प्रतिनिधि के आगे ख़ातून हूदा ने कहा—"स्वदेश की पद-दलित, लांछित तथा अपमानित महिलाओं के लिये हमारा यह प्रधान कर्तव्य होना चाहिए कि वे न्याय्य सम्मान और अपने अधिकार पाने की अधिकारिणी तथा जातीय आंदोलन में सहायिका होकर देश को परतंत्रता से मुक्त करने में समर्थ हों ।" उन्होंने यह भी कहा कि सम्मेलन में वह एक प्रबंध पढ़ेंगी, जिसका अभिप्राय यह होगा कि मुस्लिम-रमणियों को पहले किस प्रकार सभी अधिकार प्राप्त थे, और फिर वे किस प्रकार अपने समस्त अधिकारों से वंचित कर दी गईं । इसी विषय पर विशद रूप से प्रबंध में प्रकाश डाला गया है ।

× × ×

१२. अमेरिका में पंजाबी महिला

श्रीमती सुशीला-देवी पंजाब के एक अच्छे घराने की और ज़मींदार की पत्नी हैं । उन्होंने यथासाध्य चेष्टा करके विधवाओं की सहायता के लिये एक शिल्प-विद्यालय की स्थापना की है । उस विद्यालय के बनाए हुए शिल्प-द्रव्यादि बेचने और भारतीय स्त्रियों की दुरवस्था की आवाज़ को दूरस्थ देशों में पहुँचाने के लिये आप अमेरिका गई हैं । उक्त श्रीमतीजी संपूर्ण योरप का भ्रमण समाप्त कर अब अमेरिका पहुँची हैं । आप भारतीय नारी-समाज-गौरव का स्तंभ कही जा सकती हैं । ईश्वर करे, आपकी शुभ कामना सफल हो ।

गोपीनाथ वर्मा

पुस्तक-परिचय

१. वैद्यक और शारीरिक

दीर्घ जीवन के रहस्य—लेखक, श्रीयुत पं० भूपनारायण दीक्षित, बी० ए०, एल्० टी०। प्रकाशक, श्रीयुत राजाराम चौबे, 'दुअन्नी-पुस्तकमाला'-कार्यालय, हरदोई।

जर्मनी के डॉक्टर प्रोफ़ेसर हूफ़लैंड की बनाई The Art of prolonging life के आधार पर इस पुस्तक की रचना की गई है। इसमें जीवन बढ़ाने के उपायों का वर्णन है। भारतीय आयुर्वेद की दिन-चर्या में आहार-विहार-संबंधी जो वर्णन है, उसी प्रकार की कुछ बातें इस ३२ पृष्ठों की पुस्तक में लिखी हैं। सात्त्विक आहार-व्यवहार पर विशेष ज़ोर दिया गया है। पुस्तक सर्व-साधारण के पढ़ने और ध्यान देने लायक़ है।

× × ×

ब्रह्मचर्य—लेखक, श्रीरमेशचंद्र चक्रवर्ती। आकार छोटा। पृ० सं० ७८। मूल्य छः आने, और प्राप्ति-स्थान सेन-रे ऐंड कों०, कार्नवालिस स्ट्रीट, कलकत्ता।

पुस्तक का प्रतिपाद्य विषय उसके नाम से ही स्पष्ट है। यह पुस्तक विशेषतः विद्यार्थियों के हित को लक्ष्य करके लिखी गई है। विषयों का संघटन बुद्धिमत्ता से किया गया है, और प्रमाणों का संग्रह करने में यथेष्ट परिश्रम। इसके लेखक एक भुक्तभोगी सज्जन हैं। विद्यार्थियों तथा नवयुवकों को एक बार इसे अवश्य पढ़ना और तदनुरूप आचरण करना चाहिए।

× ×

शिवराम-भूषण—लेखक, पं० शिवराम वैद्य, 'महोल्ला'(?) बालकराम, नजीबाबाद, बिजनौर। मूल्य ६ आने।

लेखक ने इसे "बाल-रक्षा तथा बाल-चिकित्सा का अद्वितीय ग्रंथ" बतलाया है। इसमें संस्कृत-मूल और हिंदी-टीका है। मूल-ग्रंथ वैद्यक के पुराने ग्रंथों से संग्रह किया गया है। हिंदी-टीका होने पर भी मूल में आपने "सर्जरसः राल इति लोके—हारिद्रकः हरदुआ कदंब इति लोके—अश्वकर्णः सांकु इति लोके" इत्यादि लिखने की आवश्यकता समझी है। इसका मूल और टीका, दोनों अशुद्ध हैं। बहुत-सी अशुद्धियाँ छापे की हैं, और बहुत-सी स्वयं वैद्यजी महाराज की।

पुस्तक के आरंभ में ही सुश्रुत के "मूत्रपुरीषरेतसः" का अर्थ करते हुए आप कहते हैं—"जिनके वीर्य में मूत्र हो या जिनके वीर्य में विष्ठा हो।" आगे भी आपने अपनी यही बात कई जगह दुहराई है, हालाँ कि सुश्रुत के मूल में ही इसकी व्याख्या स्पष्ट लिखी है कि "मूत्रपुरीषगन्धिसन्निपातेनेति।" आपने इस पंक्ति का अर्थ करते हुए भी अपनी वही बात कही है। यदि पुस्तक लिखने के पहले वैद्यजी महाराज किसी सद्वैद्य या डॉक्टर से यह समझने की कोशिश करते कि 'वीर्य में विष्ठा' किस तरह हो सकती है, तो अच्छा होता।

भूमिका में आपनें लिखा है—"इस ग्रंथ में अशुद्धिता(?) होवे तो विद्वान् उसे शुद्ध कर लेवें" अतएव जिन विद्वानों को 'अशुद्धिता' शुद्ध करके पढ़ना हो, वे आपसे इसे मँगा सकते

हैं। "यदि किसी ख़ास रोग पर पूछना हो, तो" ।) फ़ीस भेजने से वैद्यजी "चिकित्सा मये (?) अनुपान लिखकर" भेज देंगे। अब तक लोग औषधों के अनुपान सुना करते थे, पर अब आपने चिकित्सा के अनुपानों की ईजाद की है!

× × ×

अनमोल बूटी—लेखक, पं० बिहारीलाल बी० ए०, मास्टर गवर्नमेंट हाई स्कूल, अमरोहा, मुरादाबाद। मूल्य साढ़े चार आने।

रॉयल साइज़ के २१ पृष्ठों की इस पुस्तक में आक (मदार) के गुणों का वर्णन और उसके उपयोग के प्रकारों का ज़िक्र है। भाषा इसकी अरबी-फ़ारसी लदी उर्दू है, और अक्षर हिंदी के। लेखक ने अपनी-समझ से कठिन शब्दों का हिंदी-अनुवाद भी टिप्पणी में दे दिया है। यदि मूल-पुस्तक के अरबी-फ़ारसी-शब्दों को निकालकर उनकी जगह हिंदी के शब्द रख दिए जाते, तो यह 'द्रविड़-प्राणायाम' न करना पड़ता। 'न अंधे को बुलाते, न दो जने आते।'

× × ×

जवानी की निशानी—प्रकाशक, सुखसंचारक-कंपनी, मथुरा।

सुखसंचारक-कंपनी, मथुरा के 'चिकित्सा-सिंधु' (माधुरी के गत अंक में समालोचित) की बात पाठक शायद भूले न होंगे। आज उसी कंपनी की एक दूसरी पुस्तक हमारे सामने है। इसके टाइटिल-पेज पर लिखा है—"जवानी की निशानी अर्थात् नपुंसकता...गरमी सुज़ाक की कहानी तथा इनसे उद्धार पाने को चतुर चिकित्सकों की बानी"। पाठक देखेंगे कि इस टाइटिल-पेज के पढ़ने से ही चूरन बेचनेवालों के लटकों का मज़ा आने लगता है। वस्तुतः इस पुस्तिका से सुधा-सिंधु के सार्टिफ़िकटों का प्रचार और उसके नए एजेंट बनाना उद्दिष्ट है। परंतु पुस्तिका को देखते ही लोग फेंक न दें, इसलिये कुछ दूसरी तरह की बातें भी आरंभ में लिख दी गई हैं।

'भूमिका' का आरंभ इस प्रकार होता है—"मनुष्य संसार में दो ही काम करने के लिये आया है, उदर भरे और संतान बनावे (?)।" हमारी सम्मति में तो जो इन्हीं दो को जीवन का उद्देश्य समझता है, वह नर नहीं, नर-पशु है; क्योंकि "आहारनिद्राभयमैथुनं सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम्।" इसकी भाषा गंदी औ भाव अत्यंत लज्जा-जनक हैं। हम उनका उल्लेख कर पाठकों के पवित्र मन को कलुषित करना नहीं चाहते इसमें किस प्रकार की बातें होंगी, यह टाइटिल-पेज 'कहानी' से ही स्पष्ट हो जाता है। न मालू माधुरी-जैसी प्रतिष्ठित पत्रिका में लोग ऐसी घृ पुस्तकें समालोचनार्थ क्यों भेजते हैं!

शालग्राम

× × ×

२. धर्म और दर्शन

धर्मांजलि—लेखक, विद्या-वाचस्पति पं० रघुनाथप्रस शास्त्री, घडियाली, साहित्याचार्य, विद्यानिधि, प्रिंसिपल राधाकृष्ण-संस्कृत-नागरी-विद्यालय; महेंद्रगढ़, पटियाला स्टे मुद्रक, सूरजप्रसाद खन्ना, हिंदी-साहित्य-प्रेस, प्रयाग। साइज़। काग़ज़-छपाई-सफ़ाई साधारण। पृष्ठ-संख्या ११ मूल्य लिखा नहीं।

इस धर्मांजलि में उक्त शास्त्रीजी ने वेद, उपनिष धर्म-शास्त्र, पुराण आदि से समस्त धर्म-कर्म-विषयक नि नैमित्तिक कर्मों का प्रतिपादन बड़ी सुगमता से स हिंदी में, किया है। प्रायः सभी ज्ञातव्य बातें अलग-अल पाठ के क्रम से लिखी हैं। कर्म-कांड और ज्ञान-कांड रहस्य अच्छी रीति से, थोड़े में, खोल दिया है। कम प लिखे भी सहज में ईश्वर, अवतार, पंच देव और देव-पि तर्पण आदि के तत्त्व को जान सकते हैं। पुस्तक अध्यायों में विभक्त है। पाठशालाओं में पढ़नेवा नवयुवकों के विशेष काम की है।

× × ×

सूक्ति-मौक्तिक-मालिका—कर्ता, ज्योतिषी बाबा शिवप्रकाश द्विवेदी विद्या-कलानिधि, रईस, मथुरा। पृष्ठ-सं २४; छपाई-काग़ज़ साधारण। मूल्य ।) आने।

संस्कृत के अनुष्टुप्-छंद में १०८ श्लोक इस मालि में हैं। धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष, ज्ञान और वैराग्य सदुपदेश, शास्त्र-सम्मत रीति से, बड़े मधुर शब्दों में पादित हुआ है। अंत में एक 'कृष्णाद्भुत स्तोत्र' १८ श्लोकों में है; जो कि प्रातःकृत्य करनेवालों के का है। भाषा-पद्यों में मालिका के सब श्लोकों का वाद भी है। इसमें कुछ ग्रंथकर्ता की रचना है,

श्लोकों के समानार्थक तुलसीदास, कबीर, नारायण स्वामी, श्याम कवि आदि के बनाए दोहे-चौपाई उद्धृत कर दिखाए गए हैं। पुस्तक उत्तम है। आदि में उक्त ज्योतिषी बाबा का, रईसी ठाट में, एक चित्र भी है।

× × ×

पंचरत्न-प्रश्नोत्तरमालिका—रचयिता और प्रकाशक, मेवाड़ के बाठरड़े रावतजी साहब श्रीदलेलसिंहजी के लघु भ्राता ठाकुर साहब श्रीगुमानसिंहजी। 'लक्ष्मीनारायण'-यंत्रालय, मुरादाबाद में मुद्रित। पुस्तक मिलने का पता—पं० ज्येष्ठाराम-मुकुंदजी, पु० नं० ३५३, कालबादेवी रोड, जवेरेबाग़, मुंबई। काग़ज़-छपाई मामूली। पृष्ठ-संख्या १२३। मूल्य लिखा नहीं।

यह योग-विषयक ग्रंथ है। इसकी भूमिका में लिखा है—"……इसमें श्रीमान् स्वामीजी महाराज अद्वैतानंद अरविंद भारतीजी और मुमुक्षु देवदत्त का संवाद ठाकुर साहब गुमानसिंहजी ने किया है, जिसमें आत्म-बोध के लिये ज्ञान, राजराजेश्वर-योग, भक्ति, राम-नाम-माहात्म्य और नीति, ये पाँचों विषय पंचरत्न यानी हीरा, पन्ना, माणिक, मोती और पुखराज के समान शोभायमान हैं। इन अमूल्य रत्नों की अपूर्व माला को जो धारण करेगा उसके स्वार्थ, परमार्थ दोनों हस्तामलकवत् हो जायँगे……।" बस, ठीक है! संसार में सब कोइ इसी की तलाश में परेशान रहते हैं। अब ठाकुर साहब ने बीसवीं सदी में अपनी माला सर्व-साधारण के समक्ष प्रकट कर दी है। उसे धारण करके शीघ्र ही दोनों हाथ लड्डू लूटना चाहिए।

गिरिजाप्रसाद द्विवेदी

× × ×

गायत्री-महिमा—उपयोगी निबंध-माला का द्वितीय पुष्प। मूल्य ।) है। पता—कल्पवृक्ष-कार्यालय, कंठाल, उज्जैन।

वैसे तो द्विज-मात्र का ही गायत्री मंत्र होता है; परंतु उसकी महिमा बहुत कम लोग जानते हैं। इस छोटी-सी पुस्तक में बड़ी सुघराई के साथ, सरल भाषा में, वेदों में गाई हुई बात बतलाई गई है। यह प्रत्येक हिंदू के घर में अवश्य रहनी चाहिए।

ॐकार-जप-विधि और गायत्री-महिमा मैंने पढ़ी। शोक तो इस बात का है कि ऐसा भी समय आ गया, जब हिंदुओं को, जिनका सर्वस्व ॐ और गायत्री हैं, इनकी महिमा बताने की आवश्यकता हुई। इनकी गुण-गाथा से तो समस्त वेद, शास्त्र और उपनिषद् परिपूर्ण हैं। हर्ष यह है कि इन छोटी-छोटी पुस्तिकाओं में लेखक ने मानो सागर को गागर में भरकर एक बड़ा भारी अभाव दूर किया है। जो रहस्य-पूर्ण बातें लिखी हैं, उनके जानने से जनता को बहुत लाभ पहुँच सकता है, और यदि उनमें लिखे हुए अनुभूत प्रयोगों को कार्य-रूप में परिणत किया जाय, तो एक बार फिर भारतवर्ष शिरोमणि बन सकता है। बड़ी उत्तमता इन निबंधों की यह है कि ऐसे गहन विषय को बड़ी सरल भाषा में लिखा है। पुस्तक प्रत्येक हिंदू के पास रहने योग्य है।

राधाकांत भार्गव

× × ×

श्रीरामकृष्ण-कथामृत—प्रकाशक, रामनरायणलाल, प्रयाग। लेखक, पं० रामदहिन मिश्र काव्य-तीर्थ। काग़ज़, छपाई-सफ़ाई अच्छी, मूल्य ।-) और पृष्ठ-संख्या ५९।

इसमें प्रसिद्ध स्वामी विवेकानंद के गुरु श्रीरामकृष्ण परमहंसजी के कुछ उपदेश तथा उनकी संक्षिप्त जीवनी भी दी हुई है। पुस्तक अच्छी है।

× × ×

रामचरित-मानस (सटीक तथा सचित्र)—प्रकाशक, बेलवेडियर-प्रेस, प्रयाग। टीकाकार, पं० महावीरप्रसाद मालवीय, वैद्य, 'वीर कवि', ज्ञानपुर, बनारस-स्टेट। आकार २०×३० अठपेजी। काग़ज़, छपाई-सफ़ाई अच्छी। पृष्ठ-संख्या १४०२; सुंदर जिल्द बँधी हुई प्रति का मूल्य ८)

रामचरित-मानस हिंदी-काव्य-साहित्य का अमूल्य और अद्वितीय ग्रंथ-रत्न है। भारत में इस ग्रंथ का जितना आदर है, उतना किसी ग्रंथ का नहीं। झोपड़ियों से लेकर राज-प्रासादों तक इसका निवास है, और निरंतर रहेगा। इस ग्रंथ की टीकाएँ भी खूब हुईं, संस्करण भी खूब हुए, और प्रचार भी खूब हुआ। जिस प्रेस ने इस ग्रंथ को छापा, उसी ने लाभ उठाया। ऐसा नहीं हुआ कि रामचरित-मानस की प्रतियाँ किसी प्रेस में पड़ी सड़ती रही हों, कोई उनका पूछनेवाला न हो। टीकाकार, प्रकाशक और ग्राहक, सभी इसके लिखने, छापने, खरीदने और पढ़ने में परम संतुष्ट रहे। टीकाकारों और प्रकाशकों ने यथेष्ट अर्थ-लाभ किया, और ज्ञान-पिपासु

ग्राहकों ने पर्याप्त ज्ञान-लाभ। समस्त टीकाओं में कौन-सी टीका शुद्ध और प्रामाणिक है, यह एक विवाद-ग्रस्त प्रश्न है। इसे वही हल कर सकता है, जिसने सब टीकाएँ देखी हों। जो हो, इस समय रामचरित-मानस की यह एक नई टीका हमारे सामने उपस्थित है। इसमें तीन रंगीन चित्र हैं, और एक सादा। इनके अतिरिक्त गोस्वामी तुलसीदासजी का एक चित्र और है। टीका साधारणतः अच्छी हुई है। टीकाकार ने छंदोगत अलंकारों का भी उल्लेख कर दिया है, यही इसकी विशेषता समझिए। टीका की भाषा सरल और बोल-चाल की है। टीकाकार का दावा है कि "इस टीका के लिखने में हमने कवि के उद्देश्यानुसार ही अर्थ करने की चेष्टा की है"; परंतु टीकाकार का यह दावा विचारणीय है। कोई भी टीकाकार—फिर चाहे वह मूल-लेखक की-सी ही पहुँच और योग्यता क्यों न रखता हो—मूल-लेखक के भावों तक पूर्ण रूप से नहीं पहुँच सकता। इसके अतिरिक्त भावों तक पहुँचना एक बात है, और भावों तक पहुँचकर उनको यथातथ रूप में व्यक्त करना दूसरी बात। अत्यंत सूक्ष्म दृष्टि से विचार किया जाय, तो ठीक-ठीक यह भी नहीं कहा जा सकता कि कोई लेखक अपने हृद्गत भावों को भी व्यक्त कर सकता है। हृद्गत भावों को यथातथ रूप में वही व्यक्त कर सकता है, जिसे भाषा पर पूर्ण अधिकार प्राप्त हो। अधिकांश मूल-लेखक भी अपने हृद्गत मूल भावों को नहीं व्यक्त कर पाते। कारण, वे भाषा पर पूर्ण अधिकार नहीं रखते। टीकाकार का यह भी कथन है कि "इस प्रति का मूल-पाठ ठीक कवि की रचना के अनुसार है। परंतु इस विषय में भी हम प्रायः हताश हुए। कहीं-कहीं तो मूल-पाठ तोड़ा-मरोड़ा हुआ भी दृष्टि-गत हुआ।

रामचरित-मानस की अब तक अनेकों टीकाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं। फिर इसका प्रकाशन किस उद्देश से किया गया, यह समझ में नहीं आता। यदि यह टीका और टीकाओं से कुछ अधिक विशेषता रखती होती, तो भी एक बात थी। परंतु हमें इसमें कोई उल्लेखनीय विशेषता भी नहीं दृष्टि-गत हुई। मूल्य भी इसका कई अन्य टीकाओं से अधिक है। अतएव प्रचार की दृष्टि से भी यह प्रयत्न सार्थक नहीं हो सकता। यदि प्रकाशक मूल्य कम कर दें, तो अलबत्ता कुछ सुबीता हो सकता है। जो हो, लोक-हितैषणा की दृष्टि से तो यह संस्करण को विशेष महत्त्व नहीं रखता।

इसमें छपाई-बँधाई-संबंधी अशुद्धियाँ भी अनेक हैं फ़ार्म उठानेवाले की ग़लती से ५९वें फ़ार्म के आ ६१वाँ फ़ार्म और तत्पश्चात् ६०वाँ फ़ार्म लग जाने ४७२ पृष्ठ के आगे ४८१, तथा ४८८ पृष्ठ के आ ४७३ शुरू होता है। यह त्रुटि तो इसी संस्करण सुधर जानी चाहिए। पुस्तक टीकाकार और प्रकाशक दोनों के पते से प्राप्त हो सकती है।

× × ×

श्रीबदरी-केदार-यात्रा—प्रकाशक, श्रीयुत पं० द शंकर दुबे, एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, ९, गँगनी सुकुल तालाब, लखनऊ। लेखक, श्रीयुत पं० बलरामजी दुबे आकार २०×३० सोलह-पेजी। पृष्ठ-संख्या ७२, काग़ज़-छपा सफ़ाई साधारणतः अच्छी, और मूल्य ।)

हिंदू-समाज में भगवान् बदरीनाथ और केदारनाथ स्थान महातीर्थ गिने जाते हैं। शिक्षित-अशिक्षित, सम असमर्थ, सभी कुटुंबों में इन महातीर्थों की यात्रा करने प्रथा है। कारण, अन्य तीर्थ-स्थलों का उतना माहात् नहीं, जितना इन महातीर्थों का। इसका एक यह भी का है कि अन्य तीर्थ-स्थलों की यात्रा रेल से होने के का अत्यंत सुगम है; परंतु बदरी-केदार-तीर्थों की यात्रा अंतिम भाग पैदल तय किया जाता है। इस यात्रा यात्रियों को, यात्रा-विषयक विशेष जानकारी न होने कारण, प्रायः कष्ट और अपव्यय उठाना होता है। हिंदी एक तो इस विषय की पुस्तकें बहुत कम हैं, और जो भी, वे संतोष-जनक नहीं। उन्हीं के अवलोकन-मात्र आश्रित रहकर कोई यात्री न तो यात्रा का यथेष्ट आ और लाभ उठा सकता है, न उसमें होनेवाली असुविधा से बच सकता है। इस यात्रा में स्थान-स्थान पर वि दर्शनीय स्थान हैं। जानकारी न होने के कारण या उनके दर्शनों से भी प्रायः वंचित रह जाते हैं। यह हर्ष बात है कि इस पुस्तक के लेखक, पं० दयाशंकरजी के पिता, श्रीयुत बलरामजी दुबे ने इस पुस्तक की र करके इन अभावों की पूर्ति की है। इसमें बदरी केदारनाथ तथा गंगोत्री की यात्रा के विषय की कोई नहीं छूटने पाई है। पुस्तक यात्रार्थियों के तो अवलो करने योग्य है ही, साथ ही मनोरंजक और ज्ञा

बातों की जानकारी प्राप्त करने के लिये सर्व-साधारण शिक्षित-समाज के लिये भी पठनीय तथा संग्रहणीय है। इसमें बदरीश-पंचायन का एक सुंदर चित्र भी है। हमें यह सूचित करते हर्ष होता है कि श्रीमान् बलरामजी दुबे ने इस पुस्तक की १०० प्रतियाँ उन सज्जनों को विना मूल्य देने का विचार प्रकट किया है, जिन्होंने आगामी वर्ष श्रीबदरीनारायण और गंगोत्री की यात्रा करने का निश्चय कर लिया हो। पुस्तक विना मूल्य प्राप्त करने के लिये श्रीयुत दयाशंकर दुबे, ६, गँगनी सुकुल का तालाब, लखनऊ के पते पर पत्र भेजना चाहिए।

"सत्य सेवक"

× × ×

३. ज्योतिष

ग्रहणदर्पण—लेखक, श्री १०८ ज्योतिषी बाबा माधवलालजी महाराज की आज्ञानुसार तदनुज ज्यो० विभाकरलाल और ज्यो० शिवप्रकाश। मूल्य ।-) डाकव्यय)॥ छपाई-कागज़ साधारण। पृष्ठ-संख्या ३५।

इस पुस्तक का विषय नाम ही से स्पष्ट है। गणेश दैवज्ञ का बनाया एक ग्रहलाघव-नामक सुप्रसिद्ध ज्योतिष का करण-ग्रंथ है। यह १४४२ शक में बना था। इस पर मल्लारि-कृत सोपपत्तिक टीका और विश्वनाथ दैवज्ञ-कृत उदाहरण प्रसिद्ध है। इधर स्वर्गीय महामहोपाध्याय श्रीसुधाकर द्विवेदीजी ने भी आलोचनात्मक नवीन उपपत्ति के साथ इस ग्रंथ को प्रकाशित किया था। ज्योतिष की आचार्य-परीक्षा में यह पाठ्य-रूप से निर्वाचित है। ज्योतिष के करण-ग्रंथ कई हैं; परंतु पठन-पाठन में जितना ग्रहलाघव का प्रचार है, उतना औरों का नहीं। उसके आधार पर कई देशों में पंचांग बनते हैं, और उनके अनुसार सब लोग बेखटके श्रौत-स्मार्त कर्म करते हैं। यह सौरपक्षीय करण-ग्रंथ है। यद्यपि इसमें ग्रंथकर्ता ने आर्य-पक्ष और ब्रह्म-पक्ष का भी किसी अंश में आश्रयण किया है। इस समय ही नहीं, बहुत प्राचीन काल से सौर-पक्ष ही का प्राधान्य चला आता है। आर्य-ब्रह्म-पक्ष का गणित तो आचार्य वराहमिहिर (शक ४२७) के समय में ही गड़बड़ हो चुका था। कहीं-कहीं ब्रह्म-पक्षीय पंचांग भी प्रचलित है; जैसे जोधपुर का, चंड-नामक ज्योतिषी का चलाया, 'चंडू'-पंचांग। परंतु वह अनार्ष-मूलक होने से मान्य नहीं है।

इस ग्रहणदर्पण में ग्रहलाघव के अनुसार हिंदी में चंद्र-ग्रहण और सूर्य-ग्रहण की गणित-विधि उत्तम रीति से दिखलाई है। पुस्तक के आदि में पलभा, स्वदेशोदय, क्रांति और लंबन का दिग्दर्शन भी है। अंत में सैकड़ों प्रसिद्ध नगरों का अक्षांश और देशांतर-कोष्ठक लिख दिया गया है, जैसा काशी के श्रीबापूदेव शास्त्रीजी के पंचांग में लिखा रहता है।

गिरिजाप्रसाद द्विवेदी

× × ×

४. बालोपयोगी

बालक—लेखक, श्रीयुत संतराम बी० ए०। प्रकाशक, साहित्य-सदन, जालंधर। आकार २०×३० सोलह-पेजी। पृष्ठ-संख्या १८९; मूल्य जिल्ददार का १॥) है।

पुस्तक में शिशु-प्रकृति-विज्ञान-संबंधी अनेक ज्ञातव्य विषय हैं। गृहस्थों और अध्यापकों को यह पुस्तक अवश्य ही पढ़ लेनी चाहिए। लेखक ने पुस्तक के लिखने में बड़ी ही शालीनता दिखलाई है।

यद्यपि यह पुस्तक मौलिक नहीं, तथापि लेखन-शैली की मौलिकता में कोई संदेह नहीं है। लेखक अपने उद्देश्य में सफल-प्रयत्न हुए हैं। लेखक महोदय यशस्वी हैं, अतः हम आपकी कृति को सर्वथा निर्दोष देखने की ही इच्छा से आज कुछ लिख रहे हैं। आशा है, संतरामजी हमें क्षमा करेंगे।

भाव सुंदर और प्रयत्न श्लाघ्य होते हुए भी आपकी पुस्तक में कतिपय भाषा-विषयक त्रुटियाँ खटकती हैं। यथा—"बालक पुरुष या स्त्री बन जाता है।", "बालक मनुष्य बनकर" इत्यादि। यहाँ यह होना चाहिए—"बालिका अथवा बालक पुरुष या स्त्री बन जाता है।", "बालक युवा बनकर"। आगे चलकर आपने लिखा है—"उत्तम और शिक्षा-प्रद प्रभाव पड़ेगा।" यहाँ "उत्तम" के स्थान में "स्थायी" शब्द होता, तो अच्छा था। इसी प्रकार अन्य वाक्य-विन्यास-विषयक भूलें पुस्तक में रह गई हैं। 'सुगमता' और 'सरलता' शब्द के प्रयोग में कोई अंतर नहीं रक्खा गया। एक की जगह दूसरे का प्रयोग हुआ है।

पुस्तक में 'भीतरे' आदि प्रांतीयता-द्योतक अप्रसिद्ध-शब्दों का प्रयोग खटकता है। संस्कृत-पद्यों का संशोधन भी ठीक नहीं हुआ। यथा "ब्रह्मचर्येसा तपसा" यहाँ "ब्रह्मचर्येण

तपसा" होना चाहिए था । लेखक ने जिन-जिन पुस्तकों से सहायता ली है, उनकी नामावली भी भूमिका में दे दी है। हमारी जान में आपने एच्० टी० नोल्टन के शिक्षा-विज्ञान से भी सहायता ली है; किंतु उसका उल्लेख नहीं किया ।

जो हो, पुस्तक शिक्षा-प्रद है । छपाई-सफ़ाई भी अच्छी है । मूल्य १॥) रुपया कुछ अधिक जान पड़ता है । प्रूफ़-संशोधन में विशेष ध्यान नहीं दिया गया । आशा है, अगले संस्करण में इन त्रुटियों पर अवश्य ध्यान दिया जायगा ।

रामस्वरूप शर्मा 'शार्दूल'

× × ×

५. इतिहास

गुलबदन बेगम का हुमायूँनामा—अनुवादक, श्रीयुत व्रजरत्नदास। प्रकाशक, नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी। मूल्य १॥) और पृष्ठ-संख्या २४१ ।

पहले ५ पृष्ठों में अनुवादक महाशय का वक्तव्य है । फिर २४ पृष्ठों में गुलबदन बेगम का जीवन-चरित्र है । १८५ पृष्ठों में गुलबदन बेगम के मूल ग्रंथ का टिप्पणी-युक्त अनुवाद है । अंत में २७ पृष्ठों की अनुक्रमणिका भी है ।

गुलबदन बेगम हुमायूँ बादशाह की सौतेली बहन थीं । अकबर के समय में उन्हें अपने पिता बाबर तथा भाई हुमायूँ के इतिहास लिखने की आज्ञा हुई । वस्तुतः उन्होंने फ़ारसी-भाषा में हुमायूँनामा नाम की पुस्तक लिखी । अनुवादक महाशय के वक्तव्य से मालूम होता है कि उन्होंने मूल-ग्रंथ से ही अनुवाद किया है । अँगरेज़ी में मिसेज़ बेवरिज का किया हुआ एक अनुवाद है । परंतु उसका सहारा नहीं, सहायता-मात्र ली गई है । गुलबदन के जीवन-चरित्र का सहारा तो मिसेज़ बेवरिज का ग्रंथ ही है ; परंतु इसका कोई उल्लेख नहीं ।

बड़े सौभाग्य की बात है कि अब इतिहास के मूल-ग्रंथ भी हिंदी में प्रकाशित होने लगे । ऐसी पुस्तकों से प्रकाशकों को कोई विशेष लाभ नहीं होता । परंतु यह अवश्य है कि उनसे मौलिक ग्रंथ लिखनेवालों को बड़ी सहायता मिलती है । यों तो ऐसे अन्य ग्रंथ भी हैं, जिनसे मुग़ल-बादशाहों के राजनीतिक मामलों का पता चलता है, परंतु ऐसा यही एक ग्रंथ है, जिससे उनके गार्हस्थ्य-जीवन की झलक मिलती है । कितना भेद है ! बाबर और हुमायूँ का गार्हस्थ्य-प्रेम उनकी बादशाहत के ऊपर था । अकबर तक ग़नीमत रही । परंतु उसके बाद क्या बादशाहत की आवश्यकताओं ने उनके पारिवारिक धर्म को नष्ट नहीं कर डाला ? स्त्री का संसार घर ही है, इसलिये मूल-ग्रंथ की लेखिका को बेगमों की शिकायतें, उनके आमोद-प्रमोद और पारिवारिक स्वास्थ्य-विषयक बातें लड़ाइयों से अधिक रुचिकर मालूम होना कुछ आश्चर्य नहीं है ।

हुमायूँ का जीवन-चरित्र ही इतना घटना-पूर्ण है कि उसमें कहानी का आनंद आता है । फिर उसके गुलबदन की क़लम से लिखे होने के कारण रोचकता और भी बढ़ जाती है । इतिहास का ज्ञान, और मनोरंजन घाते में प्रकाशकों को इस चुनाव के लिये साधुवाद । अनुवादक महाशय का परिश्रम भी सराहनीय है । टिप्पणियों और अनुक्रमणिका से पुस्तक की जो कुछ उपयोगिता बढ़ी है, उसका श्रेय अनुवादक महाशय को ही है ।

× × ×

६. आख्यायिका और उपन्यास

सुप्रभात—लेखक, श्रीयुत सुदर्शन । प्रकाशक, नारायण-दत्त सहगल ऐंड संस, लुहारी गेट, लाहौर । रेशमी जिल्द । मूल्य २) और पृष्ठ-संख्या १८९ ।

गल्प-लेखकों में प्रेमचंदजी की बहुत ख्याति है । परंतु पत्रिकाओं में गल्पों की आवश्यकता ने अन्य अच्छे गल्प-लेखकों की भी सृष्टि की है । श्रीयुत सुदर्शन भी उन्हीं में हैं । उपर्युक्त पुस्तक में १० कहानियों और एक नाटक का संग्रह है । कहानियों के एक विशेष तात्पर्य से लिखे जाने के कारण लेखक की प्रतिभा का पूर्ण विकास नहीं होने पाया, तो भी कला का इतना समावेश अवश्य है कि जिस राजनीतिक उद्देश्य से ये लिखी गई हैं, उनकी पूर्ति हो जाती है । पहली कहानी में बलिदान का मार्ग दिखलाया गया है; दूसरी में भारतीय रमणी के गौरव का दिग्दर्शन है ; तीसरी में राजा को न्यायपरता का उपदेश दिया गया है ; चौथी में असहयोगियों के आत्म-त्याग की झलक है ; पाँचवीं में जलियाँवाले बाग़ की दुर्घटना से एक गृहस्थी के उजड़ने का हृदय-द्रावक दृश्य है ; छठी में सरकारी नौकरी छोड़ने की व्यवस्था की गई है ; सातवीं में जेल का मार्ग दिखलाया गया है ; आठवीं में विदेशी भाव की पराजय है ; नवीं में पत्नी के बलिदान से रायबहादुर साहब का आमूल परिवर्तन है ; दसवीं में अदालतों

न्याय का आनंद है। अंतिम कहानी, नाटक के रूप में, एक वेश्या का सुधार करती है।

हिंदी-साहित्य-क्षेत्र के लिये यह बड़े हर्ष की बात है कि उसके प्रत्येक अंग में देश-भक्ति का अंश और उसके हृदय में भारतीय स्त्रीत्व के प्रति असीम आदर का भाव देख पड़ने लगा है। श्रीयुत सुदर्शन ने दोनों का पूर्ण रूप से निर्वाह किया है। अतएव, यदि कला के नहीं, तो भारतीयता के नाते ही, ये कहानियाँ साहित्य में स्थान पाने योग्य हैं।

मालूम नहीं, ये कहानियाँ कभी किसी पत्र-पत्रिका में छपी भी थीं या नहीं। यदि न छपी हों, तो इस बात के सूचित कर देने की आवश्यकता थी; क्योंकि साधारणतः ऐसी कहानियाँ पहले किसी पत्रिका द्वारा लोग पढ़ चुकते हैं, तब वे पुस्तक-रूप में संग्रह की जाकर पुनः प्रकाशित की जाती हैं।

आरंभ में श्रीयुत व्रजलाल शास्त्री की भूमिका है, जिसमें लेखक की जी खोलकर तारीफ़ की गई है। बहुत ठीक। परंतु यदि यह भार समालोचक पर छोड़ दिया जाता, तो अधिक अच्छा रहता। शायद प्रकाशकों ने इस मामले में जोख़िम में पड़ना ठीक नहीं समझा।

× × ×

रूप-ज्वाला—संपादक तथा प्रकाशक, श्रीयुत दुर्गाप्रसाद खत्री, लहरी-बुकडिपो, काशी। मूल्य ।।), पृष्ठ-संख्या १००।

यह दस मनोरंजक कहानियों का संग्रह है। इसमें दो घंटे दिल बहलाने की सामग्री है। विषय और शैली साधारण है। छपाई और काग़ज़, दोनों अच्छे हैं। आर्ट-पेपर की जिल्द पर 'रूप-ज्वाला' का एक रंगीन चित्र है। इससे अधिक आठ आने में आप क्या चाहते हैं?

× × ×

आदर्श बलिदान—संकलनकर्ता, श्रीयुत अतरसैन जैन। प्रकाशक, नेशनल बुकडिपो, मेरठ। मूल्य ।) और पृष्ठ-संख्या ४०।

यह स्त्रियों के लिये उपयोगी तीन कहानियों का संग्रह है। इनमें एक प्रेमचंदजी की है। शायद बाक़ी दो के संकलनकर्ता महाशय ही विधाता हों; परंतु इसका कहीं कोई ज़िक्र नहीं। आपने अपनी भूमिका में जो कुछ लिखा है, उससे तो यह मालूम होता है कि ये कहानियाँ पहले कहीं प्रकाशित हो चुकी हैं। यदि ऐसा है, तो उन पुस्तकों या पत्रिकाओं का हवाला देना चाहिए था। अधिक लिखना ठीक नहीं; क्योंकि संकलनकर्ता की आज्ञा के अनुसार हमें उनके उत्साह की बाढ़ रोकना अभीष्ट नहीं।

कालिदास कपूर

× × ×

७. पत्र-पत्रिकाएँ

प्रभा—(झंडा-अंक) संपादक, श्रीयुत पं० बालकृष्ण शर्मा, 'नवीन'। संचालक, श्रीयुत पं० शिवनारायण मिश्र, प्रताप-पुस्तकालय, कानपुर। आकार २०×३० अठपेजी। काग़ज़, छपाई-सफ़ाई साधारण। पृष्ठ-संख्या १०८। इस अंक का मूल्य १), और वार्षिक मूल्य ५)

जब से प्रभा ने कानपुर में जन्म लिया है, तब से वह राजनीतिक क्षेत्र में सराहनीय कार्य कर रही है। पहले इसका संपादन पालीवालजी के हाथ में था; परंतु अब कुछ दिन से नवीनजी के हाथ में आ गया है। नवीनजी हिंदी-संसार के सुपरिचित कवि और लेखक हैं। हम आपका संपादन-क्षेत्र में सहर्ष स्वागत करते हैं। आशा है, आपके संपादकत्व में 'प्रभा' उत्तरोत्तर उन्नति करती रहेगी।

'प्रभा' का झंडा-अंक इस समय हमारे सामने है। इस अंक में नागपुर के झंडा-आंदोलन-संबंधी सत्याग्रह-विषयक कोई ५३ चित्र हैं। इनके अतिरिक्त ६ और हैं, जिनमें से एक रंगीन है, और उसमें विविध देशों के राष्ट्रीय झंडों के बीच में भारत का राष्ट्रीय झंडा लिए हुए संसार-पूज्य महात्मा गांधी का एक सुंदर चित्र है। इस संख्या में विविध राष्ट्रों के राष्ट्रीय झंडों के इतिहास-विषयक कई सुपाठ्य लेख, २ सुंदर आख्यायिकाएँ और कई भावमयी कविताएँ हैं। अंक सब प्रकार से पठनीय और दर्शनीय है। हम 'प्रभा' की हृदय से उन्नति चाहते हैं। उसका यह विशेषांकों का क्रम बहुत उपयोगी, उत्तम और गौरव-वर्द्धक है।

× × ×

छत्तीसगढ़—(मासिक पत्र) संपादक और प्रकाशक, श्रीयुत पं० मनोहरप्रसादजी मिश्र 'छत्तीसगढ़' कार्यालय, रायगढ़, मध्यप्रदेश। आकार २०×३० अठपेजी। काग़ज़, छपाई-सफ़ाई साधारण श्रेणी की, पृष्ठ-संख्या ३२ और वार्षिक मूल्य ३)

यह मासिक पत्र अभी हाल ही में निकला है।

आश्विन का प्रथम अंक इस समय हमारे सामने है। इसमें छत्तीसगढ़-संबंधी दो सुंदर और सुपाठ्य साहित्यिक और सामाजिक लेख हैं। इनके अतिरिक्त दो सुंदर कविताएँ, दो आख्यायिकाएँ तथा दो लेख और हैं, जो पठनीय और उच्च कोटि के हैं। विविध विवेचना में संपादक ने छत्तीसगढ़ की स्थिति पर अच्छा प्रकाश डाला है। छत्तीसगढ़ जागृति की दृष्टि से बहुत पिछड़ा हुआ प्रांत है, उसको जगाना ही इसका मुख्य उद्देश्य है। आशा है, यह अपने उद्देश्य की पूर्ति करने में सफलता प्राप्त करेगा। हम इस पत्र की हृदय से उन्नति चाहते हैं।

× × ×

वर्तमान—(विजय-अंक) संपादक, श्रीयुत पं० रमाशंकरजी अवस्थी। इस अंक का मूल्य।) वार्षिक मू० १२) अग्रिम। दैनिक 'वर्तमान' कार्यालय, जनरलगंज कानपुर से प्राप्य।

'वर्तमान' हिंदी-जगत् के उन थोड़े-से पत्रों में है, जिन्होंने बहुत क्षीण और विश्रृंखलित शक्ति लेकर जन्म लिया, और अपनी विशेष शैली और रोचकता के बल से हिंदी-जगत् में एक विशेष स्थान प्राप्त कर लिया है। इसकी भाषा इतनी सरल होती है कि थोड़ा पढ़ा-लिखा व्यक्ति भी इसे पढ़कर लाभ उठा सकता है। यह राष्ट्रीय दल के सिद्धांतों का प्रबल समर्थक और अहिंसात्मक असहयोग-आंदोलन का पक्का पक्षपाती है। अब तक इसमें बोल्शेविज़्म-विषयक जितने पठनीय संपादकीय लेख निकल चुके हैं, उतने बहुत कम दैनिक पत्रों में निकले हैं। मनसुखा का मनोरंजन भी कभी-कभी अच्छा होता है। अब इसका आकार भी बढ़ गया है। यह इसका विजय-अंक है। इसमें कई उपयोगी पठनीय लेख, कविताएँ और मनोरंजक कार्टून हैं। हम इसकी हृदय से उन्नति चाहते हैं।

× × ×

अर्जुन (विजय-अंक)—संपादक, श्रीयुत इंद्र विद्या-वाचस्पति। मिलने का पता—अर्जुन-कार्यालय, नया बाज़ार, दिल्ली। आकार २०×२६ हाफ़शीट। काग़ज़, छपाई-सफ़ाई अच्छी। पृष्ठ-संख्या १०, वार्षिक मू० १२)

अर्जुन की समालोचना हम माधुरी के भाग १, खंड २, संख्या ५ में कर चुके हैं। यह उसी का विजय-अंक है। इसमें स्वामी श्रद्धानंद परिव्राजक, देशभक्त जवाहरला नेहरू तथा वेदतीर्थ पं० नरदेव शास्त्री आदि विद्वान् दे भक्तों के कई सुंदर पठनीय लेख हैं। अंक अच्छा निक है। हिंदी-भक्तों को इसे अवश्य अपनाना चाहिए अर्जुन अपनी एक विशेषता रखता है। उसके ले गंभीर और गवेषणा-पूर्ण होते हैं।

× × ×

देशभक्त (विजय-अंक)—प्रधान संपादक श्र प्रकाशक, ठाकुर महताबसिंह वर्मा, देशभक्त-कार्यालय, आगरा आकार २०×२६ चौपेजी। काग़ज़, छपाई-सफ़ाई अच्छी पृष्ठ-संख्या १२ तथा मूल्य =)। वार्षिक मू० ३)

यह अर्ध-साप्ताहिक समाचार-पत्र थोड़े दिन हुए, आग से प्रकाशित होने लगा है। हम इसका सहर्ष स्वाग करते हैं। यह विजय-अंक अच्छा निकला है। पत्र अभी बहुत कुछ उन्नत बनाने की आवश्यकता है। आगर प्रांत के हिंदी-पढ़े जन-समुदाय को इसे अपना चाहिए।

× × ×

मतवाला (साप्ताहिक समाचार-पत्र)—प्रकाश श्रीयुत सेठ महादेवप्रसाद, 'मतवाला'-ऑफ़िस २३, शंक घोष-लेन, कलकत्ता। संपादक का नाम लिखा नहीं। आ १७×२७ चौपेजी। काग़ज़, छपाई-सफ़ाई सुंदर, पृष्ठ-सं १२, और वार्षिक मूल्य २)

हिंदी-संसार में मज़ाक़ करके साहित्य-रसिकों का मनो रंजन करनेवाला यही एक साप्ताहिक पत्र है। इसके लेख कविता, चुटकिले, टिप्पणियाँ तथा विज्ञापन, सभी अप 'मतवाला' नाम को सार्थक करते हैं। इस समय इस १०वीं संख्या हमारे सामने है। इसके मुख-पृष्ठ पर 'भार की विधवा'-नामक एक कविता 'निराला'-नामक क की लिखी प्रकाशित हुई है। यह 'निराले' महाशय शा पं० सूर्यकांत त्रिपाठी हैं। कारण, रंग-ढंग से यह कवि उन्हीं की लिखी मालूम होती है। हमारा अनुमान है कि इसके संपादकों में पं० शिवपूजनसहाय तथा उ त्रिपाठीजी भी हैं। इसके संपादकों से हमारा निवे है कि 'मतवाले' तो अपने नाम को कभी छिपा नहीं करते। इसकी कोई-कोई टिप्पणी उग्र हो जाती है ऐसा न होना चाहिए।

साहित्य-सूचना

इस कॉलम में हम हिंदी-प्रेमियों के सुबीते के लिये प्रति मास नई-नई उत्तमोत्तम हिंदी-पुस्तकों के नाम देते रहते हैं। गत मास में नीचे लिखी पुस्तकें अच्छी प्रकाशित हुईं—

(१) "उद्यान", श्रीशंकरराव जोशी-लिखित और पं० दुलारेलाल भार्गव-संपादित । उद्यान-विद्या का एक सचित्र ग्रंथ । मू० ।॥=)

(२) "भारत-गीत", पं० श्रीधर पाठक-लिखित और पं० दुलारेलाल भार्गव-संपादित । भारत-विषयक राष्ट्रीय कविताओं का संग्रह । मूल्य ॥=)

(३) "पिशाचिनी", पं० कार्त्तिकेयचरण मुखोपाध्याय द्वारा अनुवादित। सचित्र जासूसी उपन्यास । मूल्य १।॥), सजिल्द २।)

(४) "विपद्-कसौटी", बाबू जमुनादास मेहरा-लिखित। सचित्र पौराणिक नाटक । मूल्य १), रेशमी जिल्द १॥)

(५) "हिंदी-साहित्य-सुमन", बेलवेडियर प्रेस द्वारा प्रकाशित बालकोपयोगी सचित्र पुस्तक । मूल्य ॥)

(६) "हिंदी-मोटर-गाइड", श्रीविनायक गंगाधर गोखले द्वारा प्रकाशित । मोटरगाड़ी चलाने की जानकारी करानेवाली मराठी-पुस्तक का अनुवाद । मू० १।)

(७) "कर्मफल या जैसी करनी वैसी भरनी", श्रीप्रफुल्लचंद्र शर्मा-लिखित । उपन्यास । मूल्य ।॥)

(८) "समाज", डॉ० रवींद्रनाथ ठाकुर के सामाजिक निबंधों का श्रीबदरीनाथ वर्मा एम्० ए०, काव्यतीर्थ-कृत अनुवाद मूल्य ।॥=)

(९) "हुमायूँनामा", गुलबदन बेगम के इसी नाम के ग्रंथ का श्रीव्रजरत्नदासजी-कृत अनुवाद । मूल्य जिल्द-सहित पुस्तक का १॥)

(१०) "टर्की का क़ैदी", पं० कार्त्तिकेयचरण मुखोपाध्याय द्वारा अनुवादित । सचित्र जासूसी उपन्यास । मूल्य १।॥), सजिल्द २।)

(११) "भारत-रमणी", बाबू दुर्गाप्रसाद गुप्त-लिखित । सचित्र सामाजिक नाटक । मूल्य १।)

(१२) "सुमन", पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी-लिखित। मूल्य १)

(१३) "गल्प-गुच्छ (द्वितीय भाग)", डॉ० रवींद्रनाथ ठाकुर की बँगला-पुस्तक का पं० रूपनारायण पांडेय-रचित अनुवाद । मूल्य १)

(१४) "पद्मिनी", लाला किशनचंद ज़ेबा-लिखित । ऐतिहासिक नाटक । मूल्य ।॥)

(१५) "कविता-कौमुदी (पहला व दूसरा भाग)", पं० रामनरेश त्रिपाठी द्वारा संपादित । संशोधित चौथा तथा दूसरा संस्करण । मूल्य प्रत्येक भाग का ३)

(१६) "अभागा", विक्टर ह्यूगो के 'ला मिज़रेबिल्स'-नामक उपन्यास का बाबू रामायणप्रसाद-कृत हिंदी-अनुवाद । मूल्य १॥)

(१७) "अंजना", श्रीयुत सुदर्शन-लिखित नाटक । मूल्य १=)

(१८) "प्राचीन साहित्य", श्रीरवींद्रनाथ ठाकुर की बँगला-निबंधावली का पं० रामदहिन मिश्र-कृत अनुवाद । मूल्य ॥-)

(१९) "महाराज नंदकुमार को फाँसी", स्वामी चंडीचरण सेन की बँगला-पुस्तक का हिंदी-अनुवाद । द्वितीय संस्करण । मूल्य २।)

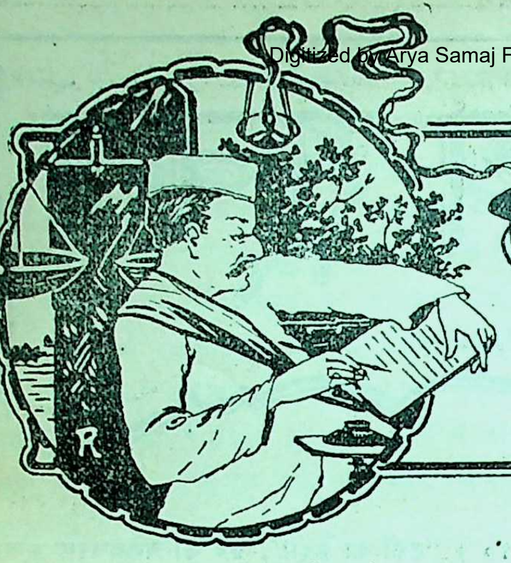

विविध विषय

१. गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय के ५० ग्रंथ

माधुरी के पाठकों को मालूम है कि गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय के संचालक प्रति वर्ष ५० (कुल मिलाकर ५०० फ़र्मों की) उत्कृष्ट पुस्तकें प्रकाशित करना चाहते हैं, और उन्होंने हिंदी के उत्कृष्ट, उपयोगी साहित्य की वृद्धि तथा लेखकों को उत्साहित करने के लिये उनमें से सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ के लेखक को १,५००) के नक़द पुरस्कार और एक स्वर्ण-पदक से सम्मानित करने का विचार किया है। संचालकों ने उक्त घोषणा के अनुसार काम शुरू कर दिया है। साल में ५० पुस्तकें प्रकाशित करने का पूर्ण उद्योग हो रहा है। कई ग्रंथ प्रकाशित हो गए हैं, कई छप रहे हैं, कई का संशोधन-संपादन हो रहा है, और कई लिखे जा रहे हैं। हिंदी-संसार के सुप्रसिद्ध, लब्ध-प्रतिष्ठ लेखकों और कवियों ने अपनी रचनाएँ भेजी हैं, और भेजने का वादा भी किया है। ग्रंथ यथेष्ट आ गए हैं, और आ रहे हैं। संचालकों को पूर्ण विश्वास है कि वे—यदि प्रेस के सुपरिंटेंडेंट महाशय ने वादे के अनुसार काम किया—साल-भर में पचास पुस्तकें अवश्य प्रकाशित कर देंगे। अभी तक सुपरिंटेंडेंट महाशय उतनी शीघ्रता से काम नहीं कर रहे हैं, जितनी चाहिए; परंतु अब से उन्होंने प्रति मास ४ पुस्तकें छाप देने का पक्का वादा किया है। अस्तु। संचालकों का आदर्श साल में पचास पुस्तकें निकालना है। यदि प्रेस-परिचालक की वादा-ख़िलाफ़ी से अथवा और किसी कारण से, जिसकी कम आशंका है, ५० पुस्तकें नहीं भी प्रकाशित हो सकीं, २५ ही निकलीं, तो भी माला के संचालकों को बहुत कुछ कृतकार्य ही समझना उचित होगा। कारण, उनका यह आदर्श है, प्रतिज्ञा नहीं। बहुत-से पत्र-संपादकों और अनुभवी प्रकाशकों का कहना है कि एक ही कार्यालय प्रति वर्ष ५० क्या, २५ भी उच्च कोटि पुस्तकें प्रकाशित नहीं कर सकता, और न अब तक को प्रकाशक ऐसा कर ही सका है; परंतु माला के संचालक का दृढ़ विश्वास है कि लगकर चेष्टा करने से वे अवश्य अपने आदर्श में बहुत कुछ सफलता प्राप्त कर सकें

किसी-किसी का कहना है कि साल में ५० पुस्तकों मिलना ही कठिन है। इसके उत्तर में निवेदन यह है गंगा-पुस्तकमाला के पास १०० के लगभग प्रतिभाशा लेखक हैं। अगर वे दो साल में १-१ पुस्तक भी देंगे, ५० पुस्तकें साल में आसानी से मिल जायँगी। को २० लेखक तो ऐसे हैं कि वे प्रति वर्ष २-२, ३-३ उ पुस्तकें लिखने का वादा करते हैं, और लिख भी सकते हैं अस्तु। हिंदी-साहित्य के कुशल और कर्मशील, पुराने औ नए, सेवकों से संचालकों का निवेदन है कि वे कृ करके अपनी उन अमूल्य रचनाओं—अमूल्य ग्रंथ-रत्नों— को अवश्य भेजें, जिन पर उन्हें गर्व हो, जिनको वे अ तक लिखे हुए अपने ग्रंथों में सर्वोत्कृष्ट समझते हों उनके ग्रंथों पर पर्याप्त पुरस्कार देने का वादा तो न किया जा सकता, क्योंकि वे अमूल्य होंगे; परंतु संचाल माला की स्थिति के अनुसार आर्थिक भेंट उनकी सेवा यदि वे लेना पसंद करेंगे, अवश्य उपस्थित करेंगे। संचाल का यह भी कथन है कि हरएक पुस्तक का मूल्य यथासंभ कम रक्खा जायगा, जिसमें पुस्तकों का प्रचार खूब हो

नीचे उनमें से कुछ पुस्तकों का विवरण दिया जाता है जो इस साल (तुलसी-संवत् १९८० में) गंगा-पुस्तकमा कार्यालय से प्रकाशित होंगी, या हो चुकी हैं। अंदाज़ दाम इसलिये दे दिया गया है, जिसमें पाठकों को माल हो जाय कि कौन पुस्तक कितनी बड़ी होगी—

पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	अंदाज़न् दाम	विशेष
१. मौलिक पुस्तकें			
१. भारत-गीत (काव्य)	पं० श्रीधर पाठक	॥=)	छप गई
२. सुकवि-संकीर्तन (जीवनी)	पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी	।॥)	छप रही है
३. अद्भुत आलाप	,,	।॥)	
४. प्रेम-प्रसून (आख्यायिका-संग्रह)	श्रीयुत प्रेमचंद बी० ए०	१।)	छप गई
५. रंगभूमि (उपन्यास)	,,	३॥)	
६. हिंदी-नवरत्न (आलोचना)	मिश्र-बंधुगण	३॥)	छप रही है
७. इँगलैंड का इतिहास [दूसरा भाग]	प्रो० प्राणनाथ विद्यालंकार	१)	
८. चित्रशाला (आख्यायिका-संग्रह)	पं० विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक	१)	छप रही है
९. मनोविज्ञान	प्रिंसिपल चंद्रमौलि सुकुल एम्०ए०, एल्०टी०	१)	
१०. विश्व-साहित्य (साहित्य)	बा० पदुमलाल-पुन्नालाल बख़्शी बी० ए०	१)	
११. मतिराम-मति-मुकुर (आलोचना)	पं० कृष्णविहारी मिश्र बी० ए०	१।)	
१२. दुर्गावती (नाटक)	पं० बदरीनाथ भट्ट बी० ए०	।॥)	
१३. लबड़धोंधों (प्रहसन)	,,	॥)	
१४. हिंदी (साहित्य)	,,	॥)	
१५. भारत के उद्योग-धंधे (अर्थशास्त्र)	पं० दयाशंकर दुबे एम्० ए०, एल्-एल्० बी०	॥)	
१६. विदेशी विनिमय (अर्थशास्त्र)	,,	॥)	
१७. शरीर-विज्ञान और स्वास्थ्य-रक्षा	श्रीमती हेमंतकुमारी भट्टाचार्य	१)	
१८. डॉक्टर जॉनसन (जीवनी)	पं० गंगाप्रसाद अग्निहोत्री	।॥)	
१९. नारी-उपदेश (स्त्री-शिक्षा)	स्व० गिरिजाकुमार घोष	॥)	छप गई
२०. सम्राट् चंद्रगुप्त (जीवनी)	पं० बालमुकुंद वाजपेयी (लक्ष्मण-संपादक)	।)	छप गई
२१. उद्यान (कृषि)	पं० शंकरराव जोशी, एग्रीकल्चर ऑफ़िसर	।॥=)	छप गई
२२. भारतीय अर्थशास्त्र	बाबू भगवानदास केला	२)	छप रही है
२३. कौशल-हिंदी-ग्रामर (व्याकरण)	विद्या-भूषण प्रो० रामस्वरूप कौशल एम्० ए०, एम्० आर० ए० एस्०	॥)	
२. अनुवाद			
२४. बहता हुआ फूल (उपन्यास.)	पं० रूपनारायण पांडेय	२)	छप गई
२५. रावबहादुर (प्रहसन)	पं० लल्लीप्रसाद पांडेय	॥)	प्रेस में
२६. भारत की विदुषी नारियाँ (जीवनी)	श्रीमती कृष्णकुमारी	॥)	छप गई
२७. विजया (उपन्यास)	पं० रूपनारायण पांडेय	१।)	प्रेस में
२८. भारत में बाइबिल (Bible in India का अनुवाद)	लाला संतराम बी० ए०	१॥)	
२९. बुद्ध-चरित (नाटक)	पं० रूपनारायण पांडेय	॥)	
३०. प्रेम-गंगा (कहानियाँ)	पं० ईश्वरीप्रसाद मिश्र	॥)	
३१. एशिया में प्रभात (Dawn over Asia का अनुवाद)	ठाकुर कल्याणसिंह शेखावत बी० ए०	॥)	
३२. भवभूति (आलोचना)	पं० [illegible] शर्मा	॥)	

उल्लिखित सज्जनों के अतिरिक्त निम्न-लिखित सुप्रसिद्ध प्रतिभाशाली लेखक और कवि भी पुस्तकें लिख रहे हैं, अथवा उन्होंने लिख देने का पक्का वादा किया है—

भाई परमानंद एम्० ए०
पं० अंबिकाप्रसाद वाजपेयी (स्वतंत्र-संपादक)
बा० श्यामसुंदरदास बी० ए०
पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय
बा० गोवर्द्धनलाल एम्० ए०, बी० एल्०
प्रो० राधाकृष्ण झा एम्० ए०
पं० भूपनारायण दीक्षित बी० ए०, एल्० टी०
बा० रामदास गौड़ एम्० ए०
बा० वृंदावनलाल वर्मा बी० ए०, एल्-एल्० बी०
बा० शिवनंदनसहाय
बा० व्रजनंदनसहाय बी० ए०
बा० शिवपूजनसहाय
बा० जयशंकर 'प्रसाद'
रायबहादुर पं० गौरीशंकर-हीराचंद ओझा
प्रो० शिवाधार पांडेय एम्० ए०, एल्-एल्० बी०
लाला सीताराम बी० ए०
पं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी
ठाकुर सूर्यकुमार वर्मा
रायसाहब पं० रघुवरप्रसाद द्विवेदी बी० ए०
सैयद अमीर अली "मीर"
पं० राधाचरण गोस्वामी
बा० जगन्नाथदास "रत्नाकर" बी० ए०
लाला कन्नोमल एम्० ए०
श्रीयुत इंद्र वेदालंकार, विद्या-वाचस्पति
बाबू महावीरप्रसाद श्रीवास्तव बी० एस्-सी०, एल्० टी०
बा० जगन्नाथप्रसाद "भानु"
विद्या-वाचस्पति पं० शालग्राम शास्त्री साहित्याचार्य
प्रिंसिपल श्रीनारायण चतुर्वेदी एम्० ए०, एल्० टी०
पं० आद्यादत्त ठाकुर एम्० ए०

इत्यादि

× × ×

२. माधुरी-पुरस्कार

हमारे कुछ कृपालु मित्रों ने हमसे प्रायः यह शिकायत की कि माधुरी का पद्य-भाग माधुरी की प्रतिष्ठा के अनुकूल नहीं होता। हमने जो इस पर विचार किया, तो हमें भी इसमें कुछ सत्यांश का अनुभव हुआ। इस कमी की पूर्ति का हमें एक उपाय यही देख पड़ा कि कवियों को पुरस्कृत और प्रोत्साहित किया जाय। कवियों को उनके परिश्रम का मूल्य तो दिया नहीं जा सकता। कारण, कविता का तो कुछ मूल्य हो नहीं सकता, वह तो अमूल्य है। पृष्ठों के हिसाब से कविता पर पारिश्रमिक देना कविता और कवि का अपमान करना है। बहुधा छोटी-छोटी कविताएँ बहुत भावमयी तथा सुंदर बन जाती हैं, और बड़ी-बड़ी रचनाएँ उतनी सुंदर नहीं बन पातीं। अस्तु। कविता पर पारिश्रमिक देना एक जटिल समस्या है। इसीलिये अब तक माधुरी के कवियों को पारिश्रमिक नहीं दिया जाता रहा। किंतु यह सोचकर कि यह एक जटिल समस्या है, उद्देश्य की ओर अग्रसर न होना भी कर्तव्य नहीं। अतएव माधुरी के संचालकों ने प्रति मास माधुरी में प्रकाशित कविताओं में से सर्व-श्रेष्ठ कविता-लेखक को ५०) का नक़द पुरस्कार देने का निश्चय किया है। आशा है, हिंदी-संसार इस निश्चय को पसंद करेगा। इस माधुरी-पुरस्कार के नियम इस प्रकार हैं—

१. इस पुरस्कार का नाम माधुरी-पुरस्कार रहेगा।

२. यह पुरस्कार प्रति मास माधुरी में प्रकाशित सर्व-श्रेष्ठ कविता पर दिया जायगा।

३. माधुरी में प्रति मास जितनी कविताएँ प्रकाशित होंगी, उनमें से सर्वश्रेष्ठ कौन है, इसका निर्णय तीन काव्य-मर्मज्ञ विद्वान् करेंगे।

४. प्रत्येक संख्या में पिछली संख्या के पुरस्कार-प्राप्त कवि और निर्णायकों के नाम प्रकाशित कर दिए जायँगे।

५. माधुरी में प्रकाशित होने के लिये प्रति मास जितनी कविताएँ आवेंगी, उनमें से ७-८ उत्तमोत्तम कविताएँ प्रकाशनार्थ चुन ली जाया करेंगी। यह निर्वाचन माधुरी के संपादक करेंगे।

६. किसी कविता-लेखक को यह पुरस्कार वर्ष-भर में तीन बार से अधिक नहीं दिया जायगा।

७. कविताएँ खड़ी बोली तथा व्रज-भाषा, दोनों में से किसी में भी, इच्छानुसार, भेजी जा सकती हैं।

८. जो सज्जन नक़द पुरस्कार लेना पसंद न करेंगे, उनको पुरस्कार के ही मूल्य का स्वर्ण-पदक प्रदान किया जायगा।

९. पुरस्कार-प्राप्त रचनाओं पर माधुरी का ही सर्वाधिकार रहेगा ।

१०. इन नियमों में सुविधानुसार परिवर्तन करने का अधिकार माधुरी-संचालकों तथा संपादकों को होगा । जो परिवर्तन किया जायगा, उसकी सूचना माधुरी में प्रकाशित कर दी जायगी ।

× × ×

३. जापान का भूकंप

गत पहली सितंबर को जापान के मध्य-प्रांत में एक बड़ा भीषण भूकंप आया था । मनुष्य की स्मृति में ऐसा भयंकर भूकंप अभी तक नहीं हुआ था । इससे धन-जन की अपार हानि हुई है ।

जापान द्वीपों का एक समूह है । इन द्वीपों में भूकंप के धक्के प्रायः आ जाया करते हैं । इनमें ज्वालामुखी पहाड़ भी हैं, और वास्तव में जापानी द्वीप ज्वालामुखी पहाड़ों से ही बने हैं । जापान का सबसे अधिक विख्यात फ़ूजीयामा-नामक ज्वालामुखी, त्रिकोण आकार का, एक बड़ा ही सुंदर पर्वत है । यह याकोहामा-नामक नगर से ४२ मील दक्षिण-पश्चिम है, और १२,३६५ फ़ीट ऊँचा है । इसके ऊपरी हिस्से में सदा बर्फ़ जमी रहती है । जापानी लोग इसे बहुत पवित्र समझते हैं । हाल में जापान के जिस भाग में भूकंप आया है, उसका केंद्र यही फ़ूजीयामा-पर्वत है ।

सबसे अधिक हानि जापान की राजधानी टोकियो और उसके बंदरगाह याकोहामा में हुई है । टोकियो की आबादी प्रायः ३० लाख और याकोहामा की ४ लाख से कुछ अधिक है । भूकंप का सबसे पहला और सबसे भयंकर धक्का शनिवार के दिन, दोपहर को, ११ बजक ४० मिनट पर, आया था । बहुत-से मकान तो उसी झोंके में गिर गए । जो लोग मकानों के गिरने के कारण उनमें फँस गए थे, उनको छोड़कर सब लोग मकान से खुले हुए स्थानों में भाग गए । इसके बाद

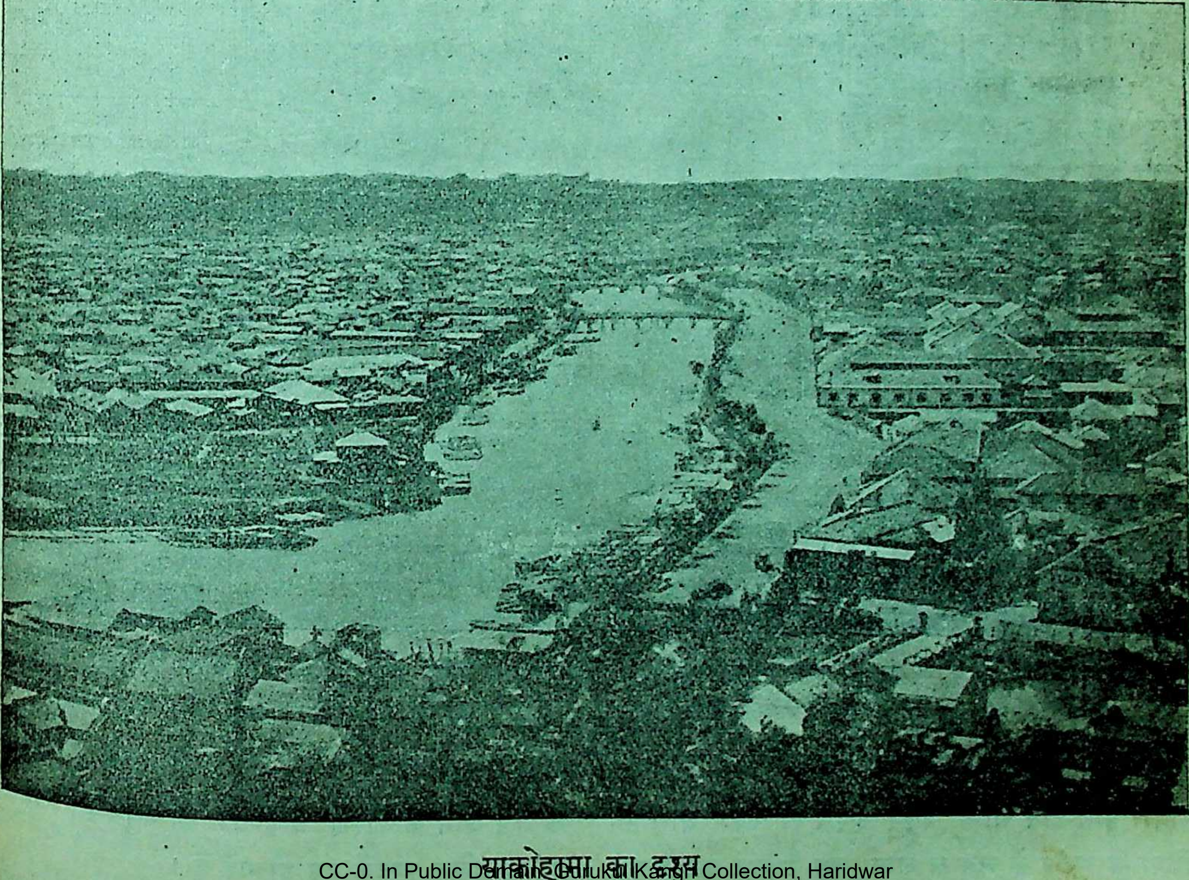

याकोहामा का दृश्य

(इसमें अधिकांश मकान लकड़ी के थे । यह सारा शहर नष्ट हो गया है)

कई धक्के और आए। लोगों का साहस सड़कों पर भी रहने का नहीं हुआ। सब लोग खुले मैदानों में शरण लेने लगे।

धक्के के वेग से रोशनी की गैस का पाइप फट गया, और गैस जल उठी। गैस के जलने से शहर में आग लग गई। जो लोग मकानों के गिरने के कारण उनमें दब या फँस गए थे, वे उन्हीं में जल मरे। पानी के बंबे भी फट गए, और पानी का मिलना असंभव-सा हो गया। बिजली के तारों के टूट जाने से बिजली की धारा रुक गई। बिजली की ट्रामें और रेलें जो जहाँ थीं, वहीं रुक गईं। इनमें अधिकांश जल गईं। तार इत्यादि भी टूट गए, और बाहर से समाचार आना भी बंद हो गया।

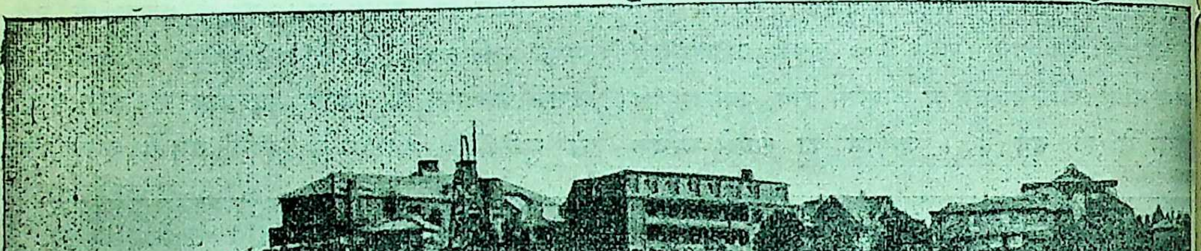

याकोहामा में अंगरेज़ों का बस्ती

(यह शहर से दूर है)

शनिवार की रात-भर टोकियो-नगर जलता रहा। सबेरा होते-होते आधा शहर चौरस हो चुका था। टोकियो में भूकंप के भय से लोग लकड़ी के मकान बनाते हैं। अधिकांश मकान लकड़ी ही के हैं। इसी से आग बड़ी शीघ्रता से फैल सकी। आग के कारण असह्य गरमी थी। मनुष्यों के जलने की दुर्गंध चारों ओर फैल रही थी। हवा इतनी तेज़ थी कि उसके कारण आग को रोकने का उपाय करना असंभव था। सुमीडा-नदी में भी भूकंप के कारण बाढ़ आ गई; जिसके कारण बहुत-से आदमी नष्ट हो गए।

टोकियो में प्रायः सभी सरकारी इमारतें नष्ट हो गई हैं। डाक, तार, टेलीफ़ोन के बड़े दफ़्तर, बैंक ऑफ़ जापान, इंपीरियल थिएटर, सदर रेलवे-स्टेशन, सभी बड़ी-बड़ी इमारतें अग्नि में स्वाहा हो गई हैं। सम्राट् के राज-प्रासाद में भी आग लग गई थी; किंतु उसको विशेष क्षति नहीं पहुँचने पाई। टोकियो का विश्वविद्यालय भी नष्ट हो गया है, और वहाँ के राष्ट्रीय पुस्तकाल के जल जाने के कारण बौद्ध-धर्म की बहुत-सी अमूल हस्त-लिखित पुस्तकें नष्ट हो गई हैं।

याकोहामा की हालत और भी शोचनीय त

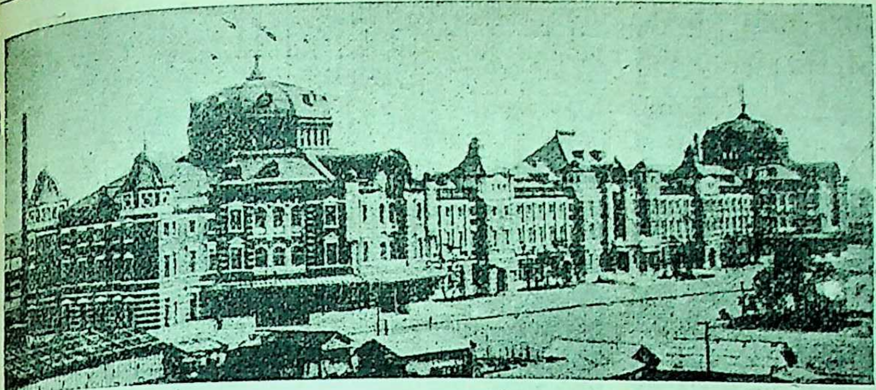

टोकियो का सदर रेलवे-स्टेशन

(भूकंप के कारण प्रायः नष्ट हो गया है)

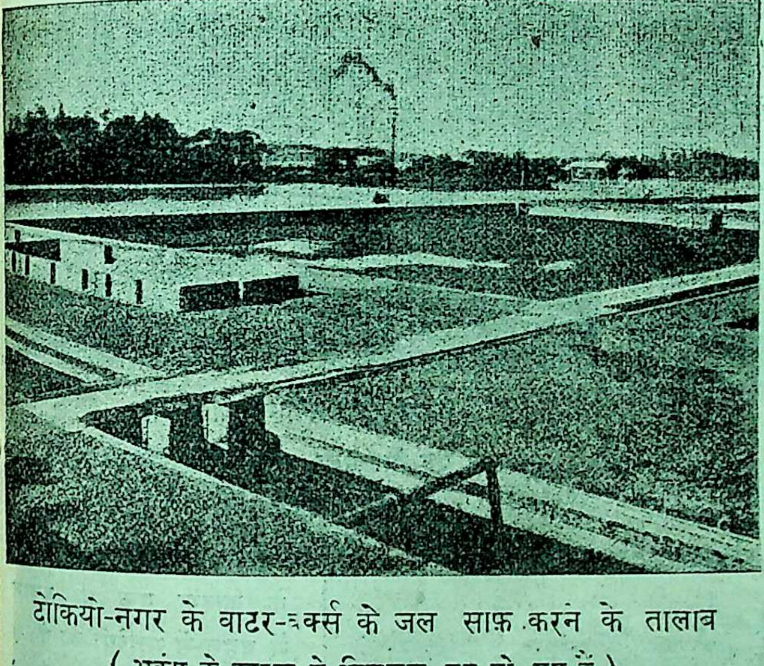

टोकियो-नगर के वाटर-वर्क्स के जल साफ़ करने के तालाब

(भूकंप के कारण ये बिलकुल नष्ट हो गए हैं)

करुणा-जनक है। सारा नगर जल गया है; केवल चेंबर ऑफ़् कामर्स की इमारत को छोड़कर सब इमारतें नष्ट हो गई हैं।

अनुमान किया जाता है कि केवल टोकियो ही में साढ़े सात अरब रुपयों के मूल्य की संपत्ति नष्ट हुई है। इस नगर में प्रायः डेढ़ लाख और याकोहामा में एक लाख आदमी मरे। कुल मृत्यु-संख्या तीन लाख के क़रीब आँकी जाती है। रेल की लाइनों, पुलों और शहरों आदि को फिर से बनाने में दो साल के लगभग लगेंगे, और जो व्यय होगा, उसका अंदाज़ भी लगाना असंभव है।

इस दैवी आपत्ति के समय जापानियों ने वे सब गुण दिखलाए हैं, जिनके कारण उन्होंने इतनी उन्नति की है। आरंभ में गड़बड़ मिटाने के लिये मार्शल-ला जारी कर दिया गया था, और भोजन-सामग्री की कमी के कारण कुछ अराजकता भी फैल गई थी; किंतु साधारणतः जापानियों ने अपूर्व साहस दिखलाया है। जो लोग कल लक्ष्मी के वरपुत्र समझे जाते थे, उनके पास आज कुछ भी नहीं रह गया, उनके भोजनों का भी ठिकाना नहीं है। किंतु उन लोगों ने अपूर्व धैर्य दिखलाया है। वे साधारण मज़दूरों की भाँति काम करने लग गए हैं, भाग्य को दोष देकर बीते हुए पर रोते नहीं हैं। लोगों के भाई, बंधु, स्त्री, पुत्र आदि ला-पता हैं। नहीं मालूम, वे मर गए या ज़िंदा हैं। फिर भी वे शांत हैं। हाथ में काग़ज़ के झंडे, जिनमें खोए हुए संबंधियों के नाम लिखे हैं, लेकर ये लोग दिन-रात कैंपों में घूमते हैं; किंतु घबराहट या अधीरता नहीं दिखलाते। खाद्य पदार्थों की इतनी कमी थी, किंतु किसी भी जापानी दूकानदार ने अधिक लाभ के लोभ से इस आपत्ति के समय भोजन-सामग्री के दाम नहीं बढ़ाए। हमारे अभागे देश के महाजनों के मुक़ाबिले में कैसा असादृश्य है! जिस जाति के बड़े से लेकर छोटे लोग तक इतनी भारी आपत्ति के समय भी इतना साहस, धैर्य और आत्म-संयम दिखलावें, उस जाति के लिये संसार में क्या असंभव है?

इस आपत्ति ने एक बात और स्पष्ट कर दी है। आधुनिक सभ्यता की जो आराम की चीज़ें हैं, वे कितनी ख़तरनाक हैं। यदि टोकियो और याकोहामा में आग न लगती, तो इतनी हानि न होती; क्योंकि भूकंप के धक्के

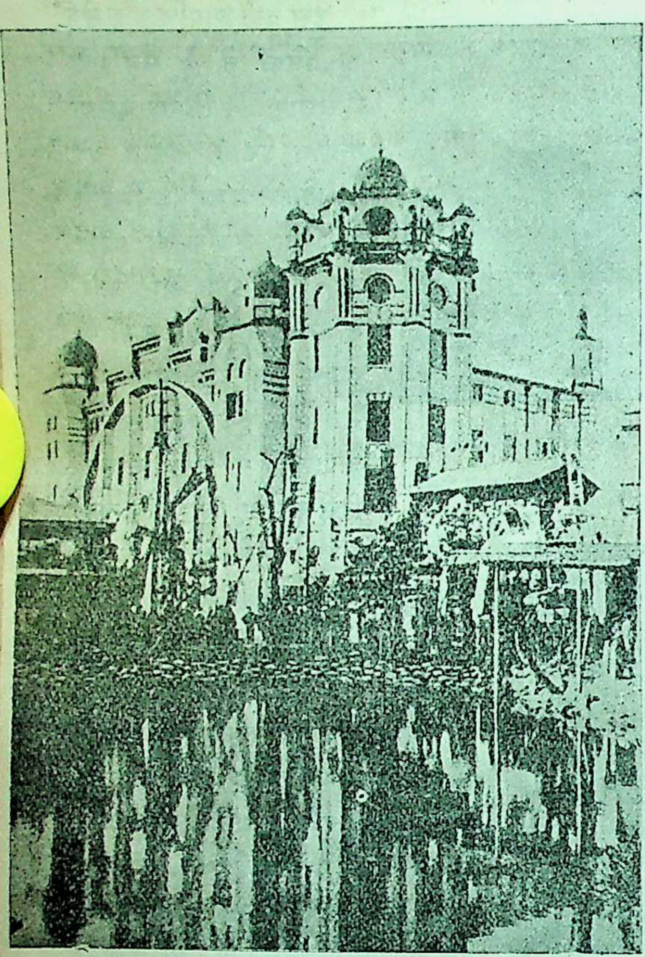

टोकियो का इंपीरियल थिएटर

(भूकंप और आग के कारण नष्ट हो गया)

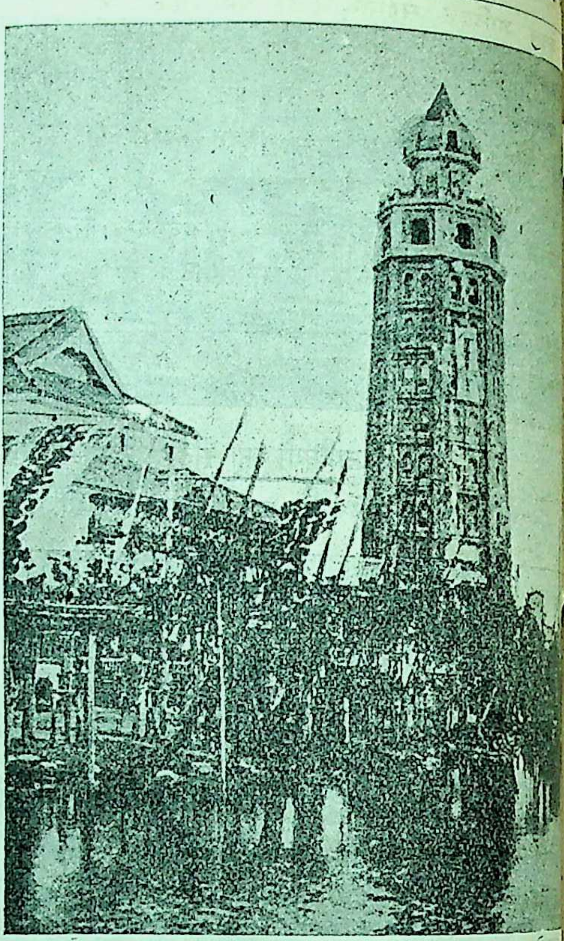

आशाकुशा-उद्यान का मीनार

(भूकंप से यह गिर पड़ा, और इसके गिरने से ७०० आदमी दबकर मर गए)

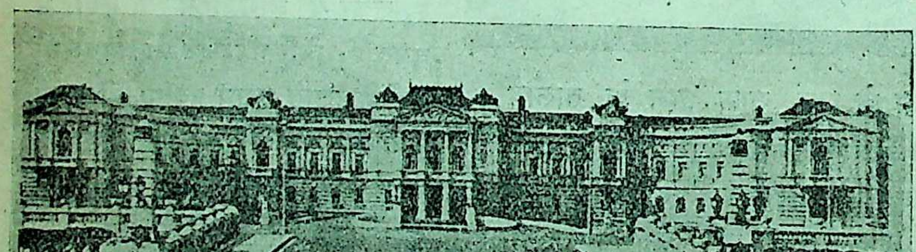

टोकियो में जापान-सम्राट् का राज-प्रासाद

(इसमें भी आग लग गई थी ; किंतु विशेष क्षति नहीं हुई)

से तो कम ही इमारतें नष्ट हुईं, अधिकांश हानि अग्नि के कारण ही हुई है। और, अग्नि का कारण गैस के पाइप का फटना था। आधुनिक सभ्यत के कारण एक ही स्था में बहुत-से मनुष्यों का एक होना कितना भयंकर है यह भी मालूम हो गया कि मनुष्य की सारी चतुरत और आविष्कार प्रकृति के एक झटके में बेकार और निरर्थक हो सकते हैं, और इन आविष्कारों से जितन आराम नहीं है, उतन ख़तरा है।

इस भूकंप से एक लाभ और हुआ है। भूकंप का समा- चार पाते ही संसार के सभी राष्ट्रों ने जापान के प्र

केवल शाब्दिक सहानुभूति ही नहीं प्रकट की, किंतु उसकी सहायता के लिये करोड़ों रुपए भेजे हैं। सबसे शीघ्र और सबसे अधिक सहायता अमेरिका ने की है। जिस समय जापान में भोजन-सामग्री की बेहद कमी थी, उस समय अमेरिकन जहाज़ खाद्य-सामग्री, डॉक्टर आदि लेकर पहुँच गए थे। मनुष्यत्व के भावों ने थोड़े समय के लिये अंतरराष्ट्रीय प्रतिद्वंद्विता को दबा दिया है। गोरे और पीलों के हृदय एक दूसरे के निकट आ गए हैं। विपत्ति की इस काली घटा में सुख की यही एक रेखा है।

× × ×

४. आरे की बाढ़

पिछले दिनों आरे में भी भयंकर बाढ़ आई थी। इस बाढ़ के अवसर पर कलकत्ते की मारवाड़ी-रिलीफ़-सोसाइटी ने प्रशंसनीय कार्य किया। सोसाइटी के कार्य की रिपोर्ट (२ ऑक्टोबर, सन् १९२३ ई० की भेजी हुई) इस समय हमारे सामने है। उसने ६० ग्रामों तथा १५० वर्गमील क्षेत्र में कार्य किया। जो लोग असमर्थ थे, उन्हें अन्न, वस्त्र, निवास-स्थान देकर सहायता की, और उनके पशुओं की सहायता के लिये घास, भूसा तथा चोकर का प्रबंध किया। जिन कुटुंबों की परिस्थिति सहायता पाने के योग्य तो थी, परंतु वे दान-स्वरूप सहायता नहीं लेना चाहते थे, उनके लिये नाज की सस्ती दूकानें खोलने का पिरौंटा में केंद्र स्थापित किया, और मुफ़्त सहायता के अतिरिक्त बाज़ार-भाव से कहीं अधिक सस्ता नाज बेचा। चावल का भाव उस समय ७-७॥। सेर तक था; परंतु सोसाइटी ने १० सेर का चावल बेचा। इसका प्रभाव बाज़ार पर भी हुआ। चावल का भाव ९-९॥ सेर हो गया। इस प्रकार सोसाइटी की सहायता से, परोक्ष रूप से भी, जनता का यथेष्ट हित हुआ। सितंबर के अंत तक सोसाइटी ने ७७१ पुरुषों को नाज की बिना मूल्य सहायता की। सस्ती बिक्री से २,२९५ कुटुंबों को सहायता पहुँची। कुल ६,२३९॥।)॥ का नाज बिका, जिसमें ३५% का घाटा रहा। यदि स्वयं-सेवकों तथा गाड़ी-भाड़ा आदि के किराए का ख़र्च भी इसमें जाड़ा जाय, तो २७५) प्रति दिन का घाटा हुआ। पशुओं की जीवन-रक्षा के लिये ४०० मन भूसी (चोकर) मँगा ली गई है, और २,००० मन भूसा भी आनेवाला है। मकान बनवाने तथा नई फ़सल के लिये बीज देने आदि के कार्य के लिये सोसाइटी ने १०,०००) रु० व्यय करने का निश्चय किया है। ३० सितंबर तक कुल व्यय ९,२९०॥≤)॥। हुआ है।

हम सोसाइटी के कार्य को सब प्रकार से सराहनीय और अनुकरणीय समझते हैं। आशा है, भारत की अन्यान्य सेवा-समितियाँ भी मारवाड़ी-रिलीफ़-सोसाइटी के कार्य का अनुकरण करेंगी।

बाढ़-संबंधी कुछ चित्र यहाँ दिए गए हैं। प्रथम चित्र आरे के बाबू-बाज़ार का है। यह बाज़ार वीरवर कुँअरसिंहजी का है। चित्र मकान गिरने तथा तार का खंभा उखड़ने की दशा का है। दूसरा चित्र आरा-बाढ़ के समय नहर के दृश्य का है। बाढ़ के अतिशय वेग से नहर का पुल टूट गया है। तीसरा चित्र मारवाड़ी-रिलीफ़-सोसाइटी के बाढ़-समय के केंद्र पिरौंटा का है। सायंकाल, सूर्यास्त के समय, सबसे ऊपर कपड़े की ढेरी के पास, सोसाइटी के प्रबंधक पं० चंद्रवल्लभ

बाबू-बाज़ार, आरा

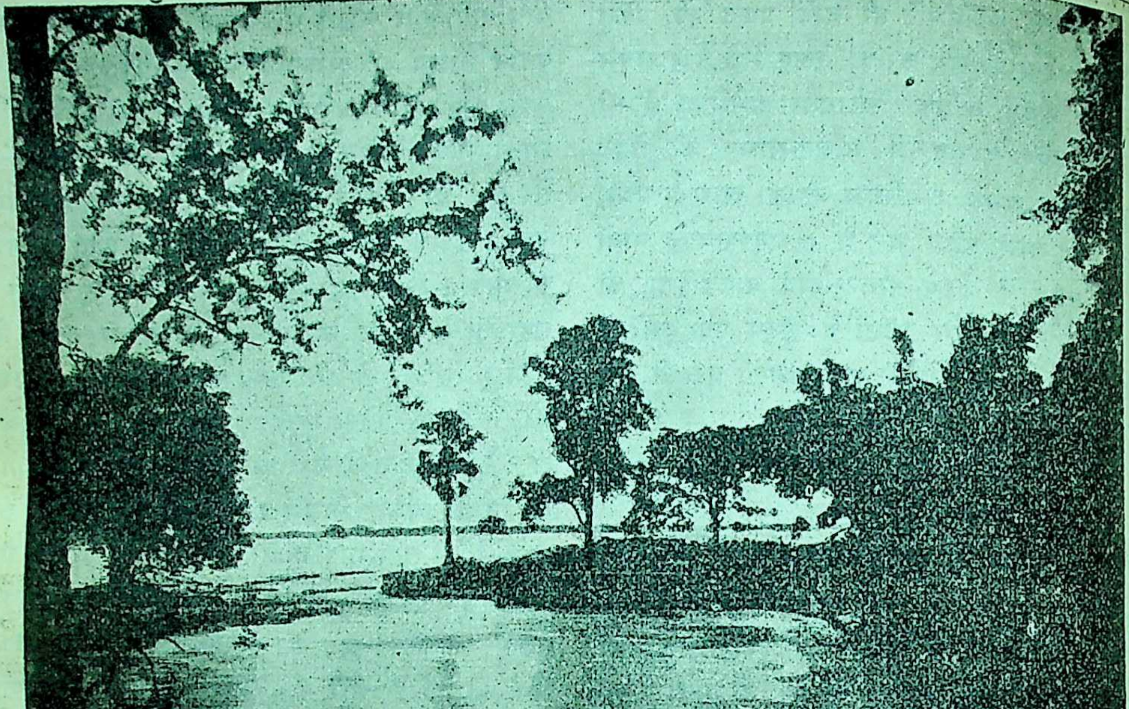

आरा-बाढ़ के समय नहर का दृश्य

(नहर के ऊपर का पुल टूट गया है)

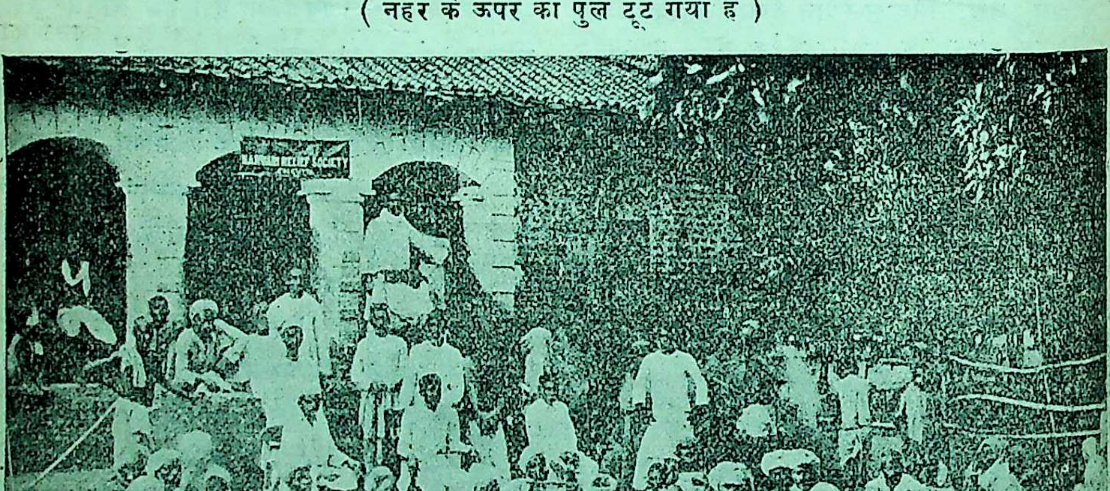

MARWARI RELIEF SOCIETY

पिरौंटा-बाज़ार, आरा

(सूर्यास्त के समय मारवाड़ी-रिलीफ़-सोसाइटी के केंद्र पिरौंटा का दृश्य)

जोशी खड़े कपड़े बाँट रहे हैं । नीचे की कुर्सी पर सोसाइटी के कार्य-कर्ता श्रीयुक्त नारायण महाराज ग़ल्ला तौला रहे और टिकट ले रहे हैं । दिन में भीड़ अधिक रहने के कारण टिकट तथा रसीद लेने-देनेवाले के लिये पेड़ के नीचे बाँस का एक बाड़ा बाँध दिया गया है । उस ओर क्लर्क आदि कार्य करते हैं । ऊपर की ओर स्वयं-सेवक लोग हैं, और एक कुर्सी पर पिरौटा के ज़मींदार श्रीयुत कामताप्रसादजी नंगे सिर बैठे हुए हैं । शेष सब बाढ़-पीड़ित लोग हैं ।

× × ×

५. कवि और कविता

कवि ढाले नहीं जाते, अपने आप उत्पन्न होते हैं । ईश्वर उन्हें भेजता है, इसीलिये वे आते-आते अपनी प्रतिभा विकसित करने लगते हैं । कृत्रिम कवियों को छोड़कर स्वाभाविक कवियों में ऐसे उदाहरण बहुत कम मिलते हैं कि कवि ने पूर्णवयस्क होकर, २५-२६ वर्ष की अवस्था के बाद, कविता लिखना प्रारंभ किया हो । परंतु यह बात भी नहीं कि ऐसे उदाहरणों का एकदम अभाव ही हो । बात यह है कि कवित्व-शक्ति का विकास काल-विशेष में हुआ करता है । कोई इस प्रकार की घटना घटित हुई कि उसने कवि के हृदय को या तो नैसर्गिक आह्लाद से भर दिया, या फिर उसकी हृत्तंत्री में घाव कर दिया—ऐसा कि जिसे शब्दों का रूप देकर, अपने बंधु-बांधवों, इष्ट-मित्रों तथा देशवासियों के आगे उपस्थित किए विना उससे नहीं रहा गया—और कवि की प्रतिभा जग गई । यह नहीं कहा जा सकता कि इससे पूर्व उसके हृदय में कवित्व-शक्ति का निवास नहीं था । कारण, कवित्व-शक्ति अनुकूल परिस्थिति पाकर जाग्रत् होती है । प्रतिभा जाग्रत् होती है, और सोती भी है । प्रतिभा कर्म-शील बनाती है ; परंतु वह विश्राम भी करती है । बहुधा देखा जाता है कि वर्षों व्यतीत हो जाते हैं, पर कवि अपनी लेखनी से कोई रचना नहीं लिखते । बात यह है कि उस समय उनकी प्रतिभा विश्राम करती है । कोई उनसे बलात् कविता लिखाकर देखे तो ! प्रतिभाशाली कवि बलात् कविता लिखेंगे ही नहीं—लिखेंगे, तो लोग कानाफूसी करेंगे । कारण, वह कविता कवि की योग्यता की कोटि की कदापि न होगी । ऐसी स्थिति में क्या यह कहा जा सकता है कि कवि प्रतिभा-हीन हो गया ? कदापि नहीं । प्रतिभा-हीन हो गया हो, तो उसके बाद समयानुसार उसकी लेखनी से सुंदर सौरभ-पूर्ण प्रसून कैसे खिलें ? परंतु यह नहीं कहा जा सकता कि उच्च कोटि की रचनाएँ बलात् लिखाई ही नहीं जा सकतीं । प्रतिभाशाली कवि कभी-कभी बलात् भी उच्च कोटि की रचनाएँ लिख दिया करते हैं । आज भी हिंदी में ऐसे कवि उपस्थित हैं, जिन्होंने बलात् उत्तम-से-उत्तम रचनाएँ की हैं । बात यह है कि जिस समय कवि का हृदय लिखने के लिये विवश हो जाता है, उस समय उसकी प्रतिभा निद्रा-मग्न नहीं रहती । इसी से रचना अच्छी हो जाती है । परंतु जब कवि का हृदय लिखने के लिये विवश नहीं हुआ होगा, तब उससे बलात् रचना न तो लिखाई ही जा सकती है, और न वह—लिखने पर—अच्छी बन ही सकती है । आजकल हिंदी-जगत् में अधिक अंश में जो रचनाएँ प्रकाशित होती हैं, उनमें बहुत कम ऐसी होती हैं कि उन्हें कविता कहा जा सके । कारण यह है कि वे कवि-हृदय की वास्तविक उपज नहीं । या तो वे पत्र पर पत्र लिखने—तक़ाज़ों का ढेर लगा देने—से प्राप्त हुई होती हैं, या ऐसे कवियों की लिखी हुई, जिनमें कवि-प्रतिभा का पर्याप्त निवास नहीं है ।

× × ×

६. मुद्रण-कला

छपाई भी एक कला है । उन्नत राष्ट्रों में इस कला को विशेष महत्त्व प्राप्त है । वहाँ इस कला की शिक्षा के लिये भी शिक्षणालय हैं, जिनमें यथेष्ट शिक्षा प्राप्त करके ही लोग इस कला से संबंध रखनेवाले कार्यों में हाथ लगाने पाते हैं । इस कला की शिक्षा के लिये वहाँ साहित्य भी पर्याप्त रहता है । कोई भी शिक्षित व्यक्ति ऐसे साहित्य का अवलोकन करके मुद्रण-कला-संबंधी आरंभिक ज्ञान प्राप्त कर सकता है । परंतु संपादक-समुदाय में प्रवेश करने के लिये यह आवश्यक होता है कि इस कला की, आरंभिक नहीं, पर्याप्त जानकारी प्राप्त कर ली जाय । विज्ञान के इस युग ने मुद्रण-कला को इस कोटि पर पहुँचा दिया है कि अब इस कला की जानकारी प्राप्त किए विना कोई व्यक्ति संपादन-कला में निपुण नहीं हो सकता । खेद है, हिंदी-जगत् में अभी ऐसे संपादकों का अभाव है, जिन्हें मुद्रण-कला की यथेष्ट जानकारी हो ।

एक समय था, जब हिंदी में किसी भी प्रेस की छपाई-सफ़ाई इस योग्य नहीं होती थी कि पाठक पुस्तक को एक बार देख-भर ले कि उसे पढ़ने की आकांक्षा उसके हृदय में हो आवे। पुस्तकों का पठन-पाठन केवल इसलिये होता था कि उनके अंदर की वस्तु—पाठ्य विषय—पढ़ने योग्य होती थी। यह दशा बहुत दिनों तक रही। जैसे-जैसे शिक्षा की किरणों ने इतर कलाओं के कुटीर को आलोकित किया, वैसे-वैसे धीरे-धीरे इस क़ला की कुटीर को भी। सैकड़ों वर्षों के बाद आज भारत का ध्यान इस कला के महत्त्व और इसकी उन्नति की ओर आकृष्ट हुआ है। आज यह अवस्था है कि प्रत्येक नगर में प्रेसों की संख्या बढ़ रही है। जिन पुराने प्रेसों की छपाई देखकर घृणा होती थी, उन्होंने भी उन्नति की ओर पैर बढाया है। लोग बड़ी उत्कंठा के साथ इस कला का ज्ञान प्राप्त करने के लिये व्यग्र हैं। परंतु इस विषय में भारत को अभी बहुत कार्य करना है।

संपादन-कला का इस कला से बड़ा घनिष्ठ संबंध है। खेद की बात है कि आज हिंदी का अधिकांश साहित्य जिन हाथों द्वारा संपादित होकर प्रकाशित होता है, वे इस कला में यथेष्ट क्या, बिलकुल कुशलता नहीं रखते। दो-चार ग्रंथ-मालाओं तथा मासिक पत्र-पत्रिकाओं को छोड़कर अधिकांश ऐसी हैं, जिनके संपादक इस विषय के ज्ञान से कोरे हैं। अधिकांश संपादक और लेखक इस कला की बिलकुल जानकारी नहीं रखते। यही कारण है कि आजकल हिंदी-साहित्य का अधिकांश प्रकाशन ऐसा होता है कि इतर राष्ट्रीय नागरिक उसे देखकर हँसते हैं। वास्तव में यह स्थिति उपहासास्पद है।

लोग प्रायः कलकत्ते के ग्रंथ-प्रकाशकों की यह शिकायत किया करते हैं कि वे छपाई-सफ़ाई की सुंदरता की ओट में खूब रुपया कमा रहे हैं; परंतु उनसे साहित्य का उतना कल्याण नहीं होता, जितना होना चाहिए। वे कैसा साहित्य प्रकाशित करते हैं, इसकी आलोचना करके इस प्रश्न को हल करना विषयांतर करना है। अस्तु। वास्तव में वे अपने व्यवसाय में जो उन्नति कर रहे हैं, उसका प्रधान कारण उनकी मुद्रण-कला-विषयक सतर्कता है। वे पुस्तक-प्रकाशन में इस कला को मुख्य मानते हैं, इसीलिये उन्होंने इस ओर इतना ध्यान दिया है, और इसीलिये वे अपने व्यवसाय कृतकार्यता भी प्राप्त कर रहे हैं। पाठकों पर दोपारोपण करना भी अनुचित है कि वे रूप-रंग मोहित होकर उपयोगिता और उपादेयता की दृ बहुत कम महत्त्व रखनेवाले साहित्य पर टूटे पड़ते कारण, नयनाभिराम पुस्तकों के पढ़ने की प्रबल उ होना स्वाभाविक है।

मुद्रण-कला के संबंध में अभी हिंदी का क्षेत्र संपन्न नहीं है। अभी इस विषय में जो कोई, थोड़ा ब उद्योग करके, कुछ भी कुशलता प्रदर्शित करेगा, वह बा मार ले जायगा, और इतर व्यक्ति ताकते रह जायें अतएव प्रकाशन-व्यवसाय को उन्नत करने के लिये मुद्रण-कला का विकास होना आवश्यक है।

संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि हिंदी के क्षेत्र सुसंपन्न बनाने के लिये मुद्रण-कला की उन्नति करना शि जागृति, व्यवसाय आदि अनेक दृष्टियों से श्रेयस्कर है

× × ×

७. हिंदी में भाषण

एक समय था, जब कांग्रेस में अँगरेज़ी-भाषा तूती बोलती थी। राष्ट्रीय महासभा के मंच पर शास जाति की भाषा अँगरेज़ी का ही प्राधान्य था। राष्ट्र-से का महान् व्रत लेनेवाले नेता लोग राष्ट्र-उपासना-यज्ञ मंत्रोच्चारण का काम लेते थे विदेशी भाषा से! राष्ट्र कि अधःपतन पर था! कहाँ राष्ट्र-सेवा का महान् व्रत, कहाँ राष्ट्र-सेवा के कार्य में दासता का चिह्न-स्व विदेशी भाषा का उपयोग! यह दशा बहुत दिनों रही। परंतु रंग बदला, और अच्छी तरह बद आज हम 'सम्मेलन-पत्रिका' में यह संवाद पढ़ र कि "आगामी कोकनाडा-कांग्रेस की स्वागत-कारि अध्यक्ष, सुना है, अपना भाषण हिंदी में देंगे।" भूल का संशोधन हुआ। जो बात पहले ही होनी चा थी, वह अब—३०-४० वर्ष बाद—हुई। ख़ैर, हुई

राष्ट्रीय महासभा की स्वागत-कारिणी समिति सभापति का भिन्न-भाषा-भाषी होने पर भी हिंदी भाषण देना राष्ट्रीय महासभा के इतिहास में नवीन गौरव की बात तो है ही, साथ ही इससे इस बात भी पर्याप्त पता चलता है कि हिंदी-साहित्य-सम्मेलन प्रचार-विभाग ने मदरास-प्रांत में हिंदी-प्रचार का कि

कार्य किया है ! इस संबंध में हम मदरास-प्रांतीय जनता के उत्साह और हिंदी-प्रेम की भी प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकते । आशा है, यह बात राष्ट्रीय महासभा के भावी अधिवेशनों के लिये अनुकरणीय होगी, और भिन्न-भाषा-भाषी नेताओं के लिये उदाहरण-स्वरूप । क्या हम आशा करें कि निकट भविष्य में राष्ट्रीय महासभा की समस्त कार्यवाही राष्ट्र-भाषा हिंदी ही में होगी ?

× × ×

८. मि० बोनरला का वियोग

ग्रेट ब्रिटेन के भूतपूर्व प्रधान मंत्री मि० बोनरला भी गत ३० ऑक्टोबर को सबेरे स्वर्ग सिधार गए । एक-साथ ही मनस्वी मॉर्ले और वाग्मी बोनरला-जैसे दो महान् पुरुषों को खोकर ब्रिटिश-साम्राज्य की भारी क्षति हुई है । दोनों आदमी लिबरल और कंज़र्वेटिव-दलों के सर्वमान्य मुखिया और असाधारण व्यक्ति थे । लायड जार्ज की कुटिल नीति असफल होने पर एकाएक उनको प्रधान मंत्री के पद से हटना पड़ा, और उस समय बीमार रहने पर भी बोनरला उक्त दायित्व-पूर्ण पद पर विराजमान हुए । इन्हें न्युमोनिया हो गया था, और अंत को उसी में इनकी मृत्यु भी हुई । इनके पुरखे स्कॉटलैंड के रहनेवाले थे । इनका जन्म कनाडा के न्यू बर्न्सविक-नगर में हुआ था । विद्याभ्यास समाप्त कर ग्लासगो में जाकर इन्होंने लोहे का कारख़ाना खोला । कुछ ही समय में अपनी योग्यता से व्यापारियों के नेता बन बैठे । सन् १८९८ में यह आयरन ट्रेड एसोसिएशन के अध्यक्ष चुने गए । राजनीति में दिलचस्पी लेते ही सन् १९०० में यह पार्लियामेंट के मेंबर चुने गए । सन् १९१५ में औपनिवेशिक विभाग के मंत्री हुए, और प्रशंसनीय योग्यता के साथ अपना काम करके प्रसिद्ध और लोकप्रिय हो गए । इसके बाद कुछ दिनों के लिये प्रधान मंत्री हुए । बीमारी की लाचारी से इन्हें यह पद छोड़ देना पड़ा । कंज़र्वेटिव-दल के होने पर भी यह स्वभाव के बुरे न थे । लोग इन्हें सरल-चित्त और सत्य-भीरु समझते थे । इनमें बोलने की शक्ति अच्छी थी । अपने युक्ति-पूर्ण भाषण से विपक्षियों पर भी यह अपना असर डाल सकते थे । मरने के समय इनकी आयु ६४ वर्ष की थी । हम इनकी आत्मा की सद्गति के लिये ईश्वर से प्रार्थना करते हैं ।

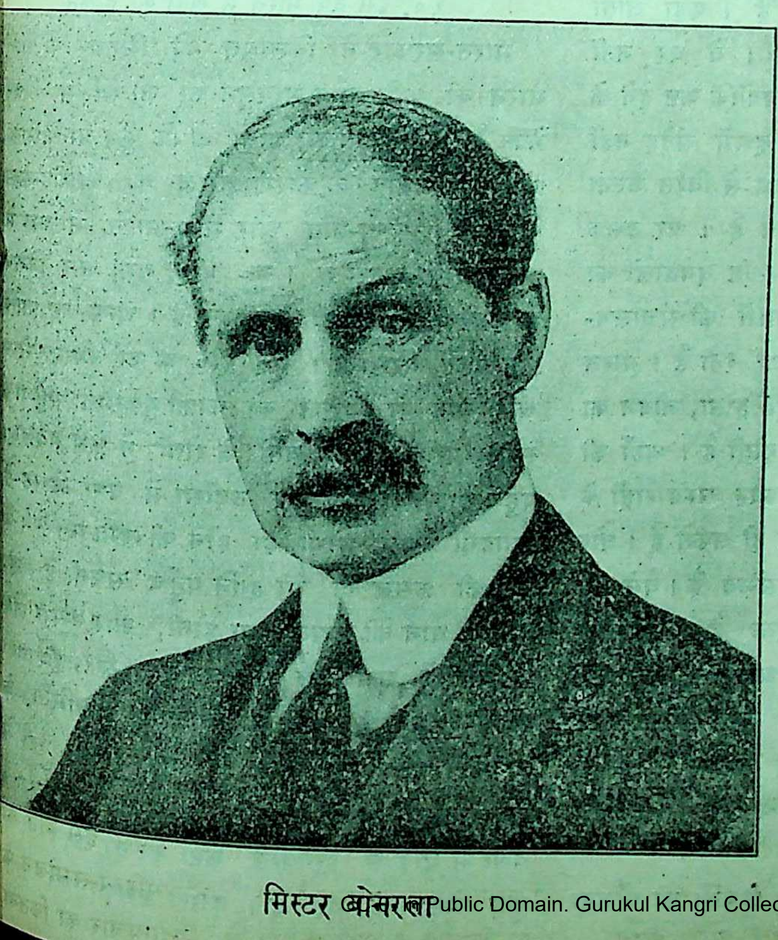

मिस्टर बोनरला

× × ×

९. भारतीय जेलों में सुधार की आवश्यकता

अन्य सभ्य और स्वतंत्र देशों में जेल जानेवाले अपराधियों के जीवन को सुधारने का प्रयत्न किया जाता है । अपराधियों और पापियों के साथ भूल-भ्रांति से पहली ही बार अपराध करनेवाले लोग नहीं रक्खे जाते । उनके साथ सहानुभूति का व्यवहार किया जाता है । मतलब यह कि वहाँ की जेलें नरक का नमूना नहीं हैं । वहाँ क़ैदी के साथ पशुओं का-सा व्यवहार नहीं किया जाता । फिर भी वहाँ जेलों को

और भी अधिक उन्नत बनाने की चेष्टा हो रही है। इधर भारतीय जेलें सभ्यता और शिष्टता की उन्नति-कारिणी बीसवीं शताब्दी के नाम पर कलंक की कालिमा पोत रही हैं। किंतु उनकी दुर्दशा का ठीक-ठीक पता भारत के सर्व-साधारण जन-समुदाय को अब भी यथेष्ट नहीं है। और, सच्ची बात तो यह है कि कारागारों के छोटे-मोटे कर्मचारी कितना उत्पात और अत्याचार करते हैं, इसका यथेष्ट पता भारतीय शासन के सूत्रधारों—ब्रिटिश मंत्रि-मंडल के गरायमान्य सदस्यों—तक को नहीं है। फिर यह कैसे संभव हो सकता है कि संसार के अन्य स्वाधीन राष्ट्रों को भारतीय कारागारों की दुर्दशा का पता हो। यदि उन्हें इसका यथेष्ट ज्ञान होता, तो भारत के कारागारों की यह दुरवस्था रहना असंभव था। यहाँ की सरकार कम-से-कम बदनामी के ख़याल से ही उनका सुधार करने को विवश होती।

अस्तु। इसमें संदेह नहीं कि भारत के कारागार नरक-यातनाओं के साक्षात् आगार हैं। कहा जाता है कि "जेल जेल ही हैं, और रहेंगे। वे घर नहीं हो सकते। कष्ट तो उनमें होगा ही; क्योंकि कष्ट देने के लिये तो उनकी रचना ही हुई है।" इसमें संदेह नहीं कि अपराधी को कष्ट देकर उसे अपराध से विरत करना ही कारागारों की स्थापना का उद्देश्य है। पर उसके जीवन का सुधार करना भी कारागार-दंड देनेवालों का लक्ष्य होना चाहिए। भारतीय कारागारों की संचालन-प्रणाली इस उद्देश्य से सर्वथा भिन्न जा रही है। भारत के कारागारों में जीवन का सुधार नहीं होता, जीवन का ह्रास और जीवन की अंत्येष्टि-क्रिया होती है। यहाँ की जेलों में दिए जानेवाले कष्ट उन्नत और सभ्य राष्ट्रों के निवासियों के लिये आश्चर्य का कारण हो सकते हैं। घोर कष्ट देकर जीवन का सुधार करना असंभव है। वैसे कष्ट देकर जीवन को नष्ट करना निष्ठुरता है। साधारण उत्पन्न कर जीवन का सुधार करना अच्छा है, और घोर भय कष्ट देकर मानव-जीवन को नष्ट करना स्पष्ट पैशाचिक प्रवृत्ति है। इसीलिये कहना पड़ता है कि भारत के कारागार ब्रिटिश-शासन के लिये कलंक हैं।

हाल ही में भारतीय जेलों में कुछ सुधारों की योजना हुई है। इस योजना से जेल के नियमों में कुछ सु और परिवर्तन होंगे। परंतु हमें खेद के साथ लि पड़ता है कि ये सुधार पर्याप्त नहीं हैं। इन सुधारों भारतीय कारागारों के संबंध में देश में जो असंतोष न तो वही मिटेगा, और न इन कारागारों की वर्त अवस्था के बदौलत ब्रिटिश शासन के नाम पर हुई कालिमा ही मिटेगी। सरकार यदि वास्तव में सु करना चाहती है, तो उसे चाहिए, वह कारागारों वर्तमान अवस्था में आमूल परिवर्तन करे; जिससे न व्यवस्था ऐसी हो, जो कारागारों में दी जानेवाली प विक यातनाओं का सदा-सर्वदा के लिये अंत क अब चोर, खूनी, डाकू ही जेल नहीं जाते, देश- नाम से परिचित भले आदमी भी जाने लगे हैं, चोर-डाकुओं की अपेक्षा उन्हीं को अधिक कष्ट पड़ते हैं। इस दृष्टि से भी भारतीय कारागारों का सुधार होना आवश्यक है।

× × ×

१०. इस वर्ष भारत में खेती की हालत

भारत-सरकार ने विलायत को सितंबर के भारत की कृषि और मानसून का जो संक्षिप्त वि भेजा है, उससे मालूम होता है कि कुछ प्रांतों में वर्षा और बाढ़ के कारण फ़सल को काफ़ी नु पहुँचा है। मध्य-प्रांत और मध्य-भारत में ज़रूर ज़्यादा पानी बरसा है। यू० पी०, बर्मा और हैदरा में ज़रूरत-भर की ही वर्षा हुई है। अन्य कई प्रां कम पानी बरसा है। यू० पी० के कई स्थानों में और बाढ़ से फ़सल को काफ़ी नुक़सान पहुँच सरहद पर कई जगह खेती के रोगों ने फ़सल को पहुँचाई है। बिहार और उड़ीसा में वर्षा की क अगहनी फ़सल आधी ही होने की संभावना है। रबी की फ़सल को भी हानि पहुँच सकती है। प्रांत में धान की फ़सल कम होगी, और दूसरी के बारे में अभी कुछ निश्चित रूप से नहीं क सकता। मदरास, बंगाल, आसाम, बिहार, अजमेर और राजपूताने में अभी और व आवश्यकता समझी जाती है। बंगाल, आसा बर्मा में बाढ़ से होनेवाले कष्टों को दूर करने की कुछ चेष्टा की गई है। दूसरी फ़सलों की

अपेक्षा कृत अच्छी है। खाने-पीने की सामग्री भी यथेष्ट है। भोजन-सामग्री की दर कहीं अधिक और कहीं कम है। परंतु स्थिर है, घटती-बढ़ती नहीं। आर्थिक अवस्था भी बुरी नहीं है। पशुओं का स्वास्थ्य भी संतोष-जनक है। केवल यू० पी०, हैदराबाद और राजपूताने से पशु-रोग फैलने की ख़बर मिली है। मदरास में घास-चारे की कमी है। बंबई और सिंध में सूखे चारे और घास की कमी पड़ने की संभावना है। साधारण रूप से खेती की हालत अच्छी बताई जाती है। मतलब यह कि अन्न की दर ठहरी हुई है, और अच्छी फ़सल की आशा की जाती है। ये सब सरकारी पक्ष की बातें हैं। वस्तु-स्थिति जानने का और कोई ज़रिया न होने के कारण हमको इसी रिपोर्ट पर संतोष करना चाहिए।

× × ×

११. भारत में बच्चों की बढ़ती हुई मृत्यु-संख्या

भारत में दिन-दिन बच्चों की मृत्यु-संख्या बढ़ती ही जाती है। सरकारी रिपोर्ट से ज्ञात होता है कि भारत में हर साल २ करोड़ से अधिक बच्चे मर जाते हैं। बाल-मृत्यु का औसत १००० में २०० होता है। यह पंचमांश बच्चों की मृत्यु देश के लिये बड़े ही दुर्भाग्य की सूचना देती है। अधिकांश बच्चों की मृत्यु जिन कारणों से होती है, वे दूर किए जा सकते हैं। किंतु कुछ माताओं के मूर्ख और शिशु-पालन-प्रक्रिया से अपरिचित होने के कारण और अधिकतर ग़रीबी के मारे बच्चों की मृत्यु अनिवार्य हो रही है। इस काम में न तो सरकार ही यथेष्ट धन ख़र्च करती है, और न प्रजा-पक्ष के नेता ही इधर ध्यान देते हैं। अगर प्रजा-पक्ष के मुखिया लोग अन्य अनावश्यक कामों को छोड़कर कुछ ऐसा प्रबंध करें कि देश में सर्वत्र स्त्रियों को प्रसव-क्रिया, शिशु-पालन, बालकों की हिफ़ाज़त आदि की शिक्षा दी जाय, उन्हें गंदगी और कुपथ्य के दोष समझाए जायँ, तो बहुत कुछ हो सकता है। साथ ही सरकार और प्रजा-पक्ष के नेताओं को सम्मिलित उद्योग से यह प्रबंध भी करना चाहिए कि ग़रीबों और अनाथ-परिवारों को आर्थिक सहायता दी जाय, जिसमें ग़रीब और अनाथ माताएँ अपने बच्चों को अच्छे भोजन-वस्त्र दे सकें, बीमार होने पर उनकी चिकित्सा करा सकें और उनके पीने के लिये विशुद्ध दूध का प्रबंध कर सकें। आजकल प्रायः—अधिकतर ग़रीबों को—अच्छी दाइयाँ नहीं मिलतीं, जिसमें प्रसव-कार्य में असावधानी होती है। बच्चा और मा, दोनों गंदे स्थान में मैले-कुचैले वस्त्र पहनाकर रक्खे जाते हैं। ग़रीबों को जाने दीजिए, अमीरों के यहाँ भी 'सौर' में गंदगी ही रक्खी जाती है। अच्छे और यथेष्ट खाद्य का अभाव रहता है। ज़च्चा को बलकारक पदार्थ बहुत कम नसीब होते हैं। शुद्ध वायु का सेवन भी बहुत कम किया जाता है। इसी तरह के बहुत-से कारण ऐसे हैं, जिनसे बच्चा—और अक्सर ज़च्चा भी—अकाल-मृत्यु का शिकार बन जाता है। अगर मृत्यु नहीं भी होती है, तो प्रायः असाध्य और अधमरा कर देनेवाले रोग जड़ जमाकर जन्म-भर के लिये उन्हें बेकार बना देते हैं। औसत लगाकर देखा गया है कि तीन साल से कम आयु के बच्चे बहुत मरते हैं। इँगलैंड में आजकल बच्चों की मृत्यु का औसत १००० में ८० है। सौ वर्ष पहले वहाँ भी भारत के ही समान बच्चों की मृत्यु हुआ करती थी। परंतु वहाँ एक संगठित प्रयत्न किया गया, और अब मृत्यु-संख्या इतनी घट गई है। कुछ समय पहले इँगलैंड में बच्चों की मृत्यु-संख्या घटाने के लिये एक कौंसिल की स्थापना की गई थी। गाँवों और शहरों में स्त्रियों को प्रसव-क्रिया और शिशु-पालन के नियमों की शिक्षा देना ही उसका उद्देश्य था। वहाँ इस तरह प्रचार करने का बहुत अच्छा फल हुआ। वहाँ की सरकार भी इस मद में काफ़ी रक़म ख़र्च करती है। गत सन् १९२१ में ब्रिटिश-गवर्नमेंट ने बच्चों की रक्षा के लिये तीन करोड़ रुपए ख़र्च किए थे। वहाँ की जनता भी इस काम में काफ़ी दिलचस्पी लेती है। अब वहाँ राजा और प्रजा की सम्मिलित सहायता से यह काम हो रहा है। भारत में, कुछ साल हुए, रेडक्रास सोसाइटी के कर्तृत्व में यह काम शुरू किया गया था। उसे विस्तृत करने के लिये लेडी चेम्सफ़ोर्ड चाइल्ड वेलफ़ेअर लीग भी स्थापित हुई थी। इस समय श्रीमती लेडी रीडिंग भी इस कार्य को महत्त्व दे रही हैं। आगामी सन् १९२४ की जनवरी के तीसरे सप्ताह में एक जातीय सप्ताह नियत किया गया है। उसमें बाल-रक्षा-संबंधी कार्यों का प्रदर्शन किया जायगा, प्रसव-क्रिया, शिशु-पालन आदि पर व्याख्यान दिए जायँगे। इस काम के लिये शहरों और

क़स्बों में कमेटियाँ स्थापित करने का विचार हो रहा है। हमारी राय में इस सामयिक अनुष्ठान से वैसा स्थायी फल नहीं हो सकता। ऐसी कमेटियाँ स्थायी रूप से स्थापित हों। स्थानीय कार्यकर्ता लोग सरकार से मिलकर इस काम को चलावें। क़स्बों और गाँवों में प्रति मास जाकर स्त्रियों में स्त्रियाँ ही इन विषयों की उपयोगिता समझावें, और यथासंभव उपदेश के साथ शिक्षा भी दें। सरकार को भी काफ़ी रक़म इस मद में ख़र्च करनी चाहिए, और प्रजा के कर्णधारों को भी आर्थिक सहायता के साथ ही अज्ञान माताओं में शिशु-पालन और उसके महत्त्व का ज्ञान फैलाना चाहिए। हमें आशा है, कांग्रेस भी ऐसे उपयोगी महत्त्व के कार्य की ओर अवश्य ध्यान देगी। देश का सच्चा हित ऐसे ही काम करने से हो सकता है।

× × ×

१२. भारत में सिंचाई-विभाग

भारत के आबपाशी-विभाग की सन् १९२१-२२ की जो रिपोर्ट प्रकाशित हुई है, उससे मालूम होता है कि देसी राज्यों को छोड़कर समग्र भारत में नहरों और तालाबों के द्वारा २ करोड़ ७० लाख एकड़ भूमि की सिंचाई की गई। औसत हिसाब से यह रक़बा गत ३ वर्ष के रक़बे से साढ़े सात लाख एकड़ अधिक होता है; किंतु सन् १९१९-२० से २ लाख ८१ हज़ार एकड़ कम है। पंजाब में सिंचाई सबसे अधिक हुई है। उसके बाद मदरास, सिंध और यू० पी० का नंबर है। इस साल सिंचाई के कामों में कुल ६,१८१ रु० ख़र्च किए गए। उससे ९६५ लाख रु० की आय और उसे वसूल करने में ६८३ लाख रु० ख़र्च हुए। इस रक़म पर ७·१ फ़ी-सदी सरकार को मिला। आबपाशी के कामों में ख़र्च करने से अच्छी आमदनी पंजाब में ही हुई। वह औसत से १४·६२ फ़ी-सदी है। मदरास का औसत १२·७४ है। यू० पी० का और ७·७४ है। बोई हुई ज़मीन में १४ फ़ी-सदी ज़मीन पर सिंचाई हुई। उसकी पैदावार भी ख़र्च के बनिस्बत दूनी अंदाज़ी गई। वह बिना सिंचाई के खेतों की उपज से ड्योढ़ी अधिक हुई। इसमें संदेह नहीं कि सिंचाई से खेती को बड़ा लाभ होता है। देश में सिंचाई के साधन नहर आदि का विस्तार जितना अधिक हो, उतना ही अच्छा।

× × ×

१३. साम्राज्य-प्रदर्शिनी के प्रति भारत का भाव

हमारे पाठक जानते हैं कि सन् १९२४ के शुरू में, विलायत में, एक साम्राज्य-प्रदर्शिनी होनेवाली है। उसमें ब्रिटिश-साम्राज्य के सभी देश अपने प्रतिनिधि और अपने यहाँ की प्रदर्शनीय वस्तुएँ भेजकर सहयोग करेंगे। इधर केनिया के पक्षपात-पूर्ण निर्णय से असंतुष्ट भारत की जनता उसका बायकाट करना चाहती है। जोशीले राष्ट्रीय-दल के लोग ही नहीं, माननीय शास्त्रीजी-जैसे शांत प्रकृति के महारथी माडरेट भी प्रदर्शिनी में शामिल न होने का समर्थन कर रहे हैं। इस पर हमारे बड़े लाट साहब ने अपने एक व्याख्यान में भारतीय जनता को सुनाया है कि इस बायकाट से इँगलैंड की कुछ हानि नहीं है, भारत की ही हानि होगी—उसी की व्यावसायिक उन्नति न हो सकेगी। हमारी राय में भारतवासियों को इस प्रदर्शिनी से विशेष लाभ की संभावना नहीं है; बल्कि हानि ही की अधिक आशंका है। हम मानते हैं कि प्रदर्शिनी में अपनी चीज़ें भेजने और उसमें शामिल होने से अपनी चीज़ों का प्रचार और ज्ञान-वृद्धि होती जा सकती, जो विदेशों को कच्चा माल देने का ही ठेकेदार बन रहा है, जिसकी दस्तकारी अपनी मशीनरी न होने के कारण अन्य देशों की मशीन से बनी चीज़ों का मुक़ाबिला नहीं कर सकती। भारत को हानि बेशक हो सकती है, और वह इस तरह कि यहाँ जो कुछ हाथ की कारीगरी बच रही है, जिससे यहाँ के कुछ कारीगर अब भी पेट पाल रहे हैं, उसे देखकर विलायत के कारीगर उसकी नक़ल करेंगे, और जर्मनी की शालों और विलायती चिकन की तरह वह नक़ली सामान आकर यहाँ की असली कारीगरी को चौपट कर देगा। न यहाँ करोड़ों की पूँजी लगानेवाले पूँजी-पति हैं, न उतनी पूँजी है, न मशीनरी है, न वैसी सुविधा है; फिर यहाँ के लोगों को प्रदर्शिनी से क्या लाभ हो सकता है? हाँ, इँगलैंड और उसके उपनिवेश बेशक आसानी से यह जान लेंगे कि भारत में यह कारीगरी अभी अछूती है, इसे हथियाने से हमारी जेबें भरी जा सकती हैं; भारत में यहीं कच्चा माल मौजूद है, इसे पैसे में ख़रीदकर भारतवासियों ही के हाथ मज़े से चार आने में बेचा जा सकता है। इन्हीं कारणों से हम भी इस प्रदर्शिनी के विरोधी हैं।

× × ×

१४. जर्मनी का जीवन

फ़्रांस ने जर्मनी को छिन्न-भिन्न कर अशक्त बना देने का प्रण कर लिया है। वह चाहता है, जर्मनी के सब अंग अलग हो जायँ, और वह एक शक्तिशाली राज्य न रह जाय। कारण, फ़्रांस जर्मनी से उसकी ऐसी कमज़ोर हालत में भी ख़ौफ़ खा रहा है। मो० पोयनकारे कहते हैं कि जर्मनी बाहर अपनी जो दशा दिखा रहा है, वह वास्तव में ठीक नहीं है। असल में उसकी भीतरी हालत अच्छी है, और वह फ़्रांस को हर्जाना दे सकने की शक्ति रखते हुए भी इसलिये यह ढोंग रच रहा है कि किसी तरह हर्जाने की रक़म कम कराने में सफल हो जाय, और फिर वह रक़म सहज ही अदा करके फिर फ़्रांस के विरुद्ध युद्ध का आयोजन करने में लग जाय। यह फ़्रांस के हृदय का भाव है। इसी भय से फ़्रांस सब कुछ अन्याय-अत्याचार करने को तैयार है। उसने हर्जाना वसूल करने के बहाने रूर पर क़ब्ज़ा किया, राइनलैंड में पैर बढ़ाए। जर्मनों का सत्याग्रह शुरू होने पर उसे व्यर्थ करने के लिये फ़्रांस ने कोई चाल उठा नहीं रक्खी। लगातार बेकारी, बेहद महँगी, सिक्के के पतन और कड़ी सज़ाओं से लाचार होकर भी जर्मन शायद सत्याग्रह न छोड़ते, मगर फ़्रांस की भेद-नीति काम कर गई। अब सुन पड़ता है, बवेरिया, सैक्सनी आदि राज्य जर्मन-साम्राज्य की आज्ञा नहीं मानते, राइनलैंड में जर्मनी से अलग प्रजा-तंत्र की घोषणा भी कर दी गई है। फ़्रांस का इसमें गहरा हाथ है। इस संबंध का संपूर्ण विवरण हमारे पाठक दैनिक-साप्ताहिक पत्रों में पढ़ ही चुके होंगे। इस समय जर्मन-साम्राज्य के लिये बड़ा कठिन समय है। शक्तिशाली फ़्रांस बदला लेने पर तुला हुआ है। अमेरिका तटस्थता दिखाते हुए भी समय-समय पर मित्रों का समर्थन करता है। उधर बोल्शेविकों का और ही इरादा है। रूस का लेनिन जर्मनी में क्रांति कराकर बोल्शेविक-राज्य स्थापित करने की फ़िक्र में है। जर्मनी पर यदि ये बाहरी हमले ही होते, तो भी ग़नीमत थी। उसकी भीतरी हालत भी बड़ी ख़राब हो रही है। घर में वह सम्मति नहीं देख पड़ती, जिसके बल पर जर्मन-साम्राज्य का संगठन हुआ था। कोई प्रजा-तंत्र का पक्षपाती है, तो कोई फिर से राज-तंत्र की स्थापना का उद्योग कर रहा है। बोल्शेविक लोग राज्य-शासन को अपने हाथ में लेना चाहते हैं, तो व्यापारी स्वयं सर्वेसर्वा: बनने की फ़िक्र में हैं। इस आपस की खींच-तान से जर्मनी ने और भी अपनेको निर्बल बना लिया है। इसमें संदेह नहीं कि इस समय जर्मनी का जीवन ख़तरे में है। परंतु यह भी निश्चित है कि जर्मनी डूबेगा, तो अकेला नहीं। उसके पतन से इँगलैंड, फ़्रांस आदि को भी गहरा धक्का पहुँचेगा। हमारी समझ में तो जर्मनी की दुर्दशा की चरम सीमा दिखाई दे रही है (देश में मरभुखे लोग लूट-मार तक करने लगे हैं), इसके बाद वह सँभल भी सकता है। मनुष्य कुछ नहीं कर सकता। फ़्रांस उसके सर्वनाश पर तुला बैठा है, मगर सबसे बड़ी शक्ति—वह जगदीश्वर—अगर जर्मनी का विनाश नहीं चाहती, तो कुछ न होगा। हमें तो विश्वास है कि अंत को फ़्रांस नीचा देखेगा। कारण, जिस घमंड और हठ ने जर्मनी की यह हालत की है, वही फ़्रांस के सिर पर सवार है।

× × ×

१५. जॉन मॉर्ले की मृत्यु

जॉन मॉर्ले के नाम से समस्त राजनीतिक तथा साहित्यिक संसार पूर्णतया परिचित है। शिक्षित भारतीय नागरिक-समाज में शायद ऐसा कोई व्यक्ति न मिलेगा, जो लॉर्ड मॉर्ले के नाम से अपरिचित हो। कारण, आपका भारत से एक विशेष संबंध रहा है। आपने सन् १९०५ से १९१० ई० तक भारत-मंत्री का कार्य किया था। आपकी नीति उदार थी। आपका मंत्रित्व-काल भारत के वर्तमान अशांत काल का पूर्ववर्ती अशांत काल था। लॉर्ड कर्ज़न की दमन-नीति और वंग-विच्छेद से समस्त बंगाल का नवयुवक-समाज जग उठा था, और क्रांति की रश्मियाँ समस्त भारत में एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक अपना प्रकाश फैला चुकी थीं। इसी समय जॉन मॉर्ले ने भारत-मंत्री का पद ग्रहण किया था। भारतीय समस्याओं के प्रति आपके हृदय में यथेष्ट स्थान था। इसीलिये आप महामति गोखले के परामर्शों के अनुसार तत्कालीन लॉर्ड मिंटो को समय-समय पर सचेत करते रहते थे। लॉर्ड मिंटो और जॉन मॉर्ले ने मिलकर भारतीय सुधारों की एक स्कीम भी बनाई थी; पर भारत-सरकार उसके अनुसार कार्य करने में असमर्थ सिद्ध हुई। इसके अतिरिक्त जॉन मॉर्ले ने आयर्लैंड के

मंत्रित्व का भी कार्य, १० वर्षों तक, किया था। आयर्लैंड के पक्ष का आपने सदा समर्थन किया, और सदैव उसकी हित-कामना से प्रेरित होकर कार्य किया। सन् १९१० से १९१४ ई० तक, लगभग ५ वर्ष लगातार आप ब्रिटिश मंत्रि-मंडल में 'लॉर्ड प्रेसिडेंट ऑफ़ दि कौंसिल' की हैसियत से बैठते रहे, और अंत को योरपियन महाभारत के प्रारंभ-काल में मत-भेद के कारण मंत्रि-मंडल से पृथक् हो गए।

जॉन मॉर्ले राजनीति के कार्यों के लिये जिस भाँति प्रसिद्ध हैं, उसी भाँति अपने साहित्यिक कार्यों के लिये भी। आपका जन्म लंकाशायर के ब्लैकबर्न-स्थान में २४ दिसंबर, सन् १८३८ ई० में, हुआ था। २० वर्ष की अवस्था में, अपना अध्ययन-कार्य समाप्त कर, आपने साहित्यिक क्षेत्र में पदार्पण किया, और क्रमशः 'लिटरेरी गज़ट', 'मॉर्निंग स्टार' तथा 'फ़ॉर्टनाइट रिव्यू' आदि कई पत्रों का संपादन किया। इसके अतिरिक्त आपने स्थायी साहित्य की भी यथेष्ट सेवा की। अँगरेज़ी में आपने वाल्टेयर, रूसो, वालपोल, बर्क, क्रावडन, क्रामवेल तथा ग्लैडस्टन आदि कई महापुरुषों की सुंदर, सुविस्तृत जीवनियाँ भी लिखी हैं; जिनको अँगरेज़ी-साहित्य में एक महत्त्व-पूर्ण स्थान प्राप्त है। खेद की बात है कि गत २३ सितंबर को आपका देहांत हो गया। संसार से एक और प्रतिभावान् साहित्यिक तथा राजनीतिक उठ गया। भगवान् आपकी आत्मा को सद्गति प्रदान करें। हम आपकी सविस्तर सचित्र जीवनी आगामी संख्या में प्रकाशित करेंगे।

शारीरिक व आध्यात्मिक मन का भेद 'दिव्य संदेश' अवतार व दैविक **प्रेम** के रहस्य

सृष्टि की रचना-विधि **कैवल्य शास्त्र** ब्रह्म व जीव का स्वरूप

स्पंदन-क्रिया का रूप, संस्कारों के नियम ब्रह्म के स्वरूप पर अटल धर्म का निर्माण

मुक्ति की वैज्ञानिक विधि, सांख्य, न्याय, वेदांत की ऐक्यता, द्वैत-अद्वैत का मिलान आदि अपूर्व रहस्य, साइन्स, फ़िलासफ़ी व धर्म को एक करनेवाली संसार में अकेली पुस्तक। अँगरेज़ी संस्करण भी इँगलैंड व अमेरिका में प्रकाशित हो रहा है। **मूल्य ५)** अधिक न समझिए—वैज्ञानिक पुस्तकों का मूल्य उपन्यासों से अधिक होना स्वाभाविक है। उपन्यासों में इतने रुपए ख़र्च करते हो; क्या जीवन सफल करनेवाली पुस्तक के लिये ५) भी बहुत हैं? इस विषय का यह विवेचन हिंदी-संसार की किसी भी अन्य पुस्तक में दिखा दो, तो और बड़ा **पारितोषिक** व पुस्तक भेंट। फ़िर भी यदि मूल्य अधिक समझो, तो हमसे पूरी एडीशन-छपाई, प्रकाशन की लागत व लेखक की रॉयल्टी देकर ले लो और फिर कम मूल्य पर बेचकर देखो। और कैसे विश्वास दिलावें? विज्ञापनानुसार न हो, तो तुरंत लौटाकर दाम फेर लो। देखिए विद्वानों की समालोचना।—

श्रीभगवानदास एम्० ए०, बनारस—"प्रभा-पूर्ण, प्रबल मौलिक विचार-शक्ति…विवेचन की नवीनता और वैज्ञानिक विचारों का स्वतंत्र प्रयोग…पाश्चात्य व प्राच्य दर्शनों को मिलानेवाले साहित्य में अत्युत्तम ग्रंथ।"

श्रीहरिहर शास्त्री, साहित्योपाध्याय, संस्कृत प्रोफ़ेसर, उसमानिया युनीवर्सिटी, हैदराबाद दक्षिण—"वास्तव में लेखक ने इस परमोपयोगी ग्रंथ को रचकर लोक का परम उपकार किया है…जीवात्मा तथा ब्रह्म का ऐसा स्पष्ट विवरण…सृष्टि-रचना…वर्णन…में लेखक ने बड़ी विद्वत्ता का काम किया है…।"

श्रीसूर्यकांत शास्त्री, व्याकरण-तीर्थ, विद्याभास्कर, महेवड़, ज़िला सहारनपुर—"पाश्चात्य विद्वान्…प्राच्य दार्शनिक…विज्ञ लेखक ने सबको युक्ति तथा प्रणय से मनाकर, एक ही तत्त्व का उपासक बनाकर, कमाल किया है…भक्तों के लिये दैविक उपहार…लेखक के दिव्य संदेश ने वह भूल मिटा दी, झूठा पर्दा उठा दिया और प्रेमामृत की ओर इशारा कर अपना कार्य कर दिया। जीवन-पथ के लिये प्रज्वलित दीपशिखा है।"

श्रीगोपीनाथ कविराज एम्० ए०, गवर्नमेंट संस्कृत लाइब्रेरी, बनारस—"अद्वितीय योग्यता का ग्रंथ…दार्शनिक साहित्य में निःसंदेह उन्नति…असाधारण…प्रभावशाली…सरल व युक्ति-पूर्ण वर्णन ऐसी पुस्तक पढ़ने का सौभाग्य कदाचित् कभी मिलता है—दर्शन व धर्म के सत्य व नित्य तत्त्व और उनके अनुसार…सर्वदेशीय धर्म"

६/६४ **पता—सद्ज्ञान-प्रकाशक-मंदिर, नं० २ मामू-भांजा, अलीगढ़ सिटी**

चित्र-चर्चा

१. रंगीन चित्र

पहला रंगीन चित्र 'मदन-दहन' है। सती के जल जाने पर शिवजी ने समाधि धारण की। इधर तारकासुर को मारने के लिये देवतों को सेनापति की ज़रूरत थी। शिव के पुत्र स्कंद के विना यह काम नहीं हो सकता था। देवतों ने सहायता के लिये कामदेव की शरण ली। पार्वती जब शिव की पूजा करने आईं, तब काम ने वार किया। शिव ने तीसरे नेत्र की आग से उसे भस्म कर दिया। उसी समय के दृश्य का यह सुंदर चित्र है। जयपुर के राजपूताना-आर्ट-स्टूडियो की कृपा से यह चित्र हमें प्राप्त हुआ है। हम इस कृपा के लिये उक्त संस्था के बहुत-बहुत कृतज्ञ हैं।

दूसरा रंगीन चित्र 'प्रेमिका' का है। नायिका का पति स्वर्ग सिधार गया है। वह नित्य अपने जीवन-सर्वस्व की समाधि पर जाकर, पत्र-पुष्प से समाधि का श्रद्धा-सहित पूजनकर उस पर प्रेमाश्रु टपका आती है। कलकत्ते के प्रसिद्ध चित्रकार श्रीयुत देवीप्रसाद राय चौधरी ने इस-में इसी भाव का चित्रण बड़ी सुंदरता के साथ किया है। भूतपूर्व घटना से एकरस चिरप्रभावित होकर जीवन-धन की समाधि-स्थित मृत्तिका पर पुष्प चढ़ाना बहुत ही सुंदर और भावमय है। यह चित्र माधुरी पर असीम कृपा रखनेवाले बाबू रामेश्वरप्रसाद वर्मा द्वारा प्राप्त हुआ है।

तीसरा रंगीन चित्र 'कृष्ण-दर्शन' का है। राधारानी अपनी सहेलियों के साथ कालिंदी-कूल पर जल भरने गईं। दर्शन हुए। वह ठिठककर रह गईं, और अपनी एक सहेली को भी कुछ ठहर जाने के लिये इशारा करने लगीं। चित्र का यही भाव है। चित्र सुंदर तथा भावमय है।

२. व्यंग्य-चित्र

पहला व्यंग्य-चित्र 'आधुनिक नेता' है। गुलगुली गद्दी पर मसनदें लगी हुई हैं। नेतागण उनके सहारे बैठे हुए बैठक की कार्यवाही कर रहे हैं। इसी भाव को लेकर श्रीयुत रामेश्वरप्रसाद वर्मा ने इस व्यंग्य-चित्र की रचना की है।

दूसरा व्यंग्य-चित्र 'गँवार गाँहक' है। गंधी इत्र के बेग से गाँहक को इत्र की बानगी दे रहा है, और फ़ैशनेबुल, किंतु गँवार गाँहक सूँघने की जगह चखकर उसकी परख कर रहा है। गंधी ग्राहक की ओर देखता हुआ बेग बंद कर लेता है। उसकी मूर्खता का परिचय पाकर गंधी की भाव-भंगी परिवर्तित हो गई है! नवयुवक चित्रकार ने चित्र के नीचे अंकित कविवर विहारीलाल के भाव-पूर्ण दोहे के आधार पर इसे चित्रित किया है।

तीसरा व्यंग्य-चित्र 'कौंसिल के उम्मेदवार' है। चुनाव में असफल होनेवाले उम्मेदवार महाशय इतने उदास और दुखी हो गए हैं कि उन्हें संसार की असारता का ज्ञान हो गया है, क्योंकि गीता उनकी टेबुल पर है। दूसरी ओर सफलता प्राप्त करनेवाले एम्० एल्० सी० महोदय फूले नहीं समाते।

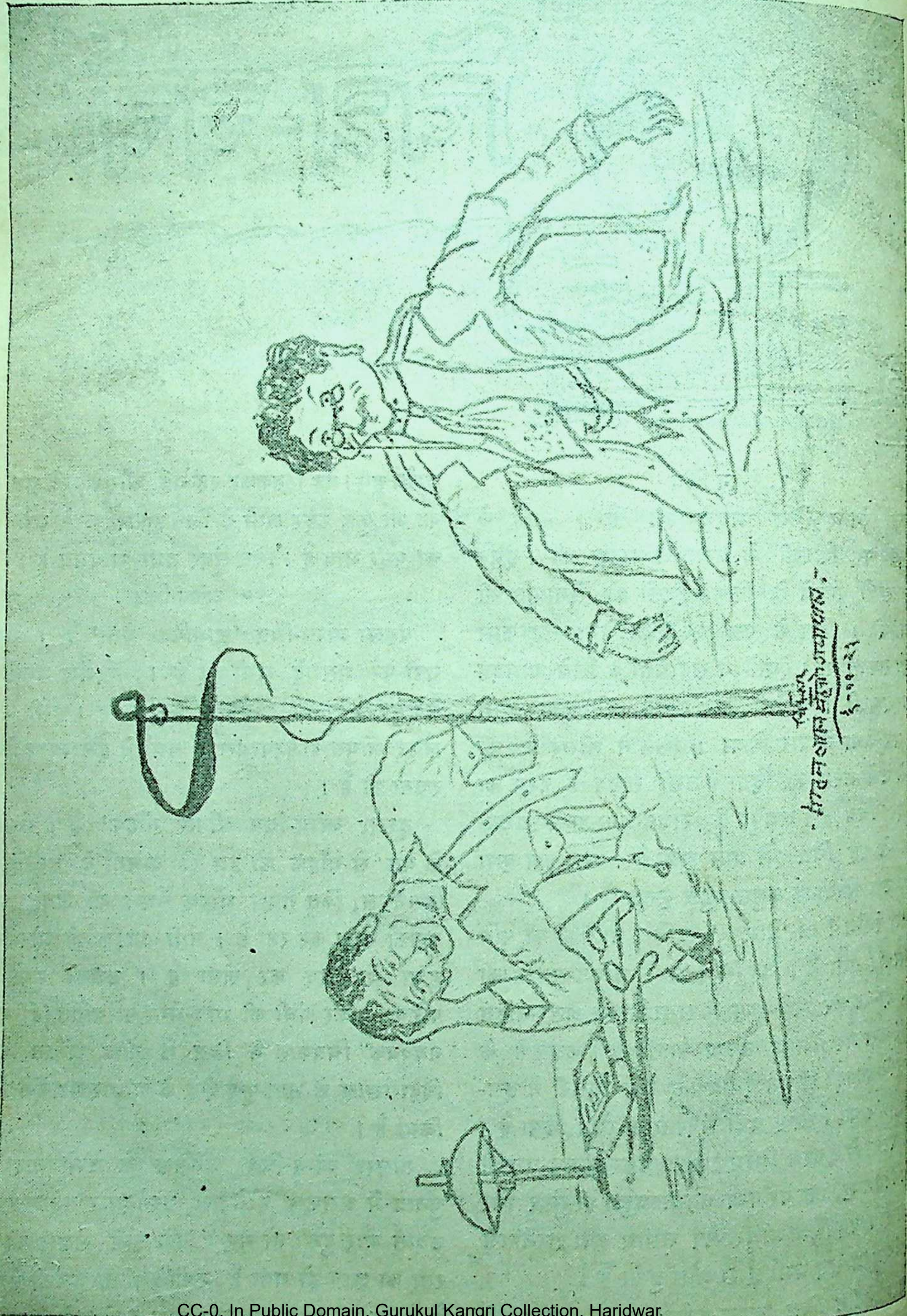
चित्रकार
मोहनलाल महतो गयावाल

कौंसिल के उम्मेदवार

[चित्रकार—श्रीयुत मोहनलाल महतो गयावाल]

शौक़ीनों के नाम खुली चिट्ठी

प्रायः शौक़ीन लोग स्वदेशी कपड़े को यह कहकर नहीं ख़रीदते हैं कि स्वदेशी कपड़ा अच्छा नहीं मिलता और दाम भी ज़्यादा लगते हैं । उन्हीं महाशयों के लिये ख़र्च व कोशिश से विलायती कपड़े को मज़बूती व सुंदरता में मात करनेवाला, तिस पर भी क़ीमत सस्ती, शुद्ध स्वदेशी कपड़ा तैयार कराया है और ज़ोर के साथ शौक़ीनों से अपील करते हैं कि एक बार हमारे रेशमी व सूती कपड़े को देश-कल्याण व रुपए की बचत के लिये मँगा देखिए । फिर तो आप सदा के लिये विदेशी कपड़ा छोड़कर स्वदेशी ही पहिनेंगे । हम सचाई के लिये गारंटी देते हैं कि जो माल आपको न पसंद हो उसे वापस भेजकर रुपया मँगा लीजिए ।

प्योर रेशमी सिल्क

(सूट व कोट का सर्वोत्तम कपड़ा)

यह सिल्क विलायती भागलपुरी बनारसी रेशम से मज़बूत मुलायम चमकीला टिकाऊ देखने में मनोहर जिसको राजा, रईस, ताल्लुक़ेदार, ऑफ़िसर, वकील, प्रोफ़ेसर, मास्टर तथा स्टुडेंट इत्यादि से लेकर मामूली मनुष्य तक पहिन सके इसलिये इसकी क़ीमत भी मज़बूती के लिहाज से बहुत ही कम रक्खी है । एक कपड़ा मुद्दत तक काम देता है । मू० सिर्फ़ सात गज़ के थान का २८), बढ़िया का ३२) रु० ।

अंडी सिल्क (रेशमी खद्दर)

यह अंडी जगत्प्रसिद्ध आसाम के चर्ख़े से कते रेशम से तैयार कराई है । देखने में सुंदर अत्यंत सस्ती मुलायम जिसकी मज़बूती से मुक़ाबला करनेवाला दुनिया में आज तक कोई रेशम बना ही नहीं जिसका बना कपड़ा १० वर्ष तक तो ख़राब ही नहीं होता तिस पर ७ गज़ के थान का दाम १२) से १५) रु० तक ।

स्वदेशी ढाका

(रेशमी धारी के डोरिया)

नई-नई फ़ैशन सुंदर धारी कपड़े में महीन व चिकना विलायती को शर्मिंदा करनेवाला फ़ैंसी डोरिया ढाका की पुरानी कारीगरी की याद दिलाता है फिर भी मूल्य में सस्ता टिकाऊ होने से हरएक आदमी ख़रीद सकता है। मूल्य १२ गज़ के थान का ११) रु० से १५) रु० तक ।

स्वदेशी मलमल

हमारी मलमल सुंदर महीन चिकनी होते हुए भी विलायती से दूनी मज़बूत और मूल्य में सस्ती है । गरमियों में कुरता चादरा डुपट्टा आदि के बड़े काम की है । मूल्य १२ गज़ के थान का ५) से ७) रु० तक ।

ज़नानी साड़ियाँ व डुपट्टे

स्वदेशी संसार में श्रीमतियों के लिये साड़ी डुपट्टों का अभाव देखकर व खद्दर पहिनना असंभव समझकर हमने सुंदर रंगीन धूपछाँह अल्पाका की तर्ज़ पर सादा व पाँचापाड़ धारीदार व प्लेन आदि कई डिज़ाइन की साड़ियाँ तैयार की हैं। मूल्य १० गज़वाली साड़ी के जोड़े का ६) रु० से ८) रुपए तक । डुपट्टे ३ गज़ के १॥ गज़ अर्ज़ के २) रु० से ३॥) रुपए तक ।

मिलने का पता—

मैनेजर, दि स्वदेशी क्लाथ सप्लाई स्टोर, नं० ५, इटावा ।

पॉकेट इत्रदान

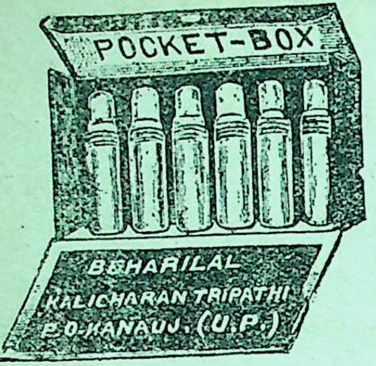

यह इत्रदान उत्तमोत्तम इत्रों से भरा हुआ होने पर भी पॉकेट में रखने योग्य है । मित्रों और ऑफ़िसरों को नज़र में देने के लिये नई वस्तु है । विवाह (शादी) वग़ैरह शुभ कार्यों में महफ़िल का भी पूरा काम दे सकता है ।

नं० १ पॉकेट इत्रदान फ़ैंसी शी० ६ मय इत्र क़ीमत ४)
नं० २ ,, ,, ६ ,, ,, ३)
नं० ३ ,, ,, ६ ,, ,, २॥)

इसके अलावा हर एक क़िस्म का इत्र, तेल, तमाखू इत्यादि का सामान भी हमारे कार्यालय से मँगवा लीजिए । सबसे सस्ता और बढ़िया होगा ।

पता—विहारीलाल-कालीचरण त्रिपाठी,
१६/३६ पो० क़न्नौज सिटी (Kanauj City.)

RAM LALL,

DENTIST,

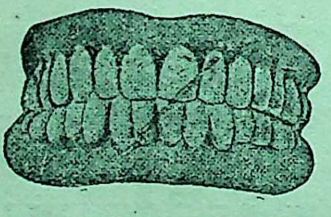

27 Aminabad Park, LUCKNOW.

ALL SORTS OF DENTAL WORKS
ARE EXECUTED PROMPTLY
- AT -
REASONABLE RATES.

१६/३५

भगवान् शंकराचार्य का बनाया
वेदांत का उत्तम ग्रंथ

सर्व वेदांत-सिद्धांतसार-संग्रह

अन्वय, पदार्थ और भाषा-टीका सहित

यह ग्रंथ आज तक छपा ही नहीं था, हमने इसको बड़ी खोज से पाकर भाषा-टीका के साथ सुवाच्य बंबई के टाइप में छापा है। इसमें वेदांत के सब ही सिद्धांत लिख दिए हैं, श्लोक-रचना काव्य के समान बड़ी ही मधुर है, लेखन-शैली पंचदशी के समान बड़ी चमत्कार-मयी है। जो वेदांत के कठिन ग्रंथों को नहीं समझ सकते, वे इस ग्रंथ को पढ़कर अपना परलोक सुधारें। जिल्ददार पुस्तक का मूल्य २) डाक-व्यय ॥-)

दश उपनिषद् भाषा-टीका सहित

अन्वय, पदार्थ और शंकरभाष्य के अनुकूल भाषानुवाद

ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुंड, मांडूक्य, तैत्तिरीय और ऐतरेय ये आठ उपनिषद् एक जिल्द में हैं। पृष्ठ-संख्या ४२०; मूल्य १।॰), डाक-व्यय ॥)

छांदोग्य उपनिषद्—एक जिल्द में। पृष्ठ ४८०; मूल्य १॥=), डाक-व्यय ॥)

बृहदारण्यकोपनिषद्—एक जिल्द में। पृष्ठ ६४० ; मूल्य २।), डाक-व्यय ॥-)

जीवन्मुक्ति-विवेक—विद्यारण्य-कृत भाषानुवाद-सहित। मूल्य १), डाक-व्यय ।॰)

विदेह-जनक—परम ज्ञानी राजा जनक की विचित्र जीवनी। मूल्य ॥), डाक-व्यय ।-)

पता—सनातन-धर्म छापाखाना,
१६/३६ मुरादाबाद यू० पी०

एक नया उपहार

(ज़रूर मँगवाइए)

प्रेम तपस्या

नाम ही से समझ लीजिए कि इस उपन्यास में क्या है। सच्चा प्रेम किसे कहते हैं—इसका अपूर्व उदाहरण। मूल्य ॥)

महारानी शशिप्रभा देवी

स्त्रियाँ अपने पति के लिये सर्वस्व निछावर करके किस प्रकार अपने जीवन को आदर्शमय बना सकती हैं—इसी का चित्र इस पुस्तक में खूबी से खींचा गया है। बहिनों को अवश्य भेंट में दीजिए। मूल्य १।)

लोक परलोक हितकारी

(चौथा छापा)

देशी-विदेशी, संतों-महात्माओं और विद्वानों के अनमोल ६५० चुने हुए वचन १६२ पृष्ठों में छपे हैं। "परिशिष्ट" "बेजड़े नगीने" भी इसी के साथ लगा है। संग्रहकर्ता का एक चित्र भी है। मूल्य ॥।=) सजिल्द १।)

मैनेजर,
बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

ये तीनों पुस्तकें एकसाथ बड़े दिन के पहले मँगाने से २।) में ही मिलेंगी। इसके बाद नहीं। पुस्तक मँगाते वक्त इस पत्र का नाम भी लिखिए।

Calcutta Musical Stores

BISWAS & SONS.

MODEL FLUTE

We always stock and sell all sorts fo musical instruments, *viz*, Clarionet, Cornet, Violin, Flute, Flageolet, Mouth-Organ, Bugle, Bagpipe, etc.

Harmoniums of all kinds of reeds, *viz.*, American, German, Paris, Esteve, Kasriel, etc., in Scale-Change, Coupler, Dulcetina, Folding, Box, etc., are manufactured by our experts and under our personal supervision. It is an admitted fact that our Harmoniums are the best in the market as regards quality, durability and high workmanship and they also suit all pockets.

Price List free on application.

BISWAS & SON .,

5, Lower Chitpore Road. (L) Calcutta.

Varieties of Best Watches

These watches are a novelty, extraordinarily fine, high grade up-to-date, improved movements, accurate time keeper strong and durable machinery and last long. English Mail watch Rs. 5.

Railway Regulator Rs 4-8, Inventing watch Rs. best lever watch Rs. 4, Alarming Timepiece Rs. 4 American Bee Timepieces Rs. 6-12, roll gold hunting Rs Amir hunting with seconds Rs. 8, Bengal Hunting seconds Rs. 8-8, Half Hunting with seconds Rs. 9, FAN NICKEL WRIST watch with second Rs. 5, Rad dial Rs. 6-8, Gold gilt Rs. 7, 9 Kt. wrist watch with Jewel Rs. 24, 5 years' Gt. roll gold Rs. 14-8, silver Rs SQUARE WRIST WATCHES-Nickel 14 Rs. 7/8-Kt case with full Jewel Rs. 38, Silver wrist Rs. 11. gilt Rs. 9, 5 years' Gt. roll gold Rs. 16. OCTAG WRIST WATCHES Nickel Rs. 7/8-Gold gilt Rs. 9, R um dial Rs. 10, 9 Kt. gold case with full Jewel Rs and 14 Kt. Rs. 39, 5 years' Gt. roll gold Rs. 1 TANNEOU SHAPED WRIST WATCHES, Nickel Gold gilt Rs. 10, Radium dial Rs. 10-8, 5 years' Gt. gold Rs. 15-8, 14 Kt gold case with full Jewel Rs.

All guaranteed for two years.

N.-B.—Purchasers of wrist watches will each get a g gilt strap and English leather free.

Apply for Catalogue—

THE ENGLISH WATCH Co.,

14, (N) Lakhmi Datta Lane, P. O. Bagbazar

CALCUTTA.

भविष्यद्वक्ता

जो चाहे सो पूछ लो

सौ बातों में पंचानबे बात की रजिस्ट्री। १।) में वर्षफल। ५) से ५०) में जन्म-भर का हाल।

पं० कंदर्पनारायण शर्मा व्यास,

५०/१८२ केसरीद्वार, मिरज़ापुर।

स्त्रियों के लिये--

सचित्र सुशीला उपन्यास

यह एक सत्य घटना-पूर्ण उपन्यास है जिसको एक श्रीमती हिंदी-प्रेमिनी ने लिखा है। वास्तव में इस उपन्यास को पढ़ने से चित्त पर बड़ा असर पड़ता है और बड़ी शिक्षा मिलती है। उपन्यास पढ़ते-पढ़ते मनुष्य का हृदय भर आता है, यहाँ तक कि वह रोने लगता है, चित्त में प्रण करता है कि अब एक स्त्री के होते हुए दूसरी से प्रेम कदापि न करूँगा। स्त्री ने भी किस प्रकार हृदय पर पत्थर रखकर पति-सेवा की और अंत में उसके ऊपर प्राण तक न्योछावर कर दिए —यह बात इस पुस्तक में भली भाँति दिखाई गई है। मूल्य १=)

पं० भगवतप्रसाद भारद्वाज,

५०/१८३ दरवाज़ा कटरा, मुरादाबाद।

लकी मोहन फ़्लूट हारमोनियम

देखने में सुंदर, मधुर आवाज़।

हमारे यहाँ निजी कारख़ाने से हारमोनियम तैयार किए जाते हैं। आप लोगों की सुविधा के लिये मूल्य भी बहुत कम रक्खा है। अच्छे दूकानदार और राजा-महाराजा हमारे ही यहाँ से हारमोनियम मँगवाते हैं, क्योंकि हमारे यहाँ का बाजा सबसे अच्छे कारीगरों के हाथ का बना हुआ होता है। सब हारमोनियमों की गारंटी दी जाती है। जिन महाशयों ने एक बार भी हमारे यहाँ से हारमोनियम मँगवाया है; वे फिर दूसरी जगह से नहीं मँगा सकते। बहुत-से प्रशंसा-पत्र आ चुके हैं। माल पसंद न होने पर हम फिरती ले सकते हैं। कृपा करके एक दफ़े मँगवाकर परीक्षा कीजिए। मूल्य—सिंगिल २०), २२), २५), ३०), ४०), ५०), डबल ३०), ३५), ४०), ४५), ५५), से लेकर १५०) तक। डबल रीड फ़ोल्डिंग ५५) से लेकर ३००) तक हैं।

सूचीपत्र पत्र लिखने से भेजा जायगा। आर्डर के साथ चौथाई क़ीमत पेशगी भेजकर पूरा पता और स्टेशन का नाम साफ़ लिखिए।

१७०/१३१ **पता—लकी फ़्लूट कंपनी,**

[illegible] नं० ३, रामचंद घोस लेन,

"हिना फ़्लूट" पो० वीडन, स्कायर कलकत्ता।

१—अनुपम "शर्मा-संतति तैल" !

महासुगंधित !!

नवकुसुमों की आ रही सुगंध जहाँ है ।
अवनीतल पर ही सचमुच स्वर्ग वहाँ है ॥
रंग-विरंगे पुष्प, और द्रुमलता सुसोहत ।
शीतल मंद सुगंध, वायु सुर नर मुनि मोहत ॥
पावन भारत-भूमि, अवनितर छटा निराली ।
सृज्यो कुशलता-युक्त, जाहि चतुरानन माली ॥
सुंदर फूल गुलाब, सकल फूलन को राजा ।
ताकी मधुर सुगंध तैल दै रसिकन काजा ॥
निरम्यो युक्ति विचार, दियो रँग रूप अनूपम ।
देखहिं अजब बहार सकल नर-नारि सुहृत्तम ॥

जिन सज्जनों ने हमारे जगत्-प्रसिद्ध "हिमकल्याण तैल" की अनुपम छटा देखी है, उनसे हमें इस तत्काल फल-दायक "शर्मा-संतति तैल" के विषय में कुछ बताने की आवश्यकता नहीं है ; किंतु जिन्होंने आज तक हमारे कारख़ाने का नाम नहीं सुना, और हमारे यहाँ से कोई औषधि नहीं मँगाया, उनसे हमारा सादर निवेदन है कि एक बार हमारे जगत्-प्रसिद्ध "हिमकल्याण तैल" और "शर्मा-संतति तैल" के गुणों की परीक्षा करके अवश्य लाभ उठावें । दोनों तैल गुणों में एक दूसरे से बढ़-चढ़कर हैं। मूल्य १) शीशी । "हिमकल्याण तैल" का भी विज्ञापन इसी पत्रिका में है अवलोकन कीजिए ।

२—महाशक्तिवर्द्धक चूर्ण !

ताक़त की अपूर्व
महौषधि !

निर्बलता शब्द के कहने से जिन-जिन ख़राबियों का बोध होता है, उन सबको दूर करके यह चूर्ण तत्काल बुड्ढे को जवान और मर्द को पहलवान बनाता है । स्त्रियों के लिये भी अत्यंत लाभ-दायक है । मूल्य ६० ख़ुराक के डिब्बे का २) मात्र !

३—सर्वोत्कृष्ट दंत-मंजन

इस अनोखे मंजन में हिलते हुए दाँतों को वज्र की तरह दृढ़ करने का पूर्ण सामर्थ्य विद्यमान है । दाँतों का दर्द, मसूढ़ों का फूलना और ख़ून निकलना तत्काल बंद करता है । दाम ।)

४—फ़ीवर मिक्श्चर

नित्य-ज्वर, एकांतरा, तिजारी, चौथिया, जाड़ा देकर आनेवाला बुख़ार तथा मलेरिया और तिल्ली पर जादू की तरह काम देनेवाला और तत्काल फल-दायक है । दाम १२ ख़ुराक की शीशी का १) मात्र ।

क़द्रदान सज्जनों के लिये ख़ास रिआयत

अध्यापकों, छात्रों, पोस्टमास्टरों और माधुरी के ग्राहकों को उपरोक्त औषधियाँ पौने दाम पर भेजी जायँगी। कम-से-कम १०) का वी० पी० तथा कुल दाम पेशगी भेजकर रेल-द्वारा मँगाने से रेल-महसूल भी माफ़ रहेगा ।

मिलने का पता—

राजा-महाराजाओं से स्वर्ण-पदक और प्रशंसा-पत्र पाए हुए

पं० गदाधरप्रसाद शर्मा राजवैद्य, हिमकल्याण बिल्डिंग्स, इलाहाबाद ।

कम क़ीमत देखकर कहीं ललचा न जाना

अपने कारख़ाने में अच्छे कारीगरों के हाथ से तैयार किए जाने के कारण हम लोगों के हारमोनियम खूब सुंदर, मज़बूत और सस्ते होते हैं।

चौथाई मूल्य के साथ आज ही आर्डर भेजिए।

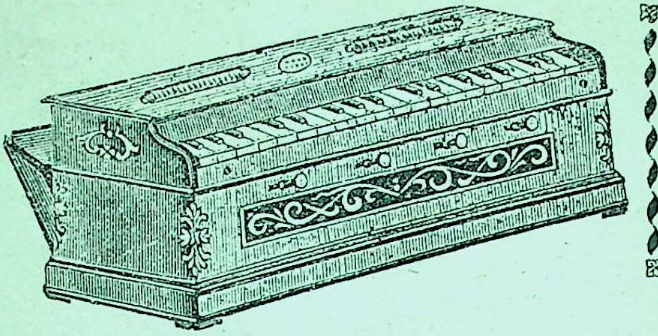

जितना गुड़ घोलोगे उतना ही शरबत मीठा होगा।

—:०:—

अमेरिकन और जर्मन रीड होने से स्वर अत्यंत मीठा है।
तीन सप्तक, एक सेट रीड, बक्स सहित २५) रु०, ३०)।
दो सप्तक, दो सेट रीड, बक्स सहित ३५) रु०, ४०)।

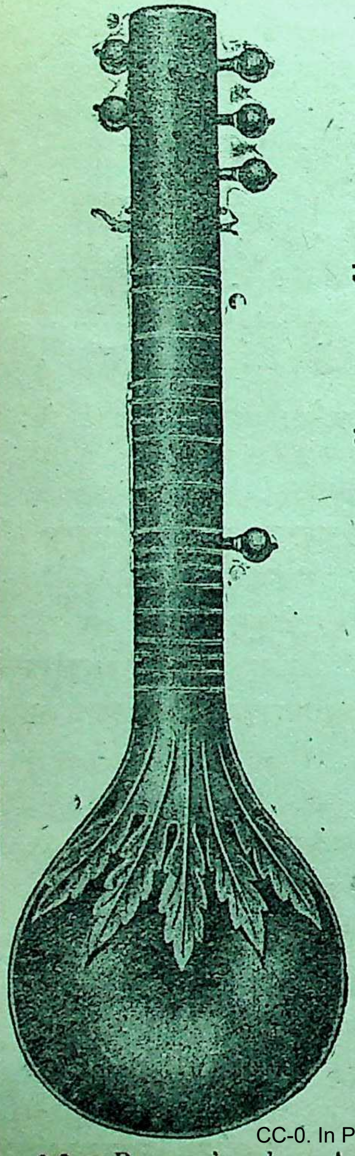

"सितार और इसराज"

सितार चार फ़ीट लंबा, सात तार, सोलह परदा १५)

स्पेशल, बढ़िया कारीगरों द्वारा, बढ़िया सेटिंग १२) से ४०) तक

इनके अलावा हमारे यहाँ बाँसुरी, तबला, डुग्गा, रीड, सितार के तार आदि बाजे के मुतअल्लिक़ जितनी चीज़ें हैं सब सस्ते दामों में मिलती हैं।

मिलने का पता—

नेशनल हारमोनियम एंड को०
१०-३ लोअर चितपुर रोड,
कलकत्ता

Telegrams,
"MUSICIANS"

सूचीपत्र लिखने से भेजा जाता है।

१६० Barman's advg: Agency.
८७

ऐसी सस्ती घड़ियाँ आपको अन्य कहीं न मिलेंगी

नं० ५६४ चंद्रप्रभा जेबी घड़ी।

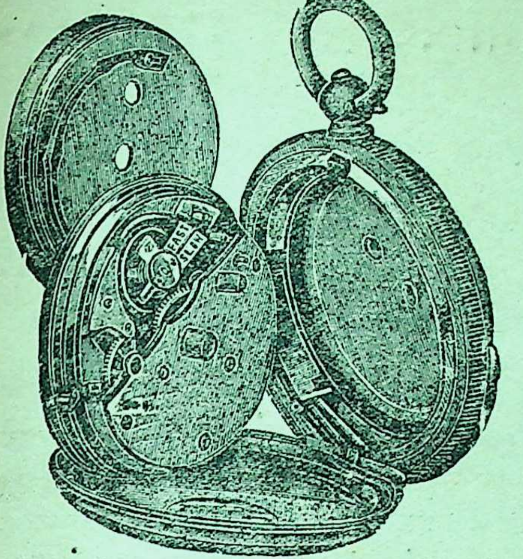

चाँदी से ज़्यादा चमकनेवाली चार ढकने की रुपए बराबर सुंदर नक़ाशीदार ऐसी शोभामयी घड़ी इस संसार में दूसरी नहीं। हाथ में रख लीजिए, ज्योति निकलेगी। जान पड़ेगा कि आसमान का सितारा चमक रहा है—कल-पुर्ज़े खूब मज़बूत हैं—अलग चाभी चार ढक्कन होने के कारण टूटने-फूटने और ख़राब होने का रत्ती-भर भी डर नहीं है—अगर आप घड़ी लगाने के सच्चे शौक़ीन हैं तो इसे ही मँगाइए। ५ वर्ष गारंटी दाम ८॥) रु० यही केमीकल सोने की दाम १२) डाक-ख़र्च ।≡) जुदा। गारंटी ४ वर्ष -) के स्टांप पर।

नं० १३३० आठ-रोज़ा पॉकेट वाच।

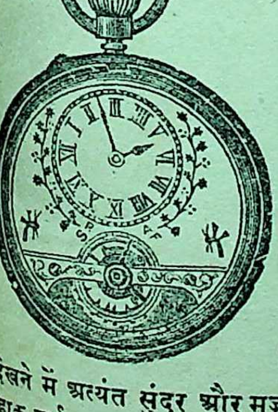

इस घड़ी में एक ही दिन चाभी दीजिए और आठ दिन तक बराबर टाइम लीजिए। घड़ी का चौथाई नीचे का हिस्सा खुला है जिससे सेकंड के पहिए का काँपना और लगातार थर्थराना अपूर्व खूबसूरती दिखाता है और ऊपरी जुयल बेल बूटेदार निहायत नफ़ीस और देखने में अत्यंत सुंदर और मज़बूत है। दाम १३) रुपया डाक-ख़र्च ।≡)

३ घड़ियाँ इकट्ठी ख़रीदने से ४ घड़ियाँ भेजी जायँगी

नं० १८१ रेडियम रिष्ट वाच।

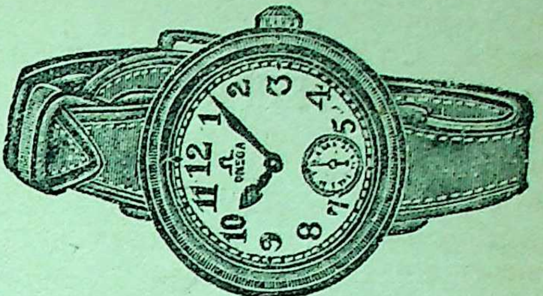

जो गुण घड़ी नं० ४६४ रेडियम पॉकेट वाच में है ठीक वही गुण इसमें है। यदि फ़र्क़ है तो सिर्फ़ दो बात का। एक तो हाथ पर बाँधने का, दूसरे असली चाँदी की है। दाम १०), निकिल चाँदी की ८॥), घटिया ६॥) डाक-ख़र्च ।≡) जुदा। गारंटी ३ वर्ष -) के स्टांप पर।

नं० ७१०३ सुनहली रिष्ट वाच।

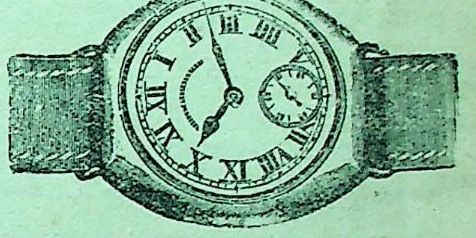

कलाई पर बाँधने की यह बढ़िया घड़ी रईस ताल्लुक़ेदार बड़े आदमियों के लायक़ बनवाई गई है जो सब सोने की-सी चमकदार, सोने को मात करनेवाली, निहायत सोफ़ियाना ढंग की है, जो एक बार ख़रीदेगा सो १०० बार मँगावेगा। दाम ५ वर्ष गा० सहित १०)

नं० ४६४ रेडियम पॉकेट वाच।

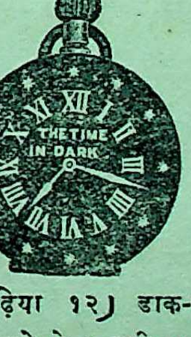

गारंटी ३॥ वर्ष -) स्टांप पर इस घड़ी के १२ अंकों और सेकिंड की सुइयों पर रेडियम लगा है इसलिये अंधकार के समय अक्षरों में से आप-ही-आप ज्योति निकलती है जिससे समय साफ़ दिखाई पड़ता है। दाम ७) बढ़िया १२) डाक-ख़र्च १ से ३ तक ॥) ३ घड़ी मँगाने से १ घड़ी मुफ़्त।

ऊपर छपी सब तरह की घड़ियों के
मिलने का पूरा पता

जे० डी० पुरोहित एंड सन्स, पोस्ट बक्स नं० २८८, कलकत्ता।

क़लम, पेनसिल और मोहर

या

जेब का साथी

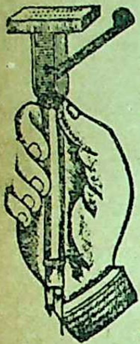

इसी को कोई जादू की क़लम या आप ही लिखनेवाली क़लम कहते हैं। यह देखने में ख़ालिस चाँदी की भाँति मालूम पड़ती है—जब इसे बंद कर दिया जाता है तब रबर की मोहर स्याही की गद्दी से सट जाती है और ज़रा-सा खटका दबाते ही स्याही समेत आपके नाम और पते की मोहर तैयार निकल आती है सिर्फ़ छापने की देर रहती है।

यह मुसाफ़िरों के लिये बहुत ज़रूरी चीज़ है।

मूल्य २॥) मात्र महसूल माफ़, चौथाई मूल्य पेशगी।

"अँगरेज़ी सूचीपत्र मुफ़्त
एजेंटों को कमीशन।"

मेमो पैड

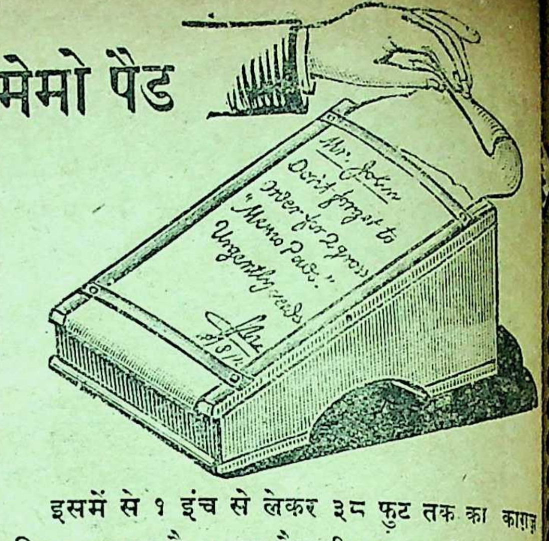

इसमें से १ इंच से लेकर ३८ फुट तक का काग़ज़ निकल सकता है। यह पैड टीक नाम की लकड़ी का बना है। इसके साथ १ ब्लॉटिंग पैड भी रहता है। इसके ऊपर से नीचे तक चमकीले पीतल की पत्ती किनारे-किनारे मढ़ी हुई है जिससे यह ख़ूबसूरत तो मालूम ही होती है; साथ ही वह काग़ज़ को दबाए भी रहती है और आवश्यकतानुसार निकाले हुए काग़ज़ को काट भी देता है।

अलग ३ बंडल काग़ज़ का मूल्य ।≈) मात्र।

मूल्य १।) मात्र
महसूल अलग

१७२/१५१ **पता—अग्रवाल ट्रेडिंग को०—पो० हेस्टिंग्स, कलकत्ता।**

धातु-क्षीणता और नामर्दी की एक-मात्र दवाई

१४/६६

मदन मंजरी

यह दवाई ३० वर्ष से दुनिया-भर में नाम पा रही है। यह पेशाब में, स्वप्न में और दूसरे कोई भी मार्ग से जानेवाली धातु को रोककर धातु को गाढ़ा व ज़्यादा करके वृद्ध और नामर्द को भी नई जवानी देती है। मूल्य ४० गोलियों का १) रु०, ६ डिब्बी ५) रु० और १२ डिब्बी ६) रु० पो० अलग।

राजवैद्य नारायणजी केशवजी, नं० १७१, हरीसन रोड, बड़ाबाज़ार, कलकत्ता

हिंदी-प्रेमियों के लिये अचूक अवसर

देवानुष्ठानी एकादशी तक और अपूर्व लाभ उठाइए

५) की चुनी हुई उत्तम पुस्तकें ४) में लीजिए

(१)	सेवा-धर्म	१॥)
	अमेरिका-दिग्दर्शन	१)
	गांधी-दर्शन	१)
	विवाह-कुसुम	१॥)
(२)	प्रेम-पुष्पांजलि	१।)
	साहसी सुंदरी	१।॥)
	राज्य-संबंधी सिद्धांत	१।॥)
	प्रायश्चित्त	।)
(३)	सेवा-धर्म	१॥)
	भारत-गौरव	१॥)
	पैशाचिक कांड	२)
(४)	चंद्रशेखर	२)
	खरा सोना	१)
	प्रेम-पुष्पांजलि	१।)
	असहयोग का इतिहास	।॥)
(५)	सेवा-धर्म	१॥)
	संसार (उपन्यास)	१)
	कुल-कमला	।॥=)
	सीता-वनवास	॥=)
	अमेरिका-दिग्दर्शन	१)
(६)	प्रेम-पुष्पांजलि	१।)
	प्रेमकांत	१।॥=)
	वनिता-विनोद	॥=)
	जीवन-ज्योति	१।)
(७)	सेवा-धर्म	१॥)
	वीर-पुष्पांजलि	।)
	होमर गाथा	१)
	सिद्धार्थ कुमार	१।)
	उमा (उपन्यास)	१)
(८)	प्रेम-पुष्पांजलि	१।)
	राष्ट्रीय-तरंग	।-)
	इंदुमती	३॥)
(९)	विलासकुमारी	१॥)
	सेवा-धर्म	१॥)
	पार्वती	२)
(१०)	राष्ट्रिय-तरंग	।-)
	भगवान्-बुद्ध	१।)
	वंकिमचंद्र	१≡)
	गीता-सत्ययोग	१।)
	महाराष्ट्र-वीर	१)
(११)	क़ैदी की करामात	१॥)
	वीर अभिमन्यु	।॥)
	गोलमाल	१=)
	अमर	१॥=)
(१२)	टापू की रानी	१।॥)
	उपन्यास-कुसुम	१।)
	क़िले की रानी	।॥)
	प्रेम-पुष्पांजलि	१।)
(१३)	कृष्णकुमारी	१)
	तरंग	॥=)
	कलंकिनी	।॥=)
	भारत-दर्शन	२॥)
(१४)	वनदेवी	।॥)
	लेखन-कला	।॥)
	राज्य-संबंधी सिद्धांत	१।॥)
	वंग विजेता	१।॥)
(१५)	वक्तृत्व-कला	१।)
	मेजनी	।॥)
	राष्ट्रीय संदेश	।≈)
	कर्णविध्वंस नाटक	॥=)
	पंजाब-हरण	२)
(१६)	पंजाब हत्याकांड	।॥≡)
	राष्ट्रीय-तरंग	।-)
	सेवा-धर्म	१॥)
	जीवन-ज्योति	१।)
	खरा सोना	१)
(१७)	शशिबाला	।॥)
	पृथ्वीराज	१।)
	तरंगिणी	१।)
	प्रेम-पुष्पांजलि	१।)
	सप्त-सरोज	।।)
(१८)	सेवा-धर्म	१॥)
	मनुष्य के अधिकार	॥)
	वीर-विनोद (काव्य)	२)
	बलिदान	१)
(१९)	लवकुश	१।॥)
	संसार-व्यापी असहयोग	॥=)
	सत्य निबंधावली	॥)
	सफल-गृहस्थ	।॥)
	प्रेम-पुष्पांजलि	१।)
	जापानी कुश्ती	=)
(२०)	महाराणा प्रतापसिंह	१।)
	महाराष्ट्र-वीर	१)
	सेवा-धर्म	१॥)
	भीष्म	॥)
	ज़बरदस्त की लाठी	॥)
	अनुताप	।)
(२१)	प्रेम-पुष्पांजलि	१।)
	सत्य-वीर	१॥)
	वीर-पत्नी	।-)
	वीर-बालिका	॥)
	ग्रीस का इतिहास	१=)
	रसाल-वन	।-)
(२२)	सती-विपुला	२।)
	आयर्लैंड की राज्यक्रांति	।-)
	देवी-द्रौपदी	।≈)
	कंसविध्वंस नाटक	॥-)
	सेवा-धर्म	१॥)
(२३)	शकुंतला नाटक	१।)
	संसार	१)
	वेदांत रामायण	२॥)

सूचना—पाँच-पाँच रुपए का गुच्छ अलग-अलग छाँट दिया है । प्रत्येक गुच्छ के ग्राहक को १) रियायत और डाक-ख़र्च आदि ग्राहक के ज़िम्मे होगा ।

पता—अनंतकुमार जैन, वीर-मंदिर, आरा (ARRAH. E. I. R.)

स्वदेशी प्रदर्शनी से प्रथम श्रेणी का

प्रशंसा-पत्र-प्राप्त

कोसा-रेशम के वस्त्र

आजकल अनेक पत्र हमारे यहाँ इस विषय के भी आ रहे हैं कि "हमने अमुक स्थान से वस्त्र मँगाए परंतु वे ठीक न निकले। इस कारण प्रथम बार परीक्षार्थ छोटा आर्डर आपको देते हैं।" ऐसे सज्जनों को हम विश्वास दिलाते हैं कि हमारे यहाँ पुश्त-दर-पुश्त से कोसा-सिल्क का ही व्यापार होता चला आ रहा है। वस्त्र भारत के बड़े-बड़े नगरों, गाँवों तथा भारत के बाहर भी ब्रिटिश गायना, मिसोपोटामिया आदि को थोक आर्डरों में जाया करते हैं। स्वदेशी स्टोर, सिल्क-भंडार इत्यादि जितने हैं वे हमारे यहाँ से ही सब माल मँगाते हैं, परंतु हमारे वस्त्रों की शिकायत हमें कभी नहीं मिली। मिले कैसे, हर चीज़ बढ़िया किफ़ायत के साथ भेजी जाती है।

वस्त्रों में कोट, पैंट, शेरवानी इत्यादि के योग्य सुंदर-सुंदर कोरे थान तथा मलमल, साफ़ा, चादर, अँगोछा, धोती, साड़ी, रूमाल इत्यादि भी रहते हैं। एक बार परीक्षा प्रार्थनीय है।

पत्र-व्यवहार का पता:—

मेसर्स शंकरप्रसाद लक्ष्मीप्रसाद दुबे
(स्वदेशी कोसा-सिल्क स्टोर)
बिलासपुर सी० पी०

४६
१७३

भयानक गोहत्या

से ग़ारत हुए "भारत" के आर्थिक, धार्मिक और नैतिक जीवन के पतन का चित्र खींचनेवाला तथा स्वदेश से गोवध बंद करा देने का सच्चा मार्ग दिखलानेवाला

भारत-गोहितैषी मासिक पत्र

देहली से हिंदी-भाषा में प्रकाशित हो रहा है। हिंदी, मराठी, गुजराती तथा उर्दू, समाचार-पत्रों ने मुक्तकंठ से इसकी प्रशंसा करते हुए कहा है कि इस नवयुग में इसका जन्म लेना शुभ-सूचक है। वार्षिक मूल्य ४) मात्र रक्खा गया है। इसमें भारत के प्रसिद्ध लेखकों के लेख और सामयिक समाचार तथा टिप्पणियाँ आदि रहती हैं। देश के सच्चे शुभचिंतकों और गोभक्तों से अनुरोध है कि वे स्वयम् तथा इष्ट-मित्रों सहित ग्राहक-श्रेणी में शीघ्र ही नाम लिखाकर इसे चिरस्थायी बनाने की कृपा करें।

मैनेजर,
भारत-गोहितैषी कार्यालय, दिल्ली।

स्वदेशी इत्र, तैल, तंबाकू

हमारे यहाँ इत्र, तैल, खाने की मुश्की तंबाकू, इत्रदान, शीशियाँ, गुलक़न्द, अर्क आदि उत्तम तथा कम मूल्य पर मिलते हैं।

इत्र संदली—गुलाब, केवड़ा, हिना, मुश्क, मोतिया, ख़स, पानड़ी, चंपा, चमेली, जुही, मौलश्री आदि, १) १॥) ३) ४) ५) ८) १०) प्रति तोला।

सुगंधित तैल–बेला, चमेली, गुलरोग़न, मसाला २) ३) ४) ५) ८) प्रति सेर।

मुश्की तंबाकू–ज़र्दा (पत्ती) १) १॥) २) ३) ४) सेर। दाना ३) ४) ५) ८) १०) सेर। गोली ८) १०) १२) १६) सेर

नमूने का बक्स–यह बहुत ही सुंदर और जेब में रखने योग्य है। इसमें ६ इत्र बहुत ही सुंदर शीशियों में है। मूल्य ३) प्रति बक्स। बड़ा सूचीपत्र मुफ़्त मँगाइए।

इत्र के कारबार से संबंध रखनेवाले या दश सज्जनों के पते लिखने पर एक अति सुगंधित इत्र की शीशी बिना मूल्य सेवा में रवाना की जावेगी।

स्टैंडर्ड सुगंध-कार्यालय,
मालिक पं० लक्ष्मीनारायण स्वरूपनारायण
अवस्थी, मकरंदनगर, क़न्नौज सिटी।

भारतवर्ष में भारतीय सुगंधित द्रव्यों का सबसे बड़ा कारख़ाना।

इस कारख़ाने के बने हुए हर प्रकार के इत्र, फुलेल, अर्क़, शर्बत, गुलक़ंद, मुरब्बे आदि सुगंधित सामान सफ़ाई और उत्तमता में अपनी समता नहीं रखते और अत्यंत उचित मूल्य पर विक्री होते हैं। परीक्षा प्रार्थनीय है।

इत्र—अनेक रोग-नाशक, स्वच्छ और शुद्ध, मलयागिरि चंदन के संदल पर बने हुए सुगंधि से चित्त प्रसन्न करनेवाले इत्र-गुलाब, केवड़ा, मुश्क-हिना, चमेली, जूही प्रति तोला १),२),४),५),१०),१५) और २०) इत्र-मोतिया, गुलहिना, चंपा, मौलश्री, हरसिंगार प्रति तोला १),२),३),४) और ५) रूह-गुलाब असली, नंबर अव्वल, प्रति तोला ६०) रूह-ख़स फ़ी तोला २),४),६) और १०)

फुलेल—चमेली, बेला, गुलाब, केवड़ा फ़ी सेर २),४),५),८),१२) और १६)

अर्क़—गुलाब-जल व केवड़ा-जल प्रति आधपाव की शीशी ॥), ॥।), १) और २)

सुगंधित तंबाकू—पान में खाने का फ़ी सेर २),४),८),१२),१६) पीने का सुगंधित ख़मीरा तंबाकू फ़ी सेर १),२),४),५) और ८)

"हिमसागर तैल" और उसका सार्टिफ़िकेट।

यह महासुगंधित सर्वोत्कृष्ट केशतैल विशुद्ध तिल के तैल पर मस्तिष्क और केश को तुरंत फ़ायदा पहुँचानेवाले शास्त्रोक्त उपादानों से प्रस्तुत किया गया है। इसकी सुगंधि अत्यंत मनोहर और चित्ताकर्षक होने के साथ ही बहुत टिकाऊ है। इसके व्यवहार से संपूर्ण शिरोरोग दूर होते तथा दिमाग़ पुष्ट और तरोताज़ा रहता है। आँखों की रोशनी स्थिर रहती और बढ़ती है। बाल काले और मुलायम रहते हैं। बाज़ार में ऐसा तैल इस मूल्य में मिलना दुर्लभ है। मूल्य ३ औंस की शीशी का केवल ॥) एक दर्जन का मूल्य ५)

THE INDIAN INDUSTRIAL EXHIBITION,

KARACHI, 1922.

This is to certify that Messrs. Thakur Prasad Sheo Prasad of Kanauj have been awarded this Testimonial of Merits for "Himsagar Hair Oil" at the above Exhibition.

३६
२४२

पता—ठाकुरप्रसाद शिवप्रसाद, कारख़ाना इत्र, क़न्नौज

हिन्दी संसारके दो उज्ज्वल रत्न

समस्त धर्म-सम्प्रदाय— आचार्यों की जीवनी—

भारत का धार्मिक इतिहास

हिन्दी साहित्यमें जिस ग्रंथका अबतक अभाव था वह दूर हो गया। हिन्दी पाठकोंको अभीतक उनके आचार्य्यों की जीवनी और उनके सम्प्रदाय और धर्मका तत्व कुछ भी मालूम नहीं था, इस अन्धकारको दूर करनेके लिये भारतका धार्मिक इतिहास प्रकाश स्वरूप हिन्दी पाठकोंके सम्मुख मौजूद है। भारतमें वैदिक कालके समयसे हमारी धार्मिक स्थिति कैसी थी, धर्म्मका रूप किस किस समय कैसा पलटता गया, स्मृतिकालमें आकर उसकी कैसी दशा हुई, देश तथा जनतापर उसका कैसा प्रभाव पहुंचा, कितने मत-मतान्तर उत्पन्न होते गये। इन बातोंपर इस ग्रन्थमें खूब विचार किया गया है। साथ ही, बुद्धकाल, जैन धर्म, शाक्त-सम्प्रदाय, चोली पंथी, वाममार्गी, मातापंथी, अघोरी, वैष्णव-सम्प्रदाय, दत्तात्रेय पंथ, यहूदी धर्म, पाशुपत मार्ग, रसेश्वर मार्ग, जरथोस्ती धर्म्म, केवलाद्वैत, लिंगायत अथवा वीरशैव सम्प्रदाय, इस्लाम धर्म्म, निम्बार्क सम्प्रदाय, विशिष्टाद्वैत अर्थात् श्रीसम्प्रदाय, आनन्द सम्प्रदाय, पूर्ण-ब्रह्म सम्प्रदाय, चैतन्य सम्प्रदाय, कबीर पंथ, पीराना पंथ, सिक्ख सम्प्रदाय, शुद्धाद्वैत या पुष्टि मार्ग, (बल्लभाचार्य-सम्प्रदाय) रामानन्द सम्प्रदाय, क्रिश्चियन धर्म्म, इलाही मत, खीजड़ा पंथ, उद्धवि सम्प्रदाय, राधास्वामी सम्प्रदाय, प्रचूर्ण धर्म-पंथ, ब्रह्म-समाज, आर्य समाज, थियोसोफिकल सोसाइटी प्रभृति भारतके सभी मत-मतान्तरों (सम्प्रदायों) का वर्णन खूब ही सरल भाषामें समझाया गया है, साथ ही सभी आचार्यों की जीवनी और उनके चित्र भी दे दिये गये हैं, सबसे बड़ी विशेषता तो यह हैं कि सभी सम्प्रदायका धर्म्म और उनके सिद्धान्त किस जगहपर किस सम्प्रदायके लोग अधिक हैं, इत्यादि खूब ही विस्तारके साथ लिखा गया है। हम जोर देकर कह सकते हैं, कि ऐसी उपयोगी पुस्तक आजतक नहीं छपी, क्योंकि इस पुस्तकको पढ़नेसे पाठकगण सभी सम्प्रदायोंका हाल जान सकते हैं। साथ ही यह पुस्तक हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, क्रिश्चियन इत्यादि सभीकी उपयोगी हैं। इसीलिये कहते हैं, कि आप और कार्य छोड़कर सबसे पहले इस पुस्तकको पढ़िये और अपने मित्रोंको पढ़ाइये। मूल्य ३) रेशमी जिल्द ३॥) रुपया।

२७ चित्रों सहित— ७३ अध्यायोंमें सम्पूर्ण—

श्रीकृष्ण

श्रीकृष्ण-जीवन आदर्शकी खान, कर्म्मयोगका उपदेशक, कर्म्म धर्म्मकी शिक्षाका भण्डार, धर्मका पूर्णतत्व समझानेवाला, ज्ञान गरिमाको बढ़ानेवाला और भव—सागरकी भयपूर्ण तरङ्गोंसे बचानेवाला है। इसीलिये बड़ी ही सरल, सुन्द और सुबोध भाषामें यह पुस्तक, बड़ी सजधजसे प्रकाशित की गयी है। इसमें श्रीकृष्णके जीवनकी समस्त घटनायें, बकासुर, अघ, कालियनाग, प्रभृति दुर्दान्त दानवोंके दलनकी सम्पूर्ण कथायें, व्रजमण्डलके प्रेम-धारा प्रवाहकी समस्त लीलायें, महाभारतके समयके उनके समस्त राजनीतिपूर्ण कार्य, गीताका मोहनाशक महोपदेश प्रभृति सभी बातें विशद रूपसे लिखी गयी हैं। साथ ही श्रीकृष्ण जीवनपर अन्यान्य विचारवान और विद्वानोंने जो कुछ सम्मति दी है, वह भी इसमें सम्मिलित कर दी गयी है। इस लिये हम जोर देकर कह सकते हैं, कि भारतीय किसी भाषामें इस जोड़का ग्रन्थ नहीं है। २७ चित्रोंसे सुशोभित बेजिल्द पुस्तकका मूल्य ४॥) श्रीकृष्ण मूर्त्तिसे सुशोभित दर्शनीय सुनहरी रेशमी जिल्दका ५।) सचित्र बड़ा सूचीपत्र मुफ्त।

पता—आर॰ डी॰ बाहिती एण्ड कम्पनी, नं० ४, चोरबगान, कलकत्ता।

गवर्नमेंट से रजिस्ट्री की हुई

काम-चैतन्य

अपूर्व ताक़त की दवा

इसके सेवन से बीसों प्रकार के प्रमेह, स्वप्न-दोष, वीर्य का पानी के समान पतला होना, मूत्र के आगे या पीछे वीर्यबिंदु का टपकना, धातु-क्षीणता, पाख़ाने के समय वीर्य निकलना, नपुंसकता, लाल-पीला-गर्म पेशाब होना, प्रसंग की सामर्थ्य न रहना, नसों की कमज़ोरी, शरीर की दुर्बलता आदि रोग तत्काल नाश होते हैं। जो मनुष्य थोड़ी अवस्था के कुकर्मों से या ज़्यादा स्त्री-प्रसंग में फँसकर अपने बल-वीर्य को नाश कर बैठे हैं, उनके वास्ते एक "काम-चैतन्य" ही अमृत की बूँद है।

इसके उपरांत कमज़ोरी के कुल रोगों का नाश होकर शरीर में बल और आँखों में रोशनी बढ़ती है। चाहे जैसा कमज़ोर मनुष्य क्यों न हो, इस 'काम-चैतन्य' के सेवन से अति बलवान् और शक्तिमान् हो जाता है। चेहरे पर रौनक़ लाती है, मनुष्य को नए जीवन का मज़ा दिखाती है। अधिक कहाँ तक लिखें, जिन्होंने इसका सेवन किया है, वही ख़ूब जानते हैं। मूल्य २१ ख़ुराक की डिब्बी का २) डाक-ख़र्च।-)

बच्चों को हृष्ट-पुष्ट-बलवान् तथा नीरोग रखने के लिये

सरकार से रजिस्ट्री की हुई

बाल-संजीवन घुट्टी

बच्चों के समस्त रोगों की प्रसिद्ध दवा एक "बाल-संजीवन घुट्टी" है, जिसको वैद्यक-शास्त्र के अनुसार शर्बत रूप में मीठी और स्वादिष्ट बनाई है, जिसको छोटे-छोटे और बड़े बच्चे प्रसन्नता-पूर्वक ख़ुशी-ख़ुशी पी लेते हैं। इसको हर चौथे दिन हमेशा पिलाने से बच्चा हमेशा मोटा-ताज़ा, बलवान् तथा नीरोग बना रहता है, और कोई रोग पास तक नहीं आता। रोगी बालक का ज्वर, खाँसी, हरारत, सर्दी, अजीर्ण, दस्त, ऐंठा, मरोरा, दूध डालना, पेट फूलना, हरे-पीले तथा ख़ून के दस्त होना, पसली चलना, दस्त में क्रिमि पड़ जाना, हिचकी, दाँत निकलते समय की तकलीफ़ें, शरीर की कमज़ोरी आदि की रामबाण दवा है। भूत, प्रेत, मसान आदि का कदापि असर नहीं होने पाता। मूल्य।-) शीशी। डाक-ख़र्च १ से ४ शीशी तक।-) एक दर्जन शीशी का मूल्य ३) डाक-ख़र्च ॥)

प्रत्येक गाँव तथा शहरों में एजेंटों की ज़रूरत

एजेंटों के नियम

हमारी "बाल-संजीवन" घुट्टी बहुत गुणकारी और बिकनेवाली चीज़ है। बहुतेरे एजेंट इसी को बेचकर अपनी गृहस्थी का निर्वाह करते हैं।

तीन दर्जन का ख़रीदार एजेंट बन सका है। मूल्य तीन दर्जन का ७॥) डाक-ख़र्च अलग। एजेंट के नाम के रंगीन इश्तिहार तथा साइन-बोर्ड पारसल के साथ भेजे जाते हैं।

अनूठी और अद्भुत ऐयारियों से भरा हुआ

कृष्णकांता-उपन्यास

जिसमें दिल गुरदे ऐयारों की विलायती और देशी तर्ज़ की अनूठी ऐयारियाँ, मक्कारों और बदमाशों की दिल दहलानेवाली मक्कारियाँ, वीरत्व और बहादुरी, राज्य और धर्म-नीति, मनचले लोगों की हँसी-मज़ाक़, आशिक़ों की बेचैनी, माशूक़ों के चोचले, तिलिस्म की विचित्र घटनाएँ, नए-नए तर्ज़ के क़ुदरती नज़्ज़ारे, भीषण और रोमांच दिलानेवाले हत्या-कांड, शिक्षा और महत्त्व-पूर्ण विकट रहस्य, राज्य-परिवर्तन आदि अनेक बातें सरल, सरस और मनोरंजक भाषा में लिखी हैं। उपन्यास को कहीं से पढ़िए तबियत फड़क उठेगी। मूल्य आठ भागों का ४) एक भाग का ॥)

कृष्णकांतासंतति—इसके भी आठ भाग छपकर तैयार हैं। मूल्य ८ भाग का ४) एक भाग का ॥)

हिंदी-उर्दू-शिक्षक—हिंदी-पढ़ों को उर्दू सिखानेवाली अमूल्य पुस्तक। मूल्य ॥)

इँगलिश टीचर—हिंदी-पढ़ों को अँगरेज़ी सिखानेवाली पुस्तक। केवल इसको ही पढ़कर तार, पत्र-व्यवहार, निवेदन-पत्र, निबंध, बोल-चाल आदि सब कुछ बिना किसी की सहायता के आ सकता है। मूल्य १)

हारमोनियम टीचर—हारमोनियम सिखाने की अद्भुत पुस्तक। मूल्य ॥)

साबुनसाज़ी—इसमें देशी व विलायती ठंडे व गर्म हर प्रकार के साबुन तथा बाल उड़ाने का साबुन बनाने की सरल विधि लिखी है। मूल्य १)

सच्चा जादू—इसमें सैकड़ों प्रकार के जादू के खेल तथा ताशों के खेल सिखाने व बनाने की तरकीब लिखी हैं, जिनको देखकर लोग हैरान हो जाते हैं। मूल्य जिल्द बँधी का १)

तेज़ी-मंदी—इसमें आयंदा माल की तेज़ी-मंदी का हाल वर्णन है। मूल्य ॥)

ख़ज़ाना रोज़गार—बस इसके नाम से ही ज़ाहिर है। सैकड़ों प्रकार के अद्भुत और सच्चे हुनर सिखाने की अमूल्य पुस्तक। मूल्य १)

पता—बाबू गंगाप्रसाद गुप्त, टी० पी० कंपनी, नं० ४८, अलीगढ़ सिटी

डाक्टर एस० के० बर्मन की बनाई ४० वर्ष की परीक्षित

जूड़ी, बुख़ार व तिल्ली की दवा।

आजकल सैकड़ों प्रकार की फ़सली बुख़ार की पेटेंट दवाएँ बिकती हैं, किंतु अधिकांश में किनाइन के सिवा और कुछ नहीं है। ऐसी दवाओं से बुख़ार दब जाता है; और उसकी जड़ और भी मज़बूत हो जाती है। हमारी जूड़ी, बुख़ार व तिल्ली की दवा सब प्रकार के जूड़ी, पारी बुख़ार, इकतरा, तिजारी, चौथिया इत्यादि को जड़ से अच्छा करने का दावा रखती है। इसकी २-४ खुराक में ही बुख़ार का आना बंद हो जाता है। कुछ दिन सेवन करने से रक्त गाढ़ा होकर शरीर पुष्ट हो जाता है। बुख़ार की प्रचलित अन्य सब दवाओं से यह श्रेष्ठ प्रमाणित हुई है। हिंदुस्तान-भर में हमारे दस हज़ार एजेंटों द्वारा लाखों व्यक्ति इससे लाभ उठाते हैं। मूल्य छोटी शीशी ॥=) दस आने। बड़ी १) एक रु० महसूल ।=) व ॥) आठ आने।

पुराने मलेरिया बुख़ार की गोलियाँ

वास्तव में जहाँ बार-बार किनाइन मिली हुई दवाएँ खाने पर भी बुख़ार नहीं छोड़ता। जाड़े का बुख़ार पुराना पड़ जाने पर पारी से न आकर दिन-रात थोड़ा बहुत बना रहता है, पिलही तथा यकृत बढ़ जाने से पेट निकल आता है, मुँह व पैरों में सूजन हो जाती है। हमारी दवा इस पर शर्तिया फ़ायदा करती है। मूल्य २४ गोलियों की डिबिया ॥=) दस आने महसूल ।=)

किनाइन की गोलियाँ

बच्चों को कड़वी गोली खाने में बड़ा कष्ट होता था। अब नई प्रणाली से मीठी गोलियाँ २ व ४ ग्रेन की बनाई हैं। इसका सेवन करें तो न वज़न की दरकार है, न खाने में क्लेश है। मूल्य फ़ी शीशी २५ गोली, ५० गोली, १०० गोली का

२ ग्रेन की गोली ॥।), बा० आ० १।=) २।-) दो रु० पाँच आ०

४ ग्रेन की गोली १।), सवा रु० २।=) ४।=) चार रु० छ आने

☞ हमसे दवा मँगाने के पहले अपने स्थान के दूकानदार व दवाफ़रोशों के यहाँ तलाश कर लिया करें तो डाक-महसूल व समय दोनों ही की किफ़ायत होगी। दवाएँ सर्वत्र बिकती हैं।

नं० १७

डा: एस, के, बर्मन ५, ६, ताराचंद दत्त स्ट्रीट, कलकत्ता।

एजेंट—डाक्टर गंगाराम जैतिली, चौक, लखनऊ

हिंदी-संसार में स्त्रियों के लिये सर्वोत्तम पुस्तक

महिला-माला—मणि १

पत्रांजलि

देवी द्रौपदी ।=)

स्त्री स्वास्थ्य रक्षिका १)

दंपति-कर्तव्य-शास्त्र १।)

गृहिणी-चिकित्सा २॥)

इस पुस्तक में पति और पत्नी के परस्पर लिखे हुए पत्रों का संग्रह है । इसमें हँसी और कौतुक के साथ-साथ शिक्षा का मेल है । इसके पाठ से स्त्रियों को कई लाभ एकसाथ होते हैं । उन्हें पत्र लिखना आ जाता है, सदुपदेश मिलते हैं, और मनोरंजन भी खूब ही होता है । जिस ढंग से इसमें स्वामी ने स्त्री को पत्र लिखे हैं, उसका स्त्रियों के चरित्र-गठन पर बड़ा प्रभाव पड़ता है । इस पुस्तक को पढ़कर अनेक स्त्रियाँ सुधर गईं । अब तक हिंदी में जितनी स्त्री-उपयोगी पुस्तकें निकली हैं, उनमें यह पुस्तक बहुत ऊँचा आसन रखती है । इसीलिये इसका पहला संस्करण हाथों-हाथ बिक गया । अब दूसरा छपकर तैयार हुआ है । कवर पर माधुरी के सुप्रसिद्ध चित्रकार बाबू रामेश्वरप्रसाद वर्मा का बनाया हुआ तीन रंग का एक दर्शनीय चित्र भी है । छपाई साफ़ । काग़ज़ ऐंटिक, उम्दा । एक बार अपनी बहनों और बहुओं के हाथ में अवश्य दीजिए । मूल्य केवल ॥)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय, २६-३० अमीनाबाद पार्क

हिंदी-साहित्य के उपन्यास-जगत् का शृंगार

बहता हुआ फूल

[अनुवादक—माधुरी-संपादक पं० रूपनारायण पांडेय]

वंग-भाषा के लेखकों में श्रीयुत बाबू चारुचंद्र वंद्योपाध्याय का नाम खूब प्रसिद्ध है। आपने बँगला में कई उपन्यास लिखे हैं। यह उपन्यास उन्हीं के "स्रोतेर फूल" नाम के सर्वोत्तम, शिक्षाप्रद, नीति-गर्भित सामाजिक उपन्यास का हिंदी-अनुवाद है। अनुवाद सरल, सरल, सुबोध और साधारण बोल-चाल की भाषा में किया गया है, अतः सर्व-साधारण इसे विना कष्ट के समझ सकते हैं। चरित्र-चित्रण जिस सुंदरता के साथ किया गया है, उसे देखकर आप मुग्ध हुए विना नहीं रह सकेंगे। बँगला-मुहाविरों को शुद्ध हिंदी-भावों में परिणत करने में जो कमाल दिखलाया गया है, वह सोने में सुगंध का काम हो गया है। पुस्तक के अंदर शिक्षा कूट-कूटकर भरी है। उपन्यास इतना रोचक और उपदेशप्रद है कि एक बार हाथ में लेने पर, पुनः समाप्त किए विना छोड़ने को जी नहीं चाहता। पाठक, इसे पढ़ते-पढ़ते इसमें इस प्रकार डूब जायँगे कि खाना-पीना भी भूल जायँगे। यदि आपको उपन्यास पढ़ने का कुछ भी शौक़ हो, तो सब उपन्यास छोड़कर सबसे पहले इसे पढ़िए और अपनी गृहस्थी सोने की बनाइए। लगभग ४०० पृष्ठ के बड़े पोथे का मूल्य केवल २), और जिल्ददार २॥)

नंदन-निकुंज

[ले०-श्रीमान् चंडीप्रसाद बी०ए०]

इसमें ९ मौलिक, हृदय-ग्राही, सरस उच्च कोटि की मनोरंजक कहानियों का संग्रह है। कहानियों की कल्पना अद्भुत, चरित्र-चित्रण प्रभाव-शाली और भाषा कवित्व-पूर्ण है। हिंदी में मौलिक कहानियाँ लिखनेवाले जो दो-एक श्रेष्ठ, सिद्धहस्त लेखक हैं, उक्त लेखक उन्हीं में से हैं, पुस्तक एक बार उठाकर आदि से अंत तक पढ़े विना छोड़ने को जी नहीं चाहता। मूल्य सादी १।), और जिल्ददार १॥=)

मंजरी

[अनु०-पं० रूपनारायण पांडेय]

सुंदर, स्वाभाविक, रोचक, काव्य-मय, भाव-पूर्ण, सूक्ष्म चरित्र-चित्रण करनेवाली, शिक्षा-प्रद और उत्साह-वर्धक गल्पों का—महाकवि श्रीरवींद्रनाथ ठाकुर आदि लब्ध-प्रतिष्ठ गल्प-लेखकों की श्रेष्ठ, सरस और चमत्कार-पूर्ण गल्पों का संग्रह। इतनी अच्छी और उच्च कोटि की गल्पें आपने शायद ही कभी पढ़ी हों। इनको एक बार पढ़ने से आपको कभी तृप्ति नहीं मिलेगी—बार-बार पढ़ने को जी चाहता रहेगा। २० प्रतियाँ बची हैं; यह पुस्त हाथों-हाथ बिक गई। मूल्य

विशेष जानने के लिये हमारा बिलकुल नया, बड़ा सूचीपत्र डाक-ख़र्च के लिये -) का टिकट भेजकर मुफ़्त मँगाइए

हिंदुस्थान-भर की हिंदी-पुस्तकों के मिलने का एक-मात्र पता—

संचालक गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय, २९-३० अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

स्त्रियों के पढ़ने के लिये अद्वितीय पुस्तक

महिला-माला – मणि २

भारत की विदुषी नारियाँ

संतान पालन ―)॥

गृहिणी भूषण ॥)

स्त्री-सुबोधिनी २॥)

दंपति-कर्तव्य-शास्त्र १)

स्त्रियों के कोमल हृदय पर सती तथा पतिव्रता नारियों के जीवन-चरित्र पढ़ने से जो प्रभाव पड़ सकता है, वह अन्य पुस्तकों से नहीं हो सकता। इसी विचार से उपरोक्त पुस्तक का संग्रह किया गया है। इसमें वैदिक युग से लेकर वर्तमान युग तक की—उर्वशी, मैत्रेयी, गार्गी, देवहूति, मंदालसा, आत्रेयी, लीलावती, विद्या, विदुला, मीराबाई आदि-आदि कोई ५० उन पतिव्रता नारियों के जीवन-चरित्र लिखे गए हैं, जिनका परिचय पाकर स्त्रियाँ जातीय गौरव प्राप्त कर सकती हैं। शीघ्र यह ग्रंथ-रत्न मँगाकर अपनी कन्याओं, बहनों और देवियों को दीजिए। कवर पर माधुरी के सुप्रसिद्ध चित्रकार श्रीकाशिनाथ-गणेश खातू का बनाया हुआ तीन रंग का एक दर्शनीय चित्र भी है। छपाई साफ़, काग़ज़ ऐंटिक, उम्दा। मूल्य ॥)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय, २९-३० अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

ऐतिहासिक-जगत् में एक अमूल्य रत्न ! परीक्षार्थियों के लिये एक अपूर्व ग्रंथ !!

इँगलैंड का इतिहास

[लेखक—सुप्रसिद्ध हिंदी-लेखक प्रोफ़ेसर प्राणनाथ विद्यालंकार]

कैसे दुर्भाग्य की बात है कि हिंदी में इँगलैंड-जैसे स्वतंत्रता-प्रिय देश का एक अच्छा-सा इतिहास अभी तक नहीं लिखा गया ! इँगलैंड-जैसे उन्नत देश का इतिहास हमारे लिये कितना शिक्षाप्रद, कितना उपकारक और कितना सच्चा मार्ग-दर्शक हो सकता है, यह कहना अनावश्यक है । लेकिन, तो भी, हम शासन-पद्धति में इँगलैंड को अपना आदर्श नहीं समझ सकते—हमारा ऐसा समझना भ्रम है, क्योंकि भारतवर्ष राष्ट्रात्मक देश है, और इँगलैंड एकात्मक। शासन-पद्धति तो हम स्विट्ज़रलैंड, अमेरिका और फ़्रांस से कुछ-कुछ सीख सकते हैं । परंतु शासन-पद्धति का उदय स्वतंत्रता प्राप्त होने पर ही हो सकता है । अब प्रश्न यह है कि वह कौन-सी स्वतंत्रता है, जिसकी प्राप्ति में जनता को यत्नशील होना चाहिए । उत्तर है 'आर्थिक स्वतंत्रता', क्योंकि आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करके समस्त स्वतंत्रता प्राप्त की जा सकती है, और इस रहस्य का उद्घाटन यदि कोई देश कर सकता है, तो वह एक-मात्र इँगलैंड ही है । दासता की विकट बेड़ियों में जकड़ी हुई—परदेशियों के प्रबल पैरों से कुचली हुई—जातियों के लिये इस 'आर्थिक सफलता'-रूपी हथियार का एक-मात्र आविष्कारकर्ता इँगलैंड ही है । अतः आर्य-जाति के लिये यह 'इतिहास' बहुत कुछ लाभदायक हो सकता है । अँगरेज़ी की ढेरों प्रसिद्ध-प्रसिद्ध पुस्तकों को पढ़कर और उनका अवलंब लेकर इस ग्रंथ-रत्न की रचना की गई है । भारतवासियों के उपयोग की दृष्टि से तो इसके जोड़ का इँगलैंड का इतिहास किसी भी भाषा में नहीं मिल सकता । यह सन् और तारीख़ों का संग्रह नहीं, बरन् सच्चा मार्ग-दर्शक इतिहास है । यह ग्रंथ हिंदी-साहित्य के गौरव को बढ़ानेवाला है । प्रत्येक सार्वजनिक-संस्था और पुस्तकालय में इसकी एक-एक प्रति रहना चाहिए । कॉलेज के विद्यार्थियों के लिये तो यह अमूल्य ही है। हर्ष का विषय है कि इस उत्कृष्ट और अपूर्व ग्रंथ को हिंदी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग ने अपनी मध्यमा-परीक्षा के कोर्स में नियत किया है। काग़ज़ बढ़िया, छपाई मनोहारिणी। प्रथम भाग का मूल्य २) दूसरा भाग भी छप रहा है।

इस पुस्तक के विषय में सामयिक पत्रों में जितनी समालोचनाएँ निकली हैं, उनमें से संक्षेप में कुछ ये हैं—

(१) अभ्युदय "× × इतिहास परिश्रम के साथ लिखा ज्ञात होता है । अब तक हिंदी में इससे अच्छा इँगलैंड का इतिहास नहीं निकल पाया है । जो इतिहास-प्रेमी इसके लिये बहुत काल से तरस रहे थे, उन्हें अब अपनी क्षुधा-निवारण का सामान मिल गया है । इँगलैंड का इतिहास तो यों ही रोचक है, तिस पर भी अध्याय और परिच्छेद में विभक्त कर लेखक ने पुस्तक की रोचकता दूनी कर दी है । इस पुस्तक का महत्त्व तो इसी से प्रकट है कि 'सम्मेलन' ने अपनी 'मध्यमा-परीक्षा' की पाठ्य पुस्तकों में इसे नियत किया है।"

(२) देश "× × अँगरेज़ी नहीं जाननेवालों के लिये यह पुस्तक बहुत ही लाभदायक है । अँगरेज़-जाति ने किस प्रकार परतंत्रता की बेड़ी काटकर अपने को स्वतंत्र बना लिया, इसका ज्वलंत चित्र इँगलैंड के इतिहास में ही पाया जाता है । जो पाठक यहाँ के इतिहास से परिचित नहीं हैं, उनको यह पुस्तक ज़रूर पढ़नी चाहिए । ×× जो वर्तमान आंदोलन इस देश में जारी है और जिसे रोकने की, कितने ही प्रकार की चेष्टा सरकार की ओर से की जा रही है, उसको अच्छी तरह से समझने के लिये इँगलिस्तान के इतिहास का ज्ञान प्राप्त करना अत्यंत आवश्यक है । हिंदी जाननेवाले पाठकों के लिये यह पुस्तक बहुत ही उपयोगी है ।"

(३) ज्योति—"इस पुस्तक में सरस और मनोग्राह्य भाषा में इँगलैंड का इतिहास न कहकर, अँगरेज़ जाति का इतिहास कहें, तो अनुचित न होगा, क्योंकि प्रस्तुत पुस्तक में योग्य लेखक ने केवल अँगरेज़ राजाओं का राजनीतिक इतिहास ही न देकर उस समय के सामाजिक, धार्मिक, और राजनीतिक प्रश्नों पर भी आवश्यक विचार किया है। पुस्तक इतिहास के विद्यार्थियों के लिये बड़े काम की है और हमारी पाठशालाओं में स्थान पाने के सर्वथा योग्य है।"

संचालक गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय, २९-३० अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

जीवन-चरित-प्रेमियों के लिये दो र

चवन्नी-चरितावली—संख्या १

द्विजेंद्रलाल राय

इस पुस्तक के लेखक माधुरी के युगल संपादक हैं। सुप्रसिद्ध नाट्यकार स्वर्गीय डी० एल्० राय एम्० ए० को कौन नहीं जानता? उनके नाटकों के हिंदी-अनुवाद बहुत ही लोक-प्रिय हुए हैं। उन्हीं का यह संक्षिप्त जीवन-चरित है। लेखकों के नाम ही इसकी उपयोगिता और श्रेष्ठता के प्रमाण हैं। मूल्य ।)

चवन्नी-चरितावली—संख्या २

सम्राट् चंद्रगुप्त

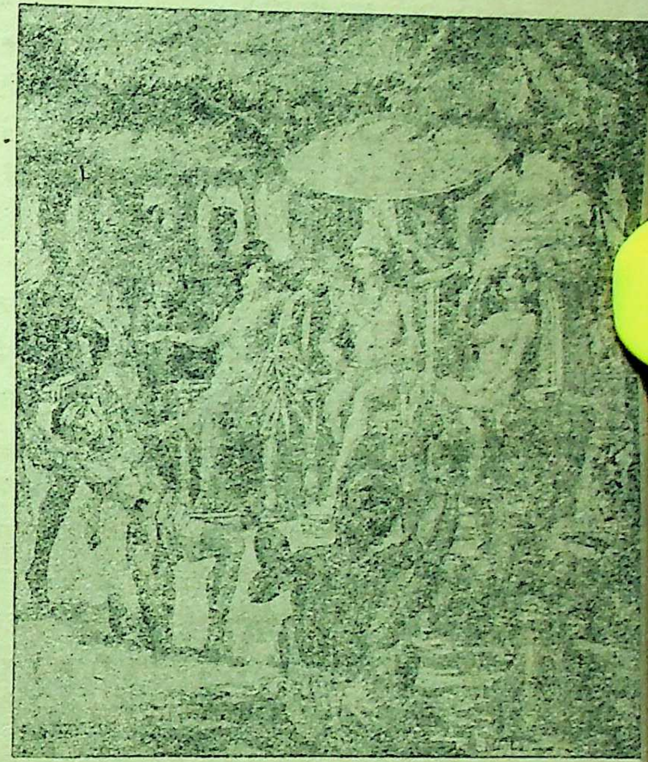

[सम्राट् चंद्रगुप्त बैवलिन से आई हुई अपनी नव-वधू का स्वागत सत्कार कर रहे हैं]

इस पुस्तक के लेखक लक्ष्मण-संपादक पं० वालमुकुंद वाजपेयी हैं। भारत के प्रथम ऐतिहासिक सम्राट् की यह संक्षिप्त, किंतु सर्वांग-पूर्ण जीवनी बड़ी खोज के साथ लिखी गई है। यह पुस्तक इतिहास-प्रेमियों के पढ़ने की चीज़ है। मूल्य ।)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय, २९-३० अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

हिंदी-साहित्य में एक अमूल्य रत्न ! समालोचना का एक अपूर्व ग्रंथ !!

देव और विहारी

[लेखक—हिंदी-काव्य-साहित्य के मर्मज्ञ, श्रेष्ठ कवि पं० कृष्णविहारी मिश्र बी०ए०, एल्-एल्०बी०]

देव और विहारी हिंदी के शृंगार-रस के कवियों में मुख्य हैं । इन्हीं दोनों कवियों की तुलनात्मक समालोच इस ग्रंथ में की गई है । लेखक ने बहुत ही प्रबल युक्तियों से देव को विहारी से श्रेष्ठ कवि प्रमाणित किया इस पुस्तक के पढ़ने से दोनों कवियों का कमनीय कवित्व, पांडित्य और प्रखर प्रतिभा का प्रकाश सहज ही सम में आ जाता है । इस पुस्तक की लेखन-शैली मनोरंजक, भाषा सजीव, सरस और चित्त में चुभनेवाली है । पढ़ने उपन्यास की तरह मन लगता है । जो लोग व्रज-भाषा-काव्य की सर्वोत्कृष्टता के क़ायल नहीं, वे यदि इसे पढ़ें, तो उन आँखें खुल जायँ, और उनके हृदय में यह बात बैठ जाय कि व्रज-भाषा काव्य की दृष्टि से अपना सानी नहीं रखती। का विषय है कि इस अपूर्व ग्रंथ को पटना-युनिवर्सिटी ने अपने यहाँ की बी० ए० (ऑनर्स)-परीक्षा के कोर्स नियत किया है । इस पुस्तक के विषय में हिंदी-संसार में जितनी हलचल हुई है, जितनी समालोचनाएँ निकली, निकल रही हैं, उतनी और किसी काव्य-ग्रंथ पर नहीं निकलीं । कुछ श्रेष्ठ लेखकों, कवियों और साहित्य की संक्षिप्त सम्मतियाँ दी जाती हैं—

(१) **कवि-सम्राट् पं० श्रीधर पाठक**—"कवि-पुंगव देव और सुप्रसिद्ध सतसईकार विहारी की तुलना समालोचना हिंदी के सुविज्ञ पं० कृष्णविहारी मिश्र बी० ए०, एल्-एल्० बी० की लिखी हुई सुंदर पुस्तिका के में प्रकाशित कर लखनऊ की गंगा-पुस्तकमाला ने मातृ-भाषा की प्रशंसनीय सेवा की है । × × प्रस्तुत समालोचना योग्यता का पर्याप्त प्रदर्शन है । × × देव और विहारी में प्रेस की भूल मुझको एक भी नहीं मिली । यह पुस्तकमाला के लिये बड़ी प्रशंसा की बात है ।"

(२) **कविराज बाबू जगन्नाथप्रसाद "भानु"**—"पुस्तक क्या है, रत्न है । मुझे यह कहने में ज़रा संकोच नहीं कि ऐसी पुस्तकों से व्रज-भाषा का मिटा हुआ मान और आदर फिर से लौटना संभव है । × × और विहारी जिस ढंग की पुस्तक है, उस ढंग की पुस्तक अभी तक हिंदी-भाषा में नहीं निकली थी । तुलना समालोचना का यह प्रथम ग्रंथ है, ऐसा कहने में ज़रा भी अतिशयोक्ति नहीं । हमारे हृदय में कविवर देव के पहले ही से ऊँचा स्थान था, पर अब इस पुस्तक के पढ़ने से वह स्थान उच्चतम हो गया । × × पुस्तक छपाई-सफ़ाई भी सुंदर और नेत्ररंजक है, और इसके लिये प्रकाशक धन्यवाद के पात्र हैं ।"

(३) **कवि-श्रेष्ठ बाबू जगन्नाथप्रसाद 'रत्नाकर' बी० ए०**—"ग्रंथ जिस विषय पर लिखा गया है, विषय के ग्रंथों की भाषा में बड़ी आवश्यकता है । ऐसे ग्रंथों से पठित-समाज का ध्यान प्राचीन कवियों के काव्य ओर आकर्षित होता है, और अच्छे-बुरे में भेद करने का अभ्यास होता है । लेखक महाशय की भाषा बड़ी और लेख-प्रणाली परम मनोरंजनी है । ग्रंथ के पढ़ने से जी नहीं घबराता । लेखक महाशय ने अपना अभीष्टार्थ स्पष्टता-पूर्वक प्रकट किया है ।"

(४) **काव्य-मर्मज्ञ पं० श्यामविहारी मिश्र एम्० ए०**—"I fear I have not yet acknowled receipt of your beautiful critical comparison of Deo and Bihari. It is a very us and interesting book and I am sure it will command a good market and be apprec by the Hindi world."

इसी तरह की और बहुत-सी समालोचनाएँ हैं, जो स्थानाभाव के कारण नहीं दी गईं । पृष्ठ-संख्या लगभग काग़ज़ बढ़िया । छपाई-सफ़ाई बहुत सुंदर तथा लेखक का एक चित्र भी है । मूल्य १॥=)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय, २६-३० अमीनाबाद-पार्क, लखन

गंगा-पुस्तकमाला की नई पुस्तक

उद्यान

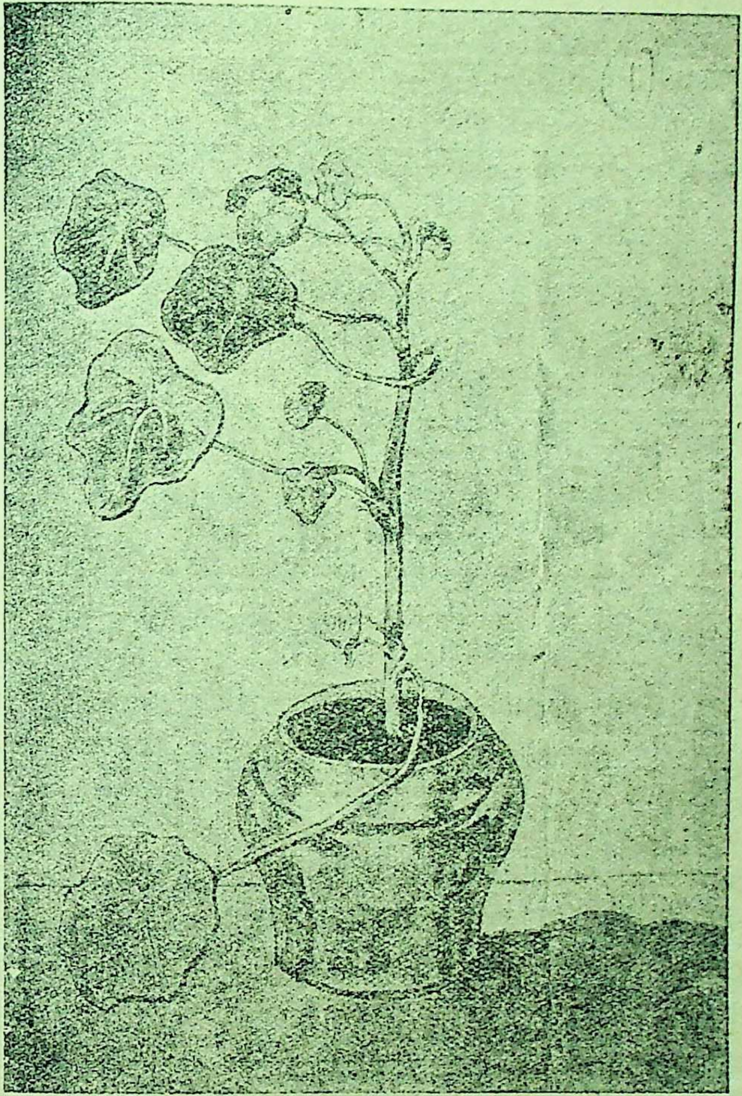

[लेखक—पं० शंकरराव जोशी एग्रीकल्चर ऑफ़िसर]

इस पुस्तक में फल-फूल के वृक्षों, बेलों और बहारदार घासों के लगाने की विस्तृत विधि लिखी गई है। खाद, पेबंद, क़लम, बीज, सिंचाई, बाग़ की सजावट आदि विषय सरल भाषा में इस ख़ूबी के साथ समझाए गए हैं कि साधारण मनुष्य भी, बिना किसी माली की सहायता के, बाग़बानी के सब काम कर सकता है। इस विषय की इतनी बड़ी और सर्वांग-पूर्ण अन्य पुस्तक हिंदी में अभी तक नहीं निकली है। इसका कुछ हिस्सा माधुरी में निकला था, और लोगों की इतनी माँग हुई कि हमें बहुत शीघ्र इसे पुस्तकाकारमें प्रकाशित करना पड़ा। पुस्तक में आवश्यकतानुसार कई सुंदर चित्र भी दिए गए हैं। छपाई साफ़। काग़ज़ एँटिक, उम्दा। मूल्य ॥)

सुप्रसिद्ध गंगा-पुस्तकमाला के कुछ उत्कृष्ट और रखने-योग्य ग्रंथ

भूकंप

[प्रणेता—सुप्रसिद्ध हिंदी-लेखक बाबू रामचंद्र वर्मा]

यह अपने विषय का हिंदी में पहला और अद्वितीय ग्रंथ है। भूकंप क्या है ? वह क्यों और कैसे आता है? जल और स्थल आदि पर उसका क्या प्रभाव पड़ता है ? आदि-आदि भूकंप-संबंधी अनेक ऐसे प्रश्न हैं, जिनका उत्तर जानने की उत्कंठा बहुत-से लोगों को हो सकती है। इन प्रश्नों के उत्तर केवल जानने-योग्य ही नहीं हैं, बल्कि बहुत ही मनोरंजक, कौतूहल-जनक और उपयोगी भी हैं, और इन्हीं का सीधे, सरल और सुस्पष्ट ढंग से इस पुस्तक में संग्रह किया गया है। भाषा इसकी बड़ी ही सुंदर, शुद्ध और सरल है। लेखन-शैली ऐसी मनोरंजिनी है कि पढ़ने में तिलिस्मी उपन्यास का-ऐसा मज़ा आता है। इसमें १५ रोमांचकारी और नेत्र-रंजक चित्र भी दिए गए हैं, जिससे पुस्तक की शोभा दूनी हो गई है। काग़ज़ और छपाई बहुत बढ़िया। मूल्य साजिल्द प्रति का १।=), सादी १=)

आत्मार्पण

[ले०—पं० द्वारकाप्रसाद गुप्त 'रसिकेंद्र']

प्रस्तुत ग्रंथ एक ऐतिहासिक खंड-काव्य है। इसका कथानक टॉड-राजस्थान और मेवाड़ के इतिहास से लिया गया है। राणा राजसिंह, प्रभावती या चंचलकुमारी और वीर चूड़ावत सरदार के अपूर्व चरित्रों के आधार पर इस अत्यंत रोचक, उत्कंठा-वर्धक और कवित्व स्वदेश-प्राणता, निःस्वार्थता, पवित्रता, सहानुभूति और क्षमा आदि सभी गुणों में आदर्श काव्य की रचना हुई है। मूल्य ।-)

भारत-गीत

[लेखक—कवि-सम्राट् पं० श्रीधर पाठक]

पाठकजी हिंदी-कवियों के आचार्य माने जाते हैं। आपने समय-समय पर देश-संबंधी जो उपयोगी और उत्तम कविताएँ लिखी और पत्रों में प्रकाशित कराई हैं, उन्हीं का यह नयनाभिराम बड़ा संग्रह है। मूल्य ॥=)

देवी द्रौपदी

[ले०—कविवर पं० रामचरित उपाध्याय]

यह पुस्तक देवी द्रौपदी का जीवन-चरित है। आख्यायिका के ढंग पर लिखा गया है, जिससे इसके पाठ से उपन्यास, प्राचीन इतिहास और जीवन-चरित्र तीनों के पढ़ने का आनंद आता है। यों तो यह पुस्तक समान रूप से सबके लिये शिक्षाप्रद है, पर स्त्रियों के लिये यह पुस्तक अमूल्य रत्न है। मूल्य ।=)

वंकिमचंद्र चटर्जी

[लेखक—पं० रूपनारायण पांडेय]

इस पुस्तक में भारत के सुप्रसिद्ध उपन्यास-लेखक स्वर्गीय राय वंकिमचंद्र चटर्जी बहादुर सी० आई० ई० का जीवन-वृत्तांत है। इसके लिये सभी साहित्य-प्रेमी वर्षों से लालायित हो रहे थे। इस पुस्तक के संबंध में केवल इतना ही कह देना पर्याप्त है कि इसके मुक़ाबिले के बहुत कम जीवन-चरित्र निकलेंगे। अनेक हिंदी-समाचार-पत्रों ने इस पुस्तक की मुक्त-कंठ से प्रशंसा की है। मूल्य १≡)

बिलकुल नया, बड़ा सूचीपत्र डाक-व्यय के लिये -) का टिकट भेजकर मुफ़्त मँगाइए

संचालक गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय, २६-३० अमीनाबाद-पार्क, लखन

हिंदी-संसार में स्त्रियों के लिये अद्वितीय पुस्तक

स्त्री-सुबोधिनी

स्त्रियों के लिये इससे उपयोगी और उत्तम पुस्तक आज तक हिंदी-संसार में कहीं नहीं छपी । यह पुस्तक प्रत्येक नारी को बाल्य-काल से मरण-पर्यंत साथ रखने-योग्य है। क्योंकि यह उनकी सच्ची जीवन-सहचरी है । इसमें पाँच भाग हैं । पहले भाग में बाल्य-काल और आरंभ-काल की शिक्षा का वर्णन है ; जिसमें गृह-धर्म, गृह-कार्य और व्यय आदि का प्रबंध एवं अनेक अमूल्य शिक्षाएँ हैं । दूसरे भाग में अनेक प्रकार के स्वादिष्ठ भोजन बनाने की विधि, शिल्प-विद्या, चित्रकारी और सीना-पिरोना आदि कितने ही सुंदर और उपयोगी विषयों का वर्णन है। तीसरे भाग में गर्भ-रक्षा, धात्री-शिक्षा, स्त्री-रोग की अनेक अनुभूत औषधियाँ तथा स्वास्थ्य-रक्षा-संबंधी अनेक उपदेश हैं । चौथे भाग में बालकों का पोषण, बाल-रोग-चिकित्सा और बालक-संबंधी अनेक उपयोगी और अति आवश्यक शिक्षाओं का समावेश है । पाँचवें भाग में धर्मोपदेश एवं अनेक प्रकार की रीति-नीति और व्रत-त्योहारों का वर्णन है । स्त्रियों के लिये सब प्रकार की परमोपयोगी शिक्षाओं से पूर्ण यदि कोई पुस्तक है, तो यही है। एक बार अवश्य मँगाकर अपनी गृहिणियों, कन्याओं और भगिनियों के कर-कमलों में दीजिए। फिर देखिए कि वे इसके द्वारा कैसी सुचतुर गृहलक्ष्मी बनकर गृहस्थी को स्वर्ग-धाम बना देती हैं या नहीं ? आज तक इसकी नौ आवृत्तियाँ हो चुकी हैं । बढ़िया काग़ज़, उत्तम टाइप, सुंदर छपाई और मनोहर कपड़े की जिल्द । पृष्ठ-संख्या ८३२ ; मूल्य केवल २॥)

मिलने का पता—नवलकिशोर-प्रेस, लखनऊ

पढ़ने-योग्य अनूठे और शिक्षा-प्रद उपन्यास

चित्त-विलास

लेखक, रायबहादुर बाबू ज़ालिमसिंह, पोस्टमास्टर जनरल, ग्वालियर। यह कोई मामूली दिल खुश करनेवाला उपन्यास नहीं है; किंतु यह वह उपन्यास है, जिसके पढ़ने और मनन करने से विवेक, वैराग्य, ज्ञान, ब्रह्म-तेज आदि अनेकानेक धर्म-संबंधी उपदेशों का ज्ञान प्राप्त होता है। जो धार्मिक पुरुष हैं, जो वाहियात उपन्यास पढ़कर अपना अमूल्य समय बिताना नहीं चाहते, उन्हें यह उपन्यास अवश्य देखना चाहिए। पुस्तक दो भागों में विभक्त है, दोनों भागों का मूल्य ॥)॥

ब्रह्म-दर्पण

विषय नाम ही से प्रकट है। इसके पढ़ने से माया और ब्रह्म, स्वामी और सेवक, राजा और प्रजा एवं स्त्री और पुरुष के धर्मों का उपदेश मिलता है। जो मनुष्य इस उपन्यास को पढ़ेंगे, उनके बिगड़े हुए चरित्र सुधर जायँगे। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों का क्या धर्म है—क्या कर्तव्य है—यह भी इसी के पढ़ने से मालूम होगा। संक्षेप में, मतलब यह है कि बड़े-बड़े धर्म-शास्त्रों एवं वेदांत के ग्रंथों का सारांश इसमें ठूस-ठूसकर भरा गया है। हिंदी-संसार में इस ढंग के उपन्यास बहुत ही कम देखने में आते हैं। पृष्ठ-संख्या १५६; मूल्य ॥।)

बंगाली दुलहिन

वंग-भाषा के सुप्रसिद्ध लेखक बाबू बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय के "देवी चौधरानी" का हिंदी-अनुवाद। प्रफुल्ल की दीन अवस्था, अपने ससुर हरिवल्लभ द्वारा प्रफुल्ल का ससुराल से निकाला जाना, यकायक उसके भाग्य का पलटा खाना, डाकू होकर भी भवानी पाठक की ईमानदारी और सचाई, कुछ समय बाद प्रफुल्ल का रानी बनना, अपनी बुद्धिमानी और चतुराई से अपने दुष्ट ससुर की जान बचाना, व्रजेश्वर का अपनी स्त्री प्रफुल्ल को रानी-रूप में न पहचानना, विना खून-खराबी के ही अपनी चालाकी से रानी का अँगरेज़ी फ़ौज पर विजय प्राप्त करना और अंत में अनेक गुप्त रहस्यों का प्रकट होना आदि अनेक अद्भुत चकरा देनेवाली घटनाओं से भरा हुआ यह शिक्षा-प्रद गार्हस्थ्य उपन्यास है। एक बार आरंभ करके विना समाप्त किए छोड़ने को जी नहीं चाहता। अनुवादक हैं, पं० शुकदेवप्रसादजी वाजपेयी। पृष्ठ-संख्या १६८; मू० ॥।)

राम-प्रताप

यह कोई तिलस्मी, ऐयारी, ऐतिहासिक या गार्हस्थ्य उपन्यास नहीं है; किंतु यह वह उपन्यास है, जिसके पढ़ने से ब्रह्म-ज्ञान की प्राप्ति होती है। इसके पढ़ने से वैराग्य, शुभ-कर्म, अनन्य-भक्ति, राजधर्म और प्रजाधर्म-संबंधी अनेकानेक उपदेशों का ज्ञान प्राप्त होता है। जो धार्मिक पुरुष हैं, वे इस उपन्यास को अवश्य पढ़ें। लेखक हैं, रायबहादुर बाबू ज़ालिमसिंहजी। मू० ॥)

मिलने का पता—नवलकिशोर-प्रेस, लखनऊ

ज्योतिष-विद्या के सुप्रसिद्ध ग्रंथ

जातकालंकार

सटीक । टीकाकार हैं, श्रीयुत पं० रामरत्नजी अवस्थी । इसके पढ़ने से मनुष्य जन्म-कुंडली का फल बड़ी अच्छी तरह बतला सकता है । प्रत्येक ज्योतिषी को यह ग्रंथ अपने पास रखना चाहिए । पृष्ठ-संख्या १७०; मूल्य ।)

जातकाभरण

सटीक । टीकाकार हैं, पं० सूर्यनारायणजी सिद्धांती । श्रीढुंढिराजजी का बनाया हुआ यह ग्रंथ जन्म-पत्र बनाने और उसके फल बतलाने में अद्वितीय है । इसमें संवत्सर, अयन, पंचांग के फल, द्वादश भाव और एक स्थान में उपस्थित दो, तीन, चार, पाँच ग्रहादिकों के फल, राज-योग, अरिष्ट-योग, मेषादि राशियों के दृष्टि-फल, शनि-चक्र, सर्वतोभद्र-चक्र, सामुद्रिक और पंच-महापुरुष-लक्षण एवं स्त्री-जातकादि अनेक विषयों का वर्णन है । पृष्ठ-संख्या ४६२; जिल्द बँधी हुई पुस्तक का मूल्य केवल १॥)

बृहज्जातक

श्रीवराहमिहिराचार्य-कृत मूल और पं० रामरत्नजी अवस्थी-कृत भाषा-टीका । इसमें जन्म-पत्र के संपूर्ण फल, राज-योग, नक्षत्र-फल और नष्ट जन्म-पत्र के बनाने की रीति इत्यादि अनेक विषय वर्णित हैं । पुस्तक ज्योतिषियों के लिये अतीव उपयोगी है । पृष्ठ-संख्या २६० ; मूल्य ॥)

नीलकंठी

ज्योतिष-शास्त्र में श्रीनीलकंठजी का रचा हुआ यह 'नीलकंठी' ग्रंथ अति प्रसिद्ध है । हमारे भारतवर्ष के ज्योतिषी बहुधा अपने बालकों को यही ग्रंथ पढ़ाते हैं । यह ग्रंथ बड़ा ही कठिन है । इसकी कितनी ही टीकाएँ अन्यान्य प्रेसों में छप चुकी हैं; किंतु वे टीकाएँ मूल से भी अधिक कठिन हैं । यही सोचकर पं० शक्तिधरजी शर्मा शास्त्री ने ज्योतिषियों के उपकारार्थ इस कठिन ग्रंथ की सरल टीका की है । इसमें पहले मूल, फिर संस्कृत-टीका, तदनंतर भाषानुवाद और सबसे पीछे उदाहरण और प्रमाण दिए गए हैं । 'नीलकंठी' की ऐसी उत्तम टीका आज तक कहीं नहीं छपी । जो लोग इसे पढ़ेंगे, वे थोड़ा ही परिश्रम करने पर जन्म-पत्री और वर्ष-फल आदि बना सकेंगे । पृष्ठ-संख्या ५२६; मूल्य १॥)

बृहज्ज्योतिस्सार

पं० सूर्यनारायण सिद्धांती द्वारा संगृहीत । भाषा-टीका-सहित । संवत्सर के अंतर्गत लाभ-व्यय-ज्ञान, कालहोरा, सूर्य-चंद्र-ग्रहण-फल, पंचक-ज्ञान, छत्र-चक्र, धनुश्चक्र, शकुन-ज्ञान, वाणिज्य-मुहूर्त, गर्भ-धारण-मुहूर्त, विद्यारंभ-मुहूर्त, मुंडन-मुहूर्त, कृष्ण-जन्माष्टमी-निर्णय और दीपमालिका एवं होलिका-निर्णय आदि अनेक विषय ऋषि-प्रणीत ज्योतिष-ग्रंथों से संग्रह कर लिखे गए हैं । पुस्तक संग्रहणीय है । पृष्ठ-संख्या ३७४ ; मूल्य १=) ; सजिल्द १॥)

मिलने का पता—नवलकिशोर-प्रेस, लखनऊ

कवि, लेखक, संपादक और विद्यार्थियों के सहायक

हिंदी-साहित्य-संसार में परम प्रतिष्ठित और अनुपम

कोष-ग्रंथ

संस्कृत-हिंदी-कोष

लगभग बीस हज़ार संस्कृत-शब्दों का अकारादि-क्रम से मनोहर संग्रह। संग्रहकर्ता हैं हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक चतुर्वेदी पं० द्वारकाप्रसाद शर्मा। प्रत्येक शब्द के आगे उसका लिंग निर्देश कर दिया गया है और एक-एक शब्द के अनेक हिंदी-पर्याय-शब्द दे दिए गए हैं अर्थात् एक-एक शब्द के जितने भी हिंदी-अर्थ होते व हो सकते हैं, सब इसमें लिख दिए गए हैं। इसलिये यह कोष संस्कृत और हिंदी के विद्यार्थियों, कवियों, लेखकों, अनुवादकों और संपादकों के बड़े काम का हो गया है। मनोहर कपड़े की जिल्द बँधी हुई पुस्तक का मूल्य केवल ३)

श्रीधर-कोष

संयुक्त-प्रदेश के शिक्षा-विभाग के भूतपूर्व डाइरेक्टर श्रीमान् टामस सी० ल्यूस एम्० ए० तथा देशीय पाठ-शालाओं के भूतपूर्व इंस्पेक्टर श्रीयुत मालबरो क्रास एम्० ए० की प्रेरणानुसार नार्मल-स्कूल, लखनऊ के भूतपूर्व संस्कृत और भाषा के अध्यापक श्रीयुत पं० श्रीधर त्रिपाठी-लिखित। हिंदी-भाषा का यह एक सुप्रसिद्ध कोष है। इसमें हिंदी के नए और पुराने प्रायः समस्त शब्द आ गए हैं और प्रत्येक शब्द का निर्णय कर दिया गया है कि वह संस्कृत है या प्राकृत। यदि प्राकृत है, तो उसका संस्कृत रूप क्या है। फिर प्रत्येक शब्द की व्युत्पत्ति, लिंग-निर्देश और व्याकरण-संबंधी शब्द-लक्षण लिखकर उसके समस्त पर्यायवाची शब्द या अर्थ दे दिए गए हैं। आरंभ में एक २४ पृष्ठ की बृहद् भूमिका है, जो एक अति उपयोगी संक्षिप्त व्याकरण है और अंत में ३२ सुप्रसिद्ध हिंदी-महाकवियों की जीवनियाँ भी हैं। कोष की उपयोगिता का यह एक ज्वलंत प्रमाण है कि यह उसका चौथा संस्करण है। बड़े आकार की, ७७० पृष्ठों की, सुंदर जिल्द बँधी हुई पुस्तक का मूल्य केवल ३)

भागीरथ-कोष

उर्दू से हिंदी। जो लोग उर्दू से हिंदी में अनुवाद करना चाहते हैं, यह कोष उनके बड़े मतलब की चीज़ है। इसमें उर्दू, फ़ारसी और अरबी-शब्दों के ढूँढ़-ढूँढ़कर हिंदी के पर्याय-शब्द रक्खे गए हैं। अंत में देशों के आधुनिक नामों के प्राचीन संस्कृत-नाम भी दे दिए गए हैं। यह कोष वर्नाक्युलर स्कूल के अध्यापक और विद्यार्थियों, कचेहरी के अहलकारों, मुसलमान अध्यापकों और हिंदी पढ़ने की इच्छा रखनेवाले मुसलमानों के लिये भी विशेष उपयोगी है। इसके रचयिता हैं, उर्दू-जगत् के सुप्रसिद्ध लेखक पं० दीनानाथ कौल। साँची बड़ी, पृष्ठ-संख्या २३४; मूल्य केवल १)

अमर-कोष

अमर-कोष संस्कृत का एक परम प्रामाणिक कोष है। उस पर लखनऊ के सुप्रसिद्ध पं० शक्तिधर शर्मा शास्त्री ने संस्कृत में "रसाला" नाम की एक सुविस्तृत व्याख्या लिखी है। यह ग्रंथ उस व्याख्या का हिंदी-अनुवाद है। जिन्हें संस्कृत-साहित्य के सुविस्तृत शब्द-भंडार का ज्ञान करना हो, जिन्हें व्युत्पत्ति का पूर्ण ज्ञान करना हो, वे इस परमोपयोगी ग्रंथ को मँगाकर इसका अध्ययन करें। ग्रंथ के आरंभ में समस्त शब्दों की अकारादि-क्रम से एक शब्दानुक्रमणिका भी लगा दी गई है, जिससे शब्दों के ढूँढ़ने में बड़ी सुगमता होती है। यह ग्रंथ साहित्य-सेवियों, पंडितों और विद्यार्थियों के बड़े काम का है। साँची बड़ी, पृष्ठ-संख्या ६०४ ; मूल्य ३) तथा संस्कृत व्याख्या में पृष्ठ-संख्या ७२८ ; मूल्य ३॥)

भारतीय चरितांबुधि

A Directory of Indian classical characters

हिंदी-संसार में एकदम नई चीज़। इसमें वैदिक पौराणिक ऋषि, मुनि, राजा, रानी, स्थान तथा ऐतिहासिक पुरुषों एवं कवियों आदि का हिंदी में संक्षिप्त विवरण है। हिंदी-भाषा-भाषियों, लेखकों एवं विद्वानों के लिये यह कोष परम उपयोगी है। संग्रहकर्ता, चतुर्वेदी पं० द्वारकाप्रसाद शर्मा। सुंदर कपड़े की जिल्द, आकार माधुरी का, पृष्ठ-संख्या ७२२ ; मूल्य २॥)

मिलने का पता—नवलकिशोर-प्रेस, लखनऊ

स्त्रियों को उपहार देने-योग्य पुस्तकें

आजकल स्त्री-शिक्षा की बड़ी दुर्दशा हो रही है। एक तो उनमें शिक्षा अल्प होती है, दूसरे गंदे नाटक, उपन्यासों के कारण स्त्रियों की समुचित शारीरिक और मानसिक उन्नति नहीं हो पाती। यही कारण है कि हमारी दशा इतनी हीन हो गई है। यदि आप अपनी गृहिणियों तथा कन्याओं को उत्तम धार्मिक और सामाजिक शिक्षा देकर सच्ची गृह-लक्ष्मी बनाना चाहते हैं, तो नीचे-लिखी पुस्तकें मँगाकर उन्हें पढ़ने को दीजिए—

नारी-चरित-माला

चतुर्वेदी पं० द्वारकाप्रसादजी शर्मा द्वारा संगृहीत। नारी-जाति के कोमल-हृदय पर सती और पतिव्रता स्त्रियों के जीवन-चरित पढ़ने से जो प्रभाव पड़ सकता है, वह अन्य पुस्तकों से नहीं, इसी बात को लक्ष्य में रखकर इस चरित-माला का संग्रह किया गया है। इसमें सती, गांधारी, सुकन्या, लीलावती आदि पंद्रह पौराणिक काल की तथा कृष्णाकुमारी, दुर्गावती, जीजाबाई आदि दश ऐतिहासिक काल की, उन पतिव्रता स्त्रियों के जीवन-चरित हैं, जो आजकल देवी-स्वरूप मानी जाती हैं। एक बार अपनी कन्याओं, बहनों और गृहिणियों को अवश्य पढ़ाइए। पृष्ठ-संख्या २०० ; मूल्य केवल ॥≈)

पतिव्रतास्त्रियोंकेजीवनचरित्र

यह पुस्तक पूर्वोक्त पुस्तक से भी अधिक उपयोगी है। इसमें मदालसा, दमयंती, कैकेयी, अहल्या, मीरा, देवी भवानी, संयोगिता और तारा आदि कोई तीस पतिव्रता स्त्रियों के जीवन-चरित्र हैं। यदि आप यह चाहते हैं कि हमारी स्त्रियाँ वीर-प्रसविनी, सुचरित्रा एवं सुशीला बनें, तो एक बार इस अमूल्य पुस्तक को उनके कर-कमलों में अर्पण कीजिए। पृष्ठ-संख्या ३५८ ; मूल्य केवल १≈)

भार्या-हित

सुप्रसिद्ध अँगरेज़ी-पुस्तक "Advice to a wife" का हिंदी-अनुवाद। इसमें मासिक धर्म, गर्भाधान, प्रसव-पीड़ा और बच्चों से संबंध रखनेवाली उत्तमोत्तम बातों का विशद वर्णन है। पृष्ठ-संख्या ३३० ; मूल्य १)

स्त्री-दर्पण

यदि स्त्रियों को गृह-कार्य में निपुण, प्रवीण और चतुर बनाना चाहते हैं, तो शीघ्र यह पुस्तक मँगाकर उनके हाथ में दीजिए। इसके लेखक हैं, स्वर्गवासी श्रीमान् माधवप्रसादजी इक्स्ट्रा असिस्टेंट कमिश्नर। पृष्ठ-संख्या १६५ ; मूल्य ॥)

बाला-भूषण

गृहस्थ स्त्रियों और कन्याओं के गाने योग्य सुंदर गीतों का मनोहर संग्रह। पृष्ठ-संख्या १४४ ; मूल्य ≡)

स्त्री-उपदेश

माधुरी-संपादक पं० रूपनारायण पांडेय द्वारा संपादित और स्वर्गवासी श्रीमान् माधवप्रसादजी इक्स्ट्रा असिस्टेंट कमिश्नर द्वारा लिखित। इसमें स्त्रियों के लिये अनेक मनोरंजक तथा शिक्षा-प्रद उपदेश दिए गए हैं। पृष्ठ-संख्या १३० ; मूल्य ।≈)

मिलने का पता—नवलकिशोर-प्रेस, लखनऊ

वैद्यक के सुप्रसिद्ध ग्रंथ

इतने सस्ते और इतने सुंदर छपे हुए आप कहीं न पाइएगा

चरकसंहिता

सचित्र और भाषा-टीका-सहित । चरकसंहिता आर्ष-वैद्यक-ग्रंथों में एक अति प्रसिद्ध ग्रंथ है । जो सद्वैद्य हैं, वे इस ग्रंथ को अवश्य अपने पास रखते हैं । यह अति प्रामाणिक और मान्य ग्रंथ है । चरक का चिकित्सा-स्थान सर्व-श्रेष्ठ और परम प्रतिष्ठित है । इसके टीकाकार हैं, कैनिंग कॉलेज के भूतपूर्व संस्कृत-प्रोफ़ेसर पं० कालीचरण शर्मा तथा पं० क्षमापति वाजपेयी राजवैद्य । २२×२९$\frac{१}{८}$ अर्थात् बड़ी साँची के १९२० पृष्ठों की सुंदर जिल्द बँधी हुई पुस्तक का मूल्य केवल ७॥)

भावप्रकाश

भाषा-टीका-सहित । तीन खंडों में । टीकाकार हैं, कैनिंग कॉलेज के भूतपूर्व संस्कृत-प्रोफ़ेसर पं० कालीचरण शर्मा । भाव मिश्र द्वारा संगृहीत भावप्रकाश भी वैद्यक-ग्रंथों में परम प्रतिष्ठित ग्रंथ है । आर्ष-वैद्यक-ग्रंथों का यह ऐसा पूर्ण संग्रह है कि एक इसी ग्रंथ का अध्ययन करके मनुष्य पूर्ण वैद्य हो सकता है । इसीलिये भावप्रकाश वैद्यों का अति आदरणीय ग्रंथ है । काग़ज़-छपाई-सफ़ाई अति उत्तम । बड़ी साँची के १२२८ पृष्ठ ; मूल्य केवल ७॥)

माधवनिदान

पं० महेशदत्त-कृत भाषा-टीका-सहित । इसमें ज्वर, कास, श्वास और मूत्रकृच्छ्र आदि समस्त रोगों के लक्षण, कारण, उत्पत्ति और संप्राप्ति इत्यादि का वर्णन भली प्रकार किया गया है । निदान-ग्रंथों में माधवनिदान सर्व-श्रेष्ठ ग्रंथ है; अतएव हरएक वैद्य को यह अपूर्व ग्रंथ अवश्य संग्रह करना चाहिए । अभी हाल ही में इसका संशोधित नूतन संस्करण छपा है। काग़ज़ बढ़िया ; छपाई उच्च कोटि की ; डिमाई ८ पेजी साइज़ के ४३२ पृष्ठ; मूल्य केवल १॥)

बृहत्पाकावली

[वैद्याचार्य पं० श्यामसुंदर शुक्ल द्वारा संपादित]

मूल श्लोक और भाषा-टीका-सहित । राज-वैद्य पं० गंगाप्रसादजी द्वारा संगृहीत । इसमें सुपारी-पाक, विजया-पाक, सौभाग्यशुंठी-पाक, गोक्षुर-पाक, सालिम-पाक, आम्र-पाक, मूसली-पाक और जातीफल आदि अनेक पाकों के बनाने की विधि का विस्तार-पूर्वक वर्णन है । कौन-सा पाक किस रोग में खाया जाता है, यह भी इसमें अच्छी तरह बतलाया गया है। यह पुस्तक प्रत्येक गृहस्थ को पढ़ना चाहिए । पृष्ठ-संख्या ९८ ; मूल्य केवल ॥)

हंसराजनिदान

कविवर हंसराजजी-रचित । इसमें ज्वर, संग्रहणी, बवासीर, भगंदर, राजयक्ष्मा, तृष्णा और मूर्च्छा आदि अनेक रोगों के निदान और लक्षण; नाड़ी-परीक्षा एवं साध्यासाध्य का ज्ञान इत्यादि अनेक विषय सविस्तार वर्णित हैं । भाषा-टीकाकार हैं, दत्तरामजी माथुर । नवीन संशोधित संस्करण । पृष्ठ-संख्या १६०; मूल्य ॥)

मिलने का पता—नवलकिशोर-प्रेस, लखनऊ

हिंदी-भाषा के सुप्रसिद्ध वैद्यक-ग्रंथ

इतने सस्ते और इतने उत्तम छपे हुए ग्रंथ आप और कहीं न पाइएगा !

रसरत्नाकर

यह अपूर्व ग्रंथ समस्त रस-ग्रंथों का शिरोमणि है। इसमें पारा, गंधक, हरताल, रूपा, ताँबा, हीरा, मैनशिल, सफ़ेद अभ्रक, खपरिया, नीलाथोथा, रूपामाखी, सोनामाखी, शिलाजीतादि रसों की शोधन-विधि तथा उनके गुण; अनेक प्रकार के तैल, चूर्ण एवं घृत इत्यादि बनाने की विधि और प्रत्येक रोग की चिकित्सा का वर्णन भली प्रकार किया गया है। वैद्यों के लिये उपयोगी ऐसा उत्तम ग्रंथ आज तक कहीं नहीं छपा। पं० रविदत्तजी ने संस्कृत रसरत्नाकर से हिंदी में इसका अनुवाद किया है। बड़े साइज़ के ३४४ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य केवल २=)

अमृतसागर

स्वर्गवासी जयपुराधीश सवाई प्रतापसिंहजी की आज्ञानुसार चरक, सुश्रुत, वाग्भट, भावप्रकाश आदि अनेक प्रसिद्ध वैद्यक-ग्रंथों का सारांश लेकर, सद्वैद्यों द्वारा, यह ग्रंथ रचा गया है। इसमें यंत्र, मंत्र, तंत्र के सिवा, संपूर्ण रोगों की उत्पत्ति, लक्षण और उनके उपाय एवं अनेक प्रकार के रस, चूर्ण, क्वाथ, अवलेह, तैल एवं घृत आदि के बनाने की विधियाँ दी गई हैं। नवीन संशोधित संस्करण। छपाई-सफ़ाई अति उत्तम। पृष्ठ-संख्या ७२०; मूल्य २॥) सजिल्द ३)

गद-तिमिर-भास्कर

आज तक जितने वैद्यक के ग्रंथ नवीन छपे हैं, उन सबमें यह शिरोमणि है। चरक, सुश्रुत, वाग्भट आदि अनेक छोटे-मोटे ग्रंथों को मथकर एवं अनेक यूनानी तथा डॉक्टरी ग्रंथों की सहायता लेकर, पं० गौरीशंकर शर्मा राजवैद्य ने, हिंदी-भाषा में, इस अपूर्व ग्रंथ की रचना की है। यदि आप सदैव स्वस्थ रहना चाहते हैं, यदि आप डॉक्टरों, हकीमों और वैद्यों का वारंवार मुँह देखना नहीं चाहते हैं, यदि आप स्वयं एक सद्वैद्य बनकर अपने पड़ोसियों की प्राण-रक्षा करना चाहते हैं, तो थोड़ा-सा लोभ त्यागकर, इस ग्रंथ को अवश्य खरीदें। आयुर्वेद की उत्पत्ति, दिन-चर्या, रात्रि-चर्या, ऋतु-चर्या, पंच-कषाय, चूर्ण, गुटी, अवलेह, घृत, तैल, अरिष्ट, आसव, धातु, उपधातु, विष, उपविष आदि शोधने की विधि एवं मंजन और नेत्र-प्रसादनादि कितने ही लेप इसके प्रथम खंड में हैं। मनुष्य-शरीर में जितने भी रोग होते हैं, उन सबके लक्षण, समयानुसार चिकित्सा, विस्फोटकादि रोग, विष-चिकित्सा, रसायन और कल्प आदि दूसरे, तीसरे और चतुर्थ खंड में विस्तार-पूर्वक दिए गए हैं। कागज़ और छपाई आदि अति उत्तम। बड़े साइज़ के ११६६ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य केवल ६)

मिलने का पता—नवलकिशोर-प्रेस, लखनऊ

आदर्श महापुरुषों के जीवन-चरित्र

वेदज्ञ मैक्समूलर

संस्कृत-साहित्य-संसार के स्तंभ और पाश्चात्य-जगत् में वेदों के प्रथम प्रचारक मैक्समूलर महोदय उन थोड़े महानुभावों में से एक हैं, जिनका जीवन-चरित्र मनुष्य-मात्र के लिये आदर्श हो सकता है। आपके चरित का अध्ययन करने से दृढ़ संकल्प, अविश्रांत परिश्रम, अनुपम सहन-शीलता, अद्भुत धैर्य, अप्रतिम उत्साह, अगाध प्रेम, अनुकरणीय उदारता की शिक्षा मिलती है। यही नहीं, आपको आदर्श बालक, आदर्श पति और आदर्श पिता कहने में भी कुछ अत्युक्ति नहीं। आप एक निर्धन विद्यार्थी की हैसियत से उन्नति करके प्रिवी-कौंसिल के पद तक पहुँचे थे। आपकी जीवनी हिंदी-संसार के लिये बिलकुल नई बात है। पुस्तक की भाषा सरल और हृदय-ग्राही है, तथा कलेवर नवीन ढंग से सुसज्जित किया गया है। प्रत्येक होनहार नवयुवक को एक बार इसे अवश्य अध्ययन करना चाहिए। इसके लेखक हैं, हिंदी के होनहार कवि पं० सुरेंद्रनाथ तिवारी। पृष्ठ-संख्या ९३; मूल्य ।≈)

गुरु-भक्त-प्रकाश

श्रीस्वामी रामरूपजी-रचित। इसमें स्वामी चरणदासजी का जीवन-चरित्र भली प्रकार दोहे, चौपाई आदि छंदों में वर्णन किया गया है। जिन सज्जनों ने उक्त महातमा के रचे हुए 'भक्ति-सागर'-नामक ग्रंथ को कभी पढ़ा हो, उन्हें उनके चरित्र को भी अवश्य ही पढ़ना चाहिए। विशेषकर भृगु-वंशियों एवं स्वामी चरणदासजी के अनुयायियों को इस ग्रंथ की एक-एक कापी अवश्य संग्रह करनी चाहिए। पृष्ठ-संख्या २९२; मूल्य केवल ॥≈)

महात्मा साक्रटीज़

संपादक, चतुर्वेदी पं० द्वारकाप्रसाद शर्मा। इस ग्रंथ में महात्मा सुकरात की जीवनी के अतिरिक्त उसके प्रसिद्ध शिष्य अफ़लातून (प्लेटो) की लिखी अपॉलोजी, क्रीटो और फ़ीडो-नामक तीन पुस्तकों का मर्मानुवाद भी है। इस पुस्तक का अध्ययन करने से योरोपीय दर्शन के भीतरी रहस्य का चित्र आँखों के आगे अंकित हो जाता है। प्रत्येक नागरिक भारत-वासी को यह जीवनी एक बार अवश्य पढ़नी चाहिए। काग़ज़ और छपाई अति उत्तम; पृष्ठ-संख्या २४६; मूल्य ॥।)

महात्माओं के जीवन-चरित्र

स्वामी परमानंदजी-रचित। इसमें दत्तात्रेय, शुकदेव, बुद्ध भगवान्, भरथरी, हरिश्चंद्र, गुरु नानक, सुकरात, अफ़लातून और फैलकस आदि तेईस महात्माओं के जीवन-चरित्र हैं। यह ग्रंथ सर्व-साधारण को तो संग्रह करना ही चाहिए; साथ ही यह साधु, महात्माओं, वेदांतियों एवं भगवद्भक्तों के लिये भी बड़ा ही उपयोगी है। पृष्ठ-संख्या ३२४; मूल्य ॥≈)

मुंशी नवलकिशोरजी

पं० बंदीदीनजी दीक्षित-कृत। लखनऊ के सुप्रसिद्ध नवलकिशोर-प्रेस के अधिष्ठाता, स्वर्गवासी मुंशी नवलकिशोरजी सी० आई० ई०, यू० पी० के व्यापार-गगन के पूर्ण चंद्र हुए हैं। इस पुस्तक में आपका जन्म से लेकर मरण-पर्यंत का विमल चरित्र दोहे, सोरठे, चौपाई आदि छंदों में वर्णन किया गया है। हमारे प्रेमी ग्राहकों को इसे अवश्य देखना चाहिए। पृष्ठ-संख्या ३६; मूल्य ≈)

मिलने का पता—नवलकिशोर-प्रेस, लखनऊ

विनय-पत्रिका

विनय-पत्रिका श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासजी के हृदय का सच्चा प्रतिबिंब है। इसमें वे अपने उपास्य-देव के आगे कभी बालक की भाँति रोते हैं, आग्रह करते हैं, मचल जाते हैं; कभी अत्यंत विनीत हो दीन दास की तरह अनुनय-विनय करते हैं; कभी प्रौढ़ प्रेमिक की तरह ओलाहना देते हैं; कभी प्रेम में पुलकित हो नाचने लगते हैं; कभी भक्ति-भाव में विभोर हो उन्मत्त हो जाते हैं; कभी अपनी दीन-हीन और अति खीन दशा पर खेद प्रकट करके अपने इष्ट-देव से करुणा करने की प्रार्थना करते हैं; कभी अपने उपास्य-देव की अपने ऊपर अतिशय कृपा का अनुभव करके अपने कृतज्ञ-कातर अंतःकरण से प्रभु को धन्यवाद देते हैं; और कभी एक अत्यंत त्यागी विरक्त की भाँति, संसार से नाता तोड़ मुख मोड़कर एक ओर बैठ जाते हैं। यदि आप राग और द्वेष की भयंकर अग्नि से निरंतर प्रज्वलित संसार के महाविदाहक ताप से त्राण पाना चाहते हैं, तो हमारा नम्र निवेदन है कि आप इसको अवश्य पढ़िए और श्रीगोस्वामीजी के विमल मानस की मधु-मधुर माधुरी का रसास्वादन कीजिए। हमारे यंत्रालय में यह पवित्र ग्रंथ कई प्रकार से छापा गया है। नीचे-लिखे संस्करणों में से किसी एक संस्करण को मँगा लीजिए और जब सांसारिक चिंताओं से आपका मन बहुत घबरा जाय, तो इस ग्रंथ को पढ़कर शांति-सुख का अनुभव कीजिए।

विनय-पत्रिका

मूल-मात्र। काग़ज़ और छपाई उत्तम। पृष्ठ-संख्या १६६, मूल्य ।-)

विनय-पत्रिका

सटीक। टीकाकार बा० बैजनाथजी। इस टीका की भाषा अति सरल है। टीका अति विशद है। काग़ज़ और छपाई उत्तम। पृष्ठ-संख्या ५१६; मूल्य २॥)

विनय-पत्रिका

सटीक। डुमराँव-निवासी श्रीयुत बाबू शिवप्रकाश-कृत। यह टीका वेदांत-पक्ष को लेकर लिखी गई है। भगवद्भक्तों और वेदांत-प्रेमियों को अवश्य देखना चाहिए। काग़ज़ और छपाई उत्तम। पृष्ठ-संख्या ३५६; मूल्य ॥।≈)

विनय-पत्रिका

सटीक। टीकाकार अनेक ग्रंथों के रचयिता और रामचरित-मानस पर सुप्रसिद्ध बाल-बोधिनी टीकाकार श्रीयुक्त पं० सूर्यदीनजी शुक्ल। इसमें मूल कविता के थोड़े-थोड़े शब्द खड़ी पंक्ति में देकर उसके सामने प्रत्येक शब्द का अर्थ दिया गया है। पद-च्छेद, शब्दार्थ, जान लेने के साथ ही टीका भी क्रम से पढ़ी जा सकती है। इसके सिवा वेदांत और भक्ति के ग्रंथों का आशय लेकर, प्रमाण के साथ, प्रत्येक भजन का तात्पर्य दे दिया गया है। पुस्तक ऐसे ढंग से लिखी गई है कि इसे थोड़े पढ़े-लिखे लोग भी अति सुगमता से समझ सकते हैं। काग़ज़ और छपाई अति उत्तम। पृष्ठ-संख्या ३०८; मूल्य १॥)

मिलने का पता—नवलकिशोर-प्रेस, लखनऊ

विहारी-सतसई

(संशोधित संस्करण)

यों तो "विहारी-सतसई" पर अनेक टीकाएँ तथा समालोचनात्मक ग्रंथ लिखे जा चुके हैं। लेकिन यह ग्रंथ अन्य टीकाओं से कई बातों में विशेषता रखता है। जैसे—

१—यह सबसे पुरानी टीका है और विहारी के सम-कालीन कृष्ण कवि-कृत है।

२—इसमें नायक-नायिका प्रति उक्ति तथा भेद विचार-पूर्वक दरशाया गया है।

३—दोहे का पूरा भाव लेकर कवित्त-सवैयों में नीचे उसकी टीका की गई है। ऐसी ही अनेक बातें हैं, जो विचारवान् पुरुष स्वयं विचार सकते हैं।

इसकी भाषा विशेषतः व्रज-भाषा और बुँदेलखंडी का मिश्रण है। महाकवि विहारी ने अपने एक-एक दोहे में इतने अधिक भाव भर दिए हैं कि पढ़नेवालों को उनका अर्थ समझकर आश्चर्य होता है। इनकी कविता में प्रकृति-निरीक्षण, भाषा-प्रौढ़ता, भाव-गंभीरता, स्वाभाविक वर्णन, अतिशयोक्ति की पराकाष्ठा तथा मानुषी प्रकृति का सच्चा और हृदय-ग्राही चित्र है। इस पुस्तक को हिंदी-साहित्य का शृंगार कहना अति उत्तम होगा। पृष्ठ-संख्या २००; मूल्य नाम-मात्र केवल १)

शिवराज-भूषण

यदि महाकवि भूषण की वीर-रस-पूर्ण कविता का आनंद लेना चाहते हैं; यदि हिंदू-सूर्य महाराज शिवाजी के वीरता-पूर्ण पवित्र चरित्र को पढ़कर हृदय को देश-भक्ति के भावों से परिपूर्ण करना चाहते हैं, तो इस शिवराज-भूषण को अवश्य मँगाकर पढ़िए। पृष्ठ-संख्या ७४; मूल्य ।)

नवीनसंग्रह

(अठारहवाँ संस्करण)

पुस्तक क्या है, व्रज-भाषा-काव्य का निचोड़ है। इसमें सभी अच्छे-अच्छे व्रज-भाषा के कवियों की नवरस-मयी कविताओं का बड़े परिश्रम से संग्रह किया गया है। जो व्रज-भाषा की सरस कविता के प्रेमी हैं, उन्हें इसकी एक प्रति अवश्य मँगाना चाहिए। पृष्ठ-संख्या १२५; मूल्य ।=)

मिलने का पता—**नवलकिशोर-प्रेस, लखनऊ**

गोस्वामि तुलसीदास के अनूठे ग्रंथ-रत्न

कवितावली रामायण

सटीक। टीकाकार, मानपुर-निवासी बाबू बैजनाथजी। टीका अति सरल भाषा में की गई है। इसमें भगवान् रामचंद्र का समस्त जीवन-चरित्र अर्थात् रामायण के सातों कांडों की कथा अति मनोहर कवित्तों में वर्णन की गई है। जो लोग तुलसीदास-कृत 'मूल कवितावली' को न समझ सकते हों, उन्हें इस 'सटीक कवितावली' को अवश्य ख़रीदना चाहिए। पृष्ठ-संख्या ४२४ ; मूल्य १=)

गीतावली रामायण

सटीक। टीकाकार वही। इसमें भी भगवान् रामचंद्र का जन्मोत्सव, बाल-लीला, विश्वामित्र-यज्ञ-रक्षण, जानकी-स्वयंवर, धनुर्भंग, परशुराम-संवाद, वन-गमन, जानकी-हरण, रावणवध, भरत-मिलाप और राज्याभिषेक आदि रामायण की प्रायः समस्त कथाएँ अनेक प्रकार की मनोहर राग-रागिनियों में वर्णित हैं। पृष्ठ-संख्या ४५८ ; मूल्य १।)

गीतावली रामायण

मूल-मात्र। काग़ज़ और छपाई अति उत्तम। पृष्ठ-संख्या २३० ; मूल्य ।-)॥

तुलसीसतसई

मूल-मात्र। इसमें सात सौ दोहे हैं, जिनमें श्रीगोस्वामि तुलसीदासजी ने, भक्ति, ज्ञान और नीति की सैकड़ों अमूल्य शिक्षा-प्रद बातें कूट-कूटकर भरी हैं। श्रीगोस्वामीजी की रामायण या विनय-पत्रिका पढ़ चुके हों, उन्हें सतसई भी अवश्य पढ़ना चाहिए। पृष्ठ-संख्या १०० ; मूल्य ≡)

तुलसीसतसई

सटीक। टीकाकार, बाबू बैजनाथजी। जो 'मूल सतसई' न समझ सकते हों, उन्हें चाहिए कि वे इस 'सटीक सतसई' को ख़रीदें। सर्व-साधारण ने इसे इतना पसंद किया है कि इसकी हज़ारों कापियाँ आज तक बिक चुकी हैं। पृष्ठ-संख्या ४६२ ; मूल्य १।)

कुंडलिया रामायण

सटीक। इस अत्युत्तम रामायण में गोसाईंजी ने सातों कांडों की कथा कुंडलिया-छंदों में वर्णन की है। टीकाकार हैं मानपुर-निवासी बाबू बैजनाथजी। पृष्ठ-संख्या ३२० ; मूल्य ॥)

नवीन पुस्तक ! नवीन पुस्तक !! नवीन पुस्तक !!!

श्रीरामचरित-मानस का सार-तत्त्व या प्राण

श्रीमानस-रामायण-प्रश्नोत्तरार्थ-प्रकाश

लेखक

वैष्णव-साधु-समाज में शिरोमणि, मानस-रामायण के अद्वितीय वक्ता, श्रीअयोध्यांतर्गत श्रीजानकी-घाट-निवासी, निखिल-शास्त्र-निष्णात महात्मा श्री १०८ पं० रामवल्लभाशरणजी महाराज के अनन्य सत्संगी और प्रिय शिष्य श्रीसियारामलषणदासजी रामायणी। मूल्य ॥=)

यह ग्रंथ मानस-रामायण का यथार्थ दर्पण है। ग्रंथ दो भागों में विभक्त है। पूर्वार्द्ध में मानस की रचना पर विचार है, जिसमें दिखाया गया है कि रामचरित-मानस में चार संवाद-रूपी अपार घाट हैं, जिनमें सब ४१ मूल प्रश्न किए गए हैं ; और उन ४१ मूल प्रश्नों के उत्तरों का प्रसार ही रामचरित-मानस है। किस प्रश्न में किसके द्वारा क्या बात पूछी गई है और उसका किसने, क्या उत्तर, कहाँ से कहाँ तक दिया है, इस विषय को अत्यंत मनोरंजक और पांडित्य-पूर्ण शैली से वर्णन किया गया है और यथास्थान २० अन्य ग्रंथों के प्रमाण देकर विषय को और स्पष्ट कर दिया गया है। दूसरे भाग अर्थात् उत्तरार्द्ध में, श्रीगोस्वामीजी के मुख्य-मुख्य सिद्धांतों को, जीवों के प्रबोध के लिये, प्रश्नोत्तर-रूप में दिखलाया गया है। उत्तरार्द्ध में १४८ प्रश्न हैं, जो इस शैली से चुनकर रक्खे गए हैं कि उनके समझ लेने से श्रीगोस्वामीजी के उपदिष्ट तत्त्व का बोध हो जाता है। जो लोग एक परम वैष्णव के मुख से, मानस को तत्त्व-रूप से समझना चाहते हैं, उन्हें यह ग्रंथ अवश्य पढ़ना चाहिए। ग्रंथ बिलकुल नवीन शैली से लिखा गया है। आरंभ में श्रीगोस्वामीजी का एक चित्र है। आकार १६×२४$\frac{१}{८}$ पृष्ठ-संख्या १७६।

मिलने का पता—नवलकिशोर-प्रेस, लखनऊ

५००) रु० उस सज्जन को इनाम देंगे जो हमारी किसी भी पुस्तक को नक़ली साबित कर दिखलावे, असली पुस्तक अन्यत्र न मिलेगी

असली

पुराना

कशमीरी कोकशास्त्र

रंगीन ८४ चित्र

सहित

इसी पुस्तक को लोग ३) रु० में बेच रहे हैं। पाठक उनकी चिकनी-चुपड़ी बातों में पड़कर धोखे में न पड़ें। क़ी०

पद्मिनी, चित्रिणी, संखिनी, और हस्तिनी तथा शशक, वृषभ, मृग और अश्व।

इन चारों प्रकार के स्त्रियों तथा पुरुषों की पहचान, उनका वर्णन, स्त्री-पुरुष का जोड़ा, स्त्री को आयु-भर स्वस्थ सुंदर, सौंदर्य की देवी और अपनी आज्ञा माननेवाली बनाए रखना, मन-चाही सुंदर तथा बलिष्ठ संतान उत्प करना, गर्भ में पुत्र-पुत्री की अथवा नेक व बद की पहचान, स्त्री-पुरुषों के जोड़ों का मिलान, संतान उत्पन्न हो तो ज़रूर हो, पूरे सौ वर्ष तक हृष्ट-पुष्ट, सुंदर और स्वस्थ बने रहना, कुमारी-भेद और लक्षण, प्रेम, प्रीति, पार स्त्री और पुरुष का परस्पर संबंध, स्त्रियों का रजोदर्शन अर्थात् ऋतु, उसका सामयिक प्रभाव, सहवा विलासियों के लिये सहवास के नियम, गर्भाधान, चौरासी आसन, गर्भपरीक्षा, गर्भोत्पत्ति, गर्भवृद्धि, गर्भ रोक प्रसव और शिशुपालन, स्त्रियों के शृंगार, उनके संबंध में समस्त यौवनवर्द्धक आनंददायक मसाले, स्त्री-पुरुषों कोकशास्त्र-संबंधी रोग और उनकी अद्भुत गुणकारी औषधियाँ, कामोद्दीपक दवाएँ, वशीकरण, स्त्री-पुरुषों की तसवीरें तथा ८४ आसनों के दिलचस्प हालात दर्ज हैं। यही नहीं, स्त्री तथा पुरुषों की गुप्त बीमारियाँ आदि कई ऐसी दर्ज हैं, जो कि यहाँ लिखना उचित नहीं ; पाठक समझ लें। क़ीमत सजिल्द डाक-महसूल-सहित २) रु०

असली पुराना मिश्र का जादू सचित्र रंगीन

(मिश्र-देश के प्रचलित जादू-विद्या की एक हस्त-लिखित पुस्तक का तर्जुमा) अपनी छाया, सूर्य, शनि, चंद्र मंगल आदि ग्रहों के संग करना (मूसा फ़रऊन के समय की विचित्र बातें आप मँगा करके देख लो)

(१) वशीकरण, (२) सूर्यवशीकरण, (३) चंद्रवशीकरण, (४) मंगल, (५) शनिवशीकरण आदि प्रत्ये ग्रह का वशीकरण और इसके सिवा अन्य कई चीज़ों के वशीकरण करने के लिये पूर्ण विधियों से युक्त चकित कर वाले नुस्ख़े दर्ज किए हैं। उसके सिवा हर तरह के साधन रोगों पर करना, चाहे कोई रोग हो और औषधि लाभ न होता हो। घर बैठे और देशों की सैर करना, पवन में उड़ते फिरना, जिसको चाहना बस कर लेना, दृष्टि गुप्त हो जाना, दूसरे रूप में प्रकट होना, दूर-दराज़ की वस्तु मँगवा लेना, देव,परी, जिन्नों को अपने अधिकार में रख और इच्छानुसार उनसे काम लेना इत्यादि—तत्पश्चात् ऐसे साधन जो दैनिक आवश्यकताओं के लिये अत्यंत लाभ कारी हैं। यदि यह पुस्तक लिखे अनुसार न हो तो वापस कर दो। क़ीमत सजिल्द सिर्फ़ १।।=) डाक-महसूल-सहित

फ़रंगी और हिंदुस्तानी मदारी अर्थात् भानमती का पिटारा

यह पुस्तक योरप और हिंदुस्तानी मदारियों का पिटारा है। इसमें अंडे, बोतल, गिलास, फुलझड़ी, रा ताश के हर प्रकार के खेल, भूत, प्रेत, जिन्न उतारना, अँधेरे में रोशनी कर देना, मुँह से आग निकालना, ह पर आग रक्खें तो हाथ न जले, मनुष्य को क़त्ल करके ज़िंदा कर देना, आम का बूटा, सरसों हाथों पर जमा विना भट्ठी जुआर-चने भून लेना, आग पर खाना न पके, बँधे मनुष्य को छुड़ाना, क़ैदी की बेड़ी खुल जावें, का की कढ़ाई में पकौड़े तलना, कमरे में हर रंग की रोशनी हो, जादू की स्याहियों के नुस्ख़े जिनसे लिखा हु अन्य मनुष्य पढ़ न सके और सैकड़ों तमाशे बहुत ही सरल रीति से लिखे हैं। मूल्य १।।) डाक-महसूल-सहित।

१,०००) रुपया माहवार शर्तिया कमा लो

इस पुस्तक में ५२८ हुनर ऐसे छपे हैं, जिनमें से एक भी अपने मतलब का चुन लिया जावे, तो १,००० रुपया महीना कमाए जा सकते हैं। मसलन् गिलट-साज़ी, फ़ोटोग्राफ़ी, दंदानसाज़ी, कुश्ते बनाना, बाल उड़ाने का पाउडर, साबुन, बाल काले करने का अँगरेज़ी ढंग का ख़िजाब और बाल उम्र-भर न पैदा होने का नुस्ख़ा, बढ़ाने का तेल, हीरा-मूँगे बनाना, शीशा साफ़ करना, पत्थर जोड़ना, मोमबत्ती, शोरा, गंधक के गिलास, आतशबा हर तरह के साबुन, इत्र, तेल, फुलेल, सब रंगों के कपड़े रँगना, अँगरेज़ी ढंग के खाने, डबल रोटी, बिस मिठाई, विलायती पानी, अचार, मुरब्बे, चटनियाँ, तरह-तरह की बीमारियों के इलाज और नुस्ख़े १०८ बीमारि की एक दवा का नुस्ख़ा, सुरमे आदि ५२८ हुनर दर्ज हैं मूल्य डाक-महसूल-सहित सजिल्द १।।)

सच्ची करामात १।।), मुरदा रूहों से मुलाक़ात १।।।), ज्योतिष-रत्न-भंडार १=), बूटी-प्रकाश १।।), इलाज १।।), वृक्षावली १।।), परलोक १।।), चरित्र-संग्रह १।।), चीन व बर्मा का जादू २), कामरूप देश का जादू १

३५ **मिलने का पताः—लक्ष्मणदास आहूजा, ऐंड सन्स, M.L. ३ ब्रांडर्थ रोड ला**

सर्व प्रकारके ज्वरको १ दिन में भगानेवाला

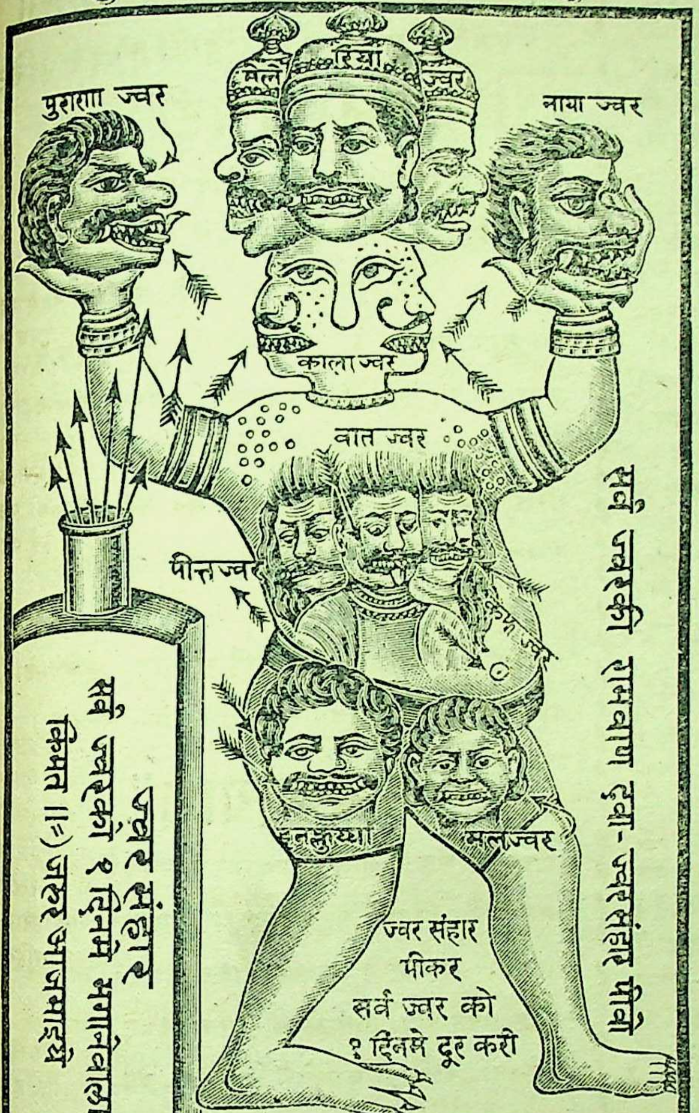
पुराणा ज्वर
मैले
रिया
ज्वर
नाया ज्वर
काला ज्वर
वात ज्वर
पीत्त ज्वर
नतुरथा
मलज्वर
सर्व ज्वरकी रामबाण दवा-ज्वरसंहार पीवो
ज्वर संहार
सर्व ज्वरको १ दिनमें भगानेवाला
किमत ॥=) जरूर आजमाइये
ज्वर संहार
पीकर
सर्व ज्वर को
१ दिनमें दूर करो

ज्वर संहार

शर्त लगाके, बाज़ी मारके एक आने का स्टांप लगाकर इक़रार-नामा लिख देंगे कि नया बुख़ार, पुराना बुख़ार, शीत (जाड़ा लगकर आनेवाला) ज्वर, डेंगूज्वर, आसाम का काला ज्वर, ख़राब हवा-पानी का ज्वर, जूड़ी-ज्वर, रोज़ आनेवाला ज्वर, दूसरे दिन, तीसरे दिन, चौथे दिन आनेवाला ज्वर, अमावस-पूर्णिमा को आनेवाला ज्वर, पीलही-यकृत-संयुक्त ज्वर, कुनैन से अटका ज्वर और सब क़िस्म का बुख़ार, अंतरा, तिजारी, चौथिया, फ़सली मलेरिया, कोई दवाई से नहीं जाता हो वैसा ख़राब ज्वर भी हमारा (ज्वरसंहार) पीने से १ ही दिन में आपको छोड़कर नहीं भाग जायगा, तो क़ीमत ॥=) आना ज़रूर वापस देंगे। ज़रूर आज़माकर देखिए। ३ सी० १॥) ६ सी० ३।=) दर्जन ६॥)

पं० सीताराम वैद्य,
५३, बाँसतल्ला-स्ट्रीट, कलकत्ता।

तीन दिन में तीनों का मुँह काला

जिसका दिल हो, आज़माकर देख ले। शर्त लगाके, बाज़ी मारके, एक आने का टिकट लगाकर, इक़रार-नामा लिख देंगे कि नई पुरानी ख़राब-से-ख़राब

गर्मी-सुज़ाक-बाघी को

हमारी दवा से ३ दिन में शर्तिया लाभ नहीं मालूम होगा, तो ख़ुशी के साथ क़ीमत वापस देंगे। गर्मी, सुज़ाक, बाघी को दूर करने में हमारी दवा सब दवाइयों से अच्छी है। हज़ारों रोगी आराम हो चुके हैं। ज़रूर आज़माइए और लाभ उठाइए।

पं० सीताराम वैद्य, नं० ५३, बाँसतल्ला-स्ट्रीट, कलकत्ता

विश्व-विद्या-भंडार

इस एक ग्रंथ में २८ विद्या और अनेक पुस्तकों का सार लिखा है, जिसे विचारकर मनुष्य "सर्व-गुण-निधान" बन सकता है। यथा—ईश्वर-स्तुति चारों वर्णों और आश्रमों के धर्म-कर्म। वेद, स्मृति, षट्-शास्त्र और पुराणों का विषय-परिचय। तंत्र-शास्त्र—मारण, मोहन, वशीकरण आदि के यंत्र-मंत्र। सामुद्रिक-शास्त्र—हाथ देखकर फल कहना। स्वप्न-शास्त्र—स्वप्नों का शुभ-अशुभ फल जानना। शकुन-शास्त्र—छींक, बिल्ली, कुत्ता आदि के शकुन-फल और संवत् की तेजी-मंदी जानना। स्वर-शास्त्र—नासिका के स्वर से शुभ-अशुभ फल कहना। ज्योतिष-शास्त्र—जन्म-पत्र बनाना, फल कहना, मुहूर्त, प्रश्न, और मृत्यु बताना। हठयोग-शास्त्र—योग-विधि, प्राणायाम से त्रिकालदर्शी बनना। ऐंद्रजालिक-विद्या—अर्थात् सिद्ध करामात और जादूगरी। शिल्प-शास्त्र—साबुन, रबर, मुहर, पेंसिल, तांबूल-विहार, ख़िज़ाब आदि बनाना। काम-शास्त्र—स्त्री-पुरुषों के जाति-भेद, सहवास-विधि, आसन, षट्-ऋतु-विहार। अश्व-शास्त्र—घोड़े के जाति-भेद, बुरे-भले लक्षण और औषधि। कृषि-शास्त्र—खेती से उत्तम फ़सल प्राप्त करना। नाट्य-शास्त्र—नाटक खेलने की विधि। वास्तु-शास्त्र—मकान बनाने के नियम। गान-विद्या—रागों के नाम, समय, स्वर-साधन, रस-भरे पद—ठुमरी, ग़ज़ल आदि। रसायन-विद्या—अनेक रसायनों का वर्णन। धनुर्विद्या—युद्ध-संबंधी बातें। वैद्यक-शास्त्र—रोगों की चिकित्सा तत्काल गुणकारी गुप्त नुस्ख़े। नीति-शास्त्र—नीति के उत्तम-उत्तम श्लोक भाषा-सहित। जल-तरण-विद्या—नदी में तैरने की विधि। ब्रह्म-विद्या—ब्रह्म-प्राप्ति का वर्णन। मिस्मरेज़िम-विद्या—मरी आत्मा को बुलाकर आश्चर्य-दायक बातें जानना। आदर्श-चरित्र—तिलक, गाँधी, मालवीयजी, लक्ष्मीबाई, शकुंतला, आदि के जीवन-चरित्र। काव्य-संग्रह—पद्माकर आदि पुराने मैथिलीशरण आदि नवीन कवियों की रस-भरी कविताएँ। उपन्यास-गल्प-प्रहसन (हँसी दिलाने की बातें) भारत के बड़े-बड़े कारख़ानों के पते, पोस्टऑफ़िस, तार, रेलवे, चुंगी और कचहरियों के जानने योग्य नियम, गणित के गुरु, ब्याज की जंत्री आदि कहाँ तक लिखें, देखने पर आप स्वयं प्रशंसा करेंगे। मूल्य १॥) जो कि गुण और ४५० पृष्ठों की संख्या के देखते हुए न्यवछावर-मात्र है। डाक-महसूल ।)

पता—मंत्री,

हिंदी-सेवा-सदन, अलीगढ़ सिटी

मसीहउलमुल्क, हकीम अजमलख़ाँ देहलवी द्वारा प्रशंसित गवर्नमेंट से रजिस्ट्री की हुई

"बालरक्षा घुटी"

वैद्यक-शास्त्र के अनुसार स्वादिष्ट मीठी बनी हुई तैयार है। इसको पिलाते रहने से बालक, निरोग, पुष्ट तथा प्रसन्न रहकर सब रोगों से बचे रहते हैं। रोगी बालकों के ज्वर, अजीर्ण, दस्त, दूध की उलटी करना, ऐंठा, सर्दी, कफ, खाँसी, पसली चलना, चौंक पड़ना, पाख़ाने में कीड़े निकलना, पेट बढ़ना, शरीर लटना और दाँत निकलने के सब विकार निश्चय आराम होते हैं। कमज़ोर बालक मोटे-ताज़े और ताक़तवर हो जाते हैं। मूल्य फ़ी शीशी ॥) डाक-महसूल ।=) "बिजली का लाकिट" दाँत निकलने के वक़्त लाभ पहुँचाने के लिये स्वयं प्रसिद्ध है। मूल्य ॥)

"कामकल्याण"

यह दवा शुद्ध शिलाजीत, मकरध्वज, सुवर्णबंग, मोती, कस्तूरी और विधारा आदि तत्काल गुणकारी शास्त्रोक्त औषधियों से बनी है। इसके सेवन से २० प्रकार के प्रमेह, स्वप्न-दोष, वीर्य-संबंधी सब विकार, शारीरिक निर्बलता, दिमाग़ी कमज़ोरी, आलस्य, पेट का साफ़ न रहना, वृद्धावस्था के आरंभिक दोष और नपुंसकता का नाश होकर बल और वीर्य की अत्यधिक वृद्धि होती है। मूल्य २० दिन की ख़ुराक का २) डाक-महसूल ।=) "नपुंसक प्रमोद तिला" यह रामबाण औषधि है। मूल्य २) डाक-महसूल ।=)

पता

गवर्नमेंट संस्कृत-परीक्षा पास, मेडल-प्राप्त

पं० रामचंद्र वैद्य-शास्त्री

सुधा-वर्षक औषधालय, अलीगढ़ सिटी

हिंदी-संसार में नई बात।

हिंदी-पुस्तक-एजेंसी की हाल में दो शाखाएँ और खुल गई हैं:—

१-सिविल हास्पिटल-रोड, देहली, २-उर्दू बाज़ार, गोरखपुर और बुलानाला, काशी में पहले से ही है।

हिंदी-पुस्तकों की माँग बढ़ती हुई देखकर एवं काशी-ब्रांच की सफलता के आधार पर ही यह साहस किया गया है। आशा है कि स्थानीय और बाहर के हिंदी-प्रेमी इन शाखाओं से लाभ उठाकर हमारा उत्साह बढ़ावेंगे।

हमारे यहाँ से तीन पुस्तकमालाएँ प्रकाशित होती हैं।

१-हिंदी-पुस्तक-एजेंसीमाला, २-सस्ती ग्रंथमाला, ३-नंद-ग्रंथमाला

एजेंसीमाला की पुस्तकों की छपाई सुंदर होते हुए भी अन्य प्रकाशकों से पुस्तकों का मूल्य बहुत ही कम रक्खा जाता है। यह तो आप जानते ही हैं, तिस पर भी सस्ती ग्रंथमाला का मूल्य बहुत ही कम रखा जाता है। नंद-ग्रंथमाला में तो केवल लागत-मात्र मूल्य पर ही धार्मिक ग्रंथ प्रकाशित किए जाते हैं।

हिंदी-पुस्तक-एजेंसीमाला की हाल की प्रकाशित नई पुस्तकें।

भारत में कृषिसुधार—लेखक, प्रो० दयाशंकरजी दुबे एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, सचित्र पुस्तक। मूल्य १॥)

भक्तियोग—लेखक, श्रीअश्विनीकुमार दत्त। आध्यात्मिक विषय का एक अनूठा ग्रंथ। मूल्य १॥)

तिब्बत में तीन वर्ष—लेखक, जापानी यात्री कावागुची। इसके द्वारा हिमालय, मानसरोवर तथा तिब्बत के विषय में पूरी जानकारी हो जाती है। मूल्य २॥)

संग्राम—लेखक, श्रीयुक्त प्रेमचंदजी। नाट्य-क्षेत्र में यह प्रेमचंदजी की पहली मौलिक रचना है। मूल्य १॥)

चरित्रहीन—लेखक, बँगला के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार श्रीशरच्चंद्र चट्टोपाध्याय। यह उपन्यास क्या है, हृद्गत भावों का प्रत्यक्ष रूप है। पढ़कर मुग्ध हो जाइएगा। सजिल्द मूल्य ३)

राजनीति-विज्ञान—लेखक, सुखसंपतिराय भंडारी। यह राजनीति-विषयक अनूठा ग्रंथ है। मू० १)

वीरकेशरी शिवाजी—लेखक, प्रसिद्ध इतिहासकार पं० नंदकुमारदेव शर्मा। छत्रपति शिवाजी के संबंध में इतना बड़ा और विस्तृत ग्रंथ आज तक नहीं निकला। पुस्तक ऐसी रोचक है कि पढ़ने में उपन्यास का-सा मज़ा आता है। हिंदी में अब तक ऐसी जीवनी नहीं निकली। सजिल्द का मूल्य ४)

भारतीय वीरता—लेखक, स्वर्गीय रजनीकांत गुप्त। यह पुस्तक प्राचीन भारत के गौरव का दिग्दर्शन कराती है। ८ चित्रों से सुशोभित तथा टाइटिल-पेज सुंदर भाव-मय चित्र से आभूषित। १॥)

रागिणी—लेखक, मल्हारराव जोशी एम्० ए०, अनुवादक पं० हरिभाऊ उपाध्याय। यह उपन्यास क्या है, अध्यात्म, तर्क तथा दर्शन-शास्त्र का ख़ज़ाना है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य ४)

सस्ती ग्रंथमाला

आनंदमठ—लेखक, उपन्यास-सम्राट् स्व० वंकिमचंद्र चटर्जी। पृ० सं० २०० मूल्य ॥)

पश्चिमी सभ्यता का दिवाला—लेखक, मि० स्टोक्स। पृ० सं० ४६ मूल्य ।)

संसार का सर्वश्रेष्ठ पुरुष—संग्रहकर्ता, पं० छविनाथ पांडेय बी० ए०। पृ० सं० १४० मूल्य ॥)

भक्ति—लेखक, स्वामी विवेकानंद। मूल्य ।=)

नंद-ग्रंथमाला

श्रीमद्भगवद्गीता (मूल) बंबइया बड़े टाइप में। पृ० सं० २०४ सजिल्द पुस्तक का मूल्य ।=)

रामायण—संपादक, रामदास गौड़, सुंदर बंबइया टाइप में। पृ० सं० ६५२ सजिल्द पुस्तक का मूल्य १)

नोट—॥) प्रवेश-शुल्क जमा करके एजेंसीमाला के स्थायी ग्राहक बननेवालों को माला की प्रकाशित पुस्तकें पौने मूल्य में एवं अन्य दोनों मालाओं की पुस्तकों पर १२॥) सैकड़ा कमीशन मिलेगा। इसके सिवा हर नई प्रकाशित पुस्तक के साथ अन्य प्रकाशकों की प्रायः १०) की उपयोगी पुस्तकें जिनकी सूची सूचना के साथ भेजी जाती है, पौने मूल्य में दी जाती हैं।

पता—हिंदी-पुस्तक-एजेंसी १२६, हरिसन-रोड, कलकत्ता।

अपूर्व आविष्कार

शुभ्र सुप्रसव चूर्ण

गर्भिणी जब प्रसव-काल में बिलकुल शिथिल हो जाती है और बच्चा होने की आशा नहीं रहती है, उस समय इस दवा के देते ही गर्भिणी में नए बल का संचार होकर फ़ौरन् बच्चा पैदा हो जाता है।

बिना तकलीफ़ अफ़ीम छोड़ने की दवा

चाहे कितना ही पुराना और कितनी ही मात्रा का खानेवाला अफ़ीमची क्यों न हो, यह दवा आदत छुड़ाकर ताक़त प्रदान कर नई ज़िंदगी पैदा कर देती है।

पता—कविराज श्रीकृष्णचंद्र विशारद
१६०/१२४ ८८, लोअर चितपुर रोड, कलकत्ता

"केवल १।) में"

यदि आप डॉक्टर-वैद्यों को अधिक फ़ीस देना और बदज़ायक़े कड़वी ओषधियों का सेवन करना नहीं चाहते, तो आज ही "पं० दाऊदयालु शास्त्री" का आविष्कृत और परीक्षित "सर्वरोगामृत" एक शीशी मँगाकर सेवन कीजिए जो कि साधारण अनुपानों से हैज़ा, प्लेग, सूज़ाक, बवासीर, बुख़ार, पेचिश, क़ब्ज़ियत, दिल और दिमाग़ की कमज़ोरी, शिर, दाँत और गले का दर्द, गले का बैठ जाना, नकसीर, खुजली, दाद, मुँह में छाले या ख़ून गिरना, मासिक धर्म का अधिक होना इत्यादि रोगों को तुरंत फ़ायदा पहुँचाती है। इसकी अधिक प्रशंसा आप मँगाने पर स्वयं ही करेंगे। डाक-व्यय अलग।

पता—पं० दाऊदयालु शास्त्री
४०/१५१ श्रीगतश्रम मंदिर, मथुरा।

घर बैठे ज्योतिष शिक्षा!

वर्षफल बनाना, कुंडली-फल कहना, इत्यादि फलित ज्योतिष की विधियाँ पत्र-व्यवहार द्वारा सिखाई जाती हैं। केवल दो रुपए २) शुल्क भेजकर घर पर ही उक्त विद्या प्राप्त हो सकती है। हिंदी या अँगरेज़ी किसी भी भाषा में वर्षफल तैयार करके सिर्फ़ एक रुपए १) में भेजा जाता है। पत्र-व्यवहार करने का पताः—

अध्यक्ष—"ज्योतिष भवन"
३६/१४४ पो०—मुरादपुर (पटना)।

ख़राब हारमोनियम ख़रीदकर अपना पैसा ख़राब न कीजिए। यदि शौक़ है, तो

मोहिनी फ़्लूट

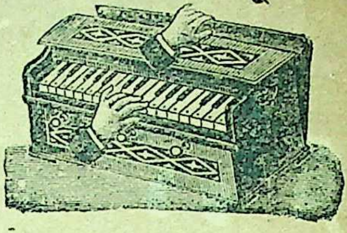

ख़रीदिए।

अत्यंत प्रसिद्ध होने के कारण इसकी बावत कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। केवल यही एक हारमोनियम है, जो हिंदुस्तानी गानों और ऋतु के अनुकूल है। स्वर मीठा, बनावट मज़बूत और देखने में मनोहर है। सिंगिल रीडवाले का मूल्य २५), ३०), और ३५), डबल रीडवाले का ४०), ४५) और ५०) है। सितार इसराज और तबले भी हमारे यहाँ सस्ते और बढ़िया बनाए जाते हैं। सूचीपत्र मुफ़्त मँगाइए। ५) आर्डर के साथ पेशगी भेजिए और समीप के रेलवे-स्टेशन का पता लिखिए।

नक़ली से सावधान।

सिर्फ़ नीचे लिखे पते पर मँगाइए—

Mohini Flute Co.,
9–2 (M), Arpuli Lane, Calcutta.

HIGH CLASS RUBBER STAMPS.
Straight Lines As /8/ to /14/
Oval, Spuare; Round etc /14/ to 2/8
Catalogue Free.
RUBBER STAMP CO., UDAIPUR (MEWAR)

Office Stamps of any names, per doz. Rs. 1/8/- Beautiful Pictures, Rubber Stamps of Hindu gods, National Leaders. each -/3/-, per doz. Rs.2/-, Violet Self Inking Pads per doz. Rs.|2/8/-, Pad and Ink free, Postage -/6/-. Agents wanted.

☞ **Rubber Stamp Co.,**
१४/२१६ Udaipur (Mewar.)

नवीन हिंदुस्थानी दो तरफ़ा १०इंची

"हिज़ मास्टर्स वायस" रिकार्ड

His Master's Voice

प्रत्येक का मूल्य ३॥) Rs 3/8/- each.

P. 6240. रोशनारा	जो हो शौक़ीन पहिननेवाली मोरी चुरियाँ लेलो मोल ।	दादरा
	रेलगाड़ी मे उतरा फिरंगी मैं बंदा कर लेती	,,
P. 6241. अबदुल्ला	शहंशाह जाँ पनाह को बंदे का आदाब	चौ० अ०
	कुल रजपूतों में हुवा रुतबा तेरा बलंद	,,
P. 6242. भाई कला	तोहमत तुम्हारे इश्क़ की सुभ पर लगी हुई । … … …	ग़ज़ल
	यास का आलम न था और बेकसी छाई न थी … … …	मालकौस
P. 6243 भाई फ़ैज़	मारो भी तुम, जिलाओ भी तुम, तुमको क्या कहूँ … …	ग़ज़ल
	जब तुम्हीं ठहरे हमें हर दम सताने के लिये … … …	सिंधड़ा
P. 6244. ग़ुलाम नबी	तेरी अबरू मदे बिस्मिल्लाह से मिलती हुई … … …	भाँड़
	दर पर नबी के पहुँचूँ दिल में ये आ रही है … … …	भैरवी
P. 6245 पं० नाथूलाल	अलख नाम धुन लागी … … … … …	काफ़ी
	सुनो दिल को लगा प्यारे … … … … …	ग़ज़ल काफ़ी
P. 6246 प्यारू क़व्वाल	ठहर जावो वो अजमेर के जानेवालो … … …	ग़ज़ल क़ौवाली
	याद क़दे नशे में मेरा दम निकल गया … … … …	,,
P. 6247 मास्टर रहित	तिहारा जोबन कोला खाय चमरी … … … …	पहाड़ी
	इश्क़ को और क्यों डरे और करके क्यों पछताय … … …	दस टकी
P. 6248 मास्टर सादिक़	बता नसीब कि हम बे-वतन किधर जायें … … …	ग़ज़ल
	गुलशने हिंद में अब कोई भी दिलशाद नहीं … … …	,,
P. 6249 पं० विष्णुदत्त	निगाह फेर के उज्रे विसाल करते हैं … … …	भाँड़
	दिल है तो तेरे वस्ल के अरमान बहुत हैं … … …	ग़ज़ल
मास्टर निसार—		
P. 6215	अगर हम ख़ाके पाको … … … … …	भैरवी
	रंग रंग कीनी मोरी चुँदरिया … … … … …	ठुमरी
P. 6216	एरी देख सखियन … … … … …	बिहाग
	कहाँ लके जैयो गवनवाँ राम … … … … …	ख़माच ज़िला
P. 6217	कब तक खिंचे रहोगे कब तक तनी रहोगी … … …	माँड
	कोयलिया मत कर पुकार … … … … …	,,
P. 6218	दई पिया बिन न आवे चैन … … … … …	भीम पिलास
	कृष्ण माधो राम … … … … … …	मालकौस
P. 6219	श्याम सनवाँ न मारो लगत कलेजा में तीर … … …	आसावरी
	ये मेरी ओढ़नी क्या है … … … … …	,,
P. 622	सरवगत अल्लाह … … … … …	सारंग
	पूछा न जायेगा जो वतन से निकल गया … … …	क़ौवाली
P. 6221 प्रोफ़ेसर बिनायत हुसेन	देखो कौन मूरख जावत निडर … … … … …	आसा
	सास ननद जा देख माँ मोरी … … … … …	भैरवी

दी ग्रामोफ़ोन कंपनी लिमिटेड, पोस्ट-बक्स नं० ४८, कलकत्ता (शाख़) बंबई

शेवरोले मोटरकार

सबसे सस्ती और सबसे अच्छी,

कच्ची सड़कों पर निहायत अच्छा

काम देती है ।

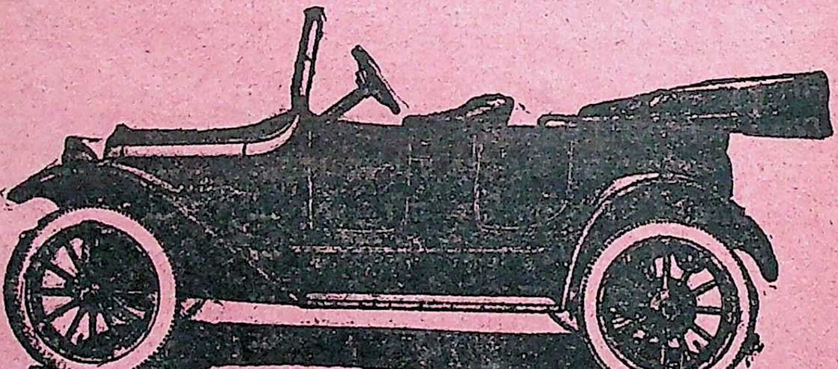

क़ीमत 3,200

अलावा किराया रेल ।

EDULJEE & Co.,

Motor Engineers & Coach Builders,

New Civil Line, Lucknow.

इडलजी एंड कंपनी,

नरही रोड,

लखनऊ

छप गया ! बेरोज़गारों के लिये रोज़गार तथा छप गया !!

हरएक गृहस्थी के लिये अतीव उपयोगी ग्रंथ

गुणों का ख़ज़ाना

स्व० स्वा० परमानंदजी-कृत । इस पुस्तक के पाँच अध्याय हैं । प्रथम अध्याय में जन्म से लेकर मरण-पर्यंत सब बीमारियों का वर्णन तथा उनके आज़माए हुए बड़े सस्ते फ़क़ीरी इलाज, दूसरे अध्याय में धातुओं और उपधातुओं की उत्पत्ति और उनके शोधन तथा मारण के सहज तरीक़े, तीसरे अध्याय में अनेक चीज़ों के बनाने के तरीक़े, जिनको बनाकर पुरुष सैकड़ों रुपए माहवार बड़ी आसानी से कमा सकता है, चौथे अध्याय में अनेक प्रकार के फ़क़ीरी आज़माए हुए कठिन रोगों के नुसख़े तथा हरएक प्रकार के तेल, अर्क़, शरबत आदि बनाने के तरीक़े और पाँचवें अध्याय में हरएक फल-फूल, सबज़ी, दूध आदि के गुण तथा अवगुण लिखे हैं । पुस्तक हरएक गृहस्थ को अपने पास अवश्य रखनी चाहिए, जिससे वह दिन-रात के कईएक रोगों से सहज में ही बच सके । पुस्तक की उत्तमता पढ़ने से मालूम होगी । ४०० पृष्ठ की बड़ी पुस्तक का दाम जिल्द-सहित केवल २) रक्खा है, ताकि सर्वसाधारण इससे लाभ उठा सकें । शीघ्र आज ही मँगाइए ।

कौटिल्य अर्थशास्त्र

संसार के प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ चाणक्य मुनि, जिन्होंने नंदराजाओं का नाश कर चंद्रगुप्त को राज्य पर बैठाया था, इसके मूल-लेखक हैं, उसी का हिंदी-अनुवाद प्रो० प्राणनाथजी ने किया है । २३०० वर्ष पहले भारत में जो-जो पेशे थे और जो जो अद्भुत अनोखी और अमूल्य वस्तुएँ भारतीय कला-कौशल से बनती थीं, उन सबका हाल इसमें है । राजनैतिक विषयों का तो यह भंडार है । जो आविष्कार योरप के महा-युद्ध के समय में हुए हैं, उनमें से बहुत ऐसे हैं, जो प्राचीन भारतीयों को मालूम थे । युद्ध के समय जर्मन-वालों ने एक विषाक्त धुआँ बनाया था और जब इसका प्रयोग किया, तो मित्र-सेना में हलचल मच गई और बड़ी हानि हुई थी । इस पुस्तक में ऐसे धुएँ के बनाने तथा प्रयोग करने की विधि लिखी है और भी अनेक अद्भुत बातें—जैसे महीने-भर भूख न लगे, जिनका अभी पाश्चात्य जगत् को कुछ पता नहीं—उन सबका सविस्तार वर्णन इसमें है । प्रत्येक शिक्षित मनुष्य को इसकी एक प्रति अपने पास अवश्य रखनी चाहिए । मूल्य ४)

सचित्र जैन-रामायण

केवल भाषा में । इसमें कईएक गुप्त रहस्य लिखे हैं, जिनका अन्य रामायणवालों ने उल्लेख तक नहीं किया । यह प्राचीन संस्कृत-ग्रंथ का अनुवाद है । ४५० पृष्ठ की पुस्तक का दाम केवल ३) है ।

बार्हस्पत्य अर्थशास्त्र

का सरल हिंदी-अनुवाद हिंदी-संसार के परिचित ला० कन्नोमलजी एम्० ए० जज-कृत । यह प्राचीन अर्थशास्त्र-विषयक सबसे पुराना ग्रंथ है । इसमें मूल-सूत्र, हिंदी-अनुवाद, विस्तृत भूमिका, कईएक उपयोगी टिप्पणियाँ (जिसमें प्राचीन समय के प्रचलित धर्मों, नगरों, पर्वतों, नदियों आदि का सविस्तार वर्णन है), तथा प्राचीन भूगोल-संबंधी दो चित्र भी दिए हैं । पुस्तक हरएक विद्या-प्रेमी को अवश्य पढ़नी चाहिए । बढ़िया जिल्द-सहित मूल्य केवल १॥) रक्खा है ।

डॉ० सर जगदीशचंद्र बोस

और उनके आविष्कार

लेखक—श्रीयुत सुखसंपतिराय भंडारी । सरस्वती-पत्र की समालोचनाः—इस पुस्तक में बसु बाबू की जीवनी तथा उनके आज तक के सब आविष्कारों का सविस्तार वर्णन है । बसु महोदय संसार-प्रसिद्ध हैं । अपने नए-नए आविष्कारों से उन्होंने योरप के बड़े-बड़े दिग्गज वैज्ञानिकों का मान-मर्दन किया है । पुस्तक की भाषा सरल और रचना-शैली मनोरम है । मूल्य केवल ॥=)

रतिरहस्य सटीक संस्कृत । मूल्य ३॥),
अनंगरंग संस्कृत १॥), पंचसायक संस्कृत २।),
रतिरत्नप्रदीपिका मूल अँगरेज़ी ३), नागर-सर्वस्व ४),

हर प्रकार की संस्कृत तथा हिंदी-पुस्तकें मिलने का एक-मात्र पताः—

मोतीलाल बनारसीदास, पंजाब-संस्कृत-पुस्तकालय, सैदामिट्ठा, लाहौर ।

आयुर्वेद का अपूर्व आयोजन **अल्प मूल्य में अमूल्य धन की रक्षा**

वैद्य ख़्यालीराम फ़ार्मेसी, बियाबानी, इंदौर।

आयुर्वैदिक, तिब्बी तथा डॉक्टरी आदि सम्मेलनों से स्वर्ण तथा रौप्य-पदक एवं आयुर्वेद महामहोपाध्याय कविराज गणनाथ सेनजी सरस्वती, विद्यानिधि, एम्० ए०, एल्० एम्० ऐंड एस्० कलकत्ता; स्वर्गीय श्रीयुत वैद्यरत्न पं० डी० गोपालाचार्लु प्रिंसिपल, आयुर्वैदिक कॉलेज मदरास तथा बंबई के सुप्रसिद्ध डॉ० पोपट प्रभुरामजी एल्० एम्० ऐंड एस्० अध्यक्ष प्रभुराम कॉलेज आदि और भी बहुत-से महान् महान् प्रतिष्ठित सज्जनों से उत्तम-उत्तम प्रशंसापत्र प्राप्त।

वैसे तो हमारे यहाँ कई पीढ़ियों से औषधालय और चिकित्सालय हैं जिसकी सेवा से इंदौर, मध्य-भारत, मध्य-प्रदेश, बरार, राजपूताना, मारवाड़, गुजरात, कलकत्ता, बंबई आदि प्रांतों के कई स्थानों के भद्र पुरुष, राजा, महाराजा, सरदार, जागीरदार, धनाढ्य और निर्धन सभी परिचित हैं, एवं लाभ उठा रहे हैं। आज तक कई लक्ष (लाख) पुरुष-स्त्री आरोग्य-लाभ कर चुके हैं। हमारे औषधालय में हमारे ही यहाँ की बनी हुई उत्तम और शुद्ध औषधियाँ काम में लाई जाती हैं। अन्य नोटिसबाज़ों की तरह प्रशंसा करने की आवश्यकता नहीं। हमारी औषधियों की उत्तमता तथा शुद्धता के लिये इंदौर तथा दूर-दूर से आए हुए रोगियों की उत्तरोत्तर संख्या-वृद्धि ही सर्वोत्कृष्ट प्रमाण है। इस औषधालय के अंतर्गत कई वर्षों से हमने वैद्य ख़्यालीराम फ़ार्मेसी नाम से एक बृहत् फ़ार्मेसी खोल दी है। औषधालय पर जनता का पूर्व ही विश्वास होने के कारण ईश्वर-कृपा से इस फ़ार्मेसी ने भी शीघ्र ही उन्नति की। अब इस फ़ार्मेसी से सर्व-साधारण तथा अधिकतर वैद्य, डॉक्टर आदि हर समय औषधियाँ मँगाया करते हैं और यहाँ से सैकड़ों पारसल हर समय रवाना हुआ करते हैं। इस फ़ार्मेसी में हर प्रकार के आयुर्वेदोक्त रस-उपरस, सर्वधातु की भस्म, गुटिका, चूर्ण, अवलेह, पाक, तैल, घृत, आसव, अरिष्ट, क्वाथ, लेप, शरबत, मुरब्बा, तिला व आयुर्वेदोक्त वनौषधियाँ हर समय यथार्थ मूल्य पर तैयार मिलती हैं। फ़ार्मेसी के अंतर्गत एक वनस्पतिवाटिका भी है जिससे समयानुकूल हरी वनस्पतियाँ भी मिल सकती हैं। विशेष जानकारी के लिये एक आने का टिकट भेजकर बृहद् सूचीपत्र मँगाकर देखिए।

विशेष सूचना:—बाहर के रोगियों के पत्रों पर भी पूरा ध्यान देकर उनके लिये यथोचित योजना की जाती है।

च्यवनप्राशावलेह—डॉक्टरी कॉडलिव्हर ऑइल तथा अन्य टॉनिकों से विशेष गुणकारी आयुर्वेद की अत्यंत प्रसिद्ध महौषधि। श्वास, कास, शोष, तृष्णा, राजयक्ष्मा, धातुक्षय, मस्तिष्क-शक्ति की वृद्धि आदि में अपूर्व चमत्कारिक गुण दिखाकर शरीर को बलवान् तथा पुष्ट करता है। मू० २० तोले का केवल २) डा० व्य० अलग।

शक्तिवर्द्धक वटी—स्नायविक और शारीरिक दुर्बलता, धातुक्षीणता और पुरुषत्व-हानि की एक-मात्र महौषधि। कुछ काल तक सेवन करने से शारीरिक दुर्बलता, धातुक्षीणता, नपुंसकता, स्त्री के देखने या छूने-मात्र से वीर्य का गिर जाना इत्यादि रोगों को अत्यंत लाभ देती है। दुबले व सुस्त मिज़ाज पुरुष व स्त्रियों के शरीर में खून पैदा करके मोटा-ताज़ा बनाती है। प्रशंसा करना व्यर्थ है। एक बार अवश्य अनुभव करिए। मूल्य प्रति-शीशी केवल १॥) डाक-व्यय अलग।

ज्वरामृत—केवल यही सर्व प्रकार के ज्वरों जैसे:—नया-पुराना ज्वर, इकतरा, तिजारी, चौथिया, जीर्णज्वर, धातुस्थज्वर, प्लीहा, यकृतज्वर आदि व अग्निमांद्य, अरुचि, उदरामय, शोथ वग़ैरह उपद्रवों को शीघ्र निवारण करनेवाली दवा है जो ज्वर के पश्चात् भोजन की रुचि, बल-वृद्धि, मन की प्रफुल्लता तथा इंद्रियों की प्रबलता उत्पन्न करके शरीर को पुष्ट भी करती है। मलेरिया के विषों को नाश कर तज्जनित ज्वर व उनके उपद्रवों को दूर कर जीवन-शक्ति बढ़ाने की उत्कृष्ट दवा है। तीन-चार ही ख़ुराक में अपना अपूर्व गुण दिखाती है। प्रशंसा करने की आवश्यकता ही नहीं। मूल्य फ़ी-शीशी केवल ।॥) डाक-व्यय अलग।

नए-पुराने प्रमेह की औषधि—यों तो आजकल अनेक प्रमेहनाशक औषधियाँ मिलती हैं; किंतु इस रोग की औषधि भी उतनी ही कठिन है जितनी कि स्वयं यह दुष्ट रोग है। हमारी इस औषधि के सेवन से बीसों प्रकार का प्रमेह, पीप सहित धातु का गिरना, पेशाब के पहले, पीछे, मलत्याग के समय, धूप में चलने से वीर्य का निकलना, पेशाब में जलन, धब्बा, अंडकोष में दर्द, मूत्रनली में जलन व पीड़ा तथा इनके द्वारा उत्पन्न अनेकों शारीरिक और मानसिक रोग दूर होते हैं। ४८ घंटे में जलन व धब्बे मिट जाते हैं, यह दुष्ट रोग शीघ्र इलाज न करने से असाध्य हो जाता है। अधिक क्या लिखें, एक बार अवश्य परीक्षा करिए। मूल्य प्रति-शीशी केवल २) डाक-व्यय अलग।

Telegraphic Address:
"Bhishak", Indore.

५१६

मैनेजर, वैद्य ख़्यालीराम फ़ार्मेसी, (M)
बियाबानी, इंदौर।

अति उत्तम तैल ! गुणकारी तैल !!

सुंदरीसोहाग तैल

आजकल बरसाती मेंढक की तरह तैल बनानेवाले बहुत-से पैदा हो गए हैं। सैकड़ों क़िस्म के तैलों के विज्ञापन आपकी नज़र से गुज़रते हैं। हरएक आदमी अपने ही तैल को तमाम तैलों से बढ़-चढ़कर बताता है और दुनिया भर का गुण अपने ही तैल में दिखाता है। जिसके सबब से ख़रीदनेवाले धोखे में पड़ जाते हैं कि कौन-सा तैल असली और सच्चा है। इसलिये हम अपने "सुंदरीसोहाग तैल" की खुद प्रशंसा नहीं करते। परंतु सैकड़ों महाशयों और शिक्षिता स्त्रियों ने इस गुणकारी तैल को व्यवहार करके प्रशंसापत्र भेजे हैं। उनमें से एक आपके विश्वास के लिये लिखा जाता है। जिसे पढ़कर आपको हमारे तैल की ख़ूबियों का हाल मालूम हो जायगा। फिर आपको "सुंदरीसोहाग"-जैसे विख्यात तैल को मँगाने में कुछ सोच-विचार न होगा। यह कोई नया तैल नहीं है बल्कि १० वर्षों से यह तैल तैयार किया जाता है और इसकी अब तक लाखों शीशियाँ बिक चुकी हैं। सबसे बड़ी बात इस तैल में यह है कि इसको पुरुष और स्त्री दोनों पसंद करते हैं।"

प्रशंसापत्र

श्रीकुमार ठाकुर जे० बी० सिंह साहब तालुक़ेदार, ज़िला लखनऊ से लिखते हैं कि "महाशयजी ! आपके "सुंदरीसोहाग तैल" की तीन शीशियाँ जो मैंने पहले मँगाई थीं उससे मुझको ज्ञात हुआ कि आपका तैल यथार्थ में बहुत लाभदायक है। इससे मैं तीन शीशियाँ और माँगता हूँ। आपका तैल तो बहुत ही मुफ़ीद है। मैं इसकी प्रशंसा कहाँ तक करूँ। यह बहुत ख़ुशबूदार भी है।"

दाम एक शीशी १) और तीन शीशी २॥) डाकख़र्च अलग। पत्र का हवाला दीजिए। ५१७

एस० ए० बी० बख़्शी ऐंड कंपनी, ७०, कोलूटोला स्ट्रीट, पो० बा० नं० १४४, कलकत्ता।

RAM LALL,

DENTIST,

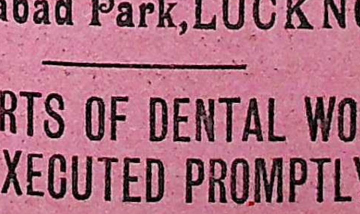

27, Aminabad Park, LUCKNOW.

ALL SORTS OF DENTAL WORKS
ARE EXECUTED PROMPTLY
- AT -
REASONABLE RATES

ब्रह्मचर्य्य का अद्वितीय आदर्श

सुदर्शन-चरित्र।

यह उन्हीं स्वनामधन्य, प्रातःस्मरणीय सेठ सुदर्शन का जीवन चरित्र है जिन्होंने मरणान्त दुःख सहकर भी अपने ब्रह्मचर्य्य व्रत को भंग नहीं किया। पहले वे कपिला की कसौटी में कसे गये, फिर अभया रानी ने अभय होकर अपनी काम-कतरनी से जांचा, इसके बाद उन्होंने (तीन दिन तक अनशन रह कर) वेश्या-हरीढ़ा के हाव भाव की चोटें खायीं और अन्त में भूतनी के भभकते हुए उपद्रव-अग्नि कुण्ड में तपाये गये, किन्तु खरे सोने की भांति उनकी प्रभा बढ़ती ही गयी। इस पुस्तक को यदि आप आद्योपान्त पढ़ जायेंगे तो फिर कभी कामिनी की काम कतरनी के दांव पर न आयेंगे। नवयुवकों को तो इसे अवश्य पढ़ना चाहिये। इसकी आख्यायिकाओं में "तिय चरित्र जाने नहीं कोय, खसम मार कर सती होय" वाली कहावत का पूरा खाका खींचा गया है। ऐसी विलक्षण पुस्तक आपने शायद आज तक कभी नहीं पढ़ी होगी। रोचकता के कारण इसके पढ़ने में उपन्यास का भी मज़ा आता है।

अगर आप व्यभिचार के विषधर कीड़े से देशको बचाना चाहते हैं, वृद्धविवाह का मूलोच्छेदन करना चाहते हैं, तो इस आदर्श महापुरुष के जीवन चरित्र का प्रचार कीजिये। जिसको पढ़कर मनुष्य सच्चरित्र, बलवान तथा ऐश्वर्यवान बनने के साथ साथ ब्रह्मचर्य के महत्व को जान सकता है और संसार के झूठे आनन्द को छोड़, जीवन के सच्चे पवित्र आनन्दामृत का पान कर मानव जीवन को सफल बना सकता है। स्त्रियों के लिये भी इसमें अच्छा उपदेश दिया गया है।

उपयुक्त स्थानों पर रंग-बिरंगे १२ चित्र दिये गये हैं, जिनके अवलोकन मात्र से ही कथा का आशय चित्तपर अंकित हो जाता है। चित्रों की सफाई, छपाई से पुस्तक की शोभा विचित्र बढ़ गयी है। यदि सुदर्शन चरित्र को पढ़ कर स्त्री चरित्र के गूढ़ रहस्योंको जानना चाहते हैं तो इस पुस्तक को मंगाने में आलस्य न कीजिये। नहीं तो फिर इसका मिलना मुश्किल हो जायगा क्योंकि इसकी प्रतियाँ थोड़ी छपी हैं और मांग अधिक आ रही है। मूल्य बिना जिल्द १॥) रु० रेशमी-सुनहरी जिल्द २) रु० डाक महसूल अलग।

मिलने का पता—

ओंकार प्रेस

खिल हुए तैयार हैं

हिंदी-पुस्तक-माला के तीन नए पुष्प।

१. सत्यानंद मूल्य १॥)

ले० ठाकुर कल्याणसिंहजी शेखावत बी० ए०।

यह एक सामाजिक उपन्यास है। इसमें मदरास-प्रांत की एक घटना को लेकर ईसाई-धर्म-प्रचारकों के हथकंडे बड़ी मार्मिकता के साथ दिखलाए गए हैं। हिंदू-संगठन के पक्षपातियों के बड़े काम की चीज़ है। एक बार मँगाकर अवश्य पढ़ें।

२. सीता की अग्नि-परीक्षा मूल्य ॥)

ले० राय कालीप्रसन्न घोष बहादुर विद्यासागर।

इसमें बड़ी ही करुणापूर्ण तथा ओजस्विनी भाषा में सीताजी की अग्नि-परीक्षा का वर्णन किया गया है तथा विदेशी ग्रंथों के प्रमाणों और विद्वानों के अनुभवों से सिद्ध किया गया है कि यह अग्नि-परीक्षा कोई काल्पनिक घटना नहीं थी। पूर्व पुरुषों की कीर्ति से प्रेम रखनेवालों को इसे अवश्य पढ़ना चाहिए। पुस्तक क्या है, एक रत्न है।

३. श्रीकृष्ण-उपदेश मूल्य ॥)

ले० पं० जगदीशनारायण तिवारी।

इसमें श्रीमद्भागवत के श्लोकों का पद्यानुवाद बड़ी ही मनोहर भाषा में किया गया है। सर्वसाधारण और विशेष कर विद्यार्थियों के लिये तो यह बड़ी ही लाभदायक वस्तु है। इसके पद्य सुगमता से कंठस्थ हो सकते हैं।

एक विचित्र नवीन पुस्तक

राग-रामायण मूल्य २) सजिल्द

ले० पं० रामेश्वरप्रसाद (द्विज दीन कवि)।

इस ग्रंथ में रामायण की संपूर्ण कथा मनोहर राग-रागिनियों में वर्णन की गई है। रामकथामृत-पिपासुओं के लिये बड़ी ही मनोहर पुस्तक है। इसमें लवकुश-कांड भी दिया गया है। उसका साइज़ बड़ा और टाइप मोटा है।

सब प्रकार की पुस्तकों के मिलने का पता :—

१० ६६ **हिंदी-पुस्तक-भवन, नं० १८१, हरिसन रोड, कलकत्ता**

व्यापारियों के हित की बात

हमारे यहाँ से देशी, जापानी और अँगरेज़ी सूत हर प्रकार का जैसे ऊनी, रेशमी, मरसेराइज़ और मोज़े इत्यादि बुनन का सामान जैसे हील्ड्स (Healds) रीड्स (Reeds) पिकर्स (Pickers) और शटर्स (Shutters) इत्यादि बहुत बढ़िया और सस्ते मूल्य में मिलते हैं।

हिंदी और अँगरेज़ी में पत्र-व्यवहार करो।

पताः—

रत्तीलाल, भीखा भाई

पो० गिरगाँव, बंबई

१८ ६६

१॥) में २५१ तोहफ़े

हमारे इत्र की १ शीशी या दाद के मलहम की ६ डिब्बी के ख़रीदार को निम्न-लिखित चीज़ें उपहार में मुफ़्त दी जाएँगी—

१ सुंदर नक़ली रिस्टवाच, १ फ़ैंसी हैंडिल, १४४ टिकिया ब्लू-ब्लैक रोशनाई, १ क्लिप, १२ निब, १ दर्शन जर्ब-छाप, १ शीशा, १ बट्टी ख़ुशबूदार साबुन, १ सुंदर कंघी, १ ख़ुशबूदार पोमेड, १ तांबूल बहार, १२ सुंदर सीप के बटन, १ सुंदर नाक की कील, १ जड़ाऊ लटकन, ६ सुंदर हेर पिन, १ सुंदर अँगूठी, १ सेफ़्टी पिन, १ सीटी, १ डब्बी बढ़िया बनारसी ज़र्दा, १ डब्बी मनोहर हिंगुल, २५ मनमोहनी टिप्स, २२६ स्वादिष्ट मीठे की गोलियाँ—कुल २५१ चीज़ें। दाम १॥)

पता—Sutton Agency,
No. 136, Upper Chitpore Ro
P. O. Harkhola, Calcu

स्थापित सन् १८५८ ई०

सबसे सस्ते ग्रंथ बेचनेवाला !

सबसे पुराना प्रकाशक !!

विश्व-विदित और विश्व-विख्यात

नवलकिशोर-प्रेस (बुकडिपो)

हज़रतगंज, लखनऊ

के

धार्मिक ग्रंथों के मूल्य में कमी

५ अगस्त, १९२४ ई० से १० ऑक्टोबर, १९२४ ई० तक

"सिर्फ़ दो मास के लिये"

प्रिय पाठकगण !

आप लोगों को प्रायः ज्ञात ही है कि हम प्रतिवर्ष श्रावण-सुदी ५ से आश्विन-सुदी १३ तक विद्या-प्रेमी महाशयों के लिये अपने यहाँ की बहुत-सी उपयोगी पुस्तकें तीन-चौथाई मूल्य पर अर्थात् एक रुपए का माल बारह आने में लुटाया करते हैं। उसी नियम के अनुसार इस वर्ष भी हम परमात्मा की असीम कृपा से उक्त कार्य करने में समर्थ हुए हैं। आशा है, सदा की भाँति सभी देश और साहित्य के अनुरागी इस वर्ष भी अपनी इच्छा के अनुसार अमूल्य ग्रंथ-रत्नों का संग्रह करके हमारे उत्साह को बढ़ावेंगे।

निवेदकः—

विष्णुनारायण भार्गव,

प्रोप्राइटर,

नवलकिशोर-प्रेस, लखनऊ.

रुपए का माल बारह आने में

नाम पुस्तक	साधारण मूल्य	तीन-चौथाई मूल्य
	रु. आ. पा.	रु. आ. पा.
१. उपनिषद् भाषा-टीका-सहित		
ईशावास्योपनिषद्	०, ३, ०	०, २, ३
उपनिषत्सार	०, २, ०	०, १, ६
ऐतरेयोपनिषद्	०, ४, ०	०, ३, ०
कठवल्ली उपनिषद्	०, ६, ०	०, ४, ६
केनोपनिषद्	०, ३, ६	०, २, ९
छांदोग्योपनिषद्	१, ८, ०	१, २, ०
तैत्तिरीयोपनिषद्	०, ८, ०	०, ६, ०
प्रश्नोपनिषद्	०, ६, ०	०, ४, ६
मांडूक्योपनिषद्	१, ०, ०	०,१२, ०
मुंडकोपनिषद्	०, ६, ०	०, ४, ६
बा० ज़ालिमसिंह-कृत टीका-सहित		
ईशावास्योपनिषद्	०, ३, ०	०, २, ३
ऐतरेयोपनिषद्	०, ४, ६	०, ३, ६
कठवल्ली उपनिषद्	०, ८, ०	०, ६, ०
केनोपनिषद्	०, ३, ६	०, २, ९
छांदोग्योपनिषद्	३, ४, ०	२, ७, ०
तैत्तिरीयोपनिषद्	०,११, ०	०, ८, ३
प्रश्नोपनिषद्	०, ८, ०	०, ६, ०
बृहदारण्यकोपनिषद्	३, ०, ०	२, ४, ०
मांडूक्योपनिषद्	०, ३, ०	०, २, ३
मुंडकोपनिषद्	०, ८, ०	०, ६, ०
२. वेदांत और योग-संबंधी पुस्तकें		
अनुराग-सागर	०, ३, ०	०, २, ३
अपरोक्षानुभव	०, १, ०	०, ०, ९
अष्टावक्र-गीता (भा०टी०स०)	१, ९, ०	१, २, ९

नाम पुस्तक	साधारण मूल्य	तीन-चौथाई मूल्य
	रु. आ. पा.	रु. आ.
अवतार-सिद्धि	०, २, ०	०, १,
अष्टावक्र-गीता (सं०टी०स०)	०, ४, ०	०, ३,
आत्म-बोध (भा० टी० स०)	०, १, ०	०, ०,
ईश्वर-दीपिका (सटीक)	०, ३, ६	०, २,
ईश्वर-दीपिका (सटीक उर्दू)	०, ३, ०	०, २,
चैतन्य-चंद्रोदय	०, ७, ०	०, ५,
जप-ग्रंथ (साधुसिंह-कृत)	१, ०, ०	०,१२,
तरुता तर्कसंग्रहादर्श	०, १, ६	०, १,
तत्त्व-ज्ञान-दर्शावनी	०, २, ०	०, १,
दोहावली (गो०तुलसीदास-कृत)	०, २, ०	०, १,
नृत्यराघव-मिलन	०, १, ९	०, १,
परापूजा (भा० टी० स०)	०, ४, ०	०, ३,
पारसभाग	३, ०, ०	२, ४,
पंचदशी (भा० टी० स०)	३, ८, ०	२,१०,
,, (सं० टी० स०)	१, ०, ०	०,१२,
प्रमोद-वन-विहार	०, ४, ०	०, ३,
बीजक कबीरदास	१, ६, ०	१, ०,
भक्तमाल (प्रतापसिंह)	२, ८, ०	१,१४,
भक्तमाल सटीक (श्रीनाभादासजी-कृत)	०,१४, ०	१०, ०,
भक्तमाल सटीक (श्रीसीतारामशरण भगवानप्रसादजी-कृत)	३,१२, ०	२,१३,
भक्तांबु-निधि	१,१०, ०	१, ३,
भक्ति-सागर सजिल्द	३, ०, ०	२, ४,
भगवद्गीता पंचरत्न मूल	०, ८, ०	०, ६,
भगवद्गीता सटीक गुटका (मुंशी हरिवंशलाल-कृत)	०,१०, ०	०, ७,
भगवद्गीता सटीक (पं० गिरिजाप्रसादजी द्विवेदी-कृत)	०,१४, ०	०,१०,
भगवद्गीता सटीक (पं० सूर्यदीन-		

नाम पुस्तक	साधारण मूल्य	तीन-चौथाई मूल्य
	रु. आं. पा.	रु. आ. पा.
जी सुकुल-कृत)	१, २, ०	०,१३, ६
भगवद्गीता सटीक (बा० ज़ालिमसिंह-कृत)	३, ०, ०	२, ४, ०
भगवद्गीता भाषा	०, ४, ०	०, ३, ०
भगवती-गीता (सं०टी०स०)	०, ३, ६	०, ३, ०
भागवत गुटका	०, ५, ०	०, ३, ६
भ्रम-नाशक	०, २, ०	०, १, ६
माधवराम-सुखसागर	०, ८, ०	०, ६, ०
मुक्ति-मार्ग (सजिल्द)	१,१०, ०	१, ३, ६
याज्ञवल्क्य-मैत्रेयी-संवाद	०, ४, ०	०, ३, ०
युगल-संवाद बोध-प्रकाश	०, ४, ०	०, ३, ०
योगवासिष्ठ (भाषा-वार्तिक)	८, ०, ०	६, ०, ०
राम-गीता सटीक (पं० सूर्यदीनजी सुकुल-कृत)	०, १, ६	०, १, ३
राम-गीता सटीक (पं० गिरिजाप्रसादजी द्विवेदी-कृत)	०, २, ०	०, १, ६
राम-गीता सटीक (बा० ज़ालिमसिंह-कृत)	१, ०, ०	०,१२, ०
राम-हृदय	०, १, ०	०, ०, ६
विज्ञान-लहरी (सटीक)	०, ३, ०	०, २, ३
विवेक-दिवाकर (भाषा-पद्य)	०, ४, ०	०, ३, ०
विवेक-प्रकाश (,,)	०, ५, ०	०, ३, ६
विहार-वृंदावन	१, २, ०	०,१३, ६
वेदांत-सार-शिरोमणि	०, २, ६	०, २, ०
वैराग्य-प्रकाश	०, ४, ०	०, ३, ०
वैराग्य-प्रदीप	०, ४, ०	०, ३, ०
वैराग्य-संदीपिनी	०, १, ६	०, १, ३
सांख्य-तत्त्व-कौमुदी (सटीक)	०, १, ६	०, १, ३
सांख्य-तत्त्व-सुबोधिनी (सटीक)	०, ५, ०	०, ३, ६
सांख्य-कारिका-तत्त्व-बोधिनी सटीक (बा० ज़ालिमसिंह-कृत)	०, ६, ०	०, ४, ६
सिद्धांत-प्रकाश	०, ७, ६	०, ५, ६
सुंदर-विलास	०, ४, ६	०, ३, ६
हरिहर-सगुण निर्गुण-पदावली	०, ३, ०	०, २, ३
ज्ञान-आभूषण	०, ३, ०	०, २, ३
ज्ञान-तरंग	०, ७, ०	०, ५, ३
ज्ञान-प्रकाश	०, ६, ०	०, ४, ६
ज्ञान-स्वरोदय	०, १, ०	०, ०, ६
ज्ञान-प्रभाकर	०, ३, ०	०, २, ३
३. धर्मशास्त्र-संबंधी पुस्तकें		
अष्टादश स्मृति (भा०टी०स०)	२,१२, ०	२, १, ०
कुलोचित-धर्म-शिक्षा (भा०टी० स०)	१, ४, ०	०,१५, ०
निर्णयसिंधु (मूल)	२, ०, ०	१, ८, ०
प्राच्य-शिक्षा-रहस्य	०,१२, ०	०, ६, ०
भगवंत-भास्कर	०,१०, ०	०, ७, ६
मनुस्मृति सटीक (पं० गिरिजाप्रसादजी द्विवेदी-कृत)	२, ८, ०	१,१४, ०
मनुस्मृति भाषा-भाष्य-सहित (पं० मेहरचंदजी-कृत)	६, ०, ०	४, ८, ०
मनुस्मृति हिंदी-उर्दू	२, ०, ०	१, ८, ०
मानव-धर्म-सार (सटीक)	०, २, ६	०, २, ०
मानव-धर्म-सार का सार	०, १, ०	०, ०, ६
मिताक्षरा (सटीक)		
आचार-कांड	४, ०, ०	३, ०, ०
व्यवहार-कांड	६, ४, ०	४,११, ०
प्रायश्चित्त-कांड	६, ०, ०	४, ८, ०
तीनों कांड	१५, ०, ०	११, ४, ०
याज्ञवल्क्य-स्मृति (सटीक)	०, ६, ०	०, ६, ६
४. कर्मकांड-संबंधी पुस्तकें		
कातीय पितृ-तर्पण	०, १, ६	०, १, ३
पार्वण-श्राद्ध-प्रयोग	०, १, ०	०, ०, ६
मंत्रार्थ-दीपिका (सटीक)	०, ७, ०	०, ५, ३
५. नीति-संबंधी पुस्तकें		
चाणक्य-नीति-दर्पण (सटीक)	०, ३, ०	०, २, ३

नाम पुस्तक	साधारण मूल्य	तीन-चौथाई मूल्य
	रु. आ. पा.	रु. आ. पा.
संडली-मंडन सटीक (अर्थात् चाणक्य-नीति)	०, ३, ६	०, २, ९
राजनीति भाषा	०, ५, ०	०, ३, ९
शुक्र-नीति भाषा	०, ८, ०	०, ६, ०
६. पुराण		
आदि ब्रह्म-पुराण भाषा	१, ८, ०	१, २, ०
इतिहास-समुच्चय भाषा	०, १०, ०	०, ७, ६
कल्कि-पुराण (भा० टी० स०)	१, ०, ०	०, १२, ०
गरुड़-पुराण (भा० टी० स० पत्राकार)	०, ९, ०	०, ६, ९
गणेश-पुराण भाषा	०, १, ०	०, ०, ९
जैमिनि-पुराण भाषा	१, ४, ०	०, १५, ०
नरसिंह-पुराण भाषा	०, १४, ०	०, १०, ६
पद्म-पुराण भाषा		
सृष्टि-खंड	२, ८, ०	१, १४, ०
भूमि-खंड	२, ८, ०	१, १४, ०
स्वर्ग-खंड (बड़ा)	२, ८, ०	१, १४, ०
स्वर्ग-खंड	१, ४, ०	०, १५, ०
ब्रह्म-खंड	०, १०, ०	०, ७, ६
पाताल-खंड	२, १२, ०	२, १, ०
उत्तर-खंड	३, १२, ०	२, १३, ०
क्रियायोग-सार-खंड	१, १०, ०	१, ३, ६
सातों खंड एकसाथ	१५, ०, ०	११, ४, ०
प्रेम-सागर	०, १२, ०	०, ९, ०
बृहन्नारदीय-पुराण भाषा	०, ९, ०	०, ६, ९
ब्रह्मोत्तर-खंड भाषा	०, ५, ६	०, ४, ३
भविष्य-पुराण भाषा	२, ८, ०	१, १४, ०
मत्स्य-पुराण (सटीक)	४, ८, ०	३, ६, ०
मार्कंडेय-पुराण (मूल)	०, १२, ०	०, ९, ०
मार्कंडेय-पुराण (सटीक)	२, १२, ०	२, १, ०
लिंग-पुराण भाषा	१, ९, ०	१, २, ९
वामन-पुराण भाषा	१, ६, ०	१, ०, ६
वाराह-पुराण भाषा	१, ९, ०	१, २, ९

नाम पुस्तक	साधारण मूल्य	तीन-चौ मूल्य
	रु. आ. पा.	रु. आ.
शिव-पुराण भाषा	३, ४, ०	२, ७,
श्रीमद्भागवत दशम-स्कंध सटीक (पत्राकार)	२, ४, ०	१, ११,
श्रीमद्भागवत (भाषा-पद्य प्रथम स्कंध)	०, ४, ०	०, ३,
सुख-सागर गुटका	२, ८, ०	१, १४,
सुख-सागर (साधारण अक्षर)	४, ८, ०	३, ६,
सुख-सागर (बड़ा टाइप)	८, ०, ०	६, ०,
सेतु-माहात्म्य-खंड भाषा	०, १२, ०	०, ९,
स्कंद-पुराण (भा० टी०स०)		
श्रीकाशी-खंड (दोनों भाग) काग़ज़ सफ़ेद	७, ०, ०	५, ४,
,, ,, रस्मी	६, ०, ०	४, ८,
नागर-खंड ,, सफ़ेद	८, ०, ०	६, ०,
,, ,, रस्मी	७, ०, ०	५, ४,
प्रभास-खंड ,, सफ़ेद	८, ०, ०	६, ०,
,, ,, रस्मी	७, ०, ०	५, ४,
ब्रह्म-खंड ,, सफ़ेद	८, ०, ०	६, ०,
,, ,, रस्मी	७, ०, ०	५, ४,
महेश्वर-खंड ,, सफ़ेद	८, ०, ०	६, ०,
,, ,, रस्मी	७, ०, ०	५, ४,
अवंती-खंड ,, सफ़ेद	७, ०, ०	५, ४,
,, ,, रस्मी	६, ०, ०	४, ८,
वैष्णव-खंड ,, सफ़ेद	८, ०, ०	६, ०,
७. माहात्म्य-संबंधी पुस्तकें		
कार्त्तिक-मास-माहात्म्य	२, ०, ०	१, ८,
काशी-माहात्म्य	०, २, ६	०, २,
गोकर्ण-माहात्म्य	०, १, ३	०, १,
जगन्नाथ-माहात्म्य	०, २, ९	०, २,
ढोसी-माहात्म्य	०, १, ३	०, १,
तुलसी-तत्त्व-भास्कर	०, २, ०	०, १,
८. व्रत-कथा-संबंधी पुस्तकें		
महारामायण अर्थात् विशूचिका-आख्यान	०, १, ६	०, १,

नाम पुस्तक	साधारण मूल्य	तीन-चौथाई मूल्य
	रु. आ. पा.	रु. आ. पा.
सत्यनारायण दंडक-श्लोकी	०, २, ०	०, १, ६
सत्यनारायण मूल (पत्राकार)	०, २, ६	०, २, ०
सत्यनारायण-व्रत-कथा सटीक	०, ३, ०	०, २, ३
सत्यनारायण भाषा	०, २, ०	०, १, ६
९. स्तोत्र-संबंधी पुस्तकें		
आदित्य-हृदय	०, १, ६	०, १, ३
गोपाल-सहस्रनाम (गुटका तावीज़ी)	०, २, ०	०, १, ६
गोपाल-सहस्रनाम (गुटका)	०, २, ६	०, २, ३
गोपाल-सहस्रनाम	०, ६, ०	०, ४, ६
गोपाल-सहस्रनाम (पत्राकार)	०, २, ६	०, २, ०
गोपाल-सहस्रनाम उर्दू-हिंदी	०, १, ६	०, १, ३
गंगालहरी मूल (बंबई-टाइप)	०, २, ०	०, १, ६
चरण-व्यूह	०, १, ०	०, ०, ९
जानकी-स्तवराज	०, १, ०	०, ०, ९
राम-स्तवराज	०, २, ०	०, १, ६
लक्ष्मी-हृदय-स्तोत्र	०, २, ०	०, १, ६
विष्णु-सहस्रनाम (गुटका तावीज़ी)	०, २, ६	०, २, ०
विष्णु-सहस्रनाम (गुटका)	०, २, ६	०, २, ०
विष्णु-सहस्रनाम सटीक (बद्रीदास-कृत)	०, ३, ०	०, २, ३
विष्णु-सहस्रनाम सटीक (बा० ज़ालिमसिंह-कृत)	१, ०, ०	०, १२, ०
विष्णु-सहस्रनाम उर्दू-हिंदी	०, ४, ०	०, ३, ०
वेदस्तुति सटीक	०, १, ६	०, १, ३
शिवमहिम्न-स्तोत्र (मूल)	०, १, ६	०, १, ३
शिवमहिम्न-स्तोत्र (सटीक)	०, २, ६	०, २, ०
शिवमहिम्न-स्तोत्र उर्दू-हिंदी	०, १, ६	०, १, ३
शिव-सहस्रनामावली	०, २, ६	०, २, ०
श्रीविष्णु-सहस्रनाम-स्तोत्र	०, ६, ०	०, ४, ६
श्रीशिवतांडव-स्तोत्र	०, १, ३	०, १, ०
सरस-स्तोत्र-सार-संग्रह	०, २, ६	०, २, ०

नाम पुस्तक	साधारण मूल्य	तीन-चौथाई मूल्य
	रु. आ. पा.	रु. आ. पा.
स्तोत्र-संग्रह मूल सजिल्द	१, ५, ०	०, १५, ९
१०. स्तोत्र-संबंधी भाषा-पुस्तकें		
यमुना-लहरी	०, १, ०	०, ०, ९
हनुमान-बाहुक सटीक	०, २, ०	०, १, ६
हरि-नाम-रत्नावली काग़ज़ सफ़ेद	०, १२, ०	०, ९, ०
हरि-नाम-रत्नावली काग़ज़ रस्मी	०, १०, ०	०, ७, ६
ज्ञान-दीपिका	०, २, ०	०, १, ६
११. देवताओं के तख़्ते		
तख़्ता चित्र हनुमान्‌जी	०, १, ०	०, ०, ९
तख़्ता राम-नाम सीताराम	०, १, ०	०, ०, ९
तख़्ता श्रीकृष्ण-नाम	०, १, ०	०, ०, ९
तख़्ता श्रीकृष्ण-महिमा-दर्पण	०, १, ६	०, १, ३
तख़्ता विष्णु-नाम	०, १, ०	०, ०, ९
१२. मंत्र-शास्त्र-संबंधी पुस्तकें		
दुर्गा-सप्तशती (गुटका तावीज़ी)	०, ४, ०	०, ३, ०
दुर्गा-सप्तशती (गुटका)	०, ६, ०	०, ४, ६
दुर्गा-सप्तशती (पत्राकार)	०, ६, ०	०, ४, ६
दुर्गा-पाठ भाषा-टीका	०, ६, ०	०, ४, ६
दुर्गा-पाठ सटीक (नागोजिभट्ट-कृत)	०, ७, ०	०, ५, ३
दुर्गा-सप्तशती (बंबई-अक्षर)	०, ८, ०	०, ६, ०
मंत्र-मुक्तावली	०, १, ६	०, १, ३
मेरु-तंत्र (मूल)	३, ४, ०	२, ७, ०
यजुर्वेदीय-संध्या	०, १, ३	०, १, ०
सप्तशती-सर्वस्व (सं० भाष्य-सहित)	१, १२, ०	१, ५, ०
संध्योपासन (स्वा० दयानंद-संगृहीत)	०, १, ६	०, १, ३

१३. भाषा में महाभारत आदि पुस्तकें

नाम पुस्तक	साधारण मूल्य	तीन-चौथाई मूल्य
	रु. आ. पा.	रु. आ. पा.
आदि-पर्व	२, ४, ०	१,११, ०
सभा-पर्व	०,१४, ०	०,१०, ६
बन-पर्व	३, ४, ०	२, ७, ०
विराट-पर्व	०,१२, ०	०, ९, ०
उद्योग-पर्व	२, ४, ०	१,११, ०
भीष्म-पर्व	१,१२, ०	१, ५, ०
द्रोण-पर्व	२,१२, ०	२, १, ०
कर्ण-पर्व	१, ८, ०	१, २, ०
शल्य और गदा-पर्व	१, ४, ०	०,१५, ०
सौप्तिक और स्त्री-पर्व	०,१०, ०	०, ७, ६
अनुशासन-पर्व	२, ४, ०	१,११, ०
अश्वमेध-पर्व	१, ४, ०	०,१५, ०
शांति-पर्व	४, ४, ०	३, ३, ०
आश्रमवास-पर्व, मुशल-पर्व, महाप्रस्थान-पर्व और स्वर्गारोहण-पर्व	०,१२, ०	०, ९, ०
महाभारत-दर्पण (अर्थात् महाभारत काशी-नरेश पद्यानुवाद)	११, ०, ०	८, ४, ०
महाभारत भाषा वार्तिक	२५, ०, ०	१८,१२, ०
महाभारत सजिल्द (सबलसिंह चौहान-कृत पद्य में)	२, ८, ०	१,१४, ०

१४. संस्कृत में रामायण आदि पुस्तकें

नाम पुस्तक	साधारण मूल्य	तीन-चौथाई मूल्य
अध्यात्म-रामायण सटीक	४, ०, ०	३, ०, ०
मूल-रामायण	०, १, ६	०, १, ३

१५. गो० तुलसीदास-कृत रामायणादि पुस्तकें

नाम पुस्तक	साधारण मूल्य	तीन-चौथाई मूल्य
कवित्तावली-रामायण (मूल)	०, ४, ०	०, ३, ०
” ” (सटीक)	१, २, ०	०,१३, ६
कुंडलिया-रामायण (सटीक)	०,१०, ०	०, ७, ६

नाम पुस्तक	साधारण मूल्य	तीन-चौथाई मूल्य
	रु. आ. पां.	रु. आ. पा.
गीतावली (मूल)	०, ५, ६	०, ४, ३
गीतावली (सटीक)	१, २, ०	०,१३, ६
छप्पै-रामायण (सटीक)	०, १, ६	०, १, ३
छंदावली-रामायण (सटीक)	०, १, ६	०, १, ३
तुलसीकृत-रामायण (मूल) छोटा गुटका	१, १, ०	०,१२,
तुलसीकृत-रामायण (मूल) मँझोला गुटका	१, ६, ०	१, ०, ६
तुलसी-कृत रामायण (मूल)	२, ८, ०	१,१४, ०
तुलसीकृत-रामायण मूल		
बाल-कांड	०, ७, ०	०, ५, ३
अयोध्या-कांड	०, ५, ६	०, ४, ३
आरण्य-कांड	०, २, ६	०, २, ०
किष्किंधा-कांड	०, ०, ६	०, ०, ६
सुंदर-कांड	०, २, ०	०, १, ६
लंका-कांड	०, ५, ०	०, ३,
उत्तर-कांड	०, ५, ०	०, ३,
तुलसी-कृत रामायण सटीक (बा० रामचरणदासजी-कृत)	१०, ०, ०	७, ८, ०
” ” (पत्राकार)	५, ०, ०	३,१२, ०
तुलसी-कृत रामायण सटीक (सुखदेवलाल-कृत)	४, ८, ०	३, ६, ०
” ” (पत्राकार)	२, ४, ०	१,११, ०
तुलसी-कृत रामायण सटीक और सचित्र (पं० सूर्यदीनजी सुकुल-कृत)	५, ०, ०	३,१२, ०
” ” (गुटका)	४, ०, ०	३, ०, ०
तुलसी-सतसई (मूल)	०, २, ६	०, २,
तुलसी-सतसई (सटीक)	१, २, ०	०,१३, ६
तुलसी-कृत मानस-दीपिका	०, २, ०	०, १, ६
तुलसी-कृत मानस-प्रचारिका	०, ७, ०	०, ५, ३
विनय-पत्रिका (मूल)	०, ४, ०	०, ३,
विनय-पत्रिका (सटीक पं० सूर्यदीनजी शुक्ल-कृत)	१, ८, ०	१, २,

नाम पुस्तक	साधारण मूल्य	तीन-चौथाई मूल्य
	रु. आ. पा.	रु. आ. पा.
विजय दोहावली	०, १, ०	०, ०, ९
श्रीमानस-रामायण-प्रश्नोत्तरार्थ-प्रकाश	०,१०, ०	०, ७, ६
१६. अन्य रामायणादि पुस्तकें		
अद्भुत रामायण	०, १, ९	०, १, ३
अवध-विलास-रामायण	०, २, ६	०, २, ०
उभय-प्रबोधक-रामाय	१, ४, ०	०,१५, ०
गीत-रामायण	०, २, ०	०, १, ६
छंद-रामायण	०, २, ०	०, १, ६
भक्ति-शिरोमणि	०,१२, ०	०, ९, ०
राम-चंद्रिका (सटीक संशोधित संस्करण)	२, ०, ०	१, ८, ०
रामनिवास-रामायण	१, ०, ०	०,१२, ०
रामायण अध्यात्म-विचार(भाषा)	४, ८, ०	३, ६, ०
रामायण उमराव-कृत	०,१०, ०	०, ७, ६
रामायण रामानुरागावली	०, ४, ०	०, ३, ०
रामाश्वमेध छंदोबद्ध	०, ३, ०	०, २, ३
श्रीराम-ब्याहोत्सव	०, ६, ०	०, ४, ६
सीता-स्वयंवर	०, ४, ०	०, ३, ०
संक्षिप्त रामाश्वमेध	०, ३, ०	०, २, ३
१७. उपन्यास		
चित्त-विलास	०, ८, ६	०, ६, ६
पथिक-दर्शन	०, ६, ०	०, ४, ६
प्रताप	०,१२. ०	०, ९, ०
बंगाली दुलहिन	०,१२, ०	०, ९, ०
ब्रह्म-दर्पण	०,१२, ०	०, ९, ०
मनोरंजन	०, ६, ०	०, ४, ६
मार आस्तीन	१, ८, ०	१, २, ०
मृणालिनी	०,१०, ०	०, ७, ६
राम-प्रताप	०, ८, ०	०, ६, ०

नाम पुस्तक	साधारण मूल्य	तीन-चौथाई मूल्य
	रु. आ. पा.	रु. आ. पा.
१८. संस्कृत-काव्य		
गीतगोविंद (सं० टी० स०)	०, ५, ०	०, ३, ९
गीतगोविंद दर्श	०, २, ६	०, २, ०
मेघदूत (मल्लिनाथी टी० स०)	०,१०, ०	०, ७, ६
रघुवंश ”	१, ०, ०	०,१२, ०
सार्थ-पुष्पांजलि	०, १, ३	०, १, ०
१९. भाषा-काव्य		
अनुराग-लतिका	०, २, ६	०, २, ०
अनुराग-वर्द्धिनी	०, ३, ६	०, २, ९
उपदेश-चंद्रिका	०, २, ६	०, २, ०
काव्य-कलामिनी	०, २, ०	०, १, ६
कुंडलिया	०, १, ३	०, १, ०
कृष्ण-प्रिया	०,१४, ०	०,१०, ६
कृष्ण-बाललीला	०, १, ०	०, ०, ९
कृष्ण-सागर	०, ६, ६	०, ५, ०
गर्भ-लीला	०, १, ३	०, १, ०
गोवर्द्धन-विलास	१, ०, ०	०,१२, ०
गर्ग-संहिता	१, ०, ०	०,१२, ०
चित्र-चंद्रिका	०, ५, ०	०, ३, ९
छंदार्णव-पिंगल	०, २, ९	०, २, ०
जगद्विनोद (पद्माकर)	०, ४, ०	०, ३, ०
जानकी-पंचाशिका	०, १, ०	०, ०, ९
जानकीमंगल (सटीक)	०, १, ०	०, ०, ९
दुर्गायन	०,१२, ०	०, ९, ०
दुर्गाविजय	०, २, ०	०, १, ६
द्वादश-महावाक्य-प्रश्नावली	०, १, ३	०, १, ०
नख-शिख-वर्णन	०, ४, ०	०, ३, ०
नवीन संग्रह	०, ५, ०	०, ३, ९
नाथ-सरोज	०, ४, ०	०, ३, ०
नाथ-संग्रह	०, ५, ६	०, ४, ३
नानार्थ नव-संग्रह	०,१०, ०	०, ७, ६
नासिकेतोपाख्यान	०, ३, ६	०, २, ९

नाम पुस्तक	साधारण मूल्य	तीन-चौथाई मूल्य	नाम पुस्तक	साधारण मूल्य	तीन-चौथाई मूल्य
	रु. आ. पा.	रु. आ. पा.		रु. आ. पा.	रु. आ. पा.
पंच-पचीसी	०, १, ०	०, ०, ९	विश्राम-सागर	३,१२, ०	२,१३, ०
पंचरत्न	०, २, ०	०, १, ६	,, (मध्यम)	२, ८, ०	१,१४, ०
पावस-कवित्त-रत्नाकर	०, २, ०	०, १, ६	,, (गुटका)	१, ४, ०	०,१५, ०
प्यारे-विनोद	०, १, ६	०, १, ३	व्रज-विलास सजिल्द	३, ८, ०	२,१०, ०
प्रयागनारायण-विलास	०, ६, ०	०, ४, ६	,, (गुटका)	१, ०, ०	०,१२, ०
प्राणप्यारी	०, १, ६	०, १, ३	,,	०,१२, ०	०, ९, ०
प्रेम-तरंगिणी	०, २, ०	०, १, ६	व्रज-विलास-सारावली	०, ४, ०	०, ३, ०
प्रेम-रत्नाकर	०, ४, ६	०, ३, ६	शशिमौलि	०, २, ६	०, २, ०
बिहारी-सतसई (सटीक)	१, ०, ०	०,१२, ०	शिव-पार्वती-चरित्र	०, ८, ०	०, ६, ०
भाषा-काव्य-संग्रह	०, ५, ६	०, ४, ३	शिवरत्न-संग्रह	०, २, ६	०, २, ०
भारती-भूषण	०, १, ३	०, १, ०	शिवराम-सरोज	०, १, ६	०, १, ३
भुवनेश-भूषण	०, १, ६	०, १, ३	शिवराज-भूषण	०, ३, ०	०, २, ३
माधव-विलास	०, ३, ०	०, २, ३	श्रृंगार-प्रदीप	०, १, ६	०, १, ३
युगल-नाममाला	०, १, ०	०, ०, ९	श्रृंगार-संग्रह	०,१०, ०	०, ७, ६
युगल-विलास	०, १, ६	०, १, ३	शंकर-दिग्विजय (भाषा)	०,१०, ०	०, ७, ६
रघुराज-विलास	०, ३, ६	०, २, ९	शंकर-शतक	०, १, ३	०, १, ०
रघुचरित भाषा	०, २, ०	०, १, ६	शैवीनिधि	०, ५, ०	०, ३, ९
रसराज	०, २, ०	०, १, ६	श्याम-केलि	०, १, ६	०, १, ३
रस-तरंग	०, २, ६	०, २, ०	श्रीरसार्णव	०, २, ०	०, १, ६
रस-प्रबोध	०, ३, ०	०, २, ३	श्रीरामानंद-विहार	०, १, ३	०, १, ०
रसिक-प्रिया (सटीक)	०, ९, ०	०, ६, ९	षट्ऋतु-काव्य-संग्रह	०, ५, ६	०, ४, ३
रसिक-मोहन	०, ४, ०	०, ३, ०	षट्ऋतु-वर्णन	०, १, ०	०, ०, ९
राधा-विषाद-मोचनावली	०,१४, ०	०,१०, ६	षट्ऋतु-हज़ारा	१, ०, ०	०,१२, ०
राम-कलेवा (गुटका)	०, १, ३	०, १, ०	सत्संग-सागर	०, ६, ०	०, ४, ६
रामनामकलामणिकोषमंजूषा	०, २, ०	०, १, ६	सभा-विलास	०, २, ६	०, २, ०
राम-सुधा	०, १, ३	०, १, ०	सभा-प्रकाश	०, २, ०	०, १, ६
रामशलाका व रामाज्ञा	०, ५, ०	०, ३, ९	समर-विजय	०, १, ६	०, १, ३
रुक्मिणी-मंगल	०, १, ३	०, १, ०	सीताराम-नखशिख	०, १, ६	०, १, ३
विचित्रोपदेश	०, १, ३	०, १, ०	सीतारामविवाह-संग्रह	१, ४, ०	०,१५,
विजय-चंद्रिका	०, ६, ०	०, ४, ६	सुजान-सरोज	०, १, ६	०, १, ३
विजय-मुक्तावली	०, ६, ६	०, ५, ०	सुदामा-चरित्र	०, ४, ०	०, ३, ०
विजय-विशाल	०, ३, ६	०, २, ९	सुंदरी-चरित्र (दुर्गापाठ भाषा)	०, २, ०	०, १, ६
विनय-पत्रिका(सटीक गंगादास)	०, ५, ६	०, ४, ३	सुंदरी-तिलक	०, २, ६	०, २,

नाम पुस्तक	साधारण मूल्य	तीन-चौथाई मूल्य
	रु. आ. पा.	रु. आ. पा.
सूरदास का दृष्टिकूट (सटीक)	०, ४, ०	०, ३, ०
सेतुबंधाश्रम-यात्रा-दर्पण	०,१२, ०	०, ९, ०
हफ़ीज़ुल्लाहख़ाँ का हज़ारा	१, ४, ०	०,१५, ०
हरि-प्रबोधिनी	०, ४, ०	०, ३, ०

२०. संगीत-राग-भजन आदि-संबंधी पुस्तकें

नाम पुस्तक	साधारण मूल्य	तीन-चौथाई मूल्य
	रु. आ. पा.	रु. आ. पा.
अनिरुद्ध-परिणय	०, २, ६	०, २, ०
अपूर्व भजन-लता	०, १, ६	०, १, ३
अर्ज़-पत्रिका	०, २, ०	०, १, ६
अष्टयाम	०, ४, ०	०, ३, ०
आनंद-सागर (दो भाग)	०,१५, ०	०,११, ३
काशी भजनावली	०, १, ६	०, १, ३
कृष्ण-गीतावली	०, ४, ०	०, ३, ०
ख़यालात मातादीन	०, ३, ०	०, २, ३
गोपीचंद भरथरी	०, १, ६	०, १, ३
चौताल रसिक-मनहरण (पाँचों भाग)	०, ४, ६	०, ३, ६
छंद-प्रकाश	०, ४, ०	०, ३, ०
जानकी-चरण-चामर	०, २, ६	०, २, ०
धर्म-प्रेम-तरंग	०, ४, ०	०, ३, ०
धर्मोपदेश	०, २, ०	०, १, ६
नग़मए दिलकश (दूसरा भाग)	०, ३, ०	०, २, ३
नवरत्न-भाष्य वृंदावन-विलास	०, ३, ०	०, २, ३
नवीन ग़ज़ल-संग्रह	०, २, ६	०, २, ०
प्रह्लाद-नाटक	०, १, ६	०, १, ३
प्रावृट-प्रिया	०, १, ३	०, १, ०
प्रेम-प्रकाश	०, २, ६	०, २, ०
प्रेम-रत्न	०, ३, ०	०, २, ३
प्रेम-रसामृत	०, १, ०	०, ०, ९
प्रेमावली	०, १, ३	०, १, ०
भक्त-रसनामृत	०, १, ०	०, ०, ९
भक्ति-सुमन	०, १, ०	०, ०, ९
भजन-प्रभाती	०, १, ९	०, १, ३

नाम पुस्तक	साधारण मूल्य	तीन-चौथाई मूल्य
	रु. आ. पा.	रु. आ. पा.
भजन-बत्तीसी (भक्ति-दीपक)	०, १, ०	०, ०, ९
भजन-माला	०, १, ३	०, १, ०
भजन-रत्नाकर	०, १, ६	०, १, ३
भजन-रामायण	०, १, ६	०, १, ३
भजन-विनय-पचीसी	०, १, ३	०, १, ०
भजन संग्रह	०, ३, ०	०, २, ३
भजनावली	०, २, ०	०, १, ६
भान-प्रकाश	०, २, ०	०, १, ६
मनमोहन	०, १, ०	०, ०, ९
मनहरण-भजनावली	०, ६, ६	०, ५, ०
रँगीला गवैया	०, ६, ०	०, ४, ६
रहस्य-चंद्रिका	०, १, ६	०, १, ३
राग-प्रकाश	०, ३, ६	०, २, ९
राग-विनोद	०, ४, ०	०, ३, ०
राग-विनोद (बड़े साइज़ का)	०, १, ३	०, १, ०
राग-संग्रह	०, ३, ३	०, २, ६
राधाकृष्ण-रास-लीला	०, ४, ०	०, ३, ०
राम-राग	०, २, ६	०, २, ०
राम-विनय-वाटिका	०, १, ६	०, १, ३
रासलीला (बड़ी)	१, ०, ०	०,१२, ०
ललन-कवित्तावली	०, २, ०	०, १, ६
ललन-क्रांता	०, ३, ०	०, २, ३
ललन-चंद्रिका (सटीक)	०, ४, ०	०, ३, ०
ललन-प्रकाश	०, १, ६	०, १, ३
ललन-प्रदीपिका	०, ३, ०	०, २, ३
ललन-प्रबोधिनी	०, १, ०	०, ०, ९
ललन-प्रभाकर	०, २, ०	०, १, ६
ललन-प्रमोदिनी	०, १, ०	०, ०, ९
ललन-प्रमोहिनी	०, २, ०	०, १, ६
ललन-फाग	०, ४, ०	०, ३, ०
ललन-रत्नाकर	०, १, ९	०, १, ३
ललन-रस-मंजरी	०, ३, ०	०, २, ३
ललन-रसिया	०, १, ०	०, ०, ९

नाम पुस्तक	साधारण मूल्य	तीन-चौथाई मूल्य
	रु. आ. पा.	रु. आ. पा.
ललन-लतिका	०, २, ६	०, २, ०
ललन-विनोद	०, ५, ०	०, ३, ९
ललन-विलास	०, २, ६	०, २, ०
ललन-शिरोमणि	०, १, ६	०, १, ३
ललन-सागर	१, ०, ०	०, १२, ०
ललन-सुधाकर	०, १, ६	०, १, ३
लावनी पंचरत्न	०, १, ६	०, १, ३
लावनी बनारसी	०, ४, ०	०, ३, ०
विनय-प्रकाश	०, १, ०	०, ०, ९
विनय-विलास	०, १, ६	०, १, ३
विनय-विहार	०, २, ०	०, १, ६
विश्व-विनय	०, १, ३	०, १, ०
विष्णु-गीतावली	०, ३, ०	०, २, ३
वीणा-प्रकास	०, ९, ०	०, ६, ९
वंशी-राग-माला	०, २, ६	०, २, ०
व्रज-विलास-कवितावली	०, ४, ३	०, ३, ३
श्रीज्ञान-दर्पण	०, १, ३	०, १, ०
सदाबहार (चारों भाग)	०, ६, ०	०, ४, ६
सर्व-सार-संग्रह	०, ३, ६	०, २, ९
साईं के सौ ख़्याल	०, १४, ०	०, १०, ६
सांगीत प्रह्लाद	०, १, ६	०, १, ३
सांगीत-शिखा	०, २, ६	०, २, ०
सियवर-केलि-पदावली	०, ५, ०	०, ३, ९
सिया-स्वयंवर	०, ३, ०	०, २, ३
सीताराम-संयोग-पदावली	०, २, ६	०, २, ०
हीर राँझा	०, २, ०	०, १, ६

२१. नाटक

नाम पुस्तक	साधारण मूल्य	तीन-चौथाई मूल्य
अभिज्ञान-शकुंतला-नाटक	०, ८, ०	०, ६, ०
आनंद-रघुनंदन-नाटक	०, ४, ०	०, ३, ०
धनुषयज्ञ-नाटक	०, ९, ०	०, ६, ९
नागानंद-नाटक	०, २, ०	०, १, ६
प्रबोध-चंद्रोदय-नाटक (भूदेव दुबे-कृत)	०, २, ०	०, १, ६

नाम पुस्तक	साधारण मूल्य
	रु. आ. पा.
प्रबोध-चंद्रोदय-नाटक (महात्मा अनाथजी-कृत)	०, ४, ०
प्रबोधद्युमण्युदय (आध्यात्मिक नाटक)	०, १, ६
भ्रमजाल-नाटक	०, ३, ०
मयंकमंजरी-नाटक	०, ५, ०
रामरसामृत-सागर-नाटक	१, १, ६
रामाभिषेक-नाटक	०, ४, ०
विद्याविलासी व सुख-वंधनी नाटक	०, ३, ०
हनुमन्नाटक	०, ५, ०
हनूनाटक	०, १, ६
हरिश्चंद्र-नाटक	०, २, ६
हिंदी-शकुंतला-नाटक	०, ५, ०

२२. ज्योतिष-संबंधी पुस्तकें

नाम पुस्तक	साधारण मूल्य
अद्भुत-तरंगिणी (मूल)	०, ८, ०
कर्मविपाक-संहिता (मूल)	०, ५, ०
,, (सटीक)	१, ४, ०
जातक-पारिजात (मूल)	०, ३, ०
जातकाभरण (मूल)	०, ५, ६
,, (सटीक)	१, ८, ०
जातकालंकार (भाषा)	०, १, ६
,, (सटीक)	०, ३, ३
ज्योतिष-भूषण (भाषा)	०, ५, ०
ज्योतिष-सिद्धांत-सारसंग्रह	०, ५, ०
ज्योतिःसारावली	०, २, ६
तुलसी-शब्दार्थ-प्रकाश	०, ९, ६
नरपति-जयचर्या	०, ५, ०
नारचंद्र-दीपण	०, २, ६
नीलकंठी (सटीक)	१, ८, ०
प्रश्न-विद्या-द्रेष्काण-निरूपण	०, ४, ०
बाल-विवेकिनी	०, १, ०

नाम पुस्तक	साधारण मूल्य	तीन-चौथाई मूल्य	नाम पुस्तक	साधारण मूल्य	तीन-चौथाई मूल्य
	रु. आ. पा.	रु. आ. पा.		रु. आ. पा.	रु. आ. पा.
न गणित (सटीक)	२, ०, ०	१, ८, ०	सामुद्रिक (मूल)	०, १, ६	०, १, ३
ज्ञातक (सटीक)	०, ९, ०	०, ६, ९	,, (सटीक)	०, १, ६	०, १, ३
हूर्त-कल्पद्रुम (भाषा)	०, ४, ०	०, ३, ०	सामुद्रिक-शास्त्र सटीक	२, ८, ०	१, १४, ०
हूर्त-गणपति (मूल)	०, ७, ०	०, ५, ३	सिद्धांत-शिरोमणि गोलाध्याय		
,, (सटीक)	०, १४, ०	०, १०, ६	(सटीक)	१, १४, ०	१, ६, ६
हूर्त-चांद्रिका	०, १, ३	०, १, ०	सूर्यसिद्धांत (सटीक)	२, ०, ०	१, ८, ०
हूर्त-चिंतामणि (सटीक)	०, १२, ०	०. ९, ९	होरा-मकरंद	०, २, ६	०, २, ०
,, (सं० टी० स०)	०, १०, ०	०, ७, ६	**२३. फुटकर पुस्तकें**		
हूर्त-दीपक (सटीक)	०, २, ६	०, २, ०	गुरु-भक्त-प्रकाश	०, १०, ०	०, ७, ६
ल-नव-रत्न	०, २, ०	०, १, ६	धर्माधर्म-विचार	०, ४, ०	०, ३, ०
न-चंद्रिका (सटीक)	०, ५, ०	०, ३, ९	प्रपन्नामृत	०, ७, ०	०, ५, ३
घु पाराशरी (सटीक)	०, १, ९	०, १, ३	वचनामृत	०, २, ०	०, १, ६
शु-बोध	०, २, ६	०, २, ०	वल्लभाख्यान	०, २, ०	०, १, ६
श्नबोध (नक़ल बंबई)	०, ६, ०	०, ४, ६	शिक्षा-पत्र	०, २, ०	०, १, ६
,, ,, (सटीक)	०, ६, ०	०, ४, ६	श्रीगोवर्द्धननाथ के प्राकट्य		
पंचाशिका	०, १, ६	०, १, ३	की वार्ता	०, २, ६	०, २, ०

सहस्र-रजनी-चरित्र (अलिफ़लैला)

यह अपूर्व औपन्यासिक ग्रंथ पहले अरबी-भाषा में था। अरबी से फ़ारसी, फ़ारसी से उर्दू और उर्दू से हिंदी में नुवादित हुआ। इसका प्लाट यों बाँधा गया है। पारस्य-देश के बादशाह शहरयार को, अनेक कारणों से, स्त्री-जाति सतीत्व पर अविश्वास हो गया। अतः वह प्रतिदिन एक कुमारी से ब्याह करता और रात-भर उसके साथ रहकर भात में उसे क़त्ल करा देता। इस तरह सहस्रों सुंदरियों की अकारण हत्या हो गई। बादशाह को इस व्यर्थ मणी-वध से विरत करने के लिये उसके महामंत्री की परम रूप-राशि और बुद्धिमती कन्या शहरज़ाद ने उसके थ अपना ब्याह किया और पहली रात उसके साथ वास करके, रजनी के अवसान के कुछ पूर्व, एक ऐसी कहानी नाना आरंभ कर दिया कि सबेरा होते-होते उसमें से एक दूसरी कथा आरंभ हो गई। बादशाह ने पूछा, उसका परिणाम क्या हुआ ?" शहरज़ाद ने कहा—"प्राण-दान किए जायँ, तो कल फिर बताऊँगी।" बादशाह एक दिन के लिये प्राण-दान किए। दूसरी रात उसने फिर वैसा ही किया। इसी प्रकार सहस्र रातें बीतीं और तिम रात्रि में उसने बादशाह के मन का कुविचार दूर कर दिया। इन सहस्र कथाओं में अलाउद्दीन का चिराग़, दबाद जहाज़ी और अलीबाबा चालीस चोर आदि कहानियाँ तो बड़ी ही मनोरंजक हैं। यह ग्रंथ ऐसा प्रसिद्ध है के इसके अँगरेज़ी, फ़्रेंच, जर्मन आदि संसार की लगभग समस्त बड़ी-बड़ी भाषाओं में कई-कई अनुवाद हो गए। हमारे यंत्रालय में, विशुद्ध हिंदी में, इसका सचित्र संस्करण छपा है। इसमें २४ अति सुंदर लीथो-चित्र हैं। काग़ज़ बढ़िया ; टाइप मोटा ; आकार बड़ा ; पृष्ठ-संख्या २१० ; मूल्य ३।) मात्र; तीन-चौथाई मूल्य २॥=)

वैद्यक के सुप्रसिद्ध ग्रंथ

भाव-प्रकाश

(तीनों खंड)

भावमिश्र द्वारा संगृहीत और कैनिंग कॉलेज के भूतपूर्व संस्कृत-प्रोफ़ेसर पं० कालीचरणजी-कृत भाषा-टीका-सहित । यह आर्ष-वैद्यक-ग्रंथों का पूर्ण संग्रह और परम प्रतिष्ठित ग्रंथ है । काग़ज़, छपाई-सफ़ाई अति उत्तम । बड़ी साँची के १२२८ पृष्ठोंवाली पुस्तक का मूल्य केवल ७॥) ; तीन-चौथाई मूल्य ५॥=)

राम-विनोद भाषा

[पं० सुरेंद्रनाथ तिवारी द्वारा संपादित]

श्रीपद्मरंग-शिष्य रामचंद्रजी-रचित । इसमें रोगी की परीक्षा, शुभाशुभ शकुन, साध्यासाध्य-लक्षण, ज्वर आदि समस्त रोगों की उत्पत्ति, लक्षण और औषध तथा चूर्ण, तैल, अंजन, अवलेह, क्वाथ, गोली, यंत्र-मंत्र और गंडा आदि अनेक विषय वर्णित हैं । पृष्ठ-संख्या २२४. मूल्य केवल १); तीन-चौथाई मूल्य ॥।)

हंसराज-निदान

कविवर हंसराजजी-रचित और वैद्यक-ग्रंथों के सुप्रसिद्ध टीकाकार पं० दत्तरामजी माथुर-कृत भाषा-टीका-सहित। इसमें ज्वर, संग्रहणी, बवासीर, भगंदर, राजयक्ष्मा, तृष्णा और मूर्च्छा आदि अनेक रोगों के निदान और लक्षण; नाड़ी-परीक्षा आदि अनेक विषय सविस्तार वर्णित हैं । पृष्ठ-संख्या १६०; मू० ॥) ; तीन-चौ० मू० ।=)

निघंटु-रत्नाकर भाषा

[संस्कृत-निघंटु-रत्नाकर का हिंदी-अनुवाद]

इसमें ज्वर, अतिसार, संग्रहणी, बवासीर, अजीर्ण, कास, श्वास, प्रमेह, कुष्ठ आदि रोगों के लक्षण और ओषधियाँ दी गई हैं । अतएव वैद्यों को इसे अवश्य ख़रीदना चाहिए । पृष्ठ-संख्या १३४० ; मूल्य ६॥) : तीन चौथाई मूल्य ४॥=)

गद-तिमिर-भास्कर

[पं० गौरीशंकरशर्मा राजवैद्य-रचित]

चरक, सुश्रुत, वाग्भट आदि वैद्यक-ग्रंथों तथा डॉक्टरी और यूनानी ग्रंथों को मथकर इस महाग्रंथ रचना हुई है । इसमें मनुष्य-शरीर के समस्त रोगों उत्पत्ति, लक्षण, यत्न और चिकित्सा संबंधी ज्ञातव्य बातों का अति विस्तार-पूर्वक वर्णन है । शैली से आज तक जितने वैद्यक-ग्रंथ छपे हैं, उन यह श्रेष्ठ है और इस एक ही ग्रंथ के अनुशीलन से पूरा वैद्य बन जाता है । अतएव प्रत्येक वैद्यों और को अवश्य संग्रह करना चाहिए । काग़ज़ बढ़िया; बड़ा; पृष्ठ-संख्या ११६६; मूल्य ६); तीन-चौथाई मूल्य

औषध-पीयूष

[लाला ज्वालाप्रसादजी-रचित]

इसमें वैद्य-परीक्षा, दूत-परीक्षा आदि का निर्णय संपूर्ण रोगों के लक्षण और उनकी ओषधियाँ तथा आदि धातुओं की मारण-शोधन-विधि और ओषधियों के अर्क निकालने की विधियाँ सविस्तर हैं । अतएव यह ग्रंथ प्रत्येक वैद्यों के लिये उपयोगी पृष्ठ-संख्या ३१६; मूल्य १॥); तीन-चौथाई मूल्य

बृहत्पाकावली

[वैद्याचार्य पं० श्यामसुंदरशुक्ल द्वारा संपादित]

मूल श्लोक और भाषा-टीका-सहित । राजवैद्य गंगाप्रसादजी द्वारा संगृहीत । इसमें सुपारी-पाक, पाक, सौभाग्यशुंठी-पाक, गोक्षुर-पाक, सालिम-पाक, पाक, मूसली-पाक और जातीफल आदि अनेक बनाने की विधि का विस्तार-पूर्वक वर्णन है । कौन-सा किस रोग में खाया जाता है, यह भी इसमें बतलाया गया है । यह पुस्तक प्रत्येक गृहस्थ को चाहिए । पृष्ठ-संख्या ९८; मूल्य ॥); तीन-चौथाई मूल्य

वंगसेन-संहिता अर्थात् अगस्त्य-संहिता

वैद्याचार्य श्रीवंगसेन-विरचित और वैद्यराज पं० जीयारामजी शास्त्री-कृत भाषा-टीका-सहित। इसमें ज्वर, अतिसार, ग्रहणी, ववासीर, अजीर्ण, कृमि, पांडु-रोग, रक्त-पित्त, राजयक्ष्मा, क्षत-क्षय, कास, हिक्का, श्वास, स्वर-भेद, अरोचक, छर्दि, तृष्णा, मूर्च्छा, मदात्यय, दाह, उन्माद, अपस्मार, वात-व्याधि, वात-रक्त, ऊरु-स्तंभ, आम-वात, शूल, परिणाम-शूल, उदावर्त, आनाह, गुल्म, हृद्रोग, उरोग्रह, मूत्र-कृच्छ्र, मूत्राघात, अश्मरी, प्रमेह, मेदक, उदर-रोग, शोथ, अंत्र-वृद्धि, व्रध्म, गल-गंड, गंडमाला, ग्रंथि, अर्बुद, श्लीपद, विद्रधि, व्रण-रोग, आगंतुक-व्रण, भग्न. नाडी-व्रण, भगंदर, उपदंश, शूक-दोष, कुष्ठ, उदर्द, अम्ल-पित्त, विसर्प, विस्फोटक, स्नायु, मसूरिका, क्षुद्र-रोग, मुख-रोग, कर्ण-रोग, नासा-रोग, नेत्र-रोग, शिरोरोग, स्त्री-रोग, बाल-रोग, विष-रोग, जल-दोषादि-योग, रसायन, वाजीकरण, स्नेह-पान, स्वेद, वमन, विरेचन, वस्ति-कर्म, धूम-पान, कवल, नस्य, स्वस्थ-वृत्त, द्रव्य-गुण, द्रव्य-गण-पाठ, वर्ग, ऋतु-चर्या, धान्य-वर्ग, मांस और फल-वर्ग, व्यंजन और मत्स्य-गुण, द्रव-द्रव्य, अरिष्ट और दीपन-पाचन-द्रव्य-लक्षण इन पंचान्नबे अध्यायों द्वारा रोगों का निदान, लक्षण और एक-एक रोग की अनेक अचूक ओषधियाँ वर्णित हैं। अतएव केवल इसी एक ही ग्रंथ के अनुशीलन से मनुष्य पूरा वैद्य हो सकता है। उत्तम काग़ज़, सुंदर मोटे अक्षरों में विशुद्ध छपी हुई बड़ी साँची के १००२ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य ६); तीन-चौथाई मूल्य ६॥)

नयनानंद-बोधिनी

वैद्य-विद्या-विशारद पं० कालीचरणजी-कृत मूल और भाषा-टीका-सहित। इसमें चरक, सुश्रुत, वाग्भट, वैद्य-रत्नाकर, वैद्य-रहस्य, वैद्य-मनोत्सव, वैद्य-कल्पद्रुम, भैषज्य-रत्नावली, शार्ङ्गधर आदि वैद्यक-ग्रंथों तथा अनेक डॉक्टरी और यूनानी-ग्रंथों को मथकर नेत्र के समस्त रोगों की उत्पत्ति, लक्षण और उपाय तथा सैकड़ों आज़माए हुए अचूक लटके दिए गए हैं। अतएव नेत्र-चिकित्सा करनेवाले वैद्यों, हकीमों और डॉक्टरों को इसकी एक प्रति अवश्य संग्रह कर लेनी चाहिए। पृष्ठ-संख्या २२२ ; मूल्य ॥।) ; तीन-चौथाई मूल्य ॥-)

अर्क-प्रकाश

वेद-भाष्य कर्ता श्रीरावणाचार्य-प्रणीत मूल और पं० देवीसहायजी कृत भाषा टीका-सहित। इसमें संपूर्ण ओषधियों के अर्क निकालने की विधि, सब धातुओं की मारण-शोधन-विधि और अनुपान के साथ समस्त रोगों पर उनका प्रयोग-विधान अति सुगम रीति से वर्णित है। पुस्तक वैद्यक के विद्यार्थियों, वैद्यों तथा शिक्षकों के बड़े काम की है। पृष्ठ संख्या १७२ ; मूल्य ।≈); तीन-चौ० मू० ।)॥

पाक-शास्त्र

श्रीक्षेमशर्माजी-कृत और भाषा-टीका-सहित। पृष्ठ-संख्या १२५ ; मूल्य १); तीन चौथाई मूल्य ॥।)

अन्यान्य पुस्तकों के लिये -) का टिकट भेजकर बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मँगा लीजिए।

उपन्यासों का बाबा ! कथाओं का कोष !! आख्यायिकाओं का सागर !!!

कथा-सरित्-सागर

[अर्थात् श्रीसोमदेव भट्ट-विरचित कथासरित्सागर का कैनिंग कॉलेज, लखनऊ के भूतपूर्व संस्कृत-प्रोफ़ेसर पं० कालीचरण शर्मा एवं राजवैद्य पं० त्त्मापतिजी वाजपेयी-कृत सरस और विशुद्ध हिंदी-अनुवाद]

प्रतिष्ठान-देश के अधिपति महाराज सातवाहन ईसवी सन् की पहली शताब्दी में राज्य करते थे । उनके राजत्व-काल में महाकवि गुणाढ्य ने, पिशाच-भाषा में, सात लाख श्लोकों का एक 'बृहत्कथा'-नामक सुबृहद् ग्रंथ लिखकर बड़े प्रेम से राजा को सुनाने गया । किंतु राजा सातवाहन ने, संस्कृत-विद्या के घमंड से, पिशाच-भाषा को नीरस कहकर उस महाग्रंथ का तिरस्कार किया । इससे दुःखित होकर महाकवि गुणाढ्य निकटवर्ती वन के एक पहाड़ी स्थान पर चला गया । वहाँ एक कुंड खोद, अग्नि प्रज्वलित कर, उस महाग्रंथ का एक-एक पन्ना, वन के पशु-पक्षियों को सुना-सुनाकर, अग्नि में स्वाहा करने लगा । उस परम मनोहर कथा को सुनकर जंगल के पशु-पक्षियों ने अपना चारा-पानी भुला दिया और वे लाखों की संख्या में महाकवि गुणाढ्य के चारों ओर बैठकर आँखों से आँसू बहाने लगे । इस प्रकार जब वह छः लाख श्लोक अग्नि में भस्म कर चुका, तो उसके शिष्यों ने, अवशिष्ट एक लाख श्लोकों के नरवाहनदत्त या उदयन-चरित्र को, अत्यंत दैन्य-भाव से, आग्रह करके बचा लिया । उधर राजा सातवाहन बीमार हुआ और वैद्यों ने उसके रोग का कारण रक्त-शुष्क मांस का भक्षण बतलाया । अनुसंधान करने पर ज्ञात हुआ कि महाकवि गुणाढ्य जंगल के जीवों को कोई ऐसी कथा सुना रहा है, जिस पर मोहित होकर वन्य जीवों ने अन्न-जल त्याग दिया है, जिससे उनका रक्त-मांस सूख गया । यह बात मालूम करके राजा को अपनी मूर्खता पर घोर पश्चात्ताप हुआ और वह अपराधी की भाँति महाकवि गुणाढ्य के चरणों पर जा गिरा । महामना गुणाढ्य ने सब अपराध क्षमा करके राजा को एक लक्ष श्लोकों का होम-शिष्ट बृहत्कथा-ग्रंथ समर्पण किया । उसी बृहत्कथा को, कालांतर में, महाकवि श्रीसोमदेव भट्ट ने, कश्मीर-देश के अधिपति राजा अनंतराज की विदुषी राजमहिषी सूर्यवती की आज्ञानुसार, संस्कृत-भाषा में, पच्चीस हज़ार श्लोकों में, निर्माण करके उसे 'कथासरित्सागर' के नाम से प्रसिद्ध किया । खेद है कि बृहत्कथा-ग्रंथ अब कहीं उपलब्ध नहीं होता, कथासरित्सागर ही उसकी समस्त कथा-संपत्ति का एक-मात्र सुयोग्य उत्तराधिकारी है । इस बृहद् ग्रंथ-रूपी सागर में मधुर-रसवती कथा-रूपी अनेक सरिताओं का संगम है, इसी तात्पर्य से कवि ने इसका नाम "कथा-सरित्-सागर" रक्खा है । किंतु भौतिक सागर से इस सागर में यह विशेषता है कि इसकी कथा-रूपी नदियों का रस सागर में पहुँच क्षार न होकर अत्यंत मधुर है और इसकी माधुरी का अनुभव वे ही सहृदय सज्जन कर सकेंगे, जो अपने मानस-शरीर से इसमें मज्जन करेंगे । इस सागर में १८ लंबक हैं, जिनमें अत्यंत मनोरंजक और बुद्धि-वर्द्धक १२४ कथाएँ हैं । इसी महाग्रंथ की कथाओं को लेकर संस्कृत-भाषा के कविगण नागानंद, कादंबरी, हितोपदेश, मुद्राराक्षस, वेताल-पंचविंशतिका आदि ग्रंथ रचकर यशस्वी हुए । हिंदी-भाषा के सुलेखक और सुकवि भी, यदि इच्छा करें, तो इस महाग्रंथ का आश्रय करके अनेक उपन्यास, काव्य, नाटक, प्रहसन और आख्यायिका आदि लिखकर अपनी रचना का कौशल दिखा सकते हैं । हम हिंदी-प्रेमी पाठकों से भी बल-पूर्वक अनुरोध करते हैं कि यदि उन्हें उपन्यास, नाटक और मनोरंजक आख्यायिकाओं से प्रेम है, तो वे ढेरों छोटी-छोटी पुस्तकें न पढ़कर इस महाग्रंथ को मँगाकर पढ़ें और भारतवर्ष की प्राचीन प्रतिभा का आनंद लूटें ! हम विश्वास दिलाते हैं कि इस ग्रंथ को पढ़कर आपको आजकल के उपन्यास अत्यंत नीरस और सार-शून्य प्रतीत होंगे । ग्रंथ बड़े सुंदर अक्षरों में छापा गया है । आकार बहुत बड़ा अर्थात् २०×२६ का १/४; पृष्ठ-संख्या ७४०; और मूल्य ३॥); तीन-चौथाई मूल्य २॥=)

विविध-विषय की पुस्तकें

अँगरेज़ी राज्य के सुख

[हिंदी-साहित्य के धुरंधर विद्वान् लाला कन्नोमलजी एम्०, ए० द्वारा लिखित]

इसमें डाक, तार, रेल-गाड़ी आदि का विवरण, सेना और पुलिस से लाभ, न्याय-शासन-प्रणाली, कृषि, बैंक, नहरें, वन-रक्षा, म्युनिसिपलिटी, डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड और राजभक्ति आदि की आवश्यकता आदि सैकड़ों विषयों का विस्तार-पूर्वक वर्णन है। पृष्ठ-संख्या ७२; मूल्य ॥); ।=)

अद्भुत सृष्टि-चरित्र

[फ़ारसी "अजायबुलमखलूक़ात" का सचित्र हिंदी-अनुवाद]

यह ग्रंथ सचमुच एक अजायबघर या अद्भुतालय है। इसमें आकाशीय ग्रहों तथा इस पृथिवी पर जितने थलचर, जलचर, नभचर, वृक्ष, कीट, पतंग, पशु, पक्षी, मनुष्य आदि सृष्टि है, उसका मनोरंजक वर्णन है; और विशेषता यह कि सबके सुंदर लीथो-चित्र भी दिए हुए हैं। इन चित्रों की संख्या ४६३ है। इसके द्वारा आप परमेश्वर की विचित्र रचना का हाल जानकर आश्चर्य में डूब जायँगे। आकार बड़ा; पृष्ठ-संख्या ७२८; मूल्य केवल ३॥); तीन-चौथाई मूल्य २॥=)

मैक्समूलर-कृत

धर्मविषयक व्याख्यान

[बा० ज्वालाप्रसादजी बी० ए०, वकील फ़ैज़ाबाद द्वारा अनुवादित]

इसमें अनेक भाषाओं के ज्ञाता, जर्मन के प्रसिद्ध विद्वान्, मैक्समूलर के धार्मिक व्याख्यानों का अनुवाद दिया गया है। पुस्तक उपादेय है। मूल्य २॥); तीन-चौथाई मूल्य १॥।=)

विदेश-यात्रा

पं० विशननारायणजी दर, 'बैरिस्टर एट लॉ' की 'विदेश-यात्रा' का हिंदी-भावानुवाद। इसमें शिल्प-कला-कौशल की उन्नति हम किस प्रकार कर सकते हैं और अपना भोजन विदेशियों के हाथों से किस प्रकार बचा सकते हैं, विलायत जाना हमारे लिये क्यों ज़रूरी है इत्यादि सैकड़ों विषयों का विवेचन बड़ी उत्तमता से किया गया है। पुस्तक प्रत्येक पढ़े-लिखे मनुष्य के संग्रह करने योग्य है। पृष्ठ ८८; मूल्य ।=); तीन-चौथाई मूल्य ।॥

संस्कृत-हिंदी-कोष

लगभग बीस हज़ार संस्कृत-शब्दों का अकारादि-क्रम से मनोहर संग्रह। संग्रहकर्ता हैं हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक चतुर्वेदी पं० द्वारकाप्रसाद शर्मा। प्रत्येक शब्द के आगे उसका लिंग-निर्देश कर दिया गया है और एक-एक शब्द के जितने भी हिंदी-अर्थ होते व हो सकते हैं, सब लिख दिए गए हैं। इसलिये यह कोष संस्कृत और हिंदी के विद्यार्थियों, कवियों, लेखकों, अनुवादकों और संपादकों के बड़े काम का हो गया है। मनोहर कपड़े की जिल्द बँधी हुई पुस्तक का मूल्य केवल ३); तीन-चौथाई मूल्य २।)

विचित्र चरित्र

यह एक अपूर्व पुस्तक है। जो लोग ऐयारी और तिलिस्मी उपन्यासों को पसंद करते हों, उन्हें इस विचित्र ग्रंथ को अवश्य पढ़ना चाहिए। इसमें शत्रुंजय-नामक वीर राजा का वर्णन है, जिसने सहस्रों वर्ष मायावी म्लेच्छों से युद्ध करके उनका विनाश किया। इस ग्रंथ में माया से रचे हुए सहस्रों देश, वन, बाग़, उपवन, वाटिका, दुर्ग, प्रासाद, मंदिर, नदी, ग्राम और सभाओं की विचित्र सुंदरता; माया-कृत लाखों नदी, सरोवर और समुद्रों की शोभा; सहस्रों मायावी म्लेच्छ-म्लेच्छियों के अद्भुत स्वरूप; नाना प्रकार के मायावी अस्त्र-शस्त्र, घोर युद्ध, मार-काट, सहस्रों सुंदर और सुंदरियों की नख-शिख-शोभा और शृंगार तथा उनके परस्पर मोहित और कामासक्त होने का सरस वर्णन; करोड़ों प्रपंच, छल-रचना, बहुरूप-धारण, विरह-वेदना आदि का विचित्र वर्णन है, जिसे पढ़कर आप दंग रह जायँगे, दाँतों-तले अँगुली दबाएँगे। बीच-बीच में अनेकों कवित्त आदि के उद्धृत कर देने से पुस्तक और भी मनोरंजक हो गई है। आकार बड़ा; पृष्ठ-संख्या १४६४; मूल्य ३); तीन-चौथाई मूल्य २।)

शब्दार्थ-संग्रह-कोष

इसमें अमर-कोषादर्श, वैद्यक-कोष और शब्द-संग्रह ये तीन विभाग करके अकारादि वर्ण क्रमानुसार शब्दों का संग्रह किया गया है। और उनका अर्थ सरल हिंदी-भाषा में दे दिया गया है। पुस्तक विद्यार्थियों और वैद्यों के बड़े काम की है। पृष्ठ-संख्या ३७०; मूल्य १॥=); तीन-

निम्न-लिखित पुस्तकों के मूल्य में कमी न होगी

विविध-विषय की पुस्तकें

हिंदी-अँगरेज़ी-शिक्षक

आजकल अँगरेज़ी राज-भाषा है । जो अँगरेज़ी जानता है, उसी का आजकल आदर होता है, वही शिक्षित समझा जाता है । विना अँगरेज़ी जाने मनुष्य को क़दम-क़दम पर दुःख उठाना पड़ता है । जिन्हें बचपन में अँगरेज़ी पढ़ने का सुअवसर प्राप्त न हुआ हो, अथवा धनाभाव के कारण अपने बच्चों को अँगरेज़ी न पढ़ा सके हों, ऐसे मनुष्यों के लिये, हमने यह "हिंदी-अँगरेज़ी-शिक्षक" छापकर प्रकाशित किया है । यदि आप चाहते हैं कि हमें चंद महीनों में ही अँगरेज़ी में नाम लिखना, तार लिखना, तार पढ़ना, चिट्ठियों पर पता लिखना, अँगरेज़ी में हुंडियाँ इत्यादि लिखना और मामूली तरह से बोलना आ जाय— यदि आप चाहते हैं कि विना उस्ताद के, हिंदी के सहारे, अँगरेज़ी पढ़ना-लिखना सीख जायँ, तो लोभ त्यागकर आप इसे अवश्य मँगाइए । क्योंकि रेल, तार, डाकख़ाना, कचहरी इत्यादि में कहीं जाइए, विना अँगरेज़ी जाने काम चल ही नहीं सकता । पृष्ठ १००; मूल्य ॥।) उर्दू-अँगरेज़ी-संस्करण का मूल्य ॥।)

वेदज्ञ मैक्समूलर

[लेखक, पं० सुरेंद्रनाथ तिवारी]

संस्कृत-साहित्य-संसार के स्तंभ और पाश्चात्य-जगत् में वेदों के प्रथम प्रचारक मैक्समूलर महोदय उन थोड़े महानुभावों में से एक हैं, जिनका जीवन-चरित्र मनुष्य-मात्र के लिये आदर्श हो सकता है । आपके चरित का अध्ययन करने से दृढ़ संकल्प, अविश्रांत परिश्रम, अनुपम सहन-शीलता, अद्भुत धैर्य, अप्रतिम उत्साह, अगाध प्रेम, अनुकरणीय उदारता की शिक्षा मिलती है । आप एक निर्धन विद्यार्थी की हैसियत से उन्नति करके प्रिवी-कौंसिल के पद तक पहुँचे थे । आपकी जीवनी हिंदी-संसार के लिये बिलकुल नई बात है । पुस्तक की भाषा सरल और हृदय-ग्राहिणी है, प्रत्येक होनहार नवयुवक को इसे अवश्य पढ़ना चाहिए । पृष्ठ-संख्या ६३; मूल्य ।=)

हृदय-श्मशान

(रूपांतरकार—पं० कात्यायनीदत्त त्रिवेदी)

यह उपन्यास भी अपने जोड़ का एक ही है । इसके लेखक भी "आपन ओ पर" के लेखक हैं । यह सामाजिक उपन्यास अति ही मनोरम, भाव-पूर्ण और शिक्षा-प्रद है । पढ़ते ही बनता है । एक प्रति आ ही मँगाइए । मूल्य ।=)

अपना और पराया

(अनुवादक—ठा० युगलकिशोरनारायणसिंह)

यह वंग-भाषा के एक प्रसिद्ध उपन्यास "आप ओ पर" का हिंदी-अनुवाद है । उपन्यास जैसा मनोरंजक है, वैसा ही शिक्षा-प्रद है । ऐसे "सों और सुगंध" का काम आजकल उपन्यासों में क देखने में आता है ।

"स्नेह पराए को अपना बना देता है
और स्वार्थ अपने को पराया कर देता है ।"

यदि इसका सच्चा स्वरूप देखना चाहते हैं तो आज ही इसकी एक प्रति मँगाकर आप पढ़िए और अपनी शिक्षित बहुओं और भाइयों पढ़ाइए । बंधुत्व का इस पुस्तक में अपूर्व उदाह है । पुस्तक का मूल्य ही क्या है ? केवल ।)

संग्रह-भजन-माला

[बा० रामजीदास द्वारा संगृहीत]

आनंद का आनंद और भगवान् का नाम । पुस्तक में ज्ञान से भरे हुए अनेक भजन और विषयों पर दिल खुश करनेवाले गाने, विविध पुस्तकों चुनकर संगृहीत किए गए हैं, जिनके पढ़ने से क्या बा क्या बाल, क्या वृद्ध, क्या युवा, सब ही को ज्ञान होता है । भगवद्भक्तों और संगीत-प्रेमियों को इसे अ ख़रीदना चाहिए । मूल्य केवल ॥=); डाक-ख़र्च

छप रही है ! छप रही है !!

वीरांगना तारा

(ले०—पं०सुरेंद्रनाथ तिवारी)

एक राजपूत रमणी की सचित्र भाव-पूर्ण और मनोरंजक पद्यात्मक कहानी । यदि आप यह पढ़ना चाहते हैं कि एक राजपूत रमणी ने यवन-काल में अपने पिता पर आई हुई मुसीबत में किस प्रकार प्राण-पण से साथ दिया था, तो इसे मँगाकर अवश्य पढ़िए और अपनी कन्याओं को पढ़ाइए । मूल्य लगभग ।) होगा ।

नवलकिशोर-प्रेस (बुकडिपो), लखनऊ

श्रीरामरससुधा

वास्तव में यह पुस्तक यथा नाम तथा गुण है । श्रीयुत पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी आदि प्रसिद्ध समालोचकों ने मुक्त-कंठ से इसकी प्रशंसा की है । यह सनातन धर्मियों तथा रामभक्तों के लिये बड़े काम की है । इसमें गो० तुलसीदास-कृत रामायण के उन सब गुप्त अर्थों और शंकाओं का निर्णय है जो अन्य टीकाओं में नहीं मिल सकता । साथ ही ऐसे-ऐसे मधुर श्लोक और कविताएँ भी हैं जिन्हें पढ़कर हृदय में अपार आनंद होता है । पृ० सं० ६४८, दो खंड । सजिल्द २॥।=) रेशमी ३।) डा० ख० ॥)

श्रीरामरसोपदेश

यह पुस्तक लोकोपकार के लिये ही लिखी गई है । इसमें हिंदी व बँगला के विविध ग्रंथों का रस एकत्र किया गया है । बहुत अच्छे उपदेश हैं । ज्योतिष के अति सुगम प्रश्न और विचार हैं । ईश्वर का गुप्त तत्त्व तथा महर्षि वाल्मीकि-कृत रामायण का सारांश, सहस्रकंध रावण का अति अद्‌भुत युद्ध पढ़कर, पुनः दानी कर्ण, राजा मरुत्त, महात्मा कबीरदास, राजकुमारी खन्ना देवी आदि की आश्चर्य-जनक कथाएँ पढ़कर दाँत के नीचे उँगली दबानी पड़ती है । मूल्य १।), सजिल्द १॥), रेशमी १॥।) डा० ख० ।-) दोनों पुस्तकें साथ लेनेवाले को डा० ख० माफ़ ।

पता—ठा० बद्रीसिंह केदारसिंह ५२८
मु० राधागंज पो०, नरघाट, ज़ि० मेदिनीपुर

श्रीतुलसीसूक्तिसुधाकर

अर्थात्—

"सब कर मत खगनायक एहा; करिय राम-पद-पंकज-नेहा ।"

इस चौपाई के पौने सत्रह लाख से अधिक अर्थ और साथ में हिंदी, संस्कृत और अँगरेज़ी की अपूर्व ७ पुस्तकें—३) में । ८ साल से ये ग्रंथ चल रहे हैं । १. महाराजा बहादुर गिद्धौर, २. अलवर-राज्य के प्रधान मंत्री रावबहादुर राजा दुर्जनसिंहजी, ३. इटावा के संपादक पं० भीमसेनजी आदि ने बड़ी प्रशंसा लिखी है । धोखा जो सिद्ध कर सके उसको २००) इनाम । बहुत बार अख़बारों में छप चुका है । ५२९

पता—बाबूराम शुक्ल कवि । अयोध्याप्रसाद रामगुलामशाह, फ़र्रुख़ाबाद

वेज़िटेबल आमला हेअरआइल

५३० नं० ४७०१

बालों के लिये एक अपूर्व वस्तु है, जो बालों की सुंदरता की वृद्धि करता, बालों को बढ़ाता और ख़ूबसूरत और चमकीले बना देता है । दिमाग़ को ठंढा रखने और आँख और दिमाग़ की हर प्रकार की बीमारी को दूर करने में इसकी समता करनेवाली दूसरी चीज़ नहीं । मुहासे के काले दाग़ों को भी चेहरे से दूर करके चमड़े को मुलायम और चिकना कर देता है । चेहरे की सुंदरता बढ़ाने में भी यह अद्वितीय है । इसकी मनमोहक सुगंधि दिमाग़ को स्वर्ग का-सा आनंद देती है । मूल्य १) प्रति शीशी । डाक-ख़र्च अलग । एजेंसी के लिये पत्र-व्यवहार करिए ।

एजेंट्स मुहम्मदअली जाफ़रजी
३७।१, कैनिंग स्ट्रीट, कलकत्ता ।

अस्सी
बीमारीयों
की
एक
दवा
पीयूष
रत्नाकर

सरकार से रजिस्ट्री की हुई

हज़ारों प्रशंसा-पत्र-प्राप्त, जगत्-
प्रसिद्ध औषधि

८०रोगों की एक ही दवा

पीयूषरत्नाकर

हर प्रकार का बुख़ार, कफ, खाँसी, दमा, ज़ुकाम, दस्त, मरोड़, अजीर्ण, हैज़ा, शूल, अतीसार, संग्रहणी, सिर-दर्द, पेट, कमर, गठिया का दर्द, मिर्गी-मूर्च्छा, स्त्रियों का प्रसूत आदि बच्चों के सर्व रोग यानी सिर से लेकर पाँव तक किसी रोग में दे दो, जादू का असर करता है। दाम १) बड़ी शीशी १॥) वी० पी० ख़र्च ।≡) आ० १२ लेने से ६) रु० बड़ी शीशी १५॥) वी० पी०-ख़र्च माफ़।

दद्रुनाशक

बिना जलन और तकलीफ़ के हर तरह के पुराने और नए दाद को २४ घंटे में जड़ से खोनेवाली शर्तिया दवा। दाम ३ शीशी ॥) वी० पी० ख़र्च ।≡) आना। १२ लेने से २।) वी० पी० ख़र्च माफ़।

गोरे और ख़ूबसूरत बनने की दवा

सुगंधित फूलों का दूध—यह दवा विलायती ख़ुशबूदार फूलों का अर्क़ है। विलायत के एक प्रसिद्ध डॉक्टर ने बनाकर अभी भेजा है। इसको ७ दिन बदन और चेहरे पर मालिश करने से चेहरे का रंग गुलाब के समान हो जाता है और बदन से ख़ुशबू निकलने लगती है, गालों के स्याह दाग़, मुहासे, छीप, झुर्रियाँ, फोड़ा, फुंसी, खुजली आदि दूर होकर एक ऐसी ख़ूबसूरती आ जाती है कि काली रंगत चाँद-सी चमकने लगती है। जिल्द मुलायम हो जाती है। मँगाकर देखो। दाम १ शीशी १।) वी० पी० ख़र्च ॥-) ३ लेने से ४) वी० पी० ख़र्च माफ़।

ख़िज़ाब ! ख़िज़ाब !! ख़िज़ाब !!!

सबसे अच्छा न्यू ईजाद मनमोहन केशकल्प—एक दफ़ा के लगाने से भूरे और सफ़ेद बाल भौंरे के रंग के समान काले चमकीले हो जाते हैं। जिल्द पर धब्बा नहीं आता। हाथ काले नहीं होते, विशेष तारीफ़ यह है कि जो बाल काले हो जायँगे, वह फिर उमर-भर सफ़ेद नहीं होंगे। बराबर इस्तेमाल कीजिए। दाम फ़ी डिब्बा १।) वी० पी० ख़र्च ॥-) तीन लेने से ४) वी० पी० ख़र्च माफ़।

पूरा हाल जानने के लिये, व्रज चौरासी कोस की सुगम यात्रा व यादगार और बड़ा सूचीपत्र मँगाकर देखिए। मुफ़्त मिलेगा। ५३१

पता—जसवंत ब्रदर्स, नं० २, मथुरा

नए फ़ैशन के कमानीदार

हाथरस के पक्के चाक़ू

विलायती चाक़ुओं से अच्छे और सस्ते हैं। चंदन-मूठ कमानीदार ॥=), ।≡) दो फल ॥।) चंदन-मूठ सादा ।=), ≡)॥ लकड़ी-मूठ कमानीदार ॥।), ॥-), ।≡), ।-) लकड़ी-मूठ सादा ।=), ≡), =)॥, =), -)॥ हाथीदाँत-मूठ ॥=), ≡) दो फल १।), सींग-मूठ ॥) शिकारी छुरी ३), १॥), १।), १) बाल काटने की क़ैंची १), ॥) कपड़ा काटने की क़ैंची १।), १) नए फ़ैशन के उस्तरे ॥=), ।≡), ।=), ।) उम्दा पालिसदार पक्के सरौते १॥), १।), ॥।), ॥), ।=) सुगंधित बढ़िया हींग २०) रुपए सेर, घटिया १०) रुपए सेर। ५३२

स्वदेशी वस्तु कार्यालय, हाथरस नं० ५

भविष्यद्वक्ता

जो चाहे सो पूछ लो

सौ बातों में पंचानबे बात की रजिस्ट्री। १) में वर्षफल। ५) से ५०) में जन्म-भर का हाल।

कंदर्पनारायण शर्मा व्यास,

५३३ केसरीद्वार, मिरज़ापुर।

जेबी-घड़ी मुफ़्त।

ओटो मुश्क हिना

हरएक शौक़ीन को घर में हमेशा रखने लायक़ देशी इत्र क़ीमत एक शीशी की १२ आने। १ दर्जन लेनेवाले को १ रास्कोप घड़ी इनाम।

दाद-विनाशक

दाद और खुजली के लिये अक्सीर मलहम, क़ीमत।) २४ डब्बी एकसाथ लेने से एक रास्कोप घड़ी इनाम, न लेने से १॥।) दर्जन।

५३४ **किंग जार्ज कारोनेशन कं०,**

बंबई नं० ४

गारंटी ५० वर्ष

यह घड़ियाँ बदल भी सकती हैं !

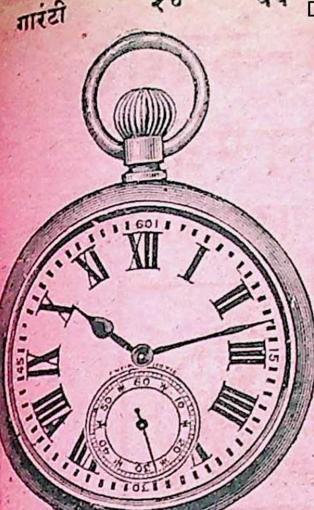

अगर यह घड़ी हिफ़ाज़त से बरती जावे तो पोतों तक काम देनेवाली है। यदि किसी तरह टूट जावे तो ५० साल के अंदर जिस हालत में हो ६।।) साथ लेकर नई घड़ी से बदल देंगे ! ५० वर्ष की गारंटी व बदलने का इक़रारनामा घड़ी के साथ भेजेंगे। **असली Anti Magnatic इंपीरियल रेगूलेटर लीवरवाच** जो अभी निकल केस की उमदा मैटीरियल से बनवाकर मँगाई है, लीवर चाल की जूलदार ३० घंटे की चावीवाली है। सुइयाँ स्टील की, डाइल चीनी का, ख़ूबसूरत, पुरज़े गिलट किए, बिजली का असर कबूल न करनेवाले हैं। गिर जावे तो भी कभी न टूटेगी, बहुत उमदा घड़ी है। क़ीमत डाक-महसूल सहित ११।।) ६ मँगाने से सातवीं मुफ़्त। देखिए, श्यामसिंहजी स्टुडेंट देहली से प्रशंसा में क्या लिखते हैं—इंपीरियल वाच मिली। बहुत उम्दा है, सच्चा टाइम दे रही है। ज़रूरत पड़ने पर और मँगाऊँगा। महाशय हरिओमूजी ऋषीकेश से लि० हैं कि इंपीरियलवाच सच्चा टाइम दे रही है। १ रिष्टवाच और वी. पी. भेजें। ३१ $\frac{५}{२४}$ पता—

मैनेजर इकबाल सर्विस वाच कं० M.L. ब्रांडर्थ रोड लाहौर

(यदि इसमें ८४ चित्र रंगीन व असली न हों तो क़ीमत वापस देंगे)

असली पुराना कश्मीरी कोकशास्त्र

रंगीन ८४ चित्र सहित संपूर्ण

नक़ली पुस्तक को लोग ३) रु० में बेच रहे हैं। उनकी चिकनी-चुपड़ी बातों में पड़कर धोखे में न पड़ें। क़ी० २) डाक-व्यय स०

१,०००) रुपया माहवार शर्तिया कमा लो

इस पुस्तक में ५२८ हुनर ऐसे छपे हैं, जिनमें से एक भी अपने मतलब का चुन लिया जाय, तो १,०००) रुपया महीना कमाए जा सकते हैं। मसलन् गिलटसाज़ी, फ़ोटोग्राफ़ी, दंदानसाज़ी, कुश्ते बनाना, बाल उड़ाने का तेल, पाउडर, साबुन, बाल काले करने का अँगरेज़ी ढंग का ख़िज़ाब और बाल उम्र-भर न पैदा होने का नुस्ख़ा, मूछ बढ़ाने का तेल, हीरा-मूँगे बनाना, शीशा साफ़ करना, पत्थर जोड़ना, मोमबत्ती, शोरा, गंधक के गिलास, आतशबाज़ी, हर तरह के साबुन, इत्र, तेल, फुलेल, सब रंगों के कपड़े रँगना, अँगरेज़ी ढंग के खाने, डबल रोटी, बिसकुट, मिठाई, विलायती पानी, अचार, मुरब्बे, चटनियाँ, तरह-तरह की बीमारियों के इलाज और नुस्ख़े १०८ बीमारियों की एक दवा का नुस्ख़ा, सुरमे आदि ५२८ हुनर दर्ज हैं। मूल्य डाक-महसूल-सहित सजिल्द १।।)

असली पुराना मिश्र का जादू सचित्र रंगीन संपूर्ण

(मिश्र-देश के प्रचलित जादू-विद्या की एक हस्त-लिखित पुस्तक का तर्जुमा) अपनी छाया सूर्य, शनि, चंद्रमा, मंगल आदि ग्रहों के संग करना (मूसा फ़रऊन के समय की विचित्र बातें आप मँगा करके देख लो) (१) वशीकरण, (२) सूर्यवशीकरण, (३) चंद्रवशीकरण, (४) मंगल, (५) शनिवशीकरण आदि प्रत्येक ग्रह का वशीकरण और इसके सिवा अन्य कई चीज़ों के वशीकरण करने के लिये पूर्ण विधियों से युक्त चकित करनेवाले नुस्ख़े दर्ज किए हैं। इसके सिवा हर तरह के साधन रोगों पर करना। घर बैठे और देशों की सैर करना, पवन में उड़ते फिरना, जिसको चाहना बस कर लेना, दृष्टि से गुप्त हो जाना, दूसरे रूप में प्रकट होना, दूर-दराज़ की वस्तु मँगवा लेना, देव, परी, जिन्नों को अपने अधिकार में रखना और इच्छानुसार उनसे काम लेना इत्यादि—यदि यह पुस्तक लिखे अनुसार न हो तो वापस कर दो। क़ीमत सजिल्द सिर्फ़ १।।।=) डाक-महसूल-सहित।

फ़रंगी और हिंदुस्तानी मदारी अर्थात् भानमती का पिटारा

यह पुस्तक योरप और हिंदुस्तानी मदारियों का पिटारा है। इसमें अंडे, बोतल, गिलास, फुलझड़ी, रुपया, ताश के हर प्रकार के खेल, भूत, प्रेत, जिन्न उतारना, अँधेरे में रोशनी कर देना, मुँह से आग निकालना, हाथ पर आग रक्खें तो हाथ न जले, मनुष्य को क़त्ल करके ज़िंदा कर देना, आम का बूटा, सरसों हाथों पर जमाना, बिना भट्ठी जुआर-चने भून लेना, आग पर खाना न पके, बँधे मनुष्य को छुड़ाना, क़ैदी की बेड़ी खुल जावें, काग़ज़ की कड़ाई में पकौड़े तलना, कमरे में हर रंग की रोशनी हो, जादू की स्याहियों के नुस्ख़े जिनसे लिखा हुआ अन्य मनुष्य पढ़ न सके और सैकड़ों तमाशे बहुत ही सरल रीति से लिखे हैं। मूल्य १।।) डाक-महसूल-सहित।

सच्ची करामात १।।), मुरदा रूहों से मुलाक़ात १।।।), बूटी-प्रकाश १।।), वृक्षावली १।।), चीन व बर्मा का जादू २), कामरूप देश का जादू १=), यक्षिणी-भैरव-साधन [illegible] चिकित्सा १।।=), डाक-महसूल सहित।

[illegible] ऐंड संस ब्रांडर्थ रोड M. L. [illegible]

पीयूष सिन्धु

कफ, खांसी,
दमा, हैजा, पेचिस,
पेटदर्द, संग्रहणी, केहोना
बच्चोंके दस्त, इनफ्लुएंजा
आदिरोगोंकी स्वादिष्ट
विना अनोपान कीदवा
मू०।।) दरजन ४)

सुन्दरश्रृंगार महौषधालय मथुरा

दाद का काल

विना किसी जलन और कष्ट के पुराने-से-पुराने और हर तरह के दाद को सिर्फ़ २४ घंटे में जड़ से खोनेवाली दाद की शर्तिया दवा। मू० फ़ी शीशी ।) आना, डा०-ख़० १ से ४ तक ॥) एक दर्जन एकसाथ लेने से घर बैठे १॥।-)

बाल-पुष्ट सीरप

पतले, दुबले और कमज़ोर बच्चों के सब रोग दूर करके उनको ताक़तवर और तंदुरुस्त बनानेवाली मीठी दवा। मू० फ़ी शीशी ॥) आ०, डा०-ख़० १ से ३ तक ॥) आ०, एक दर्जन एकसाथ लेने से घर बैठे ४॥≡)

श्रीमान् भगवतीप्रसादजी त्रिपाठी म्युनिसिपल कमिश्नर रायबरेली से लिखते हैं—"मैं आपका बनाया "बाल-पुष्ट सीरप" ५ वर्ष से प्रयोग में लाता हूँ। इसके कारण हमारा तमाम व्यय जो हकीमों और डॉक्टरों में हुआ करता था, बंद हो गया। बेशक इससे लड़के तंदुरुस्त रहते हैं और बच्चों के दाँत निकलने के लिये यह एक रामबाण है। कृपा कर ३ शीशी "बाल-पुष्ट सीरप" शीघ्र रवाना कीजिए।"

मिलने का ठिकाना—

सुंदर श्रृंगार महौषधालय,
क (ब्रांच) मथुरा।

५३५

सरदार-कंपनी

ग्रैमोफ़ोन-एजेंट

नं० ३१ अमीनाबाद पार्क, लखनऊ

HIS MASTER'S VOICE

सब प्रकार के ग्रैमोफ़ोन और उनके रिकार्डों के लिये हमारा सूची-पत्र मुफ़्त मँगाइए।

५६६

RUBBER STAMPS OF ALL SIZES AND SHAPES

Estbd. 1899

MADE BY
BHOLA NATH & Co.,
RUBBER STAMP
MAKERS,
LUCKNOW.

IN ANY
LANGUAGE

BHOLA NATH & Co.,

Hardware, Paint and General Merchants
Stationers and Rubber Stamp Makers,

30, AMINABAD PARK,

LUCKNOW.

५३०

Brass Badges and Seals also made.

सबसे सस्ती व उमदा घड़ियाँ ! एकसाथ ३ खरीदने पर चौथी घड़ी मुफ़्त

हमारी घड़ियाँ सबसे उम्दा, मज़बूत, खूबसूरत और सच्चा टाइम देनेवाली हैं। जो विलायत के सबसे बड़े कारख़ाने से बढ़िया पुर्ज़े लगवाकर बनवाई जाती हैं। यही वजह है कि हमारे यहाँ से जहाँ एक घड़ी जाती है, देखनेवाले दर्जनों मँगाते हैं। हमारी घड़ी हमारे लि० मु० न हो, तो क़ीमत लौटा देंगे। गारंटी का छपा हुआ फ़ार्म साथ भेजेंगे। कलाई की घड़ियों के साथ गिलटी या चमड़े का तसमा और पाकेट घड़ी के साथ चैन मुफ़्त देंगे। घड़ियों के चित्रों के नीचे दिए नं० अनुसार वि० पढ़कर आर्डर दें और यक़ीन करें हमसे उमदा घड़ी दूसरी जगह न मिलेगी।

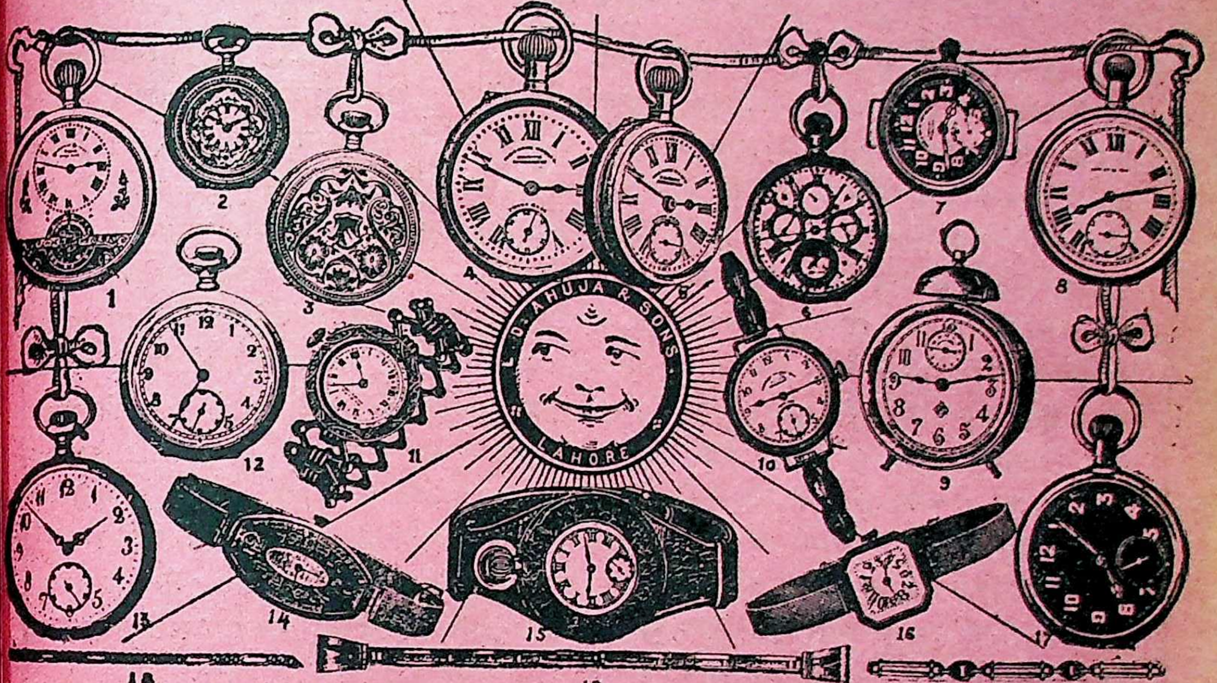

नं० (१) गारंटी १५ वर्ष ह घड़ी ८ दिन में एक बार बी लेती है। पुर्ज़े मज़बूत, क़ की सच्ची, डायल बेलदार ० पर सैं० घूमता, दिल भाता है क़ी० पाकेटसाइज़) चाँदी की १८) बंद केस दी की २१) कलाई व जेब १५॥) चाँदी की २०॥)

नं० (२) गारंटी ८ वर्ष ह रासकोप वाच ३६ घंटे चाबी लेती है ज़्यादा चाबी ने से फ़नर नहीं टूटता। मत ४॥) ५॥) ६॥)

नं० (३) गारंटी १० वर्ष बंद केस की सुनहरी व द पाकेट-घड़ी है, मशीन त अच्छी खूबसूरत मज़बूत म सच्चा देती, चा० ३० क़ी० ११॥) १०॥) ६॥)

नं० (४) गारंटी १२ वर्ष यह पाकेट-वाच फुल जूल लीवर उम्दा बनवाई गई है। आयु-भर दूसरी लेने की ज़रूरत नहीं। चा० ३६ घंटे क़ी० नि० सिलवर १८) १६) १४) चाँदी की २२) २०) १८)

नं० (५) यह घड़ी छोटे क़द की महिलाओं के लि० बनवाई है जो अति सुंदर मज़बूत टाइम सच्चा देती है। फुल-जूल। चा० ३० घंटे क़ी० निकल १५) चाँदी की २०) सोने की ४०) गारंटी १० साल

नं० (६) गारंटी १० वर्ष इस कैलंडर वाच के ५ डायल हैं १ से वक़्त २सरे से तारीख़ ३सरे से महीना ४थे से चाँद ५वें में सैं० है वक़्त सच्चा, चाबी २४ घं० क़ी० १८) १७) १६)

) फ़ैंसी अमरीकन वाच गारंटी ८ साल २४ घं० ८॥) १०॥)

) कलाई की घड़ी चा० २४ घंटे ८॥), ६॥), १२) सोने की ५०) गा० ८ वर्ष

नं० (७) गारंटी १२ वर्ष यह कलाई की घड़ी घने अँधेरे में बिजली की भाँति चमक कर सच्चा टाइम देती है। मशीन बढ़िया जूलदार चा० २४ घंटे क़ीमत १२॥) १०॥) ८॥) ६॥) फु० जू० लीवर १८) १६) १५) १४) चाँदी के लिये फ़ी घड़ी २) ज़्यादा ८ दिन की चाबी की २०) चाँ० २२) बंद केस चाँ० २७) ३०) बिना रेडियम प्रति घड़ी १) कम।

नं० (८) यह रेलवे रेगूलेटरवाच ३० घंटे की चाबीवाली सच्चा टाइम देती है, देखने में २०) की है उमदा व कम क़ीमत चाहें तो मँगावें क़ी० ८) ७) ६॥) बढ़िया १३) १४) १५) गारंटी १० साल

नं० (९) अलार्म टाइम पीस जिस वक़्त चाहो जगा देगी क़ी० ८॥) ६॥) १५ मि० अलार्म का १२॥) वी टाइमपीस ६॥) ५॥) व ५)

नं० (१०) सुनहरी रंग की चूड़ीदार घड़ी वक़्त सच्चा चाबी २४घंटे ७॥) ६॥) १०॥) रोल्ड गो० १५) १८) २०) सोने की ३५) ४०) गारंटी १० वर्ष

नं० (११) सु० स्प्रिंगदार घड़ी हर कलाई पर फ़िट आती है, बहुत ख़ूबसूरत टाइम सच्चा चा० २४ घं० क़ीमत ६) नक़ली जवाहर जड़े हुए १०॥) गारंटी १२ वर्ष

नं० (१२) रेलवेगार्ड ५॥) ६॥) ७॥) १०॥।) इंडियन-मेल ५॥।) ६।) ६॥।) चाबी २४ घंटे गा० १० साल

(१५) कलाई व जेब की २४ घं० ७॥) चाँदी की १०) गा० ८ वर्ष

(१६) कलाई की २४ घं० क़ी० ८॥) ६॥) १२) सोने की ५०)

) रात का सूर्य घुप अँधेरे में चमकनेवाली चा० ३० घं० क़ी० ६॥) ८) ६॥) ११) १५) चाँदी की २०) २२॥) गारंटी १० साल

ज़रूर आज़माइए!
दाम १ डिब्बा २) रुपया
डाकख़र्च ।≡) आना

धातुपुष्टि की दवा
नं० १

कभी धोखा न होगा
दाम ३ डिब्बा ५=) पाँच
रुपया दो आना डाकख़र्च माफ़

हमारी बनाई हुई "धातुपुष्टि की दवा" खाने से बदन में अपूर्व ताक़त पैदा होती है। जैसे सुस्ती, स्वप्नविकार, धातुक्षीणता, दुर्बलता, धातु का पानी के समान पतला होना, बीसों प्रकार के प्रमेह, मूत्र के साथ सफ़ेद गोंद-सा चिकना पदार्थ का गिरना, दिशा (पाख़ाना) होते समय धातु का बिंदु निकल जाना, पेशाब करने के पहले या पीछे तार के समान वा सूत के लच्छे की तरह धातु का गिरना, शकर और रेत मिला मीठा पेशाब जहाँ करो वहाँ चींटे लगना, पेशाब लाल तेल के समान गँदला और कभी-कभी सफ़ेद चूना-सा घुला गिरते नज़र आना, पेशाब करने के बाद ज़मीन में सफ़ेदी जम जाना, बेख़बर सोते में ख़राब हालतों का होना, दिमाग़ कमज़ोर, सिर घूमना, कमज़ोरी के कारण दिल की उम्मेदों से निराश रहना, मरदुमी की कमी, मन में चिंता, कमर या रीढ़ और पिंडलियों में दर्द होना, भूख कम, भोजन से अरुचि, उत्तम चीज़ें खाने से भी शरीर दुबला आलस्य भरा, बदहज़मी, उठते-बैठते समय आँखों के सामने पीली-पीली चिनगारियाँ-सी उड़ती दिखाई देना, जवानी में बुढ़ापे की-सी हालत, रगों में कमज़ोरी, बदन में ढीलापन, असली ताक़त की कमी मालूम होना आदि नई उमर में शक्ति से ज़ियादा मेहनत करने से पैदा हुई नाताक़ती इन सब बीमारियों को यह "धातुपुष्टि की दवा" आराम कर शरीर में नया ख़ून और नई ताक़त पैदा करती है। इस दवा के खाने से बेकाम मनुष्य भी अपनी असली हालत हासिल करता है। क़ीमत फ़ी डिब्बा ५० ख़ूराक की लागत दाम २) डाकख़र्च ।≡) मगर ३ डिब्बा एकसाथ ख़रीदने से केवल ५=) में घर बैठे पहुँचा देंगे। डाकख़र्च भी न पड़ेगा।

लवणमार्तंड

इसके सेवन से बदहज़मी, अग्निमंद, अजीर्ण, पेट में फेना या उफान उठना, खट्टी या धुएँ-ऐसी डकार आना, जी मचलाना, बादी के सबब आँतों का बोलना, पेट फूलना भारी रहना, भूख न लगना, क़ब्ज़ियत दस्त साफ़ न होना, पेट में मीठा-मीठा दर्द होना, वायु साफ़ न निकलना, वायुगोला, मरोड़, अपच, अफरा आदि पेट की तमाम बीमारियों को आराम करता है। क़ीमत फ़ी शीशी १) एक रुपया डाकख़र्च ।≡) सात आना। मगर तीन शीशी एक साथ लेने से सिर्फ़ ३।=) डाकख़र्च माफ़।

श्वेतकुष्ठ की अद्भुत दवा

यह दवा देह के सफ़ेद दाग़ों पर लगाई जाती है। साथ में खाने की भी दवा भेजी जाती है। इस दवा के निस्बत बहुत-से प्रशंसापत्र आए हैं। खाने की दवा का दाम १।) लेप करने की दवा का दाम १) डाकख़र्च दोनों का सिर्फ़ ।≡)

कान के रोगों की दवा

इस दवा को कान में डालने से कान का दर्द कान के भीतर का दर्द, सूजन, कान बहना, कम सुनाई पड़ना, भीतर ज़ख़्म फोड़ा-फुंसी इत्यादि सब दूर होते हैं। यह दवा कान के दर्द को तुरंत आराम करती है। दाम १ शीशी १) डाक-महसूल ।≡) मगर २ शीशी का दाम २।) डाकख़र्च माफ़।

मरिचादि तैल

इस तैल के लगाने से चमड़े की कुल बीमारियाँ जैसे देह में चकत्ते पड़ जाना, खुजली, दाद-खाज वग़ैरा दूर होती हैं। किसी कारण से देह में कैसे ही दाग़ पड़ गए हों इस तैल से फ़ौरन दूर होते हैं। कुष्ठ में व वातरक्त रोगों में यह तैल लाभदायक है। दाम फ़ी शीशी २) डाकख़र्च ≡)

दवा मिलने का पताः—

५००

महोपदेशक पं० सूर्यप्रसाद वाजपेयी राजवैद्य,
सर्व-हितैषी औषधालय नं० ११, मुक़ाम पोष्ट चमरौली, ज़िला उन्नाव।

गोल्ड मेडल हारमोनियम

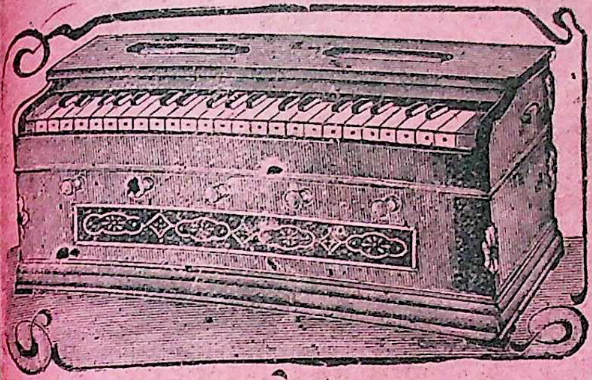

इसके कल-पुर्ज़े बहुत उत्तम हैं, तथा टिउन की हुई रीलें लगी हैं। यह बाजा अपना सानी नहीं रखता।

तीन सप्तक डबलरीड सुमधुर आवाज़ बक्स सहित ४५)

तीन सप्तक डबलरीड स्पेशल क्वालिटी बक्स सहित ५०)

चौथाई मूल्य भेजकर आर्डर दीजिए

नेशनल फ़्लूट

यह स्वयं हम लोगों की संरक्षिता में बनाए जाते हैं। इन बाजों का सामान असली होता है। विशेष कर उनकी रीडें बहुत सुंदर और सुचारु रीति से लगाई जाती हैं। इनका आकार ग्राहकों के मन के मुताबिक़ होता है। आवाज़ मधुर तथा स्पष्ट है।

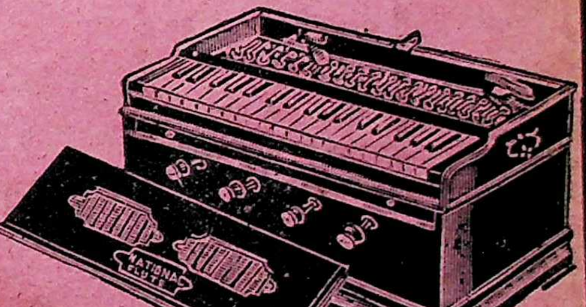

तीन सप्तक डबल रीड स्टिकवाला सागौन के बक्स सहित दाम ... ... ६५)

तीन सप्तक पेरिस डबल रीड सागौन के बक्स के सहित दाम ... ... ८५)

मिलने का पता—

नेशनल हारमोनियम को०,
१०-३ लोअर चितपुर रोड,
कलकत्ता

तार का पता
"MUSICIANS."

Barman's Advertising Agency.

बहुत सँभालकर चीज़ ख़रीदना चाहिए

कलकत्ते के बाज़ार में आजकल हारमोनियम की बहुत-सी दुकानें हो गई हैं। लेकिन डवारकीन के कारख़ाने का बना हुआ बाजा उन सबसे श्रेष्ठ है—यह जिन लोगों ने हमारा बाजा बजाया है उनका मत है।

बहुत-से आदमी यह सोचते हैं कि रीड अच्छा होने से बाजा उम्दा उतरता है—उनकी यह धारणा भूल है। विंड-चेस्ट हारमोनियम का प्राण है। हम लोगों का "ग्रामोला" जर्मन या अमेरिकन रीड का बना हुआ है—लेकिन बढ़िया विंड-चेस्ट होने के कारण बाज़ार के पैरिस रीड के माफ़िक़ काम देता है।

"ग्रामोला" अर्गोन रीड का—

तीन सप्तक, दो सेट रीड ... ४५)

तीन सप्तक, दो सेट बेस ... ५५)

तीन सप्तक, दो सेट जुड़ीस्पेशल ६०)

पैरिस रीड का—

तीन सप्तक, दो सेट रीड ... ६०)

तीन सप्तक, दो सेट बेस-जुड़ी ... १००)

साढ़े तीन सप्तक, दो सेट रीड ... १२५)

आज ही आर्डर दीजिए
साथ १०) भेजिए।
बाक़ी वी० पी०।

"डवारकीन फ़्लूट"

भारतवर्ष में पहले-पहल डवारकीन ही का हारमोनियम बना था—हम लोगों के हारमोनियम का आदर्श मानकर दूसरे बाजों का यथार्थ मूल्य जाँचना होता है। डवारकीन फ़्लूट हारमोनियम को भारत के संगीतज्ञ सब कोई श्रेष्ठ मानते हैं।

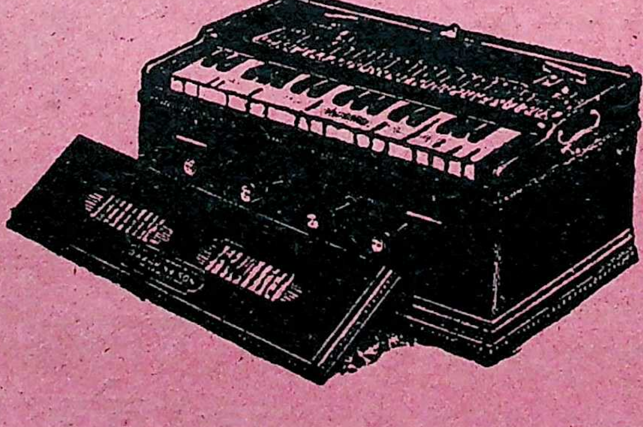

डवारकीन ऐंड संस, ८ नं० डलहौसी स्क्वायर
कलकत्ता

लेख-सूची

पृष्ठ

१. वर्षा (कविता)—[लेखक, बाबू जगन्नाथदास "रत्नाकर" बी० ए० ... ... १

२. प्रयाग के क़िले की 'लाट' का शिलालेख—[लेखक, श्रीअवधवासी लाला सीताराम बी० ए० ... ... २

३. गो० तुलसीदास की लिखी वाल्मीकीय रामायण—[लेखक, पं० भागीरथप्रसाद दीक्षित ५

४. भूत (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत प्रेमचंद ६

५. महाकवि अकबर—[लेखक, पं० अमरनाथ झा एम्० ए० (प्रयाग-विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर) १३

६. हिंदू-विश्वविद्यालय—[लेखक, प्रोफ़ेसर रामाज्ञा द्विवेदी एम्० ए० ... ... १९

७. मिस मेरी कॅरेली—[लेखक, श्रीयुत रामचंद्र टंडन बी० ए० ... ... २१

८. जल-कण का जीवन-संगीत (कविता)—[लेखक, श्रीयुत मोहनलाल महतो गयावाल "वियोगी" २७

सिपाही-विद्रोह

(सन् सत्तावन का ग़दर)

५५० पृष्ठ और २४ चित्र, सुंदर छपाई और बढ़िया काग़ज़।

सभी समाचार-पत्रों द्वारा प्रशंसित

इससे अच्छा अब तक कोई ग़दर का इतिहास नहीं निकला।

क्रमबद्ध, ओजस्विनी भाषा और मर्मस्पर्शी रोमांचकारी भीषण घटनाओं को पढ़कर आप अवाक् रह जायँगे।

हज़ारों प्रतियाँ बिक चुकीं।

मूल्य ४), सुनहरी रेशमी जिल्द का ४॥)
कारावास-कहानी मू० २॥), केथोराइन ॥),
राजनीतिक षड्यंत्र १)

मिलने का पता—राष्ट्रीय ग्रंथरत्नाकर
कार्यालय, ७-२ हालिडे स्ट्रीट,
कलकत्ता।

७०
२पू०

जल्दी कीजिए ! यह अवसर हाथ न आएगा !!

अपूर्व ग्रंथ

भारत-भैषज्य-रत्नाकर

(आयुर्वेदीय फार्माकोपिया)

इसमें आयुर्वेद के प्रामाणिक ग्रंथों के चुने हुए लगभग-दश हज़ार प्रयोगों (नुस्ख़ों) का संग्रह अकारादि-क्रम से क्वाथ, चूर्ण, अवलेह, आसव, रस आदि पृथक्-पृथक् प्रकरणों में किया गया है। इस एक ही ग्रंथ से सैकड़ों ग्रंथों का काम निकल सकता है। किसी भी ग्रंथ के चाहे जिस प्रयोग की आवश्यकता हो, इससे फ़ौरन् निकाल लीजिए।

अन्य किसी ग्रंथ में भी इतने अधिक प्रयोग नहीं हैं। हिंदी-टीका भी अत्यंत उत्तम है। रोगानुक्रमणिका, परिभाषाएँ आदि विषयों से परिपूर्ण। अत्यंत मनोहर सुनहरी पक्की जिल्द-सहित, प्रथम भाग का मूल्य ४॥), इस मास के अंत तक ४)

पता—ऊंझा आयुर्वेदिक फार्मेसी (C) रीचीरोड, अहमदाबाद।

नोट—यह फार्मेसी असली आयुर्वेदीय औषधियाँ सस्ते मूल्य में बेचने के लिये हिंदुस्तान-भर में प्रसिद्ध है। अनेक प्रदर्शनों में पदक और प्रमाण-पत्र मिले हैं। वैद्यों के साथ ख़ास रियायत की जाती है। सूचीपत्र मँगाइए।

पृष्ठ
९. **कलिकाल के कवि** (व्यंग्य-चित्र और कविता)—[चित्रकार, श्रीयुत मोहनलाल महतो गयावाल "वियोगी" ... ३८
१०. **मनोव्यथा** (कविता)—[लेखक, पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय "हरिऔध" ... ३६
११. **पथ-प्रदर्शन** (कविता)—[लेखक, श्रीयुत "रसिकेश" ३९
१२. **सोने और चाँदी का व्यापार**—[लेखक, श्रीयुत कस्तूरमल बाँठिया बी० कॉम० ३९
१३. **मेरी भारत-यात्रा**—[लेखक, श्रीयुत दुखहरन (फ़िजी से) ४६
१४. **परिचय** (कविता)—[लेखक, बाबू मैथिलीशरण गुप्त ६४
१५. **आलोचना का उत्तर**—[लेखक, श्रीयुत हरगुलाल वाशिष्ठ ६४
१६. **पर्यवसान** (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत चंडीप्रसाद "हृदयेश" बी० ए० ... ६६
१७. **सर्वव्यापी** (कविता)—[लेखक, श्रीयुत गोपालशरणसिंह ७६

मुफ़्त नमूना मँगाकर दे

'सुखविलास' पान में खाने का मसाला पान में खाके देखो। दुनिया में नई चीज़ है। इसकी सिफ़त को आज़माके देखो। क़ीम फ़ी दरजन बड़ी डिब्बी ३।।।) व छोटी १।।=)
५४/१६७ पं० प्यारेलाल शुक्ल, हूलागंज, कान

कृषि-संबंधी पुस्तकें
१. खाद और उसका व्यवहार ।)
२. लाख की खेती ।)
३. धान की खेती ।)
४. नींबू-नारंगी =)
५. मूँगफली की खेती
६. कपास की खेती
७. पौंड़ा, गन्ना, ऊख
८. कृषि-सिद्धांत
९. कृषि-सार
२८/८४ पता—कृषि-भवन, प्रयाग।

प्यारी ! यह अँगूठी कैसी निकली ?

प्राणवल्लभ ! अतीव नयनाभिराम। अत्यंत सुंदर गले का हार और हाथों के कंगन ने ही तो मेरी शोभा बढ़ा दी है। ज़रा इस नन्ही-सी अँगूठी को तो देखो। दाम इतना कम, किंतु जौहर इतना बड़ा। प्राणनाथ ! इसे तुम कहाँ से लाए हो, उस जौहरी का नाम क्या है, क्या

ठाकुरलाल हीरालाल!

प्यारे ! पूरा पता बताओ, तो इन कोमलांगों को ढकने के लिये सभी सोने, चाँदी और जवाहिरात के गहने मँगा देखूँ।

लो प्यारी यह पता है:—

ठाकुरलाल हीरालाल कंपनी, १२, लालबाज़ार स्ट्रीट, कलकत्ता।

पृष्ठ

१८. राजशेखर और काव्यमीमांसा—[लेखक, पं० रामसेवक पांडेय ७७

१९. दो बूँदें (कविता)—[लेखक, बाबू जयशंकर "प्रसाद" ८३

२०. संगीत-सुधा—[स्वरकार, श्रीयुत "निषाद" और शब्दकार, पं० गोविंदवल्लभ पंत ८४

२१. सुमन-संचय—[लेखकगण, श्रीयुत धुरंधर (जर्मनी से), बाबू महावीरप्रसाद श्रीवास्तव "विकल", श्रीयुत लक्ष्मणसिंह क्षत्रिय साहित्य-भूषण, श्रीयुत "कोई", पं० रामप्रसाद शर्मा, श्रीयुत नंदकिशोर अग्रवाल "चौधरी", नाट्यकार पं० तुलसीदत्त "शैदा", श्रीयुत नरोत्तम व्यास, श्रीयुत मंगलप्रसाद विश्वकर्मा विशारद, पं० नित्यानंद शास्त्री दाधीच, श्रीयुत महेशप्रसाद मौलवी-फ़ाज़िल, श्रीयुत वंशीधर और पं० हनूमान शर्मा ... ८६

२२. विज्ञान-वाटिका—[लेखकगण, बाबू महावीरप्रसाद श्रीवास्तव बी० एस्-सी०, एल्० टी०, विशारद और श्रीयुत रमेशप्रसाद बी० एस्-सी०, केमिस्ट ९८

वि-विनोद पं० अर्जुनदत्त की स्वर्गीय दिव्य औषधियाँ

नेत्रबिंदु

माड़ा, फूली, केवड़ा, झाँई, आँख-जाला, धुंधली, रतौंधी इत्यादि आँख के संपूर्ण रोगों को फ़ायदा पहुँचाता है। क़ीमत १) एक रुपया।

दद्रुभंजन लोशन	क़ीमत फ़ी शीशी	॥)	दर्जन	४॥)
दद्रुभंजन मलहम	,, ,, ,,	॥)	,,	४॥)
सिर-दर्द का बाम	,, ,, ,,	॥)	,,	४॥)
बालरक्षक	,, ,, ,,	१॥)	,,	१५)
प्रेमहारी रस	,, ,, ,,	२)	,,	२०)
मृगीविनाशक	,, ,, ,,	२)	,,	२०)
दमसंहारी	,, ,, ,,	२)	,,	२०)
कर्ण-तेल	,, ,, ,,	।॥)	,,	७)
ज्वरनाशक	,, ,, ,,	१।)	,,	१३)
सालसापरेला	,, ,, ,,	१॥)	,,	१५)
खाँसीविनाशक	,, ,, ,,	१।)	,,	१३)

पता—यम्० बी० अर्जुनदत्त शराफ़,
६ ६
८ ३ २ नल बाज़ार मार्केट, बंबई।

दो में से एक ख़रीदकर फिर आपको कम-से-कम ११ साल सन् १९२४ से लेकर १९३५ तक

दूसरी घड़ी ख़रीदने की आवश्यकता न पड़ेगी क्योंकि बावजूद बीसियों साल तक काम देनेवाला होने के हम आपको इनके साथ केवल ११ साल की गारंटी का दस्तख़ती पर्चा देंगे क्योंकि हमारी गारंटी गपोड़संखों की-सी नहीं, बल्कि इस समय के अंदर घड़ी के बंद हो जाने पर बिलकुल मुफ़्त में चलाकर देंगे।

नापसंद होने पर वापिसी की शर्त

इँगलिश रिस्ट वाच

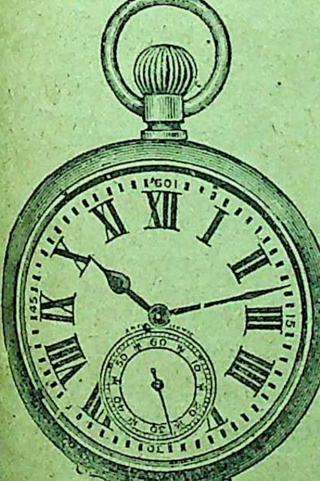

मज़बूत, बढ़िया और पाएदार गिलट की हुई मशीन। २४ घंटों में १ मिनिट का फ़र्क़ नहीं देती। निकल चाँदी का केस रेडियम डायल देखने में इतनी सुंदर कि ५०) की मालूम होती है। डायल चीनी का, सुइयाँ घुमाने को पिन मौजूद चाबी २४ घंटा, गारंटी ११ साल, दाम मय तस्मा ८॥), ६ लेने से एक मुफ़्त।

इँगलिश लीवर पाकेटवाच

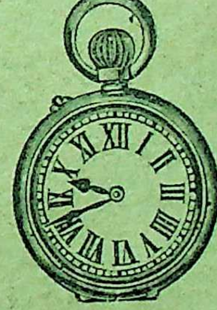

बढ़िया ज़ूल्दार और पुख़्ता गिलट की हुई मशीन। वक़्त में कभी ज़रा भी फ़र्क़ नहीं देती। डायल चीनी का, सेकंड की सुई लगी, चाबी ३० घंटे की सुइयाँ घुमाने की अलग पिन लगी हुई, प्योर निकिल केस, मज़बूती इतनी कमाल की कि छत पर से गिरे तब भी न टूटे और किसी भी सवारी में बिगड़ने का नाम नहीं लेती। गारंटी ११ साल दाम मय चेन ११)

सुनिए! श्रीपृथ्वीसिंहजी सौदागर ज़ि० मुज़फ़्फ़रगढ़ से लिखते हैं, आपकी भेजी "इँगलिश रिस्ट वाच" बहुत अच्छी है। १२ और भेजिए।

असली अठरोज़ा

पाकेट वाच गा० १५ वर्ष क़ीमत १२) मय चेन। ८रोज़ा रिस्ट वाच मय तस्मा १८) तीन लेने से एक मुफ़्त।

देखिए! बाबा प्रेमदास गंगादास बिलोचिस्तान से लिखते हैं, आपकी भेजी "पाकेटवाच" निहायत उम्दा है। इसके साथ की ही ३ और भेजिए।

६ २
२ १ ७ पताः—प्रोप्राइटर दी आहूजा वाच कंपनी (M. L.) कटरा घनईयाँ, अमृतसर

पृष्ठ

३. डॉक्टर नगीनचंद जे० शाह, एम्० ए०, पी-एच्० डी० (भारतीय अर्थ-शास्त्र के सर रतन (तात-अध्यापक) २३
४. प्रोफ़ेसर मुकुंद-मोरेश्वर देसाई, एम्० ए० (ऑनर्स) (अँगरेज़ी तथा फ़्रेंच के अध्यापक) २४
५. वैज्ञानिक प्रयोगशाला का एक कमरा (प्रोफ़ेसर गोडबोले रसायनशाला में काम कर रहे हैं) २६
६. अंतर्विद्यालय-व्याख्यान के लिये राजा मोतीचंद की दी हुई चाँदी की सरस्वती-ट्रॉफ़ी २७
७. नाट्य-समिति द्वारा अभिनीत 'चित्रा' का एक दृश्य (चित्रा के रूप में एक छात्र) ... २७
८. 'चित्रा' का एक दूसरा स्थल (यह भी वही छात्र हैं । देखिए, भाव का परिवर्तन कैसा झलक रहा है) २७
९. व्यायाम-प्रदर्शिनी का एक दृश्य (देखिए, ऊँची कुदान हो रही है) २८
१०. व्यायाम-प्रदर्शिनी का दूसरा दृश्य (विद्यार्थी जिम्नास्टिक कर रहे हैं) २८
११. व्यायाम-प्रदर्शिनी का एक और दृश्य (विद्यार्थी एक मील की दौड़ जीत रहे हैं) ... २८

हिंदी-साहित्य में एक अनोखा रत्न

बृहत् प्राकृत-हिंदी-कोष

[संस्कृत-प्रतिशब्दों से अलंकृत]

कर्ता—कलकत्ता-विश्वविद्यालय के प्राकृत-साहित्य-व्याख्याता, न्याय-व्याकरण-तीर्थ पं० हरगोविंददास सेठ

चौदह वर्षों के घोर परिश्रम से यह कोष तैयार किया गया है । इस कोष में विभिन्न प्राकृत भाषाओं के क़रीब ७५००० शब्दों की व्याख्या, सैकड़ों प्राचीन ग्रंथों के अवतरण और पूरा-पूरा हवाला देकर की गई है । इस कोष से प्राकृत साहित्य के अभ्यास में तो सुविधा होती ही है, भारतवर्ष की हिंदी आदि सभी अर्वाचीन बोलियों का, जो सीधी तरह प्राकृत से ही उत्पन्न हुई हैं, वैज्ञानिक पद्धति से अध्ययन करने में भी अमूल्य सहायता मिलती है ।

अनेक धुरंधर विद्वानों ने इस कोष की मुक्तकंठ से प्रशंसा की है ।

यह पुस्तक चार भागों में विभक्त है । सुंदर चिकने काग़ज़ पर छपती है । प्रथम और द्वितीय खंड छपकर तैयार हैं, मूल्य क्रमशः ८) और १०) ; तीसरा खंड छप रहा है । डाक-ख़र्च अलग ।

मिलने का पता—दलीचंद माणेकचंद सेठ
५२/१८९ ४९, ईज़रा स्ट्रीट, कलकत्ता ।

पंचभूत

[लेखक—कवि-सम्राट् रवींद्रनाथ ठाकुर]

पंचभूत, साहित्य-जगत् का देदीप्यमान सूर्य, गद्य-काव्य-कानन का कुसुमित कुसुम, कहानी के रूप में अद्भुत विचारों, दार्शनिक तत्त्वों तथा आध्यात्मिक उक्तियों का रत्नाकर है । पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु से किस तरह मानव-शरीर से लेकर समस्त संसार की उत्पत्ति होती है, ये इस संसार में कैसा-कैसा खेल दिखाते हैं, इन तत्त्वों के क्या कार्य हैं—प्रभृति बातें जाननी हों, तो इसे पढ़िए । इसमें कहानी के रूप में सौंदर्य, स्त्री-पुरुष, गाँव, मनुष्य, मन, अखंडता, गद्य-काव्य, काव्य का तात्पर्य, प्रांजलता, कौतुक-हास्य, कौतुक-हास्य की मात्रा, सौंदर्य में संतोष, भद्रता का आदर्श, अपूर्व रामायण, वैज्ञानिक कौतूहल—प्रभृति ऐसे उच्च विचारों से पूर्ण कहानियाँ हैं कि पढ़कर दंग हो जाना पड़ता है । सारांश यह कि आप साधारण उपन्यास-पाठक हों, तो पंचभूत पढ़िए, लेखक हों, तो पढ़िए, संपादक हों, तो पढ़िए, दार्शनिक, अध्यात्मचिंतक, साहित्यिक—चाहे जो हों, जिस विचार के हों, इसे पढ़िए । इसमें वह आनंद, वह ज्ञान-विज्ञान मिलेगा, जो आज तक किसी पुस्तक में दिखाई न दिया है । १९० पृष्ठ की सजिल्द पुस्तक का मूल्य १॥), वारांगना-रहस्य ६ भाग ४॥), पृथ्वीराज-जीवनी १), महिला-महत्त्व ३), भीमसिंह १।), सिकंदरशाह १॥=)

पताः—पाठक ऐंड कंपनी ; नं० १२।१ चोरबागान लेन, कलकत्ता ।

पृष्ठ
१२. १५ मील की साइकिल-दौड़ में प्रथम आए हुए एक विद्यार्थी (अभी साइकिल ही पर हैं) २८
१३. छुट्टी के दिन का मनोविनोद (कार्टर्स के कुछ विद्यार्थी एक सड़क बना रहे हैं) ... २९
१४. विश्वविद्यालय के एक ग्रेजुएट स्कॉउट नैनी-ताल की तराई में भ्रमण कर रहे हैं ... ३०
१५. पहाड़ी झरने का एक दृश्य (ऐसे ही स्थानों पर विश्वविद्यालय के स्कॉउट लोग प्रायः जाते हैं) ३०
१६. फ़िज़ी-द्वीप-निवासी श्रीयुत दुखहरन ... ४६
१७. एस्० एस्० चनाब-नामक जहाज़ पर लेखक ४७
१८. सिंगापुर का बंदरगाह ४७
१९. सिंगापुर का हिंदू-मंदिर ४८
२०. सिंगापुर का एक चीनी मंदिर ४८
२१. सिंगापुर के चीनी-मंदिर की एक मूर्ति ... ४९
२२. सिंगापुर में मुसलमानों की एक मसजिद... ५०
२३. बीच-स्ट्रीट, पिनांग ५०
२४. कलकत्ते की चौरंगी-सड़क से क़िले के मैदान और नगर का दृश्य ५१
२५. मदरास की माउंट-रोड (ऊँची सड़क) ... ५२

५० क़िस्म की बढ़िया रबर की मुहर
ऐसी २॥) रु.
सूची मुफ्त
जी. सी. खत्री, रबर स्टाम्प, काशी

सीधी लाइन की सादी मुहर (केवल अक्षरों की दो लाइनें, २ इंच लंबी, और आधा इंच चौड़ी तक) छापने का सामान सहित। मूल्य १) डा० ख़० ।≡) बड़ी होने से दाम अधिक होगा। हिंदी, अँगरेज़ी, उर्दू, बँगला कोई भाषा हो। अंडाकार मुहर जैसा ऊपर नमूना है, २॥) मय सामान। डा० ख़र्च ।≡) काम देखकर ख़ुश होंगे।

१६/२४ पताः—जी० सी० खत्री, रबर स्टांप मेकर,
बनारस सिटी।

घोटकर संगीतालय

तीन महीने में हारमोनियम सिखानेवाली किताब मूल्य १।-)

हमारे यहाँ क़िस्तबंद मूल्य में भी हारमोनियम दिए जाते हैं।

घोटकर ऐंड को०,
१६०/६० ३०, अपर चितपुररोड, कलकत्ता।

नमूना मुफ़्त मँगाकर परीक्षा करिए

जगत्-प्रसिद्ध

अग्निवर्द्धक वटी—यह स्वादिष्ट और गुणदायक हैं। विशेष क्या लिखें, नाम ही से इसका गुण झलक रहा है। इसके सेवन से पेट का दर्द, मंदाग्नि, अरुचि, बदहज़मी, अम्लपित्त, वायुगोला, अफरा, खट्टी डकारों का आना, छाती जलना, अजीर्ण इत्यादि रोगों को आराम करके भूख को बढ़ाती है। चार टिकियाँ भोजनोपरांत खा लीजिए—कितना भी खाना खाया हो, तुरंत हज़म हो जायगा। मूल्य फ़ी बक्स ।=); डाक-ख़र्च १ से ३ तक ।≡)

शोधी हरैं—छोटी हरैं शोधकर बड़ी ही स्वादिष्ट तैयार की हैं। इनके सेवन से रक्त के दोष, अजीर्ण, पेट फूलना, खट्टी डकार, जी मिचलाना, उदरशूल, वायु रुकना, भूख न लगना, वायुशूल, बवासीर आदि पेट के सब रोग दूर होकर अग्नि तेज़ होती है, भोजन ठीक पचता है और दस्त साफ़ होता है। पाक-स्थली की उग्रता दूर होती है, जिससे शरीर सदैव सुखी और नारोग रहता है। मूल्य फ़ी बक्स ।-) डाक-ख़र्च १ से ३ तक ॥)

मनमोहन-तेल—वनस्पतियों और सुगंधित देशी फूलों से बनाया हुआ बालों में लगाने का सबसे उत्तम तेल है। मू० १) डा० ख़० ।≡)

स्त्री-रोग की दवा—यह औषधि स्त्रियों के वास्ते प्रदर व सफ़ेदी के लिये अद्भुत गुण करनेवाली है। मू० १॥)—डाक-ख़र्च ।-)

नोट—नमूना मँगाना हो, तो =) का टिकट भेजिए।

पता—ब्रजमंडल ट्रेडिंग कंपनी, मथुरा, यू० पी०

२६. बंबई का म्युनिसिपल ऑफ़िस और विक्टोरिया-टर्मिनस-रेलवे-स्टेशन ५४
२७. इलाहाबाद का ख़ुसरू-बाग़ ५५
२८. स्वामी भास्करानंद का समाधि-मंदिर, काशी ... ५६
२९. लखनऊ का छतर-मंज़िल ५७
३०. आगरे का विश्व-विख्यात ताजमहल ... ५७
३१. ताजमहल के उद्यान का मुख्य द्वार ... ५८
३२. आगरे की मोती-मसजिद का भीतरी भाग... ५८
३३. दिल्ली का अलाउद्दीन फाटक ५९
३४. दिल्ली के क़िले का नौबतख़ाना ५९
३५. दिल्ली की एक बादशाही इमारत में संगमरमर पर की गई बारीक नक़्क़ाशी ६०
३६. दिल्ली की कर्ज़न-मसजिद ६१
३७. रंगून का बौद्ध-मंदिर (लकड़ी में विचित्र बारीक नक़्क़ाशी और शीशे की सुंदर जड़ाई) ... ६२
३८. बुद्धदेव की मूर्तियाँ और पवित्र पद-चिह्न ... ६३
३९. बौद्ध-मठ में बौद्ध भिक्षु और पुजारी ... ६३
४०-४४. विज्ञान-वाटिका-संबंधी ५ चित्र ... १०८
४५-५७. विविध विषय-संबंधी १३ चित्र ... १३४

स्वर्ण सप्तामृत वटी

यह गोलियाँ स्वर्ण, मुक्ता, माणिक्य, प
नीलम, अंबर तथा मृगमद प्रभृति अनेक बहुमू
औषधियों के योग से तैयार हुई हैं। इनके से
ही स्नायुओं में बिजली की लहरें दौड़ने लगती हैं
और ४० दिन के सेवन से जल की भाँति तरल
तथा सूखी और मृत धातु वज्र के समान दृढ़ हो जा
है। इनका सेवन धातु का पतलापन, शीघ्रपतन,
२० प्रकार के प्रमेह और नपुंसकता आदि दोषों को
दूर करके स्वाभाविक स्तंभन-शक्ति को उत्पन्न कर
तथा क्षयी, अर्श, ग्रहणी, स्त्रियों के प्रदर रोग, हिस्टे
रिया एवं बंध्यात्व प्रभृति रोगों को जड़ से खो दे
है। इनकी प्रशंसा में प्राप्त हुए हज़ारों सार्टीफ़िके
हमारे पास विद्यमान हैं। ४० गोलियों का मूल्य ५)

ख़ूनी व बादी बवासीर का शर्तिया इला

अंदर और बाहर के मस्से विना किसी कष्ट, श
और क्षार कर्म के सदा के लिये समूल नष्ट हो जाते हैं।

पता—पं० बाबूराम शर्मा रसवैद्य,
आयुर्वेदीय औषधालय, आगरा।

छप गया ! नया संस्करण !! विक्रयार्थ प्रस्तुत !!!

लोकमान्य स्वर्गीय तिलक का

मूल्य ४) **भगवद्गीता-रहस्य** (हिंदी में) डाकख़र्च ।।।) अलग

इस नए संस्करण में ग्रंथकर्ता के जीवन के कुछ चित्र, कुरुक्षेत्र की समर-भूमि में खड़े हुए श्रीकृष्ण और अर्जुन का एक तिरंगा चित्र, जो मुख्य कर इसी के लिये बनवाया गया था, लगाया गया है। लोकमान्यजी के कुछ हस्त-लिखित अंश का नमूना भी चित्र-रूप में इसमें लगा है, जो उन्होंने माँडले की जेल में लिखा था। सूची का अंश इसमें और बढ़ गया है। यह संस्करण बहुत सुंदर छापा है। कपड़े की जिल्द पर स्वर्णाक्षरों में नाम छपा हुआ है। निम्न-लिखित भाषाओं में भी इसके संस्करण मिल सकते हैं :—

मराठी ५)
कनारीज़ ३) डाक-ख़र्च अलग।
गुजराती ४)

अँगरेज़ी संस्करण भी छप रहा है, जो लोकमान्यजी के वर्ष-दिन पर अर्थात् १ अगस्त सन् १९२५ को निकल जायगा।

पुस्तक-विक्रेताओं के लिये निम्न-लिखित कमीशन दिया जायगा।

५० प्रति तक ।) प्रति कापी कमीशन
१०० ,, ,, ।=) ,, ,,
१०० से ऊपर ख़रीदने से ।।) प्रति कापी कमीशन
१००० ख़रीदने से ।।=) ,, ,,

निम्न-लिखित पते से मँगाइए या पत्र-व्यवहार कीजिए—

(1) R. B. Tilak,
Lakhani Terrace,
94-96, Cawas ji Patel Street,
Fort, Bombay.

(2) S. B. Tilak,
Gaikwad wa
568, Narayen Peth, Poo

कैवल्य शास्त्र

[ले०—प्रो० ज्वालाप्रसाद सिंहल, एम्० ए०]

सृष्टि की रचना-विधि, मुक्ति की वैज्ञानिक विधि, ब्रह्म व जीव का स्वरूप, ब्रह्म के स्वरूपानुसार अटल धर्म, संस्कारों के नियम, शुद्धि की विधि, ज्ञान, कर्म, योग, भक्ति, प्रेम के रहस्य, सत्त्व, रज, तम का भेद, सांख्य-न्याय-वेदांत की ऐक्यता, द्वैत-अद्वैत का मिलान। इसका अँगरेज़ी संस्करण विलायत व अमरीका तक में बिक रहा है। लो० तिलक के गीता-रहस्य में भी ऐसी विवेचना न मिलेगी। ऐसी पुस्तक संसार में दूसरी है ही नहीं। इसको पढ़कर नासदीय सूक्त आदि श्रुतियाँ ठीक-ठीक समझ में आती हैं। मूल्य ५) पाँच रुपया।

सरस्वती—"विद्वत्तापूर्ण"। श्रीभगवानदास, एम्० ए०, काशी—"प्रज्ञापूर्ण"। श्रीगोपीनाथ, कविराज एम्० ए०, काशी—"अद्वितीय"। श्रीसूर्यकांत शास्त्री, व्याकरण-तीर्थ—"दिव्य संदेश"। श्रीहरीहरशास्त्री, साहित्योपाध्याय—"परमोपयोगी"।

हिंदू-धर्म दर्पण ३)

हिंदू-धर्म के सिद्धांतों का संग्रह। पौराणिक कथाओं की वैज्ञानिक व्याख्या। हिंदू-धर्म के सर्वश्रेष्ठ व प्राचीन होने व हिंदुओं का पश्चिमी देशों में भी प्रभाव होने के प्रमाण। अद्भुत पुस्तक प्रत्येक हिंदू को पढ़नी चाहिए। प्रथम भाग १), द्वितीय भाग २), दोनों ३)।

माधुरी—"पुस्तक बड़े महत्त्व की है।"

राज्य—"हिंदी-साहित्य में ऐसे अमूल्य रत्न की बड़ी आवश्यकता थी।"

ब्राह्मण समाचार—"बहुत-से संदेहों को दूर करने में सफल हुए हैं।"

सनातन धर्मप्रचारक—"दुर्लभ पुस्तक।"

श्रीरघुवरदयाल शास्त्री एम्० ए०, प्रिंसिपिल, कालेज लाहौर—"अधिकतर व्याख्याएँ पूर्णतया मौलिक हैं व लेखक की कल्पना-शक्ति असाधारण है।"

विद्यासागर की प्रसिद्ध पुस्तकें

(रचयिता बा० प्यारेलाल एस्० आर० एस्०) इनके कई-कई संस्करण हज़ारों के हो जाना ही इनकी श्रेष्ठता दिखाता है। इस ग्रंथमाला की पुस्तकें लाखों की संख्या में बिक चुकी हैं। विलायती पत्रों ने भी प्रशंसा की है। राज्य से भी सम्मानित, इस ग्रंथमाला की कुछ सर्वोपयोगी पुस्तकें।

वृक्षावली १।)

तीसरा सं०—फल-फूल-सुगंध-शोभा-मेवा-मसाले आदि देशी विलायती वृक्षों व पौदों का लगाना, रक्षा करना, क़लम करना, बीज, खाद, पृथ्वी-परीक्षा।

दुनिया की सैर १।)

३ सं०—चीन, जापान, तिब्बत, रूस, फ़ारिस, मिश्र, अफ़रीका, अमरीका आदि अनेक देशों के अद्भुत वृत्तांत। उपन्यास-सी रोचक।

समाज-संगठन ॥=)

काशी के प्रसिद्ध विद्वान् बा० भगवानदास एम्० ए० के हिंदू-समाज-सुधार-संबंधी महत्त्व-पूर्ण विचार।

इलाज बे दवा १।)

बिना दवा के मिट्टी, पानी, हवा, व्यायाम, पथ्य, सूर्यकिरण आदि से चिकित्सा।

इलाज मुफ़्ती १।)

पत्ते, फल, जड़, नमक, तेल आदि सुलभ व अल्प मूल्य वस्तुओं से चिकित्सा।

भावीविचार १।)

४ सं०—शकुन, स्वरोदय, सामुद्रिक, स्वप्नपरीक्षा।

जड़ी बूटी १।)

तीसरा सं०—जंगल व पहाड़ की बूटियों की पहचान, गुण, मिलने की ऋतु व स्थान। महात्माओं से प्राप्त।

चिकित्सा-सर्वस्व २॥)

दूसरा सं०—निदान-निघंट-चिकित्सा, रसक्रिया, नसों व हड्डियों का हाल, नाड़ी व मूत्र-परीक्षा आदि।

सूर्यग्रहण २॥)

महाराज शिवाजी व औरंगज़ेब की मठभेड़ का ऐतिहासिक उपन्यास।

वीर कुमार छत्रसाल १॥)

बुंदेली स्वतंत्रता के लिये वीर छत्रसाल का यवनों से युद्ध। ऐतिहासिक नाटक।

गुप्त चिकित्सा १।)

आजकल नवयुवकों के शरीर में रोग घुन-से लग गए हैं, उन्हीं के उपकार के लिये, जिससे वह अपनी रक्षा कर सकें। मर्दों के रोगों का इलाज।

शिल्पसागर १।)

२ सं०—गोटा, पैनक, चिकन, मोज़े, गलीचा आदि बुनना, फोटू, तार, गिलट, साबुन, रबर की मुहर, खाँड़ के खिलौने व लच्छे, रंगसाज़ी, आतिशबाज़ी आदि।

इँगलिश टीचर १।)

२ सं०—इसकी नक़ल करनेवालों पर हाईकोर्ट तक से डिगरी हुई। ग्रामर, बोलचाल, पत्र लिखना आदि सब अति उत्तम।

मेवाड़ गौरव १)

वीर भूमि मेवाड़ का गौरव-मय इतिहास। प्रत्येक हिंदू के पढ़ने योग्य है।

रूस का षड्यंत्र १)

स्वतंत्रता के लिये षड्यंत्रकारियों के घटना-पूर्ण जीवन का चित्र।

स्त्रीचिकित्सा १।)

स्त्री-रोगों की चिकित्सा, गर्भ की रक्षा व प्रसव-काल में रक्षा अति-उपयोगी। स्त्रियों के स्वास्थ्य रक्षा-से संतान अच्छी व बलिष्ठ होती है व घर में प्रसन्नता रहती है इसलिये इस ओर ध्यान दीजिए।

सत्ज्ञानप्रकाशक-मंदिर, नं० २, मामू-भांजा मुहल्ला, अलीगढ़ सिटी।

Calcutta Musical Stores

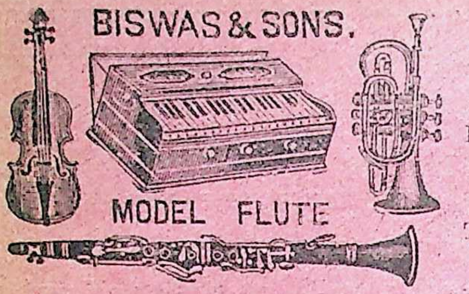

Harmoniums of all kinds of reeds, *viz*., American, German, Paris, Esteve, Kasriel, etc., in Scale-Change, Coupler, Dulcetina, Travelling, 's Folding, Box, etc.

All sorts of **Musical Instruments** are sold at Moderate Prices.

HARMONIUMS.

3 Octv. 1 Set of German reeds Rs. 22, 25, & 31
" 2 Sets of German reeds Rs. 36, 40, & 45
3 Octv. 1 Set of Paris reeds Rs. 36, 45 & 49
" 2 Sets of Paris reeds Rs. 58, 67 & 76
3 Octv. 1 Set of Kasriel reeds Rs. 45, 58 & 67
1 " 2 Sets of Kasriel reeds Rs. 72, 90 & 99
Other varieties Rs. 110, to Rs. 350.

Order with advance of Rs. 10. Catalogue free on application.

१२० / १०१ **BISWAS & SON**,
5, Lower Chitpore Road. (L) Calcutta.

कल्पवृक्ष

यदि आप मंत्र-शास्त्र के साधन, हठयोग, लययोग, राजयोग, मंत्रयोग, मेस्मेरिज़्म, हिप्नोटिज़्म, आत्मोन्नति के साधन, व्यावहारिक वेदांत, शरीर और मन तथा आत्मा को बलवान् बनाने के उत्तमोत्तम साधन जानना और सीखना चाहते हों, तो आज ही कल्पवृक्ष मासिक पत्र के ग्राहक हो जाइए। वार्षिक मूल्य २॥), ओंकार-जपविधि ।), गायत्री-महिमा ।), कल्पवृक्ष के साथ दोनों पुस्तकें मँगाने से पोस्टेज की बचत होती है।

पता—कल्पवृक्ष कार्यालय, उज्जैन, (मालवा)

एक भारतीय यंत्रविद्‌ का कौशल

होमप्रिंटर

(हिन्दी, अँग्रेजी या बँगलामें)

खानगी तथा व्यवसायिक कार्यके लिये

इसका आविष्कार विशेषकर छोटे-छोटे कामोंके छापनेके लिये हुआ है। इसमें सीसेके टाइप हैं, जो आम तौरसे छापनेके काममें आते हैं। इसका प्रेस टीककी लकड़ीका है और उसका हत्था लोहेका है। इसके छापनेकी सब प्रकारकी सहायक वस्तुएं तथा उसकी विधि है। इसके लिये छापनेके अनुभवकी आवश्यकता नहीं है। इसकी विधिसे छापनेका ढंग आप ही मालूम हो जायगा। इसका प्रचार करो और जो चाहो छापो। यह स्वदेशी कारीगरी है। १ घण्टेमें २५० कापियां आसानीसे छापी जा सकती हैं।

मूल्य—नं० ० फुलिस्कैप ½ साइज़ ३०)=१७×१२ इच मूल्य—नं० ३ पोस्टकार्ड साइज़ १२)=४×४ इंच
" " १ डमी ¼ साइज़ २५)=१२×१० " " ४ कार्ड साइज़ ८)=६×३ "
" " २ लेटर साइज़ १९)=९×६ इश्तिहारका सचित्र सूचीपत्र मुफ्त मंगाइये

मिलनेका पता—अग्रवाल ट्रेडिङ्ग कम्पनी (म) "[illegible]"

गुप्त स्याही

या अजीब रोशनाई

सचमुच ही एक अजीब चीज़ है। इस रोशनाई से मामूली तौर पर काग़ज़ पर लिख लीजिए और काग़ज़ को सुखा लीजिए। अब और कोई तो क्या, स्वयं आप भी न पढ़ सकेंगे कि क्या लिखा है। काग़ज़ बिल्कुल कोरा ही मालूम देगा। गोया उस पर कभी कुछ लिखा ही नहीं गया। पढ़ने की तरकीब आसान है। व्यवहार में लाने तथा पढ़ने की तरकीब के साथ भेजी जायगी। मूल्य फ़ी तोला १)

ए० आर० महेंद्र
श्यामली स्ट्रीट, पो० आ० नजीबाबाद (

नोट—इस रोशनाई का नुसखा तथा बनाने की विधि १०) फ़ीस भेजने पर बतलाई जा सकती है।

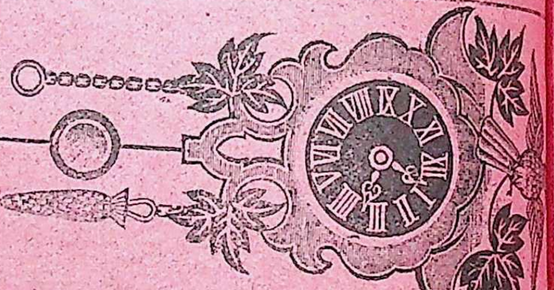

A CLOCK for Rs. 3

—DO NOT HESITATE—

BUT ORDER NOW

For ONE CLOCK of our WAL

"TIC-TAC" (REGD.) CLOCK

The perfect time-keeper and approved universally and at the same time

The most **Decorative** to every household

RUPEES THREE ONLY.

V. S. WATCH Co.

P-B. 105, MADRAS.

माधुरी के प्रथम वर्ष की संख्याएँ

प्रथम वर्ष की १-६ संख्याएँ—ये संख्याएँ अब अप्राप्य हैं। कोई सज्जन आर्डर भेजने का कष्ट न उठाएँ।

प्रथम वर्ष की ७-१२ संख्याएँ—इन संख्याओं के सजिल्द, सुंदर सेट की क़ीमत सिर्फ़ ६) है। इनी-गिनी प्रतियाँ बची हैं। शीघ्र मँगा लीजिए।

प्रथम वर्ष की ९, १०, ११ और १२ संख्याएँ—इन चार संख्याओं में बहुत ही ललित लेख और चित्ताकर्षक चित्र निकले हैं। मूल्य चारों का, एकसाथ लेने पर, सिर्फ़ २)

इनके अलावा प्रथम वर्ष की कुछ फुटकर संख्याएँ भी अभी मिल सकती हैं। लेकिन ध्यान रहे, हमारे पास इनकी बहुत कम प्रतियाँ हैं—

तीसरी (आश्विन की) संख्या	२)	नवीं (चैत्र की) संख्या	॥)
छठी (पौष की) ,,	२)	दसवीं (वैशाख की) ,,	॥)
आठवीं (फाल्गुन की) ,,	२)	ग्यारहवीं (ज्येष्ठ की) ,,	॥)

माधुरी के द्वितीय वर्ष की संख्याएँ

द्वितीय वर्ष की १-६ संख्याएँ—इन संख्याओं के सुनहरी रेशमी जिल्द चढ़े हुए सेट की क़ीमत ५) है। बिना जिल्द-चढ़ी ४) ही में मिल जायँगी।

द्वितीय वर्ष की ७-१२ संख्याएँ—इनका भी मूल्य वही ५) है। जिल्द भी वैसी ही सुंदर। बिना जिल्द-चढ़ी ४) ही में मिल जायँगी।

द्वितीय वर्ष की सब संख्याएँ अभी फुटकर भी मिल सकती हैं। जिस-जिस संख्या की आवश्यकता हो, फ़ौरन् मँगा लीजिए; अन्यथा फिर पछताना पड़ेगा। मूल्य प्रत्येक का ॥)

ख़ास रियायत

लेकिन प्रथम वर्ष की ९वीं संख्या से लेकर दूसरे वर्ष की १२वीं संख्या तक, ये १६ संख्याएँ, नए और पुराने, सब ग्राहकों को १०) की जगह ७॥) में ही दी जायँगी। किंतु यह रियायत अब केवल २०० सज्जनों के साथ ही की जायगी। कारण, इन सब संख्याओं की बहुत कम प्रतियाँ हमारे पास रह गई हैं।

मैनेजर माधुरी, लखनऊ

माधुरी के नियम

मूल्य

माधुरी का डाक-व्यय-सहित वार्षिक मूल्य ६॥), छः मास का ३॥) और प्रति संख्या का ॥।) है। वी०पी० से मँगाने में ≈) रजिस्ट्री के और देने पड़ेंगे। इसलिये ग्राहकों को मनी-ऑर्डर से ही चंदा भेज देना चाहिए। भारत के बाहर सर्वत्र वार्षिक मूल्य ८), छः महीने का ४॥) और प्रति संख्या का ॥।≈) है। वर्षारंभ श्रावण से होता है, और प्रति मास शुक्ल-पक्ष की सप्तमी को पत्रिका प्रकाशित हो जाती है। लेकिन ग्राहक बननेवाले चाहे जिस संख्या से ग्राहक बन सकते हैं।

अप्राप्त संख्या

अगर कोई संख्या किसी ग्राहक के पास न पहुँचे, तो अगले महीने के शुक्ल-पक्ष की सप्तमी तक कार्यालय को सूचना मिलनी चाहिए। लेकिन हमें सूचना देने के पहले स्थानीय पोस्ट-ऑफ़िस से उसकी जाँच करके डाकख़ाने का दिया हुआ उत्तर सूचना के साथ आना चाहिए। उनको उस संख्या की दूसरी प्रति भेज दी जायगी। लेकिन उक्त तिथि के बाद सूचना मिलने से उस पर ध्यान नहीं दिया जायगा, और उस संख्या को ग्राहक ॥।–) के टिकट भेजने पर ही पा सकेंगे।

पत्र-व्यवहार

उत्तर के लिये जवाबी कार्ड या टिकट आना चाहिए। अन्यथा पत्र का उत्तर नहीं दिया जा सकेगा। पत्र के साथ ग्राहक-नंबर का भी उल्लेख होना चाहिए। मूल्य या ग्राहक होने की सूचना संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ, या मैनेजर नवलकिशोर-प्रेस, लखनऊ के पते से आनी चाहिए।

पता

ग्राहक होते समय अपना नाम और पता बहुत साफ़ अक्षरों में लिखना चाहिए। दो-एक महीने के लिये पता बदलवाना हो, तो उसका प्रबंध डाक-घर से ही कर लेना ठीक होगा। अधिक दिन के लिये बदलवाना हो, तो संख्या निकलने के १५ रोज़ पेश्तर उसकी सूचना देनी चाहिए।

लेख आदि

लेख या कविता स्पष्ट अक्षरों में, काग़ज़ की एक ओर, संशोधन के लिये इधर-उधर जगह छोड़कर, लिखी होनी चाहिए। क्रमशः प्रकाशित होने लायक़ बड़े लेख संपूर्ण आने चाहिए। किसी लेख अथवा कविता के प्रकाशित करने या न करने का, उसे घटाने-बढ़ाने का, तथा उसे लौटाने या न लौटाने का सारा अधिकार संपादक को है। जो नापसंद लेख संपादक लौटाना मंज़ूर करें, वे टिकट भेजने पर ही वापस किए जा सकते हैं। यदि लेखक लेना स्वीकार करते हैं, तो उपयोगी और उत्तम लेखों पर पुरस्कार भी दिया जाता है। सचित्र लेखों के चित्रों का प्रबंध लेखकों को ही करना चाहिए। हाँ, चित्र प्राप्त करने के लिये आवश्यक ख़र्च प्रकाशक देंगे।

लेख, कविता, चित्र, समालोचना के लिये पुस्तकें और बदले के पत्र इस पते से भेजने चाहिए—

पं० दुलारेलाल भार्गव
गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय,
२९-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

विज्ञापन

किसी महीने में विज्ञापन बंद करना या बदलवाना हो, तो एक महीने पहले सूचना देनी चाहिए।

अश्लील विज्ञापन नहीं छपते। छपाई पेशगी ली जाती है। विज्ञापन की दर नीचे प्रकाशित है—

१ पृष्ठ या २ कालम की छपाई … … २५) प्रति मास
१/२ ,, या १ ,, ,, ,, … … १४) ,, ,,
१/४ ,, या १/२ ,, ,, ,, … … ८) ,, ,,
१/८ ,, या १/४ ,, ,, ,, … … ५) ,, ,,

कम-से-कम आधा कालम विज्ञापन छपानेवालों को माधुरी मुफ़्त मिलती है। साल-भर के विज्ञापनों पर, पूरी छपाई पेशगी देने से, ≈) रुपया कमीशन दे दिया जाता है।

माधुरी में विज्ञापन छपानेवालों को बड़ा लाभ रहता है। कारण, इसका प्रत्येक विज्ञापन कम-से-कम ४,००,००० पढ़े-लिखे, धनी-मानी और सभ्य स्त्री-पुरुषों की नज़रों से गुज़र जाता है। सब बातों में हिंदी की सर्व-श्रेष्ठ पत्रिका होने के कारण इसका प्रचार ख़ूब हो गया है, और उत्तरोत्तर बढ़ रहा है, एवं प्रत्येक ग्राहक से माधुरी ले-लेकर पढ़नेवालों की संख्या ४०-५० तक पहुँच जाती है।

यह सब होने पर भी हमने विज्ञापन-छपाई की दर अन्य अच्छी पत्रिकाओं से अपेक्षाकृत कम ही रक्खी है। कृपया शीघ्र अपना विज्ञापन माधुरी में छपाकर लाभ उठाइए। कम-से-कम एक बार परीक्षा तो कीजिए।

विज्ञापन-रेट

अगले मास से बढ़ जायँगे !

इसी से अभी तय कर लीजिए !!

रेट जो अभी हैं—

साधारण पूरा पेज	२५)	प्रति बार	
,, ½ पेज	१४)	,, ,,	
,, ¼ पेज	८)	,, ,,	
,, ⅛ पेज	५)	,, ,,	
कवर का दूसरा पेज	४५)	,, ,,	अभी ख़ाली नहीं है
,, ,, तीसरा पेज	४०)	,, ,,	
,, ,, चौथा पेज	५५)	,, ,,	
दूसरे कवर के बाद का पेज	३५)	,, ,,	
प्रिंटिंग मैटर के पहले का पेज	३५)	,, ,,	
,, ,, ,, बाद का पेज	३५)	,, ,,	
लेख-सूची के नीचे आधा पेज	२०)	,, ,,	
,, के चौथाई पेज	१२)	,, ,,	
प्रिंटिंग मैटर में आधा पेज	३०)	,, ,,	

रेट जो हो जायँगे—

साधारण पूरा पेज	३०)	प्रति बार
,, ½ पेज	१६)	,, ,,
,, ¼ पेज	९)	,, ,,
,, ⅛ पेज	५)	,, ,,
कवर का दूसरा पेज	५०)	,, ,,
,, ,, तीसरा पेज	४५)	,, ,,
,, ,, चौथा पेज	६०)	,, ,,
दूसरे कवर के बाद का पेज	४०)	,, ,,
प्रिंटिंग मैटर के पहले का पेज	४०)	,, ,,
,, ,, ,, बाद का पेज	४०)	,, ,,
लेख-सूची के नीचे आधा पेज	२५)	,, ,,
,, के सामने चौथाई पेज	१५)	,, ,,
प्रिंटिंग मैटर में आधा पेज	३०)	,, ,,

अभी रेट बहुत कम हैं। अतः विज्ञापन दाताओं को चाहिए कि अपने विज्ञापन का हमसे कंट्रैक्ट कर लें। अन्यथा पीछे पछताना पड़ेगा। इसके लिये पत्र-व्यवहार करनेवालों के ध्यान देने योग्य बातें ये हैं—

(१) विज्ञापन पत्र के साथ ही भेजें।

(२) यह भी साफ़-साफ़ लिखें कि विज्ञापन किस स्थान पर और कितने समय के लिये छपवाना चाहते हैं। जो स्थान ख़ाली नहीं हैं, उनके लिये लिखना व्यर्थ होगा।

(३) विज्ञापन अश्लील न होना चाहिए।

(४) चौथाई पेज से कम विज्ञापन छपानेवालों को माधुरी मुफ़्त नहीं मिलेगी।

(५) साल-भर का ठेका तभी पक्का समझा जायगा, जब कम-से-कम चौथाई विज्ञापन-छपाई पेशगी जमा कर दी जायगी, और बाक़ी भी प्रति मास समय पर अदा कर दी जायगी। अन्यथा कंट्रैक्ट पक्का न समझा जायगा।

आशा है, इस अवसर से विज्ञापन-दाता महाशय अवश्य लाभ उठावेंगे। नहीं तो पीछे पछताना पड़ेगा।

निवेदक—

मैनेजर माधुरी, लखनऊ

यह सदैव स्मरण रखिए

हमारी सभी पुस्तकें

समस्त भारतवर्ष के प्रसिद्ध पुस्तक-विक्रेताओं के यहाँ मिल सकती हैं

हमारी पुस्तकें बेचनेवाले प्रधान पुस्तक-विक्रेता ये हैं—

आगरा—साहित्य-रत्नभंडार।

इलाहाबाद—हिंदी-मंदिर। ओंकार-प्रेस। चाँद-कार्यालय।

कलकत्ता—पाठक ऐंड कंपनी। हिंदी-पुस्तक एजेंसी। हिंदी-पुस्तक-भवन। आर० डी० बाहिती ऐंड को०।

कानपुर—प्रताप-प्रेस। प्रकाश-पुस्तकालय। नारायण-पुस्तक-भंडार, नोनहाँ, चौबेपुर।

काठियावाड़—राष्ट्रीय शारदा-प्रचारक-मंडल, राजकोट।

गढ़वाल—मोहनलाल साह, लैंसडाउन।

गया—रामसहायलाल।

गुड़गाँवाँ—सर्व-हितैषी-पुस्तकालय, खोरी।

चिरगाँव—साहित्य-सदन।

जबलपुर—एजुकेशनल बुक-डिपो।

दमोह—गोविंदशंकर मेहता, लक्ष्मी-प्रेस।

दरभंगा—हिंदी-साहित्य-कार्यालय, लहेरिया-सराय। हिंदी-पुस्तकभंडार, लहेरियासराय।

देहरादून—भारतीय पुस्तकालय।

पटना—श्रीराम मास्टर, बाढ़।

फ़ैज़ाबाद—नागर ऐंड को०

बनारस—लहरी-प्रेस। उपन्यास-बहार-कार्यालय। ज्ञानमंडल-कार्यालय। हिंदी-साहित्य-मंदिर। मुकुंददास ऐंड को०। माधवप्रसाद, थियोसोफ़िकल सोसाइटी। चौधरी ऐंड को०, नीचीबाग़।

बरेली—चिरंजीवलाल गुप्त, आर्यग्रंथ-रत्नाकर।

बड़ोदा—जयदेव-ब्रादर्स।

बाँदा—चौधरी-ब्रादर्स।

बाराबंकी—श्रीकामेश्वरलालजी, दयानंद-प्रेस। एस्० सी० जैन।

मुज़फ़्फ़रपुर—जमुनाप्रसाद, हिंदी-साहित्य-भंडार।

मेरठ—श्रीप्रयागदत्त शर्मा।

रुड़की—लाभूराम शर्मा, शर्मा-ब्रादर्स।

लाहौर—नारायणदत्त सहगल ऐंड को०।

शाहजहाँपुर—श्रीइंद्रजीत व लक्ष्मीदत्त, आर्य-बुकसेलर।

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, २९-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखन

Read it very carefu

WHAT

ACCOMPLISH EVERY DESI

Do you want Success in Life,—(Emp Social Advancement, etc.)?

Do you want Money, (Financial Indepen

Do you want to Learn One's Hidden Friends, Please Others and Win their Favour and People at a Glance, etc. ?

Do you want Home Treatment? Without D Force, Telepathy, Psycho-Suggestive Therapeutics or

Do you want to get cured of Love, Attain Rete Will, Be Beautiful, Be Plump, *Lose Fat*, Retain Yout Without Drugs?

Do you want Unfailing Secret Hindu Shastrick Kn Husbands or Wives into faithful, obedient and loving and de Pleasing Others, for All Round Success and Happiness and Diseases (including Cholera, Influenza, Plague, Pneumonia), etc

Do you want, in short, to accomplish *any desire* of your m

OF COURSE YOU

Everyone wants one or more of these things. So do you! of your mind's desires. *Distance No Barrier.* No failure. Secrecy G stating your needs or sending in full history of your case along with a Con one Guinea) only. *Consultation Free* if you apply mentioning this paper envelope NOW to

Dr. G. S. D. SHARMA
G Sc., N.Y. (U. S. A.), M.A., D.Sc., Ps.D., Ph.D., (ABY.), LL
VIDYA BHUSHAN, YOGVIDYAMAHARNAVA
Depot. L/M. The Success House, Fatehpur Sikree, A

माधुरी

बहुत ध्यान देकर विचार के साथ पढ़िए ! यह तुम्हारे हित के लि

तुम क्या चाहते हो ?

अपने दिल की हर मुराद को वैज्ञानिक रीति से पूरी करना।

क्या तुम जीवन में नौकरी, तरक्क़ी, अभ्यास, व्यापार, प्रेम, स्नेह और जातीय उन्नति में सफलता चाहते हो ?

क्या तुम रुपया (आर्थिक स्वतंत्रता), जीवन का आनंद, प्रसन्नता, और खुशी चाहते हो ?

क्या तुम दूसरे के आचरण को एक निगाह में मालूम कर लेना, कठोर शत्रु को मित्र बना लेना, दूसरों को प्रसन्न करके उनकी कृपा और विश्वास से अपना फ़ायदा उठाना और लोगों से हाथ मिलाकर उन पर निगाह डालते ही अपना अधिकार जमा लेना चाहते हो ?

क्या तुम बिना औषधि सेवन किए तथा बिना किसी के जाने हुए विचार-शक्ति, टेलीपैथी, और आध्यात्मिक-रोग-नाशक विषयों द्वारा पुरुषों और स्त्रियों के पुराने रोगों को अच्छा कर लेना चाहते हो ?

क्या तुम बिना किसी प्रकार की औषधि सेवन किए प्रेम से छुटकारा पाना, स्तंभन-शक्ति को प्राप्त करना, लड़के ही पैदा करना या लड़के-लड़की अपनी इच्छानुसार पैदा करना, सुंदर होना, पतला या मोटा होना, वृद्धावस्था को दूर करना, यौवन को स्थिर रखना और दीर्घजीवी होना चाहते हो ?

क्या तुम हिंदू-शास्त्रों के अचूक भेदों तथा तंत्र-मंत्र को जानना, ख़राब प्रकृतिवाले स्त्री-पुरुष को आज्ञाकारी, प्रेम-युक्त, विश्वास योग्य और जीवन का साथी बनाना, दूसरों को प्रसन्न करना, संपूर्ण सफलता, प्रसन्नता और स्वास्थ्य को प्राप्त करना और कालरा, हैज़ा, प्लेग, निमोनिया इत्यादि से बचे रहना चाहते हो ?

अर्थात् क्या तुम अपने दिल की सभी मुरादें पूरी करना चाहते हो ?

ज़रूर तुम चाहते हो।

हर व्यक्ति इन बातों को चाहता है। उसी तरह तुम भी चाहते हो। और, मैं तुम्हारे दिल की इच्छा को पूरी करने में मदद दे सकता हूँ। दूर होने से कोई बात नहीं। असफलता कभी नहीं हो सकती। गुप्त रखने की गारंटी। ख़र्चा मामूली है। अपनी इच्छा को ज़ाहिर करते हुए हमें पत्र लिखो या अपनी हालत का पूरा विवरण दो और मशाविरा के लिये १०) फ़ीस भेजो (विदेशवालों से १ गिनी) इस पत्र का हवाला देने पर राय मुफ़्त में दी जाती है। जवाब के लिये एक आने का अपने पते का लिफ़ाफ़ा भेजो।

डॉ० जी० एस० डी० शर्मन, विद्याभूषण, योगविद्यामहार्णव.

यह सदैव स्मर में मशहूर

हमारी सभी
समस्त भारतवर्ष के प्रसिद्ध
मिल
हमारी पुस्तकें बेचनेवाले

आगरा—साहित्य-रत्नभंडार ।

इलाहाबाद—हिंदी-मंदिर ।
चाँद-कार्यालय ।

कलकत्ता—पाठक
एजेंसी । हिंदी-पुस्तक
एंड को० ।

का

नाग

ोंगरे
का
बालामृत

इसके पीने से बालक ताक़तवर और पुष्ट होते हैं ।

इसे बालक आनंद के साथ पीकर आराम पाते और प्रसन्न रहते हैं।

मालिक—के० टी० डोंगरे कं०, गिरगाँव-बंबई।

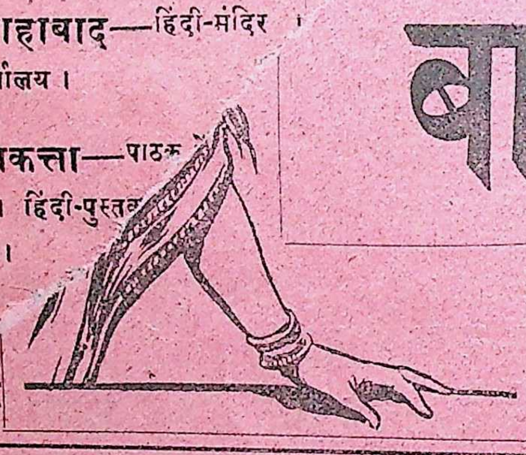

यदि आप सुंदर और सुमिष्ट स्वर-विशिष्ट हारमोनियम चाहें तो—

हमारा मशहूर पापुलर सरस्वती फ्लूट हारमोनियम मँगवाइए । गारंटी ३ साल । सिंगल रीडवाले का दाम—२५), ३०) डबल रीडवाले का दाम—४०), ४५)

५) पेशगी के साथ आर्डर दीजिए और निकट के स्टेशन का नाम भी लिखिए।

पापुलर हारमोनियम कं०,
पोस्ट बक्स नं० १२, (म) कलकत्ता

घर बैठे एक रुपया रोज़ कमा लो

कसीदा काढ़ने की मशीन

इस मशीन से मख़मल पर ऊन के बेल-बूटे ब
जा सकते हैं । इसके द्वारा टोपियाँ, जूते, गाड़ी त
कुर्सियों की गद्दियों आदि का काम स्त्री-पुरुष घर
कर सकते हैं । जिसमें एक रुपया रोज़ पैदा हो स
है । चलाने की विधि साथ में भेजते हैं। मूल्य ५) डा
व्यय ।≋) बिजली का फूल मूल्य २), बिजली के
के तीन बटन मूल्य ४), बिजली का गुलदस्ता
केवल ५)

मिलने का पता—श्रीनिवास श
नं० १००, अलीगढ़।

माधुरी

[विविध विषय-विभूषित, साहित्य-संबंधी, सचित्र मासिक पत्रिका]

सिता, मधुर मधु, तिय-अधर, सुधा-माधुरी धन्य ;
पै यह साहित-माधुरी नव-रसमयी अनन्य !

वर्ष ३ खंड १ } श्रावण-शुक्ल ७, ३०१ तुलसी-संवत् (१९८१ वि०)— ७ अगस्त, १९२४ ई० { संख्या १ पूर्ण संख्या २५

वर्षा

[१]

जाकी एक बूँद कौं बिरंचि, बिबुधेस, सेस,
सारद, महेस ज्यौं पपीहा तरसत हैं ;
कहै 'रतनाकर' रुचिर रुचि ही मैं जाकी,
मुनि-मन-मोर मंजु मोद सरसत हैं।
लहलही होति उर-आनँद-लवंग-लता,
दुख-दंद जासौं ज्यौं जवासौ झरसत हैं ;
दामिनि-सी कामिनि समेत घनस्याम सोई,
सुरस-समूह ब्रज बीच बरसत हैं।

[२]

पावस के प्रथम पयोद की परत बूँदैं,
औरै ओप उमड़ि अकास छिति छ्वै रहीं ;
रंग भयौ बूड़नि, अनूड़नि अनंग भयौ,
अंग बढ़ि आनँद-तरंगैं दुख ध्वै रहीं।
सूहे साजि सुवर दुकूल, सुख फूलि-फूलि,
चौहरी अटा पैं चढ़ी चंदमुखी ज्वै रहीं ;
धूम सुखमा की, झूम-झूम अलि-पुंजनि की,
अंबनि की डार तैं कदंबनि पैं ह्वै रहीं।

[३]

मान कै न मानति हौ, जानिकै न जानति हौ,
तुम बिन प्यारे मनमोहन दुखारे हैं :
कहै 'रतनाकर' न जानैं कहा ठाने मन,
बृंदाबन-बीथिनि बिसूरत सिधारे हैं।
बाल दिखराइकै मसाल के मिसाल दुति,
[illegible] ठाढ़े कुंज मैं बिचारे हैं ;

उमड़ि-घुमड़ि मढ़ि आए चहुँघाँ तें घेरि,
मेघ मनमथ के मतंग मतवारे हैं।

[४]

घेरि लीनी आनि, जानि अबला अकेली, मानि
मरक अनंग की उमंग सरसत हैं;
कहै 'रतनाकर' पपीहा कड़खैत लिए,
'पी कहाँ' कहाइ, चढ़ि चाइ, अरसत हैं।
कंसहूँ कैं राज भए ऐसे ना कुकाज हाय,
जैसे आज ऊधौ, दुख-साज दरसत हैं;
बादर-से बीर ब्योम बायु के बिमान बैठि,
बूँदनि के बान बनिता पैं बरसत हैं।

[५]

झूलत हिंडोरैं दुहूँ बोरे रस-रंग, जिन्हैं
देखत अनंग-रति-सोभा कटि-कटि जाति;
मंजु मचकी सौं उचकत कुच-कोरनि पैं,
ललकि, लुभाइ रसिया की डीठि डटि जाति।
देखत बनै हीं, कछु कहत बनै न नैंकु,
बाल अलबेली जब लाज सौं सिमटि जाति;
हटि जात घूँघट, लटकि लाँबी लट जाति,
फटि जाति कंचुकी, लचकि लोनी कटि जाति।

[६]

चहुँ दिसि छाई हरियाई सुखदाई जहाँ,
सोहति सुहाई तापैं फबनि फुहीनि की;
कहै 'रतनाकर' सु अंगना उमंग-भरी,
झूलतिं हिंडोरैं झौरैं सुखमा सुरीनि की।
भाषै चित-चाव कौन भौन सुख-भोगिनि कौ,
डहकि डगाएँ देति मनसा मुनीनि की;
ऊहनि की हचक, सु उचक उरोजनि की,
लंक की लचक औ मचक मचकीनि की।

"रताकर"

प्रयाग के क़िले की 'लाट' का शिला-लेख

उपक्रम

आजकल राष्ट्रीयता की धूम है। जहाँ देखो, वहाँ राष्ट्रीय नाटकों का अभिनय करने की चेष्टा की जाती है। सभी की प्रस्तावना में भारत के प्राचीन गौरव का राग अलापा जाता है; परंतु पोथी-पुराण और कथा-कहानियों को छोड़कर इस प्राचीन गौरव के समझने का उद्योग कोई नहीं करता। द्वापर युग के अर्जुन का नाम तो सबने सुना है, पर इस बात को जाननेवाला कोई बिरला ही होगा कि आज से पंद्रह सौ वर्ष पहले भी हमारे देश में ऐसे प्रतापी राजा हुए हैं, जिन्होंने अपनी विजय-पताका भारतवर्ष के बाहर तक फहराई, और जिनकी दिग्विजय का प्रमाण ऐसे लेखों में है, जिन पर संदेह करना असंभव और पातक-तुल्य है। इन महाप्रतापी राजों में एक का नाम समुद्रगुप्त है, जिसकी दिग्विजय का हाल इलाहाबाद (प्रयाग) के क़िले के भीतर, अशोक के स्तंभ पर, उनकी धर्म-लिपियों के नीचे, अंकित है। यह लेख ३३ पंक्तियों में है, जिनमें ऊपर की १६ पंक्तियों में ८ छंद हैं, और शेष पंक्तियों में गद्य। समुद्रगुप्त की इस दिग्विजय का हाल पढ़कर अँगरेज़ इतिहास-लेखक उसको भारतवर्ष का नेपोलियन कहते हैं। आठ वर्ष हुए, इस लेख की एक छाप लखनऊ के अजायबघर के विद्वान् क्यूरेटर पंडित हीरानंदजी शास्त्री एम्० एम्० ओ० एल्० ने ली थी। उक्त लेख संस्कृत-भाषा में है; परंतु लिपि के अक्षर प्राचीन हैं। इसलिये हम उसको प्रचलित देवनागरी-अक्षरों में लिखकर माधुरी के सहृदय पाठकों की सेवा में उपस्थित करते हैं। कितने शोक की बात है कि प्रतिवर्ष लाखों यात्री प्रयागराज में मकर-स्नान के लिये आवें, परंतु आज तक उनमें से किसी को यह श्रद्धा न हो कि अपने पूर्व-पुरुषों की कीर्ति की ओर ध्यान दें। कहीं कहीं पत्थर की पपड़ी उखड़ जाने से लेख भी नष्ट हो गया है। उसमें क्या था, ईश्वर जाने।

१. (यः) कुल्यैः स्वै.........आतस (?).....................................
२. यस्य..
३. पुम्व................................ त्र ....
४. स्फारद्ब.............................क्षाः स्फुटोध्वंसित.........प्रवितत......
५. यस्य प्रज्ञानुषङ्गोचितसुखमनसः शास्त्रतत्त्वार्थभर्तुः...स्तब्धो...नि...नोच्छ्र......
६. (स)त्काव्यश्रीविरोधान् बुधगुणितगुणाज्ञाहतानेव कृत्वा ।.........विद्वल्लोके वि...स्फुट बहुकविताकीर्तिराज्यं भुनक्ति ।
७. (आ)र्यो हीत्युपगुह्य भावपिशुनैरुत्कर्णितै रामभिः ।...............सभ्येषूच्छ्वसितेषु तुल्यकुलजम्लानाननोद्वीक्षि (तः) ।
८. स्नेहव्यालुलितेन बाष्पगुरुणा तत्त्वेक्षिणा चक्षुषा । ....यः पित्राभिहितो निरीक्ष्(य) निखि(लाम्) पाह्येवमुर्वीमिति ।
९. दृष्ट्वा कर्माण्यनेकान्यमनुजसदृशान्यद्भुतोद्भिन्नहर्षा भावैरास्वाद्य..(के)चित् ।
१०. वीर्योत्तप्ताश्च केचिच्छरणमुपगता यस्य वृत्ते प्रणामे ।...................र्यर्ते.........
११. संग्रामेषु स्वभुजविजिता नित्यमुच्चापकाराः ।..........................श्वः श्वो मानप्र
१२. तोषोत्तुङ्गैः स्फुटबहुरसस्नेहफुल्लैर्मनोभिः ।............................पश्चात्तापं...व...म...स्य...द......वसन्तम् ।
१३. उद्वेलोदितबाहुवीर्यरभसादेकेन येन क्षणादुन्मूल्याच्युतनागसेन...ग.....................
१४. दण्डैर्ग्राहयतैव कोटकुलजं पुष्पाह्वये क्रीडता ।..........................सूर्य्येने... ...तट......
१५. धर्मप्राचीरबन्धः शशिकरशुचयः कीर्तयः सप्रताना ।....................वैदुष्यं तत्त्वभेदी प्रशम...उकु...क...मु...तार्थम् ।
१६. अध्येयः सूक्तमार्गः कविमतिविभवोत्सारणम् चापि काव्यं ।...............को नु स्याद्योऽस्य न स्याद्गुणमति विदुषां ध्यानपात्रं य एकः ।
१७. तस्य विविधसमरशतावतरणदक्षस्य स्वभुजबलपराक्रमैकबन्धो पराक्रमाङ्कस्यपरशुशरशंकुशक्तिप्रासासितोमर
१८. भिन्दिपालनाराचवैतस्तिकाद्यनेकप्रहरणव्यधाकुलव्रणशतांकशोभसमुदयोपचितकान्ततरवर्ष्मणः
१९. कौसल्यकमहेन्द्रमाहाकान्तारकव्याघ्रराजकौरलकमंत्रराजपैष्टपुरकमहेन्द्रगिरिकौट्टूरकस्वामिदत्तएरंडपल्लकदमनकांचेयकविष्णुगोपालमुक्क-
२०. नीलराजवैंगेयकहस्तिवर्मपालक्ककोग्रसेनदैवराष्ट्रककुबेरकौस्थलपुरकधनंजयप्रभृति सर्वदक्षिणापथराजग्रहणमोक्षानुग्रहजनितप्रतापोन्मिश्रमाहाभाग्यम् ।
२१. रुद्रदेवमतिलनागदत्तचन्द्रवर्मगणपतिनागनागसेनाच्युतनन्दिबलवर्माद्यनेकार्यावर्तराजप्रसभोद्धरणोद्वृत्तप्रभावमहतः परिचारकीकृतसर्वाटविकराजस्य
२२. समतटडवाककामरूपनेपालकर्तृपुरादिप्रत्यन्तनृपतिभिर्मालवार्जुनायनयौधेयमाद्रकाभीरप्राजुनसनकानीककाकखरपरिकादिभिश्च सर्वकरदानाज्ञाकरणप्रणामागमन-
२३. परितोषितप्रचण्डशासनस्य अनेकभ्रष्टराज्योत्सन्नराजवंशप्रतिष्ठापनोद्भूत निखिलभु (व) न विच (र) णशान्तयशसः दैवपुत्रशाहिशाहानुशाहशाकमुरुण्डैः
सैंहलकादिभिश्च ।
२४. सर्वद्वीपवासिभिरात्मनिवेदनकन्योपायनदानगरुत्मदङ्कस्वविषयभुक्तिशासनायाचनाद्युपायसेवाकृतबाहुवीरप्रसरधरणिबन्धस्य पृथिव्यामप्रतिरथस्य
२५. सुचरितशतालंकृतानेकगुणगणोत्सिक्तिभिश्चरणतलप्रमृष्टान्यनरपतिकीर्तेः साध्वसाधूदयप्रलयहेतुपुरुषस्याचिन्त्यस्य भक्त्यावनतिमात्रग्राह्यमृदुहृदयस्यानुकम्पा-
वतोऽनेकगोशतसहस्रप्रदायिनः
२६. कृपणदीनानाथातुरजनोद्धरणस्य (म)न्त्रदीक्षाद्युपगतमनसः समिद्धस्य विग्रहवतो लोकानुग्रहस्य धनदवरुणेन्द्रान्तकसमस्य स्वभुजबलविजितानेक
नरपतिविभवप्रत्यर्पणानित्यव्यापृतायतपुरुषस्य
२७. निशितविदग्धमतिगान्धर्वललितैर्व्रीडितत्रिदशपतिगुरुतुम्बुरुनारदादेर्विद्वज्जनोपजीव्यानेककाव्यक्रियाभिः प्रतिष्ठितकविराजशब्दस्य सुचिरस्तोतव्यानेकाद्भुतोदार-
चरितस्य
२८. लोकसमयक्रियानुविधानमात्रमानुषस्य लोकधाम्नो देवस्य महाराजश्रीगुप्तप्रपौत्रस्य महाराजश्रीघटोत्कचपौत्रस्य महाराजाधिराजश्रीचन्द्रगुप्तपुत्रस्य
२९. लिच्छविदौहित्रस्य महादेव्यां कुमारदेव्यामुत्पन्नस्य महाराजाधिराजश्रीसमुद्रगुप्तस्य सर्वपृथ्वीविजयजनितोदयव्याप्तनिखिलावनितलाम् कीर्तिम् इतस्त्रिदशपति-
३०. भवनगमनावाप्तललितसुखविचरणमाचक्षाण इव भुवो बाहुरयमुच्छ्रितः स्तम्भः यस्य प्रदानभुजविक्रमप्रशमशास्त्रवाक्योदयैरुपर्युपरि संचयोच्छ्रितम् अनेक मार्गम् यशः
३१. पुनाति भुवनत्रयम् पशुपतेर्जटान्तर्गुहानिरोधपरिमोक्ष शीघ्रम् इव पाण्डु गाङ्गम् (पयः) एतच्च काव्यमेषामेव भट्टारकपादानाम् दासस्य समीपपरिसर्प-
णानुग्रहोन्मीलितमतेः
३२. खाद्यटपाकिकस्य महादण्डनायकध्रुवभूतिपुत्रस्य सन्धिविग्रहिककुमारामात्यमहादण्डनायकहरिषेणस्य सर्वभूतहितसुखायास्तु

भाषानुवाद

१—जो × × × अपने कुलवालों से × × × जिसका (?)...

२—जिसका

३—जिसने × × × अपने धनुष्टंकार से

४—फाड़ा × × × फैलाया × × × और छिटकाया

५—जिसका मन विद्वानों के साथ रहने से सुखी रहता था, जो शास्त्र के तत्त्वार्थ का भर्ता था, जो स्थिर

६—जो सत्काव्य की श्री के विरोधियों को विद्वानों के गुणित गुणों की आज्ञा से दबाकर (अब भी) × × × बहुतेरी स्फुट कविता की कीर्ति का राज्य भोग रहा है।

७-८—जिसको उसके कुलवाले म्लान मुखों से देखते थे, जिसके सभासद् सुख से साँस लेते थे, जिसके पिता ने उसको रोमांचित होकर गले लगाया, और कहा कि तुम आर्य हो, और अपने चित्त का भाव प्रकट करके चारों ओर स्नेह के आँसुओं से भरी दृष्टि से देखा, और यह प्रकट किया कि यह समस्त पृथ्वी का पालन कर सकता है।

९—जिसके अनेक अमानुष कर्मों को देखकर × × × सुखी होते थे।

१०—और कुछ लोग उसके प्रताप से उन्मत्त होकर उसकी शरण में आकर उसको प्रणाम करते थे।

११—और अपकार करनेवाले जिससे संग्राम में सदा विजित होते थे, और कल और कल मान ......

१२—आनंद से फूले हुए और बहुत-से रस और स्नेह के साथ उत्फुल्ल मन से × × × पश्चात्ताप करते हुए × × × वसंत में........

१३—जिसने सीमा से बढ़े हुए अपने अकेले ही बाहु-बल से अच्युत और नागसेन को जड़ से उखाड़ दिया।

१४—जिसने कोट-कुल में जो उत्पन्न हुआ था, उसको अपने दंड से पकड़वा लिया, और पुष्प नाम के नगर को खेल में स्वाधीन कर लिया, जब कि सूर्य × × × × × × तट × × ×

१५—धर्म के कोट के समान जिसकी कीर्ति चंद्रमा की किरणों की तरह निर्मल और चारों ओर फैली हुई थी, जिसकी विद्वत्ता अर्थ के तत्त्व तक को पहुँच जाती थी, और........

१६—सूक्तियों के पढ़ने के योग्य मार्गों को और ऐसी कविता, जो कवियों की मति के विभव का उत्सारण करती थी × × × ऐसा कौन गुण था, जो उसमें न था; क्योंकि वही गुण और मति के विद्वानों का अकेला ध्यान-पात्र था।

१७-१८—विविध सैकड़ों समरों में उतरने में प्रवीण अपने भुजबल का पराक्रम जिसका अकेला साथी था, जो विक्रम के लिये अंकित था, और जिसके सुंदर शरीर पर परशु, बाण, शंकु, शक्ति, प्रास, तलवार, तोमर, भिंदिपाल, नाराच, वैतस्तिक आदि के अनेक सैकड़ों घाव थे।

१९-२०—और जिसका महाभाग्य कौशलक, महेंद्र, महाकांतारक, व्याघ्रराज, मंत्रराज, पैष्टपुरक, महेंद्र-गिरि, कौट्टूरक, स्वामिदत्त, एरंडपल्लक, दमनकांचेयक, विष्णुगोप और सुक्रक, नीलराज, वैंगेयक, हस्तिवर्म, पालक्कक, उग्रसेन, दैवराष्ट्रक, कुबेर, कौस्थलपुरक, धनंजय आदि सारे दक्षिण के राजों के राज्य-ग्रहण और मोक्ष के अनुग्रह से उत्पन्न हुए प्रताप के साथ मिला हुआ था।

२१—और जिसने रुद्रदेव, मातलि, नागदत्त, चंद्रवर्म, गणपति, नाग, नागसेन, अच्युतनंदि, बलवर्मा आदि अनेक आर्यावर्त के राजों को जड़ से उखाड़कर अपना प्रभाव दिखलाया, और सारे जंगल के राजों को अपना चाकर बनाया।

२२—और जिसकी आज्ञा से प्रांत के अनेक राजा समतट, डवाक, कामरूप, नेपाल, कीर्तिपुर, मालव, अर्जुनायन, यौधेय, माद्रव, आभीर, प्रार्जुन, सनकानीक, काक, खर्परिक आदि सब जातियाँ कर देती थीं, उसकी आज्ञा मानती थीं, और उसको प्रणाम करती थीं।

२३-२४—जिसका प्रचंड शासन परितोषित था, और जिसका शांत यश अनीक-भ्रष्ट, राज्य से निकाले हुए अनेक राजवंशों को फिर प्रतिष्ठित करने से भुवन में फैला हुआ था, और जिसको दैवपुत्र शाहिशाहानुशाही शक, मरुंड, सैंहलक आदि सारे द्वीपों के निवासी आत्मनिवेदन किए हुए थे, अपनी कन्याएँ भेंट में देते थे, गरुड़ के चिह्न की ध्वजाएँ अर्पण करते थे, अपनी विषय-भुक्ति का शासन समर्पण करते एवं उससे आज्ञा माँगते थे। जिसका कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं था, और जिसने अपने विक्रम के प्रभाव से सारी पृथ्वी को बाँध लिया था।

२५—जो सैकड़ों सच्चरितों से अलंकृत, अपने अनेक गुणगणों के लक्षणों से अन्य राजों की कीर्तियों को अपने तलवे से पोंछे हुए था। जो अचिंत्य पुरुष की भाँति साधु के उदय और असाधु के प्रलय का कारण था। जिसका कोमल हृदय भक्ति और प्रणति-मात्र से वश हो जाता था। जिसने लाखों गउएँ दान की थीं।

२६—जिसका मन कृपण, दीन, अनाथ, आतुर जनों के उद्धार में लगा रहता था। जो लोक के अनुग्रह का समृद्ध स्वरूप था। जो कुबेर, वरुण, इंद्र और यम के समान था। जिसके हज़ारों सेवक अपने भुजबल से जीते हुए राजों के विभव को फेर देने में लगे हुए थे।

२७—जिसने अपनी पैनी और विदग्ध बुद्धि और गाने-बजाने के ज्ञान से इंद्र के गुरु तुंबुरु, नारद आदि को लज्जित किया था। जिसने विद्वानों को जीविका देनेवाली अनेक काव्य-कृतियों से अपना कविराज-पद प्रतिष्ठित किया था। जिसके अनेक उदार चरित्र चिरकाल तक स्तुति करने के योग्य थे।

२८—जो संसार के काम करने-भर के लिये ही मनुष्य था, परंतु अपने तेज से देवता था। जो महाराज श्रीगुप्त का प्रपौत्र, महाराज श्रीघटोत्कच का पौत्र और महाराजाधिराज श्रीचंद्रगुप्त का पुत्र था।

२९—जो लिच्छवि-कुल का दौहित्र था, महादेवी कुमारदेवी से उत्पन्न था। उस महाराजाधिराज समुद्रगुप्त की सारी पृथ्वी की विजय से जनित संसार-भर में व्याप्त कीर्ति के यहाँ से स्वर्ग

३०—जाने में जो ललित सुख-विचरण को प्रकट करनेवाला, पृथ्वी के बाहु के समान यह स्तंभ है, वह उसके यश, दान, भुजविक्रम, प्रज्ञा और शास्त्र-वाक्य के उदय से ऊपर-ऊपर अनेक मार्ग में बढ़ता हुआ

३१—तीनों भुवनों को पवित्र करता है। महादेव के जटाजूट की अंतर्गुहा में रुककर निकलने से जल्दी बहते हुए गंगाजल की भाँति यह काव्य उन्हीं स्वामी के चरणों के दास के, जिनके समीप रहने के अनुग्रह से जिसकी मति उन्मीलित हो गई है,

३२-३३—महादंडनायक ध्रुवभूति के पुत्र खाद्यतपाकिक संधिविग्रहिक कुमार अमात्य महादंडनायक हरिषेण का रचा यह काव्य सब प्राणियों के हित और सुख के लिये हो। परमभट्टारक के चरणों का ध्यान करनेवाले महादंडनायक तिलभट्टक ने इसको अनुष्ठित किया है।

इस विषय पर अभी और लिखने का विचार है। पाठक धैर्य रक्खें।

श्रीअवधवासी सीताराम

गो० तुलसीदास की लिखी वाल्मीकीय रामायण

क्वीन्स कॉलेज, बनारस के सरस्वती-पुस्तकालय में गोस्वामी तुलसीदास के हाथ की लिखी वाल्मीकीय रामायण का उत्तरकांड रक्खा हुआ है। इसके अक्षर राजापुर के अयोध्याकांड (रामायण) से मिलते हैं। गोस्वामीजी के हाथ की लिखी होने के कारण उसकी रक्षक-पट्टिका पर बहुत-सा चंदन चढ़ा हुआ है, जिससे अनुमान होता है कि पुस्तकालय में भी बहुत दिनों तक उसकी पूजा होती रही है। सहायक पुस्तकाध्यक्ष पं० नारायणजी शास्त्री ने भी इसी बात का समर्थन किया है। कहा जाता है, काशी-नरेश के पुस्तकालय में भी गोस्वामीजी के हाथ के लिखे इसी रामायण के अन्य दो-एक कांड मौजूद हैं। इसके अक्षर बहुत ही सुडौल और एक ही साँचे में ढले हुए प्रतीत होते हैं। प्रत्येक पत्र में २२ पंक्तियाँ, और प्रत्येक पंक्ति में ४३ अक्षर हैं। कुल पृष्ठ १२६ तथा श्लोक ३,८०० हैं। रामायण के अंत में इस प्रकार लिखा हुआ है—

"इत्यार्षे रामायणे वाल्मीकीये चतुर्विंशति साहस्र्यां संहितायां उत्तरकाण्डे स्वर्गारोहणकं नाम सर्गः ॥ शुभमस्तु ॥ समाप्तं चेदं महाकाव्यं श्रीरामायणमिति संवत् १६४१ समये मार्ग सुदि ७ रवौ लि० तुलसीदासेन ॥

श्रीमद्यदिलशाहभूमिपसभासभ्येन्द्रभूमीसुरः ।
श्रेणीमंडनमंडलीधुरि दयादानादिभाजि प्रभुः ॥
वाल्मीके कृतिमुत्तमां पर[illegible]पोः पुर्यां पुरोगः कृतिः ।
दत्तात्रेयसमाह्वयो लिपिकृते कर्मत्वमाचीकरन्न (?) ॥”

संवत् १६४१ में यह प्रति गोस्वामीजी ने अपने हाथ से लिखी है। इसका यह अंतिम श्लोक दूसरी स्याही से पीछे का लिखा और अशुद्ध भी है। संभव है, यह लिपि भी गोस्वामीजी की ही हो, और पं० दत्तात्रेय को देते समय अंतिम श्लोक उनकी प्रशंसा में लिखकर समर्पित किया हो। मेरे विचार से भूमिपति आदिलशाह बीजापुर-नरेश के उच्चपदस्थ कर्मचारी पं० दत्तात्रेय को, उनके दया, दान, और अपनी श्रेणी को उत्कर्ष-प्रदान करने के कारण, काशी में यह वाल्मीकीय रामायण की प्रति समर्पित की गई थी।

आदिलशाह नाम के कई राजा बीजापुर (दक्षिण) में हो गए हैं। उनमें से इब्राहीम आदिलशाह (द्वितीय) संवत् १६४१ वि० में बीजापुर के सिंहासन पर था। यह राजा ब्राह्मणों का बड़ा सत्कार करता था। स्वामी शंकराचार्य को “जगद्गुरु” की उपाधि इसी ने दी थी। महाराष्ट्र ब्राह्मण भी इसके यहाँ अच्छे-अच्छे पदों पर थे। उन्हीं में से एक पं० दत्तात्रेय भी उच्च अधिकारी होंगे। जब पं० दत्तात्रेय महोदय काशी में आए होंगे, तो यहाँ भी उन्होंने अपनी उदारता का परिचय दिया होगा। वह गोस्वामीजी से भी मिले होंगे। गोस्वामीजी ने उदारता आदि उनके विशिष्ट गुण देखकर, सौजन्य से मुग्ध होकर, प्रसाद-स्वरूप (माँगने पर) यह रामायण दे डाली होगी।

पं० दत्तात्रेय की प्रशंसा में लिखे इस अंतिम श्लोक से भी यही अनुमान होता है। परंतु यह नहीं विदित होता कि गोस्वामीजी ने उन संपूर्ण रामायण दी थी, या केवल यही उत्तरकांड

यह भी संभव हो सकता है कि अंतिम श्लो बनावटी हो और किसी दत्तात्रेय-नामक व्य ने अपनी प्रशंसा में स्वयं श्लोक बनाकर लि लिया हो, अथवा बनवाकर लिखवा दिया हो परंतु मेरा अनुमान तो यही है कि गोस्वामी ने स्वयं ही बीजापुर के पं० दत्तात्रेय की उदार और सौजन्य आदि से प्रसन्न होकर प्रसाद-स्वरू (माँगने पर) केवल उत्तरकांड दे दिया होगा।

राजापुर (बाँदा) में रक्खे हुए रामचरि मानस के अयोध्याकांड को छोड़कर, अब त गोस्वामीजी के हाथ का लिखा कोई विश्वसनी लेख नहीं प्राप्त हुआ। उस अयोध्याकांड पर गोस्वामीजी के दस्तख़त नहीं हैं। किंतु इ उत्तरकांड पर हस्ताक्षर और लिपि-काल, दोनों है

यह प्रति पं० नारायणजी खस्ते शास्त्री (सह यक पुस्तकाध्यक्ष, सरस्वती-पुस्तकालय, काशी की कृपा से मुझे देखने को मिली, अतः मैं उनक हार्दिक कृतज्ञ हूँ।

भागीरथप्रसाद दीक्षि

भूत

(१)

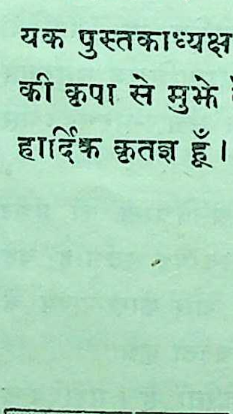

मुरादाबाद के पंडित सीतानाथ गत ३० वर्षों से वहाँ के वकी के नेता हैं। उनके पिता उ बाल्यावस्था में ही छोड़ परलो सिधारे थे। घर में कोई सं न थी। माता ने बड़े-बड़े क झेलकर उन्हें पाला और पढ़ा सबसे पहले वह कचहरी में १ मासिक पर नौकर हुए। फिर वकालत की परीक्षा

पास हो गए । प्रतिभा थी, दो ही चार वर्षों में वकालत चमक उठी । जब माता का स्वर्गवास हुआ, तब पुत्र का शुमार ज़िले के गण्य-मान्य व्यक्तियों में हो गया था । उनकी आमदनी एक हज़ार रुपए महीने से कम न थी । एक विशाल भवन बनवा लिया था ; कुछ ज़मींदारी ले ली थी ; कुछ रुपए बैंक में रख दिए थे, और कुछ लेन-देन में लगा दिए थे । इस समृद्धि पर चार पुत्रों का होना उनके भाग्य को आदर्श बनाए हुए था । चारों लड़के भिन्न-भिन्न दर्जों में पढ़ते थे । मगर यह कहना कि यह सारी विभूति चौबेजी के अनवरत परिश्रम का फल थी, उनकी पत्नी मंगला देवी के साथ अन्याय करना है । मंगला बड़ी सरल, गृह-कार्य में कुशल और पैसे का काम धेले में चलानेवाली स्त्री थी । जब तक अपना घर न बन गया, उसने ३) महीने से अधिक का मकान किराए पर नहीं लिया ; और रसोई के लिये मिसराइन तो उसने अब तक न रक्खी थी । उसे अगर कोई व्यसन था, तो गहनों का ; और चौबेजी को भी अगर कोई व्यसन था, तो स्त्री को गहने पहनाने का । वह सच्चे पत्नी-परायण मनुष्य थे । साधारणतः महफ़िलों में वेश्याओं से हँसी-मज़ाक़ कर लेना उतना बुरा नहीं समझा जाता ; पर पंडितजी अपने जीवन में कभी किसी नाच-गाने की महफ़िल में गए ही नहीं । पाँच बजे तड़के से लेकर १२ बजे रात तक उनका व्यसन, मनोरंजन, पढ़ना-लिखना, अनुशीलन, जो कुछ था, क़ानून था । न उन्हें राजनीति से प्रेम था, न जाति-सेवा से । ये सभी काम उन्हें व्यर्थ-से जान पड़ते थे । उनके विचार में अगर कोई काम करने लायक़ था, तो बस, कचहरी जाना, बहस करना, रुपए जमा करना और भोजन करके सो रहना । जैसे वेदांती को ब्रह्म के अतिरिक्त जगत् मिथ्या जान पड़ता है, वैसे ही चौबेजी को क़ानून के सिवा सारा संसार मिथ्या प्रतीत होता था । सब माया थी, एक क़ानून ही सत्य था ।

(२)

चौबेजी के सुख-चंद्र में केवल एक कला की कमी थी । उनके कोई कन्या न थी । पहलौठी कन्या के बाद फिर कन्या हुई ही नहीं; और न अब होने की आशा ही थी । स्त्री और पुरुष, दोनों उस कन्या को याद करके रोया करते थे । लड़की बचपन में लड़कों से ज़्यादा चोंचले करती है । उन चोचलों के लिये दोनों प्राणी विकल रहते । मा सोचती, लड़की होती, तो उसके लिये गहने बनवाती, उसके बाल गूँधती । लड़की पैजनियाँ पहने ठुमक-ठुमक आँगन में चलती, तो कितना आनंद आता ! चौबे सोचते, कन्यादान के बिना मोक्ष कैसे होगी ? कन्यादान महादान है । जिसने यह दान न दिया, उसका जन्म ही वृथा गया !

आख़िर यह लालसा इतनी प्रबल हुई कि मंगला ने अपनी छोटी बहन को बुलाकर कन्या की भाँति पालने का निश्चय किया । उसके मा-बाप निर्धन थे । राज़ी हो गए । यह बालिका मंगला की सौतेली मा की कन्या थी । बड़ी सुंदर और बड़ी चंचल थी । नाम था बिन्नी । चौबेजी का घर उसके आने से खिल उठा । दो ही चार दिनों में लड़की अपने मा-बाप को भूल गई । उसकी उम्र तो केवल चार वर्ष की थी, पर उसे खेलने की अपेक्षा कुछ काम करना अच्छा लगता था । मंगला रसोई बनाने जाती, तो बिन्नी भी उनके पीछे-पीछे जाती, उससे आटा गूँधने के लिये झगड़ा करती । तरकारी काटने में उसे बड़ा मज़ा आता था । जब तक वकील साहब घर पर रहते, तब तक वह उनके साथ दीवानख़ाने में बैठी रहती । कभी किताबें उलटती, कभी दावात-क़लम से खेलती । चौबेजी मुसकिराकर कहते—बेटी, मार खाओगी ? बिन्नी कहती—तुम मार खाओगे ; मैं तुम्हारे कान काट लूँगी, जूजू को बुलाकर पकड़ा दूँगी । इस पर दीवानख़ाने में ख़ूब क़हक़हे उड़ते । वकील साहब कभी इतने बालवत्सल न थे । अब बाहर से आते, तो कुछ-न-कुछ सौग़ात बिन्नी के वास्ते ज़रूर लाते, और घर में क़दम रखते ही पुकारते—बिन्नी बेटी, चलो । बिन्नी दौड़ती हुई आकर उनकी गोद में बैठ जाती ।

मंगला एक दिन बिन्नी को लिए बैठी थीं । इतने में पंडितजी आ गए । बिन्नी दौड़कर उनकी गोद में जा बैठी । पंडित ने पूछा—तू किसकी बेटी है ?

बिन्नी—न बताऊँगी ।

मंगला—कह दे बेटा, जीजी की बेटी हूँ ।

पंडित—तू मेरी बेटी है बिन्नो कि इनकी ?

बिन्नी—न बताऊँगी ।

पंडित—अच्छा हम लोग आँखें बंद किए बैठे हैं ; बिन्नी जिसकी बेटी होगी, उसकी गोद में बैठ जायगी ।

बिन्नी उठी, और फिर चौबेजी की गोद में बैठ गई ।

पंडित—मेरी बेटी है, मेरी बेटी है ; (स्त्री से) अब न कहना कि मेरी बेटी है ।

मंगला—अच्छा, जाओ बिन्नो, अब मैं तुम्हें मिठाई न दूँगी, गुड़ियाँ भी न मँगा दूँगी !

बिन्नी—भैयाजी मँगवा देंगे, तुम्हें न दूँगी ।

वकील साहब ने हँसकर छाती से लगा लिया, और गोद में लिए हुए बाहर चले गए । वहाँ अपने इष्ट-मित्रों को भी इस बाल-क्रीड़ा का रसास्वादन कराना चाहते थे ।

आज से जो कोई बिन्नी से पूछता कि तू किसकी बेटी है, तो बिन्नी चट कह देती—"भैया की ।"

एक बार बिन्नी का बाप आकर उसे अपने साथ ले गया । बिन्नी ने रो-रोकर दुनिया सिर पर उठा ली । इधर चौबेजी को भी दिन काटना कठिन हो गया । एक महीना भी न गुज़रने पाया था कि वह फिर ससुराल गए, और बिन्नी को लिवा लाए । बिन्नी अपनी माता और पिता को भूल गई । वह चौबेजी को अपना बाप और मंगला को अपनी मा समझने लगी । जिन्होंने उसे जन्म दिया था, वे अब ग़ैर हो गए ।

(३)

कई साल गुज़र गए । वकील साहब के बेटों के विवाह हुए । उनमें से दो अपने बाल-बच्चों को लेकर अन्य ज़िलों में वकालत करने चले गए । दो कॉलेज में पढ़ते थे । बिन्नी भी कली से फूल हुई । ऐसे रूप-गुण-शील-वाली बालिका बिरादरी में और न थी—पढ़ने-लिखने में चतुर, घर के काम-धंधों में कुशल, बूटे-क़सीदे और सीने-पिरोने में दक्ष, पाक-कला में निपुण, मधुर-भाषिणी, लज्जाशीला, अनुपम रूप की राशि । अँधेरे घर में भी उसके सौंदर्य की दिव्य ज्योति प्रस्फुटित होती थी । उषा की लालिमा में, ज्योत्स्ना की मनोहर छटा में, खिले हुए गुलाब के ऊपर सूर्य की किरणों से चमकते हुए तुषार-बिंदु में भी वह सुष[illegible], और वह शोभा न थी, श्वेत हिम-मुकुटधारी पर्वतों में भी वह प्राण-प्रद शीतलता न थी, जो बिन्नी अर्थात् विंध्येश्वरी के विशाल नेत्रों में थी ।

चौबेजी ने बिन्नी के लिये सुयोग्य वर खोजना शुरू किया । लड़कों की शादियों में दिल का अरमान निकाल चुके थे । अब कन्या के विवाह में हौसले पूरे करना चाहते थे । धन लुटाकर कीर्ति पा चुके थे, अब दा दहेज में नाम कमाने की लालसा थी । बेटे का विवाह क लेना आसान है ; पर कन्या के विवाह में आबरू निबा ले जाना कठिन है । नौका पर सभी यात्रा करते हैं; ज तैरकर नदी पार करे, वही प्रशंसा का अधिकारी है ।

धन की कमी न थी । अच्छा वर और सुयोग्य घ मिल गया । जन्मपत्र मिल गए, बनाव बन गया। फलदान और तिलक की रस्में भी अदा कर दी गई । प हाय रे दुर्दैव ! कहाँ तो विवाह की तैयारी हो रही थी, द्वा पर दरज़ी, सुनार, हलवाई, सब अपना-अपना काम क रहे थे, कहाँ निर्दय विधाता ने और ही लीला रच दी ! विवाह के एक सप्ताह पहले मंगला अनायास बीमा पड़ी, और तीन ही दिन में अपने सारे अरमान लि हुए परलोक सिधार गई ।

संध्या हो गई थी । मंगला चारपाई पर पड़ी हुई थी। बेटे, बहुएँ, पोते, पोतियाँ सब चारपाई के चारों ओ खड़े थे । बिन्नी पैताने बैठी मंगला के पैर दबा रही थी। मृत्यु के समय की भयंकर निस्तब्धता छाई हुई थी। कोई किसी से न बोलता था; दिल में सब समझ रहे थ क्या होनेवाला है । केवल चौबेजी वहाँ न थे ।

सहसा मंगला ने इधर-उधर इच्छा-पूर्ण दृष्टि से देख-कर कहा—ज़रा उन्हें बुला दो ; कहाँ हैं ?

पंडितजी अपने कमरे में बैठे रो रहे थे । सँदेसा पाते ही आँसू पोंछते हुए घर में आए, और बड़े धैर्य के साथ मंगला के सामने खड़े हो गए । डर रहे थे कि मेरी आँखों से आँसू की एक बूँद भी निकली, तो घर में हाहाकार मच जायगा ।

मंगला ने कहा—एक बा[illegible]छती हूँ—बुरा न मानना—बिन्नी तुम्हारी कौन है ?

पंडित—बिन्नी कौन है ? मेरी बेटी है, और कौन ?

मंगला—हाँ, मैं तुम्हारे मुँह से यही सुनना चाहती थी । उसे सदा अपनी बेटी समझते रहना । उसके विवाह के लिये मैंने जो-जो तैयारियाँ की थीं, उनमें कुछ काट-छाँट मत करना ।

पंडित—इसकी कुछ चिंता न करो । ईश्वर ने चाहा, तो उससे कुछ ज़्यादा धूम-धाम के साथ विवाह होगा।

मंगला—उसे हमेशा बुलाते रहना, तीज-त्योहार में कभी मत भूलना ।

पंडित—इन बातों की मुझे याद दिलाने की ज़रूरत नहीं।

मंगला ने कुछ सोचकर फिर कहा—इसी साल विवाह कर देना।

पंडित—इस साल कैसे होगा?

मंगला—यह फागुन का महीना है। जेठ तक न हैं।

पंडित—हो सकेगा, तो इसी साल कर दूँगा।

मंगला—हो सकने की बात नहीं, ज़रूर कर देना।

पंडित—कर दूँगा।

इसके बाद गोदान की तैयारी होने लगी।

(४)

बुढ़ापे में पत्नी का मरना बरसात में घर का गिरना है। फिर उसके बनने की आशा नहीं होती।

मंगला की मृत्यु से पंडितजी का जीवन अनियमित और विशृंखल-सा हो गया। लोगों से मिलना-जुलना छूट गया। कई-कई दिन कचहरी ही न जाते। जाते भी, तो बड़े आग्रह से। भोजन से अरुचि हो गई। विंध्येश्वरी उनकी दशा देख-देखकर दिल में कुढ़ती और यथासाध्य उनका दिल बहलाने की चेष्टा किया करती थी। वह उन्हें पुराणों की कथाएँ पढ़कर सुनाती, उनके लिये तरह-तरह की भोजन-सामग्री पकाती और उन्हें आग्रह अनुरोध के साथ खिलाती थी। जब तक वह न खा लेते, आप कुछ न खाती थी। गरमी के दिन थे ही। रात को बड़ी देर तक उनके पैताने बैठी पंखा झला करती, और जब तक वह सो न जाते, तब तक आप भी सोने न जाती। वह ज़रा भी सिर-दर्द की शिकायत करते, तो तुरत उनके सिर में तेल डालती। यहाँ तक कि रात को जब उन्हें प्यास लगती, तब खुद दौड़कर आती, और उन्हें पानी पिलाती। धीरे-धीरे चौबेजी के हृदय में मंगला केवल एक सुख की स्मृति रह गई।

एक दिन चौबेजी ने बिन्नी को मंगला के सब गहने दे दिए। मंगला का यह अंतिम आदेश था। बिन्नी फूली न समाई। उसने उस दिन खूब बनाव-सिंगार किया, गहने पहने। जब संध्या के समय पंडितजी कचहरी से आए, तो वह उनके सामने कुछ लजाती और कुछ मुसकिराती हुई जाकर खड़ी हो गई।

पंडितजी ने सतृष्ण नेत्रों से देखा। विंध्येश्वरी के प्रति अब उनके मन में एक नया भाव अंकुरित हो रहा था। मंगला जब तक जीवित थी, वह उनके पिता-पुत्री-भाव को सजग और पुष्ट करती रहती थी। अब मंगला न थी। अतएव वह भाव दिन-दिन शिथिल होता जाता था। मंगला के सामने बिन्नी एक बालिका थी। मंगला की अनुपस्थिति में वह एक रूपवती युवती थी। लेकिन सरल-हृदय बिन्नी को इसकी रत्ती-भर भी ख़बर न थी कि 'भैया' के भावों में क्या परिवर्तन हो रहा है। उसके लिये वह वही पिता के तुल्य भैया थे। वह पुरुषों के स्वभाव से अनभिज्ञ थी। नारी-चरित्र में अवस्था के साथ मातृत्व का भाव दृढ़ होता जाता है। यहाँ तक कि एक समय ऐसा आता है, जब नारी की दृष्टि में युवक-मात्र पुत्र-तुल्य हो जाते हैं। उसके मन में विषय-वासना का लेश भी नहीं रह जाता। पर पुरुषों में यह अवस्था कभी नहीं आती। उनकी कर्मेंद्रियाँ क्रिया-हीन भले ही हो जायँ, पर विषय-वासना संभवतः और भी बलवती हो जाती है। पुरुष वासनाओं से कभी मुक्त नहीं हो पाता; बल्कि ज्यों-ज्यों अवस्था ढलती है, त्यों-त्यों, ग्रीष्म-ऋतु के अंतिम काल की भाँति, उसकी वासना की गरमी भी प्रचंड हो जाती है। वह तृप्ति के लिये नीच साधनों का सहारा लेने को भी प्रस्तुत हो जाता है। जवानी में मनुष्य इतना नहीं गिरता। उसके चरित्र में गर्व की मात्रा अधिक रहती है, जो नीच साधनों से घृणा करती है। वह किसी के घर में घुसने के लिये ज़बरदस्ती कर सकता है, किंतु परनाले के रास्ते से नहीं जा सकता।

पंडितजी ने बिन्नी को सतृष्ण नेत्रों से देखा, और फिर अपनी इस उच्छृंखलता पर लज्जित होकर आँखें नीची कर लीं। बिन्नी इसका कुछ मतलब न समझ सकी।

पंडितजी बोले—तुम्हें देखकर मुझे मंगला की उस समय की याद आ रही है, जब वह विवाह के समय यहाँ आई थी। बिलकुल ऐसी ही सूरत थी—वही गोरा रंग, वही प्रसन्न मुख, वही कोमल गात, ये ही लजीली आँखें। वह चित्र अभी तक मेरे हृदय-पट पर खिंचा हुआ है, कभी नहीं मिट सकता। ईश्वर ने तुम्हारे रूप में मेरी मंगला मुझे फिर दे दी।

बिन्नी—आपके लिये क्या जल-पान लाऊँ?

पंडित—ले आना, अभी बैठो, मैं बहुत दुखी हूँ। तुमने

मेरे शोक को भुला दिया है । वास्तव में तुमने मुझे जिला लिया, नहीं तो मुझे आशा न थी कि मंगला के पीछे मैं जीवित रहूँगा । तुमने मुझे प्राण-दान दिया । नहीं जानता, तुम्हारे चले जाने पर मेरी क्या दशा होगी ।

बिन्नी—कहाँ चले जाने के बाद ? मैं तो कहीं नहीं जा रही हूँ ।

पंडित—क्यों, तुम्हारे विवाह की तिथि आ रही है । चली ही जाओगी ।

बिन्नी—(सकुचाती हुई)—ऐसी जल्दी क्या है ?

पंडित—जल्दी क्यों नहीं है । ज़माना हँसेगा ।

बिन्नी—हँसने दीजिए । मैं यहीं आपकी सेवा करती रहूँगी ।

पंडित—नहीं बिन्नी, मेरे लिये तुम क्यों हलकान होगी । मैं अभागा हूँ, जब तक ज़िंदगी है, जिऊँगा ; चाहे रोकर जिऊँ, चाहे हँसकर । हँसी मेरे भाग्य से उठ गई । तुमने इतने दिनों सँभाल लिया, यही क्या कम एहसान किया । मैं यह जानता हूँ कि तुम्हारे जाने के बाद कोई मरा ख़बर लेनेवाला नहीं रहेगा, यह घर तहस-नहस हो जायगा, और मुझे घर छोड़कर भागना पड़ेगा। पर क्या किया जाय, लाचारी है । तुम्हारे बिना अब मैं यहाँ क्षण-भर भी नहीं रह सकता । मंगला की ख़ाली जगह तो तुमने पूरी की, अब तुम्हारा स्थान कौन पूरा करेगा ?

बिन्नी—क्या इस साल रुक नहीं सकता ? मैं इस दशा में आपको छोड़कर न जाऊँगी ।

पंडित—अपने बस की बात भी तो नहीं है । वे लोग आग्रह करेंगे, तो मजबूर होकर करना ही पड़ेगा ।

बिन्नी—बहुत जल्दी मचावें, तो आप कह दीजिएगा, नहीं करेंगे । उन लोगों के जी में जो आवे, करें । क्या यहाँ कोई उनका दबैल बैठा हुआ है !

पंडित—वे लोग तो अभी से आग्रह कर रहे हैं ।

बिन्नी—आप फटकार क्यों नहीं देते ?

पंडित—करना तो है ही, फिर विलंब क्यों करूँ । यह दुख और वियोग तो एक दिन होना ही है । अपनी विपत्ति का भार तुम्हारे सिर क्यों रक्खूँ ।

बिन्नी—दुख-सुख में काम न आऊँगी, तो और किस दिन काम आऊँगी ?

(४)

पंडितजी के मन में कई दिनों तक घोर सं होता रहा । वह अब बिन्नी को पिता की दृष्टि से न दे सकते थे । बिन्नी अब मंगला की बहन और उनकी सा थी । ज़माना हँसेगा, तो हँसे ; ज़िंदगी तो आनंद गुज़रेगी । उनकी भावनाएँ कभी इतनी उल्लासमयी थीं । उन्हें अपने अंगों में फिर जवानी की स्फूर्ति अनुभव हो रहा था ।

वह सोचते, बिन्नी को मैं अपनी पुत्री समझता था पर वह मेरी पुत्री है तो नहीं । इस तरह समझने क्या होता है ? कौन जाने, ईश्वर को यही मंजूर हो नहीं तो बिन्नी यहाँ आती ही क्यों ? उसने इसी ब से यह संयोग निश्चित कर दिया होगा । उसकी ली तो अपरंपार है ।

पंडितजी ने वर के पिता को सूचना दे दी कि विशेष कारणों से इस साल विवाह नहीं हो सकता।

विंध्येश्वरी को अभी तक कुछ ख़बर न थी कि लिये क्या-क्या षड्यंत्र रचे जा रहे हैं । वह खुश कि मैं भैयाजी की सेवा कर रही हूँ, और भैयाजी मु से प्रसन्न हैं । बहन का इन्हें बड़ा दुःख है । मैं रहूँगी, तो यह कहीं चले जायँगे—कौन जाने, सं संन्यासी हो जायँ ! घर में कैसे मन लगे ।

वह पंडितजी का मन बहलाने का निरंतर प्र करती रहती थी । उन्हें कभी मन-मारे न बैठने दे पंडितजी का मन अब कचहरी में न लगता था। घं घंटे बैठकर चले आते थे । युवकों के प्रेम में विक होती है, और वृद्धों के प्रेम में श्रद्धा । वे अपनी यौ की कमी को ख़ुशामद से, मीठी बातों से और हा बाशी से पूर्ण करना चाहते हैं ।

मंगला को मरे अभी तीन ही महीने गुज़रे थे चौबेजी ससुराल पहुँचे । सास ने मुँह-माँगी मु पाई । उसके दो पुत्र थे । घर में कुछ पूँजी न उनके पालन और शिक्षा के लिये कोई ठिकाना न न आता था । मंगला मर ही चुकी थी । ज्यों ही विवाह हो जायगा, वह अपने घर की रहेगी । फिर चौबे से नाता ही टूट जायगा । वह चिंता में पड़ी हुई थी कि चौबेजी पहुँचे, मानो ई स्वयं वरदान देने आए हों ।

जब चौबेजी भोजन करके लेटे, तो सास ने कहा—भैया, अभी कहीं बातचीत हुई कि नहीं ?

पंडित—अम्मा, अब मेरे विवाह की बातचीत क्या होगी ?

सास—क्यों भैया, अभी तुम्हारी उम्र ही क्या है ?

पंडित—करना भी चाहूँ, तो बदनामी के डर से नहीं कर सकता। फिर मुझे पूछता ही कौन है ?

सास—पूछने को हज़ारों हैं। दूर क्यों जाओ, अपने घर ही में लड़की बैठी हुई है। सुना है, तुमने मंगला के सब गहने बिन्नी को दे दिए हैं। कहीं और विवाह हुआ, तो ये कई हज़ार की चीज़ें तुम्हारे हाथों से निकल जायँगी। तुमसे अच्छा वर मैं और कहाँ पाऊँगी। तुम उसे अंगीकार कर लो, तो मैं तर जाऊँ।

अंधा क्या माँगे, दो आँखें! चौबेजी ने मानो विवश होकर सास की प्रार्थना स्वीकार कर ली।

(६)

बिन्नी अपने गाँव के कच्चे मकान में अपनी मा के पास बैठी हुई है। अब की चौबेजी ने उसकी सेवा के लिये एक लौंड़ी भी साथ कर दी है। विंध्येश्वरी के दोनों छोटे भाई विस्मित हो-होकर उसके आभूषणों को देख रहे हैं। गाँव की और कई स्त्रियाँ उसे देखने आई हुई हैं, और उसके रूप-लावण्य का विकास देखकर चकित हो रही हैं। यह वही बिन्नी है, जो यहाँ मोटी फरिया पहने खेला करती थी! रंग-रूप कैसा निखर आया है! सुख की देह है न!

जब भीड़ कम हुई, एकांत हुआ, तो माता ने पूछा—तेरे भैयाजी तो अच्छी तरह हैं न बेटी? यहाँ आए थे, तो बहुत दुखी थे। मंगला का शोक उन्हें खाए जाता है। संसार में ऐसे मर्द भी हैं, जो स्त्री के लिये प्राण दे देते हैं। नहीं तो यहाँ स्त्री मरी, और चट दूसरा ब्याह रचाया गया। मानो मनाते रहते हैं कि यह मरे, तो नई-नवेली बहू घर लावें!

विंध्ये०—उन्हें याद करके रोया करते हैं। चली आई हूँ, न-जाने कैसे होंगे।

माता—मुझे तो डर लगता है कि तेरा ब्याह हो जाने पर कहीं वह घबराकर साधू-फ़क़ीर न हो जायँ।

विंध्ये०—मुझे भी तो यही डर लगता है। इसी से तो मैंने कह दिया कि अभी जल्दी क्या है।

माता—जितने ही दिन उनकी सेवा करोगी, उतना ही उनका स्नेह बढ़ेगा; और तुम्हारे जाने से उन्हें उतना ही दुख भी अधिक होगा। बेटी, सच तो यह है कि वह तुम्हीं को देखकर जीते हैं। इधर तुम्हारी डोली उठी, और उधर उनका घर सत्यानास हुआ। मैं तुम्हारी जगह होती, तो उन्हीं से ब्याह कर लेती।

विंध्ये०—हटो अम्मा, गाली देती हो! उन्होंने मुझे बेटी करके रक्खा है। मैं भी उन्हें अपना पिता......

माता—चुप रह पगली, कहने से क्या होता है ?

विंध्ये०—अरे सोचो तो अम्मा, कितनी बेढंगी बात है!

माता—मुझे तो इसमें कोई बेढंगापन नहीं देख पड़ता।

विंध्ये०—क्या कहती हो अम्मा, उनसे मेरा...मैं तो लाज के मारे मर जाऊँ, उनके सामने ताक न सकूँ। वह भी कभी न मानेंगे। मानने की बात भी हो कोई!

माता—उनका ज़िम्मा मैं लेती हूँ। मैं उन्हें राज़ी कर लूँगी। तू राज़ी हो जा। याद रख, यह कोई हँसी-ख़ुशी का ब्याह नहीं है, उस आदमी की प्राण-रक्षा की बात है, जिसके सिवा संसार में हमारा और कोई नहीं है। फिर अभी उनकी कुछ ऐसी उम्र भी तो नहीं है। पचास से दो ही चार साल ऊपर होंगे। उन्होंने एक ज्योतिषी से पूछा भी था। उसने उनकी कुंडली देखकर बताया है कि आपकी ज़िंदगी कम-से-कम ७० वर्ष की है। देखने-सुनने में भी वह सौ-दो सौ में एक आदमी हैं।

बातचीत में चतुर माता ने कुछ ऐसा शब्द-व्यूह रचा कि सरला बालिका उसमें से निकल न सकी। माता जानती थी कि प्रलोभन का जादू इस पर न चलेगा। धन का, आभूषणों का, कुल-सम्मान का, सुखमय जीवन का उसने ज़िक्र तक न किया। उसने केवल चौबेजी की दयनीय दशा पर ज़ोर दिया। अंत को विंध्येश्वरी ने कहा—अम्मा, मैं जानती हूँ कि मेरे न रहने से उनको बड़ा दुख होगा; यह भी जानती हूँ कि मेरे जीवन में सुख नहीं लिखा है। अच्छा, उनके हित के लिये मैं अपना जीवन बलिदान कर दूँगी। ईश्वर की यही इच्छा है, तो यही सही।

(७)

चौबेजी के घर में मंगल-गान हो रहा था। विंध्येश्वरी आज वधू बनकर इस घर में आई है। कई वर्ष

पहले वह चौबेजी की पुत्री बनकर आई थी ! उसने कभी स्वप्न में भी न सोचा था कि मैं एक दिन इस घर की स्वामिनी बनूँगी।

चौबेजी की सज-धज आज देखने योग्य है। तनज़ेब का रंगीन कुरता, कतरी और सँवारी हुई मूछें, ख़िज़ाब से चमकते हुए बाल, हँसता हुआ चेहरा, चढ़ी हुई आँखें—यौवन का पूरा स्वाँग था !

रात भीग चुकी थी। विंध्येश्वरी आभूषणों से लदी हुई, भारी जोड़े पहने, फ़र्श पर सिर झुकाए बैठी थी। उसे कोई उत्कंठा न थी, उत्सुकता न थी, भय न था; था केवल यह संकोच कि मैं उनके सामने कैसे मुँह खोलूँगी ? उनकी गोद में खेली हूँ; उनके कंधों पर बैठी हूँ; उनकी पीठ पर सवार हुई हूँ; कैसे उन्हें मुँह दिखाऊँगी।—मगर वे पिछली बातें क्यों सोचूँ। ईश्वर उन्हें प्रसन्न रक्खें। जिसके लिये मैंने पुत्री से पत्नी बनना स्वीकार किया, वह पूर्ण हो। उनका जीवन आनंद से व्यतीत हो।

इतने में चौबेजी आए। विंध्येश्वरी उठ खड़ी हुई। उसे इतनी लज्जा आई कि जी चाहा, कहीं भाग जाय, खिड़की से नीचे कूद पड़े।

चौबेजी ने उसका हाथ पकड़ लिया और बोले—बिन्नी, मुझसे डरती हो ?

बिन्नी कुछ न बोली। मूर्ति की तरह वहीं खड़ी रही। एक क्षण में चौबेजी ने उसे बिठा दिया; वह बैठ गई। उसका गला भर-भर आता था। भाग्य की यह निर्दय लीला, यह क्रूर क्रीड़ा, उसके लिये असह्य हो रही थी।

पंडितजी ने फिर पूछा—बिन्नी, बोलतीं क्यों नहीं ? क्या मुझसे नाराज़ हो ?

विंध्येश्वरी ने अपने कान बंद कर लिए। यही परिचित आवाज़ वह कितने दिनों से सुनती चली आती थी। आज वह व्यंग्य से भी तीव्र और उपहास से भी कटु प्रतीत होती थी।

सहसा पंडितजी चौंक पड़े; आँखें फैल गईं, और दोनों हाथ मेंढक के पैरों की भाँति सिकुड़ गए। वह दो क़दम पीछे हट गए। खिड़की से मंगला अंदर झाँक रही थी ! मंगला थी—छाया नहीं, मंगला थी—सदेह, साकार, सजीव ! उसकी आँखों में क्रोध और तिरस्कार भरा हुआ था।

चौबेजी काँपती हुई टूटी-फूटी आवाज़ में बोले—बिन्नी, देखो, वह क्या है ?

बिन्नी ने भी घबराकर खिड़की की ओर देखा। कुछ था। बोली—क्या है ? मुझे तो कुछ नहीं दिखाई दे

चौबेजी—अब ग़ायब हो गई; लेकिन ईश्वर जान है, मंगला थी।

बिन्नी—बहन ?

चौबे—हाँ, हाँ, वही। खिड़की से अंदर झाँक थी। मेरे तो रोएँ खड़े हो गए।

विंध्येश्वरी काँपती हुई बोली—मैं यहाँ नहीं रहूँ

चौबे—नहीं, नहीं, बिन्नी, कोई डर नहीं है, धोका हुआ होगा। बात यह है कि वह इसी रहती थी, यहीं सोती थी, इसी से कदाचित् मेरी भा ने उसकी मूर्ति लाकर खड़ी कर दी। कोई बात नहीं आज का दिन कितना मंगलमय है कि मेरी बिन्नी में मेरी हो गई ...

यह कहते-कहते चौबेजी फिर चौंके। फिर वही खिड़की से झाँक रही थी—मूर्ति नहीं, सदेह, स साकार मंगला ! अब की उसकी आँखों में क्रोध न तिरस्कार न था; उनमें हास्य भरा हुआ था; मानो इस दृश्य पर हँस रही है—मानो उसके सामने अभिनय हो रहा है।

चौबेजी ने काँपते हुए कहा—बिन्नी, फिर वही हुई। वह देखो, मंगला खड़ी है।

विंध्येश्वरी चीख़कर उनके गले से चिमट गई।

चौबेजी ने महावीर का नाम जपते हुए कहा— किवाड़े बंद किए देता हूँ।

बिन्नी—मैं इस घर में नहीं रहूँगी। (रोकर) जी, तुमने बहन के अंतिम आदेश को नहीं माना, से उनकी आत्मा दुखी हो रही है। मुझे तो अमंगल की आशंका हो रही है।

चौबेजी ने उठकर खिड़की के द्वार बंद कर दिए, कहा—मैं कल से दुर्गापाठ कराऊँगा। आज तक ऐसी शंका न हुई थी। तुमसे क्या कहूँ, मालूम है ... होगा, उस बात को जाने दो। यहाँ बड़ी पड़ रही है। अभी पानी गिरने को दो महीने से [illegible] है। हम लोग मसूरी क्यों न चलें।

विंध्ये०—मेरा तो कहीं जाने को जी नहीं चाह

कल से दुर्गापाठ ज़रूर कराना। मुझे अब इस कमरे में नींद न आवेगी।

पंडित—ग्रंथों में तो यही देखा है कि मरने के बाद केवल सूक्ष्म शरीर रह जाता है। फिर समझ में नहीं आता, यह स्वरूप क्योंकर दिखाई दे रहा है। कुछ नहीं, यह मेरी कल्पना का दोष है। कभी-कभी ऐसे भ्रम हो जाते हैं। मैं सच कहता हूँ बिन्नी, अगर तुमने मुझ पर यह दया न की होती, तो मैं कहीं का न रहता। शायद इस वक़्त मैं बद्रीनाथ की राह में पहाड़ों पर सिर टकराता होता; या कौन जाने विष खाकर प्राणांत कर चुका होता!

विंध्ये०—मसूरी में किसी होटल में ठहरना पड़ेगा?

पंडित—नहीं, मकान भी मिलते हैं। मैं अपने एक मित्र को लिखे देता हूँ, वह कोई मकान ठीक कर रक्खेंगे। वहाँ ...

बात पूरी न होने पाई थी कि न-जाने कहाँ से—जैसे आकाशवाणी हो—आवाज़ आई—"बिन्नी तुम्हारी पुत्री है!"

चौबेजी ने दोनों कान बंद कर लिए। भय से थर-र काँपते हुए बोले—बिन्नी, यहाँ से चलो। न-जाने हाँ से आवाज़ें आ रही हैं!

"बिन्नी तुम्हारी पुत्री है" यह वाक्य सहस्रों कानों से डितजी को सुनाई पड़ने लगा, मानो उस कमरे की क-एक वस्तु से यही सदा आ रही है!

बिन्नी ने रोकर पूछा—कैसी आवाज़ थी?

पंडित—क्या बताऊँ, कहते लज्जा आती है।

बिन्नी—ज़रूर बहनजी की आत्मा है।—बहन, मुझ र दया करो, मैं सर्वथा निर्दोष हूँ।

पंडित—फिर वही आवाज़ आ रही है। हाय ईश्वर! हाँ जाऊँ। मेरे तो रोम-रोम में वे ही शब्द गूँज रहे । बिन्नी, मैंने बुरा किया। मंगला सती थी, उसके देश की उपेक्षा करके मैंने अपने हक़ में ज़हर बोया। ाँ जाऊँ, क्या करूँ?

यह कहकर पंडितजी ने कमरे के किवाड़े खोल दिए, र बेतहाशा भागे। अपने मरदाने कमरे में पहुँचकर गिर पड़े। मूर्च्छा आ गई। विंध्येश्वरी भी दौड़ी; पर ट से बाहर निकलते ही गिर पड़ी।

प्रेमचंद

महाकवि अकबर

"अगर ढूँढ़ो, तो अकबर में भी पाओगे हुनर कोई;
अगर चाहो, निकालो ऐब तुम अच्छे-से-अच्छे में।
जो महफ़िल में अकबर ने खोली ज़बाँ,
गुलिस्ताँ में बुलबुल चहकने लगा।"

जिस समय उर्दू-साहित्य का इतिहास लिखा जायगा, उस समय ख़ाँ-बहादुर सैयद अकबरहुसैन को उसके कवियों में निस्संदेह बहुत ऊँचा स्थान मिलेगा। यह सौभाग्य बहुत कम कवियों को मिला है कि अपने जीवन-काल में ही वे पुराने लब्धप्रतिष्ठ कवियों के-से सम्मान के अधिकारी हो जायँ। ऐसे लोग भी, जिनको उर्दू-काव्य का किंचिन्मात्र ज्ञान न था, अकबर की कविता से परिचित थे; और वे बड़े आनंद से उनके शेर पढ़ा करते थे। आज पाठकों को उन्हीं की कविता का रसास्वादन कराने का प्रयास करता हूँ।

सैयद अकबरहुसैन ने सन् १८६६ ई० से कविता-रचना शुरू की, और १९२१ में—७६ वर्ष की आयु प्राप्त करने पर भी—देहांत के कुछ दिन पहले तक आप काव्य-रचना करते रहे। आपके देहांत से महीना-भर पहले मैं, दो और मित्रों के साथ, इशरत-मंज़िल, प्रयाग में, आपसे मिला, और दो घंटे तक बातें करता रहा। मैं क्या जानता था कि कुछ ही दिनों में, अनेक मित्रों और साहित्य-प्रेमियों को छोड़कर, आप संसार के बंधन से मुक्त हो जायँगे? देखा, आपकी बातचीत पहले ही की-सी रसभरी, गद्य-पद्य-मिश्रित, साहित्य-विज्ञान-दर्शन के रत्नों से अलंकृत और हास्य-रस से परिपूर्ण थी। पहले ही का-जैसा अतिथि-सत्कार था। बुद्धि का वैसा ही चमत्कार, स्वभाव की वही सुशीलता, और विचारों की वैसी ही गंभीरता नज़र आई। व्यक्तिगत या धर्मगत द्वेष न उनमें स्वयं था, और न उनकी कविता में ही आने पाया। उर्दू में व्यंग्य-काव्य के निर्माता अथवा आदि-नेता की उपाधि यदि उन्हें दी जाय, तो कुछ अनुचित न होगा। नए क़ाफ़ियों का नज़्म करना अकबर ही का काम था। अँगरेज़ी और संस्कृत के शब्दों का जो उन्होंने अपनी

रचना में प्रयोग किया है, उससे वह फ़ारसी के भक्तों के कोप-भाजन तो अवश्य हुए, पर इसी कारण से जितना विस्तृत प्रचार उनकी रचनाओं का हुआ, और होता रहेगा, उतना प्रचार उनकी रचनाओं का संभव नहीं, जो अरबी और फ़ारसी के सिवा अन्य शब्दों का प्रयोग करना अनुचित या हराम समझते हैं, अथवा जो अपनी ग़ज़ल में 'लाज'-शब्द के आ जाने से क्षमा-प्रार्थना आवश्यक समझते हैं।*

अकबर की कविता स्वभावतः तीन भागों में विभक्त हो सकती है—प्रेम, ज्ञान और हास्य। इन तीनों प्रकार की कविताओं के कुछ उदाहरण दिए जाते हैं।

मेरे इस विचार के प्रकट करने से संभव है, उर्दू के प्रेमी असंतुष्ट हों; परंतु मैं अवश्य यह कहूँगा कि उर्दू-कविता बड़ी संकुचित हो गई है। उसके लिये फ़ारसी का अनुकरण करना किसी हद तक स्वाभाविक ही था। पर फ़ारसी-कविता तो एक ही जगह रुककर नहीं रह गई—उसमें समयानुकूल परिवर्तन और ग्रहण-त्याग का सिलसिला जारी रहा है। आजकल की फ़ारसी-कविता (जिसके अनेक उदाहरण प्रोफ़ेसर ब्राउन और प्रोफ़ेसर निकलसन के ग्रंथों में मिलेंगे) सादी और क़आनी, उर्फ़ी और हाफ़िज़ की कविता से, भाषा और भाव में, बहुत ही भिन्न है। किंतु उर्दू में ऐसी उन्नति अथवा परिवर्तन का कोई चिह्न नहीं देख पड़ता। जिन गुल और बुलबुल, परवाना और शमा, तीर और जिगर, जाम और साक़ी, काफ़िर और बुतकदा, ख़िज़ाँ और बहार के विषय में हाफ़िज़ शीराज़ी कविता करते थे, उन विषयों पर, आज बीसवीं सदी में, फ़ारस नहीं, हिंदोस्तान के कवि कविता करते हैं। चाहे जिस किसी आधुनिक कवि की रचना को देखिए—

"सादगी की इंतहा कर दी, अनीज़ाने-चमन—
मुद्दतों रंगे-मिज़ाजे-बाग़बाँ देखा किए।"

(सफ़ी)

"शमअ बुझकर रह गई, परवाना जलकर रह गया;
यादगारे-हुस्नो-इश्क़ इक दाग़ दिल पर रह गया।"

(अज़ी

"फ़िक्रे-मीना क्यों है साक़ी, क्यों तलाशे-जाम है?
तू लगा दे मुँह से ख़ुम, पीना हमारा काम है।"

(चकबस्

"अंजामे-तजल्ली नज़र आ जायगा तुमको;
परवानो, रुख़े-शमए-सहर देखते रहना।"

(साक़ि

"हो गई ख़िदमते-सैयाद में इतनी मुद्दत;
आशियाँ क्या है, हमें शक्ले-चमन याद नहीं।"

(महश

"एक आलम में बसर करते हैं, हम और बुलबुल;
कोई रुसवाए-जहाँ है, कोई रुसवाए-बहार।"

(नासि

इन आधुनिक उदाहरणों और ग़ालिब की रचना की भाषा और भाव में क्या भेद है? इतने दिनों उर्दू ने क्या उन्नति की है? उर्दू किस प्रकार से जन के परिवर्तित भावों का दर्पण हुई है? उर्दू केवल भा ही में बोली और लिखी जाती है; पर भारत के इतिह भारत के साहित्य, भारत के धार्मिक मतों और भा वासियों का इस पर क्या प्रभाव पड़ा है? इसी से कहता हूँ कि उर्दू-साहित्य का क्षेत्र परम संकुचित संकीर्ण है। जब यही सिद्धांत हुआ कि हाफ़िज़ फ़िरदौसी के ही भाव दुहराए जायँ, तो नवीनता लिये शब्द-विन्यास का ही एक सहारा रह गया। उर्दू-कवि की रचना-प्रणाली भी तो विलक्षण है। उ यत्न यही रहता है कि क़ाफ़िए और रदीफ़ की हो। एक ही ग़ज़ल में हिज्र का भी ज़िक्र है, परवाने का भी; एक शेर में सैयाद है, तो दूसरे आईनए-दिल। जिन्होंने बचपन से ऐसी कविता है, उनके लिये तो यही उत्तम है; पर विश्व-सा में इसका क्या स्थान हो सकता है?

मैं प्रस्तुत विषय से दूर चला जा रहा हूँ। यह कहने का मतलब केवल यह है कि महाकवि अक अपनी कविता को इन दोषों से बचाने का प्रयत्न

---

* लखनऊ के 'अज़ीज़' कवि ने ऐसा ही किया है—

"चारगर चुप हैं क्यों, इलाज करें;
कुछ तो अपने किए की लाज करें"

(गुलकदा, पृष्ठ ६२)

इस पर आप नोट लिखते हैं—"गो यह ज़बान (लाज) औरतों के लिये मख़सूस है, लेकिन चूँकि यह मतला बे-तकल्लुफ़ मौज़ूँ हो गया, मुसन्निफ़ ने रहने दिया।"

* यह कहना उचित है कि अज़ीज़ ने फिर भी कविता में बड़ी स्वतंत्रता का परिचय दिया है।

है। अब कुछ उनके काव्य के उदाहरण देता हूँ। सबसे पहली ग़ज़ल जो उन्होंने, सन् १८६६ ईसवी में, इक्कीस वर्ष की अवस्था में, मुशायरे में जाकर पढ़ी, और जिससे जनता को उनकी कवित्व-शक्ति का परिचय प्राप्त हुआ, उसका एक शेर और मकता यह है—

"अश्क आँखों में आ जाएँ एवज़ नींद के साहब,
ऐसा भी किसी शब सुनो अफ़साना किसी का।"
"हम जान से बेज़ार रहा करते हैं 'अकबर,'
जबसे दिले-बेताब है दीवाना किसी का।"

ऐसे ही कहते-कहते कविता का अभ्यास हो गया। और, फिर बाद को तो आपकी ग़ज़लें बड़ी ही अच्छी होने लगीं—

"ग़रूर उन्हें है, तो मुझको भी नाज़ है 'अकबर'
सिवा ख़ुदा के सब उनका है, और ख़ुदा मेरा।"

प्रेमपात्र तो बुत (मूर्ति) है; सारे संसार का आधिपत्य, प्रेमी का हृदय, सब उसी का है; स्वयं प्रेमी उसी का है; पर प्रेमी इसी विचार से संतोष कर लेता है कि ईश्वर तो उसका नहीं है।

शेख़जी उपदेश बहुत दिया करते हैं—धर्म करो, ईश्वर का ध्यान धरो। पर जब मय-ख़ाने में, अथवा उसकी मजलिस में, बुत का सामना हुआ, तो वह भी, डरते-डरते, विवश होकर, प्रेम में मग्न हो गए; सांसारिक स्नेह के मद से उन्मत्त हो गए—

"दिल भी काँपा, होंठ भी थर्राए, शर्माया भी ख़ूब;
शेख़ को लेकिन तेरी मजलिस में पीना ही पड़ा।"

इस ऊपर के शेर में 'मजलिस' छोड़कर और कोई शब्द ऐसा नहीं है, जिसका प्रयोग संस्कृत के अनुरागी हिंदी-लेखक न करते हों। यह अकबर की कविता की एक विशेषता है।

पुराने रंग की कविता भी अकबर अच्छी करते थे। जैसे—

"जो नासिह मेरे आगे बकने लगा,
मैं क्या करता, मुँह उसका तकने लगा।
मुहब्बत का तुमसे असर क्या कहूँ,
नज़र मिल गई, दिल धड़कने लगा।
बदन छू गया, आग-सी लग उठी,
नज़र मिल गई, दिल धड़कने लगा।
रक़ीबों ने पहलू दिया, या तो चुप
मैं बैठा, तो ज़ालिम सरकने लगा।"

जिसको उर्दू में शोख़ी कहते हैं, उसके ये अच्छे दृष्टांत हैं—

"जब कहा मैंने 'मेरा दिल मुझको वापस कीजिए,'
नाज़ो-शोख़ी से वह बोले—'खो गया, मिलता नहीं'।"
"सुनते हैं कि 'अकबर' ने किया इश्क़े-बुताँ तर्क,
इस बात से तो ख़ुश न कभी होगा ख़ुदा भी।"
"मैं जो कहता हूँ कि मरता हूँ, तो फ़र्माते हैं—
कारे-दुनिया न रुकेगा तेरे मर जाने से।"
"मैंने कहा जो उससे, ठुकरा के चल न ज़ालिम
हैरत में आके बोला, क्या आप जी रहे हैं?"
"जब कहता हूँ, मरता हूँ मेरी जान, मैं तुम पर;
फ़र्माते हैं, मरते हो, तो मर क्यों नहीं जाते?"
"जब कहा मैंने, भुला दो ग़ैर को, हँसकर कहा—
याद फिर मुझको दिलाना भूल जाने के लिये।"

अकबर प्रेममयी कविता के अन्य भावों का भी वर्णन अच्छा करते थे। यथा—जब तक सामर्थ्य है, और हृदय सजीव है, तब तक प्रेम ही करना चाहिए। आयु और काल के अनुसार सब काम करना उचित है। अभी तो वसंत है अभी प्रेममत्त हो लें—

"ख़िज़ाँ में होश जब आएगा, ख़ैर, रो लेंगे,
बहार तक तो हमें नश्शए-शराब रहे।"

विरह की व्यथा का वर्णन असंभव है—

"हाले दिल मैं सुना नहीं सकता,
लफ़्ज़ मानी को पा नहीं सकता।
इश्क़ नाज़ुक-मिज़ाज है बेहद,
अक़्ल का बोझ उठा नहीं सकता।
पोंछ सकता है हमनशीं आँसू,
दाग़े-दिल को मिटा नहीं सकता।"

प्रेम-मिलन हशर अथवा क़यामत है। इस पर ग़ालिब का यह मशहूर शेर है—

"जाते हुए कहते हो, क़यामत को मिलेंगे;
क्या ख़ूब! क़यामत का है गोया कोई दिन और!"

इसी पुरानी बात को अकबर नए ढंग से कहते हैं—

"एक दिन और क़यामत खिसक आएगी इधर;
और क्या अर्ज़ करूँ आपसे कल क्या होगा!"

इस शेर में भी क़यामत और अर्ज़ को छोड़कर और सभी शब्द सादे हैं।

प्रेम का यह एक और ही रंग है—

"यों जल्द न रुख़सत हो जो गुल बाग़ से चुन लो,
इंसाफ़ यह कहता है कि बुलबुल की भी सुन लो।"

और—

"जो ज़िबह करता है, पर खोल दे मेरे सैयाद ;
कि रह न जाय तड़पने की आरज़ू बाक़ी।"

इन उदाहरणों से पाठकों को ज्ञात हो गया होगा कि अकबर प्रेममयी कविता बड़े मार्के की करते थे। अब उनकी ज्ञान-पूर्ण, अनुभवमयी कविता के कुछ दृष्टांत देता हूँ। कविता का मूल प्रेम है। आपमें बुद्धि है, तत्त्वज्ञान है, लेकिन जो हृदय में प्रेम नहीं, तो आप अच्छी कविता नहीं कर सकते—

"इश्क़ को दिल में दे जगह 'अकबर'
इल्म से शायरी नहीं आती।"

सरस हृदय हो, तो कविता के लिये और कोई वस्तु आवश्यक नहीं। स्वदेश-प्रेम उर्दू-शायरी में शायद कहीं देखा ही नहीं जाता। व्रजनारायण चकबस्त के कुछ पद्यों और इक़बाल की दो नज़्मों में तो अवश्य भारत-गुण-गान है, पर और कवि बलख़ और बदख़्शाँ को ही देखते हैं; उनकी रचना में भारत का कहीं नाम भी नहीं। किंतु अकबर के हृदय में मातृभूमि के प्रति इतना वात्सल्य है कि वह कहते हैं—

"हिंद से आपको हिजरत हो मुबारक 'अकबर;'
हम तो गंगा ही पै अब मार के आसन बैठे!"

यही विचार उचित है। जब इतने दिनों से इस देश में आए हुए हैं, यहीं की भूमि से शरीर बना है और यहीं की भूमि में जा मिलेगा, तब गंगा और हिमालय कोई हिंदी और संस्कृत की ही जायदाद तो हैं नहीं? ज़मज़म छोड़कर गंगा पर कविता क्यों न की जाय?

संसार में शोर तो बहुत लोग मचाते हैं, चिल्लाते हैं, पुकारते हैं, पर उनके वचन कल के लोग नहीं सुनते। आज मेरी तूती बोल रही है; आज के बाद कोई मेरा नाम भी न जानेगा। आज मुझमें ज्योति है; मालूम होता है, यह ज्योति सदा बनी रहेगी। कल न मैं हूँ, न मेरी ज्योति है; दोनों अपार अनंत अंधकार में लीन हो गए। पर जिनमें सच्ची शक्ति है, उनका प्रकाश बना ही रहेगा—आज, कल, सदा पहले से भी अधिक प्रकाश होता जायगा। इसी भाव को कवि यों कहता है—

"जो गुबार थे, वे आख़िर गिर गए;
जो सितारे थे, चमकते ही रहे।"

अँगरेज़ी के प्रसिद्ध गद्य-पद्य-लेखक स्टीविनसन कहना है—

" There's so much good in the worst of us,
And so much ill in the best of us,
That it ill behoves any of us,
To speak ill of the rest of us."

दोष-रहित तो केवल ईश्वर है; नहीं, उस पर तो लोग अन्याय का दोषारोपण करते हैं। हम कौन भले सज्जन गुणागार हैं कि औरों के दोष निकालने धृष्टता करें?—

"क्या कहें औरों को, यह ऐसे हैं, वह ऐसे हैं;
सच जो पूछो, तो हमीं कौन बहुत अच्छे हैं?"

यह शेर हिंदी में है या उर्दू में, इसका निर्णय करे? कितना बड़ा झगड़ा मिट जाता, अगर हिंदी उर्दू, दोनों के लिखनेवाले ऐसी ही कविता लिखा करते

ऊपर लिख आए हैं कि मतभेद की संकीर्ण-हृदय अकबर में नहीं थी। आप कहते हैं—

"हकीम और बैद यकसाँ हैं, अगर तशख़ीस अच्छी
हमें सेहत से मतलब है, बनफ़शा हो कि तुलसी हो।"

निराकार या साकार, निर्गुण या सगुण, परमात्मा है, इसका पता प्राचीन शास्त्रकारों को भी नहीं 'नेति-नेति' पर ही संतोष करना पड़ा। सृष्टि से तक धर्मशास्त्रों की, विज्ञान की, योग की, सबकी आकांक्षा यही रही है कि सृष्टिकर्ता के तत्त्व का प्राप्त हो। आधुनिक वैज्ञानिक अपने आविष्कारों क्षंतव्य गर्व में आकर 'इलेक्ट्रन', 'ऐटम', 'ईथर' इत्यादि को आदि-पदार्थ मानते हैं। कहते हैं, लो, अब गुप्त वस्तु नहीं है, सब साफ़ हो गया। पर, फिर मनुष्य की जिज्ञासा का अंत नहीं हुआ। मैं कौन हूँ मेरा जन्म क्यों हुआ? मरण के पश्चात् मैं क्या होऊँगा सृष्टि क्यों हुई? ये प्रश्न पूर्ववत् जटिल ही बने हैं—

"हज़ार 'सायंस' रंग लाए, हज़ार क़ानून हम बनाएँ।
ख़ुदा की क़ुदरत यही रहेगी, हमारी हैरत यही रहेगी।"

कर्म—कुछ काम करना—ही सबसे बड़ा धर्म है लोकमान्य तिलक ने ठीक ही भगवद्गीता को कर्मयोग- कहा है। प्रकृति का नियम है कि एक स्वभाव

भिन्न (विपरीत) स्वभाव की ओर आकर्षित होता है। जो शक्ति मुझमें नहीं है, उस शक्ति का मेरे हृदय में बड़ा आदर है। कवि योद्धा की ओर, बलवान् निर्बल की ओर, बुद्धिमान् सरल मनुष्य की ओर, और वक्ता लेखक की ओर आकृष्ट होता है। कवि अकबर इसी सिद्धांत के अनुसार कर्मवीर की प्रशंसा करते हुए यह भूल रहे हैं कि संसार में खूब कहनेवालों की भी उतनी ही आवश्यकता है, जितनी खूब करनेवालों की—

"जब 'खूब किया' का कोई मौक़ा न निकाला,
फिर क्या जो हुई धूम फ़क़त 'खूब कही' की ?"

आजकल के नवयुवकों में शिष्टता की कमी हो गई है। बड़ों का, विद्या-वयोवृद्धों का आदर उनके हृदय में कम हो गया है। इसी से कवि कहता है—

"जिससे मिलती थी उन्हें दिल में बुज़ुर्गों के जगह,
वह अदब लड़कों के दिल से आजकल जाता रहा।"

अकबर का सबसे प्रिय प्रधान गुण हास्य था। उनकी बातें सदा हास्य-पूर्ण होती थीं। कविता में भी इस विशेषता का—ज़राफ़त का—उन्होंने समावेश किया है। मगर तारीफ़ यह कि कभी उनका मज़ाक़ भद्दा या गिरा हुआ नहीं होता। उसमें अश्लीलता का लेश भी नहीं। अश्लीलता को हास्य-रस की कविता में न आने देना सुलभ नहीं है। कहते हैं—

"मज़हबी बहस मैंने की ही नहीं,
फ़ालतू अक़्ल मुझमें थी ही नहीं।"

"तुम-से उस्तादों में मेरी शायरी बेकार है,
साथ सारंगी का बुलबुल के लिये दुशवार है।"

इस शेर में प्रसिद्ध कहावत बड़ी योग्यता से रख दी है—

"जब ग़म हुआ चढ़ा लीं दो बोतलें इकट्ठी;
मुल्ला की दौड़ मसजिद, अक़बर की दौड़ भट्ठी।"

और कहते हैं—

"बोले चपरासी जो मैं पहुँचा ब-उम्मीदे सलाम,
फाँकिए ख़ाक आप भी, साहब हवा खाने गए।"

"फ़ुर्क़त ने कहा कि जागिए आप;
खटमल ने कहा कि भागिए आप।"

आगे कुछ उन पद्यों को उद्धृत करता हूँ, जिनमें अँगरेज़ी के शब्दों का प्रयोग होने के कारण उनका प्रभाव विशेष हो गया है—साथ ही क़ाफ़ियों की, नज़्म की ख़ूबी भी देखने योग्य है—

"ज़िंदगी और क़यामत में 'रिलेशन'[1] समझो,
इसको कॉलेज[2] और उसे 'कॉनवोकेशन'[3] समझो।"

"मुहल्ले में न की जब शेख़ की वक़त अज़ीज़ों ने,
तो बेचारा कमेटी ही में जाकर कूद-उछल आया।"

इस शेर में इशारा उनकी ओर है, जो कौंसिल और बोर्डों में चुने जाते हैं। अपने शहर में तो कोई पूछता नहीं, कौंसिल और कमेटी में देश के नेता बन जाते हैं। और, वहाँ काम केवल उछल-कूद करना है—कोई यथार्थ देश-सेवा नहीं।

"चार दिन की ज़िंदगी है, कोफ़्त से क्या फ़ायदा ?
खा डबलरोटी, किलर्की कर, ख़ुशी से फूल जा।"

"मैं हुआ रुख़सत उनसे ऐ 'अकबर',
वस्ल के बाद 'थैंक[4] यू' कहकर।"

अधिकार का तिरस्कार और धर्म की अवहेलना जो नवयुवकों में आ गई है, और उन्हें जो मिथ्याभिमान हो गया है, उसी पर अकबर कहते हैं—

"हुक्काम पै बर्म[5] के गोले हैं, और मौलवियों पर गाली है;
कॉलिज ने यह कैसे साँचों में लड़कों की तबीयत ढाली है?"

इस शेर में क़ाफ़िए को छोड़कर और कुछ नहीं है—

"मुझको है पसंद इस सबब से यू० पी०[6],
यानी यू० पी० का क़ाफ़िया है रूपी[7]।"

इसमें हास्य और व्यंग्य मिश्रित है—

"तालिब-इल्मों को ले जाओ कमेटी[8] में न तुम,
कहीं ऐसा न हो, ये क़ौम पै आशिक़ हो जायँ।"

"क्यों सिविल[9] सर्जन का आना रोकता है हमनशीं;
इसमें है एक बात ऑनर[10] की, शफ़ा हो या न हो।"

---

१. Relation=संबंध।

२. College.

३. Convocation, जिसमें परीक्षोत्तीर्ण होने पर उपाधि मिलती है।

४. Thank you=धन्यवाद।

५. Bomb.

६. U. P.=संयुक्त-प्रांत।

७. Rupee=रुपया।

८. Committee.

९. Civil Surgeon.

१०. Honour=आदर।

"कमेटी में चंदा दिया कीजिए;
तरक़्क़ी के हिज्जे किया कीजिए।"

बात तो कवि ने ठीक ही कही है। पाठक स्वयं स्मरण करें, कितने लोग समाज, स्कूल, अस्पताल, समितियों में चंदा देते हैं, कितनी जगह उस चंदे का सदुपयोग होता है, और इन संस्थाओं के कारण समाज की कितनी उन्नति होती है?

"क्या वह दुरुस्त हो मेरी नज़्मों के फ़ोर्स से;
फ़ुर्सत कहाँ है काम को कॉलिज के कोर्स से।"

जिन लोगों की आय चंदे पर निर्भर है, उन पर कवि कहता है—

"सर्विसे में मैं दाख़िल नहीं, हूँ क़ौम का ख़ादिम;
चंदों की फ़क़त आस है, तनख़ाह कहाँ है?"

धर्मचर्चा प्रिय नहीं है; पर नोक-झोक करने, झगड़ने और परस्पर निंदा करने के लिये कमेटियों में समय नष्ट करना स्वीकार है—

"नहीं मंज़ूर नमाज़ों में गुज़ारें रातें;
हाँ, कमेटी हो, तो उलझे हुए बकबक में रहें।"

इस समय की शिक्षा-प्रणाली से जो नास्तिकता और धर्म के प्रति अवहेलना-बुद्धि हो गई है, उस पर यह शेर है—

"गिर्जा में लाट साहब, मसजिद में शेख़ साहब,
बुद्धू फ़िलॉसफ़ी के कमरे में सड़ रहे हैं।"

फिर कमेटी के ऊपर—

"क्यों अपने सर पे ज़हमते-बेसूद लीजिए;
कौंसिलों के बदले घर में उछल-कूद लीजिए।
खा-पीके घर में बैठिए, और गाइए भजन;
काशी से जल, प्रयाग से अमरूद लीजिए।"

पुरानी रीतियों को छोड़कर नई प्रणाली के अनुयायियों पर शेर कहा है—

"हरचंद कि है मिस[6] का लवेंडर भी बहुत ख़ूब;
बेगम का मगर इत्रे-हिना और ही कुछ है।"

नीचे के शेर में, जिसे मेरे एक मित्र 'Intell companionship' (मानसिक सौहार्द) कहते उसका उदाहरण है—

"मैं भी ग्रेजुएट हूँ, तू भी ग्रेजुएट,
इलमी मुबाहसे हों, ज़रा पास आके लेट।"

'देश-सेवकों' पर फिर एक चोट—

"शिमलाओ-नैनीताल जानेवाले,
रेल के पहले दर्जे के टिकट पानेवाले।"

"ख़ुदा की राह में पहले बसर करते थे सख़्ती से;
महल में बैठकर अब इश्क़े-क़ौमी में तड़पते हैं[2]।"

इस शेर में तसवीर के स्थान पर 'फ़ोटो' का प्र करने से ख़ूबी आ गई है, और 'चाटो' से तो हास्य की पूर्ति हो गई है—

"हिज्र की शब यों ही काटो भाइयो,
उनका [3]फ़ोटो लेके चाटो भाइयो।"

ऊपर के अनेक उदाहरणों से पाठकों का मनोवि तो हुआ ही होगा, साथ ही उन्होंने यह भी देखा होगा हास्यमय होते हुए भी इन पद्यों में उपदेश भरा हु है। अकबरहुसैन ने उर्दू-साहित्य की एक बहुत कमी दूर की; और नवीन प्रणालियों के पथ-प्रद का काम भी किया। उर्दू-साहित्य के उन थोड़े-से लेखों में आपका नाम रहेगा, जिनसे साहित्य के गौरव वृद्धि हुई है। आप अपनी एक ग़ज़ल में दूसरे भाव कह चुके हैं—

"ज़िंदा हूँ, तो मुझ पॅ हँसनेवाले हैं बहुत,
मर जाऊँ तो कोई रोनेवाला न रहा।"

सच तो यह है कि इनके मरने पर उर्दू-साहित्य एक अनोखा रत्न खो गया; एक देदीप्यमान ज्योति हो गई। पर एक चिरस्थायी कीर्ति-स्तंभ * अवश्य

---

१. Force=शक्ति।
२. Course=पाठ्य-विषय।
३. Service=नौकरी।
४. Philosophy.
५. Council.
६. Miss.
७. Lavender.

१. Graduate.
२. इसी विषय पर विश्वंभरनाथजी कौशिक की मनो कहानी 'लीडरी का पेशा' भी पढ़ने लायक़ है। गंगा-पुस्तकमाला, लखनऊ से प्रकाशित "चित्रशाला" पढ़िए।
३. Photo.

* अकबर का कुल्लियाते-अकबर (तीन भाग) उर्दू- पाठकों के पढ़ने की चीज़ है।

वह खड़ा कर गए हैं, जिसका आदर उर्दू के प्रेमियों में सदा बना रहेगा। *

अमरनाथ झा

हिंदू-विश्वविद्यालय

दस वर्ष पहले, जब हिंदू-विश्वविद्यालय का जन्म भी नहीं हुआ था, इसके विषय में वायसराय की कौंसिल में बातचीत हो रही थी, तब लॉर्ड हार्डिंज ने मालवीयजी से चुपके से कहा था कि "पंडितजी, जो कुछ करना हो, कर लीजिए, अभी समय है। मेरे चले जाने के बाद न-जाने क्या हो। फिर आप शायद ऐसा अवसर न पावें।" लॉर्ड हार्डिंज के शब्दों में भविष्यद्वाद था; और हमें संदेह है कि यदि उनके समय में नहीं, तो किसी और के समय में ऐसी संस्था की नींव शायद ही पड़ी होती। मालवीयजी भला कब ऐसा मौक़ा हाथ से जाने देनेवाले थे। उन्होंने जो करना था, कर डाला। इस समय सारा भारतवर्ष उक्त दोनों महानुभावों का ऋणी है।

उसी समय विश्वविद्यालय के उद्देश्य भी निर्द्धारित कर लिए गए थे। यह संस्था बनी है—

"For the purposes, among others, of making provision for imparting education, literary, artistic and scientific as well as agricultural, technical, commercial and professional, of furthering the prosecution of original research, and of giving instruction in Hindu theology and religion and of promoting the study of literature, art, philosophy, history, medicine and science, and of imparting physical and moral training."

अर्थात् यह अन्य कामों के सिवा साहित्यिक, कला-संबंधी, वैज्ञानिक, कृषि-संबंधी, औद्योगिक, व्यावसायिक और भिन्न पेशों के योग्य शिक्षा दिलाने का साधन बने; मौलिक गवेषणा के काम को प्रसार दे; हिंदू-धर्म के अध्यापन का प्रबंध करे; साहित्य, कला, तत्त्व-ज्ञान, इतिहास, चिकित्सा-शास्त्र, विज्ञान आदि की पढ़ाई को उन्नत करे, और शारीरिक तथा नैतिक शिक्षा भी दे।

भारतवर्ष के राजनीतिक तथा सामाजिक क्षेत्र में मालवीयजी एक अद्भुत व्यक्ति हैं। आप एक ओर गाँधीजी से बातचीत करते हैं, दूसरी ओर आपके पास लॉर्ड रीडिंग का तार आता है; उधर वायसराय की कौंसिल में स्पीच देकर आप हिंदू-संगठन की तैयारी करते हैं, इधर सत्याग्रहियों को मनाने के लिये ट्रावनकोर तक जाते हैं; पुराने ढर्रे के पंडित भी आपसे प्रसन्न हैं, और नव्य सुधारक-दल भी असंतुष्ट नहीं है। दफ़ा १४४ तोड़ने पर भी आपको नौकरशाही गिरफ़्तार नहीं करती! अभी तक आपने कभी समुद्र-यात्रा नहीं की—और न जीवन-भर शायद ऐसा करने का अवसर ही आने देंगे—किंतु गवर्नर के निमंत्रण में भी जाने में आपको कुछ आपत्ति नहीं होती। मतलब यह कि पंडितजी में अनेक अद्भुत बातों और शक्तियों का समावेश है, तथा वही व्यापक सम्मिश्रण इस संस्था के उद्देश्यों के निर्द्धारण में भी झलकता है। उन उद्देश्यों की पूर्ति के लिये बहुत कुछ चेष्टा भी की जा रही है। एक ओर संस्कृत के विद्यार्थी अष्टाध्यायी का पाठ घोखते हैं, दूसरी ओर हट्टे-कट्टे नवयुवक इंजीनियरिंग कॉलेज में आठ-आठ घंटे हथौड़े चलाते हैं। एक बात अवश्य है। धार्मिक शिक्षा यहाँ का मुख्य उद्देश्य है। यह शिक्षा यहाँ दी भी जाती है। इसके लिये दो वयोवृद्ध प्रोफ़ेसर भी हैं। पर वह पढ़ाई धर्म के आदर्श से कहीं दूर रहती है। यद्यपि धार्मिक कक्षाओं और एकादशी की कथाओं में उपस्थिति आवश्यक होती है, पर, हम समझते हैं, विद्यार्थियों का ध्यान इधर यथेष्ट रूप से नहीं जाता। इसका कारण यह है कि उनको इस ओर आकृष्ट करने के लिये उनकी उपस्थिति अनिवार्य कर देना ही सर्वोत्कृष्ट उपाय नहीं है। इस समालोचना का आशय दोषोद्भावना या और कुछ नहीं है (हमारा विश्वास है कि विद्यार्थियों को—विशेष कर बीसवीं शताब्दी के विद्यार्थियों को—धार्मिक शिक्षा की [illegible] आवश्यकता है); हम इसकी शिक्षा

---

* लेख भेज चुकने पर मुझे ज्येष्ठ की माधुरी में मित्रवर श्रीरघुपतिसहाय बी० ए० का आज़ाद अंसारी पर उत्तम लेख पढ़ने का अवसर हुआ। कई स्थानों पर मेरे और उनके विचार मिलते हैं, और कई विषयों में मतभेद भी है। यदि आपका लेख मैंने पहले पढ़ा होता, तो संभव है, अपने लेख में कहीं-कहीं संशोधन कर देता।—लेखक

पद्धति से सहमत नहीं हैं। इस विषय में अभी हमें पादरियों से बहुत कुछ सीखना है।

कुछ भी हो, हिंदू-विश्वविद्यालय में हिंदूपन बहुत है। विद्यालयों तथा छात्रावासों के प्रत्येक भाग में हिंदूपन झलकता है। दरवाज़ों, खिड़कियों, कँगूरों तथा कलसियों से साफ़-साफ़ हिंदू-शैली व्यक्त होती है। भीतर जाने पर यत्र-तत्र हिंदू-ग्रंथों के वाक्य-रत्न दीवारों पर लिखे मिलेंगे। बड़े 'हाल' (Hall) में तो बड़े-बड़े अक्षरों में ज्ञान, धर्म, भक्ति आदि शब्द चारों ओर खुदे हुए हैं। सबसे ऊपर सरस्वतीजी का एक मंदिर है, जो अभी पूरा बन नहीं चुका। विश्वविद्यालय-गृह में लगी हुई प्रत्येक ईंट में "काशी-विश्वविद्यालय" का संक्षिप्त रूप "का०वि०वि०" खुदा है। दरवाज़ों तथा ज़ीनों में भी यही अंकित है। परमात्मा न करें, पर संभव है, किसी समय भविष्य के इतिहासकार को इन अक्षरों पर अनेक समस्याएँ हल करनी पड़ें। किंतु काशीपुरी बाबा विश्वनाथ के त्रिशूल पर बसी है। यह पुण्य-नगरी अमर है, और इसी से विश्वविद्यालय का सिद्धांत-वाक्य भी अमरत्व का सूचक है—"विद्ययाऽमृतमश्नुते"। यही वहाँ की मोहर पर भी, जिसमें सरस्वती का चित्र है, और जो प्रत्येक सनद आदि पर रहती है, अंकित है। इसी प्रकार सेंट्रल हिंदू-कॉलेज का वाक्य है—"विद्या धर्मेण शोभते"। इसी प्रकार इंजीनियरिंग कॉलेज का वाक्य है—"कर्मयोगिनः"। यहाँ का यह वाक्य भगवान् विश्वकर्मा के चतुर्भुज चित्र के नीचे लिखा रहता है। मुझसे जो एकआध मुसलमान और क्रिश्चियन विद्वान् मिले, वे इस विषय पर बातचीत होने पर इस हिंदूपन की शिकायत-सी करने लगे। मैंने उन्हें सारा सिद्धांत समझा दिया। न तो क्रिश्चियन संस्थाओं की भाँति यहाँ धार्मिक शिक्षा ही सबके लिये अनिवार्य है, और न अन्य-धर्मावलंबियों के लिये और कोई आपत्तिजनक बाधाएँ ही हैं। मुसलमानी त्योहारों पर यद्यपि छुट्टी नहीं रहती, तथापि मुसलमान-छात्रों को उस दिन विशेष रूप से छुट्टी मिलती है। यहाँ अनुपस्थिति के लिये जुर्माना तो होता ही नहीं। वास्तव में जुर्माने की यह पद्धति विद्यार्थियों के लिये नहीं, उनके अभिभावकों के लिये हानिकर है। फ़ीस भी यहाँ सब विश्वविद्यालयों से कम ली जाती है। पहले तो केवल अविवाहित छात्रों से आधी फ़ीस ली जाती थी, किंतु फिर सबके लिये आधी से कुछ अधिक कर दी गई। जन्माष्टमी आदि त्योहारों के दिन खूब ही धूम रहती है। आर्ट्स कॉलेज की वसंत-पंचमी और इंजीनियरिंग कॉलेज की सरस्वती-पूजा प्रसिद्ध है। आक्सफ़ोर्ड-कैंब्रिज की वेयडिंग आदि की भाँति यहाँ की इन बातों की परंपरा (tradition)-सी बन रही है। पर ६०० और ६ वर्ष में बड़ा अंतर होता है; और इसी कारण इन विश्वविद्यालयों की परस्पर तुलना करना ठीक नहीं। दीपावली के दिन कई सहस्र बीघों में प्रकाश-ही-प्रकाश रहता है; होली की रात को होलिका-दहन और फाग होता है। प्रातःकाल रंग की छटा रहती है। यहाँ तक कि मालवीयजी भी नहीं बचते। रंग लगाया जाता और मिठाई वसूल की जाती है। वसंत-पंचमी को तो सैकड़ों नवयुवक पीले ही कुर्ते पहने देख पड़ते हैं—वसंत का मूर्तिमान् रूप खड़ा हो जाता है। वार्षिक अधिवेशनों (Convocation) में उपाधि-वितरण के अवसर पर और स्थानों में 'हुड' पहनाया जाता है; पर यहाँ उसकी जगह ग्रेजुएट लोग पगड़ी बाँधते हैं। हाँ, स्त्रियों के लिये अलबत्ता हुड रहता है। पर इसमें कोई ढोंग और ढकोसले की बात नहीं है। इंजीनियरिंगवाले यदि पाजामा या नेकर पहनकर न जायँ, तो क्या करें? मशीनों में धोती फँसाकर दबने से क्या लाभ? उन्हें तो धूप में पैमाइश करनी होती है। यदि हैट न लगावें, तो अंधे ही हो जायँ। इसीलिये कहा भी है—

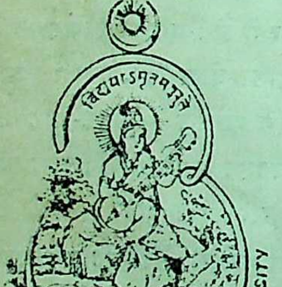

विश्वविद्यालय की मोहर

(देखिए, ऊपर से सुधाकर भगवान् सरस्वती पर अमृत-वर्षा कर रहे हैं)

"यस्यास्ति सर्वत्र गतिः स कस्मात्स्वदेशरागेण हि याति नाशम्;
तातस्य कूपेऽयमिति ब्रुवाणाः क्षारं जलं कापुरुषाः पिबन्ति।"

इन सब बातों में धर्म थोड़े ही है। ऐसी बातों से जातीयता भी नहीं नष्ट होती। अस्तु।

विश्वविद्यालय की स्थापना १ एप्रिल, सन् १९१६ ई० में हुई थी, पर काम प्रारंभ हुआ था १९१७ के ऑक्टोबर से। प्राच्य विद्या-विभाग और ट्रेनिंग कॉलेज १९१८ में खुले,

और इंजीनियरिंग कॉलेज १९१९ से कार्य कर रहा है। लॉ-कॉलेज को खुले तो अभी पहला ही वर्ष पूरा हो रहा है; पर हैं उसमें सौ से भी अधिक विद्यार्थी। विश्वविद्यालय की दो बड़ी समितियाँ हैं, जो सारा कार्य करता हैं। एक तो है कोर्ट। यह सर्वोच्च अधिकार रखनेवाली समिति है। दूसरी है सिनेट। यह पठन-पाठन का निरीक्षण करती है। कोर्ट का मेंबर केवल हिंदू ही हो सकता है। अभी तक केवल डॉ० एनी बेसंट ही इस नियम का अपवाद हैं। यह समिति बहुत बड़ी है। इसमें अध्यापकों, जैनों, सिखों, संस्कृत और धर्मशास्त्र के विद्वानों, विश्वविद्यालय के ग्रेजुएटों तथा दाताओं के प्रतिनिधि काम करते हैं। सिनेट के तीन-चौथाई सदस्य हिंदू रहते हैं। इसमें विश्वविद्यालय के पदाधिकारियों के अतिरिक्त ५ सदस्य प्रांतीय गवर्नर के चुने हुए रहते हैं, और ग्रेजुएटों के कुछ प्रतिनिधि भी। इन दोनों समितियों से संबद्ध दो छोटी-छोटी कमेटियाँ हैं, जो इनकी कार्यकारिणी नलियाँ-सी हैं। कोर्टवाली का नाम है कौंसिल, और सिनेटवाली का सिंडिकेट।

स्वर्गीय सर आशुतोष मुखोपाध्याय ने लॉ-कॉलेज का उद्घाटन किया था। खेद है, वह इतनी जल्दी स्वर्ग को सिधार गए। अभी कृषि-कॉलेज, व्यापार-कॉलेज तथा आयुर्वैदिक कॉलेज भी खुलेंगे। इन सबके लिये बहुत-से रुपयों की आवश्यकता है। सुनते हैं, आयुर्वैदिक विभाग के लिये तो रुपए मिल भी गए हैं। उसके लिये एक औषधालय भी बन गया है, जिसमें वैद्यक पढ़नेवाले छात्र दवाएँ कूटते हैं। इधर बंबई के एक सज्जन ने तीन लाख रुपए बालिकाओं की शिक्षा के लिये दिए हैं। उनके लिये एक छात्रावास बन रहा है, जिसमें शायद पढ़ने का भी प्रबंध रहे, और स्त्रियों को कॉलेजों में पढ़ने न जाना पड़े। एक अलग चिकित्सालय भी बन रहा है। यों तो एक छोटा-मोटा अस्पताल अब भी है। प्रसिद्ध इंजीनियर और विश्वविद्यालय के निर्माण-विभाग के भूतपूर्व सुपरिंटेंडेंट सर गंगारामजी ने एक बड़ी नहर बनवाने की प्रतिज्ञा की है। इसमें लगभग दो लाख रुपए लगेंगे। उक्त सर गंगारामजी इस प्रतिश्रुति के लिये धन्यवाद के पात्र हैं। सुना जाता है, महाराज दरभंगा-नरेश ने भी ५ लाख रुपए देकर एक ऐसा मंदिर बनवाने को कहा है, जिसके चारों ओर दस हज़ार मनुष्य सुख से रह सकें। नहर गंगाजी से आकर इस मंदिर के चारों ओर लहराती हुई फिर गंगाजी में ही जा मिलेगी। तब तो नगवे की छटा और ही कुछ हो जायगी।

विश्वविद्यालय का दृश्य बड़ा ही मनोरम है। कॉलेजों और छात्रावासों के बीच-बीच तालाब और बग़ीचे हैं। घास के मैदानों में भेड़ें, बकरियाँ और गउएँ चरती रहती हैं। चारों ओर तथा बीच-बीच में खेती होती है। दक्षिण ओर दृष्टि दौड़ाने पर विंध्य-गिरिमाला की धूसर रेखा आकाश-मंडल में उठती देख पड़ती है। कॉलेजों के ऊपर चढ़कर देखिए, नीचे गंगाजी लहराती हुई, अर्धचंद्राकार बनकर, काशी-क्षेत्र को पवित्र करती हैं। त्योहारों के दिन तो विद्यार्थियों के झुंड-के-झुंड, स्नान करने के लिये, भगवती भागीरथी की सेवा में जाते देख पड़ते हैं। एक ओर पंचक्रोशी की सड़क है, जिस पर हज़ारों यात्री प्रतिदिन चलते रहते हैं। कभी-कभी तो स्त्रियों का मधुर गान भी यहाँ सुनने को मिल जाता

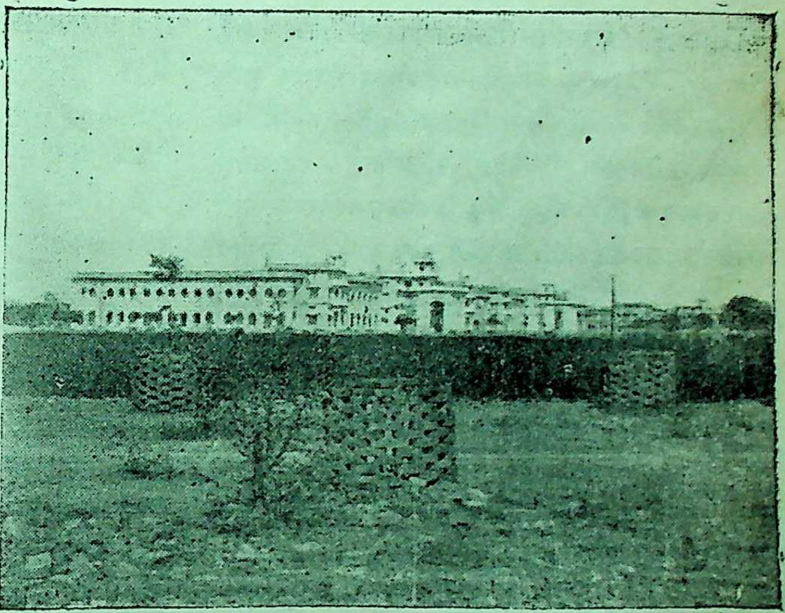

दूर से विश्वविद्यालय के भवनों का एक दृश्य

है। उत्तर ओर पवित्र विश्वनाथ की नगरी है, जिसके धौरहरे के दोनों गुंबद आकाश की ओर उठते हुए उसी का यशोगान करते-से जान पड़ते हैं। गंगा-पार, सामने, काशी-नरेश का प्रासाद है। आमने-सामने सरस्वती तथा लक्ष्मी के ये दोनों विशाल भवन परस्पर प्रतिस्पर्द्धा-सी करते देख पड़ते हैं। पर है इनमें बड़ी मैत्री। यह सारी भूमि बनारस के महाराज की ही कृपा से प्राप्त हुई है। विश्वविद्यालय का निर्माण वृत्तों के हिसाब से है। एक वृत्त में सब कॉलेज और प्रयोगशालाएँ रहेंगी, दूसरे में सभी छात्रावास, और एक तीसरे में अध्यापकों के लिये मकान। जो अध्यापक पंचक्रोशी के भीतर ही रहना चाहते हैं, उनके लिये वहीं प्रबंध होगा; क्योंकि विश्वविद्यालय का अधिकांश भाग इसके बाहर ही है।

विद्यालय के क्षेत्रफल-भर में सड़कों की कुल लंबाई प्रायः २० मील है। प्रतिदिन कितने ही दर्शक आते हैं। भारतवर्ष के बड़े नेताओं तथा धनी-मानियों को छोड़कर कितने ही तो विदेशों से आते हैं। जब कर्नल वेजवुड आए थे, तो उन्होंने विश्वविद्यालय को देखकर बड़ी प्रसन्नता प्रकट की थी। उन्होंने कहा था—"विद्यालय के लिये इस प्रकार की विराट् एवं मनोरम सौध-श्रेणी हमने और कहीं नहीं देखी।" इंजीनियरिंग कॉलेज की उन्होंने विशेष प्रशंसा की थी, और कहा था—"इस कॉलेज में एकाग्र-चित्त एवं कर्म-निरत नवीन कार्यकर्ताओं का जो दल देख पड़ता है, मुझे विश्वास है, वही एक दिन भावी भारतवर्ष को फिर से गढ़कर तैयार करेगा।" परमात्मा करे, वेजवुड महाशय के ये शब्द सत्य हों। एक बार डेनमार्क से बड़े नामी चित्रकार तथा उपन्यास-लेखक एब्ब कार्नरप (Ebbe Kornerup) यहाँ आए हुए थे। इन्होंने भारतवर्ष-संबंधी कई उपन्यास लिखे हैं। आप बड़े ही विद्या-व्यसनी एवं मिलनसार हैं। मेरे पास आप कई दिन ठहरे। धोती पहनते और दाल-भात खाते थे। कद्दू की तरकारी आपको विशेष भाती थी। जब तक विश्वविद्यालय में थे, विद्यार्थियों का ही भोजन करते और वैसे ही रहते भी थे। जब जाने लगे, तो हमने उनसे कहा—"कहिए, विश्वविद्यालय आपको कैसा लगा?" (How do you *like* the University, Mr. Kornerup?) उत्तर में उन्होंने कहा—"I do not *like* it—(मैं तो सुनकर घबरा गया)—I *love* it." अर्थात् मैं इसे पसंद नहीं करता, इसे प्यार करता हूँ। जब अंतिम शब्द मैंने सुने, तब जाकर कहीं मेरा आश्चर्य दूर हुआ। चलते समय मैंने इन्हें उपहार में उमर ख़ैयाम का अँगरेज़ी अनुवाद दिया। पुस्तक छोटी-सी, पर सुंदर थी। आपने पहले भी फ़ारसी के इस कवि का नाम सुना था। पुस्तक की एकआध पंक्ति पढ़कर आप रोने लगे। कभी-कभी तो उछल पड़ते थे। कार्नरप महोदय का उत्तर-योरप में बड़ा नाम है, और इनके चित्रों का वहाँ बड़ा आदर होता है। उस समय भारतीय पत्रों में भी इनकी बहुत प्रशंसाएँ निकली थीं। ऐसे भावुक लेखक और चित्रकार का यह कहना कि I love it (the University), क्या कुछ कम है?

हज़ारों छात्रों के निवास-स्थान के अतिरिक्त गोशाला, नौकरों के क्वार्टर, होटल, दूकानें और अध्यापकों के रहने के लिये कई दर्जन बँगले भी हैं। ६ लाख रुपयों में यह सब ज़मीन ख़रीदी गई थी। भवनों त लेबोरेटरियों के बनाने में ३८ लाख रुपए ख़र्च हुए हैं। सैकड़ों अध्यापक हैं, जिनके वेतन में लगभग ३०,०००) मासिक का ख़र्च है। वार्षिक आय ६ लाख रुपए है, और व्यय भी इसी के लगभग। भारती सरकार से वार्षिक एक लाख रुपए मिलते हैं। रा महाराजा लोग भी ७५,०००) वार्षिक देते हैं। भी जायदाद वग़ैरह मिलाकर विश्वविद्यालय की आर्थि शक्ति का कुल तख़मीना १ करोड़ ८० लाख रुपए त किया जाता है। खेद का विषय है कि प्रांतीय सर विद्यालय को कुछ भी सहायता नहीं देती। कहा जा है, यह संस्था अखिल-भारतवर्षीय है। बात ठीक है; इसके साथ ही युक्त-प्रांत के जितने विद्यार्थी यहाँ पढ़ हैं, उतने इस प्रांत के और किसी विश्वविद्यालय में न पढ़ते। दूसरे प्रांतों के विद्यार्थियों की भी सबसे अधि संख्या यहीं है। गत वर्ष प्रांतीय सरकार ने केवल ६,०० यहाँ दिए थे, सो भी टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज को, जिस युक्त-प्रांत के सिवा और किसी को लाभ नहीं है, जिसका देना सरकार के लिये आवश्यक ही है। विषय में, स्थानीय लेजिस्लेटिव कौंसिल में, प्रश्न हुआ था; पर मालूम नहीं, क्या हो रहा है। सुनते

शिक्षा-सचिव ने कुछ आशा दी है । नीचे की सूची से इस प्रांत के भिन्न-भिन्न विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों की संख्या और प्रांतीय सरकार की सहायता का पता लगेगा—

विश्वविद्यालय	विद्यार्थियों की कुल संख्या	युक्त-प्रांत के विद्यार्थियों की संख्या	प्रांतीय सरकार की गत वर्ष दी हुई सहायता
प्रयाग	१,०७८	७७२	६,६२,८६८)
लखनऊ	६३२	८५१	७,३०,०००)
काशी	१,८७३	६२४	६,०००) (ट्रेनिंग कॉलेज को)
अलीगढ़	७१७	४३०	६६,०७२)

डॉक्टर नगीनचंद जे० शाह बी० ए० पी-एच० डी०

(भारतीय अर्थ-शास्त्र के सर रतन ताता अध्यापक)

इन संख्याओं से विदित होगा कि हिंदू-विश्वविद्यालय में यही विशेषता नहीं है कि उसमें सबसे अधिक छात्र हैं, बल्कि यह भी विशेषता है कि सबसे अधिक युक्त-प्रांत तथा और प्रांतों के छात्र हैं। और जगह जितने छात्र कुल मिलाकर हैं, उतने यहाँ केवल युक्त-प्रांत ही के हैं। और, अन्य प्रांतों के तो उनसे भी अधिक हैं । यहाँ के छात्रों की संख्या अलीगढ़ से लगभग तिगुनी, लखनऊ से कईगुनी एवं प्रयाग से दुगुनी है । विश्वविद्यालय का जो अधिकार भारतीय सरकार पर है, वही प्रांतीय सरकार पर भी। फिर न-जाने क्यों इस ओर शिक्षा के कर्णधारों का ध्यान नहीं जाता ।

इस समय इस संस्था को धन की है भी बड़ी ही आवश्यकता । ५० लाख रुपए स्थायी कोष-स्वरूप इंपीरियल बैंक में जमा हैं सही, पर व्यय की अधिकता से १२ लाख रुपयों का ऋण हो गया है । दान के वचन लगभग ४० लाख रुपए के मिले हैं। यों तो देश के धनाढ्य लोग इसकी सहायता करते ही रहते हैं। दानवीर ताता ने ५,०००) रु० वार्षिक की सहायता भारतीय अर्थ-शास्त्र की पढ़ाई के लिये दी है । इस पद पर, थोड़े दिन हुए, डॉक्टर नगीनचंद

जे० शाह नियुक्त किए गए हैं। डॉ० शाह अभी नवयुवक हैं, और गत मास ही में इनका विवाह भी हुआ है। भारतीय करों पर History of Indian Tariff नाम की बड़ी विद्वत्ता-पूर्ण पुस्तक इन्होंने लिखी है, जिसके लिये इन्हें लंदन-विश्वविद्यालय से पी-एच्० डी० की उपाधि मिली है। यहाँ भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त अन्य योरपियन भाषाओं के भी विद्वान् हैं। प्रोफ़ेसर मुकुंद-मोरेश्वर देसाई फ्रेंच-भाषा के अध्यापक हैं। आप भी थोड़ी ही अवस्था के और अभी तक अविवाहित ही हैं। इन्हें बंबई-विश्वविद्यालय की बी० ए०-परीक्षा में, अँगरेज़ी में, ऑनर्स प्राप्त हुआ था, और यह बी० ए० तथा एम्० ए०, दोनों में, फ्रेंच-भाषा में, प्रथम आए थे। वर्षों तक आपने स्कूल तथा कॉलेज में फ्रेंच-भाषा का अध्ययन किया है, और उसके अच्छे लेखक हैं।

प्रोफ़ेसर मुकुंद-मोरेश्वर देसाई, एम्० ए० (ऑनर्स)
(अँगरेज़ी तथा फ्रेंच के अध्यापक)

यों तो विश्वविद्यालय के लिये ८० लाख रुपयों से अधिक चंदा एकत्र हुआ था, पर अब २५,०००) वार्षिक की तो केवल पुस्तकें ही ख़रीदी जाती हैं। यहाँ के अध्यापक तैलंग के पिता स्वर्गीय जास्टिस काशिनाथ-त्र्यंबक तैलंग ने अपना जो पुस्तकालय हिंदू-कॉलेज को दे दिया था, वह अब बहुत बड़ा हो गया है। कुछ दिन पहले युक्त-प्रांत के गवर्नर ने ५०,०००) पुस्तकालय के लिये दिए थे। कलकत्ते के स्वर्गीय रूड़मलजी गोयनका ने लगभग एक लाख बीस हज़ार रुपयों की संस्कृत-पुस्तकें दी हैं। पुस्तकें बड़ी ही अपूर्व हैं, और सब-की-सब सुनहरी जिल्दों में बँधी हैं। विश्वविद्यालय को ऐसे ही त्यागी और दानी पुरुष-रत्नों की आवश्यकता है।

यहाँ के विशाल भवनों के विषय में बहुत लोग मालवीयजी को दोष देते हैं। वे कहते हैं, इतने बड़े-बड़े प्रासादों की क्या आवश्यकता? सरस्वती तो जंगल में ही प्रसन्न रहती हैं। कहते हैं, जब प्रयाग का हिंदू-बोर्डिंग-हाउस बन रहा था, तब एक सज्जन ने मालवीयजी से शिकायत की थी कि ऐसे-ऐसे महलों में रहकर जब विद्यार्थी घर लौटेंगे, तब उनसे तो देहात के साधारण घरों में न रहा जायगा। पंडितजी ने कहा—"न मेरा तो उलटा विचार है। ये विद्यार्थी जब इनमें रह घर जायँगे, तो ऐसे ही भवन घर पर भी बनवाने प्रयत्न करेंगे।" यह उत्तर मालवीयजी के उच्च आद के सर्वथा उपयुक्त था। ठीक है, इसी को तो अँगरेज़ी Aesthetic sense (सौंदर्यानुभव का विकास) हैं। रस्किन ने भी अपनी प्रसिद्ध पुस्तक Seven Lamp of Architecture में इस विषय का विवेचन कि है। सुंदर भवनों से एक बड़ा लाभ यही है। यह बात है कि वशिष्ठ, विश्वामित्र आदि ने तपोवनों में ही आत्म प्राप्त किया था; पर आजकल के जगदीशचंद्र वसु

डॉ० रमन तो अपने तत्त्वों को कर्म-कोलाहलाकुल कलकत्ते के राजप्रासादों में ही ढूँढ़ते हैं। तपोवन में भी साधना होती है, और उत्तुंग सौधों में भी। पर सबसे बड़ी बात तो है एक परंपरा की सृष्टि, जो ऐसे भवनों के बिना हो नहीं सकती। स्थापत्य का मानव-हृदय पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। यदि ऐसा न होता, तो आज दिन विश्वनाथ के मंदिर और पाटलिपुत्र के खँडहरों एवं अशोक के स्तंभों पर कौन ध्यान देता?

लोग विश्वविद्यालय की दूसरी शिकायत यह करते हैं कि मालवीयजी रुपए एकत्र करना जानते हैं, अच्छे-अच्छे योग्य विद्वानों को भी बुलाना जानते हैं, पर उन्हें रखना नहीं जानते। बात में कुछ तथ्य अवश्य है। डॉ० गणेशप्रसाद, डॉ० बीरबल साहनी तथा अध्यापक यदुनाथ सरकार के सदृश अद्वितीय विद्वान् विश्वविद्यालय में नहीं रह सके। इसका क्या कारण है? सर शिवस्वामी ऐयर तथा डॉ० ज्ञानेंद्रनाथ चक्रवर्ती-जैसे योग्य विद्वानों ने भी इससे अपना संबंध क्यों तोड़ लिया? बड़ी भारी बात यह है कि मालवीयजी में ब्राह्मणता प्रधान है। उनका हृदय भी ब्राह्मण-हृदय है। उनकी प्रतिज्ञाओं और आशाओं में भी आदर्श-वाद रहता है। उनका हृदय इतना कोमल है कि वह किसी को निराश नहीं देखना चाहते। इस सज्जनता के आधिक्य और कारुण्य के साम्राज्य ने ही उनकी बहुत प्रतिज्ञाओं को पूरा नहीं होने दिया। अनेक नवयुवक विद्वान् उनसे निराश हो गए। अन्य चाहे जो कारण हों, पर मैं समझता हूँ, यह स्वभावगत कारण बहुत बड़ा है। एक बार हम लोगों ने होली के अवसर पर पंडितजी के रंग लगाया, और मिठाई माँगी। आपने पचीस रुपए की मिठाई खिलाने को कहा। साथ ही यह भी कह दिया कि "भाई, मेरे पास अभी तो एक पैसा भी नहीं है; कहीं से माँग लाऊँगा, तो दूँगा। तब तक तुम लोग अपने पास से मिठाई खा न लो।" मिठाई के रुपए मिले अवश्य, पर कई महीने बाद।

यह छोटा-सा उदाहरण पंडितजी के स्नेहमय हृदय और सरलता का द्योतक है। रुपए की तंगी तो विद्यालय में है ही, पर कुछ हिंदुस्तानी घिसघिस भी है। एक ही वृद्ध महानुभाव प्रिंसिपल भी हैं, प्रो-वाइस-चांसलर भी हैं, संस्कृत-विभाग के अध्यक्ष भी हैं, कोर्ट और कौंसिल के मंत्री भी हैं। दूसरे सज्जन रजिस्ट्रार भी हैं, होस्टलों के निरीक्षक भी हैं, और गणित के अध्यापक तथा परीक्षक आदि भी। रुपया बचाना कुछ और बात है। पर घिसघिस से काम अवश्य बिगड़ता है, और लोग अप्रसन्न भी रहते हैं। अन्य विश्वविद्यालयों में वैतनिक वाइस-चांसलर हैं। यहाँ के लिये भी कुछ लोगों ने ऐसी ही सम्मति दी थी। पर कुछ तो रुपयों की कमी, और कुछ मालवीयजी की त्याग-बुद्धि तथा कार्य-प्रियता ने इसे न होने दिया। वाइस-चांसलर ही विश्वविद्यालय के सर्वस्व और कर्ता-धर्ता होते हैं। जब तक वह अपना पूरा समय किसी संस्था को न दे सकें, तब तक कार्य ठीक कैसे हो सकता है? यह सब हम किसी दूसरे भाव से नहीं, इस संस्था के हित-चिंतन से प्रेरित होकर ही लिख रहे हैं।

यह सब ठीक है, पर सभी संस्थाओं में कुछ-न-कुछ गड़बड़ होती ही रहती है। यह तो अभी नई है, और नई शैली पर कार्य भी कर रही है। हम तो समझते हैं, यदि ईश्वर तक नहीं, तो ईश्वर के एक पद नीचे तक गड़बड़ अवश्य ही रहती है। फिर मनुष्य-कृत कार्यों की तो समालोचना करना सरल ही है। इसमें संदेह नहीं कि इस विद्यालय में अनेक बातें अनुकरणीय और अन्य संस्थाओं के लिये पथ-प्रदर्शक हैं। वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर उन सबका एकत्र प्रादुर्भाव होता है। डिग्रियाँ जब दी जाती हैं, तो प्रत्येक विद्यार्थी को वाइस-चांसलर के साथ-साथ उपनिषद् के "मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। स्वाध्यायान्मा प्रमदः।" आदि वाक्य कहने पड़ते हैं। प्रिंस ऑफ़ वेल्स को जब यहाँ डिग्री दी गई थी, तो उन्हें भी साफ़ा बाँधना ही पड़ा था, सारे उपचार करने ही पड़े थे। उस समय तो पूरा एक सप्ताह ही इन्हीं सब उपचारों में लग जाता है। इसका नाम ही अधिवेशन-सप्ताह (Convocation week) होता है। अनेक विद्वानों के व्याख्यान होते हैं, दावतें दी जाती हैं, राग-रंग की भी धूम रहती है। इसी अवसर पर प्रतिवर्ष एक बड़ा भोज होता है। इसका सारा प्रबंध विज्ञान-विभागवाले करते हैं। इसका नाम होता है केमिकल डिनर (Chemical Dinner), अर्थात् रसायन-भोज। कारण, उस दिन की सभी बातें रसायन-शास्त्र के ही शब्दों में होती हैं। परोसनेवालों का एक पूरा दल ही रहता है; क्योंकि खानेवाले भी तो सैकड़ों रहते हैं। प्रत्येक परोसनेवाले

का नाम भी वैज्ञानिक ही होता है, जैसे Dynamite, Gun-powder इत्यादि। प्रत्येक मेहमान को एक छपा हुआ 'मीनू' दिया जाता है। उसमें उस अवसर का प्रोग्राम छपा रहता है, और खाने के सब सामानों की सूची भी होती है, जिसमें सभी नाम वैज्ञानिक ही रक्खे जाते हैं। जब तक आप वही नाम कहकर कोई वस्तु न माँगें, तब तक वह नहीं मिलेगी। उस दिन वहाँ गाना-बजाना भी होता है; कुछ विनोदात्मक अभिनय भी होते हैं। भोज बहुत ही बड़ा होने के कारण बाहर शामियाने के नीचे होता है, और बहुत-सा प्रबंध बिजली के ही द्वारा होता है। गत वर्ष यह भोज बड़ा ही सुंदर हुआ था। यदि उसे कोई देखता, तो यह पता न चलता कि विश्वविद्यालय में धन का कुछ अभाव है। और सब सामान वग़ैरह की बात तो जाने दीजिए, परोसनेवालों के वस्त्र ही पूरे शाही ढंग के होते हैं। भविष्य में शायद इस भोज का नाम विज्ञान-भोज (Science Dinner) हो जाय; क्योंकि रसायन तो सभी भोजों में सहायक होता है। फिर यहाँ तो विज्ञान के सभी विभागों का काम रहता है। इस सप्ताह में अनेक कवि-सम्मेलन तथा मुशायरों के अतिरिक्त एक अखिल-भारतीय व्याख्यान-विवाद भी होता है। उसमें भारतवर्ष के सभी कॉलेजों के वक्ता निमंत्रित किए जाते हैं। विश्वविद्यालय के ऑनरेरी कोषाध्यक्ष माननीय राजा मोतीचंदजी ने इसके लिये एक चाँदी की सरस्वती-ट्रॉफ़ी दी है। यह प्रतिवर्ष सबसे प्रथम आनेवाले कॉलेज को दी जाती है, और साल-भर उसके अधिकार में

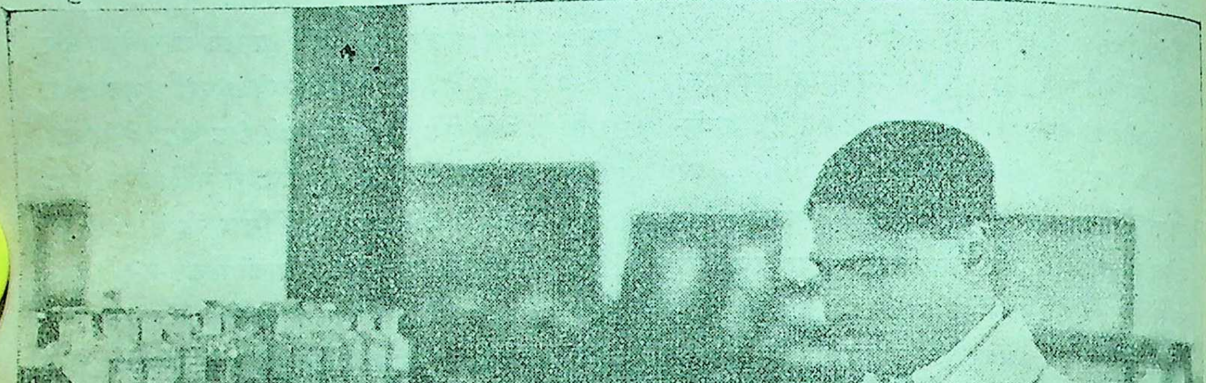

वैज्ञानिक प्रयोगशाला का एक कमरा

(प्रोफ़ेसर गोडबोले रसायनशाला में काम कर रहे हैं)

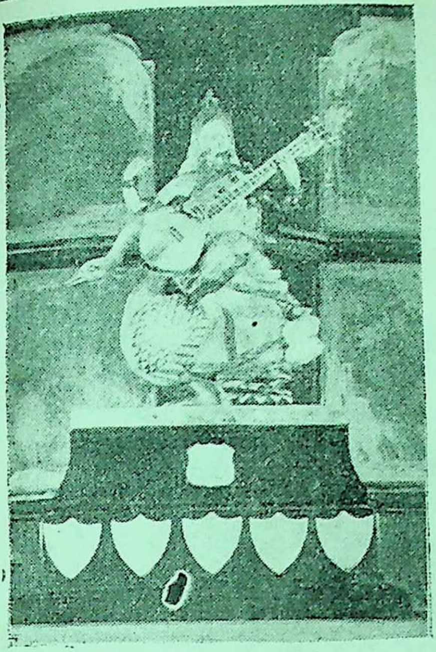

अंतर्विद्यालय-व्याख्यान के लिये राजा मोतीचंद की दी हुई चाँदी की सरस्वती-ट्रॉफ़ी

रहकर फिर दूसरे वर्ष दूसरे के पास जाती है। यह एक प्रकार की सरस्वती की विजय-पताका है। इसके अतिरिक्त अनेक पारितोषिक और पदक भी दिए जाते हैं। इसमें बालिकाएँ भी भाग लेती हैं। उनके लिये विशेष पारितोषिक रहते हैं। इस वर्ष से तो हिंदी में भी ऐसा ही एक सर्व-भारतीय विवाद होना आरंभ हुआ है। हिंदी के लिये यह सौभाग्य की बात है। ऐसे कार्यों की मातृभाषा को आवश्यकता भी है। एक बृहत् एकादशी-कथा के सिवा बहुत-से खेल-कूद होते और वार्षिक पारितोषिक बाँटे जाते हैं। विश्व-विद्यालय की एक मित्र-नाट्य-समिति(Dramatic Association) है, जो उक्त अवसर पर अपने विशेष अभिनय दिखलाती है। इसमें उर्दू, हिंदी तथा अँगरेज़ी के अच्छे-अच्छे नाटक खेले जाते हैं। गत वर्ष तो इसने, विद्यार्थियों की सहायता के लिये, कुछ अभिनय शहर में भी किए थे, जिनसे बहुत धन प्राप्त हुआ था। लोगों ने अभिनय की इतनी प्रशंसा की कि एक ही खेल कई दिन तक करना पड़ा। नाटक के पात्रों को कई पदक भी मिले थे। इस समिति के कार्यकर्ता अनेक अध्यापक भी हैं। बीच बीच में भी इसके अधिवेशन होते रहते हैं।

नाट्य-समिति द्वारा अभिनीत 'चित्रा' का एक दृश्य
(चित्रा के रूप में एक छात्र)

'चित्रा' का एक दूसरा स्थल
(यह भी वही छात्र हैं। देखिए, भाव का परिवर्तन कैसा झलक रहा है)

इस अवसर पर विद्यालय के हिंदू-स्कूल में भी बड़ी धूम रहती है। यह स्कूल अभी नगर ही में है। उसी के

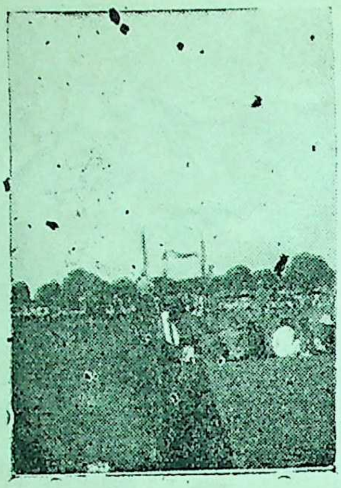

व्यायाम-प्रदर्शिनी का एक दृश्य
(देखिए, ऊँची कुदान हो रही है)

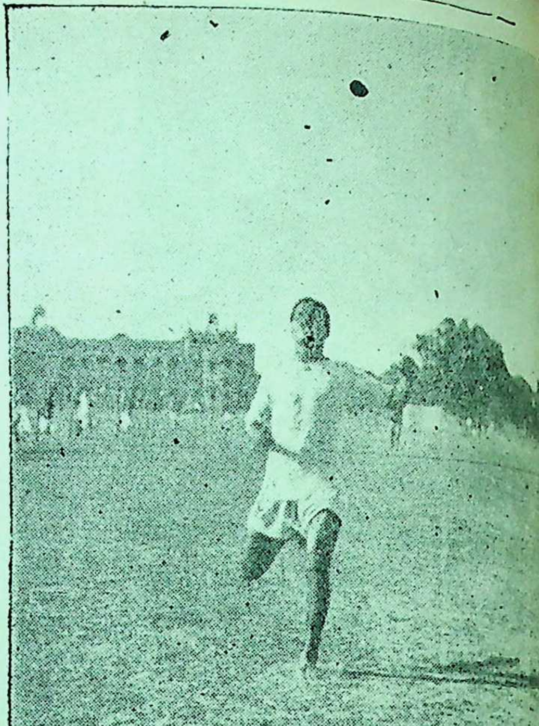

व्यायाम-प्रदर्शिनी का एक और दृश्य
(विद्यार्थी एक मील की दौड़ जीत रहे हैं)

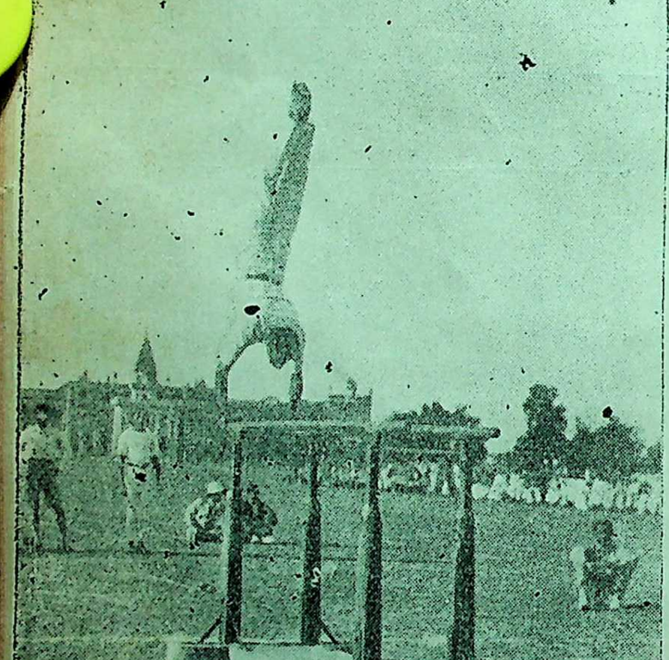

व्यायाम-प्रदर्शिनी का दूसरा दृश्य
(विद्यार्थी जिम्नास्टिक कर रहे हैं)

साथ ट्रेनिंग कॉलेज भी है, जहाँ अध्यापक लोग स्कूल में पढ़ाने का अभ्यास भी करने जाते हैं। स्कूल में ६०० विद्यार्थी हैं, और यहाँ छोटी कक्षाओं में, अन्य विषयों के अतिरिक्त, उद्यान-कला (Gardening), संगीत तथा दस्तकारी भी सिखाई जाती है। यहाँ एक छोटा-सा ऐतिहासिक अजायबघर भी है। उसमें कुछ सिक्के, मूर्तियाँ तथा लेख आदि के नमूने हैं। यह स्कूल इस प्रांत के सर्वोत्तम स्कूलों में गिना जाता है। विश्वविद्यालय में और कितनी ही छोटी-मोटी संस्थाएँ हैं। अनेक टेनिस-क्लब भी हैं। सारे विद्यालय का एक अलग ही व्यायाम-मंडल

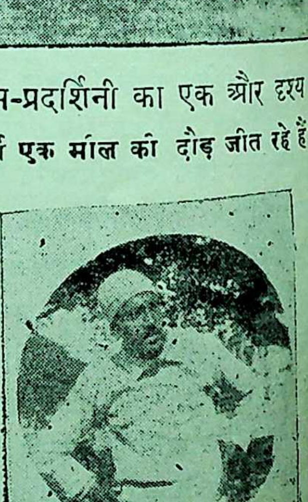

१५ मील की साइकिल-दौड़ में प्रथम आए हुए एक विद्यार्थी
(अभी साइकिल ही पर हैं)

(Athletic Association) भी है । अध्यापकों का University Staff Club नाम का एक अलग क्लब है ; महिलाओं की भी Lady's Club नाम की एक बैठक है । अतिथियों के ठहरने के लिये एक अलग अतिथि-मंदिर (Guest-House) है । इसमें विद्यालय के प्रसिद्ध-प्रसिद्ध ऑनरेरी प्रोफ़ेसर आदि आकर कभी-कभी रहते और व्याख्यान भी देते हैं । ऐसे अध्यापक भी तो यहाँ के बहुत हैं । सर प्रफुल्लचंद्र राय, सर तेजबहादुर सप्रू तथा डॉक्टर सी० वी० रमन-जैसे अद्वितीय आचार्य ऑनरेरी अध्यापक हैं । यहाँ की सबसे प्रसिद्ध संस्था है यूनिवर्सिटी-पार्लियामेंट । इसकी स्थापना डॉ० एनी बेसंट के समय में हुई थी । इससे यहाँ के छात्रों को अच्छी राजनीतिक शिक्षा प्राप्त होती है । नियमानुसार इसका सेशन खुलता है । उस समय बड़े-बड़े लोग बुलाए जाते हैं । इँगलैंड की पार्लियामेंट की तरह इसमें भी सम्राट् से लेकर प्रधान सचिव, समर-सचिव आदि तक सब पदाधिकारी होते हैं । हर शनिवार को इसकी एक बैठक होती है । उसमें अच्छे-अच्छे राजनीतिक एवं सामाजिक प्रस्तावों पर विचार होता है । बीच-बीच में हिंदी में भी प्रस्तावों पर वाद-विवाद होता है । इस संस्था की प्रसिद्धि दूर-दूर के देशों तक है । अभी थोड़े ही दिन हुए, इँगलैंड की विश्वविद्यालय-समिति (Universities Conference) की ओर से इसके पास, कुछ छात्र प्रतिनिधि भेजने के लिये, निमंत्रण भी आया है । मालवीयजी के कनिष्ठ पुत्र पं० गोविंदजी मालवीय बी० ए० उसके लिये प्रतिनिधि चुने गए थे, और वह शायद शीघ्र ही विलायत जायँगे ।

यों तो विज्ञान-विभाग में कई अजायबघर हैं, पर समय-समय पर कॉलेज और होस्टलों में प्रदर्शिनियाँ भी हुआ करती हैं । उनमें विद्यार्थियों की चित्रकारी और दस्तकारी आदि के नमूने दिखाए जाते हैं । विश्वविद्यालय में कितने ही चित्रकार हैं, और अध्यापकों तथा विद्यार्थियों में हिंदी के अधिकांश लेखक और कवि । हर्ष का विषय है कि हिंदी-रत्न पंडित अयोध्यासिंहजी उपाध्याय भी यहाँ हिंदी के अध्यापक होकर आ गए हैं । हिंदी का यह पलड़ा अब तो और भी भारी हो गया । होस्टलों में कितनी ही मासिक तथा साप्ताहिक पत्रिकाएँ भी निकलती हैं । वे हस्त-लिखित होती और सचित्र भी रहती हैं । यहाँ तक कि संस्कृत के भी छात्र 'आयुर्वेदविज्ञानम्', 'सुधा' आदि पत्र संस्कृत में निकालते हैं । लॉ-कॉलेज के विद्यार्थी कनवोकेशन के समय एक मूट-कोर्ट (Moot-Court) अर्थात् अभिनय-अभियोग करते हैं । उसमें क़ानून के अच्छे-अच्छे विद्वान् दर्शक बुलाए जाते हैं । विद्यार्थी ही जज, वकील, असेसर, अपराधी तथा साक्षी, सभी कुछ बनते हैं । बड़ा आनंद आता है । अब पं० शिवप्रसादजी त्रिपाठी गायनाचार्य संगीत के अध्यापक हुए हैं । त्रिपाठीजी बड़े ही निपुण हैं । आप बड़ी योग्यता से, हिंदू-पद्धति के अनुसार, संगीत की शिक्षा देते हैं । इनका वेतन कलकत्ते के प्रसिद्ध सेठ घनश्यामदासजी बिड़ला देते हैं । बिड़लाजी ने विश्वविद्यालय का एक पूरा छात्रावास भी बनवा दिया है । वह पंद्रह-पंद्रह रुपए की सौ के लगभग छात्र-वृत्तियाँ भी देते हैं । धन का सच्चा उपयोग इसी को कहते हैं । यह छात्र-वृत्ति पानेवाले विद्यार्थियों के लिये गीता-पाठ, मद्य-मांस-वर्जन एवं ब्रह्मचर्य-पालन परमावश्यक है, यद्यपि साधारणतः सभी विद्यार्थियों के लिये हिंदू-धर्म का पालन आवश्यक है । इनमें से अधिकांश वृत्तियाँ प्राच्य विद्या-विभाग एवं अब्राह्मण छात्रों के लिये हैं ।

यहाँ के अध्यापकों और विद्यार्थियों का परस्पर व्यवहार बहुत ही प्रशंसनीय है । अध्यापक लोग पठन-पाठन के समय सच्चे गुरु और बाहर तथा घर पर बड़े भाई एवं पिता के तुल्य रहते हैं । सीधे-सादे जीवन

छुट्टी के दिन का मनोविनोद
(कार्टर्स के कुछ विद्यार्थी एक सड़क बना रहे हैं)

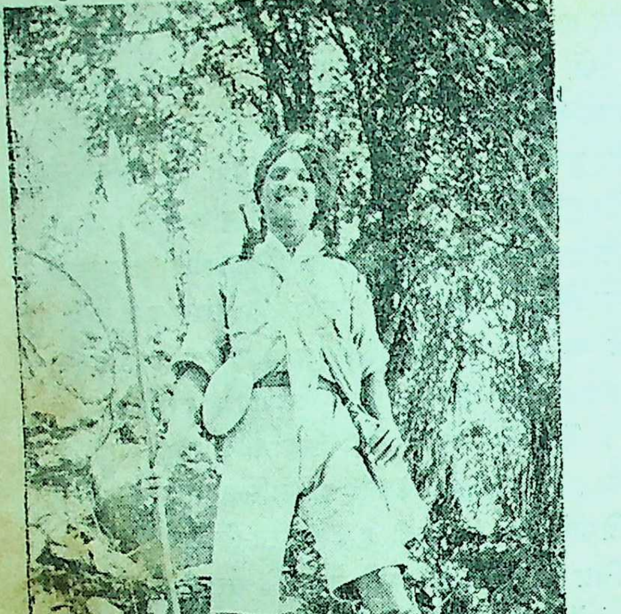

विश्वविद्यालय के एक ग्रेजुएट स्कॉउट नैनीताल की तराई में भ्रमण कर रहे हैं

और सीधी-सादी बातचीत—"Plain living and High thinking"—के कितने ही सच्चे उदाहरण यहाँ देखने को मिलते हैं। इन लोगों के घर जाइए, छात्रों को दूध भी पिलावेंगे, और उनके मनोविनोद के लिये गीत भी गाकर सुनावेंगे। मतलब यह कि प्राचीन भारत के गुरुओं के आदर्श की कुछ झलक यहाँ मिलती है।

यहाँ के विषय में बाहरवालों को एक भ्रम सा हो गया है। लोग कहते हैं, यहाँ की डिग्रियाँ बड़ी सस्ती और परीक्षाएँ बड़ी सरल होती हैं। बात सर्वथा निर्मूल है। कोर्स यहाँ के और स्थानों से कड़े और अधिक रक्खे गए हैं। एकआध विषय, जो और जगह बी० ए० में हैं, यहाँ एफ़० ए० में ही पढ़ाए जाते हैं, जो पुस्तकें और स्थानों में बी० ए० में हैं, वे यहाँ बी० ए० से पहले ही पढ़ाई जाती हैं। परीक्षा की बात यह है कि कोई भी विद्यालय, जो प्रयाग की भाँति केवल परीक्षा ही नहीं लेता, अच्छा परीक्षा-फल दिखावेगा। अध्यापक और छात्र जब दिन-रात एकत्र ही रहते हैं, तो परिश्रम क्यों न किया जाय, और विद्यार्थी क्यों फ़ेल हों? अमेरिका और योरप से भी किसी को फ़ेल होकर लौटते आपने देखा है? यह क्यों? वहाँ के लोग छात्रों को अपने यहाँ से विना डिग्री दिए लौटाना अपने लिये लज्जाजनक समझते हैं। यह ठीक भी है। जब छात्र धन और समय लगाकर वर्षों तक पढ़ता है, तब उसके फ़ेल होने में विद्यालय का दोष तो है ही। विद्या

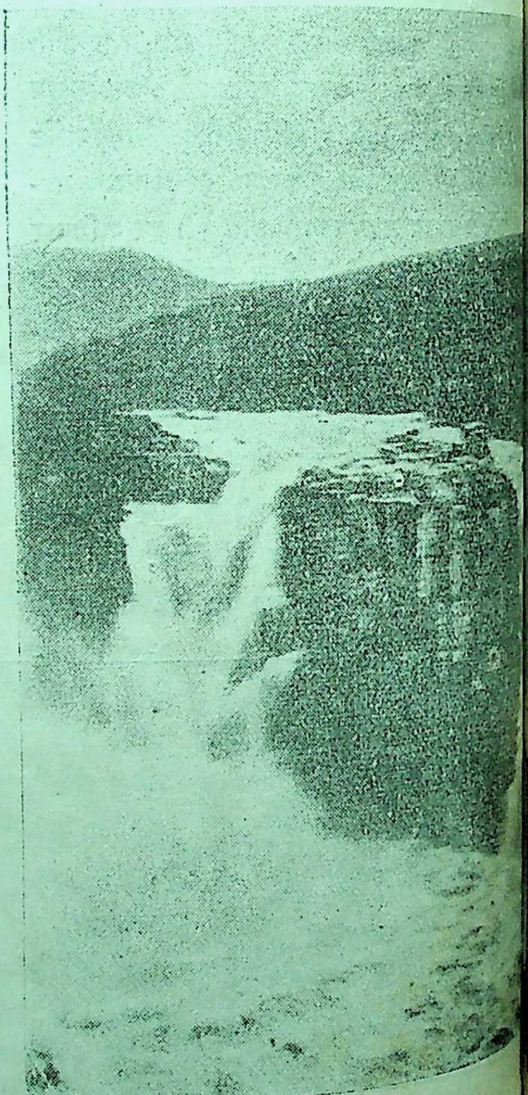

पहाड़ी झरने का एक दृश्य

(ऐसे ही स्थानों पर विश्वविद्यालय के
हैं)

क्यों ऐसा रहने पाता है कि उसका पढ़ने में मन नहीं लगता ? यह देखना विश्वविद्यालयों का ही तो काम है। ऐसे विद्यार्थी रहते ही क्यों हैं ? हिंदू-विश्वविद्यालय इस कार्य को यथेष्ट रूप से कर रहा है। दूसरी बात यह भी है कि सदैव इसका परीक्षा-फल उतना अच्छा होता भी नहीं, जितना कि लोग समझते हैं। प्रयाग-विश्वविद्यालय में भी देखिए, और कॉलेजों की अपेक्षा स्थानीय म्योर सेंट्रल कॉलेज का परीक्षा-फल कितना अच्छा होता है। बात यह है कि वहाँ की पढ़ाई अच्छी होती है, अधिक ध्यान दिया और परिश्रम किया जाता है। पढ़ानेवाले भी अन्यत्र से अच्छे हैं। यही हाल हिंदू-विश्वविद्यालय का भी है। पर यह समझना भी ठीक नहीं कि यहाँ का परीक्षा-फल सदैव बहुत अच्छा होता है। अभी गत वर्ष ही बी० एस्-सी० में लगभग २५ प्रतिशत छात्र पास हुए थे । इस वर्ष भी एम्० ए० के, गणित के, पर्चे इतने कठिन थे कि लड़के हताश ही हो गए थे।

इस वर्ष शिमले में भारत के विश्वविद्यालयों का जो सम्मेलन हुआ था, उसमें यहाँ से पाँच प्रतिनिधि गए थे। पर और स्थानों से एक ही-दो गए थे। इसी से यहाँ के अधिक कारोबार का पता लग सकता है। यहाँ नित्य कुछ-न-कुछ परिवर्तन एवं परिवर्द्धन होता ही रहता है। परमात्मा करे, इसकी निरंतर उन्नति होती रहे। देशवासियों का धर्म यही है कि वे सभी अपनी-अपनी शक्ति-भर इसकी सहायता करते रहें।

श्रीरामाज्ञा द्विवेदी

मिस मेरी कॅरेली

उपक्रम

मिस मेरी कॅरेली की मृत्यु एक बड़ी शोकप्रद घटना है। आप इँगलिस्तान की ख्यातनामा उपन्यास-लेखिका थीं। परंतु उनकी ख्याति इँगलिस्तान तक ही परिमित नहीं थी। योरप के अन्य देशों में भी उनकी प्रसिद्धि थी । योरप की कई भाषाओं में उनकी रचनाओं के अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं। अटलांटिक महासागर पार करके अमेरिका के संयुक्त-प्रांत और कनाडा तक उनकी प्रशंसा पहुँच गई थी । ब्रिटिश-साम्राज्य के उपनिवेशों में, जहाँ अँगरेज़ी-भाषा बोली या पढ़ी जाती है, उनकी रचनाएँ पहुँच गई थीं, और चाव से पढ़ी जाती तथा आदर पाती थीं। यदि यह कहा जाय कि उनकी रचनाओं का प्रचार संसार-व्यापी था, तो अनुचित न होगा। भारतवर्ष में भी मिस कॅरेली के उपन्यासों का बहुत प्रचार है। भारत की भाषाओं में उनके कई उपन्यासों के अनुवाद छप चुके हैं। उनके पाठकों की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती ही जाती थी। ऐसी प्रतिभाशालिनी लेखिका का स्वर्गवास निश्चय ही उनके पाठकों के लिये दुःखद समाचार है; और यह एक ऐसी क्षति है, जिसका लाखों पाठक निजी रूप से अनुभव करेंगे।

अधिकांश भारतीय पाठक श्रीमती की रचनाओं के प्रेमी ही नहीं, वरन् भक्त हैं। और, जब पाठक किसी लेखक का भक्त बन जाता है, तो वह उसकी न्यूनताओं या त्रुटियों पर ध्यान नहीं देता। वास्तव में हमें ध्यान रखना चाहिए कि इँगलिस्तान में ही श्रीमती के बहुत-से नुक़ताचीन मौजूद हैं, जिन्होंने श्रीमती पर उनके जीवन-काल में ही नाना प्रकार के आक्षेप किए हैं । उन नुक़ताचीनों में बहुत-से साहित्य के पारखी धुरंधर विद्वान् भी हैं, जिनकी सम्मति मूल्यवान् मानी जाती है। हम यहाँ पर स्वर्गीया श्रीमती की महिमा को घटाने का उद्योग नहीं कर रहे हैं। हम इस बात के उत्सुक हैं कि उनके विषय में पक्ष-विपक्ष की जो सम्मतियाँ हैं, उनकी यथार्थता पर ध्यान देते हुए साहित्य में श्रीमती के स्थान का निर्णय करें। इसमें संदेह नहीं कि आपका स्थान ऊँचा है। यदि कुछ कथनीय है, तो केवल यह कि अधिकांश भारतीय पाठक तुलनात्मक दृष्टि से, मिस मेरी कॅरेली की रचनाओं का अत्यधिक आदर करते हैं। यदि प्रचार-मात्र किसी लेखक की उत्कृष्टता की कसौटी है, तो निस्संदेह मिस मेरी कॅरेली को प्रथम स्थान मिलना चाहिए । परंतु साहित्य का अनुशीलन करनेवालों का यह अनुभव है कि किसी रचना का प्रचार उसकी उत्कृष्टता का सर्वथा निर्देशक नहीं है। यही कारण है कि इँगलिस्तान की अधिकतर साहित्यिक मंडलियों में श्रीमती का वैसा सम्मान नहीं है, जिसकी कि वह अपनी रचनाओं के प्रचार के कारण अधिकारिणी हो सकती हैं। कुछ भी हो, हमें निष्पक्ष होकर मत

निर्द्धारित करना चाहिए। लेखिका की मृत्यु के कारण हमारा उत्तरदायित्व और भी गहन हो जाता है।

इसके पूर्व कि हम अपना मत निर्द्धारित करें, मिस मेरी कॅरेली का कुछ परिचय प्राप्त कर लेना चाहिए।

जन्म, वंश-परिचय तथा बाल्यावस्था

मिस मेरी कॅरेली का जन्म सन् १८६४ ई० में हुआ था। आपके शरीर में स्काटिश (हाइलैंड) तथा इटालियन रक्त का सम्मिश्रण था। आप प्रसिद्ध साहित्यिक तथा गीत-लेखक डॉक्टर चार्ल्स मैके की पोष्य-पुत्री थीं। आपने प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही पाई। आपके घर में बहुधा साहित्यिक चर्चा हुआ करती थी। आप जिस कुटुंब में पलीं, उस कुटुंब के लोगों में साहित्य-प्रेम पूर्ण रूप से समाया हुआ था। ऐसे कुटुंब में रहकर आपमें भी साहित्यिक अभिरुचि का विकास होना स्वाभाविक ही था। बचपन ही में आपने अपनी प्रखर बुद्धि तथा स्मृति का परिचय दिया। आप मननशील थीं। पुस्तकों से आपको प्रेम था। खेल-कूद में आपका विशेष मन न लगता था। बाल्यावस्था ही में आपकी धार्मिक प्रवृत्ति जाग्रत् हो गई। ईश्वर और उसके देवदूतों में आपका विश्वास था। आप साधारणतः अन्य बालक-बालिकाओं की तरह न थीं। आपके बाल्य-काल की यह एक घटना है। आपकी धाय ने आपसे कहा कि "छोटी कन्याओं को सदा सत्पथ पर चलना और परमात्मा को प्रसन्न रखने का प्रयत्न करना चाहिए।" इसके उत्तर में आपने कहा—"केवल छोटी ही कन्याओं को क्यों, सभी व्यक्तियों और सभी वस्तुओं को ईश्वर को प्रसन्न करने का प्रयत्न करना चाहिए। यदि ऐसा न हो, तो फिर जीवन से लाभ ही क्या?" बाल्यावस्था ही में आपकी बातें अपने से बड़ों की-सी हुआ करती थीं। अपने जीवन के प्रथम दस वर्ष इन्होंने डॉक्टर मैके के घर में व्यतीत किए। इस बीच में इन्होंने एक शिक्षक की सहायता से बहुत कुछ पढ़ डाला। आपने इस उम्र में जिन बड़े लेखकों की रचनाओं से परिचय प्राप्त कर लिया था, उनमें डिकंस, थैकरे, शेक्सपियर, स्कॉट और कीट्स-जैसे साहित्य-रत्न थे। आपने बाइबिल (इंजील) का भी अध्ययन इसी समय किया था। कुछ संगीत से भी प्रेम हो चला था। पुष्पों में आपकी अधिक अभिरुचि हो गई थी।

फ्रांस में शिक्षा

दस वर्ष की अवस्था में, शिक्षा की पूर्ति करने के लिये, आप फ्रांस भेजी गईं। वहाँ यह एक ईसाई महिलाश्रम में प्रविष्ट हुईं। पढ़ने में इन्होंने खूब ही मन लगाया। बाइबिल आप पहले ही से पढ़ रही थीं। यहाँ पर आपने उस पुस्तक का प्रमाद अनुशीलन किया। यहाँ इनकी धार्मिक प्रवृत्ति और भी पुष्ट हो गई। बाइबिल के अध्ययन का प्रभाव इन पर आजन्म रहा। ईसाई-धर्म में प्रवृत्ति के उदाहरण तथा उस धर्म के महत्त्व का दिग्दर्शन इनकी पुस्तकों में अनेकों स्थलों पर प्राप्त होता है। फ्रांसीसी महिलाश्रम में आपने धार्मिक शिक्षा तो पाई ही, साथ-ही-साथ साहित्यिक शिक्षा भी प्राप्त की। परंतु वहाँ आपका मुख्य ध्येय संगीत का अध्ययन था। पहले आपका लक्ष्य संगीत कला को ही अपनी जीविका का आधार बनाना था। इसलिये आपने संगीत-शिक्षा में भी ख़ूब मन लगाया। आपको इस महिलाश्रम में बहुत उच्च कोटि की संगीत शिक्षा प्राप्त हुई। आपका संगीत-प्रेम आपके साहित्य प्रेम से अधिक नहीं, तो कम भी न था। यह प्रेम भी आजन्म बना रहा। थोड़ा-बहुत लिखने का अभ्यास आपने बचपन से ही कर रक्खा था। १४ वर्ष की अवस्था में आपने एक 'आपेरा' की रचना आरंभ की थी; पर वह पूर्ण न हो सकी। फिर ईसाई-महिलाश्रम के साथियों के संसर्ग से आपके हृदय में धार्मिक जोश भी उमड़ा और आपके मन में ईसाइयों का एक नया संप्रदाय स्थापित करने की अभिलाषा हुई। यह भी अभिलाषा कार्य-रूप में परिणत न हो सकी। फिर आपको साहित्य मनन की धुन समाई। काव्य-निरीक्षण करने की मन में ठानी, तो इस धुन में आपने मिल्टन, शेली, कीट्स आदि की कविताओं के बड़े-बड़े अवतरण कंठस्थ कर डाले। इसके पूर्व ही, इसी प्रकार, इन्होंने शेक्सपियर के नाटकों के बहुत-से अंश कंठस्थ कर लिए थे। सारांश यह कि साहित्य और संगीत, दोनों में ही आपकी अभिरुचि थी। हाँ, यह अनिश्चित था कि दोनों में से किसे यह अपनी जीविका का ज़रिया बनावेंगी। ईसाई महिलाश्रम में कुछ वर्ष व्यतीत हुए। इसके बाद इनका स्वास्थ्य बिगड़ गया, और इन्हें पढ़ाई छोड़कर इँगलिस्तान लौट आना पड़ा।

पहली पुस्तक

अब डॉक्टर मैके भी वृद्ध हो गए थे। वह रुग्ण रहा करते थे, और मेरी कॅरेली का अधिकांश समय अपने वृद्ध परिपोषक की सुश्रूषा में व्यतीत होता था। जो समय बचता, उसमें यह लिखने का अभ्यास किया करतीं। आपकी आकांक्षाएँ बड़ी थीं। आप साहित्य-क्षेत्र में नाम कमाने के लिये व्याकुल थीं। बुद्धि आपकी अपनी अवस्थावालों के मुक़ाबिले में परिपक्व थी। परंतु आपकी साहित्य-सेवा स्वीकृत होने में अभी कुछ समय बाक़ी था। लेखनी इनकी मँजी नहीं थी। इन्होंने प्रकाशनार्थ एक कहानी लिखी। परंतु पत्र-संपादक के यहाँ से वह कहानी लौट आई, और उसके साथ ही यह शिक्षा भी आई कि "गल्प-लेखन का कार्य तुम्हारे मान का नहीं है।" इसने मिस कॅरेली का जी बहुत छोटा हो गया। उनका ध्यान एक बार फिर संगीत से जीविका चलाने की ओर गया। उन्होंने अपनी संगीत-शिक्षा को विशेष रूप से पूर्ण करने की ठानी। परंतु उनके पास इस समय रुपए-पैसे की कमी थी, अतएव लेखन-कार्य में मेहनत करना और उसी से संतुष्ट होना पड़ा।

सन् १८८६ ई० में, २१ वर्ष की अवस्था में, आपने 'ए रोमांस ऑफ़ दि टू वर्ल्ड्स'-नामक एक उपन्यास लिखा। यह आपकी प्रथम पुस्तक थी। आपने अपनी इस रचना को मिस्टर जॉर्ज बेंटले के पास प्रकाशनार्थ भेजा। जॉर्ज बेंटले ने इसका प्रकाशन करना स्वीकार कर लिया। कहा जाता है, जब जॉर्ज बेंटले के पास यह पुस्तक गई, तो उसके सलाहकारों ने उसे इस पुस्तक को प्रकाशित करने से रोका था। किसी प्रकार पुस्तक प्रकाशित हुई। इस उपन्यास के निकलते ही मिस कॅरेली का नाम चल निकला। हज़ारों की संख्या में पुस्तक खपी। आश्चर्य की बात तो यह है कि अधिकांश पत्रों ने इसकी समालोचना ही नहीं की। जिन पत्रों ने इसकी समालोचना लिखी—कहा जाता है, ऐसे केवल चार पत्र थे—उन सभी ने प्रतिकूल समालोचना की। प्रतिकूल समालोचनाएँ होने पर भी पुस्तक का चल निकलना एक विचित्र घटना थी। जो कुछ हो, इस पुस्तक के प्रकाशित होते ही मिस कॅरेली की गणना तत्कालीन मुख्य उपन्यास-लेखकों में होने लगी। यह पुस्तक मिस कॅरेली के जीवन में एक ऐतिहासिक महत्त्व रखती है। इसने मिस कॅरेली का आगामी जीवन निश्चित कर दिया। आपने अब अपनी लेखनी को ही जीविका का आधार बना लिया, संगीत द्वारा जीविका चलाने का विचार छोड़ दिया, और यह अच्छा ही किया।

हाँ, समालोचकों ने जो इनकी पुस्तक की ख़बर ली थी, उससे इनके मन में सभी समालोचकों के प्रति वैर-भाव जाग्रत् हो गया। यदि यह समालोचकों की समालोचनाओं की परवा करतीं, तो इन्हें अपनी जीविका का साधन परित्याग कर देना पड़ता। इन्होंने उन समालोचनाओं को दूसरे ही विचार-केंद्र से देखा। इन्होंने कहा, समालोचक बिना पुस्तक पढ़े ही उसकी समालोचना कर डालते हैं; और यह सरासर अन्याय है। कवि कीट्स की प्रतिभा को प्रतिकूल समालोचनाओं से जो आघात पहुँचा था, उसका ध्यान आपको आया। आपने एक स्थल पर लिखा है—"कीट्स की कोमल प्रतिभा की निर्दयी समालोचकों द्वारा हत्या होने की कथा ने मुझ पर बड़ा असर डाला, और कदाचित् उसने मेरे मन में समालोचनाओं के विषय में उस लापरवाही का प्रथम बीज बोया, जो कि मुझमें सदा बनी रही है।"

अन्य रचनाएँ

क्या वास्तव में वह समालोचनाओं के विषय में इतनी लापरवाह थीं? इस पर संदेह किया जाता है। प्रतिकूल समालोचकों के रहते भी उनकी प्रथम पुस्तक का जैसा प्रचार हुआ, वैसा यदि न होता, तो कदाचित् वह अपना ध्यान संगीत की ओर देने के लिये बाधित होतीं। परंतु उनकी पुस्तक बिकी ख़ूब, जिससे उन्हें और पुस्तकें लिखने के लिये उत्साह मिला। अब वह निश्चित रूप से उपन्यास लिखने और नियमित रूप से लगभग प्रति दूसरे वर्ष एक उपन्यास समाप्त करने लगीं। समालोचनाएँ अधिकांश प्रतिकूल ही होतीं, परंतु पुस्तकें आपकी ख़ूब खपतीं। कई पुस्तकों के अनेकों संस्करण छपे। आपकी पुस्तकों की जितनी ही तीव्र समालोचनाएँ होतीं, उतनी ही उनकी अच्छी बिक्री होती। 'ए रोमांस ऑफ़ दि टू वर्ल्ड्स' के अनंतर आपने अन्य कई उपन्यास प्रकाशित किए। इनमें 'बरब्बास', 'वेंडेटा', 'थेल्मा', 'आर्डेथ' तथा 'दि सोल ऑफ़ लिलिथ' हैं मुख्य। समालोचना सभी की तीव्र हुई। अंत में खीझकर आपने अपनी नवीन पुस्तक 'दि सॉरोज़

ऑफ़् सेटन' के साथ-साथ यह सूचना प्रकाशित की कि अब मेरी पुस्तकें समालोचनार्थ कहीं न भेजी जाया करें। अपने इस निश्चय पर मिस मेरी कॅरेली अंत तक डटी रहीं। 'दि सॉरोज़ ऑफ़् सेटन' के बाद प्रकाशित होनेवाली पुस्तकों में निम्न-लिखित मुख्य हैं—

(१) 'दि माइटी ऐटम'
(२) 'दि मर्डर ऑफ़् डिलिशिया'
(३) 'ज्वाय'
(४) 'दि मास्टर क्रिश्चियन'
(५) 'टेंपोरल पावर'
(६) 'गाड्स गुडमैन'
(७) 'इन्नोसेंट'
(८) 'वार टाइम एक्सपीरिएंसेज़'
(९) 'ज़िस्का'

कुछ अन्य पुस्तकें भी हैं—'दि ट्रेज़र ऑफ़् हेविन', 'ए रोमांस ऑफ़् रिचेज़', 'दि लाइफ़ एवरलास्टिंग', 'केमियॉस', 'वर्म उड', 'दि सीक्रेट पावर'।

आपने सब मिलाकर लगभग २५ पुस्तकें लिखी हैं। चालीस वर्ष तक आपकी लेखनी से बराबर ग्रंथ निकलते रहे। अपनी रचनाओं की आमदनी से आप अमीर हो गई थीं। आपकी एक-एक पुस्तक के दर्ज़नों संस्करण हो जाना तो साधारण बात थी। 'सॉरोज़ ऑफ़् सेटन', 'थेल्मा' और 'आर्डथ' के तो क्रमशः ६०,५० और ४० से अधिक संस्करण हो गए थे। आपकी समस्त रचनाओं में ये ही तीन पुस्तकें सर्वोत्कृष्ट समझी जाती हैं। आपने अपने नाम के चल जाने का लाभ भी खूब उठाया। कहते हैं, कई रद्दी पुस्तकें भी आपने खपा डालीं। परंतु इस कारण आपके नाम को धक्का भी पहुँचा। आपकी अधिकांश पुस्तकों का प्रकाशन लंदन की मेथ्युएंस कंपनी ने किया है।

समालोचक

यह बता चुके हैं कि आपके अधिकांश समालोचक बड़े तीव्र थे, और आपने अपनी पुस्तकों का समालोचनार्थ भेजा जाना बंद करा दिया था। सभी समालोचकों के प्रति इस प्रकार का रोष कुछ अनुचित जान पड़ता है। वास्तव में आपके समालोचक दो श्रेणियों में विभक्त किए जा सकते हैं। प्रथम तो वे, जो कि साहित्य के वास्तविक पारखी थे, जिन्हें आपसे कोई राग-द्वेष नहीं था, जो अपनी सच्ची सम्मति निर्भीकता से जनता के हितार्थ दिया करते थे। मिस कॅरेली का लोगों से खीझना केवल उनकी कमज़ोरी प्रदर्शित क है। मिस कॅरेली की रचनाओं में विशेष त्रुटियाँ हैं, यदि समालोचक उन त्रुटियों का दिग्दर्शन करावें, मिस कॅरेली महोदया को रोष दिखाने का क्या अधिकार यह मानना पड़ेगा कि मिस कॅरेली इन समालोचकों यथार्थ आक्षेपों के आगे निरुत्तर थीं। दूसरी श्रेणी समालोचक वे थे, जिनके ऊपर स्वयं इनके आक्षेप प्र हुए थे। अपनी पुस्तकों में मिस कॅरेली उन संस्थाओं वर्गों तथा अन्य वस्तुओं इत्यादि पर आक्षेप करती जो कि उन्हें नापसंद होतीं। अपनी राय को वह प्र मानतीं, और निस्संकोच तीव्र-से-तीव्र और कटु-से- बातें लिख डाला करतीं। दूसरी श्रेणी के समालोच की समालोचनाएँ एक प्रकार से स्वयं उनके आक्षेपों प्रत्युत्तर-मात्र होती थीं। हाँ, जोश में आकर कभी- समालोचकगण उचित सीमा का उल्लंघन कर और स्वयं कॅरेली महाशया के आक्षेपों के प्रत्युत्तर तीव्रातितीव्र और कभी-कभी अनुचित तथा अ बातें तक लिख डालते थे। परंतु अधिकांश में आप का तीव्र स्वभाव इन तीक्ष्ण समालोचनाओं का का रहा है। चूँकि मिस कॅरेली के आक्षेप अनेकों वर्तमान युग की संस्थाओं तथा वर्गों के विरुद्ध होते थे, से, तदनुसार, आप पर भी भिन्न-भिन्न ओर से आक्ष होने लगे। समालोचनार्थ पुस्तकों का भिजवाना आपने बंद ही करा दिया था, किंतु व्यक्तिगत आक्षे की अधिकता देखकर अपने चित्रों का भी प्रका रोक दिया था।

कई प्रकार से आपने अपने समालोचकों का द भी करना चाहा। एक बार आपने अदालत में मा हानि का दावा भी किया ; परंतु क्षति-पूर्ति के रू आपको केवल आधा पेंस दिलाया गया, जिसे आ लेना स्वीकार न किया। अंत में यह रक़म एक अस्प में जमा कर दी गई, और उसी के नाम पर एक " डिंग फ़ंड" खुल गया। इसमें बहुत धन आया।

जनता में प्रचार

यह भी कह चुके हैं कि यद्यपि समालोचक अधिकांश आपका विरोध ही करते रहे, तथापि जन

आपकी रचनाओं का खूब ही आदर किया। लंदन के इम्स पत्र का अनुमान है कि यद्यपि आजकल, प्रचार विचार से, उनका मुक़ाबिला करनेवाले कुछ और उपन्यास-लेखक उत्पन्न हो गए थे, तथापि अपने समय उनकी पुस्तकों से अधिक प्रचार कदाचित् ही दूसरे उपन्यास-लेखक की पुस्तकों का रहा हो। सचमुच आपकी पुस्तकों की धूम रहा करती थी। तीक्ष्ण समालोचनाएँ होने पर भी इस असीम प्रचार का वास्तविक कारण क्या था? आधुनिक समय के अधिकांश पाठक कौतूहल-तृप्ति के लिये उपन्यास पढ़ते हैं। चरित्र-मनन अथवा विशेष सूक्ष्मता के साथ पढ़कर पुस्तक का ज्ञान प्राप्त करने की ओर उनका ध्यान नहीं होता। वे तो कहानी के भूके हैं। जितनी कौतूहलमयी, रहस्यमयी कथा हो, उतना ही वे उसे पसंद करेंगे। जितनी ही विचित्र बात हो, उतना ही वह उन्हें रुचिकर होगी। मिस कॅरेली आधुनिक पाठकों की इस कमज़ोरी को खूब जानती और उससे लाभ उठाती थीं। ललित तथा ज़ोरदार भाषा पर आपका पूर्ण अधिकार था। कथा-वर्णन की शैली भी आपकी कम रोचक न थी। पाठकों के आगे वह सदा नई और विचित्र कहानी ढूँढ़कर उपस्थित करतीं। कहीं नार्वे-जैसे देश की कथा है, तो कहीं कथा का केंद्र नेपल्स अथवा पेरिस में है। कहीं मिसर का वर्णन है, तो कहीं अल-कीरिस का। इसी प्रकार वह अपने उपन्यासों में विचित्र रहन-सहन के, विचित्र आचार-विचार तथा आकार के लोगों का वर्णन करती थीं। प्रायः अद्भुत बातों का ही वर्णन रहता था। इसके अतिरिक्त आपकी वर्णन-शक्ति भी अच्छी थी। जो बात लिखतीं, वह दृढ़ता-पूर्वक। हाँ, आपकी सभी पुस्तकें एक-न-एक उद्देश्य लिए हुए अवश्य होती थीं। धर्म का निहोरा तथा वास्तविक ईसाई-धर्म का पक्षपात आपकी पुस्तकों में खूब रहता था। चाहे धर्म का विषय हो, चाहे समाज का, चाहे राजनीति का, सभी में आप अपनी सम्मति देती और अपने को उसका अधिकारी समझती थीं। साधारण पाठक इस प्रकार की निश्चयात्मक सम्मतियों से बहुत प्रभावित होते थे। अनेकों पत्र-लेखक निजी कठिनाइयों के बारे में भी आपसे सम्मति चाहते, अनेकों आपकी प्रशंसा के उद्गार करते। सारांश यह कि जनता में आपका अत्यधिक प्रचार था।

कुछ प्रधान समर्थक

यह न समझना चाहिए कि मिस मेरी कॅरेली का प्रचार केवल साधारण जनता में ही था। जहाँ एक ओर समालोचकगण उनकी तीक्ष्ण समालोचना में संलग्न थे, वहाँ दूसरी ओर कुछ ऐसे बहुत बड़े व्यक्ति भी थे, जिनके समर्थन से मिस कॅरेली को बहुत संतोष प्राप्त होता था। इनमें प्रथम गणना स्वर्गीया महारानी विक्टोरिया की थी। महारानी मिस कॅरेली के ग्रंथों को बड़ी रुचि के साथ पढ़ा करती थीं। महारानी ने एक तार मिस कॅरेली के संपूर्ण ग्रंथों को मँगाने के लिये भेजा था। यह तार मिस कॅरेली ने आजन्म बड़े गर्व तथा यत्न से सुरक्षित रक्खा। स्वर्गीय महाराज सप्तम एडवर्ड से भी आप भली भाँति परिचित थीं। इँगलिस्तान के भूतपूर्व प्रधान सचिव प्रसिद्ध ग्लैडस्टन भी आपको बराबर प्रोत्साहन दिया करते थे। उनके विचार में मिस कॅरेली एक बहुत अच्छी, होनहार तथा संसार को लाभ पहुँचानेवाली लेखिका थीं। मिस कॅरेली को प्रोत्साहन देते हुए ग्लैडस्टन ने एक पत्र लिखा था, जिसमें से कुछ अंश आगे दिया जाता है। ग्लैडस्टन ने लिखा था—"तुम्हें एक अद्भुत दैवी गुण प्राप्त है, और मैं आशा करता हूँ, तुम उसका दुरुपयोग न करोगी। तुम्हारी लेखनी में एक ऐसी शक्ति है, जो बहुतों पर प्रभाव डालेगी। सावधानी के साथ अपनी शक्ति का सर्वोत्तम उपयोग करना। जिस प्रकार तुम सुंदरी तथा नेक स्त्री हो, उसी प्रकार वीर और सच्ची लेखिका भी बनो। मेरी प्रिय बालिका, ईश्वर तुम्हारा मंगल करे! वीर बनो। तुम्हारे सम्मुख एक उज्ज्वल भविष्य है। रास्ते में अपना जी छोटा न करना।" आपकी पहली पुस्तक के प्रकाशक मिस्टर जॉर्ज बेंटले को भी आपसे बड़ी आशाएँ थीं। उन्होंने आपको जो पत्र लिखा था, उसमें लिखा था—"तुमने योग्यता-मात्र नहीं प्रदर्शित की है, तुम्हें विविध विषयों की जानकारी है, और तुम एक ही बात प्रत्येक पुस्तक में नहीं दुहराती हो।" इँगलिस्तान के भूतपूर्व कवि-सम्राट् स्वर्गीय लॉर्ड टेनीसन भी आपको प्रोत्साहन दिया करते थे। लॉर्ड साल्सबरी भी आपके ग्रंथों पर मुग्ध थे। एक दूसरे बड़े आदमी, जो आपकी पुस्तकों को बहुत पसंद किया करते थे, "रिव्यू ऑफ़ रिव्यूज़" के भूतपूर्व प्रसिद्ध संपादक स्वर्गीय मिस्टर डब्ल्यू० टी० स्टेड थे। इसके अतिरिक्त

प्रोटेस्टेंट-मत के पादरी लोग भी आपकी रचनाओं से प्रेम करते थे । आपकी पुस्तकों पर हज़ारों व्याख्यान गिरजाघरों में दिए गए होंगे ।

रचनाओं के गुण-दोष

आपकी रचनाओं के गुण-दोष-निरूपण का कार्य सहज नहीं है । भिन्न-भिन्न लोगों ने भिन्न-भिन्न रूप से आपके महत्त्व का अनुमान किया है । किसी ने आपकी प्रशंसा की है, तो औरों ने आपको गालियाँ भी सुनाई हैं । साहित्य के पारखी लोगों ने आपको उच्च आसन नहीं दिया है । लंदन के 'टाइम्स' पत्र ने आपकी मृत्यु पर टिप्पणी करते हुए लिखा था—"चाहे कितनी भी रिआयत करे, पर कोई समालोचक इनकी रचनाओं को अधिक साहित्यिक महत्त्व की नहीं समझ सकता ।" एक दूसरे लेखक का कथन है—"पहली श्रेणी के उपन्यासकारों में आपका स्थान नहीं है ।" मुझे मिस मेरी कॅरेली की ख्याति से कोई वैर नहीं है, तो भी विचार-पूर्वक मेरी भी यही राय है । दूसरी श्रेणी के लेखकों में मिस कॅरेली का स्थान उच्च है । प्रथम श्रेणी के लेखकों में आपकी गणना करना आपके साथ पक्षपात है । यह सत्य है कि आपकी भाषा ओजस्विनी होती थी ; आपका मत सदा धर्म का पक्ष लिए हुए होता था ; आपमें जोश तथा उत्साह था ; आपकी कथा का ढंग अच्छा होता था । परंतु ये ही बातें प्रथम श्रेणी के लेखक के लिये पर्याप्त नहीं हैं । आपमें हास्य का नितांत अभाव था । मानव-चरित्र तथा हृदय में आपकी गहरी पैठ नहीं थी । किसी-न-किसी संस्था अथवा वर्ग का खंडन ही आपका सदा लक्ष्य रहा करता था । और, जिसकी बुराई पर आप तुल जातीं, उसके पीछे पड़ जाती थीं । फिर यदि उसमें गुण भी हों, तो वे उन्हें नहीं नज़र आते थे । वह मनुष्यों, वर्गों तथा संस्थाओं को केवल दो भागों में—अच्छे और बुरे में—विभाजित करती थीं । यह कदाचित् वह समझ ही नहीं सकती थीं कि इस प्रकार का विभाजन अन्याय-पूर्ण होगा । संसार में सर्वत्र अच्छे-बुरे का मेल है । उनका आदर्श-वाद उनके यथार्थ-वाद को ढक लेता था । या तो तारीफ़ के पुल या फिर बुराई की झड़ी—उनकी लेखनी से इन्हीं दो में से एक बात निकलती । उनमें वह सूक्ष्मता तथा सहानुभूति की दृष्टि ही न थी, जो अच्छी बातों की भी न्यूनताओं और आपत्तियोग्य वस्तु भी अच्छी बातों को देख सके । एक समालोच कथन है कि "या तो वह किसी वस्तु को सफ़ेद दें देंगी, या फिर स्याह ही ।" और रंगों का निरी करना बहुत बड़ा दोष है ।

इसके अतिरिक्त यह भी आपमें बहुत बड़ा दो कि चाहे किसी विषय का आपको पूर्ण ज्ञान हो नहीं, पर आप उस पर निश्चयात्मक सम्मति दे द थीं ; और फिर इस बात की आशा करती थीं कि वचन शास्त्र-वाक्य की भाँति माने जायँ । इस में उनकी ऐसी आशा, स्पष्ट ही है कि विफल हुई

हाँ, उन्होंने अपनी तीव्रता द्वारा अपने का ध्यान पाश्चात्य समाज-व्यवस्था की बुराइयों की अवश्य खींचा । वर्तमान युग के जड़-वाद पर बड़े बेढब आक्षेप हुए । अनात्मवादी योरप को के प्राचीनतम आदर्शों पर ले जाने का उन्होंने किया । नई रोशनीवालों से उन्हें बड़ी चिढ़ वर्तमान काल की बुराइयों का कारण वह ध प्रवृत्ति का ह्रास समझती थीं । सच्चे ईसाई-धर्म में जान डालने का प्रयास आपने अवश्य किया । प्राचीन बातों की भक्त तथा उपासक थीं, और को उसी सनातन मार्ग का प्रदर्शन भी कराती थीं । उनमें इतनी तीव्रता, इतनी उद्दंडता और इतनी होती, तो उन्हें अपने आदर्श में बहुत कुछ स होती । उनके लेखों से उनका गर्व टपकता है । गर्व को कुछ समालोचक प्रमाद समझते हैं । उप द्वारा जनता का जितना सुधार हो सकता है, साहित्य के किसी अन्य अंग द्वारा नहीं । परंतु उप द्वारा दी गई शिक्षा इस प्रकार की नहीं चाहिए कि पाठक अपने को उपदेशक के वाक्य सुनता हुआ समझे । उपन्यास द्वारा दी गई शि कथा के परिणाम तथा गति से, पाठक के हृ अनायास समा जानी चाहिए । उपन्यास-लेख उपदेशक के रूप में न प्रकट होना चाहिए । किंतु मेरी कॅरेली में एक बड़ी त्रुटि यही थी कि अक्स पर आप उपदेशक का रूप धारण कर लेती थीं । आप अपनी कथाओं में मानव-चरित्र की कुछ जानकारी दिखातीं, उग्रता कुछ कम कर दे

त्यिक दृष्टि से भी आपका महत्त्व प्राय: उतना ही ता, जितना कि प्रचार की दृष्टि से है ।

शेक्सपियर पर श्रद्धा

हाकवि शेक्सपियर पर आपकी असीम श्रद्धा थी । चुके हैं कि बाल्यावस्था और विद्यार्थी-अवस्था आपको शेक्सपियर में अभिरुचि थी, तथा शेक्स- के बहुत-से अंश आपको कंठाग्र थे । बड़े होने पर चि किसी प्रकार भी नहीं घटी, बरन् बढ़ती ही शेक्सपियर के नाटकों तथा काव्यों का आपने रूप से मनन किया, और उनके नाटकों तथा काव्यों के विषय में आपको पूर्ण अभिज्ञता प्राप्त हो गई थी। आपने शेक्सपियर की जन्मभूमि, स्ट्रैटफ़ोर्ड-अन्-एवन को ही अपनाया । वहीं पर आपने अपना घर बनाया । जीवन के अंतिम २५ वर्षों में मिस मेरी कॅरेली वहीं रहीं । उस स्थान की प्राचीनता तथा महत्त्व को चिरस्थायी करने के लिये आपने बहुत उद्योग किया । आपकी स्मृति भी उस स्थान से सदा जड़ित रहेगी ।

चरित्र तथा अभिरुचि

आपका चरित्र पवित्र तथा निष्कलंक था । वर्तमान युग के समाज की बुराइयों को वह समझती और उनसे दूर रहने का प्रयत्न करती थीं । एकांत-सेवन उन्हें बहुत प्रिय था । वह अध्ययनशील तथा श्रमशील थीं। शारीरिक परिश्रम से आप कभी न थकती थीं । अध्ययन, मनन और यात्रा द्वारा आपने अपने विचारों का विस्तार किया था । आप ऐसी गर्वशीला थीं कि आपके चरित्र में लोगों को प्रमाद का आभास होता था। आप आजन्म अविवाहित रहीं । साहित्य तथा संगीत से तो आपको प्रेम था ही, कला में भी आपकी अभिरुचि थी । नाना प्रकार के मूल्यवान् तथा उत्कृष्ट कला के नमूने आपने जमा कर लिए थे, और फूलों से आपको अत्यंत प्रेम था । भाँति-भाँति के फूल भी आपने जमा कर रक्खे थे । हस्त-लिखित पुस्तकों का भी संग्रह जो आपके पास था, वह बड़ा मूल्यवान् था । यद्यपि आपमें देश-भक्ति अनन्य थी, तथापि एकदेशीयता आपको छू भी नहीं गई थी ।

स्फुट

मिस मेरी कॅरेली का प्रचार अमेरिका में बहुत ही या । यहाँ तक कि कोलोरेडो में उनके स्मरणार्थ एक नगर का नामकरण उन्हीं के नाम पर हो गया । यह नगर कॅरेली-सिटी के नाम से प्रसिद्ध है । सिनेमा, अर्थात् बायसकोप, के द्वारा भी आपके कई उपन्यास जनता में प्रदर्शित किए जा चुके हैं। इसके द्वारा भी आपकी पुस्तकों तथा नाम के प्रचार को सहायता मिली है ।

उपसंहार

मिस मेरी कॅरेली का शरीर-पात गत २१ एप्रिल को हुआ । आप स्ट्रैटफ़ोर्ड-अन्-एवन की क़ब्र-गाह ही में दफ़न हुईं । भगवान् आपकी आत्मा को शांति दें ! मिस मेरी कॅरेली का नाम संसार से शीघ्र न मिटेगा । उनकी मृत्यु के उपरांत हमें उनके विषय के सब विवादों को शांत कर देना चाहिए । हमें चाहिए कि उनके यथार्थ महत्त्व का निर्णय करें । यद्यपि न्याय की दृष्टि से हम उनको सर्वोपरि आसन नहीं दे सकते, तथापि उनका स्थान बहुत ऊँचा है । हम अंतःकरण से इच्छुक हैं कि उनके प्रदर्शित आदर्शों की पूर्ति संसार में हो । वे आदर्श बड़े उच्च हैं । हमें कटु बातों को भुला देना चाहिए, और केवल उन्हीं बातों पर ध्यान देना चाहिए, जो मान्य हैं ।

रामचंद्र टंडन

जल-कण का जीवन-संगीत

जब जग-जीवन से विभिन्न हो गिरता हूँ नीचे की ओर ;
मधुर मल्लिका की सुगंध से हो उठता तब मत्त विभोर ।
सांध्य सूर्य निज अयुत करों से करते हैं मेरा शृंगार ;
कृषक, सीप, चातक, रंभा का मुझ पर है अनुराग अपार ।
वृक्ष, लताओं द्वारा होता मेरा सदा मूक आह्वान ;
इन्हें मिला करता है शायद मुझसे सुख या जीवन-दान ।
झंझा-पवन मनोरथ-गति से मुझे उड़ाए जाता है ;
सम्मुख सीमा-हीन महासागर देखो, लहराता है ।
यद्यपि मैं अबाध द्रुत गति से नीचे गिरता जाता हूँ,
पर भावी उन्नति की आशा से अपूर्व सुख पाता हूँ ।

* * *

प्रबल पवन क्यों मुझे उड़ाए उधर लिए जाता है, आह !
चातकादि तो ताक रहे होंगे रो-रोकर मेरी राह ।
क्या अपने को भूल शीघ्र ही महागान गाना होगा ?
जिसकी एक बूँद हूँ, उसमें क्या अब मिल जाना होगा ?

मोहनलाल महतो गयावाल "वियोगी"

कलिकाल के कवि

[**चित्रकार**—श्रीयुत मोहनलाल महतो गयावाल "वियोगी"]

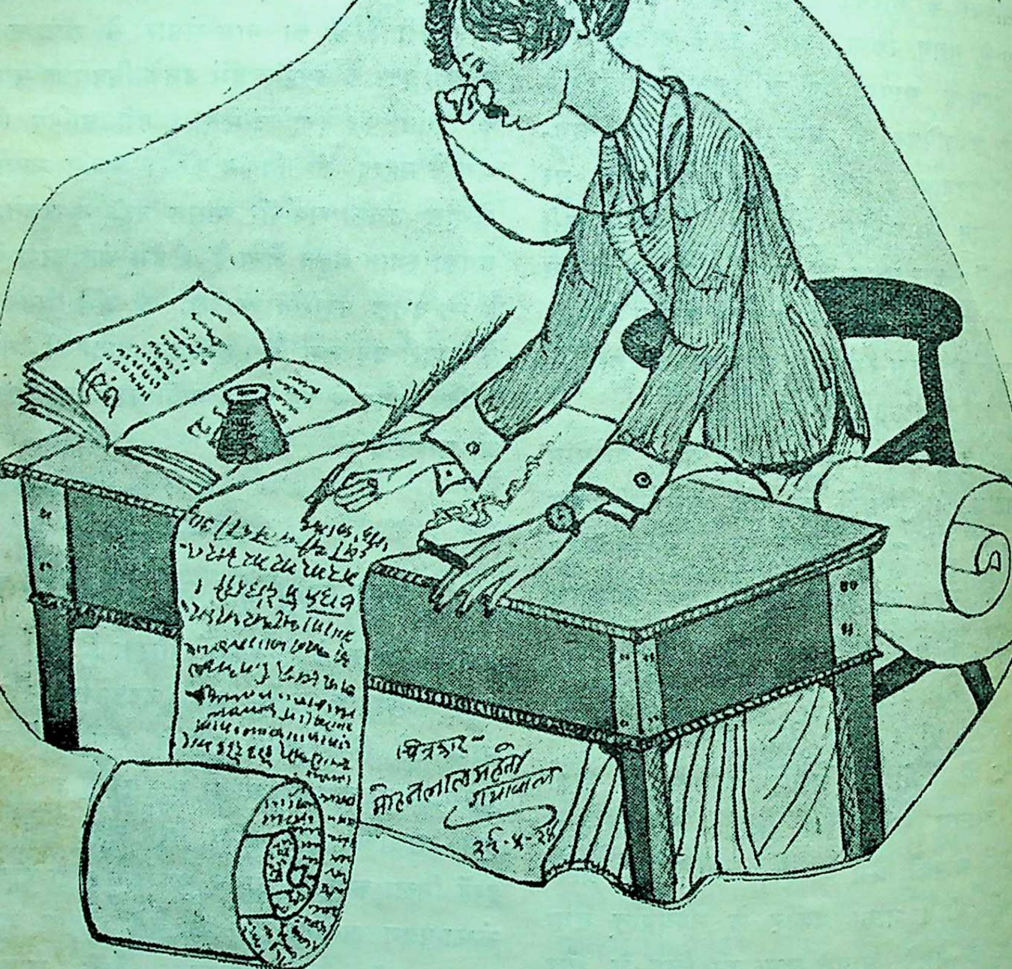
चित्रकार—
मोहनलाल महतो
गयावाल
२९-४-२४

पिंगल, भाव शत्रु हैं, इनको पहले गोली मार—
करो धड़ाधड़ रबड़-छंद में कविता का विस्तार। हरगंगा।

"वियोगी"

मनोव्यथा

कुम्हला गया हमारा फूल ;
ति सुंदर, युग नयन-विमोहन, जीवन-सुख का मूल ।
कसित वदन, परम कोमल तन रंजित, चित अनुकूल ;
हह सका मन-मधुप न उसकी अति अनुपम छवि भूल ॥१॥
बंद हुई आँखों को खोलो ;
भी बोलते थे तुम प्यारे, बोलो, बोलो, कुछ तो बोलो ।
वो भाग न मेरा सोवे, चाहे मीठी नींदों सो लो ;
क तुम्हीं हो जड़ी सजीवन, तुम न हाथ जीवन से धो लो ॥२॥
खोजें तुम्हें कहाँ हम प्यारे ;
मेरे जीवन-अवलंबन, ए मेरे नयनों के तारे ।
हीं देखते क्यों दुख मेरा, मुझ दुखिया के एक सहारे ;
लक रहे हैं लोचन पल-पल मुख दिखलाओ लाल हमारे ॥३॥
इतने बने लाल, क्यों रूखे ;
तुम-सा रुचिर रत्न खो करके आज हुए हम रूखे ।
कैसे विकल बनें न विलोचन छवि-अवलोकन-भूखे ;
मृतक न क्यों मन-मीन बनेगा प्रेम-सरोवर सूखे ॥ ४ ॥
प्यारे कैसे मुँह दिखलाएँ ;
लेती रही बलैया सब दिन, ले नहिं सकीं बलाएँ ।
जिस पर भूली रही भूल है, उसे भूल जो पाएँ ;
धिक है जीवन-धन बिन जग में जो जीवित रह जाएँ ॥५॥

अयोध्यासिंह उपाध्याय

पथ-प्रदर्शन

मूक विश्व के नीरव पथ से विचलित तनिक न होना ;
पथिक, निरंतर क्रंदन-रव से सहसा धैर्य न खोना ।
दृढ़ रहना, जग के कृत्यों पर कुछ भी ध्यान न देना ;
दिन रहते कंटक-पथ को तुम शीघ्र पार कर लेना ।
फूँक-फूँक पग धरना,
भय से भूल न करना,
कुहू-निशा में, बीहड़ वन में, शांत-हृदय हो गाना—
"नीरव जग में शांति नहीं"—बस, आगे कहीं न जाना ।

"रसिकेश"

सोने और चाँदी का व्यापार

(ज्येष्ठ की संख्या से आगे)

सोने की पैदावार यद्यपि दिन-दिन बढ़ती गई, परंतु लोगों में आपस की अनबन कुछ कम न हुई; बल्कि बढ़ती ही गई। जिन लोगों ने पूँजी लगाकर खानों का काम बढ़ाया था, वे अधिकांश ही नहीं, बल्कि सब-के-सब विदेशी ही थे। वे रेंड के आदिम निवासी बोअर लोगों से कई प्रकार के नागरिक अधिकार माँगने लगे, जिन्हें देने को बोअर लोग तैयार न थे। बोअर लोग अधिकतर मज़दूरी करनेवाले थे। इसी अनबन ने अंत में जाकर प्रसिद्ध बोअर-युद्ध का विकराल रूप धारण किया, जिसमें प्रजातंत्र-राज्य की इतिश्री ही हो गई, और रेंड का स्वामित्व अँगरेज़ों के हाथ में चला गया। इस युद्ध के कारण संवत् १९५७ में रेंड की सोने की पैदावार, जो संवत् १९५६ विक्रमीय में २२ करोड़ ३१ लाख २५ हज़ार रुपयों के लगभग थी, घटकर केवल डेढ़ करोड़ ही रह गई। परंतु पूर्वोक्त युद्ध समाप्त होने पर फिर यह पैदावार बढ़ने लगी, और बढ़ते-बढ़ते संवत् १९७३ विक्रमीय में प्रतिवर्ष लगभग ६० करोड़ रुपए तक पहुँच गई। यही बड़ी-से-बड़ी रेंड की सोने की पैदावार अंदाज़ी जाती है। लोगों का अनुमान है कि रेंड की सोने की कुल आमदनी संवत् १९७४ तक लगभग ८ अरब रुपयों की हो चुकी है। बोअर-युद्ध में विजयी होने पर अँगरेज़-सरकार ने रेंड की सोने की खानों पर, भारत की खानों की भाँति, अपना आधिपत्य नहीं स्थापित किया। खानों के मालिक वे ही लोग रहे, जो युद्ध के पूर्व थे। स्थानीय उपनिवेश-सरकार उन लोगों से सदा की भाँति रायल्टी लेती रही। रेंड की सोने की खानों की पैदावार, सोना निकालने के ख़र्च और बचे हुए मुनाफ़े की एक सूची आगे दी जाती है। उसे देखकर हमें अच्छी तरह उनके लाभ का अनुभव हो सकेगा। यह सूची प्रतिवर्ष वहाँ की खानों के सरकारी महकमे की ओर से प्रकाशित की जाती है। दूसरे ख़ाने में जो कुल खोदे गए सोने की तौल दी गई

है, वह शुद्ध सोने की नहीं, किंतु कच्चे सोने की है, जिसे रासायनिक तथा अन्यान्य प्रयोगों के द्वारा शुद्ध करके विशुद्ध सोना प्राप्त किया जाता है। इस कच्चे सोने प्राप्त हुए शुद्ध सोने का मूल्य तीसरे ख़ाने में दिया गया

आफ़्रिका की सोने की पैदावार

संवत्	खोदा गया सोना (टन)	मूल्य	ख़र्च		मुनाफ़ा		डिविडेंड
		कुल रु०	फ़ी टन	फ़ी टन	कुल रु०	फ़ी टन	कुल रु०
१९४४	१२,०००	८,१०,४५०	६७||)	,,	,,	,,	१,२६,७६०
१९४५	१,८०,०००	७२,५३,८४०	४०|)	,,	,,	,,	११,२८,०२०
१९४६	३,८०,०००	१,२८,७५,६८०	३३|||)	,,	,,	,,	४३,०६,६९०
१९४७	७,५०,०००	१,६८,७८,९००	२२||)	,,	,,	,,	२५,४५,५७०
१९४८	१२,४०,०००	२,४८,९३,२९०	२०||-)	,,	,,	,,	३३,६६,४८०
१९४९	१९,६१,३२४	४,१०,४३,१९०	२०|||≡)	,,	,,	,,	८०,५५,५३०
१९५०	२१,९३,१४०	७,५४,३४,५९५	३४|=)	,,	,,	,,	१,३२,६३,३४५
१९५१	२८,०५,३७५	१०,१७,७३,११०	३६|-)	,,	,,	,,	२,१८,०८,३८५
१९५२	३४,२७,२८१	११,५४,९३,५३५	३३||≡)	,,	,,	,,	३,०३,२१,७८०
१९५३	३९,८४,२३८	११,६७,५०,४४५	२९|-)	,,	,,	,,	२,२८,०४,२३०
१९५४	५३,१४,८६०	१५,८१,८६,९२५	२९|||)	,,	,,	,,	४,०७,०६,७१५
१९५५	७२,८२,०७८	२२,५०,९१,२००	३०|||=)	,,	,,	,,	७,२८,२२,५७०
१९५६	६८,००,०००	२२,३१,२५,०००	३२|||-)	,,	,,	,,	४,३७,९५,४१०
१९५७	४,६५,०००	२,२६,५०,०००	४८|||)	,,	,,	,,	९९,०००
१९५८	४,१२,०००	१५,०२,२०,३०५	३६|||≡)	,,	,,	,,	६३,३६,१९५
१९५९	३४,१०,७३५	१०,७३,०६,२५०	३१||)	,,	,,	,,	३,१९,१५,८९०
१९६०	६०,७१,९०८	१८,०४,६५,५५५	२९||≡)	१८||)	६,७५,००,०००	११≡)	५,०१,१४,२०५
१९६१	८०,२२,७३६	२३,१५,१६,३३०	२८|||=)	१८|)	८,४०,००,०००	१०||=)	५,७४,९२,२८५
१९६२	१,११,६०,४२२	२९,८८,७४,८७०	२५|||=)	१७||)	१०,५०,००,०००	९|=)	७,१३,४७,९०५
१९६३	१,३५,७१,५५४	३५,४२,३१,०००	२६-)	१६||≡)	१२,७५,००,०००	९|=)	८,३५,८८,५३५
१९६४	१,५५,२३,२२९	३९,६३,२७,५५५	२५||-)	१५||=)	१५,४५,००,०००	९|||≡)	१०,३९,३५,३००
१९६५	१,८१,९६,५८९	४३,३६,५५,८९५	२३|||)	१३|||-)	१८,०१,६८,३७५	९|||≡)	१२,८१,५०,५१५
१९६६	२,०५,४३,७५९	४४,८५,०५,३८५	२१|||-)	१३≡)	२७,६९,१५,१४०	८||=)	१३,९९,३८,७६५
१९६७	२,१४,३२,५४१	४६,०५,५८,६८०	२१||-)	१३||=)	१६,८२,४१,५७५	७|||=)	१३,३३,०७,७७५
१९६८	२,३८,८८,२५८	५०,३१,५२,१८५	२१-)	१३|||=)	१७,१२,३७,९१५	७≡)	११,६४,४६,२६०
१९६९	२,५४,८६,३५१	४०,७७,४१,९२५	२१||≡)	१४|≡)	१९,०१,७१,४२५	७||)	११,९४,०५,६१०
१९७०	२,५६,२८,४३२	५३,७१,८९,०७५	२०|||≡)	१३|||-)	१८,२८,३६,५७५	७=)	१२,१९,११,४८५
१९७१	२,५७,०१,९५४	५१,१८,६६,५१०	१९|||=)	१३=)	१७,४८,०३,९५५	६|||)	१२,१०,०१,५४०
१९७२	२,८३,१४,५७९	५५,८९,७४,८८०	१९||≡)	१३|=)	१७,८९,६५,९३०	६|-)	११,२७,९१,२४०
१९७३	२,८५,२५,२५२	५७,१६,१८,२२५	२०-)	१३|||≡)	१७,४४,५०,०१५	६=)	१०,६४,२५,९९०
१९७४	२,७२,५१,९६०	५५,५२,६४,४९५	२०|-)	१४||≡)	१५,३३,८४,५७०	१|||=)	९,८३,४२,८२०

पैदावार		मुनाफ़े और डिवीडेंड का संबंध प्रतिशत	नए निकाले गए हिस्से की अधिकृत पूँजी			
मुनाफ़े का संबंध प्रतिशत	डिवीडेंड का संबंध प्रतिशत					
	१६.००					
	१५.५०					
	३३.५०					
	१५.२०					
	१३.५०					
	१९.६०					
	१७.६०					
	२१.४०					
	२६.२०					
	१९.५०					
	२५.७०					
	३२.३०					
	१९.६०					
	०.४०					
	४१.७०					
	२९.७०					
३७.५०	२७.८०	७४.००				
३६.३०	२४.८०	६९.००				
३५.००	२३.८०	६८.००	२३,१०,०००	पौंड	३,४६,५०,०००	रुपए
३६.००	२३.७०	६६.५०	२,००,०००	,,	३०,००,०००	,,
३९.००	२६.२०	६७.२०	१,७७,०००	,,	२६,५५,०००	,,
४१.६०	२९.६०	७१.१०	९,८२,०००	,,	१,४७,३०,०००	,,
३९.४०	३१.२०	७९.००	७८,४४,०००	,,	११,७६,६०,०००	,,
३६.६०	२९.००	७९.२०	४३,२७,०००	,,	६,४९,०५,०००	,,
३४.००	२३.१०	६८.००	१९,८७,०००	,,	२,९८,०५,०००	,,
३४.००	२१.४०	६३.००	१७,८५,०००	,,	२,६७,७५,०००	,,
३३.९०	२२.८०	६७.३०	११,७८;०००	,,	१,६६,७०,०००	,,
३३.९०	२३.७०	६९.८०	१,६५,०००	,,	२४,७५,०००	,,
३२.००	२०.४०	६३.९०	१;३८,०००	,,	२०,७०,०००	,,
३०.५०	१८.६०	६१.१०	५,३२,०००	,,	७९,८०,०००	,,
२७.६०	१७.७	६४.२०				

सरकारी रिपोर्ट में यह मूल्य पौंडों में दिया हुआ है। परंतु हमने सुबीते के लिये १५) रु० प्रति पौंड के हिसाब से उसे रुपयों में बदल दिया है। सरकारी रिपोर्ट में पाँचवें ख़ाने में वर्किंग प्रॉफ़िट (working profit) दिया है, जिसको हमने अपनी सूची में मुनाफ़ा लिखा है। खानों से निकले हुए खार से शुद्ध सोना निकालने में जितना ख़र्च पड़ता है, वह सब बाद देकर जो मुनाफ़ा बाक़ी रहता है, उसे वर्किंग प्रॉफ़िट माना गया है। इस वर्किंग प्रॉफ़िट में से कुछ हिस्सेदारों में बतौर डिवीडेंड के प्रति वर्ष बाँट दिया जाता है। बाक़ी स्थायी कोष आदि के रूप में जमा रहता है। इसको हमने सूची में डिवीडेंड ही लिखा है।

संसार की आज तक की सोने की उत्पत्ति का अंदाज़ लगाना एकदम असंभव है; क्योंकि प्राचीन लेखकों ने इस विषय की ओर जैसा चाहिए, वैसा ध्यान नहीं दिया। इतना ही नहीं, उस समय देशों के पारस्परिक संबंध भी इतने कम और विच्छिन्न थे कि इस बात का पता रहना ही एक प्रकार से असंभव था। इसी प्रकार यह बतलाना भी एक प्रकार से असंभव ही है कि किन-किन देशों में सोना आज तक मिलता रहा है। जो सुवर्णाभूषण प्राचीन खँडहरों या भग्नावशेषों में दबे हुए मिलते हैं, उन्हीं के आधार पर उन देशों में सोने की उत्पत्ति का अनुमान या कल्पना कर लेना भारी भूल है; क्योंकि अति प्राचीन समय में भी सुवर्ण आजकल की भाँति अपना घर छोड़कर दूरस्थ देशों में जाता था। चाहे जो हो, हमारा यह अनुमान करना किसी प्रकार अनुचित नहीं है कि संसार के प्रत्येक युद्ध ने सोने की पैदावार पर सदैव, उसे करने का, अपना प्रभाव डाला है। कारण, युद्ध के सम अशांति के समय में, जब प्रत्येक मनुष्य को अपनी जा और माल का भय बना रहता है, ऐसी देश की संपत्ति स्वरूप खानों की खुदाई जारी रहना कठिन ही नहीं, ब असंभव था, और अब भी है। इतना ही नहीं, बलि सैनिकों की कमी पूरी करने के लिये ऐसे अवसर पर खा से मज़दूर तक हटा लिए जाते हैं। हाँ, पिछले ४ वर्षों में सोने की कितनी पैदावार हुई है, इसका अनुमा लगाने के लिये कई मध्य कालीन लेखकों के ग्रंथों अंक प्राप्त होते हैं। वे अंक यद्यपि कई कारणों से पू तया विश्वास-योग्य नहीं हैं, तथापि स्थूल रूप से अंदाज़ा लगाने में हमारी सहायता अवश्य करते विक्रम की २०वीं शताब्दी के प्रारंभ से इन अंकों रखने के यथोचित प्रयत्न किए गए हैं, और तब से सोने की आमदनी ठीक-ठीक मिल जाती है। इन अंकों एकत्र करने और सिलसिलेवार रखने का सबसे अ श्रेय अमेरिका के संयुक्त-राष्ट्र को है। वहाँ प्रतिवर्ष साल की ओर से इन मूल्यवान् धातुओं के ये प्रकाशित किए जाते हैं। उसी रिपोर्ट के आधार श्रीयुत बेंजमिन वाइट ने अपनी 'सुवर्ण'-नामक पुस्तक एक सूची दी है, जिसे पाठकों के जानने के लिये उद्धृत किया जाता है। कई वर्षों की पैदावार ठीक नहीं मालूम हुई, इस कारण उसे पिछले वर्ष की पैदा ही के बराबर मान लिया है। सोने की क़ीमत लगाने एक डालर तीन रुपए के बराबर माना गया है।

संवत् १५५० (सन् १४९३ ई०) से समस्त संसार की सोने की पैदावार

संवत्	सोने की पैदावार				मूल्य प्रति
	शुद्ध आउंस	मूल्य डालर में	शुद्ध तोले ३ आउंस = ८ तोले	मूल्य रुपयों में १ डालर = ३ रुपए का	
१५५०-१५७७	५२,२१,१६०	१०,७९,३१,०००	१,३९,२३,०९३	३२,३७,९३,०००	२३)
१५७८-१६०१	५५,२४,६५६	११,४२,०५,०००	१,४७,३२,४१६	३४,२६,१५,०००	
१६०२-१६१७	४३,७७,५४४	९,०४,९२,०००	१,१६,७३,४५१	२७,१४,७६,०००	
१६१८-१६३७	४३,९८,१२०	९,०९,१७,०००	१,१७,२८,३२०	२७,२७,५१,०००	
१६३८-१६५७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२९,४२,८५,०००	
१६५८-१६७७	५४,७८,३६०	११,३२,४८,०००	१,४५,९५,६२७	३३,९७,४४,०००	

१६७८-१६९७	५३,३६,९००	११,०३,२४,०००	१,४२,३१,७३३	३३,०९,७२,०००
१६९८-१७१७	५६,३९,११०	११,६५,७१,०००	१,५०,३७,६२७	३४,९७,१३,०००
१७१८-१७३७	५९,५४,१८०	१२,३०,८४,०००	१,५८,७७,८१३	३६,९२,५२,०००
१७३८-१७५७	६९,२१,८९५	१४,३०,८८,०००	१,८४,५८,९८७	४२,९२,६४,०००
१७५८-१७७७	८२,४३,२६०	१७,०४,०३,०००	२,१९,८२,०२७	५१,१२,०९,०००
१७७८-१७९७	१,२२,६८,४४०	२५,३६,११,०००	३,६०,४९,१७३	७६,०८,३३,०००
१७९८-१८१७	१,५८,२४,२३०	३२,७१,१६,०००	४,२१,९७,७४६	९८,१३,४८,०००
१८१८-१८३७	१,३३,१३,३१५	२७,५२,११,०००	३,५५,०२,१७३	८२,५६,३३,०००
१८३८-१८५७	१,१४,३८,६७०	२३,६४,६४,०००	३,०५,०३,२५३	७०,९३,९२,०००
१८५८-१८६७	५७,१५,६२७	११,८१,५२,०००	१,५२,४१,६७२	३५,४४,५६,०००
१८६८-१८७७	३६,७९,५६८	७,६०,६३,०००	९८,४५,५१५	२२,८१,८९,०००
१८७८-१८८७	४५,७०,४४४	९,४४,७९,०००	१,२१,८७,८५१	२८,३४,३७,०००
१८८८-१८९७	६५,२२,८१३	१३,४८,४१,०००	१,७३,९४,४३५	४०,४५,२३,०००
१८९८-१९०७	१,७६,०५,०१८	३६,३९,२८,०००	४,६९,४६,७१५	१,०९,१७,८४,०००
१९०८-१९१३	३,२०,५१,६२१	६६,२५,६६,०००	८,५४,७०,९८९	१,९८,७६,९८,०००
१९१४-१९१७	३,२४,३१,३१२	६७,०४,१५,०००	८,६४,८३,४९९	२,०१,१२,४५,०००
१९१८-१९२३	२,९७,४७,९१३	६१,४९,४४,०००	७,९३,२७,७६८	१,८५,४८,३२,०००
१९२४-१९२७	३,१३,५०,४३०	६४,८०,७१,०००	८,६२,६७,८१३	१,९४,४२,१३,०००
१९२८-१९३२	२,७९,५५,०६८	५७,७८,८३,०००	७,४५,४६,८४८	१,७३,३६,४९,०००
१९३३-१९३७	२,७७,१५,५५०	५७,२९,२१,०००	७,३९,०८,१४७	१,७१,८७,६३,०००
१९३८-१९४२	२,३९,७३,७७३	४९,५५,८२,०००	६,३९,३०,०६१	१,४८,६७,४६,०००
१९४३-१९४७	२,७३,०६,४११	५६,४४,७४,०००	७,२८,१७,०९६	१,६९,३४,२२,०००
१९४८-१९५२	३,९४,१२,८२३	८१,४७,३६,०००	१०,५१,००,८६१	२,४५,४२,०८,०००
१९५३-१९५७	६,२२,३४,६९८	१,२८,६५,०५,४००	१६,५९,५९,१९५	३,८५,९५,१६,२००
१९५८-१९६२	७,८०,३३,६५०	१,६१,३०,९९,१००	२०,८०,८९,७३३	३,२२,९२,९७,३००
१९६३	१,९४,७१,०८०	४०,२५,०३,०००	५,१९,२२,८८०	१,२०,७५,०९,०००
१९६४	१,९९,७७,२६०	४१,२९,६६,६००	५,३२,७२,६९३	१,२३,८८,९९,८००
१९६५	२,१४,२२,२४४	४४,२८,३६,९००	५,७१,२५,९८४	१,३२,८५,१०,७००
१९६६	२,१९,६५,१११	४५,४०,५९,१००	५,८५,७३,६२९	१,३६,२१,७७,३००
१९६७	२,२०,२२,१८०	४५,५२,३९,१००	५,८७,२५,८१४	१,३६,५७,१७,३००
१९६८	२,२३,४८,२१२	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१९६९	२,२५,४९,३३५	४६,६१,३६,१००	५,९३,३१,५६०	१,३९,८४,०८,३००

१९७०	२,२२,४९,५९६	४५,९९,४१,१००	५,९३,३२,२५६	१,३७,९८,२३,३००
१९७१	२,२०,३९,५४८	४५,५६,७६,६००	५,८७,७२,१२८	१,३६,७०,२९,८००
१९७२	२,२६,७४,५९८	४६,८७,२४,९१८	६,०५,९८,८४५	१,४०,६१,७४,७५४
१९७३	२,२१,०७,६९९	४५,७०,१६,०४५	५,८९,५३,७८४	१,३७,१०,१८,१३५
१९७४	२,१२,४०,४१६	४३,९०,७८,२६०	५,७३,०७,७७६	१,३१,७२,३४,७८०
१९७५	२,२७,५८,८०८	४७,०४,६६,२१४	६,०६,९०,१५५	१,४१,१३,९८,६४२
१९७६	२,१९,७०,७८८	४४,४१,७६,५००	५,८५,८८,७६८	१,३३,२५,२९,५००
१९७७	२,०४,९१,१७६	४२,३५,९०,२००	५,४६,४३,१३६	१,२७,०७,७०,६००
	८२,३५,५८,६०६	१७,०१,२३,६२,२७४	२,१९,६१,५६,२८३	५१,०३,७०८६८२२

विक्रम-संवत् १९७३ (सन् १९१६ ई०) में भिन्न-भिन्न देशों की सोने की पैदावार

नाम देश	पैदावार		पैदावार		प्रतिशत
	शुद्ध सोना आउंस	मूल्य डालर में	शुद्ध सोना तोला ३ आउंस=८ तोले	मूल्य रुपयों में १ डालर=३ रुपए	
उत्तर-अमेरिका					
संयुक्त-राष्ट्र	४४,७९,०५७	९,२५,९०,३००	१,१९,४४,१५२	२७,७७,७०,९००	२०.२
कनाडा	९,३०,४९२	१,९२,३४,९७६	२४,८१,३१२	५,७७,०४,९२८	४.२
मेक्सिको	३,७२,०३८	७६,९०,७०७	९,९२,१०१	२,३०,७२,१२१	१.६
योग	५७,८१,५८७	११,९५,१५,९८३	१,५४,१७,५६५	३५,८५,४७,९४९	२६.१
मध्य अमेरिका	१,७०,१६४	३५,१७,५९७	४,५३,७७१	१,०५,५२,७९१	०.०
दक्षिण-अमेरिका					
अरजंटाइना	३०६	६,३३०	८१६	१८,९९०	
बोलविया और चिली	१९,२०१	३,९६,९२२	५१,२०३	११,९०,७६६	०.०
ब्रेज़िल	१,१७,२८६	२४,२४,५१५	३,१२,७६३	७२,७३,५४५	०.
कोलंबिया	२,९८,६६१	६१,७३,८६७	७,९६,४२९	१,८५,२१,६०१	१.३
इक्वेडार	२६,३९७	५,४५,६७४	७०,३९२	१६,३७,०२२	०.१
पेरू	५७,०६०	११,७९,५३७	१,५२,१६०	३५,३८,६११	०.२
उरुग्वे	५७३	११,८३६	१,५२८	३५,५०८	
गायना-अँगरेज़ी	३७,१२९	७,६७,५२५	९९,०११	२३,०२,५७५	०.१
,, डच	२१,१९९	४,३८,२२३	५६,५३१	१३,१४,६६९	०.
,, फ़रासीसी	९४,८०५	१९,५९,७९३	२,५२,८१३	५७,७९,३७९	०.
बेनेजुला	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४२,७४,७९०	
[illegible]	[illegible]	[illegible]	१८,७७,४६२	४,५८,८७,४५६	३.३

योरप					
आस्ट्रिया-हंगरी	६७,३६०	१३,९२,४६५	१,७९,६२७	४१,७७,३९५	०.३०
फ़्रांस	४८,३७५	१०,००,०००	१,२९,०००	३०,००,०००	०.२२
ग्रेट ब्रिटेन	९२६	१९,१४२	२,४६९	५७,४२६	—
ग्रीस	—	—	—	—	—
इटाली	१११	२,२९५	२९६	६,८८५	—
नार्वे	—	—	—	—	—
पुर्तगाल	३२	६६१	८५	१,९८३	—
रूस	१२,७३,३६२	२,६३,३२,७४६	३३,९५,६३२	७,८९,९६,२३८	५.७६
स्पेन	—	—	—	—	—
स्वीडन	१,२२५	२५,३२३	३,२६७	७५,९६९	—
तुर्की	—	—	—	—	—
योग	१३,९१,३९१	२,८७.७२,६३२	३७,१०,३७६	८,६३,१७,८९६	६.२९
आस्ट्रेलिया	१९,५४,७७४	४,०४,०८,७५५	५२,१२,७३१	१२,१२,२६,२६५	८.८४
एशिया महाद्वीप					
भारतवर्ष	५,४२,११५	१,१२,०६,५०९	१४,४५,६४०	३,३६,१९,५२७	२.४५
चीन	१,३५,६७७	२८,०४,६९२	३,६१,८०५	८४,१४,०७६	०.६१
कोरिया	१,९९,४१९	४१,२२,३५१	५,३१,७८४	१,२३,६७,०५३	०.९८
ईस्टइंडीज अँगरेज़ी	१,४९,९६३	३१,००,०००	३,९९,१००	९३,००,०००	०.६८
,, डच	—	—	—	—	—
मलाया-राज्य	१५,८६१	३,२७,८७१	४२,२९६	९,८३,६१३	००७
फ़ारमोसा (टाइवान)	४८,४३२	१०,०१,९७८	१,२९,१५२	३०,०३,५३४	०२१
इंडोचायना	३,१७४	६५,६२०	८,४६४	१,९६,८६०	—
जापान	२,६०,५५१	५३,८६.०६६	६,९४.९०३	१,६१,५८.१९८	१.१६
योग	१२,५५,१९२	२,८०,१४.२८७	३६,१३,८४८	८,४०,४२,८६१	६.१४
आफ़्रिका					
बेलजियन कांगो	४९,७८७	१०,२९,१८९	१,३२,७६५	३०,८७,५६७	०.२३
मिसर	७,०१०	१,४४,९१०	१८,६९४	७,२४,५५०	—
फ़रासीसी पूर्वी आफ़्रिका	२,१००	४३,४१४	५६,००	२,१७,०७०	—
मडगास्कर	४६,६८१	९,६४.९८०	१,२४,४८३	२८,९४,९४०	०.२१
रोडेशिया	९,३०,३५६	१,९२,३२,१६५	२४,८०,९५०	५,७६,९६,४९५	४.२१
ट्रांसवाल, केपकालोनी और नेटाल	९२,९६,८४८	१९,२१,८२,९०२	२,४७,९१,५९९	५७.६५,४८,७०६	४२.०७
पश्चिमी आफ़्रिका	३,८०,२३१	७८,६०,०७९	१०,१३,९५०	२,३५,८०,२३७	१.७२
योग	१,०७,१३,०१३	२२,१४,५७,६३९	२,८५,६८,०४१	६६,४३.७२,९१७	४८.४६
कुल योग	२,२१,०७,६६९	४५.७०,१६,०४५	५,८९,५७,११८	१,३७,१०,४८,१३५	१००.००

कस्तूरमल बाँठिया

मेरी भारत-यात्रा

गत २७ दिसंबर, १९२२ ई० को, शाम के पाँच बजे के समय, मैंने चनाब-जहाज़ द्वारा सूबा फ़िज़ी से भारत को प्रस्थान किया। वह बहुत ही अच्छी शाम थी। प्रिय सहोदर भ्राता और मित्रों से अंतिम नमस्कार करने का साहस नहीं होता था। दूसरे दिन सबेरे मैं, प्रशांत महासागर में, उठा। वहाँ ज़मीन नहीं देख पड़ती थी। इस जहाज़ में सब स्त्री, पुरुष और बच्चे मिलाकर ६६७ भारतीय यात्री थे, जो कि भारत से फ़िज़ी द्वीप में, पाँच वर्ष की शर्त-बंदी से, नौकरी करने आए थे, और अब अपनी अवधि पूरी करके सरकारी भाड़े से अपनी मातृभूमि को वापस जा रहे हैं। मैं तो केवल छः मास की छुट्टी लेकर भारत की सैर करने जा रहा था। सब-के-सब यात्रियों को सामुद्रिक रोग या उलटी (Sea-sickness) हो रही थी। ऐसी हालत में जहाज़ की दुर्दशा का अनुमान किया जा सकता है। सामुद्रिक जीवन आरंभ हुआ। सब प्रवासी भारतीयों को प्रातःकाल साढ़े पाँच बजे उठना और खारी पानी से हाथ-मुँह धोने के बाद सवा सात बजे जहाज़ के गीले डक पर हाज़िरी के लिये खड़ा होना पड़ता है। हाज़िरी के बाद नीचे जाकर नव बजे सबेरे भोजन और मीठा जल लेने के लिये वे अपनी-अपनी टीन की थालियाँ और लोटे लेकर एक लंबी पंक्ति में ऊपर आते हैं। कलेवा करने के बाद उन्हें जहाज़ के ऊपरी तल पर ठहरना पड़ता है; क्योंकि नीचे साफ़ किया जाता है। एक बजे सब नीचे जा सकते हैं। तीन बजे वे भोजन और जल के लिये फिर ऊपर आते हैं। अँधेरा होने तक उन्हें ऊपर के तल पर ही ठहरना पड़ता है।

यात्रियों को प्रतिदिन दो दफ़े भोजन और मीठा जल मिलता है—प्रातःकाल नव बजे, और शाम को तीन बजे। भोजन की सामग्री इस प्रकार दी जाती है—रोज़ दाल, भात, आलू और लौकी की तरकारी, और इमली की चटनी; मांसाहारियों को सप्ताह में एक बार सूखी मछली, एक दफ़े विदेश से टिनों में बंद होकर आनेवाला भेड़ का मांस (tinned mutton), इतवार को ताज़ा भेड़ का मांस। सप्ताह में दो दफ़े रोटी, और इतवार को सबेरे चिड़वे, चीनी और बिस्कुट भी मिलते हैं। छोटे-छोटे बच्चों को, जो नाज खाने के लायक़ नहीं हैं, टिन का दूध और साबूदाना दिया जाता है।

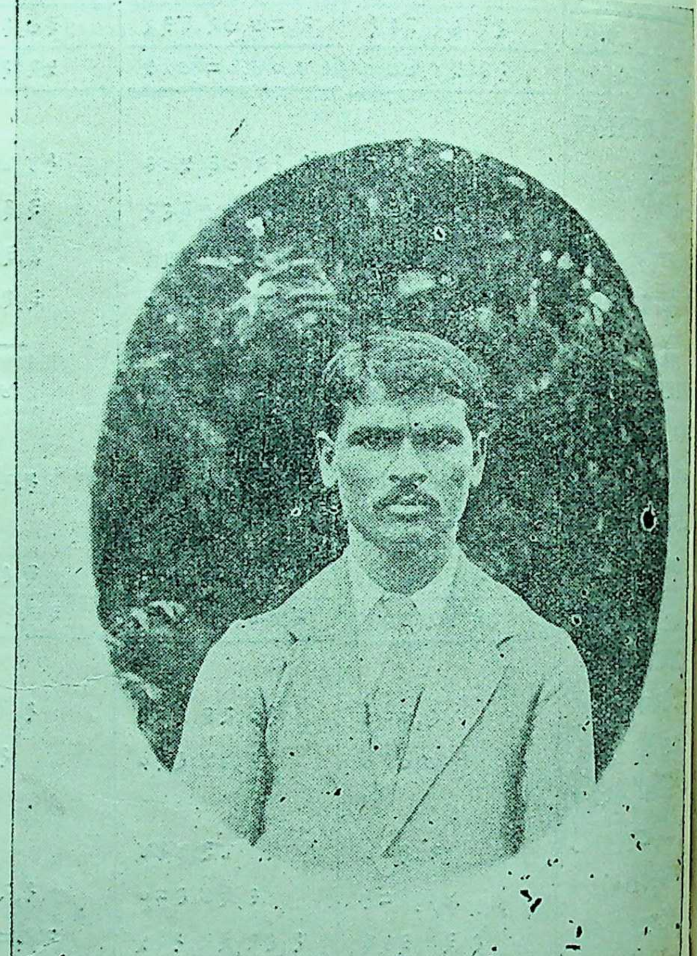

फ़िजी-द्वीप-निवासी श्रीयुत दुखहरन

7632

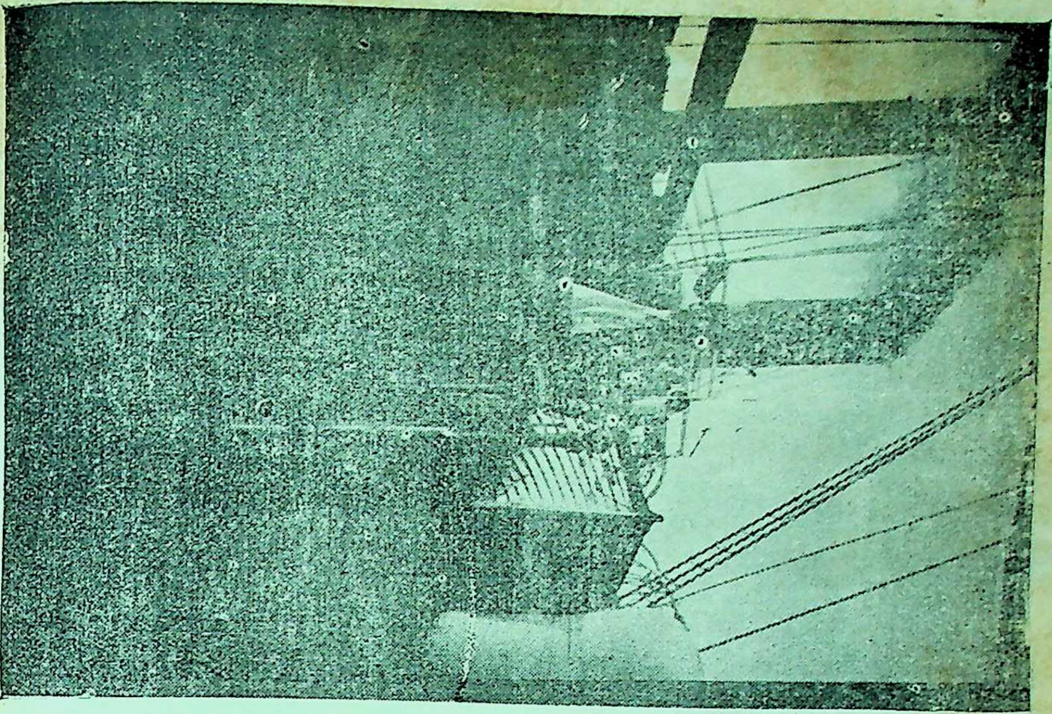

एस० एस० चनाब-नामक जहाज पर लेखक

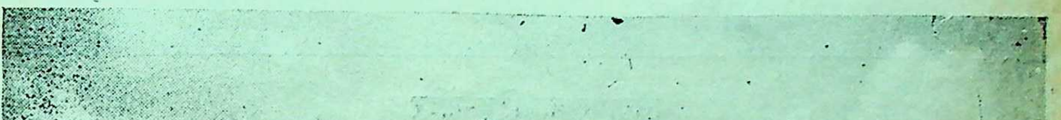

सिंगापुर का बंदरगाह

स्त्रियों को सिर में लगाने के लिये नारियल का तेल भी मिलता है। हरएक प्रवासी भारतवासी को एक टिन की थाली, एक लोटा और एक कंबल मिलता है, जो फिर वापस नहीं लिया जाता। हरएक बात का आराम है, केवल मीठे जल की बड़ी कमी है।

जहाज पर पुरुषों को अगले और स्त्रियों को पिछले

भाग में रक्खा जाता है। छः बजे शाम को सब नीचे जा सकते हैं। आठ बजे रात को डॉक्टर और जहाज़ के बाबू (ship compounder) लोग उन्हें देखने जाते हैं। विवाहित पुरुष जहाज़ के अगले भाग में अविवाहित दूसरे भाग में सोते हैं।

पीछे दीवार है। सब दरवाज़े रात को बंद कर

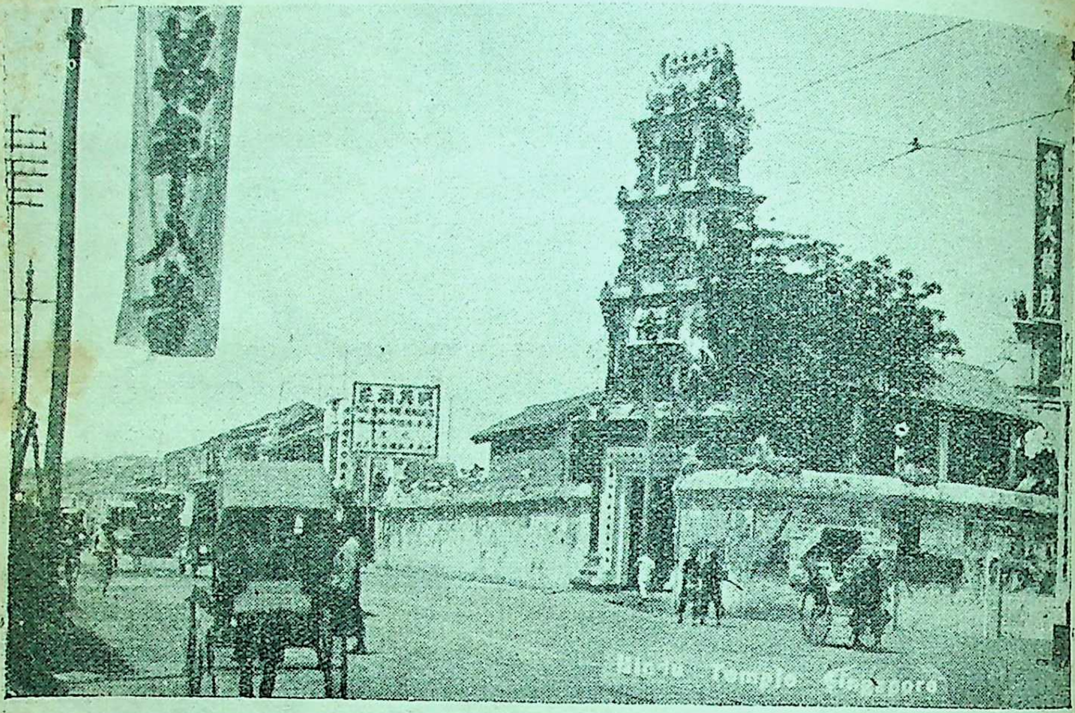
Hindu Temple Singapore

सिंगापुर का हिंदू-मंदिर

CHINESE TEMPLE SINGAPORE

सिंगापुर का एक चीनी मंदिर

जाते हैं। रात को पहरा भी रहता है। यात्रा में स्त्री-पुरुष दिल-बहलाव में तथा नाच-गाकर समय व्यतीत करते हैं। जहाज़ पर जाति-पाँति का कुछ भेद-भाव नहीं रहता। हिंदू और मुसलमान, सबके लिये एक ही भंडारे में भोजन पकता है। भंडारी हिंदू और मुसलमान, दोनों रहते हैं। छुआछूत का विचार सब भूल जाते हैं।

भारत जाते समय हम लोगों ने स्ट्रेट सेटलमेंट, सिंगापुर, पिनांग, जावा, सुमात्रा, बोर्निओ, थर्सडे आईलैंड और अंडमन (कालापानी) आदि देखे ; पर जहाज़ कहीं खड़ा नहीं हुआ।

२० जनवरी, १९२३ ई० को, १० बजे प्रातः-काल, हम लोग कलकत्ते पहुँचे। गंगा-नदी का दृश्य और उसके दोनों किनारों पर कपड़े और जूट आदि की भिन्न-भिन्न मिलें देखने से भारत की सफलता की याद आने लगी। लंगर डाले हुए अनेक स्टीमरों, असंख्य मछली मारनेवाली नावों और चींटियों की तरह अपार जन-संख्या का शुमार करना असंभव था। लगभग ११ बजे उसी दिन इमीग्रेशन-ऑफ़िस से दो बंगाली बाबू आए, और उन्होंने सब प्रवासी भारत-वासियों की हाज़िरी ली। इसके बाद अँगरेज़ डॉक्टर आए, और सब यात्रियों की डॉक्टरी जाँच हुई।

आज शनिवार के दिन सब प्रवासी भारत-वासियों को जहाज़ ही पर ठहरना पड़ा। सबेरे (२१ । १ । २३ को) इमीग्रेशन-ऑफ़िसर (कुली-एजेंट) आया, और जिन बेचारे प्रवासी भारतीयों के पास कुछ भी रुपए न थे, उन सबको एक पंक्ति में खड़ा किया। इनकी संख्या लगभग ४०० के थी। इन दरिद्रों में से कुछ लोगों से फ़िज़ी-सरकार के एजेंट साहब यह सवाल करते थे कि "तुम लोग अपना देश छोड़कर परदेश को रुपए कमाने गए थे, और आज दस-पंद्रह वर्ष के बाद लौटे हो। फिर क्या कारण है कि कुछ रुपए कमाकर नहीं लाए ?" कोई उत्तर देता है—"साहब, वेतन केवल एक या दो शिलिंग रोज़ मिलता था। खाने-पीने की चीज़ें बहुत महँगी थीं। जो कुछ कमाते थे, वह सब ख़र्च हो जाता था।" फिर एजेंट साहब कहते हैं—"बाक़ी और लोग तो कुछ-न-कुछ रक़म कमाकर लाए हैं। मालूम होता है, तुम सब शराबी, जुआरी या सुस्त होगे।" इसी तरह दो-चार बुरी-भली बातें सुनाते थे। आख़िरकार इन दरिद्रों में से हरएक को पाँच-पाँच रुपए देकर जहाज़ से विदा कर दिया गया। २२ जनवरी, सोमवार को एजेंट साहब फिर सबेरे जहाज़ पर आए, और सब मदरासियों ने, जिन्होंने अपने रुपए फ़िज़ी के सरकारी ख़ज़ाने में जमा किए थे, अपनी रक़म वापस पाई। वे मदरास तक का टिकट मुफ़्त लेकर विदा हुए। २३ जनवरी, मंगलवार को उत्तर-भारत के प्रवासी

सिंगापुर के चीनी-मंदिर की एक मूर्ति

भाइयों को अपने जमा किए हुए रुपए मिले, और वे जहाज़ से बिदा होकर अपने-अपने ज़िलों को रवाना हुए।

मुझे और मेरे प्रिय मित्र बाबू एम्० श्रीरमन को दिन—शनिवार ही को—जहाज़ से उतरने की

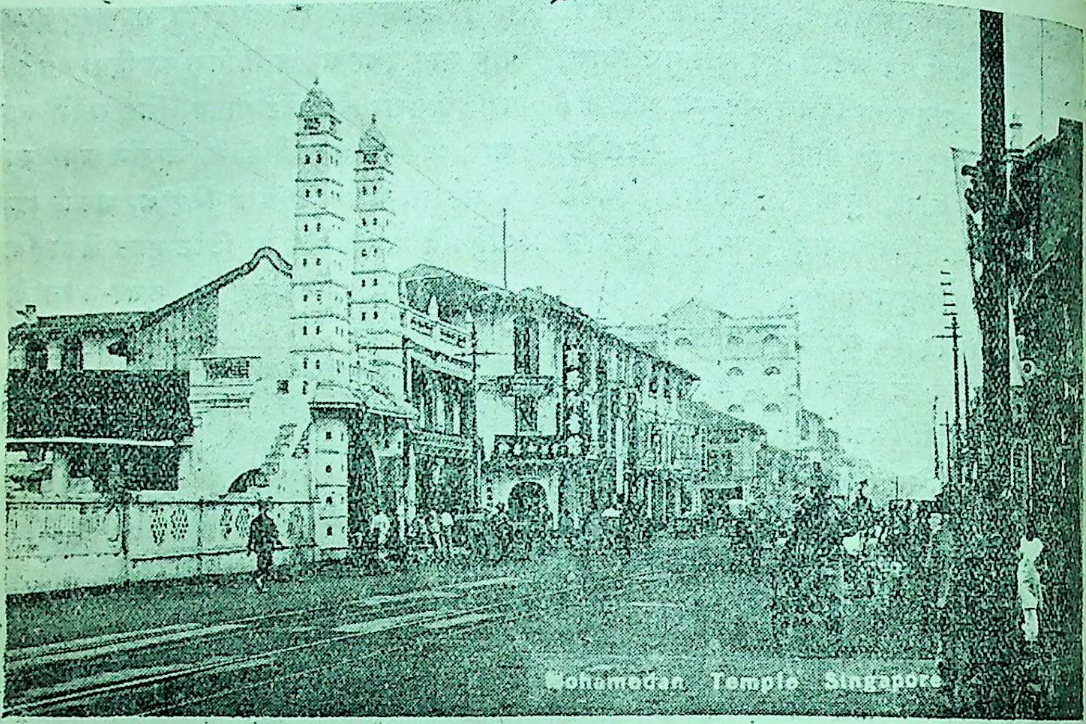
Mohamedan Temple Singapore

सिंगापुर में मुसलमानों की एक मसाजिद

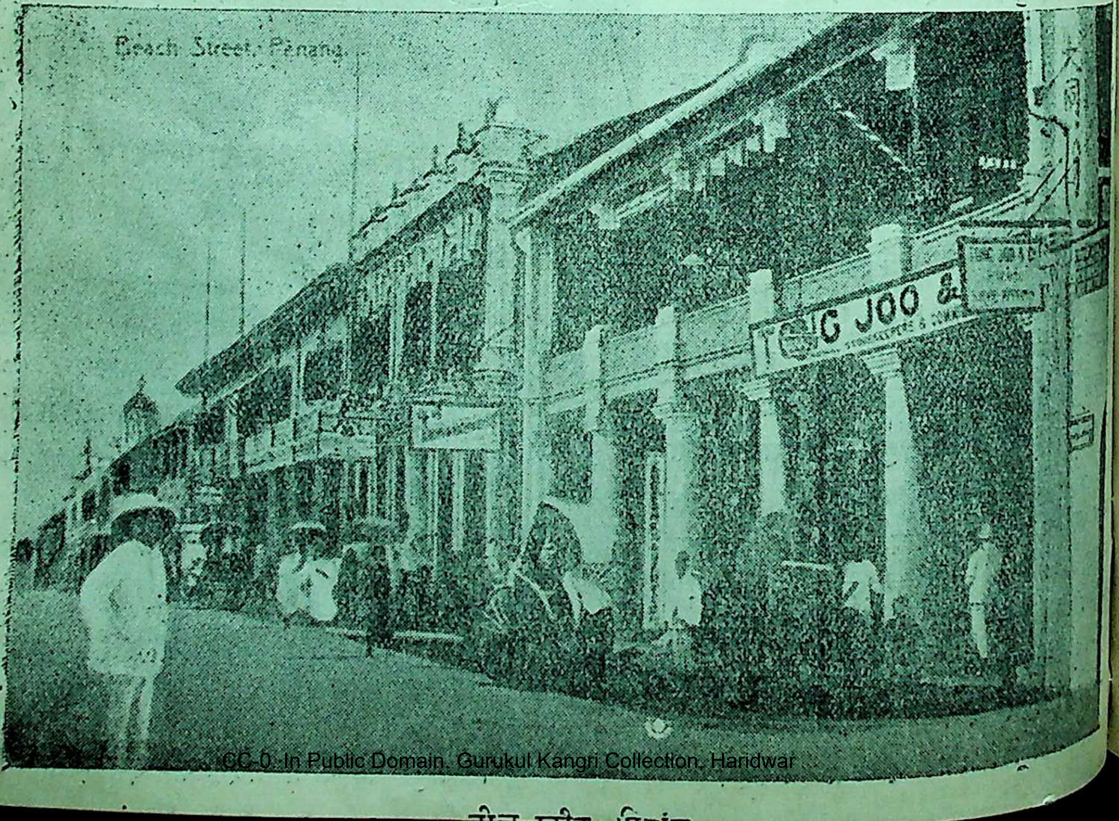
Beach Street. Penang.
G JOO &

बीच स्ट्रीट पिनांग

मिल गई थी ; पर हम दोनों जहाज़ पर प्रवासी भारत-वासियों को, अंतिम छुटकारे के दिन तक, देखने जाया करते थे । कलकत्ते में उतरने पर मैंने अपने को एक ऐसे देश में पाया, जहाँ फ़िज़ी की कोई भी बात नहीं मिलती। फ़िज़ी और कलकत्ते के रस्म-रवाज, चाल-ढाल, पोशाक-पहनावे, बोली और धर्म में बड़ा अंतर देख पड़ा ।

भारत को अच्छी तरह जानने में जीवन व्यतीत हो जाता है । जो जितने अधिक समय तक वहाँ रहे, उसे उतना ही अधिक ज्ञात होगा कि वहाँ का हाल उसे कितना कम मालूम है ।

लगभग ४ बजे शाम को मैं और मेरे प्रिय मित्र श्रीरमनजी गाड़ी पर बैठकर सियालदह-स्टेशन से लोअर सरकुलर रोड के 'आर्य-निवास'-नामक एक बंगाली होटल में गए । पाँच रुपए रोज़ भाड़े पर एक कमरा (कोठरी) लिया, जिसमें दो खटिया, एक टेबिल, दो कुर्सियाँ, एक बिजली की बत्ती और पंखा था । एक बार के भोजन का मूल्य ॥≈) देना पड़ता था ।

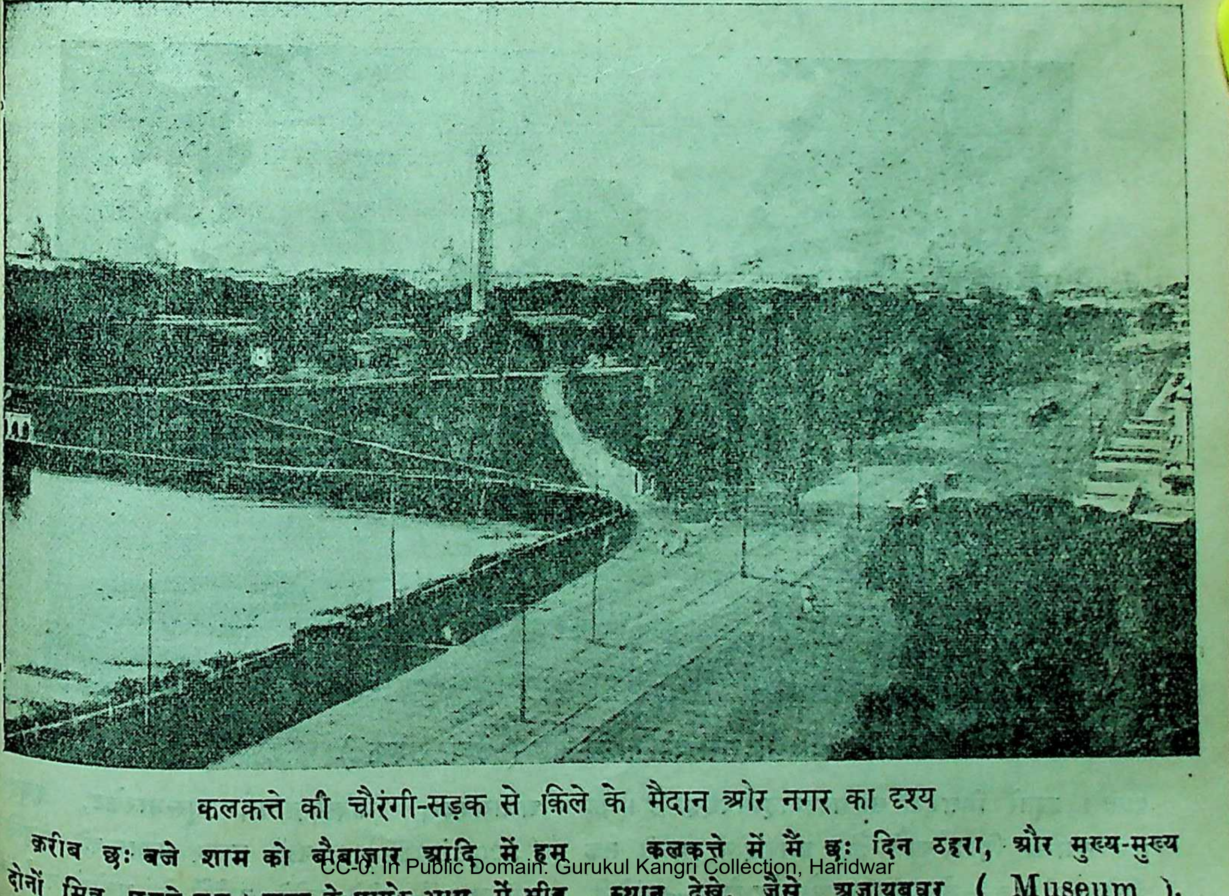

कलकत्ते की चौरंगी-सड़क से क़िले के मैदान और नगर का दृश्य

क़रीब छः बजे शाम को बौबाज़ार आदि में हम दोनों मित्र घूमने गए । शहर के प्रत्येक भाग में भीड़ और कोलाहल ने सबसे पहले मेरा ध्यान अपनी ओर खींचा । बाज़ार में जाने पर मैंने देखा, दूकानदार लोग लंबी क़तारों में बैठे थे । बीच में ग्राहकों के सौदा ख़रीदने के लिये आने-जाने को तंग जगह छूटी हुई थी । बहुधा ख़रीदारों को एक रुपए की चीज़ के दाम दो या तीन रुपए बतलाए जाते थे । कुछ देर तक ज़ोर-शोर से मोल-भाव करने के बाद वही सामान, ग्राहक की होशियारी के अनुसार, एक रुपए में, अथवा इससे कुछ कम में भी, मिल जाता था । मेरे-जैसे नए यात्रियों को तो बड़ी सावधानी के साथ सौदा ख़रीदना चाहिए ; क्योंकि ठगे जाने का बड़ा भय है । यद्यपि सभी दूकानदार ठग नहीं होते, तथापि छोटे-छोटे दूकानदारों में ८० फ़ी सैकड़े ठगने की चेष्टा करते हैं ।

बाज़ार में साग से लेकर पुस्तकें और बर्तन आदि तक, सब कुछ ख़रीदा जा सकता है । वहाँ लुहार, बढ़ई, मोची आदि सब हैं । भारतीय गृहस्थों के लिये नित्य की ज़रूरी हरएक चीज़ ख़रीदी जा सकती है ।

कलकत्ते में मैं छः दिन ठहरा, और मुख्य-मुख्य स्थान देखे, जैसे अजायबघर (Museum),

चिड़ियाख़ाना (zoological garden), विक्टोरिया-स्मारक-भवन आदि। २७ जनवरी, शनिवार को, शाम को, प्रिय मित्र श्रीरमनजी के साथ मेल ट्रेन द्वारा मदरास को प्रस्थान किया।

श्रीरमनजी फ़िज़ी के सरकारी कर्मचारी हैं। एक वर्ष की छुट्टी लेकर परिवार-सहित अपने गाँव को जा रहे हैं। मेरी इच्छा मदरास-प्रांत की सैर करने की भी थी। इसलिये मैंने इन्हीं महाशय के साथ भ्रमण करना उचित समझा।

दूसरे दिन, इतवार को, आठ बजे रात को, हम सब राजमंदरी-स्टेशन (ज़िला गोदावरी) पर पहुँचे, और यहीं पर गाड़ी से उतर गए। कारण, श्रीमती रमन की माता का मकान इसी ज़िले के एक गाँव में, यहाँ से २० मील के फ़ासले पर, है; और वह पहले अपनी माता के यहाँ जाना चाहती थीं। हम सब बैल-गाड़ी पर सवार होकर एक धर्मशाला में गए, और वहीं ठहरे। यहाँ की बोली मैं बिलकुल नहीं समझ पाता। हमारे मित्र की तो यह मातृभाषा ही है। वह मुझे समझा दिया करते हैं। हम दोनों अभी तक अँगरेज़ी पोशाक—कोट, पतलून और हैट-टोपी—पहने थे, जिसको लोग घृणा की दृष्टि से देखते थे। यह

तुरंत बाज़ार जाकर धोती, पगड़ी ख़रीदी, और

बदली। यहाँ, राजमंदरी में, हम सब दो दिन

सेंट्रल जेल, सेशनजज-कोर्ट आदि देखकर ३१ जनवरी

श्रीमती रमन अपने भाई के साथ अपनी माता

चली गईं; और हम दोनों मित्र मदरास को,

शाम की रेल से, रवाना हुए। गाड़ी जब गो

और कृष्णा-नदी के पुलों पर से गुज़र रही थी,

मैंने अपने कंपार्टमेंट की खिड़की से झाँककर

अनेकों यात्री भक्ति-पूर्वक कपूर और पैसे नदी में

और सिर झुकाकर, हाथ जोड़कर प्रणाम करते

अपने मित्र से पूछने पर मालूम हुआ कि वे सब

की पूजा करते हैं। १ फ़रवरी को, सबेरे ८ बजे, मदरास सेंट्रल स्टेशन पर पहुँचे। वहाँ श्रीरमन के

के मकान पर, क़स्बा 'वाशरमेनपेठ' में, ठहरे।

मदरास में, मैं दो हफ़्ते ठहरा। जो मुख्य-मुख्य

देखने योग्य थे, वे सब हमारे मित्र ने दिखाए,

Mount Road, Madras

मदरास की माउंट-रोड (ऊँची सड़क)

अजायबघर, चिड़ियाख़ाना, मूर-मारकेट,

(acquiram)। यहाँ नाना प्रकार की

और जल के कीड़े-मकोड़े दर्शकों के मनोरंजनार्थ

हैं। अँगरेज़ी दैनिक पत्र 'स्वराज्य' के संपादक मि० टी० प्रकाशम् और 'इंडियन रिव्यू' मासिक पत्रिका के संपादक मिस्टर जी० ए० नटेसन से मुलाक़ात होने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। फ़िज़ी के प्रवासी भारतवासियों के विषय में कुछ देर तक वार्तालाप भी हुआ। मदरास-विश्वविद्यालय और कन्या-मेडिकल कॉलेज यहाँ देखने योग्य हैं। कन्या-मेडिकल कॉलेज में लड़कियाँ २० वर्ष से अधिक अवस्था तक की भी हैं। अभी तक वे विद्याभ्यास करती और खूब टेनिस और गेंद आदि खेलती हैं। मदरास में अँगरेज़ी-शिक्षा का प्रचार बहुत अधिक है। आर्य-समाज और राष्ट्रीय पाठशाला भी स्थापित हैं। इनमें उत्तर-भारत के अध्यापक मदरासी बालकों को हिंदी की शिक्षा देते हैं।

हिंदी में 'हिंदी-प्रचारक'-नामक एक मासिक पत्र भी निकलता है। शहर में शाम के वक़्त अँगरेज़ी में राज-नीति और समाज-सुधार के विषय पर बहुत-से लेक्चर सुनने में आते हैं। इतवार को तो लेक्चरों की भरमार रहती है। यहाँ अत्यंत अधिक नई सभ्यता और अँगरेज़ी-शिक्षा का प्रभाव देखकर मैं अवाक् रह गया। जाति-सेवा के भाव और स्वाधीन विचार नित्यप्रति बढ़ते ही जाते हैं।

भारतवर्ष के अन्य प्रांतों की अपेक्षा मदरास का जल-वायु कुछ अधिक उष्ण है। यहाँ के निवासियों में हिंदू अधिक दिखलाई देते हैं। अन्य प्रांतों की अपेक्षा यहाँ देसी ईसाई भी अधिक हैं। मैंने कृष्णा ज़िले तक भ्रमण किया। भीमवरम्-गाँव में श्रीमती रमन की माता के यहाँ दो हफ़्ते ठहरा। इस क़स्बे में अमेरिकन ईसाई-मिशन का काम बहुत बड़ा है। सुनता हूँ, केवल एक क़स्बे में ८,००० देसी ईसाई हैं। गोरे ईसाई अपना धर्म फैलाने के लिये बड़े परिश्रम के साथ काम कर रहे हैं। वे स्त्री और पुरुष, दोनों देसी वस्त्र पहनकर गली-गली और गाँव-गाँव बाजे बजा-बजाकर ईसामसीह के भजन और उपदेश गाते और लोगों को सुनाते फिरते हैं। अँगरेज़ पुरुषों को धोती और स्त्रियों को साड़ी पहने देखकर मैं तो आश्चर्य-चकित हो गया; क्योंकि अँगरेज़ नर-नारियों का ऐसा पहनावा यह पहली ही बार मैंने अपने जीवन में देखा था। दो सप्ताह तक हम दोनों वहाँ ठहरे। भीमवरम् में दक्षिण के गाँवों का कुछ अनुभव प्राप्त हुआ। १ मार्च को हम फिर मदरास वापस आ गए। यहाँ पर शहर की सैर करने और नाटक आदि देखने में १०-१२ दिन और व्यतीत किए। अब उत्तर-भारत की ओर भ्रमण करने का विचार हुआ। हमारे मित्र तो अब कुछ दिन, अपनी छुट्टी का समय, यहीं, अपनी माता और भ्राता के यहाँ बितावेंगे।

१३ मार्च को मैं अकेला ही मदरास से बंगलोर (मैसूर-राज्य) को, शाम की गाड़ी से, रवाना हुआ। दूसरे दिन ११ बजे वहाँ पहुँचा। बाज़ार आदि घूमकर रात्रि को एक धर्मशाला में टिका, और दूसरे दिन सबेरे की गाड़ी से पूने की ओर चल दिया। पूने में १० बजे रात को पहुँचा। एक धर्मशाला में टिका, और प्रातःकाल स्नान आदि से छुट्टी पाकर पार्वती-मंदिर के दर्शन करने गया।

मेरी इच्छा यरवदा के सेंट्रल जेल में—जहाँ उन दिनों महात्मा गाँधीजी विराजमान थे—जाने की थी। मैंने जेल-सुपरिंटेंडेंट के पास निवेदन-पत्र लिख भेजा। उसका उत्तर मिला—"Your request cannot be granted." अर्थात् आपकी प्रार्थना स्वीकार नहीं की जा सकती। पूने से १८ मार्च को, शाम की गाड़ी से, बंबई रवाना हुआ और ६ बजे रात को बंबई-सेंट्रल स्टेशन पर पहुँचा। स्टेशन पर बिजली की बत्तियों की चमचमाहट और असंख्य भीड़ देखकर आश्चर्य हुआ।

मेरे पास केवल एक छोटा संदूक़ और बिस्तर था। मैं एंपायर-हिंदू-होटल में जाना चाहता था। स्टेशन से पैदल ५ मिनट का रास्ता था। वहाँ सामान ले जाने के लिये कुली ने एक रुपया माँगा। कुछ देर में, वाद-विवाद करने पर, चार आने में राज़ी हुआ। उसी होटल में जाकर टिका। रोज़ का ख़र्च ढाई रुपए पड़ता था। दो वक़्त भोजन, और सोने के लिये कमरा। होटल में हर बात का आराम था। सफ़ाई वग़ैरह में यह होटल किसी योरपियन होटल से कम नहीं है।

बंबई-शहर का व्यापार में दूसरा नंबर है। पहला नंबर कलकत्ते का है। शहर की इमारतें बड़ी ऊँची और रमणीय हैं। यहाँ का बंदरगाह बहुत सुंदर है। जहाज़ों का दृश्य देखने योग्य होता है। यहाँ कपड़ा बुनने के बड़े-बड़े कारख़ाने हैं, जिनमें कलों से काम किया जाता है।

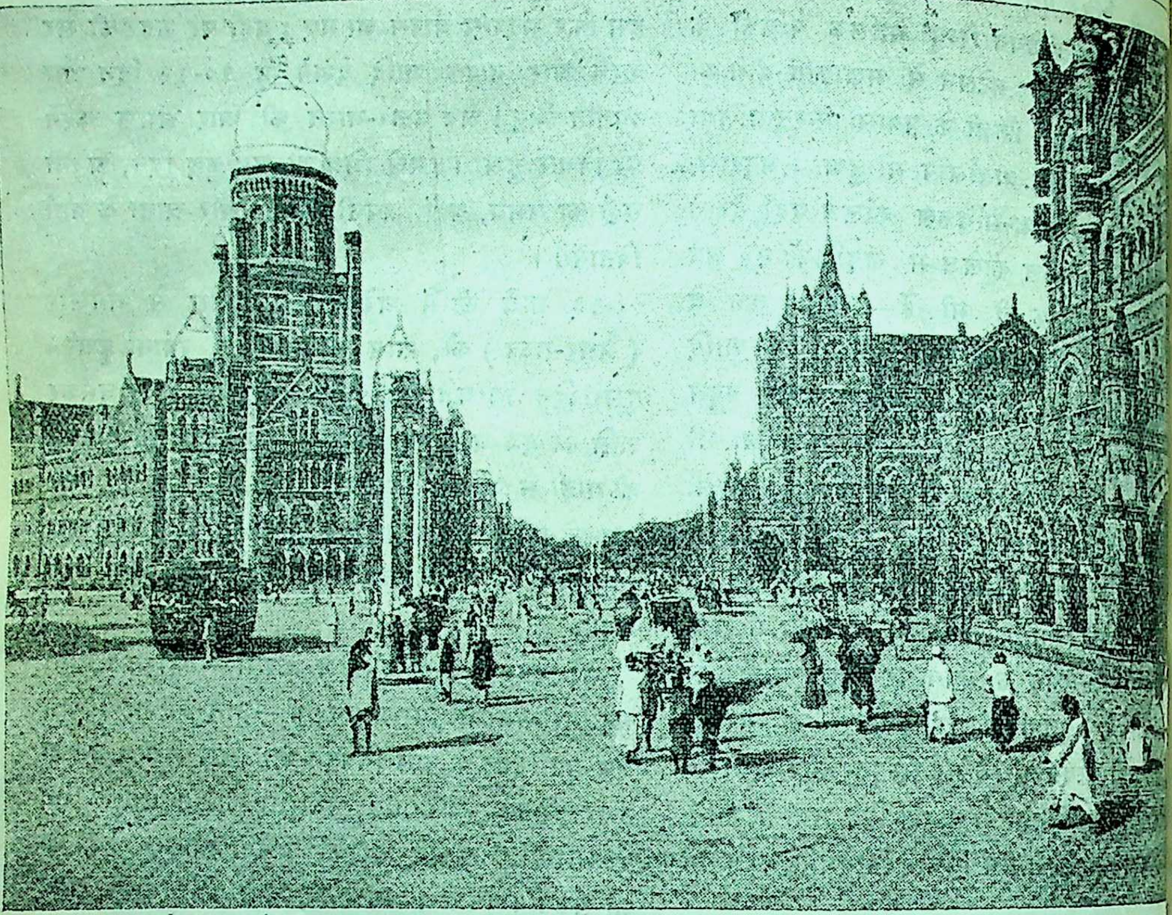

बंबई का म्युनिसिपल ऑफ़िस और विक्टोरिया-टर्मिनस-रेलवे-स्टेशन

विक्टोरिया-टर्मिनस-स्टेशन, सरकारी कचहरियाँ, हाईकोर्ट, राजबाई का मीनार, अजायबघर, चिड़ियाघर, फ़ीरोज़शाह मेहता-गार्डन, ताजमहल-होटल और विश्व-विद्यालय देखने योग्य स्थान हैं । शाम को ४ बजे, समुद्र-तट के किनारे, चौपाटी में, पारसी नर-नारियों की शोभा देखने योग्य होती है । वहाँ बेशुमार नर-नारी हवा खाने के लिये जमा होते हैं । वह स्थान साक्षात् इंद्र की पुरी जान पड़ता है । श्रीवेंकटेश्वर-प्रेस बहुत बड़ा है । सैकड़ों कंपोज़ीटर काम करते हैं । प्रेस के मालिक के दर्शनों का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ । घंटों फ़िजी के संबंध में बातें हुईं । बंबई में छः दिन ठहरकर २४ मार्च को, शाम की गाड़ी से, मैं प्रयाग के लिये रवाना हुआ । रात-भर और दिन-भर रेल चलती रही । २५ मार्च को, १२ बजे रात को, इलाहाबाद-स्टेशन पर पहुँचा । यहाँ मेरे फ़िजी के नवयुवक मित्र मिस्टर जे० बैरागी, जिन्हें मैं तार द्वारा अपने आने की सूचना दे चुका था, स्टे पर मिले । नैनी में कृषि-विद्यालय के छात्रालय में रहते हैं । वहीं घोड़ा-गाड़ी पर हम दोनों गए । छात्रा में विद्यार्थियों के साथ मैं एक सप्ताह ठहरा । समिति, बालचर-मंडली और क़िला आदि स्थान दे

३१ मार्च को अपने पिता के गाँव बाईपुर (जौनपुर) पहुँचा । अपने आने की सूचना मैं अपने भाई, रामनिहोर अहीर, को भेज चुका था । वह राह देख रहे थे । मेरे भाइयों और उनकी बड़ा आदर-सत्कार किया । अपने जीवन में लोगों की यह पहली ही भेंट थी । कारण, मेरे और माता को भारतवर्ष छोड़े ३८ वर्ष हो गए । फ़िजी में ही जन्म लिया है । हमारे पिताजी भारत से पत्र-व्यवहार भी नहीं करते थे । मगर को प्रस्थान करते समय मेरी पूज्य माताजी ने

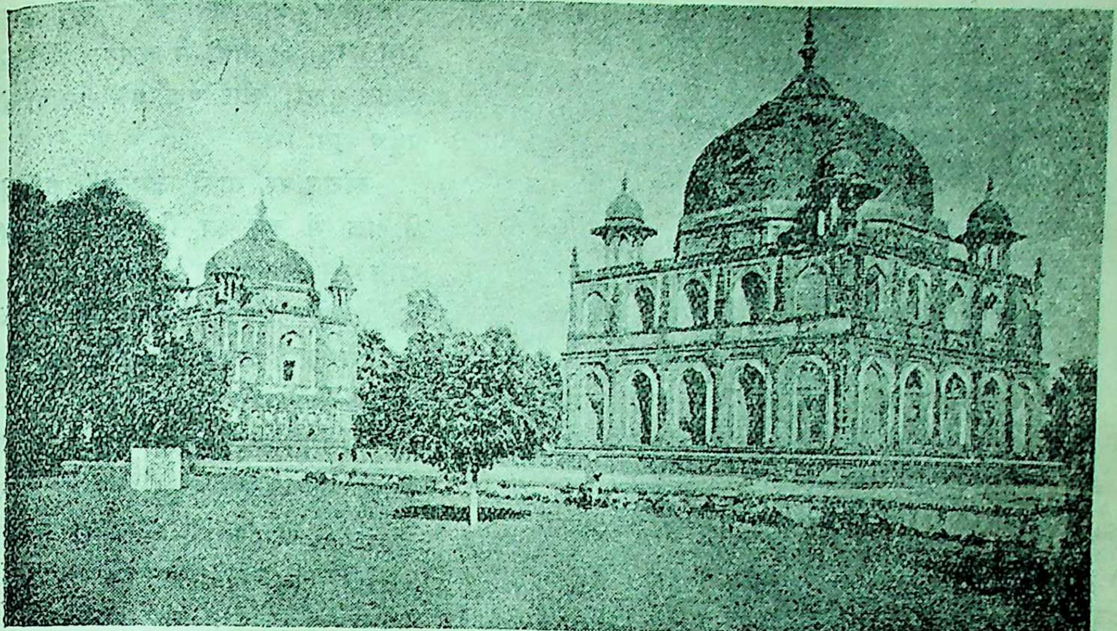

इलाहाबाद का खुसरू-बाग़

पता-ठिकाना बता दिया था। गाँववालों की भीड़ लग गई। लोगों ने सब समाचार पूछना शुरू किया।

दो-एक घंटे के बाद कुछ वृद्ध पुरुषों ने कहा—समुद्र-यात्रा का प्रायश्चित्त करना चाहिए। प्रायश्चित्त करने के बाद भाइयों के साथ भोजन किया। शाम को आस-पास के गाँवों में बहुधा सैर करने जाता और हरवाहों से उनके जीवन-निर्वाह के बारे में वार्तालाप किया करता था। उनका जीवन घोर परिश्रम करके भी बड़ी मुसीबत में बीतता है। बेचारे दिन-भर हल चलाने पर केवल ढाई सेर मोटा नाज पाते हैं। उसी में स्त्री तथा बाल-बच्चे, सबका पालन-पोषण करते हैं। नीच जाति के मनुष्यों—चमार, धरकार, भंगी, भर, पासी, आदि—का जीवन अति कठिनता से व्यतीत होता है। इन जातियों के मनुष्यों को गेहूँ, जव आदि की रोटियाँ तो स्वप्न में भी नहीं नसीब होतीं। गेहूँ, अपने खेत में पैदा करके भी, खाना असंभव हो जाता है। कारण, ज़मींदार ज़मीन के पोत में गेहूँ के आगे जव-मटर-चने आदि दूसरे नाज कदापि नहीं लेता। जब मैं इन लोगों के जीवन की फ़िज़ी-प्रवासी भारतीयों के जीवन से तुलना करता हूँ, तो मुझे ज्ञात होता है कि फ़िज़ी में ये नीच जाति के भारतीय यहाँ से मज़े में हैं।

लगभग तीन सप्ताह मैं गाँव में रहा। उस समय प्लेग की बीमारी आसपास के गाँवों में फैल रही थी। भयंकर प्लेग के कारण मैंने गाँव में रहना नहीं पसंद किया, और तुरंत ज़िला आज़मगढ़ के क़स्बा मऊ में पादरी एफ़० एल्० नन के यहाँ चला गया। दो हफ़्ते तक वहीं ठहरा रहा। उक्त पादरी साहब पाँच वर्ष फ़िज़ी में रह चुके थे। मुझसे अच्छी तरह उनका परिचय था। ज़िला आज़मगढ़ में आस्ट्रेलेशियन ईसाई-मिशन का हाईस्कूल देखा। प्लेग शांत होने पर बनारस गया। बनारस में एक हफ़्ते रहा। एक काश्मीरी हिंदू-होटल में टिका। सोने के लिये कोठरी का किराया एक रुपया रोज़ लगता था। एक वक़्त के भोजन का ॥।) अलग।

बनारस में, मान-मंदिर, विश्वनाथजी का मंदिर, काशी-करवट, माधवराव का धौरहरा, सारनाथ में बुद्धों की पुरानी मूर्तियाँ, राजा अशोक का स्तंभ (archæological museum), डी० ए० वी० कॉलेज, हिंदू-विश्वविद्यालय आदि को देखा।

यहाँ मंदिरों की संख्या बहुत है। सारे भारत की भिन्न-भिन्न जातियों के लोग यहाँ स्नान-दर्शन करने आते हैं। बाज़ार में पुजारी-पंडों के आदमी फिरा करते हैं। यात्रियों को [illegible] फुसलाकर अपने साथ स्नान-दर्शन

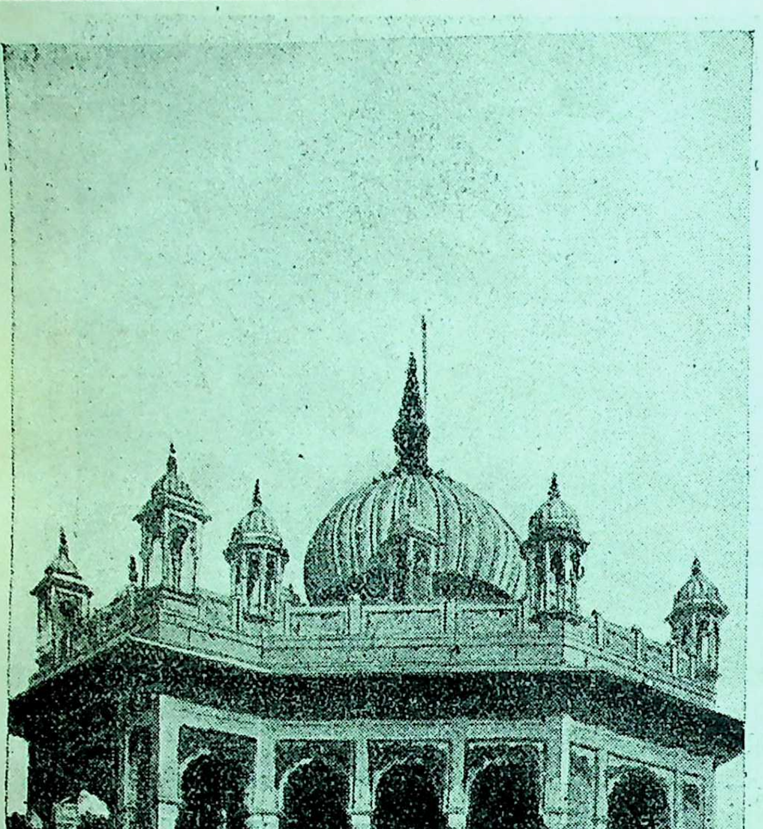

स्वामी भास्करानंद का समाधि-मंदिर, काशी

कराने के लिये ले जाते हैं। अगर इनके पंजे में कोई न आवे, तो उसे लानत-मलामत करते, ईसाई-आर्या बनाते और अपनी राह लेते हैं।

काशी से अयोध्या गया। वहाँ केवल एक दिन ठहरा। यहाँ गुलाब-बाड़ी, कनक-भवन, हनुमान्-गढ़ी और दद्दुआ साहब का राजभवन देखने योग्य है। ब्राह्मण, पुजारी आदि यहाँ भी यात्रियों को खूब लूटते हैं। कनक-भवन में अंदर जाकर श्रीरामचंद्र के दर्शन की दक्षिणा पाँच रुपए मुझसे माँगे जाते थे। आख़िर को बड़ी मशक़िल से।) में अंदर जाने की आज्ञा हुई। भोले-भाले अशिक्षितों को तो खूब लूटते होंगे। रात की गाड़ी से लखनऊ के लिये रवाना हुआ, और एक बजे रात ही को पहुँच गया।

स्टेशन पर गाड़ी लगते ही कुलियों ने नाक में दम कर दिया। ये कुली अधिकतर मुसलमान थे। मैंने पूछा—इक्के तक मेरा संदूक़ और बिछौना ले जाने का क्या लोगे? एक ने चट संदूक़ और दूसरे ने बिछौना उठा लिया, और कहा—चलो-चलो, पाँच रुपए दे देना। मैं उनकी बातें सुनकर बहुत घबराया। अंत को =) में इक्के के पास आकर सामान रखना मंजूर किया। मगर इक्के पर आकर जब मैं =) देने लगा, तो उसने लेने से इनकार किया। कहा—दो रुपए से कम न लूँगा। आख़िर को घंटे-भर तक झक-झक करके पुलीस की धमकी देने पर ≡) में छुटकारा मिला। अब पारी आई इक्केवाले की। वह मनोरमा-हिंदू-होटल तक के १) माँगने लगा। आख़िर को ॥) में उसने होटल में पहुँचा दिया। यात्रियों को यहाँ के कुलियों और इक्केवालों से सावधान रहना चाहिए। यहाँ पाँच दिन रहा। अजायबघर, इमामबाड़ा, छतर-मंज़िल, अमीनाबाद-पार्क, हज़रतगंज वग़ैरह देखा। शहर की सुंदरता अत्यंत मनोहर है। सफ़ाई अव्वल दरजे की है। फल, सबज़ी-तरकारी आदि के लिये लखनऊ विख्यात है।

लखनऊ से सीधे कानपुर आया, और चंपाराम-लक्ष्मणदास की धर्मशाला में टिका। यह धर्मशाला बहुत ही सुंदर बनी हुई है। मुसाफ़िरों को यहाँ हर तरह का आराम है।

यहाँ काँच का मंदिर, वैकुंठमंदिर, कैलास, प्रयागनाथ का ठाकुरद्वारा, और फूलबाग़ देखा। उत्तर-भारत में कलकत्ते को छोड़कर अन्य सब नगरों से बड़ा व्यापारिक स्थान यही है। कपड़ों की कई मिलें हैं। कलकत्ते-बंबई की तरह बिजली की ट्रामगाड़ी भी

चलती है। चमड़े का काम अच्छा और अधिकता से होता है।

यहाँ एक सप्ताह व्यतीत करके आगरे को रवाना हुआ। यहाँ कन्हैयालाल के होटल में ठहरा। इस होटल के स्वामी कन्हैयालाल से वार्तालाप हुआ। उन्हें जब मालूम हुआ कि मैं फ़िजी से आया हूँ, तो उन्होंने कहा—फ़िजी को फिर कुलियों की भरती कब होगी? यह भी कहा कि मैं हज़ारों स्त्री-पुरुष भरती करके, पाँच वर्ष की शर्तबंदी पर, वहाँ भेज चुका हूँ। बहुत लाभ होता था, हर मर्द के लिये ४५ रुपए तक मिलते थे। स्त्रियों के लिये तो ६०) फ़ी औरत पाता था। जब से कुलियों की भरती बंद हुई, तब से मेरी आर्थिक हानि बहुत हुई है।

इसी घृणित कमाई से उस पिशाच ने आज आगरे में कई होटल क़ायम कर लिए हैं। उस रात को तो मैं उसी होटल में रहा। लाचार था। सबेरे बाज़ार में घूमने गया, तो एक सज्जन से पूछ-ताछ करने पर मालूम हुआ, आर्य-मंदिर में मुसाफ़िरों के ठहरने का अच्छा प्रबंध है। शाम को मैं वहीं चला गया। एक सप्ताह इसी मंदिर में व्यतीत किया।

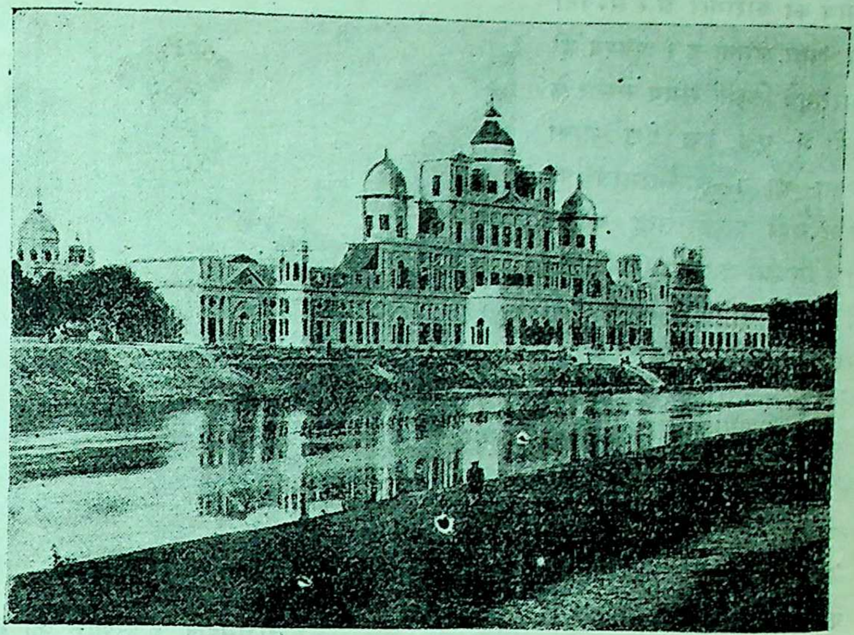

लखनऊ का छतर-मंज़िल

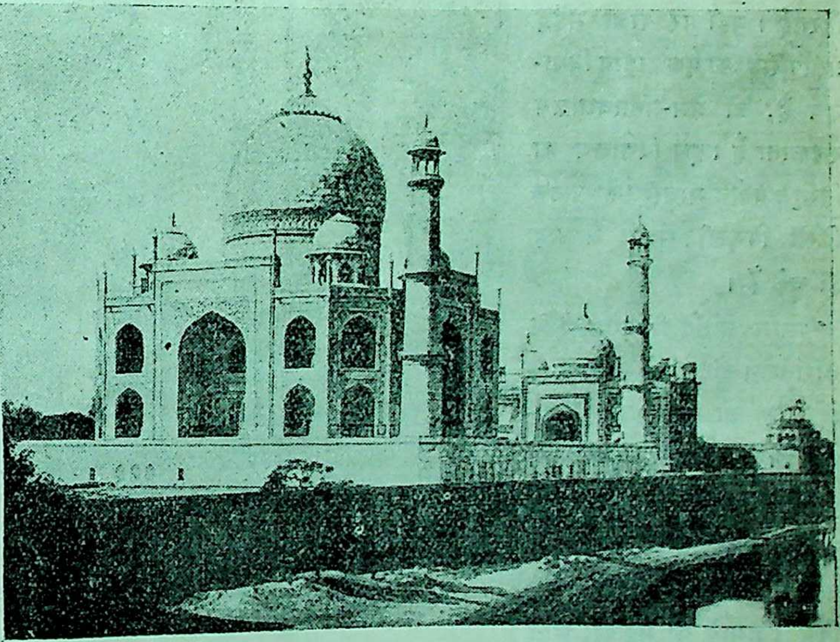

आगरे का विश्व-विख्यात ताजमहल

आगरे में क़िला, ताजमहल, इतमादुद्दौला, सिकंदरा, जुम्मा-मसजिद, राम-बाग़, चीनी का रोज़ा, फ़तेहपुर-सीकरी और आर्य-समाज का अनाथालय देखा। शाहजहाँ बादशाह ने जो अपनी बीबी की यादगार में ताजमहल बनवाया है, वह संसार-प्रसिद्ध और अपूर्व है। इसमें शक नहीं कि सारे संसार में इससे सुंदर और कोई इमारत न होगी। इसकी कारीगरी दर्शक को चकित कर देती है। इमारत में संगमरमर ही लगा है, उसके सिवा लोहा-लकड़ी नहीं है। सिकंदरे में अकबर बादशाह का मक़बरा है। आगरे का क़िला और फ़तेहपुर-सीकरी की टूटी-फूटी इमारतें देखने से प्राचीन हिंदू-राजों के

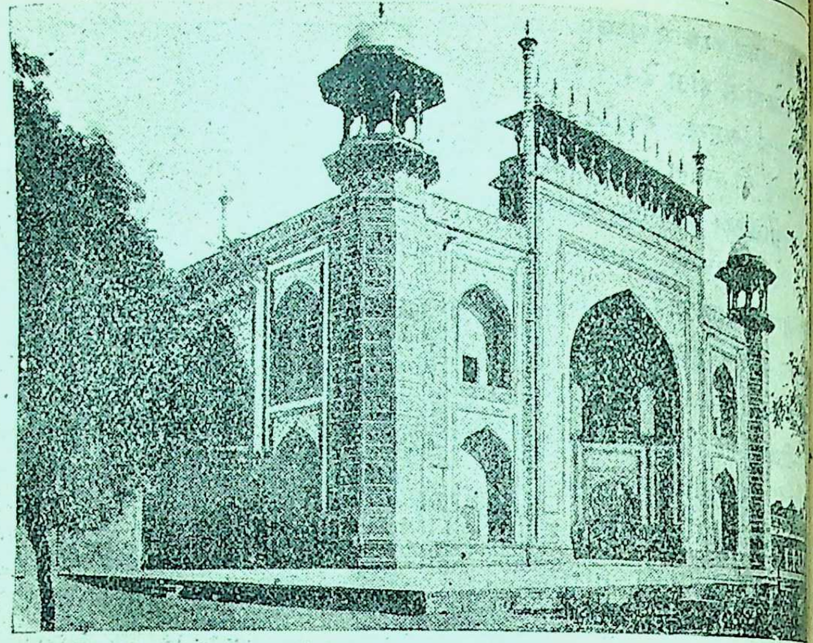

ताजमहल के उद्यान का मुख्य द्वार

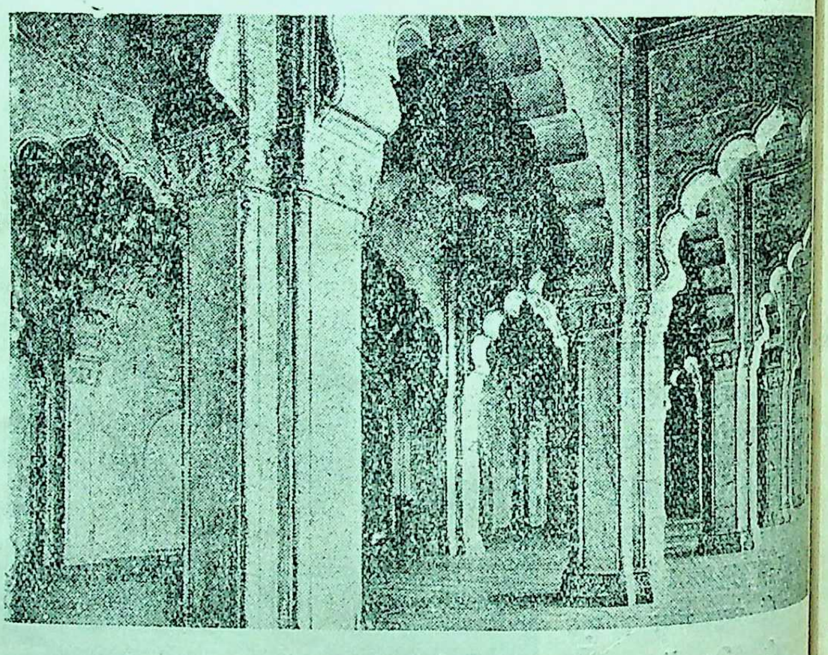

आगरे की मोती-मसजिद का भीतरी भाग

समय की कारीगरी और सभ्यता का पता लगता है । अवश्य ही भारतवर्ष किसी समय संसार के देशों में एक उच्च देश माना जाता था । आर्य-समाज का काम यहाँ अच्छी तरह चलता है । विधवा-आश्रम भी स्थापित है । शुद्धि का कार्य भी खूब हो रहा है । यहाँ से मैं मथुरा गया । दो दिन एक धर्मशाला में ठहरा ।

यहाँ के मंदिर बड़े प्रसिद्ध हैं । बृंदावन, मथुरा से ६ मील दूर पर, उत्तम नगर है । पंजाब के आर्य-समाज का गुरुकुल यहीं पर स्थापित है । एक ब्रह्मचारी, सुधाकर पांडेय, ने कष्ट उठाकर गुरुकुल की सारी इमारत मुझे दिखाई । यहीं पर राजा महेंद्रप्रतापसिंह का एक राष्ट्रिय विद्यालय है, जो प्रेम-महाविद्यालय कहलाता है । इस विद्यालय का विस्तृत वर्णन माधुरी के पाठक किसी पिछली संख्या में पढ़ ही चुके हैं ।

मथुरा से दिल्ली आया, और कॉरोनेशन-होटल में ठहरा । दिल्ली का लाल क़िला, कौरवों-पांडवों का क़िला, कुरुक्षेत्र में कौरवों-पांडवों का युद्ध-स्थान, जुम्मा-मसजिद, हुमायूँ का मक़बरा, कुतुब-मीनार आदि के दर्शन किए । हुमायूँ का मक़बरा अति सुंदर है । सन् १५६५ में इसे हमीदाबानू बेगम उर्फ़ हाजी बेगम—हुमायूँ की बीबी और अकबर की मा—ने बनवाया था । इसके बनने में १५ लाख रुपए ख़र्च हुए थे । अंदर १७५ क़बरें, मुग़ल-घरानों की, मौजूद हैं । अंतिम मुग़ल-बादशाह बहादुरशाह ग़दर (१८५७) में इस इमारत में छिप गया था । बाद को पकड़ लिया गया । हाजी बेगम की क़ब्र भी यहीं है । निज़ामुद्दीन औलिया
समाधि भी अभी तक बनी है । उनके नाम का एक कु
भी है । कहते हैं, प्राचीन काल में लोग बहुत दूर-दू
इस कुएँ के जल में स्नान करने के लिये आते थे ।
से छुटकारा पाने की आशा से ही वे स्नान करते और
भी हो जाते थे । यह कुआँ ६५० वर्ष का पुराना है ।

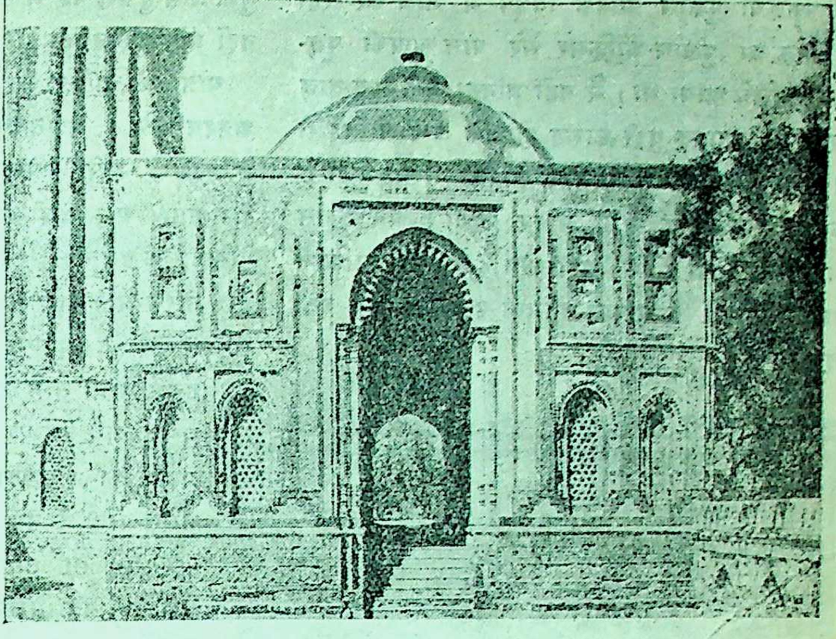

दिल्ली का अलाउद्दीन फाटक

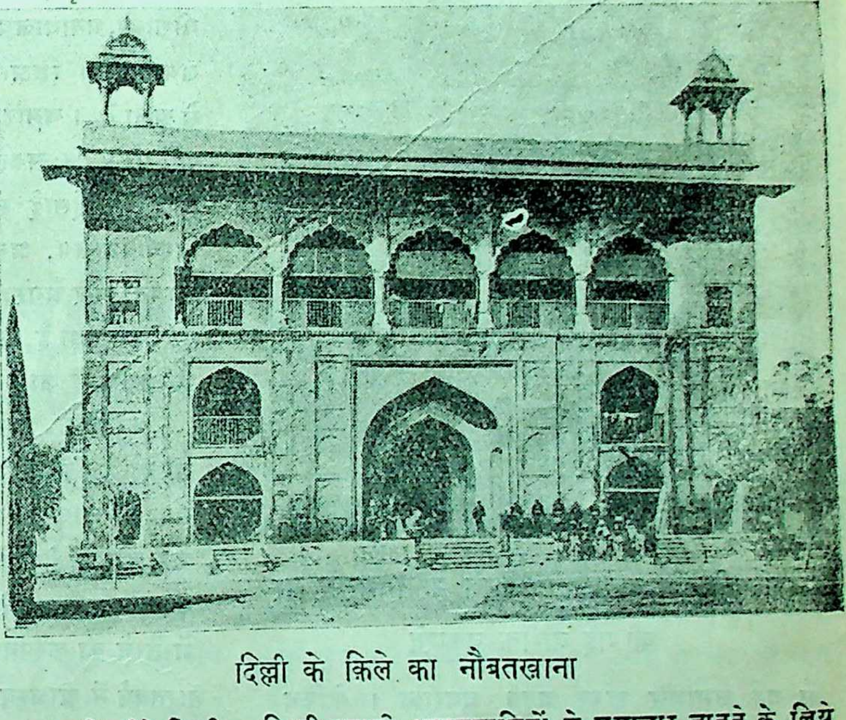

दिल्ली के क़िले का नौबतख़ाना

दिल्ली से मैं अपने गाँव लौट आया। दो हफ़्ते आराम करने के बाद बलिया, गोरखपुर, मुज़फ़्फ़रपुर होते हुए मोतिहारी गया। वहाँ डॉ० मणिलालजी बैरिस्टर के यहाँ चार दिन तक ठहरा। उक्त महाशय फ़िज़ी में कुछ दिन वकालत कर चुके हैं। मुझसे अच्छी तरह मित्रता थी।

यहाँ कई वैदिक व्याख्यान सुने। मौलाना आज़ाद सुभानी के दर्शन मिल गए। यहाँ हिंदू-मुसलमानों की एकता के लिये भारी सभा हुई थी, और मौलाना के स्वागत में भारी जुलूस निकाला गया था। पटने के प्रसिद्ध नेता बाबू राजेंद्रप्रसादजी के भी दर्शन हो गए। मोतिहारी से अपने भाई के मकान पर लौट आया। फिर कलकत्ते के शिपिंग ऑफ़िस के उत्तर की राह देखने लगा। फ़िज़ी के लिये कलकत्ते से स्टीमर कब जायगा, यही पूछा था। शिपिंग कंपनी ने ६ सप्ताह तक जहाज़ के विषय में कोई संतोष-जनक उत्तर न दिया। तब मैं अगस्त के आरंभ में, अपने भाई और गाँववालों से आज्ञा लेकर, कलकत्ते को रवाना हो गया। तीन दिन गया में ठहरा। बुद्ध आदि के मुख्य मंदिर देखे। ७ अगस्त को कलकत्ते पहुँचा। बौबाज़ार के एक मदरासी-होटल में ठहरा। उक्त शिपिंग कंपनी से मालूम हुआ कि सीधे फ़िज़ी को जानेवाला जहाज़ सितंबर के अंत तक मिलेगा। तब तक कलकत्ते में ही रहने का निश्चय किया। 'भारतमित्र'-पत्र के संपादक पं० लक्ष्मणनारायण गर्दे और प्रोप्राइटर यशोदानंदन अखौरीजी से कई दफ़े मुलाक़ात हुई। वे फ़िज़ी-प्रवासी भारतवासियों के समाचार जानने के लिये बड़े उत्सुक थे। 'स्वतंत्र' के संपादक वाजपेयीजी से भी मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। ५ सितंबर को पादरी एफ़० एल्० नन का एक पत्र मुझे मिला, जिसमें लिखा था—

"ख़ुफ़िया पुलीस आपके विषय में जाँच कर रही है। मऊ का पुलीस-ऑफ़िसर मेरे पास आपकी पूछ-ताछ के लिये आया था। मैं नहीं जानता, क्यों पूछ-ताछ करता था। शायद यही कारण हो कि आप मोतिहारी की सभा में उपस्थित थे। मैं आपको सलाह देता हूँ कि हर राजनीतिक सभा से दूर रहना। मैंने पुलीस को समझा दिया है कि आप कौन हैं, और क्या करने भारत आए हैं। आपका वर्तमान पता भी मैंने बता दिया है।"

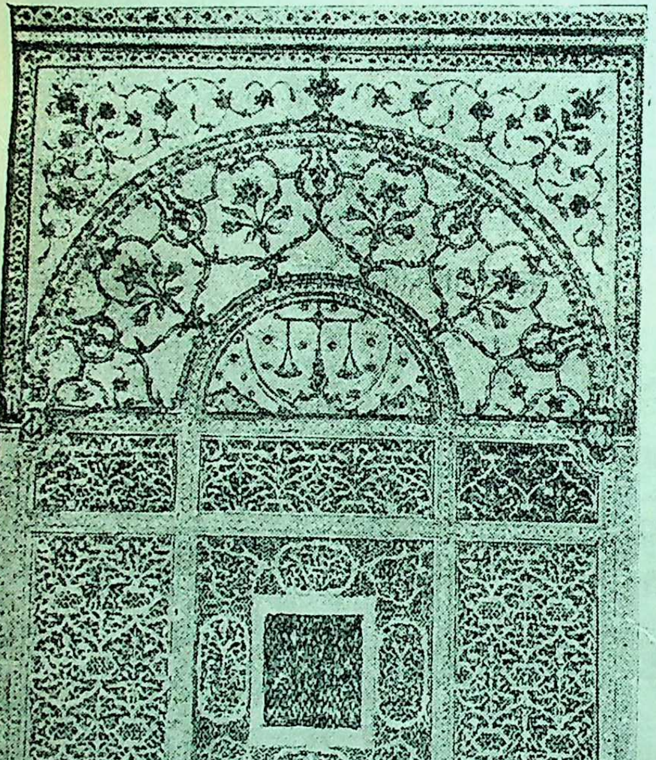

दिल्ली की एक बादशाही इमारत में संगमरमर पर की गई बारीक नक़्क़ाशी

मैं यह समाचार पाकर बहुत घबराया। लेकिन बाद को फिर कुछ सुनने में नहीं आया। मैं लगभग दो मास तक कलकत्ते में रहा। इसी अवसर में मिस्टर सी० आर० दास, मिस्टर सी० एफ़० एंड्रूज़ और रवींद्र बाबू आदि के व्याख्यान सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

इस आठ मास की भारत-यात्रा में जो कुछ ज्ञान मुझे प्राप्त हुआ, वह मैं समाचारपत्र आदि पढ़कर कदापि नहीं प्राप्त कर सकता था।

यात्री को चाहिए कि कलकत्ता, बंबई और मदरास अवश्य देखे। भारतवर्ष के बड़े शहर ये ही हैं। तीर्थों में काशी, मथुरा, अयोध्या, हरद्वार और गया मुख्य हैं। आगरे और दिल्ली में प्राचीन काल के हिंदू-राजों की ऐतिहासिक इमारतें देखने से हिंदू-सभ्यता का पता लगता है। भारत में मुसाफ़िरों के आराम के लिये धर्मशालाओं की भरमार है। हरएक बड़े शहर में धर्मशालाएँ हैं। उनमें यात्री तीन दिन तक मुफ़्त टिक सकता है। ये धर्मशालाएँ बड़े बड़े सेठ-साहूकारों की अपूर्व धार्मिक प्रवृत्ति का निदर्शन हैं। एक चीनी यात्री अपनी भारत-यात्रा के वर्णन में लिखता है—"India is a land of charity." (भारत उदारता का देश है) यह बिलकुल सत्य है। जनता के लाभ के लिये बहुत-सी संस्थाएँ स्थापित हैं। जैसे बालचर-सेवा-समिति (Boys Scout), विधवा-आश्रम, गोशाला, अनाथालय, धर्मार्थ औषधालय और पुस्तकालय आदि। शिक्षा का द्वार सबके लिये समान रूप से खुला है। चमार, भंगी भी पढ़कर उत्तम-उत्तम पदों पर पहुँच सकते हैं। सरकारी, सामाजिक तथा भिन्न-भिन्न ईसाई संस्थाओं की ओर से पाठशाला, विश्वविद्यालय, अनाथालय आदि स्थापित हैं। नई सभ्यता और अँगरेज़ी-शिक्षा का प्रभाव भारतवासियों पर बहुत पड़ा है, इसमें संदेह नहीं। किंतु उससे अधिकांश में लाभ ही हुआ है।

कुरीतियाँ और कुसंस्कार धीरे-धीरे कम होते जा रहे हैं। लोगों में स्वाधीन विचार और जाति-सेवा की लालसा नित्यप्रति बलवती हो रही है। अब लोग संकीर्ण विचारों के कूप से निकल-निकलकर उदारता तथा उन्नति के गहन समुद्र और महासागर में तैरने की कल्पना कर रहे हैं।

भारतवर्ष में आलस्य और बेकारी की बीमारी बहुत बढ़ी हुई है। तीर्थ-स्थानों में असंख्य संडे-मुसंडे, बेकार बैठे-बैठे पूरी-कचौरी, मिठाई-मालपुए छकते और गुलछर्रे उड़ाते हैं। कलकत्ते, मदरास और बनारस-जैसे शहरों में भिखमंगों की बड़ी भीड़ देख पड़ती है। भारत में भिखमंगों की जातियाँ ही बन गई हैं। वे भीख माँग-

कर ही अपना निर्वाह करती हैं। उनकी संतान भी इसी पेशे को अपनाती जाती है। वे अगर खेती या मेहनत-मज़दूरी करें, तो देश को बड़ा लाभ हो।

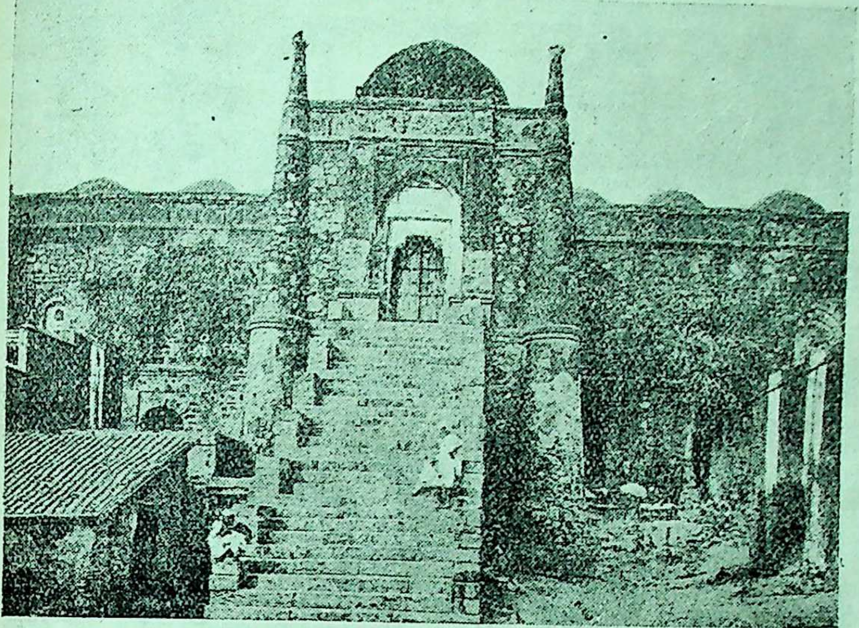

दिल्ली की कलर-मसजिद

भारतवर्ष में दो वस्तुओं की—सत्य और न्याय की—बड़ी आवश्यकता है। ज़मींदार अपनी प्रजा का अच्छा खाना-पहनना नहीं देख सकते। पुलीस और रेलवे-कर्मचारियों से लेकर अदालत के कर्मचारियों तक में अनुचित आमदनी का बाज़ार गरम है, जिसे वे अपना 'हक़' कहकर माँगते हैं। विना नज़राना दिए सरकारी दफ़्तरों में छोटे-से-छोटा काम भी होना महाकठिन है। अनुचित नज़राना लेनेवाले ये कर्मचारी अधिकांश हमारे भारतवासी भाई ही हैं!

एक अपने रिश्तेदार के लिये पासपोर्ट बनवाना था। इसके लिये मुझे इतनी कठिनाई हुई कि मैं ही जानता हूँ। इस कष्ट का मुख्य कारण यह था कि मैंने नज़राना बनाम रिशवत देने से इनकार कर दिया था। आख़िरकार मुझे एक गोरे मिशनरी की शरण लेनी पड़ी। तब उन्हीं तहसीलदार साहब ने मेरे काम को तुरंत कर दिया। केवल गोरे की सिफ़ारिश से रेल में सफ़र करनेवाले यात्री को सेकिंड या इंटर क्लास में आराम मिल सकता है। तीसरे दरजे का सफ़र कैसा तकलीफ़ देनेवाला होता है, उसमें कैसी भीड़ और गंदगी रहती है, यह भुक्तभोगी ही जान सकता है। तीसरे दरजे में बैठने की जगहें बड़ी ही तंग रहती हैं। यहाँ तक कि बहुतों को मीलों तक खड़े-खड़े सफ़र करना पड़ता है। जिन लोगों को हज़ार मील या उससे ज़्यादा का सफ़र करना पड़ता है, उनके लिये भी सोने का कोई बंदोबस्त नहीं है। तीसरे दरजे की टट्टियाँ साफ़ करने के लिये कोई बंदोबस्त नहीं रहता। अक्सर रात के वक़्त कोई रोशनी भी नहीं की जाती; और की भी जाती है, तो बहुत कम। गाड़ियाँ बड़ी मैली और गंदी रक्खी जाती हैं। इसके लिये केवल मुसाफ़िरों ही को दोष नहीं दिया जा सकता। अगर गाड़ियाँ साफ़-सुथरी रक्खी जायँ, अगर सफ़र में, बीच-बीच में, उनकी सफ़ाई होती रहे, अगर मुसाफ़िरों से बराबर ज़ोर देकर कहा जाय कि गाड़ी में सफ़ाई रक्खें, तो अवश्य सुधार हो सकता है। मुसाफ़िरख़ाने भी बड़े गंदे और तंग होते हैं। गाड़ी में एक तीसरे दरजे के मुसाफ़िर को जितनी जगह बैठने के लिये मिलती है, उससे चौदहगुनी जगह एक पहले दरजे के मुसाफ़िर को दी जाती है। लेकिन तीसरे दरजे का मुसाफ़िर जितना किराया देता है, उससे केवल छःगुना अधिक किराया पहले दरजे का मुसाफ़िर देता है। वास्तव में उसे देना चाहिए चौदहगुना ज़्यादा किराया। तीसरे दरजे के मुसाफ़िरों की सुविधा के लिये अवश्य कुछ सुधार होने चाहिए। कलकत्ते में भ्रमण करते समय मुझे फ़िज़ी से लौटे हुए अनेक भारतीय मिले। उनमें से ७० फ़ी सदी लौट आना चाहते थे। वे भारत की महँगी, कम वेतन, छोटे-छोटे कर्मचारियों का घूस लेना, जाति-भेद, गरमी-सरदी आदि असुविधाओं की शिकायतें करते थे। मेरे ख़याल में उनकी शिकायतें ठीक थीं। भारत में ग़रीब दुर्दशा से दबे तथा धनाढ्य अपनी महिमा में मस्त देख पड़ते हैं। महलों के पास झोपड़ियाँ बनी हुई हैं।

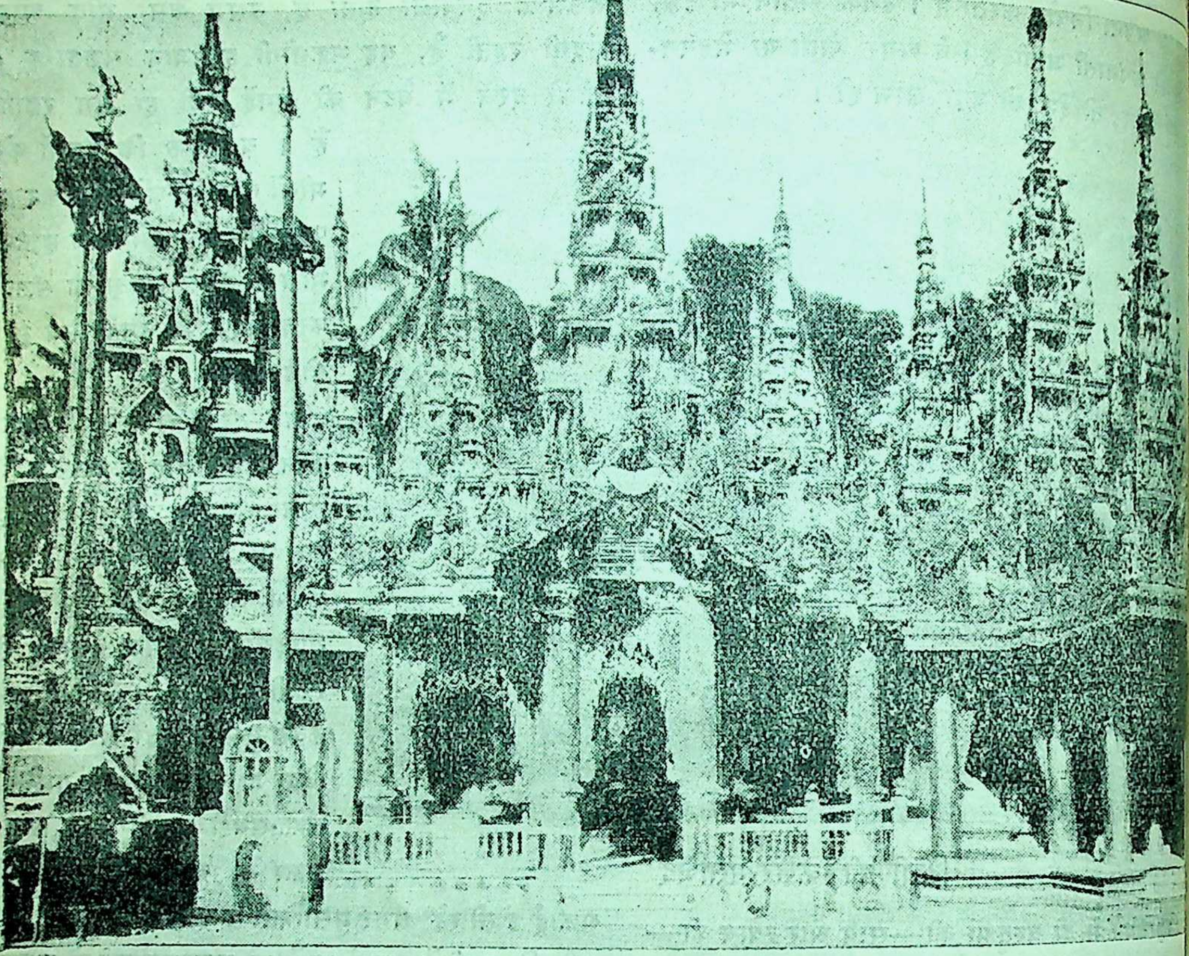

रंगून का बौद्ध-मंदिर

(लकड़ो में विचित्र बारीक नक़ाशो ओर शोशे की सुंदर जड़ाई)

मुझे इस बात का अंदेशा था कि भारत मेरे लिये एक नवीन देश है, और मुझ पर जल-वायु के परिवर्तन का बुरा असर अवश्य पड़ेगा। पर परमात्मा की कृपा से मेरा स्वास्थ्य अच्छा रहा। मेरे मदरासी मित्र मिस्टर एम्० श्रीरमन अपने परिवार-सहित मझसे फिर कलकत्ते में मिले। २८ सितंबर, १९२३ ई० को हम सब, एलोरा-जहाज़ द्वारा, प्रातःकाल, भारत-माता को अंतिम प्रणाम करके फ़िज़ी के लिये चल दिए। इस जहाज़ में सब १८० फ़िज़ी के यात्री सवार थे। अधिकांश फ़िज़ी को वापस जा रहे थे। उनमें लगभग ५० गुजराती और पंजाबी सौदागर, मोची, नाई और दरज़ी थे। समद्र का जल-वायु अच्छा था। यात्रियों को ज़्यादा तकलीफ़ नहीं हुई। रास्ते में तीन दिन रंगून (बरमा) म ठहरा। रंगून-शहर घूमने और बरमीज़ पॅगोडा देखने का मौका भी मिल गया। बरमियों के पॅगोडों की सुंदरता का वर्णन करने के लिये बहुत स्थान चाहिए। रंगून से चलक दिन पिनांग-टापू में ठहरे। पिनांग में इतने चीनी-आद हैं कि मानो वह चीनियों का देश ही है।

पिनांग से चलकर सिंगापुर पहुँचा। यहाँ जह की बदली हुई। गंजिस-नामक जहाज़ पर सवार हु यहाँ भी दो दिन तक रुकना पड़ा था। कप्तान से श में घूमने की इजाज़त लेकर जाना पड़ता था। यहाँ ९० फ़ी सदी चीनी बसते हैं।

हमारा जहाज़ जावा, सुमात्रा, बोर्निओ आदि टापु को रास्ते में छोड़ता हुआ ३१ ऑक्टोबर की रात १० बजे सूवा-घाट (फ़िज़ी) के निकट पहुँचा।

प्रातःकाल डॉक्टर आदि आए। डॉक्टरी के १२ बजे दिन को सब यात्री एक छोटे-से टापू (नुकू [illegible]) को सरकारी लंच द्वारा गए। यहाँ सबको ५ दिन रहना पड़ा। कस्टम-ऑफ़िसर ने सब सा

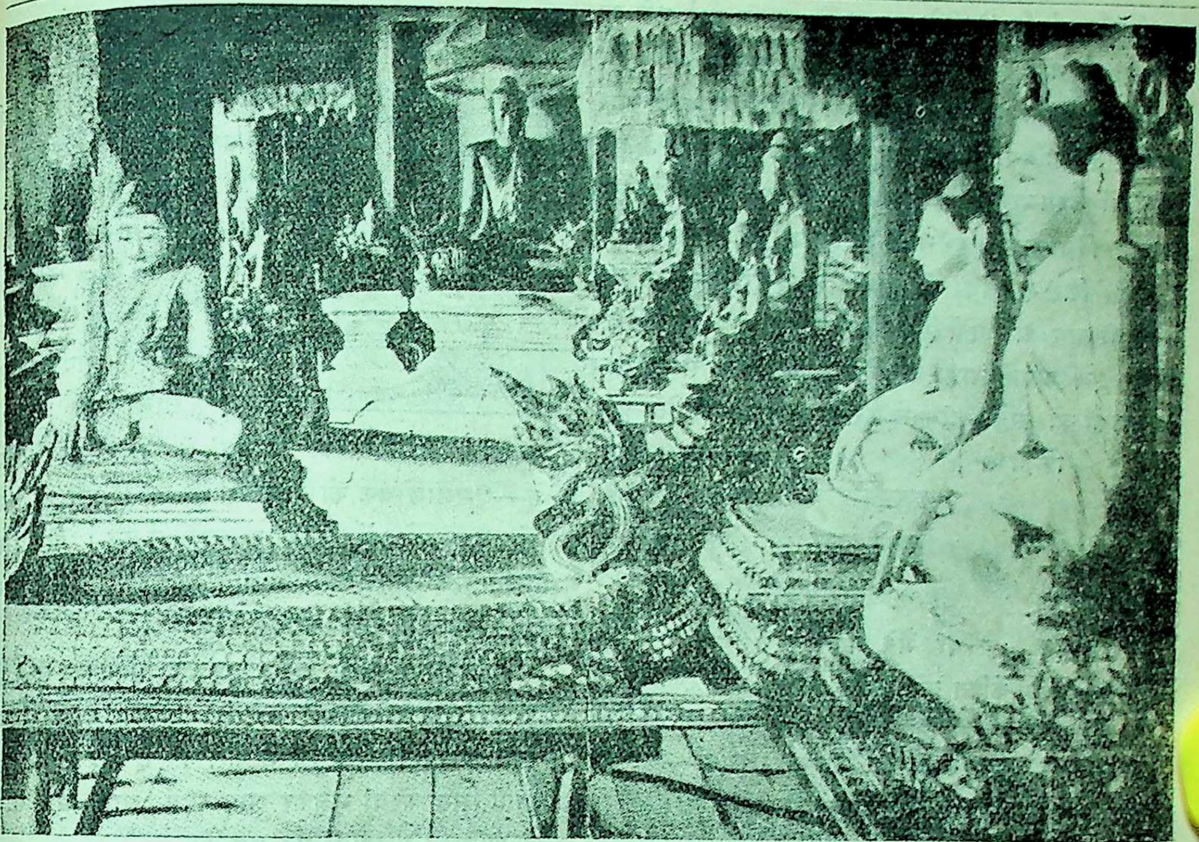

बुद्धदेव की मूर्तियाँ और पवित्र पद-चिह्न

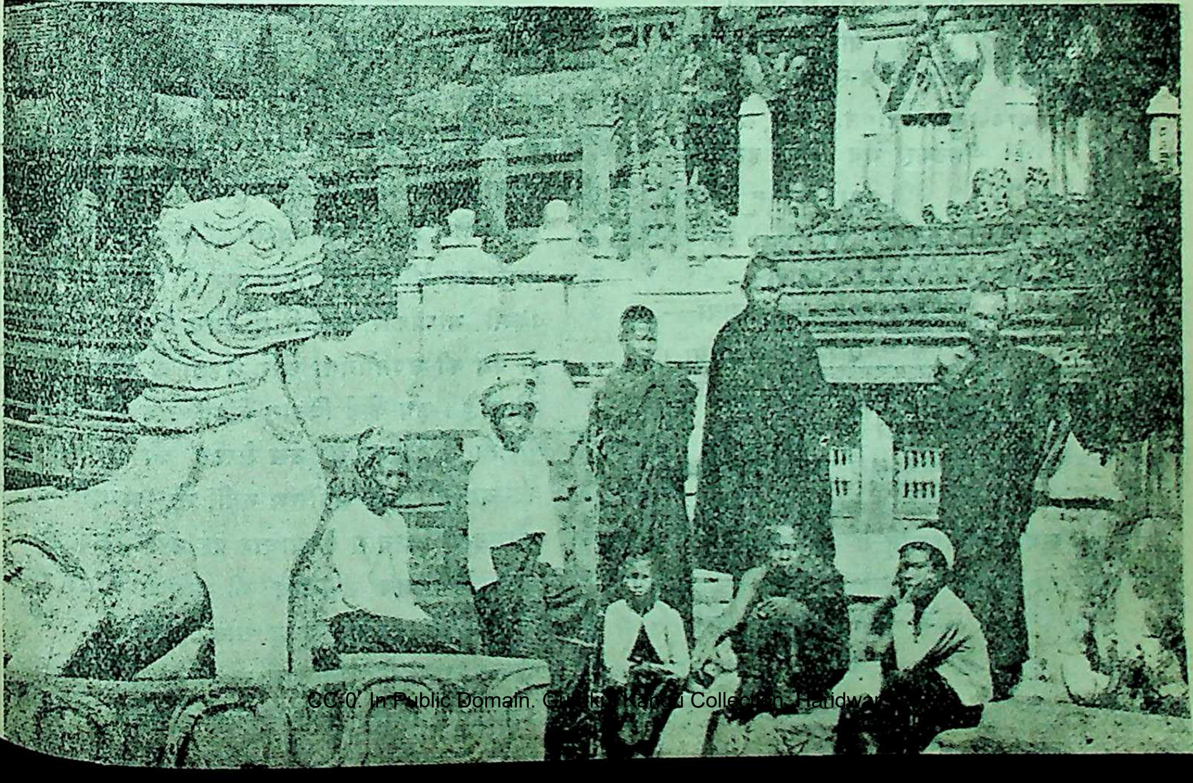

की जाँच की कि किसी के पास अफ़ीम आदि कोई नशे की चीज़ तो नहीं है। चरस, गाँजे, भंग, अफ़ीम आदि की यहाँ पर सख़्त रोक है। ९ दिन तक फ़िज़ी-सरकार की ओर से सब यात्रियों के भोजन आदि का प्रबंध रहा। हम लोगों के सामान में, प्लेग आदि के कीड़ों के डर के कारण, धुआँ दिया गया। हर यात्री को हुकवर्म की दवा पिलाई गई। फिर ९ नवंबर को सरकारी लंच द्वारा सूवा में सब यात्री आए, और वहाँ से अपने-अपने स्थान को चल दिए। बस, मैं अपनी यात्रा का विवरण यहीं पर समाप्त कर पाठकों को सप्रेम प्रणाम करता हुआ बिदा होता हूँ।

फ़िज़ी से } दुखहरन

परिचय

बार-बार तू आया,
पर मैंने पहचान न पाया।
हिम-कंपित कृश पाणि पसारे,
आया जब तू मेरे द्वारे,
लौट गया जो धक्का खाया—
बार-बार तू आया।
दीन-दृगों से निकल पड़ा तू,
बड़ा सरस था, विकल बड़ा तू,
पर मैं कौतुक से मुसकाया—
बार-बार तू आया।
गलित अंग, दुर्गंध-सना तू,
आया व्याकुल, व्यथित बना तू,
हटकर मैंने तुझे हटाया—
बार-बार तू आया।
आर्त गिरा कानों में छाई,
वह थी तेरी आहट लाई,
पर मैं उस पर ध्यान न लाया—
बार-बार तू आया।
पीड़ित के निःश्वास—अरेरे—
मैं क्या जानूँ कर थे तेरे,
मुझ पर था कितना मद छाया!—
बार-बार तू आया।
अब जो पहचानूँ मैं तुझको,
तो तू भूल गया है मुझको,
मैं हूँ—जिसने तुझे भुलाया!
बार-बार तू आया।

मैथिलीशरण गुप्त

आलोचना का उत्तर

माधुरी की १२वीं संख्या से करके कई संख्याओं में श्रीलक्ष् सिंहजी क्षत्रिय की की हुई पंडित पद्मसिंह शर्मा के 'सं वनी-भाष्य' के कुछ अंश संक्षिप्त आलोचना प्रक हो चुकी है। आपने वक्तव्य के तीन भाग कि पहला है 'पक्षपात का अभाव'। उसमें आप लि हैं—"समालोचक को उचित है कि किसी ग्रंथ की लोचना करने में कभी पक्षपात न करे। विशे तुलनात्मक समालोचना में तो भूलकर भी किसी का पक्षपात न करना चाहिए।"

श्रीलक्ष्मणसिंहजी का उक्त कथन बिलकुल सत्य परंतु 'संजीवनी-भाष्य' पर दोषारोपण करने में स्वयं 'पक्षपात' के चंगुल में फँस गए हैं। दूसरे को पाती सिद्ध करना भूलकर आप स्वयं 'आर्या और के अतिशय पक्षपाती बन गए हैं।

आपका यह कथन कि "शर्माजी ने तुलना समालोचना में विहारी के दोहों का पक्षपात गाथादि को हीन बताकर बड़ा अनर्थ किया है," तक सत्य है, इसका निर्णय पाठकों पर ही छोड़ा है। आपने आर्या को श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिये खींचा-तानी की है, वही हम पाठकों को दिख चाहते हैं। श्रीलक्ष्मणसिंहजी की खींचा-तानी दिखा पहले यह भी बतला देना ज़रूरी जान पड़ता है किसी भाष्यकार का किसी ग्रंथ के भाष्य की भू में ग्रंथ की उपयोगिता और श्रेष्ठता के प्रति क्या होता है। जब कोई विद्वान् किसी ग्रंथ का भाष्य क है, तो अधिकांश में उस लेखक को विश्वास रह कि वह ग्रंथ यदि सर्वोत्तम नहीं, तो अच्छा अवश्य और इसी विश्वास के आधार पर उस लेखक की ले उठती है। जब उस ग्रंथ की भूमिका आदि में उस उपयोगिता के प्रति कुछ आलोचना की जाती है, लेखक ग्रंथ के सर्वोत्तम भावों के अनुकूल बातें अन्यत्र खोजता है। यदि भाष्यकार उन ग्रंथों की उ

को संगृहीत करता है, जो उससे श्रेष्ठ हैं, तो वह इस बात को लिखने के लिये मजबूर हो जाता है कि इस ग्रंथ ने अमुक ग्रंथ से यहाँ नीचा देखा है, इसमें यहाँ अमुक त्रुटि है इत्यादि। ऐसी दशा में लेखक ग्रंथ की उपयोगिता और उच्चता सिद्ध करने की जगह उलटे उसकी हीनता सिद्ध कर बैठता है। वह अपने सारे परिश्रम के बाद एक व्यर्थ ग्रंथ का भाष्य लेकर जनता के सामने खड़ा होता है; और ऐसी अवस्था में वह ग्रंथ एक रद्दी-ख़ाने के कूड़े से अधिक महत्त्वशाली नहीं समझा जाता। आकाश के नक्षत्र जगमगाते हुए दीपकों की तरह कैसे सुंदर मालूम होते हैं, मानो स्वर्ग की देवियों ने अपने कंठ-हारों के मोती छितरा दिए हैं। परंतु जब उन्हीं नक्षत्रों के सौंदर्य की तुलनात्मक समालोचना निशापति चंद्रमा से की जाती है, तो अनायास ही मुख से निकल जाता है—

"एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न तु तारागणैरपि।"

उस समय समस्त नक्षत्रों की छटा मलिन हो जाती है—चंद्रमा के सामने तारों को कोई पूछता भी नहीं। यदि शर्माजी अपने संजीवन-भाष्य में वाल्मीकि आदि कवियों की कृतियों को उद्धृत करके विहारी के दोहों की हीनता सिद्ध करने को क़लम उठाते, तो उन्हें संजीवन-भाष्य का नाम "विहारी का कूड़ा करकट" रखना पड़ता; और अंत में वह यह लिखने के लिये बाध्य होते कि "विहारी कोई कवि-सवि नहीं था; हाँ, ब्रज-भाषा का एक तुक्कड़ ज़रूर था!" परंतु शर्माजी का उद्देश्य तो सत्य का दिग्दर्शन था। वह चाहते थे कि विहारी काव्य-संसार में कहाँ तक पहुँच पाए हैं, इसका ज्ञान साहित्य-प्रेमियों को करावें। शर्माजी ने कहीं भी यह नहीं लिखा कि विहारी ही सर्व-श्रेष्ठ कवि हैं। यदि गोवर्द्धनाचार्य का श्लोक विहारी के दोहे के समान भाव-पूर्ण नहीं है, तो गोवर्द्धनाचार्य के कवित्व के सम्मुख विहारी के कवित्व को श्रेष्ठ बता देना कोई पाप नहीं, और न इसे पक्षपात ही कहा जा सकता है। शर्माजी ने कहाँ तक बढ़ा-घटाकर बातें लिखी हैं, उन्होंने कितना भयंकर पक्षपात किया है, इसको विचारशील पाठक आप सोच सकते हैं। हम यहाँ केवल यह बता देना ज़रूरी समझते हैं कि श्रीलक्ष्मणसिंहजी ने स्वयं घोर पक्षपात करके किस प्रकार शर्माजी को पक्षपात का दोषी ठहराया है।

(१)

"तीज-परब सौतिन सजे, भूषन-बसन सरीर।
सबै मरगजे मुँह करी वही मरगजे चीर ॥३३३॥"

इस दोहे के साथ—

"हल फल ह्णाणपसाहिआणं छणवासरे सवत्तीणम्;
अज्जाएँ मज्जणाणाअरेण कहिअंव सोभाग्यम्।"
(उत्साहतरलत्वस्नानप्रसाधितानां क्षणवासरे सपत्नीनाम्;
आर्यया मज्जनानादरेण कथितमिव सौभाग्यम्।)

इस गाथा की तुलना की गई है। शर्माजी ने किन श्रेष्ठ उक्तियों द्वारा दोहे की श्रेष्ठता सिद्ध की है, यह पाठकगण संजीवनी-भाष्य तथा 'माधुरी' में देख सकते हैं। लक्ष्मणसिंहजी ने पक्षपात का स्वागत किस तरीक़े के साथ किया है, यह हम अब दिखाते हैं। आप लिखते हैं—"गाथा की नायिका आर्या ने सपत्नियों को बिना स्नान किए ही डंके की चोट से अपने सौभाग्य की सूचना दे दी थी; और स्पष्ट बतला दिया था कि तुम कितनी ही बनो-ठनो, किंतु प्रियतम का प्रेम मेरे ही सौभाग्य में है। सपत्नियों को भी जँच गया था कि वे कृतकार्य न होंगी।" आगे चलकर आपने, किसी व्यक्ति पर वज्रपात होने का उदाहरण देकर, यह सिद्ध किया है कि नायिका की सहचरी पत्नियाँ यह जान गई थीं कि वे कभी कृतकार्य न होंगी।

कितनी बड़ी विडंबना है; कैसी ज़बरदस्त धमकी है! हम नहीं कह सकते कि नायिका की सौतें इस धमकी में आ गई थीं या नहीं, और उन्होंने अपना इरादा (नायक-सम्मिलन) बदल दिया था या नहीं। परंतु श्रीलक्ष्मणसिंहजी ने चट कह ही डाला—"वे जान गई थीं कि हम कृतकार्य न होंगी!" संभव था, परीक्षा के समय गाथा की नायिका बुरी तरह से फ़ेल होती; मगर किया क्या जाय, सिंहजी ने वज्रपात की युक्ति से अन्य बेचारी सौतों को निराश ही कर दिया! "अरी पगलियो! तुम कृतकार्य न होओगी!"—इस धमकी में आकर बेचारी लौट गई होंगी। यद्यपि ऐसी गीदड़-भभकी में नायिका की सौतें आईं या नहीं—इसका पता गाथा से नहीं चलता, परंतु इससे क्या होता है! श्रीलक्ष्मणसिंहजी को तो गाथा की नायिका को पास करना मंज़ूर है। एक अस्थि-पंजर, दम का रोगी, डंके की चोट से यह भले ही कह सकता है कि "भाई, तुम कितने ही डंड-बैठक

लगाओ, पर प्रोफ़ेसर राममूर्ति को तो मैं ही पछाड़ूँगा !''; किंतु परीक्षा-स्थल पर उसका कृतकार्य होना कहाँ तक संभव है, यह श्रीलक्ष्मणसिंहजी भी जानते होंगे। बड़े-बड़े दक्ष विद्यार्थी, जिन्हें सोलहो आने सफलता की आशा होती है, परीक्षा में फ़ेल होकर रोते देखे गए हैं। वैसे ही गाथा की नायिका ने भी अपनी सफलता की भविष्यद्-वाणी ही की है ; परीक्षा में उत्तीर्ण होने का तो उसे अभी अवसर ही नहीं प्राप्त हुआ। कौन जानता है, परीक्षा के समय भाग्य-चक्र उलटा घूम जाय। पर इधर देखिए, यहाँ तो दोहे की नायिका ने परीक्षा पास कर ली है—''सबै मरगजे मुँह करी, वहै मरगजे चीर।'' सफलता भी ऐसी-वैसी नहीं, सौतें बुरी तरह पछड़ गई हैं। ''वहै मरगजे चीर सबै मरगजे मुँह करी''—उस मैले वस्त्र ने ही सौतों की सारी बन-ठन को धूल में मिला दिया ! काले-काले बादलों से घिरे हुए दिवाकर ने रत्न और बिल्लौर आदि के जड़ाव से चमकीली दामिनी के दिमाग़ को दूर कर दिया ! कहिए लक्ष्मणसिंहजी, गाथा की नायिका परीक्षा में शरीक़ हुई या नहीं ? वह जब शरीक़ होकर प्रमाण-पत्र पा लेगी, तब उसकी श्रेष्ठता की चर्चा करना। अभी तक तो दोहे की नायिका ही शिरोमणि है।

आप लिखते हैं, गाथा की नायिका आर्या है, अतः वह फूहड़ या आलसी नहीं हो सकती। हम भी तो यही कहते हैं कि गाथा के कवि ने 'आर्या'-शब्द का कितना दुरुपयोग किया है। क्या लक्ष्मणसिंहजी यह बतला सकते हैं कि आर्या के हृदय में स्नानानादर का घृणित भाव आ सकता है ? आर्या की कितनी मिट्टी ख़राब की है। विना नहाए भी गाथा की नायिका उत्तम वस्त्र पहने होगी। यदि आपके कथनानुसार वह कँगली नहीं है, तो वह स्नानानादर के समय भी कुछ-न-कुछ रेशम आदि के सुंदर वस्त्र पहने ही होगी, जो उसके आनन की शोभा को कुछ-न-कुछ ज़रूर बढ़ा रहे होंगे। परंतु दोहे की नायिका तो कँगली थी (आपने लिखा है कि वह निर्लज्ज, मैली-कुचैली, कँगली होगी)। उसके पास वस्त्र कहाँ ? वही रति-मर्दित मैला-कुचैला वस्त्र ! तिस पर भी बाज़ी ले गई। पर गाथा की नायिका उत्तम वस्त्रों की ओट में केवल धमकी ही दे पाई है। हमारी राय में तो यदि वह परीक्षा में कहीं उत्तीर्ण हो गई, तो भी दोहे की नायिका से हीन ही रहेगी ! सोचिए तो, में केवल नायिका के सौंदर्य की प्रशंसा की गई है ; पर उसके वर्ण, कर्मकांड तथा धनादि का कुछ नहीं है—दोहा संध्या, अग्निहोत्रादि की स्तुति नहीं वह तो नायिका के सौंदर्य का द्योतक है। वहाँ निर्ल कँगलेपन या मैलेपन की कुछ चर्चा नहीं है। हम भी नहीं कह सकते कि दोहे की नायिका आर्या है अनार्या ? कारण, दोहा यह कुछ भी नहीं बता परंतु गाथा की नायिका आर्या होकर भी स्नानान कैसे करती है, यह हम नहीं समझ सके। संभव श्रीलक्ष्मणसिंहजी की आर्या अभिमानवश ऐसा गई हो। लेकिन तब तो गाथा में 'आर्यया' न हो 'अनार्यया' होना चाहिए था। दोहे की नायिका श्रीलक्ष्मणसिंहजी जितनी नीच, कँगली, मैली-कुचै बतलाते जायँगे, उसके सौंदर्य का गौरव उतना ही ब जायगा ; क्योंकि उस महामैली-कुचैली के ही—'' मरगजे मुँह करी वहै मरगजे चीर।'' कहीं तुल इस सौंदर्य की ? दोहे की नायिका के सौंदर्य में कि चमत्कार है ! परंतु गाथा की आर्या नायिका तो के धमकी देने में ही एक पाप कर गई है ! श्रीलक्ष्मण जी ने अपनी आर्या से स्नानानादर का प्रायश्चित्त न क कर कितना स्पष्ट पक्षपात किया है, यह पाठकों को अब भी बतलाना पड़ेगा ?

(क्रमशः)

हरगुलाल वा

पर्यवसान

(१)

पश्चिम-पयोधि के सुवर्ण-रेणुमय पर भगवान् अंशुमाली पूर्ण प्रतापोज्ज्वल तेज से प्रोद् सित हो रहे थे। उनके खचित कांचन-किरीट की राशि नर्मदा की निर्मल तरंग- पर नृत्य कर रही थीं। सु शीतल सांध्य समीर के मृदुल हिल्लोलों से महा प्रकृति देवी का हरित्-श्यामल अंचल चंचल हो रहा

नर्मदा-तटवर्ती मालती-मंडप एक अपूर्व शोभामयी रंगभूमि में परिणत हो गया था। लताएँ आनंद से झूम रही थीं; विहंग-मंडली मधुर स्वर से अलाप रही थी; मधुप वीणा बजा रहा था; कली चुटकी बजाकर ताल दे रही थी; और नर्मदा की कलकल-नादिनी धारा रस की सरिता-सी बही जा रही थी।

ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानो रंगभूमि किसी के स्वागत के लिये हर्षमयी, संगीतमयी एवं उल्लासमयी हो रही है। प्रत्येक पल्लव से प्रेम की विमल आलोकच्छटा प्रस्फुटित हो रही थी; प्रत्येक कुसुम मद का पूर्ण पात्र हो रहा था; प्रत्येक लता अपने आंतरिक अनुराग से प्रफुल्लित हो रही थी। कोई इष्ट अतिथि, कोई वांछित सौंदर्य, कोई पूर्ण प्रेम पदार्पण करनेवाला था; और प्रकृति स्वयं शृंगारमयी होकर उसकी प्रतीक्षा कर रही थी।

उसी समय, संध्या के उस अरुण-स्निग्ध प्रकाश में, प्रकृति के उस परम रम्य विलास में, नर्मदा के उस विमल संगीत-परिहास में, पश्चिम-प्रांत की ओर से चार सुंदरी किशोरियों ने प्रवेश किया। रंगभूमि आनंद से उन्मत्त, हर्ष से रोमांचित एवं मद से प्रोल्लसित हो गई। वे धीरे-धीरे, मंद मातंग की गति से, उसी कोमल कुंज की ओर अग्रसर हुईं। पक्षिगण और भी उच्च स्वर से चहचहा उठे; नर्मदा की तरंगराजि और भी आनंद से कलोल करने लगीं; प्रकृति का श्यामल अंचल और भी अधिक वेग से चंचल हो उठा। उन चारों में की मध्यमणि निर्जन निकुंज के तोरण-द्वार पर पड़े हुए विमल स्फटिक-स्वच्छ शिलाखंड पर विराज गईं, और शेष तीनों में से एक उसके दक्षिण-देश में, दूसरी उसके वाम-पार्श्व में और तीसरी उसके सम्मुख-प्रांत में खड़ी हो गई। निकुंज आनंद से प्रदीप्त हो उठा।

वह एक अपूर्व दृश्य था। मानो आराधना, साधना एवं सिद्धि के मध्य में महामाया की विमल आनंदमयी अक्षय ज्योति प्रोद्भासित हो रही थी; मानो विलास-श्री, आनंद की आभा एवं वैभव की विभा के मध्य में सौंदर्य की सजीव शोभा विलसित हो रही थी; मानो कल्पना, चिंता एवं अनुभूति के मध्य में कविता की कलित कांति स्फुरित हो रही थी; मानो ताल, लय एवं मूर्च्छना के मध्य में मूर्तिमती वसंत-रागिनी सरसित हो रही थी; मानो स्वर्ग की शोभा, पृथ्वी की प्रभा एवं रसातल की रमणीयता के मध्य में साक्षात् राजराजेश्वरी महामाया त्रिपुरसुंदरी देदीप्यमान हो रही थीं। कैसा पावन, कैसा प्रोज्ज्वल, कैसा मनोरम एवं कैसा शांतिमय सजीव चित्र था!

सामने तरंगित हो रही थी निर्मल विंध्य-नंदिनी नर्मदा; गगन-प्रांत में प्रवाहित हो रही थी अरुण-रागमयी सांध्य-सरिता; एवं उन चारों की सम्मिलित सौंदर्य-श्री से कल्लोलित हो रही थी शृंगार की रस-तरंगिणी।

विमल शिलाखंड पर आसीन थीं अनूपकुमारी जयंती, और उनके इधर-उधर खड़ी थीं उनकी तीन सखियाँ—श्यामा, शारदा एवं रत्नमाला।

राजकुमारी जयंती ने कहा—"श्यामे, आज सांध्य-श्री की इस स्निग्ध आभा में प्रकृति का यह परम पवित्र सौंदर्य और भी प्रोज्ज्वल हो गया है।"

श्यामा—"हाँ राजकुमारी, ठीक वैसे ही देदीप्यमान हो रहा है, जैसे सहज स्नेह की स्निग्ध सुषमा से तुम्हारा चंद्र-निंदक मुख-मंडल सदा प्रदीप्त रहता है।"

राजकु०—"शारदे, माधवी-लता की यह विकास-लीला भी कैसी ललित, शांत एवं आमोदमयी है! मानो आंतरिक आनंद का सजीव उदाहरण है।"

शारदा—"हाँ, राजकुमारी, ठीक वैसी ही, जैसी तुम्हारे कमल-नयनों की शोभा अनुराग से अरुण, करुणा से कोमल एवं सरलता से सदा पवित्र रहती है।"

राजकु०—"तुम दोनों तो जैसे कवि-सी हो गई हो। पर रत्नमाले, तुम्हीं देखो, नर्मदा की यह कलकलमयी तरंग-माला कैसे अनंत आनंद-संगीत गाती हुई अपने उद्दिष्ट पथ पर निरंतर प्रधावित हो रही है।"

रत्नमाला—"हाँ राजकुमारी, तुम्हें यह प्रेम का रसमय राग सुना रही है। तुम्हें बता रही है कि मैं जैसे आनंद-रागिणी गाती हुई अपने प्रणय-पात्र सागर की ओर अविश्रांत गति से प्रवाहित हो रही हूँ, वैसे ही एक दिन तुम्हारे हृदय की भी प्रवृत्ति उद्दाम गति से किसी महाभाग प्रेमी की ओर प्रधावित होगी। वह मानो तुम्हारे यौवन-वन में शीघ्र ही गूँजनेवाली वंशी-ध्वनि की मंगलमयी सूचना दे रही है; वह मानो तुम्हारे कांति-कुंज में गाई जानेवाली कविता की आदि-कल्पना का आभास-सा दे रही है, वह मानो हमारे हृदयों की अभिलाषा को अस्पष्ट रूप में उद्घोषित कर रही है।"

राजकु०—"हो सकता है रत्नमाले; पर जानती हो,

मैंने अपने परमाराध्य हृदयेश्वर के स्वरूप की क्या कल्पना की है ?"

तीनों सखियाँ—"नहीं राजकुमारी। उसे सुनाने की कृपा कीजिए।"

राजकु०—"सुनो, जिसके मधुर अधर पर इसी प्रस्फुटित पुष्प का-सा सरल, मंद हास्य नृत्य करता होगा—जिसके लोचन-कमलों से दया, प्रीति और आनंद की सम्मिलित त्रिवेणी प्रवाहित होती होगी—जिसके मुख-चंद्र पर प्रकृति और आत्मा का समस्त सौंदर्य, संध्या और उषा का विमल, ललित लावण्य, एवं स्वर्ग और मर्त्य का संपूर्ण प्रकाश प्रतिफलित होता होगा—जिसका हृदय कविता की-सी मधुरता, चिंता की-सी पवित्रता एवं कल्पना की-सी आलोक-माला से प्रोद्भासित रहता होगा—वही मेरा हृदयेश्वर होगा ; उसी के चरण-तल में मेरा यह तुच्छ शरीर, मेरा यह साधारण यौवन सादर, सस्नेह एवं सानंद समर्पित होगा। यदि वह मर्त्य में न मिला, तो मैं उसे स्वर्ग के नंदन-वन में ढूँढूँगी ; और यदि वहाँ भी उसका कांत दर्शन न प्राप्त हुआ, तो आत्मा के तपोवन की प्रत्येक कुटी को खोज-खोजकर उसका पता लगाऊँगी।"

ठीक उसी समय पीछे से एक परम सुंदर युवक, गैरिक वस्त्र-परिधान किए, प्रत्यक्ष सुर-किशोर की भाँति, राजकुमारी के सम्मुख आकर खड़ा हो गया। मधुर, गंभीर ध्वनि में उसने कहा—"राजकुमारी, तुम्हारी कल्पना सत्य होगी। महामाया ने तुम्हारी कल्पना के अनुरूप ही तुम्हारे योग्य युवक की सृष्टि करके उसे इस धरा-धाम में भेज दिया है। तुम्हारा यह यौवन-वन उसी की प्रीति-सरिता से सिंचित होगा। राजकन्या, यह सत्य है; इसमें संदेह के लिये कण-मात्र स्थान नहीं।"

राजकुमारी ने तापसकुमार की ओर देखा—अतृप्त नयनों से देखा—बार-बार देखा, और देखकर नयन नीचे कर लिए।

रत्नमाला ने पूछा—"भगवन्, आपका शुभ परिचय ?"

तापसकुमार—"सामने उस पर्वत-खंड के पाद-प्रांत में मेरी कुटी है—वहीं मैं रहता हूँ। मैं ब्रह्मचारी हूँ। इस समय मेरा इतना ही परिचय पर्याप्त होगा।"

तापसकुमार चला गया। राजकुमारी जयंती भी तीनों सखियों के साथ अपने प्रासाद को लौट आ उसका हृदय-कुंज प्रेम-पारिजात के परिमल से परिपूर्ण

राजकुमारी की प्रणय-सूचना का रहस्य रत्नमाला जान लिया ; पर रत्नमाला की अस्पष्ट अज्ञेय भाव का परिचय किसी को नहीं मिला।

सत्य कल्पना का स्थूल, सुंदर स्वरूप है, और कल्प सत्य की स्निग्ध कोमल निराकार धारणा।

(२)

रजनी-सुंदरी की विशाल वेणी प्रदीप्त नक्षत्र-राशि गुंफित थी। नर्मदा की शीतल तरंग-माला के स्पर्श शीतल, प्रस्फुटित पुष्प-पुंज के परिमल से सौरभित, हरिचंदन के सरस सहवास से मदमत्त होकर मंद सम प्रवाहित हो रहा था। सारा विश्व प्रसुप्त था। विशा गगन निद्रा की मधुर कल्पना-सा, विस्तृत ब्रह्मांड विश्रा का सुंदर चित्र-सा, एवं समस्त प्रकृति-सौंदर्य शांति सरस चिंता-सा प्रतीत होता था। रत्नमाला राजप्रासा की सबसे ऊँची छत पर विचरण कर रही थी—चंच विकल भाव से इधर-उधर देख रही थी। वह आ आप अर्ध स्वगत भाव में कहने लगी—"राजकुमारी न, यह नहीं होने का। तापसकुमार को जो तुम चाह हो, तो मैं भी उस पर पूर्ण रूप से अनुरक्त हो चुकी हूँ। तुम्हारे पास साधन हैं। तुम हो अनिंद्य रूपशालिनी, तु हो परम वैभवमयी अनूप-राजकुमारी। मैं एक साधार दासी-मात्र हूँ। पर, तो भी, मैं चेष्टा करूँगी, देखूँ कुटिल नीति के द्वारा उन तापसकुमार के कंठ-देश किसी तरह अपनी बाहु-माला विलंबमान कर सकती या नहीं ? बात साधारण सी नहीं है ; फल सहज-ल नहीं है ; सफल परिणाम का पूर्ण निश्चय भी नहीं है

"मैं मानती हूँ राजकुमारी, यह तुम्हारे साथ प विश्वासघात होगा। तुमने मुझे सदा छोटी बहन की भाँति माना है; तुमने सदा मुझे निःस्वार्थ स्नेह से स्ना कराया है। पर नहीं, इस प्रणय-व्यापार में इसका ध्या न रख सकूँगी। पाप पुण्य, धर्म-अधर्म, प्रतिकार-परो कार आदि के परखने का न तो यह समुचित स्थल है और न उसके लिये पर्याप्त समय ही। मैं विश्वास कर हूँ कि यदि अपने इस भाव को तुम्हारे सम्मुख निवेद कर दूँ, तो तुम अवश्य ही मुझे अपने सौभाग्य-सिंहास पर अर्द्धासन देने को समुद्यत हो जाओगी। पर व

स्थिति बड़ी लज्जाजनक होगी। मैं दासी, तुम अधीश्वरी। उस समय भी मैं दासी ही रहूँगी, और तुम रहोगी वही विदैश्वर्यशालिनी राजराजेश्वरी। ना, ना, मैं दान नहीं लूँगी। प्रणय के इस प्रयाग-तीर्थ पर खड़ी होकर, आँचल पसारकर, तुमसे सौभाग्य की भिक्षा नहीं माँगूँगी।

"कुछ भी हो, मैं तापसकुमार को अपनाने के लिये सब कुछ करूँगी। आवश्यक होगा, तो अपने प्राणों की आहुति भी दे दूँगी। यदि उन्हें—अपने हृदयेश को—प्राप्त न कर सकी, तो जीवन व्यर्थ है, सौंदर्य निस्सार है, यौवन वृथा है।

"रत्नमाला सब कुछ कर सकती है। राजकुमारी, वह निर्विकार रहकर तुम्हारा यह सौभाग्य-सदन नष्ट कर सकती है। तापसकुमार को अपने हृदय में लगाने के लिये वह नरक का महापीड़न, अग्नि का कठोर दहन, एवं यातना का निष्ठुर नियंत्रण, सब कुछ सह सकती है। मैं छोड़ देती इस आशा को, पर असमर्थ हूँ। आहा! वह कैसी रमणीय मूर्ति है! कैसी पवित्र प्रतिभा है! कैसा स्वर्गीय सौंदर्य है!

"उनकी वाणी कैसी प्रसन्न और गंभीर थी—जैसे रसमयी कविता का अविरल प्रवाह हो। उनकी नयन-श्री कैसी अनुरागमयी थी—जैसे प्रणय, करुणा एवं त्याग की सम्मिलित त्रिवेणी से पवित्रीकृत प्रयाग-स्थली हो। उनका मुख-मंडल कैसा स्निग्ध और सुंदर था—जैसे भूतल की श्री एवं स्वर्ग की सुंदरता का पवित्र संगम-क्षेत्र हो। और, वह मंद, सहज मुसकान कैसी कोमल एवं मधुर थी—जैसे मंदाकिनी-सिंचित पारिजात-पादप के कोमल किसलय का प्रथम चारु विकास हो। वह शुभ्र, सुंदर, तेजोमय ललाट कैसा प्रोज्ज्वल था—जैसे सूर्योद्भासित हिम-श्री की मधुर विलास-लीला की प्रदीप्त हेममयी रंगभूमि हो। और, कैसी रुचिर, कैसी मनोहर थी वह गैरिक वसन की प्रफुल्ल शोभा—जैसे भगवती विभूति वैराग्यांबर पहनकर तपोवन में कठोर साधना के लिये प्रविष्ट हुई हों। आहा! कैसा पूजनीय, कैसा कमनीय, एवं कैसा वंदनीय वह सुंदर स्वरूप था!

"तापसकुमार! तुम रत्नमाला के प्रभु हो, इष्ट हो, परमाराध्य पतिदेव हो। संसार की सारी शक्ति, स्वर्ग का सारा बल, तुम्हें मुझसे अलग नहीं कर सकता। तुम मेरे, और मैं तुम्हारी। तुम्हें यह संबंध स्वीकार हो, या न हो, पर मैंने—तुम्हारी दासी ने—तुम्हें उस नर्मदा-तट पर, उस स्निग्ध संध्या-काल में, अपना पति कहकर वरण किया है, और आज इस नक्षत्रावली के सम्मुख, सर्वव्यापिनी महाशक्ति को साक्षी बनाकर, मैं उद्घोषित करती हूँ कि तुम मेरे पति हो, मेरे देव हो, मेरे प्रकाश हो, मेरे भव-सागर के एक-मात्र नाविक हो।"

प्रणय के प्रशांत पयोधि में किस समय वाड़वानल प्रदीप्त हो उठती है, इसका पता लगाना एकांत असंभव है। ईर्ष्या और द्वेष, ये दोनों प्रणय-प्रासाद में जितनी सरलता एवं जितने प्रच्छन्न भाव से प्रवेश कर जाते हैं, उतनी जल्दी वे और किसी प्रवृत्ति के मंदिर में प्रवेश नहीं कर पाते।

प्रेम के पतन और उत्थान का रहस्य अंतर की इसी प्रवृत्ति-लीला के कानन में आदि-काल से सन्निहित है, सन्निविष्ट है।

(३)

नर्मदा-प्रासाद के एक विलासमय मंदिर में कोमल आसन पर आसीन थीं राजकुमारी जयंती, और उनके सामने ही बैठी हुई थी उनकी प्यारी सखी रत्नमाला। अपने हृदय-धन दुष्यंत को पत्र-लेखन के समय त्रिभुवन-सुंदरी शकुंतला के मुख-मयंक पर जो मंजुल भाव प्रादुर्भूत हुआ था, भगवती गिरिराज-किशोरी के मंदिर में भगवान् रामचंद्र की प्राप्ति-कामना से पुष्पमाला अर्पण करती हुई जगज्जननी जनकनंदिनी के वदनारविंद पर जो श्री समुद्भूत हुई थी, देवादिदेव महादेव के प्रणय की उपलब्धि के लिये कठोर तपश्चर्या में प्रविष्ट होते समय हिमाचल-सुता महासती के आनन-चंद्र पर जो प्रफुल्ल शोभा आविर्भूत हुई थी, राजकुमारी जयंती का मुख-सरोज भी उसी सुंदर भाव-प्रभा से परिप्लावित हो रहा था। निर्निमेष-दृष्टि से रत्नमाला इस सौंदर्य को देख रही थी।

राजकुमारी ने कहा—"बहन रत्नमाले, तुम जानती हो, मैं तुम्हें कितना स्नेह करती हूँ?"

रत्नमाला—"जानती हूँ, राजकुमारी मुझ पर सहोदरा से भी अधिक प्रेम रखती हैं। किंतु दासी ने भी उनकी किसी आज्ञा की कभी अवहेलना अथवा अवज्ञा नहीं की है।

राजकुमारी—"सो सर्वांश में सत्य है बहन। तुम यह भी जानती होगी कि कुमारी जयंती की रहस्यपात्री एक-मात्र तुम्हीं हो। तुम्हारे ही निर्मल स्वच्छ हृदय-दर्पण में मैं अपने भावों की छाया को प्रतिबिंबित करती हूँ। तुम्हीं मेरी विश्वास-भूमि हो।"

रत्नमाला—"इस सहज-सुंदर सौजन्य के लिये मैं राजकुमारी की चिरकृतज्ञ रहूँगी। राजकुमारी को अपने इस विश्वास-स्थापन के लिये कभी पश्चात्ताप न करना पड़े, इसके लिये मैं भी सदा सचेष्ट रहती हूँ। राजकुमारी का रहस्य मेरे हृदय में, प्राणों की भाँति, चिरजीवित, किंतु चिरनिहित रहेगा।"

राजकुमारी—"मुझे ऐसी ही आशा, ऐसा ही निश्चय है। बहन, आज मैं एक बड़े गुप्त व्यापार में तुम्हारी सहायता की याचना करती हूँ। मुझे विश्वास है कि तुम सहोदरा की भाँति मेरे अनुरोध की रक्षा करोगी। बहन, यह मेरे जीवन-मरण का प्रश्न है।"

रत्नमाला—"हृदय का बलिदान करके भी मैं तुम्हारी आज्ञा का पालन करूँगी। राजकुमारी, मैं जानती हूँ, किस रहस्यमय व्यापार में तुम मेरी सेवा चाहती हो। मैं उसके लिये प्रसन्नता-पूर्वक प्रस्तुत हूँ। मेरी तुच्छ सेवा का इससे अधिक अच्छा अवसर और क्या होगा?"

राजकुमारी—"जानती हो? असंभव! अच्छा, कहो सखी, किस व्यापार की सिद्धि में मैं तुम्हें नियुक्त करना चाहती हूँ?!"

रत्नमाला—"उस स्निग्ध संध्या-काल में, नर्मदा-तट पर, जिन परम सुंदर तापसकुमार का दर्शन तुम्हें प्राप्त हुआ था, उन्हीं के समीप तुम अपनी प्रणय-स्वीकृति का शुभ-समाचार भेजना चाहती हो। राजकुमारी, मेरी कल्पना कदाचित् असंगत नहीं है?"

राजकुमारी—"नहीं। पर तुमने यह अनुमान कैसे किया रत्नमाले?"

रत्नमाला—"तुम्हारी इस अनुराग-अरुण लोचन-श्री से, तुम्हारे इस स्नेह-सरस स्वर-भंग से, तुम्हारे प्रीति-प्लावित भाव-विकास से। राजकुमारी, मैं इस रहस्य की प्राण-पण से रक्षा करूँगी। क्षमा करना राजकुमारी, मैंने स्पष्ट रूप से तुम्हारे इस प्रणय-रहस्य को तुम्हारे राग-रंजित कपोलों पर सलज्ज भाषा में लिखा हुआ देखा था। तुम्हारी प्रत्यक्ष स्वीकृति से पहले ही मैंने इस रस के परिपाक की समुचित आयोजना कर ली है।"

राजकुमारी—"सो कैसे? स्पष्ट रूप से कहो रत्नमाले।"

रत्नमाला—"राजमाता की पूजा के लिये नियमानुसार आज भी मैं जल लेने के लिये नर्मदा-तट पर, उषा-काल में, गई थी। उस समय तट पर कोई नहीं था। केवल आकाश में पतितप्राय तारकावली क्षीण ज्योति से जगमगा रही थी। उस समय, हृदय की किसी गुह्यतम प्रेरणा से प्रेरित होकर मैंने उन महाभाग तापसकुमार की पर्णकुटी में प्रवेश किया।"

राजकुमारी—"पर्णकुटी में प्रवेश किया? क्यों?"

रत्नमाला—"अपनी सहोदरा-समान राजकुमारी की आंतरिक अभिलाषा की परिपूर्ति-साधना के लिये। मैंने क्या अक्षम्य अपराध किया राजकुमारी?"

राजकुमारी—"नहीं। फिर क्या हुआ?"

रत्नमाला—"मुझे देखते ही तापसकुमार का मुख-कमल प्रफुल्ल हो गया। उन्होंने बड़े ही प्रेम एवं आग्रह से तुम्हारे कुशल-समाचार पूछे; और अस्पष्ट भाषा में व्यंग्यमयी वाणी में, अपने हृदय के अनुराग की कथा भी कही। चलते समय उन्होंने मुझे एक वन-पुष्प-माला भेंट दी है। राजकुमारी की शृंगार-लीला के लिये मैं उसे लाई हूँ। तापसकुमार ने उसे मंत्र-पूत आशीर्वाद-सलिल से अभिषिक्त किया है। उन्होंने कहा—यह अक्षय है, यह कभी परिम्लान नहीं होगी। इसकी सुगंध तथा सुंदरता उसी दिन नष्ट होगी, जिस दिन हम दोनों में से एक का भी प्रणय-बंधन शिथिल होगा।"

रत्नमाला ने कमल-पत्र में रक्खी हुई वही प्रफुल्ल माला अपने अंचल से निकाली। सारा मंदिर स्वर्गीय सौरभ से परिपूर्ण हो गया। राजकुमारी ने बड़े प्रेम और बड़े उल्लास से वह प्रिय-गुंफित वनमाला अपने मुक्ता-माला-विभूषित कंठ-देश में डाल ली। वह उनके प्रणय का पुण्य चिह्न और उनके अनुराग की भविष्य-वाणी थी।

राजकुमारी ने सस्नेह रत्नमाला को आलिंगन कर लिया। प्रेम-पूर्वक कहने लगीं—"प्यारी बहन! तुम्हारे इस ऋण से मैं आजन्म उरिन नहीं हो सकती। बहन, तुम्हें इसका मैं क्या समुचित पुरस्कार दूँ?"

रत्नमाला—"राजकुमारी, वर दो कि यदि कभी मुझे किसी विशेष वस्तु की आवश्यकता हो, तो वह तुम्हें अदेय न होगी।"

राजकुमारी—"न होगी। मैं प्रतिज्ञा करती हूँ कि तुम्हारी इच्छा पूर्ण करूँगी।"

रत्नमाला—"और कुछ सेवा ?"

राजकुमारी—"हाँ, उन तापसकुमार से आज निवेदन कर देना कि पूर्णिमा की रात्रि को, उसी निकुंज में, द्वितीय प्रहर के प्रारंभ में, मुझे अपने शुभ दर्शन दें।"

रत्नमाला—"आज ही उन तक राजकुमारी का संवाद पहुँच जायगा।"

रत्नमाला के विशाल लोचनों में एक कुटिल कटाक्ष आविर्भूत हुआ।

अक्षय कल्प-मंजरी निःस्वार्थ प्रेम के प्रफुल्ल उद्यान ही में प्रस्फुटित होती है, और उसी का नाम है नंदन-निकुंज।

(४)

उस विशाल, उन्मुक्त, कौमुदी-धौत नभोमंडल के निम्न देश में, विशालकाय पवित्र विंध्याचल के पद-प्रांत में, प्रकृति के श्यामल सौंदर्य से विभूषित नर्मदा-दुकूल पर, शीतल समीर से विकंपित मालती-मंडप के कुसुम-तोरण-द्वार पर, स्फटिक-स्वच्छ कुसुमाकीर्ण विमल शिला-खंड पर, आसीन होकर रत्नमाला गाने लगी—

गान

आजु मोहिं सूनो सब संसार।
वृंदावन के वन-उपवन मैं,
वरबेलिन के नव-यौवन मैं,
अलिन-कलिन के नित चुंबन मैं,
नहिं कोउ रस में सार। आजु०।
मंजुल मंजु कुंज-पुंजन मैं,
मधु-गंजन मधुकर-गुंजन मैं,
खंजन, मृग-से दृग-कंजन मैं,
रतिरंजन की मार। आजु०।

गान के मधुर स्वर ने उस शांति के पवित्र पाद-प्रांत में माधुर्य-लहरी को प्रवाहित कर दिया। आकाश में मधुर चंद्र और भी हँसने लगा; मंद समीर भी मादक होकर झूम-झूम कर नाचने लगा; कुसुम कलियों की अवलियाँ चटक-चटक कर खिलने लगीं; और नर्मदा की कलकलमयी तरंग-श्रेणी पर विमल चंद्रिका विभिन्न भावों के साथ और भी उन्मत्त नृत्य में प्रवृत्त होने लगी। ठीक उसी समय वहाँ तापसकुमार पीछे से प्रकट होकर रत्नमाला के सम्मुख खड़े हो गए। रत्नमाला भी ससंभ्रम खड़ी हो गई। उसने कृतांजलि होकर प्रणाम किया।

तापसकुमार ने प्रश्न किया—"रत्नमाले, रात्रि के इस द्वितीय प्रहर में तुम यहाँ कहाँ ?"

रत्नमाला—"यों ही देव। प्रकृति के सौंदर्य की मैं उपासिका हूँ। प्रासाद में आज चित्त नहीं लगा—चंचल हो उठा। राजकुमारी शयनागार में चली गईं; मैं अपनी वीणा लेकर नर्मदा-निकुंज में आ गई, और यहाँ इस विमल लावण्य पर परिमुग्ध होकर एक पद गाने लगी। सौभाग्य से आपके शुभ दर्शन भी मिल गए।"

तापसकुमार—"वास्तव में तुम बड़ी प्रवीण गायिका हो। इस समय ऐसा प्रतीत हो रहा है, मानो स्वयं उर्वशी पारिजात-वन से उतरकर रेवा-तट पर आ गई हो।"

रत्नमाला—"पर उर्वशी तो वारांगना है देव ?"

तापसकुमार—"ठीक है। मेरी भूल थी। तुम उर्वशी नहीं, साक्षात् महेंद्रप्रिया शची हो।"

रत्नमाला—"पर मैं तो कुमारिका हूँ।"

तापसकुमार—"पराजय स्वीकार करता हूँ। तुम अनुपमेय हो। तुम्हारे योग्य उपमा मिलना कठिन है। तुम साहित्य की सरस कल्पना, संगीत की विमल रागिनी, एवं स्नेह की निर्मल, विशुद्ध नर्मदा हो। तुम सदानंदमयी हो रत्नमाले।"

रत्नमाला—"पर इस समय मैं एक विशेष समाचार की वाहिका भी हूँ देव।"

तापसकुमार—"समाचार ? राजकुमारी जयंती की क्या आज्ञा है ?"

रत्नमाला—"परंतु समाचार प्रकट करने के पहले मैं उसके पुरस्कार का निर्णय कर लेना चाहती हूँ देव ! इस शुभ प्रणय के आनंद में कुछ मेरा भी भाग है भगवन् !"

तापसकुमार—"तुम्हारे लिये तो मुझे कुछ भी अदेय नहीं है रत्नमाले।"

रत्नमाला—"कुछ भी नहीं ? सोच लीजिए देव। आपने अपने इस सरल, उदार आवेश में कुमारी जयंती के विस्तृत साम्राज्य को विस्मृत कर दिया है क्या ?"

तापसकुमार—"हाँ रत्नमाले, भूल गया था। हृदय की संपत्ति पर मेरा अधिकार अवश्य नहीं है; पर और सर्वस्व सब तुम्हारे कर-कमल में समर्पित है।"

रत्नमाला—"और क्या देव ?"

तापसकुमार—"मेरी सिद्धि का मधुर फल, योग-प्राप्त निधि का निखिल विलास, एवं आंतरिक कृतज्ञता की सौरभमयी पुष्पांजलि।"

रत्नमाला—"पर यदि मैं आपसे प्रतिज्ञा करा लेती, और फिर वही माँगती, जिस पर राजकन्या जयंती का एकच्छत्र आधिपत्य है, तो आप क्या करते देव ?"

तापसकुमार—"वही, जो प्रण-भ्रष्ट को करना चाहिए। हृदय के विनिमय में प्राणों का उत्सर्ग कर देता। यही कलकल-नादिनी, निर्मल-सलिला नर्मदा मेरी चिरविश्राम-शय्या बन जाती।"

रत्नमाला—"यह मैं जानती थी प्रभो ! इसीलिये मैंने आपको प्रतिज्ञा-बद्ध नहीं किया।"

तापसकुमार—"उदारता की परा काष्ठा है। पर हो चुकी यह परिहास-लीला—अब कहो रत्नमाले, राजकुमारी जयंती की क्या आज्ञा है ?"

रत्नमाला—"पूर्णिमा के पूर्ण चंद्र की प्रभा से प्रोद्भासित नर्मदा-निकुंज में राजकिशोरी जयंती इन पुण्य श्रीचरणों के दर्शन की प्रार्थना करती हैं।"

तापसकुमार—"मेरे अहोभाग्य ! राजकन्या से निवेदन कर देना कि उनका उपासक ठीक समय पर निकुंज-भवन में उनके शुभागमन की प्रतीक्षा करेगा।"

रत्नमाला—"प्रणाम करती हूँ देव !"

तापसकुमार—"जाओ रत्नमाले, यदि इस लोक में तुम्हारी इस सहायता का समुचित पुरस्कार न दे सका, तो अक्षय स्वर्ग में अवश्य दूँगा।"

रत्नमाला—"प्रतिश्रुत होते हैं देव ?"

तापसकुमार—"हाँ, जगज्जननी साक्षी हैं।"

रत्नमाला—"जय हो देव की !"

प्रणय की अंतर्लीला का रहस्य अंधकार से नहीं, किंतु अभेद्य आलोक से आवृत रहता है। दिव्य लोचन ही उस अक्षय सुधा-स्रावी सौंदर्य को देख सकते हैं।

(५)

प्रफुल्ल पुंडरीक की भाँति आकाश-मानस में पूर्ण चंद्र विलसित हो रहा था; और चंचरीक-राजि की भाँति उसके बीच विकसित हो रही थी कलंक-कालिमा। एक पुंडरीक प्रस्फुटित होकर समस्त सरोवर को अपनी आभा से समुद्दीप्त कर रहा था; नर्मदा अपने दर्पण-विमल वक्षःस्थल में उसका मधुर प्रतिबिंब धारण किए बही जा रही थी। सारी प्रकृति एवं समस्त पृथ्वी धवल विमल साड़ी पहने सो रही थी। राजकुमारी जयंती और उनके हृदयेश तापसकुमार का रहस्यालाप नर्मदा की कलकलमयी तरंग-राशि में विलीन हो रहा था।

राजकुमारी ने स्नेह-नम्र स्वर में कहा—"देव, मैंने आपकी साधना में विघ्न डाला।"

तापसकुमार ने अनुराग-सरस वाणी में उत्तर दिया—"नहीं देवि, तुम तो मेरी साधना की संपूर्ण सफलता हो। तुम्हें पाकर मैंने विशुद्ध आनंद की अनुभूति पाई है।"

राजकुमारी—"पर प्रभो, रमणी – विशेष कर रूपवती, युवती रमणी—तपोनिष्ठा के मार्ग में प्रत्यक्ष बाधा बनकर खड़ी होती है। कम-से-कम शास्त्रों का तो यही मत है।"

तापसकुमार—"उन्हीं के पथ में, जो रमणी को काम-वासना की परितृप्ति की मदिरा-मात्र मानते हैं। जो रमणी को परिपूर्णता का अनिवार्य साधन मानते हैं, रमणी में विशुद्ध आत्मिक सौंदर्य की कल्पना करते हैं, रमणी को निःस्वार्थ त्याग की चरम सीमा—भागवती इच्छा की साकार प्रतिमा—गार्हस्थ्य की पुण्यमयी अधीश्वरी मानकर उसकी आराधना करते हैं, उनके लिये रमणी की प्राप्ति इष्ट है, अनिष्ट नहीं।"

राजकुमारी—"पर मैं इस उच्च आदर्श का पालन कर सकूँगी या नहीं, इसमें संदेह है।"

तापसकुमार—"अणु-मात्र भी नहीं। मैं तुम्हारे सहज-सुंदर मुख-मंडल पर जो पवित्र सौंदर्य, उज्ज्वल आत्म-त्याग एवं विमल संकल्प की ज्योति देख रहा हूँ, वह कुछ और ही प्रमाणित कर रही है। मेरा विश्वास है कि तुम्हें पाकर मैं कठोरतर तप का अनुष्ठान कर सकूँगा; और मेरी कल्पना, अभिलाषा एवं साधना तुम्हारे पुण्य संसर्ग से और भी अधिक उज्ज्वल, पवित्र एवं प्रसादमयी हो जायगी। तुम मेरे प्राणों का परिमल, कविता की मधुर कल्पना, आत्मसंगीत की स्वर-लहरी, साधना की चिर-सहचरी, एवं मेरे संकल्प की उत्साह-धारा बनकर, और कल्याण के लिये, इस धरा-धाम पर अवतीर्ण हुई हो। यह मेरी अटल, ध्रुव धारणा है।"

राजकुमारी—"और तुम देव ? तुम्हारे अवतार का क्या उद्देश्य है ?"

तापसकुमार—"मैं तुम्हारे प्रेम का पात्र, तुम्हारे सुख का सखा, तुम्हारे दुःख का भागी, तुम्हारे मंत्र का अर्थ, तुम्हारे इष्ट का स्वरूप, तुम्हारे व्रत का विषय, एवं तुम्हारे आश्रम का अवलंब बनकर नित्य तुम्हारे सुख-सहवास में जीवन व्यतीत कर सकूँ, यही मेरी सृष्टि का एक-मात्र उद्देश्य है ।"

राजकुमारी—"मेरे अहोभाग्य ! सौभाग्य की यही चरम सीमा है ।"

तापसकुमार—"तो आओ, इस मंगल-मुहूर्त में अनंत, निर्मुक्त नभोमंडल के नीचे, इस पवित्र नर्मदा के दुकूल पर, चंद्रदेव की समुपस्थिति में, प्रकृति के आशीर्वाद में, हम दोनों परस्पर चिर मधुर संबंध में आबद्ध हो जायँ। तुम्हें स्वीकार है देवि ?"

राजकुमारी—"स्वीकार है आर्यपुत्र ।"

"पर मुझे स्वीकार नहीं है!" यह वज्र-सी वाणी सहसा सुन पड़ी, और चार सशस्त्र सैनिकों के साथ अनूपेश्वर ने उस निकुंज में सरोष प्रवेश किया । राजकुमारी और तापसकुमार स्तब्ध हो गए । दोनों ने उनके चरण-तल में घुटने टेक दिए । पर अनूपेश्वर ने कुलिश-कठोर स्वर में कहा—"सैनिको ! इस भंड ब्रह्मचारी को बाँध लो, और त्रिकूट-शिखर पर जो कारागार है, उसमें ले जाकर द कर दो । और, जयंती ! सामनेवाला नर्मदा-प्रासाद ही रे लिये कारागार-रूप में परिणत कर दिया गया है । तेरी रसखी रत्नमाला के अतिरिक्त तेरे पास और कोई नहीं होगा ।"

प्रेम का पथ बड़ा भयंकर एवं दुर्गम है । सहस्र-सहस्र च्छुओं का तीव्र दंशन, अमंगल का कठोर कुलिश-प्रहार, वं दुर्भाग्य का निष्ठुर नियंत्रण, इन तीनों की सम्मि-त व्यथा भी उसके परिताप के सामने परमाणु के मान तुच्छ है । इसीलिये उस पर विचरण करनेवाला गीश्वर की संज्ञा को प्राप्त होता है ।

(६)

अंधकारमयी यामिनी, पर्वत के भयंकर दुर्गम मार्ग, हिंसक जंतुओं के कठोर निनाद की कुछ भी पर्वा न के, अतुल साहस, अमित तेज और निश्चल संकल्प लवती होकर, रत्नमाला त्रिकूट-शिखर पर पहुँच गई ।

उसने धीरे से अपनी कंचुकी के भीतर से चाबी निकाली, और कारागार के कपाट खोल दिए ।

प्रकाश के सारे साधन उसके पास प्रस्तुत थे । कारागार आलोकमय हो गया । तापसकुमार जाग्रत् थे । वह आश्चर्य-चकित होकर रत्नमाला को देखने लगे । रत्नमाला ने उन्हें प्रणाम किया, और धीरे-धीरे उनके बंधन काट दिए ।

रत्नमाला—"देव, मैं आपको इस कारागार से मुक्त करने आई हूँ ।"

तापसकुमार—"धन्यवाद । पर किसकी आज्ञा से, किसकी प्रेरणा से ?"

रत्नमाला—"अपने प्रेम की प्रेरणा से, अपने कर्तव्य के अनुरोध से, अपनी आत्मा की आज्ञा से । देव, आप क्या मेरे साथ इस कारागार से बाहर चलने के लिये पूर्ण रूप से प्रस्तुत हैं ? विलंब का समय नहीं है ।"

तापसकुमार—"पर रत्नमाले, तुम्हें यह सब कष्ट उठाना न पड़ता, यदि मैं इस कारागार से मुक्त होना चाहता । पाषाण प्राचीर एवं लोह-कपाट मुझे नहीं रोक पाते । पर मैं इस कारागार से मुक्त होकर ही क्या करूँगा ? मेरा हृदय तो मुक्त न होगा । वह तो चिर-व्यथा का निर्मम नियंत्रण ही सहा करेगा । नहीं रत्नमाले, मैं न जाऊँगा; यहीं रहूँगा; यहीं मुझे सुख है ।"

रत्नमाला—"नहीं देव, मेरी यह अतुल रूप-राशि, मेरा प्रफुल्ल यौवन, मेरी आत्मा की अपार संपत्ति एवं मेरी तन्मयी साधना, सब आपके श्रीचरण-तल में सादर समर्पित है । उसे स्वीकार कीजिए देव ।"

तापसकुमार—"पर चातक मंदाकिनी-जल से परितृप्त नहीं होता । उसे तो घनश्याम का एक बिंदु ही परम अभीप्सित है ।"

रत्नमाला—"सो ठीक है देव । पर जो अलभ्य है, एकांत अप्राप्य है, उसके लिये व्यर्थ ही प्राणोत्सर्ग करना बुद्धिमत्ता नहीं है ।"

तापसकुमार—"तो क्या सहज-प्राप्य के लिये, एकांत करतल-गत के लिये परम-प्रिय प्राणों की आहुति दी जाती है ? साधारण भोजन-पाकी अग्नि में कोई अपनी आहुति नहीं देता ; पवित्र यज्ञ की मोक्षदायिनी प्रोज्ज्वल ज्वाला ही में देह को भस्मावशेष कर देने की शास्त्रीय परिपाटी चली आती है रत्नमाले । दुष्कर ही के लिये दुस्साहस किया जाता है ।"

रत्नमाला—"मेरा दुर्भाग्य ! तो क्या मेरा प्रस्ताव आपको अस्वीकृत है ?"

तापसकुमार—"एकांत रूप से। राजकन्या जयंती के विना यह विशाल विश्व मेरे लिये एक महान् कारागार ही के समान है। मैं इस छोटे कारागार ही में सुखी हूँ। तुम्हारे इस प्रणयानुरोध की मैं अवहेलना कर रहा हूँ, इसका मुझे दुःख है रत्नमाले। पर मैं विवश हूँ, प्रवृत्ति की प्रबलता के सम्मुख निर्बल हूँ। जाओ रत्नमाले, लौट जाओ। कारागार के कपाट फिर से अवरुद्ध कर दो।"

रत्नमाला—"पर देव, राजकुमारी जयंती तो अब इस संसार में नहीं हैं। फिर उनके लिये कष्ट उठाना नितांत निरर्थक है।"

तापसकुमार—"नहीं हैं ? छोड़ गईं इस विनश्वर विश्व को। आह ! प्राणेश्वरि ! तुमने मुझे नहीं बताया, और चली गईं ! अच्छा रत्नमाले ! इस समाचार के लिये भी मैं तुम्हें धन्यवाद ही देता हूँ। यदि तुम मुझे यह समाचार न देतीं, तो नहीं मालूम, राजकुमारी कब तक नंदन-वन में मेरी प्रतीक्षा करतीं। मुझे विश्वास है, स्वर्ग-किशोरिकाओं से परिवेष्टित होकर भी, अप्सराओं की ललित संगीत-लहरी सुनकर भी, वह मेरे विना आह्लादित न होती होंगी। अच्छा रत्नमाले, वहीं जाता हूँ, जहाँ प्रेम का अक्षय साम्राज्य है, जहाँ रस का अविरल स्रोत प्रवाहित होता है, जहाँ विच्छेद का भय नहीं, व्यथा की आशंका नहीं, जहाँ चिरसंगीत, चिदानंद एवं चिर-उल्लास का सदा वसंतोत्सव रहता है, जहाँ मेरे हृदय की अधीश्वरी राजकुमारी जयंती के मधुर हास्य का प्रोज्ज्वल प्रकाश है। वहीं जाता हूँ रत्नमाले। कौशांबी के युवराज के लिये यह संसार अत्र असार है—शून्य है।"

रत्नमाला—"क्या, कौशांबी के युवराज ?"

तापसकुमार—"हाँ, मैं कौशांबी का युवराज हूँ। रत्नमाले, आज तुम्हें यह रहस्य बताता हूँ। तुम इस रहस्य को महाराज अनूपेश्वर से भी निवेदन कर देना, जिससे उनकी आत्मग्लानि दूर हो, और वह अपनी दुखिया दुहिता को आशीर्वाद दें कि वह मेरे साथ स्वर्ग में अक्षय आनंद को प्राप्त करे। बिदा रत्नमाला।"

रत्नमाला स्तंभित, चकित एवं मूक हो गई। उसी समय तापसकुमार योगासन में आसीन हो गए। उनके ब्रह्म-रंध्र को विदीर्ण करके एक महाप्रकाश निकला, वह उन्मुक्त आकाश में जाकर विलीन हो गया।

संसार केवल प्रेम की लीला-भूमि है। वह दिन-भर केलि-क्रीड़ा करके सायंकाल होते-होते अपने अक्षय कुटीर में आनंद से विहार तथा विश्राम करने के लिये जाता है।

प्रेम आत्मा का पर्याय है, और आत्मा आख्यान महामाया राजराजेश्वरी कल्याणसुंदरी की विमल की स्निग्ध रश्मि का।

(७)

प्रभाकर की प्रोज्ज्वल बाल-किरणमाला नर्मदा-प्रा के सर्वोच्च सुवर्ण-मंडप पर केलि-क्रीड़ा कर रही थीं। प्रासाद सुवर्ण-प्रकाश-धारा में स्नान कर रहा था।

प्रासाद के एक कक्ष में सुवर्ण-निर्मित, रत्न-खचित सन पर आसीन थे अनूपेश्वर, और उनके सामने घुटने टेके बैठी थी आलुलायितकेशा, विक्षिप्तप्राय कन्या जयंती।

अनूपेश्वर ने कहा—"जयंती, आज तूने मुझे प्रातःकाल ही क्यों बुलाया है ?"

राजकन्या ने रुँधे कंठ एवं कंपित स्वर में कहा—" मैंने जाना है, मुझे स्पष्ट सूचना मिली है कि उन कुमार ने कल रात्रि को उस कारागार म प्राण- किया है।"

अनूपेश्वर ने चकित होकर कहा—"तुझे कैसे हुआ जयंती।"

जयंती—"मैंने स्वप्न देखा था। वह स्वयं यहाँ थे। उन्होंने मुझसे कहा कि वह स्वर्ग को जा रहे और वहाँ कल्पवृक्ष-कानन में मेरी प्रतीक्षा करेंगे। पिताजी, मैं हाथ जोड़कर प्रार्थना करती हूँ, कृपा मुझे यह बता दीजिए कि क्या यह समाचार सत्य मैं जानती हूँ, यह सत्य है। पर, तो भी, इसका पूर्ण कर लेना चाहती हूँ। पिता, मेरे पूज्य पिता, दया सत्य बताना ! मैं तुम्हारी ही पुत्री हूँ।"

अनूपेश्वर—"हाँ, यह समाचार सत्य है। पर तो तो भी तेरा इस समाचार से क्या संबंध है ? करेगी ? तेरे मन में क्या और कोई विचार उठा है

जयंती—"मेरा ? मेरा इस समाचार से यदि संबंध नहीं, तो और किसका होगा ? मैं सती

पिताजी, उनके शव को लेकर चिता पर जल जाऊँगी। आज्ञा दीजिए मुझे, मैं अपने इस व्रत को पूर्ण करूँ।"

अनूपेश्वर—"पर तेरा तो उसके साथ विवाह नहीं हुआ? तूने तो उसके कंठ में जय-माला नहीं डाली? समाज और धर्म ने उसे तेरा पति कहकर स्वीकार नहीं किया?"

जयंती—"तो भी उनके साथ मेरा विवाह हो चुका है। नर्मदा की मंत्र-माला के मधुर निनाद में, प्रकृति की परमोज्ज्वल वेदी पर, उस निर्जन मालती-मंडप के नीचे, मैंने उन्हें पति-रूप में वरण किया है। अब न रोकिए पिताजी, चलने दीजिए। प्रसन्न चित्त से अनुमति दीजिए। उनके प्रतीक्षा-काल को बढ़ाना समुचित नहीं।"

अनूपेश्वर—"पर इससे मेरे यश में कलंक लगेगा जयंती।"

जयंती—"और मुझको रोकने से आपके और मेरे धर्म का विनाश होगा। आप जानते हैं, हिंदू-ललना का संकल्प चिरस्थायी होता है। वह केवल वासना की कंदुक-क्रीड़ा नहीं है। वह अक्षय, अटल, अमिट है।"

अनूपेश्वर—"पर यदि तुझे मैं सती न होने दूँ?"

जयंती—"रोक नहीं सकेंगे पिताजी! पाषाण-प्राचीर पर प्रहार करने से कपाल भग्न हो सकता है; उन्मुक्त वातायन से नीचे अभेद्य अंधकारमयी कंदरा में पतित होना क्षण-भर का काम है। और, इन साधनों के छिन जाने पर भी अंतरात्मा में प्रज्वलित होनेवाली प्रेमाग्नि में प्राणों की आहुति दी जा सकती है। पिता, मैं जाऊँगी, वहीं जाऊँगी, जहाँ वह गए हैं, जहाँ उनकी चरण-रज से पृथ्वी पवित्र हो रही है, जहाँ उनकी मंद मुसकान से विलास-कुंज विकसित हो रहे हैं, जहाँ उनकी श्री से आनंद की धारा प्रवाहित हो रही है। वह मेरे प्रभु हैं, ईश्वर हैं, चक्रवर्ती सम्राट् हैं।"

अनूपेश्वर—"बेटी, क्या यह तेरा निश्चित संकल्प है? किसी भाँति भी टल नहीं सकता क्या?"

जयंती—"नहीं पिता, यह विधाता के विधान से, ऋषि के वचन से, एवं महामाया की इच्छा से भी अधिक अटल है। मैं अवश्य प्राण-त्याग करूँगी। यदि आपकी शुभ अनुमति मिल गई, यदि उनके पवित्र शव को गोद में लेकर मैं भस्म हो सकी, तो मुझे विशेष संतोष होगा, और शास्त्रीय आदेश तथा लौकिक धर्म का भी पूर्ण रूप से परिपालन हो जायगा। मेरा सहमरण तो निश्चित ही है।"

अनूपेश्वर—"अच्छा बेटी, जाओ, जाओ उस अक्षय आलोकमय पतिलोक को। मैं नहीं जानता था; मैं विमूढ़ था। यदि तुम दोनों के इस पवित्र, प्रोज्ज्वल प्रेम के इस रहस्य को जानता होता, तो मैं कदापि बाधा न डालता; यह घोर घटना कदापि घटित न होती। पर महामाया की महाव्यवस्था के रहस्य को कौन जानता है। वह अमिट है। जाओ बेटी, यहाँ तुम सुखी न हो सकीं, मैं आशीर्वाद देता हूँ, अपने आराध्य पति के साथ स्वर्ग में आनंद-पूर्वक रहो।"

जयंती ने पितृदेव की पद-धूलि अपने सुर-वंद्य ललाट पर लगा ली।

प्रणय का प्रण पूर्ण हो गया। संसार, देख इस पुनीत दृश्य को, और स्वर्ग, तुम हाथ बढ़ाकर इस प्रेम के प्रोज्ज्वल स्वरूप का स्वागत करो।

(८)

जहाँ तापसकुमार एवं राजकन्या जयंती ने एक दूसरे को वरण किया था, वहीं आज वे सहमरण के लिये समुपस्थित हुए। अनूप-राज्य की सारी प्रजा इस दृश्य को देखने तथा सती की पूजा करने को जमा हुई।

नर्मदा के उसी निकुंज के द्वार-देश पर, विमल शिला-खंड के पास, प्रकांड चंदन-चिता प्रस्तुत हुई। राजकन्या जयंती पूर्ण श्रृंगार करके, पूज्य प्राणेश्वर के शव को लेकर, स्वर्गयात्रा के लिये समुद्यत हुई।

सब संस्कार हो चुके थे—केवल चिता में अग्नि-संस्कार अवशिष्ट था। उसी समय एक ओर से आकर रत्नमाला ने चिता के सामने घुटने टेक दिए। रत्नमाला उन्मादिनी हो रही थी। उसके गुलाब-से अरुण लोचन तप्त अंगार-से जल रहे थे। उसकी केश-राशि बिखरी हुई तथा धूलि-धूसरित थी। मुख पर तीव्र व्यथा के सारे लक्षण परिलक्षित हो रहे थे। उसके वस्त्र अस्त-व्यस्त थे।

रत्नमाला ने चिता के सामने घुटने टेक दिए। हाथ जोड़कर कहा—"सती, तुम्हें स्मरण होगा, एक दिन तुमने मुझे एक वर देने को कहा था। आज मैं वही वर माँगने आई हूँ।"

राजकुमारी—"तुम्हें तब भी कुछ अदेय न था, और अब भी नहीं है। माँगो बहन।"

रत्नमाला—"क्षमा! दया! बस, केवल क्षमा! मैं अपने पाप के लिये क्षमा माँगती हूँ। देवि, दया करो।"

राजकुमारी—"तुमने कोई पाप नहीं किया बहन, कौन-से पाप के लिये मुझसे क्षमा माँगती हो ?"

रत्नमाला—"किया है, अक्षम्य अपराध किया है। पर पहले क्षमा कर दो, तब निवेदन करूँगी।"

राजकुमारी—"क्षमा करती हूँ बहन ! इस अंतिम समय में क्या तुम्हारा मुख मलिन देख सकूँगी ? कभी नहीं। क्षमा करती हूँ। कहो, क्या रहस्य है ? अब अधिक समय नहीं है, विलंब ठीक नहीं।"

रत्नमाला—"सुनो बहन, मैंने ही यह सब कांड किया है। यह—यह तापसकुमार तुम्हारे भी हृदयेश्वर हैं, और मेरे भी हृदय-धन। मैंने सोचा था, मैं सरल सत्य भाव से नहीं, तो कुटिल नीति से इन्हें अपना सकूँगी। पर मैं मूढ़ थी, प्रेम की प्रबलता का अनुभव करके भी स्वार्थ से अंधी हो गई थी। मैंने ही तुम्हारे पिता को सूचना दी। मैं परिणाम जानती थी, और मुझे विश्वास था कि तापसकुमार को मैं कारागार से विमुक्त कर दूँगी। पर हाय, तुम्हारी आज्ञा के बिना वह कारागार से बाहर चलने को प्रस्तुत नहीं हुए। तब मैंने अपने अंतिम कुटिल बाण का प्रयोग किया। तब मैंने उनसे तुम्हारे प्राण-त्याग की झूठी बात कही। मैंने कल्पना की थी कि वह तापसकुमार तुम्हारी मृत्यु का संवाद पाकर—तुम्हें अलभ्य मानकर—कदाचित् मेरे प्रणय को स्वीकार कर लें। पर उन्होंने—उन उदार सच्चे प्रेमी तापसकुमार ने—मेरा तिरस्कार और तुम्हारे काल्पनिक वियोग में योग-बल द्वारा प्राण-त्याग कर दिया। इस प्रकार मैंने मूढ़ता-वश तुम्हें और अपने को विधवा बना दिया। राजकुमारी, वह तापसकुमार कौशांबी के युवराज थे।"

राजकुमारी—"आह ! कौशांबी के युवराज ?"

रत्नमाला—"हाँ, कौशांबी के युवराज थे। स्वर्ग के लिये प्रस्थान करते समय उन्होंने यह रहस्य मुझसे कहा था। पर हाय, मैं मूर्ख थी, स्वार्थ से अंधी हो रही थी ! यदि माँगती—हाथ जोड़कर माँगती, तो तुम इतनी उदार थीं कि मुझे भी उनके प्रणय-पद्म की पराग का एक कण अवश्य दे देतीं। पर अब क्या हो सकता है ? घटना अब अघटित नहीं हो सकती मेरी बहन।"

राजकुमारी—"ठीक है बहन, जो होना था, सो हो चुका। पर बहन, तुम उन्हें प्यार करती थीं—उनके चित्र-पट की पूजा करती थीं। बस, मेरे क्षमा-दान के लिये इतना ही बहुत है। बहन, मैं तुम्हें क्षमा करती हूँ। स्वर्ग के मंदाकिनी-चुंबित निकुंज में जब आओगी, तक भी अगर तुम उन्हीं की उपासना में रत रहीं, तो मैं सहर्ष अपना अर्द्धासन तुम्हें दूँगी, यह करती हूँ।"

रत्नमाला—"उदार देवी, धन्य हो तुम ! पर तुम्हारे साथ ही चलूँगी—तुम्हें वहाँ दासी की आवश्यकता होगी। उनका सिर स्थापित होगा तुम्हारी गुलाब-सी कोमल गोद में, और उनके पाद-पद्म प्रस्थापित होंगे मेरे उन्मुक्त क्रोड़ में। देवि, एक दिन उन्होंने भी प्रसन्न होकर मुझे वर दिया था कि वह स्वर्ग में मुझे सेवा में स्वीकार कर लेंगे। मैं उनसे वही वर माँग लूँगी, तुम मेरी ओर से प्रार्थना कर देना बहन !"

राजकुमारी—"अवश्य !—तो यह तुम्हारा निश्चित संकल्प है ?"

रत्नमाला—"निश्चित ! अटल !"

राजकुमारी—"फिर विलंब क्यों ? आओ चलें। प्रतीक्षा करते होंगे।"

चिता की पवित्र प्रोज्ज्वल प्रज्वलित शिखा-माला आरूढ़ होकर दोनों अक्षय पतिलोक में पहुँच गईं।

प्रेम की त्रिपथ-गामिनी मंदाकिनी वक्र मार्ग से प्रवाहित हो, चाहे सरल पथ से, वह अंत में विलीन होती उसी अनंत महासागर में—उसी अतल, नित्य-परिपूर्ण विशाल सौंदर्य-रत्नाकर में।

चंडीप्रसाद "हृदयेश"

सर्वव्यापी

(१)

रहते हो तुम, नाथ, सदा नयनों के आगे।
पर न तुम्हें पहचान सके हम परम अभागे।
नाहक तुमको खोज-खोज हैरान हुए हम:
दृग-युत भी क्या, हाय ! न अंध-समान हुए हम !

(२)

होते हो तुम कभी न पल-भर हमसे न्यारे:
पर भ्रम होता छद्म वेश को देख तुम्हारे।
अहो ! वृथा ही विरह-दाह से थे हम जलते:
थे हरदम ही, हाय ! स्वयं अपने को छलते।

(३)

जो कुछ जग में देख पड़े विरचित विधि द्वारा ;
सबमें अनुपम रूप-रंग छा रहा तुम्हारा।
किंतु कहें क्या, धन्य तुम्हारी थी वह माया ;
कुछ-का-कुछ था हमें सदा जिसने दिखलाया।

(४)

जिधर देखते, उधर तुम्हीं को हैं हम पाते ;
बार-बार भी तुम्हें देखकर नहीं अघाते।
नयन तुम्हारे रूप-जाल में हैं फँस जाते ;
छवि-सागर में डूब-डूबकर ग़ोते खाते।

(५)

बदल-बदलकर वेश प्रकृति सुंदर, मनमाना ;
दिखलाती है रूप तुम्हारे ही नव, नाना।
क्षण-भर में कर नाश अपरिमित तम-कलाप का ;
देता परिचय भानु तुम्हारे ही प्रताप का।

(६)

छः ऋतुओं की भिन्न-भिन्न शोभा सुखकारी ;
विहगों की छवि मंजु, मनोहर, न्यारी-न्यारी।
कुसुमों की कमनीय क्यारियाँ प्यारी-प्यारी ;
सबमें सुषमा समा रही है सतत तुम्हारी।

(७)

हरियाली हर समय हृदय को हरनेवाली ;
फल-फूलों से लदी हुई पल्लवित द्रुमाली।
भाँति-भाँति की लता-बल्लियाँ शोभाशाली ;
दिखलाती हैं छटा तुम्हारी निपट निराली।

(८)

वन-बाग़ों से कभी दृष्टि जाकर है लड़ती ;
कभी मनोहर शैल-शिखर पर है वह पड़ती।
जहाँ देखती तुम्हें, वहीं जाकर है अड़ती ;
प्रेम-पाश में उसे तुम्हारी छटा जकड़ती।

(९)

लगे रात को नित्य गगन में सभा तुम्हारी ;
खिल जाते नक्षत्र प्राप्त कर प्रभा तुम्हारी।
सुखद सुधाकर सुधा तुम्हीं से संतत पाकर ;
हरे भूमि का ताप, सतत उसको बरसाकर।

(१०)

जो तुम गाते, वही गीत हैं सिंधु सुनाते ;
वही राम अनुराग-पूर्ण पक्षीगण गाते।
गूँज रही है तान तुम्हारी नभ, जल, थल में ;
सुन पड़ती है वही विश्व के कोलाहल में।

(११)

हो तुम एक, अनेक काम करके दिखलाते ;
कर्मयोग का मर्म कर्म द्वारा सिखलाते।
अंकित है प्रतिरूप तुम्हारा नभ, जल, थल में ;
शतदल-दल में, जलद-पटल में, तथा अनल में।

(१२)

प्राणों का आधार, सभी को है जो प्यारा ;
है वह शीतल पवन प्रेममय श्वास तुम्हारा।
वह सौरभ सर्वत्र तुम्हारी ही फैलाता ;
वन-उपवन में, सुमन-सुमन में है बिखराता।

(१३)

तुमने रचकर विश्व चरम चातुर्य दिखाया ;
रूप अनूप विराट स्वयं अपना उपजाया।
सब पदार्थ को भिन्न रूप-गुण-युक्त बनाया ;
पर अपना प्रतिबिंब सभी में है झलकाया।

गोपालशरणसिंह

राजशेखर और काव्यमीमांसा

संस्कृत तथा प्राकृत-भाषा के साहित्य-सेवियों में कौन ऐसा है, जिसने कविराज राजशेखर का नाम न सुना हो, उनके दृश्य तथा श्रव्य-काव्यों को न पढ़ा हो? काव्य-जगत् में इनका अत्यंत उच्च स्थान है। यह महाराज कान्यकुब्जाधिपति महेंद्रपाल तथा उनके पुत्र महीपाल के सभासद् थे। 'उपाध्याय' इनकी पदवी थी। सायदोनी के शिला-लेख से विदित होता है कि महेंद्रपाल का राजत्व-काल ६०७ और महीपाल का ६१७ ईसवी है। इन्होंने काव्यमीमांसा में (अर्थापहरण-प्रकरण में) काश्मीर के महाराज जयापीड के

सभासद् वाक्पतिराज का उल्लेख किया है। उक्त महाराज का शासन-काल ७७९ से ८१३ ई० तक है। सोमदेव ने यशस्तिलक-चंपू में राजशेखर का वर्णन किया है। यशस्तिलक-चंपू की रचना ९६० ई० में हुई है। अतः कल्पना होती है कि राजशेखर का समय ८८० और ९२० ई० के बीच में रहा होगा। राजशेखर के पिता का नाम दौर्दुकि और माता का नाम शीलवती था। अकालजलद, सुरानंद और तरल इनके पूर्वजों में से थे। इनकी स्त्री का नाम अवंतिसुंदरी था। वह परम-विदुषी और चौहान*-कुल की लड़की थीं। स्वयं राजशेखर ने स्थल-स्थल पर इनका मत लिखा है। राजशेखर की जाति में संदेह है; क्योंकि उपाध्याय की पदवी से तो यह ब्राह्मण प्रतीत होते हैं, पर स्त्री के क्षत्रिय-कन्या होने से इनके क्षत्रिय होने का संदेह होता है। बहुत संभव है, यह ब्राह्मण ही हों, और अवंतिसुंदरी-जैसी विदुषी के गुणों पर लुब्ध हो, पंडितराज जगन्नाथ की भाँति, इन्होंने भी असवर्ण-विवाह कर लिया हो। क्षेमेंद्र-विरचित 'औचित्य-विचार-चर्चा' के एक पद्य † से ज्ञात होता है कि इनकी जन्मभूमि दक्षिण-भारत में थी। बाल-रामायण में राजशेखर ने अपने परदादा अकालजलद को महाराष्ट्र-चूड़ामणि लिखा है। इसलिये इनका महाराष्ट्र होना तो सिद्ध ही है।

राजशेखर को संस्कृत की अपेक्षा प्राकृ भाषा पर विशेष प्रेम था। एक जगह पर आ लिखते हैं—

"परुसा सक्कअबन्धा पाउअबन्धो विहोइ सुउमारो
पुरुसमहिलाणं जेत्ति अन्ति हन्तरं तेत्ति आमिमाणम्।"

अर्थात् संस्कृत की रचना कठोर और प्राकृ की सुकुमार होती है। इन दोनों में उतना अंतर है, जितना पुरुष और महिलाओं में।

राजशेखर का नाम प्राकृत-भाषा के इतिहा में सुवर्णाक्षरों से अंकित रहेगा। इन्होंने प्राकृ साहित्य की बड़ी सेवा की। इनसे प्रथम प्रा अनुष्टुप्, आर्या आदि छोटे-छोटे छंदों की रच की ही प्रणाली थी। इन्होंने ही शार्दूलविक्रीडि जैसे बड़े-बड़े वृत्तों की रचना कर प्राकृत नवीनता उत्पन्न की। इनके बनाए बाल-रामाय बाल-भारत, विद्धशाल-भंजिका, कर्पूरमंजरी अ काव्यमीमांसा आदि ग्रंथ हैं। यद्यपि कवित्व दृष्टि से इनके सभी ग्रंथ महत्त्व के हैं, पर काव्य मीमांसा संस्कृत-साहित्य के लक्षण-ग्रंथों में अपू रत्न है। इसमें केवल काव्य-विषयक निबंधों ही वर्णन नहीं, किंतु प्राचीन भारत का भौगोलि वृत्त, भिन्न-भिन्न प्रांतों के रहनेवालों का उच्चार तत्कालीन कवियों की समृद्ध दशा और साहि प्रेम, प्राचीन साहित्यिक राजों का इतिवृत्त, शिक्षा आदि अनेक ज्ञातव्य विषयों का समावे है, जिनका कुछ परिचय नीचे दिया जाता है।

काव्यमीमांसा की रचना की रीति वात्स्याय के कामसूत्र तथा कौटिल्य-प्रणीत अर्थशास्त्र की तरह गद्य में ही है। यह अठारह अधिकरणों में विभक्त है। अठारह अधिकरण एक पौराणि आख्यायिका के आधार पर बने हैं, जिसक उल्लेख इस प्रकार है—

---

*"चउहाणकुलमोलिमालिआ, राजसेहरकइन्दगेहिणी।"
(कर्पूरमंजरी)

† कार्णाटीदशनाङ्कितः शितमहाराष्ट्रीकटाक्षाहतः
प्रौढांध्रीस्तनपीडितः प्रणयिनीभ्रूभङ्गवित्रासितः;
लाटीबाहुनिवेष्टितः मलयजस्त्रीतर्जनीतर्जितः
सोऽयं सम्प्रति राजशेखरकविर्वाराणसीं वाञ्छति।
(औ० वि० चर्चा)

श्रीकंठ ने परमेष्ठी आदि ६४ शिष्यों को काव्य-शास्त्र की शिक्षा दी। उन ६४ शिष्यों में सरस्वती का पुत्र 'काव्यपुरुष' अत्यंत श्रेष्ठ तथा देवतों का वंद्य हुआ। प्रजापति ने उसे तीनों लोकों के कल्याण की कामना से काव्य-प्रवर्तना के लिये नियुक्त किया। काव्यपुरुष ने अठारह शिष्यों को अठारह विषय पढ़ाए। काव्यमीमांसा में उन्हीं विषयों पर अठारह अधिकरण हैं।

भारतीय काव्य-रचना का प्रथम श्रेय महाकवि वाल्मीकिजी को है। वह काव्य-शास्त्र के प्रवर्तक तथा आदि-कवि कहलाते हैं। रामायण में ही लिखा है कि वह एक बार, मध्याह्न के समय, तमसा-नदी पर, स्नानार्थ जा रहे थे। मार्ग में उन्होंने एक क्रौंच-मिथुन (कुलंग-पक्षी के जोड़े) को देखा। उसी समय एक व्याध ने उनमें से एक को बाण से मार डाला। यह दुर्घटना देखकर ऋषि का कोमल हृदय करुणा से द्रवित हो गया, और एकाएक उनके मुख से—

"मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः;
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्।"

यह पद्य निकल पड़ा। अपने मुख से इस अनुष्टुप् के सहसा निकलने पर उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। इतने में देवदेव ब्रह्माजी आए, और बोले—"मेरे ही प्रभाव से तुम्हारे हृदय में कवित्व-शक्ति जाग्रत् हुई है। अब तुम्हें पद्यात्मक रामचरित का प्रणयन करना चाहिए।" यह कहकर वह अंतर्हित हो गए। महाकवि भवभूति ने भी उत्तर-चरित में ऐसा ही उल्लेख किया है। पर राजशेखर ने काव्यमीमांसा में पद्य-रचना का प्राथमिक आविष्कार काव्यपुरुष के द्वारा इस प्रकार लिखा है कि सरस्वती देवी हिमालय पर पुत्र-प्राप्ति के लिये तप कर रही थीं। ब्रह्मा ने प्रसन्न होकर सरस्वती से कहा—"मैं तुम्हारे लिये अभी एक पुत्र उत्पन्न करता हूँ।" उसी समय एक दिव्य बालक प्रकट हुआ, और उसने तत्काल निम्न-लिखित पद्य के द्वारा सरस्वती की स्तुति की—

"यदेतद्वाङ्मयं विश्वमर्थमूर्त्या विवर्तते;
सोऽस्मि काव्यपुमानम्ब पादौ वन्देय तावकौ।"

अर्थात् यह जो वाङ्मय विश्व अर्थ-रूप में परिणत होता है, माता, वही मैं काव्यपुरुष तुम्हारे चरणों की वंदना करता हूँ।

सरस्वती ने प्रसन्न हो उसे गोद में उठा लिया, और कहा—"हे छंदोमयी वाणी के बनानेवाले पुत्र! तूने मुझ वाङ्मयी माता को भी हरा दिया। लोग यह बहुत ठीक कहते हैं कि 'पुत्रात्पराजयो द्वितीयं पुत्रजन्म', अर्थात् अपने पुत्र से हारना मानो दूसरे पुत्र का जन्म होना है। तुझसे पहले, वेदों के अतिरिक्त, विद्वानों ने गद्य देखा था, पद्य नहीं।"

प्राचीन आर्य-ऋषियों के मस्तिष्क आधिदैविक विज्ञान से परिपूर्ण थे। वे प्रकृति के प्रत्येक पदार्थ में अधिष्ठात्री देवता की प्रतिकृति देखते थे। वेदों में सूर्य को ब्रह्मा, उषा को सरस्वती, रात्रि को अहल्या, तथा सूर्य को इंद्र माना है। पौराणिकों ने उन भावों को आख्यान के रूप में विकसित किया है। वैदिक साहित्य ही नहीं, किंतु लौकिक साहित्य भी इन्हीं भावों से ओतप्रोत है। मालूम होता है, राजशेखर ने भी तदनुसार काव्य को पुरुष-रूप में माना और आख्यान-रूप में उसका वर्णन किया है। काव्यपुरुष के समर्थन में ऋग्वेद का निम्न-लिखित मंत्र भी उन्होंने उद्धृत किया है—

"चत्वारि शृंगास्त्रयोऽस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासोऽस्य ;
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महोदेवो मर्त्यां३ आविवेश ।*"

राजशेखर ने इस मंत्र की व्याख्या नहीं की। पर नाट्य-शास्त्र के रचयिता भरत मुनि ने इसका अर्थ इस प्रकार लिखा है कि साहित्य-रूप वृषभ मनुष्यों में प्रविष्ट हुआ। उसके चार वर्ण चार सींग, तीनों स्थान (उरःस्थल, कंठ और शिर) तीन पैर, दो प्रकार के (साकांक्ष और निराकांक्ष) काकु सिर और सातों स्वर हस्त हैं।

काव्यमीमांसा में राजशेखर ने लिखा है—कवि को चाहिए कि काव्य-रचना में तब प्रवृत्त हो, जब काव्य-विद्या में भली भाँति योग्यता प्राप्त कर ले। नाम-धातु, अभिधान-कोश, छंदोविचिति, अलंकार-तंत्र, ये काव्य-विद्याएँ, तथा ६४ कलाएँ और देशवार्ता, विदग्धवाद, लोक-यात्रा, विद्वद्गोष्ठी, प्राचीन कवि-निबंध, ये उपविद्याएँ कहलाती हैं।

"स्वास्थ्यं प्रतिभाभ्यासो भक्तिर्विद्वत्कथा बहुश्रुतता ;
स्मृतिदार्ढ्यमनिर्वेदश्च मातरोऽष्टौ कवित्वस्य।"

स्वास्थ्य, प्रतिभा, अभ्यास, भक्ति, विद्वत्कथा, बहुश्रुतता, स्मृति, दृढ़ता, अनिर्वेद (न ऊबना), ये आठ बातें कवित्व की जननी हैं।

कवि को नित्य शुचि रहना चाहिए। शौच तीन प्रकार का होता है—वाक्शौच, मनःशौच और कायशौच। वाक्शौच और मनःशौच शास्त्र के अनुशीलन से होता है। कायशौच के लिये कवि को चाहिए कि वह सदा हजामत बनवाए रहे; हाथ-पैरों के नाख़ून न बढ़ने दे; शरीर में अंग-राग-लेपन किए रहे; क़ीमती और स्वच्छ वस्त्र पहने; बालों में फूल लगावे। कवि का जैसा स्वभाव होता है, उसका काव्य भी तदनुरूप होता है। लोक में कहावत है—"जैसा चितेरा वैसा चित्र।" कवि और काव्य पर भी यही कहावत चरितार्थ होती है। कवि का भवन खूब स्वच्छ होना चाहिए। उसमें अनेक लताओं और वृक्षों से व्याप्त ऐसा उपवन हो, जिसमें छहों ऋतुओं के कुसुम खिल रहे हों। उपवन में सरोवर, क्रीड़ा-शैल, धारागृह, कुंज, निकुंज-दोला आदि बने हों; चकोर, क्रौंच, शुक, मयूर आदि पक्षी पले हों। कवि को पहले सोच लेना चाहिए कि मेरा कैसा संस्कार है, किस भाषा पर मेरा पूर्ण अधिकार है, समाज की रुचि कैसी है, और किस विषय में मेरा जी लगता है। इन बातों के खूब विचारकर फिर किसी भाषा का आश्रय लेना चाहिए। पर यह नियम एकदेशी कवि के लिये है। जो स्वतंत्र कवि हैं, उनके लिये सभी भाषाएँ एक-सी ही हैं।

कवि को अपने समीप सदा एक संदूक़, एक स्याह तख़्ता, खरिया मिट्टी, ताड़-पत्र, भूर्ज-पत्र और क़लम-दावात रखनी चाहिए। समीप ही लोहे कंटक-सहित तालपत्र तथा सम्मृष्ट (चिकनी) भित्तियाँ होनी चाहिए*। दशमाध्याय की राज-चर्या में वह लिखते हैं कि राजा को अवश्य कवि होना चाहिए। राजा के कवि होने पर काव्य-शास्त्र को ख़ासी उत्तेजना मिलती है। राजा को काव्य-परीक्षार्थ साहित्य-परिषद् करना चाहिए। सभाभवन जो काव्य-परीक्षा के लिये बनाया जाय, वह राजा के केलि-गृह (Pleasure-house) से मिला हुआ हो। उसमें १६ स्तंभ (खंभे), चार

---

* यह मंत्र साहित्य-शास्त्र पर ही नहीं घटित होता। यास्क ने निरुक्त में इस मंत्र की यज्ञपरक और पतंजलि ने महाभाष्य में शब्दपरक व्याख्या भी की है।

* तस्य सम्पुटका सफलखाटका समुद्गकः सलखनी मषीभाजनानि ताडिपत्राणि भूर्जत्वचो वा सलोहकण्टकानि तालदलानि सुसम्मृष्टा भित्तयः सततसंनिहिताः स्युः। (का० मी०)

द्वार और आठ मत्तवारणी (Turrets) हों। सभा के मध्य में, चार खंभों के बीच, हाथ-भर ऊँची मणिमय वेदी बनानी चाहिए। उसी पर राजा को बैठना चाहिए। वेदी के उत्तर ओर संस्कृत-कवियों को और उनके पीछे मीमांसक, पौराणिक, स्मार्त, भिषक् तथा ज्योतिषियों को बिठलाना चाहिए। इसी तरह पूर्व-दिशा में प्राकृत के कवियों को और उनके पीछे नट, नर्तक, गायक, वादक, कुशीलव आदि को बिठलाना चाहिए। पश्चिम-दिशा में अपभ्रंश-भाषा के कवियों को और उनके पीछे चित्रकार, माणिक्य-बंधक (मणि जड़नेवाले), स्वर्णकार, बढ़ई, लुहार आदि शिल्पियों को स्थान देना उचित है। दक्षिण-दिशा में पैशाची-भाषा के कवियों को और उनके बाद भुजंग (वेश्यागामी), गणिका, बाज़ीगर, मल्ल तथा आयुध-जीवी (सैनिक) आदि को आसन देना चाहिए। सबके यथास्थान बैठ जाने पर काव्य-चर्चा होनी चाहिए। कवियों का आदर करने में राजा को वासुदेव, सातवाहन, शूद्रक एवं साहसांक के चरित्र का अनुकरण करना चाहिए। परीक्षोत्तीर्ण कवियों को ब्रह्म-रथ पर चढ़ाना और उनका पट्ट-बंधन (?) करना चाहिए। राजशेखर लिखते हैं—

"श्रूयते चोज्जयिन्यां काव्यकारपरीक्षा—
इह कालिदासमेण्ठावत्रामररूपसूरिभारवयः ;
हरिचन्द्रचन्द्रगुप्तौ परीक्षिताविह विशालायाम् ।"

अर्थात् उज्जयिनी में कालिदास, मेंठ *, अमररूप, सूरि, भारवि, हरिचंद्र * और चंद्रगुप्त की परीक्षा हुई थी।

"श्रूयते च पाटलिपुत्रे शास्त्रकारपरीक्षा—
अत्रोपवर्षवर्षाविह पाणिनिपिंगलाविह व्याडिः ;
वररुचिपतञ्जली इह परीक्षिताः ख्यातिमुपजग्मुः ।"

अर्थात् सुना जाता है, किसी समय पाटलिपुत्र (पटना) शास्त्रकारों की परीक्षा के लिये बहुत प्रसिद्ध था। यहीं उपवर्ष (पाणिनि के गुरु), वर्ष, पाणिनि (अष्टाध्यायी के रचयिता), पिंगल (छंदःशास्त्र के प्रवर्तक), व्याडि (लक्षश्लोकात्मक संग्रह-ग्रंथ के कर्ता), वररुचि (वार्तिककार) और पतंजलि (महाभाष्यकार) की परीक्षा ली गई थी, और यहीं से परीक्षित हो उनका यश संसार में फैला।

कवि राजा को अपने अंतःपुर में भाषा का नियम अवश्य करना चाहिए। नियमित भाषा होने से उसका सौष्ठव भली भाँति रक्षित रहता है। राजशेखर इस विषय में कुछ साहित्यिक राजों का इतिहास बतलाते हैं।

यथा—"मगध-देश में शिशुनाग-नामक राजा ने अपने अंतःपुर में नियम किया था कि ट, ठ, ड, ढ, श, ष, ह और क्ष का कोई उच्चारण न करे। शूरसेन-देश के राजा कुविंद के अंतःपुर में कठोर और संयुक्त अक्षर कोई नहीं बोलने पाता था। कुंतल-देश के राजा सातवाहन के रनिवास में प्राकृत-भाषा और उज्जयिनी के महाराज साह-

---

* मेंठ भर्तृमेंठ का ही संक्षिप्त रूप है। भर्तृमेंठ ने हयग्रीववध-नामक महाकाव्य बनाया है।

वक्रोक्त्या मेण्ठराजस्य वहन्त्या सृणिरूपताम् ;
आविद्धा इव धुन्वन्ति मूर्द्धानं कविकुञ्जराः ।
(सूक्तिमुक्तावली)

अर्थात् मेंठराज की वक्रोक्तियाँ अंकुश के समान हैं, जिनकी चोट खाकर कविकुंजर मानो शिर हिलाते हैं।

* महाकवि हरिचंद्र की प्रशंसा बाणभट्ट ने अपने हर्षचरित्र में की है—

पदबन्धोज्ज्वलो हारी कृतवर्णक्रमस्थितिः ;
भट्टारहरिचन्द्रस्य गद्यबन्धो नृपायते ।
(हर्षचरित्र)

सांक* (विक्रमादित्य के यहाँ संस्कृत-भाषा ही बोली जाती थी ।"

काव्यमीमांसा के १७वें अधिकरण में प्राचीन आर्यावर्त का भौगोलिक वर्णन है । पूर्व और पश्चिम-समुद्र के तथा हिमालय और विंध्य पर्वत के मध्य को आर्यावर्त कहते हैं । आर्यावर्त को पाँच देशों में विभक्त किया है । वे देश पूर्व-देश, दक्षिणापथ, पश्चाद्देश, उत्तरापथ और मध्य-देश हैं । वाराणसी से पूर्व पूर्व-देश और माहिष्मती से पश्चिम का देश दक्षिणापथ है । ऐसे ही देवसभा का पश्चिम-प्रदेश पश्चाद्देश और पृथूदक का उत्तरापथ है । और, इन चारो के मध्य-भाग को मध्य-देश कहते हैं । उपर्युक्त पाँच भागों के पर्वतों, नदियों एवं जनपदों का वर्णन लेख-विस्तार-भय से यहाँ नहीं किया जाता ।

तत्कालीन भारतीयों के रंग तथा उच्चारण एवं पाठ-प्रणाली के विषय में राजशेखर लिखते हैं—

"तत्र पौरस्त्यानां श्यामो वर्णः, दाक्षिणात्यानां कृष्णः, पाश्चात्यानां पाण्डुः, उदीच्यानां गौरः, मध्यदेश्यानां कृष्णः श्यामो गौरश्च ।"

पूर्वियों का साँवला, दक्षिणियों का काला, पश्चिम-वासियों का पीला और उत्तर में रहनेवालों का गोरा रंग होता है । पर मध्य-देश में रहनेवालों का रंग काला, साँवला और गोरा होता है ।

"पठन्ति संस्कृतं सुष्ठु कुण्ठाः प्राकृतवाचि ते ;
वाराणसीतः पूर्वेण ये केचिन्मगधादयः ।"

अर्थात् काशी से पूर्व रहनेवाले मागध आ
का संस्कृत पढ़ने का ढंग अच्छा है ; पर
प्राकृत-भाषा के उच्चारण में बेढंगे हैं ।

"गौडस्त्यजतु वा गाथामन्या वाऽस्तु सरस्वती ;
नातिस्पष्टो न चाश्लिष्टो न रूक्षो नातिकोमलः ।
न मन्द्रो नातितारश्च पाठी गौडेषु वाडवः ।"

अर्थात् गौड़ लोग प्राकृत-भाषा नहीं बो
सकते । गौड़ों को चाहिए कि वे या तो प्राकृत
भाषा को छोड़ दें, और या प्राकृत-भाषा ही दूसर
हो जाय । गौड़-निवासी ब्राह्मण न अत्यंत स्प
न अस्पष्ट, न रूक्ष, न कोमल, न मंद और न उ
पाठवाले हैं ।

"गद्ये पद्येऽथवा मिश्रे काव्ये काव्यमना अपि ;
गेयगर्भे स्थितः पाठे सर्वोऽपि द्राविडः कविः ।"

अर्थात् गद्य हो, या पद्य हो, अथवा मि
काव्य (गद्य-पद्यात्मक) हो, सभी को द्रविड-क
गा-गाकर पढ़ते हैं ।

"पठन्ति लटभं लाटाः प्राकृतं संस्कृतद्विषः ;
जिह्वया ललितोल्लापलब्धसौंदर्यमुद्रया ।"

अर्थात् संस्कृत-द्वेषी लाटदेशीय कवि ल
भवाली प्राकृत को ऐसी मधुर भाषा में पढ़ते हैं
मानो उस पर ललित आलाप से सौंदर्य की मुह
लगी हो ।

"सुराष्ट्रत्रवणाद्या ये पठन्त्यर्पितसौष्ठवम् ;
अपभ्रंशावदंशानि ते संस्कृतवचांस्यपि ।"

अर्थात् सुराष्ट्र और त्रवण आदि अपभ्रं
की भाँति संस्कृत-वाक्यों को भी अच्छे ढंग से
बोलते हैं ।

"शारदायाः प्रसादेन काश्मीरः सुकविर्जनः ;
कर्णे गुडूचीगण्डूषस्तेषां पाठक्रमः किमु ॥"

---

* केऽभूवन्नाढ्यराजस्य राज्ये प्राकृतभाषिणः ;
काले श्रीसाहसांकस्य के न संस्कृतवादिनः ।
(सरस्वती-कंठाभरण)

आढ्यराज के राज्य में कौन प्राकृत-भाषी न हुआ, और साहसांक के समय में कौन संस्कृत न बोलता था ।

अर्थात् शारदा देवी के प्रसाद से काश्मीरी लोग तो सुकवि होते ही हैं। उनके पाठ क्रम का क्या कहना, मानो कानों में गिलोय की ही कुल्ली कर देते हैं!

"ततः पुरस्तात्कवयो ये भवन्त्युत्तरापथे ;
ते महत्यपि संस्कारे सानुनासिकपाठिनः ।"

अर्थात् उत्तरापथ के कवियों का चाहे कितना ही संस्कार क्यों न हो, उनका पाठ सानुनासिक ही होता है।

"मार्गानुगेन निनदेन निधिर्गुणानां,
सम्पूर्णवर्णरचनो यतिभिर्विभक्तः ।
पाञ्चालमण्डलभुवां सुभगः कवीनां,
श्रोत्रे मधु क्षरति किञ्चन काव्यपाठः ।"

अर्थात् पांचाल-मंडल के कवियों का सुंदर काव्य-पाठ कुछ अपूर्व ही है। वह यतियों से विभक्त और गुणों की निधि है। उसमें वर्ण रचना के अनुकूल होते हैं, और वह श्रोताओं के कानों में मधु की वृष्टि-सी करता है।

राजशेखर स्त्री-शिक्षा के बड़े पक्षपाती थे। इस विषय में उनके विचार बड़े उदार हैं। वह कहते हैं—

"पुरुषवत् योषितोऽपि कवी भवेयुः । संस्कारो ह्यात्मनि समवैति न स्त्रैणं पौरुषं वा विभागमपेक्षते । श्रूयन्ते दृश्यन्ते च राजपुत्र्यो महामात्रदुहितरो गणिकाः कौतुकिभार्याश्च शास्त्रप्रहतबुद्धयः कवयश्च ।"

अर्थात् पुरुषों की तरह स्त्रियाँ भी कवि हो सकती हैं। संस्कार का आत्मा से संबंध होता है। वह स्त्री और पुरुष के विभाग की अपेक्षा नहीं करता। सुनते और देखते भी हैं कि राजकुमारियाँ, मंत्रियों की कन्याएँ, वेश्याएँ और विदूषकों की स्त्रियाँ विदुषी और कवि हैं।

राजशेखर विदेश-यात्रा के भी विरोधी न थे। वह काव्यमीमांसा में लिखते हैं—

"किञ्चन महाकवयोऽपि देशद्वीपान्तरकथा पुरुषादिदर्शनेन तत्रत्यां व्यवहृतिं निबध्नन्ति ।"

अर्थात् महाकवि भी विदेश और द्वीपांतरों में घूमकर अपनी रचना में वहाँ का आचार-व्यवहार लिखते हैं। लेख बहुत बढ़ गया, अतः यहीं लेखनी को विश्राम दिया जाता है।

रामसेवक पांडेय

दो बूँदें

(१)

शरद का सुंदर नीलाकाश,
निशा निखरी, था निर्मल हास ;
बह रही छाया-पथ में स्वच्छ,
सुधा-सरिता लेती उच्छ्वास।
पुलककर लगी देखने धरा,
प्रकृति भी सकी न आँखें मूँद ;
सुशीतलकारी शशि आया,
सुधा की मनो बड़ी-सी बूँद।

(२)

हरित किसलयमय कोमल वृंत,
झुक रहा जिसका पाकर भार ;
उसी पर रे मतवाले मधुप,
बैठकर करता तू गुंजार।
न आशा कर इतनी तू धीर,
कुसुम-रज, रस से लूँगा गूँद ;
फूल है नन्हा-सा नादान,
भरा मकरंद एक ही बूँद।

जयशंकर "प्रसाद"

संगीत-सुधा

गौड़ मलार—तीन ताल

स्वरकार—"निषाद"] [**शब्दकार**—गोविंदवल्लभ पं

गीत

श्याम घन, हे सुंदर सुकुमार !

[१]

विश्व-जननी के हास समान
कौन तुम अनुपम दयानिधान ?
तुम्हारा धन्य अयाचित दान !
ताप से तप्त भूमि है आज,
बहा दो शीतल जल की धार,
श्याम घन, हे सुंदर सुकुमार !

[२]

दुखी, निर्वासित, दुर्बल वेश—
यक्ष का लेकर दारुण क्लेश—
अश्रु औ' विरहपूर्ण संदेश,
दूत बन जाते हो क्या आज,
विरह-विधुरा बाला के द्वार ?
श्याम घन, हे सुंदर सुकुमार !

[३]

कौन तुम, किसके हो संताप ?
दीन विधवा के करुण विलाप,
या कि दलिता नारी के शाप ?
तड़ित-गति से जाते हो कहाँ,
—डुबाने को सारा संसार ?
श्याम घन, हे सुंदर सुकुमार !

[४]

भूल कर अपना तन-धन-धाम
रट रहा है वह तेरा नाम,
बहा दे एक बूँद घन श्याम !
बुझा दे उस चातक की प्यास,
जिसे है तेरा ही आधार,
श्याम घन, हे सुंदर सुकुमार !

[५]

इधर तुम बरसाते रस-धार,
प्रकृति ने किया उधर श्रृंगार।
आज गाऊँगा राग मलार—
खो चुका हूँ मन का संकोच,
मिल गए हैं वीणा के तार,
श्याम घन, हे सुंदर सुकुमार !

स्थायी

	२				०				३				×			
ग	--	रे	म	ग	ग	री	सा	—	रे	रे	ग	ग	गम	प	म,	ग
श्या	—	म	घ	न	हे	—	सुं	—	द	र	सु	कु	मा-	—	र,	श्या
	—	प	म	प	ध	सां	ध	प	रे	ग	रे	म	गम	प	म,	ग
	—	म	घ	न	हे	—	सुं	—	द	र	सु	कु	मा-	—	र,	श्या

अंतरा

प	—	प	प	प	नी	—	नी	—	सां	ध	सां	रें	सां	—	रें,	रें
वि	—	श्व	ज	न	नी	—	के	—	हा	—	स	स	मा	—	न,	कौ
	ध	नी	म	प	ध	ध	सां	सां	ध	नी	—	प	म	री	प,	म
	—	न	तु	म	अ	नु	प	म	द	या	—	नि	धा	—	न,	तु
	सांध	रे	सां	—	सां	—	रें	सां	रें	मं	रें	मं	गं	—	रें,	सां
	म्हा-	—	रा	—	ध	—	न्य	अ	या	—	चि	त	दा	—	न,	ता
	निसां	रीं	सां	नि	धनि	सां	ध	प	रींग	म	ग	री	गम	प	म,	ग
	--	प	से	—	त-	—	प्र	भू	--	मि	है	—	आ-	—	ज,	व
	रे	—	म	ग	ग	री	सा	सा	रे	रे	ग	ग	गम	प	म,	ग
	हा	—	दो	—	शी	—	त	ल	ज	ल	की	—	धा-	—	र,	श्या
	—	प	म	प	ध	सां	ध	प	रे	ग	रे	म	गम	प	म,	ग
	—	म	घ	न	हे	—	सुं	—	द	र	सु	कु	मा-	—	र	श्या

नोट—अंतरा आरंभ करते समय स्थायी के अंतिम स्वर (ग / श्या) के बदले (प / वि) लीजिए। शेष अंतरे भी इसी तरह। [सर्वाधिकार सुरक्षित हैं]

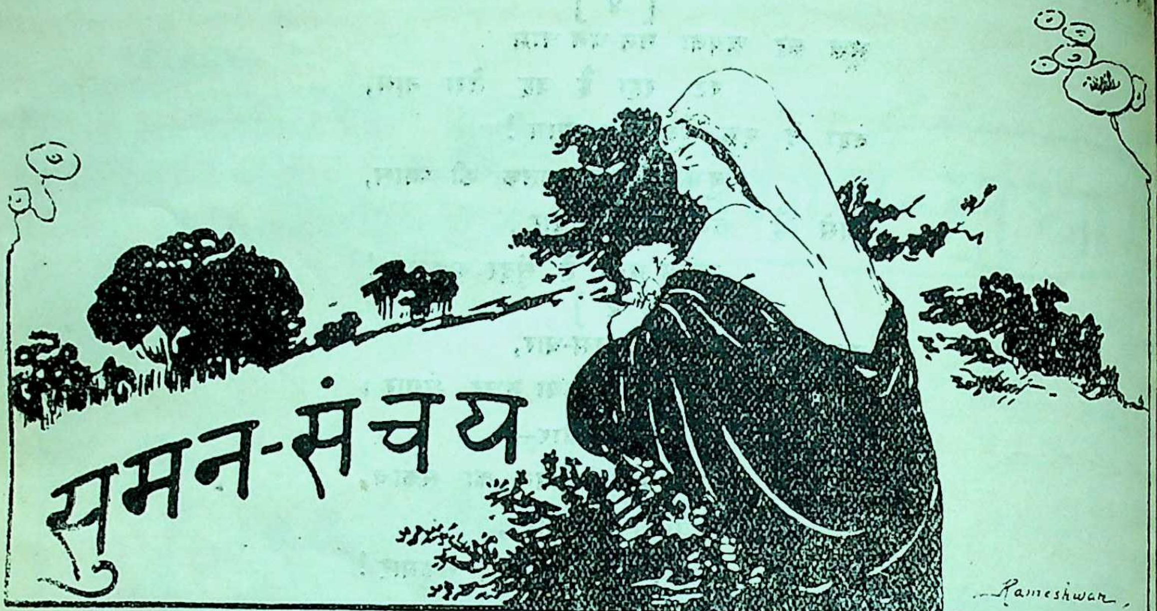

सुमन-संचय

१. धन-कुबेरों के उत्तराधिकारी

हज़रत हाली ने रईसों के सपूतों की महिमा गाई है। बाबू मैथिलीशरण गुप्त ने भी हाली का अच्छा उपयोग किया है। किंतु भारत में रईसों के सपूतों की करतूतों से सब अभिज्ञ हैं। क्या गाँव का छोटा रईस, क्या शहर का बड़ा रईस, दोनों अपने लल्ला का लालन-पालन एक ही तरह से करते हैं। है भी ठीक। जब हमारा प्रारब्ध-वाद ठीक है, तो धनियों के वंशजों का कर्तव्य ग़रीबों के लड़कों की तरह परिश्रम करना नहीं है। किंतु योरप नास्तिक है। वहाँ धनियों के विचार बदल रहे हैं। वे साम्य-वादियों के सुर में सुर मिलाकर कहने लगे हैं कि बाप-दादों की संपत्ति का भोग करना लज्जा की बात है। इसलिये उत्तराधिकारी का कर्तव्य है कि वह पहले अपने को इस योग्य बना ले कि बिना बाप-दादों की संपत्ति की सहायता के संसार में अपनी गुज़र कर सके। स्वेडन के नोबेल ने अपनी सारी संपत्ति की आय नोबेल-पुरस्कार के लिये दे दी। नोबेल ने कहा है कि मैंने दो कारणों से ऐसा किया। मुख्य कारण यह है कि मेरे बाहु-बल से उपार्जित संपत्ति का उपभोग मेरे लड़के करें, इसे मैं अनुचित समझता हूँ। उनमें जितनी योग्यता है, उतना धन वे कमा लेंगे। दूसरा कारण स्पष्ट है। अमेरिका के अतुल-संपत्तिशाली धनी भी ऐसा कहने लगे हैं। उनमें से अधिकांश के उत्तराधिकारी वास्तव में योग्य हैं। राकफ़ेलर (Rockfeller) संसार के किरासिन तेल का राजा है। इसके सामने भारत का बड़े-से-बड़ा नरेश भी कुछ हस्ती नहीं रखता। भारत-सरकार की साल-भर की आय और इसकी महीने की आय बराबर है! इसके अतिरिक्त जैसे स्वाधीन राजा अपना राज्य बढ़ाने के लिये लड़ाई करते हैं, वैसे ही यह भी बड़ी-बड़ी शक्तियों को लड़ा देता है। अमेरिका के ये व्यवसायी राजे-महाराजे जब इँगलैंड से कहते हैं कि हमारा क़र्ज़ चुका दो, तो पौंड का भाव गिर जाता है। जब जर्मनी से कहते हैं कि हम तुम्हें क़र्ज़ देंगे, तो मार्क का भाव चढ़ने लगता है। तात्पर्य यह कि इनके हाथ में दंड-बल है, जो बक़ौल कौटिल्य के राजा की एक-मात्र शक्ति है। जो हो, राकफ़ेलर का पुत्र जान० डी० राकफ़ेलर जुनियर उतना ही योग्य है, जितना उसका बाप। राकफ़ेलर तो अब अस्सी साल पार कर चुका है, इसलिये उसका लड़का ही सब काम-काज करता है। फ़ोर्ड का नाम भला किसने न सुना होगा? फ़ोर्ड-मोटरकार भारत के देहातों तक में पहुँच गई है। इस हेनरी फ़ोर्ड ने अपनी बुद्धि और बाहु-बल से मोटर का कारख़ाना खोला, और इतना धन कमाया है कि आज वह संसार का सबसे बड़ा धनी पुरुष गिना जाता है। प्रायः तीन साल हुए, उसने काम से छुट्टी ले ली है। दस लाख डालर की पूँजी से उसने

एक समाचारपत्र निकाला है, और अब वह राजनीति के क्षेत्र में आ कूदा है । उसका लड़का अपने काम का बड़ा पक्का है, और कारख़ाने की बड़ी तरक़्क़ी कर रहा है । किंतु है वह बड़ा झेंपू । वह शेर का सामना भले ही कर ले, पर सिवा मज़दूरों के, भले आदमियों की संगति में नहीं रह सकता । इसको कपड़े पहनने और खड़े होने तक का शऊर नहीं है । लेकिन इससे क्या ? अपने विषय का तो वह उस्ताद है । हैरिमन रेलों का राजा गिना जाता है । इसने आँख मूँदकर ग़रीबों का रक्त चूसा है । चाहे जिस प्रकार हो, इसे मुनाफ़ा बढ़ाने की चिंता रहती है । किंतु इसके लड़के डब्ल्यू० ए० हैरिमन ने ऐसे उपाय निकाले हैं कि विना मज़दूरों को अधिक सताए ख़ूब मुनाफ़ा हो रहा है । आस्टोर के हाथ में अमेरिका के बड़े-बड़े बैंक और तारघर हैं । यह भी राकफ़ेलर, फ़ोर्ड आदि की जोड़ है । किंतु इसका उत्तराधिकारी गुलछर्रे उड़ाता है । उसे खेल-कूद, घोड़े-कुत्ते वग़ैरह पालने और शिकार करने का शौक़ है । विन्सेंट आस्टोर का हाल भी पढ़ लीजिए । धन-कुबेर वाडरविल्ट का पुत्र विन्सेंट आस्टोर का दोस्त है । यह भारत के रईसों के सपूतों की तरह रहता है, और 'यौवनं धनसंपत्तिः प्रभुत्वमविवेकिता' का अवतार है । जर्मनी का ह्यूगो ष्टिनेस * ग़रीब नहीं, धनी है । धनाढ्य भी ऐसा कि सभी धनियों से टक्कर ले सकता है । अपनी ही खानों से कोयला निकालता है, और अपने ही कारख़ाने में जहाज़ तैयार करता है । साथ ही अपने जंगलों से लकड़ी लाता और अपनी तेल की खानों से जहाज़ चलाने के लिये माज़ुट (Mazut)-नामक तेल पाता है । इसकी यह कैफ़ियत है । इसने चुपके-चुपके अमेरिका के तेल के व्यापार में भी अपना हाथ घुसेड़ दिया है । जर्मनी में तो इसके अगणित कारख़ाने हैं ; किंतु आस्ट्रिया, रूस, रूमानिया, बलगेरिया, पोलैंड, ब्रेज़िल, आरजेंटाइन आदि संसार के अनेक स्थानों में इसके कारख़ाने और खानें हैं । शत्रु के देश फ़्रांस में भी इसकी संपत्ति है । भारत के नीतिज्ञों ने 'किं दूरे व्यवसायिनाम्' कहा है । यह इस उक्ति को चरितार्थ कर रहा है । योरप के व्यवसायी ष्टिनेस के उत्तराधिकारी को भगवान् ने सूरत अच्छी नहीं दी तो क्या, सीरत तो दी है । इस समय बंगाल में इसकी आस्त है । भारत में ताता की संतान भी अयोग्य नहीं कही जा सकती । मारवाड़ी-समाज में बाबू घनश्यामदास बिड़ला भी वास्तव में योग्य व्यवसायी हैं । जिस समाज में सट्ट का राज्य है, उसको यह व्यवसाय का मार्ग दिखा रहे हैं । किंतु भारत के इन धनियों का योरप और अमेरिका के उन धन-कुबेरों से क्या मुक़ाबला, जो एक-एक दिन में करोड़ों रुपयों की आय रखते हैं ।

× × ×

२. पंचस्नानी महाज्ञानी

भारत में जाड़े के मारे न नहा सकनेवाले लड़के कहा करते हैं—पंचस्नानी महाज्ञानी; जो नित्य नहाय, निश्चय नरक को जाय । हम सयाने लोग इस बात की हँसी उड़ाते हैं । किंतु आयर्लैंड के प्रसिद्ध लेखक बर्नार्ड शा (Barnard Shaw) बूढ़े होकर यह बात कहने लगे हैं । बर्नार्ड शा अपने ढंग के एक ही मनस्वी हैं । आप मौलिकता और हास्य-रस के अवतार, हलके साम्य-वाद के प्रचारक, और नई बात कहने के लिये प्रसिद्ध हैं । सो सबसे बढ़कर नई बात जो उन्होंने कही है, वह यह कि "विना नहाए रहना स्वास्थ्य के लिये लाभदायक है ।" यह सिद्धांत उन्होंने विज्ञान के आधार पर नहीं निकाला है । वह साहित्यिक खोजी ठहरे, उन्हें विज्ञान के कोरे क्षेत्र से क्या मतलब ? किंतु वह कहते हैं 'प्रत्यक्षे किं प्रमाणम्'—एस्किमो-जाति को देखो, और उससे सबक़ सीखो । इस जाति के लोग नहाना पाप समझते हैं, पर तंदुरुस्ती में अपना सानी नहीं रखते । इसके अतिरिक्त एस्किमो लोग गंदगी को प्यार करते हैं । बच्चे का मुँह जब मैला हो जाता है, तो मा सारा मैल चाट जाती है । यह ठीक कुत्ते और बिल्लियों का रवाज है । मैल चाट जानेवाली मा बड़ी हट्टी-कट्टी होती है । शा अपने व्याख्यान में कहते हैं—"सभ्यता का अर्थ आराम और जीवन-सुख है । किंतु वर्तमान सभ्यता कष्ट-प्रद और हानिकर है । * * * * हमारी (पाश्चात्य) सभ्यता में मानव-जाति कपड़ों के बोझ और हद से ज़्यादह साबुन तथा पानी के नीचे दबी

---

* अभी हाल ही में इसकी मृत्यु हो गई है ।—संपादक

जा रही है। एस्किमो-जाति, जो सभ्यता के इन अंगों का उपभोग नहीं करती, वास्तव में सबसे अधिक स्वास्थ्ययुक्त और सुखी जाति है।" शा ने तिब्बत के लोगों को संभवतः नहीं देखा। उनका स्वास्थ्य एस्किमो-जाति के लोगों से किसी तरह बुरा नहीं है, और गंदगी में वे सबसे बाज़ी मार ले जायँगे। इन पंक्तियों के लेखक ने कई तिब्बती ऐसे देखे हैं, जिन्होंने आठ-आठ साल तक मुँह नहीं धोया, पर उनका बदन ऐसा मालूम होता था, गोया ईस्पात का बना है। इनके डील-डौल के सामने नाटे चीनी और जापानी कोई हस्ती नहीं रखते। इस कलियुग में भी जो आजानुबाहु देखने हों, तो इन गंदे लोगों का दर्शन कीजिए। कपड़ों में जन्म-भर का मैल जम गया है, बदन कभी धुला नहीं, और सिर के बाल कंघी-तेल के विना एक दूसरे से सट गए हैं। पर चेहरे से तेल टपकता है। मालूम होता है, हमारे पुरखे गंदगी का माहात्म्य भी जानते थे। इसीलिये तो औघड़ पूजनीय गिने जाते हैं। वाम-मार्ग का आदर आज भी है। पुराणों में पाया जाता है कि वाल्मीकिजी जब तपस्या कर रहे थे, तो उनके ऊपर वल्मीकों का पहाड़-सा खड़ा हो गया था। उसके भीतर खुली हवा और सफ़ाई का जाना असंभव था। तो क्या इस गंदगी के प्रताप से ही उनकी बुद्धि इतनी तीव्र हो गई थी कि उन्होंने संसार का पहला काव्य-ग्रंथ रचा? कौन कह सकता है कि भारत के साधु-संन्यासी गंदगी का महत्त्व नहीं समझते। बदन में राख मलना संभवतः स्वास्थ्य ठीक रखने के लिहाज़ से ही हो। हमारे पहलवान कुश्ती लड़ने के वक़्त बदन में मिट्टी मलते हैं। अतः वे भी जानते हैं कि गंदगी से ताक़त बढ़ती है। किंतु भारत में नित्य न नहानेवाले शायद ही मिलें। हाँ, योरप में साल-दो साल तक न नहानेवाले विना ढूँढ़े भी मिल जाते हैं। उनका स्वास्थ्य भी बुरा नहीं होता। अब प्रश्न यह उठता है कि क्या हम भारतवासियों को भी सभ्यता के इस नए अनुवाद का अनुकरण करना चाहिए। संभव है, कुछ नव्य भारतीय आचार्य शा को गुरु मान लें। पर हम तो कहेंगे—सावधान! हमने एक ऐसे अनुकरण का दुष्परिणाम अपनी आँखों से देखा है। गाँधीजी ने आरोग्यदर्शन-नामक एक पुस्तक लिखी है। उसे पढ़कर हमारे एक बी० एल० सी० मित्र ने सारा साइंस ताक पर रख दिया, और सुबह कड़ाके की

सरदी में नंगे पैरों चलना, ठंडे पानी से नहाना और
मूँगफली खाना शुरू कर दिया। फल यह हुआ
महीने-भर के भीतर ही दुनिया से चल बसे! गाँधी
महात्मा हैं। वैद्य तो नहीं हैं। पर यह पूछता कौन
जो हो, बर्नार्ड शा का कथन भले ही शीत-प्रधान देशों
लिये लागू हो, किंतु भारत में उसका प्रयोग सफल
हो सकता। जिस प्रकार राजनीति के क्षेत्र में
मॉर्ले ने कहा था कि एस्किमो लोगों के कपड़े भार
वासी सहन नहीं कर सकते, उसी प्रकार हम भी
निवेदन करेंगे कि उनकी गंदगी भी हम सहन नहीं
सकेंगे। हाँ, शीत-प्रधान योरप सहन कर सकता है।
उसे यह नया आविष्कार मुबारक हो।

जर्मनी से}

× × ×

३. अछूत की पुकार

चूक थी क्या मेरी करतार,
हुआ जो मैं भारत का भार।
नित श्रम कठिन करूँ, तो भी भर-पेट मिले न अ
सभ्य-समाज अनादर करता, कह अछूत, दुत
विविध यंत्रणा पाता मेरा दीन, दुखी परि
आर्तनाद करता हूँ, कोई सुनता नहीं गु
चरण-कमल-रज सिर पर रखते जिनकी कर स
वे ही, आह, घृणा करते हैं! कैसा है सुवि
उत्सव, सभा, कूप, मंदिर में जाने पर फ
करने का शुभ कर्म न हमको कुछ भी है अधि
कष्ट-कथा मैं कहूँ कहाँ तक तुमसे करु
मनुष्यत्व की मर्यादा को मिटा रहा आ
या तो अब अस्तित्व मिटा दो, अथवा अत्या
"विकल" जाति-अपमान उठाकर जीने को धि

महावीरप्रसाद श्रीवास्तव "विक

× × ×

४. पांडेयजी का प्रमाद

गत फाल्गुन-मास की माधुरी में हमारा 'वर्षा-ऋतु
चक्रवाक'-शीर्षक एक छोटा-सा नोट छपा था। इस नो
हमने श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण के आधार पर यह
णन किया था कि वर्षा-ऋतु में चक्रवाक भारत से
चले जाते और शरद्-ऋतु में फिर यहाँ आ जाते
गत वैशाख की माधुरी में विद्वद्वर पं० रामसे

पांडेय ने 'साहित्यभूषणजी की भूल'-शीर्षक एक लघु लेख लिखकर हमारी भूल दिखलाई है। हमने अपनी अल्प बुद्धि के अनुसार पांडेयजी के लेख पर बहुत विचार किया; पर हमें अपनी भूल नहीं समझ पड़ी। हमारे लेख के विरुद्ध पांडेयजी ने यह लिखने की कृपा की है—"मेरी तुच्छ सम्मति में यहाँ पर साहित्यभूषणजी से अर्थ समझने में भूल हुई है। उपर्युक्त पद्यों का अर्थ यों है कि इस समय (वर्षा-ऋतु में) मानस-वास के लोभी हंस चल दिए, और चक्रवाक अपनी प्रियाओं से समन्वित हो रहे हैं। 'सम्प्रस्थिताः' इस पद्य के पूर्वार्द्ध में दो वाक्य हैं। 'मानसवासलुब्धाः' हंसों के लिये आया है, 'चक्रवाकाः' का विशेषण नहीं है। द्वितीय वाक्य में 'भवन्ति' क्रिया का अध्याहार होता है।"

इस पर निवेदन है कि विज्ञवर पांडेयजी ने गोविंद-राज प्रभृति टीकाकारों के आधार पर, विना अधिक विचार किए, ऐसा लिख दिया है। यदि पांडेयजी ने श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण के इस स्थल का ध्यान-पूर्वक अध्ययन करने की कृपा की होती, तो आप इन (प्रकृति-पर्यवेक्षणानभिज्ञ) टीकाकारों के अर्थ को कदापि युक्ति-संगत न मान बैठते। पांडेयजी से निवेदन है कि कृपा करके कम-से-कम एक बार इस पर फिर गंभीरता-पूर्वक विचार करने की कृपा करें।

यहाँ 'मानसवासलुब्धाः' विशेषण है, संज्ञा नहीं। 'चक्रवाकाः' के लिये ही यह विशेषण दिया गया है। हंसों का यहाँ कहीं नाम नहीं है। यदि आदि-कवि 'मानसवासलुब्धाः' हंसों के लिये लिखते, तो उनको 'चक्रवाकाः' के स्थान में 'राजहंसाः' लिख देने में क्या अड़चन थी?

मेरी समझ में यहाँ 'सम्प्रस्थिता मानसवासलुब्धाः' और 'अभ्यागतैः' ये दोनों वाक्य चक्रवाकों के लिये ही आए हैं, हंसों के लिये नहीं। 'सम्प्रस्थिताः' को हंसों के लिये अलग कर लेने से चक्रवाकों के लिये 'अभ्यागतैः' का प्रयोग ठीक नहीं समझ पड़ता। 'अभ्यागतैः' का 'आभिमुख्येन सङ्गतैः' अर्थ खींच-खाँचकर लगाना, क्लिष्ट-कल्पना-दोषापत्ति के कारण, किसी तरह ठीक नहीं। और, 'भवन्ति' क्रिया का अध्याहार तो नितांत अनर्गल है; क्योंकि 'सम्प्रति चक्रवाकाः प्रियान्विता भवन्ति' से यह समझ पड़ता है कि वर्षा-ऋतु के सिवा अन्य ऋतुओं में चक्रवाक प्रियान्वित नहीं होते; किंतु यह किसी तरह ठीक नहीं। यह बात सर्वसाधारण में प्रसिद्ध है कि चक्रवाक सभी ऋतुओं में प्रियान्वित रहते हैं। इसीलिये इनको 'द्वंद्वचर' कहते हैं।

'अभ्यागतैः' इस श्लोक में पांडेयजी ने 'स्मरप्रियैः' के स्थान में 'सरःप्रियैः' पाठ लिखा है। यदि यही पाठ मान लिया जाय, तो भी हमारी कुछ क्षति नहीं; प्रत्युत 'सरःप्रियैः' यह पाठ 'मानसवासलुब्धाः' इस विशेषण को चक्रवाकों के लिये ही स्पष्टतया पुष्ट करता है। हमारे लेख में 'पुलिनोपघातैः' यह पाठ प्रेस के कर्मचारियों की भूल से प्रकाशित हुआ है। हमने 'पुलिनोपयातैः' ही लिखा था।

आगे चलकर पांडेयजी लिखते हैं—"रामाभिरामीय नोट के आधार पर 'अभ्यागतैः' का अर्थ मानस से आए हुए युक्ति-युक्त नहीं प्रतीत होता; क्योंकि वास्तव में मूल-ग्रंथ से मानस का कुछ भी संबंध नहीं है।"

पांडेयजी की यह बात हमारी समझ में नहीं आई। 'मानसवासलुब्धाः' में मानस का स्पष्ट उल्लेख है, और 'सम्प्रस्थिताः' से यह स्पष्ट प्रमाणित है कि चक्रवाक मानस को ही संप्रस्थित हो गए; क्योंकि वे मानस-वास के लोभी हैं। जब वे मानस-वास के लिये संप्रस्थित हो गए थे, तब मानस से ही आए थे, अतः मूल-ग्रंथ से मानस का प्रत्यक्ष संबंध है। यह बात इतनी स्पष्ट है कि यदि दुराग्रह और पक्षपात-परित्याग-पूर्वक विचार किया जाय, तो इसमें किसी तरह के भ्रम की गुंजाइश ही नहीं है। हमारी समझ में यहाँ रामाभिरामीय नोट ही ठीक है, गोविंदराजीय और रामानुजीय नहीं।

पांडेयजी लिखते हैं—"साहित्यभूषणजी का 'सम्प्रस्थिता मानसवासलुब्धाः' का अर्थ इसलिये ठीक नहीं है कि वाल्मीकिजी स्वयं किष्किंधा-कांड के २८वें सर्ग के ३९वें श्लोक में पुनः चक्रवाकों का वर्णन करते हुए कहते हैं—

"नद्यः समुद्वाहितचक्रवाकास्तटानि शीर्णान्यपवाहयित्वा ;
दृप्ता नवप्राभृतपूर्णभोगा द्रुतं स्वभर्तारमुपोपयान्ति ।"

अर्थ—नवीन पुष्प-फलादि उपहारों से पूर्ण ऐश्वर्य-वाली, चक्रवाक-रूप स्तनों को उठाए हुए नदियाँ टूटे-फूटे किनारों को हटाकर अपने पति समुद्र के पास जा रही हैं।

चक्रवाक यदि मानस सरोवर को उड़ गए होते, तो फिर नदियाँ स्तन-स्थानीय चक्रवाकों का कैसे समुद्वाहित कर रही हैं ? साहित्यभूषणजी के ये प्रबल प्रमाण तो वर्षा में चक्रवाकों की स्थिति के साधक ही हैं, न कि बाधक।"

हम पांडेयजी से फिर नम्र निवेदन करते हैं कि आप श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण के इस स्थल को विचार-पूर्वक पढ़ने की कृपा करें, तो आपको स्पष्ट ही समझ पड़ेगा कि रामायण के इन टीकाकारों का उक्त अर्थ नितांत भ्रम-पूर्ण है। 'समुद्वाहितचक्रवाकाः' का चक्रवाक-रूपी स्तनों को उठाए हुए यह अर्थ किसी तरह युक्ति-संगत नहीं। मेरी मंद-मति में तो इसका यह अर्थ समझ पड़ता है—'(सम्) सम्यक्प्रकारेण (उत्) उच्चैः (वाहिताः) नीताः (चक्रवाकाः) कोकाः याभिस्ताः समुद्वाहितचक्रवाकाः।' अर्थात् नदियों ने चक्रवाकों को बहुत ऊँचे स्थान पर पहुँचा दिया, यानी चक्रवाक बहुत ऊँचे उड़ गए। प्रायः पक्षियों के उड़ने के विषय में यह बात प्रमाणित है कि जो पक्षी जितना अधिक दूर जाने की इच्छा करता है, वह आकाश में उतना ही ऊँचा चढ़ जाता है। यहाँ मानस के सुदूर मार्ग को तय करने के लिये चक्रवाकों का बहुत ऊँचे उड़ जाना सर्वथा युक्ति-युक्त है। अब इस बात के बतलाने की आवश्यकता नहीं कि आदि-कवि ने वर्षा-ऋतु में चक्रवाकों के चले जाने का ही उल्लेख किया है। अतः मेरे प्रबल प्रमाण वर्षा-ऋतु में चक्रवाकों की स्थिति के बाधक ही हैं, न कि साधक।

इसके आगे पांडेयजी ने श्रीरामानुजाचार्य के प्रमाण से चक्रवाकों को हंसों का विरोधी बतलाया है; किंतु इसका कोई दृढ़ प्रमाण नहीं। श्रीयुक्त रामानुजाचार्य का कथन कि 'शरद्गुणसञ्जातहर्षवशात् वैरं विस्मृत्य विहरन्ति न विरोधः' ठीक नहीं समझ पड़ता; क्योंकि आदि-कवि ने हंसों और चक्रवाकों का वसंत-ऋतु में भी साथ-साथ वर्णन किया है। कदाचित् इसके लिये पांडेयजी 'वसन्तगुणसञ्जातहर्षवशात्' कह दें। अस्तु।

पांडेयजी लिखते हैं—"संस्कृत-साहित्य के कवि-समय में वर्षा में हंसों के ही मानस जाने का वर्णन है, चक्रवाकों के नहीं।"

इस पर निवेदन है कि जब संस्कृत-साहित्य में वर्षा-ऋतु में चक्रवाक-स्थिति-साधक कोई प्रमाण नहीं, तो वर्षा-ऋतु में चक्रवाकों का चला जाना स्वतःसिद्ध है। श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण में तो वर्षा-ऋतु में चक्रवाकों के मानस चले जाने का स्पष्ट ही उल्लेख है। अतः इस विषय में अब और अधिक प्रमाण की कोई आवश्यकता प्रतीत नहीं होती।

अपना लेख समाप्त करते हुए पांडेयजी ने लिखा है—

"इस दोहे में ख्याति-विरुद्धता-दोष नहीं है। तब प्रकृति-निरीक्षण में ग़लती कैसे मानी जा सकती है, जब पर्वत और जंगलों के नित्य निवासी प्रकृति-पर्यवेक्षक स्वयं आदि-कवि ही वर्षा में चक्रवाकों का वर्णन करते हैं।"

पांडेयजी का यह कथन सर्वथा असंगत है। आदि-कवि ने वर्षा-ऋतु में चक्रवाक-स्थिति का कहीं वर्णन नहीं किया, उनके चले जाने का अवश्य किया है। वर्षा-ऋतु के बाद शरद्-ऋतु में आदि-कवि ने चक्रवाकों का बार-बार वर्णन किया है। देखिए—

"निःस्वनं चक्रवाकानां निशम्य सहचारिणाम्।
पुण्डरीकविशालाक्षी कथमेषा भविष्यति ॥ १०॥
(श्रीमद्वा० रा०, कि० कां०, ३० सर्ग)

"अभ्यागतैश्चारुविशालपक्षैः
स्मरप्रियैः पद्मरजोऽवकीर्णैः।
महानदीनां पुलिनोपयातैः
क्रीडन्ति हंसाः सह चक्रवाकैः ॥ ३१ ॥
(श्रीमद्वा० रा०, कि० कां०, ३० सर्ग)

"वित्रास्य कारण्डवचक्रवाकान् महारवैर्भिन्नतटा गजेन्द्राः।
सरस्सु बद्धाम्बुजभूषणेषु विक्षोभ्य विक्षोभ्य जलं पिबन्ति ॥४३॥
(श्रीमद्वा० रा०, कि० कां०, ३० सर्ग)

"सचक्रवाकानि सशैवलानि काशैर्दुकूलैरिव संवृतानि।
सपत्ररेखाणि सरोचनानि वधूमुखानीव नदीमुखानि ॥५५॥
(श्रीमद्वा० रा०, कि० कां०, ३० सर्ग)

"प्रसन्नसलिलाः सौम्य कुरराभिविनादिताः।
चक्रवाकगणाकीर्णा विभान्ति सलिलाशयाः ॥५९॥
(श्रीमद्वा० रा०, कि० कां०, ३० सर्ग)

"हंससारसचक्राह्वैः कुररैश्च समन्ततः।
पुलिनान्यवकीर्णानि नदीनां पश्य लक्ष्मण ॥६३॥
(श्रीमद्वा० रा०, कि० कां०, ३० सर्ग)

इसी तरह वसंत-ऋतु में भी आदि-कवि ने चक्रवाकों का वर्णन किया है; किंतु लेख-वृद्धि-भय हमें उसके उद्धृत

करने से विरत रखता है । पाठकगण उसे किष्किंधा-कांड के प्रथम सर्ग में पढ़ने की कृपा करें । अब वाचकवृंद विचारें कि 'पावस०' इस दोहे में ख्याति-विरुद्धता के साथ ही प्रकृति-निरीक्षण में भी ग़लती है या नहीं ? पर्वत, जंगल और नदियों के रहनेवालों, विशेष कर शिकारियों, से यदि पांडेयजी ने दर्याफ़्त किया होता, तो वे आपको स्पष्ट बतला देते कि वर्षा-ऋतु में चक्रवाक यहाँ कहीं नहीं दिखाई देते । इस प्रत्यक्ष प्रमाण के सामने अन्य किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं समझ पड़ती । इन सब बातों पर विचार करने से सिद्ध है कि इसमें हमारी भूल नहीं, पांडेयजी का ही प्रमाद है ।'

श्रीलक्ष्मणसिंह क्षत्रिय

× × ×

५. स्मृति

घूमकर घूँघट जब खोला,
मौन मुख हँसकर क्या बोला ?
दिखाकर झलक ओट में किया,
न कुछ कहने का अवसर दिया ।
लाज से झिझका—सिर झुक गया,
न-जाने क्या सोचा, रुक गया ।
सकुचकर लौटा रहा न और,
गड़ाई दृष्टि एक उस ठौर ।
"लौट जा," कहा हृदय ने वहीं,
हाथ धर लज्जा बोली "नहीं ।"
द्वार आशा के आश्रय लिया,
अधर में उसने लटका दिया ।
धैर्य का दिया हिंडोला डाल,
चली वह गई वहीं बैठाल ।
लटकती अलक, नुकीले नैन,
न लेने देते पल-भर चैन ।
मंद मुसकान, मनोहर मूर्ति,
करे उद्विग्न चित्त की स्फूर्ति,
रही है मन-मंदिर में झूल,
नहीं स्मृति उसको सकती भूल !

"कोई"

× × ×

६. महाकवि वृंद

माधुरी की किसी पिछली संख्या में महाकवि वृंद के ऊपर श्रीयुत भागीरथप्रसादजी दीक्षित का लेख अकस्मात् देख पड़ा । इससे पहले का जो लेख था, वह मैंने नहीं देखा ; परंतु यह मैं कह सकता हूँ कि दोनों महाशयों के लेखों में महाकवि के विषय में कुछ त्रुटि अवश्य है । वृंदजी का जन्म मेड़ता (जोधपुर-राज्य) में हुआ था, यह सही है । लेकिन इन्हें सेवक-जाति का ब्राह्मण जो लिखा गया है, और उक्त जाति को गौड़-ब्राह्मणों की शाखा बतलाया गया है, सो सही नहीं है । महाकविजी के वंश में इस समय विजयदयाल नाम के एक नवयुवक विद्यमान हैं । अजमेर के गवर्नमेंट हाई स्कूल में, नाइंथ क्लास में, आप पढ़ते हैं । इनको इस समय बहुत सहायता की आवश्यकता है । इनसे मैंने महाकवि का चित्र तथा सही जीवन-चरित्र माँगा है । माधुरी में प्रकाशित कराऊँगा ।

सेवक-जाति गौड़-ब्राह्मणों की कोई शाखा नहीं है । शाकद्वीपी ब्राह्मण, जो कि बिहार और उड़ीसे की तरफ़ ज़्यादा हैं, उन्हीं की यह शाखा है । एक समय था, जब इस जाति में बड़े मेधावी और विद्वान् सत्पुरुष थे, और इनके द्वारा संसार के हर कोने में वैदिक धर्म का प्रचार होता था । कालांतर में इस जाति के बहुत-से विद्वानों को दूसरे ब्राह्मणों ने अपना लिया । इस जाति का सच्चा इतिहास लुप्तप्राय हो जाने के कारण उन विद्वानों के विषय में जिसने जो चाहा, वह लिख मारा । इन ब्राह्मणों के शाक-द्वीप से भारतवर्ष में आने का कारण कृष्णतनय सांब के कुष्ठ की बीमारी थी, यह भविष्यपुराण में लिखा है । भारतवर्ष में आने के बाद उनको यहाँ के राजा लोग बड़े आदर से अपने यहाँ बुलाते और ग्राम, धन-रत्न दिया करते थे, जिस संपत्ति के कुछ निदर्शन आज भी विद्यमान हैं । यहाँ यह कहना ज़रूरी मालूम होता है कि जैसे राजा लोग आजकल हैं, वैसे ही पहले भी थे । राज्य-संस्था के बदलने पर जैसे आजकल एक राजा के कृपापात्र दूसरे राजा के कृपापात्र नहीं होते, वैसे ही इस जाति की दशा सांब के बाद होती गई । यहाँ तक कि इनको अपने अस्तित्व तक का ज्ञान न रहा, और सेवक-जाति कहलाने लगे ।

[illegible] के [illegible] से [illegible] के मान और प्रतिष्ठा में

फ़र्क़ आ जाया करता है। यदि इस बात का कोई उदाहरण देखना हो कि किसी जाति का इतिहास लुप्त हो जाने पर वह कैसी हीनावस्था को प्राप्त हो जाती है, तो इसी जाति को देख लीजिए।

राजपूताने में चौहानों और पँवारों तथा राठौरों के साथ इन लोगों का बहुत पुराना संबंध है। यहाँ के हर-एक देशी राज्य में सबसे प्राचीन राजमंदिर इन्हीं के पास हैं।

हमारा अनुमान है कि इस तरफ़ इन लोगों के लिये 'सेवक'-शब्द का प्रयोग जैनियों के साथ संसर्ग रहने के कारण किया जाता है। वास्तव में बिहार और उड़ीसे के शाकद्वीपी ब्राह्मण और ये एक ही हैं। बहुत दूर अलग-अलग बस जाने से आने-जाने का या अन्य प्रकार का पारस्परिक संबंध टूट-सा गया है। सं० १७६१ में यह महाकवि राजपूताने से ढाके गए थे। उन्होंने वृंद-विनोद-सतसई वहीं बनाई थी। इससे साफ़ ज़ाहिर होता है कि इस जाति के भद्र पुरुष, जिनकी आर्थिक अवस्था अच्छी होती थी, बिहार-प्रांत की तरफ़ आते-जाते रहते थे। राजों के साथ सदा से इस जाति का संसर्ग चला आता है। महाराजा राजसिंहजी और श्रीराजकुँअरि बाई तथा महाराजा सवंतसिंह आदि से भी महाकवि का संबंध था।

रामप्रसाद शर्मा

× × ×

७. भारत की पैदावार

गत वर्ष भारतवर्ष से कच्ची कपास (Raw Cotton) ६१,७०० टन विदेश गई थी। उसका ब्योरा इस प्रकार है—

जापान	भेजी गई	३८,८४१	टन
इटली	,,	११,८००	,,
चीन	,,	८,०००	,,
जर्मनी	,,	५,९००	,,
संयुक्त राज्य	,,	६,२००	,,
स्पेन	,,	५,६००	,,
बेलजियम	,,	५,३००	,,
अन्यान्य देशों को	,,	९,०५९	,,
		९१,७००	टन

* * *

गत वर्ष, अर्थात् सन् १९२२-२३ ई० में, भार
में गेहूँ ३,०५,५१,००० एकड़ भूमि में बोया गया
उपज १,१३,६९,००० टन हुई थी। सन् १९२३-२४
में ३,०७,२५,००० एकड़ भूमि में गेहूँ बोया गया
पर १,००,५५,००० टन ही पैदा हुआ!

सन् १९२२-२३ ई० में २,१७,९२,००० एकड़ भूमि
कपास बोई गई थी। किंतु पैदावार केवल ५०,७५,०००
(Bales) हुई थी। सन् १९२३-२४ ई० में २,३०,८८,०
एकड़ ज़मीन में बोई जाने पर भी कपास की
प्रायः बराबर ही है।

सन् १९२२-२३ ई० में ४९,९२,००० एकड़ भूमि में
बोए गए थे। उनकी पैदावार ४,८१,००० टन हुई
किंतु सन् १९२३-२४ ई० में ५०,१८,००० एकड़ ज़
में बोए जाने पर भी उसकी उपज केवल ४,३१,
टन ही हुई है।

नंदकिशोर अग्रवाल "चौधरी"

× × ×

८. जाग्रत् का स्वप्न

रहस्य जीवन का क्या यही है
कि आवे-जावे मनुष्य जग में;
भँवर में 'आवागमन' के ऐसे
हि ग़ोते खावे मनुष्य जग में।
क़दम-क़दम पर बिछे हैं फंदे,
जगह-जगह दलदलें बनी हैं;
यही सबब है न जीते-जी फिर
निकलने पावे मनुष्य जग में।
विचित्र चौंसर है ज़िंदगी की,
कि जिसकी गोटें ये रात-दिन हैं;
जो खेल में एक-एक करके
विफल गँवावे मनुष्य जग में।
तरंग में जब थिरक-थिरक कर
तरंगें इच्छा की नाचती हैं;
तो उनके स्वागत को नेत्र दिल के
स्वयं बिछावे मनुष्य जग में।
है स्वप्न जाग्रत् का ज़िंदगी यह,
मगर न समझे वह देखकर भी;
हृदय की वीणा के शुद्ध स्वर से
कि स्वर मिलावे मनुष्य जग में।

यह जीव क्या है पवन का झोंका ,
इधर से आया, उधर गया यह ;
रहस्य जानेगा वह हि इसका
जो फिर न आवे मनुष्य जग में ।
करे न खुद यत्न जानने का ,
न पूछे अज्ञान जौहरी से ;
अमोल जीवन का रत्न "शैदा" ,
वृथा लुटावे मनुष्य जग में ।
"शैदा"

× × ×

९. साधारण से असाधारण किस प्रकार बन जाता है ?

सुना जाता है, प्रतिभा सर्वसाधारण के बाँटे की वस्तु नहीं होती ; उसे कोई बिरले ही पाते हैं । पर जो उत्साह और उद्यम के पुजारी हैं, वे छाती ठोंककर, बड़े साहस के साथ, उच्च स्वर से इस सत्य की घोषणा करते हैं कि प्रतिभावान् व्यक्ति जो चाहे हो सकता है। प्रतिभा सबके बाँटे की वस्तु है । जो कोई उस शक्ति का व्यवहार करेगा, जो कोई प्रतिभा का पुजारी बनेगा, वही उसका अनायास अधिकारी हो जायगा । प्रतिभा की बदौलत वह सभी कामों में दक्ष बन जायगा । एक पंडित की भाँति, प्रतिभा, अनेकांश में, चेष्टा द्वारा अर्जन की जा सकती है ।

क्रिलिप्स का कथन है—"हमारे मनोमंदिर में दो कोठरियाँ हैं । उनमें से एक तो हमारे विचारों के एकत्रित होने का स्थान है । दूसरी कोठरी हमारे क़ाबू का रोग नहीं । उससे हम हमेशा बेख़बर रहते हैं ; क्योंकि उस हमारी बेख़बरी में, स्वयमेव अनेक प्रकार की चिंताएँ उत्पन्न होती रहती हैं । जो व्यक्ति इस कोठरी में संचित संपत्ति को विशेष परिमाण में ग्रहण कर सकता है, वही अपने कर्मक्षेत्र में पारदर्शिता दिखा सकता है ।

"प्रतिभा, कोई ऐसा धन नहीं है, जिसे पाने के लिये, पूर्व जन्म में तपस्या करना पड़े ; न वह कोई ऐसी विशेषता ही लेकर उत्पन्न होती है, जो सर्वसाधारण के लिये अलभ्य हो । बरन् वह एक ऐसी शक्ति है, जो अपने अधिकारी पर, उसकी उन्नतावस्था में, प्रसन्न होती और उसे संसार में असाधारण सिद्ध कर देती है ।"

हमारे बालक-बालिकाओं को जिस अवस्था में लिखना-पढ़ना सिखाया जाता है, यदि उससे भी कम अवस्था में उन्हें लिखाया-पढ़ाया जाय, यदि उनके सामने यथार्थ उन्नत आदर्श स्थापित किए जायँ, यदि उनकी पार्श्ववर्ती अवस्था और सामग्री नियंत्रित रहे, तो वे केवल नीतिमान् ही नहीं, बुद्धि वृत्ति और मानसिक शक्ति में भी प्रतिभावान् व्यक्तियों के समीप खड़े हो सकते हैं । संसार में अनेक श्रेष्ठ कवि, दार्शनिक और विज्ञानवेत्ता जन्म लिया करते हैं । उनके जन्म का यह उद्देश्य नहीं होता कि साधारण मनुष्य उनके कार्यों को देख विस्मित दृष्टि से उनकी ओर ताका करें । उनके उत्पन्न होने का उद्देश्य यह होता है कि वे जन-साधारण को बतावें कि एक साधारणतम व्यक्ति भी चेष्टा करने और उद्योग का उपासक होने से कुछ-न-कुछ बन जा सकता है !

पीछे हम जिस अज्ञात कोठरी का ज़िक्र कर आए हैं, जिसमें हमारी अज्ञात चिंता या विचारों का घात-प्रतिघात होता रहता है, मनस्तत्त्वविद् लोग उसका श्रेष्ठ प्रमाण यह दिखाते हैं कि जाग्रत्-अवस्था में जिन विषयों की मीमांसा नहीं होती, वे कभी-कभी स्वप्नावस्था में स्वयं सुलझ जाते हैं । गणित-शास्त्र के अनेक कठिन तत्त्व महीनों सिर मारने पर भी हल नहीं होते ; पर स्वप्न में कभी-कभी उनकी भी मीमांसा होती हुई देखी गई है । सुना गया है, अमुक ख़ज़ांची साहब, अपने व्यापारिक हिसाब-किताब की गड़बड़ को एक दिन बहुत चेष्टा करने पर भी न सुलझा सके ; पर उसी दिन रात को वह स्वयं सुलझ गई ।

औपन्यासिक, संगीतकार और चित्रकारों के जीवन में ऐसी-ऐसी अनेक घटनाएँ घटा करती हैं । कालरिज की कविता "कुबलख़ाँ" स्वप्न में ही रची गई थी । टॉर्टिनी नाम के संगीतकार की विख्यात 'गत' "The Devils Sanata" स्वप्न में बँधी थी । सर बेंजिमिन फ़्रैंकलिन ने अपने अनेक तत्त्व स्वप्न में ही खोजे थे । राबर्ट लुई स्टीवेंसन के लिखे "Doctor Jekyll and Mr. Hyde"-नामक उपन्यास का प्लॉट स्वप्न में ही बँधा था। कवि-सम्राट् रवींद्रनाथ की अनेक कहानियों के प्लॉट भी स्वप्न में ही बँधे हैं ।

कहने का सारांश यह कि प्रतिभावान् व्यक्ति जाग्रत् या निद्रित अवस्था में अपने मन की अज्ञात कोठरी से

ही वे प्रेरणाएँ 'inspirations' पाया करते हैं, जिनसे जन-साधारण को प्रचुर आनंद और शिक्षा मिलती है।

ऐसे अनेक दृष्टांत पाए जाते हैं, जिनसे यह सत्य सहज में ही सिद्ध हो जाता है कि प्रतिभावान् व्यक्ति जब किसी विशेष विचार-धारा में बहा करते या मन को विश्राम दिया करते हैं, अथवा यों कहिए कि कोई चिंता या विचार ही नहीं करते, उस समय उनके मन पर, कोई विराट् चिंता आकर, सहसा अज्ञात युग की विचारवती धारा बहा देती है, जिसे वे लिपि-बद्ध कर जनता के आगे रखते और फलतः असाधारण की ख्याति पा जाते हैं।

अनेक श्रेष्ठ कवियों का कथन है कि काव्य-विषय का अभ्यास करते-करते जब वह स्वभाव-सिद्ध हो जाता है, तब अनेक उत्तम भाव और कभी-कभी भाषा भी स्वयं मस्तिष्क में उत्पन्न होने लगती है, और हम उसे तत्काल लिपि-बद्ध कर लेते हैं। मेजर्ट ने अपनी एक पुस्तक की भूमिका में इस बात को स्पष्ट स्वीकार किया है कि मेरी जो रचनाएँ असाधारण कहलाकर संसार में मेरी ख्याति फैला रही हैं, उन्हें मैं तनिक भी महत्त्व की दृष्टि से नहीं देखता; क्योंकि वे एक समय अपने वर्तमान स्वरूप में स्वयं उद्भूत हुई थीं। कवि-गुरु रवींद्र अपनी इस अज्ञात शक्ति को "जीवन-देवता" कहा करते हैं।

मन की उक्त गुप्त कोठरी मानो एक कारख़ाना है। वहाँ प्रत्येक व्यक्ति की पूर्व-प्राप्त अभिज्ञता के स्मृतिफलक घात-प्रतिघात किया करते हैं, और उसके परिणाम-स्वरूप नई-नई चिंता-धाराएँ उत्पन्न होकर सहज ही उसे एक स्थिर सिद्धांत पर पहुँचा देती हैं। स्मृतिफलक ही मानव-प्रतिभा है। जो इसकी तन-मन से पूजा करता है, वह साधारण होकर भी एक दिन असाधारण बन बैठता है।

नरोत्तम व्यास

× × ×

१०. माया

(१)

छिपाऊँ कैसे अपना वेश ?
जब कि चंद्र ही देख रहा है हो करके अनिमेष!
किस मलय-वायु ने घूम-घूम,
किस बकुल-वृक्ष पर झूम-झूम,
किस विकच कुसुम को चूम-चूम,
इस कुटीर में आज अचानक आकर किया प्रवेश!

(२)

होता है अंचल पर स्पंदन,
कहाँ गया सुंदर भोलापन,
कैसा था वह मुग्ध लड़कपन,
यौवन के उल्लास-गर्व में भूली हूँ प्राणेश!

(३)

आज मौन होकर मैं प्रियतम,
देख रही रजनी का कुंकुम,
पर, कैसा है यह निष्ठुर क्रम—
जिसने मेरा गृह-प्रदीप ही बुझा दिया हृदयेश।

(४)

क्या सुनती हूँ अब जीवन-धन—
"अहो कौन?—यह किसका चुंबन?
यह विपाक्त कैसा आलिंगन?"
प्रियतम, यह क्या समझूँ, बोलो, भूलो पिछले क्ले

मंगलप्रसाद विश्वकर्मा

× × ×

११. एक मनोरंजक श्लोक

"इतो मनुष्यजातेर्न परे नः प्रत्ययोऽधिकम्;
अत आदेस्तत्र साधुर्धर्मं चरति रक्षति।"

अर्थात् इस मनुष्य-जन्म से अन्यत्र हम लोगों अधिक ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। इसी कारण (सोचकर) साधु लोग उसमें (मनुष्य-जन्म में) धर्म आचरण और उसकी रक्षा करते हैं।

इस श्लोक में—

इतो मनुष्यजातेः। न परे नः। प्रत्ययः। अधिकम्।
अत आदेः। तत्र साधुः। धर्मं चरति। रक्षति।

ये जो आठ टुकड़े हैं, सब पाणिनि की अष्टाध्यायी सूत्र हैं। उन्हीं को जोड़कर यह श्लोक मैंने रचा है।

नित्यानंद शास्त्री दाधी

× × ×

१२. महमूद ग़ज़नवी का विद्या-प्रेम

विद्या-प्रेमी लोग सुलतान महमूद ग़ज़नवी के नाम अपरिचित नहीं हैं। वस्तुतः वह एक बड़ा, रस

बादशाह था। पर कविता के प्रति भी उसका प्रेम कुछ कम न था। इसमें संदेह नहीं कि फ़िरदौसी के मामले में सुल्तान ने जो कुछ किया, वह सर्वथा अनुचित और अन्याय था। यह कलंक का दाग़ इतिहास के पृष्ठों से मिट नहीं सकता। परंतु अन्य अवसरों पर विद्वानों और कवियों के संबंध में सुल्तान की जो बातें पाई जाती हैं, वे भी अमिट ही होकर रहेंगी। अनेक ऐतिहासिकों का कहना है कि सुल्तान के द्वारा बहुत-से कवियों का पालन होता था। एक लेखक का मत स्पष्ट रूप से यह है कि सुल्तान के आश्रित कवियों की संख्या ४०० थी। पर मुख्य और सुप्रतिष्ठित कविवर, उंसरी, फ़िरदौसी, अंसरी, असजदी, ग़ज़ारी और फ़र्रुख़ी ही ऐसे थे, जो सुल्तानी-दरबार के कवि-रत्न समझे जाते थे।

उंसरी का मान सबसे अधिक था। बादशाह ने उसे कवि-सम्राट् की उपाधि दे रक्खी थी। उसकी स्थिति कवि-मंडली में सूर्य के समान थी। सारे कवियों को हुक्म था कि वे अपनी कविता संशोधन के निमित्त उंसरी को दिखावें, और उंसरी के द्वारा संशोधित होकर ही प्रत्येक की कविता दरबार में पेश हुआ करे। इस बात का नतीजा यह भी हुआ कि बड़े-बड़े कवि उंसरी की प्रशंसा में भी कविता लिखते और अच्छा पुरस्कार प्राप्त करते थे। यहाँ पर यह भी जता देना उचित प्रतीत होता है कि उंसरी को सुल्तान ने कितनी संपत्ति दे रक्खी थी। इसका पता बहुत कुछ इसी से लग सकता है कि उंसरी के साथ ऐसे चार सौ दास चला करते थे, जिनकी कमरों में सुनहरी पेटियाँ बँधी रहा करती थीं। जब कभी यह कवि-सम्राट् यात्रा के लिये चलता था, तब इसका सारा सामान चार सौ ऊँटों पर लदकर जाता था। सामान में अधिक वस्तुएँ सोने या चाँदी की ही हुआ करती थीं। यहाँ तक कि देगें भी सोने या चाँदी की ही होती थीं। वास्तव में उंसरी के ऐसे ऐश्वर्य ही के कारण बहुतेरे कवियों ने उसके विषय में बहुत कुछ कहा है।

अयाज़ नाम के अपने एक दास पर सुल्तान की बड़ी कृपा थी। एक बार सुल्तान शराब के नशे में खूब चूर हो गया था। उस बेहोशी की हालत में सुल्तान अयाज़ के गले में हाथ डाल दिए, किंतु तुरंत ही सँभल गया, और अयाज़ को आज्ञा दी कि अपने बाल काट डाल। अयाज़ ने तुरंत ही आज्ञा का पालन किया। प्रातःकाल जब सुल्तान सोकर उठा, और अयाज़ को देखा, तो बड़ा व्याकुल हुआ। अंत में एक शाही दरबार में उंसरी को बुलाया, और सारी घटना बयान कर दी। उंसरी ने तुरंत ही एक चतुष्पदी कही—

گر عیب سر زلف تو از کاستن است
نہ جاے بہ غم نشستن و خاستن است
وقت طرب و نشاط و مے خواستن است
کآراستن سرو ز پیراستن است

भावार्थ—

"यदि प्रिया के बाल कट गए हैं, तो यह कोई बुरी बात नहीं, और न दुःख में पस्त होने ही की है। बल्कि यह बात बड़ी प्रसन्नता की है; क्योंकि सरो का वृक्ष जब छाँट दिया जाता है, तो और अधिक सुंदर हो जाता है।"

सुनकर सुल्तान बहुत प्रसन्न हुआ। उसने आज्ञा दी कि उंसरी का मुँह रत्नों से भर दिया जाय। कहते हैं, ऐसे ही तीन बार उंसरी को कविता का पुरस्कार मिला। किंतु एक लेखक कहता है कि मुँह नहीं, उंसरी का दामन रत्नों से भरा गया था। चाहे जो कुछ हुआ हो, यह बात निर्विवाद रूप से सर्वथा सिद्ध है कि सुल्तान ने उंसरी को बहुत कुछ दे रक्खा था, और बराबर प्रत्येक अवसर पर दिया ही करता था। एक बार का ज़िक्र है कि शाहज़ादा मसऊद एक अवसर पर ख़ुरासान से ग़ज़नी में आया। सभी कवियों ने दरबार में कविताएँ उपस्थित कीं। सुल्तान ने प्रत्येक को बीस-बीस हज़ार रुपए दिए, पर उंसरी और एक अन्य कवि को पचास-पचास हज़ार दिरम (अशर्फ़ी) का पुरस्कार दिया।

इसमें संदेह नहीं कि कोई अन्य कवि उंसरी के समान ऐश्वर्य का अधिकारी नहीं था; पर अपने पद के अनुसार बहुतेरे कवि बड़ी अच्छी स्थिति में थे, और उनको भी पर्याप्त पुरस्कार मिला करता था। उदाहरण-स्वरूप फ़र्रुख़ी कवि का वैभव इतना हो गया था कि जब उसकी सवारी निकलती थी, तो बीस दास, कमर में सुनहरी पेटी बाँधे हुए, उसके साथ चला करते थे। सुल्तान ने एक अवसर पर उसे एक बढ़िया घोड़ा दिया था। ग़ज़ारी राज़ नाम के एक कविवर के विषय में यह लिखा है कि जब वह अपने निवासस्थान में था, तब प्रत्येक कविता पर उसे एक हज़ार अशर्फ़ियाँ मिला करती

थीं। पर दरबार में आने पर उसे, केवल दो पदों के लिये, एक अवसर पर, सुल्तान ने दो हज़ार अशर्फ़ियाँ इनाम में दी थीं। इस प्रकार अपने देश तथा फ़ारसी-भाषा के कवियों के संबंध में सुल्तान की जितनी बातें इतिहासों में पाई जाती हैं, वे सब इस लघु लेख में लिखी नहीं जा सकतीं।

फ़ारसी-कवियों के प्रति प्रेम के अनेक उदाहरणों के सिवा, सुल्तान के विषय में, इतिहास में, एक घटना ऐसी भी है, जिससे इस बात का पता स्पष्ट रूप से चलता है कि एक भारतीय भाषा के पद सुनकर भी वह बहुत प्रसन्न हुआ था।

सन् ४१३ हिजरी में, सुल्तान ने कालिंजर के क़िले को घेर रक्खा था। राजा नंदा ने सुल्तान के पास एक पत्र पद्य में लिख भेजा। वह पद्य क्या था, अथवा उसका भाव क्या था, इसका कुछ पता नहीं। किंतु उस पद्य का असर अवश्य यह हुआ कि सुल्तान ने केवल कालिंजर का घेरा ही नहीं उठा लिया, बल्कि कालिंजर-नरेश के राज्य में भी अपनी ओर से कुछ वृद्धि कर दी।

इसके सिवा यह भी जान लेना चाहिए कि सुल्तान के दरबार (ग़ज़नी) में हिंदू, ईसाई और यहूदी आदि प्रत्येक धर्म के गुणी पुरुष उपस्थित रहते थे। सारा दरबार केवल मुसलमानों से ही भरा नहीं था।

संभव है, कुछ लोग इससे यह नतीजा निकालें कि सुल्तान ने कवियों तथा विद्वानों की जो एक सेना एकत्र कर रक्खी थी, और उस पर असीम द्रव्य की जो वृष्टि होती थी, इसका कारण यह था कि स्तुतिकर्ताओं और ख़ुशामदियों का एक अच्छा जमघट सदैव उसके दरबार में रहे, और राजकाज में बाधा-विघ्न न पड़े। किंतु सच तो यह है कि सुल्तान उक्त प्रकार के किसी भी विचार से यह कार्य नहीं करता था और इतना अधिक व्यय भी व्यर्थ ही नहीं किया जाता था। यह सब कुछ इसलिये था कि साहित्य, इतिहास तथा विद्या की अन्य शाखाओं की उन्नति हो। कवि-शिरोमणि फ़िरदौसी को शाहनामा लिखने का जो महान् कार्य सौंपा गया था, उसी से निःसंशय इस बात का पता चल जाता है कि विद्वानों को धन देने में सुल्तान का उद्देश्य क्या था।

कवि-शिरोमणि फ़िरदौसी के सिवा कुछ कवियों और विद्वानों के कार्यों का वर्णन भी सुनिए। कवि-सम्रा उंसरी ने सुल्तान की सारी लड़ाइयों का हाल पद्य लिखा था। बलख़-देश के एक कवि ने न्यायमूर्ति नौशेर का नसीहतनामा (अर्थात् 'शिक्षाप्रद ग्रंथ') कविता कर दिया था। कविवर असदी ने फ़ारसी-कोष औ 'अलंकार-शास्त्र' की भी एक-एक पुस्तक लिखी थी। इस सिवा क्या यह कुछ कम महत्त्व की बात है कि ईरा तथा उसके समीप की बहुत-सी बातें जो हम जान हैं, उसमें सुल्तान के आश्रित कवियों की रचना से बहु कुछ सहायता प्राप्त हुई है। फ़ारसी-कविता, जो सुल्ता से पहले से उन्नति पर थी, उसके समय में पूर्ण रू उन्नति के शिखर पर पहुँच गई।

यह बात सर्वथा सत्य है कि जिसकी रुचि जिस ओ होती है, अथवा जो जैसा—पंडित या मूर्ख—होता वह उसी प्रकार के लोगों का सम्मान करता है। सुल्ता समर-शूर होने के सिवा एक अच्छा विद्वान् भी था यही कारण है कि वह विद्वानों तथा गुणियों का ब आदर करता था। राज्य में जो बड़े-बड़े विद्वान् थे, उ से बहुतों को बुलाकर उसने दरबार में स्थान दिया था भारत का सुप्रसिद्ध यात्री 'अबू रेहान अलबेरूनी' सुल्तान के दरबार में था। जगत्-विख्यात नैयायिक अली सीना (Aviciena) को भी सुल्तान ने निमंत्रि किया था। किंतु वह नहीं आया।

सुल्तान ने ग़ज़नी में एक बड़ा भारी विद्यालय स्थापित किया था। उसके साथ ही एक अजायबघर था, जिसमें संसार की अद्भुत वस्तुएँ रक्खी गई थीं इसके सिवा इस बात का भी पता चलता है कि सुल्त ने "फिकः" (अर्थात् 'स्मृति-शास्त्र') पर एक विस् ग्रंथ रचा था। अंत में यह कहना संभवतः अनुचि होगा कि सुल्तान की अपनी विद्वत्ता और विद्या के लि में जो उदाहरण पाए जाते हैं, वे वास्तव में ऐसे हैं, जि की प्रत्येक पक्षपात-रहित मनुष्य अवश्य भूरि-भूरि प्रशं करेगा।

महेशप्रसा

× × ×

१३. फूल

हे फूल! कहाँ तू भटका, किन काँटों में आ अटका।
हैं सूखी-सूखी डालें, जो तुझे छिपा लें पालें।

ऐसी सुंदरता देकर, पत्तों का दिया तुझे घर।
कैसा विपरीत विधाता, जो जोड़ा ऐसा नाता।
क्या तेरी मधुर हँसी है? सुषमा स्वर्गीय लसी है।
जब इधर-उधर तू हिलता, आनंद दृगों को मिलता।
यह रंगत और कहाँ है, जो तुझमें बसी यहाँ है।
तू चुप होकर वह कहता, कवि जिसे न कह चुप रहता।
कैसा है जादू तुझमें, यह आता नहीं समुझ में।
हैं चेतन जड़ हो जाते, जड़ चेतन-दृश्य दिखाते।
देखा है जब से तुझको, कुछ नहीं सुहाता मुझको।
कुछ ऐसा मस्त हुआ हूँ, देता मैं तुझे दुआ हूँ।
अब आता है यह जी में, तेरी ही वनस्थली में—
रहकर, कर तेरे दर्शन, दे धन्यवाद मेरा मन।

वंशीधर

× × ×

१४. जयपुर की कैबिनेट

आमेर (जयपुर) के राजों में महाराजा पृथ्वीराज बहुत विख्यात हुए हैं। उनकी सच्चरित्रता और उच्च विचार भी प्रसिद्ध हैं। आमेर-राज्य को १२ भागों में बाँटकर प्रधानाध्यक्ष को प्रेसीडेंट मानने का नियम पहले-पहल इन्हीं ने नियत किया था। उनके उन्नीस पुत्रों में से उदार-चरित गोपालजी चौथे बेटे थे। उनसे 'नाथावत'-वंश चला है। कछवाहों में नाथावत बड़े ही विख्यात और राजरक्षक माने जाते हैं। पृथ्वीराज के अंश से उत्पन्न होने के कारण नाथावतों और आमेर के राजों में पिता-पुत्र का संबंध माना जाता है। नाथावतों में चौमूँ और सामोद के सरदार उच्च श्रेणी के हैं। आरंभ (सं० १६२१) से लेकर अब (सं० १९८१) तक ये सच्चे 'स्वामिभक्त' तथा अद्वितीय 'राजरक्षक' माने जाते हैं। इस गुण की प्रधानता से इनको अलभ्य अधिकार प्राप्त हैं। 'जयपुर-राज के पटेल' नाम का उच्च अधिकार इन्हीं के हस्तगत है। पटेल का अर्थ यह किया जाता है कि राज्यासनारूढ़ होनेवाले राजों की स्वीकृति-जैसे प्रधान कामों में इनके हस्ताक्षरों का प्राधान्य होता है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि जयपुर-राज्य के वर्तमान सामंतों में चौमूँ के ठाकुर साहब श्रीमान् देवीसिंह महोदय शिक्षित, सुयोग्य, सच्चरित्र और सत्यवक्ता सरदार हैं। गत संवत् १९७८ के फाल्गुन में स्वर्गीय जयपुर-नरेश ने जिस समय जयपुर के लिये उत्तराधिकारी का प्रस्ताव किया, उस समय उक्त ठाकुर साहब ने उस पर हस्ताक्षर करते समय महाराज से कुछ निवेदन किया था; किंतु महाराज को उसमें भ्रांति हुई, और उन्होंने ठाकुर साहब के हस्ताक्षरों की अवहेलना कर दी। उसका फल यह हुआ कि जयपुर के कर्ता, धर्ता, विधाता वर्तमान महाराजा मानसिंहबहादुरजी, जो कुछ दिन पीछे प्रकट होते, तत्काल प्रकट हो गए, और मोर-मुकुट की मनोहर छवि से जयपुरी प्रजा आनंद-पुलकित हो गई। ऐसा होने से चौमूँ के ठाकुर साहब की कड़वी गिलोय के मीठे गुण को देखकर महाराजा माधवसिंह ने उक्त ठाकुर साहब के अपराध क्षमा करने का निश्चय किया; किंतु दुर्भाग्यवश उसी अवसर में वह परलोक सिधार गए, और उनका सद्विचार मन ही में रह गया। लोग जानते हैं, उन्होंने अपनी बीमारी के दिनों में 'महकमा ख़ास' स्थापित करके अपने अधिकार के प्रायः सभी काम पंच मुसाहबों के हस्तगत कर दिए थे। उसी महकमा ख़ास के सुयोग्य अधिकारियों ने महाराज की मृत्यु के पीछे पूर्वोक्त मनोमालिन्य मिटा दिया, और स्वर्गीय महाराज के मन में चौमूँ के ठाकुर साहब को क्षमा करने की जो वासना बाक़ी रह गई थी, उसे पूर्ण किया। हमको यह सुनकर संतोष होता है कि महकमा ख़ास के दूरदर्शी और उदार-पदाधिकारियों ने चौमूँ तथा डिग्गी के जो गाँव ज़ब्त थे, वे वापस दे दिए, और चौमूँ-नरेश को जो 'रनथंभोर' के दुर्गाध्यक्ष होने का परंपरागत अधिकार था, वह फिर प्रदान कर दिया। एतदर्थ हम वर्तमान महाराजा मानसिंहबहादुर और कैबिनेट के उच्चाधिकारियों को धन्यवाद देते हैं, और चौमूँ-नरेश श्रीमान् ठाकुर देवीसिंह महोदय को बधाई। यदि हो सका, तो आगामी किसी संख्या में हम इनका सचित्र चरित्र प्रकाशित करेंगे, जिससे पाठकों को इनके आदर्श गुण ज्ञात हो सकेंगे।

हनूमान शर्मा

विज्ञान-वाटिका

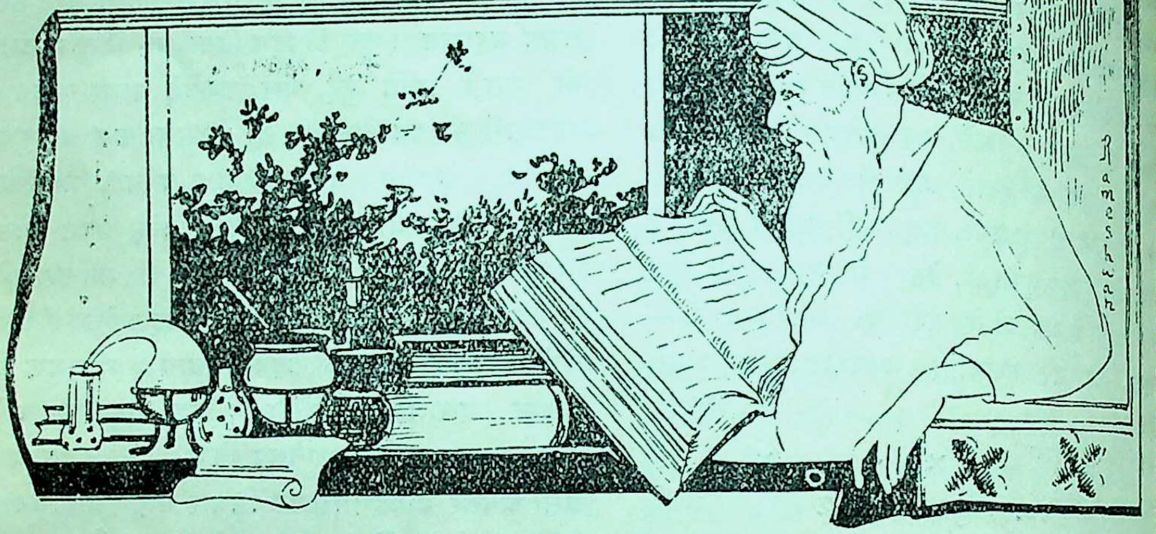

१. एक निर्भय तैराक के आविष्कार

स्पेन और फ़्रांस के बीच में पीरिनीज नाम का एक पहाड़ है, जिसमें १,३०० फ़ीट घेरे की एक कंदरा है। इस कंदरा के भीतर एक छोटी-सी नदी बहती है, जो घूम-घामकर पहाड़ी के मध्य में लौट आती है। कई स्थानों में कंदरा की छत इस नदी के पानी के भीतर तक चली गई है, जिससे कंदरा के आगे घुसकर यह पता लगाना कि उसके भीतर क्या है, बड़ा कठिन काम समझा जाता था। इस बात का भी ठीक-ठीक पता नहीं था कि पानी के अंदर कंदरा की छत कितनी गहरी गई है। इसलिये किसी की हिम्मत नहीं पड़ती थी कि उसके नीचे से तैरकर आगे जा सके।

मोशियर कैस्टेरेट फ़्रांस के बड़े भारी तैराक हैं। यह टूलू (Toulouse)-विश्वविद्यालय के पुरातत्त्ववेत्ता हैं। इन्होंने प्रण किया कि पानी के भीतर डुबकी लगाकर तैरेंगे, और पता लगावेंगे कि आगे क्या है। इन्होंने अपने साथ रबड़ के थैले में दियासलाई और मोमबत्ती रख ली, और जहाँ कंदरा की छत पानी के अंदर गई थी, वहीं डुबकी लगाई।

एक मील के लगभग तैरने के बाद यह एक सूखी गैलरी (मार्ग) में पहुँचे, जो २५० फ़ीट के लगभग लंबी थी। इसकी दीवारों पर चकमक-पत्थर के औज़ारों से प्रागैतिहासिक काल के जानवरों के चित्र खुदे हुए थे। इन जानवरों के नाम हैं—बाइसन (bison=भैंस की जाति का जानवर), हिरन (stag), मम्मथ (mammoth=बृहदाकार प्राचीन हाथी, जिनकी जाति अब नष्ट हो गई है), रेनडियर (rein deer) और जंगली घोड़े। जानवरों की मिट्टी की मूर्तियाँ भी पाई गई हैं। एक बड़ी मूर्ति रीछ की है, और २० छोटी-छोटी मूर्तियाँ हैं, जिनमें अधिकांश घोड़े की हैं। ऊपर से पानी टपकने के कारण ये मूर्तियाँ बहुत बिगड़ गई हैं। पास ही एक स्त्री के आधे शरीर की मिट्टी की मूर्ति और कुछ बाघ की मूर्तियाँ थीं। दीवार में खिंचे हुए भद्दे चित्र, उँगली की छाप, रीछों के पंजों के चिह्न और गेरू के बने हुए दुर्बोध चित्र भी पाए गए हैं, जो प्रागैतिहासिक काल के होने के कारण बहुमूल्य हैं।

विद्वानों का अनुमान है कि ये २५,००० वर्ष के पुराने हैं।

महावीरप्रसाद श्रीवास्तव

× × ×

२. नींद हराम हो जायगी!

साधारणतः मनुष्य दिन-रात में आठ घंटे सोता है।

किंतु यदि बड़े-बड़े मनुष्यों की जीवनी पर ध्यान दिया जाय, तो देख पड़ेगा, उनमें से बहुत-से केवल ४-५ घंटे सोते थे। उनके बड़े होने के कारणों में एक कारण यह भी है कि वे अपने सोने के समय में कमी करके उसी बचे हुए समय को अपनी तथा संसार की उन्नति में लगाते थे। जर्मन दार्शनिक कैंट, नेपोलियन बोनापार्ट, ग्रेट फ़्रेडरिक, शिलर, मिराबयू, टेल्सा, एडिसन आदि ऐसे मनुष्य हो गए हैं, या हैं, जो आठ घंटे के बजाय तीन से पाँच घंटे ही सोते थे, या सोते हैं। तीस वर्ष के एक साधारण व्यक्ति की ज़िंदगी का एक-तिहाई हिस्सा (अर्थात् दस वर्ष) सोने ही में कट जाता है। कुछ विद्वान् आयु बढ़ाने का एक उपाय यह भी बतलाते हैं कि सोने के समय में कमी करो। किंतु अब ऐसे उपायों के वलंबन की आवश्यकता ही नहीं रही। कारण, ज्ञान 'निद्रा का स्थानापन्न' होकर संसार के सामने ाया है।

सबसे पहले हमें यह विचार करना है कि निद्रा क्या ? Psychology आज भी निद्रा को एक रहस्य-य पदार्थ बतलाती है। निद्रितावस्था में मनुष्य क्यों ौर कैसे बेहोश हो जाता है, स्वप्न क्या हैं, उस समय मारा चेतन मस्तिष्क क्या करता रहता है, ये सब ऐसे श्न हैं, जिन पर विज्ञान काफ़ी प्रकाश नहीं डाल सका। तु भौतिक (Physical) मस्तिष्क निद्रा-काल में या करता है, इसका पता लग गया है। विज्ञान को हुत दिनों से यह बात मालूम है कि निद्रा-काल में मारे शरीर में एक प्रकार का परिवर्तन होता है। उस मय हमारा सिर हलका और पैर भारी हो जाते हैं। रीक्षा द्वारा यह भी जाना गया है कि निद्रा-काल में मारे समूचे शरीर का वज़न कम हो जाता है। तु ये परीक्षाएँ निद्रा का रहस्य खोलने में असमर्थ रहीं।

इसके बाद कई परीक्षाओं द्वारा यह सिद्ध हुआ कि नुष्य का मस्तिष्क कोषों द्वारा बना है। इन कोषों का ंध मनुष्य के शरीर के प्रत्येक हिस्से से है। अभी हले कुछ दिनों तक इन कोषों के विषय में वैज्ञानिकों बहुत ही थोड़ा ज्ञान था। वे कोषों को अणुवीक्षण- द्वारा देख सकते थे, उनका फ़ोटो ले सकते थे, स्तिष्क के अन्य पदार्थों से उन्हें अलग कर सकते थे; किंतु यह नहीं बतला सकते थे कि वे क्या हैं? तुरंत के मरे हुए मनुष्यों के, लड़ाई में मरे हुए सैनिकों के और जिन ख़रगोशों को बहुत दिनों तक सोने नहीं दिया जाता था, उनके मस्तिष्कों की परीक्षा करके जाना गया कि अनिद्रा-काल में मस्तिष्क के कोषों से कुछ रासायनिक पदार्थ निकल जाता है। पीछे यह भी पता लगा कि कोषों की शक्ति को लौटा लाने के लिये एक-मात्र निद्रा ही की आवश्यकता होती है।

आजकल के डॉक्टर फ़्रेज़र हैरिस और डॉक्टर ए० डब्लू० क्रील आदि बहुत-से वैज्ञानिकों का विश्वास है कि मस्तिष्क के कोषों में केवल रासायनिक परिवर्तन ही नहीं होता, बल्कि वैद्युतिक रासायनिक (Electro-Chemical) परिवर्तन होता है। यह परिवर्तन ऐसा है, जो विद्युत् के द्वारा घटित होता है, किंतु रासायनिक होता है, अर्थात् परिवर्तन का कारण विद्युत् होने पर भी वह रासायनिक ढंग का होता है। यदि यह बात ठीक हो, तो शारीरिक विद्युत् के बदले में कृत्रिम विद्युत् के द्वारा यदि रासायनिक परिवर्तन किया जाय, तो वह वही काम करेगा, जो निद्रा करती है, अर्थात् उससे कोषों में शक्ति का पुनः संचार हो सकता है।

प्रोफ़ेसर आर्थर काटन ने एक ऐसा यंत्र बनाया है, जो कृत्रिम विद्युत् के द्वारा मनुष्य के मस्तिष्क-कोषों की खोई हुई शक्ति को पुनः ला देता है। मनुष्य को सोने की आवश्यकता ही नहीं होती। दिन-भर का थका मनुष्य—जिसके शरीर की प्रायः सभी शक्ति नष्ट हो गई है—बिस्तरे पर जाकर सोने और आराम करने के बदले एक विद्युत्-विन्यस्त (Insulated) घर में जाकर कुर्सी पर बैठ रहता है। बिजली का एक तार उसके पहुँचे में बाँध दिया जाता है। दूसरे तार का संबंध उसके सिर से कर दिया जाता है। इसके बाद बटन दबाते ही उसके मस्तिष्क-कोष में विद्युत् प्रवेश करती है। पंद्रह मिनट बाद वह घर से ऐसी स्फूर्ति लेकर निकलता है, जैसे वह आठ घंटे सोकर आया हो। वह शारीरिक तथा मानसिक परिश्रम करने के भी योग्य हो जाता है। फिर उसे सोने की आवश्यकता नहीं रहती।

इस यंत्र से [illegible] बड़ा उपकार होगा। हमारा जीवन-काल एक-तिहाई बढ़ जायगा, और उस समय

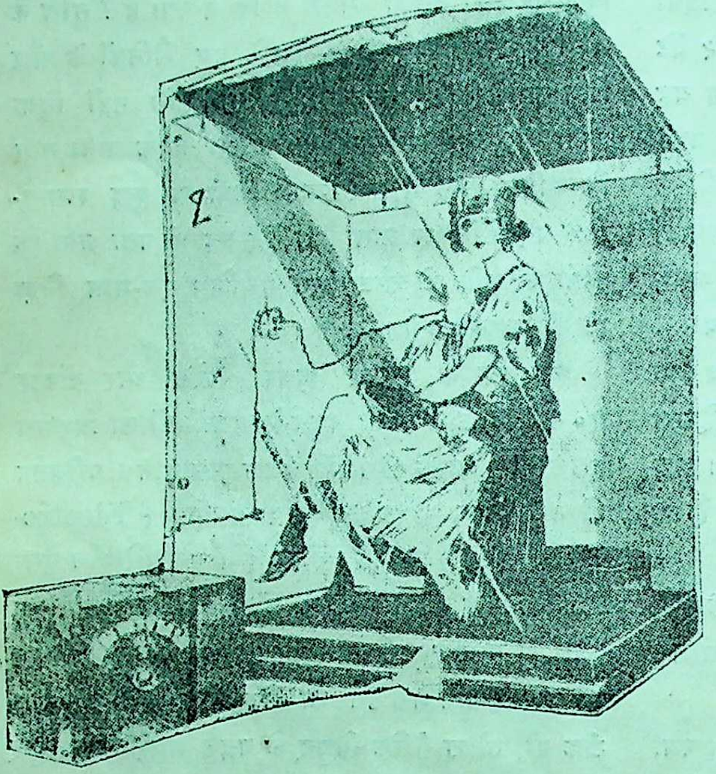

विद्युत्-विन्यस्त घर में एक थकी-माँदी स्त्री बैठी है

(उसके पहुँचे तथा सिर से एक विद्युत्-यंत्र का संबंध है । इस यंत्र के द्वारा उसके मस्तिष्क-कोषों की खोई हुई शक्ति का पुनः संचार होता है)

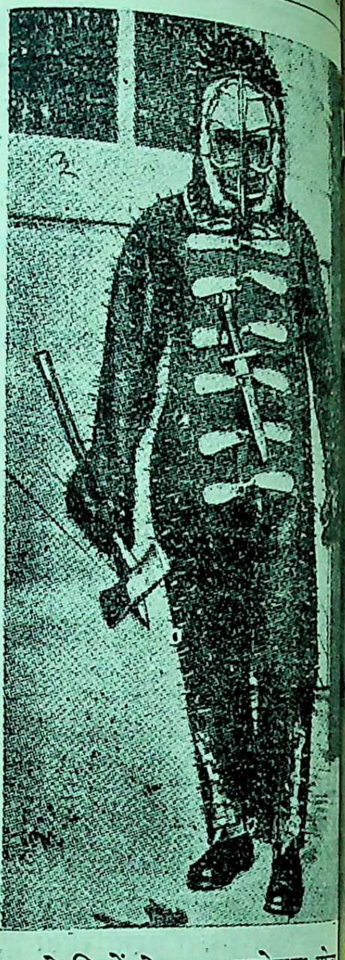

भेड़ियों से युद्ध करनेवाला योद्ध

में हम अपनी तथा संसार की उन्नति के बहुत-से कार्य कर सकेंगे ।

× × ×

३. भेड़ियों से युद्ध की तैयारी

युद्ध करने के कई तरीक़े होते हैं । भिन्न-भिन्न पशुओं के साथ भिन्न-भिन्न प्रकार से युद्ध किया जाता है । सब पशुओं का सामना एक ही प्रकार से नहीं किया जा सकता ; क्योंकि मनुष्य अपनी घात सोचेगा, और पशु अपनी । बुद्धिमानी इसी में है कि शत्रु को कभी ऐसा मौक़ा ही न दिया जाय, जिसमें वह चोट कर सके । सॅट पाल के स्टैनले कार्लसन अपने समूचे शरीर को—सिर से पैर तक—एक काँटेदार आवरण से ढककर उत्तरी ओनटेरियो के जंगलों में भूके भेड़ियों से युद्ध करने जाना चाहते हैं । यह आवरण गऊ के चमड़े का बना हुआ है । उसमें १,००० से अधिक काँटे जड़े हुए हैं, जिनका नुकीला हिस्सा बाहर निकला हुआ है । आवरण का वज़न १३½ सेर है । हाथ के दस्ताने शिरस्त्राण भी काँटेदार ही है । दाहने हाथ में दो वाली कुल्हाड़ी और एक बड़ा-सा छुरा छाती के बाँधकर कार्लसन भेड़ियों के दल में जायँगे । कु तथा छुरे की सहायता से उनका काम तमाम लौटेंगे । उन्हें आशा है कि गवर्नमेंट की तरफ़ से काम के लिये पुरस्कार मिलेगा ।

× × ×

४. कीड़ों की भाव-भंगी

हमारे समान ही कीड़े भी दुःख, शोक, भय, प्रसन्नता आदि में अपने चेहरे का भाव बदला करते किंतु छोटे होने के कारण हम लोग उनके भाव देख नहीं सकते । अणुवीक्षण-यंत्र द्वारा देखने से सारा भेद खुल जाता है । कोई ख़ूँख़ार और

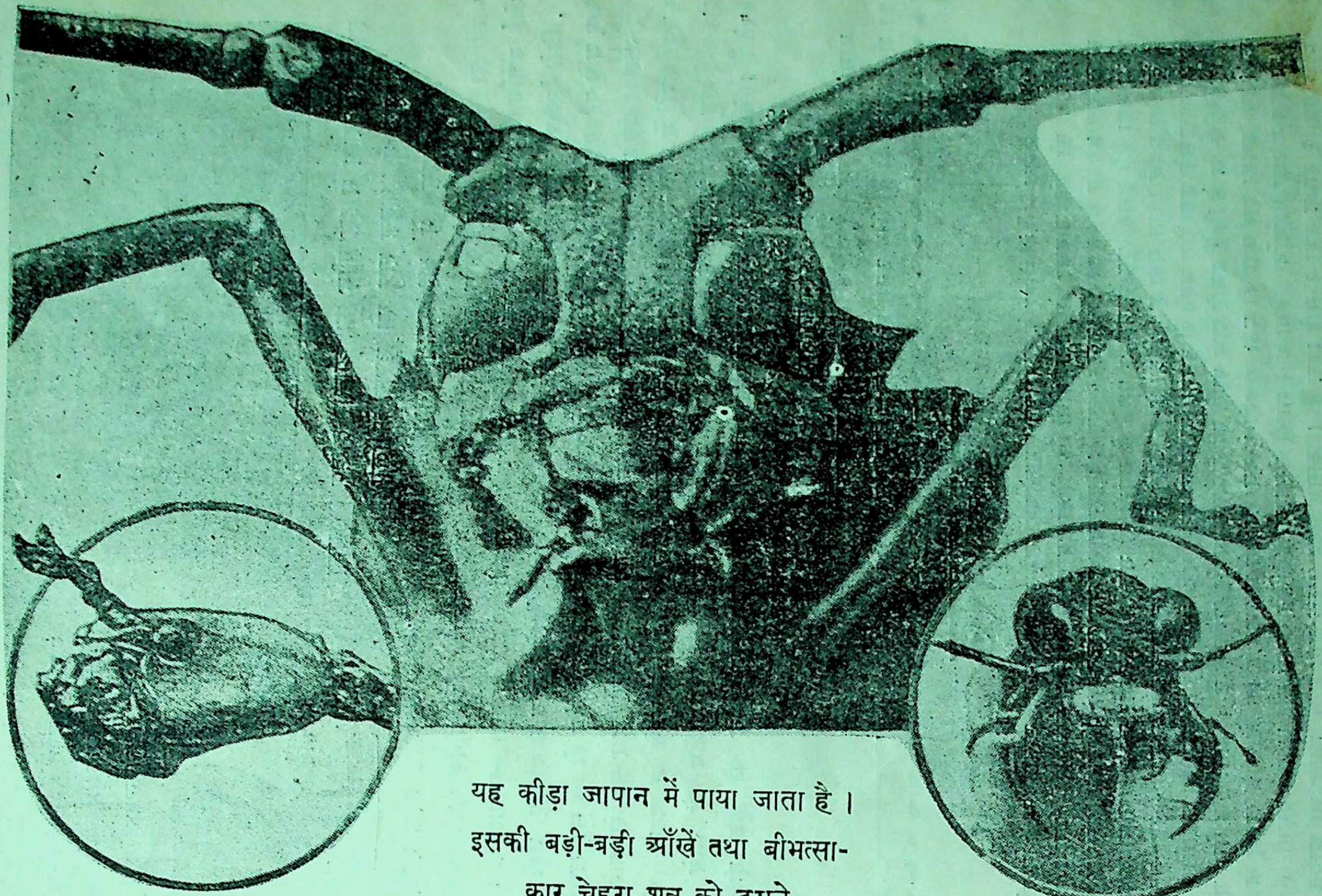

यह कीड़ा बड़ा भयानक और खून का प्यासा होता है

यह कीड़ा जापान में पाया जाता है। इसकी बड़ी-बड़ी आँखें तथा बीभत्साकार चेहरा शत्रु को डराने के लिये काफ़ी है

बघ-मुँहे कीड़े की आँखें तथा चेहरे का आकार देखिए, कैसा भयानक है

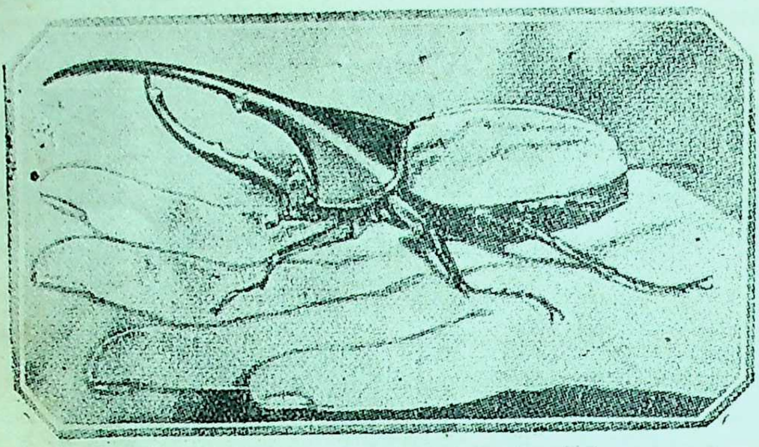

हाथ की तुलना में इस कीड़े का आकार देखिए । इसका नुकीला मुँह केवल शत्रु को डराने के लिये है । असल में वह खुलता नहीं है

प्यासे देख पड़ते हैं, कोई शांत शिष्ट जान पड़ते हैं। कोई उत्तेजित होकर इस प्रकार की आकृति बना लेते हैं, जिसे देखकर डर मालूम होता है। कोई चोट पहुँचाए जाने पर करुण-भाव प्रकट करते हैं। कोई उछल-कूद मचाकर प्रसन्नता का भाव प्रदर्शित करते हैं। कोई सुमधुर शब्दों में गीत गाकर आनंद में मग्न देख पड़ते हैं। कोई शत्रु द्वारा आक्रांत होकर बीभत्साकार धारण करते हैं। चित्रों में कीड़ों के कुछ भाव दिखलाए गए हैं।

× × ×

५. रेकार्ड साफ़ करने का ब्रश

ग्रामोफ़ोन पर नई-नई चूड़ियों को बजाने और सुनने का शौक़ बहुतों को है; किंतु उनमें से बहुत ही कम ऐसे हैं, जो चूड़ियों को बजाने के पह पीछे एक बार मुलायम कपड़े से पों हों। जो पोंछते भी हैं, वे जैसे-तैसे व्यवहार करते हैं, जिससे चूड़ियाँ वहीं ख़राब हो जाती हैं। अमेरिका के एक ने रेकार्डों को साफ़ करने का एक

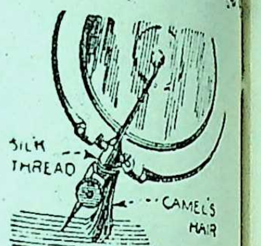

रेकार्ड साफ़ करने का ब्रश

ब्रश बनाया है, जिसे प्रत्येक मनुष्य अपने घर पर सकता है। ऊँट के बालों को रेशम के तागे से ग्रामो के उस हिस्से में बाँध दीजिए, जहाँ सुई लगाई है। वे बाल इतने लंबे हों कि सुई लगाकर बजाते रेकार्ड को छूते रहें और सुई से आगे-आगे चलें ब्रश रेकार्ड को बजने के पहले और पीछे करता है। चूड़ी शेष हो जाने पर एक पर जमे हुए मैल को फूँक दीजिए, वह हो जायगा।

रमेश

हिंदी-नवरत्न

लेखक—हिंदी-संसार के सुपरिचित समालोचक, सुलेखक और सुकवि स्वनामधन्य "मिश्रबंधु"

पाठकों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि हिंदी-नवरत्न का द्वितीय संस्करण, जिसके लिये वे वर्षों लालायित हो रहे थे, छपकर बिलकुल तैयार है। इस बार इसमें बहुत-सा परिवर्तन, परिवर्द्धन तथा संशो किया गया है। इसकी पृष्ठ-संख्या भी पहले से दुगनी हो गई है। इस बार इसमें यथासाध्य प्रामाणिक चि के देने का प्रबंध किया गया है। चित्रों ही के ढूँढ़ने, तैयार कराने और ग्रंथ को सर्वांगसुंदर बनाने ही की के कारण इसके प्रकाशित करने में इतना विलंब हो गया, नहीं तो यह ग्रंथ कभी का प्रकाशित हो गया होता

इस ग्रंथ-रत्न के लिये हमारे पास पहले ही से बहुत ऑर्डर आ चुके हैं। अतः हम प्रेमी पाठकों के सुवि के लिये उनको इस बात की पुनः सूचना दे देना उचित समझते हैं कि वे शीघ्र ख़रीद लें, नहीं तो हाथ मल-मलकर पछताना पड़ेगा और तीसरे संस्करण के लिये बरसों बाट जोहनी पड़ेगी। इस बार इ ७०० पृष्ठ, २ रंगीन तथा ९ सादे चित्र हैं। काग़ज़ सुंदर एंटिक लगा है। जिल्द भी अत्यंत मनोहर सुनहरी है। मूल्य लागत-मात्र से भी कम केवल ५) है और सादी जिल्द का सिर्फ़ ४॥)

हिंदुस्थान-भर की हिंदी-पुस्तकों के मिलने का एक-मात्र पता—

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, २९-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

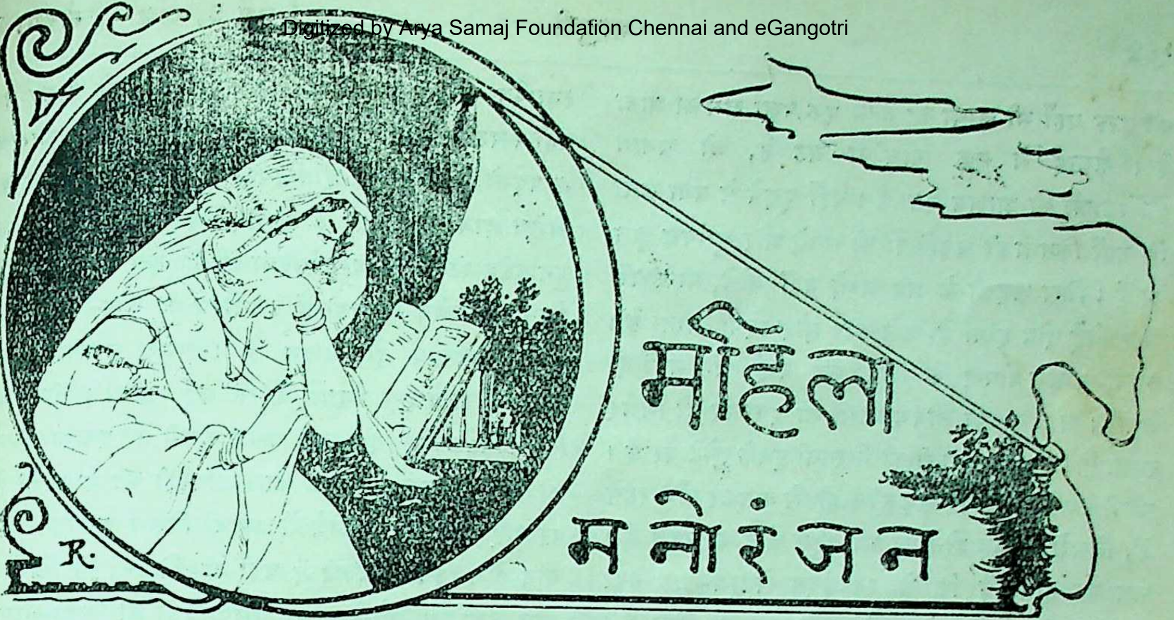

महिला मनोरंजन

१. जापान की स्त्रियाँ और शुद्ध वायु

जापानी स्त्रियों को पहला पाठ यही पढ़ाया जाता है कि शुद्ध वायु-सेवन ही जीवन है। वायु जितनी अधिक शुद्ध रहेगी, जीवन भी उतना ही स्वस्थ और दीर्घ होगा। जापान के घरों की खिड़कियों में शीशे नहीं जड़े जाते। उनके बदले वहाँ तेल का काग़ज़ लगा रहता है, जो वायु के संचार में किसी प्रकार की अड़चन नहीं डालता। रात में स्त्रियाँ किवाड़ खोलकर सोती हैं, जिससे शुद्ध वायु रात-भर उनके शरीर में लगती है। यदि सरदी पड़ती है, तो वे कुछ ओढ़ लेती हैं, पर किवाड़ नहीं बंद करतीं। वे प्रातःकाल शुद्ध वायु-सेवन के लिये घूमने जाना अपना प्रथम कर्तव्य समझती हैं। वहाँ पर वे यथाशक्ति शुद्ध वायु का सेवन करती हैं। इसको वे प्रातःकाल के स्नान से अधिक आवश्यक समझती हैं। रसोईघर और दूसरे कमरों के किवाड़ सदा खुले रहते हैं। जब बहुत जाड़ा पड़ता है, तो कभी-कभी बंद कर दिए जाते हैं। जापानी स्त्रियाँ शुद्ध वायु का अभाव कभी नहीं सह सकतीं। शुद्ध वायु का सेवन ही उनको सदा स्वस्थ और मज़बूत बनाए रखता है। यही कारण है कि जापान में क्षय-रोग से कोई बिरला ही पीड़ित होता है। जाड़े में भी बिरले ही को खाँसी आती है। बहुत जाड़ा पड़ने पर वे गरम कपड़े पहन लेते हैं; पर शुद्ध वायु के आने-जाने का मार्ग नहीं रोकते।

जापान में शुद्ध वायु का सेवन अन्न से भी अधिक उपयोगी माना जाता है। जो कोई किसी कारण से बाहर नहीं जा सकता, वह खिड़की में खड़ा होकर दीर्घ श्वास लेकर उसका उपभोग करता है।

हिंदुस्तान की स्त्रियाँ यदि जापानी स्त्रियों की तरह शुद्ध वायु-सेवन की ओर यथेष्ट ध्यान दें, और उसका उपभोग करें, तो क्या वे जापानी बहनों की तरह स्वस्थ और बुद्धिमती नहीं हो सकतीं? जिस रोज़ हिंदुस्तानी स्त्रियों के मन में यह बात जम जायगी कि शारीरिक शक्ति पर ही मनुष्य की और सब शक्तियाँ अवलंबित हैं, उसी पर उनका विकास निर्भर है, उसी दिन हिंदुस्तान से सब व्याधियाँ भाग जायँगी, और फिर सुख तथा समृद्धि का साम्राज्य स्थापित हो जायगा।

× × ×

२. चीन की स्त्रियाँ

भारतवर्ष की तरह चीन में भी एक समय ऐसा था, जब वहाँ की स्त्रियों ने अनेक अद्भुत कार्य कर दिखाकर अमर कीर्ति प्राप्त की थी। किसी ने युद्ध में वीरता दिखाई थी, तो किसी ने साहित्य-क्षेत्र में। परंतु ज्यों ही उनके प्रति पुरुषों के विचार में कुछ अंतर पड़ा कि उनके घर की चहारदीवारी में क़ैद होने की नौबत आई। अब तो यह हालत है कि कहीं किसी के यहाँ कन्या का जन्म हुआ कि उसके ऊपर वज्र-सा गिर पड़ा। भारतवर्ष

की तरह वहाँ भी कन्या का जन्म एक बला समझा जाता है। शंघाई में एक फ़्रांसीसी मठ है, जो अनाथ बालिकाओं को आश्रय देता है। वहाँ पूछने से पता लगा कि वहाँ कितनी ही लड़कियाँ तो अच्छे और सुसंपन्न कुल की हैं। जिस लड़की के ग्रह अच्छे नहीं होते, या उसमें और कोई दोष होता है, उसे वहाँ छोड़ दिया जाता है। उसके पालन-पोषण के लिये एक पाई भी नहीं दी जाती। अतः उसका जीवन किसी की दया पर ही निर्भर रहता है। इनकी गुलामी की निशानी इनके छोटे पैर हैं। चीनी कन्याओं के पैर लड़कपन ही से कसकर बाँधे रहते हैं, जिससे वे बड़े होने पर भी बहुत छोटे ही रहते हैं। फल यह होता है कि ये स्वच्छंदता से घूम-फिर नहीं सकतीं। चीन में पैर छोटे होना कुलीनता का चिह्न है। चीन में पुरुष विवाहिता स्त्री के रहते हुए भी, अपनी आमदनी के मुताबिक़, अनेक स्त्रियाँ रख सकता है। ऐसी रखैल स्त्रियों की दशा तो बहुत ही बुरी समझनी चाहिए। यद्यपि चीन में पुनर्विवाह का निषेध नहीं है, तथापि वहाँ पतिभक्ति एक महत्त्व-पूर्ण कार्य समझी जाती है। पाश्चात्य देशों की तरह चीन में तलाक़ की प्रथा अधिक नहीं प्रचलित है, पर निम्न-लिखित सात कारणों से वहाँ स्त्री को तलाक़ दी जा सकती है। यथा—बंध्या, ख़राब चाल-चलन की, सास और ससुर का कहा न करनेवाली, बहुत बात करनेवाली, चोरी करने की लतवाली, शंकाशील स्वभाव की अथवा असाध्य रोग से पीड़ित। ऐसी दशाओं में पुरुष उसको तलाक़ दे सकता है। जहाँ की स्त्रियों को न शिक्षा दी जाती है, और न स्वतंत्रता है, वह देश यदि अधम दशा को पहुँचे, तो उसमें आश्चर्य ही क्या?

योरप आदि सुशिक्षित कहे जानेवाले देशों की स्त्रियों में, इधर पचीस वर्षों में, बड़ी जागृति उत्पन्न हो गई है। गत पाँच वर्षों से तो वे अपने अधिकार प्राप्त करने के लिये घोर परिश्रम कर रही हैं। इसका प्रभाव पूर्व पर भी पड़ा है। भारत और चीन, दोनों की कुंभकर्णी निद्रा टूट गई है। चीन में तो आज स्त्रियों की अनेक प्रवृत्तियाँ चल रही हैं। स्त्री-सुधार का श्रीगणेश भी इन्होंने ठीक रीति से किया है। पहले इनका अज्ञान दूर करने का उद्योग किया गया। इनके लिये अनेक पाठशालाएँ स्थापित की गईं। जो स्त्रियाँ पहले ड्योढ़ी के बाहर पैर नहीं रखती थीं, वे आज पुरुषों के साथ विश्वविद्यालय में पढ़ती हैं। कितनी ही स्त्रियाँ तो अपने इष्ट विषय का विशेष ज्ञान प्राप्त करने के लिये विदेश गई हैं। केवल युनाइटेड स्टेट्स ऑफ़ अमेरिका ही में इस समय २०० स्त्रियाँ ज्ञानार्जन कर रही हैं। योरप के और-और देशों का तो हिसाब ही अलग है। परंतु भारतवर्ष की मुशकिल से पचास स्त्रियाँ विदेश गई होंगी। चीन की स्त्रियाँ अधिकतर दो कार्य पसंद करती हैं, एक वकालत का और दूसरा अध्यापिका का। डॉक्टरी भी वे करती हैं, पर दाई (नर्स) के कार्य में उनको विशेष अनुराग है। चीन के १९११ के बलवे में वहाँ की कितनी ही स्त्रियों ने योग दिया था, और ज़ख़्मी सिपाहियों की सेवा-सुश्रूषा की थी। वकालत करनेवाली स्त्रियाँ तो बहुत अधिक हैं। एकआध ने तो हवाई जहाज़ चलाना तक सीख लिया है। कितनी ही स्त्रियाँ, स्त्री-समाज की उन्नति तथा उनको उत्तेजित करने के ध्येय से पत्र-संपादन का कार्य भी करती हैं। 'गर्ल्स डेली' के इस अवतरण से पाठक भली भाँति जान जायँगे कि वहाँ की स्त्रियाँ अपनी उन्नति करने के लिये कितनी तत्पर हैं—"क्या स्त्रियाँ मनुष्य नहीं हैं? फिर उनके प्रति इतनी क्रूरता का व्यवहार क्यों किया जाता है? हाँ, इसके लिये कुछ अंश में स्त्रियाँ आप ज़िम्मेदार हैं। अभी तक उन्होंने अपने अधिकार माँगे ही नहीं। अपने कल्याण के लिये अभी तक उन्होंने कोई उपाय सोचा ही नहीं। उनको चाहिए कि वे समाज में अपनी मान-मर्यादा रखने के लिये कोई आयोजन करें।"

बड़े-बड़े नगरों में स्त्रियों की देशप्रेमी संस्थाएँ स्थापित हुई हैं, जो कि भिन्न स्थानों में स्त्रियों को व्याख्यान देने के लिये भेजती हैं। अब स्त्रियाँ राजकीय विषय में बेधड़क भाग लेती हैं। आज से चार हज़ार वर्ष पूर्व चीन में स्त्रियाँ मंदिर या किसी सार्वजनिक स्थान में एकत्रित नहीं होने पाती थीं, जिसमें वे किसी राजकीय विषय पर चर्चा न कर सकें। पर आज तो वहाँ की बात ही दूसरी है। आज वहाँ के समाज की कुप्रथाओं को दूर करने के लिये वहाँ के नवयुवक और स्त्रियाँ घोर परिश्रम कर रहे हैं।

छन्नूलाल द्विवेदी

× × ×

३. पाश्चात्य समाज में महिलाओं का स्थान

पाश्चात्य समाज की स्त्रियों के स्थान तथा सम्मान की कुछ बातें लिखकर अपने समाज की बातें लिखेंगे। पाश्चात्य समाज की बात उठाते ही सबसे पहले यही कहना पड़ता है कि वहाँ स्त्री और पुरुष, दोनों को लेकर समाज की सृष्टि होती है; केवल पुरुष को लेकर नहीं। वहाँ यदि पुरुष सहयोग न भी करें, तो स्त्रियों में इतनी योग्यता तथा शक्ति होती है कि वे कितने ही अंशों में समाज का परिचालन अच्छी तरह कर सकें। अतः पुरुष स्त्री के ऊपर बेजा दबाव डालकर उसकी इच्छा के विरुद्ध कोई काम करा नहीं सकते। जहाँ पर स्त्री और पुरुष में स्वार्थ तथा अधिकार को लेकर झगड़ा उठ खड़ा होता है, वहाँ स्त्री को पुरुष से अलग होकर रहना पड़ता है; क्योंकि पुरुष उस समय स्त्री का प्रतिद्वंद्वी हो उठता है। ऐसी अवस्था में उन्हें भी सामाजिक परिचालन-योग्यता से पूर्ण अभिज्ञ रहना अनिवार्य-सा है। यदि ऐसा न हो, तो इन्हें समाज में 'एकांगी' होकर रहना पड़े। आदर्श समाज वही है, जहाँ नर-नारी परस्पर मेल से रहते हों और जहाँ पर स्वार्थ-संघर्ष की बू-बास तक न हो। पुरुष यदि समाज में निष्कपट भाव से स्त्रियों के स्वत्व तथा मान की रक्षा करते रहें, तभी आदर्श की उत्पत्ति होगी। ऐसा होने पर उन कोमलांगी सुकुमारी रमणियों को इस कठिन संग्राम में प्रवृत्त होकर अपनी सुकुमारता को नष्ट नहीं करना पड़ेगा।

इसके पश्चात् पाश्चात्य देश की महिलाओं के सम्मान की बात सुनिए। हम इसे मानते हैं कि वहाँ स्त्रियों का मान बहुत है; किंतु वह हमारे देश के सामाजिक आदर्श से कुछ भिन्न है। आजकल के नारी-समाज को देखकर कहना पड़ता है कि वे केवल नारी (womanhood) के नाम से ही अपनी प्रतिष्ठा चाहती हैं, समाज या परिवार में रहकर नहीं। वे माता, भगिनी, पत्नी इत्यादि कोई भी नहीं हैं। वे स्वाधीन, बंधनहीन, मानव-समाज का एक अंग-मात्र, केवल नारी हैं। स्त्री-पुरुषों में कोई दल ऐसा भी है, जो परिवार या समाज के बंधन से अलग रह स्वच्छंद विचरण करना चाहता है। इस मतवाद का प्रचार चारों ओर फैल रहा है। इससे समाज का कुछ विशेष मंगल होने का कोई लक्षण नहीं देख पड़ता। तत्काल इसका जो फल प्रत्यक्ष देखने में आ रहा है, वह यह है कि स्त्रियाँ विवाह-बंधन को अस्वीकार करती हुई उसका अनुचित उपयोग कर रही हैं। इनमें एक अविवाहिता मातृसमस्या (unmarried mother's problem) है। यह और कुछ नहीं, केवल ऊँची शिक्षा तथा उत्कट स्वतंत्रता का फल है। कह नहीं सकते, ऐसी स्त्रियों का समाज में कितना आदर होता है। किंतु यह उन्नति-परिचायक है या अवनति-कारक (Retardation), इसके विचार का समय अब आ पहुँचा है। इसी स्वतंत्रता का एक और फल वोट के अधिकार का (Suffragatic agitation) आंदोलन उठ खड़ा हुआ है। पुरुषों की संकीर्णता भी अनेक अंशों में इस नाज़ुक अवस्था के लिये उत्तरदायी है। किंतु सफ़्रेजेट जिस प्रकार काम कर रही हैं, उसे देखकर यही कहना पड़ता है कि इनकी यह अनाधिकार-चेष्टा अधिक दिनों तक चल नहीं सकती। प्रकृति देवी कहाँ तक इसे सहन करेगी, यह विवेचना का विषय है। जीवन में इस आंदोलन से अपेक्षाकृत अधिक सुख-शांति की वृद्धि होना भी तो देखने में नहीं आता। भारतीय महिलाओ, थोड़ा सब्र से काम लेकर देखो तो सही। इसमें संदेह नहीं कि समाज में प्रत्येक स्त्री सचेत होकर रहेगी, इसमें भी शक नहीं कि न्याय करने तथा न्याय पाने में भी वे पीछे नहीं रहेंगी, किंतु केवल इसी के बल पर समाज में हलचल मच जायगी, ऐसी कोई बात नहीं। व्यावहारिक संसार को ध्यान में न लाकर केवल न्याय-शास्त्र का ढोंग रच देने में ही लौकिक काम नहीं चलते। सामाजिक कुरीतियों को छोड़ने तथा सुरीतियों को अपनाने में विशेष सावधानी से काम लेना चाहिए। इतना लिखने का तात्पर्य यही है कि पश्चिम की हवा पूर्वमुखी होकर बह रही है और आँख बंदकर उस हवा के रुख़ की ओर अपनी पीठ फेर देने के हम अभ्यासी होते जा रहे हैं।

× × ×

४. भारतीय समाज में नारी

अब आइए, अपने इस देश की सामाजिक अवस्था का भी निरीक्षण कीजिए। अपने देश के समाज को यदि केवल पुरुष-समाज ही के नाम से पुकारें, तो

हमारी समझ में अनुचित न होगा। हमारे देश के प्रायः प्रत्येक प्रांत में जहाँ कहीं थोड़ा-बहुत भी स्त्री-स्वाधीनता की सत्ता विद्यमान है, वहाँ पुरुषों की ही शासन-नीति चलती है, स्त्रियों की कोई पूछ नहीं। यों तो प्रायः सभी देशों में सामाजिक नियम के बनानेवाले बहुधा पुरुष ही होते हैं, किंतु स्त्रियों का भी उसमें कुछ अधिकार अवश्य रहता है। यही कारण है कि स्त्रियाँ उन-उन देशों में अन्याय के विरुद्ध आंदोलन करने से बाज़ नहीं आतीं, और इस प्रकार पुरुषों का एकच्छत्र शासन वहाँ नहीं चलने पाता। हमारे देश (भारत) में पुरुषों के काम में हमारी स्त्रियाँ हस्तक्षेप नहीं करतीं। पुरातन काल से प्रेम तथा स्वार्थ से प्रेरित होकर पुरुषों ने जो कुछ नियम स्त्रियों के लिये बना दिए हैं, स्त्रियाँ नत-मस्तक हो उनका पालन करती चली आती हैं। इतना होने पर भी पुरुष स्त्रियों की आत्ममर्यादा की रक्षा बराबर नहीं करते आए हैं। पाठक तथा पाठिकाओं में अनेक बोल उठेंगे, वाह साहब! आपने खूब कहा! क्या यह भी कभी संभव है कि पुरुष अपनी प्रेममयी स्त्री के स्वार्थ में आघात पहुँचावे? किंतु हम तो यहाँ तक कहने को तैयार हैं कि संभव सभी है। क्षमता-रूपी मदिरा में एक अजीब शक्ति का समावेश है, इसके लिये मनुष्य संभव, असंभव, सभी कर सकता है। अमेज़न (Amazon) लोग अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिये अपना अंग-भंग तक करने में आनाकानी नहीं करते थे। आश्चर्य तो यह है कि भारतीय स्त्री-पुरुषों का पार्थक्य कब से और क्योंकर हुआ? संभव है, भारतीय नारियों ने अपनी कोमलता तथा सुकुमारता के कारण मिली हुई शक्ति को छोड़ दिया हो। अथवा यह भी हो सकता है कि किसी ज़माने में स्त्रियों को अधिकार-च्युत कर दिया गया हो, और उसी का फल उनकी बेटियों को हज़ारों वर्षों से भोगना पड़ रहा है।

भारतीय इतिहास साक्षी है कि महिलाओं के अधिकार छिनते समय उन्हें एकाएक अंधा या पंगु नहीं बना दिया गया। जिस प्रकार धीरे-धीरे समाज के नियम संकीर्ण होते गए, महिलाओं के अधिकार भी उसी प्रकार धीरे-धीरे छिनते गए। उनके इस अधःपतन का दायित्व सर्वांश में पुरुषों पर ही नहीं है। वे स्वयं भी किसी-न-किसी अंशों में उत्तरदायी अवश्य हैं। जहाँ तक मालूम होता है, उनकी उदासीनता तथा आलस ही इसका कारण है। जो हो, आज हमारे समाज की जो अवस्था उसे देख यह संदेह होने लग गया है कि नारी-शक्ति अस्तित्व हमारे यहाँ है या नहीं। इस सुअवसर को पुरुषों ने स्त्रियों पर जो अत्याचार किए हैं, उनका परि यह हुआ कि समाज आज आधा मुर्दा हो रहा है, आधे अंग में लक़वा मार गया है। इस विष लेकर समाज में इन दिनों आंदोलन चल रहा इसकी और विस्तृत आलोचना करने की आवश्यकता न सामाजिक प्रश्न न होने पर भी दो-एक बातें यहाँ पर लि देने को हम बाध्य हुए हैं। जिस दिन महाराज मनु अपनी स्मृति में कहा, "पिता रक्षति कौमारे, भर्ता र यौवने; रक्षन्ति स्थाविरे पुत्रा न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति।" अर्थात् बाल्यावस्था में पिता, यौवनावस्था में पति वृद्धावस्था में पुत्र रक्षा करे, स्त्रियों को स्वतंत्रता कभी देनी चाहिए, उसी दिन से स्त्रियों पर विधाता वाम हुए परतंत्रता की बेड़ी में स्त्रियों को जकड़कर समाज को कि लाभ हुआ, सो तो कुछ समझ में नहीं आता, किंतु इ तो अवश्य हुआ कि समाज का अर्द्धांग—स्त्रियाँ निरा हो गईं। संभव है, उस समय समाज में उदारता अंश विद्यमान रहा हो, किंतु आज पति-पुत्र-वि अबलाओं के लिये कहाँ आश्रय है?

गोपीनाथ व

---

* लेखक महाशय ने यह किसी बँगला लेख का अनु कर दिया है। इसमें बहुत-सी बातें ऐसी हैं, जिनसे ह सहमत नहीं हैं। हम यह मानते हैं कि समाज में स्त्रि की स्थिति अच्छी नहीं है—उसके सुधार की ज़रूरत है पर इसके हम विरोधी हैं कि पुरुषों को स्वार्थवश स्त्रि के अधिकार हरनेवाला कहकर कोसा जाय, या मह मनु को गालियाँ दी जायँ। स्त्रियों की दशा इस तरह वाक्य-बाण-वर्षा से नहीं सुधर सकती। केवल पुरुषों और स्त्रियों में मनोमालिन्य ही बढ़ेगा। जो मर्द स्त्रियों के पक्ष होने का ढोंग दिखाकर ऐसे लेख लिखते या आंदोल मचाते हैं, वे स्त्रियों का अपकार ही करते हैं। इस वि पर विस्तृत रूप से हम फिर लिखेंगे।—संपादक

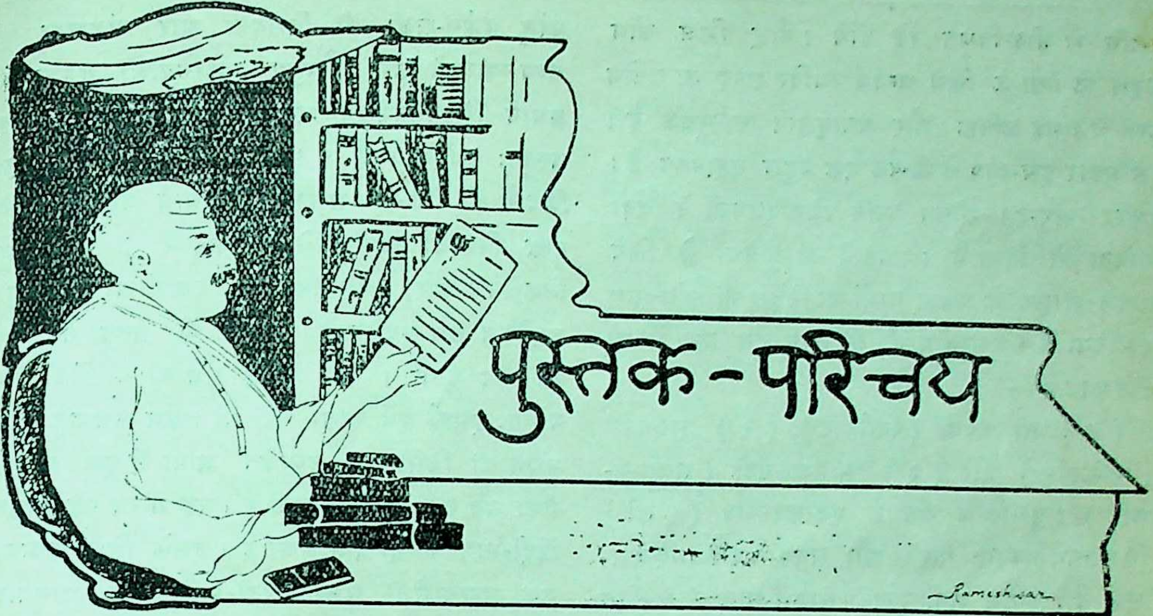

१. कोष

'अभिधानप्पदीपिका'—संपादक, श्रीयुत मुनि जिनविजयजी, आचार्य, गुजरात-पुरातत्त्व-मंदिर, अहमदाबाद। प्रकाशक, किशोरलाल-घनश्यामलाल मशरूवाला, महामात्र गुजरात-विद्यापीठ, अहमदाबाद। छपाई आदि उत्तम। कागज़ बढ़िया, सुंदर जिल्द। पृष्ठ-संख्या १६२ ; मूल्य ५)

यह पाली-भाषा का कोष है। इसकी रचना ठीक संस्कृत के अमरकोष के ढंग की है। छोटे-छोटे श्लोकों (अधिकांश अनुष्टुप्) में नामों और लिंगों का दिग्दर्शन किया है। रचना के नियम भी अमरकोष से मिलते-जुलते हैं। निम्न-लिखित पद्यों के देखने से यह स्पष्ट हो जायगा—

भीयो रूपन्तरा साहचरियेन च कत्थचि ;
कचाहध विधानन भेय्यं थी पुन्नपुंसकम्।

(अभिधानप्पदीपिका)

प्रायशो रूपभेदेन साहचर्याच्च कुत्रचित् ;
स्त्रीपुंनपुंसकं ज्ञेयं साहचर्याच्च कुत्रचित्।

(अमरकोष)

पुमित्थियं पदं द्वीसु सब्बलिंग च तीस्विति ;
अभिधानन्तरारम्भे भेय्यं त्वन्तमथादि च।

(अ० प०)

त्रिलिङ्ग्यां त्रिष्विति पदं मिथुने तु द्वयोरिति ;
निषिद्धलिङ्गं शेषार्थं त्वन्ताथादि न पूर्वभाक्।

(अमर०)

इसके लेखक हैं मोग्गलानथेर-नामक कोई बौद्ध भिक्षु। इन्होंने ग्रंथ के अंत में अपना परिचय इस प्रकार दिया है—

महाजेतवनाख्यम्हि विहारे साधुसंमते ;
सरोगामसमूहम्हि वसता सन्तवुत्तिना।
सद्धम्मट्ठितिकामेन मोग्गल्लानेन धीमता ;
थेरेन रचिता एसा अभिधानप्पदीपिका।

इन पद्यों का संस्कृत-रूप इस प्रकार होगा—

महाजेतवनाख्ये हि विहारे साधुसम्मते ;
सरोग्रामसमूहे वसता शान्तवृत्तिना।
सद्धर्मस्थितिकामेन० इत्यादि।

इसी परिचय में लिखा है कि लंका में पराक्रमभुज-नामक राजा के राज्य में श्रीयुत मोग्गल्लानथेरजी महाजेतवन-नामक विहार में रहते थे। यह ईसा की बारहवीं शताब्दी के मध्य-भाग की बात है। 'जेतवन' शब्द संस्कृत के जैत्रवन से उत्पन्न हुआ है। विहार का 'महाजैत्रवन' नाम ही सूचित करता है कि उस समय उसमें धुरंधर बौद्ध विद्वान् मौजूद थे। 'मोग्गल्लान'-शब्द संस्कृत के मौद्गलायन से बना है, और 'थेर' स्थविर का पाली-रूपांतर है। मौद्गलायन गोत्रोपाधि है। लेखक का नाम कुछ और रहा होगा। परंतु जैसे आज भी लोग पूज्य-पुरुषों का नाम न लेकर गोत्रोपाधि आदि से ही उनका व्यवहार करते हैं, इसी प्रकार वह उस समय इसी

उपाधि से लोक-विश्रुत रहे होंगे। बौद्ध भिक्षु लोग विहार के नेता के लिये अन्वर्थ स्थविर शब्द का प्रयोग करते थे। यह प्रतिष्ठा और वयोवृद्धत्व का सूचक है। इस प्रकार इस कोष के लेखक एक बहुज्ञ महापुरुष हैं। इसका संपादन श्रीयुत मुनि जिनविजयजी ने बड़ी योग्यता से किया है। पाठकों की सुविधा के लिये आपने संस्कृत के प्रधान नामों का निर्देश भी साथ-साथ कर दिया है। अमरकोष की ही तरह इस ग्रंथ में भी तीन कांड हैं—

(१) 'सग्गकण्डो' (स्वर्गकांड), (२) 'भूकण्डो' (भूमिकांड) और (३) 'सामज्ञकण्डो' (सामान्य-कांड)। पुस्तक के अंत में एकाक्षर-कोष (पाली) विभक्त्यर्थ-प्रकरण पाली और सबकी अकारादि-क्रम-सूची है। अंतिम दोनों पुस्तकें संस्कृत-भाषा से अनूदित की गई हैं। एकाक्षर-कोष के अंत में लिखा है—"सद्धम्म-कित्ति नाम महाथेरेन सकतभासातो परिवत्तेत्वा विरचितं एकक्खरकोसं" अर्थात् "सद्धर्मकीर्तिनाममहास्थविरेण संस्कृतभाषातः परिवर्त्य विरचितम्"। परंतु संस्कृत में आज कोई ऐसा उत्तम एकाक्षर-कोष उपलब्ध नहीं है, जिसका यह रूपांतर कहा जा सके। यदि मुसलमानी हम्माम की ज्वालाओं से बचा होगा, तो शायद किसी दिन मिल जाय। यह पुस्तक पाली-भाषा के जिज्ञासुओं और पुस्तकालय आदि के लिये सर्वथा उपादेय है। सब बातों पर ध्यान देते हुए मूल्य की अधिकता क्षंतव्य है।

× × ×

२. आध्यात्मिक और वेदांत

अद्वैत-सिद्धि (दो भाग)—श्रीयुत ब्रह्मचारि रामेश्वरदत्त-कृत सरला-नामक हिंदी-टीका-सहित। सुपर-रॉयल आकार। सुंदर, नयन-मनोहर जिल्द। दो भागों में विभक्त। बढ़िया चिकना काग़ज़। छपाई-सफ़ाई अतिरमणीय। पृ०-सं० (दोनों भागों की) १,०४६। पारिभाषिक शब्द-कोष और प्रस्तावना की पृष्ठ-संख्या इससे अलग है। मूल्य १०); "प्राप्ति-स्थान—राज्यरत्न नगरसेठ नारायण भाई केशवलाल पेट लाद, बड़ोदा-स्टेट, देश—गुजरात।"

संस्कृत में 'अद्वैत-सिद्धि', वेदांत-शास्त्र के चोटी के ग्रंथों में से है। यद्यपि चित्सुखी और खंडन-खंड-खाद्य भी शांकर मत के पोषक वेदांत के अत्यंत उद्भट ग्रंथ हैं, परंतु वर्णन-शैली की विशदता और प्रांजलता एवं नव्य न्याय के मार्ग का अनुगमन करनेवाली तर्कानुमान-प्रधान विषय-विवेचन-शैली की दृष्टि से 'अद्वैत-सिद्धि' वस्तुतः अद्वितीय है। इसके सूक्ष्म, गंभीर, परिष्कृत विचारों को ठीक-ठीक समझने की यथार्थ योग्यता रखनेवाले विद्यार्थी काशी-जैसे विद्यापीठ में भी दो ही चार निकलेंगे। और, इसके गहनतम विचारों को आमूलचूल हृदयंगम करा सकनेवाले आचार्यों की संख्या तो इससे भी कम होगी। ऐसे उत्कृष्ट ग्रंथ की भी हिंदी-टीका बनेगी, इसकी हमें आशा नहीं थी। हम समझते हैं कि भारत की किसी भी प्रचलित भाषा में इस ग्रंथ की टीका अब तक नहीं बन सकी है। यह गौरव पहले-पहल हिंदी-भाषा को ही प्राप्त हुआ है। इसके लिये टीकाकार उक्त ब्रह्मचारीजी समस्त हिंदी-भाषियों के धन्यवाद-भाजन हैं। हिंदी-भाषा के सहारे ऐसे गहन कानन को पार करके ब्रह्मचारीजी ने वस्तुतः ब्रह्मचर्योचित धैर्य का प्रदर्शन किया है। टीका आपने इस प्रकार लिखी है, जिससे विद्यार्थी को मूल की संगति और समन्वय समझने में सुविधा हो, अतएव भाषा में संस्कृत के शब्दों का बाहुल्य है, जो अनिवार्य है। टीका की शैली ठीक वैसी ही है, जैसी अध्यापकों को विद्यार्थियों के समझाने के लिये अवलंबन करनी पड़ती है। जिन लोगों को अन्य शास्त्रों के प्रमेयों का परिचय और वेदांत के सिद्धांतों का ज्ञान है, वे इस टीका की सहायता से बहुत कुछ लाभ उठा सकते हैं। ग्रंथ के आरंभ में ब्रह्मचारीजी की लिखी प्रस्तावना भी है, जिससे आपकी बहुज्ञता और सामयिक ज्ञान का अच्छा परिचय मिलता है। यद्यपि आपकी भाषा टकसाली नहीं है, तथापि तात्पर्य समझने में कहीं अड़चन नहीं पड़ती। हम हिंदी-संसार का गौरव बढ़ानेवाली इस टीका का हृदय से अभिनंदन करते हैं। 'अद्वैत-सिद्धि' की बातें सुनने के लिये हिंदी में इसके सिवा कोई साधन नहीं है। अच्छे पुस्तकालयों और ज्ञान-पिपासुओं को यह पुस्तक अवश्य अपनानी चाहिए।

शालग्राम शास्त्री

× × ×

अध्यात्मतत्त्वालोक—लेखक, न्यायविशारद, न्याय-तीर्थ, मुनि श्रीन्यायविजयजी। मूल संस्कृत-पद्य। गुर्जर-भाषा-

नुवाद, अँगरेज़ी-भाषानुवाद तथा उपोद्घात-सहित। गुजराती-अनुवादक स्वयं मूल-लेखक हैं। अँगरेज़ी-अनुवाद के कर्ता तथा उपोद्घात के लेखक हैं श्रीयुत मोतीचंद झवेरचंद मेहता, फ़र्स्ट असिस्टंट मास्टर, हाईस्कूल, भावनगर।

मूल संस्कृत में छः प्रकरण हैं, उनमें क्रमशः प्रकीर्णक उपदेश, पूर्वसेवा, अष्टांगयोग, कषायजय, ध्यान-सामग्री तथा ध्यानसिद्धि का विवेचन है। गुजराती और अँगरेज़ी-अनुवाद के साथ-साथ विषय को स्पष्ट करने के लिये उदाहरण, कथा आदि भी दी गई हैं, जिनसे उपदेश सुबोध तथा मनोरम हो गया है। उपोद्घात में यह भी सिद्ध किया गया है कि लोग भ्रम-वश जैन-धर्म को नास्तिक मानते हैं, वह वास्तव में नास्तिक नहीं, आस्तिक है। जैन लोग पूर्वजन्म और पुनर्जन्म मानते हैं, ईश्वर को भी मानते हैं। हाँ, ईश्वर का कर्तृत्व नहीं मानते। जैन-सिद्धांत के अनुसार संसार का प्रवर्तक केवल कर्म है; किंतु कर्म को ही प्रवर्तक मानने से नास्तिकता का आरोप करना न्याय नहीं है। इसके प्रमाण में भगवद्गीता से 'न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः' उद्धृत किया गया है। पुस्तक सर्वथा उपदेश-पूर्ण है। छपाई-सफ़ाई भी प्रशंसनीय है।

× × ×

ब्रह्म-विज्ञान (ईश तथा श्वेताश्वतरोपनिषद् का पद्यानुवाद)—रचयिता, सत्यप्रकाश विशारद। प्रकाशक, कला-कार्यालय, प्रयाग। मूल्य =)

अनुवाद खड़ी बोली के पद्यों में है, और अच्छा है। केवल हिंदी जाननेवालों को संस्कृत के कठिन तथा सांकेतिक शब्द समझने में अड़चन न हो, इसलिये कहीं-कहीं नीचे अर्थ स्पष्ट करने के लिये नोट भी दिए गए हैं। पुस्तक संग्रहणीय है।

× × ×

गोपाल-प्रकाश—लेखक तथा प्रकाशक, श्रीनारायण, जलेसर (एटा)। मूल्य ।।)

इस छोटी-सी पुस्तक में, पति और पत्नी के संवाद-रूप में, संसार की अनित्यता तथा ब्रह्म की सत्यता का प्रतिपादन किया गया है। वर्णन-शैली अच्छी है; पर भाषा अनेक स्थलों में चिंत्य है। पति रामरूप और उसकी पत्नी इंद्रावती, दोनों ही अंत में ब्रह्म-सुख का रसास्वादन करते और शांति पाते हैं।

× ×

कैवल्य-शास्त्र—लेखक, ज्वालाप्रसाद सिंहल एम्० ए०, सत्ज्ञान-प्रकाशक-मंदिर, मामूभांजा, अलीगढ़ सिटी (युक्तप्रदेश)। मूल्य ५)

प्रथम अध्याय में जड़ व चैतन्य का विवेचन है। सबसे पहले शरीर और आत्मा भिन्न-भिन्न हैं अथवा एक, इस पर विचार किया गया है, तथा यह प्रतिपादन किया गया है कि शरीर से आत्मा भिन्न है। द्वितीय अध्याय में पूर्णात्मा (ईश्वर) का विवेचन है, तथा ईश्वर को सृष्टिकर्ता अथवा संचालक मानने में अनेक प्रकार की आपत्ति की गई है। तृतीय अध्याय में आदि-तत्त्व (परब्रह्म) का सम्यग्विवेचन है। ब्रह्म की सर्वव्यापकता, अपरिमितता आदि का युक्ति-युक्त प्रतिपादन है। द्वैत-सिद्धांत का खंडन तथा अद्वैत का मंडन वैज्ञानिक युक्ति से किया गया है। चतुर्थ अध्याय में सृष्टि-रचना-विधि का वर्णन है। यहाँ भी पुराणादि में वर्णित सृष्टि-क्रम को न मानकर वैज्ञानिक युक्ति का सहारा लिया गया है। आदि-तत्त्व (परब्रह्म) में स्वभावतः क्षोभ उत्पन्न होता है, और उसी क्षोभ के कारण सृष्टि होती है। क्षोभ क्यों होता है, इसके लिये कोई समीचीन कारण नहीं दिया गया। केवल लिखा है—"क्रियात्मक चेतनता आदि शक्ति है। अतएव यह स्वभाव से ही सदैव एक दशा में एकाग्र अथवा विस्तृत नहीं रह सकती।" आगे चलकर जीवात्मा, मनुष्य-शरीर, अमरता, आवागमन, मुक्ति अथवा निर्वाण का विवेचन है। अवतारों का रहस्य वैज्ञानिक, युक्ति-पूर्ण और मनोरम है। 'जीवनोद्देश्य'-शीर्षक अध्याय भी बड़े महत्त्व का है। पुस्तक सर्वथा उपादेय है। वर्णन-शैली पांडित्य-पूर्ण और हृदयंगम होने लायक़ है। ब्रह्म अथवा आदि तत्त्व का सिद्धांत यद्यपि नया नहीं है, तथापि पूर्वापर-सामंजस्य दिखाकर, शृंखलाबद्ध करके, सरल रीति से, विषय-प्रतिपादन करने की लेखक की शैली नवीन और स्तुत्य है। इसके ध्यान-पूर्वक पढ़ने से लोगों का बहुत उपकार संभव है। प्रारंभ में जो नास्तिकता की गंध आती है, वह भी विचार-पूर्वक पढ़ने से दूर हो जाती है। दार्शनिक विवेचन जहाँ होते हैं, वहाँ सर्वत्र ही इस प्रकार के विचार मिलते हैं। पूर्वापर-विचार करने से, ध्यान-पूर्वक इसका मनन करने से, दर्शन-शास्त्रों के परस्पर विरोध का भी परिहार होता है। पौराणिक आख्यानों का रहस्य भी समझ

में आ जाता है। लेखक का श्रम सर्वथा प्रशंसनीय है। छपाई और जिल्द भी बहुत अच्छी है। परंतु छापे की अशुद्धियों की भरमार है, इससे पुस्तक की मनोहरता में बहुत कुछ दोष आ जाता है। पुस्तक का मूल्य पाँच रुपए भी बहुत अधिक है। विश्व-प्रेम के उपदेशक का इस तरह अत्यंत अधिक मूल्य रखना असंगत है। विशेष करके ऐसी अमूल्य पुस्तक का इतना अधिक मूल्य रखना खलता है। बीच में कुछ समय के लिये मूल्य कुछ कम किया गया था सही, पर वह थोड़ी ही अवधि के लिये था।

आद्यादत्त

× × ×

३. उपन्यास

सुघड़ बेटी—यह एक मुसलमान-महिला की उर्दू-रचना का हिंदी-अनुवाद है। अनुवादक हैं प्रो० रामस्वरूप कौशल एम्० ए०। पुस्तक का मूल्य ।।) है, जो बहुत उचित है। पृष्ठ-संख्या १२२।

यह पुस्तक पुत्रियों के लिये बहुत उपयोगी है। लेखिका २० वर्ष तक स्त्रियों की सर्व-प्रधान उर्दू-पत्रिका का संपादन करती रही थीं, और बालिकाओं की शिक्षा से उन्हें बड़ी दिलचस्पी थी। पुस्तक की भाषा ऐसी सरल और चित्ताकर्षक है, जैसी कि एक महिला ही लिख सकती है। पुत्रियों की शिक्षा का कोई अंग आपने नहीं छोड़ा। माता-पिता का आदर, भाई-बहनों से प्रेम, गुरुजनों का सत्कार से लेकर स्वास्थ्य-रक्षा, सफ़ाई, गृह-प्रबंध, पुस्तकावलोकन, पत्र-रचना, पाक-शिक्षा आदि समग्र विषयों पर बड़ी रोचक शैली में छोटे-छोटे निबंध लिखे गए हैं। इससे पुत्रियों को केवल शिक्षा ही न मिलेगी, उनका मनोरंजन भी होगा। पुत्री-शिक्षा के विषय में अब तक कोई ऐसी पुस्तक नहीं थी, जो थोड़े-से पृष्ठों में शिक्षा के सभी अंगों पर प्रकाश डाले। 'सुघड़ बेटी' ने इस अभाव को पूरा किया है। हम तो उनकी भाषा की सरसता पर मुग्ध हो गए। जिन महाशयों को अपनी पुत्रियों के लिये किसी उपयुक्त पुस्तक की तलाश हो, उनसे हम ज़ोरों के साथ इस पुस्तक के लिये सिफ़ारिश करते हैं। इससे यह भी सिद्ध होता है कि हमारा और मुसलमानों की शिक्षा तथा सभ्यता का एक ही आदर्श है। इस पुस्तक में एक प्रसंग भी ऐसा नहीं है, जो हिंदू-बालिकाओं के लिये उतना ही ग्राह्य न हो, जितना किसी मुसलमान-बालिका के लिये।

× × ×

वंग-विजेता—यह स्वर्गवासी रमेशचंद्र दत्त-कृत बँगला-उपन्यास "वंग-विजेता" का हिंदी-रूपांतर है। अनुवादक, पंडित भगवानदीन पाठक विशारद। प्रकाशक, अभ्युदय-प्रेस, प्रयाग। मूल्य १), पृष्ठ-संख्या २००।

रमेश बाबू धुरंधर राजनीतिज्ञ और कार्यदक्ष सरकारी अफ़सर होने के साथ-साथ उच्च कोटि के साहित्य-सेवी भी थे। ऐसे बहुज्ञ मनुष्य बहुत कम होते हैं। वह इतिहास, काव्य, उपन्यास, समालोचना, सभी विषयों में कुशल थे। वंग-विजेता उनका अपूर्व उपन्यास है। इसका उर्दू-अनुवाद बहुत दिन पहले हो चुका है। अब हिंदी में भी हो गया। अनुवाद के विषय में हम इतना ही कह सकते हैं कि उसका बंगालीपन कहीं नहीं खटकता, यद्यपि कहीं-कहीं अनुवादक महोदय ने क़िस्से को संक्षिप्त कर दिया है।

× × ×

प्राणघातक माला—अनुवादक, 'अभ्युदय'-संपादक पंडित कृष्णकांत मालवीय बी० ए०। अभ्युदय-प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित। मूल्य ।।=)

श्रीमती स्वर्णकुमारी देवी ने कई उपन्यास बँगला में लिखे हैं, और उन्हें ख्याति भी प्राप्त है; पर इस प्राणघातक माला में बहुत उद्योग करने पर भी हमें कोई ऐसी बात नहीं मिली, जिसकी हम सराहना करते। माडर्न रिव्यू में इसका अनुवाद क्रमशः प्रकाशित हुआ था। इसके सिवा हमें इसमें कोई खूबी नहीं दिखाई दी। संभव है, मूल पुस्तक अच्छी हो; क्योंकि इस अनुवाद की भाषा दोषों से भरी हुई है, और अच्छी भाषा का पुस्तक की सुंदरता पर कुछ-न-कुछ असर पड़ता ही है। घटना उस समय की है, जब बंगाल में अफ़ग़ानों का राज्य था। विशेष कर महिलाओं का इससे मनोरंजन हो सकता है। यह कथा है, पर उपन्यास नहीं है, जिसका आधार चरित्र और भावों ही पर होता है। कहीं-कहीं प्रेम और भक्ति के भाव उत्तेजना-पूर्ण शब्दों में चित्रित किए गए हैं, जो सर्वथा कृत्रिम जान पड़ते हैं। श्रीकृष्णकांत मालवीय इसके

अनुवादक हैं, इसलिये हम यह नहीं कह सकते कि लेखिका के भाव नहीं व्यक्त हो सके। हाँ, जैसा उन्होंने स्वयं लिखा है, अनुवाद सावधानी से नहीं किया गया। चरित्र-चित्रण में, भावों में, वर्णन-शैली में, कहीं प्रौढ़ता का आभास नहीं मिलता। कहीं-कहीं प्रकृति का वर्णन परिमार्जित भाषा में करने की चेष्टा की गई है, जो सफल नहीं होने पाई।

प्रेमचंद

× × ×

४. हास्य और व्यंग्य

स्वर्ग में महासभा—लेखक, पं० रुद्रदत्त शर्मा संपादकाचार्य। प्रकाशक, पं० शंकरदत्त शर्मा, वैदिक-पुस्तकालय, मुरादाबाद। पृष्ठ-संख्या ५४। मूल्य ।)

यह एक पुराने लेखक की पुरानी पुस्तक की पुनरावृत्ति और विनोद-पूर्ण व्यंग्य-साहित्य है। स्वर्ग में महासभा हो रही है, और उसके विचार का सारांश उक्त सभा के सभापति के शब्दों में यही है कि "पुराण के बनानेवालों ने आप लोगों पर (देवतों पर) सहस्रों मिथ्या दोष लगाए हैं, अतएव आप लोगों की सम्मति है कि उन सब पुराणों को रद्दीख़ाने में फेंक दिया जाय। यह भी सिद्ध हो गया है कि भगवान् विष्णु और शिव महाराज भी आप लोगों से सहमत हैं।" ऐसी पुस्तक की खूबियाँ पढ़ने ही से मालूम हो सकती हैं। इस पर अपनी राय देना व्यर्थ है। धार्मिक सुधार के युग में प्रत्येक देश में इस प्रकार की पुस्तकें निकली हैं, जिनमें अपने प्रतिद्वंद्वियों का मज़ाक़ उड़ाया गया है। यह भी आर्य-समाज के आरंभिक युग की यादगार है। पुस्तक की भाषा मुहावरेदार है। विराम-चिह्न का उपयोग लंका में सज्जनों की संख्या के अनुरूप ही किया गया है। १९२४ की आवृत्ति में तो कम-से-कम यह ठीक कर दिया जाना चाहिए था।

श्रीनारायण चतुर्वेदी

× × ×

५. जीवनी

श्रीमीराबाई की जीवनी और प्रीति—श्री-अयोध्यावासी श्रीसीतारामशरण भगवानप्रसादजी 'रूप-कला'-विरचित, रायबहादुर श्रीरामरणविजयसिंह (खड्ग-विलास प्रेस, पटना) द्वारा प्रकाशित। पृष्ठ-संख्या ७१। मूल्य ।≡)

इस पुस्तक में श्रीमीराबाई की जीवनी तथा प्रीति का बहुत श्रम और खोज के साथ वर्णन किया गया है।

कृष्णबिहारी

× × ×

जगदीशचंद्र वसु—लेखक, सुखसंपत्तिराय भंडारी। प्रकाशक, मोतीलाल बनारसीदास, पंजाब-संस्कृत-पुस्तकालय, सैदमिट्ठा-बाज़ार, लाहौर। अच्छे काग़ज़ के डिमाई-अठपेजी साइज़ के ८० पृष्ठों पर साफ़ छपाई। मूल्य राम जानें!

यह जगत्प्रसिद्ध विज्ञानवेत्ता डॉक्टर सर जगदीशचंद्र वसु की जीवनी है। इसमें उनके आविष्कारों का भी वर्णन किया गया है। संतोष की बात है कि भंडारीजी ने इस द्वितीय संस्करण को संवर्द्धित और सामयिक बना दिया है। यह पुस्तक अनेक ज्ञातव्य विषयों से पूर्ण है। लेखन-शैली अच्छी है, पढ़ने में जी लगता है। स्वदेशाभिमानियों और ज्ञान-पिपासुओं के बड़े काम की है।

× × ×

महादेव गोविंद रानाडे—लेखक, पं० श्यामसुंदरलाल त्रिपाठी। प्रकाशक, हिमालय-डिपो, मुरादाबाद। पृष्ठ ३२, छपाई बहुत साधारण और मूल्य चार आने बहुत अधिक है।

आदर्श देशभक्त महात्मा रानाडे का सुचारु चरित मनुष्य-मात्र के लिये उपदेशप्रद है। इन महापुरुष की बड़ी जीवनियाँ निकल चुकी हैं। यह उनमें सबसे छोटी और कुछ सरल भी है। बालकों के लिये यह बहुत अच्छी है।

शिवपूजनसहाय

× × ×

६. भ्रमण

मेरी कैलास-यात्रा—लेखक, स्वामी सत्यदेव परिव्राजक। प्रकाशक, श्रीकृष्णलाल लवानियाँ, दी लवानियाँ पब्लिशिंग-हाउस, आगरा। पृष्ठ-संख्या १४० और चित्र-संख्या ७। द्वितीय संस्करण। चार खंडों में विभक्त। मूल्य बारह आने।

इस पुस्तक के लेखक स्वामीजी हिंदी के एक सुयोग्य लेखक और विख्यात व्याख्याता हैं। आपके उद्योग से अनेक स्थानों में हिंदी का ख़ासा प्रचार हुआ है। आपकी बदौलत कितनी ही जगहों में पुस्तकालयों और

उत्साही लेखकों का जन्म हुआ है, जहाँ पहले से इस तरह की कोई आशा नहीं की जाती थी। हिंदी-प्रेमी नवयुवकों पर आपका विशेष प्रभाव देखा जाता है। आपकी प्रत्येक रचना में नवयुवकों के लिये कोई-न-कोई पवित्र संदेश अवश्य रहता है। यह पुस्तक भी आपके शुभ संदेशों से ख़ाली नहीं है। पुस्तक-परिचय में आप लिखते हैं—

"परमात्मा ने भारतोत्थान का दृढ़ निश्चय कर अपने विद्युत्प्रवाह का संबंध हिमालय की गगनारोही चोटियों के साथ कर लिया है। वहाँ उस बेतार-तार के ऊँचे स्तूप गड़े हैं। इस मेरी (?) 'कैलास-यात्रा' के द्वारा मैंने भारत-संतान को उन स्तूपों तक पहुँचाने की चेष्टा की है ताकि दैवी संदेश की तरंगें उनके अंदर प्रवेश कर सकें।" वास्तव में स्वामीजी ने इस पुस्तक को इतने अच्छे ढंग से लिखा है कि पढ़ते-पढ़ते कैलास-यात्रा के लिये उत्कट उत्कंठा उत्पन्न हो जाती है। इस देश में तीर्थ-यात्रा और देशाटन करनेवालों की कमी नहीं है। परंतु वे अपनी यात्राओं का विवरण लिखकर अपने देशवासियों का मनोरंजन करना और अपने भ्रमण-वृत्तांत से संसार को कुछ नवीन अनुभव-पूर्ण संदेश सुनाना जानते ही नहीं। पाश्चात्य भाषाओं में भारत-यात्रा-संबंधी अनेक बड़े-बड़े ग्रंथ हैं। उन ग्रंथों से पाश्चात्य जगत् अपरिमित लाभ उठा रहा है। हिंदी में भ्रमण और यात्रा पर बहुत कम पुस्तकें हैं। परंतु जो कुछ हैं, उनमें यह पुस्तक अनूठी है। इसे एक वर्णन-बहुल रोचक उपन्यास कह सकते हैं। इसकी भाषा बड़ी सरल है, और उस पर स्वामीजी की ख़ास छाप है। उसमें पवित्र सरसता भी है। उसकी धारा भी स्वच्छंद है। उसमें उठनेवाली विमल विचार की शीतल तरंगें अवगाहन करनेवालों को शांति देनेवाली हैं। यह पुस्तक एक भावुक प्रकृति-प्रेमी यात्री का रोज़नामचा है। तीर्थयात्रा के प्रेमी तो इसे अवश्य पढ़ें। उनके अतिरिक्त जिन्हें स्वदेश की नैसर्गिक सौंदर्य-सुधा के साथ-साथ शुद्ध साहित्यिक रस का स्वाद लेना ही अभीष्ट हो, वे भी इसका अवलोकन करें। इसमें छपाई की अशुद्धियाँ अवश्य हैं, पर वे मनोहर वर्णन-शैली के प्रवाह में बह जाती हैं।

शिवपूजनसहाय

× × ×

७. व्यापार

लिमिटेड कंपनियाँ—लेखक, बा० ईश्वरदास एम्० ए०, बी० एल्०, एटर्नी-एट-ला ; ४०२ अपर रोड, कलकत्ता। प्रकाशक, राजस्थान-एजेंसी, ८।१ कुमार रक्षित लेन, कलकत्ता। आकार २०×३० सोलहपेजी कागज़, छपाई-सफ़ाई अच्छी। पृष्ठ-संख्या १९०। मूल्य।

यह व्यापारिक ग्रंथमाला का प्रथम पुष्प है। लिमिटेड कंपनियों के संबंध की प्रायः सभी आवश्यक का विवेचन किया गया है। भारत में लिमिटेड कंपनियों सन् १९१३ के कंपनीज़ ऐक्ट के अनुसार रजिस्ट्री की हैं। प्रत्येक कंपनी को इस ऐक्ट में दिए हुए सब नियमों का पालन करना होता है। व्यापार-व्यवसाय में हुए प्रत्येक व्यक्ति को उन आवश्यक नियमों का कर लेना चाहिए। परंतु ऐक्ट अँगरेज़ी में है, और हि में इस विषय की किसी अच्छी पुस्तक का अभाव था इस कारण अँगरेज़ी न जाननेवाले व्यक्तियों को कभी-क भारी हानि उठानी पड़ती थी। हमें हर्ष है कि श्री जालानजी ने इस पुस्तक को लिखकर हिंदी-साहित्य इसी बड़े अभाव की पूर्ति का प्रयत्न किया है लेखक महाशय स्वयं भारतीय क़ानून के विशेषज्ञ एटर्नी-एट-ला हैं। आपने इस पुस्तक में कंपनी के प्रायः सभी नियमों को, बहुत ही अच्छी त से, सुंदर और सरल भाषा में, समझाने का प्रयत्न किया है यदि इस पुस्तक के अनुभवी लेखक यह भी बत का प्रयत्न करते कि भारत के हित की दृष्टि से कंप ऐक्ट में इस समय किन-किन सुधारों की आवश्यकता तो पुस्तक की उपयोगिता बहुत बढ़ जाती। पारिभा शब्दों की सूची भी देने की अत्यंत आवश्यकता थी फिर भी पुस्तक उत्तम है। लिमिटेड कंपनी से सं रखनेवाले प्रत्येक व्यक्ति को इससे लाभ उठा चाहिए।

दयाशंकर दु

× × ×

८. गुजराती

आटलुं तो जानजो (इतना तो जानो)—लेख श्रीयुत नरहरि द्वारिकादास पारीख। प्रकाशक, युग कार्यालय, अहमदाबाद। पृष्ठ-संख्या ११४। छपाई-स सुंदर। मूल्य ॥)

स्कूलों के विद्यार्थियों तथा गाँव में रहनेवाली अल्प शिक्षित जनता को अँगरेज़ी-राज्य में होनेवाली उनकी दीनता और हीनता के कारण का ज्ञान कराने के लिये यह पुस्तक लिखी गई है। इसमें राज्य-पद्धतियाँ, नौकरशाही, महासभा, असहयोग, स्वदेशी, बोलशेविज़्म, राष्ट्रीय शिक्षा, अस्पृश्यता, हिंदू-मुसलिम ऐक्य, गोरक्षा, ग्राम-पंचायत, म्युनिसिपलिटी और लोकल बोर्ड, भूमि-कर, कचहरी और स्वराज्य आदि विषयों की संक्षिप्त, पर सुंदर, विवेचना की गई है। भारतवर्ष के प्रत्येक युवक को कम-से-कम उक्त विषयों का अवश्य ज्ञान रहना चाहिए। उक्त अनुभव के अभाव ही के कारण हमको अपनी अवस्था का पूरा ज्ञान नहीं होता, और हम उत्तरोत्तर गिरते जा रहे हैं। पुस्तक संग्रहणीय है। हरएक घर में इसकी एक प्रति होनी चाहिए।

× × ×

रथयात्रा—कवींद्र रवींद्र के इसी नाम के नाटक का गुजराती में अनुवाद। प्रकाशक, वही। मूल्य -) पृष्ठ-संख्या ३०।

पुस्तक अच्छी और पढ़ने लायक़ है। अनुवाद भी अच्छा हुआ है।

× × ×

कारावास की कहानी (तृतीयावृत्ति)—अनुवादक, नवलरामजी त्रिवेदी। प्रकाशक, राष्ट्रीय साहित्य-कार्यालय, अहमदाबाद। पृष्ठ-संख्या १७८। छपाई-सफ़ाई सुंदर। मूल्य ।।।)

यह तपस्वी अरविंद घोष के व्याख्यानों, पत्रों और लेखों का गुजराती-अनुवाद है। अनुवाद सरल और सुंदर है। पुस्तक पढ़ने और मनन करने योग्य है।

× × ×

अनंता—लेखक, आरण्यक। प्रकाशक, युग-धर्म-कार्यालय, अहमदाबाद। छपाई-सफ़ाई अच्छी। पृष्ठ-संख्या १०४। मूल्य ।।)

इस निगूढ़ नाटक की निगूढ़ता पहले ही पृष्ठ से शुरू होती है। इसमें न लेखक के ही ठीक नाम का परिचय मिलता है, न प्रस्तावनाकार का ही। प्रकाशक महोदय को कहाँ फ़ुरसत कि इस ओर ध्यान दें। ख़ैर, पुस्तक के संबंध में कौतूहल बढ़ाने का यह भी एक अच्छा साधन है। पर हाँ, सूत्रधार और कलावती में नाटक की वर्तमान स्थिति पर जो चर्चा होती है, वह अवश्य ही यथार्थ, प्रभावशाली और कला की दृष्टि से भी अच्छी है।

कथानक यह है—समुद्रगढ़ के राजा की नई रानी युवराज को मारकर अपने कुमार को गद्दी पर बिठाना चाहती और इसके लिये प्रधान मंत्री से मिलकर षड्यंत्र रचती है। राजा यह सब जानता है। वह मर्मभेदी शब्दों में सब बातें कह डालता और पागलपन का ढोंग करता है। युवराज एक वनवासिनी युवती को अपनी धर्मपत्नी बनाता है। रानी का षड्यंत्र सफल होता है। अनंता की मृत्यु होती है। षड्यंत्र का पता लगता और अपराधियों को प्राण-दंड मिलता है। अंत में युवराज की मृत्यु होती है। इस नाटक की एक विशेषता यह भी है कि नाटककार ने सब दृश्य प्रायः रात्रि में ही दिखाए हैं।

× × ×

खेड़ा की लड़त—लेखक, श्रीयुत शंकरलाल द्वारिकादास पारीख। प्रकाशक, वही। छपाई-सफ़ाई सुंदर। पृष्ठ-संख्या ५६८। मूल्य १।।)

खेड़ा ज़िले के सत्याग्रह से शायद ही कोई अपरिचित हो। यह सत्याग्रह अँगरेज़ी शासन के नहीं, उस शासन की एक धारा के विरुद्ध था। इस सत्याग्रह से इसके उन्नायक महात्मा गाँधी को यही सिद्ध कर दिखाना था कि प्रजा की इच्छा के प्रतिकूल शासन कभी नहीं हो सकता। इस सत्याग्रह ने शासक-वर्ग को प्रजा की शक्ति का पूरा ज्ञान करा दिया। भारत-माता की स्वतंत्रता के इतिहास में खेड़ा के सत्याग्रह का इतिहास भी एक मुख्य स्थान पावेगा। इधर-उधर के अश्लील उपन्यासों के बदले यदि भारत के युवक ऐसी पुस्तकें पढ़ें, तो उनका तथा देश का बहुत उपकार हो। इसकी भाषा भी बड़ी सरल और सरस है। स्त्रियाँ भी उसे मज़े में समझ सकती हैं। पुस्तक संग्रहणीय है।

× × ×

चंपारण्य मा महात्मा गाँधीजी—मूल-लेखक, श्रीयुत बाबू राजेंद्रप्रसाद एम्० ए०। अनुवादक और प्रकाशक, वही। पृष्ठ-संख्या ३०४। छपाई-सफ़ाई अच्छी। मूल्य २।), खद्दर की जिल्द २।।)

इस पुस्तक के पूर्वार्द्ध में राजेंद्र बाबू की पुस्तक का अनुवाद है, और उत्तरार्द्ध में महात्मा गाँधी के सन् १९१७ में दिए हुए व्याख्यान, लड़ाई का क्रम तथा तारीखें

आदि हैं। इससे चंपारण्य की लड़ाई का पूरा हाल मालूम हो जाता है। अनुवाद भी अच्छा है। राजनीति तथा इतिहास के प्रेमियों को अवश्य इसकी एक प्रति अपने पास रखनी चाहिए।

छन्नूलाल द्विवेदी

× × ×

हिंद-स्वराज्य—लेखक, महात्मा गाँधी। प्रकाशक, नवजीवन-प्रकाशन-मंदिर, अहमदाबाद। मूल्य खादी की जिल्द २॥), तथा कपड़े की जिल्द १॥); उसमें से ।) तथा ।) क्रमशः तिलक-स्वराज्य-फ़ंड में दिए जाते हैं।

पुस्तक गुजराती-भाषा तथा गुजराती-अक्षरों में होने पर भी प्रत्येक भारतीय के लिये आदर की वस्तु है। महात्माजी के भक्त लोग इसे अपने पास रखकर अपने को कृतार्थ समझेंगे। इस पुस्तक की विशेषता यह है कि यह महात्माजी के हस्त-लिखित लेखों की ही प्रतिलिपि है। इससे लोग महात्माजी के गुजराती हस्त-लेख का भी परिचय पा सकेंगे। महात्माजी ने अपने असंख्य सद्गुणों के द्वारा आबालवृद्धवनिता, सभी के हृदय-मंदिर में स्थान प्राप्त कर लिया है। ऐसी स्थिति में अनेक जन, गुजराती-भाषा न जानते हुए भी, अपने संग्रह में इस पुस्तक को रखना चाहेंगे, इसमें संदेह नहीं। हमारी तो धारणा यह है कि केवल इन लेखों को पढ़ने के लिये महात्माजी के अनेक भक्त गुजराती-भाषा सीखने का भी प्रयत्न करेंगे। पुस्तक की उपयोगिता तथा महत्ता के संबंध में कुछ कहना अनावश्यक है। महात्माजी का नाम-निर्देश ही इस संबंध में पर्याप्त है। शायद इसका हिंदी-अनुवाद भी हमने कहीं देखा है।

आद्यादत्त

× × ×

९. अँगरेज़ी

सनराइज़ ऐंड अदर पोएम्स (Sunrise and other poems)—लेखक, Enesem और प्रकाशक, London, Arthur H. Stockwell, 29, Ludgate Hill, E. C. 4. पृष्ठ-संख्या २०। बहुत अच्छा काग़ज़ और सुंदर छपाई। ऊपर कपड़े की जिल्द। पुस्तक पर मूल्य नहीं लिखा है। प्रकाशक से प्राप्य।

यह पुस्तक अँगरेज़ी-पद्यों में है। इसमें Sunrise (सूर्योदय), The worshipper (उपासक), Laws (क़ानून), Milky way (आकाश-गं Devotion (उपासना), To false love (प्रेम), Hope (आशा), Our song (हमारा गी Soul's heritage (आत्मा की विरासत), Rub yat (रुबाइयाँ), Phantasy (कल्पना), S plication (याच्ञा) तथा Rubaiyat (रुबाइ ये १३ कविताएँ हैं। लेखक का नाम कल्पि जान पड़ता है। संदेह होता है कि आप कोई भार सज्जन हैं : क्योंकि सभी कविताओं में पूर्वीय, विशेष भारतीय, भाव भरे हुए हैं। प्रथम पद्य Sunr में लेखक ने अपनी कवित्व-शक्ति का अच्छा परिचय है। देखिए—

Has come a new awakening
Of our inmost soul and being ;
We yearn for clearer sight ;
Our minds are turning fast
To luminous realms of Past—
We seek for New-Old light
The Light by which the seers of old
Did the Supreme Truth behold !

इसी प्रकार Soul's Heritage की अंतिम पंक्तियाँ कितनी सुंदर हैं—

But Love and Sacrifice and Faith,
Like snow-ball for ever roll ;
Time stares in awe, Death growls in va
These are heritage of the soul !

× × ×

रेमिनिसेंसेज़ ऑफ़ विजयधर्म सूरि—लेख श्रीविजयइंद्र सूरि। प्रकाशक, सेठ टोडरमल भांडावट, श्रीविजयधर्म सूरि-स्मारक कोश, शिवपुरी, ग्वालियर-रा पृष्ठ-संख्या १३२। छपाई एवं काग़ज़ उत्तम। पाँच भी हैं। पहला रंगीन चित्र स्वर्गीय विजयधर्म सूरिजी का मूल्य पुस्तक पर नहीं लिखा है। संभवतः प्रकाशक से प्र

शास्त्र-विशारद जैनाचार्य विजयधर्म सूरि अपने के बहुत बड़े धर्मात्मा और विद्वान् पुरुष थे। जैन और उसके साहित्य में आपका ज्ञान असाधारण इनका जन्म सन् १८६८ ईसवी में हुआ था। पिता रामचंद्रजी काठियावाड़ में रहते थे।

र्म में दीक्षित होने के पूर्व विजयधर्म सूरिजी का म मूलचंद्र था। लड़कपन में इनका मन पढ़ने-खने में न लगता था। इनको जुआ खेलने की बुरी ादत भी पड़ गई थी। इनके पिता इस कारण इनसे बहुत संतुष्ट रहते थे। एक बार उन्होंने इनको बहुत पीटा भी। सके बाद ही इनको वैराग्य हो गया, और कुछ समय द यह जैन-धर्म में दीक्षित हो गए। फिर तो इन्होंने ब ही भारत-भ्रमण किया। काशी की पंडित-मंडली इनको 'शास्त्र-विशारद जैनाचार्य' की उपाधि दी। का कहना था कि हिंदू और जैन-धर्म के मूल-सिद्धांतों कोई भेद नहीं है। योरपियन पुरातत्त्व-वेत्ताओं से भी का परिचय था। जैकोबी, डॉक्टर विंटरनिज़ तथा मैन-जैसे विद्वान् इनके अगाध ज्ञान की भूरि-रि प्रशंसा किया करते थे। इन्होंने जैन-धर्म और जैन-हित्य की उन्नति के लिये बड़े-बड़े काम किए हैं। इनकी खी और संपादित पुस्तकों की संख्या २२ है। सन् २२ ईसवी में इनका देहांत हो गया। समालोच्य क में इन्हीं जैनाचार्यजी का परिचय, बड़ी योग्यता ाथ, दिया गया है। सूरिजी के विषय में विद्वानों ने ेख लिखे हैं, उनका भी इसमें संग्रह किया गया है। -से ऐसे ही पत्र भी इसमें मौजूद हैं। इस पुस्तक लिखने और संग्रह करने में श्रीविजयधर्म सूरिजी प्रधान शिष्य श्रीविजयइंद्र सूरि ने अच्छा परिश्रम ा है। एक योग्य विद्वान् की स्मृति-रक्षा करने में पुस्तक अवश्य सफल होगी।

कृष्णविहारी मिश्र

× × ×

१०. विविध

नुष्य-मात्र को सत्याग्रह की आवश्यकता— तथा प्रकाशक, गदाधर साहु, संचालक, दयाप्रचारिणी काशी। पता—तहसील मुँगेली, जिला बिलासपुर पी०)। मूल्य नहीं लिखा।

खक के ही शब्दों में "संपूर्ण मत-भेदों को त्याग -मात्र की आत्मा प्रसन्नता-पूर्वक सत्याग्रह करने यार होवे, जिससे सबकी असल ग़रज़ पूरी —यह इस पुस्तक में प्रकट किया गया है। पुस्तक र रूप में लिखी गई है। प्रथम प्रश्न है—समस्त के मनुष्य नाना प्रकार के कार्यों को क्यों करते हैं? इसके उत्तर का सार यह है कि मनुष्य-मात्र अपनी ग़रज़ पूरी होने के लिये ही नाना प्रकार के कार्यों को करते हैं। परमात्मा ने मनुष्य-मात्र की एक ही असल ग़रज़ 'शरीर-रक्षा होकर आत्मिक सुख-शांति प्राप्त होना' रक्खी है। हमें यह लिखते यथार्थ में दुःख होता है कि लेखक ने 'प्रतिज्ञा' में जो कुछ कहा है, उसका वह उचित प्रतिपादन नहीं कर सके, और 'सत्याग्रह' की आवश्यकता के कारणों का विवेचन समीचीन रीति से नहीं हुआ है। एक-मात्र कारण, जिस पर अनेक बार पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया गया है, 'मनुष्य-मात्र की ग़रज़' है; परंतु शरीर-रक्षा और आत्मिक सुख, इन दोनों में से एक ही जहाँ प्राप्त हो सकता है, वहाँ किसका प्राधान्य है? शरीर का अथवा आत्मा का? इसका विचार कहीं नहीं किया गया।

× × ×

प्रकाश अर्थात् यथार्थ दर्शन—लेखक तथा प्रकाशक, पं० विद्याधर शास्त्री, मंगलेश्वर-मंदिर, चूरू। मूल्य ।Ȣ), पुस्तक मिलने का पता—पंडित देवीप्रसाद शास्त्री चूरू, वाया जे० बी० रेल्वे।

लेखक के मन में समय-समय पर भिन्न-भिन्न विषयों पर जो तरंगें उठी हैं, उनका इस पुस्तक में समावेश किया गया है। इसमें संदेह नहीं कि अनेक विषयों पर इसके द्वारा अच्छा प्रकाश डाला गया है। लेखक की विद्वत्ता तथा सहृदयता का परिचय पद-पद पर प्राप्त होता है। किसी मत या संप्रदाय से द्वेष न रखते हुए भी सनातन वैदिक धर्म को आधार मानकर विषय की विवेचना की गई है। साथ ही पाश्चात्य लेखकों के ग्रंथों से भी प्रमाण-संग्रह किया गया है। प्रारंभ में ही ॐ शब्द की व्याख्या विशद रूप से की गई है। स्वामी दयानंद को ही अवतार मानकर 'अवतार' का प्रतिपादन किया गया है। "सह यज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः। अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक्।"—इस भगवद्वाक्य के आधार पर सृष्टि-रचना का तत्त्व भी अच्छी तरह प्रतिपादित हुआ है। शब्द-तत्त्व पर भी बहुत कुछ लिखा गया है। अंत में विदेशी भाषाओं को भारत की अवनति का अन्यतम हेतु मानते हुए लेखक कहते हैं—"जब से ब्राह्मणों तथा भारतीय अन्य जातियों ने अपने धर्म के अनुशीलन का

परित्याग कर अन्य विदेशीय भाषाओं को अपनाया है, तभी से भारतवर्ष में द्वेष-कलहादि का जन्म हुआ है। यह स्वाभाविक है कि शब्दों का प्रभाव मनुष्य-वृत्ति पर अत्यधिक होता है।" भारतीय शिक्षा का माध्यम मातृ-भाषा हो, विदेशी भाषा नहीं, इस पर भी लेखक ने अपना मत प्रकट किया है। पुस्तक की समाप्ति के शब्द बड़े उत्साहवर्द्धक हैं।

पुस्तक बड़े श्रम से लिखी गई, और सर्वथा उपादेय है।

आद्यादत्त

× × ×

शुद्ध नामावलि—लेखक, गणेशदत्त शर्मा गौड़ (इंद्र)। प्रकाशक, पं० शंकरदत्त शर्मा, वैदिक पुस्तकालय, मुरादाबाद। पुष्ट अक्षरों में साफ़ छपे हुए ८८ पृष्ठ हैं। मूल्य आठ आने अधिक है।

हिंदू-धर्म में नामकरण भी एक संस्कार माना जाता है। सुंदर नाम में प्रसाद-गुण होता है। अरुचिकर नाम अनिष्टकर होता है। पुस्तकारंभ में लेखक ने १२ पृष्ठों का जो प्राक्कथन लिखा है, उसमें इस पुस्तक की रचना का कारण स्पष्ट बतलाते हुए यह दिखलाया है कि आजकल लोग अपने लड़के-लड़कियों के कैसे अशुद्ध नाम रखते हैं, और अशुद्ध तथा भ्रष्ट नामों के उच्चारण से धर्मशास्त्रानुसार क्या-क्या हानियाँ होती हैं। बंगाल में सुंदर नामों का ख़ासा प्रचार है। कारण, वहाँ उन्नत शिक्षित समाज है। उत्तर-भारत के हिंदी-प्रधान प्रांतों में अभी शिक्षा की बहुत कमी है। जो शिक्षित हैं, वे भी समाज के अज्ञानांधकार में पड़े हुए हैं। इसीलिये अभी हिंदी-भाषी प्रांतों में शुद्ध नामों का यथेच्छ प्रचार नहीं हो पाया है। ऐसी दशा में इस हिंदी-पुस्तक का प्रचार अवश्य होना चाहिए। पुस्तक का विषय नया और उपादेय है। हिंदुओं के चारों वर्णों के लिये अलग-अलग नामावली दी गई है। पुस्तकांत में स्त्रियों की नामावली भी है। नाम बहुत अच्छे चुने गए हैं। उनकी शुद्धता या सार्थकता में संदेह नहीं। किंतु बहुत-से नाम ऐसे भी हैं, जिनका प्रचार असंभव है। जैसे—ऋत्विज्, औड्बे, नैध्रुव, व्यूहभेत्ता, समप्रज्ञयात्, वीरसू, ह्री इत्यादि।

शिवपूजनसहाय

× × ×

११. प्राप्ति-स्वीकार

निम्न-लिखित पुस्तकें, रिपोर्टें और पत्र-प
मिल गई हैं। प्रेषक महाशयों को धन्यवाद—

अँगरेज़ी-हिंदी-तार-दर्पण (उच्चारण-सहित)—
और प्रकाशक, सेठ रामस्वरूप, बिसाऊ, जयपु
पृष्ठ-संख्या ६४; मूल्य ।); व्यापारियों के लिये लाभ

जेबी तार-शिक्षक (उच्चारण-सहित)—
और प्रकाशक, कन्हैयालाल गार्गीय, ब्यावर। पृ
४४; सजिल्द; मूल्य ।।); यह भी व्यवसायियों के
लिखा गया है।

अभिभाषण—लेखक, बलिया की हिंदी-प्र
सभा के स्वागताध्यक्ष प्रोफ़ेसर पं० बलदेव
एम्० ए०, विशारद। प्रकाशक, उक्त सभा। पृ
३२, छपाई शुद्ध, स्वच्छ और सुंदर। इसमें
(यू० पी०) का पुरातत्त्व, ऐतिहासिक महत्त्व
प्राचीन गौरव बहुत ही अच्छे ढंग से वर्णन किया
भोजपुरी-भाषा और उसके साहित्य के विषय में
लिखा गया है, वह भी गवेषणापूर्ण, सरस और
है। पठनीय और संग्रहणीय है।

प्रथमवार्षिक रिपोर्ट (१३-२-२३ से ३
तक)—भारतीय हिंदू शुद्धि सभा (आगरा)।
श्रीयुत देवप्रकाश, मंत्री।

भिन्न-भिन्न ज़िलों के १७६ ग्रामों में शुद्धि
लगभग पचास हज़ार मलकाने और नायर तथा
आदि शुद्ध किए गए। शुद्धि-फ़ंड में ६६
ने दान दिया। गुप्त दान में १४८१।=) मिले।
से कम देनेवालों ने १५६६॥≡)॥ दिए। बे
बे-पते के लोगों से ४०) मिले। कुआँ-फ़ंड में
की आय हुई। शुद्धि-कार्य के लिये अन्य
वस्तुएँ देनेवाले कुछ विशेष दाताओं के भी
दाताओं के पते भी उनके नाम के साथ दिए
कुआँ-फ़ंड में अछूतोद्धारक महात्मा गाँधी ने
हज़ार रुपए दिए हैं। शुद्धि-कोष की कुल आय
२७=) है! १४३३।-) की सूद से और ३८२)
सभा के स्थायी सदस्यों से आय हुई है।
कार्यकर्ताओं की संख्या २६५, प्रधान शाखाओं की
२० के लगभग और शुद्धि-पाठशालाओं की संख्या
में ३७ और वर्षांत में २६!

संवत् १९८१ का पंचांग (सचित्र)—प्रेषक, डॉक्टर स्० के० बर्मन्, ४ ताराचंददत्त-स्ट्रीट, कलकत्ता । कवर र शिव-पार्वती का अतीव सुंदर रंगीन चित्र । नवदुर्गा नव नेत्ररंजक चित्रों से सुसज्जित ।

रँगीला—संपादक और प्रकाशक, हरिहरप्रसाद जल, अग्रवाल-प्रेस, गया । पृष्ठ ६ । बारीक रंगीन वर । वार्षिक मूल्य २) बहुत अधिक है । विनोद-पूर्ण ाप्ताहिक पत्र है, पर व्यंग्य का रंग फीका है ।

हितचिंतक—संपादक और प्रकाशक, प्रभुदयाल र्मा वैद्य, हितचिंतक-कार्यालय, इटावा । पृष्ठ-संख्या २ । छपाई साधारणतः साफ़ । वार्षिक मूल्य १॥), क प्रति का मूल्य =) ; यह मासिक पत्र नुस्ख़ा-प्रेमी यापारियों और रोगियों के बड़े काम का है ।

परवार-बंधु—संपादक, पं० दरबारीलाल साहित्य-न, न्यायतीर्थ । प्रकाशक, मास्टर छोटेलाल जैन, बलपुर । पृष्ठ ६४ । छपाई आदि साधारण । कवर चित्र । अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन परवार-सभा मासिक मुखपत्र । वार्षिक मूल्य ३), एक प्रति का) ; परवार-जैनियों के लिये उपयोगी है ।

वैदिक-सर्वस्व—श्रीवैष्णव-संप्रदाय का मासिक मुख-त्र । श्रीकांची-प्रतिवादि-भयंकर मठ के धर्मप्रचार-भाग से प्रकाशित । पृष्ठ-संख्या ३६, छपाई साफ़, कवर चित्र, लेखादि सांप्रदायिक, वार्षिक मूल्य २॥), एक ति का ।), पता—कांजीवरम् (मदरास) ।

युगांतर—संपादक, पं० जगदीशनारायण तिवारी और ० रामदहिन ओझा । पता—७८ काटन-स्ट्रीट, कलकत्ता । ष्ठ-संख्या ८, हिंदी का एक नया राजनीतिक साप्ताहिक, पाई साफ़, वार्षिक मूल्य ३), छः महीने का २)

बालविनय (प्रथम भाग)—लेखक और प्रकाशक, युत धर्मचंद्र खेमका "चंद्र", गोविंदराम कालूराम, ६ मर्चेंट-स्ट्रीट, रंगून (बर्मा) । इसमें बालकों के गाने ग्य प्रार्थनात्मक पद्य हैं । पद्य भावमय, सरल और क्षाप्रद हैं । मूल्य -)

महात्मा गाँधी और आर्यसमाज—लेखक, श्री-त्यकेतु विद्यालंकार । प्रकाशक, एस्० सी० जैन, बारा-की । मू० -)

महात्मा गाँधी को चैलेंज—लेखक और प्रकाशक, ामी मंगलानंदपुरी, आर्यसमाज, कानपूर । मूल्य -)॥

हिंदू-महासभा—संग्रहकर्ता, किशोरीलाल केडिया । प्रकाशिका, हिंदू-महासभा, कलकत्ता । मूल्य 'प्रेम' ।

भोजन-विधि—लेखक और प्रकाशक, पं० हनूमान शर्मा, जयपुर ।

जगत्गुरू (?) की जीवनी—लेखक, श्रीमान् सुतीक्ष्ण मुनी (?) उदासीन । प्रकाशक, श्रीमान् पूजारी (?) अमरदासजी, श्रीचंद्र ट्रैक्ट-सोसायटी अमर-प्रेस के पास, सक्खर (सिंध): मूल्य =)

प्राकृतिक स्नान के संबंध में आवश्यक नियम—लेखक, पं० गणेशप्रसाद शर्मा । प्रकाशिका, लक्ष्मीदेवी, निगोहाँ, ज़िला लखनऊ । मूल्य =)

भूपाल-राज्य में धार्मिक स्वतंत्रता का ख़ून—लेखक और प्रकाशक, स्वामी सत्यदेव, मोहिनी-भवन, देहरादून । मूल्य 'सदुपयोग' ।

सिख(खालसा)-धर्म सिद्धांत—व्याख्यानकर्ता, श्रीयुक्त संत खालसाभाई अवतारसिंहजी । प्रकाशक, बाबू शमशेरसिंह माफ़ीदार । मौज़ा—नेतनगर । रियासत—रायगढ़ (बिलासपुर); मूल्य =)

बालकवितावली—संकलनकर्ता, श्रीयुत कृष्ण विनायक फड़के एम्० ए०, हेडमास्टर, श्रीमारवाड़ी-विद्यालय, कानपूर । मूल्य -)

आर्यजाति का घोर अपमान और आर्यसपूतों के बलिदान की आवश्यकता—लेखक और प्रकाशक, रामशरण गुप्त, मंत्री, तिलक-हिंदू-सभा, फ़तहपुरी, देहली ।

उत्तम धर्मिष्ठ पुत्र होने की रीति—लेखक और प्रकाशक, पंडित हिम्मतराम नुड़ नाना, कपासन(मेवाड़); मूल्य -)

प्रोसीडिंग्ज़ मजलिस आम—लेजिस्लेटिव ऐंड जुडीशियल डिपार्टमेंट, हुज़ूर दरबार, ग्वालियर ।

प्रॉसपेक्टस ऑफ़ कॉमर्स क्लासेज़—श्रीमारवाड़ी-विद्यालय, कानपूर ।

रिपोर्ट (१-४-१९२३ से ३१-३-१९२४ तक)—प्रकाशक, मंत्री—श्रीविशुद्धानंद सरस्वती, मारवाड़ी-अस्पताल, ११८, एमहर्स्ट-स्ट्रीट, कलकत्ता ।

अभिनंदन—नागपुर के मारवाड़ी-समाज की ओर से नागपुर-सत्याग्रह के कर्णधार श्रीयुत सेठ जमनालालजी बजाज़ को समर्पित । प्रकाशक, हीरालाल रामचंद्र चांडक, समाजसेवक-प्रेस, धनतोली, नागपुर ।

साहित्य-सूचना

इस कॉलम में हम हिंदी-प्रेमियों के सुबीते के लिये प्रतिमास नई और उत्तम पुस्तकों के नाम देते रहते हैं। गत मास नीचे-लिखी पुस्तकें अच्छी प्रकाशित हुईं—

(१) "हिंदी-नवरत्न", मिश्रबंधु-लिखित। संशोधित और संवर्द्धित द्वितीय संस्करण। सादी जिल्द ४॥), रंगीन, रेशमी, सुनहरी जिल्द ५)

(२) "सुकवि-संकीर्तन", पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी-लिखित। मूल्य सादी १।), सुनहरी रेशमी जिल्द १॥)

(३) "मनोविज्ञान", पं० चंद्रमौलि सुकुल एम्० ए०, एल्० टी०-लिखित। मूल्य ॥।), सुनहरी रेशमी जिल्द १।)

(४) "कविता-कौमुदी तृतीय भाग", एक साहित्याचार्य द्वारा संपादित। संस्कृत-कवियों की संक्षिप्त जीवनी। मूल्य सजिल्द ३)

(५) "प्राचीन मुद्रा", बाबू रामचंद्र वर्मा द्वारा अनुवादित। ऐतिहासिक ग्रंथ। मूल्य सजिल्द ३)

(६) "वृक्ष में जीव है", (सचित्र) श्रीमंगलानंदपुरी-लिखित। विज्ञान का ग्रंथ। मूल्य १॥)

(७) 'गीतारहस्य', स्व० लोकमान्य तिलक-लिखित। चतुर्थ संस्करण। मूल्य ४)

(८) "व्यभिचार", आयुर्वेदाचार्य प्रोफ़ेसर श्रीयुत चतुरसेनजी शास्त्री-लिखित। सामाजिक पुस्तक। सजिल्द २।)

(९) "सरल शरीर-विज्ञान", शरीर-शास्त्र विद्यार्थी द्वारा अनुवादित। मूल्य ।॥)

(१०) "दयानंद-दिग्दर्शन", श्रीनारायणप्रसाद रचित। स्वामी दयानंद की संक्षिप्त जीवनी।

(११) "रामायण-नाटक", श्रीनारायणप्रसाद रचित। पौराणिक नाटक। मूल्य १)

(१२) "शैतानी पंजा", श्रीदेवबलीसिंह सचित्र जासूसी उपन्यास। मूल्य २॥), ३)

(१३) "चीना सुंदरी", पं० कार्त्तिकेयचरण ध्याय-लिखित। सचित्र जासूसी उपन्यास। मूल्य १॥)

(१४) "महासती अनसूया", श्रीजगदीश "विमल"-लिखित। स्त्रियों के लिये उपयोगी पौराणिक उपाख्यान। मूल्य ॥।)

(१५) "तिलोत्तमा", बाबू मैथिलीशरण लिखित। नवीन संस्करण। पौराणिक काव्य।

(१६) "अभिज्ञानशकुंतला-नाटक", संशोधित प्रस्तावना-सहित नूतन संस्करण। स्व० राजा सिंह-लिखित। मूल्य १)

(१७) "शंख की शरारत", श्रीनारायणप्रसाद लिखित। प्रहसन। मूल्य ।-)

विविध विषय

१. क्या महात्मा गाँधी मुसलमान होंगे ?

दिल्ली के मौलाना ख़्वाजा हसन निज़ामी साहब ने महात्मा गाँधी को मुसलमान बनाने के लिये जो पत्र लिखा था, उस पर इधर हिंदी के पत्रों में ख़ूब चर्चा चल रही थी। हम भी आज इसी के संबंध में अपनी दो-चार बातें माधुरी के पाठकों की भेंट करना चाहते हैं।

महात्मा गाँधी आज सर्वमान्य राजनीतिक नेता मझे जाते हैं। आपने अपनी तपश्चर्या और त्याग के ल से संसार के हृदय में जो उच्चतर पद प्राप्त किया , वह आज तक किसी राजनीतिक नेता को नहीं प्राप्त आ। जितने लोग आज आपके अनुगामी और प्रेमी उतनों का नेतृत्व प्राप्त करने का सौभाग्य अब तक सी एक पुरुष को नहीं मिला। हिंदू हो या मुसलमान, साई हो या बौद्ध, जैन हो या सिख, अथवा और कोई , आपकी प्रतिभा की ओर श्रद्धा रखनेवाले सभी र्मों और संप्रदायों में, प्रचुर संख्या में, पाए जाते हैं। दोस्तान, चीन और जापान की तरह ही योरप और मेरिका में भी आपके भक्त—अनन्य भक्त—मौजूद हैं। इसके सिवा मित्रों ही की भाँति आप शत्रुओं के भी आदरभाजन हैं। महात्मा गाँधी का घोर-से-घोर विरोधी या शत्रु भी उनकी अहिंसा और सत्य-निष्ठा पर न संदेह करता है, न कर ही सकता है। यही एक अपूर्व विशेषता है, जिसके कारण आपके विरोधी भी मुक्तकंठ से आपकी प्रशंसा किए विना नहीं रह सकते। भारत के तो आप हृदयाधिष्ठातृदेव ही हो रहे हैं। आप नेताओं के भी नेता समझे जाते हैं। आपकी आवाज़ भारत के हृदय की प्रतिध्वनि समझी जाती है। इसका कारण क्या है ?

यह प्रश्न स्वाभाविक है कि महात्माजी के इस महत्त्व का कारण क्या है ? अगाध विद्वत्ता और अटल सिद्धांतों की दृष्टि से स्व० लोकमान्य तिलकदेव अब तक सब नेताओं के शिरोमणि समझे जाते हैं ; परंतु महात्मा गाँधी पक्ष और विपक्ष के हृदयों पर विजय प्राप्त करने और अधिकार जमाने में उनसे भी आगे बढ़ गए हैं। आख़िर इसका कारण क्या है ?

हिंदू-धर्म के रहस्यों पर दृष्टि डालने से इस प्रश्न का उत्तर देना कुछ कठिन नहीं है, परंतु इसके विना इसका समाधान संभव भी नहीं है। हिंदू-धर्म में, अधिकारियों की शक्ति और भावना के अनुसार, धार्मिक अंगों के अनुष्ठानों और उपासनाओं के अनेक भेद हैं। यही इस धर्म की लोकोत्तर विशेषता है। एक साधारण कुली

से लेकर ब्रह्मनिष्ठ तपस्वी तक को, अपने अंतःकरण की शक्ति और सामर्थ्य के अनुरूप, उपासनाओं के प्रकार इसी धर्म में मिल सकते हैं। हिंदू-धर्म सब छोटे-बड़े अधिकारियों को एक लाठी से हाँकने का उपहसनीय प्रयत्न कभी नहीं करता।

महात्मा गाँधी कर्मयोगी हैं, अतएव आपने अपने लिये योग-मार्ग, अहिंसा और सत्य ही की साधना चुनी है। योग-दर्शन का सूत्र है—

“अहिंसासत्याऽस्तेयब्रह्मचर्याऽपरिग्रहा यमाः।”

योग के आठ अंगों में से सर्वप्रथम यमों का वर्णन इस सूत्र में किया है, जिनमें अहिंसा को प्रथम और सत्य को दूसरा स्थान मिला है। भाष्यकारों ने इस पर विचार करते हुए लिखा है कि 'अहिंसा' ही सत्य का आधार है। जिसके मन में हिंसा का भाव विद्यमान है, वह सत्यवादी नहीं हो सकता। पूर्ण सत्यवक्ता वही हो सकता है, जो पूर्णतया अहिंसक हो। जिस प्रकार सत्य अहिंसा पर अवलंबित है, वैसे अहिंसा सत्य के आश्रित नहीं है। अतएव सूत्रकार ने सत्य से पूर्व अहिंसा को स्थान दिया है।

“अनुमन्ता विशसिता निहन्ता क्रयविक्रयी ;
संस्कर्ता चोपहर्ता च खादकश्चेति घातकाः।”
(५—५१)

इस मनु के वचनानुसार हिंसा आठ प्रकार की होती है। शरीर, वाणी और मन से इस सब प्रकारों का परित्याग करने पर मनुष्य अहिंसक होता है। अहिंसा के उपासकों के मन में भी कभी-कभी हिंसा के भाव उत्पन्न होते रहते हैं। जब वे एकदम बंद हो जायँ, मन में से हिंसा के संस्कारों का बीज-नाश हो जाय, कभी स्वप्न में भी हिंसा के भाव का उदय न हो, तभी अहिंसा की 'चरम सीमा' समझनी चाहिए। कोई साधक यदि यह देखना चाहे कि उसकी अहिंसा चरम सीमा तक पहुँचती है या नहीं, तो उसके लिये योग-शास्त्र में परीक्षा भी बताई है—

“अहिंसाप्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्यागः।”

अर्थात् जब अहिंसा की 'प्रतिष्ठा' (चरम सीमा) तक योगी पहुँच जायगा, तब उसके पास पहुँचने पर स्वाभाविक वैरी जीव भी वैर का त्याग कर देंगे। केवल मनुष्य ही नहीं, बल्कि बिल्ली और चूहा, न्योला और साँप, भेड़िया और बकरी, सिंह और हाथी, सब-के-सब आ स्वाभाविक वैर भूलकर प्रेम-पूर्ण व्यवहार करे जायँगे। इसका उदाहरण देखना हो, तो मार्कं पुराणांतर्गत 'दुर्गासप्तशती' में लिखे मुनि के आश्रम वर्णन पढ़िए। उसमें लिखा है—“प्रशान्तश्वापदा मुनिशिष्योपशोभितम्।” अर्थात् आश्रम की हद में पहुँ कर 'श्वापद' (व्याघ्र आदि हिंस्र जीव) भी सब हो जाते थे। इसी चरम सीमा की अहिंसा के वर्णन प्रसिद्ध कवि केशवदास ने एक ऋषि के आश्रम का यों किया है—

“केशौदास मृगज बछेरू चोखें बाघिनि को,
चाटत सुरभि सिंह-सावक-बदन है;
सिंह की सटान ऐंचै करटि करन कर,
सिंहन को आसन गयंद को रदन है।
फनी के फनन पर नाचत मुदित मोर,
क्रोध न बिरोध जहाँ मदन कदन है;
बानर फिरत डोले डोले अंध तापसन,
ऋषि को भवन मानो शंभु को सदन है।”

संसार में हिंदू धर्म के सिवा कोई और ऐसा नहीं है, जिसमें अहिंसा की ऐसी क्रम-बद्ध मीमांसा गई हो। महात्मा गाँधी इसी अहिंसा के उपासक यही कारण है कि आपके सन्निधान में लोगों का भाव छूट जाता है, और इसी कारण आप सपक्षों विपक्षों के हृदयों में इतना अधिकार प्राप्त करने में स हुए हैं। मौलाना मुहम्मदअली ने जब महात्माजी भलाई (?) के लिये उन्हें मुसलमान देखना चाहा तब उन्होंने 'यंग इंडिया' में जो उत्तर दिया था, उ यही बात स्पष्ट हो चुकी है। आपने कहा था—“ क्रीड चरम सीमा की अहिंसा और सचाई है।…… यदि मैं अपने मित्रों की भलाई चाहता हूँ, तो इ अतिरिक्त मेरी और कोई भी इच्छा नहीं हो सकती मेरे मित्रों का भी वही क्रीड हो। जब तक मैं उसे त्तम मानता हूँ. मैं हिंदू-केंद्र के अंदर हूँ; क्योंकि क्रीड के अनुसार यही धर्म मेरे लिये सबसे अच्छा है हमने जिस चरम सीमा की अहिंसा का दिग्दर्शन कराया है, महात्माजी उसी को अपना साध्य बताते हिंदू-धर्म को उसकी साधना का सर्वोत्तम केंद्र बताते और साथ ही अपने मित्रों को भी अपने क्रीड का आ

देते हुए पर्याय से उन्हें सर्वोत्तम साधना-केंद्र की ओर आने का इशारा कर रहे हैं।

मौलाना मुहम्मदअली तो शायद यह उत्तर पाकर शांत हो गए, परंतु कुछ दिन बाद हठ या अज्ञान के कारण ख़्वाजा हसन निज़ामी साहब ने फिर उसी प्रश्न को विस्तृत रूप में उठाया है। यदि आप महात्मा गाँधीजी की बात को समझ सके होते, तो स्वयं शुद्ध होकर हिंदू-धर्म में आने का उद्योग करते; परंतु आज आप उलटा उपदेश देने चले हैं। महात्माजी ने मौलाना के पत्र का उत्तर नहीं दिया। यह ठीक भी है। उत्तर देकर एक क्षुद्र बात का महत्त्व बढ़ाना उचित नहीं था। इसके सिवा जिस बात का उत्तर एक बार दिया जा चुका, उसका पिष्टपेषण अनावश्यक भी था। परंतु अन्य कई सज्जनों ने उक्त पत्र का उत्तर अपने-अपने ढंग से दिया है। हम इस समय धार्मिक और तार्किक दृष्टि से मौलाना साहब के पत्र पर विचार करेंगे।

सबसे पहले हम मौलाना साहब के साहस की प्रशंसा करना चाहते हैं। महात्मा गाँधी किस दर्जे के महापुरुष हैं, उनका आदर और प्रतिष्ठा तथा व्यक्तित्व कितना ऊँचा है, वह अपने विचारों और धार्मिक भावों पर कितने दृढ़ रहते हैं, यह बात आज भारत का बच्चा-बच्चा जानता है। उक्त मौलाना साहब से भी ये बातें छिपी नहीं हो सकतीं। और, मौलाना साहब स्वयं कितने पानी में हैं, यह बात वह ख़ुद सबसे ज़्यादा जानते होंगे। लेकिन, फिर भी आपने महात्माजी को मुसलमान बनने के लिये आमंत्रण देने का जो साहस किया है, उसके लिये हम आपको बधाई देना चाहते हैं। हमारी समझ में दूसरे धर्म का कोई भी समझदार आदमी ऐसी हिम्मत हरगिज़ न करता।

मुसलमानी धर्म के इतिहास का प्रत्येक पृष्ठ मार-काट और ख़ून-ख़राबी से रँगा हुआ है। यदि मुसलमानी-धर्म के इतिहास से तलवार को अलग कर लिया जाय, तो वहाँ फिर कुछ बचता ही नहीं। अब भी शांति की वहाँ कोई चर्चा ही नहीं है। मुसलमानों में त्योहारों के नाम से जो रसूम अदा किए जाते हैं, उनमें अधिकांश रोना-पीटना और हाय-हाय ही हुआ करती है। हमारी समझ में नहीं आता कि एक 'चरम सीमा की अहिंसा' के उपासक, शांत-चित्त, महापुरुष को मौलाना साहब किस मुँह से ऐसे धर्म की दावत देने का साहस करते हैं, जिसकी नींव ही हिंसा, ख़ून-ख़राबी और मार-काट के आधार पर खड़ी की गई है। 'क़तलुल-काफ़िर' के माननेवालों की समझ में यह कैसे आ सकता है कि क़ातिल का दिल मक़तूल से अधिक पापी हुआ करता है।

संसार अशांति का स्थान है। यहाँ की प्रत्येक परिस्थिति, प्रत्येक परिवार और प्रत्येक क्रिया में अशांति का पुट लगा हुआ है। इस अशांति के आगार में कुछ क्षण के लिये अंतःकरण को शांति देने का अवलंब यदि कुछ है, तो धर्म ही। धर्म का वास्तविक स्वरूप एक ही है; परंतु उसका वर्णन करने और अनुष्ठान बतानेवाले मार्ग अनेक हैं। वे ही आज धर्म, मत और संप्रदाय के नाम से प्रचलित हैं। जो धर्म अंतःकरण को जितनी अधिक शांति दे सकता है, वस्तुतः उसका महत्त्व उतना ही अधिक है। हिंदुओं के योग और वेदांत-शास्त्रों में जिस अनंत शांति का भांडार भरा है, उसकी छाया भी अभी संसार के किसी धर्म को नसीब नहीं हुई है। मौलाना साहब ने महात्माजी को मुसलमान बनने के लिये यह तो प्रलोभन दिया कि आप एशिया और योरप की मुसलमान-जातियों के सरदार बन जायँगे, तमाम मुसलमानों के ख़लीफ़ा बन जायँगे इत्यादि, पर यह न बताया कि मुसलमानी-धर्म में आने से आपके अंतःकरण को कितनी शांति मिलेगी, जो कि एक धर्म का प्रधान उद्देश्य है। बताते तो तब, जब वहाँ सबको एक लाइन में खड़ा कर नमाज़ की एक लाठी से हाँकने के सिवा और कुछ होता। हम पूछते हैं, जो सैकड़ों वर्षों से मुसलमानों के ख़लीफ़ा थे, उन्हें आज कितनी शांति प्राप्त है? जो ख़िलाफ़त सैकड़ों वर्षों में रत्ती-भर भी शांति न दे सकी, उसका सच्चे धर्म से कितना संबंध हो सकता है? एक शांति के उपासक, अहिंसा के व्रती को ऐसी तुच्छ वस्तु का प्रलोभन देना मूर्खता नहीं, तो और क्या है? धार्मिक दृष्टि से देखने पर मौलाना साहब का पत्र एक रद्दी के टुकड़े से अधिक हैसियत नहीं रखता। अब हम मौलाना साहब के प्रधान-प्रधान तर्कों पर विचार करेंगे।

मौलाना साहब का सबसे बड़ा और प्रधान तर्क यह है कि "यदि गाँधीजी मुसलमान हो जायँ, तो उनके नेतृत्व में एशिया, योरप और आफ़्रिका की असंख्य

मुसलमान-जातियाँ संगठित होकर जीवित हो सकती हैं ; और उससे सारे संसार में शांति तथा संतोष का साम्राज्य स्थापित हो जायगा। उस दशा में उनका व्यक्तित्व सब इसलामी दुनिया का केंद्र बन जायगा, एवं वह ख़लीफ़ा की गद्दी पर बिठाए जायँगे ; क्योंकि प्रकृति को ही यह मंजूर है। ख़िलाफ़त का पद इसीलिये ख़ाली हुआ है कि गाँधीजी उस पर बिठाए जायँ।"

इस तर्क के दो अंश हैं। एक यह कि समस्त सुसंगठित मुसलमान-जातियों से ही संसार में शांति और संतोष का साम्राज्य स्थापित होगा ; और दूसरा यह कि महात्माजी उन सबके नेता और ख़लीफ़ा बनाए जायँगे। हम पहले कह चुके हैं कि मुसलमानी-धर्म का सारा इतिहास खून-ख़राबी से भरा है। कोई एक भी दृष्टांत ऐसा नहीं दिया जा सकता, जहाँ मुसलमानी-सभ्यता ने पहुँचकर मार-काट न मचाई हो। संसार के अनेक देशों का इतिहास इसका साक्षी है। महमूद ग़ज़नवी और नादिरशाह आदि राक्षसी कर्म करनेवाले लुटेरों के नाम भारत-भूमि की छाती पर खूनी अक्षरों में सदा लिखे रहेंगे। आज यहाँ न मुसलमानों का राजत्व है, न प्रभुत्व, फिर भी आज-दिन इस जाति के लोग (जिन्हें गुंडा कहकर टाल दिया जाता है) घोर-से-घोर उपद्रव करते ही रहते हैं। सहारनपुर, अमृतसर, अजमेर, दिल्ली, आदि के घाव अभी बिलकुल ताज़े हैं। खुद इन्हीं मौलाना साहब ने धूर्तता और मक्कारी से हिंदुओं के स्त्री-बच्चों को बहँकाकर मुसलमान बनाने के लिये मनिहारों, फ़क़ीरों, नौकरों और रंडी-भडुओं तक को सुसंगठित प्रयत्न करने का आदेश देते हुए दाइए-इसलाम नाम की पुस्तक का खूब प्रचार किया है। सुना जाता है, उसके अनुसार काम भी बहुत हो रहा है। पंजाब में अनेक मक्कार मुसलमान-गुंडे हिंदू-फ़क़ीरों का रूप बनाकर हिंदू-स्त्रियों और बच्चों को बहँका ले जाते और ज़बरन् मुसलमान बनाते हैं। हम पूछते हैं, जिस जाति के संगठन ने सदा संसार में अशांति ही फैलाई है, जो जाति आज भारत में असंगठित होने पर भी घोर उपद्रव कर रही है, उस मुसलमान-जाति के संगठन से संसार में शांति और संतोष का साम्राज्य कैसे स्थापित हो सकेगा? जब अभी कुछ ही डाकुओं के मारे नाक में दम है, तब उनका संसारव्यापी संगठन होने से शांति का साम्राज्य हो जाने की बात पर कौन मूर्ख विश्वास करेगा? सबसे पहले मौलाना साहब को इतिहास से यह सिद्ध करना चाहिए कि मुसलमानों ने कहाँ-कहाँ अन्य-धर्मियों में शांति स्थापित की है। उसके बाद मुसलिम-संगठन से संसार की शांति का ठेका लेना चाहिए।

अब रही गाँधीजी को संसार-भर के मुसलमानों का नेतृत्व दिलाने की बात। हम जानना चाहते हैं, क्या मौलाना साहब को संसार-भर के मुसलमानों ने अपना प्रतिनिधित्व इसलिये सौंप दिया है कि वह गाँधीजी को उनका नेता बनावें? यदि नहीं, तो उन्हें संसार-भर के मुसलमानों की ओर से दावा करने का क्या हक़ है! क्या अन्य स्वतंत्र देशों के मुसलमान ग़ुलाम भारत के एक ग़ुलाम मुसलमान को अपना प्रतिनिधि बनाना पसंद करेंगे? विजय-गर्व से मत्त मुस्तफ़ा कमालपाशा ने विपत्ति के समय की हुई भारतीय मुसलमानों की सहायता को यह कहकर ठुकरा दिया है कि "हम सबल थे, इसलिये हिंदोस्तान के मुसलमानों ने हमारी सहायता की।" शायद किसी तुर्क अफ़सर ने भारत के मुसलमानों को 'बकवासी' भी कहा है। क्या उन्हीं तुर्कों ने मौलाना साहब को गाँधीजी के तईं ख़लीफ़ा बनाने के लिये अपना प्रतिनिधि चुना है? वास्तव में अब ख़िलाफ़त का स्थान संसार से सदा के लिये मिट चुका। जिस तुर्किस्तान में वह कई सदियों से पाली-पोसी गई थी, वहाँ से दूध की मक्खी की तरह निकाल फेंकी गई। एक घंटे के अंदर रोते हुए ख़लीफ़ा को, विलाप करते हुए परिवार के साथ, देश-निकाला दे दिया गया। उनकी सब जायदाद ज़ब्त कर ली गई। उनकी पेंशन बंद कर दी गई। उनके राजमहल में अजायबघर बना दिया गया। उनका बैंड-बाजा अनाथों के विनोद के लिये दे दिया गया। स्कूलों और राजकीय स्थानों से उनकी तसवीरें तक निकलवा दी गईं। ग़रज़ यह कि ख़लीफ़ा और ख़िलाफ़त का नाम-निशान तक मिटा दिया गया। क्या इसी ख़िलाफ़त के तख़्त पर मौलाना साहब गाँधीजी को बिठाना चाहते हैं?

जिसका घर जलकर ख़ाक हो रहा हो, वह यदि उसी घर के भरोसे किसी को ठंडे होने की आज्ञा करे, तो वह या तो पागल है, या मक्कार।

तुर्कों ने पहले तो ख़िलाफ़त और ख़लीफ़ा का

मूलोच्छेद कर डाला, और फिर अपनी-अपनी दाढ़ियाँ मुँडवाना शुरू किया। उसके बाद, परदे का रवाज हटाकर, अपनी बीवियों को, लेडियों की तरह, साथ लेकर घूमना शुरू किया। अब वहाँ की सरकार ने शराब का ठेका भी अपने हाथों में ले लिया है। मौलाना साहब ज़रा मज़हबी किताबों के पन्ने उलटकर देखें तो सही कि कुरानशरीफ़ और तुर्कों के बीच में कितनी बड़ी खाईं बनती जा रही है? पुराने ख़लीफ़ा ने तो टर्की को काफ़िर होने का फ़तवा भी दे दिया है। क्या इन्हीं काफ़िर तुर्कों ने मौलाना साहब को अपने लिये ख़लीफ़ा ढूँढ़ लाने का ठेका दिया है?

ईराक़ आदि कई देशों के मुसलमान अब स्वतंत्र तुर्कों की कुछ-कुछ नक़ल करने लगे हैं। रहे आफ़्रिका के हबशी और हिंदोस्तान के ग़ुलाम, सो वे किस गिनती में हैं? वस्तुतः ख़िलाफ़त तो संसार से उठ चुकी। परंतु जैसे बँदरिया अपने मरे हुए बच्चे को भी कुछ दिन तक पेट से चिमटाए घूमा करती है, उसी तरह भारत के कुछ पुराने ढर्रे के मुल्ला लोग उसके लिये हाय-तोबा मचा रहे हैं। नवशिक्षित, समझदार और दूरदर्शी मुसलमानों में उसकी कोई क़दर नहीं है। मौलाना साहब को चाहिए कि अब गाँधीजी को ख़लीफ़ा बनाने की फ़िक्र छोड़कर तुर्किस्तान में दफ़न की गई ख़िलाफ़त के नाम पर मर्सिए बनाया करें।

आप फ़रमाते हैं—"अगर मैं महात्मा गाँधी होता, और मुझे सारी दुनिया की भलाई हिंदू या ईसाई बन जाने में मालूम होती, तो मैं एक मिनट की भी देर न कर फ़ौरन् हिंदू या ईसाई हो जाता।" इस पर हम मौलाना साहब से बड़े अदब के साथ यही अर्ज़ करना चाहते हैं कि "गंजे को ख़ुदा नाख़ून नहीं देता"।

उक्त कथन से आपके धार्मिक विश्वास का महत्त्व भी स्पष्ट हो जाता है। जो आदमी 'एक मिनट के अंदर' अपना धर्म बदलने को तैयार है, उसकी धर्म-श्रद्धा ही क्या? जो धर्म-हीन ढुलमुल-यक़ीन 'फ़ौरन्' धर्म छोड़ने को तैयार है, उसे 'सारी दुनिया की भलाई' का ज्ञान ही कब हो सकता है? आप यह भी कहते हैं कि "आपका (गाँधीजी का) मुसलमान होना हिंदू-धर्म के बिलकुल विरुद्ध नहीं।" हमें आपकी इस नादानी और चालबाज़ी पर तरस आता है। क्या आपने हिंदू-धर्म का यह वाक्य कभी सुना है—"स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।"

मौलाना साहब लिखते हैं—"आप (गाँधीजी) जगत्-भर की भलाई चाहते हैं। पर आपका विचार तभी पूरा हो सकता है, जब आप मुसलमान हो जायँ।" देखा आपने! कैसी माक़ूल दलील है? आप समुद्र के पार जाना चाहते हैं? अच्छा, आपका विचार तभी पूरा हो सकता है, जब आप एक ऐसे अंधे कुएँ में गिर पड़ें, जिसमें पानी की बूँद न हो! कैसा सुंदर तर्क है! हम तो इस अक़्लमंदी के क़ायल हैं।

आप कहते हैं—"मैं आपको इसलिये मुसलमान नहीं बनाना चाहता कि आप हिंदू-धर्म की संतोष-जनक बातें न मानें, या ईसाई-धर्म की मानने योग्य बातें न सुनें, बल्कि इसलिये बनाना चाहता हूँ कि आपके हिंदू-धर्म तथा ईसाई-धर्म को आपके द्वारा वह लाभ प्राप्त हो सके, जिसे आप चाहते हैं—और यह तभी हो सकता है, जब आप मुसलमान हो जायँ। मुसलमान ही सच्चा ईसाई, यहूदी और हिंदू हो सकता है, अगर वह इसलाम के सच्चे सिद्धांत को समझता हो।"

हम पूछते हैं, मौलाना साहब ख़ुद इसलाम के सच्चे सिद्धांत को समझते हैं, या नहीं? यदि नहीं, तो आप गाँधीजी को सच्चा मुसलमान कैसे बनावेंगे? जो चीज़ जहाँ नहीं है, वह वहाँ से कभी नहीं मिल सकती। एक अंधा किसी को आँखोंवाला नहीं बना सकता; एक वेश्या किसी को पतिव्रता नहीं बना सकती। इसी प्रकार एक झूठा मुसलमान किसी को सच्चा मुसलमान नहीं बना सकता। किंतु यदि आप उक्त सिद्धांत को समझते हैं, तो अपने ही कथनानुसार आप सच्चे ईसाई, सच्चे यहूदी और सच्चे हिंदू सिद्ध होते हैं। क्या एक सच्चे हिंदू का यही काम है कि वह किसी सर्वश्रेष्ठ हिंदू महापुरुष को मुसलमान बन जाने की सलाह दे? आप ही की तरह और भी हज़ारों 'सच्चे हिंदू' यहाँ होंगे। फिर उनके द्वारा यहाँ की हिंदू-जनता आए-दिन क्यों सताई जा रही है? क्या यही लाभ मौलाना साहब हिंदुओं को दिलाना चाहते हैं?

आपने हिंदुओं को धोके में डालकर मुसलमान बनाने के लिये जो धूर्तता और मक्कारी से भरी किताब लिखी है, वही क्या एक सच्चे हिंदू का काम है? अभी उस दिन दिल्ली की एक सभा में आपने कहा है कि "जब तक

एक-एक मुसलमान दस-दस हिंदुओं को मुसलमान न बना ले, तब तक वह अपने मज़हब से गिरा समझा जायगा।" क्या यही एक 'सच्चे हिंदू' का काम है ? क्या गाँधीजी को भी आप इसी प्रकार का 'सच्चा हिंदू' बनाना चाहते हैं ?

आप फ़रमाते हैं, महात्माजी के मुसलमान होते ही हिंदू-मुसलमानों की फूट दूर हो जायगी। यथा—"जिस दिन आप मुसलमान होने की घोषणा करेंगे, उसी दिन मुसलमान-जाति हिंदू-धर्म की प्रत्येक कथा की रक्षा अपने कंधों पर ले लेगी। गो-वध बिलकुल बंद हो जायगा। सब देवालय पहले से अधिक सुरक्षित हो जायँगे। हम सब श्रीरामचंद्रजी, श्रीकृष्णजी और महात्मा गौतम बुद्ध तथा प्रत्येक प्रतिष्ठित हिंदू की प्रतिष्ठा करना अपना कर्तव्य समझेंगे। हम गीता, रामायण और वेदों की प्रतिष्ठा करने में कोई कसर उठा न रक्खेंगे।"

मतलब यह कि महात्माजी के मुसलमान होते ही सारे-के-सारे मुसलमान हिंदू हो जायँगे। असंगति का क्या ही अच्छा उदाहरण है ! वास्तव में यदि मुसलमान-जाति इतनी मूर्ख है कि एक प्रतिष्ठित हिंदू के आते ही अपना सब धर्म-कर्म छोड़कर दूसरों की नक़ल करने में ही लग जायगी, तब तो ऐसे मूर्ख-संप्रदाय में कोई निकृष्ट हिंदू भी जाना पसंद न करेगा, महात्माजी की तो बात ही क्या ?

मौलाना साहब ने यद्यपि यह बात मक्कारी से कही है, परंतु है वह सच्ची भविष्यद्वाणी। दूरदर्शी और समझदार मुसलमान अब समझने लगे हैं कि हिंदोस्तान के हित-अहित के साथ ही उनका हित-अहित संबद्ध है। उन्हें यहीं रहना और यहीं मरना है, यहीं के अन्न-जल पर निर्भर रहना है। टर्की की सल्तनत और मुसलमान-साम्राज्य के स्वप्न के भरोसे अपने पड़ोसी हिंदू भाइयों से वैर बिसाहना निरी मूर्खता और जल में रहकर मगर से वैर करने के समान है। यदि हिंदुओं से मसजिदों की इज़्ज़त करानी है, तो मुसलमानों को मंदिरों की प्रतिष्ठा करनी ही होगी। अब नवशिक्षित सच्चे मुसलमान मौलाना-जैसे धूर्त मौलवियों को इसलाम का शत्रु समझने लगे हैं। मौलाना ने अपनी धूर्तता का जो कुचक्र चलाया है, उससे मुसलमानों का घोर नैतिक पतन होगा। मक्कारी फिर मक्कारी ही है—छिप न सकेगी। धोके से मुसलमान बनानेवालों की लीला सुनकर अब कट्टर हिंदू भी शुद्धि के पक्षपाती होते जा रहे हैं। साथ ही सच्चे, सीधे मुसलमानों को भी वे संदेह की दृष्टि से देखने लगे हैं। वे मुसलमान फ़क़ीरों, मुसलमान नौकरों, मनिहारों तथा इसी परंपरा से समग्र मुसलमान-जाति को सतर्क, सभय और घृणा की दृष्टि से देखने लगे हैं। और, यह सब फल है मौलाना साहब के बोए हुए पाप-बीजों का। इसीलिये समझदार मुसलमान उन्हें इसलाम का शत्रु और मुसलमानों का नैतिक पतन करानेवाला समझते हैं। मौलाना की यह चिट्ठी भी उसी की मददगार है। इससे महात्माजी तो मुसलमान क्या होंगे, हिंदू मुसलमानों के परस्पर वैमनस्य में और एक आहुति अवश्य पड़ेगी। हम मुसलमानों को सलाह देते हैं कि वे इस नवीन युग में बहुत सोच-समझकर ऐसे लोगों से बचते रहें। इसी में मुसलमानों, हिंदुओं और हिंदोस्तान का कल्याण है।*

× × ×

२. वर्षारंभ

अघटन-घटन-पटु परम पिता की अपार अनुकंपा से आज माधुरी अपनी आयु के दो वर्ष सकुशल समाप्त करके तीसरे वर्ष में पदार्पण करती है। आरंभ में हमारे इष्ट-मित्रों और सहायकों को माधुरी की सफलता पर संदेह हो रहा था। कारण चाहे जो हो, हिंदी-संसार में अनेक अच्छे पत्र भी प्रकाशित होकर कुछ ही समय में नाम-शेष होने के लिये विवश हुए हैं। यह स्थिति देखकर एक बड़ा पत्र निकालने की सलाह देने में हिचकना स्वाभाविक ही था। इसके अतिरिक्त उनके शंकित होने का मुख्य कारण हमारी अयोग्यता और अल्पज्ञता का अनुभव ही था। हम भी जानते थे कि एक उच्च कोटि के पत्र का संपादन करने के लिये जिस कोटि की योग्यता, अनुभव, अध्ययन और अध्यवसाय की आवश्यकता हुआ करती है, उसका सर्वथा अभाव न होने पर भी हममें उक्त विशेषताओं की मात्रा बहुत कम है। फिर भी हमने ऐसा साहस क्यों किया ? इस प्रश्न के उत्तर में हमारा वक्तव्य यही है कि योग्यता न रहने पर भी हिंदी की

---

* अर्सा हुआ, यह लेख मित्रवर पं० शालग्रामजी शास्त्री ने लिखकर भेजा था। स्थानाभाववश प्रकाशित न हो सका। इस बार भी रहा जाता था। अगली संख्या तक असामयिक हो जाता। अतः विविध विषय में ही प्रकाशित किया जाता है।—संपादक

सेवा करने का उत्साह हममें किसी से कम नहीं है। उसी ने हमें इसके लिये विवश किया कि जब तक अन्य सुयोग्य, अनुभवी विद्वान् इस क्षेत्र में नहीं आगे बढ़ते, तब तक हमीं अपनी अल्प विद्या बुद्धि लेकर ऐसे पत्र के अभाव की आंशिक पूर्ति करें। माता की पूजा के लिये स्वर्ण-पुष्पोपहार चढ़ाने की क्षमता न रहने पर क्या साधारण फूलों से उसकी पूजा न करनी चाहिए ? माता तो देखती है केवल भक्ति, सामग्री का आडंबर नहीं। अस्तु।

गूँगों को वाचाल और पंगुओं को गिरि-लंघन-समर्थ बनानेवाले जगदीश्वर की कृपा के भरोसे माधुरी निकाली गई, और उन्हीं की कृपा-दृष्टि से सफल-काम होती हुई आज वह तीसरे वर्ष में प्रवेश करती है। इस अवसर में उसके सहायकों, प्रशंसकों और उत्साहित करनेवालों की अधिकता के साथ ही उसके दोष-दर्शकों और विरोधियों की भी कमी नहीं रही। हम दोनों प्रकार के कृपालु सज्जनों के कृतज्ञ हैं, और विरुद्ध-वादियों को भी अपने हितचिंतकों की श्रेणी में ही रखते हैं। माधुरी के संपादन और संचालन में अनेक त्रुटियाँ रही हैं, अब भी हैं, और आगे भी उनका अत्यंताभाव होना सर्वथा असंभव ही है। मनुष्य-मात्र की कृति सर्वथा निर्दोष नहीं हो सकती। तथापि हरएक मनुष्य अपने दोषों और त्रुटियों को दूर करने की चेष्टा करता रहता है। तदनुसार हम भी अपने यथार्थ दोषों को दूर करने की चेष्टा करते रहे हैं, और आगे भी करते रहेंगे। रह गई उन आक्रमणों और आक्षेपों की बात, जो कि अकारण या किसी विशेष कारण से हुए हैं। उनके संबंध में हमारी नीति उपेक्षा की ही रही है, और रहेगी। ऐसे आक्षेपों का उत्तर देने में प्रायः बुराई ही पैदा होते देखी गई है।

आरंभ से ही हिंदी-जगत् के लब्धप्रतिष्ठ लेखकों और कवियों की कृपा-दृष्टि माधुरी पर रही है, जिसका माधुरी को गर्व और गौरव है। यहाँ तक कि जिन लेखकों की लेखनी ने संन्यास ले रक्खा था, वे भी हमारी प्रार्थना को टाल नहीं सके। सच तो यह है कि इन लेखकों और कवियों की अपार अनुकंपा और सहयोग ही माधुरी की सफलता का मूल-कारण है। अतः हम सब लेखकों और कवियों के हृदय से कृतज्ञ हैं। पुराने लेखकों के साथ ही नवीन लेखकों और कवियों की कृपा भी कम नहीं रही। हमें खेद है कि उनमें से अधिकांश की इच्छा पूर्ण करने में हम असमर्थ रहे। परंतु जिनकी प्रतिभा अभिनंदनीय थी, उनकी उपेक्षा भी नहीं की गई। आशा है, इस वर्ष भी नए-पुराने कवियों और लेखकों की कृपा से हम वंचित न होंगे। यहाँ पर यह कह देना भी उचित है कि माधुरी में जो कविताएँ प्रकाशित हुई हैं, उनमें उच्च कोटि की रचनाएँ उतनी नहीं हैं, जितनी होनी चाहिए थीं। उत्कृष्ट रचनाएँ प्राप्त करने का यथेष्ट उद्योग करने पर भी हम संपूर्ण कृतकार्य नहीं हो सके, और इसी कारण हमें कभी-कभी काम-चलाऊ रचनाएँ छापने के लिये विवश होना पड़ा। हमारे इस कथन का यह अर्थ नहीं है कि हिंदी में प्रथम श्रेणी के कवि हैं ही नहीं। हैं अवश्य, पर एक तो उनकी संख्या इनी-गिनी ही है, दूसरे वे अपनी उमंग से स्वयं लिखते भी बहुत ही कम हैं। तक़ाज़ा करके लिखवाने पर उनकी भी रचना वैसी नहीं होती, जैसी कि स्वतः प्रवृत्त होकर लिखने से हो सकती। नवीन कवियों में भी कई कवि प्रतिभा-संपन्न हैं, और उनसे आगे चलकर अच्छी आशा है। इस वर्ष हम प्रथम श्रेणी की उत्कृष्ट कविताएँ प्राप्त करने का और भी अधिक उद्योग करेंगे, और आशा है, उसमें कृतकार्य भी होंगे। इस प्रकार माधुरी का पद्य-भाग भी हीन न रहने पाने की पूरी चेष्टा होती रहेगी।

चित्रकारों में बाबू रामेश्वरप्रसाद वर्मा, खातूजी और हीरालाल-वब्बनजी की विशेष कृपा रही है। इन सज्जनों के चित्रों से भी माधुरी की लोक-प्रियता बढ़ती रही है। इन चित्रकारों ने तो आगे और भी अच्छे चित्र देने का वादा किया ही है, इनके अलावा और भी कई उत्कृष्ट शिल्पियों की सहायता मिलने की आशा है। मतलब यह कि माधुरी का चित्र-विभाग भी उत्तरोत्तर उन्नति करता रहेगा।

माधुरी के अनुग्राहक ग्राहकों ने जिस अनुराग, उत्सुकता और प्रेम का परिचय दिया है, वह अवर्णनीय है। उन्हें माधुरी के निकलने में एक दिन की देर भी अखरने लगती है। उनके पत्रों के ढेर लग जाते हैं। ग्राहकगण जिस तेज़ी से बढ़े हैं, और उत्तरोत्तर बढ़ते जाते हैं, उसे देखकर हमारा उत्साह बहुत बढ़ गया है। सच तो यह है कि किसी पत्र या पत्रिका की उन्नति ग्राहकों पर ही निर्भर है। ग्राहकों की इस गुणग्राहकता के लिये हम उन्हें बधाई और साधुवाद देते हुए आशा करते हैं कि उनकी यह कृपा माधुरी पर बराबर बनी रहेगी।

अंत में हम अपने कृपालु सहयोगियों, समालोचकों और मान्य मित्रों को भी उनकी असीम कृपा के लिये धन्यवाद देते हैं, और प्रार्थना करते हैं कि इसी तरह कृपा बनाए रखकर, हमारे गुण-दोषों की सूचना हमें देते रहकर, अपनी उदारता और स्नेह का परिचय देते रहें।

× × ×

३. गोस्वामीजी की पुण्य स्मृति

आज श्रावण-शुक्ला सप्तमी का दिन है। वही दिन, जिस दिन श्रीरामचंद्र-चरणारविंद-चंचरीक, प्रातःस्मरणीय गोस्वामी तुलसीदासजी इस नश्वर पांचभौतिक शरीर के साथ ही अमर, अनंत, अक्षय, अमल कीर्ति यहाँ छोड़कर ब्रह्मलीन हुए थे, जिस दिन राम-गुण-गाथा गानेवाली जिह्वा से शायद यह अंतिम छंद निकला था—

राम-नाम-जस गाइकै भयो चहत अब मौन;
तुलसी के मुख दीजिए अब ही तुलसी-सौन।

महात्मा पुरुषों में अग्रगण्य, कवि-मंडली की मध्यमणि, भगवद्भक्तों के दासानुदास, हिंदी-जननी के बहुमूल्य लाल और साहित्य के सर्वमान्य स्रष्टा गोस्वामीजी क्या थे, उनकी प्रतिभा किस श्रेणी की थी, उनकी रचना में क्या-क्या गुण और दोष हैं, इन बातों की विवेचना अथवा निर्णय करने का न हम दुस्साहस ही कर सकते हैं, और न हमें इतनी विद्या-बुद्धि का दावा ही है कि हम तुलसीदासजी की तुलना-मक समालोचना यहाँ पर करने बैठें। हम तो गोस्वामीजी के आकिंचन उपासकों में हैं। तुलसी ने रामचरित की रचना करके देश का जो उपकार किया है, धर्म की जो सेवा की है, साहित्य की जो संपत्ति बढ़ाई है, हिंदी-भाषा को जिस गौरव की अधिकारिणी बनाया है, उसका परिचय जिस हिंदू को नहीं , उसे हम क्या कहें! तुलसीदासजी दि भाषा में रामायण न बनाते, तो मचरित का इतना प्रचार और परिचय साधारण श्रेणी के जनसमूह में कदापि न देख पड़ता। आज एक अल्पशिक्षित अहीर, कहार, चमार और भंगी तक तुलसी की कृपा से राम-चर्चा करके सत्य की महिमा, पिता की भक्ति और भ्रातृस्नेह की माधुरी का अभिनंदन करता है। वह कैकेयी और मंथरा के चरित्र से यह शिक्षा ग्रहण करता है कि कुपरामर्श पाकर अच्छी प्रकृति में भी कैसी कुत्सित विकृति पैदा हो जाती है, और नीच-संसर्ग का परिणाम कभी अच्छा नहीं होता। इस तरह रामायण के प्रत्येक चरित्र से मिलनेवाली शिक्षा सर्व-साधारण को सुलभ कर देने के कारण गोस्वामीजी ने देश और धर्म का बड़ा उपकार

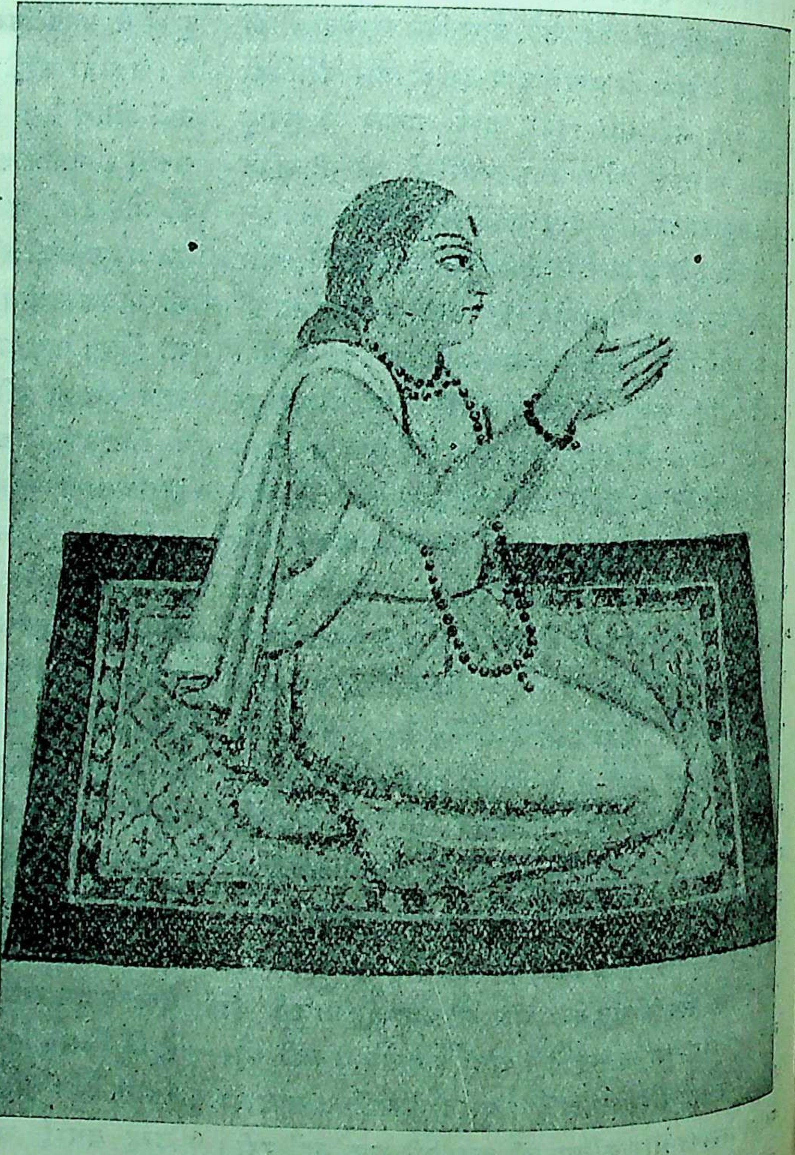

गोस्वामी तुलसीदासजी

किया है । रामायण का पाठ करनेवाला नीच जाति का हिंदू भी ईसाइयों और मुसलमानों के झाँसे में नहीं आता । कारण, वह केवल रामायण पढ़कर ही अपने धर्म की खूबियाँ बखूबी समझ जाता है । साहित्य की दृष्टि से भी रामायण एक अनुपम रचना है । वह उन्नत-से-उन्नत साहित्य के लिये गर्व और गौरव की सामग्री हो सकती है । हिंदी के प्रचार में तो जितनी सहायता रामायण से मिली है, उतनी अन्य किसी भी पुस्तक से नहीं । इस रामायण को पढ़ने के लिये हज़ारों अन्य भाषा-भाषी विभिन्न-प्रांत-वासी लोगों ने हिंदी का अध्ययन किया है । इस प्रकार विचार करके देखने पर गोस्वामी एक प्रातःस्मरणीय, अद्वितीय महापुरुष सिद्ध होते हैं । उनकी निधन-तिथि को एकत्र होकर उनके गुणों का वर्णन करना, उनके किए उपकारों को स्वीकार करते हुए कृतज्ञता प्रकट करना, उनके पदांकानुसरण के लिये यथाशक्ति थोड़ी-बहुत चेष्टा करना, उनकी वंदना करना प्रत्येक हिंदू का, प्रत्येक हिंदी-भाषा के प्रेमी का प्रधान कर्तव्य है । हमें विश्वास है कि जिस उत्साह के साथ हिंदी-प्रेमी हिंदुओं ने इधर कुछ दिनों से तुलसीदास की वर्षी मनाना शुरू किया है, वह उत्तरोत्तर बढ़ता ही जायगा । हम भी आज गोस्वामीजी की पवित्र स्मृति में ये शब्द लिखकर उनके प्रति अपनी हार्दिक भक्ति और आदर प्रकट करते हैं ।

× × ×

४. पंद्रहवाँ हिंदी-साहित्य-सम्मेलन

हमारे पाठकों को मालूम ही होगा कि गत अधिवेशन के अंतिम दिन दिल्ली में देहरादून से आया हुआ निमंत्रण स्वीकृत हुआ था। पं० नरदेव शास्त्रीजी वेदतीर्थ के उत्साह, अध्यवसाय और परिश्रम पर ही इस अधिवेशन की सफलता सर्वथा निर्भर है। आप एक कर्मनिष्ठ, निपुण कार्यकर्ता हैं। अतएव आप इस अधिवेशन को इतने अल्प समय में ही अगर असाधारण सफलता के गौरव से अभिनंदनीय बना दें, तो कोई आश्चर्य की बात न होगी। इस संख्या में स्थान-संकोच के कारण विस्तार के साथ लिखने में असमर्थ होकर भी हम दो-एक आवश्यक विषयों पर अपनी सम्मति देते हैं। पहला विषय है सभापति-निर्वाचन। पाठकों को स्मरण होगा, माधुरी शुरू से ही विद्वद्वर गोस्वामी राधाचरणजी महाराज के लिये सम्मति देती आ रही है। गत अधिवेशन का विवरण देते समय भी हमने एक नोट में गोस्वामीजी को पंद्रहवें अधिवेशन का अधिपति अवश्य बनाने की सलाह दी थी। हर्ष की बात है कि इस बार हिंदी-संसार का ध्यान उधर गया है, अपनी भूल उसे सूझ पड़ी है। कई माननीय सहयोगियों ने गोस्वामीजी के लिये ही सम्मति दी है। हमें आशा है, साधारण हिंदी-प्रेमी जनता भी इसका समर्थन करेगी। उक्त गोस्वामीजी, पं० गौरीशंकर-हीराचंद ओझाजी, श्रीयुत अमृतलाल चक्रवर्तीजी, सप्रेजी, पं० पद्मसिंहजी आदि को क्रमशः सभापति बनाना आवश्यक है। दूसरी बात है सम्मेलन के कार्य-क्रम को रोचक बनाना। इस संबंध में हमारी सम्मति यह है कि भिन्न-भिन्न भाषाओं के महारथी साहित्यिकों को विशेष रूप से निमंत्रण देकर बुलाया जाय, उनके विचारों से लाभ उठाया जाय। सभापतियों के भाषण बहुत लंबे-चौड़े होने की आवश्यकता नहीं जान पड़ती। उनके भाषण थोड़े शब्दों में बहुत अर्थ प्रकट करनेवाले हों। उनमें साहित्य की किसी समस्या को हल करने की चेष्टा भी की जाय, तो अच्छा हो। साल-भर में साहित्य की जो उन्नति, अवनति और प्रचार हुआ हो, उसके महत्त्व-पूर्ण अंशों का उल्लेख रहे। कोई ख़ास पुस्तक, निबंध या काव्य लिखा गया हो, तो उसका विवेचना-पूर्ण परिचय कराया जाय। इसके अतिरिक्त पास किए गए प्रस्तावों की पूर्ति कितनी हो सकी है, इसकी सूचना देना उचित होगा। प्रस्ताव अगर पूरे नहीं हो सके, तो क्यों? बाधा-विघ्न-विपत्तियों की चर्चा की जाय, और उनके प्रतिकार की राह सुझाई जाय। साहित्य के अभाव-अभियोग और आवश्यकताओं का दिग्दर्शन कराया जाय। अगर साहित्य-निर्माण और लिपि-प्रचार की कोई नई स्कीम सूझ पड़े, तो वह भी सबके आगे उपस्थित की जाय। इस तरह सभापति का भाषण अधिकतर उपयोगी और रोचक बनाया जा सकता है। एक बात और। संपादक-समिति का पुनरुज्जीवन अत्यंत आवश्यक हो गया है। समिति को एक कार्यकरी संस्था बनाना होगा। संपादक-मंडली अगर परस्पर सौहार्द और सहानुभूति से संपन्न रहे, तो बहुत अच्छा हो। देख पड़ता है, कभी-कभी कोई-कोई जोशीले संपादक समर्थन, वाद-विवाद या खंडन-मंडन के अवसर पर शिष्टता की सीमा के बाहर

होकर दूसरे को अपशब्दों का लक्ष्य बनाने में तनिक भी संकोच नहीं करते। कोई सहयोगी भी उन्हें ऐसा करने से नहीं रोकता। प्रायः हिंदी-पत्र-संसार में ऐसी स्थिति उपस्थित हो जाया करती है। इस पर नियंत्रण रखने के लिये संपादक-समिति की अत्यंत आवश्यकता है। समिति अपने सभ्यों के लिये एक नियम ही ऐसा बना दे कि ऐसे लेख कोई न लिख सके। शिष्ट शब्दों में प्रतियोगी के मत और युक्तियों का खंडन-मंडन किया जाय। अब की बार इतना ही। आगामी संख्या में इस विषय पर और लिखा जायगा।

× × ×

५. हिंदी-साहित्य-सेवियों से आवश्यक निवेदन

हिंदी के सामयिक पत्रों और पत्रिकाओं में प्रकाशित सूचनाओं से आपको मालूम हुआ होगा कि मिश्र-बंधु-लिखित हिंदी-साहित्य-संसार के सुप्रसिद्ध ग्रंथ 'मिश्र-बंधु-विनोद' का संशोधित एवं संवर्द्धित संस्करण दूसरी बार खूब सजधज से निकालने का विराट् आयोजन हो रहा है। उक्त सूचना के अनुसार कुछ महानुभावों ने अपनी जीवनियाँ तथा स्व-रचित ग्रंथों के नाम आदि भेजने की उदारता दिखाई है। परंतु वर्तमान लेखक-समुदाय पर दृष्टिपात करते हुए प्रस्तुत उपलब्ध सामग्री पर्याप्त नहीं कही जा सकती। अतः हिंदी के समस्त लेखकों और कवियों से हमारी विनीत प्रार्थना है कि निम्न-लिखित क्रमानुसार आप अपनी जीवनी तथा ग्रंथों का विवरणात्मक परिचय शीघ्र ही हमारे पास भेजने की अनुकंपा करें। समय अब थोड़ा रह गया है। ऐसे पवित्र साहित्यिक कार्य में हिंदी के प्रत्येक भक्त की सहायता आवश्यक है। आपके प्रांत या ज़िले में यदि कोई हिंदी-लेखक या कवि महाशय मौजूद हों, या पहले हो चुके हों, तो उनके विषय में भी अपनी जानकारी-भर सभी महत्त्व-पूर्ण बातें लिखने की कृपा कीजिए—

१. लेखक या कवि का नाम, निवास-स्थान, ज़िला, प्रांत आदि।

२. लेखक या कवि के पिता का नाम, वंश-परिचय आदि।

३. जन्म-संवत्। (यदि मृत हैं, तो मृत्यु-संवत् भी)

४. ग्रंथों के नाम, उनके विषय और उनका निर्माण-काल तथा उनके संबंध में जानने के योग्य अन्य आवश्यक बातें।

५. ग्रंथ मुद्रित हैं अथवा अमुद्रित? यदि मुद्रित तो प्रकाशक और छापेख़ाने का पूरा पता क्या है?

६. कविता-काल अथवा ग्रंथ-लेखन किस संवत् आरंभ हुआ?

७. रचनाओं के चुने हुए नमूने।

८. अन्यान्य विशेष ज्ञातव्य विषयों का उल्लेख।

× × ×

६. हंस और चक्रवाक

इधर 'माधुरी' की पिछली कई संख्याओं में चक्रवा और हंस के विषय में अच्छी चर्चा चली है। प्रश्न केव दो हैं—(१) क्या चक्रवाक और हंस एक जाति पक्षी हैं?, (२) क्या हंसों के समान ही चक्रवाक भी वर् ऋतु में भारतवर्ष के बाहर चले जाते हैं? इन दोनों प्रश्नों पर हम यहाँ पर संक्षेप से विचार करते हैं। दो पक्षी एक जाति के हैं या नहीं, इस संबंध में यह निवेदन करना है कि दोनों का आकार एक ही प्रकार होता है। उनके शरीर की गठन, डैनों का विस्तार, चों की सूरत, पैरों के बीच का जाल, गर्दन, मुख, आँख त पक्ष-समूह, सभी में साम्य है। केवल परों के रंग में भे है। चक्रवाक का रंग लाल-कत्थई होता है। इस ए भेद को छोड़कर आकार और रूप में चक्रवाक और हं समान ही होते हैं। यदि सफ़ेद रंग का हंस उसी रंग रँग दिया जाय, जो चक्रवाक का होता है, तो फिर दों में कोई भेद नहीं रह जाता। तब यह जानना कठि होगा कि कौन चक्रवाक है, और कौन हंस। दोन 'कर्पूर-मंजरी'-सट्टक में राजा हंसी को कुंकुम से रँग बेचारे हंस को कैसा धोका देता है। हंस अपनी हं को कुंकुम से रँगी पाकर उसे चक्रवाकी समझता है, उसके निकट नहीं जाता—

> "हंसिं कुङ्कुमपङ्कपिञ्जरतणुं काऊण जं वञ्चिदो,
> तब्भत्ता किल चक्कवाअवहिणी एसत्ति मरणन्तक
> एदं तं मह दुक्किदं परिणदं दुक्खाण सिक्खावणं,
> एक्कत्थो वि ण जासि जेण विसअं दिट्ठीविहाअस्सवि।
> (कर्पूर-मंजरी, २ जवनिकान्तरम्, श्लोक ८)

तात्पर्य यह कि रूप और आकार में दोनों पक्षी ए ही-से हैं। इनकी खाद्य-सामग्री और उड़ने का ढंग एक ही-सा है। जाड़े की ऋतु में दोनों ही पक्षी भार वर्ष में बहुत बड़ी संख्या में पाए जाते हैं। कवियों

वैज्ञानिकों का इस बात में एक मत है कि जाड़ा इन्हें बहुत प्रिय है, और शरद्-ऋतु में ये जलाशयों की शोभा बढ़ाते हैं। विहंग-विद्याविशारदों ने नैटेटोरीज़-विभाग (Natatories) के अंतर्गत एक उपभेद हंसों का रक्खा है, और एक उपभेद चक्रवाकों का। सितेतर हंसों को धार्तराष्ट्र कहते हैं। महाभारत के आदि-पर्व का ६६वाँ अध्याय देखने से मालूम होता है कि हंस, कलहंस और चक्रवाक की उत्पत्ति धृतराष्ट्री (सितेतर हंसी) से है—

धृतराष्ट्री तु हंसांश्च कलहंसांश्च सर्वशः।
चक्रवाकांश्च भद्रा तु जनयामास सैव तु॥ ५८॥*

इस प्रकार पक्षिशास्त्रवेत्ताओं के मतानुसार चक्रवाक और हंस चचेरे भाई हैं, और महाभारत के अनुसार सगे भाई। प्रत्यक्ष में देखने से उनके रूप, आकृति और स्वभाव भी यही सूचित करते हैं। ऐसी दशा में हंसों और चक्रवाकों के समान-जातीय होने की ही अधिक संभावना समझ पड़ती है।

दोनों पक्षियों के समान-जातीय होने की बात पर विचार कर चुकने के बाद इस प्रश्न का उत्तर रह जाता है कि क्या चक्रवाक वर्षा के अवसर पर भारतवर्ष में पाए जाते हैं? सौभाग्य से प्रावृट्-काल उपस्थित है। अपने नेत्रों की सहायता से यदि हम चक्रवाकों को इस समय आकाश में विचरते अथवा जल-परिपूर्ण जलाशयों में कल्लोल करते देखें, तो मानना ही होगा कि वर्षा-काल में चक्रवाक भारत में अवश्य पाए जाते हैं। पर यदि यथेष्ट उद्योग करने पर भी हमें उनके दर्शन दुर्लभ ही रहें, तो इसके विपरीत निर्णय को मानने में भी हमें किसी प्रकार का संकोच न होना चाहिए। प्रकृति-निरीक्षण के मामले में तो प्रत्यक्ष प्रमाण ही सर्वोपरि है। इस संबंध में हमने अपने नेत्रों की सहायता ली, अपने मित्रों के नेत्रों की सहायता ली, चक्रवाक का मांस खाने को लालायित, बंदूक बाँधे शिकारियों के नेत्रों की सहायता ली, और पक्षियों का व्यापार करनेवाले चिड़ीमारों के नेत्रों की सहायता ली। इस संयुक्त सहायता से हमें तो यही अनुभव प्राप्त हुआ कि वर्षा-काल में, भारतवर्ष में, चक्रवाक नहीं पाए जाते। अपने समान-जातीय हंसों के साथ ही इस समय वे भारत के उत्तर में मानस की ओर चले जाते और उन्हीं के साथ, शरद्-ऋतु का प्रारंभ होते ही, फिर आ जाते हैं। लाखों रुपए ख़र्च करके, घोर परिश्रम तथा अध्यवसाय के साथ, विहंग-विद्याविशारदों ने जो भारतीय पक्षिशास्त्र तैयार किया है, उसमें भी यही बात लिखी हुई है। हमारा विश्वास है, और प्रत्यक्ष में हम देखते भी हैं कि वर्षा-काल में चक्रवाक दिखलाई नहीं पड़ते। इसी बात को हम सही मानते हैं। चक्रवाक, हंसों के समान ही, न तो भारत में घोंसले बनाते हैं, न अंडे देते हैं, और न यहाँ उनके बच्चे उत्पन्न होते हैं।

संस्कृत के एकआध कवि ने वर्षा-काल में चक्रवाकों का वर्णन किया है। इस बात को लेकर एक पक्ष कहता है कि जब हमारे प्राचीन कवियों ने पावस में इन पक्षियों का वर्णन किया है, तब वे इस समय भारत में अवश्य होते हैं। चाहे प्रावृट्-काल में चक्रवाक प्रत्यक्ष न भी दिखलाई पड़ें, चाहे विहंग-विद्याविशारद तथा अन्य ज्ञाता लोग भी उनके न होने का ही समर्थन करें, पर इन लोगों के ये प्रमाण तुच्छ हैं। इन प्रमाणों की अवहेलना करके ये लोग कुछ प्राचीन संस्कृत-कवियों के प्रमाण को ही ठीक मानने के लिये तैयार हैं। अपने प्राचीन कवियों के कथनों को, प्रत्यक्ष के विरुद्ध होते हुए भी, ठीक मानना गंभीर आदर का परिचायक अवश्य है। हम इस भाव की सराहना करते हैं। पर खेद यही है कि वह ज्ञान-वृद्धि का बाधक है, साधक नहीं। प्रकृति-निरीक्षण एवं कवि-संप्रदाय, इन दोनों ही प्रकारों से यह बात सर्व-सम्मत है कि हंस वर्षा-काल में भारत के बाहर चले जाते हैं। पर हमें कुछ ऐसे भी प्राचीन संस्कृत-श्लोक मिले हैं, जिनमें वर्षा में हंसों का वर्णन है। हमें भय है कि प्राचीन कवियों के कथनों को सर्वश्रेष्ठ प्रमाण माननेवाला दल उन श्लोकों को देखकर वर्षा में हंसों की सत्ता के संबंध में भी आग्रह न करने लगे। कवि-जगत् की सम्मति में, कवि-समय-ख्याति के अनुसार, हंस प्रावृट्-काल में भारत में नहीं रहते। चक्रवाकों के संबंध में न तो यही समय-ख्याति है कि वे रहते हैं, और न यही कि वे चले जाते हैं। बस, हंसों और चक्रवाकों की वर्षा-कालीन स्थिति में यही भेद है। चक्रवाकों के संबंध में यह एक और समय-ख्याति है कि उनका जोड़ा रात में बिछुड़ा रहता और दिन में मिल जाता है। यह समय-ख्याति प्रकृति-निरीक्षण के विरुद्ध है। यथार्थ में चक्रवाकी और चक्रवाक रात में भी साथ-ही-साथ रहते

---

* वाल्मीकीय रामायण के आरण्य-कांड में भी यह श्लोक इस रूप में, कुछ साधारण शाब्दिक परिवर्तन के साथ, है।

हैं, बिछुड़ते नहीं। इसीलिये उनका नाम भी द्वंद्वचर पड़ा है। फिर भी कवि-जगत् में, इस कोक-कोकी-वियोग की बात असत्-निबंधन (असतोऽपि क्रियार्थस्य निबन्धनम्, यथा—चक्रवाकमिथुनस्य भिन्नतटाश्रयणं, चकोराणां चन्द्रिकापानं च ।) होते हुए भी, माननीय है। जो कविगण समय-ख्याति के फेर में पड़कर, प्रकृति-निरीक्षण के विरुद्ध, कोक-कोकी-वियोग का वर्णन करने में बिलकुल नहीं हिचकते, उन्हीं में के दो-एक ने यदि वर्षा में भी चक्रवाक का वर्णन कर दिया, तो क्या हुआ? प्रकृति-निरीक्षण के विचार से रात्रि में कोक-कोकी-वियोग का वर्णन भूल है। वर्षा में वही वर्णन दुहरी भूल है। पहली भूल समय-ख्याति के कारण कवि-जगत् में क्षम्य है, पर प्रकृति-जगत् में नहीं। हमारे एक मित्र की राय है कि वर्षा में जहाँ कहीं संस्कृत के कवियों ने चक्रवाक का उल्लेख किया है, वहाँ पर उसका अर्थ बत्तख़ (Duck) है। आपटे ने अपने प्रसिद्ध कोष में यह अर्थ दिया भी है। अस्तु, हमारी राय में हंस और चक्रवाक समान जाति के पक्षी हैं, और वे वर्षा में भारतवर्ष के बाहर चले जाते हैं। प्रकृति-निरीक्षण के मामले में प्रत्यक्ष प्रमाण ही सर्वोत्कृष्ट प्रमाण है। बड़े-से-बड़े कवि के यदि ऐसे वर्णन मिलें, जो प्रत्यक्ष प्रमाण के विरुद्ध हों, तो वे भी माननीय नहीं हो सकते।

× × ×

७. मतिराम और भूषण

प्रायः देखा जाता है कि दो भाइयों की बोल-चाल, रहन-सहन और स्वभाव आदि में अद्भुत साम्य पाया जाता है। एक भाई को जो बात पसंद होती है, दूसरा भाई भी प्रायः वही बात पसंद करता है। जिन वस्तुओं में एक भाई की रुचि दिखलाई पड़ती है, उन्हीं में दूसरा भाई भी अनुरक्त पाया जाता है। परंतु ऐसा नहीं है कि यह नियम सभी अवस्थाओं और सभी भाइयों पर अवश्य ही लागू हो। कभी-कभी सहोदर भाइयों के विचार, रुचि और स्वभाव भिन्न-भिन्न प्रकार के ही नहीं, बल्कि परस्पर विरोधी भी होते हैं। एक भाई जिस चीज़ को पसंद करता है, दूसरा भाई उसी से घृणा करता भी देखा गया है। पर ऐसे उदाहरण कम मिलते हैं। अधिक उदाहरण तो ऐसे ही उपलब्ध हैं, जिनमें भाइयों की रहन-सहन, बोल-चाल, शील-स्वभाव, रुचि आदि में साम्य होता है, विरोध नहीं। ऐसी दशा में साम्य की बात व्यापक के अंतर्गत आती है, और विरोध की बात अपवाद

कविता-क्षेत्र में भी हमें यह साम्य का व्यापक नि देख पड़ता है। हम देखते हैं, जो कवि भाई हैं, उनकी कृतियों में भाषा, भाव और रुचि का सा प्रायः हुआ करता है। पुराने कवियों को दीजिए, जो कवि इस समय जीवित हैं, उनमें भी सादृश्य का प्रभाव प्रत्यक्ष दिखलाई पड़ता है। अ ही, जैसा हम ऊपर कह आए हैं, अपवादों का अ नहीं है; पर व्यापक नियम तो यही है कि भाइयों कविता में समान भाव, समान भाषा और समान का पद-पद पर पता चलता है। जिन कवियों में संबंध है, उनकी भाषा में ही औरों से अधिक सादृश्य जाता है। इसका कारण स्पष्ट है। बचपन से ही-साथ रहने, साहित्यिक जीवन में संसर्गज प्रभाव तथा स्वाभाविक भ्रातृ-अनुकरण की प्रेरणा से साम्य कभी-कभी बहुत ही गहरा हो जाता है। सादृश्य उपस्थित करने में भी इन्हीं कारणों का पत्य है; पर उतना नहीं, जितना भाषा के मामले रुचि पर इन कारणों का प्रभाव सबसे कम पड़ता ये रुचि को उद्दीपित कर सकते हैं, अथवा उसे सकते हैं, पर उसका आमूल परिवर्तन नहीं कर सक भाई न होने पर भी दो कवियों की भाषा और में सादृश्य पाया जा सकता है; पर ऐसा बहुत दिखलाई पड़ता है। जहाँ कहीं ऐसे उदाहरण उन्हें भी अपवाद के ही अंतर्गत मानना चाहि व्यापक नियम तो वही है, जो ऊपर कहा गया है अकेले एक इसी व्यापक नियम के सहारे हम दो प्रा कवियों को भाई नहीं सिद्ध कर सकते; क्योंकि नियम के अपवादों के रहते इस बात का सदा भय रह सकता है कि संभव है, यह उदाहरण अपवाद हो। हाँ, जब दो प्राचीन कवियों के भाई होने के और कारण विद्यमान होते हैं, तब भाषा-सादृश्य और सादृश्य की सहायता भी परम उपयोगी सिद्ध होती है मान लीजिए, दो पुराने कवि बहुत समय से भाई कहकर प्रसिद्ध हैं; पर उक्त प्रसिद्धि का कोई लिखित प्र नहीं है। ऐसी दशा में उन दोनों कवियों के भाषा-सा और भाव-सादृश्य से उक्त प्रसिद्धि का बहुत कुछ

हो जायगा। पर यदि वे दोनों कवि भाई-भाई नहीं प्रसिद्ध हैं, और न उनके भाई होने का कोई लिखित प्रमाण ही है, तो, उस दशा में, केवल भाव और भाषा-सादृश्य के बल पर उनको भाई कहना बड़े साहस का काम होगा।

मतिराम और भूषण चिरकाल से भाई-भाई प्रसिद्ध हैं। कुछ प्राचीन लिखित प्रमाण भी इस प्रसिद्धि का समर्थन करते हैं। ऐसी दशा में यदि इन दोनों कवियों की भाषा और भावों में सादृश्य दिखलाई पड़े, तो इनके भ्रातृ-संबंध का समर्थन एक अन्य प्रकार से भी हो जाता है। इन दोनों कवियों के बीच ऐसा सादृश्य बड़े महत्त्व का है। कुछ उदाहरण लीजिए—

१. अली चली नवलाहि लै पिय पै साजि सिंगार;
ज्यों मतंग अँड़दार को लिए जात गँड़दार।
(मतिराम)

दावदार निरखि रिसानो दीह दलराय,
जैसे गँड़दार अँड़दार गजराज को।
(भूषण)

२. दान-हीन कलभ कदलि-दल कंप-जुत,
राव भावसिंहजी के राज मैं निहारिए।
(मतिराम)

कंप कदली मैं, बारि-बुंद बदली मैं,
सिवराज अदली के राज मैं यां राजनीति है।
(भूषण)

३. दिल्ली के दिनेस के प्रचंड तेज आँच लागे,
पानिप रह्यो न काहू भूपति-तलाव मैं।
(मतिराम)

भूषन तीषन तेज तरन्नि-सो बैरिन को कियो पानिप-हीनो।
(भूषण)

४. मूछनि सों राव-मुख लाल रंग देखि, मुख
औरन को मूछन बिना ही स्याम रंग भो।
(मतिराम)

तमक ते लाल मुख सिवा को निरखि, भए
स्याम-मुख नौरँग, सिपाह-मुख पियरे।
(भूषण)

५. जहाँ एक उपमेय के होत बहुत उपमान;
तहाँ कहत मालोपमा कबि मतिराम सुजान।
(मतिराम)

जहाँ एक उपमेय के होत बहुत उपमान;
ताहि कहत मालोपमा भूषन सुकबि सुजान।
(भूषण)

ऊपर दिए हुए प्रथम चार उदाहरणों में भाव और भाषा के सादृश्य पर पाठकगण ग़ौर करें। दोनों कवियों के ग्रंथों में ऐसे ही सैकड़ों उदाहरण मिल सकते हैं। माधुरी की किसी पिछली संख्या में प्रकाशित 'मतिराम का गज-गौरव'-नामक लेख पढ़ने से भी विदित होगा कि हाथियों का वर्णन दोनों ही कवियों ने एक ही प्रकार से, एक ही प्रकार की भाषा में, किया है। अभी हाल में, माधुरी की गत संख्या में, जो भूषण-कृत शृंगार-रस के छंद छपे हैं, उनकी भाषा तो मतिराम की भाषा से और भी अधिक मिलती है। पाँचवें उदाहरण में 'मालोपमा' का लक्षण है। 'शिवराज-भूषण' और 'ललितललाम' के इन लक्षणों को सदृश न कहकर यदि एक ही कहें, तो अनुचित न होगा। दोनों ग्रंथों में ऐसे बीसों एक-से लक्षण मौजूद हैं। 'मतिराम-मति-मुकुर' में—जो गंगा-पुस्तकमाला में शीघ्र छपनेवाला है—ऐसे बहुत-से लक्षण और भाव खोजकर एकत्र किए गए हैं। इस सादृश्य-चमत्कार से निष्कर्ष यही निकलता है कि मतिराम और भूषण भाई-भाई थे।

× × ×

८. प्रकाशक लांगमैन्स

सन् १७१९ में विलियम टेलर नाम के प्रकाशक ने जगत्प्रसिद्ध रॉबिन्सन क्रूसो-नामक उपन्यास प्रकाशित करके खूब धन बटोरा था। इस रक़म से उसने प्रकाशन का काम बड़े ज़ोर-शोर से चलाया। टेलर के इसी प्रकाशन-कार्य को, आज से २०० वर्ष पूर्व, टामस लांगमैन साहब ने ख़रीद लिया था। तब से अब तक वहीं—'पैटेनास्टर रो' में—लांगमैन का वह कारख़ाना चल रहा है। उन्नति करते-करते इस समय इस कारख़ाने की ख्याति संसार-भर में फैल गई है। सभी देशों में इसकी शाखा-प्रशाखाएँ हैं। भारत में भी, कलकत्ते और मदरास में, इसकी बड़ी-बड़ी शाखाएँ हैं। इस कारख़ाने के संचालन की बागडोर आज भी टामस लांगमैन के वंशधरों के ही हाथ में है। सफल व्यवसाय और संगठित कार्य का यह उत्कृष्ट निदर्शन है। इँगलैंड के साहित्यिक इतिहास में, इन दो सौ वर्षों में, जितने अच्छे लेखक, कवि और वैज्ञानिक आदि हुए हैं, प्रायः उन सभी के ग्रंथ प्रकाशित करने का सौभाग्य इस कारख़ाने को प्राप्त है। जानसन के प्रसिद्ध कोश के प्रकाशकों में लांगमैन

भी थे । सदी और वर्ड्सवर्थ की कविताएँ भी इन्होंने प्रकाशित कीं । लैंब, स्कॉट, मेकाले, फ़ाउड, मैक्समूलर, लोकी, विलियम मॉरिस, कहाँ तक गिनावें, प्रायः सभी विद्वानों ने इस कारख़ाने से सहयोग कर रक्खा था । लिंडले मरे, अमेरिका के कैकर ग्रैमैरियन और लॉर्ड मेकाले की बदौलत इस कारख़ाने को बहुत बड़ा आर्थिक लाभ हुआ । लॉर्ड मेकाले के इतिहास के तीसरे और चौथे भाग की बिक्री तो इतनी अधिक हुई कि सन् १८५६ में प्रकाशकों ने लॉर्ड महोदय को एक २०,००० पौंड का चेक भेंट किया । एक बार लॉर्ड महोदय ने अपनी बनाई 'लेज़ ऑफ़ दि एंशंट रोम'-नामक पुस्तक के प्रकाशन का स्वत्व इस कंपनी को यों ही दे दिया ; क्योंकि उनका ख़याल था कि इस पुस्तक की बिक्री बहुत कम होगी । पर इस कारख़ाने से प्रकाशित होते ही वह पुस्तक बात-की-बात में बिक गई । इस कारख़ाने के सौजन्य को तो देखिए ! पहला संस्करण जैसे ही समाप्त हुआ, वैसे ही प्रकाशकों ने पुस्तक के प्रकाशन का स्वत्वाधिकार लेखक को वापस कर दिया । इस संस्था की ओर से एक 'लांगमैन्स-मैगज़ीन' भी निकाली गई थी । पर अब वह बंद हो गई है । जहाँ अच्छी पुस्तकें प्रकाशित करके प्रकाशक लोग खूब रुपए पैदा करते हैं, वहाँ कभी-कभी दुर्भाग्य से वे ऐसी अच्छी किताबों को छापना भी अस्वीकृत कर देते हैं, जिसका बाद को उन्हें सदा खेद रहता है । लांगमैन-जैसे प्रकाशकों से भी ऐसी भूलें कई बार हुई हैं । इस प्रकार की जो सबसे बड़ी भूल लांगमैन से हुई है, वह विद्वद्वर कारलाइल की 'सारटर-रिसारटस' पुस्तक न छापने की है । स्थायी साहित्य में इस पुस्तक का स्थान बहुत ऊँचा है । इसकी बिक्री भी बहुत हुई है । पर जब यही पुस्तक पहले-पहल लांगमैन के यहाँ छपने गई, तो उन्होंने उसे छापना स्वीकार न किया ।

लांगमैन के प्रकाशन-कार्य को चलते इस साल २०० वर्ष पूरे होते हैं । इसलिये इँगलैंड में बड़े समारोह के साथ इसका जयंती-उत्सव मनाया जायगा । अभी से उसके लिये तैयारियाँ हो रही हैं । संभवतः लांगमैन के कारख़ाने का पूरा इतिहास भी प्रकाशित होगा । जिस देश में दो सौ वर्ष से बराबर चलते रहनेवाले प्रकाशन-कार्य के करनेवाले सज्जन प्रकाशक हों, और जिनका उद्देश्य [illegible] नहीं, बल्कि साहित्य का प्रचार हो, उस देश के उन्नत साहित्य की चर्चा ही क्या ? धन्य प्रका लांगमैन्स ! इस द्विशत वार्षिक उत्सव के उपल हम भी उक्त प्रकाशक को बधाई देते हैं ।

× × ×

९. युक्त-प्रदेश में शिक्षा की दशा

एप्रिल, सन् १९२२ से मार्च, १९२३ तक युक्त में शिक्षा की जो कुछ दशा रही, उसके संबंध में सा रिपोर्ट प्रकाशित हुई है । उसे पढ़ने से मालूम होता यहाँ १०,८०,९५१ विद्यार्थियों की शिक्षा का है । इस वर्ष के पहले इस संख्या में ५०,००० की थी । शिक्षा की मद में प्रांतीय फ़ंड से सरकार १, ८७,००० रुपए ख़र्च करती है । प्रयाग-विश्वविद्य से अभी तक कुछ बाहरी कॉलेज भी संबद्ध हैं भविष्य में वे अलग कर दिए जायँगे । आगरे में नया विश्वविद्यालय बनेगा । एप्रिल, सन् १९२२ से १९२१ का युनाइटेड प्रोविंसेज़ इंटरमीडिएट एज्यूकेशन काम में लाया गया है । पहले इंटरमीडिएट तक देनेवाले कॉलेजों की संख्या केवल ३ थी ; पर इस १४ है । देशी भाषाओं में शिक्षा देनेवाले मिडिल-स्कू की संख्या बढ़ रही है । इन स्कूलों में अँगरेज़ी पढ़ाने भी प्रबंध कर दिया गया है, और उसकी ओर लोगों ध्यान भी अच्छी तरह आकृष्ट हुआ है । कृषि की देनेवाले मिडिल-स्कूलों के खोलने का प्रस्ताव भी म पूर्ण है । मिडिल-स्कूलों के लिये छात्रागारों (बो हाउसों) की बहुत बड़ी आवश्यकता है । प्रा कक्षाओं की शिक्षा के संबंध में अधिक उल्लेख-योग्य यह है कि इस समय ६ और ११ वर्ष की अवस्था लड़कों को बाध्य रूप से शिक्षा देने के लिये ८ म्युनि पलिटियों ने नियम बना दिए हैं । तदनुसार काम शुरू हो गया है । अध्यापकों को अध्यापन-कार्य सि लानेवाली संस्थाओं की दशा भी संतोष-जनक है । कै परीक्षाओं की बढ़ रही लोक-प्रियता को देखकर यह क पड़ता है कि योरपियन स्कूल अच्छी उन्नति कर रहे मुसलमानी मदरसों और मकतबों की दशा भी है । इन सेकंडरी और प्राइमरी स्कूलों में मुस छात्रों की संख्या १,५५,७२८ है । सभी स्कू बालचर-आंदोलन बढ़ रहा है । अछूत जातियों के अलग पाठशालाएँ स्थापित करने में भी सफलता

हुई है । इन जातियों के छात्रों के लिये अलग छात्रवृत्तियों का भी अच्छा प्रबंध हो गया है । अधिक अवस्थावाले अपढ़ों के लिये कई म्युनिसिपलिटियों ने रात्रि-पाठशालाएँ खोल दी हैं । उनसे बड़ा लाभ हो रहा है ।

यद्यपि ऊपर दिए हुए विवरण को पढ़ने से जान पड़ता है कि शिक्षा की दशा अच्छी है, पर जब यह विचार करते हैं कि वह प्रांत की समस्त जन-संख्या को लक्ष्य में रखते हुए केवल २·३८ प्रतिशत है, तब घोर निराशा होती है । यदि शिक्षा का प्रचार इसी मंद गति से होता रहा, तो भारत के ही अन्य प्रांतों का मुक़ाबला करने में इस प्रांत को बहुत समय लगेगा । मुसलमान लोग यद्यपि शिक्षा में उन्नति कर रहे हैं, फिर भी प्राइमरी और सेकंडरी शिक्षा में अभी हिंदू उनसे बहुत आगे हैं । जहाँ मुसलमान-छात्रों की संख्या में ३·४ प्रतिशत वृद्धि हुई है, वहाँ हिंदुओं की संख्या में ५·३ हुई है । नए इंटरमीडिएट कॉलेजों के प्रति सर्व-साधारण में अच्छे भाव नहीं हैं । बात यह है कि अभी अच्छी प्रयोगशालाएँ न होने से इनमें वैज्ञानिक शिक्षा देने का ठीक प्रबंध नहीं है; ऊँचे और नीचे दरजों की देख-रेख ठीक तौर से नहीं हो पाती; तथा प्रिंसिपल प्रायः ऊँचे दरजों की उन्नति पर ही अधिक ध्यान देते हुए पाया गया है । प्राइमरी शिक्षा में सरकार ख़र्च तो बहुत करती है, पर उससे विशेष लाभ नहीं हो रहा है । कारण, अधिकांश बालक प्राइमरी कक्षाओं के आगे पढ़ते ही नहीं हैं । सरकारी रिपोर्ट के पढ़ने से यह भी पता चलता है कि सरकार इन सब आक्षेपों पर विचार कर रही है, और यथासाध्य सुधार करने के लिये तैयार रहेगी ।

× × ×

१०. प्रेतात्मवाद

मृत्यु के पश्चात् आत्मा की क्या दशा होती है, इस विषय को लेकर आजकल योरप और अमेरिका में खूब आलोचना चल रही है । शरीर नष्ट हो जाने के बाद भी आत्मा की पृथक् सत्ता बनी रहती है, इस कथन पर बड़े-बड़े वैज्ञानिकों को बहुत कम विश्वास है । पर पाश्चात्य देशों में इस समय एक ज़बर्दस्त विद्वन्मंडली इस बात को ध्रुव सत्य समझती है कि मृत्यु के बाद आत्मा इस लोक से भिन्न एक दूसरे लोक में जाती है, जिसे प्रेत-लोक कहते हैं । इन प्रेतात्माओं से बातचीत का भी प्रबंध किया गया है, और उनके द्वारा जो बातें मालूम हुई हैं, वे प्रायः सच्ची भी पाई गई हैं । प्रेतात्मवाद के संबंध में इस समय बड़े-बड़े ग्रंथ लिखे जा रहे हैं, मासिक पुस्तकें निकलती हैं, तथा बड़ी-बड़ी सभा-समितियाँ स्थापित हैं, जिनके द्वारा प्रेतात्माओं से बातचीत कराने के साधनों को सहज और सुलभ बनाने का प्रयत्न होता रहता है । स्वर्गवासी मिस्टर स्टेड की प्रेतात्मा से बातचीत करने के बाद से तो अब इस ओर लोगों का अनुराग बहुत बढ़ता जा रहा है । अभी हाल ही में, लंदन में, नव्य रूस के भूतपूर्व राष्ट्र-पति स्व० लेनिन की प्रेतात्मा से भी बातचीत हुई है । यों तो भूत और प्रेतों का अस्तित्व भारत में बहुत प्राचीन समय से माना जाता है, पर पाश्चात्य देशों के इस नवीन ढंग के प्रेतात्मवाद में भी इस समय भारतवासियों की दिलचस्पी बढ़ती जाती है । स्वर्गवासी बाबू शिशिरकुमार घोष तथा बाबू मोतीलाल घोष को प्रेतात्मवाद में पूर्ण विश्वास था । वे प्रेतात्माओं से संबंध रखनेवाली एक पत्रिका भी निकालते थे । थोड़े दिन हुए, समाचार-पत्रों में निकला था कि उन दोनों भाइयों की प्रेतात्माओं से भी बातचीत की गई है । बंगाल के प्रसिद्ध नेता श्रीयुत भूपेंद्रनाथ वसु महाशय ने भी अमृतबाज़ार-पत्रिका में एक चिट्ठी छपवाकर अपने पुत्र की प्रेतात्मा से बातचीत कर सकने के अपने सच्चे अनुभव को सर्व-साधारण के सामने रक्खा था । अभी थोड़े ही दिन की बात है, प्रयाग के माडर्न हाईस्कूल के मिस्टर घोष की प्रेतात्मा से जो बातचीत हुई थी, वह विस्तार के साथ 'लीडर'-पत्र में प्रकाशित हुई थी । प्रेतात्माओं से संबंध रखनेवाली और भी ऐसी ही अनेक घटनाएँ समय-समय पर भारतीय पत्रों में प्रकाशित होती रहती हैं । गत वर्ष 'कोकोनडा' में कांग्रेस के साथ-साथ एक सम्मेलन ऐसा भी हुआ था, जिसमें प्रेतात्मवाद पर विश्वास रखनेवाले लोग एकत्र हुए थे । उक्त अवसर पर इस विषय से संबंध रखनेवाले अनेक व्याख्यान हुए थे, कई विद्वत्तापूर्ण लेख भी पढ़े गए थे । इसके अतिरिक्त, प्रेतात्माओं से बातचीत करने के कई सफलता-पूर्ण प्रयोग भी दिखलाए गए थे । पाश्चात्य देशों में आर्थर कोनन डायल इस प्रेतात्मवाद-आंदोलन के नेता हैं । भारत में इस आंदोलन में सबसे अधिक भाग लेनेवाले श्रीयुत वी० डी०

ऋषि बी॰ ए॰, एल्-एल्॰ बी॰ हैं। 'कोकोनडा' के प्रेतात्मवाद-सम्मेलन के सभापति आप ही थे। आप महाराष्ट्र सज्जन हैं। आपने प्रेतात्मविद्या में इतनी अधिक उन्नति कर ली है कि सहज ही प्रेतात्माओं से मनमानी बातचीत कर सकते हैं। माधुरी में, अगली किसी संख्या में, इसी विषय पर आपका एक लेख प्रकाशित होगा। उसको पढ़कर पाठकगण समझ सकेंगे कि इस विषय में ऋषि महोदय की कितनी सूक्ष्म गति है।

आगामी २८ और २९ सितंबर को फ़्रांस की राजधानी पेरिस में प्रेतात्मवादियों का एक विशाल अंतरराष्ट्रीय संघ स्थापित होगा। जिसमें भिन्न-भिन्न देशों के प्रेतात्मवादी मिलकर काम कर सकें, खूब गहरे अध्ययन का अवसर मिले, तथा आंदोलन का भली भाँति प्रचार किया जाय, इन्हीं सब उद्देश्यों की सफलता के लिये संघ की स्थापना हुई है। इसमें कोई संदेह नहीं कि प्रेतात्माओं से बातचीत करने की समस्या हल हो जाने से संसार के इतिहास में एक अभूतपूर्व घटना घटेगी। इससे केवल मृत्यु से संबंध रखनेवाले भय और करुणा के भावों में कमी ही न होगी, बल्कि संसारव्यापी धार्मिक मतभेदों की परिधि भी बहुत कुछ संकुचित हो जायगी। इसके अतिरिक्त, इस लोक का नैतिक जीवन भी बहुत कुछ पवित्र और उच्च हो जायगा। पेरिस में जो 'संघ' स्थापित होनेवाला है, उसमें भारत के भी एक प्रतिनिधि आमंत्रित हुए हैं, और वह हैं हमारे परिचित श्रीयुत वी॰डी॰ ऋषि महोदय। आप शीघ्र ही उक्त संघ में सम्मिलित होने के लिये भारत से प्र
करेंगे। इसके लिये आपने आर्थिक सहायता की प्रा
भी सर्व-साधारण से की है। आशा है, आपको य
सहायता प्राप्त होगी। हमारा विश्वास है कि 'संघ' अ
उद्देश्यों में सफल होगा।

× × ×

११. रूप की स्वर-लिपि और स्वर का रूप

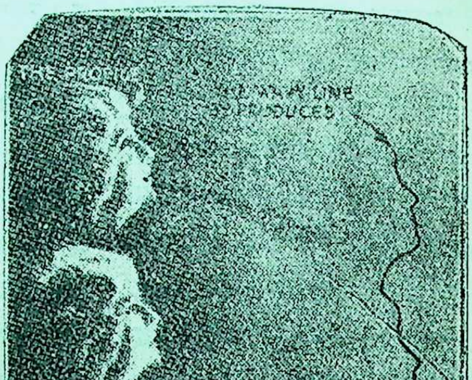

रूप-रेखा और स्वर का संकेत

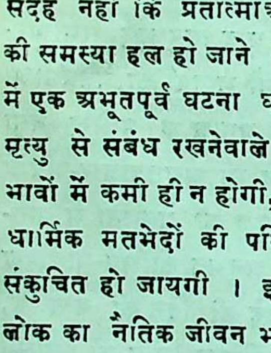

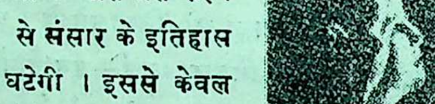

बेसुरे संगीत का रूप

स्वर के रू
कल्पना कुछ दिन
पागल के अ
प्रलाप के सिवा
कुछ न समझी जा
किंतु आज अमेरि
अंतर्गत ओहियो
के क्लेवलैंड-वि
विद्यालय में श
तत्त्व के अध्य
प्रोफ़ेसर डेटन मि
ने यह सिद्ध कर
है कि प्रत्येक
स्त्री के मुख का आ
जैसा मनोहर होत
वैसा ही, उसी के
रूप, स्वर का अ
भी उसके साथ
वायुमंडल में वि
करता रहता है। उन्
एक सुंदरी तरुण
सुंदर मुख की लह
हुई रेखाएँ पियान
स्वर में बजाकर दि
दिया है कि रूप के बीच कैसा मधुर संगीत
होता है। इस आविष्कार में ज़रा भी धोखा
या ग़ल्ती नहीं है। संपूर्ण वैज्ञानिक उपाय और सं
शास्त्र के नियम के अनुसार उन्होंने सुंदरी युवती के म
मुख की जो स्वर-लिपि तैयार की है, उसका चित्र दे
उसकी प्रत्येक रेखा एक अपूर्व स्वर का संकेत कर रही है।
इससे यह सिद्ध हुआ कि रमणी का रमणीय रूप केवल

को ही आनंद देनेवाला नहीं होता, उसमें संगीत का जो स्वर निरंतर बजता रहता है, वह भी पुरुष के मन को, बज रही बीन की स्वर-लहरी में मस्त नाग की तरह, आपे से

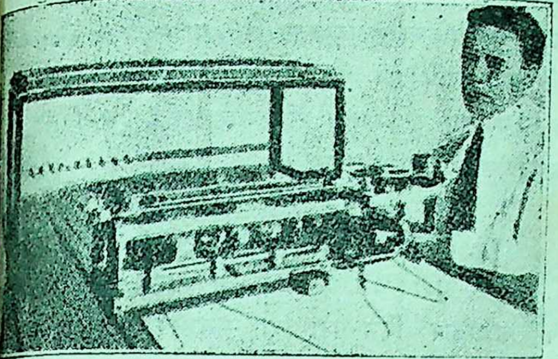

प्रोफ़ेसर मिलर और उनका स्वर-मंथन यंत्र

बाहर कर देता है। संगीत बेसुरा होने पर जैसे कानों को पीड़ा पहुँचाता है, और वह गाना किसी को संतुष्ट नहीं कर सकता, वैसे ही बदसूरत औरत के मुख की बेडौल रेखाएँ भी बिलकुल बेसुरी बजती हैं; और इसी कारण कोई भी मर्द कुरूप स्त्री की ओर आकृष्ट नहीं होता। इस सिद्धांत को प्रोफ़ेसर मिलर ने अच्छी तरह उदाहरणों और प्रमाणों से सिद्ध कर दिखाया है। मिलर साहब इस प्रकार रूप के

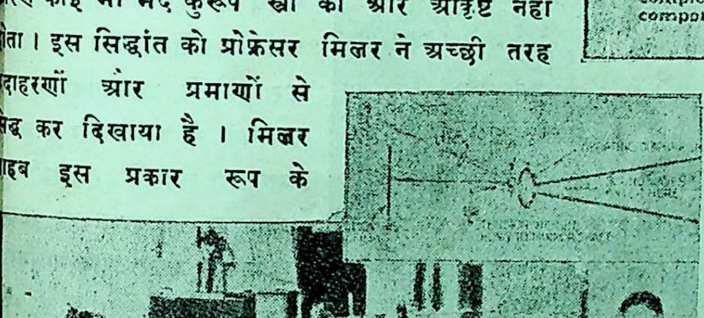

वंशी का स्वर

(प्रोफ़ेसर मिलर वंशी के स्वर को अपने यंत्र में भरकर उसका रूप देखने की चेष्टा कर रहे हैं)

चारी स्वर का आविष्कार करने के उपरांत ये, र के रूप को देखने की भी चेष्टा कर रहे हैं।

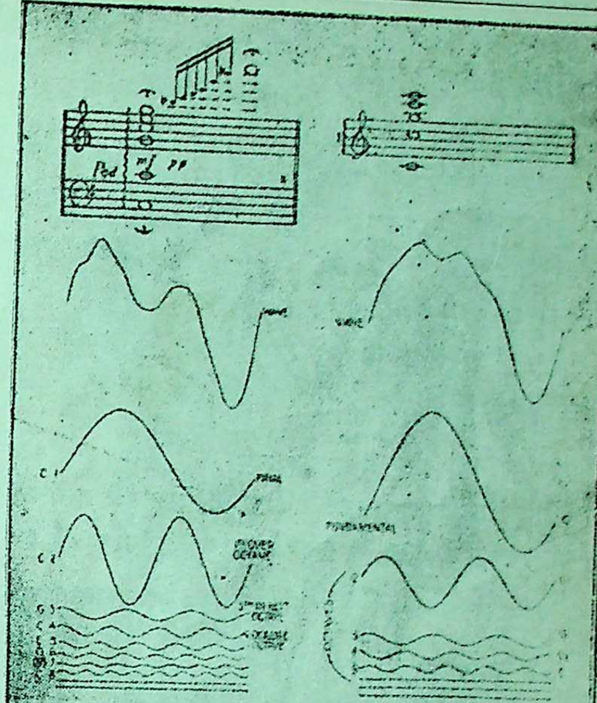

This comparative analysis of the bass flute (at left and concert flute (at right) explains that the superiority of the tone of the bass flute is due to its greater number of overtones. Each analysis shows the complete wave form produced by the flute and its component parts, including the fundamental "C" form and the waves of its harmonics

वंशी बनाम मुरली

(वंशी [Bass Flute] और मुरली [Concert Flute], इन दोनों में प्रतियोगिता होने पर देख पड़ेगा कि वंशी के स्वर में जैसी सुंदरी स्त्री की आवाज़ सुन पड़ती है, मुरली के स्वर में वैसी सुंदरी स्त्री की आवाज़ नहीं सुन पड़ती। मतलब यह कि मुरली के स्वर की अपेक्षा वंशी का स्वर अधिक मधुर एवं सुंदर होता है। प्रोफ़ेसर मिलर ने दोनों प्रकार के स्वरों की रूप-रेखाओं से ऐसा अनुमान किया है)

वंशी या बेहाला से जो प्रसिद्ध स्वर निकलकर सुननेवालों के कानों में अमृत की वर्षा करते हैं, उनके हृदय को मुग्ध बना देते हैं, उन स्वरों की रेखाएँ कैसी अनोमोलिनी सुंदरी के मनोहर मुख की आकृति से मिलती हैं, इसी की खोज में आजकल आप लगे हुए

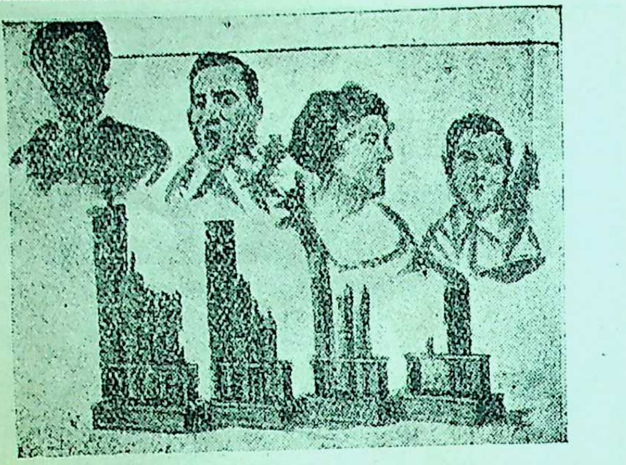

स्वर का रूप

(चार भिन्न प्रकार के स्वरों ने जिन चार प्रकार के गलों का परिचय दिया है, इस चित्र में उनके रूप की कल्पना की गई है)

हैं । आशा है, आप शीघ्र ही इसमें भी सफ प्राप्त करके यशस्वी होंगे । हमारे यहाँ के शास्त्र लोग राग-रागिनियों के रूप की कल्पना बहुत पहले कर गए हैं । अब देखना है, उनकी उस कल्पना आज का आविष्कार मिलता है, या नहीं । हाँ, की स्वर-लिपि की कल्पना बेशक नई है । इस के साथ दिए हुए चित्रों से हमारे पाठक इस विषय अच्छी तरह समझ सकेंगे ।

× × ×

१२. विश्राम की आवश्यकता

जो नर-नारी धन के लोभ या अन्य किसी का से लगातार दिन-भर या रात-भर परिश्रम क रहते हैं, उनका स्वास्थ्य बहुत शीघ्र नष्ट हो जाता यह सर्व-जन-विदित है। परि के बाद यथेष्ट विश्राम की आवश्यकता होती है, वह मानसिक परिश्रम हो, शारीरिक । इस विश्राम संबंध में बड़े-बड़े नामी अब तक जिस तत्त्व की कर रहे थे, आज विज्ञान सहायता से उन्हें उस तत्त्व पता लग गया है । अभी थके हुए आदमी की का हिसाब और उसके शारी सामर्थ्य की मात्रा जानने कोई उपाय विदित न था । अब ऐसा यंत्र बन गया है, जिसकी सहायता से, करने पर, उक्त दोनों बातें ठीक-ठीक जानी सकती हैं । आज साधारण डॉक्टर भी उक्त यंत्र के हरएक आदमी की जाँच करके बतला सकता है उसके शरीर की दशा परिश्रम करने के बाद कैसी उसका शरीर-यंत्र थकन के कारण कितना शिथिल हो है; उसकी शक्ति कितनी क्षीण हुई है; उसे विश्राम ज़रूरत है या नहीं; अगर है, तो कितने समय के और किस लिये । इसकी जाँच कुछ ऐसी कठिन भी है । कोई आदमी जब सीधा तनकर खड़ा होता है, माध्याकर्षण-शक्ति उसके शरीर के रक्त-प्रवाह को

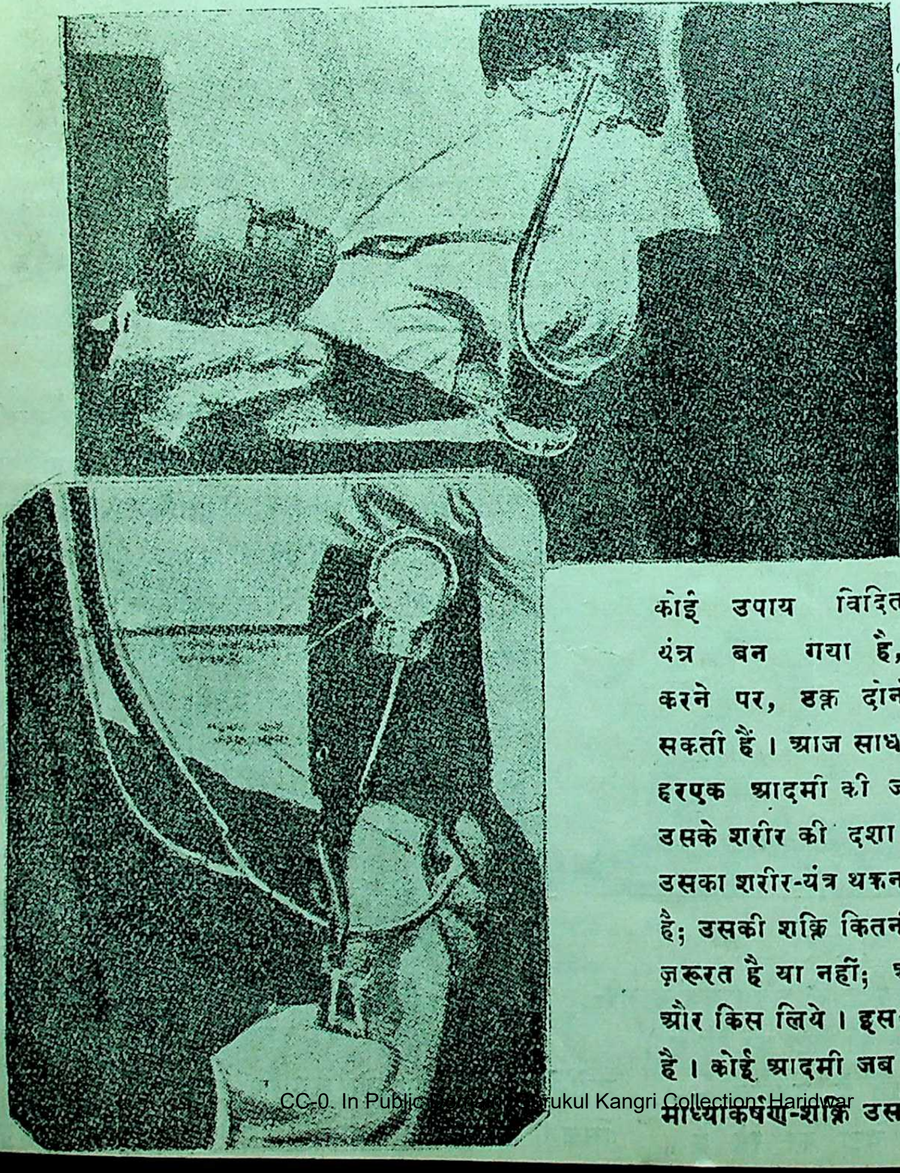

की ओर खींच लाने की चेष्टा करती है। उस समय उस आकर्षण के विरुद्ध मनुष्य की शारीरिक शक्ति रुकावट डालती है। वह रुकावट डालने में जो ज़ोर पड़ता है, उसका ठीक परिमाण अगर मालूम कर लिया जाय, तो उस मनुष्य के मस्तिष्क और मांस-पेशियों की क्षमता की मात्रा जान लेना कुछ कठिन न होगा। उसी औसत से उसके शरीर की थकन कितनी है, यह भी ज्ञात हो जाता है। उस दशा में यह सहज में जाना जा सकता है कि वह थकन दूर करने के लिये कितने विश्राम की ज़रूरत है। देह की भीतरी हालत का यह गुप्त रहस्य जान लेने से यह लाभ हुआ कि कुली, मज़दूर, क्लर्क, मास्टर, विद्यार्थी, खिलाड़ी, पहलवान आदि मानसिक अथवा शारीरिक परिश्रम करनेवाले सभी आदमी थकन की मात्रा के अनुसार विश्राम करके अपने स्वास्थ्य को ठीक रख सकेंगे। वे कम विश्राम करके स्वास्थ्य न बिगाड़ डालेंगे, और अधिक अनावश्यक विश्राम करके समय भी न नष्ट करेंगे।

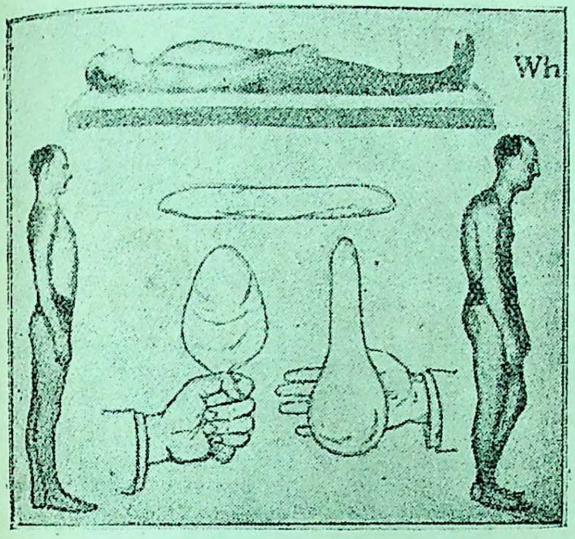

कुबड़ेपन का कारण

जाँचने से मालूम हुआ है कि साधारणतः दिन-भर परिश्रम करने से जितनी थकन पैदा होती है, वह रात को आठ घंटे सोकर विश्राम करने से भी अच्छी तरह दूर नहीं होती। शरीर के पूर्ववत् सुस्थ, सबल होने के लिये साधारण आदमी को आठ घंटे से अधिक विश्राम करना चाहिए। हाँ, विशेष शक्तिशाली की बात और है। मान लो, दिन-भर परिश्रम करने से किसी के शरीर की शक्ति का सौ में दस भाग क्षय हो जाता है। वह आदमी अगर ठीक नव बजे रात को सोकर सबेरे पाँच बजे उठ बैठे, तो उस आठ घंटे के विश्राम और सुनिद्रा के बाद अपने शरीर की क्षीण हुई जीवनी-शक्ति का प्रतिशत सात भाग ही उसे पुनः प्राप्त होता है। अब हिसाब लगाकर देखिए, अगर वह इस तरह नित्य प्रतिशत तीन भाग के

स्नायु-पेशियों के साथ रक्त-संचार का संबंध

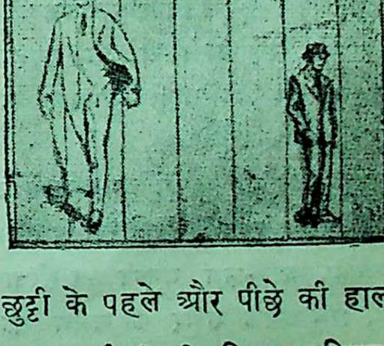

छुट्टी के पहले और पीछे की हालत

हिसाब से जीवनी-शक्ति गँवाता रहे, तो कितनी जल्दी उसका शरीर निकम्मा हो जायगा । किंतु सप्ताह में एक दिन रविवार को (इसके अतिरिक्त अन्य त्योहार-उत्सव आदि के अवसरों पर भी) अगर उसे छुट्टी मिलती है, और शनिवार को भी कुछ कम काम करना पड़ता है, तो कामकाजी, मेहनती आदमी का स्वास्थ्य बहुत कुछ सुधरा रहता है । इसीलिये छुट्टियों की अत्यंत आवश्यकता है । जो लोग आर्थिक कष्ट के कारण निरंतर परिश्रम करने के लिये विवश होते हैं, उनका स्वास्थ्य कुछ ही दिनों में जवाब दे देता है, और वे अकाल-वार्द्धक्य के आक्रमण से जीवन्मृत होकर किसी काम के नहीं रहते ।

हरएक नौकरीपेशा आदमी को रविवार आदि की तातीलों में तो विश्राम करना ही चाहिए, इसके सिवा साल में महीने-डेढ़ महीने की लंबी छुट्टी लेकर किसी ऐसे स्वास्थ्यकर स्थान में रह आना भी उचित है, जहाँ की आब-हवा अच्छी हो । इससे लाभ यह होता है कि साल-भर में औसत-हिसाब से जो कुछ शारीरिक शक्ति या स्वास्थ्य क्षीण हुआ है, उसकी पूर्ति होकर शरीर में नया बल आ जाता है ।

परंतु विश्राम का अर्थ यह नहीं है कि चुपचाप हाथ-पर-हाथ रक्खे बैठे रहो, या पड़े-पड़े सोया करो । मनोविनोद, हँसी-दिल्लगी, भ्रमण आदि चित्त को प्रफुल्लित करनेवाले कामों में समय बिताकर शरीर और मन को ताज़ा करना ही विश्राम है । कारण, इस तरह के आनंदजनक काम करने से शरीर और मन में स्फूर्ति आती है, और थकन तथा क्लांति इतनी और इतनी जल्दी दूर होती है कि देखकर आश्चर्य होता है । इसके विपरीत केवल आलस्य में समय बिताने से, पड़े रहने से, या मन-मारे हुए चुप रहने से उपकार के बदले अपकार ही होता है । अस्तु ।

शरीर में रक्त-प्रवाह की सुनियंत्रित गति के ऊपर ही जीवनी-शक्ति का घटना-बढ़ना संपूर्ण रूप से निर्भर है । कोई सुस्थ, सबल, कार्य-क्षम मनुष्य जब सीधा तनकर खड़ा होता है, तब उसके शरीर का समग्र रक्त-प्रवाह, माध्याकर्षण-शक्ति के प्रभाव से, निम्नगामी होने की चेष्टा करता है । किंतु सुस्थ शरीर के सब सबल स्नायु और पेशियाँ सजग हो उठती हैं—लगातार गतिशील रक्त-प्रवाह के उस माध्याकर्षण-शक्ति के निकट आत्मसमर्पण करने में बाधा डालती हैं । इसके विपरीत थके हुए शक्ति-हीन मनुष्य के स्नायु और पेशियाँ ऐसी सुस्त और बेक़ाबू हो उठती हैं कि वे उस अवस्था में ठीक-ठीक अपना काम नहीं कर सकतीं । इसी कारण ऐसे लोगों का शरीर क्रमशः निकम्मा हो जाता है । कुछ लोग कुबड़े भी हो जाते हैं । इस विनाश से आत्मरक्षा करने के लिये ही विश्राम और आमोद-प्रमोद की आवश्यकता होती है ।

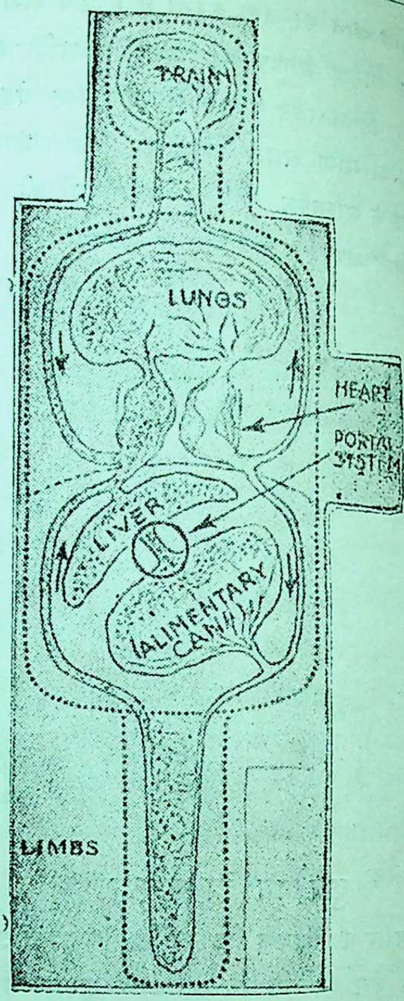

रक्त-प्रवाह का शरीर में चक्कर लगाना

× × ×

१३. स्वयं चलाने लायक हल

भारत में हल चलाने के लिये बैलों की ज़रूरत होती है । पर आजकल बैल बहुमूल्य और दुष्प्राप्य हो गए हैं, और उन्हें रखकर खिलाना ग़रीब किसान के लिये

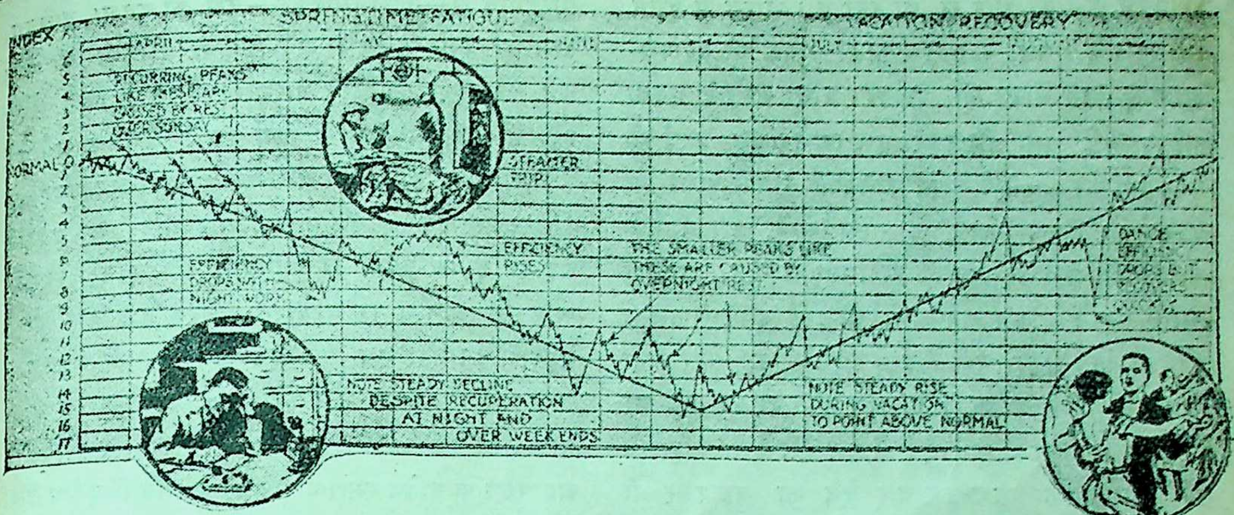

विश्राम करने से शरीर की उन्नति

स्वयं चलाने लायक़ हल

असंभव-सा हो रहा है। प्रायः बैल न मिलने से किसान बेचारा अच्छी तरह खेत जोतने में असमर्थ रहता है। इसका फल यह होता है कि फ़सल भी अच्छी नहीं हो पाती। जर्मनी में एक नए ढंग का हल निकला है, जिसे मनुष्य स्वयं खेत में चला सकता है, बैल की ज़रूरत नहीं होती, और परिश्रम भी थोड़ा ही करना पड़ता है। केवल हाथ और पैर के ज़रा-से दबाव से यह हल काम करता है। चित्र में देखिए, एक आदमी कैसे मज़े में इस हल को चला रहा है। अगर भारत के किसानों में जर्मनी के इस हल का प्रचार किया जाय, तो उनका बड़ा उपकार हो। सरकारी कृषि-विभाग को यह काम बहुत शीघ्र करना चाहिए।

× × ×

१४. भारत में रंग बनाने का नया कारख़ाना

मेसर्स हेडफ़ील्ड्स लिमिटेड ने शिवपुर (बंगाल) में एक रंग बनाने का कारख़ाना खोला है। भारत में हर साल विदेशों से बहुत बड़े पैमाने में रंग, वार्निश, एनामेल आदि की आमदनी होती है। इसमें संदेह नहीं कि यहाँ ऐसे-ऐसे कई कारख़ाने खुलने की गुंजाइश है। वे मज़े में चलाए भी जा सकते हैं। इस कंपनी ने अपने कारख़ाने में आधुनिक ढंग के नवीन यंत्र आदि रक्खे हैं। इस कारख़ाने में रंग, वार्निश, एनामेल आदि काफ़ी तादाद में तैयार हो सकेगा। इस कंपनी का केंद्र लंदन में है। यह शाखा अपने केंद्र की सहायता से यहाँ काम करेगी। विलायत से बढ़िया रंग मेसर्स हेडफ़ील्ड्स के ही यहाँ आता है। इँगलैंड और योरप के अन्य स्थानों में मोटर-गाड़ी आदि के व्यवसायी इसी कारख़ाने का रंग इस्तेमाल करते हैं। लंदन की उक्त कंपनी की सलाह और अभिज्ञता की सहायता पाकर शिवपुर का यह नया कारख़ाना शीघ्र ही कृतकार्य हो सकेगा, इसमें कोई संदेह नहीं। मेसर्स मार्टिन कंपनी ने इस कारख़ाने का मैनेजिंग-एजेंट होना स्वीकार किया है। खेद का विषय यही है कि यह सारा उद्योग एक

योरपियन फ़र्म की ओर से हो रहा है। भारत में इतने धनी रहते हैं। यहाँ के प्रतिभाशाली युवक भी व्यापार-शिक्षा के लिये योरप में बराबर जाया करते हैं। क्या कोई या कई धनी मिलकर इस लाभदायक कार्य को शुरू नहीं कर सकते? योरप जानेवाले युवक अगर रंग बनाने का शिल्प योरप से सीख आवें, और यहाँ के धनी पूँजी लगाकर उनकी सहायता से रंग, वार्निश आदि बनाने के कारख़ाने खोलें, तो उन्हें यथेष्ट सफलता होने में कोई संदेह नहीं। उसी प्रकार का कारख़ाना खुलने में भारत का लाभ है, और उसी पर हम गर्व कर सकते हैं। आशा है, कुछ दिनों में हमें ऐसे देशी कारख़ाने की स्थापना का शुभ-समाचार देने का सुअवसर भी अवश्य प्राप्त होगा। तथास्तु।

× × ×

१५. एक नया धूमकेतु

हाल में, विलायती पत्रों में, एक नए धूमकेतु के प्रकट होने की ख़बर प्रकाशित हुई है। वह धूमकेतु बड़े प्रचंड वेग से पृथ्वी की ओर दौड़ा चला आ रहा है। उसने अनेक ग्रह-उपग्रहों को भी चूर्ण कर डाला है। अब से पहले पृथ्वी पर इसकी शुभ-दृष्टि कभी नहीं पड़ी। इधर यह उसका पहला ही धावा है। पाश्चात्य ज्योतिषी बड़े ग़ौर से इसकी गति देख रहे हैं। यह भी ख़बर है कि उक्त ज्योतिषियों ने हिसाब लगाकर देखा है कि जल्दी हो या देर में, यह धूमकेतु एक बार पृथ्वी से टक्कर अवश्य लेगा। अगर यह बात ठीक निकली, तो पृथ्वी की ख़ैर नहीं! ज्योतिष जाननेवालों के साथ ही वैज्ञानिकों का भी यह कहना है कि इस धूमकेतु में विष-वाष्प या ज़हरीली गैस भरी पड़ी है। पृथ्वी के साथ इसका संघर्षण होने पर, उस गैस से दम घुटने के कारण, तत्काल सब मनुष्य और जीव काल-कवलित हो जायँगे! घास-फूस तक की कुशल नहीं! पृथ्वी के एक सिरे पर इस धूमकेतु का धक्का लगने के बाद केवल ४८ घंटों में ही इसकी ज़हरीली भाप पृथ्वी के दूसरे सिरे तक पहुँच जायगी! ईश्वर ही इस आकाशचारी राक्षस से संसार की रक्षा करनेवाले हैं।

× × ×

१६. हिंदू-मुसलमानों में मेल कैसे हो?

भारत में बसनेवाली दो बड़ी जातियाँ, सैकड़ों बरस से साथ-साथ समान सुख-दुःख भोगकर भी, परस्पर सुहृद्भाव से—हिल-मिलकर—देश की दुर्दशा, दारिद्र्य, दैन्य दूर करने के लिये कंधे-से-कंधा भिड़ाने को कौन कहे, एक दूसरे को लूटने या मारने-पीटने के लिये तैयार रहें, और वह भी धर्म के नाम पर! कैसा आश्चर्य है! कैसा अनर्थ है! इधर अर्से से लगातार जगह-जगह पर हिंदू ही लुट-पिट रहे हैं; देव-मूर्तियों और मंदिरों का अपमान सह रहे हैं; मा-बहनों की बेइज़्ज़ती भी ऐक्य, स्वराज्य और देश के नाम पर बरदाश्त कर रहे हैं! किंतु मुसलमान भाइयों का रुख़ दिन-दिन झगड़े ही की ओर होता जा रहा है। गुंडों को कौन कहे, डॉ० किचलू-सरीखे माननीय नेता का व्यवहार भी लो० तिलक-सदृश पूज्यतम महापुरुष के पवित्र स्मारक (चित्र) के प्रति निंदनीय देखा जाता है। मेल के लिये कमेटियाँ बनीं, शर्तें तय की गईं, पैक्ट बने। फ़ी सदी ८० तक नौकरियाँ देकर मुसलमानों को राज़ी करने की चेष्टा की जा रही है। फिर भी उधर से बुरा व्यवहार बंद नहीं होता। इसका कारण क्या है! गोवध, मसजिद के सामने बाजे बजाना या नौकरियाँ कम मिलना, यह कुछ भी झगड़े का कारण नहीं है। झगड़े का कारण हृदयों में है। वह हार्दिक द्वेष दूर करने से सभी प्रश्न स्वयं हल हो जायँगे। जब तक मुसलिम-मंडली और धर्मांध मौलाना साहबान के विचार हिंदुओं के विरुद्ध भयानक भावों से ओत-प्रोत रहेंगे, जब तक हिंदू काफ़िर समझे जायँगे, एक काफ़िर को मारना, लूटना या धर्मभ्रष्ट करना सवाब समझा जायगा, भारत को मातृभूमि न मानकर अरब, ईरान, टर्की, काबुल आदि को महत्त्व दिया जायगा, उक्त राष्ट्रों की सहायता से भारत में फिर मुसलमानी सल्तनत क़ायम होने के सपने देखना बंद न होगा, तब तक कभी मुसलमान हिंदू-प्रेमी न बन सकेंगे। हिंदू-नेताओं में से अधिकांश समझते हैं कि भरसक दबने से, मुसलमानों की अनुचित माँग स्वीकार कर अपना भारी-से-भारी और पुराने-से-पुराना अधिकार छोड़ देने से, सभी नौकरियाँ अर्पण कर देने से, हिंदू-संगठन और शुद्धि को छोड़कर मुसलमानों के संगठन और तबलीग का अनुमोदन करने से मुसलमान भाई अपनाए जा सकते हैं। पर यह उनकी भूल है। असमर्थ की उदारता का समर्थ की दृष्टि में कुछ भी मूल्य नहीं होता। उस उदारता का अर्थ दबना ही लगाया जाता है। इस समय यही हो रहा है। हिंदू जितनी

उदारता दिखाते हैं, मुसलमान उतना ही सिर चढ़ते हैं। हिंदू-जाति को पहले आत्मरक्षा में समर्थ, सबल, सुसंगठित और सब बातों में मुसलमानों के समकक्ष बनना चाहिए। फिर उदारता दिखाकर मेल की कोशिश करना ठीक होगा। अन्यथा सैकड़ों पैक्ट और प्रस्ताव यह दुर्भाव मिटाने में असमर्थ ही रहेंगे। हिंदुओं और मुसलमानों में एक बड़ा भारी अंतर है। मुसलमानों में धार्मिक बंधन इतना दृढ़ है कि किसी कट्टर धर्मांध साधारण मौलाना की बात के आगे बड़े-से-बड़े राजनीतिक नेता की भी बात नहीं सुनी जाती। किंतु हिंदुओं में धार्मिक बंधन इतना सड़ गया है कि अदना, अल्पशिक्षित छोकरे भी बड़े-से-बड़े धर्माचार्य और महर्षि की बातें नहीं सुनना चाहते। मनु भगवान् भी स्वार्थी कहे जाते हैं। इसी का परिणाम यह है कि हिंदुओं में संगठन के लिये कोई सुदृढ़ सूत्र नहीं देख पड़ता। एक मुसलमान पर कोई संकट पड़ता है, तो दीन के नाम पर राह-चलते मुसलमान उसकी मदद को खड़े हो जाते हैं। उधर हिंदुओं की दशा यह है कि भाई की हत्या की जा रही है, और दूसरा भाई देखकर भी कुछ नहीं बोलता। ताज़ा उदाहरण सामने है। दिल्ली की कांग्रेस-कमेटी ने कांग्रेस के हिंदू-मुसलमान मेंबरों को शुद्धि-संगठन आदि से अलग रहने का आदेश दिया है। इधर डॉ० किचलू (आल इंडिया कांग्रेस-कमेटी के मंत्री !) मुसलिम-संगठन कर रहे हैं, हिंदुओं को मुसलमान बनाकर प्रसन्नता प्रकट कर रहे हैं। मतलब यह कि मुसलमान मेंबर तो इन कामों से बाज़ न आवेंगे, हाँ, हिंदू मेंबर अवश्य हिंदू-संगठन और शुद्धि के काम में शरीक होने, धन आदि से उनकी सहायता करने और सहानुभूति दिखाने को हराम मान बैठेंगे। कितना हानिकर अंतर है ! हम अपनी जाति के सच्चे कार्य-कर्ताओं से यही प्रार्थना करते हैं कि यदि वे हिंदुओं और मुसलमानों का चिरस्थायी मेल और उनमें परस्पर सच्चा प्रेम चाहते हैं, तो बिना विलंब जाति को जगाकर, उसका संगठन करते हुए, उसे आत्मरक्षा-समर्थ, सबल बनाने के उद्योग ही को अपने जीवन का एक-मात्र लक्ष्य बना लें। अकारण दबना छोड़ दें। अपने अधिकारों की रक्षा करने से न चूकें। हिंदू-महासभा का अधिवेशन शीघ्र होनेवाला है। इसमें उपस्थित प्रतिनिधियों को अपनी वर्तमान स्थिति पर खूब विचार करके आत्मरक्षार्थ सुदृढ़ संगठन का ही समर्थन करना चाहिए। इसके बिना न परस्पर सच्चा मेल ही होगा, और न सौहार्द ही बढ़ेगा।

× × ×

१७. हिंदुओं की हीनावस्था

दिल्ली के दंगे की याद अभी तरोताज़ा थी ही कि इधर मोहर्रम में मुरादाबाद के संभल-स्थान में, पीलीभीत में, और निकटवर्ती अमेठी में हिंदुओं पर मुसलमानों के हमले होने का हाल पढ़ने को मिला। हम ऊपर के नोट में कह चुके हैं कि हिंदू-मुसलमानों का मनोमालिन्य ही मूल है, अन्य बहाने केवल बहाने हैं। जब तक हिंदू ऐसे हिंसात्मक हमलों का जवाब आत्मरक्षा की अटल अजेय संघ-शक्ति के द्वारा नहीं दे सकते, भीरुता के भाव प्रकट करते हुए मुसलमानों के आगे गिड़गिड़ाना और 'जान बची लाखों पाए' का इष्ट-मंत्र जपना नहीं छोड़ते, तब तक उनका अपमान, अप्रतिष्ठा अवश्य ही अनिवार्य है। हम इतने भोले हैं कि औरों के स्वार्थसाधन-मूलक ज़बानी मेल की बातें सुनकर अपनी जाति के अधिकारों को तिलांजलि देने पर तुल जाते हैं। सहयोगी मुसलमानों के बड़े-बड़े नेताओं से लेकर एक बच्चे और जाहिल जुलाहे तक के हृदय में यह भाव बद्धमूल है कि वह पहले मुसलमान है, बाद को और कुछ। किंतु हमारे यहाँ हिंदूपन की, हिंदू-धर्म और हिंदू-आचार-विचारों की मिट्टी पलीद है। मुसलमानों को मज़हबी मामले में किसी का विरोध असह्य हो उठता है। वे समझते हैं, हम अपने धार्मिक अधिकार अक्षुण्ण रक्खेंगे, चाहे उससे औरों के अधिकार पर आँच भी आती हो। कारण, मुसलमानी मत ही एक सच्चा है, और अन्य सब मत कृत्रिम और झूठे। बस, इसी विश्वास की दृढ़ता से मुसलमानों में अपूर्व संगठन, अनुकरणीय सहानुभूति तथा अनंत धर्मानुराग दृष्टिगोचर होता है। इसी विश्वास के कारण मौ० महम्मदअली महात्माजी तक को मुसलमान देखना चाहते हैं, और ख़्वाजा हसन निज़ामी उन्हें ख़लीफ़ा के पूज्य पद का प्रलोभन देने में भी तनिक नहीं सकुचते। इसमें संदेह नहीं कि यह मज़हबी अंधविश्वास ही हिंदुओं पर हमला करने, काफ़िरों का क़त्ल करने, उन्हें बेरहमी से लूटने-पाटने एवं बुतशिकनी का सवाब कमाने के लिये उत्तेजना और उत्साह उनमें उत्पन्न करता है। इसी अंधविश्वास

का आश्रय लेकर अनेक ज्ञान-हीन मज़हबी दीवाने अथवा हिंदू-द्वेषी मुल्ला, मौलाना आदि समय पाकर अक्सर मुसलमान-मंडली को उन्मत्त बना देते हैं। कम-से-कम आजकल तो सभी जगह शुद्धि के कारण क्रुद्ध मौलाना लोग हिंदुओं के विरुद्ध युद्ध करने के लिये अनुरुद्ध क्षुब्ध मुसलमानों से दंगा कराते हैं। अस्तु। इधर हिंदुओं में धर्म का बंधन तोड़ फेकनेवाले लोग स्वदेश, स्वराज्य आदि के संरक्षक स्वयंसिद्ध नेता बनकर कहते हैं—हम पहले भारतीय हैं, फिर हिंदू। हिंदुओं के आचार-पालन के नियमों को कुसंस्कार और देश के सुधार में बाधा समझकर धता बतानेवाले इन नव्य हिंदुओं के धर्म का कुछ पता ही नहीं चलता। ये शुद्धि के हामी होकर भी गोमांस-भक्षक मुसलमान के साथ जेल-तीर्थ में रोटी-दाल खाना बड़ी बहादुरी का काम समझते हैं। देव-मूर्तियों की पूजा तो इनकी दृष्टि में अनावश्यक और असभ्यता का चिह्न है। इसी प्रकार के नामधारी हिंदुओं की करतूत से आज हिंदू-मंदिरों और देव-मूर्तियों का अपमान होना एक साधारण बात हो रहा है। हिंदू-समाज अपाहिज की तरह केवल हाय हाय करके चुप हो रहता है। हिंदुओं को जिस अवसर पर प्राण देकर अपने धर्म की रक्षा करनी चाहिए थी, उस अवसर पर वे केवल प्रतिवाद-सभा करके, व्याख्यानों में खूब क्रोध प्रकट करके, अपने कर्तव्य का पालन करते हैं! अगर आज किसी मसजिद का ऐसा अपमान किया गया होता, तो क्या परिणाम होता, यह बताने की कोई ज़रूरत नहीं है। हमारा मतलब यह नहीं है कि हिंदू भी धर्मांध बनकर मुसलमानों का अनुकरण करें। हमारा कहना यही है कि वे धर्म-रक्षा और आत्मरक्षा से ग़ाफ़िल न रहें, और दिखाऊ मेल की मरीचिका में मुग्ध होकर संगठन और शुद्धि के विरोधी न बनें। तभी हिंदुओं की हीनावस्था दूर होगी, देव-मंदिरों और मूर्तियों का अपमान करने की हिम्मत कोई न कर सकेगा।

× ×

१८. मतिराम के ग्रंथों की आवश्यकता

आजकल हम महाकवि मतिराम के ग्रंथों का संपादन कर रहे हैं। मतिराम के जो ग्रंथ छप चुके हैं, उनके संस्करण प्रायः अशुद्ध हैं। बड़ी छान-बीन से हम पाठ भी शुद्ध करते जाते हैं, फ़ुटनोट में पाठांतर भी रहे हैं। इस महत्त्व-पूर्ण कार्य की सफलता के लि मतिराम के हस्त-लिखित ग्रंथों की बड़ी आवश्यक है। जिन सज्जनों के पास रसराज, ललितललाम, मंजरी, छंदसार, अलंकारपंचाशिका, लक्षणशृंगार साहित्यसार आदि ग्रंथों की पुरानी हस्त-लिखित प्रति मौजूद हों, वे उदारता-पूर्वक उन्हें हमारे पास भेजने कृपा करें। इसके अतिरिक्त 'रसराज' पर कई प्राची टीकाएँ भी हुई हैं। उनकी भी आवश्यकता है, विशे करके सुकवि प्रताप साहि-रचित टीका की। जो हस्त लिपियाँ हमें प्राप्त होंगी, उन्हें कार्य समाप्त होते ही हम धन्यवाद-पूर्वक वापस कर देंगे। प्रतियाँ सु सुरक्षित रहेंगी। विश्वास है, हिंदी-प्रेमी हमारे इस नम्र निवेदन पर ध्यान देंगे, और इस कार्य को महत्त्व-पूर्ण समझकर हमारा हाथ बटावेंगे।

"भाषाभूषण" का भी संपादन किया जा रहा है उसकी जितनी टीकाएँ मिल सकेंगी, उतना ही संपादन कार्य सुचारु रूप से किया जा सकेगा। आशा है, हिंदी-प्रेमी इस ओर भी ध्यान देंगे।

× × ×

१९. कुछ जानने योग्य बातें

१—गत ४ वर्षों में भारत की गउओं की संख्या ४ लाख २० हज़ार कम हो गई है। फल यह हुआ कि सन् १९०२ में जहाँ विदेशों से ४० लाख पौंड जमा हुआ दूध आया था, वहाँ सन् १९२१ में ९० लाख पौंड आया।

२—भारतीय व्यवस्थापक सभा में एक प्रश्न के उत्तर में विदश प्रवासी भारतीयों की संख्या इस प्रकार बतलाई गई है—कनाडा में १,२००; आस्ट्रेलिया में २,०००; न्यूज़ीलैंड में ६०६; दक्षिण आफ़्रिका में १,६१,६३९; स्ट्रेट्स सेटलमेंट में ३०,०१,०४,६३८; फ़्रेंच मलाया में ३,०५,२१९; ब्रिटिश मलाया में ६१,८१९; सिंहल में ७,५०,०००; मारिशस द्वीपों में २,६४,५२७; केनिया में २२,८२२; ट्रिनीडाड में १,२१,४२०; ब्रिटिश गायना में १,२४,२३८; फ़िजी द्वीपों में ६०,६३४; जमैका में १८,४०१; अमेरिका में (सन् १९१० में थे) २,१७५। कुल २०,७२,७२५!

३—पार्लियामेंट के प्रश्नोत्तर से मालूम हुआ है—भारत में विदेशों से सन् १९२२-२३ में ११ लाख २० हज़ार गैलन शराब आई, जिसका मूल्य था २० करोड़ रुपए के लगभग! गत कई वर्षों में इसके टैक्स में गवर्नमेंट को २२ करोड़ १० लाख २ हज़ार ८० रुपए मिले!! इसमें से ७ लाख गैलन ग्रेट ब्रिटन से ही आई। एक गैलन ५ सेर का होता है।

४—भारतीय व्यवस्था-परिषद् में श्रीयुत डोराई स्वामी ऐयंगर ने भारत में भिक्षुक कितने हैं, यह प्रश्न किया था। इसके उत्तर में सर मालकम हेली ने बतलाया था कि संपूर्ण भारत में २८ लाख २ हज़ार ६४१ भिक्षुक हैं। इनमें से ब्रिटिश भारत में २० लाख १८ हज़ार ५०५ हैं।

५—जान पड़ता है, वैज्ञानिक लोग किसी काम को असंभव न रहने देंगे। एक पाश्चात्य वैज्ञानिक ने एक अद्भुत यंत्र की रचना की है। उसका नाम रक्खा है थाटोग्राफ़र। इसका नाम ही यह सूचित करता है कि इस यंत्र के द्वारा मनुष्य की चिंता का फ़ोटो लिया जा सकता है। किसी के मस्तिष्क में क्या चिंता आ-जा रही है, यह सिवा अंतर्यामी के और कौन जान सकता था? पर अब यह जानना सहज हो जायगा। फ़ोटो लेने की रीति भी अद्भुत और नई है। काले काग़ज़ के भीतर फ़िल्म भरकर उसे एक ज़र्द लिफ़ाफ़े में रखकर उसे आँखों के आगे दस मिनट तक लटकाए रखते हैं। उसी में मनुष्य के मन की बातों का चित्र फ़िल्म में उतर आवेगा। किसी कैमरे की ज़रूरत न होगी। पहले जिसके मन की बातों का चित्र लिया गया, उसने गुप्त रूप से एक काग़ज़ में लिख रक्खा था कि वह क्रूस के बारे में सोचेगा। उक्त नियम के अनुसार उसकी चिंताधारा का फ़ोटो लिया गया, तो देख पड़ा, फ़िल्म में क्रूस का चिह्न उठ आया है। उस आदमी ने दस मिनट तक क्रूस के बारे में सोचा था। फ़िल्म उसने छुआ भी न था। कई बार जाँच करके देखा गया, फल ठीक निकला। इस यंत्र का आविष्कार २३ वर्ष के परिश्रम का फल है। आविष्कारक का कहना है कि उन्होंने ३८ वर्ष की अवस्था से ६१ वर्ष की अवस्था तक इसमें परिश्रम करके सफलता पाई है। इस लगन और तत्परता को तो देखिए!

६—मनुष्य हवाई जहाज़ आदि पर चढ़कर शीघ्र-से-शीघ्र जाता-आता है। कई उड़ाके आश्चर्यजनक तेज़ी से पृथ्वी-परिक्रमा कर रहे हैं। किंतु पाठकों को सुनकर आश्चर्य होगा कि अब भी मनुष्य तेज़ चाल में साधारण पक्षियों से भी पीछे है। उत्तर मेरु के आस-पास के देशों में एक प्रकार के पक्षी रहते हैं। वे प्रतिवर्ष अंडे देने की जगह से २२,००० मील दूर जाकर भोजन की सामग्री प्राप्त करके लौट आते हैं!

७—योरप के एक ६२ वर्ष के बूढ़े की सनक तो देखिए! उसने एक पेड़ के ऊपर अपने हाथों एक मकान छोटा-सा बनाया है, और उसी में रहता है। घर के भीतर वर्तमान समय की सभी आराम और व्यवहार की चीज़ों का संग्रह किया गया है। यह घर ज़मीन से ३० फ़ीट की ऊँचाई पर बना है!

८—ईस्ट इंडिया कंपनी के अमल में रेशम भारत की पुण्य वस्तुओं में मुख्य समझा जाता था। किंतु इस समय यहाँ रेशम के व्यापार की दशा हीन हो रही है। इस समय दक्षिण मैसूर, उत्तर-पश्चिम बंगाल, काश्मीर और जंबू तथा उत्तर-पश्चिम पंजाब में यह पैदा होता है। अधिकांश, रेशम का व्यवहार हाथ के शिल्प में ही होता है। १९२२-२३ सन् में भारत से विदेश को १२ लाख पौंड कच्चा रेशम भेजा गया है। इसके पहले के ३ वर्षों का हिसाब करने से मालूम होता है कि प्रतिवर्ष जितना रेशमी सूत विदेश गया, उसकी अपेक्षा इस वर्ष उससे अधिक रफ़्तनी हुई। इस साल ३८ लाख १७ हज़ार रुपए का रेशम भेजा गया। इसके अलावा रेशमी कपड़े वग़ैरह २ लाख ४२ हज़ार रुपए का भेजा गया। उधर विदेश से भी रेशमी कपड़ा भारत को आया है। वह ३ करोड़ १५ लाख ५४ हज़ार रुपए का यहाँ मँगाया गया। इसमें से आधे के लगभग माल जापान से आया। मतलब यह कि अब भारत विदेश से रेशम अधिक मँगाने लगा है, और पहले के तरह स्वयं रेशम अधिक पैदा करने की कोशिश नहीं करता।

चित्र-चर्चा

१. मुख-पृष्ठ

पाठकों को स्मरण होगा, माधुरी के मुख-पृष्ठ की कल्पना के लिये १००) रु० के पुरस्कार की घोषणा की गई थी । उसके लिये कई चित्रकारों ने चित्र बनाकर भेजने की कृपा की । वे चित्र निर्णयार्थ श्रीयुत रामेश्वर-प्रसादजी वर्मा के पास भेज दिए गए थे । आपने जिस चित्र को पुरस्कार-योग्य सर्वश्रेष्ठ बतलाया, वह इस संख्या से मुख-पृष्ठ पर छापा जाता है । इसके चित्रकार हैं श्रीयुत रामेश्वरप्रसाद वर्मा के शिष्य श्रीयुत एन्० बी० सिंह । अन्य चार चित्र भी हमने क्रमशः २, ३, ४, ५ नं० के रख लिए हैं । उनके चित्रकारों को भी उत्साह-वर्द्धनार्थ कुछ पुरस्कार देने का निश्चय किया गया है । वे चित्र भी बारी-बारी से बदलकर मुख-पृष्ठ पर छपेंगे । उनके चित्रकार हैं क्रमशः श्रीयुत महावीरप्रसाद वर्मा ; श्रीयुत ललितमोहन सेन ; श्रीयुत काशिनाथ-गणेश खातू ; लहरी-स्टूडियो, बनारस ।

२. रंगीन चित्र

पहला चित्र श्रीगणेशजी का है । प्राचीन चित्र है । श्रीयुत रामेश्वरप्रसाद वर्माजी की कृपा से यह प्राप्त हुआ है । चित्र का सौंदर्य देखने ही योग्य है ।

दूसरा चित्र है वर्षा-विहार । चित्रकार हैं श्रीयुत रामेश्वरप्रसादजी वर्मा । नायक नायिका को वर्षा का मनोहर दृश्य दिखा रहा है । थोड़े-से स्थान में बहुत कुछ दिखा देने की कारीगरी के अलावा इसमें नायक-नायिका के सौंदर्य और हृद्गत भाव का प्रदर्शन भी बड़ी खूबी से किया गया है ।

तीसरा चित्र है राधा-कृष्ण । श्रीयुत रामेश्वरप्रसा वर्माजी ने इसे भी बनाया है । वर्षा-काल है । पा गिर रहा है । कृष्णचंद्र अपनी कमली उड़ाकर छा लगाए इधर राधाजी को भीगने से बचा रहे हैं, उध उनके हृदय को प्रेम-रस से शराबोर कर रहे हैं । पाठ देखें, और मुग्ध हों ।

चौथा चित्र—जो असल में एक व्यंग्य-चित्र है—बुढ़ापे श्रृंगार भी दर्शनीय बना है । इसके बनानेवाले हैं श्रीयु चौधरी रमाशंकरदत्त । ऐसी बुढ़ापे में भी बनी-ठनी रह वाली स्त्रियाँ कहाँ नहीं हैं ?

३. व्यंग्य-चित्र

पहला व्यंग्य-चित्र है कलिकाल के कवि । इसमें उ आधुनिक कवियों का स्वरूप अंकित किया गया है, ज काव्य के रीति-ग्रंथ गुरु से नहीं पढ़ते, न श्रेष्ठ कविताओं अध्ययन, मनन, परिशीलन करने की ही आवश्यक समझते हैं, किंतु जब लिखने बैठते हैं, तब पृष्ठ-के-पृ घसीटकर पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशनार्थ भेज देते हैं । उनक रचना में भाव का अभाव और भाषा का सत्याना होने पर भी वे अपने को कभी स्वयं और कभी अप इष्ट-मित्रों की मार्फ़त युगप्रवर्तक महाकवि प्रसिद्ध क में नहीं हिचकते । चित्रकार हैं श्रीयुत मोहनलाल मह गयावाल । आपके व्यंग्य-चित्र विशेषता-पूर्ण बन लगे हैं । आशा है, आप उत्तरोत्तर उन्नति कर जायँगे ।

हिंदी-साहित्य में एक अनूठी पुस्तक—हिंदुओं के समस्त त्यौहारों का
मार्मिक विवेचन करनेवाली—

व्रतोत्सव-चंद्रिका

प्रत्येक हिंदी-भाषा-भाषी चिरकाल से इस बात का खेद के साथ अनुभव कर रहा था कि राष्ट्र-भाषा 'हिंदी' के साहित्य-कोष में हिंदुओं के समस्त त्यौहारों का विवेचन करनेवाली कोई भी पुस्तक नहीं थी। यों करने को सभी लोग संवत्सर-प्रतिपदा, गण-गौरी, अरुंधति-व्रत, रामनौमी, हनुमज्जयंती, परशुराम-जयंती, अक्षय-तृतीया, नृसिंह-चतुर्दशी, वटसावित्री, गंगादशहरा, विष्णुशयनी, चातुर्मास्य, नागपंचमी, श्रावणी-राखी, जन्माष्टमी, हरितालिका—आदि व्रतोत्सवों को परंपरागत करते ही हैं, परंतु यह त्यौहार क्यों मनाया जाता है—यह नहीं जानते।

व्रतोत्सव-चंद्रिका में हिंदुओं के सब त्यौहारों का पूरा-पूरा विवेचन किया गया है। यथा—तिथि-निर्णय, त्यौहार व व्रत के पूजन की विधि, त्यौहार-संबंधी कथा, त्यौहार की प्रवृत्ति का कारण, लौकिक किंवदंतियाँ, देश-भेदों से त्यौहार मनाने के प्रकार, त्यौहार धार्मिक हैं या राष्ट्रीय अथवा सामाजिक—इसका वर्णन और शिक्षा।

प्रत्येक त्यौहार को तीन प्रकार से लिखा है। यथाः—(१) वेद, वेदांग, पुराण और धर्मशास्त्रों में कहाँ-कहाँ क्या-क्या लिखा है, (२) अब त्यौहार यू० पी०, सी० पी०, पंजाब, बंगाल, बिहार, राजस्थान, उड़ीसा, मदरास, दक्षिण और गुजरात आदि देशों में किस प्रकार से मनाया जाता है; और (३) वर्तमानकाल में इसके मनाने से, जाति का तथा हमारा क्या लाभ है।

यह एक ही ऐसा ग्रंथ है, जिसके घर में रहने से आपके बच्चों के अंतःकरणों में धार्मिक भाव जागृत रहेंगे, आर्य-सभ्यता के गूढ़ तत्त्व आचरण रूप से आवेंगे, मातृ-पितृ और ईश्वर तथा देश-भक्ति का भाव दृढ़ होगा तथा अपने पूर्वजों में श्रद्धा बढ़ेगी। युवकों के अंतःकरणों में सामाजिक भावों की उत्तमता प्रवेश करेगी और एकता, देश-प्रेम, भ्रातृ-भाव आदि शुभ गुणों का संग्रह होगा। वृद्धों के अंतःकरणों में ऐहिक तथा पारलौकिक स्वतंत्रता की अभिलाषा बढ़ेगी और राष्ट्रीय आंदोलनों की उलझी हुई गुत्थियाँ सुलझेंगी। स्त्रीवर्ग में बालिका, युवती और वृद्धाओं को अपने कर्तव्य का ज्ञान होगा तथा वे सीता-सावित्री आदि के आदर्श-पथ का अनुसरण करके सच्ची गृहिणी बनेंगी।

सोने में सुगंध यह है कि सनातनधर्म के सुप्रसिद्ध वक्ता पूज्य श्रीस्वामी दयानंदजी महाराज ने इस ग्रंथ की मौलिकता तथा उपयोगिता स्वीकार करके अपनी लेखनी से एक अति मनोहर "मुख-बंध" भी लिखा है।

रॉयल आठपेजी साइज़ के ३७२ पृष्ठों में पुस्तक की समाप्ति हुई है और सुंदर जिल्द बँधी हुई का मूल्य केवल ३) है। एक से अधिक पुस्तक के खरीदार को डाक-महसूल माफ़।

मिलने का पताः—

पं० श्रवणलाल महामहोपदेशक,
झालरापाटन (राजपूताना)

६५
२००

सावधान ! धोखे से बचो ! असली कशमीरी कोकशास्त्र हमारे सिवा और कहीं से नहीं मिलेगा। इस हमने सर्व-साधारण के सुभीते के लिये यह विज्ञापन दिया है। अन्य विज्ञापनदाता जो विज्ञापन देते हैं उनमें न तो ८४ आसनों की तसवीरें हैं और न ८४ आसनों के हाल ही दर्ज हैं। इसलिये उनके धोखे से बचें।

यदि आपको नक़ली ही पुस्तक लेनी है तो हम केवल १) रु० में कशमीरी कोकशास्त्र देंगे।

इस कोकशास्त्र की ८४ रंग-बिरंगी स्त्री-पुरुषों की तसवीरें देखकर आपका दिल फड़क न उठे तो कहना कि विज्ञापन देनेवाले झूठे ही होते हैं।

कशमीरी
सचित्र असली पुराना कोकशास्त्र

इसके चि
बंबई, कलक
जयपुर, पूना के
भारतीय चि
कारों की का
गरी का एक
चित्र नमूना है।
अभी से दो पुस्त
मँगा लो, अन्य
पछताना पड़

श्रीमान् कोका पंडित महामंत्री
महाराजा कशमीर जिसमें

पद्मिनी, चित्रिणी, शंखिनी, हस्तिनी तथा शशक, वृषभ, मृग, अश्व

इन चारों प्रकार की स्त्रियों तथा पुरुषों की पहचान, उनका वर्णन, स्त्री-पुरुष का जोड़ा, स्त्री को आयु-भर स्वाग सुंदर, सौंदर्य की देवी और अपनी आज्ञा माननेवाली बनाए रखना, मन-चाही सुंदर तथा बलिष्ठ संतान उत्प करना, गर्भ में पुत्र-पुत्री की अथवा नेक व बद की पहचान, स्त्री-पुरुषों के जोड़ों का मिलान, संतान उत्पन्न न हो तो ज़रूर हो, पूरे सौ वर्ष तक हृष्ट-पुष्ट, सुंदर और स्वस्थ बने रहना, कुमारी-भेद और लक्षण, प्रेम, प्रीति, पर स्त्री-पुरुष का परस्पर संबंध, स्त्रियों का रजोदर्शन अर्थात् ऋतु, उसका सामयिक प्रभाव, सहवास, विलासियों के लिये सहवास के नियम, गर्भाधान, चौरासी आसन, गर्भपरीक्षा, गर्भोत्पत्ति, गर्भवृद्धि, गर्भ रोकना, प्रसव औ शिशुपालन, स्त्रियों के शृंगार, उनके संबंध में समस्त यौवनवर्द्धक आनंददायक मसाले, स्त्री-पुरुषों के कोकशास्त्र संबंधी रोग और उनकी अद्भुत गुणकारी औषधियाँ, कामोद्दीपक दवाएँ, वशीकरण, स्त्री-पुरुषों की ८४ तसवीरें तथा ८४ आसनों के दिलचस्प हालात दर्ज हैं। यही नहीं, स्त्री तथा पुरुषों की गुप्त बीमारियाँ आदि कई एक ऐसी हैं, जो कि यहाँ लिखना उचित नहीं ; पाठक समझ लें। क़ीमत ३) दो के ख़रीदार से डाक महसूल आदि ।॥) माफ़

नई रोशनी की नई और अद्भुत पुस्तकें

स्वदेशी ! स्वराज्य ! ! स्वाधीनता ! ! !

महात्मा गाँधी का कहना है कि यदि विलायत से आनेवाली वस्तुएँ भारत में ही बनने लग जायँ, तो समझो, तीन-चौथाई स्वराज्य हमने हासिल कर लिया। इस बात को शिरोधार्य करके हमने नीचे-लिखी पुस्तक छपवाई है। इस पुस्तक के द्वारा कई आदमी धनी बन गए।

पाँच सौ व्यापार अर्थात् शिल्पसागर

में अँगरेज़ी-देशी साबुन बनाने के नुसख़े, बाल उड़ाने का साबुन, पौडर, अर्क़, बाल काले करने के विचित्र ख़िज़ाब, घड़ीसाज़ी, फ़ोटोग्राफ़ी, तारबर्क़ी, डॉक्टर का काम, दियासलाई, रबड़ का छापा, मोहरें, गोंद, क़लमदान बनाना, काग़ज़, रीन, लोहे के बटन, चाँदी, सोने का वृक्ष बनाना, जादू की क़लम, तिलस्मी साँप, बर्क़ी फ़ीता, बिजली का यंत्र, जादू की अँगूठी, गंधक का गिलास, पारे का कटोरा, खाँड़ की चूड़ियाँ, गिलटसाज़ी, चाय की टिकिया, १ मिनट में सोडावाटर बनाना, काली स्त्री का रंग गोरा करना इत्यादि-इत्यादि अनेक प्रकार के पूरे पाँच सौ हुनर दर्ज हैं, एक दूसरे से बढ़-चढ़कर निकलेगा। इन सब ख़ूबियों के होते हुए इसका मूल्य केवल १॥)

पुराना मिस्र का जादू

(मूसाफ़रऊन के समय की विचित्र बातें प्राचीन समय के मिस्र देश की एक हस्त-लिखि जादू की पुस्तक का अनुवाद) मू० १॥≡)

सच्ची करामात—यह पुस्तक मिस्मरेज़म-हिप्न टिज़म, मोहन वशीकरण आदि की है। यह जर्मन, अमे रिका आदि की सैकड़ों पुस्तकों का सार है। मूल्य ३)

यक्षिणीभैरव-साधनम्—यह भी चीन और भ देश के यंत्र-मंत्र, जादू-टोना, योग-साधन आदि की पुस्तक है। २०) रुपया तक की बिकी है। हम इसे २॥) में बेचते हैं।

स्त्रीचिकित्सा—स्त्रियों के तमाम गुप्त रोगों की रामबाण औषधियाँ दर्ज हैं मू० १॥)

गुप्त चिकित्सा—स्त्री-पुरुषों के तमाम गुप्त रोगों का अचूक इलाज मू० १॥)

ज्योतिष रत्न-भंडार १), बूटीप्रकाश १॥), इल्म मुफ़्ती १॥), वृक्षावलि १॥), गुप्ततंत्र ॥।≠), इँगलिश टीचर १॥); ≠) का टिकट भेजकर सूचीपत्र मुफ़्त मँगा लें।

हैंड-लैंप

पाकेट-लैंप

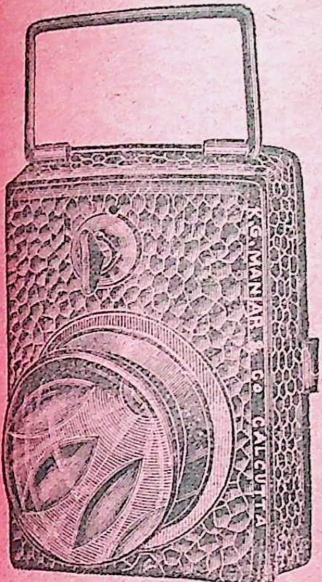

हैंड-लैंप—हरीकेन की तरह हाथ में लटकाने या दीवार में लगाने का काम देगी। रोशनी इनकी इस प्रकार है जैसे मोटरों या जहाज़ों की सर्चलाइट पड़ा करती है। दाम ७), १०) मय पूरा सामान।

पाकेट-लैंप—इस लैंप के लिये न तेल की ज़रूरत न दियासलाई की। बटन ज़रा दबाया कि रोशनी हो जाती है। आँधी-पानी इसमें असर नहीं करता है। जेब में रक्खें या हाथ में, आग का ज़रा भी डर नहीं। इसमें बढ़िया बत्तियाँ और बढ़िया बैटरी लगी हैं। क़ीमत मय पूरे सामान के २॥), ३॥) बढ़िया ४)

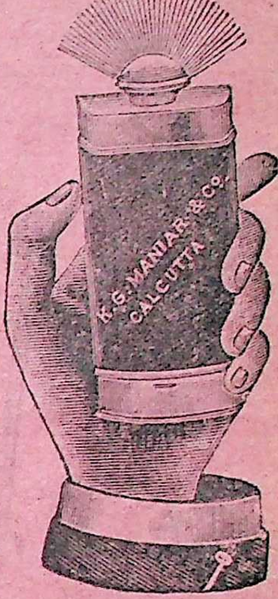

बिजली के बटन

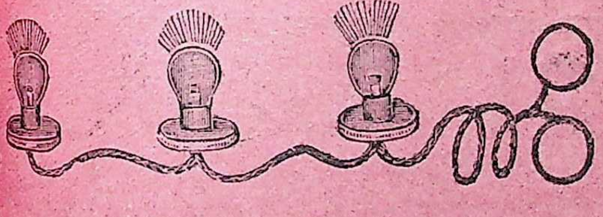

आप इनकी बैटरी को पाकेट में रख लीजिए, तथा जब जलाना चाहें झट से रिंग को बैटरी में छुआया कि बटन जल उठेंगे और हीरे के माफ़िक़ क़मीज़ में चमकने लगेंगे। क़ीमत १ सेट ८)

पाँच रुपए तक या इससे ज़्यादा माल मँगानेवाले को एक सीगार लैंप मुफ़्त।

बिजली का फूल

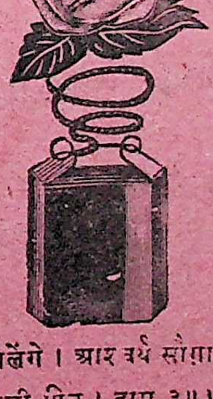

इसको श्रीमान् कोट पर और औरतें साड़ी तथा बालों पर लगाती हैं। बग़ैर रोशनी के भी सुंदरता की शोभा दुगनी करते हैं। ज़रा बटन दबाने की बात है। सभा में होंगे तो सभा हैरान होगी कि चाँद कहाँ से निकल आया, बिना बताए कोई भी न जान सकेगा। फूल रंग-बिरंगे मिलेंगे। आश्चर्य सौग़ात है। फूल ख़रीदें या हीरोंवाली पिन। दाम ३॥), ४), ७)

Barman's Advg: Agency,

के. जी. मनियर ऐंड कं० ५५, कैनिंग स्ट्रीट कलकत्ता

"अरे, तू इतनी लंबी हो गई"

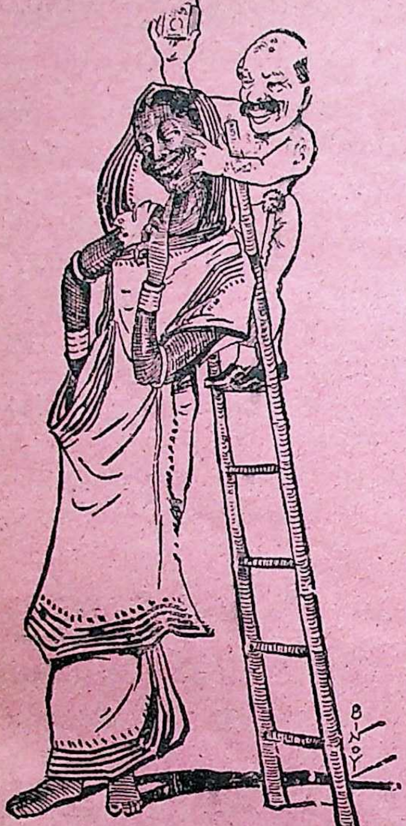

"हिमानी"

इस्तेमाल करने का अच्छा तरीक़ा।

भारतीय सुंदरता की कुलफ़ी

इसके व्यवहार करने से चेहरा मुलायम, ठंढा, साफ़ और खूबसूरत रहता है और साथ-ही-साथ मुहासे, चेचक के दाग़ आदि भी नाश हो जाते हैं। इसमें किसी तरह का दूषित पदार्थ यानी चर्बी, वैसलीन आदि नहीं हैं।

सुंदरता की कुलफ़ी हर बिसातखाने और केमिस्टों के यहाँ ॥) में मिलती है।

खुशबू की बहार

अद्वितीय केश-तैल "निरुपमा"

इसमें किसी तरह का खानिज तैल नहीं मिला है, जो आजकल के तैलों में मिलाया जाता है। अच्छी जड़ी-बूटियों से बंगाल परफ़्यूमरी इंडस्ट्रियल वर्क्स में बना है।

मूल्य बड़ी शीशी १) मात्र

एक दर्जन ९॥) डा० व्य० अलग

रूमाल के लिये "कुमकुम"

की परीक्षा कीजिए

कशमीरी स्वदेशी खुशबू, टिकाऊ और मनोमुग्धकर है।

एक आउंस शीशी	१।)	स्टैंडर्ड
" " "	२।)	रॉयल
हेअर लोशन	१)	

१६३/१८१

Barman's Service.

सोल एजेंट:—

शर्मा बनर्जी ऐंड को०, ४३, स्ट्राण्ड रोड, कलकत्ता।

सौंदर्य !

संसार में एक अद्भुत जादू है; प्रत्येक स्त्री तथा पुरुष सुंदर बनने का इच्छुक है।

बिजली की गोलियाँ—केवल पंद्रह दिन सेवन करने से नीचे लिखी कुल बीमारियाँ दूर होकर नया और पुष्ट वीर्य उत्पन्न होता है, खून बढ़ता है और फिर किसी तरह की शिकायत नहीं रहती। स्वप्न-दोष, धातु का पतलापन, धातु-क्षीणता, बदन की सुस्ती, आलस, इंद्रियों की शिथिलता, चेहरे पर पीलापन छा जाना, आँखों की रोशनी तथा स्मरण-शक्ति का न्यून हो जाना, धातु का पतला पड़ जाना, थोड़ा चलने से थक जाना, भोजन के बाद गले का जलना, खट्टी डकार आना, सिर का दर्द करना, लिखने-पढ़ने में सिर का घूमना, आँखों के आगे अँधेरा छा जाना, नामर्दी, हौलदिल, हाथ-पैरों का काँपना, चित्त का उदास रहना और नई जवानी में बुढ़ापे की-सी हालत इत्यादि हर तरह की बीमारियाँ इस दवा से शर्तिया दूर हो जाती हैं। मूल्य २)

आदत से लाचार होकर, जवानी के जोश से भरकर, आनंद की उमंग में आकर, तथा कुसंग में पड़कर यदि आप सब तरह से अपने को सत्यानाश कर चुके हों, जिसका पछतावा हर समय पर खटकता हो, तो हमारा तत्काल गुणकारी "कामदेव-तैल" मँगाकर मालिश कर देखिए। जादू-सा चमत्कार ३ ही रोज़ में दिखला देगा। दाम १ शीशी २॥)

अगर आपका वीर्य दूषित हो गया हो, बदन में शिथिलता आ गई हो या सर में चक्कर आते हों और हृदय धक-धक करता हो, या किसी काम में मन न लगता हो, एवं इस भयानक रोग की चिकित्सा करवाते डॉक्टर और वैद्यों की दवाओं से हार मान चुके हों, तो एक बार परीक्षा के निमित्त ही सरकार से रजिस्ट्री की हुई, तत्काल गुणकारी "बिजली की गोलियाँ" अवश्य ही मँगाकर सेवन कीजिए। दाम सिर्फ़ १॥)

> "लुधियाना के भारत-मित्र औषधालय की औषधियाँ सचमुच अद्भुत गुणकारी और शीघ्र असर करनेवाली होती हैं।"
>
> **स्वामी दर्शनानंद सरस्वती, गुरुकुल सूर्यकुंड, बदायूँ।**

नोट—स्वास्थ्य का मुकम्मिल बक्स, जिसमें चार दर्जन गोलियाँ और मालिश के लिये एक शीशी शाही तिला भी है। मूल्य ५॥)

काली-नागिन पुष्प-मालती तेल ने अपने अपूर्व गुणों से संसार को चकित कर दिया है। बड़े-बड़े नामी और खुशबूदार तेल भी इसके आगे फीके पड़ गए हैं। इसकी खुशबू इतनी मधुर, अनूठी और चित्ताकर्षक है कि एक बार का लगाया हुआ पूरे २४ घंटे तक तरह-तरह की अनूठी खुशबू दिया करता है और लगानेवाला मस्त होकर अपने आपको भूल जाता है। **काली-नागिन** के सेवन से बाल भौंरे के समान काले, चिकने, मुलायम, लंबे और घुँघरवाले बन जाते हैं। दिमाग़ की कमज़ोरी दूर होकर मस्तक तथा आँखों पर हर समय ब[illegible] तरी बनी रहती है। दाम १ शीशी १।) रुपया

सुपारीपाक

स्त्री-रोग के प्रधान लक्षण ये हैं—मासिकधर्म साफ़ और समय पर न होना, ऋतु के समय दर्द होना, गर्भाशय से सफ़ेद, नीला, पीला, लाल और बदबूदार पानी निकलना, जी मचलाना, कमर और पेड़ू में दर्द होना, गर्भ का न ठहरना, आलस्य, मंदाग्नि, अरुचि इत्यादि। गर्भाशय के कमज़ोर पड़ जाने से गर्भ नष्ट हो जाता है, अथवा सतमासा, अठमासा लड़का पैदा होकर कमज़ोरी के कारण दो-चार दिन में ही मर जाता या मरा हुआ ही पैदा होता है, जिससे स्त्री की जान पर आ बनती है। इस दवा से ऊपर लिखी शिकायतें मिट जाती हैं और गर्भिणी का गर्भ पुष्ट होकर रह जाता है। स्त्री ताक़तवर हो जाती है। बच्चा भी हृष्ट-पुष्ट उत्पन्न होता है। दाम फ़ी बक्स २॥)

काली-नागिन ख़िज़ाब

(हिंदुस्थानी बेगमों और महारानियों ने ही नहीं, विलायत की मेमों ने भी सेवन किया है)

हमारा ईजाद किया हुआ खुशबूदार काली-नागिन ख़िज़ाब पाँच मिनट में सफ़ेद बालों को भौंरे के समान काले, चमकीले, रेशम के समान अति सुंदर कर देता है। बालों को किसी प्रकार की हानि नहीं होती। जिसने एक बार मँगवाया, वह सर्वदा के लिये ग्राहक नियत हो गया। हमारा पूर्ण विश्वास है कि इस ख़िज़ाब से अधिक लाभदायक अन्य कोई ख़िज़ाब आज तक नहीं बना। क़ीमत फ़ी शीशी १॥) डाक-महसूल ।≠)

सफ़ाई का दारोग़ा—यदि आप चाहते हैं कि किसी स्थान पर सारी उमर बाल पैदा न हों, तो इसे सेवन करें। इसके सेवन से न दर्दसरी करनी पड़ती है, न किसी प्रकार का दाग़ अथवा जलन ही होती है। तीन-चार बार लगाने से सफ़ाई हो जाती है। मूल्य ३॥)

तिब्बत, हिमालय, नैपाल, काबुल, कश्मीर की वस्तुएँ

कस्तूरी (मुश्क)	काबुलीहींग तो० ४०	कश्मीरी केसर
महाराजाकस्तूरी ५०) तो०	नं० १ फ़ी बक्स ८)	नं० १ फ़ी तो० ५)
नैपाली कस्तूरी ४०) ,,	नं० २ ,, ,, ५)	नं० २ ,, ,, ४)
तिब्बती कस्तूरी ३२) ,,	नं० ३ ,, ,, ३)	नं० ३ ,, ,, ३॥)
हिमालय कस्तूरी २[illegible]) ,,	नं० [illegible] ,, ,, २॥)	नं० ४ ,, ,, २॥)

पता— [illegible] औषधालय [illegible] लुधियाना (पंजाब)

५०००) रु० (पाँच हज़ार रुपया) के इनाम

में से यदि आपको लेना है तो शीघ्र नियमावली

मुफ़्त मँगा लीजिए

बिजली का थैला

वास्तव में यह थैला "यथानामा तथागुणः" केवल २४ घंटे के इस्तेमाल करने से ही इंद्रिय-संबंधी रोग, सुस्ती, नपुंसकता, टेढ़ापन आदि दूर करके आश्चर्य-जनक प्रभाव दिखलाता है। शक्तिहीन पुरुषों को पुनः नवयुवक बना देता है, इसमें लेप, सेंक आदि की भी आवश्यकता नहीं। मूल्य २) डाक-व्यय-रहित।

यह लॉटरी नहीं है, हर शख़्स को १००) रु० से लेकर १) रु० तक के इनाम दिए जायँगे। जो हमारे यहाँ की जादू-समान गुणकारी औषधियाँ १००) रु० से १) रु० तक की ख़रीदेंगे। आम के आम गुठलियों के दाम।

कामसुंदरी

कोष्ठ-बद्धता जो सर्व रोगों की ज
है, उसे जड़ से दूर करके ग्र
पवित्र और शुद्ध रक्त पैदा करके देह
सुंदर और हृष्ट-पुष्ट करती है। प्रमे
धातुक्षीण, स्वप्नदोष, मस्तिष्क व शरी
संबंधी निर्बलता को दूर करके व सर्व
संबंधी विकारों को नष्ट करके वृद्ध
भी नवीन जीवन देती है। इसे पार
कहें तो ठीक है—मूल्य ३२ गोली १)

Rs. 2/4/ याद रखिए यह समय फिर नहीं मिलने का। A

६०
२१२ पता :—योगी औषधिमंदिर, बज़रिया, फ़र्रुख़ाबाद (यू० पी०)

बिजली से क्या नहीं हो सकता

संसार में बिजली के बल से सब काम बहुत आसानी के साथ बात-की-बात में हो जाते हैं। पहले डॉक्टर लोग बिजली के बल से शरीर के दर्द को आराम करते थे, और शरीर के भीतरी भाग को बिजली के यंत्र से देखा करते थे। परंतु हाल ही में एक अँगूठी भी ऐसी बनाई गई है कि इसके बीच में बिजली बैठाई हुई है। अँगूठी को पहनने से इसकी बिजली शरीर में इस तरह प्रवेश कर जाती है कि ज़रा भी मालूम नहीं होता और शरीर में प्रवेश कर खून में मिले हुए विषैले रोग फैलानेवाले कीड़ों को मार देती है जिससे रोग बहुत जल्द आराम हो जाता है। इसको बाईं हाथ की उँगली में पहनना चाहिए। इससे सभी प्रकार के रोग आराम होते हैं। बूढ़ा, जवान, बच्चा, सभी को समान फ़ायदा करती है। जहाँ पर हैज़ा, प्लेग, चेचक, बुख़ार फैला हो वहाँ पर सभी को चाहिए कि अपने-अपने उँगली में इसको पहन लें। इससे बीमारी होने का भय नहीं रहता। हैज़ा, प्लेग, ज्वर, अँतरा, स्वप्न-दोष, प्रदररोग, बवासीर में यह विशेष फ़ायदा करती है। मूल्य भी बहुत कम याने एक का १।) डाक-महसूल १ से ८ तक का ।=)

साथ ही इनाम भी पाइएगा

१ अँगूठी मँगाने से १ जर्मन बायसकोप इनाम। २ अँगूठी मँगाने से १ सेट असल विलायती सोने का कमीज़ का बटन इनाम। ४ अँगूठियाँ मँगाने से १ सुंदर जेबी घड़ी इनाम, गारंटी ३ साल की। ८ अँगूठियाँ मँगाने से १ सुंदर आठकोना हाथ-घड़ी इनाम में मुफ़्त भेजेंगे। गारंटी ४ वर्ष की है।

Burman's Advg. Serv.

१६२ पता—सोल एजेंट, टी० एच० टी० कं०, पोस्ट बक्स नं० ६७१०, कलकत्ता

५०००) रु० की चीज़ ५) रु० में

मेस्मिरेज़म विद्या सीखकर धन व यश कमाइए

मेस्मिरेज़म के साधनों द्वारा आप पृथ्वी में गड़े धन व चोरी गई चीज़ का क्षण-मात्र में पता लगा सकते हैं । इसी विद्या के द्वारा, मुक़द्दमों का परिणाम जान लेना, मृतक पुरुषों की आत्माओं को बुलाकर वार्तालाप करना, बिछुड़े हुए स्नेही का पता लगा लेना, पीड़ा से रोते हुए रोगी को तत्काल भला-चंगा कर देना, केवल दृष्टि-मात्र से ही स्त्री-पुरुष आदि सब जीवों को मोहित एवं वशीकरण करके मनमाना काम कर लेना आदि आश्चर्य-प्रद शक्तियाँ आ जाती हैं । हमने स्वयं इसी विद्या के ज़रिए लाखों रुपए प्राप्त किए और इसके अजीब-अजीब करिश्मे दिखाकर बड़ी-बड़ी सभाओं को चकित कर दिया । हमारी 'मेस्मिरेज़म विद्या'-नामक पुस्तक मँगाकर आप भी घर बैठे इस अद्भुत विद्या को सीखकर धन व यश कमाइए । डा० म० सहित मूल्य सिर्फ़ ५) तीन का मूल्य मय डाक-महसूल १३)

हज़ारों प्रशंसापत्रों में से दो

(१) बाबू सीतारामजी बी० ए०, बड़ा बाज़ार, कलकत्ता से लिखते हैं—"मैंने आपकी "मेस्मिरेज़म विद्या" पुस्तक के ज़रिए मेस्मिरेज़म का ख़ासा अभ्यास कर लिया है । मुझे मेरे घर में धन गड़े होने का मेरी माता द्वारा दिलाया हुआ बहुत दिनों का संदेह था । आज मैंने पवित्रता के साथ बैठकर अपने पितामह की आत्मा का आह्वान किया और गड़े धन का प्रश्न किया । उत्तर मिला—'ईंधनवाली कोठरी में दो गज़ गहरा गड़ा है' । आत्मा का विसर्जन करके मैं स्वयं खुदाई में जुट गया । ठीक दो गज़ की गहराई पर दो कलशे निकले । दोनों पर एक-एक सर्प बैठा हुआ था । एक कलशे में सोने-चाँदी के ज़ेवर तथा दूसरे में गिन्नियाँ व रुपए थे । आपकी पुस्तक "यथानामा तथागुणः" सिद्ध हुई ।"

(२) पं० रामप्रसादजी रईस व जमींदार, धामनगाँव (धारा) हाट इंदौर से लिखते हैं—"हमने आपकी "मेस्मिरेज़म विद्या" पुस्तक को पढ़कर अभी थोड़ा-सा ही अभ्यास किया था कि हमारे घर में चोरी हो गई । ५०००) का माल चोरी गया । एक आदमी पर संदेह हुआ । उसने पुलिस के धमकाने पर भी न बताया । आख़िर हमने उसे हाथ के 'पासों' द्वारा सुलाया और फिर पूछा, सब भेद खोल दिया । असल चोर दूसरे गाँव के बताए । उस गाँव में पुलिस ने जाकर तलाशी ली, तो बात सच निकली । ३०००) का माल तो वहीं मिल गया । उस दिन से गाँव के सब लोग मेरी बड़ी इज़्ज़त करते हैं और मुझे सिद्ध समझते हैं । मैं अब आपके दर्शनार्थ आना चाहता हूँ ।"

मँगाने का पताः—डॉक्टर जे० पी० शास्त्री एल्० एम्० ए०,
मेस्मिरेज़म हाउस, नं० ८ अलीगढ़ ।

जादू की चकित करनेवाली खेलें!

ये वह खेल हैं जिन्हें देखकर राजे, महाराजे, रईस और अमीर चकित होकर खेलाड़ी को रुपयों से भरपूर कर देते हैं। आप ये खेल खुद करना चाहते हैं, तो इन खेलों को शीघ्र मँगाइए। इनके भेद भी अन्य मनुष्य नहीं जान सकते। जिस में आप ये खेल दिखावेंगे, देखनेवाले अति प्रसन्न होंगे। खेल करने की विधि छपी हुई हरएक खेल के साथ भेजेंगे, जिसे आप उसी समय सीख जायँगे। २) से कम का कोई पार्सल न भेजेंगे। अधिक खेल मँगाने से डाक-व्यय माफ़।

खेल-नं० १–यह एक रूमाल है, जिसमें सबके सामने ग्लास रक्खा जाता है और झिटका देने से ग़ुम हो जाता है, फिर उसी रूमाल में से निकलता है। मूल्य १॥)

खेल-नं० ३–यह एक ताश का नहला है। सबको दिखला दो। उसी वक़्त नहले का पंजा बन जायगा। मूल्य ॥)

खेल-नं० ४–यह दियासलाई की डिब्बी है, जो भरी हुई है। मगर इसका तमाशा करनेवाला इसको भरी हुई दिखलाता है और इसी को उसी वक़्त ख़ाली दिखा देता है। मूल्य केवल ।॥)

खेल-नं० ५–यह पत्ते हैं जो तीन हालतें बदलते हैं। पहली बार हाथ फेरने से इक्के, दूसरी बार ख़ाली और तीसरी बार हाथ फेरने से पंजे बन जायँगे। मूल्य ॥)

खेल-नं० ६–सबको अट्ठे दिखाकर हाथ फेरो, सफ़ेद पत्ते हो जायँगे। फिर हाथ फेरने से अट्ठे बन जायँगे। मूल्य ॥)

खेल-नं० ७–यह एक टीन की मेज़ है। एक ताश का पत्ता जलाकर या फाड़कर इसमें रख दें, फ़ौरन् साबुत पत्ता हो जायगा। मूल्य केवल १॥) खे० नं० ३२, ३॥) यंत्र में से ताश खुद-बखुद नि० है।

खेल-नं० ८–यह ताश है जिसे दर्शकों को अलग पत्ते दिखाकर फेंटना शुरू करें, जो खींचने से बाजे की सूरत हो जायगी। मू०॥)

खेल-नं० १०–खेल करनेवाला ताश के कुछ पत्ते दिखाएगा जो हाथ फेरने से छोटे हो जायँगे। फिर चौथाई, फिर आठवाँ हिस्सा, फिर बिलकुल ग़ायब हो जायँगे। मू० २)

खेल-नं० ११–यह ताश के एक रंग की बेगम है, जो सबके सामने दूसरे रंग की बेगम बन जाती है। मूल्य केवल ॥)

खेल-नं० १२–यह सुर्मेदानी की शकल की डिबिया है। इसके भीतर एक गोला है। गोले को निकालकर फेंक दिया जाय तो हुक्म करने से उसके भीतर से कभी ग़ायब कभी बरामद हो जाता है। मूल्य १॥) नं० ३० ख़ा० डब्बे से कबूतर निकालना २)

खेल-नं० १३–यह एक डिबिया है, जिसमें सबके सामने पूरे ताश का बंडल डाल दो और फिर खोलने से ताश की जगह रूमाल निकलेंगे। मूल्य १॥)

खेल-नं० १४–ये दो जुड़े हुए रूमाल हैं, जो एक रंग के हैं। इसके ऊपर अगर हाथ फेरें, तो फ़ौरन् रंग बदल जायँगे। लोग आश्चर्य करेंगे। मूल्य ५) नं० ३४ रु० में से रु० ग़ुम हो जावे १)

खेल-नं० १५–समूचा ताश हाथ में है। दूसरा आदमी कोई पत्ता देख ले। फिर वह पत्ता ताश में रख दे और वही आदमी उसी पत्ते को आवाज़ दे। पत्ता फ़ौरन् कूदकर बाहर निकल आवेगा। मू० १) नं० ३१ ख़ाली रूमाल से दरजनों अंडे निकालना ३॥)

खेल-नं० १६–यह एक लकड़ी का बैल है, जो एक ... कई शकलें बदलता है। अत्यंत अद्भुत खेल है। मूल्य १॥)

खेल-नं० १७–यह लकड़ी का गेंद धागे में पिरोया हुआ है। एक सिरा पैर में और एक हाथ में पकड़कर गेंद को जि... चलने का हुक्म दोगे, चलेगा और ठहरेगा। मूल्य ॥)

खेल-नं० १९–यह एक कपड़े की थैली है। इसमें ... डाल दें, फ़ौरन् ग़ायब हो जायगा। जब चाहो निकाल लो ॥)

खेल-नं० २०–किसी आदमी की टोपी लेकर कहो कि तुम्हारी टोपी फटी है। वह कहेगा—नहीं, फ़ौरन् उँगली मारकर ... दो। मगर जिस वक़्त उँगली निकालोगे, टोपी साबुत मू०॥) खे० नं० १८-१ यंत्र है जो फूँक मारें तो चक्कर चले दू. आ. फूँ० मारें मुँ. काला हो जावे १॥)

खेल-नं० २१–किसी की टोपी लेकर सबको ख़ाली दिखाओ फिर बहुत लंबी-लंबी बेलें निकालते जाओ। मूल्य १॥)

खेल-नं० २२–किसी की अँगरेज़ी टोपी लेकर ख़ाली दि... दो। फिर उसे सामने रखकर उसके अंदर से मनीबैग निकाल... ढेर लगा दो। देखनेवाले हैरान होंगे। मूल्य ६ मनीबैग १॥)

खेल-नं० २३–यह आश्चर्यकारक बक्स है। सबको ख़ा... दिखाकर एक झटका दो, तो इसमें से रूमाल, काग़ज़ ... निकलेंगे और देखनेवाले दंग हो जायँगे। मूल्य २)

खेल-नं० २४–पहले काग़ज़ के छोटे-छोटे टुकड़े मुँह ... डाले जाते हैं, जो साबुत हो जाते हैं और सबके सामने ... काग़ज़ निकाले जाते हैं। मूल्य ॥) खे० २९-रु० हाथ पर नाचे ...

खेल-नं० २५–यह खेल इस तरह है कि आप किसी ... टोपी लें और सबको ख़ाली दिखाकर आप बहुत लंबा हंटर ... के अंदर से निकालकर दिखाएँ। लोग हैरान होंगे। मूल्य ॥)

खेल-नं० २६–पहले लोगों को कुछ पत्ते दिखाकर ... ताश में रखकर ग्लास में रक्खे जाते हैं, जो आवाज़ देने ... बारी-बारी खुद-बखुद निकल आते हैं। मूल्य २॥)

खेल-नं० २७–यह खेल इस तरह है कि एक पत्ता सबके सामने बोतल के मुँह पर खड़ा कर दिया जाता है। फिर उस ... ग्लास रखते हैं, जिसे देखकर लोग दंग होते हैं। मूल्य १)

खेल-नं० २८–यह अद्भुत खेल है। एक ताश फेंटते-... खेल करनेवाला ताश में से फूल या मेवा निकालता है। १॥)

खेल-नं० ३५–यह लकड़ी के गोले हैं। पहले १ ... होता है फिर दो बन जाते हैं फिर ३-४ बनकर इसी तरह घटते-घटते एक रह जाता है। बहुत उत्तम खेल है। क़ी० १)

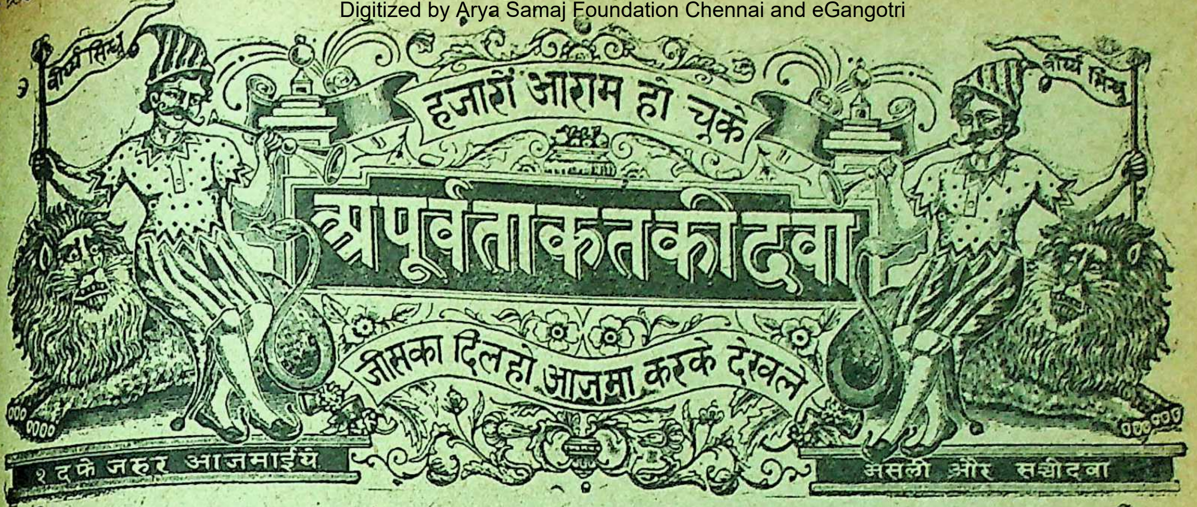

स्त्री, बालक, जवान, बूढ़े सब पीजिए, जाड़ा, गर्मी, बरसात की परवाह न कीजिए !

आदमी के शरीर में वीर्य ही अमृत-समान गुणदायक और आनंद बढ़ानेवाली जीवन-शक्ति है। धातु पुष्ट रहने से ही सांसारिक सर्व कार्य सिद्ध होते हैं । इसलिये हमने बहुत परिश्रम करके, अनेक रोगों पर हज़ारों बार आज़माइश करके, सच्चा गुण दिखानेवाला "वीर्यसिंधु" तैयार किया है। अगर आप ज़िंदगी का सच्चा सुख लूटना चाहते हैं, कमज़ोरी और नामर्दी को लात मारकर अपने मुखमंडल की मनोहर कांति बढ़ाना चाहते हैं, तो वैद्यक-शास्त्र का असली रत्न हमारा "वीर्य-सिंधु" ज़रूर सेवन कीजिए । "वीर्यसिंधु" से तीसरे ही दिन सच्चा चमत्कार दिखलाई देने लग जाता है और शरीर-भर की बीमारियों को जड़ से काटकर गिरा देता है—जैसे धातु-संबंधी प्रत्येक बीमारी को तथा धातु में स्तंभन न होना, आँखों में अँधेरा आना, शिर में चक्कर आना, शरीर में दर्द होना, भूख न लगना, अन्न न पचना, पतला पाखाना होना, दस्त की क़ब्ज़ियत रहना, शरीर का खून-खराब होकर खाज-खुजली-फोड़ा-फुंसी होना, शरीर का रक्त सूखकर चेहरा पीला और फीका पड़ना, स्त्रियों के लाल, पीला, सफ़ेद पानी निकलना, स्त्री-धर्म ठीक समय पर न होना, खाँसी, श्वास इत्यादि बीमारियों को दूर करके दुबले-पतले कमजोर शरीर को मोटा-ताज़ा बलिष्ठ करके, नामर्द को मर्द बनाने में "वीर्यसिंधु" से बढ़कर दूसरी दवा नहीं है । चाहे कितना ही कमज़ोर बूढ़ा नामर्द आदमी क्यों न हो, "वीर्यसिंधु" के प्रताप से संसार का आनंद लूट सकता है । "वीर्यसिंधु" से क्षुधा (भूख) इतनी बढ़ जाती है कि एक तोला खानेवाला मनुष्य कुछ ही दिनों में सेर-भर अन्न खाने लग जाता है । चाहे जिस रोग से शरीर दुर्बल और कमज़ोर क्यों न हो, "वीर्यसिंधु" से तीसरे ही दिन बदन में जोश और फुर्ती मालूम होगी । "वीर्यसिंधु" पतली धातु को गाढ़ा करने की सच्ची दवा है । "वीर्यसिंधु" से इंद्रिय-शक्ति ज़बरदस्त हो जाती है । ज़रूर आज़माइए । यह सच्ची और असली दवा है । क़ीमत २॥)

कामदेव-तिला—चाहे किसी क़िस्म की बदमाशी करने से इंद्रिय में किसी प्रकार का दोष क्यों न हो गया हो, इस तिले के इस्तेमाल से पहले ही दिन ज़रूर शक्ति या फ़ायदा मालूम होगा और शीघ्र ही सब शिकायतें दूर हो जायँगी । क़ीमत २॥)

☞ आप इस ज़िंदगी में संसार-सुख का आनंद लूटना चाहते हैं, तो ज़रूर **वीर्यसिंधु** और **"कामदेव-तिला"** को आज़माइए । सच्ची और असली दवा है । दवा मँगाते समय अपना पता साफ़ लिखना चाहिए ।

१४८
१३६

पं० सीताराम वैद्य, नं० ५२, बाँसतल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता ।

ऐसी सस्ती घड़ियाँ आपको अन्यत्र कहीं न मिलेंगी

नं० ५६४ चंद्रप्रभा जेबी घड़ी।

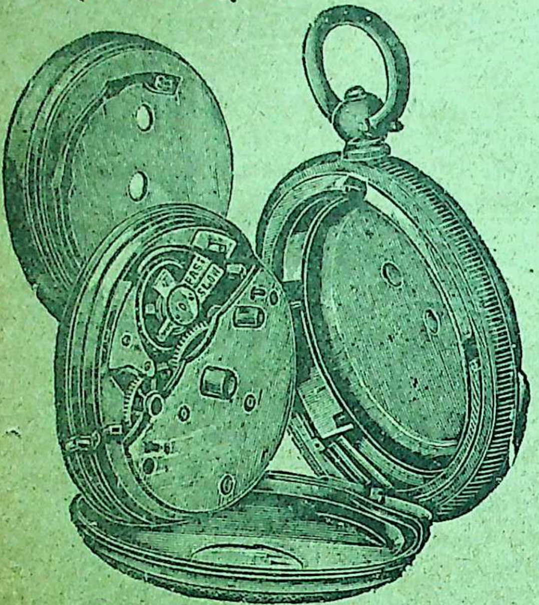

चाँदी से ज़्यादा चमकनेवाली चार ढकने की रुपए बराबर सुंदर नक़्क़ाशीदार ऐसी शोभामयी घड़ी इस संसार में दूसरी नहीं। हाथ में रख लीजिए, ज्योति निकलेगी। जान पड़ेगा कि आसमान का सितारा चमक रहा है—कल-पुर्ज़े ख़ूब मज़बूत हैं—अलग चाभी चार ढकन होने के कारण टूटने-फूटने और ख़राब होने का रत्ती-भर भी डर नहीं है—अगर आप घड़ी लगाने के सच्चे शौक़ीन हैं तो इसे ही मँगाइए। ५ वर्ष गारंटी दाम ८॥) यही केमीकल सोने की दाम १२) डाक-ख़र्च ।≶) जुदा। गारंटी ४ वर्ष -) के स्टांप पर।

नं० १३३० आठ-रोज़ा पॉकेट वाच।

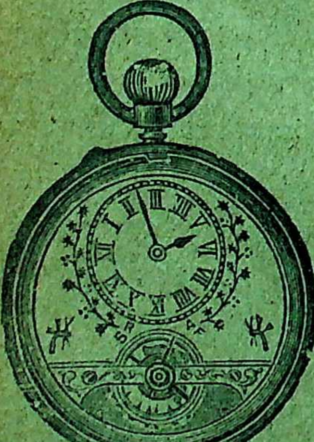

इस घड़ी में एक ही दिन चाभी दीजिए और आठ दिन तक बराबर टाइम लीजिए। घड़ी का चौथाई नीचे का हिस्सा खुला है, जिससे सेकंड के पहिए का काँपना और लगातार थर्थराना अपूर्व ख़ूबसूरती दिखाता है और ऊपरी जुयल बेल-बूटेदार निहायत नफ़ीस और देखने में अत्यंत सुंदर और मज़बूत है। दाम १३) रुपया। डाक-ख़र्च ।≶)

३ घड़ियाँ इकट्ठी ख़रीदने से ४ घड़ियाँ भेजी जायँगी

नं० १८१ रेडियम रिष्ट वाच।

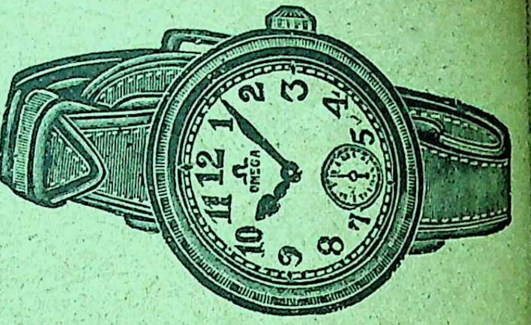

जो गुण घड़ी नं० ५६४ रेडियम पॉकेट वाच में है, ठीक वही गुण इसमें है। यदि फ़र्क़ है तो सिर्फ़ दो बात का। एक तो हाथ पर बाँधने का, दूसरे असली चाँदी की है। दाम १०), निकिल चाँदी की ८॥), घटिया ६॥) डाक-ख़र्च ।≶) जुदा। गारंटी ३ वर्ष -) के स्टांप पर।

नं० ७१०३ सुनहली रिष्ट वाच।

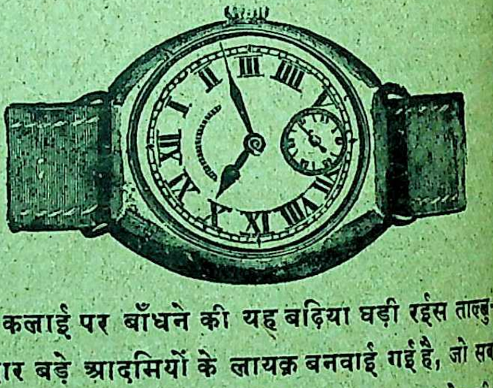

कलाई पर बाँधने की यह बढ़िया घड़ी रईस ताल्लुक़ेदार बड़े आदमियों के लायक़ बनवाई गई है, जो सब सोने की-सी चमकदार, सोने को मात करनेवाली, निहायत सोफ़ियाना ढंग की है, जो एक बार ख़रीदेगा सो १०० बार मँगावेगा। गारंटी ५ वर्ष। दाम १०)

नं० ४६४ रेडियम पॉकेट वाच।

गारंटी ३॥ वर्ष -) के स्टांप पर।

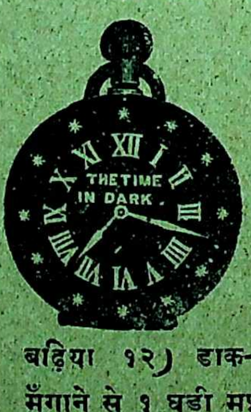

इस घड़ी के १२ अंकों और सेकिंड की सुइयों पर रेडियम लगा है। इसलिये अंधकार के समय अक्षरों में से आप-ही-आप ज्योति निकलती है, जिससे समय साफ़ दिखाई पड़ता है। दाम ७) बढ़िया १२) डाक-ख़र्च १ से ३ तक ॥) ३ घड़ी मँगाने से १ घड़ी मुफ़्त।

ऊपर छपी सब तरह की घड़ियों के मिलने का पूरा पता

जे० डी० पुरोहित एंड संस, पोस्ट-बक्स नं० २८८, कलकत्ता।

नई प्रकाशित पुस्तकें।

नए उपन्यास

हिंदी के पाठक श्रीयुक्त प्रभातकुमार मुखोपाध्याय की रचनाओं से भली भाँति परिचित हो चुके हैं। प्रभात बाबू बँगला के प्रसिद्ध कहानी-लेखक हैं। इनकी शैली बड़ी ही मनोरंजक और मनोहर है। कहानियाँ उच्च कोटि की होती हैं। हमने प्रसिद्ध लेखकों से आपकी कहानियों का अनुवाद कराया है। अनुवाद की भाषा सरल और सहज है।

सचित्र ! **सचित्र !!**

नवीन संन्यासी

"हास्य और करुणा-रस का भांडार"

इस उपन्यास में नागरिक और ग्राम्य जीवन, दोनों ही का यथार्थ और सुंदर चित्रण किया गया है। पुस्तक में हास्य और विनोद की सामग्री पर्याप्त मात्रा में प्रस्तुत है। नायक का रहस्य-पूर्ण भ्रमण बड़ा ही मनोरंजक है। धार्मिक और सामाजिक समस्याओं पर उत्तम विचार प्रकट किए गए हैं। पात्रों के चरित्रों का चित्रण बिलकुल स्वाभाविक है, जिससे पढ़ते ही हृदय पर गहरा प्रभाव पड़ता है। हम ज़ोर देकर कह सकते हैं कि ऐसा उपन्यास आपने कभी न पढ़ा होगा। पुस्तक सचित्र होने के कारण और भी चित्ताकर्षक बन गई है। असल बात यह है कि उपन्यास हर प्रकार से हृदयग्राही है। पृष्ठ-संख्या ५४१, कपड़े की जिल्द, ऐसी सुंदर पुस्तक का मूल्य केवल ३॥)

सचित्र ! **सचित्र !!**

रत्नदीप

"अद्भुत, करुणा और विनोद का आगार"

यह उपन्यास भी प्रभात बाबू की रचना है। इस उपन्यास में पाठकों की कल्पना को विशेष रूप से उत्तेजना मिलती है। इसको प्रारंभ कर कोई बिना समाप्त किए नहीं छोड़ सकता। पढ़ते-पढ़ते कभी आप विस्मय से अभिभूत होंगे, कभी करुणा से द्रवित होंगे, कभी क्रोध के वशीभूत होंगे और कभी भक्तिभाव से पुलकित हो जायँगे। इस पुस्तक में भी एक-से-एक सुंदर चित्र हैं। कपड़े की सुंदर जिल्द से विभूषित पुस्तक का मूल्य केवल २॥)

ईसप की सचित्र कहानियाँ

यह पुस्तक लड़कों के लिये विशेष उपयोगी है। अँगरेज़ी में Aesop's Fables-नामक पुस्तक का बड़ा नाम है। अँगरेज़ी पढ़नेवाले बहुत थोड़े विद्यार्थी ऐसे होंगे, जिन्होंने इस पुस्तक को न पढ़ा हो। यह कहानियाँ हितोपदेश की कहानियों के समान ही शिक्षाप्रद एवं मनोरंजक हैं। बालक इन्हें बड़े चाव से पढ़ते हैं। मूल्य केवल दो रुपए

५२ ३६६ **पुस्तकें मिलने का पता—मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।**

शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाली पुस्तकें

अभी से आर्डर देने से पुस्तकें प्रकाशित होते ही
आपके पास भेज दी जायँगी।

देशी और विलायती

यह प्रभात बाबू की बढ़िया-बढ़िया कहानियों का संग्रह है। इसमें पूर्व और पश्चिम का अद्भुत सम्मिलन है। एक ओर विलायत का चित्र है, तो दूसरी ओर भारतवर्ष का। देखने ही के योग्य है।

ज्ञानेश्वरी

(श्रीमगवद्गीता का भावात्मक अनुवाद)

जिस प्रकार उत्तर-भारत में गो० तुलसीदासजी की रचनाओं का, बंगाल में चैतन्य महाप्रभु की रचनाओं का और पंजाब में गुरु नानकजी की रचनाओं का आदर एवं प्रचार है, उसी प्रकार महाराष्ट्र में ज्ञानेश्वर महाराज की ज्ञानेश्वरी का आदर और प्रचार है। ज्ञानेश्वर महाराज एक बड़े भारी सिद्ध और अनुभवी योगी हुए हैं। इन्होंने शंकराचार्य के मतानुसार भगवद्गीता का मर्म समझाने के लिये यह विशद टीका की है। मूल-पुस्तक मराठी-छंदों में है। इसका अनुवाद बड़ी ही सावधानी से किया गया है और हमारा विश्वास है कि यह अनुवाद बहुत ही उत्तम है। भाषा सरल और सबके समझने योग्य है। पुस्तक सांप्रदायिक झगड़ों से रहित है। प्रत्येक गीता-प्रेमी को एक बार इस टीका का अध्ययन अवश्य करना चाहिए।

चित्र-बिहारी

(चित्रावली का तृतीय खंड)

कविवर बिहारीलाल के दोहों का भाव व्यक्त करने के लिये ये चित्र बनाए गए हैं। पाठक 'सरस्वती' में इन चित्रों का नमूना देख चुके हैं। बिहारी के दोहों की टीकाओं से जो बात देर में समझ में आती है, वह इन चित्रों को देखते ही, समझ में आ जाती है। बिहारी के दोहे अनूठे-अनूठे भावों से भरे हुए हैं, अतएव इन चित्रों को देखकर अवश्य आपका चित्त फड़क उठेगा।

५२
१९६ **पुस्तकें मिलने का पता—मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।**

युद्ध के बाद जर्मनी और क्या कर रहा है !

नित्य नए आविष्कार

सस्तेपन की भरमार

Sex-indicator

आश्चर्यजनक आविष्कार

IKRIKI
IKRIKI

अद्भुत चमत्कार

नर है या मादा ? यह छोटा-सा यंत्र जर्मनवालों ने हाल ही में विज्ञान के वसूलों पर तैयार किया है । इसके द्वारा आप आध मिनट में देख सकते हैं कि अमुक स्त्री के गर्भ में कन्या है या पुत्र ? गाय, भैंस, घोड़ी आदि बछड़ा देगी या बछिया और अंडे में बच्चा नर है या मादा ? किसी जानवर के शरीर के किसी भी भाग (चमड़े, बाल, पर, दाँत, हड्डी आदि) की बनी कोई वस्तु किसी भी अवस्था में हो, झट बतावेगा कि नर की है या मादा की ? आज़माइश के लिये किसी मित्र के अंग पर लगाइए या फ़ोटो-चित्र पर, बता देगा कि नर है या मादा ? आप मुँह में किसी मित्र का नाम लें, यह बतावेगा कि नर का नाम लिया है या मादा का ? कहाँ तक लिखें; इस प्रकार के अनेकों अनुभव और लाभ इसके द्वारा प्रकट हो रहे हैं, जो मँगवाकर देखने से ही मालूम होंगे । दाम केवल २) डा० ख़० ॥) ६ के १०) और दर्जन के १८)

हाई क्लास सेफ़्टी रेज़र—बढ़िया, सुंदर मख़मली बक्स में मय १२ फल उस्तरा जो युद्ध-काल में ३५) को बिकता था कुल २॥) दर्जन का २५) अलग फल ।॥) फ़ी दर्जन

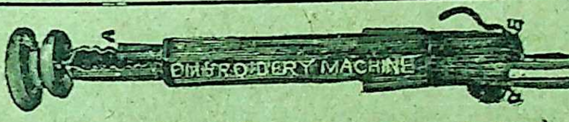

गृहशृंगार हैंड एंब्रोयडरी मशीन—स्त्रियाँ और कन्याएँ इससे कसीदा और बेल, बूटे आदि बनाने का घंटों का काम मिनटों में कर सकती हैं और रूमाल, साड़ियाँ, शाल, टोपियाँ, आसन और स्लीपर आदि सब तैयार कर सकती हैं । कोई घर इससे ख़ाली न रहना चाहिए । ज़रूर मँगाइए । दाम २।॥) डा० ख़० ॥-) दर्जन के ६५)

पाकेट इंजीनियर—आरी, हथौड़ा, बर्मा, पेचकश आदि छोटे ११ हथियार इसमें हैं । फ़ी सेट २) दर्जन २१)

प्रज्वलित पाकेट बिजली—ज़रा इशारे से अग्नि जलती-बुझती है । दियासलाई का काम नहीं । दाम २॥), दर्जन २५)

पो-हो-जेबी मित्र—यह छोटा-सा यंत्र भी जर्मनी के वैज्ञानिकों और डॉक्टरों के संयुक्त-परिश्रम का फल है, जो प्रति समय जेब में रखने योग्य है । केवल सूँघने और मुँह में इसकी हवा खींचने से ही खाँसी, जुकाम, नज़ला, सिर-दर्द, नाक बंद होना इत्यादि अनेकों बीमारियाँ इससे दूर होती हैं । गायकों, दिमाग़ी काम करनेवालों, लेक्चरारों, और ऐक्टरों आदि के लिये ख़ासकर लाभकारी है । यह किसी प्रकार का रोग नज़दीक नहीं आने देता और कभी ख़राब नहीं होता । दाम केवल २) डा० ख़० ॥) ६ के [illegible] दर्जन के [illegible]

दुनियाँ में सबसे छोटी सस्ती और लाभदायक **टाइप-राइटर मशीन**—जो पहले कभी देखने में नहीं आई । इसमें छोटे-बड़े अक्षर, हिंदसे, निशान-रिबन, रोलर आदि सब सामान मुकम्मिल है । कार्ड, पत्रादि की हर प्रकार की छपाई शीघ्रता और सफ़ाई से होती है । दाम १५), दर्जन के १६०)

सिग्रेट मेकिंग मशीन—छोटी, मगर बड़ी लाभदायक क्षण-भर में सिग्रेट निकालती है । दाम ३।), दर्जन ३६)

दूरबीन—मीलों के दृश्य साफ़-साफ़ और पास ही दिखते हैं । दाम २॥), दर्जन २५)

कड़कती धूप और तूफ़ानी आँधी

आदि से आँखों को सुरक्षित रखने के लिये हाई क्लास सन्-प्रूफ़ आई-प्रोटेक्टर्स

चश्मे

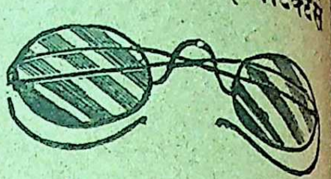

हरएक रंग और फ़ैसी फ़ैशन के। सेले लाइंड फ़्रेम और खोपेदार। पसंद न हों, तो वापिस करें। चाहे किसी रंग के ख़रीदें, क़ीमत एक ही है। दर्जा १—७), द० २—५), द० ३—३॥), घटिया २॥), १॥)

असली पत्थर के चश्मे अपनी आँखों के मुताबिक़ नंबर भेजकर रिआयत से मँगवा सकते हैं।

फ़्रेम—बढ़िया कैरिट गोल्ड सोने के फ़्रेम १०), ८) रोल्ड गोल्ड के बढ़िया फ़्रेम ८), ७), ५) मामूली २), १)

बिजली के अद्भुत कर्तब

पाकेट-लैंप—इन लैंपों में न तेल की ज़रूरत है और न दियासलाई की। बटन को ज़रा-सा दबाने-मात्र से ही जलते और बुझते हैं। चाहे कितना ही आँधी-पानी हो, इन पर ज़रा असर नहीं होता। जेब में रक्खें या हाथ में; अग्नि का बिलकुल डर नहीं। ये मामूली बाज़ारू लैंप नहीं हैं। इनमें बड़ी तेज़ रोशनी-वाली बत्तियाँ और बढ़िया बैटरियाँ लगाई गई हैं। क़ीमत पाकेट-लैंप मय पूरा सामान २॥), ३॥) बहुत बढ़िया ५)

फ़िंगर लैंप—अँगूठी की तरह उँगली में पहनकर इच्छानुसार रोशनी करें। अँधेरे में लिखने के लिये बड़े काम की चीज़ है। दाम ३), ४) मय सामान।

हैंड लैंप—हरीकेन की तरह हाथ में लटकाने का काम देंगी। रोशनी इसकी इस प्रकार है, जिस प्रकार मोटरों की या जहाज़ों की सर्च लाइट पड़ा करती है। दाम ७), १०) मय पूरा सामान।

साईकिल लैंप—उपरोक्त हैंड लैंप के मानिंद सर्च लाईटवाला, लेकिन उससे छोटे साइज़ का, जो बाईसिकल के आगे लगाने के काम आता और हाथ में भी लटकाया जाता है। दाम ५॥), ७॥) मय सामान।

गार्ड लैंप—इसमें सफ़ेद, लाल, हरी, हर रंग की रोशनी कर सकते हैं। क़ीमत ३), ४॥), बढ़िया ५॥)

टार्च लैंप—निहायत तेज़ सर्च लाइट की-सी रोशनीवाले गोल लंबी शक्ल के लैंप बढ़िया क्वालिटी मय पूरा सामान १०), द० २—५), द० ३—२)

जोकर पिन—पिनों पर तरह-तरह के हास्यप्रद चेहरे लगे हैं, जिनमें मनोहर रोशनी होती है। दाम ३), ४), ५)

सेफ़्टी पिन और सुंदर फूल—इनको श्रीमान् कोट पर और श्रीमतियाँ साड़ी में व बालों में धारण करती हैं। बग़ैर रोशनी के भी सुंदरता की शोभा को दुगुनी करती हैं। लेकिन ज़रा-सा बटन दबा दो फिर क्या ही बात है। बिना बताने से कोई न पहचान सकेगा कि इसमें रोशनी किधर से आ गई। फूल की पँखड़ियों में और पिन के नगों में रोशनी होगी। अनजान समझेगा कि पिन में सच्चे हीरे जड़े हैं, जो रोशनी कर रहे हैं। आश्चर्य सौगात है। फूल ख़रीदें या हीरोंवाली पिन। क़ीमत एक ही है। मय पूरा सामान ३॥), ५), ७)

बिजली की घंटी मय २६ गज़ तार और पूरे सामान के दर्वाज़ों पर लगाने के लिये १५) बग़ैर तार के मेज़ पर रखने के लिये १२), १०) डॉक्टरों के लिये बिजली के कायल २०), २५), १५)

सुंदर श्रृंगार वाच

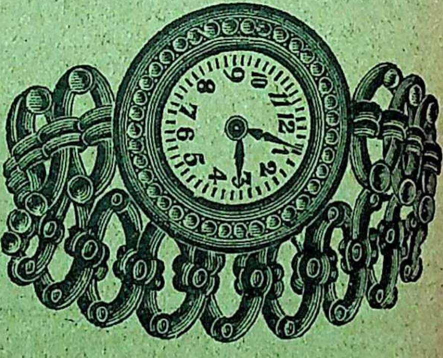

नया फ़ैशन! नई शान!!

यह घड़ी सोने के कंकण को मात करती और सुंदरता की शोभा को दोबाला करती है। इसके होते हुए कलाई में दूसरे ज़ेवर की आवश्यकता नहीं है। मज़ा यह कि मशीन पक्की और टाइम की सच्ची है। मज़ा यह कि कलाई चाहे कितनी मोटी या पतली हो सब पर फ़िट आती है। सिवा स्त्रियों के पुरुष भी पहनते हैं। दाम कुल ६॥) नक़ली जवाहरात जड़ी हुई ११)

पता—जी० सी० आहूजा ऐंड संस, नं० १२, कटरा घनइयाँ, अमृतसर

लीजिए ! व्यर्थ के समय तथा धन की बचत कीजिए !! पढ़िए !!!

पुस्तकें खरीदने में विशेष सुबीता

हिंदी के

बढ़िया-बढ़िया नाटक, उपन्यास, काव्य, इतिहास
तथा राष्ट्रीय व धार्मिक

किसी भी पुस्तक

की यदि आपको कभी आवश्यकता पड़े,

तो

हमें एक पत्र डाल दीजिए।

अब आपको इधर-उधर—बीसों जगह—
भटकने की ज़रूरत नहीं रही,

क्योंकि

हिंदुस्थान में हिंदी-पुस्तकों की हमारी ही सबसे बड़ी दूकान है।

हमारी दूकान में हिंदी-पुस्तकों का बहुत बड़ा संग्रह है। हमारे यहाँ इंडियन-प्रेस, हिंदी-ग्रंथ-रत्नाकर, नवलकिशोर-प्रेस, हिंदी-पुस्तक-एजेंसी, बाहिती कं०, बेलवेडियर-प्रेस, हरिदास कं० आदि २०० से भी कहीं ज़्यादा हिंदी-प्रकाशकों के ग्रंथ रहते हैं। १५० प्रकाशकों के तो हम सोल-एजेंट ही हैं। इसलिये सब प्रकार की पुस्तकें एक ही स्थान—

हमारे यहाँ—से मँगाने में डाक-खर्च तथा समय दोनों की बचत होती है।

ग्राहकों की हानि तथा लाभ पर विशेष ध्यान रखकर हम पत्र पहुँचते ही पुस्तकें तुरंत रवाना करते हैं। यदि किसी कारण-वश विलंब होने की संभावना रहती है, तो भी पत्र-द्वारा सूचना शीघ्र ही दे दी जाती है।

माधुरी की साहित्य-सूचना

में जिन पुस्तकों की सूचना प्रकाशित होती है, वे सब पुस्तकें भी हमारे ही यहाँ से मिलती हैं। हाँ, पुस्तक-परिचय (समालोचना) की अच्छी-अच्छी पुस्तकें भी हमारे यहाँ मिल सकती हैं।

हमारा पता नोट कर लीजिए—

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, २६-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

हिंदी साहित्य के तीन अनूठे ग्रंथ !

छप गए !

हिंदी-नवरत्न

छप गए !!

(ले०—हिंदी-संसार के सुपरिचित सुलेखक और सुकवि तथा स्वनामधन्य समालोचक " मिश्रबंधु ")

हिंदी के नव महाकवियों की जीवनियों और कविताओं पर समालोचनात्मक रीति से लिखा हुआ गवेषणा-पूर्ण ग्रंथ । संशोधित, संवर्धित, सुसंपादित एवं सुसज्जित द्वितीय संस्करण । इस द्वितीय संस्करण में सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें महात्मा कबीरदास की आलोचनात्मक जीवनी भी जोड़ दी गई है, महाकवियों के प्रामाणिक चित्र दिए गए हैं. पहले संस्करण से लगभग दूना बड़ा हो गया है और आजतक की नई खोजों का समावेश किया गया है । जो प्रथम संस्करण पढ़ चुके हैं, उनके लिये भी इसमें अनेक दर्शनीय नवीनताएँ हैं । इसका अंतरंग और बहिरंग पहले से बहुत बदल गया है । एक प्रकार से यह सर्वांगसुंदर नूतन सृष्टि है । इसे पढ़े विना हिंदी-साहित्य के महान् गौरव-पूर्ण अंग से परिचित होना एक प्रकार से असंभव-सा है । पृष्ठ-संख्या लगभग ७००, सादे चित्र ६ और त्रिवर्ण चित्र २, ऐंटिक पेपर पर स्वच्छ एवं शुद्ध सुंदर छपाई, रंगीन रेशमी सुनहरी जिल्द, मूल्य लागत-मात्र केवल पाँच रुपए, सादी जिल्द ४॥)

सुकवि-संकीर्तन

(ले०—भूतपूर्व 'सरस्वती'-संपादक साहित्य-महारथी पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी)

इस पुस्तक में सुप्रसिद्ध सुकवियों, कविता-प्रेमियों और कवि-कोविदों के आश्रयदाताओं के संबंध में सचित्र परिचयात्मक निबंध हैं, जिनमें श्रीमान् द्विवेदीजी की ओजस्विनी लेखनी की सभी विशेषताएँ मौजूद हैं । इन मनोरंजक एवं शिक्षाप्रद निबंधों में जो बातें वर्णित हैं, वे कभी पुरानी नहीं हो सकतीं । इन्हें बार-बार पढ़ने पर भी जी नहीं ऊब सकता । इस पुस्तक के पढ़ने में एक उपदेशप्रद उपन्यास का-सा आनंद आता है । कहीं साहित्यिक लालित्य है, कहीं अगाध पांडित्य है, कहीं काव्य की कमनीय छटा है, बिलकुल नायाब चीज़ है। इसमें दस चित्र भी हैं। एक बार अवश्य देखिए। मू० १।), सजिल्द १॥।)

मनोविज्ञान

(ले०—प्रिंसिपल चंद्रमौलि सुकुल एम्० ए०, एल्० टी०)

इस पुस्तक में मनोविकारों, मानसिक वृत्तियों और मनोभावों तथा मनोवेगों का सूक्ष्म परिचय अत्यंत सरल एवं साधु भाषा में स्पष्टता-पूर्वक लिखा गया है । मुखाकृति से हृदय का परिचय जानने की कला सीखने के लिये इस पुस्तक को अवश्य पढ़िए । प्रत्येक शिक्षक और छात्र के पास इसकी एक प्रति अवश्य रहनी चाहिए । विषय गहन है, पर लेखन-शैली इतनी सरल और सरस है कि पुस्तक मनोरंजन और शिक्षा दोनों का उत्तम साधन बन गई है । बातें बारीक हैं, रचना रोचक है । मूल्य ॥।), सुनहरी रेशमी जिल्द १)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, २६-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

लाभ उठाइए !

अपूर्व उपहार लूटिए

शीघ्रता कीजिए !

माधुरी का दूसरा साल सानंद समाप्त होने की खुशी में

माधुरी के ग्राहकों को

निम्न-लिखित १५ पुस्तकों में से ६) की पुस्तकें ४) में ही दी जायँगी !

नीचे-लिखी पुस्तकों में से ६) का कोई सेट चुन लीजिए।

आर्डर भेजते समय अपना माधुरी का ग्राहक-नंबर अवश्य लिखिए।

डाकख़र्च ग्राहकों के ज़िम्मे।

ऐसा सुअवसर मत चूकिए !!

हिंदी-संसार के दिग्गज विद्वानों तथा सुप्रसिद्ध समालोचकों द्वारा प्रशंसित, प्रति वर्ष ५० उत्कृष्ट, सस्ती, सुंदर, सचित्र और सजिल्द पुस्तकें प्रकाशित करनेवाली भारत-प्रसिद्ध

गंगा-पुस्तकमाला की कुछ उत्कृष्ट पुस्तकें

अयोध्यासिंह उपाध्याय—उपाध्यायजी का विस्तृत सुलिखित सचित्र जीवन-चरित। मू० ।)

आत्मार्पण—सभी गुणों में आदर्श, ऐतिहासिक महत्त्व-पूर्ण ललित खंड-काव्य। मूल्य ।-)

इँगलैंड का इतिहास—हिंदी के गौरव को बढ़ानेवाला प्रामाणिक इतिहास। ऐतिहासिक उपन्यास-सा मनोरंजक। मूल्य २). सजिल्द २॥)

उद्यान—फल-फूल के वृक्षों, बेलों और बहारदार घासों के लगाने की विस्तृत विधि। प्रकृति के सहृदय उपासकों का मित्र। मूल्य ॥।=), सजिल्द १।)

केशवचंद्र सेन—एक समाज-सुधारक और ब्राह्म-धर्म के प्रचारक की उपदेश-पूर्ण जीवनी। मूल्य १≡)

द्विजेंद्रलाल राय—सुप्रसिद्ध नाट्यकार का संक्षिप्त, किंतु, सर्वांगपूर्ण सचित्र जीवन-चरित। मूल्य ।)

नंदन-निकुंज—हृदयग्राही, सरस उच्च कोटि की मनोरंजक कहानियों का संग्रह। मू० १।), सजिल्द १॥=)

पूर्व-भारत—महाभारत के कथानक पर लिखा हुआ मौलिक पौराणिक नाटक। मू० ॥।=), सजिल्द १।)

वंकिमचंद्र चटर्जी—सर्वश्रेष्ठ औपन्यासिक, साहित्य-सम्राट् की प्रामाणिक जीवनी। मूल्य १≡)

भगिनी-भूषण—लड़कियों के पढ़ने योग्य चार मौलिक रोचक कहानियाँ। सरल भाषा। मूल्य =)

भारत-गीत—देश-संबंधी उपयोगी और उत्तम कविताओं का बढ़िया संग्रह। मूल्य ॥=), सजिल्द १)

भूकंप—इसमें भूकंप-संबंधी अनेक प्रश्नों के उत्तर बहुत ही मनोरंजक ढंग से दिए गए हैं। मूल्य १=)

मंजरी—श्रेष्ठ, सरस, चमत्कार-पूर्ण, रोचक और उच्च कोटि की गल्पों का सुंदर गुच्छा। मूल्य १≡)

मूर्ख-मंडली—अत्यंत मनोरंजक और सभ्य हास्य-रस-पूर्ण सुप्रसिद्ध प्रहसन। मूल्य ॥=), सजिल्द १)

सम्राट् चंद्रगुप्त—भारत के प्रथम ऐतिहासिक सम्राट् की संक्षिप्त सचित्र जीवनी। मूल्य ।)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, २९-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

जीवनचरित-प्रेमियों के लिये अमूल्य रत्न

चवन्नी-चरितावली

पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय

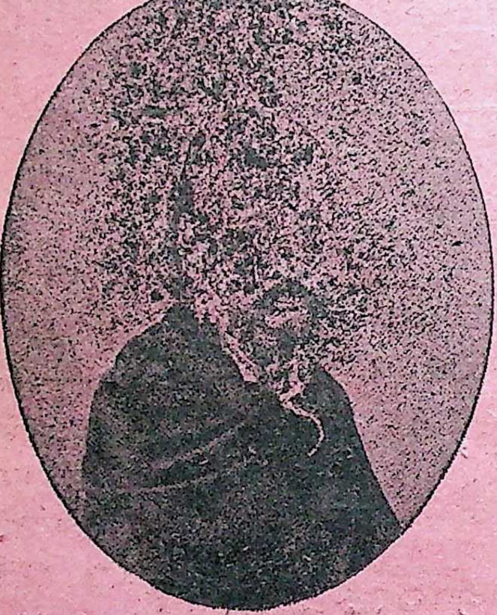

उपाध्यायजी हिंदी के स्वनाम-धन्य महाकवि हैं। आपके पवित्र जीवन का विस्तृत वर्णन पढ़ना हो, तो इस सुलिखित जीवन-चरित को अवश्य पढ़िए। इसमें आपके भिन्न-भिन्न अवस्थाओं के दो चित्र भी हैं। मूल्य ।)

द्विजेंद्रलाल राय

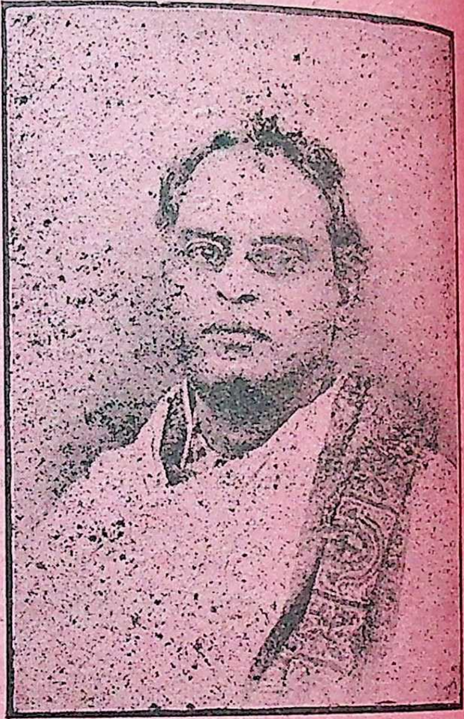

इस पुस्तक के लेखक माधुरी के युगल संपादक हैं। सुप्रसिद्ध नाट्यकार स्वर्गीय डी० एल्० राय एम्० ए० को कौन नहीं जानता? उनके नाटकों के हिंदी-अनुवाद बहुत ही लोकप्रिय हुए हैं। उन्हीं का यह संक्षिप्त जीवन-चरित है। लेखकों के नाम ही इसकी उपयोगिता और श्रेष्ठता के प्रमाण हैं। मूल्य ।)

केशवचंद्र सेन

[लेखक—"एक भारतीय हृदय"]

यह पुस्तक एक महापुरुष, सुप्रसिद्ध समाज-सुधारक और ब्राह्म-धर्म के धुरंधर प्रचारक की जीवनी है। जीवन-चरित परिश्रम-पूर्वक अत्युत्तम रीति से लिखा गया है। लेखन-शैली प्रौढ़ तथा अत्यंत उपयुक्त और सुंदर है। भाषा भी सरल और हृदय में चुभनेवाली है। पढ़ने में उपन्यास का-ऐसा मज़ा आता है। चरित्र-नायक के चरित्र पर कई दृष्टियों से विचार किया गया है। शुद्ध, स्वच्छ और सुंदर छपाई। केवल तीन-चार सौ प्रतियाँ रह गई हैं। शीघ्र मँगाइए। मूल्य ।=)

वंकिमचंद्र चटर्जी

[लेखक—कविरत्न पं० रूपनारायण पांडेय]

यह भारत के सुप्रसिद्ध उपन्यास-लेखक स्वर्गीय राय वंकिमचंद्र चटर्जी बहादुर सी० आई० ई० का जीवन-वृत्तांत है, लिखने की शैली बड़ी सुंदर है। उसमें मौलिकता नवीनता और व्यापकता का समावेश काफ़ी मात्रा में हुआ है। इस पुस्तक के संबंध में केवल इतना ही कह देना पर्याप्त होगा कि इसके मुक़ाबिले के बहुत कम जीवन-चरित्र निकलेंगे। अनेक हिंदी-समाचार-पत्रों ने इस पुस्तक की मुक्त-कंठ से प्रशंसा की है। अब थोड़ी-सी प्रतियाँ और रह गई हैं। आज ही आर्डर दीजिए। मूल्य ।=)

सुप्रसिद्ध गंगा-पुस्तकमाला के कुछ उत्कृष्ट ग्रंथ

उद्यान

इस पुस्तक में फल-फूल के वृक्षों, बेलों और बहारदार घासों के लगाने की विस्तृत विधि लिखी गई है। खाद, पेबंद, क़लम, बीज, सिंचाई, बाग़ की सजावट आदि विषय सरल भाषा में इस ख़ूबी के साथ समझाए गए हैं कि साधारण मनुष्य भी, बिना किसी माली की सहायता के, बाग़बानी के सब काम कर सकता है। मूल्य ॥।=)

भगिनी-भूषण

लड़कियों के लिये यह पुस्तक अमूल्य है। इसमें कुमुद और किरण, शारदा और उसकी माँ, बड़ों की आज्ञा, लीला और सरोज—ये रोचक चार मौलिक कहानियाँ दी हुई हैं। इस पुस्तक के पाठ से कन्याओं को अमूल्य शिक्षाएँ मिलेंगी। बड़ी ही चटकीली पुस्तक है। मूल्य =)

इँगलैंड का इतिहास

अँगरेज़ी की ढेरों पुस्तकों को पढ़कर और उनके आधार पर इस ग्रंथ-रत्न की रचना की गई है। यह सन् और तारीख़ों का संग्रह नहीं, वरन् हिंदी के गौरव को बढ़ानेवाला सच्चा मार्ग-दर्शक इतिहास है। साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग, ने अपनी मध्यमा-परीक्षा के कोर्स में इसे नियत किया है। अत्यंत स्वच्छ छपाई। मूल्य २)

सम्राट् चंद्रगुप्त

'लक्ष्मण'-संपादक पं० बालमुकुंद वाजपेयी-लिखित—भारत के प्रथम ऐतिहासिक सम्राट् की यह संक्षिप्त, किंतु सर्वांग-पूर्ण, जीवनी बड़ी खोज के साथ लिखी गई है। इतिहास-प्रेमियों के पढ़ने की चीज़ है। छपाई ख़ूब साफ़ है। मूल्य १)

भूकंप

भूकंप-संबंधी अनेक प्रश्नों के उत्तर बहुत ही मनोरंजक, कौतूहलजनक, सीधे, सरल और सुस्पष्ट ढंग से इस सचित्र पुस्तक में संग्रह किए गए हैं। पढ़ने में तिलिस्मी उपन्यास का-सा मज़ा आता है। मूल्य १=), थोड़ी-सी प्रतियाँ बची हैं।

आत्मार्पण

इसका कथानक टाड-राजस्थान और मेवाड़ के इतिहास से लिया गया है। राणा राजसिंह, प्रभावती और वीर चूड़ावत सरदार के अपूर्व चरित्रों के आधार पर इस अत्यंत रोचक, उत्कंठावर्द्धक और आदर्श ऐतिहासिक खंड-काव्य की रचना हुई है। सुवाच्य स्वच्छ छपाई। बहुत थोड़ी प्रतियाँ बच गई हैं। मूल्य ।-)मात्र। शीघ्रता कीजिए।

काव्य

भारत-गीत

हिंदी-कवियों के आचार्य पं० श्रीधर पाठक ने समय-समय पर देश-संबंधी जो उपयोगी और उत्तम कविताएँ लिखी और पत्रों में प्रकाशित कराई हैं, उन्हीं का यह नयनाभिराम बड़ा संग्रह है। अंतरंग और बहिरंग अतीव सुंदर। मूल्य ॥=)

शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाली पुस्तकें

भारतीय अर्थ-शास्त्र	लगभग २)	विश्व-साहित्य	लगभग १॥)	बुद्ध-चरित्र (सचित्र)	लगभग १)
विजया (सचित्र)	,, २)	दुर्गावती	,, ।॥)	बिहारी-रत्नाकर (सचित्र)	,, ४)
मतिराम-मति-मुकुर (सचित्र)	,, १।)	अद्भुत आलाप	,, १)	एशिया में प्रभात	॥)

साहित्य का शृंगार

अनोखे नाटक और मनोरंजक गल्पें

पूर्व-भारत

[लेखक, ऑनरेब्ल पं० श्यामविहारी मिश्र एम्० ए०
और पं० शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए०]

यह एकदम मौलिक पौराणिक नाटक है। महाभारत के कथानक को लेकर इसकी रचना हुई है। उत्तरा-विवाह तक की कथा इसमें आ गई है। विद्वान् लेखकद्वय ने नाटक के मुख्य पात्रों के चरित्रों को उज्ज्वल बनाने में बड़ा प्रयास किया है। मानव-प्रकृति के विश्लेषण में जो निपुणता प्रकट की है, उससे भिन्न-भिन्न स्वभाववाले पात्रों के चरित्र एक दूसरे की रगड़ से अत्यंत स्पष्ट हो उठे हैं। इस नाटक में विशुद्ध कल्पना की भी कमी नहीं है। यह पुस्तक कवित्व से कमनीय, नाटकत्व से निर्मल, सद्भावों से सुंदर और मौलिकता से मंडित है। काग़ज़ बढ़िया लगा है, और छपाई भी बहुत ही सुंदर हुई है। मूल्य ।॥=), सजिल्द १।)

मूर्ख-मंडली

[रचयिता, पं० रूपनारायणजी पांडेय]

सुप्रसिद्ध नाटककार श्रीद्विजेंद्रलाल राय एम्० ए० के अत्यंत मनोरंजक और सभ्य हास्य-रस-पूर्ण प्रहसन के आधार पर—हिंदी-रंग-मंच पर खेले जाने के योग्य बनाने के अभिप्राय से कुछ फेर-फार करके—इस अपूर्व पुस्तक की रचना हुई है। द्विजेंद्रलाल राय के प्रहसनों में यह सर्वश्रेष्ठ है। ३ वर्ष के अंदर ही इसके ४ संस्करण हो चुके हैं। यही इसकी उत्तमता का स्पष्ट प्रमाण है। अब तक यह कम-से-कम ५० जगह खेला जा चुका है। इस नाटक को पढ़कर आप हँसते-हँसते लोट-पोट हो जायँगे। यह प्रहसन नाटकीय गुणों से पूर्ण है। हम दावे के साथ कह सकते हैं कि इससे अधिक मनोरंजक प्रहसन आपने हिंदी में नहीं पढ़ा होगा। सभी हिंदी-पत्रों और विद्वानों ने इसकी बड़ी प्रशंसा की है। छपाई-सफ़ाई देखकर तो आप मुग्ध ही हो जायँगे। मूल्य सजिल्द प्रति का १), सादी का ॥≶)

मंजरी

[अनु०—पं० रूपनारायण पांडेय]

सुंदर, स्वाभाविक, रोचक, काव्यमय, भावपूर्ण, सूक्ष्म चरित्र-चित्रण करनेवाली, शिक्षा-प्रद और उत्साह-वर्द्धक गल्पों का—महाकवि श्रीरवींद्रनाथ ठाकुर आदि लब्ध-प्रतिष्ठ गल्प-लेखकों की श्रेष्ठ सरस और चमत्कार-पूर्ण गल्पों का संग्रह। इतनी अच्छी और उच्च कोटि की गल्पें आपने शायद ही कभी पढ़ी हों। इनको एक बार पढ़ने से बार-बार पढ़ने को जी चाहता रहेगा। यह पुस्तक हाथों-हाथ बिक गई; २०० प्रतियाँ बची हैं। मूल्य १≡)

नंदन-निकुंज

[ले०—श्रीमान् चंडीप्रसाद बी० ए०]

इसमें ६ मौलिक, हृदय-ग्राही, सरस उच्च कोटि की मनोरंजक कहानियों का संग्रह है। कहानियों की कल्पना अद्भुत, चरित्र-चित्रण प्रभावशाली और भाषा कवित्व-पूर्ण है। हिंदी में मौलिक कहानियाँ लिखनेवाले जो दो-एक श्रेष्ठ सिद्धहस्त लेखक हैं, उक्त लेखक उन्हीं में से हैं। पुस्तक एक बार उठाकर आदि से अंत तक पढ़े विना छोड़ने का जी नहीं चाहता। अत्यंत ललित गद्य-काव्य है। मूल्य सादी प्रति का १।) और जिल्ददार का १॥=)

हमारे यहाँ हिंदुस्थान-भर की हिंदी-पुस्तकें मिलती हैं—

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, २६-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

हिंदी-साहित्य के उपन्यास-जगत् का सर्वांगसुंदर श्रृंगार

बहते हुए फूल

[अनुवादक—माधुरी-संपादक पं० रूपनारायण पांडेय]

बंग-भाषा के लेखकों में श्रीयुत बाबू चारुचंद्र वंद्योपाध्याय का नाम खूब प्रसिद्ध है। आपने बँगला में कई उपन्यास लिखे हैं। यह उपन्यास उन्हीं के "श्रोतेर फूल" नाम के सर्वोत्तम, शिक्षा-प्रद, नीति-गर्भित सामाजिक उपन्यास का हिंदी-अनुवाद है। अनुवाद सरल, सरस, सुबोध और साधारण बोल-चाल की भाषा में किया गया है, अतः सर्व-साधारण इसे विना कष्ट के समझ सकते हैं। चरित्र-चित्रण जिस सुंदरता के साथ किया गया है, उसे देखकर आप मुग्ध हुए विना नहीं रह सकेंगे। बँगला-मुहाविरों को शुद्ध हिंदी-भावों में परिणत करने में जो कमाल दिखलाया गया है, वह सोने में सुगंध का काम हो गया है। पुस्तक के अंदर शिक्षा कूट-कूटकर भरी है। उपन्यास इतना रोचक और उपदेश-प्रद है कि एक बार हाथ में लेने पर, पुनः समाप्त किए विना छोड़ने को जी नहीं चाहता। पाठक, इसे पढ़ते-पढ़ते इसमें इस प्रकार डूब जायँगे कि खाना-पीना भी भूल जायँगे। यदि आपको उपन्यास पढ़ने का कुछ भी शौक़ हो, तो सब उपन्यास छोड़कर सबसे पहले इसे पढ़िए और अपनी गृहस्थी सोने की बनाइए। पुस्तक की जो जिल्द बँधी हुई है, वह सोने में सुगंध है। जिल्द ऐसी मज़बूत बँधी है कि आप ख़रीदेंगे और पोते बर्तेंगे, तब भी न टूटेगी। सुंदर इतनी है कि जिस आलमारी में रख दी जायगी, उसकी शोभा दूनी हो जायगी। कपड़ा बहुत ही मनोमोहक है और सोने के अक्षरों में पुस्तक का नाम आदि छपा है। लगभग ५०० पृष्ठ के इतने बड़े पोथे का मूल्य केवल २), सुंदर सुनहरी रंगीन रेशमी जिल्द २॥)

पत्रांजलि

[लेखक—पं० कात्यायनीदत्त त्रिवेदी]

इस पुस्तक में पति और पत्नी के परस्पर लिखे हुए पत्रों का संग्रह है। इसके पाठ से स्त्रियों को कई लाभ एकसाथ होते हैं। उन्हें पत्र लिखना आ जाता है, सदुपदेश मिलते हैं, और मनोरंजन भी खूब ही होता है। जिस ढंग से इसमें स्वामी ने स्त्री को पत्र लिखे हैं, उसका स्त्रियों के चरित्र-गठन पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। इस पुस्तक को पढ़कर अनेक स्त्रियाँ सुधर गईं। अब तक हिंदी में जितनी स्त्री-उपयोगी पुस्तकें निकली हैं, उनमें यह पुस्तक बहुत ऊँचा आसन रखती है। एक बार अपनी बहनों और बहुओं के हाथ में अवश्य दीजिए। सरल भाषा, पवित्र भाव, सुंदर छपाई, चिकने कवर पर तिरंगा चित्र। मूल्य केवल ॥)

हिंदुस्थान-भर की हिंदी-पुस्तकों के मिलने का एक-मात्र पता—

BOOKS ON POLITICS.

		Rs.	As.	P.
Agitate—By Bernard Houghton	@	0	4	0
Foreign Policy of India Do.	,,	0	4	0
Revolt of the East Do.	,,	0	4	0
Psychology of Empire Do.	,,	1	0	0
At the Point of Spindle (Sarla Devi)	,,	0	4	0
To the Students (Andrews, C. F.)	,,	0	4	0
How India can be Free (Do.)	,,	1	0	0
Indian Independence (Do.)	,,	0	4	0
Ethics of Destruction	,,	0	4	0
New Russia	,,	0	12	0
Reform or Revolution	,,	0	12	0
Indian Home Rule (M. K. Gandhi)	,,	0	4	0
Swaraj in One Year (Do.)	,,	0	6	0
Seed of Race (Paul Richard)	,,	0	8	0
Rights of Citizens	,,	1	0	0
Imperialism	,,	1	0	0
India and its Government	,,	1	0	0
Gospel of Swadeshi	,,	0	8	0
Failure of European Civilization	,,	0	4	0
National Self-Realisation	,,	1	0	0
Cherala Perala Tragedy	,,	1	8	0
The Significance of Indian Nationalism	,,	1	0	0
	,,	2	0	0

Biographies, Speeches and Writings.

			Rs.	As.	P.
Morley's Indian Speeches		,,	2	10	0
Gokhale's Speeches, large volume		,,	4	0	0
Young India (2nd Edition) by M. K. Gandhi		,,	4	0	0
Life of M. K. Gandhi		,,	2	0	0
Life of Bal Gangadhar Tilak		,,	2	0	0
Mohamad Ali, his Life, Services and Trial		,,	2	0	0
Sir J. C. Bose, his Life and Speeches		,,	2	0	0
Mohamad Ali Jinnah		,,	2	0	0
Annie Besant's Speeches and Writings		,,	3	0	0
Lord Sinha's Speeches		,,	3	0	0
Prince Edward's Speeches in India		,,	1	0	0
BIOGRAPHIES OF :—					
Shakespeare, Alfred Tennyson, Nelson	each	,,	3	1	0
Addison, Scott, Goldsmith	each	,,	2	3	0
Aristotle, Rousseau (by Davidson)	each	,,	4	6	0

Available from—GANGA PUSTAKMALA KARYALAY, LUCKNOW.

उपदेशप्रद, अनूठी और मनोरंजक कहानियाँ

प्रेम-प्रसून

[लेखक, हिंदी-संसार के सिद्धहस्त और लब्धकीर्ति औपन्यासिक श्रीमान् प्रेमचंदजी]

इनके विषय में विशेष लिखना व्यर्थ है। थोड़े ही समय में इन्होंने हिंदी-संसार में अच्छी ख्याति प्राप्त कर ली है। इनकी रचना जैसी स्वाभाविक, रोचक और भाव-पूर्ण होती है, वैसी ही शिक्षाप्रद, उत्साहवर्द्धक तथा गंभीर भी। प्रेम-प्रसून इन्हीं की कहानियों का संग्रह है। इसमें शाप, त्यागी का प्रेम, मृत्यु के पीछे, यही मेरी मातृ-भूमि है, लाग-डाँट, चकमा, आप-बीती, आभूषण, राज्यभक्त, अधिकार-चिंता, दुराशा, गृह-दाह आदि एक-से-एक बढ़कर अनूठी गल्पों का संग्रह है। अब तक इनके जितने गल्प-संग्रह छपे हैं, उनमें यह संग्रह सबसे बढ़कर है। प्रेमचंदजी के प्रत्येक प्रेमी को इसे स्वयं पढ़कर अपने परिवार को भी पढ़ाना चाहिए। लगभग ३०० पृष्ठों के पोथे का मूल्य सिर्फ़ १), छपाई साफ़-सुथरी। कागज़ ऐंटिक। सजिल्द १॥)]

(सम्मतियाँ)

"मिश्रबंधु"—ग्रंथ रोचक और उपदेश-पूर्ण है। गद्य में भी पद्य का आनंद बहुत स्थानों पर इसमें आता है। ऐसे ग्रंथों की हिंदी में आवश्यकता है।

श्रीयुत जी० पी० श्रीवास्तव बी० ए०, एल्० एल्० बी०—सभी गल्पें उच्च-कोटि की हैं। प्रेमचंदजी गल्प-लेखन-कला के specialist (विशेषज्ञ) हैं। हरएक का प्लाट भी निराला है। रोचकता तो इतनी है कि पुस्तक एक बार हाथ में लेने पर बिना समाप्त किए छोड़ने को जी नहीं चाहता। सबसे बड़ी बात यह है कि हर गल्प में कोई-न-कोई ऐसा विशेष गुण है जिसका आनंद शिक्षित-समाज खूब दिल खोलकर ले सकता है।

चित्रशाला

[लेखक, हिंदी-जगत् के स्वनामधन्य गल्प-रचयिता पं० विश्वंभरनाथ शर्मा "कौशिक"]

हिंदी-जगत् से जिसका कुछ भी परिचय है, वह कहानियों के श्रेष्ठ लेखक कौशिकजी को होगा। आपकी कहानियाँ एक-से-एक बढ़कर होती हैं। पाठक कभी करुणा से रोने लगते हैं, कभी विनोद की गुदगुदी से हँसने लगते हैं। कौशिकजी की कहानियों का आनंद पढ़ने ही से प्राप्त हो सकता है। ४०० पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य केवल १॥) है। कागज़ ऐंटिक, छपाई साफ़-सुथरी। कौशिकजी का चित्र भी पुस्तक में लगा है। रेशमी सुनहरी जिल्द २)

(सम्मतियाँ)

"मिश्रबंधु"—कौशिकजी का श्रम प्रशंसनीय है। आपने स्वभावोक्ति का मज़ा हर स्थान पर दिखलाया है। ग्रंथ उपादेय है। पढ़कर चित्त प्रसन्न हुआ। अच्छी कथाएँ हैं। सदुपदेश मिलता है।

श्रीयुत जी० पी० श्रीवास्तव बी० ए०, एल्० एल्० बी०—सभी गल्पें अपने ढंग की निराली हैं और एक-से-एक बढ़कर हैं। कौशिकजी ने तो गल्प-लेखन-कला को पूर्ण रूप से अपना लिया है, क्योंकि मैदान में लाठी चलाना उतना मुश्किल नहीं है, जितना एक तंग कोठरी के भीतर। छोटी-छोटी कहानियों में प्लाट की विचित्रता और मौलिकता देखकर चकित हो जाना पड़ता है। विशेषकर भावी गल्प-लेखकों को इस पुस्तक के अध्ययन से बड़ा लाभ पहुँच सकता है।

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, २९-३० अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

विश्व-साहित्य

[लेखक, वर्तमान सरस्वती-संपादक श्रीयुत पदुमलाल पुन्नालाल बख़्शी बी० ए०]

यदि आप एक ही पुस्तक पढ़कर संसार की सभी उन्नत भाषाओं के साहित्य का रसास्वादन करना चाहते हैं, तो इस पुस्तक का पाठ अवश्य कीजिए। इसमें साहित्य का प्रकृत रूप, उसका वास्तविक तत्त्व, उसका मूल सिद्धांत, उसकी सच्ची परिभाषा और उसके प्रत्येक अंग की सुबोध व्याख्या बड़े विस्तार के साथ की गई है। यह पुस्तक सरसता और सहृदयता की खान है। छपकर तैयार हो चली है। मूल्य लगभग १॥)

रावबहादुर

[अनुवादक—पं० लल्लीप्रसाद पांडेय]

इसके लेखक मौलियर प्रहसन की रचना में अद्वितीय माने गए हैं। उनकी अन्य रचनाओं की तरह इस प्रहसन के भी भिन्न-भिन्न भाषाओं में अनुवाद प्रकाशित हो गए हैं, हिंदी राष्ट्र-भाषा होकर भी अब तक इस सौभाग्य से वंचित थी। 'ठोक-पीटकर वैद्यराज' (मौलियर की ही एक पुस्तक का अनुवाद) नाम का श्रेष्ठ प्रहसन जिन हिंदी-प्रेमियों ने पढ़ा है, वे इस प्रहसन की भी उत्तमता का अनुभव कर सकेंगे। इसमें ख़िताब के लालच में पानी की तरह रुपया बहानेवाले, उपाधि के लोभ में फँसे हुए एक उच्च कुल के कम पढ़े-लिखे, पर अपने को दिग्गज विद्वान् गिननेवाले मनचले मूर्ख—घर-फूँकबहादुर—का ख़ाका ख़ासी तौर से खींचा गया है। काग़ज़ बढ़िया छपाई सुंदर। मूल्य ।॥), सजिल्द १।)

(सम्मतियाँ)

श्रीयुत पं० राधाचरणजी गोस्वामी—फ्रांस, महाराष्ट्र, अवध, आगरा आदि कई देशों की नोकझोंक, फ़ैशन, चालचलन, ठाटबाट और चालाकी इसमें दिखलाई गई है। यह चतुर्मुख रस बड़ा बढ़िया है।

"मिश्रबंधु"—इसके पात्रों के स्वभावों का ज्यों-ज्यों विकास होता गया है, त्यों-त्यों ग्रंथ की रोचकता बढ़ती गई है। अंतिम अंक ख़ासा रोचक है।

चतुर्वेद

[लेखक, प्रोफ़ेसर श्रीयोगेन्द्रनाथ समाद्दार बी० ए०]

इस मनोरंजक एवं शिक्षाप्रद पुस्तक में चार सचित्र ऐतिहासिक गल्पें हैं। गल्पों में आध्यात्मिक ज्ञान की प्रधानता है। बौद्धकाल का उज्ज्वल चित्र अंकित करने में लेखक की प्रतिभा ने कमाल कर दिया है। यह मौलिक पुस्तक एक हिंदी-प्रेमी बंगाली विद्वान् की लिखी हुई है। किंतु इसकी भाषा बड़ी सरल एवं सरस तथा परिमार्जित है। धारा-प्रवाह वर्णन-शैली में रोचकता भी यथेष्ट है। भाव की गंभीरता और पवित्रता तो और भी मन को मुग्ध करती है। इसे आबालवृद्ध नर-नारी निस्संकोच पढ़कर लाभ उठा सकते हैं। ऐसी उच्च-कोटि और नए ढंग की गल्पें हिंदी में बिलकुल नई चीज़ हैं। इन्हें पढ़ने से जो शांति प्राप्त होती है, वह अनिर्वचनीय है। जो लोग सांसारिक प्रेम और लौकिक चरित्रों से भरे हुए उपन्यासों को पढ़ते-पढ़ते ऊब गए हैं, वे इसमें आत्मज्ञान की स्वर्गीय झलक और इसमें वर्णित दिव्य चरित्र पढ़कर अवाक् हो जायँगे। चिकने काग़ज़ पर शुद्ध सुंदर छपाई। मू० ॥=)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, २९-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

दो आने रुपया कमीशन !

अपूर्व लाभ ! स्थायी ग्राहक ध्यान दें ! अपूर्व लाभ !

निम्न-लिखित चुनी हुई उत्तमोत्तम पुस्तकों पर गंगा-पुस्तकमाला के स्थायी ग्राहकों को फ़ी रुपया दो आने कमीशन दिया जायगा

काव्य और छंद

प्रणवीर प्रताप	।)	सुहराब रुस्तम	।)	पिंगलसार	१)
गाँधी-गौरव	।॥)	रामायण (पं० राधेश्याम)	४)	प्रेमरत्नावली	=)
निर्भय-तरंग	-)	पद्यरत्नप्रभा	।)	अनुराग-रत्न ('शंकर')	१)
मातृ-वंदना	॥)	पद्यपारिजात	।)	वायसविजय (,,)	=)॥
वीर हम्मीर	।)	हिंदी कवियों की अनोखी सूझ	॥)	गर्भरंडारहस्य (,,)	।=)
आलम-केलि (भगवानदीन)	१)	अन्योक्ति कुसुमांजलि	=)	प्रासपुंज (बेताब)	१)
दर्पोरशंख	।)	हिंदी-सुभाषित	१)	अलंकारचंद्रिका	॥)

उपन्यास, गल्प, कहानी

हृदय-लहरी	॥)	वीर-पूजा	१॥)	कमला	१॥)
सम्राट् अशोक (सचित्र)	१॥)	सोने का चाँद	।)	मुकुट	।)
अशोकलता (,,)	१॥=)	फूलों की डाली	=)॥	तिलस्माती मुँदरी	।-)
वंदेमातरम् (,,)	१।॥)	विमला	।॥)	तीन रत्न (महात्मा गाँधी)	॥=)
तीन फूल (,,)	॥=)	वीर बाला	=)	तरंग (गद्य-काव्य)	॥=)
व्रतकथा (,,)	१।॥),२।)	चतुर्वेद (सचित्र)	।॥=)	धर्मोपाख्यान	।=)
भारतप्रेमी	।॥)	अनंतमती	।॥=)		

नाटक

सिद्धार्थकुमार (सचित्र)	१।)	सत्यनारायण (सचित्र)	१।-)	दलजीतसिंह	॥-)
कृषक-दुर्दशा	॥=)	वेणीसंहार	।-)	शेक्सपियर (दोनों भाग)	२।=)

इतिहास और भ्रमण

दक्षिण आफ्रिका के सत्याग्रह का इतिहास (सचित्र)	३॥)	असहयोग का इतिहास	।॥)	भारतवर्ष की सरकारी नौकरियाँ	।॥)
		हर्ष-चरित्र भाषा	॥)		
संसारव्यापी असहयोग	॥=)	इँगलैंड का इतिहास	१)	भारतवर्ष	॥-)
सन् सत्तावन का ग़दर	१॥)	संसार की क्रांतियाँ	१॥=)	मेरी काश्मीर-यात्रा	॥=)

जीवनी

देशभक्त दामोदर	।॥=)	बंदी जीवन	।॥)	टॉलस्टाय की आत्मकहानी	॥=)
गाँधीजी कौन हैं	॥-)	हमारी कारावास-कहानी	॥)	ग्यारीबाल्डी	॥)
गाँधी-दर्शन	१)	सनयातसेन	।)		
सी० आर० दास	॥)	कार्नेगी और उसके विचार	॥=)		

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, २९-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

राजनीतिक और राष्ट्रीय

स्वराज्य की लहर (हिंदी)	-)	शिक्षित और किसान	॥=)	स्वराज्य गायन	-)
,, ,, (उर्दू)	-)	स्वदेशी और स्वराज्य	।=)	गाँधी-गान	)॥
स्वराज्य का डंका (हिंदी)	-)	भारत को स्वाधीनता का संदेश	१।-)	देश का दुखी अंग	≡)
,, ,, (उर्दू)	-)	बोलशेविक रूस	।=)	गाँधीजी का बयान	॥)
स्वराज्यगीतावली	-)	असहयोग-दर्शन	१।)	स्वराज्य-संवाद	≡)
भारत की धूम	-)	अकालियों का आदर्श सत्याग्रह	॥)	स्वराज्य की कुंजी	।)
तराने वतन (उर्दू)	-)	असहयोग पर महात्मा गाँधी	॥)		

शिक्षा

शिक्षा-भूषण	=)॥	इतना तो जानो	।-)	हर के हाथ निबाह	-)
निबंध-नवनीत	॥।)	भाषा पत्रबोध	≡)	मातृ-भाषा	।)
सदाचार और नीति	१)	सर्वोदय (महात्मा गाँधी)	।)	रसज्ञ-रंजन (द्विवेदीजी)	॥)
प्रबंध-पारिजात	॥-)	भिखारी के भगवान	१)		

धर्म और अर्थ-शास्त्र

ब्राह्मणों से निवेदन	ﾉ)	असहमत संगम	१)	हिंदी में इनकम टैक्स	॥)

कृषि, विज्ञान, चिकित्सा

कृषि-सार	१)	हमारे शरीर की रचना (दो भाग)	६॥।)	ताप	।ﾉ)
भूलोक का अमृत दूध	।-)	विज्ञान-प्रवेशिका (प्र० भा०)	।)	प्रैक्टिकल फोटोग्राफी	२)

बालकोपयोगी

बाल-शिक्षा	≡)	बालबोधिनी (पाँचों भाग)	१॥-)	माता के उपदेश	।-)
		बालविनोद (पाँचों भाग)	१॥।)॥		

महिलोपयोगी

भारतीय महिलाओं को गुप्त संदेश	॥)	गृहिणी-भूषण	॥)	महिला सप्त सरोज	॥)॥
नारी-नीति	॥=)	व्यंजन-विधान (दूसरा भाग)	॥)		

नवयुवकोपयोगी

भारतीय नवयुवकों को राष्ट्रीय संदेश	॥।)	संसार की सबसे बहुमूल्य वस्तु	-)	संसार-सुखसाधन	।≡)
नवयुवको, स्वाधीन बनो	॥)	भाग्य-निर्माण	१।ﾉ)	सदाचार-सोपान	।ﾉ)
		कर्मक्षेत्र	॥।=)		

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, २९-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

स्त्रियों के लिये उपयोगी महिला-माला की मनोहर मणियाँ

भारत की विदुषी नारियाँ

[संपादिका—श्रीमती कृष्णाकुमारी]

स्त्रियों के कोमल हृदय पर सती तथा पतिव्रता नारियों के जीवन-चरित्र पढ़ने से जो प्रभाव पड़ सकता है, वह अन्य पुस्तकों से नहीं हो सकता। इसमें वैदिक युग से लेकर वर्तमान युग तक की अनेक भारत की विदुषी नारियों की जीवनियाँ दी गई हैं। इसमें उर्वशी, मैत्रेयी, गार्गी, मंदालसा, देवहूति, आत्रेयी, लीलावती, विद्या, विदुला, मीराबाई आदि-आदि कोई ५० उन पतिव्रता नारियों के जीवन-चरित्र लिखे गए हैं, जो आजकल देवी-स्वरूप मानी जाती हैं और जिनका परिचय पाकर स्त्रियाँ जातीय गौरव प्राप्त कर सकती हैं। शीघ्र यह ग्रंथ-रत्न मँगाकर अपनी कन्याओं, बहनों और देवियों को दीजिए। सुंदर काग़ज़ पर नेत्र-रंजक छपाई। चिकने कवर पर चित्ताकर्षक तिरंगा चित्र। मूल्य ॥)

नारी-उपदेश

[लेखक—स्व० गिरिजाकुमार घोष]

इस पुस्तक में नारियों के जानने-योग्य—नारी-पूजा, नारी-महत्त्व, नारी-चर्या, बड़ी-बूढ़ियों का सम्मान, गृहिणी, पति-पत्नी की लड़ाई, लज्जा, सुंदरता, गहनों की पिटारी, आभूषण, प्रेम, सच्चा वैराग्य, परदे की उत्पत्ति, मैत्रेयी-याज्ञवल्क्य-संवाद आदि—बीसों उपदेश-प्रद विषयों का वर्णन बड़ी ख़ूबी के साथ, सरल भाषा में, किया गया है। इस पुस्तक के पढ़ने से आपके घर की नारियाँ लक्ष्मी और घर स्वर्ग बन जायगा। स्त्रियों के लिये जितनी चरित्र-गठन-संबंधी महत्त्व-पूर्ण बातें हैं, सब इसमें आ गई हैं। काग़ज़ ऐंटिक। छपाई सुंदर। आवरण त्रिवर्ण-चित्रयुक्त। मूल्य ॥)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, २९-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

उत्तमोत्तम सचित्र ग्रंथ-रत्न !

श्रीकृष्ण

७३ अध्यायों में संपूर्ण यह ग्रंथ आदर्श की खान, शिक्षा का भंडार, और भव-सागर की तरंगों से बचानेवाला है । इसमें श्रीकृष्ण-जीवन की समस्त घटनाएँ, व्रजमंडल की समस्त लीलाएँ, गीता का मोहनाशक महोपदेश प्रभृति सभी बातें, विशद रूप से, सरल भाषा में लिखी गई हैं । २७ चित्रों से सुशोभित; मूल्य ४॥), सुनहरी रेशमी जिल्द ५)

पार्वती

सती पार्वती का चरित्र देवी-समाज में जैसा अद्भुत तथा अतुलनीय है, वैसा किसी का भी नहीं, वह स्त्री-समाज के लिये आदर्श है । मूल्य २), सजिल्द २॥)

मायापुरी

यह उपन्यास उपदेश का भंडार, वेदांत का सार, और इस संसार के माया-जाल से मुक्त करने का साधन है। साहित्य के नवों रसों का, गद्य-काव्य की मधुरता का, और मनुष्योचित कर्तव्य-ज्ञान का रसास्वादन करना हो, तो मायापुरी का मनन कीजिए। कई चित्रों से सुशोभित मूल्य २॥), रेशमी जिल्द ३)

महात्मा विदुर

इसमें महात्मा विदुर के जीवन की समस्त घटनाएँ और नीति-शिक्षाएँ लिखी गई हैं । मूल्य १॥), रेशमी जिल्द २)

चंद्रकला

काशी-राज की सौंदर्यमयी सुकन्या चंद्रकला का अद्भुत पातिव्रत और युद्ध में असीम साहसिकता आदि बड़ी ही कौतूहलवर्द्धक कथाएँ हैं । यह ललित पौराणिक उपन्यास है । मूल्य १॥), रेशमी जिल्द २)

विचित्र-समाज-सेवक

इस पुस्तक में देश-सेवा का महत्त्व दिखाया गया है । यह एक अनोखा, अपूर्व और अद्भुत उपन्यास है । इसमें पुलिस की अद्भुत काररवाई, महंत का अत्याचार, विलायती चाल पर चलनेवाली स्त्रियों का विचित्र चरित्र, विलायती ढंग से स्त्रियों की शिक्षा का भीषण परिणाम, पादरियों की लीला आदि इतनी आश्चर्यप्रद तथा उपदेशप्रद घटनाएँ लिखी हैं कि पुस्तक हाथ में लेकर छोड़ने को जी नहीं चाहता । कई चित्रों से सुशोभित, मनोहर रेशमी जिल्द, मू० ३)

सती विपुला

जिस स्त्री-पुरुष को अपनी गृहस्थी सुधारने का कुछ भी ख़याल हो, वह इसे अवश्य पढ़े। (४ रंग-बिरंगे चित्रों से पुस्तक सजा दी गई है। मूल्य २।), रेशमी जिल्द २॥)

सती मदालसा

इसमें गृहस्थ-धर्म के सभी विषय मदालसा के पुत्रोपदेश के रूप में बड़ी ही सरल भाषा में समझाए गए हैं । बालिका-पाठशालाओं में पढ़ाने और बालिकाओं को उपहार देने योग्य सुंदर और सचित्र है । दाम १॥), रेशमी जिल्द २

सती-पंचरत्न

इस पुस्तक में पाँच पतिव्रता वीरांगना, धर्मप्राणा देवियों की जीवन-कथा लिखी गई है । स्त्री-शिक्षा-संबंधी समस्त भावों से भरी है । एक प्रति मँगाकर स्त्रियों को पढ़ाइए। आपकी गृहस्थी आनंदमयी हो जायगी। मूल्य १।), रेशमी जिल्द १॥)

आदर्श लीला

स्त्रियों का चरित्र कैसा होना चाहिए, इसमें यही बतलाया गया है। कई चित्रों से सुशोभित। मूल्य बेजिल्द १॥), सजिल्द २)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय, २६-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखन

साहित्य-संसार के सर्वोपयोगी ग्रंथ

संस्कृत-साहित्य का इतिहास

इसमें भारतवर्ष की महिमा, हिंदुओं की प्राचीन सभ्यता, संस्कृत का माहात्म्य, वैदिक साहित्य, वेदों की महिमा, ऋग्वेद और सामाजिक जीवन, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, पुराण, रघुवंशादि महाकाव्य, मेघदूतादि खंड काव्य, नाटक, गीति-काव्य, कथा-कहानी, दर्शन-शास्त्र, युद्ध-विद्या, गान-विद्या, ज्योतिष, चिकित्सा-विज्ञान तथा योरप आदि महादेशों पर संस्कृत-साहित्य अथवा हिंदू-सभ्यता का प्रभाव प्रभृति परम उत्तम और उपयोगी विषयों का वर्णन है। पंडित रामावतार शर्मा एम्० ए०, डॉक्टर गंगानाथ झा, काशीप्रसाद जायसवाल आदि धुरंधर विद्वानों ने इसकी मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। इसे पढ़कर अपनी प्राचीन सभ्यता और अपने अगाध साहित्य के गौरव से आपकी छाती फूल उठेगी। पृष्ठ-संख्या ४२६, मूल्य २)

मेरी काश्मीर-यात्रा

'काश्मीर' इस देश का नंदन-कानन है। उसे देखनेवाले पृथ्वी पर ही स्वर्ग की कल्पना करते हैं। वास्तव में वह प्रकृति-देवी का ललाम लीलाक्षेत्र है। उसकी नैसर्गिक शोभा और प्राकृतिक वैभव देखने के लिये देश-देशांतर से प्रतिवर्ष असंख्य यात्री आया करते हैं। काश्मीर भारतवर्ष का मुकुटमणि और हिमालय-प्रदेश का अनुपम अलंकार है। यदि आप ऐसे सुषमा-संपन्न, सुशासित, शांतिप्रद, सौंदर्य-मंडित दिव्य भूमि की घर-बैठे सैर करना चाहते हैं, तो पुस्तक अवश्य पढ़िए। मूल्य ॥=)

आर्य-सामाजिक धर्म

इसमें आर्यसमाज के दस नियमों की व्याख्या की गई है और उनके महत्त्व तथा सार-मर्म को भी समझाया है। जो लोग आर्य-धर्मशील बनना चाहते हैं, उनके लिये यह पुस्तक बड़े काम की है। मूल्य ॥)

नीचे लिखी पुस्तकें शीघ्र ही छपकर प्रकाशित होंगी—

बिहारी-रत्नाकर

(बिहारी-सतसई पर अद्वितीय भाष्य)—यह सर्वांग-सुंदर विशाल ग्रंथ दिसंबर १९२४ तक तैयार होगा। इसमें काव्यमर्मज्ञता और साहित्यिक पांडित्य की अद्भुत झलक है! मूल्य लगभग ५)

अद्भुत आलाप

इसमें भूतपूर्व सरस्वती-संपादक, हिंदी-साहित्य-महारथी पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी के अद्भुत चित्ताकर्षक और चमत्कारपूर्ण निबंध हैं। यह पुस्तक संसार के महत्त्व-पूर्ण नवीन आविष्कारों की विचित्र प्रदर्शिनी है। मूल्य १)

विश्व-साहित्य

वर्तमान सरस्वती-संपादक बख़्शीजी के गंभीर भाव-पूर्ण साहित्यिक लेखों का सुरुचि-पूर्ण संग्रह। मूल्य लगभग १॥)

एशिया में प्रभात

फ़्रांस के विश्वविख्यात दार्शनिक विद्वान् महामना पॉल रिचर्ड के Dawn over Asia-नामक अपूर्व ग्रंथ का सरल सुबोध अनुवाद। इसमें ग्रंथकार ने पाश्चात्य जगत् की भौतिक उन्नति को सर्वनाश का द्वार और प्राच्य जगत् की सभ्यता को संसार का उद्धारक बतलाया है। पुस्तक क्या है, प्रेम और शांति का स्वर्गीय संदेश तथा मधुर मनोज्ञ उदार विचारों का कमनीय रमणीय नंदन-कानन है! आज ही आर्डर दीजिए। मूल्य ॥)

भारतीय अर्थ-शास्त्र

यदि आप भारतवर्ष की दयनीय दरिद्रता के मुख्य कारणों को जानना चाहते हैं, तो यह पुस्तक अवश्य पढ़िए। यह देश की सच्ची अवस्था का उज्ज्वल दर्पण है। मूल्य लगभग २)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, २९-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

गृहस्थों के लिये दो रत्न

गोरस और गोवर्द्धन-शास्त्र

हिंदी-भाषा में डेअरी-विषयक ऐसा सर्वांग-पूर्ण दूसरा ग्रंथ नहीं है। यह गृहस्थों का सहायक और डेअरी-फ़ार्मों के संचालकों का सच्चा मार्ग-दर्शक है। इसके द्वारा गोशालाओं के प्रबंधक भी अपनी उन्नति आसानी से कर सकते हैं। इसमें गोशाला, चारा-दाना, गऊ की रक्षा, दूध और उसके गुण-धर्म, दही, मक्खन, घी, क्रीम, दूध की परीक्षा, पशुओं के साधारण रोग, पशुओं की उत्पत्ति का वर्णन, दूध देनेवाले पशुओं की प्रसिद्ध जातियाँ, डेअरी का हिसाब-किताब रखने की रीति आदि-आदि कईएक उपयोगी अध्यायों का वर्णन है। दूध, क्रीम-संबंधी अन्य भिन्न जातियों के जानवरों के चित्र भी दिए गए हैं। डेअरी-फ़ार्म तथा गोशाला से संबंध रखनेवाले और गऊ पालनेवाले प्रत्येक गृहस्थ को इसे मँगाकर पढ़ना चाहिए। हिंदी-साहित्य-सम्मेलन ने अपनी मध्यमा की परीक्षा में इसे स्वीकृत किया है। मूल्य केवल २), अधिक प्रतियाँ—इकट्ठी—लेने पर बुकसेलरों को कमीशन भी दिया जाता है।

हमारे शरीर की रचना

स्वास्थ्य की रक्षा करने के लिये, शरीर की बनावट और अंगों की रचना का जानना परमावश्यक है। इसलिये डॉ॰ त्रिलोकीनाथ वर्मा-कृत उपर्युक्त उपयोगी पुस्तक पढ़िए। इसमें सैकड़ों चित्रों की सहायता से, संपूर्ण मनुष्य-शरीर की बनावट तथा उसके सब अंगों की रचना और लक्षण का अत्यंत मनोरंजक तथा सरल भाषा में वर्णन किया गया है। यह ग्रंथ पढ़ने में उतना ही रोचक है, जितना कोई अच्छा उपन्यास। स्त्रियों को पुरुषों की अपेक्षा यह अधिक आवश्यक है कि शरीर की रचना जानें। इसमें शरीर के धातुओं की रचना पर अति उत्तम विधि से विचार किया गया है। भारतवर्ष की किसी अन्य भाषा में ऐसी पुस्तक अब तक नहीं रची गई है। इसमें लगभग समस्त पारिभाषिक शब्द हिंदी और संस्कृत में दिए हुए हैं। पुस्तक के अंत में हिंदी-पारिभाषिक शब्दों के अँगरेज़ी तुल्यार्थ कोष-रूप में दिए गए हैं। पुस्तक में सुंदर रंगीन और हाफ़टोन ३१२ चित्र आर्ट-पेपर पर छपे हैं। पृष्ठ-संख्या ८२९ है, और सुंदर जिल्द बँधी हुई है। मूल्य पहले भाग का २।।।), दूसरे भाग का ४)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय

२९-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

अपूर्व पुस्तक लीजिए !

श्रीपंडित ठाकुरदत्तजी शर्मा वैद्य-रचित

नापसंद हो, तो मूल्य वापस

काम तथा रतिशास्त्र

प्रथम भाग

(इसमें २४५ हाथ की तथा ५० फ़ोटो की तस्वीरें हैं)

अभी छपकर लगभग ३ हिस्सा बिक चुकी हैं । शीघ्र मँगवा लें ; अन्यथा दूसरे एडीशन की प्रतीक्षा करनी होगी । क़ीमत ६) विद्यार्थी न लिखें ।

काम तथा कोकशास्त्र के नाम पर लूट मच रही है । इस अत्यावश्यक विषय को नितांत अशुद्ध पेश किया जाता है । पंडितजी ने सैकड़ों पुस्तकों के पढ़ने के पश्चात् ठीक तौर पर इस विद्या को जनाने के लिये लेखनी उठाई है, इस भाग में पुरुष-स्त्री का यौवन तथा सुंदरता का वर्णन पूरी तौर पर किया गया है । मनुष्य-शरीर के सूर्य पर रोशनी डाली गई है । पुस्तक देखने योग्य है । अधिक प्रशंसा क्या करें, जब कि

नापसंद होने पर वापस

लेने को तैयार हैं अर्थात् पुस्तक पहुँचने पर यदि नापसंद है, तो दो दिन के भीतर रजिस्ट्री द्वारा पुस्तक भेज दें, हम तस्वीरें आदि देखकर क़ीमत वापस कर देंगे ।

श्रीमान् पंडितजी-रचित अन्य पुस्तकें । सूचीपत्र मुफ़्त ।

क्या हम पुत्र या पुत्री अपनी इच्छानुसार उत्पन्न कर सकते हैं ... ... मू०	।)॥
प्लेग-प्रतिबंधक ... ... मू०	॥=)
घर का वैद्य ... ... मू०	।)॥
क्या मैं स्वस्थ हूँ ... ... मू०	॥।)
हई ... ... मू०	।)
प्रसूतकाल ... ... मू०	॥=)
विष-चिकित्सा (प्रथम भाग) ... मू०	।≡)
,, ,, (द्वितीय भाग) ... मू०	१।=)
ऋतुचर्या ... ... मू०	१।)
शिशुपालन ... ... मू०	१)
ब्राह्मी ... ... मू०	-)
मीठी निद्रा व स्वप्न-रहस्य ... मू०	१।)
स्वास्थ्य-रक्षा के दस नियमों का वर्णन मू०	॥)
कोष्ठबद्धता ... ... मू०	॥।)
भोजन और स्वास्थ्य ... ... मू०	१।)
मेरे डॉक्टर चचा ने मुझे दांपत्य-संबंधी शिक्षा कैसे दी ... ... मू०	।)
सोज़ाक ... ... मू०	॥।)
हिस्टिरिया ... ... मू०	॥)
दोष-ज्ञान ... ... मू०	॥।)
वीर्य ... ... मू०	॥=)
शीतला ... ... मू०	१)
मलेरिया ... ... मू०	॥=)
भारतवासियों की शारीरिक निर्बलता के कारण और उनके उपाय ... मू०	॥।)
इंफ़्ल्यूएंज़ा ... ... मू०	॥)
डॉक्टर लुई कोहनी के चार स्नान मू०	=)॥
रसहृदयतंत्र ... ... मू०	॥।)
शीघ्रपतन ... ... मू०	।=)॥

२०
३१

पत्र तथा तार का पता—अमृतधारा १२ लाहौर

अमृतधारा का विज्ञापन इसके दूसरे सफ़े पर देखिए ।

दोषज तथा आगंतुक रोगों का बीमा।

जो पैदा हुआ है, उसके रोग होना भी संभव है। साधारण पुरुष न हर समय डॉक्टर-वैद्य को बुला सकते हैं, न मूल्यवान् औषधियाँ ही ख़रीद सकते हैं। धनियों के लिये भी तो हर अवस्था में और हर स्थान पर डॉक्टर बुलाना असंभव होता है। कभी थोड़ी-सी देरी भी हानिकारक होती है। परमात्मा का धन्यवाद है कि पं० ठाकुरदत्त शर्मा वैद्य ने एक ऐसी घरेलू औषधि तैयार की है, जिसको पास रखना एक योग्य चिकित्सक का पास रखना है। जो बहुत-से व्यय, चिंता और दुःख से बचाती है—जिसका प्यारा नाम है!

"अमृतधारा"

(१) उन रोगों को जो अकस्मात् मनुष्य पर आक्रमण करते हैं जैसे, शिरपीड़ा, कानपीड़ा, दाँतपीड़ा, पेटदर्द, अफ़ारा, वमन, मतली, अतिसार, पीड़ा, शोथ, शीत-पित्त, ज़ुकाम, आदि को अमृतधारा वैसे ही अकस्मात् दूर भी कर देती है।

(२) विषैले जीव-जंतु जैसे भिड़, मक्खी, बिच्छू, सर्पादि के डंक की वेदना, विष आदिक, अमृतधारा से तत्काल शांत होते हैं।

(३) ववाई रोग जैसे प्लेग, हैज़ा, इंफ़्ल्यूएंज़ा, डिंगू, मलेरिया के दिनों में इन रोगों से बचाती है और आक्रमण होने पर इनको दूर करती है। यह अत्युत्तम रोग कीटाणुनाशक है।

(४) आगंतुक कष्टों जैसे जलना, कटना, चोट, रगड़, शोथ, रक्तस्राव आदि में विज्ञ सर्जन का काम देगी।

(५) अन्य रोग जैसे वात-पीड़ाएँ, गठिया, कटिशूल, अपाचन, आमातिसार, क़ब्ज़, श्वास, कास, पांडु, कामला, ज्वर, पार्श्वशूल, अपस्मार, दद्रु, कंडू, फोड़ा-फिंसी, घाव सबको यथावसर खाने या लगाने से मिटाती है।

लाखों सेवन करनेवालों में से ३० हज़ार लिखकर भेज चुके हैं अमृतधारा सबको सदा पास रखनी चाहिए। पूरे हाल के वास्ते 'अमृत' पुस्तक मुफ़्त मँगावें। हाँ, धोखे से बचना। इसकी बढ़ती देखकर बड़े लोग धोखा दे रहे हैं। मूल्य २॥),आधी शीशी १।),नमूना ॥)

पता—अमृतधारा (१२) लाहौर।

विज्ञापक—मैनेजर अमृतधारा औषधालय, अमृतधारा भवन,
अमृतधारा सड़क, अमृतधारा पोस्टऑफ़िस लाहौर।

२०
३१

काम तथा रतिशास्त्र का विज्ञापन इसके पहले सफ़े पर देखिए।

तत्काल फलदायक !

जगत्प्रसिद्ध हिमकल्याण तैल !

महासुगंधित !!

नाम-मात्र को तैल, किंतु गुण अमिय लजावत।
शिर के सारे रोग, मित्र यह तुरत भजावत॥
इसकी सुंदर छटा, देखि पशु-गण मस्ताने।
फिर रसिकन की दशा, कहो जग कौन बखाने॥
सांप्रत अगणित तैल, जहाँ देखो दरसाते।
निज-निज रुचि अनुसार, सभी उनके गुण गाते॥
किंतु एक भी बार, जिन्होंने इसे लगाया।
लोकोत्तर आह्लाद, पाय इसको अपनाया॥
सुलभ मूल्य गुण देखि, इसे चाहत नृप, रंका।
तत्कालहि फल देत, बजत भारत में डंका॥

यदि आप जीवन का सच्चा सुख देखना चाहते हैं और पवित्र तथा उपयोगी तैलों के लगाने का शौक़ रखते हैं, तो हमारा "जगत्प्रसिद्ध हिमकल्याण तैल" मँगाइए। यह तैल आजकल के तैलों की भाँति मस्तिष्क-शक्ति-नाशक मिट्टी के तैल पर विदेशी सुगंध के मिश्रण से नहीं बनाया जाता ; बल्कि ख़ालिस तिल के तैल से पवित्र और देशी औषधियों तथा जड़ी-बूटियों द्वारा वैद्यक-शास्त्र के मतानुकूल परम स्वच्छता से तैयार किया गया है। इसके लगाते ही कठिन-से-कठिन सिर-दर्द पाँच मिनट के अंदर शर्तिया और समूल नष्ट हो जाता है। दिमाग़ की कमज़ोरी, चक्कर आना, बालों का पकना, गंज-रोग, आँखों में जलन और सुर्ख़ी का रहना, आग से जल जाना, प्यास लगना, नाक से ख़ून गिरना, रतौंधी, आधे सिर का दर्द, समलवायु का दर्द, मिर्गी, उन्माद इत्यादि दोष अल्प काल में निस्संदेह दूर होकर रुई के समान कमज़ोर दिमाग़ पत्थर के समान दृढ़ हो जाता है। दिन-भर लिखते-पढ़ते और दिमाग़ी परिश्रम करते-करते जब आप थक जाइए, तो थोड़ा-सा यह तैल लगाकर देखिए, १० मिनट के बाद ऐसा जान पड़ेगा मानो, आपने परिश्रम किया ही न था। आपका दिमाग़ तरोताज़ा और चित्त प्रसन्न हो जायगा। इस तैल की उत्तमता पर मुग्ध होकर बड़े-बड़े राजा, महाराजा, गवर्नमेंट ऑफ़िसर्स तथा वैद्य, डॉक्टर और हकीमों ने अनेकों प्रशंसा-पत्र और कई स्वर्ण-पदक आविष्कर्ता को दिए हैं, गवर्नमेंट ने भी कृपा कर आविष्कर्ता के कार्य की सरलता के लिये उसके मकान ही पर हिमकल्याण तैल के नाम पर "हिमकल्याण" नाम का पोस्ट ऑफ़िस खोल दिया है। प्रशंसा-पत्रों का पूरा विवरण बड़े सूचीपत्र में देखिए।

हमारे तैल के विषय में प्रतिष्ठित सज्जनों की सम्मति !

कलकत्ते के स्वर्ण-पदक-प्राप्त प्रसिद्ध डॉक्टर बी० डी० शर्मन बी० ए० एच्० एम्० बी० एम्० एस्० (लंदन) एफ़्० आर्० एस्० ए० आई० ऐंड सी० (ग्लासगो) लिखते हैं—"हमने आपके जगत्-प्रसिद्ध हिमकल्याण तैल की स्वयं परीक्षा करके निर्णय किया है कि यह शुद्ध तिल के तैल पर पवित्र देशी औषधियों से बना हुआ है और उन समस्त रोगों के नाश करने में पूरी शक्ति रखता है, जिनका वर्णन आपने अपने सूचीपत्र में किया है··· ········।"

मूल्य १ शीशी का १) अध्यापकों, छात्रों और माधुरी के ग्राहकों से आधा दाम ; किंतु इस मूल्य पर २ शीशी से कम नहीं भेज सकते। ४ शीशी लेने से १ शीशी उपहार देंगे। महसूल ज़िम्मे ख़रीदार।

१६ पृ२

राजा-महाराजाओं से स्वर्ण-पदक और प्रशंसा-पत्र प्राप्त—

पं० गदाधरप्रसाद शर्मा राजवैद्य, हिमकल्याण बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

भारत-सरकार से रजिस्ट्री किया हुआ

१७००० एजेंटों द्वारा बिकना दवा की सफलता का सबसे अच्छा प्रमाण है।

सुधासिन्धु

(बिना अनुपान की दवा)

यह एक स्वादिष्ट और सुगंधित दवा है, जिसके सेवन करने से कफ, खाँसी, हैज़ा, दमा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट का दर्द, बालकों के हरे-पीले दस्त, इनफ़्लुएंज़ा इत्यादि रोगों को शर्तिया फ़ायदा होता है। मूल्य ॥), डा०-ख़० १ से २ तक ।✓)

दद्रुगजकेसरी

(दाद की दवा)

बिना जलन और तकलीफ़ के दाद को २४ घंटे में आराम करनेवाली सिर्फ़ यही एक दवा है। मूल्य फ़ी शीशी ।) डा०-ख़० १ से २ तक ।≡), १२ लेने से २।) में घर बैठे देंगे।

बालसुधा

दुबले-पतले और सदैव रोगी रहनेवाले बच्चों को मोटा और तंदुरुस्त बनाना हो, तो इस मीठी दवा को मँगाकर पिलाइए। बच्चे इसे ख़ुशी से पीते हैं। दाम फ़ी शीशी ।॥), डाक-ख़र्च ।≡)

पूरा हाल जानने के लिये बड़ा सूचीपत्र मँगाकर देखिए। मुफ़्त मिलेगा।

१८ पता—सुख-संचारक कंपनी, मथुरा

बनारस के प्रसिद्ध डॉक्टर गणेशप्रसाद भार्गव का बनाया हुआ

दाम शीशी १), १०० ख़ुराक, महसूल ॥)

नमक सुलेमानी

दाम बड़ी बोतल ५), ५०० ख़ुराक, महसूल ॥=)

यह नमक सुलेमानी अपने अपूर्व गुणों के कारण सारे भारतवर्ष और अन्य देशों में ४० वर्ष से सेवन किया जाता है। इसके सेवन से पेट का दर्द, वायु-शूल, खट्टी या धुसेंदी डकारों का आना, संग्रहणी, अफरा, बवासीर, वायुगोला इत्यादि को तुरंत लाभ होता है। स्त्रियों के मासिक-दोष, क़ब्ज़, बहुमूत्र में कुछ दिनों सेवन करने से लाभ होता है—आरोग्यता में इसके सेवन से भूख बढ़ती है और जो कुछ खावे, उससे शुद्ध रक्त और रस बनते हैं, जिससे हर तरह का बल मनुष्य के शरीर में बढ़ता है—

स्वदेश-बहार तैल

रजिस्ट्री किया हुआ

क़ीमत फ़ी शीशी १) डाक-महसूल ।।)

यह तैल हिंदुस्तानी दवाओं और ख़ुशबूओं से तिल्ली के तैल में तैयार किया जाता है। सर में लगाने से ठंढक मालूम होती है। दिमाग़ की ख़ुश्की को दूर करता है। ज़्यादा दिमाग़ी मिहनत करने के बाद इसके लगाने से थकावट दूर होती है। इस तैल में ख़ुशबू से ज़्यादा फ़ायदे का ख़याल रक्खा गया है।

सफ़ूफ़ सालब मुरक्कब

दाम १) महसूल ।≡)

इस सफ़ूफ़ सालब के सेवन से प्रमेह, कमज़ोरी और धातु के सब विकार दूर हो जाते हैं। धातु अधिक पैदा होती है, जिससे चेहरे पर नूर और बदन में जोश बढ़ता है। जिस तरह यह सफ़ूफ़ मर्दों की बीमारियों के वास्ते अक्सीर है, उसी तरह स्त्रियों के प्रदर और प्रसूत के वास्ते बड़ा गुणदायक है।

पता—डॉक्टर गणेशप्रसाद भार्गव, ७२ कारख़ाना सुलेमानी, बनारस सिटी।

सबसे मज़बूत व सुरीले हारमोनियम

पसंद न हो तो दाम वापिस
हर बाजे पर तालेदार ढकना है।

हमारे जगत्-विख्यात हारमोनियम संसार में इसी कारण मशहूर हैं कि ये मज़बूत, पायेदार, सुरीले, ऊँची आवाज़वाले, देखने में अतिसुंदर, चमकीले और दीर्घ आयुवाले होते हैं। सभा-सोसाइटी, देवालय, रागविद्यालय आदि स्थान हमारे ही बाजों से सुशोभित हैं। आपको जिस क़िस्म का बाजा चाहिए मँगाकर देखिए, आप अतिप्रसन्न होंगे। स्थानाभाव के कारण केवल २ प्रशंसापत्र अंकित हैं। जिनसे हमारे बाजों की मज़बूती का भारी सबूत मिलता है। शीघ्र मँगावें।

आर्डर के साथ १०) म० आ० से पेशगी भेजें अपना नाम, पता, डाक-ख़ाना, ज़ि० व स्टेशन साफ़ लिखिए

मि० एस० आर० अवस्थी साहिब कोटला से लिखते हैं—आपका हारमोनियम बहुत ही सुरीला, देखने में अतिसुंदर और चमकीला हमारे राग-विद्यालय की शोभा बढ़ा रहा है। इसकी मीठी ध्वनि प्रशंसनीय है। कृपया एक बाजा ६०) वाला और भेज दें। ता० १७-३-२४।

हकीम सय्यद सियासतअली रईस मैनेजर एसेंबली आफ़ताबगढ़ से लिखते हैं—आपका भेजा कैपलर हारमोनियम अपनी मिसाल आप है। जैसी प्रशंसा सुनता था, वैसा ही पाया। देखने में सुंदर, बनावट अच्छी, रंग-रौग़न उत्तम व सुरीला सर्वांग-प्रिय है, जिससे धन्यवाद देता हूँ। ता० १३-१-२४।

१. सिंगिल स्वर अमरीकन या जरमन रीड्स ४ स्टाप ३०), २८), २६), २३), २१), २०)
२. डबल ,, ,, ,, ६ ,, ५०), ४५), ४३), ४०), ३७), ३५), ३३), ३०)
३. ,, ,, कैसरील रीड्स ९५), ९०), ८५), ८०), ७५) पेरिस रीड्स ७५), ७०), ६५)
४. डबल रीड्स हाथ व पैर से बजानेवाला अमरीकन या जर्मन रीड्स ६ स्टाप ७०), ६५), ६०)
५. ,, ,, ,, ,, पेरिस रीड्स ११०), १००), ९५) रु० कैसरील स्वर १२५), १२०), ११५)
६. ,, नालीदार पेटी ६ स्टाप सिर्फ़ पैर से बजानेवाला १२०), ११०), १००), ९०), ८५), ८०), ७५)
७. ,, ,, ,, ,, पेरिस रीड्स १५०), १४०), १३०) कैसरील १७५), १६०), १५०)
८. कैपलर हारमोनियम सिर्फ़ १ हाथ से बजाने से दोहरे सुरों की आवाज़ देनेवाला ६ स्टाप ६०), ५५), ५०) पेरिस रीड्स ९०), ८५), ८०) कैसरील रीड्स १२०), ११५), ११०) पूरी क़ीमत पेशगी भेजनेवालों को किराया-रेल माफ़।
९. सफ़री हारमोनियम। ज़ाहिरा बक्स की शक्ल, आवाज़ बढ़िया, पेटी से भी ज़्यादा वज़न इसका ८ सेर के क़रीब है। सफ़र में ले जानेवाले सज्जनों के लिये क़ाबिल क़दर है। क़ीमत ८०), ७५), ७०), ६५), ६०), ५५) पेरिस रीड्स १२०), ११०) कैसरील १४०), १३०) हरएक बाजे के साथ बक्स मुफ़्त देंगे। पूरी क़ीमत पेशगी भेजनेवालों को किराया-रेल माफ़।

नर है या मादा ?

SEX-INDICATOR
IKRIKI
IKRIKI

यह छोटा-सा यंत्र जर्मनीवालों ने अभी साइंस के वसूलों पर तैयार किया है। इसके ज़रिए से आप आध मिनट में देख सकते हैं कि गर्भ में कन्या है या पुत्र ? गाय, भैंस, घोड़ी आदि के गर्भ में बच्चा नर है या मादा ? अंडे में मुर्ग़ी है या मुर्ग़ा ? इसी प्रकार सब जानदारों के गर्भ का पूरा-पूरा हाल इस यंत्र से मालूम हो सकता है। किसी जानवर के शरीर के किसी भाग (चमड़े, बाल, पर, दाँत, हड्डी,) वग़ैरह से बनी कोई चीज़ किसी भी हालत में हो, यंत्र झट बतावेगा कि 'नर से बना है या मादा से ?' आज़मायश के लिये किसी मित्र के अंग पर लगाइए या किसी फ़ोटो-चित्र पर लगाने से बतावेगा, नर की है, या मादा की ? मुँह से किसी मित्र का नाम लें, यंत्र बतावेगा, नर का नाम लिया है या मादा का ? कहाँ तक लिखें, इस प्रकार के अनेकों गुण इससे ज़ाहिर हो रहे हैं। क़ीमत २) डाक-ख़र्च ॥) ६ के १०) दर्जन के १८) डाक-ख़र्च अलग। तरकीब की पर्चा साथ भेजेंगे।

१—अनुपम, 'शर्मा-संतति तैल'

महासुगंधित !!

नवकुसुमों की आ रही सुगंध जहाँ है ।
अवनीतल पर ही सचमुच स्वर्ग वहाँ है ॥
रंग-बिरंगे पुष्प, और द्रुमलता सुसोहत ।
शीतल मंद सुगंध, वायु सुर नर मुनि मोहत ॥
पावन भारत-भूमि, अवनितर छटा निराली ।
सृज्यो कुशलता-युक्त, जाहि चतुरानन माली ॥
सुंदर फूल गुलाब, सकल फूलन को राजा ।
ताकी मधुर सुगंध तैल दै रसिकन काजा ॥
निरम्यो युक्ति विचार, दियो रँग रूप अनूपम ।
देखहिं अजब बहार सकल नर-नारि सुहृत्तम ॥

जिन सज्जनों ने हमारे जगत्-प्रसिद्ध "हिमकल्याण तैल" की अनुपम छटा दे है, उनसे हमें इस तत्काल फल-दायक "शर्मा-संतति तैल" के विषय कुछ बताने की आवश्यकता नहीं है ; किंतु जिन्होंने आज तक हमारे कार का नाम नहीं सुना, और हमारे यहाँ से कोई औषधि नहीं मँगाया, उन हमारा सादर निवेदन है कि एक बार हमारे जगत्-प्रसिद्ध "हिमकल्याण तैल" और "शर्मा-संतति तैल" के गुणों की परीक्षा करके अवश्य लाभ उठावें । दोनों तैल गुणों में एक दूसरे बढ़-चढ़कर हैं । मूल्य १) शीशी ।

२—महाशक्तिवर्द्धक चूर्ण !

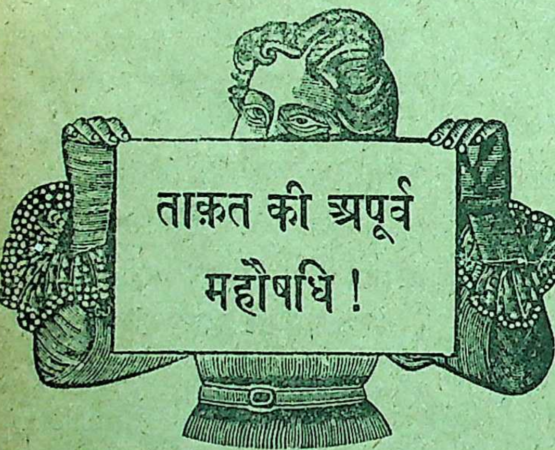

निर्बलता शब्द के कहने से जिन-जिन ख़राबियों का बो होता है, उन सबको दूर करके यह चूर्ण तत्काल बुड्ढ को जवान और मर्द को पहलवान बनाता है । स्त्रियों के लि भी अत्यंत लाभ-दायक है । मूल्य ६० ख़ुराक के डि का २) मात्र

३—सर्वोत्कृष्ट दंत-मंजन

इस अनोखे मंजन में हिलते हुए दाँतों को वज्र की तर दृढ़ करने का पूर्ण सामर्थ्य विद्यमान है । दाँतों का दर्द, मसू का फूलना और ख़ून निकलना तत्काल बंद करता है। दाम ।)

४—फ़ीवर मिक्श्चर

नित्य-ज्वर, एकांतरा, तिजारी, चौथिया, जाड़ा देकर आनेवाला बुख़ार तथा मलेरिया और तिल्ली पर जा की तरह काम देनेवाला और तत्काल फल-दायक है । दाम १२ ख़ुराक की शीशी का १) मात्र ।

क़द्रदान सज्जनों के लिये ख़ास रिआयत

अध्यापकों, छात्रों, पोस्टमास्टरों और माधुरी के ग्राहकों को उपर्युक्त औषधियाँ पौने दाम पर भेजी जायँगी। कम-से-कम १०) का वी० पी० तथा कुल दाम पेशगी भेजकर रेल-द्वारा मँगाने से रेल-महसूल भी माफ़ रहेगा।

मिलने का पता—

राजा-महाराजाओं से स्वर्ण-पदक और प्रशंसा-पत्र पाए हुए
पं० गदाधरप्रसाद शर्मा राजवैद्य, हिमकल्याण बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।
पो० आ० "हिमकल्याण" तार का पता "हिमकल्याण"
"हिमकल्याण तैल" का भी विज्ञापन इसी पत्रिका में है अवलोकन कीजिए ।

देश, देह और
द्रव्य के लिये

झंडू की

शुद्ध, सुंदर, सुघड़,
सलामत, सुगमता-
वाली, अचूक, सस्ती

आयुर्वेदिक दवाइयों

के व्यवहार करने के लिये हम आपसे क्यों आग्रह करते हैं ?

कई कारण —

१—शास्त्रीय पाठ

हमारे यहाँ प्रायः सभी दवाइयाँ प्राचीन आयुर्वेदिक ग्रंथों के अनुसार तैयार की जाती हैं। देश की वस्तु, देश की पूँजी और देश की मज़दूरी, पुराना अनुभव, पूरी शुद्धता और ख़ास हमारी देख-रेख से काम लिया जाता है।

२—सत्त्व और रूप

हमारे यहाँ की ओषधियाँ अंतिम ढंग के यंत्रोंद्वारा, शुद्धता और पवित्रता पर पूरा ध्यान रखकर, ताज़ी और गुणदायक वस्तुओं से तैयार की जाती हैं। इसी कारण देखते ही व्यवहार करने को तबियत चटपटाने लगती है।

३—सोने के पदक

अखिल भारतवर्षीय आयुर्वेदिक सम्मेलन मदरास सन् १९१२, कलकत्ता सन् १९१४ और पूना सन् १९१७ की प्रदर्शिनी में, तीन बार हमारी दवाइयों की श्रेष्ठता के लिये हमें सोने के पदक मिले हैं।

४—प्रशंसा और प्रचार—बारह वर्ष की कारर्वाई में राजा-महाराजा और लोकमान्य तिलक आदि महामान्य पुरुषों ने हमारे कारख़ाने को देखकर हमारी दवाइयों की प्रशंसा की है। बड़ोदा आदि कई राज्यों और बहुत-से सरकारी दवाख़ानों में हमारी दवाइयाँ जाती हैं। साधारण स्थिति के लोगों में तो इनका प्रचार बहुत ही अधिक है और बढ़ता जा रहा है। बहुत-सी थोड़े दाम की, परंतु उपयोगी दवाइयाँ, बाल-बच्चेवाले घरों में घड़ी-घड़ी होनेवाली छोटी-छोटी बीमारियों के लिये अकसीर दवा के रूप में अनेक घरों में संग्रह की जाती हैं।

शारीरिक और मानसिक मेहनत करनेवालों के लिये

तंदुरुस्ती, और ताज़गी देनेवाली दो अमूल्य औषधियाँ

च्यवन-प्राश
ढाई रुपए रत्तल

फ़ौरन् व्यवहार कीजिए

द्राक्षासव
दो रुपए का डेढ़ रत्तल

पताः—झंडू फ़र्मास्युटिकल वर्क्स लिमिटेड,
एल्फ़िंस्टन रोड, बंबई, नं० १३।

कलकत्ते के एजेंट—एच० दामोदर ऐंड कंपनी, २७६ बऊ बाज़ार स्ट्रीट

१३६/१७१ **आयुर्वेदिक दवाइयों का सूचीपत्र आज ही मँगाइए।**

THE U. I. C. PAPER MILLS CO., LTD.,

LUCKNOW.

One of the oldest Paper Mills in India managed and financed by Indians only under purely Indian directorate. Manufacturers of various varieties of paper. For free samples, terms and agency proposals for unrepresented areas apply to—

THE SECRETARY.

अपर इंडिया कूपर पेपर मिल कंपनी लिमिटेड,

लखनऊ।

भारतवर्ष में यह सबसे पुरानी मिल है, जिसका प्रबंध भी भारतवासियों के हाथ में है और मूल धन भारतवासियों ही का है। इस मिल में हर प्रकार का कागज़ तैयार होता है, जो कि भारतवर्ष की अन्यान्य मिलों से पायेदार और बढ़िया होता है। नमूने के लिये, और जिन शहरों में एजेंसी नहीं है, वहाँ की शर्तों के लिये, सेक्रेटरी से पत्र-व्यवहार कीजिए।

निवेदक—
सेक्रेटरी।

२४
१४

नवीन हिंदोस्तानी १०इंची डवल साइड

प्रत्येक का मूल्य ३॥) **"हिज़ मास्टर्स वायस" रिकार्ड** Rs 3/8/- each.

"His Master's Voice"

P. 6528.	कहो बुलबुल से ले जावे चमन से आशियाँ अपना	ग़०
बुलबुल	उठो, पिया, जागो अकेली डर लागे	भैरवी
P. 6529.	दिल बेचैन है ओ बे-वफ़ा तेरे लिये	ग़ज़ल
मिस दुलारी	आँखों में समा जाओ, परदों में रहा करना	,,
P. 6530.	मज़ा होठों पे फिरता है तलाशे खूने बिस्मिल है	ग़०
मास्टर जमाल	जिस पे मरता है ज़माना वो अदा कौन-सी है	,,
P. 6531.	नादान से नेह लगाना नहीं ...	जंगला
काकूराम	मैं खुश तेरी रज़ा में ...	कालंगड़ा
P. 6532.	सुंदर सुर की तान मोहे भा गई रे	मालकौस
भाईलाल	धनुष बाँध लो हाथ में रामचंद्र	तिलक कामोद
P. 6533.	शरबते वस्ल पिला माइडियर कम टू मी	इश्क़ मज़ाक़िया
मास्टर मेहर	किया था जुर्म वफ़ा लज़्ज़ते सज़ा के लिये	ग़ज़ल
P. 6534.	आज दिन भारत में सालेह मर्ग है आली जनाब	भजन
पं० मुन्नीलाल	करेगा इस ज़माने में वही दिल कुछ असर पैदा	,,
P. 6535.	तेरे दीदार के लिये बंदा हैरान है	खमाच
पं० नाथूलाल	नहीं आते हो नहीं आते हो	,,
P. 6536.	तेरे मरनेवाले तड़पते नहीं हैं	भैरवी
प्यारू कव्वाल	जो रैन सुपन में एक आलम	जोगिया
P. 6537.	सबा बेशक आती इधर से तो है	भैरवी
मास्टर राहित	कैसे सोए हो भारत प्यारे	ग़ज़ल

मसीही जमायत

P. 6538.	हमें दर्दो ग़म से छुड़ा जानेवाले	भैरवी
	हमने मसीहा की रूह व जान दिल से दिया जो हो सो हो	भीम
P. 6539.	तुम बिन कौन करे मोहिं पार	कालंगड़ा
P. 6540.	सिन्न में महा सुमित्र सतपती प्रभु ईसा है	भैरवी
	ईसू तूने किया निहाल जब मैं शरन तेरी आया	महारी
P. 6541.	ईसू मसीह मोर पिरान बचैया	पहारी
	हमारा मन लागा ईसूजी के चरनन में	,,

कश्मीरी रिकार्ड भी तैयार हो गए हैं। फ़िहरिस्त मँगा लें

नोट—यह नवीन रिकार्ड जारी हो गए हैं। जल्दी अपने पास के डीलर के यहाँ जाकर सुनें और पसंद करें। बड़ी फ़िहरिस्त हमसे मँगा लें:—

दी ग्रामोफ़ोन कंपनी लिमिटेड, पोस्ट बक्स नं० ४८, कलकत्ता (शाख़) बंबई।

नवीन पुस्तक !　　　　नवीन पुस्तक !!　　　　नवीन पुस्तक !!!

श्रीरामचरित-मानस का सार-तत्त्व या प्राण

श्रीमानस-रामायण-प्रश्नोत्तरार्थ-प्रकाश

लेखक

वैष्णव-साधु-समाज में शिरोमणि, मानस-रामायण के अद्वितीय वक्ता, श्रीअयोध्यांतर्गत श्रीजानकी-घाट-निवासी निखिल-शास्त्र-निष्णात महात्मा श्री १०८ पं० रामवल्लभाशरणजी महाराज के अनन्य सत्संगी और प्रिय शिष्य श्रीसियारामलषणदासजी रामायणी । मूल्य ॥=)

यह ग्रंथ मानस-रामायण का यथार्थ दर्पण है । ग्रंथ दो भागों में विभक्त है । पूर्वार्द्ध में मानस की रचना पर विचार है, जिसमें दिखाया गया है कि रामचरित-मानस में चार संवाद-रूपी अपार घाट हैं, जिनमें सब ४१ मूल प्रश्न किए गए हैं; और उन ४१ मूल प्रश्नों के उत्तरों का प्रसार ही रामचरितमानस है । किस प्रश्न में किसके द्वारा क्या बात पूछी गई है और उसका किसने, क्या उत्तर, कहाँ से कहाँ तक दिया है, इस विषय को अत्यंत मनोरंजक और पांडित्य-पूर्ण शैली से वर्णन किया गया है और यथास्थान २० अन्य ग्रंथों के प्रमाण देकर विषय को और स्पष्ट कर दिया गया है । दूसरे भाग अर्थात् उत्तरार्द्ध में, श्रीगोस्वामीजी के मुख्य-मुख्य सिद्धांतों को, जीवों के प्रबोध के लिये, प्रश्नोत्तर-रूप में दिखलाया गया है । उत्तरार्द्ध में १४८ प्रश्न हैं, जो इस शैली से चुनकर रक्खे गए हैं कि उनके समझ लेने से श्रीगोस्वामीजी के उपदिष्ट तत्त्व का बोध हो जाता है । जो लोग एक परम वैष्णव के मुख से मानस को तत्त्व-रूप से समझना चाहते हैं, उन्हें यह ग्रंथ अवश्य पढ़ना चाहिए । ग्रंथ बिलकुल नवीन शैली से लिखा गया है । आरंभ में श्रीगोस्वामीजी का एक चित्र है । आकार १६×२४½ पृष्ठ-संख्या १७६ ।

अँगरेज़ी राज्य के सुख

[हिंदी-साहित्य के धुरंधर विद्वान् लाला कन्नोमलजी
एम्० ए० द्वारा लिखित]

इसमें डाक, तार, रेल-गाड़ी आदि का विवरण, सेना और पुलिस से लाभ, न्याय-शासन-प्रणाली, कृषि, बैंक, नहरें, वन-रक्षा, म्युनिसिपालिटी, डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड और राज-भक्ति आदि की आवश्यकता आदि सैकड़ों विषयों का विस्तार-पूर्वक वर्णन है । पृष्ठ-संख्या ७२; मूल्य ॥)

विदेश-यात्रा

पं० विशननारायण दर, बैरिस्टर ऐट लॉ' की 'विदेश-यात्रा' का हिंदी-भाषानुवाद । इसमें शिल्प-कला-कौशल की उन्नति हम किस प्रकार कर सकते हैं और अपना भोजन विदेशियों के हाथों से किस प्रकार बचा सकते हैं, विलायत जाना हमारे लिये क्या ज़रूरी है इत्यादि सैकड़ों विषयों का विवेचन बड़ी उत्तमता से किया गया है । पुस्तक प्रत्येक पढ़े-लिखे मनुष्यों के संग्रह करने-योग्य है । पृष्ठ-संख्या ८८; मूल्य ।=)

संग्रह-भजन-माला

[बा० रामजी दास द्वारा संगृहीत]

आनंद का आनंद और भगवान् का नाम । इस पुस्तक में ज्ञान से भरे हुए अनेक भजन और अनेक विषयों पर दिल खुश करनेवाले गाने, विविध पुस्तकों से चुनकर संगृहीत किए गए हैं जिनके पढ़ने से क्या वनिता, क्या बाल, क्या वृद्ध, क्या युवा, सब ही को ज्ञान प्राप्त होता है । भगवद्भक्तों और संगीत-प्रेमियों को इसे अवश्य ख़रीदना चाहिए । मूल्य केवल ॥=), डाक-ख़र्च अलग ।

हृदय-श्मशान

[रूपांतरकार—पं० कात्यायनीदत्त त्रिवेदी]

यह उपन्यास भी अपने जोड़ का एक ही है । इसके लेखक भी "आपन ओ पर" के लेखक हैं । यह सामाजिक उपन्यास अति ही मनोरम, भाव-पूर्ण और शिक्षा-प्रद है । पढ़ते ही बनता है । एक प्रति आज ही मँगाइए । मूल्य ।=)

वीरांगना तारा

[ले०—पं० सुरेंद्रनाथ तिवारी]

एक राजपूत रमणी की सचित्र भाव-पूर्ण और मनोरंजक पद्यात्मक कहानी । यदि आप पढ़ना चाहते हैं कि एक राजपूत-रमणी ने बाल्य-काल में अपने पिता पर आई हुई मुसीबत में किस प्रकार प्राण-पण द्वारा साथ दिया था, तो आज ही इसे मँगाकर अवश्य पढ़िए और अपनी कन्याओं को पढ़ाइए । मूल्य ।)

अपना और पराया

[अनुवादक—ठा० युगलकिशोरनारायणसिंह]

यह वंग-भाषा के एक प्रसिद्ध उपन्यास "आपन ओ पर" का हिंदी-अनुवाद है । उपन्यास जैसा मनोरंजक है, वैसा ही शिक्षा-प्रद है । ऐसे "सोने और सुगंध" का काम आजकल उपन्यासों में कम देखने में आता है ।

"स्नेह पराए को अपना बना देता है
और स्वार्थ अपने को पराया कर देता है ।"

यदि इसका सच्चा स्वरूप देखना चाहते हों, तो आप ही इसकी एक प्रति मँगाकर आप स्वयं पढ़िए और अपनी शिक्षित बहुओं और भाइयों को पढ़ाइए । बंधुत्व का इस पुस्तक में अपूर्व उदाहरण है । पुस्तक का मूल्य ही क्या है ? केवल ।)

अन्यान्य पुस्तकों के लिये डाक-व्यय के वास्ते -) का टिकट भेजकर बड़ा सूचीपत्र मुफ़्त मँगाइए !

मैनेजर, नवलकिशोर-प्रेस (बुकडिपो), हज़रतगंज, लखनऊ

वैद्यक के सुप्रसिद्ध ग्रंथ

भाव-प्रकाश

(तीनों खंड)

भावमिश्र द्वारा संगृहीत और कैनिंग कॉलेज के भूतपूर्व संस्कृत-प्रोफ़ेसर पं० कालीचरणजी-कृत भाषा-टीका-सहित। यह आर्ष-वैद्यक-ग्रंथों का पूर्ण संग्रह और परम प्रतिष्ठित ग्रंथ है। काग़ज़, छपाई-सफ़ाई अति उत्तम। बड़ी साँची के १२२८ पृष्ठोंवाली पुस्तक का मूल्य केवल ७॥)

राम-विनोद भाषा

[पं० सुरेंद्रनाथ तिवारी द्वारा संपादित]

श्रीपद्मरंग-शिष्य रामचंद्रजी-रचित। इसमें रोगी की परीक्षा, शुभाशुभ शकुन, साध्यासाध्य-लक्षण, ज्वर आदि समस्त रोगों की उत्पत्ति, लक्षण और औषध तथा चूर्ण, तैल, अंजन, अवलेह, क्वाथ, गोली, यंत्र-मंत्र और गंडा आदि अनेक विषय वर्णित हैं। पृष्ठ-संख्या २२४; मूल्य केवल १)

हंसराज-निदान

कविवर हंसराजजी-रचित और वैद्यक-ग्रंथों के सुप्रसिद्ध टीकाकार पं० दत्तरामजी माथुर-कृत भाषा-टीका-सहित। इसमें ज्वर, संग्रहणी, बवासीर, भगंदर, राजयक्ष्मा, तृष्णा और मूर्च्छा आदि अनेक रोगों के निदान और लक्षण, नाड़ी-परीक्षा आदि अनेक विषय सविस्तार वर्णित हैं। पृष्ठ-संख्या १६०; मूल्य ॥)

निघंटु-रत्नाकर भाषा

[संस्कृत-निघंटु-रत्नाकर का हिंदी-अनुवाद]

इसमें ज्वर, अतिसार, संग्रहणी, बवासीर, अजीर्ण, कास, श्वास, प्रमेह, कुष्ठ आदि रोगों के लक्षण और औषधियाँ दी गई हैं। अतएव वैद्यों को इसे अवश्य ख़रीदना चाहिए। पृष्ठ-संख्या १३४०; मूल्य ६॥)

गद-तिमिर-भास्कर

[पं० गौरीशंकर शर्मा राजवैद्य-रचित]

चरक, सुश्रुत, वाग्भट आदि वैद्यक-ग्रंथों तथा अनेक डॉक्टरी और यूनानी ग्रंथों को मथकर इस महाग्रंथ की रचना हुई है। इसमें मनुष्य-शरीर के समस्त रोगों की उत्पत्ति, लक्षण, यत्न और चिकित्सा-संबंधी समस्त ज्ञातव्य बातों का अति विस्तार-पूर्वक वर्णन है। नवीन शैली से आज तक जितने वैद्यक-ग्रंथ छपे हैं, उन सबसे यह श्रेष्ठ है और इस एक ही ग्रंथ के अनुशीलन से मनुष्य पूरा वैद्य बन जाता है। अतएव प्रत्येक वैद्यों और गृहस्थों को अवश्य संग्रह करना चाहिए। काग़ज़ बढ़िया; आकार बड़ा; पृष्ठ-संख्या ११६६ : मूल्य ६)

औषध-पीयूष

[लाला ज्वालाप्रसादजी-रचित]

इसमें वैद्य-परीक्षा, दूत-परीक्षा आदि का निर्णय करके संपूर्ण रोगों के लक्षण और उनकी औषधियाँ तथा अभ्रक आदि धातुओं की मारण-शोधन-विधि और समस्त औषधियों के अर्क निकालने की विधियाँ सविस्तार वर्णित हैं। अतएव यह ग्रंथ प्रत्येक वैद्यों के लिये उपयोगी है। पृष्ठ-संख्या ३१६; मूल्य १॥)

बृहत्पाकावली

[वैद्याचार्य पं० श्यामसुंदर शुक्ल द्वारा संपादित]

मूल श्लोक और भाषा-टीका-सहित। राजवैद्य पं० गंगाप्रसादजी द्वारा संगृहीत। इसमें सुपारीपाक, विजया-पाक, सौभाग्यशुंठी-पाक, गोक्षुर-पाक, सालम-पाक, आम्र-पाक, मूसली-पाक और जातीफल आदि अनेक पाकों के बनाने की विधि का विस्तार-पूर्वक वर्णन है। कौन-सा पाक किस रोग में खाया जाता है, यह भी इसमें अच्छी तरह बतलाया गया है। यह पुस्तक प्रत्येक गृहस्थ को पढ़ना चाहिए। पृष्ठ-संख्या ६८; मूल्य ॥)

नोट—अन्यान्य पुस्तकों के लिये -) का टिकट भेजकर बड़ा सूचीपत्र मुफ़्त मँगाइए !

मैनेजर, नवलकिशोर-प्रेस (बुकडिपो), हज़रतगंज, लखनऊ

THE U. I. C. PAPER MILLS CO., LTD.,

LUCKNOW.

One of the oldest Paper Mills in India managed and financed by Indians only under purely Indian directorate. Manufacturers of various varieties of paper. For free samples, terms and agency proposals for unrepresented areas apply to—

THE SECRETARY.

अपर इंडिया कूपर पेपरमिल कंपनी लिमिटेड,

लखनऊ।

भारतवर्ष में यह सबसे पुरानी मिल है, जिसका प्रबंध भी भारतवासियों के हाथ में है और मूल धन भारतवासियों ही का है। इस मिल में हर प्रकार का कागज तैयार होता है, जो कि भारतवर्ष की अन्यान्य मिलों से पायेदार और बढिया होता है। नमूने के लिये, और जिन शहरों में एजेंसी नहीं है, वहाँ की शर्तों के लिये, सेक्रेटरी से पत्र-व्यवहार कीजिए।

निवेदक—

सेक्रेटरी।

देश, देह और
द्रव्य के लिये

झंडू की

शुद्ध, सुंदर, सुघड़,
सलामत, सुगमता-
वाली, अचूक, सस्ती

आयुर्वेदिक दवाइयों

के व्यवहार करने के लिये हम आपसे क्यों आग्रह करते हैं ?

कई कारण:—

१—शास्त्रीय पाठ

हमारे यहाँ प्रायः सभी दवाइयाँ प्राचीन आयुर्वेदिक ग्रंथों के अनुसार तैयार की जाती हैं। देश की वस्तु, देश की पूँजी और देश की मज़दूरी, पुराना अनुभव, पूरी शुद्धता और ख़ास हमारी देख-रेख से काम लिया जाता है।

२—सत्त्व और रूप

हमारे यहाँ की औषधियाँ अंतिम ढंग के यंत्रों द्वारा, शुद्धता और पवित्रता पर पूरा ध्यान रखकर, ताज़ी और गुणदायक वस्तुओं से तैयार की जाती हैं। इसी कारण देखते ही व्यवहार करने को तबियत चटपटाने लगती है।

३—सोने के पदक

अखिल भारतवर्षीय आयुर्वेदिक सम्मेलन कलकत्ता सन् १९१४, मदरास सन् १९१५, और पूना सन् १९१७ की प्रदर्शिनी में, तीन बार हमारी दवाइयों की श्रेष्ठता के लिये हमें सोने के पदक मिले हैं।

४—प्रशंसा और प्रचार—१४ वर्ष की कारवाई में राजा-महाराजा और लोकमान्य तिलक आदि महामान्य पुरुषों ने हमारे कारख़ाने को देखकर हमारी दवाइयों की प्रशंसा की है। बड़ोदा आदि कई राज्यों और बहुत-से सरकारी दवाख़ानों में हमारी दवाइयाँ जाती हैं। साधारण स्थिति के लोगों में तो इनका प्रचार बहुत ही अधिक है और बढ़ता जा रहा है। बहुत-सी थोड़े दाम की, परंतु उपयोगी दवाइयाँ, बाल-बच्चेवाले घरों में घड़ी-घड़ी होनेवाली छोटी-छोटी बीमारियों के लिये अकसीर दवा के रूप में अनेक घरों में संग्रह की जाती हैं।

शारीरिक और मानसिक मेहनत करनेवालों के लिये

तंदुरुस्ती, और ताज़गी देनेवाली दो अमूल्य औषधियाँ

च्यवन-प्राश
ढाई रुपए रत्तल

फ़ौरन् व्यवहार कीजिए

द्राक्षासव
दो रुपए का डेढ़ रत्तल

पता:—झंडू फ़र्मास्युटिकल वर्क्स लिमिटेड,
एल्फ़िंस्टन रोड, बंबई, नं० १३।

आयुर्वेदिक दवाइयों का सूचीपत्र आज ही मँगाइए।

आयुर्वेद का अपूर्व आयोजन अल्प मूल्य में अमूल्य धन की रक्षा

वैद्य ख़्यालीराम फ़ार्मेसी, बियाबानी, इंदौर।

आयुर्वैदिक, तिब्बी तथा डॉक्टरी आदि सम्मेलनों से स्वर्ण तथा रौप्य-पदक एवं आयुर्वेद महामहोपाध्याय कविराज गदाध सेनजी सरस्वती, विद्यानिधि, एम्० ए०, एल्० एम्० ऐंड एस्० कलकत्ता; स्वर्गीय श्रीयुत वैद्यरत्न पं० डी० गोपालाचार्लु प्रि पल, आयुर्वैदिक कॉलेज मदरास तथा बंबई के सुप्रसिद्ध डॉ० पोपट प्रभुरामजी एल्० एम्० ऐंड एस्० अध्यक्ष प्रभुराम कॉले आदि और भी बहुत-से महान्-महान् प्रतिष्ठित सज्जनों से उत्तम-उत्तम प्रशंसापत्र प्राप्त।

वैसे तो हमारे यहाँ कई पीढ़ियों से औषधालय और चिकित्सालय हैं, जिसकी सेवा से इंदौर, मध्य-भारत, मध्य-प्रदेश, बरार, राजपूताना, मारवाड़, गुजरात, कलकत्ता, बंबई आदि प्रांतों के कई स्थानों के भद्र पुरुष, राजा, महाराजा, सरदार, जागीरदार, धनाढ्य और निर्धन सभी परिचित हैं, एवं लाभ उठा रहे हैं। आज तक कई लक्ष (लाख) पुरुष-स्त्री आरोग्य-लाभ कर चुके हैं। हमारे औषधालय में हमारे ही यहाँ की बनी हुई उत्तम और शुद्ध औषधियाँ काम में लाई जाती हैं। अन्य नोटिसबाज़ों की तरह प्रशंसा करने की आवश्यकता नहीं। हमारी औषधियों की उत्तमता तथा शुद्धता के लिये इंदौर तथा दूर-दूर से आए हुए रोगियों की उत्तरोत्तर संख्या-वृद्धि ही सर्वोत्कृष्ट प्रमाण है। इस औषधालय के अंतर्गत कई वर्ष से हमने वैद्य ख़्यालीराम फ़ार्मेसी नाम से एक बृहत फ़ार्मेसी खोल दी है। औषधालय पर जनता का पूर्व ही विश्वास होने के कारण ईश्वर-कृपा से इस फ़ार्मेसी ने भी शीघ्र ही उन्नति की। अब इस फ़ार्मेसी से सर्व-साधारण तथा अधिकतर वैद्य, डॉक्टर आदि हर समय औषधियाँ मँगाया करते हैं और यहाँ से सैकड़ों पारसल हर समय रवाना हुआ करते हैं। इस फ़ार्मेसी में हर प्रकार के आयुर्वेदोक्त रस-उपरस, सर्वधातु की भस्म, गुटिका, चूर्ण, अवलेह, पाक, तैल, घृत, आसव, अरिष्ट, क्वाथ, लेप, शरबत, मुरब्बा, तिला व आयुर्वेदोक्त वनौषधियाँ हर समय यथार्थ मूल्य पर तैयार मिलती हैं। फ़ार्मेसी के अंतर्गत एक वनस्पतिवाटिका भी है, जिससे समयानुकूल हरी वनस्पतियाँ भी मिल सकती हैं। विशेष जानकारी के लिये एक आने का टिकट भेजकर बृहत् सूचीपत्र मँगाकर देखिए।

विशेष सूचना:—बाहर के रोगियों के पत्रों पर भी पूरा ध्यान देकर उनके लिये यथोचित योजना की जाती है।

च्यवनप्राशावलेह—डॉक्टरी कॉडलिव्हर ऑइल तथा अन्य टॉनिकों से विशेष गुणकारी आयुर्वेद की अत्यंत प्रसिद्ध महौषधि। श्वास, कास, शोष, तृष्णा, राजयक्ष्मा, धातुक्षय, मस्तिष्क-शक्ति की वृद्धि आदि में अपूर्व चमत्कारिक गुण दिखाकर शरीर को बलवान् तथा पुष्ट करता है। मू० २० तोले का केवल २) डा० व्य० अलग।

शक्तिवर्द्धक वटी—स्नायविक और शारीरि दुर्बलता, धातुक्षीणता और पुरुषत्व-हानि की एक-मा महौषधि। कुछ काल तक सेवन करने से शारीरि दुर्बलता, धातुक्षीणता, नपुंसकता, स्त्री के देखने व छूने-मात्र से वीर्य का गिर जाना इत्यादि रोगों को आश्च लाभ देती है। दुबले व सुस्त मिज़ाज पुरुष व स्त्रियों शरीर में खून पैदा करके मोटा-ताज़ा बनाती है प्रशंसा करना व्यर्थ है। एक बार अवश्य अनुभ करिए। मूल्य प्रति शीशी केवल १॥) डाक-व्यय अलग।

ज्वरामृत—केवल यही सर्व प्रकार के ज्वरों जैसे-नया-पुराना ज्वर, इकतरा, तिजारी, चौथिया, जीर्णज्व धातुस्थज्वर, प्लीहा, यकृतज्वर आदि व अग्निमां अरुचि, उदरामय, शोथ वग़ैरह उपद्रवों को शीघ्र नि रण करनेवाली दवा है, जो ज्वर के पश्चात् भोजन रुचि, बल-वृद्धि, मन की प्रफुल्लता तथा इंद्रियों की प्रबल उत्पन्न करके शरीर को पुष्ट भी करती है। मलेरि के विषों को नाश कर तज्जनित ज्वर व उनके उपद्र को दूर कर जीवन-शक्ति बढ़ाने की उत्कृष्ट दवा है तीन-चार ही खुराक में अपना अपूर्व गुण दिखाती प्रशंसा करने की आवश्यकता ही नहीं। मूल्य फ़ी-शी केवल ।॥) डाक-व्यय अलग।

नए-पुराने प्रमेह की औषधि—यों तो आ अनेक प्रमेहनाशक औषधियाँ मिलती हैं; किंतु इस की औषधि भी उतनी ही कठिन है जितनी कि यह दुष्ट रोग है। हमारी इस औषधि के सेवन से प्रकार का प्रमेह, पीप सहित धातु का गि पेशाब के पहले, पीछे, मलत्याग के समय, धूप में से वीर्य का निकलना, पेशाब में जलन, धब्बा, अंड में दर्द, मूत्रनली में जलन व पीड़ा तथा इनके उत्पन्न अनेकों शारीरिक और मानसिक रोग दूर हैं। ४८ घंटे में जलन व धब्बे मिट जाते हैं, यह रोग शीघ्र इलाज न करने से असाध्य हो जाता अधिक क्या लिखें, एक बार अवश्य परीक्षा करिए। प्रति शीशी केवल २) डाक-व्यय अलग।

Telegraphic Address:
"Bhishak". Indore.

मैनेजर, वै यालीराम (M) फ़ार्मेसी

मुहूर्त-गणपति

[दैवज्ञवर गणपति-विरचित मूल और ज्योतिर्विद् पं० सूर्यनारायणसिद्धांती-कृत भाषा-टीका-सहित]

इस ग्रंथ के अंत में ग्रंथकार ने लिखा है—"मैंने, ज्योतिर्विदाभरण, वसंतराज, ज्योतिर्निबंध, गणक-मंडन, रत्न-माला, मुहूर्त-तत्त्व-प्रदीप, मुहूर्त-मार्तंड, मुहूर्त-चिंता-मणि और मुहूर्त-कल्पद्रुम आदि ग्रंथों एवं सद्गुरु-कृपा-प्राप्त रहस्यों का सारभूत, अत्यंत सरल और भाव-पूर्ण यह 'मुहूर्त-गणपति'-नामक निबंध ज्योतिष-विद्यानुरागियों के चित्त-भवन में स्थान-प्राप्ति के निमित्त लिखा है।" भाषा-टीका तो इतनी सरल है कि साधारण ज्योतिषी भी मुहूर्तों का विचार बड़ी सुगमता से कर सकते हैं। प्रत्येक ज्योतिषी के अवश्य संग्रह करने-योग्य है। पृष्ठ-संख्या ४१२ ; मूल्य केवल ॥=)

अद्भुत-तरंगिणी मूल

[पकरिया, जिला सीतापुर-निवासी पं० बलभद्रजी मिश्र-संगृहीत अपूर्व ज्योतिष-ग्रंथ]

इसमें दिशा-विभाग द्वारा शृगाल आदि के शब्दों का शुभाशुभ फल और शांति ; दिशा, अयन, मास, राशि, नक्षत्र आदि का फल ; उल्का, बिजली और वज्र आदि का फल और शांति सप्रमाण और सविस्तार वर्णित है। अतएव यह ग्रंथ फलित-ज्योतिष के संस्कृतज्ञ विद्वानों के लिये अति उपयोगी है। पृष्ठ-संख्या २२४ ; मूल्य ॥)

बीज-गणित

[श्री ६ भास्कराचार्य-प्रणीत और जयपुर-राजकीय संस्कृत-पाठशालाध्यक्ष, गणित और ज्योतिःशास्त्र के प्रधानाध्यापक, महामहोपाध्याय पं० दुर्गाप्रसादजीद्विवेदी-कृत विलासि-नामक संस्कृत-भाष्य और भाषा-भाष्य-समेत]

यह बीज-संज्ञक अव्यक्त गणित कलकत्ता, बनारस आदि युनिवर्सिटियों की ज्योतिष-मध्यमा और आचार्य-परीक्षा देनेवाले छात्रों, एवं पुरातत्त्व-खोजियों के लिये विशेष उपयोगी है, क्योंकि प्राचीन शिला-लेखों या ताम्र-पत्रों में कहीं-कहीं बीज-गणित के अनुसार शक-संवत् आदि का उल्लेख रहता है। आधुनिक गणितज्ञों की प्रवृत्ति पाश्चात्य गणित की ओर झुकती जाती है, यही देखकर टीकाकार महोदय ने इस ग्रंथ की टीका की है, जिसमें लोग प्राचीन गणित-शैली से लाभ उठावें। पृष्ठ-संख्या २८० ; मूल्य २)

मुहूर्त-चिंता-मणि

[दैवज्ञवर अनंतदैवज्ञ-सुत, रामदैवज्ञ-कृत मूल और ज्योतिर्विद् पं० श्रीरामरत्न अवस्थी-कृत भाषा-टीका-सहित]

यह ग्रंथ त्रिस्कंधात्मक ज्योतिष-शास्त्र में मुहूर्त-मात्र-बोधक ग्रंथों का शिरोमणि है। टीका भी इतनी सरल है कि साधारण ज्योतिषी भी प्रत्येक मुहूर्तों का विचार अति सुगमता से कर सकते हैं। पुस्तक प्रत्येक ज्योतिषियों के बड़े काम की है। पृष्ठ-संख्या २९६ ; मूल्य ॥।-)

यही ग्रंथ प्रमिताक्षरा-नामक संस्कृत-टीका-सहित बादामी काग़ज़ पर भी छपा है। पृष्ठ ४३०; मू० ॥=)

चलनकलन

[महामहोपाध्याय स्व० पं० सुधाकरजीद्विवेदी-लिखित]

गणित द्वारा एक प्रश्न-विशेष के उत्तर देने की विधि को "चलनकलन" और जिस ग्रंथ में उन विधियों का वर्णन हो, उसे भी "चलनकलन" कहते हैं। पाश्चात्य गणितज्ञों में न्यूटन और लेबनिज़ ने तथा देशीय ज्योतिर्विदों में भास्कराचार्य ने इस विषय में प्रकाश डाला है। द्विवेदीजी ने दोनों का आशय लेकर और बीच-बीच में बहुत-सी नई बातें लिखकर, एम्० ए० के विद्यार्थियों के उपकारार्थ, इस ग्रंथ को, हिंदी में लिखा है, जिसमें उन्हें ज्योतिष-शास्त्र के गहन विषयों का ज्ञान हो जाय। काग़ज़ और छपाई उत्तम ; पृष्ठ-संख्या ४०० ; मूल्य १॥)

लग्न-चंद्रिका

भाषा-टीका-सहित। इसमें सरल रीति से जन्म की तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण का फल, संवत्सर तथा उत्तरायण-दक्षिणायन का फल ; ऋतु और मास-फल ; संपूर्ण ग्रहों का फल ; भावाध्याय ; एकग्रह और द्विग्रह आदि योग ; राजयोग ; अरिष्टाध्याय ; चंद्र-निर्याण ; विंशोत्तरी आदि दशाएँ तथा जन्मपत्र का फल भली भाँति लिखा गया है। पुस्तक ज्योतिषियों के बड़े काम की है। पृष्ठ-संख्या १४८ ; मूल्य ।-)

अन्यान्य ग्रंथों के लिये डाक-व्यय के वास्ते -) का टिकट भेजकर बड़ा सूचीपत्र मुफ़्त मँगा लीजिए।

मैनेजर, नवलकिशोर-प्रेस (बुकडिपो), हजरतगंज, लखनऊ

श्रीमद्भगवद्गीता

हमारे यहाँ यह ग्रंथ अनेक प्रकार से छापा गया है। जो पसंद हो, मँगाकर पढ़िए—

भगवद्गीता—मूल-संस्कृत तथा नवलकिशोर-विद्यालय के प्रधानाध्यापक पं० गिरिजाप्रसादजी द्विवेदी-कृत सरल हिंदी-अनुवाद-सहित। जिन्हें मूल-ग्रंथ का वास्तविक प्रयोजन समझना है, जिन्हें सांप्रदायिक झगड़ों में नहीं पड़ना है, उनके लिये यह अनुवाद बड़े काम का है। वैसे तो अनेक टीकाकारों ने गीता का अर्थ करने में अपना-अपना पांडित्य ख़र्च किया है, पर सरल और सुबोध होने में यह अनुवाद अद्वितीय है। स्थान-स्थान पर, जहाँ केवल अनुवाद से अर्थ स्पष्ट होना नहीं देख पड़ा, वहाँ टिप्पणियों में, सरल शब्दों द्वारा व्याख्या कर दी गई है। जो लोग संस्कृत अधिक नहीं जानते और गीता का मर्म समझना चाहते हों, उन्हें चाहिए, अवश्य इस गीता की एक कॉपी मँगा लें। पृष्ठ-संख्या १३६ ; मूल्य केवल ॥।=)

भगवद्गीता—मूल-संस्कृत तथा श्रीरामचरित-मानस आदि ग्रंथों के सुप्रसिद्ध टीकाकार पं० सूर्यदीनजी सुकुल-कृत पद्यानुवाद, भारत-सार एवं गीता-सार-सहित। पृष्ठ-संख्या ४०० ; मूल्य केवल १=)

भगवद्गीता पंचरत्न (मूल-मात्र)—गीता, विष्णुसहस्रनाम, भीष्मस्तवराज, मनुस्मृति, गजेंद्र-मोक्ष—ये पाँच रत्न हैं। मूल्य ॥)

भगवद्गीता—मूल-संस्कृत तथा रायबहादुर बा० ज़ालिमसिंहजी-कृत टीका-सहित। टीका का क्रम यह है। पहले मूल, फिर पदच्छेद, फिर दो कालमों में संस्कृत-अन्वय और प्रत्येक शब्द के आगे हिंदी-अर्थ, और सबके नीचे सरल हिंदी में भावार्थ। पृष्ठ-संख्या ८७५ ; मूल्य सजिल्द ३॥)

छप गया ! पंचदशी वेदांत छप गया !!

पंचदशी वेदांत

(प्रयागनारायण-भाष्य)

इस भाषा-भाष्य के रचयिता हैं, श्रीरामचरित-मानस, विनयपत्रिका और श्रीमद्भगवद्गीता आदि ग्रंथों के सुप्रसिद्ध टीकाकार श्रीयुत पंडित सूर्यदीनजी सुकुल। मूल पंचदशी-ग्रंथ के रचयिता वेद-वेदांग तथा समस्त शास्त्रों के ज्ञाता, श्री १०८ श्रीमत्स्वामि विद्यारण्य माधवाचार्यजी महाराज हैं, जो सं० १३८७ में, शृंगेरी-मठ के शंकराचार्य-पद पर, अभिषिक्त हुए थे। श्रीस्वामीजी महाराज ने चारों वेदों पर भाष्य किए हैं। उनका यह पंचदशी-ग्रंथ वेद और शास्त्रों का सारभूत है। इसमें तत्त्व-विवेक, महाभूत-विवेक, पंचकोश-विवेक, द्वैत-विवेक, महावाक्य-विवेक, चित्र-दीप, तृप्ति-दीप, कूटस्थ-दीप, ध्यान-दीप, नाटक-दीप, ब्रह्मानंद में योगानंद, आत्मानंद, अद्वैतानंद, विद्यानंद और विषयानंद आदि गंभीर विषयों का विवेचन किया गया है। प्रसिद्ध है कि इस ग्रंथ की १५ आवृत्तियाँ कर लेने से आत्म-ज्ञान अवश्य हो जाता है। वेदांत-विषय में रुचि रखनेवाले प्रत्येक जिज्ञासु को इसकी एक प्रति अवश्य संग्रह करना चाहिए। टीका ऐसे ढंग से लिखी गई है कि थोड़ी योग्यता रखनेवाला मनुष्य भी ग्रंथ का तात्पर्य सुगमता से समझ लेता है। मूल श्लोकों में अन्वयांक देकर नीचे सरल भाषार्थ लिख दिया गया है और पुस्तक के अंत में प्रत्येक प्रकरण का स्पष्ट भावार्थ भी दे दिया गया है। आज तक इस गंभीर ग्रंथ की इतनी सरल भाषा-टीका कहीं नहीं छपी। सुंदर जिल्द बँधी हुई पुस्तक का मूल्य ३॥) तथा श्रीरामकृष्ण-कृत संस्कृत-टीका। पृष्ठ-संख्या ३८० ; मूल्य १)

नोट—अन्यान्य ग्रंथों के लिये -) का टिकट भेजकर बड़ा सूचीपत्र मुफ़्त मँगाइए !

मैनेजर, नवलकिशोर-प्रेस (बुकडिपो), हज़रतगंज, लखनऊ

लीजिए ! व्यर्थ के समय तथा धन की बचत कीजिए !! पढ़िए !!!

हिंदी के

बढ़िया-बढ़िया नाटक, उपन्यास, काव्य, इतिहास,

राष्ट्रीय और धार्मिक

किसी भी पुस्तक

की यदि आपको कभी आवश्यकता पड़े,

तो

हमें एक पत्र डाल दीजिए।

अब आपको इधर-उधर—बीसों जगह—

भटकने की ज़रूरत नहीं रही,

क्योंकि

हिंदुस्थान में हिंदी-पुस्तकों की हमारी ही सबसे बड़ी दूकान है।

हमारी दूकान में हिंदी-पुस्तकों का बहुत बड़ा संग्रह है। हमारे यहाँ इंडियन-प्रेस, वेंकटेश्वर-प्रेस, नवलकिशोर-प्रेस, निर्णय-सागर-प्रेस, हिंदी-पुस्तक-एजेंसी, साहित्य-कंपनी आदि २०० से भी कहीं ज़्यादा हिंदी-प्रकाशकों के ग्रंथ रहते हैं। १२० प्रकाशकों के तो हम सोल-एजेंट ही हैं। इसलिये सब प्रकार की पुस्तकें एक ही स्थान—

हमारे यहाँ—से मँगाने में डाक-ख़र्च तथा समय दोनों की बचत होती है।

ग्राहकों की हानि तथा लाभ पर विशेष ध्यान रखकर हम पत्र पहुँचते ही पुस्तकें तुरंत रवाना करते हैं। यदि किसी कारण-वश विलंब होने की संभावना रहती है, तो भी पत्र-द्वारा सूचना तत्काल दे दी जाती है।

माधुरी की साहित्य-सूचना

में जिन पुस्तकों की सूचना प्रकाशित होती है, वे सब पुस्तकें और पुस्तक-परिचय (समालोचना) की सब अच्छी-अच्छी पुस्तकें भी हमारे यहाँ मिल सकती हैं। माधुरी से पुस्तकें चुनकर ऑर्डर भेजने की कृपा करें।

हमारा पता नोट कर लीजिए—

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, २९-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

गंगा-पुस्तकमाला के उत्तमोत्तम उपन्यास

[संपादक, माधुरी-संपादक पं० दुलारेलाल भार्गव]

१. रंगभूमि

[लेखक, हिंदी-संसार के सुप्रसिद्ध एवं सिद्ध-हस्त औपन्यासिक श्रीयुत प्रेमचंदजी बी० ए०]

प्रेमचंदजी के अन्य उपन्यासों की तरह इस बृहत् उपन्यास में भी वर्तमान काल की सामाजिक दशाओं का स्वाभाविक चित्र अंकित किया गया है। सेवा-सदन में पतित जीवन की मीमांसा है। प्रेमाश्रम में सभ्य स्वार्थपरता की विवेचना की गई है। इस रंगभूमि में लेखक ने यह दिखलाने की सफल चेष्टा की है कि हम संसार में सुखी क्योंकर रह सकते हैं। इसमें राजनीतिक और औद्योगिक प्रसंगों का प्राधान्य है। कर्मक्षेत्र भी बहुत विस्तृत हो गया है। अब तक लेखक के किसी उपन्यास में ईसाइयों ने पदार्पण नहीं किया था। इसमें भारतवर्ष के तीनों प्रधान धर्मों का समावेश है। लेखक ने समाज के किसी अंग को नहीं छोड़ा है—ग्रामीण भी हैं, रईस भी हैं, पूँजीपति भी हैं, देश-सेवक भी हैं, सभी अपनी-अपनी महत्त्वाकांक्षा के साथ रंगभूमि में आते हैं, और अपना-अपना खेल दिखाकर चले जाते हैं। विद्वान्, धनी, अनुभवी, सभी श्रेणी के खिलाड़ी आपके सामने आते हैं, और सभी सुखी जीवन का रहस्य न जानने के कारण असफल होते हैं, सब ठोकर खाते और गिर पड़ते हैं, कर्तव्य से विचलित हो जाते हैं। केवल एक दीन, हीन, निर्बल, अंधा, दरिद्र प्राणी अंत तक आपको अपनी लीलाओं से मुग्ध करता रहता है, और जब उसकी लीला समाप्त हो जाती है, और वह रंगशाला से जाता है, तो आप मन में कह उठते हैं, यही सफल जीवन है, यही जीवन्मुक्त पुरुष है, यही निपुण खिलाड़ी है, यही जानता है कि जीवन-लीला का रहस्य क्या है। इसकी भाषा सरल और सरस है, वर्णन-शैली अत्यंत हृदयग्राहिणी है, भावव्यंजना बड़ी मर्मस्पर्शिनी है, और चरित्र-चित्रण, जो उपन्यास का सर्वप्रधान अंग माना गया है, इतनी सूक्ष्म दृष्टि से किया गया है कि पढ़कर लेखक के मनोवैज्ञानिक अनुभव का क़ायल होना पड़ता है। इस बृहदाकार उपन्यास के दोनों भागों का मूल्य ५), सुंदर रेशमी जिल्दों का ६)

हिंदी-साहित्य के उपन्यास-जगत् का सर्वांगसुंदर श्रृंगार !

बहता हुआ फूल

[केवल १०० प्रतियाँ स्टॉक में बची हैं; बाक़ी १ वर्ष में ही बिक गईं। अपनी कापी फ़ौरन् मँगा लीजिए]

वंग-भाषा के लेखकों में श्रीयुत बाबू चारुचंद्र वंद्योपाध्याय का नाम खूब प्रसिद्ध है। आपने बँगला में कई उपन्यास लिखे हैं। यह उपन्यास उन्हीं के "स्रोतेर फूल" नाम के सर्वोत्तम, शिक्षा-प्रद, नीति-गर्भित, सामाजिक उपन्यास का हिंदी-अनुवाद है। अनुवाद सरल, सरस, सुबोध और साधारण बोल-चाल की भाषा में किया गया है, अतः सर्व-साधारण इसे विना कष्ट के समझ सकते हैं। चरित्र-चित्रण जिस सुंदरता के साथ किया गया है, उसे देखकर आप मुग्ध हुए विना नहीं रह सकेंगे। बँगला महाविरों को शुद्ध हिंदी-भावों में परिणत करने में जो कमाल दिखलाया गया है, वह सोने में सुगंध का काम हो गया है। पुस्तक के अंदर शिक्षा कूट-कूटकर भरी है। उपन्यास इतना रोचक और उपदेशप्रद है कि एक बार हाथ में लेने पर, पुनः समाप्त किए विना, छोड़ने को जी नहीं चाहता। पाठक इसे पढ़ते-पढ़ते इसमें इस प्रकार डूब जायँगे कि खाना-पीना भी भूल जायँगे। यदि आपको उपन्यास पढ़ने का कुछ भी शौक़ हो, तो सब उपन्यास छोड़कर सबसे पहले इसे पढ़िए और अपनी गृहस्थी सोने की बनाइए। पुस्तक की जो जिल्द बँधी हुई है, वह सोने में सुगंध है। जिल्द ऐसी मज़बूत बँधी है कि आप ख़रीदेंगे और पोते बर्तेंगे, तब भी न टूटेगी। सुंदर इतनी है कि जिस आलमारी में रख दी जायगी, उसकी शोभा दूनी हो जायगी। कपड़ा बहुत ही मनोमोहक है, और सोने के अक्षरों में पुस्तक का नाम आदि है। लगभग ४०० पृष्ठ के इतने बड़े पोथे का मूल्य केवल २), सुंदर सुनहरी रंगीन रेशमी जिल्द २।।)

विजया

[अनुवादक, 'माधुरी'-संपादक पंडित रूपनारायण पांडेय कविरत्न]

पांडेयजी बँगला के कैसे सिद्धहस्त अनुवादक हैं, यह हिंदी-संसार को भली भाँति विदित है। आपका अनुवाद मौलिकता से मंडित और स्वाभाविकता से सुसज्जित होता है। इस उपन्यास में सामाजिक चरित्र-चित्रण इतनी बारीकी और सुंदरता से किया गया है कि कहीं पढ़ते-पढ़ते करुणा और सहानुभूति से हृदय पिघल जाता है, और कहीं घटना की वास्तविकता से प्रभावान्वित होकर आठ-आठ आँसू बहाने पड़ते हैं। वर्णन का क्रम बड़ा मधुर और चित्ताकर्षक है। भाषा ललित और ओजस्विनी है। ६-७ रंगीन और सादे चित्र भी दिए गए हैं। मूल्य १।।); सुनहरी रेशमी जिल्द २)

गंगा-पुस्तकमाला के नए नाटक

[संपादक, माधुरी-संपादक पं० दुलारेलाल भार्गव]

कर्बला

[लेखक, हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक श्रीयुत प्रेमचंद बी० ए०]

मौलिक नाटक। हज़रत मुहम्मद के नवासे हज़रत हुसेन की शहादत का करुणा-जनक ऐतिहासिक वृत्तांत। मुसलिम इतिहास की सबसे हृदय-विदारक, युगांतरकारी और महत्त्व-पूर्ण घटना। वीर, भक्ति और करुणारस का अनुपम दृश्य। पढ़ते वक़्त कलेजा हाथों से थाम लेना पड़ता है। इतनी बड़ी ट्रेजेडी कदाचित् समस्त संसार में न हुई होगी। हुसेन का अपने समस्त परिवार को और अपने प्राण को भी इसलाम की मर्यादा पर बलिदान कर देना, कर्बला के निर्जन और निर्जीव मैदान में प्यास से तड़प-तड़पकर मरना दिल हिला देनेवाले दृश्य हैं। इस घटना को इसलामी इतिहास का महाभारत समझना चाहिए। उसी वीरात्मा के शोक में आज तक समस्त इसलामी संसार में दस दिन तक मुहर्रम का मातम होता है। मूल्य १॥); सुनहरी रेशमी जिल्द २)

बुद्ध-चरित्र

[अनुवादक, 'माधुरी'-संपादक पं० रूपनारायण पांडेय कविरत्न]

पांडेयजी ने बँगला के अनेक विख्यात नाटकों का ऐसा भाव-पूर्ण अनुवाद किया है कि वे बिलकुल मौलिक-से मालूम होते हैं। समाज, भाव, भाषा, शैली, सब पर हिंदीपन और स्वाभाविकता की छाप लगी हुई है। राजसी सुख-भोग की लालसाओं को लात मारकर, अपनी आध्यात्मिक उन्नति के लिये संसार के सारे सुखों को तिलांजलि देकर, महात्मा बुद्धदेव किस प्रकार आत्मचिंतन और वैराग्य में लीन हुए थे, इसका स्पष्ट चित्र देखना हो, तो यह नाटक अवश्य पढ़िए। ज्ञान, शिक्षा, उपदेश, पवित्रता और शांति तथा प्रेम से पूर्ण ऐसा मनोरंजक नाटक आपने शायद ही अब तक पढ़ा हो। ४-५ चित्र-सहित पुस्तक का मूल्य ॥।), सुंदर रेशमी जिल्द का मूल्य १।)

घरफूँकबहादुर

[अनुवादक—पं० लल्लीप्रसाद पांडेय]

इसके लेखक मौलियर प्रहसन की रचना में अद्वितीय माने गए हैं। उनकी अन्य रचनाओं की तरह इस प्रहसन के भी भिन्न-भिन्न भाषाओं में अनुवाद प्रकाशित हो गए हैं। हिंदी भारतवर्ष की राष्ट्र-भाषा होकर भी अब तक इस सौभाग्य से वंचित थी। 'ठोक-पीटकर वैद्यराज' (मौलियर की ही एक पुस्तक का अनुवाद) नाम का श्रेष्ठ प्रहसन जिन हिंदी-प्रेमियों ने पढ़ा है, वे इस प्रहसन की भी उत्तमता का अनुभव कर सकेंगे। इसमें ख़िताब के लालच में पानी की तरह रुपया बहानेवाले, उपाधि के लोभ में फँसे हुए एक उच्च कुल के कम पढ़े-लिखे, पर अपने को दिग्गज विद्वान् गिननेवाले मनचले मूर्ख—घरफूँकबहादुर—का ख़ाका ख़ासी तौर से खींचा गया है। काग़ज़ बढ़िया, छपाई सुंदर। मूल्य ॥।), सजिल्द १।)

(सम्मतियाँ)

श्रीयुत पं० राधाचरणजी गोस्वामी—फ़्रांस, महाराष्ट्र, अवध, आगरा आदि कई देशों की नोकझोंक, फ़ैशन, चालचलन, ठाटबाट और चालाकी इसमें दिखलाई गई है। यह चतुर्मुख रस बड़ा बढ़िया है।

मिश्रबंधु—इसके पात्रों के स्वभावों का ज्यों-ज्यों विकास होता गया है, त्यों-त्यों ग्रंथ की रोचकता बढ़ती गई है। अंतिम अंक ख़ासा रोचक है।

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय,
२६-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

हिंदी-साहित्य के अनूठे ग्रंथ !

हिंदी-नवरत्न

(ले०—हिंदी-संसार के सुपरिचित सुलेखक और सुकवि एवं स्वनामधन्य समालोचक "मिश्रबंधु")

हिंदी के नव महाकवियों की जीवनियों और कविताओं पर समालोचनात्मक रीति से लिखा हुआ गवेषणा-पूर्ण ग्रंथ। संशोधित संवर्द्धित, सुसंपादित एवं सुसज्जित द्वितीय संस्करण। इस द्वितीय संस्करण में सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें महात्मा कबीरदास की आलोचनात्मक जीवनी भी जोड़ दी गई है, महाकवियों के प्रामाणिक चित्र दिए गए हैं, पहले संस्करण से लगभग दूना बड़ा हो गया है और आज तक की नई खोजों का समावेश किया गया है। दर्शनीय नवीनताएँ हैं। इसे पढ़े बिना हिंदी-साहित्य के महान् गौरव-पूर्ण अंग से परिचित होना एक प्रकार से असंभव-सा है। पृष्ठ-संख्या लगभग ७००, सादे चित्र ९ और त्रिवर्ण चित्र २, एँटिक पेपर पर स्वच्छ एवं शुद्ध सुंदर छपाई, रंगीन रेशमी सुनहरी जिल्द, मूल्य लागत-मात्र केवल पांच रुपए, सादी जिल्द ४॥)

सुकवि-संकीर्तन

(ले०—भूतपूर्व 'सरस्वती'-संपादक साहित्य-महारथी पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी)

इस पुस्तक में सुप्रसिद्ध सुकवियों, कविता-प्रेमियों और कवि-कोविदों के आश्रयदाताओं के संबंध में सचित्र परिचयात्मक निबंध हैं, जिनमें श्रीमान् द्विवेदीजी की ओजस्विनी लेखनी की सभी विशेषताएँ मौजूद हैं। इन मनोरंजक एवं शिक्षाप्रद निबंधों में जो बातें वर्णित हैं, वे कभी पुरानी नहीं हो सकतीं। इन्हें बार-बार पढ़ने पर भी जी नहीं ऊब सकता। इस पुस्तक के पढ़ने में एक उपदेशप्रद उपन्यास का-सा आनंद आता है। कहीं साहित्यिक लालित्य है, कहीं अगाध पांडित्य है, कहीं काव्य की कमनीय छटा है, बिलकुल नायाब चीज़ है। इसमें दस चित्र भी हैं। एक बार अवश्य देखिए। मू० १), सजिल्द १॥)

भवभूति

[अनुवादक, हिंदी के श्रेष्ठ लेखक आयज्ञ पं० ज्वालादत्त शर्मा]

यह आलोचनात्मक ग्रंथ बंग-भाषा के स्वनामधन्य समालोचक स्वर्गीय महामहोपाध्याय सतीशचंद्र विद्याभूषण एम्० ए०, पी० आर० एस्० की मर्मज्ञ लेखनी का सुस्वादु प्रसाद है। अनुवाद में भी मौलिकता का पूर्ण आनंद आ गया है। इसमें संस्कृत के प्राचीन महाकवि भवभूति की संक्षिप्त प्रामाणिक जीवनी और उनकी रचनाओं की पांडित्य-पूर्ण गंभीर आलोचना है। आलोचना में सरसता और सहृदयता खूब प्रस्फुटित हुई है। कहीं-कहीं वर्णन-शैली ऐसी ओजस्विनी और ललित है कि पढ़ते-पढ़ते काव्य-जनित आनंद से चित्त प्रफुल्लित हो उठता है। यदि आप संस्कृत के एक उद्भट कवि की अद्भुत कवित्व शक्ति देखकर पुलकित होना चाहते हैं, तो वीर और करुण रस की सवेग धारा प्रवाहित करनेवाले भवभूति के महाकाव्यों की यह गवेषणा-पूर्ण आलोचना अवश्य पढ़िए। मूल्य ॥=), सुंदर रेशमी जिल्द का मूल्य १=)

विश्व-साहित्य

[लेखक, वर्तमान 'सरस्वती'-संपादक श्रीयुत पदुमलाल-पुन्नालाल बख्शी बी० ए०]

यदि आप एक ही पुस्तक पढ़कर संसार की सभी उन्नत भाषाओं के साहित्य का रसास्वादन करना चाहते हैं, तो इस पुस्तक का पाठ अवश्य कीजिए। इसमें साहित्य का प्रकृत रूप, उसका वास्तविक तत्त्व, उसका मूल सिद्धांत, उसकी सच्ची परिभाषा और उसके प्रत्येक अंग का संबंध व्याख्या बड़े विस्तार के साथ की गई है। यह पुस्तक सरलता और सहृदयता की खान है। मूल्य १॥), सुनहरी रेशमी जिल्द २।

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

उपदेशप्रद, अनूठी और मनोरंजक कहानियाँ

प्रेम-प्रसून

[लेखक, हिंदी-संसार के सिद्धहस्त और लब्धकीर्ति कहानी-लेखक श्रीमान् प्रेमचंदजी]

इनके विषय में विशेष लिखना व्यर्थ है। थोड़े ही समय में इन्होंने हिंदी-संसार में अच्छी ख्याति प्राप्त कर ली है। इनकी रचना जैसी स्वाभाविक, रोचक और भाव-पूर्ण होती है, वैसी ही शिक्षाप्रद, उत्साह-वर्द्धक तथा गंभीर भी। प्रेम-प्रसून इन्हीं की कहानियों का संग्रह है। इसमें एक-से-एक बढ़कर अनूठी गल्पों का संग्रह है। अब तक इनके जितने गल्प-संग्रह छपे हैं, उनमें यह संग्रह सबसे बढ़कर है। प्रेमचंदजी के प्रत्येक प्रेमी को इसे स्वयं पढ़कर अपने परिवार को भी पढ़ाना चाहिए। छपाई साफ़-सुथरी। काग़ज़ एंटिक। लगभग ३०० पृष्ठों के पोथे का मूल्य सिर्फ़ १।), सजिल्द १॥)

अद्भुत आलाप

[लेखक, हिंदी-साहित्य-संसार के सर्वमान्य महारथी पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी]

अद्भुत, चित्ताकर्षक और चमत्कार-पूर्ण निबंध। यह पुस्तक संसार के महत्त्व-पूर्ण नवीन आविष्कारों की विचित्र प्रदर्शिनी है। इसे शुरू करने पर बिना समाप्त किए रहा नहीं जाता। इसकी लेखन-शैली का तो कहना ही क्या है। विषय इतना रोचक है कि उपदेश के साथ-साथ मनोरंजन भी होता है। मूल्य १); सुनहरी रेशमी जिल्द १॥)

मंजरी

[अनु०—'माधुरी'-संपादक पं० रूपनारायण पांडेय]

सुंदर, स्वाभाविक, रोचक, काव्यमय, भाव-पूर्ण, सूक्ष्म चरित्र-चित्रण करनेवाली, शिक्षा-प्रद और उत्साह-वर्द्धक गल्पों का—महाकवि श्रीरवींद्रनाथ ठाकुर आदि लब्ध-प्रतिष्ठ गल्प-लेखकों की श्रेष्ठ, सरस और चमत्कार-पूर्ण गल्पों का संग्रह। इतनी अच्छी और उच्च कोटि की गल्पें आपने शायद ही कभी पढ़ी हों। इनको एक बार पढ़ने से बार-बार पढ़ने को जी चाहता रहेगा। यह पुस्तक हाथों-हाथ बिक गई; २०० प्रतियाँ बची हैं। मूल्य १)

चित्रशाला

[लेखक, हिंदी-जगत् के स्वनामधन्य गल्प-रचयिता पं० विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक]

हिंदी-जगत् से जिसका कुछ भी परिचय है, वह कहानियों के श्रेष्ठ लेखक कौशिकजी को अवश्य जानता होगा। आपकी कहानियाँ एक-से-एक बढ़कर होती हैं। पाठक कभी करुणा से रोने लगते हैं, कभी विनोद की गुदगुदी से हँसने लगते हैं। कहानियों का आनंद पढ़ने ही से प्राप्त हो सकता है। मूल्य १॥), रेशमी सुनहरी जिल्द २।)

(सम्मतियाँ)

मिश्रबंधु—कौशिकजी का श्रम प्रशंसनीय है। आपने स्वभावोक्ति का मज़ा हर स्थान पर दिखलाया है। ग्रंथ उपादेय है। पढ़कर चित्त प्रसन्न हुआ। सदुपदेश मिलता है।

श्रीयुत जी० पी० श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल० बी०—सभी गल्पें अपने ढंग की निराली हैं। कौशिकजी ने तो गल्प-लेखन-कला को पूर्ण रूप से अपना लिया है, क्योंकि मैदान में लाठी चलाना उतना मुश्किल नहीं है, जितना एक तंग कोठरी के भीतर। छोटी-छोटी कहानियों में प्लाट की विचित्रता और मौलिकता देखकर चकित हो जाना पड़ता है। भावी गल्प-लेखकों को इसके अध्ययन से बड़ा लाभ हो सकता है।

नंदन-निकुंज

[ले०—श्रीयुत चंडीप्रसाद बी० ए०]

इसमें ६ मौलिक, हास्य-प्रधान, सरस, उच्च कोटि की मनोरंजक कहानियों का संग्रह है। कहानियों की कल्पना अद्भुत, चरित्र-चित्रण प्रभावशाली और भाषा कवित्व-पूर्ण है। हिंदी में मौलिक कहानियाँ लिखनेवाले जो दो-एक श्रेष्ठ, सिद्धहस्त लेखक हैं, उक्त लेखक उन्हीं में से हैं। पुस्तक एक बार उठाकर आदि से अंत तक पढ़े बिना छोड़ने को जी नहीं चाहता। अत्यंत ललित गद्य काव्य है। मूल्य सादी प्रति का १), और जिल्ददार का १॥)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, २९-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

स्त्रियों के लिये उपयोगी महिला-माला की मनोहर मणियाँ

भारत की विदुषी नारियाँ

[संपादिका—श्रीमती कृष्णकुमारी]

स्त्रियों के कोमल हृदय पर सती तथा विदुषी नारियों के जीवन-चरित्र पढ़ने से जो प्रभाव पड़ सकता है, वह अन्य पुस्तकों से नहीं हो सकता। इसमें वैदिक युग से लेकर वर्तमान युग तक की अनेक भारत की विदुषी नारियों की जीवनियाँ दी गई हैं। इसमें उर्वशी, मैत्रेयी, गार्गी, मंदालसा, देवहूति, आत्रेयी, लीलावती, विद्या, विदुला, मीराबाई आदि-आदि कोई ४० उन विदुषी नारियों के जीवन-चरित्र लिखे गए हैं, जो आजकल देवी-स्वरूप मानी जाती हैं, और जिनका परिचय पाकर स्त्रियाँ जातीय गौरव प्राप्त कर सकती हैं। शीघ्र ही यह ग्रंथ-रत्न मँगाकर अपनी कन्याओं, बहनों और देवियों को दीजिए। सुंदर काग़ज़ पर नेत्र-रंजक छपाई। चिकने कवर पर चित्ताकर्षक तिरंगा चित्र। मूल्य ॥)

नारी-उपदेश

[लेखक—स्व० गिरिजाकुमार घोष]

इस पुस्तक में नारियों के जानने-योग्य—नारी-पूजा, नारी-महत्त्व, नारी-चर्या, बड़ी-बूढ़ियों का सम्मान, गृहिणी, पति-पत्नी की लड़ाई, लज्जा, सुंदरता, गहनों की पिटारी, आभूषण, प्रेम, सच्चा वैराग्य, परदे की उत्पत्ति, मैत्रेयी-याज्ञवल्क्य-संवाद आदि—बीसों उपदेश-प्रद विषयों का वर्णन बड़ी खूबी के साथ, सरल भाषा में, किया गया है। इस पुस्तक के पढ़ने से आपके घर की नारियाँ लक्ष्मी और घर स्वर्ग बन जायगा। स्त्रियों के लिये जितनी चरित्र-गठन-संबंधी महत्त्व-पूर्ण बातें हैं, सब इसमें आ गई हैं। काग़ज़ ऐंटिक। छपाई सुंदर। आवरण पर माधुरी के सुप्रसिद्ध चित्रकार श्रीयुत काशिनाथ-गणेश खातू का बनाया त्रिवर्ण-चित्र। मूल्य ॥)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, २९-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

याद रखिए ! [illegible] रहिए ! भेंट कर लीजिए !

शीघ्र प्रकाशित होनेवाली पुस्तकें

भारतीय अर्थ-शास्त्र

(प्रथम भाग)

[लेखक, श्रीयुत भगवानदास केला]

यदि आप भारतवर्ष की दयनीय दरिद्रता के मुख्य कारणों को जानना चाहते हैं, तो यह पुस्तक अवश्य पढ़िए। यह देश की सच्ची अवस्था का उज्ज्वल दर्पण है। प्रत्येक गृहस्थ के पढ़ने योग्य है । मूल्य लगभग १।)

दुर्गावती

[लेखक, लखनऊ-युनिवर्सिटी के हिंदी-लेक्चरार पं० बदरीनाथ भट्ट बी० ए०]

यह गद्य-पद्यमय वीर-रस-पूर्ण ऐतिहासिक मौलिक नाटक बड़ा ही मनोरंजक, विनोद-पूर्ण, शिक्षाप्रद और भावमय है। कहीं वीरता के ओजस्वी वर्णन से आपका रोम-रोम फड़क उठेगा, और कहीं साहित्यिक विनोद से आप खिलखिला उठेंगे। पुस्तक बड़ी सजावट से छप रही है। मूल्य लगभग १)

पराग

[लेखक, कविवर पं० रूपनारायण पांडेय]

पांडेयजी की अब तक की लिखी हुई सुंदर, सरस और ओजस्विनी कविताओं का संग्रह । मूल्य सादी ॥); सुनहरी रेशमी जिल्द १)

हिंदी

[लेखक, श्रीयुत पं० बदरीनाथ भट्ट बी० ए०]

भट्टजी ने हिंदी-भाषा की उत्पत्ति तथा उसका इतिहास इस छोटी-सी पुस्तक में बड़ी सरल और सुंदर भाषा में लिख 'गागर में सागर' की कहावत चरितार्थ की है। हिंदी-प्रेमियों के लिये तो यह एक अमूल्य पुस्तक है। मूल्य ॥=), रेशमी जिल्द १=)

किसानोंकी कामधेनु

[लेखक, श्रीयुत पं० गंगाप्रसाद अग्निहोत्री]

कृषि-विज्ञान भूमि को करता कामधनु यह ध्यान धरो।"

मूल्य लगभग ।=)

प्रेम-गंगा

[अनुवादक, भूतपूर्व 'मनोरंजन'-संपादक मिश्र ईश्वरीप्रसाद शर्मा]

यह पुस्तक लंदन के पियर्संस मैगज़ीन की एक लोक-प्रशंसित कहानी का अनुवाद है । वस्तुतः यह पुस्तक प्रेम की निर्मल गंगा ही है । इसमें प्रेम की ऐसी रसीली कहानियाँ हैं कि पढ़कर आप मुग्ध और चकित हो जायँगे । सौंदर्य में कैसी विचित्र आकर्षण-शक्ति है, प्रेम में कितनी तेज़ बिजली भरी हुई है, सौंदर्य-प्रेमी कितना बड़ा दुस्साहसी बन जाता है, पुरुषार्थ और वीरता से कैसी-कैसी अलभ्य वस्तुओं का उपभोग किया जा सकता है, प्रेमी और प्रेमिका के हृदय में कितनी तीव्र मिलनोत्कंठा होती है—इत्यादि बातें ऐसी मधुर, सरल, परिमार्जित और परिष्कृत भाषा में लिखी गई हैं कि पढ़ते-पढ़ते तबीयत फड़क उठती है, हृदय नाच उठता है, मन मस्त हो जाता है । कहानियाँ ऐतिहासिक और प्राचीन भारतीय हैं। छपाई-सफ़ाई अतीव सुंदर और स्वच्छ । मूल्य लगभग १)

वरमाला

[लेखक, श्रीयुत गोविंदवल्लभ पंत]

मार्कंडेय-पुराण के आधार पर लिखा हुआ संयोगांत नाटक । थोड़े पात्रों से थोड़े समय में रंग-मंच पर बड़ी आसानी से खेला जा सकता है । इसके गीतों में काव्य और संगीत का मिलन है । कई रंगीन और सादे चित्र भी हैं । मूल्य केवल ॥।), रेशमी जिल्द १।)

संक्षिप्त शरीर-विज्ञान

[लेखिका, श्रीमती हेमंतकुमारी देवी भट्टाचार्य]

संसार में स्वास्थ्य और शरीर की रक्षा से बढ़कर और कुछ भी महत्त्व-पूर्ण नहीं है । स्वास्थ्य-रक्षा ही जीवन का मूल धन है । स्वास्थ्य बिगड़ जाने से लौकिक सुख दुर्लभ हो जाते हैं। शारीरिक सुख तो स्वास्थ्य-रक्षा ही पर पूर्ण-रूप से निर्भर है । जिसका स्वास्थ्य ठीक नहीं, वह सब तरह से संपन्न होकर भी दरिद्र और दुखी है । किंतु शरीर की भीतरी बातें जाने बिना स्वास्थ्य की रक्षा नहीं हो सकती । प्रत्येक अवयव की अंदरूनी हालत जानने से स्वास्थ्य-रक्षा में बड़ी सुविधा और सुगमता होती है । इस पुस्तक में मानव-शरीर के प्रत्येक अंग की बनावट और उसकी आंतरिक अवस्था का सूक्ष्म विवेचन बड़ी अनुभवशीलता और सरलता से किया गया है । संसार में सुख की इच्छा रखनेवाले प्रत्येक व्यक्ति को शारीरिक-शास्त्र से परिचित होना चाहिए । यह पुस्तक शारीरिक-शास्त्र का सार-गर्भ निचोड़ और सर्वोपयोगी है । बड़ी सुंदरता से छप रही है । मूल्य लगभग ॥)

घटा दिया ! घटा दिया !! घटा दिया !!!

पुस्तकों का मूल्य घटा दिया !!!!

माधुरी के १०.००० ग्राहक हो जाने की ख़ुशी में

दो मास के लिये

हमने माधुरी के प्रेमी ग्राहकों के लिये अपनी १६ पूर्व-प्रकाशित पुस्तकों का मूल्य घटा दिया है। ये सब पुस्तकें हिंदी-साहित्य-रत्नाकर की परमोज्ज्वल रत्न हैं। कुछ वर्षों में ही इनके तीन-तीन, चार-चार संस्करण हो चुके हैं, सुंदर कागज़ पर, बढ़िया स्याही से, सुंदर टाइपों में, छपी हैं, और पृष्ठ-संख्या देखते हुए इनका मूल्य भी बहुत ही कम है। दो-चार पुस्तकें मँगाकर देखिए—

नाम	लेखक	पृष्ठ-संख्या	मूल्य	घटा हुआ मू०
इँगलैंड का इतिहास	डॉक्टर प्राणनाथ विद्यालंकार	३६८	२)	१।।)
देव और विहारी	पं० कृष्णविहारी मिश्र	२८८	१।।=)	१।)
नंदन-निकुंज (कहानियाँ)	श्रीयुत चंडीप्रसाद बी० ए०	२१२	१।)	१)
केशवचंद्र सेन (जीवनी)	"एक भारतीय हृदय"	२६०	१≡)	१)
बंकिमचंद्र चटर्जी (जीवनी)	पं० रूपनारायण पांडेय	२६०	१≡)	१)
मंजरी (कहानियाँ)	पं० रूपनारायण पांडेय	२६४	१≡)	१)
भूकंप	बाबू रामचंद्र वर्मा	२००(१२ चित्र भी)	१=)	१)
पूर्व भारत (नाटक)	मिश्रबंधु	१७६	।।।=)	।।।)
उद्यान	पं० शंकरराव जोशी	२०४(२१ चित्र भी)	।।।=)	।।।)
भारत-गीत (कविता)	पं० श्रीधर पाठक	१२०	।।=)	।।)
मूर्ख-मंडली (प्रहसन)	पं० रूपनारायण पांडेय	११२	।।=)	।।)
आत्मार्पण (खंड-काव्य)	श्रीयुत रसिकेंद्र	६०	।-)	।)
देवी द्रौपदी	पं० रामचरित उपाध्याय	६४	।=)	।)
द्विजेंद्रलाल राय	पं० दुलारेलाल और पं० रूपनारायण	४४	।)	≡)
सम्राट् चंद्रगुप्त	पं० बालमुकुंद वाजपेयी	४४	।)	≡)
अयोध्यासिंह उपाध्याय	पं० दयाशंकर मिश्र	३६	।)	≡)

नोट—सुंदर, सजिल्द प्रतियाँ चाहिए, तो उनका मूल्य ।=) या ।।) अधिक होगा।

इन सब पुस्तकों की दो-दो, तीन-तीन सौ प्रतियाँ ही रह गई हैं। अतएव शीघ्र ही आँर्डर भेजकर इच्छानुसार पुस्तकें मँगा लीजिए। नहीं तो फिर ये पुस्तकें अप्राप्य हो जायँगी। इसके अतिरिक्त यह रियायत ३० एप्रिल १९२५ तक ही है।

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

अवश्य पढ़ें] बीसवीं शताब्दी के चमत्कार [और लाभ उठावें

घर की परी—हैंड ऐंब्रौयडरी मशीन—

स्त्रियों का मनभाता तोहफ़ा

अमीरों का शृंगार—ग़रीबों का रोज़गार

THE FAIRY OF THE HOME HAND EMBROIDERY MACHINE

इस छोटी मशीन के साथ स्त्री, पुरुष, बाल, वृद्ध, लड़के, लड़कियाँ रूमाल, साड़ियाँ, टोपियाँ, शाल, आसन, स्लीपर और परदे आदि तथा दूसरे हर प्रकार के कपड़े पर रेशमी, सूती व ऊनी आदि हरप्रकार का चिकन और कशीदाकारी का और भाँति-भाँति के रंग-बिरंगे फूल, पत्ते, बेल, बूटे, अक्षर और मोर, तोते, मृग, हस्ती, सिंह आदि बनाने का घंटों का काम बड़ी उत्तमता और सुगमता के साथ मिनटों में कर लेती हैं। क़ीमत रिआयती २॥।); डाक-ख़र्च ॥-) तीन मँगाने से डाक-ख़र्च माफ़। उपयोग-विधि की सचित्र पुस्तक साथ मुफ़्त।

देखो, नर है या मादा?

IKRIKI
SEX INDICATOR
IKRIKI

यह छोटा-सा यंत्र जर्मनीवालों ने अभी साइंस के उसूलों पर तैयार किया है। इसके ज़रिए से आप आध मिनट में देख सकते हैं कि गर्भ में कन्या है या पुत्र? गाय, भैंस, घोड़ी आदि के गर्भ में बच्चा नर है या मादा? अंडे में मुर्ग़ी है या मुर्ग़ा? आज़मायश के लिये किसी मित्र के अंग पर लगाइए या किसी फ़ोटो-चित्र पर लगाने से बता देगा, नर की है, या मादा की? इसी प्रकार के अनेकों गुण इससे ज़ाहिर हो रहे हैं। क़ीमत २) डाक-ख़र्च ॥), ३ के ५), ६ के ९॥), १२ के १८); सेवनविधि साथ देंगे।

पाकेट इनहेलर—यह यंत्र जर्मनी के वैज्ञानिकों और डॉक्टरों के संयुक्त-परिश्रम का फल है, जो प्रति समय जेब में रखने योग्य है। केवल सूँघने और मुँह में इसकी हवा खींचने से ही खाँसी, ज़ुकाम, नज़ला, सिर-दर्द, नाक बंद होना इत्यादि अनेकों बीमारियाँ इससे दूर होती हैं। गायकों, दिमाग़ी काम करनेवालों, लेक्चररों और ऐक्टरों आदि के लिये ख़ासकर लाभकारी है। यह किसी प्रकार का रोग समीप आने नहीं देता और विशेष गुणकारी है। दाम केवल २) डा० ख़० ॥), ६ के ११), दर्जन के २०)

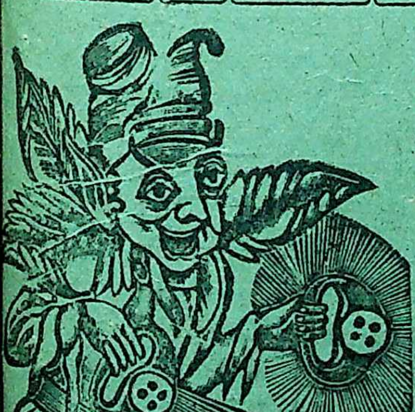

बिजली-भरी असली शक्तिशाली अँगूठी। इस अँगूठी में बिजली का ऐसा प्रभाव भरा गया है कि बाएँ हाथ में पहनने से असाध्य रोग भी साध्य हो जाते हैं। और छूत की बीमारियाँ भी दूर भागने लगती हैं। आध्यात्मिक शक्ति का उत्पन्न करती है और किसी प्रकार के भय को पास फटकने नहीं देती। कठिन से-कठिन कार्य भी इसके पहनने से सुगम होने लगते हैं। अँगूठा क्या है जादू है। ज्वर, अंतरा, प्रदर रोग, प्रमेह, स्वप्न-दोष और बवासीर आदि रोगों में तो

I see the better
Picture on
Screen
than in
Reflex

गुप्त बेबी हैंड केमरा—तस्वीर न खिंचे, तो वापसी की शर्त। यदि आप किसी निकम्मे केमरे को ख़रीदकर धोका खा चुके हों, तो एक बार हमारे इस केमरे को ख़रीदकर भी आज़मावें। इसमें फ़ोकस मिलाने की ज़रूरत नहीं। जिस समय चाहे उड़ते जानवरों, दौड़ती रेलगाड़ी, लड़ती फ़ौज, बहते दरिया, चलते-फिरते तथा बैठे हुए स्त्री-पुरुषों और हर प्रकार के सीन की फ़ोटो क्षण-भर में बड़ी आसानी से खींच सकते हैं। सलाईड और शीशा मुफ़्त मिलेगा। दाम २$\frac{१}{४}$×१$\frac{५}{८}$ का ४॥) व २$\frac{१}{४}$×३$\frac{१}{४}$ का ७), डाक-ख़र्च अलग। सचित्र सेवन-

अपूर्व आविष्कार] अनुपम उपहार [अद्भुत चमत्का

REGISTERED TRADE MARK

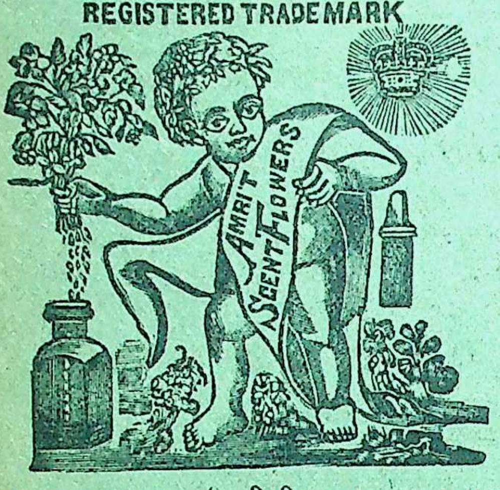

अमृत सेंट फ़्लावर—आप भली भाँति जानते हैं कि प्रकृति ने प्रत्येक ऋतु के फूलों को अपना-अपना जोबन पहनाया है और जुदा-जु रंग और सुगंधि प्रदान की है। जिनका आनंद केवल अपने-अपने मौस में ही प्राप्त हो सकता है। लेकिन परमात्मा को कोटिशः धन्यवाद है जिसकी अपार दया से हमारे कारख़ाने ने २० साल के तजरुबा के तमाम भारतीय फूलों का सुगंधित सार आधुनिक वैज्ञानिक यंत्रों द्वा खींचकर शीशी में बंद कर दिया है। जिसकी चंद बूँदें रूमाल या क पर टपकाने से भीनी और मुग्ध कर देनेवाली सुगंधि तत्क्षण चारों फैलकर हर दिल व दिमाग़ को मोहित कर लेता है और लुत्फ़ यह इसकी सुगंध मिनट-मिनट पश्चात् बदलकर प्रत्येक ऋतु का आ दिखाने लगती है। लगाने के पश्चात् कपड़े पर दाग़ नहीं पड़ता अल्कोहल आदि हानिकर पदार्थों से बिलकुल शुद्ध है, और निहा शानदार फ़ैंसी शीशियों में बड़ी सुंदरता के साथ बंद किया गया

दाम कवल १), बड़ी शीशी २), एकदम ६ मगाने से ख़र्च डाक-माफ़। दर्जन लेने से १ शीशी मुफ़्त इनाम दी जावे

तेलों का बादशाह

अमृत मोहिनी हेअर आयल—यह कश्मीर की स्वर्गीय भूमि और हिमालय-जैसे गिरिराज की अमृतवत् प्रभावशाली व सुगंधित जड़ी-बूटियों और पुष्पसमूह का निचोड़ है जो ख़ालिस आयुर्वेदिक रीति-अनुसार प्राप्त किया गया है। जिसने अपने अनेक प्रभावशाली गुणों के कारण भारतवर्ष के हरएक भाग में क़दरदानों द्वारा मान प्राप्त किया है। जिसने इसको एक बार आज़माया उसने आयु-भर का साथी बना लिया। बालों को लंबे करना, स्याह करना, गिरने से बचाना, मस्तिष्क की शक्ति बढ़ाना, आँखों को शीतल और चित्त को प्रसन्न करना तथा थकावट और सिर-दर्द को भगाना इसके बाएँ हाथ का कर्तब है। अस्तु। हमारा दावा है कि गो आपने बीसियों तेल बर्ते होंगे लेकिन इसकी एक बार की आज़मायश आपको निराला ही लुत्फ़ दिखलायगी। दाम बड़ी शीशी केवल १), ६ के ५॥), दर्जन के १०) डा० ख़० अलग।

गर्मियों के लिये स्पेशल प्रेमोपहार

गर्मी से यदि जी सर्वदा बेचैन रहता हो, ठंढे जल से चित्त की तपन न बुझती हो, तो हमारा सर्वोत्तम

अमृत शांति शर्बत

मँगवाकर पान कीजिए इसका एक ग्लास प्रातःका लेने से तमाम दिन चित्त में शांति, दिमाग़ में ता ताज़गी, आँखों में शीतलता, बदन में फुरती रहेगी बार-बार की प्यास से छुटकारा मिल जायगा। रोज़ाना इस्तेमाल से ताज़े रुधिर की उत्पत्ति भरपूर शक्ति और नीरोगता का संचार होता है।

इसमें संसार के नाना प्रकार के बड़े-बड़े स्वा सुगंधित ताज़ा फलों-फूलों तथा अमृत-समान शक्ति जड़ी-बूटियों का निचोड़ निकालकर भर दिया गया इसलिये इसके हरएक घूँट में आपको नए स्वाद और ही सुगंध का आनंद मिलेगा। और यह ख़ालिस स्व चीनी पर बनाया गया है इसलिये 'सोने पर सोहागा' काम करता है' दाम फ़ी बोतल २), फ़ी दर्जन २०)

इसके सिवा गुलाब, केवड़ा, ख़स, नारंगी, पोदीना, नीबू, बादाम, सौंफ, संदल, केला तथा आदि के स्वदेशी चीनी पर बनाए अत्युत्तम शर्बत तैयार हैं। दाम फ़ी बोतल नं० १, २) नं० २, प्रत्येक शर्बत दर्जन मँगाने से एक बोतल मुफ़्त। शर्बत के लिये चौथाई क़ीमत पेशगी आनी ज़रूरी है।

हमारा जगत्-प्रसिद्ध अमृत आमला हेअरआयल—आजकल नक़्क़ाल लोग विदेशी हा सुगंधियों को मिलाकर और रंग देकर इस नाम से लाभ उठा रहे हैं। उनके धोके से बच और हमारा यह तेल जो ख़ालिस गुणकारक जड़ी-बूटियों द्वारा तैयार किया गया है मँगवाकर आज़मायश करें और लाभ उठावें। गुण-गान करने की आवश्यकता नहीं। दाम फ़ी बोतल ४), अधिया २=); नमूना की बोतल १) डा० ख़० अलग ६ बोतल मँगाने से डा० ख़० माफ़। नमूना की बोतल एक दर्जन मँगाने से डा० ख़० माफ़।

अमृत हेअर डाई—तमाम ख़िज़ाबों का सरताज, दरबारी ताज मार्का ख़िज़ाब लगाते ही सफ़ेद बाल प्राकृ की भाँति काले होते हैं और चमड़े पर किसी प्रकार का दाग़ नहीं पड़ता। क़ीमत फ़ी बक्स १), ३ मँगाने डा० ख़० माफ़।

पता—अमृत परफ्यूमरी वर्क्स, कटरा घनईयाँ, अमृतसर।

३) से ऊपर के ख़रीदार को सिगार-लैंप इनाम

कड़कती धूप और तूफ़ानी आँधी

आदि से आँखों की रक्षार्थ हाई-क्लास सन्-प्रूफ़ आई-प्रोटेक्टर्स

५) से ऊपर के ख़रीदार को पाकेटइंजीनियर इनाम

चश्मे

ताज़ा चालान] **१५) से ऊपर के ग्राहक को एक टाइमपीस इनाम** **[नया सामान**

असली गागलज़—इनमें हरएक रंग के बड़े-बड़े ठंढे शीशे लगे हैं और इर्द-गिर्द चमड़े के अथवा सिलो लाइड के खोपे लगे हैं ताकि किसी ओर से भी आँख पर धूप आदि का प्रभाव न पड़ने पाए। दाम चमड़ेवाली का २॥), ३), ३॥), सिलो लाइड का ३), ३॥), ४)

अमुलेट—इनमें इर्द-गिर्द बजाय चमड़े या सिलो लाइड खोपों के चारों रँगदार काँच ही लगे हैं; जिनसे तेज़-से-तेज़ धूप में भी आँखें ठंढी रहती हैं। दाम ३॥), ४), ५), ७); साधारण चार काँच के रँगदार १॥), २), २॥)

१०) से ऊपर के ग्राहक को सेफ़्टी रेज़र मुफ़्त इनाम

बिजली के अद्भुत कर्तब

२५) से ऊपर के ग्राहक को बढ़िया रिस्ट-वाच मु० इ०

यह सामान मामूली बाज़ारू सामान नहीं है बल्कि स्पेशल आर्डर पर बढ़िया बैट्रियाँ और बड़ी तेज़ रोशनीवाली तियाँ लगवाकर भारी स्टाक मँगवाया गया है। अस्तु; ऐसा उत्तम माल इन क़ीमतों पर फिर न मिलेगा।

बिजली के तोहफ़े

बिजली के सेफ़्टी पिन और सुंदर फूल—इनको श्रीमान् कोट पर और श्रीमतियाँ साड़ी व बालों में धारण करती हैं। बग़ैर रोशनी के भी सुंदरता की शोभा को दुगनी करती हैं। लेकिन ज़रा-सा बटन दबा दो फिर क्या बात है। अनजान समझेगा कि पिन में सच्चे हीरे जड़े जो रोशनी कर रहे हैं। फूल रंग-बिरंगे मिलेंगे। रचर्य सौग़ात है। फूल ख़रीदें या हीरोंवाली पिन। मत एक ही है। मय पूरा सामान २॥), ३॥), ५)।

बिजली के बटन—कमीज़ में लगाकर बटन का रोशनी का दोनों काम लें। सच्चे हीरों की शान-से कते हैं और इशारे से जलते-बुझते हैं। मय पूरे मान के फ़ी सेट ६)

बिजली के सुनहरे बुंदे—जो गुण बिजली के ों में है वही इनमें भी है; फ़र्क़ केवल यह कि वह ज़ में लगाने से गले की शोभा बढ़ाते और यह ों में शोभायमान होकर श्रीमतीजी की सुंदरता को -चाँद लगाते हैं। मानो साक्षात् देवी दैव-तेज से त सामने खड़ी है या चंद्रमा के दोनों ओर दो सितारे कते हैं। दाम पूरा सेट फ़ी जोड़ कुल ५), ७), १०)

बिजली के ब्रैकेट—(दीवारगीर) दीवार में ने के अद्भुत लैंप जो तमाम कमरे को रोशन हैं और सजावट अलग। दाम केवल ३॥), ५)

बिजली के स्टैंड—(शमादान) मेज़ का श्रृंगार और कमरे की शोभा। रोशनी निहायत उम्दा। दाम ६), ७)

हैंडलैंप—हरीकैन की तरह हाथ में लटकाने का काम देंगे। रोशनी इनकी इस प्रकार है, जिस प्रकार मोटरों की या जहाज़ों की सर्च लाइट पड़ा करती है। दाम ७), १०) मय पूरा सामान।

साइकिल लैंप—उपर्युक्त हैंडलैंप के मानिंद सर्च लाइटवाला, जो बाईसिकल के आगे लगाने के काम आता है। दाम ५॥।), ७॥) मय सामान। डाईनमोवाला जो आयु-भर के लिये एकही काफी है। बैट्री की आवश्यकता नहीं। पहिए की रगड़ से जलेगा, दाम १८)

बिजली के मशाल (टार्च)—निहायत तेज़ सर्चलाइट की-सी रोशनीवाले गोल लंबी शक्ल के लैंप बढ़िया क्वालिटी जिसकी चौंधिया देनेवाली रोशनी ३०० फुट तक जाती है। मय पूरा सामान १२), दर्जा २—१०), दर्जा ३—५) व ३॥) मामूली २)

पाकेटलैंप—२॥), ३), ४), ५) तीन रंगी रोशनीवाला गार्डलैंप ३), ४), ५)

सचित्र फ़ैंसी पोस्टकार्ड

इनमें अत्यंत सुंदरतापूर्ण, प्रेम और सौंदर्य (Love-and beauty) के भरे हुए भाँति-भाँति के सीन रंगीन, चमकीले, और पालिशदार आर्ट से विचित्र रूप में दिखाए गए हैं। रंजीदा-से-रंजीदा मनुष्य को दिखा दो, एक बार तो अवश्य ही खुशी से प्रफुल्लित हो जायगा। क़ीमत एक दर्जन का जिनमें भिन्न-भिन्न प्रकार के १२ ही दृश्य होंगे, केवल २॥) दर्जा दूसरा १॥) हाफ़ नेकेड (अधखुले) फोटो ३॥) दर्जन। एक दर्जन से कम न भेजे जायँगे।

पता—जी० सी० आहूजा एंड संस, कटरा घनईयाँ, अमृतसर।

ऐसी सुंदर बढ़िया मज़बूत व सच्चा टाइम देनेवाली घड़ियाँ इन दामों पर अन्यत्र न मिलेंगी

आज़मायश की शर्त] Our Motto Honesty and Cheapness. [आज़मायश की शर्त

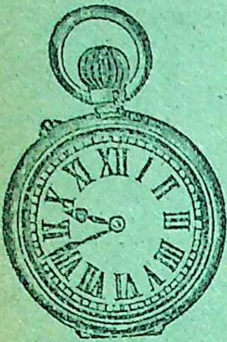

श्रीराम पाकेट लीवर वाच—ये निहायत मज़बूत, खूबसूरत, सच्चा वक़्त बतानेवाली निकिल चाँदी केस की सुंदर शेप की जेब घड़ियाँ हमने अभी-अभी मँगवाई हैं। पक्के डायल पर श्रीराम, लक्ष्मण, माता सीता व महावीरजी के पुष्पक-विमान में बैठे हुए आकाश-मार्ग द्वारा अयोध्या लौटते समय का दृश्य रंगीन फोटो में दिखाया गया है। सच्चा समय दिखाने के सिवा प्रति समय मर्यादापुरुषोत्तम भगवान् के दर्शन कराकर सच्चा मार्ग भी साथ-साथ दिखाना इसी घड़ी का काम है। कोई हिंदू-जेब इससे ख़ाली न होनी चाहिए। प्रत्येक भक्तजन के हाथ में पहुँचाने के हेतु दाम केवल ६॥) मय सुंदर चेन के रक्खा है। गा० १० साल।

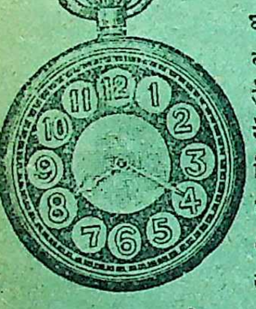

नई ईजाद की अद्भुत घड़ी—इस घड़ी की मशीन ऐसी बनाई गई है कि जो ऊँची-से-ऊँची छत पर से गिरकर भी टूटने या बिगड़ने का नाम नहीं लेती और टाइम की सच्चाई में भी अद्वितीय साबित हुई है। शेप सुंदर, साइज़ सुडौल, सेकंडकाँटा भी है और अंधेरे में चमकनेवाला रेडियम डायल, मिट्टी-गर्द के बचाव और शीशे की रक्षार्थ प्रौटेक्टर लगाकर भेजी जाती है। गा० १२ वर्ष। दाम मय सुंदर चेन ७॥) यही बिना रेडियम ६॥)

हर घड़ी के साथ सुंदर चेन, तस्मा या चूड़ी मुफ़्त और तीन घड़ियाँ एकदम लेने से एक मुफ़्त

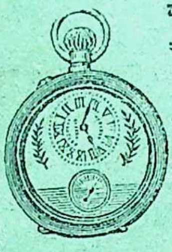

८ दिन की चाबी की असली घड़ी, गारंटी २० वर्ष, दाम १२) दूसरे दर्जे की बढ़िया घड़ी १०)

पाएदारी की बावत ज़िम्मेदारी की गारंटी-फ़ार्म हस्ताक्षर-सहित हर घड़ी के साथ भेजा जाता है।

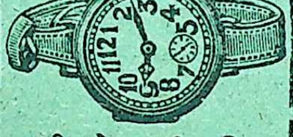

सीप केस की बढ़िया रिस्ट वाच—इसकी चमक चाँदी को भी मात करती है जो कभी भी मैली न होगी। मशीन पक्की टाइम पूरा चाबी २४ घंटे गा० ८ वर्ष दाम केवल ७॥) ६॥) १२॥)

फ़ुलजल पाकेट लीवर वाच—१७) व १५), चाँदी की २०), रोल्ड गोल्ड २५), सोने की ४०), रास्कोप वाच ४॥) ५॥), रेल्वे ५॥), ७॥)

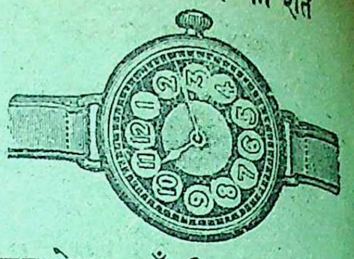

मनमोहन इँगलिश रिस्टवाच—देखने में सुंदर, समय क सच्ची, मशीन मज़बूत, चाँदी-सी उज्ज्वल स्त्री-पुरुष बाल-वृद्ध सबके मन को लुभानेवाली रेडियम डायल की (अँधेरे में भी वक़्त बतानेवाली) एकदम भारी स्टाक आ जाने के कारण केवल ८॥) में दी जावेगी। मुक़ाबला करने से पता चलेगा कि यह दूसरी जगह इन दामों में कदापि न मिलेगी। यही घड़ी लीवर फुल जुलत्रा १५) ; यही बिना रेडियम लेने से फ़ी घड़ी २) कम और ख़ालिस चाँदी की लेने से २) तथा सुनहरी लेने से १) फ़ी घड़ी अधिक लगेंगे। तस्मा या चूड़ी मुफ़्त मिलेगी। गा० १४ वर्ष।

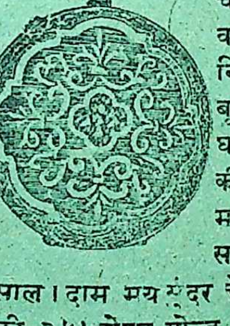

हंटिंग पाकेट वाच—यह सोने व चाँदी को मात करने वाली सुनहरी व रुपहली निहायत शानदार बेल बूटेवाले बंद केस की घड़ियाँ देखने में १००) की मालूम होती हैं। बहुत मज़बूत और टाइम सच्चा देती हैं। गा० १ साल। दाम मय सुंदर चेन १०) व ११) चाँदी की २५) रोल्ड गोल्ड ३०) सोने की ६०)

न्यू जर्मन बी टाइमपीस जो सुंदरता टाइम की सच्चाई में १०) के टाइमपीस को मात करती है। क़ी० २॥) वेस्ट एंड कंपनी की बी टाइमपीस ५) अलार्म टाइमपीस ४॥) व ६॥) दो घंटी का ७॥), १५ मिनट की घंटी का १

सुंदर श्रृंगार वाच

यह घड़ी सोने के कंकण को मात करती और सुंदरता की शोभा को दोबाला करती है। इसके होते हुए कलाई में दूसरे ज़ेवर की आवश्यकता नहीं है। मशीन पक्की और टाइम की सच्ची है। मज़ा यह

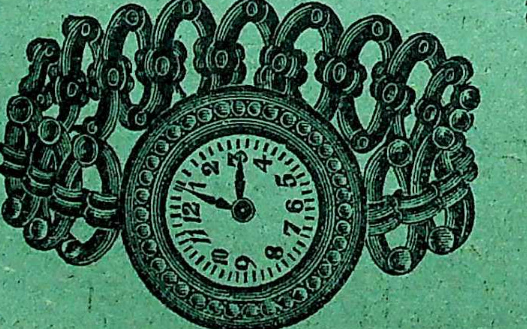

नया फ़ैशन ! नई शान

कि कलाई चाहे कितनी मोटी पतली हो, सब पर फ़िट आती है सिवा स्त्रियों के पुरुष भी पहनते दाम कुल ६); नक़ली जवाहरात जड़ी हुई १०॥) यही अलग चूड़ी सादी मगर बढ़िया ७॥), ६॥) रोल्ड गोल्ड १५), २०) सोने की ३५)

पता—प्रोप्राइटर दी आहूजा वाच कंपनी, M. E, कटरा, घनईयाँ, अमृतसर।

शेवरोले मोटरकार

सबसे सस्ती और सबसे अच्छी,

कच्ची सड़कों पर निहायत अच्छा

काम देती है।

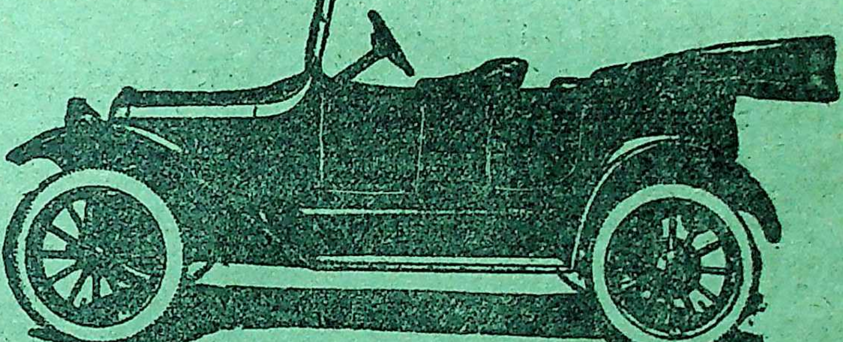

क़ीमत 2,875

अलावा किराया रेल।

EDULJEE & Co.,
Motor Engineers & Coach Builders,
New Civil Line, *Lucknow*.

इडलजी ऐंड कंपनी,
नरही रोड,
लखनऊ

अस्सी
बीमारीयों
की
एक
दवा
पीयूष
रत्नाकर

सरकार से रजिस्ट्री की हुई
हज़ारों प्रशंसा-पत्र-प्राप्त, जगत्-
प्रसिद्ध औषधि

८० रोगों की एक ही दवा

पीयूषरत्नाकर

हर प्रकार का बुख़ार, कफ, खाँसी, दमा, जुकाम, दस्त, मरोड़, अजीर्ण, हैज़ा, शूल, अतीसार, संग्रहणी, सिर-दर्द, पेट, कमर, गठिया का दर्द, मिर्गी-मूर्च्छा, स्त्रियों का प्रसूत आदि बच्चों के सर्व रोग यानी सिर से लेकर पाँव तक किसी रोग में दे दो, जादू का असर करता है। दाम १), बड़ी शीशी १॥), वी० पी० ख़र्च ।≶), १२ लेने से ६), बड़ी शीशी १५॥), वी० पी० ख़र्च माफ़।

दद्रुनाशक

विना जलन और तकलीफ़ के हर तरह के पुराने और नए दाद को २४ घंटे में जड़ से खोनेवाली शर्तिया दवा। दाम ३ शीशी ॥), वी० पी० ख़र्च ।≶), १२ लेने से २।), वी० पी० ख़र्च माफ़।

गोरे और ख़ूबसूरत बनने की दवा

सुगंधित फूलों का दूध—यह दवा विलायती ख़ुशबूदार फूलों का अर्क़ है। विलायत के एक प्रसिद्ध डॉक्टर ने बनाकर अभी भेजा है। इसको ७ दिन बदन और चेहरे पर मालिश करने से चेहरे का रंग गुलाब के समान हो जाता है और बदन से ख़ुशबू निकलने लगती है, गालों के स्याह दाग़, मुहासे, छीप, झुर्रियाँ, फोड़ा, फुंसी, खुजली आदि दूर होकर एक ऐसी ख़ूबसूरती आ जाती है कि काली रंगत चाँद-सी चमकने लगती है। जिल्द मुलायम हो जाती है। मँगाकर देखो। दाम १ शीशी १।), वी० पी० ख़र्च ॥-), ३ लेने से ४), वी० पी० ख़र्च माफ़।

ख़िज़ाब! ख़िज़ाब!! ख़िज़ाब!!!

सबसे अच्छा न्यू ईजाद मनमोहन केशकल्प—एक दफ़ा के लगाने से भूरे और सफ़ेद बाल भौंरे के रंग के समान काले-चमकीले हो जाते हैं। जिल्द पर धब्बा नहीं आता। हाथ काले नहीं होते, विशेष तारीफ़ यह है कि जो बाल काले हो जायँगे, वह फिर उमर-भर सफ़ेद नहीं होंगे। बराबर इस्तेमाल कीजिए। दाम फ़ी डिब्बा १।) वी० पी० ख़र्च ॥-), तीन लेने से ४), वी० पी० ख़र्च माफ़।

पूरा हाल जानने के लिये, व्रज चौरासी कोस की सुगम यात्रा व यादगार और बड़ा सूचीपत्र मँगाकर देखिए। मुफ़्त मिलेगा। ५३१

पता—जसवंत ब्रादर्स, नं० २, मथुरा।

Calcutta Musica Stores

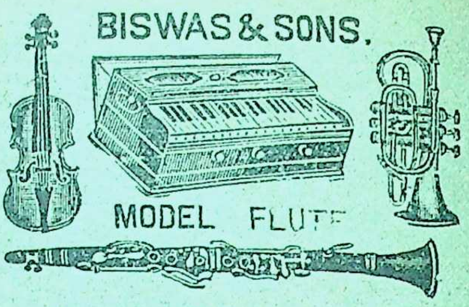

Harmoniums of all kinds of reeds, viz. American, German, Paris, Esteve, Kasriel etc., in Scale-Change, Coupler, Dulcetina, Travelling, Portable, Folding, Box, etc.

All sorts of **Musical Instruments** are sold at Moderate Prices. Catalogue free on application.

Harmoniums 3 Octv. Single reed Rs. 20, 25 & 35. Double reeds Rs. 35, 40 & 50. 3 Octv. 1 set of Paris reeds Rs. 35, 40 & 50. Double reeds Rs. 55, 60 & 75. Other varieties Rs. 80 to 350. Order with advance of Rs. 10.

BISWAS & SONS.,
5, Lower Chitpore Road. (L) Calcutta.

* * *

जेबी घड़ी मुफ़्त

ओटो मुश्क हिना

हरएक शौक़ीन को घर में हमेशा रखने लायक़ देशी इत्र। क़ीमत एक शीशी की १२ आने। १ दर्जन लेनेवाले को १ रास्कोप घड़ी इनाम।

दाद-विनाशक

दाद और खुजली के लिये अकसीर मलहम, क़ीमत।), २४ डिब्बा एकसाथ लेने से एक रास्कोप घड़ी इनाम, न लेने से १॥) दर्जन।

५३४ **किंग जार्ज कारोनेशन कं०, बंबई नं० ४**

* * *

युक्तप्रांत में

सबसे सस्ता "शिकारघर"

सूचीपत्र मुफ़्त

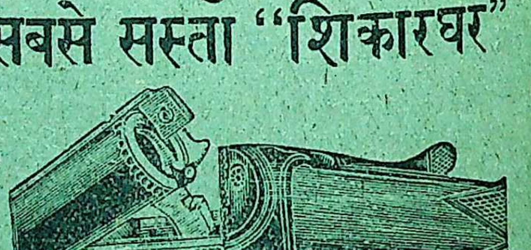

कृपया इस पते से मँगाइए या मिलिए।
पता—पी० सी० विश्वास ऐंड कं०, गनमेकर्स,
५७३ **जौहरी बाज़ार, आगरा।**
या—असंसोल ई० आई० रे०, बंगाल।
या—पी० बा० नं० ६४२, कलकत्ता।

मिलने का पता:—हरिदास ऐंड कंपनी, २०१ हरिसन रोड, कलकत्ता।

ख़ुशख़बरी

छपकर तैयार हैं !! छपकर तैयार हैं !!!

विना उस्ताद के वैद्य-विद्या सिखानेवाले

चिकित्सा-चंद्रोदय

छठे और सातवें भाग

लेखक

बाबू हरिदास वैद्य

मूल्य और पृष्ठ-संख्या

छठा भाग पृष्ठ-संख्या ४१६ चित्र ३ मूल्य ३।) सजिल्द का ४)

सातवाँ भाग पृष्ठ-संख्या १२१६/१६३२ चित्र ३८/४१ मूल्य १०॥)/१३॥।) सजिल्द का ११।)/१४।)

सभी शेष रोगों की चिकित्सा समाप्त

छठे भाग में कोई दस और सातवें में कोई चालीस रोगों के निदान, लक्षण और चिकित्सा ख़ूब समझा-समझाकर विस्तारपूर्वक लिखी गई है। सातवें भाग में प्रायः सभी रोगों की चिकित्सा ख़त्म कर दी गई है।

सातवें भाग में ही आठवाँ शामिल

हमारा इरादा आठवें भाग में सभी रोगों की चिकित्सा शेष करने का था; पर ख़रीदारों की किफ़ायत की ग़रज़ से, हमने आठवाँ भाग भी सातवें में ही शामिल कर दिया है। इसी से सातवें भाग में सभी बाक़ी रहे हुए रोगों के संबंध में लिख दिया गया है। इस भाग में चिकित्सा-विषय समाप्त कर दिया गया है, इसी से इस सातवें भाग की पृष्ठ-संख्या १२१६ हो गई है। पिछले बड़े-से-बड़े भाग की पृष्ठ-संख्या प्राय छः सौ से अधिक नहीं है।

इन भागों में विशेषता

केवल पहले भाग में चंद रंगीन और सादे हाफ़टोन चित्र लगाए गए हैं। और किसी भाग में चित्र नहीं हैं, पर छठे और सातवें भागों में प्रायः इकतालीस तिनरंगे और इकरंगे हाफ़टोन चित्र लगाए गए हैं। हिंदी क्या—संस्कृत, बँगला, गुजराती और मरहटी प्रभृति किसी भी भारतीय भाषा के वैद्यक-ग्रंथ में इसके आधे क्या चौथाई भी ऐसे बढ़िया चित्र नहीं हैं, चित्रों से विद्यार्थियों को लक्षण याद करने में बड़ा सुभीता है।

शेष दूसरे सफ़े पर देखिए—

पृष्ठ

८. मालिक और मज़दूर (व्यंग्य-चित्र)—
[चित्रकार, श्रीयुत गुरुस्वामी १७४

९. अमेरिका में पत्र-संपादन की शिक्षा—
[लेखक, ठाकुर सूर्यकुमार वर्मा ... १७५

१०. वनस्पति-निरीक्षण—[लेखक, प्रो० चंद्रमौलि सुकुल एम्० ए०, एल्० टी० ... १७६

११. छाया (नाटक)—[लेखक, श्रीयुत सुदर्शन १८३

१२. हृदय का मधुर भार (कविता)—[लेखक, पं० रामचंद्र शुक्ल (हिंदी-अध्यापक काशी-विश्वविद्यालय) १९४

१३. संगठन—[लेखक, श्रीयुत मावलीप्रसाद श्रीवास्तव १९६

१४. निर्जीव विकास—[लेखक, श्रीयुत गोवर्द्धनलाल एम्० ए०, बी० एल्० ... ... २०३

१५. सौंदर्य (कविता)—[लेखक, श्रीयुत “गुलाब” २०८

१६. निराश प्रेम—[लेखक, पं० रघुवरदयालु द्विवेदी बी० ए० ... ... २१०

१७. सापेक्ष्यवाद—[लेखक, श्रीयुत अवध उपाध्याय २१७

छप गई ! छप गई !! छप गई

शिशुता-नागरी

चुहचुहाते चाह से, जिसके लिये तुम संव
छप गई वह छप गई, अब मेटिए शिशु-आप

यदि आप सच्चे हृदय से मातृभाषा देवनाग
की पूर्ण उन्नति चाहनेवालों के पक्ष में हैं, तो
आपका परम कर्तव्य है कि “शिशुता-नागरी”
नामक पुस्तिका का, जो कि चौदह वर्ष के
शिक्षा-सिद्धांत द्वारा अनुभव की गई है और जो
छोटे छोटे बच्चों को कम-से-कम तीन मास में
केवल २ मिनट प्रतिदिन के अभ्यास से ही पूर्ण
तौर से मात्रा-सहित वर्ण-ज्ञान कराने में पूर्ण
चमत्कार दिखाया है, प्रचार करिए और कराइए।
नमूना के लिये केवल =) का टिकट भेजकर
एक प्रति मँगाइए और अनुभव कीजिए। शीघ्र
कीजिए, लोग धड़ाधड़ खरीद रहे हैं। केवल
१००० ही छपी थीं।

आपका कृपाभिलाषी,
ठा० रामकुमारसिंह, ग्राम मांडेश्वरपु
मड़ना, पो० पूराबाज़ार, प्रांत—फ़ैज़ाबा

हथेली पर सरसों

यह दवा डॉक्टर फ़ांस ने बनाई है जो मानिंद अर्क़ के है। इस दवा की दो बूँद मलाई या शहद में मिलाकर खाने से आध घंटे बाद वह ताक़त पैदा होती है जिसका रुकना मुश्किल हो जाता है। आदमी कैसा ही नामर्द, कमज़ोर, बुड्ढा क्यों न हो फ़ौरन् मर्द बन जाता है। इस दवा की एक बूँद दस बूँद खून पैदा करके आदमी को मानिंद फ़ौलाद के बना देती है और धातु-संबंधी प्रत्येक विकार को दूर करती है। पेशाब का बार-बार आना, दिमाग़ की कमज़ोरी, सर में दर्द का रहना, चेहरे का रंग पीला पड़ जाना, और स्त्रियों के गुप्त रोग जिसमें स्त्रियों का सूखकर काँटा-सा हो जाना, औलाद का न होना, गर्भ का गिर जाना, सफ़ेद पानी का आना, इन सब रोगों के दूर करने में यह दवा अमृत है। क़ीमत फ़ी शीशी १॥), तीन शीशी के ख़रीदार को एक शीशी मुफ़्त। महसूल डाक ॥) ६०६

पता—भारत सेवक कंपनी कुसाक, मथुरा

नामर्दों को मर्द बनानेवाले
३०० गुप्त अनुभूत नुस्ख़ोंवाला
“हितचिंतक” का १०० पृष्ठ का
पुरुषत्व विकाशी विशेषांक मू० ॥)

किंतु “हितचिंतक” मासिक पत्र के ग्राहकों को बिलकुल मुफ़्त मिलेगा। जो ग्राहक नहीं हैं उन्हें ॥) मूल्य और =) डाक-ख़र्च के अथवा १॥) हितचिंतक का वार्षिक मूल्य भेज ग्राहक बनकर मुफ़्त मँगाकर जाड़े में खाने योग्य उत्तमोत्तम पौष्टिक दवा सेवन कर अपने शरीर की निर्बलता, नामर्दी आदि रोग दूर कर जवानी का आनंद लूटिए और ताक़त के पेटेंट नुस्ख़ों को बनाकर खूब धन कमाइए। ६२४

मैनेजर ‘हितचिंतक’ इटावा।

पृष्ठ
१८. फिर (कविता)—[लेखक, "कोई" ... २२८
१९. जैसे को तैसा (व्यंग्य-चित्र)—[चित्रकार, श्रीयुत मोहनलाल महत्तो ... २२९
२०. संगीत-सुधा—[स्वरकार और शब्दकार, प्रोफ़ेसर विश्वंभरसहाय "व्याकुल" ... २३०
२१. सुमन-संचय—[लेखकगण, पं० बालमुकुंद वाजपेयी, महामहोपाध्याय डॉक्टर गंगानाथ झा डी० लिट०, पं० सदाशिव दीक्षित "विचित्र", पं० अशर्फ़ी शुक्ल, श्रीयुत हरिहरनाथ, श्रीयुत मिलाप, "एक सेवक", पं० रामनारायण मिश्र एम्० एस्-सी० और

आवश्यकता

अछूत-जाति की पाठशालाओं के लिये एक निरीक्षक की आवश्यकता है। जो स्वयं अछूत-जाति का हो और मिडिल व नार्मल की योग्यता प्राप्त किए हुए हो। वेतन योग्यतानुसार होगा। प्रायमरी अथवा मिडिल पाठशालाओं में कार्य किए हुए अध्यापक का अधिक ध्यान रक्खा जायगा। अतः प्रार्थना-पत्र प्रमाण-पत्र की प्रतिलिपिसहित आना चाहिए। ६३२

डिप्टी इंस्पेक्टर मदारिस, फ़तेहगढ़

हिंदीय

ामायिक-साहित्य की कमी पूर्ण

"विश्वकर्मा"

हिंदी में शिल्प, उद्यो

का एक-मात्र उच्च कोटि का सचित्र मासिक पत्र आगामी १५ मई से होगा। वार्षिक मूल्य ४), प्रति संख्या ।=)

यदि आप शिल्प, उद्यो

प्राप्त करना चाहते हैं,

यों उन्नति कर, देश की दरिद्रता को दूर हटा, धन और यश

यदि आप अपनी संत

यदि आप भारतवर्ष

चाहते हैं,

को आदर्श बनाना चाहते

जीवन-वृत्तांत पढ़कर अपने जीवन

यदि आप भारतवर्ष

विश्वकर्मा आपको

विश्वकर्मा आपके

विश्वकर्मा आपको

विश्वकर्मा आपको

४) रु० वार्षिक मूल्य

विश्वकर्मा द्वारा आ

राजा-महाराजाओं तक

तुष्ट न हो

कुरलाल हीराल

यहाँ वर्तमान फ़ैशन के जवाहिरात के तो

ते हैं। सोने का हार, चूड़ियाँ, चैन इत्यादि

क बनते हैं। चाँदी के बर्तन स्टॉक में तैयार रहते

ऑर्डर देने पर भी बना दिए जाते हैं।

परीक्षा प्रार्थनीय है।

६६५

पत्र लिखिए—

१२, लालबाज़ार-स्ट्रीट, कलकत्ता।

पृष्ठ

१७४

श्रीयुत श्रीउमेशप्रसादसिंह बख़्शी तथा श्रीयुत श्रीगुरुदेवप्रसादसिंह बख़्शी ... ५

२२. विज्ञान-वाटिका—[लेखक, श्रीयुत रमेशप्रसाद बी० एस्-सी०, केमिस्ट ... २४१

२३. महिला-मनोरंजन—[लेखकगण, श्रीयुत ज़हूरबख़्श, श्रीयुत गोपीनाथ वर्मा और श्रीयुत सत्यजीवन वर्मा २४६

२४. कवि-चर्चा—[लेखकगण, पं० मयाशंकर याज्ञिक बी० ए०, पं० जीवनशंकर याज्ञिक एम्० ए० तथा पं० भवानीशंकर याज्ञिक... २५४

२५. पुस्तक-परिचय—[लेखकगण, प्रिंसिपल श्रीनारायण चतुर्वेदी एम्० ए०, एल्० टी०, पं० कृष्णविहारी मिश्र बी० ए०, एल्-एल्० बी०, श्रीयुत धनपतराय बी० ए० और पं० लक्ष्मीधर वाजपेयी २५८

२६. साहित्य-सूचना २६८

२७. विविध विषय २६९

श्वेतकुष्ठ की अद्भुत जड़ी

प्रिय पाठकगण ! औरों की भाँति मैं प्रशंसा करना नहीं चाहता । यदि इसके तीन बार के लेप से इस रोग की सफ़ेदी जड़ से आराम न हो तो दूना मूल्य वापस दूँगा, जो चाहें ।) का टिकट मँगवाकर प्रतिज्ञापत्र लिखा लें। मूल्य ३) २८१

वैद्यराज पं० महावीर पाठक नं० ५, दरभंगा

घोटकर संगीतालय

घ महीने में हारमोनियम सिखानेवाली किताब

तीन म

मूल्य ११-) कि क़िस्तबंद मूल्य में भी हारमोनियम

हमारे यहाँ

दिए जाते हैं ।

घोटकर ऐंड को०,

थी चितपुररोड, कलकत्ता

आ

२७७ ३०, आरि

राबाज

ख़त लिखने में अपना दिमाग़ क्यों

एक अँगरेज़ीदाँ का कहना है—"किसी आदमी का ख़त

अगर अपनी योग्यता का परिचय दूसरों को देना चा

विद्यार्थी हो, चाहे स्कूल मास्टर, या एक वकील

सफलता के लिये तुम्हें अच्छे पत्र-लेख

करते हो ?

को तुम्हें दिखा दूँगा।"

गुण सीखो। चाहे तुम

चाहे जो हो, तुम्हारी

शहद

वह ताक़त पैदा

के० ए० मुश्किल हो जाता है ।

द, कमज़ोर, बुड्ढा क्यों न

बन जाता है । इस दवा की एक बूँद

ख़ून पैदा करके आदमी को मानिंद फ़ौलाद

बना देती है और धातु-संबंधी प्रत्येक विकार को दूर करती है । पेशाब का बार-बार आना, दिमाग़ की कमज़ोरी, सर में दर्द का रहना, चेहरे का रंग पीला पड़ जाना, और स्त्रियों के गुप्त रोग जिसमें स्त्रियों का सूखकर काँटा-सा हो जाना, औलाद का न होना, गर्भ का गिर जाना, सफ़ेद पानी का आना, इन सब रोगों के दूर करने में यह दवा अमृत है । क़ीमत फ़ी शीशी १।।), तीन शीशी के ख़रीदार को एक शीशी मुफ़्त । महसूल डाक ।।) ६०६

पता—भारत सेवक कंपनी कुशक मथुरा

मर्दों को मर्द

३०० गुप्त अनुभूत

"हितचिंतक" का १ न्डेन्स ।

पुरुषत्वविकाशी वि प्राप्त करो ।

किंतु "हितचिंतक" मासिक

बिलकुल मुफ़्त मिलेगा। जो ग्राहक

मूल्य और =) डाक-ख़र्च के अथवा

का वार्षिक मूल्य भेज ग्राहक बन

जाड़े में खाने योग्य उत्तमोत्तम प

कर अपने शरीर की निर्बलता, न

दूर कर जवानी का आनंद लूटिए

पेटेंट नुस्ख़ों को बनाकर ख़ूब धन क

मैनेजर 'हितचिंतक' इ

ing.

espondence with the

legraph Office, Courts,

Family Corres

ship, Society, Favour,

Correspondence;

isory notes, Bill form,

bbreviations, Service

hapter on every day

, P Extra.

TTA.

चित्र-सूची

(क) रंगीन

पृष्ठ

१. विश्व-भारती—[चित्रकार, श्रीयुत मंत्रवादी ... १४५

२. मुख्य-मुख्य रत्न—[श्रीयुत शिवमंगल पांडेय बी० ए० तथा पं० निरंजनलाल शर्मा ... १७०

३. केश-पाश—[चित्रकार, श्रीयुत हीरालाल बब्बनजी २४८

(ख) व्यंग्य

१. मालिक और मज़दूर—[चित्रकार, श्रीयुत गुरुस्वामी १७४

२. जैसे को तैसा—[चित्रकार, श्रीयुत मोहनलाल महत्तो २२६

हृदय-श्मशान

[रूपांतरकार—पं० कात्यायनीदत्त त्रिवेदी]

यह उपन्यास भी अपने जोड़ का एक ही है। इसके लेखक भी "आपन ओ पर" के लेखक हैं। यह सामाजिक उपन्यास अति ही मनोरम, भाव-पूर्ण और शिक्षा-प्रद है। पढ़ते ही बनता है। एक प्रति आज ही मँगाइए। मूल्य ।=)

वीरांगना तारा

[ले०—पं० सुरेंद्रनाथ तिवारी]

एक राजपूत-रमणी की सचित्र भाव-पूर्ण और मनोरंजक पद्यात्मक कहानी। यदि आप पढ़ना चाहते हैं कि एक राजपूत-रमणी ने बाल्य-काल में अपने पिता पर आई हुई मुसीबत में किस प्रकार प्राण-पण द्वारा साथ दिया था, तो आज ही इसे मँगाकर अवश्य पढ़िए और अपनी कन्याओं को पढ़ाइए। मूल्य ।)

मैनेजर, नवलकिशोर-प्रेस (बुकडिपो), हज़रतगंज, लखनऊ

संतुष्ट न होने पर पूरा दाम लौटा दिया जायगा !

एक दर वाजिब दाम

ठाकुरलाल हीरालाल ऐंड को०

हमारे यहाँ वर्तमान फ़ैशन के जवाहिरात के ज़ेवर हर समय तैयार रहते हैं। सोने का हार, चूड़ियाँ, चैन इत्यादि ऑर्डर के मुताबिक़ बनते हैं। चाँदी के बर्तन स्टॉक में तैयार रहते हैं अथवा ऑर्डर देने पर भी बना दिए जाते हैं।

परीक्षा प्रार्थनीय है।

२६१

पत्र लिखिए—

१२, लालबाज़ार-स्ट्रीट, कलकत्ता।

(ग) सादे

पृष्ठ
१. अंगूर की फ़सल में अंगूर दो आने सेर तक बिकते हैं १५५
२. तरकारी का बाज़ार १५६
३. 'मलाई की बर्फ़' १५७
४. फूलों का बाज़ार १५७
५. फ़्रांस का डाकिया १५९
६. चिड़ियों का बाज़ार १६०
७. फ़्रांसीसी ग़रीबों के बच्चे १६०
८. पुलीस का सिपाही १६१
९. पेरिस की एक सड़क... ... १६३
१०. 'सेन-नदी' का रेल पर से दृश्य... ... १६३

दीनता और दुर्भाग्य

उस दिन से दूर हो जायँगे, जिस दिन से आप हमारा नवग्रह-कवच अपने शरीर पर धारण करेंगे। आपको निश्चय करके स्वास्थ्य, सुख और सौभाग्य प्राप्त होगा। अपनी इच्छा को पूर्ण करने के लिये इसकी आज ही परीक्षा करो। अपना पूरा नाम और जन्म की तारीख़ लिख भेजो। दाम ताँबे के तावीज़ का ३॥), चाँदी का ५) और सोने का ७॥); डाक-महसूल माफ़। आपकी इच्छा पूर्ण होने की गारंटी, अन्यथा रुपया वापस कर दिया जायगा।

महामाया-आश्रम,
पो० ब० नं० ११४०९, कलकत्ता।

गारंटी और इनाम

श्रीचरक भगवान् ने लिखा है कि संसार में कोई ऐसा रोग नहीं जिसे शिलाजीत दूर न कर सके। परंतु असली शिलाजीत आजकल मिलनी कठिन हो रही है। अतः इस कठिनाई को दूर करने के वास्ते हमने काश्मीर के पहाड़ों से कई मन असली शिलाजीत मँगाकर आयुर्वेदिक रीति से धूप में शुद्ध की है, जो बीस प्रकार के प्रमेह, कमज़ोरी गुरदा, स्वप्नदोष और सर्व प्रकार के वीर्य-संबंधी दोषों को नष्ट करने के अतिरिक्त भूख बढ़ाने, दूध-घी हज़म करने और खाँसी-दमा को दूर करने की अपूर्व औषधि है, इस बात की हम गारंटी करते हैं कि हमारी शुद्ध शिलाजीत में यदि कोई किसी प्रकार की मिलावट साबित करेंगे तो उसको हम १००) इनाम देंगे। क़ीमत सूर्यतापी फ़ी तोला १), अग्नितापी फ़ी तोला ॥), असली काश्मीरी पवित्र केशर फ़ी तोला ३), असली तिब्बती कस्तूरी फ़ी तोला ४); इनके अतिरिक्त सर्व प्रकार की आयुर्वैदिक औषधियाँ, रस, रसायन, भस्म, आसव, अरिष्ट, तैल, घृत, अवलेह, सत, क्षार और काबुल-काश्मीर की जड़ी-बूटियाँ, अष्टवर्ग, दशमूल, गुड़मार, शिवलिंगी, चारों प्रकार की बला, कंदमूल इत्यादि सस्ती, असली और उत्तम सस्ते भाव में मिल सकती हैं।

मैनेजर काश्मीर रसशाला
५८६ रावलपिंडी

मौत

का हाल ६ मास पहले मालूम करना चाहो तो घर बैठे हमारी पुस्तकों द्वारा हमसे योग-विद्या (मिस्मरेज़म) सीखो, जिसमें दूसरे के दिल का हाल जान सकते हैं, बेशुमार दौलत के स्वामी बन सकते हैं, दूसरों को अपने वश में कर सकते हैं, रोगी के रोग को फूक मारकर अच्छा किया जा सकता है। धन-संपत्ति इत्यादि की प्राप्ति करनी हो, तो आज ही दो पैसे का टिकट अथवा बैरंग एक सुंदर पुस्तक विना मूल्य मँगवाओ। ६१६

पता—मिस्मरेज़म हाउस, मुरादाबाद।

पृष्ठ

११. 'सैन-नदी', शारंतों के पास, घोड़े माल से लदी नाव खींच रहे हैं १६४
१२. 'रू द रिवोली' पर भूगर्भगामिनी रेल का स्टेशन १६४
१३. स्कूल के बच्चों की सैर १६५
१४. कठपुतली का तमाशा—"शांज़ एलीज़" १६६
१५. चरख़ी का तमाशा—"मेरी-गो-राउंड" ... १६६
१६. बाग़बान १६७
१७. 'ऐफ़िल टावर' संसार में सबसे ऊँची मीनार १६८
-१९. सापेक्ष्यवाद-संबंधी २ चित्र ... २२२
२०. स्वर्गीय नारायणदत्त शास्त्री २३२
२१. श्रीराखालदास वंद्योपाध्याय एम्० ए० ... २३९
२२. सिपहसालार अब्दुलरहीम ख़ानख़ाना ... २५५

अपना और पराया

[अनुवादक—ठा० युगुलकिशोरनारायणसिंह]

यह वंग-भाषा के एक प्रसिद्ध उपन्यास "आपन ओ पर" का हिंदी-अनुवाद है। उपन्यास जैसा मनोरंजक है, वैसा ही शिक्षा-प्रद है। ऐसे "सोने और सुगंध" का काम आजकल उपन्यासों में कम देखने में आता है।

"स्नेह पराए को अपना बना देता है
और स्वार्थ अपने को पराया कर देता है।"

यदि इसका सच्चा स्वरूप देखना चाहते हों, तो आज ही इसकी एक प्रति मँगाकर आप स्वयं पढ़िए और अपनी शिक्षित बहुओं और भाइयों को पढ़ाइए। बंधुत्व का इस पुस्तक में अपूर्व उदाहरण है। पुस्तक का मूल्य ही क्या है? केवल ।)

मैनेजर, नवलकिशोर-प्रेस (बुकडिपो), हज़रतगंज, लखनऊ

वार्षिक मूल्य ३) **हिंदी-मनोरंजन** नमूना ।–)

(सचित्र मासिक पत्र)

संपादक—विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक। अनूठी गल्पों का ख़ज़ाना। रसमयी कविताओं का स्रोत। संसार की अद्भुत बातों का भांडार। हास्यरस-पूर्ण लेखों तथा चुटकुलों का संग्रह।

मनोरंजन के

"दुबेजी की चिट्ठी", "संसार-वैचित्र्य" तथा "हास्य-विनोद"-नामक स्तंभों में जो मनमोहक तथा हृदयग्राही बातें रहती हैं, वे आपको अन्य किसी पत्र में पढ़ने को न मिलेंगी। प्रतिमास एक रंगीन तथा सादे चित्र रहते हैं। पृष्ठ-संख्या ५०। हिंदी-संसार में इतना सस्ता और साथ ही इतना सुंदर तथा रोचक पत्र और कोई नहीं।

शीघ्र ग्राहक बनिए— ६२२

पता:—मैनेजर, हिंदी-मनोरंजन, चंद्रा फ़ैन्सी-प्रेस, कानपुर।

पृष्ठ

२३. लॉर्ड कर्ज़न २७८
२४. बाबू गंगाप्रसाद वर्मा २७९
२५. गंगाप्रसाद वर्मा-स्मारक २८०
२६. पं० मदनमोहन मालवीयजी २८१
२७. सर राजा रामपालसिंह २८२

च्यवनप्राश-कार्यालय, कनखल

च्यवनप्राश रसायन बल और बुद्धि बढ़ाता हुआ सब रोगों को नाश करता है। च्यवन ऋषि ने अपने बुढ़ापे को दूर करने के वास्ते बनाया था। मूल्य ४) सेर, १पाव (४०खुराक) से कम नहीं भेजा जाता। जो महाशय एजेंट बनना चाहें, पत्र-व्यवहार करें।

पता—मैनेजर च्यवनप्राश-कार्यालय,
कनखल (हरद्वार)

६२४

सुंदर और मनमोहिनी रिस्टवॉच, पाकेट वॉच, टेबिल टाइम्पीस, अलार्म टाइम्पीस

सिर्फ़ छः आने में मिलने की तरकीब।

पढ़िए ! पढ़ाइए !! समझिए !!! समझाइए !!!!

और विचारिए, यदि आप न समझ सकें तो किसी बुद्धिमान् मनुष्य को या अपने मित्र को दिखावें वह आपको समझा देगा।

BOSKOPF
SYSTEM
PATENT
SWISS MADE

रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क

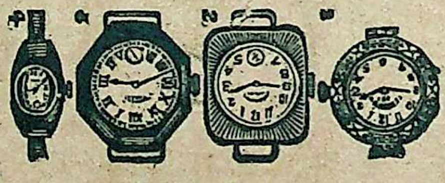

इन ब्लॉकों की कोई नक़ल न करे और न इनका उपयोग करे।

हमारी कंपनी द्वारा ६० तरह की रिस्टवॉच ८००० ग्राहकों को दी जा चुकी हैं। निकल की, चाँदी की, गिलट की, चौखूटी, गोल, षट्कोण, सेकिंड की सुईवाली, विना सेकिंड की सुई की, इत्यादि तरह-तरह की, नई-नई डिज़ाइन की आप जैसी पसंद करें, वैसी केवल छः आने में मिल सकती हैं।

नियम भी बहुत सरल है

हमारी कंपनी को १।।=) भेजकर अपना नाम रजिस्टर्ड करा लीजिए। हम आपको पाँच टिकियों का एक कूपन भेज देंगे। उसमें से आप अपने मित्रों को चार टिकट छः-छः आने में बेंच सकते हैं। आप जिसको टिकट दें उससे एक रुपया आठ आना हमारे पास भेज देने को कहें, उसके पास भी आप ही की तरह पाँच कूपन भेज दिए जायँगे। आपके चारों ग्राहकों के पैसे हमारे पास पहुँचते ही आपकी पसंद की हुई घड़ी आपके पास भेज दी जायगी। एक बात ध्यान में रखिए—मनी-आर्डर भेजते वक़्त मनीआर्डर पर अपना कूपन या टिकट-नंबर ज़रूर ही लिखिए। ध्यान रखिए, प्रत्येक घड़ी गिन्नी से छोटी है। वज़न में भी एक तोले से ज़्यादा नहीं है। चार साल की गारंटी दी जाती है। पसंद न पड़ने पर बदल दी जाती है। किसी भी तरह का दग़ा या फ़रेब साबित करनेवाले को १०००) रुपए इनाम दिया जायगा। घड़ी की फ़ेहरिस्त मँगाने के लिये एक आने का टिकट भेजिए।

मिलने का पता—**दिलावर ऐंड कंपनी, भूलेश्वर बंबई, नं० २**

सन् १९२५-२६-२७ के लिये पंजाब-युनिवर्सिटी द्वारा "हिंदी-भूषण" परीक्षा में नियत

शीघ्रता कीजिए

कौटिल्य अर्थ-शास्त्र

प्रथमावृत्ति समाप्ति को है

का सरल हिंदी-अनुवाद—प्रो० प्राणनाथ विद्यालंकार-कृत

संसार के प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ चाणक्य मुनि, जिन्होंने नंद राजाओं का नाश कर चंद्रगुप्त को राज्य पर बैठाया था, इसके मूल लेखक हैं। उसी का यह सरल हिंदी-अनुवाद है। भारतवर्ष के प्राचीन साहित्य में केवल यही एक ग्रंथ आज तक मिला है जो कि प्राचीन भारत का आर्थिक, राजनीतिक तथा सामाजिक सभ्यता को विस्तृत रूप से प्रकट करता है। आज से २३०० वर्ष पहले भारत में जो-जो पेशे थे और जो-जो अद्भुत, अनोखी और अमूल्य वस्तुएँ भारतीय कला-कौशल से बनती थीं उनका सब हाल इसमें है। राजनीतिक विषयों का तो यह भंडार है। जो आविष्कार योरप के महायुद्ध के समय में हुए हैं, उनमें बहुत-से ऐसे हैं जो प्राचीन भारतीयों को मालूम थे। युद्ध के समय जर्मनवालों ने एक विषाक्त धुआँ बनाया था और जब उसका प्रयोग किया तो मित्र-सेना में हलचल मच गई और बड़ी हानि हुई थी। इस पुस्तक में ऐसे धुएँ के बनाने तथा प्रयोग करने की विधि लिखी है और भी अनेक अद्भुत बातें—जैसे महीने-भर भूख न लगे, जिनका अभी पाश्चात्य जगत् को कुछ पता नहीं, उन सबका सविस्तर वर्णन इस पुस्तक में है। इस पुस्तक को पढ़ने से ज्ञात होगा कि आधुनिक शासन-प्रथा की प्रत्येक महत्त्व-पूर्ण बातें भारतवासी जानते थे। पुस्तक हरएक शिक्षित को अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य ४)

गुणों का ख़ज़ाना

स्वा० परमानंद-कृत सरल भाषा में। इसमें हरएक प्रकार की बीमारियों के फ़क़ीरी आज़माए हुए इलाज दिए हैं तथा धातुओं, उपधातुओं की उत्पत्ति, उनके शोधन और मारण के सहज तरीक़े, अनेक चीज़ों को बनाने के तरीक़े जिनको बनाकर मनुष्य सैकड़ों रुपए माहवार बड़ी आसानी से कमा सकता है, हरएक प्रकार के तेल, अर्क़, शरबत आदि बनाने के तरीक़े और फल-फूल, सब्ज़ी, दूध आदि के गुण-अवगुण, ऐसी अनेक अद्भुत बातें हैं। कुल मिलाकर ६७२ गुण इसमें हैं। गृहस्थों तथा बेरोज़गारों के तो अवश्य पढ़ने योग्य है। ४०० पृष्ठ की बड़ी पुस्तक का दाम २) है।

दांपत्य विज्ञान—बिलकुल नई चीज़। भाषा २)

सचित्र जैनरामायण—सरल भाषा में मूल्य ३)

भगवद्गीता—केवल भाषा, १८ अध्याय, १८ ही माहात्म्य, बड़ी सरल, अति स्थूलाक्षर, मूल्य १।)

सूक्ष्म भगवद्गीता—संपूर्ण १८ अध्याय एक इंच-भर लंबी-चौड़ी गले में मढ़ाने योग्य १) फ़ोटो से उतारी हुई।

अनंगरंग संस्कृत १॥), पंचसायक संस्कृत ३।)

रतिरत्न-प्रदीप—मूल अँगरेज़ी २) नागरसवस्व सं० ४)

बार्हस्पत्य अर्थ-शास्त्र

का सरल हिंदी-अनुवाद। हिंदी-संसार के परिचित ला० कन्नोमलजी एम्० ए० जज-कृत। यह प्राचीन अर्थ शास्त्रविषयक सबसे पुराना ग्रंथ है। इसमें मूलसूत्र, हिंदी-अनुवाद, विस्तृत भूमिका, कईएक उपयोगी टिप्पणियाँ (जिसमें प्राचीन समय के प्रचलित धर्मों, नगरों, पर्वतों, नदियों आदि का सविस्तर वर्णन है), तथा प्राचीन भूगोल-संबंधी दो चित्र भी दिए हैं। पुस्तक हरएक विद्या-प्रेमी को अवश्य पढ़नी चाहिए। बढ़िया जिल्द-सहित मूल्य केवल १॥) रक्खा है।

डॉ० सर जगदीशचंद्र बोस

और उनके आविष्कार

लेखक—श्रीयुत सुखसंपतिराय भंडारी। सरस्वती पत्र की समालोचनाः—इस पुस्तक में बसु बाबू की जीवनी तथा उनके आज तक के सब आविष्कारों का सविस्तर वर्णन है। बसु महोदय संसार-प्रसिद्ध हैं। अपने नए-नए आविष्कारों से उन्होंने योरप के बड़े-बड़े दिग्गज वैज्ञानिकों का मान-मर्दन किया है। पुस्तक की भाषा सरल और रचना शैली मनोरम है। मूल्य केवल ॥=)

रतिरहस्य सटीक—संस्कृत। मूल्य ३॥)

हर प्रकार की संस्कृत तथा हिंदी-पुस्तकें मिलने का एक-मात्र पताः—

मोतीलाल-बनारसीदास, पंजाब-संस्कृत-पुस्तकालय, सैदमिट्ठा, लाहौर।

बिना किसी तकलीफ़ के बाल उड़ाने का

बादशाही साबुन

यह साबुन ज़िस जगह पर लगाया जाता है उस जगह के बाल बड़ी सफ़ाई से दूर हो जाते हैं। जिल्द को मुलायम बना देता है।

यह साबुन हिंदोस्तान में और हिंदोस्तान के बाहर बहुत ज़्यादा मशहूर हो गया है। इसके इस्तेमाल करनेवाले भूलकर भी कभी दूसरा साबुन काम में नहीं लाते। मूल्य तीन डिब्बी के बॅक्स का सिर्फ़ १) डा०-ख़० ।) हर जगह पर मिलता है। धोकेबाज़ों से बचना और रजिस्टर्ड-नंबर ९२६ देखकर लेना।

सोल एजेंट—

सी० सी० महाजन एंड कंपनी

नंबर २, बंबई।

घड़ियों के शौक़ीन, ज़रा

आँख खोलकर देखें!

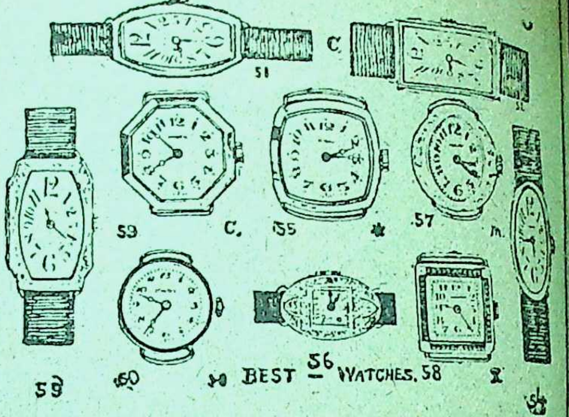

आँखों को दूर से ही अपनी तरफ़ खींच लें। ऐसे एक-से-एक अच्छे मेकर की, देखनेमें बहुत ही ज़्यादा ख़ूबसूरत और चलने में रेग्यूलर, तरह २ की सुनहरी घड़ियाँ रेशम के पट्टे के साथ ऊपर के माफ़िक दस डिज़ाइनों में मिल सकती हैं। नंबर ५१, ५२, ५३, ५४, ५६ का प्रत्येक की क़ीमत २४।=); डाक-ख़र्च ।=) गारंटी १५ वर्ष। नंबर ५५, ५७, ५८, ५९, ६० प्रत्येक की क़ीमत सिर्फ़ रु० ६।=) डा० ख़० ।=) गारंटी १० वर्ष।

मिलने का पता—

विक्टोरिया वाच कंपनी, बंबई २

५०००) रु० (पाँच हज़ार रुपया) के इनाम!

|'| में से यदि आपको लेना है तो शीघ्र नियमावली |'|

बिजली का थैला

वास्तव में यह थैला "यथानामा तथागुणः" केवल २४ घंटे इस्तेमाल करने से ही इंद्रिय-संबंधी रोग, सुस्ती, नपुंसकता, टेढ़ापन आदि दूर करके आश्चर्य-जनक प्रभाव दिखलाता है। शक्तिहीन पुरुषों को पुनः नवयुवक बना देता है, इसमें लेप, सेंक आदि की भी आवश्यकता नहीं। मूल्य २) डाक-व्यय-रहित।

मुफ़्त मँगा लीजिए

यह लॉटरी नहीं है, हर शख़्स को १०००) से लेकर १) तक के इनाम दिए जायँगे। जो हमारे यहाँ की जादू समान गुणकारी औषधियाँ १००) से १) तक की ख़रीदेंगे। 'आम के आम गुठलियों के दाम।'

कामसुंदरी

कोष्ठ-बद्धता जो सर्वरोगों की जड़ है, उसे जड़ से दूर करके अत्यंत पवित्र और शुद्ध रक्त पैदा करके देह को सुंदर और हृष्ट-पुष्ट करती है। प्रमेह, धातुक्षीण, स्वप्नदोष, मस्तिष्क व शरीर-संबंधी निर्बलता को दूर करके व सर्वमूत्र-संबंधी विकारों को नष्ट करके वृद्ध को भी नवीन जीवन देती है। इसे पारस कहें तो ठीक है। मूल्य ३२ गोली ॥)

R-. : /4/ |'| याद रखिए, यह समय फिर नहीं मिलने का। |'| As. 12

पता—योगी औषधिमंदिर, कोठी, अलीपुर खेड़ा, ज़िला मैनपुरी।

याद रखिए ! माला जपते रहिए !! नोट कर लीजिए !!!

गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय से शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाली पुस्तकें

अचलायतन

[अनु०—माधुरी-संपादक पं० रूपनारायण पांडेय]

रवींद्र बाबू के सुप्रसिद्ध सामाजिक नाटक का यह अनुवाद है। इसमें हिंदू-धर्म की छूआछूत और आडंबर की कट्टरता का समालोचनात्मक खंडन किया गया है। बड़ा ही सरस वर्णन है । अनुवाद भी मौलिक-सदृश है। मू० ॥), सजिल्द १)

लक्ष्मी

[लेखक—श्रीगिरिजाकुमार घोष]

कौन नहीं जानता, घोष महाशय स्त्रियोपयोगी पुस्तकें लिखने में कितने पटु हैं। यह पुस्तक भी बहुत ही बढ़िया है । प्रत्येक स्त्री को लक्ष्मी की कहानी पढ़कर स्वयं लक्ष्मी-सदृश बनने की चेष्टा करनी चाहिए। मू० ॥=)

मध्यम व्यायोग

[लेखिका—श्रीमती सुशीलादेवी जायसवाल]

संस्कृत-साहित्य में वीररस की जितनी पुस्तकें हैं, प्रस्तुत पुस्तक उनमें सबसे महत्त्व-पूर्ण है। यह महाकवि भास-कृत नाटक है। अनुवाद किया है हिंदी के पुराने सेवक और उद्भट ऐतिहासिक विद्वान् श्रीकाशीप्रसाद जायसवाल की विदुषी सुपुत्री श्री० सुशीलादेवी ने। इस पुस्तक को पढ़िए और वीरता का चमत्कार देखिए। मू० =)

साहित्य-संदर्भ

[लेखक—पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी]

द्विवेदीजी की पुस्तक के लिये प्रशंसा की आवश्यकता नहीं। इसके लिये आपका नाम ही यथेष्ट है। इसमें आपके साहित्यिक लेखों का संग्रह है । छपाई-सफ़ाई बहुत बढ़िया। मूल्य लगभग २)

बाल-नीति-कथा

[अनु०—लखनऊ-विश्वविद्यालय के हिंदी-अध्यापक पं० बदरीनाथ भट्ट बी० ए०]

महाराज साहब बड़ौदा की आज्ञा से बड़ौदा-राज्य की पाठशाला के लिये हिंदू-विश्वविद्यालय-काशी के प्रिंसिपल श्री० ए० बी० ध्रुव एम० ए०, एल् एल्० बी० ने यह पुस्तक गुजराती में लिखी थी। हिंदी के विद्यार्थियों के लिये नितांत आवश्यक और उपयोगी समझकर श्रीमान् भट्टजी ने इसका अनुवाद किया है। श्रीमान् ध्रुव इस विषय के विशेषज्ञ हैं। चरित्र-गठन-संबंधी पुस्तकें लिखने के लिये आपसे अच्छा विद्वान् भारतवर्ष में दूसरा शायद ही मिले। पुस्तक की भाषा सरल और मुहाविरेदार है । 'चरित्र' मानव-जीवन का रत्न और हरएक प्रकार की उन्नति का मूल मंत्र है। इस दृष्टि से यह पुस्तक अमूल्य है। दो भागों में छपी है। दो भागों का मूल्य २॥), रेशमी जिल्द ३॥)

संक्षिप्त स्वास्थ्य-रक्षा

[लेखक—श्रीमती हेमंतकुमारी देवी भट्टाचार्य]

संसार में स्वास्थ्य-रक्षा से बढ़कर महत्त्व-पूर्ण और कोई कार्य नहीं। स्वास्थ्य-रक्षा ही जीवन का मूल-धन है। जिसने इसे खो दिया, वह धनसंपन्न होने पर भी दरिद्र है। इस पुस्तक में स्वास्थ्य रक्षा-संबंधी सभी बातों का वर्णन बड़े अच्छे ढंग से किया गया है। मू० ॥=)

गधे की कहानी

[लेखक—पं० भूपनारायणजी दीक्षित]

यह पुस्तक बाल-साहित्य के एक मुख्य अंग की पूर्ति करती है। गधे ने अपनी कथा बड़े रोचक और मनोरंजक ढंग से कही है। बड़ी ही सरस और सीधी भाषा में मानो समाज की आलोचना की गई है। देखने ही योग्य है। अनेक सुंदर चित्र। पुस्तक का मूल्य लगभग ॥), रेशमी जिल्द १)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, २९-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

सुप्रसिद्ध
गंगा-पुस्तकमाला, लखनऊ
की
शीघ्र प्रकाशित होनेवाली उत्तमोत्तम पुस्तकें

संक्षिप्त शरीर-विज्ञान

संसार में स्वास्थ्य और शरीर की रक्षा से बढ़कर और कुछ भी महत्त्व-पूर्ण नहीं है। स्वास्थ्य-रक्षा ही जीवन का मूल-धन है। स्वास्थ्य बिगड़ जाने से लौकिक सुख दुर्लभ हो जाते हैं। शारीरिक सुख तो स्वास्थ्य-रक्षा ही पर पूर्ण रूप से निर्भर है। जिसका स्वास्थ्य ठीक नहीं, वह सब तरह से संपन्न होकर भी दरिद्र और दुखी है। किंतु शरीर की भीतरी बातें जाने विना स्वास्थ्य की रक्षा नहीं हो सकती। प्रत्येक अवयव की अंदरूनी हालत जानने से स्वास्थ्य-रक्षा में बड़ी सुविधा और सुगमता होती है। इस पुस्तक में मानव-शरीर के प्रत्येक अंग की बनावट और उसकी आंतरिक अवस्था का सूक्ष्म विवेचन बड़ी अनुभवशीलता और सरलता से किया गया है। संसार में सुख की इच्छा रखनेवाले प्रत्येक व्यक्ति को शारीरिक शास्त्र से परिचित होना चाहिए। यह पुस्तक शारीरिक शास्त्र का सार-गर्भ निचोड़ और सर्वोपयोगी है। बड़ी सुंदरता से छप रही है। मूल्य लगभग ॥=), सुनहरी रेशमी जिल्द १=)

कौशल-हिंदी-शिक्षक

लेखक, श्रीयुत रामस्वरूप कौशल एम्० ए०, एम्० आर० ए० एस, विद्या-भूषण। यह पुस्तक हिंदी में अपने ढंग की बिलकुल निराली है ऐसी अप-टु-डेट और विचार-पूर्ण मौलिक पुस्तक अभी तक हिंदी में लिखी ही नहीं गई। छप रही हैं। अँगरेज़ी द्वारा हिंदी सीखनेवालों के लिये अमूल्य पुस्तक है। मूल्य लगभग ॥), सजिल्द १)

वरमाला

[लेखक—श्रीयुत गोविंदवल्लभ पंत]

मार्कंडेयपुराण से कथानक लेकर इस संयोगांत नाटक की रचना की गई है। संयोगांत कथानक की नायिका जिसे प्यार करती है, उसी को प्राप्त करती है। "ऋषिकन्या" होने पर भी शकुंतला ने दुष्यंत को प्राप्त किया, "मृत पिता की इच्छा में जीवित कन्या की आशा-बंदी" होने पर भी पोर्शिया का विवाह वैसेनियो के साथ हुआ। किंतु इस नाटक की नायिका जिसे नहीं चाहती, उसके गले में वरमाला डालती है—ऐश्वर्य के लिये नहीं, राजमुकुट के लिये नहीं, गुरुजनों की मान-रक्षा के लिये नहीं—विना किसी के दबाव के स्वेच्छा से वैशालिनी 'घृणा' को प्यार करती है। क्या मनोविज्ञान इसे स्वीकार करता है? लेखक ने किस प्रकार घृणा को प्रेम में बदला है—भयावनी रात्रि में किस प्रकार वसंत-प्रभात की छटा दिखाई है, देखने के योग्य है। वरमाला सार-अलंकार (Climax) के फूलों से गुँथी हुई है, मुरझाने का डर नहीं। बड़ी आसानी से रंगमंच पर खेला जा सकता है। पात्रों की भरमार नहीं है, सब मिलाकर केवल ५-६ पात्र हैं। चतुर पात्र के लिये स्थान-स्थान पर कृति (Business) प्रकट करने के लिये काफ़ी गुंजाइश है। गीतों में काव्य और संगीत का मिलन है, अंत में स्वरलिपि भी दे दी गई है। छपाई-सफ़ाई सुंदर। चार रंगीन चित्र भी हैं। मूल्य ॥।), सुनहरी रेशमी जिल्द १)

दुर्गावती

इस वीर-रस-पूर्ण ऐतिहासिक नाटक के लेखक हैं लखनऊ-युनिवर्सिटी के हिंदी-लेक्चरार पं० बदरीनाथ भट्ट बी० ए०। यह गद्य-पद्यमय मौलिक नाटक बड़ा ही मनोरंजक, विनोद-पूर्ण, शिक्षाप्रद और भावमय है। कहीं वीरता के ओजस्वी वर्णन से आपका रोम-रोम फड़क उठेगा, और कहीं साहित्यिक विनोद से आप खिलखिला उठेंगे। पुस्तक बड़ा सजावट से छप रही है। कई रंगीन चित्रों से युक्त पुस्तक का मूल्य लगभग १)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, २९-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

अभी अचूक अवसर !

विज्ञापन-दाताओं के लिये अभी भारी रियायत ! अच्छी किफ़ायत !!

आगे रेट बढ़ा दिए जायँगे !!

फिर रेट बढ़ जायँगे !

आज हिंदी-संसार के छोटे-से शिक्षित बालक से लेकर बड़े-बूढ़े तक—क्या श्रमजीवी, क्या राजे-महाराजे— सभी यह कहने को तैयार हैं कि **माधुरी** के जोड़ का हिंदी में कोई मासिक पत्रिका नहीं है। इसीलिये इसकी **ग्राहक-संख्या** बहुत शीघ्र बढ़ी है, और बढ़ रही है। लोगों की बढ़ी हुई माँग पूरी करने के लिये आगे से हमें **माधुरी** की

१२,००० की जगह १५,००० प्रतियाँ

छापनी पड़ेंगी। विज्ञापन-दाताओं को तो इससे इतना लाभ हुआ है कि जिसका ठिकाना नहीं। इसका सबसे बढ़िया सबूत हमारे पास यह है कि जितना स्थान पहले १५०) साल पर उठा था, उतना ही अब वे ही लोग ५००) देकर आगे के लिये रिज़र्व करा रहे हैं—जिन लोगों ने इम्तिहानन् अपना विज्ञापन ४-६ मास के लिये छपवाया था, वे ही अब चार-चार सफ़े साल-भर के लिये रिज़र्व कराकर छपा रहे हैं, और आठ-आठ सफ़े तक लेने को तैयार हैं। जिन्होंने प्रथम साहस करके ६ मास भी लगातार माधुरी में अपना विज्ञापन छपवाया है उनको मालूम हो गया है कि माधुरी में विज्ञापन छपवाने से कितना लाभ होता है? यही कारण है कि जितना विज्ञापन माधुरी में छपता है उतना अन्य किसी पत्र-पत्रिका में नहीं छपता और सिफ़त यह है कि सभी स्थायी होता है। माधुरी में सबसे अधिक विज्ञापन का प्रतिमास छपना भी, इससे फ़ायदा होने का भारी प्रमाण है।

अतः विज्ञापन-दाताओं के लिये अभी यह **अचूक अवसर** है कि अपना विज्ञापन भेजकर स्थान तय कर लें। अभी हम उनका विज्ञापन, किसी निश्चित समय के लिये, वर्तमान रेट पर ही लेंगे। आगे तय करनेवालों से नवीन रेट चार्ज किए जायँगे।

जो पुराने विज्ञापन-दाता हैं, जिनका निश्चित समय खतम हो रहा है या दो-एक मास में हो जायगा, उन्हें भी चाहिए कि आगे के लिये अभी से जगह रिज़र्व करा लें। अन्यथा रेट बढ़ जाने पर हम किसी तरह की रियायत न कर सकेंगे।

रेट दूसरे सफ़े पर देखिए।

निवेदक—

मैनेजर माधुरी, लखनऊ

माधुरी के विज्ञापन-रेट आगे बढ़ जायँगे!

इसी से अभी तय कर लीजिए!!

रेट जो अभी हैं—

साधारण पूरा	पेज	२५)	प्रति बार
,, १/२	,,	१०)	,, ,,
,, १/४	,,	८)	,, ,,
,, १/८	,,	५)	,, ,,
कवर का दूसरा	,,	४५)	,, ,,
,, ,, तीसरा	,,	४०)	,, ,,
,, ,, चौथा	,,	५५)	,, ,,
दूसरे कवर के बाद का	,,	३५)	,, ,,
प्रिंटिंग मैटर के पहले का	,,	३५)	,, ,,
,, ,, बाद का	,,	३५)	,, ,,
लेख-सूची के नीचे आधा	,,	२०)	,, ,,
,, ,, चौथाई	,,	१२)	,, ,,
प्रिंटिंग मैटर में आधा	,,	३०)	,, ,,

रेट जो हो जायँगे—

साधारण पूरा	पेज	३०)	प्रति बार
,, १/२	,,	१६)	,, ,,
,, १/४	,,	१०)	,, ,,
,, १/८	,,	६)	,, ,,
कवर का दूसरा	,,	५०)	,, ,,
,, ,, तीसरा	,,	४५)	,, ,,
,, ,, चौथा	,,	६०)	,, ,,
दूसरे कवर के बाद का	,,	४०)	,, ,,
प्रिंटिंग मैटर के पहले का	,,	४०)	,, ,,
,, ,, बाद का	,,	४०)	,, ,,
लेख-सूची के नीचे आधा	,,	२४)	,, ,,
,, ,, ,, चौथाई	,,	१५)	,, ,,
प्रिंटिंग मैटर में आधा	,,	३५)	,, ,,

अभी रेट कम हैं। अतः विज्ञापन-दाताओं को चाहिए कि अपने विज्ञापन का हमसे कंट्रैक्ट कर लें। अन्यथा पीछे पछताना पड़ेगा। इसके लिये पत्र-व्यवहार करनेवालों के ध्यान देने योग्य बातें—

(१) विज्ञापन पत्र के साथ ही भेजें।

(२) यह भी साफ़-साफ़ लिखें कि विज्ञापन किस स्थान पर और कितने समय के लिये छपवाना चाहते हैं। जो स्थान अभी खाली नहीं हैं उनके सामने * निशान लगा दिया गया है। उनके लिये कृपा कर पत्र-व्यवहार न करें।

(३) विज्ञापन अश्लील न होना चाहिए।

(४) चौथाई पेज से कम विज्ञापन छपानेवालों को माधुरी मुफ़्त नहीं मिलेगी।

(५) साल-भर का या किसी निश्चित समय का ठेका तभी पक्का समझा जायगा, जब कम-से-कम तीन मास की विज्ञापन-छपाई पेशगी जमा कर दी जायगी, और बाक़ी भी निश्चित समय पर अदा कर दी जायगी। अन्यथा कंट्रैक्ट पक्का न समझा जायगा।

ख़ास रियायत

साल-भर के कंट्रैक्ट पर तीन मास की पेशगी छपाई देने से ६।) फ़ी सदी, ६ मास की देने से १२॥) और साल-भर की पूरी छपाई देने से २५) फ़ी सदी उपरोक्त रेट में कमी कर दी जायगी।

आशा है, इस अवसर से विज्ञापन-दाता महाशय अवश्य लाभ उठाएँगे।

निवेदक—

मैनेजर माधुरी, लखनऊ

छप गया ! छप गया !! छप गया !!!

साहित्य-परिचय

साहित्य—काव्य के सभी अंगों जैसे—रस, अलंकार, ध्वनि, छंद नायिकाभेद आदि का संक्षिप्त में परिचय करानेवाली हिंदी में अपने ढंग की बिलकुल नई पुस्तक। उदाहरणों में प्रसिद्ध-प्रसिद्ध कवियों की ऐसी-ऐसी बढ़िया और चुनी हुई कविताएँ दी गई हैं कि पढ़कर तबियत फड़क उठती है। यह पुस्तक काव्य-प्रेमियों, विद्यार्थियों और सर्वसाधारण, सभी के लिये एक-सी उपयोगी है। मूल्य १)

हिंदी के आचार्य और दिग्गज विद्वान्

पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी

का पत्र, लेखक के नाम—

“जुहीकलाँ, कानपुर ता० १८-११-२४

……आज आपकी पुस्तक 'साहित्य-परिचय' की सैर की। उससे अत्यानंद हुआ।……आपने कवि बनने के इच्छा रखनेवालों के लिये थोड़े में साहित्य-शास्त्र की सभी बातें बड़ी योग्यता से इसमें लिख दी हैं। प्राचीनों की सिर्फ़ नक़ल ही आपने नहीं की। अपनी तरफ़ से भी शुरू में बहुत कुछ लिखा है। आपके वे सभी विचार मुझे समीचीन ज्ञात हुए। उदाहरण जो आपने दिए हैं, वे बड़े सुंदर हैं। **पुस्तक महत्व की है। बड़े काम की है।** आपकी साहित्यज्ञता की द्योतक भी है।

निवेदक—

महावीरप्रसाद द्विवेदी”

और भी बहुत-से विद्वानों और समाचारपत्रों ने इस पुस्तक की मुक्तकंठ से प्रशंसा की है।

निम्न-लिखित पुस्तकें भी हमारे यहाँ से प्रकाशित हुई हैं—

सुदर्शन-चरित्र—(ब्रह्मचर्य का अद्वितीय आदर्श) रंग-बिरंगे १२ चित्रों से सुसज्जित। मू० १॥)
सुनहरी रेशमी जिल्द-सहित २)

धूर्ताख्यान—इसमें पौराणिक गाथाओं की **असंभवता** बड़ी ही अद्भुत रीति से सिद्ध की गई है। मू० ॥)

वीरांगना वीरा—खड़ी बोली के पद्यों में एक राजपूत रमणी की अद्भुत वीरतापूर्ण ऐतिहासिक कहानी। मूल्य० ॥)

मिलने का पता—ओसवाल-प्रेस, १६ सीनागोग स्ट्रीट, कलकत्ता।

नोट—उपर्युक्त पुस्तकें गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय, अमीनाबाद पार्क, लखनऊ के पते से भी मिल सकता है।

THE
BISHNU
HAIR OIL
Patronised by Princes, Noblemen and the High Class
THE 'BISHNU' HAIR OIL.
Price Re. 1 Per Bottle
MANUFACTURED BY
THE GAEKWAR
OIL & CHEMICAL
CO. LTD.
BOMBAY BARODA
MORAR GWALIOR

स्त्री-सौंदर्य का सर्वोत्तम मार्ग

"विष्णु-तैल"

यह "विष्णु-तैल" ख़ालिस तिल के तैल से पवित्र और देशी औषधियों तथा जड़ी-बूटियों द्वारा वैद्यक-शास्त्र के मतानुकूल अति स्वच्छता से बनाया गया है।

इसको नित्य व्यवहार करने से यह गिरते हुए बालों को रोककर उनको स्याह, लंबे और रेशम की तरह मुलायम बना देता है और दिमाग़ की गरमी को दूर करके उसको तरोताज़ा रखता है। यह विद्यार्थियों तथा दिमाग़ी परिश्रम करनेवालों को अत्यंत लाभदायक है। क्योंकि यह दिमाग़ को तर रखके स्मरणशक्ति को बढ़ाता है। इसकी सुगंधि भी अत्यंत चित्ताकर्षक है। स्त्री-सौंदर्य बढ़ाने का यह अत्युत्तम उपाय है। एक बार अवश्य परीक्षा कीजिए। अनेक सज्जनों ने इसकी मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। मूल्य फ़ी शीशी १) डाक-व्यय ।≈), ३ शीशी का २।।), डाक-व्यय ।।-) ६२३

एजेंट्स—एन्० पुरुषोत्तम ऐंड कंपनी, मुरार (गवालियर)

22-CT. ROLLED GOLD WRIST WATCHES.

This is a very new style watch fitted with high grade Swiss mechanism, Glass crystal lined, figures Arabic or Roman. Its design, and finish will satisfy the most critical test. And an appearance equal to sovereign gold, very charming to look at and perfect time-keeper. Guaranteed for 5 years, Rs. 12/8.

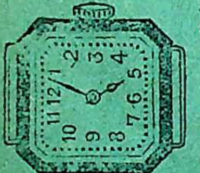
1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11
12

18-Carat Rolled gold wrist watch, Rs. 7.

American "Big Ben" Clock with repeater and alarm Rs. 10/8.

Baby Timepiece with hour and half hour strike Rs. 7.

Baby Timepiece with hour and half hour strike and alarm Rs. 8, Guaranteed for three years.

German Alarm Timepiece, Rs. 5. Negro Rs. 5, and Double Bell Rs. 6. World-famed "B" Timepiece, Rs. 2/8.

"Emden" Fountain Pen, 14-Carat Rolled Gold Nib, Rs. 2/8.

Write to—V. S. WATCH Co.,

Post Box 105. MADRAS

थोड़ी-सी मेहनत में और

सिर्फ़ आठ आने में

खूबसूरत रिस्टवाच या अलार्म टाइमपीस, स्वान फ़ाउनटेन पेन, व्हैलेट या जिलेट सेफ़्टीरेज़र, चाँदी का पानी पीने का ग्लास, हिंक्स का टेबललैंप या उम्दा कानपुर लेदर शू इनमें से कोई भी एक चीज़ कमाना होवे तो अपना पूरा नाम और पता मय आठ आने के डाक के टिकटके नीचे दिए हुए पते से भेज कर खुलासा मँगवाइए।

दि होमस्टोअर्स
६३ तोपख़ाना, इंदौर
(सी० आई०)

६२५

कृषि-शास्त्र

यदि आपने नहीं पढ़ा है, तो आपका ज़मींदार अथवा कृषक होना व्यर्थ है। ४००) लाट साहब ने इसी पुस्तकपर भेंट चढ़ाए। तृतीय संस्करण। मूल्य २)

ग्रंथकर्ता—

प्रिंसिपल कोचक

मिलने का पता—

कृषि-शास्त्र-ऑफ़िस
बलीपुरा, बुलंदशहर

जल्दी कीजिए—

माधुरी
Rameshwar

[विविध विषय-विभूषित, साहित्य-संबंधी, सचित्र मासिक पत्रिका]

सिता, मधुर मधु, तिय-अधर, सुधा-माधुरी धन्य ;
पै यह साहित-माधुरी नव-रसमयी अनन्य !

वर्ष ३
खंड २

फाल्गुन-शुक्ल ७, ३०१ तुलसी-संवत् (१९८१ वि०)—
१ मार्च, १९२५ ई०

संख्या २
पूर्ण संख्या ३२

मृग-तृष्णा

मृग-तृष्णा में मुझे फँसाया
नाहक़ तुमने मुझे अंध-सा इधर-उधर भटकाया ;
प्रबल मोह में मुझे फँसाकर थल में जल दिखलाया ।
आशा देकर निपट निराशा-नद में मुझे डुबाया ;
मेरे मानस में तुमने था ऐसा भ्रम उपजाया ।
छला जा रहा हूँ मैं, इसका मुझको ध्यान न आया ;
जहाँ-तहाँ दौड़ाकर मुझको तुमने व्यर्थ थकाया ।
मुझको दुख देकर, बतलाओ, क्या तुमने सुख पाया ;
तुमने मेरा गात कभी तो काँटों से छिदवाया ।
कभी गर्त में ही ले जाकर तुमने मुझे गिराया ;
मेरे साथ-साथ कोई था दौड़ रहा घबराया ।
मेरी ही छाया से तुमने यह धोखा दिलवाया ;
लाकर तुमने मुझे विपथ पर सीधा पथ भुलवाया ।
कहाँ जा रहा था, मैं तुमने कहाँ मुझे पहुँचाया ?
थककर मैं म्रियमाण हुआ हूँ, शिथिल हुई है काया ;
तो भी मेरी प्यास बुझाना तुम्हें न अब तक भाया !

गोपालशरणसिंह

भारतीय पुरातत्त्व में नई खोज

अब तक भारतीय पुरातत्त्व और इतिहास के विद्वानों में यह भ्रम फैला हुआ था कि मौर्य-काल (अथवा ईसा के पूर्व चौथी शताब्दी) के पहले का कोई भी पुरानी इमारत, शिलालेख, मूर्ति या सिक्के भारतवर्ष में नहीं पाए जाते; अर्थात् जो कुछ पुरानी चीज़ें मिलती हैं, वे बहुत करके अशोक या मौर्य-काल की ही हैं। एक दूसरा भ्रम यह भी फैला हुआ था कि आर्यों के आने के पहले यह देश जंगली और असभ्य-जातियों से बसा हुआ था। आर्यों ने ही इन अनार्य अथवा कोल और द्राविड़-जातियों को ग़ुलाम बनाकर सभ्यता सिखलाई। किंतु हाल में हरप्पा और मोहेंजोदारो में भारतीय पुरातत्त्व-विभाग ने जो खोज की है, उससे ये दोनों भ्रम हवा हो गए हैं। उसी खोज का हाल हम अपने पाठकों को यहाँ पर सुनाना चाहते हैं।

हरप्पा

हरप्पा-शब्द संस्कृत 'हरपद' का बिगड़ा हुआ रूप है। हरप्पा पंजाब के मांटगोमरी-ज़िले में एक छोटा-सा गाँव है। यहाँ नॉर्थ वेस्टर्न रेलवे की लाहौर-कराचीवाली लाइन पर एक छोटा स्टेशन भी है। यहाँ पर ७० फ़ीट से लेकर ८० फ़ीट ऊँचे ईंटों के बड़े-बड़े धुस्स और टीले हैं। सदियों से आसपास के गाँववाले इन टीलों को खोदकर ईंटें निकालते आ रहे हैं। जिस ज़माने में नॉर्थ वेस्टर्न रेलवे की लाइन बन रही थी, उस ज़माने में रेलवे के ठेकेदारों ने भी इनमें से बहुत-से टीलों को क़रीब-क़रीब बर्बाद कर दिया; और खोदकर वे हज़ारों छकड़े ईंटें वहाँ से ले गए। सन् १८४३ में प्रसिद्ध पुरातत्त्व-विशारद सर अलग्ज़ांडर कनिंघम साहब इस प्राचीन स्थान का निरीक्षण करने के लिये गए, और वहाँ उन्हें सफ़ेद पत्थर की कई विचित्र मोहरें मिलीं। इन मोहरों पर बिना कूबड़वाले बैल की एक तसवीर और कुछ लेख ऐसे अक्षरों में खुदे हुए हैं, जो अभी तक पढ़े नहीं गए। इन मोहरों के बारे में विशेष आगे लिखा जायगा। इस तरह की मोहरें वहाँ समय-समय पर मिलती रहती और मुलतान-शहर में अक्सर बिकने के लिये आती हैं। सन् १९१२ तक इस तरह की ३ मोहरें लंदन के ब्रिटिश-म्यूज़ियम में आ चुकी थीं, जिनके बारे में डॉक्टर फ़्लीट साहब ने १९१२ के "जर्नल ऑफ़् दि रॉयल एशियाटिक सोसाइटी" में एक लेख भी लिखा था।

हरप्पा में खुदाई

सन् १९२०-२१ में रायबहादुर पंडित दयाराम साहनी, सुपरिंटेंडेंट आर्कियोलाजिकल सर्वे नॉर्दर्न सर्किल लाहौर, ने हरप्पा में खुदाई शुरू की। इस खुदाई में उन्हें तीन नई मोहरें, कई विचित्र प्रकार की काँच की चूड़ियाँ और बहुत-से रंगीन मिट्टी के घड़े और बर्तन मिले। इसके बाद सन् १९२३-२४ में फिर साहनीजी ने खुदाई का काम शुरू किया। इस बार उन्हें और भी अधिक सफलता मिली। इस खुदाई में उन्हें नई क़िस्म की ग्यारह मोहरें, बहुत-से रंगीन और चित्र-खचित मिट्टी के बर्तन और हाथीदाँत की चीज़ें मिलीं। रेलवे के ठेकेदारों ने हरप्पा में ईंटों के लोभ से टीलों को प्रायः बर्बाद कर डाला था। इससे साहनीजी को वहाँ इमारतों के क्रम-बद्ध चिह्न नहीं मिले।

महेंजोदारो

सिंधी भाषा में 'महेंजोदारो' का अर्थ 'अँधेरा टीला' है। यह स्थान सिंध-प्रांत के लाकीना-ज़िले में सिंधु-नदी और नॉर्थ वेस्टर्न रेलवे की लाइन के बीच में है। यहाँ पर भी बहुत-से ऊँचे-ऊँचे टीले हैं। इन टीलों का महत्त्व पहलेपहल श्रीयुत राखालदास बनर्जी को विदित हुआ, जो उस समय आर्कियोलाजिकल सर्वे के वेस्टर्न सर्किल के अध्यक्ष थे, और सात वर्ष बंबई-प्रांत के पुरातत्त्व-विभाग में काम कर चुके थे। बनर्जी महाशय हर साल जाड़े की ऋतु सिंध-प्रांत के प्राचीन स्थानों की खोज में बिताते थे। उस समय तक सिंध-प्रांत में कोई भी ऐसा प्राचीन भग्नावशेष या चिह्न नहीं प्राप्त हुआ था, जो मुसलमानी ज़माने के पहले का रहा हो। सिंध में खोज करते हुए बनर्जी महोदय को १७ या १८ पाट सिंधु-नदी के मिले। पहले सिंधु-नदी का पाट एक जगह था, वहाँ से हटकर वह दूसरी जगह चला गया। इस तरह से बनर्जी महाशय ने सिंधु-नदी के १८ सूखे हुए पाट खोज निकाले। यहाँ उनको कम-से-कम २७ बड़े और ४३ छोटे शहरों के निशानात मिले। यहाँ की ऊपरी सतह पर जो सिक्के उन्हें मिले, उनसे उन्होंने यह नतीजा निकाला कि ये शहर ईसवी सन् की दूसरी शताब्दी के लगभग उजड़ गए होंगे। महेंजोदारो में खोज करते हुए उन्हें ऊपरी सतह पर बहुत-से पत्थर के चाकू और नए क़िस्म के मिट्टी के बर्तन मिले। सिंध में इस तरह के मिट्टी के बर्तन इससे पहले नहीं मिले थे। इसलिये बनर्जी महाशय ने महेंजोदारो में ही ऑक्टोबर, १८२२ में खुदाई करने का निश्चय किया।

महेंजोदारो में खुदाई

दिसंबर, १९२२ में श्रीयुत बनर्जी ने महेंजोदारो के खँडरातों की पैमाइश कराने का काम शुरू किया। पैमाइश हो जाने के बाद उन्होंने एक ऊँचे टीले की खुदाई कराने का निश्चय किया। ऐसा अनुमान किया जाता है कि यह टीला एक पुराने टापू पर स्थित है, जो पहले सिंधु-नदी के बीच में था। पैमाइश करने से पता लगा कि इस स्थान पर जो प्राचीन नगर था, वह कम-से-कम ७५० एकड़ ज़मीन के घेरे में रहा होगा। उसके खँडरात अब भी २०० एकड़ से ज़्यादह ज़मीन पर फैले हुए हैं। यह शहर तीन हिस्सों में बँटा हुआ था। सबसे

हिस्सा दक्षिण की ओर अथवा नदी के दाहने किनारे पर था। शहर के इस हिस्से से होकर ईंटों से जड़ी हुई एक चौड़ी और पक्की सड़क शहर के एक छोर से दूसरे छोर तक फैली हुई थी। यह सड़क एक राजमहल की ओर जाती थी। सिंधु-नदी के प्राचीन पाट में कई छोटे-बड़े टापू थे, जिन पर प्राचीन सिंध के निवासी मंदिर बनाया करते थे। यह प्रथा अब भी जारी है। जिस समय का ज़िक्र हम कर रहे हैं, उस समय इस तरह के पाँच छोटे-छोटे टापू मिलकर एक टापू हो गया था। इस टापू पर प्राचीन सिंधियों का प्रधान मंदिर था, जिसके भग्नावशेष से बना हुआ टीला अब भी और टीलों से ऊँचा है, और उसके प्राचीन गौरव और महत्त्व की सूचना देता है। इस टीले पर सबसे अर्वाचीन जो चीज़ मिली है, वह एक बौद्ध स्तूप है। यह स्तूप अनुमान से ईसवी सन् की दूसरी शताब्दी का होगा। इसकी दीवारों पर कुछ चित्रकारी और खरोष्ठी-अक्षरों में लेख भी हैं, जो ईसवी सन् की दूसरी शताब्दी के बाद के नहीं हैं। अतएव ये चित्र भारतीय चित्रकारी के सबसे प्राचीन नमूने हैं। इस स्तूप के नीचे राख की एक मोटी तह भी पाई गई, जिसमें संगमरमर की बनी हुई मूर्तियों के कुछ टुकड़े भी मिले। इससे यह साबित होता है कि यह बौद्ध स्तूप किसी प्राचीनतर मंदिर के नष्ट हो जाने पर उसी के भग्नावशेष पर बनाया गया था। राख की तह के नीचे एक घड़े में बिलकुल नई क़िस्म के २,००० से अधिक ताँबे के सिक्के पाए गए। ये सिक्के वे ही हैं, जो हमारे प्राचीन ग्रंथों में कार्षापण के नाम से लिखे गए हैं। पर आज तक ऐसे सिक्के कहीं भी नहीं पाए गए थे। इनमें से कुछ सिक्कों पर अग्निवेदी की तसवीर भी बनी हुई है।

संसार के सबसे पुराने सिक्के

ऊपर लिखे हुए सिक्के जिस सतह पर मिले थे, उसके नीचेवाली सतह पर कुछ नए प्रकार के मिट्टी के बर्तन मिले। ये बर्तन चमकदार और रंगीन हैं। इस तरह के बर्तन इससे पहले भारतवर्ष में कहीं भी नहीं पाए गए थे। इन बर्तनों के साथ ही एक बिलकुल नई क़िस्म के ताँबे के सिक्के भी मिले। ये सिक्के गोल नहीं, बल्कि चौखूँटे हैं। इनकी लंबाई चौड़ाई से कुछ अधिक है। ये दो क़िस्म के हैं, एक की लंबाई डेढ़ इंच और दूसरे की दो इंच है। इन दोनों क़िस्म के सिक्कों पर चित्र-लिपि में कुछ लेख खुदा हुआ है। यह लेख प्रायः वैसी ही लिपि में है, जैसी कि हरप्पा या महेंजोदारो में पाई गई मोहरों पर खुदी हुई मिलती है। चूँकि हरप्पा और महेंजोदारो में मिली हुई चीज़ें आज से ६,००० वर्ष की पुरानी मानी गई हैं, इसलिये ये सिक्के दुनिया के सबसे पुराने सिक्के कहे जा सकते हैं। इन सिक्कों का वज़न भी अब तक मिले हुए किसी दूसरे प्रकार के सिक्कों से नहीं मिलता। इन पर जैसे चिह्न खुदे हुए हैं, वैसे चिह्न ऊपर कही गई मोहरों पर भी मिलते हैं।

मुर्दा गाड़ने का रवाज

महेंजोदारो में बहुत-से ऐसे चिह्न भी मिले हैं, जिनसे यह साबित होता है कि उस ज़माने में मुर्दा गाड़ने की प्रथा भारतवर्ष में प्रचलित थी। यह प्रथा चार प्रकार की थी। एक प्रथा के अनुसार मुर्दे के लिये ज़मीन के अंदर ईंट की क़ब्र या समाधि बनाई जाती थी। इस तरह की एक समाधि महेंजोदारो में खोदकर निकाली गई। उस समाधि में मुर्दे का ढाँचा बिलकुल पूरा-पूरा मिला, यहाँ तक कि उसका चमड़ा और नसें भी अब तक सूखी हुई हालत में मौजूद हैं। उस समाधि में जिस हालत में मुर्दा पाया गया, उससे यह पता लगा है कि उस ज़माने में मुर्दे को क़ब्र में लिटाते नहीं, बल्कि बैठा देते थे। प्राचीन मेसोपोटेमिया और मिसर में भी मुर्दे को इसी तरह गाड़ते थे।

दूसरी प्रथा यह थी कि मुर्दे को पक्की मिट्टी की बनी हुई एक संदूक़ में रख देते थे, और ऊपर से उसे वैसी ही मिट्टी के ढकने से ढक देते थे। यह प्रथा बहुत ही प्राचीन है। इस प्रथा के चिह्न मदरास-प्रांत से लेकर सिंध, बलूचिस्तान और मेसोपोटेमिया तक पाए जाते हैं। मुर्दा गाड़ने के लिये इस तरह की पक्की मिट्टी की संदूक़ें मदरास-प्रांत के चिंगलपट, आर्कोट, कोइंबटूर, सेलम और मलाबार-ज़िलों में, सिंध में महेंजोदारो और ब्रह्मनाबाद में तथा बैबिलोन के गेहेरेह नामक स्थान में बहुत पाई गई हैं। महेंजोदारो में इस तरह की जो संदूक़ें मिली हैं, उनके अंदर मुर्दे के अलावा मिट्टी के बर्तन भी रक्खे हुए पाए गए हैं। ये बर्तन बहुत ही पतले, ख़ूबसूरत और उस ज़माने की कारीगरी के बड़े अच्छे नमूने हैं। उनमें से कई ऐसे रंग से रँगे हुए हैं, जो देखने में बहुत ही सुंदर मालूम होते हैं। इन बर्तनों

में मुर्दे के लिये चावल, जौ, गुड़, तेल, कपड़ा इत्यादि रक्खा जाता था। इन चीज़ों के साथ-ही-साथ वहाँ पत्थर के बने हुए चाकू, भाले वग़ैरह भी मिले। इस तरह के हथियार प्राचीन मिसर में भी समाधियों के अंदर मिले हैं।

तीसरी प्रथा के अनुसार बड़े भारी-भारी और गोल मिट्टी के घड़े या मटके, जैसे कि आजकल नाज या पानी रखने के लिये काम में लाए जाते हैं, समाधि के तौर पर काम में आते थे। इन बड़े घड़ों के अंदर भी छोटे-छोटे घड़े या सुराहियाँ रहती थीं। इन सुराहियों में मुर्दे की विना जली हड्डी रक्खी जाती थी। कुछ सुराहियों में मुर्दे की आत्मा के लिये खाने-पीने की चीज़ें रख दी जाती थीं।

ऊपर जो तीन प्रकार की प्रथाएँ लिखी गई हैं, वे उस ज़माने की हैं, जब कि भारतवर्ष में मुर्दा जलाने की प्रथा का प्रारंभ नहीं हुआ था। मुर्दा जलाने का रवाज आर्यों का है। इससे मालूम पड़ता है कि उस समय तक आर्य लोग भारतवर्ष में नहीं आए थे। महेंजोदारो में कुछ समाधियाँ ऐसी भी मिली हैं, जिनसे पता लगता है कि बाद को वहाँ मुर्दा जलाने की प्रथा भी शुरू हो गई थी। यह कदाचित् आर्यों के आने से हुआ हो। इस प्रथा के अनुसार मुर्दे की जली हुई राख घड़े के अंदर रखकर किसी समाधि में स्थापित कर दी जाती थी। इस तरह की तीन समाधियाँ महेंजोदारो में पाई गई हैं।

चित्र-लिपिवाली मोहरें

हरप्पा में जो मोहरें पहले निकल चुकी थीं, और जिनका ज़िक्र ऊपर आ चुका है, उन्हें कनिंघम साहब तथा अन्य विद्वानों ने आजकल की भारतीय लिपियों का सबसे प्राचीन रूप माना है। उनके मत में अशोक के शिलालेखों की ब्राह्मी-लिपि इन्हीं मोहरों पर खुदी हुई लिपि से निकली है। इस तरह की तीन मोहरें आजकल लंदन के ब्रिटिश-म्यूज़ियम में रक्खी हैं। बाद को दो और मोहरें सर जॉन मार्शल साहब को, अन्वेषण करते हुए, मिलीं। सन् १९२०-२१ की खुदाई में तीन मोहरें पंडित दयाराम साहनी को भी हरप्पा में प्राप्त हुईं। दिसंबर, १९२२ में तीन मोहरें श्रीयुत बनर्जी महाशय ने महेंजोदारो में खोज निकालीं। इसके पहले ये मोहरें सिर्फ़ हरप्पा में ही पाई गई थीं। सन् १९२३-२४ में और १३ मोहरें पंडित दयाराम साहनी को हरप्पा से और ७ मोहरें महेंजोदारो में पुरातत्त्व-विभाग के पंडित माधव-स्वरूप वत्स को मिलीं। इस तरह इन मोहरों की अब एक काफ़ी संख्या हो गई है, और उनसे कुछ-न-कुछ परिणाम निकाला जा सकता है। संभव है, आगे और भी इस तरह की मोहरें इन दोनों स्थानों से निकलें। अभी तक लोगों का यह अनुमान था कि ये मोहरें प्राचीन-तम ब्राह्मी लिपि में हैं; पर अब लोगों का अनुमान यह हो रहा है कि इन मोहरों की लिपि ब्राह्मी नहीं, बल्कि एक प्रकार की चित्र-लिपि है, जिसका प्रत्येक अक्षर किसी-न-किसी वस्तु या भाव का बोध कराता है। अस्तु, बैबिलोन (मेसोपोटेमिया) में भी इसी तरह की मोहरें, बहुत दिन हुए, निकल चुकी हैं। उनका समय विद्वानों ने ईसा के तीन-चार हज़ार वर्ष पूर्व निश्चित किया है। इस तरह से भारतवर्ष की यह चित्र-लिपि आज से प्रायः ६,००० वर्ष या उससे भी पहले की निश्चित होती है। इन मोहरों से यह भी सिद्ध होता है कि एक ज़माने में बैबिलोन और भारतवर्ष, दोनों में बड़ा घनिष्ठ संबंध था, और एक की सभ्यता का दूसरे की सभ्यता पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा था। भारतीय सभ्यता का प्रभाव बैबिलोनियन-सभ्यता पर पड़ा अथवा बैबिलोनियन-सभ्यता से भारतवर्ष की सभ्यता प्रभावित हुई, इस पर विचार आगे किया जायगा।

इस खोज का महत्त्व

हरप्पा तथा महेंजोदारो में श्रीयुत साहनी तथा बनर्जी की खोज का सचित्र वर्णन पुरातत्त्व-विभाग के सबसे बड़े ऑफ़िसर सर जॉन मार्शल ने विलायत के "इलस्ट्रेटेड लंदन-न्यूज़"-नामक पत्र के २० सितंबर, १९२४वाले अंक में छपवाया। मार्शल साहब के इस लेख ने विलायत के पुरातत्त्व-पंडितों में इस खोज के संबंध में बड़ी दिलचस्पी पैदा कर दी। कई विद्वानों का ध्यान इस ओर आकृष्ट हुआ। असीरियन पुरातत्त्व और इतिहास के प्रकांड पंडित प्रोफ़ेसर ए० एच्० सैस ने सर जॉन मार्शल के लेख को पढ़कर "इलस्ट्रेटेड लंदन न्यूज़" के २७ सितंबरवाले अंक में एक लेख लिखा, और उसमें इस बात की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित किया कि जो मोहरें और मिट्टी के बर्तन इत्यादि हरप्पा और महेंजोदारो में निकले हैं, वैसी ही मोहरें और बर्तन बैबिलोनिया में पहले निकल चुके हैं, इसलिये आज से पाँच हज़ार वर्ष

पहले हिंदुस्तान और बैबिलोन (मेसोपोटेमिया) के बीच अवश्य घनिष्ठ संबंध था। प्रोफ़ेसर सैस ने यह भी लिखा कि इस खोज से इतिहास में एक नए युग का प्रारंभ होता है, और भारतीय सभ्यता की प्राचीनता और उत्पत्ति के बारे में जो विचार हम लोगों के हैं, उसमें अवश्य इस खोज से बड़ा भारी परिवर्तन हो जायगा।

लंदन के ब्रिटिश-म्यूज़ियम में मिसर और असीरिया की पुरातत्त्व-संबंधी वस्तुओं का बड़ा अच्छा संग्रह है। उस विभाग के अध्यक्ष मिस्टर गैड और मिस्टर सिडनी स्मिथ ने भी इसी संबंध में, ४ ऑक्टोबर, १६२४ के "इलस्ट्रेटेड लंदन-न्यूज़" में एक सचित्र लेख छपवाया। बैबिलोनिया की सबसे प्राचीन सभ्यता 'सुमेरियन'-सभ्यता है। उसका समय ईसा के तीन हज़ार वर्ष पूर्व निर्द्धारित होता है। सुमेरियन-सभ्यता के समय की जो मोहरें, बर्तन, गहने, ईंटें वग़ैरह बैबिलोन में पाई गई हैं, उनके चित्र और हरप्पा तथा महेंजोदारो में जो मोहरें, बर्तन वग़ैरह पाए गए हैं, उनके चित्र साथ-साथ देकर मिस्टर गैड तथा मिस्टर सिडनी स्मिथ ने यह सिद्ध करने की चेष्टा अपने लेख में की है कि दोनों सभ्यताएँ एक ही समय की हैं। उक्त दोनों महाशयों ने हरप्पा और महेंजोदारो से मिली हुई मोहरों पर खुदे हुए अक्षरों में से कुछ अक्षर पहचानने की चेष्टा की है। वे अक्षर सुमेरियन-अक्षरों से बहुत कुछ मिलते-जुलते हैं। इस तरह से एक ही छलाँग में हम भारतवर्ष के इतिहास में ईसा के पूर्व ३०० वर्ष से ईसा के पूर्व ३,००० वर्ष पहुँच जाते हैं।

सुमेरियन-सभ्यता का उत्पत्ति-स्थान

अब यहाँ पर सवाल यह उठता है कि बैबिलोनिया की सुमेरियन-सभ्यता में और हरप्पा तथा महेंजोदारो से जिस भारतीय सभ्यता के चिह्न प्राप्त हुए हैं, उसमें, इतनी अधिक समता क्यों है? और, बैबिलोनियन(सुमेरियन)-सभ्यता का उत्पत्ति-स्थान भारतवर्ष है या नहीं? यह बात निर्विवाद है कि बैबिलोनिया और भारतवर्ष के बीच बहुत पुराना संबंध था। लोकमान्य तिलक ने भी अपने एक लेख में यह दिखलाया था कि सुमेरियन-भाषा में सर्पों के लिये जो कई नाम मिलते हैं, वे अथर्ववेद में भी पाए जाते हैं। सुमेरियन-भाषा में मलमल के लिये, जो हिंदुस्तान से बैबिलोन को जाती थी, सिंधु-शब्द आया है (Bhandarkar Commemoration Volume Poona 1917)। मिस्टर हाल-नामक विद्वान् ने भी अपनी "ऐंशियंट हिस्टरी ऑफ़ दि नियर ईस्ट"-नामक पुस्तक में यह सिद्ध करने की चेष्टा की है कि जिन समेरियन लोगों ने ईसा के ३,००० वर्ष पहले बैबिलोनिया में सभ्यता की नींव डाली, वे आदिम द्राविड़-जाति की एक शाखा थे, जो उस समय सिंधु नदी के किनारे बसते थे। हरप्पा और महेंजोदारो की खोज से हाल साहब के इस सिद्धांत की पुष्टि होती है। बैबिलोन के प्राचीन साहित्य और सभ्यता की बची-खुची चीज़ों से भी यह पता लगता है कि सुमेरियन-सभ्यता बैबिलोनियन-सभ्यता से बिलकुल अलग और उससे बहुत पुरानी है। बैबिलोनियन-सभ्यता पर इस सुमेरियन-सभ्यता का बहुत अधिक प्रभाव पड़ा था। यह सुमेरियन-सभ्यता कहीं बाहर से बैबिलोनिया में आई थी। ऐसा अनुमान है कि सुमेरियन लोग सिंधु-नदी के मुहाने से फ़ारस और फ़ारस की खाड़ी होते हुए बैबिलोन पहुँचे थे। कुछ लोग फ़ारस की खाड़ी से होकर समुद्र द्वारा गए, और कुछ लोग बलूचिस्तान तथा दक्खिनी फ़ारस होते हुए खुश्की के रास्ते से बैबिलोन पहुँचे थे।

अनार्य-सभ्यता की प्राचीनता

दूसरा सवाल यह उठता है कि यदि सुमेरियन लोग भारतवर्ष से बैबिलोन को गए, तो वे आर्य-जाति की शाखा थे अथवा अनार्य(द्राविड़)-जाति की? आर्य-जाति की शाखा तो वे हो ही नहीं सकते; क्योंकि उनमें मुर्दा गाड़ने की प्रथा थी, और आर्यों में कभी मुर्दा गाड़ने की प्रथा न थी। अतएव सुमेरियन लोग अवश्य द्राविड़ लोगों की शाखा थे, जो आर्यों के भारतवर्ष में आने के पहले सिंधु-नदी के तटस्थ स्थानों में फैले हुए थे। आर्यों ने आकर द्राविड़ों को वहाँ से दक्षिण की ओर मार भगाया। इसलिये द्राविड़ लोग आजकल केवल दक्षिण भारत में ही दिखाई पड़ते हैं। अब तक लोगों का यह विश्वास था कि आर्यों के आने के पहले भारतवर्ष असभ्य द्राविड़-जातियों का निवास-स्थान था; आर्यों ने ही आकर इन असभ्य अनार्यों को सभ्य बनाया। यही पाठ हम लोगों को सदा से सिखाया गया है। अनार्य लोगों की बड़ी हीन दशा का चित्र हमेशा हम लोगों के सामने रक्खा गया है। हमारे सामने जो कुछ भी साहित्य है, वह केवल आर्य-सभ्यता ही का। अनार्य-सभ्यता का

सारा-साहित्य तो समय की गति या आर्यों के बहुकालीन अत्याचार से लुप्त हो गया है। अनार्य-सभ्यता के चिह्न भी थोड़े-से पत्थर के अस्त्र-शस्त्र और मिट्टी के बर्तन वग़ैरह के अलावा अभी तक और कुछ भी नहीं मिले थे। समय के फेर से उस सभ्यता के अति प्राचीन चिह्न आज पुरातत्त्व-विभाग की कृपा से फिर हम लोगों के देखने में आ रहे हैं।

उपसंहार

संसार की सभ्यताओं में बैबिलोनिया की सभ्यता अत्यंत प्राचीन मानी गई है। ऐसा कहा जाता है कि आजकल की योरपियन-सभ्यता इसी बैबिलोनिया की सभ्यता से निकली है। पर सुमेरियन-सभ्यता बैबिलोनियन सभ्यता से भी पुरानी और उसकी जड़ जमानेवाली है। अब हरप्पा और महेंजोदारो की खुदाई से यह पता लगा है कि इस सुमेरियन-सभ्यता की जन्मदात्री भारतवर्ष की ही सभ्यता है। अतएव यह सिद्ध होता है कि भारतवर्ष ही संसार की सब सभ्यताओं का आदिगुरु है। हमें भय है कि यह पढ़कर हमारे प्राचीन सभ्यताभिमानी भाई अपनी प्राचीन सभ्यता के अभिमान में कदाचित् और भी फूल जायँ, और अपनी प्राचीनता का और भी घमंड करने लगें। पर उन्हें समझ लेना चाहिए कि जिस सभ्यता का ज़िक्र ऊपर किया गया है, वह उनके आर्य पुरखों की सभ्यता नहीं, बल्कि उन अनार्य लोगों की सभ्यता थी, जिन्हें आपके पूर्वजों ने ग़ुलाम बनाकर उनकी उक्त सभ्यता को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया है। ख़ैर, अगर यह मान भी लिया जाय कि अच्छा साहब, आपके ही पूर्व-पुरुष आर्यों ने बैबिलोनिया में सभ्यता का प्रचार किया, और वे समस्त संसार की सभ्यता के आदिगुरु हुए, तो इससे अभिमान करने के बजाय आपको शर्म से मुँह छिपाना चाहिए। एक आपके पुरखे थे, जिन्होंने समस्त संसार को सभ्यता सिखलाई; और एक आप हैं, जो ग़ुलाम बने हुए दुनिया-भर की जूती हो रहे हैं! एक आपके पूर्वज थे, जो समुद्र-पार जाकर देश-देशांतरों में अपनी सभ्यता का झंडा गाड़ते थे, और एक आप हैं, जो धर्म जाने के डर से विदेश जाना महापातक समझते हैं! एक आपके पूर्व-पुरुष थे, जो उसी बात को धर्म मानते थे, जिससे अपनी स्वतंत्रता, अपनी भलाई और अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा होती हो, और एक आप हैं, जो ज़रा-ज़रा-सी बात में—आने-जाने में, खाने-पीने में, उठने-बैठने में—'बेधरम' हो जाते हैं—आपका धर्म आपको छोड़कर भागने लगता है! मालूम नहीं, ऐसे भगोड़े धर्म को आप कब तक कसकर पकड़े रहेंगे! एक आपके पुरखे थे, जो दुनिया-भर को अपने में मिला लेना चाहते थे, और एक आप हैं, जो अपने बिछुड़े भाइयों को भी मिलाने में संकोच करते और धर्म की दोहाई देकर अपने ख़ून-मांस के भाइयों को भी अपने से अलग कर देते हैं। ये सब एक जीती-जागती जाति के लक्षण नहीं हैं। जो जाति जीवित और स्वतंत्र है, उसे ज़रा-ज़रा-सी बात में धर्म जाने का डर नहीं रहता, धर्म उसे पास नहीं सकता, छुआछूत का कोढ़ उसे अपाहिज नहीं बना सकता, जाति-पाँति का भेद उसे दुनिया की दूसरी जातियों के संपर्क से अलग नहीं रख सकता। ज़रा इतिहास पढ़िए, और देखिए, उससे क्या शिक्षा आपको मिलती है।

जनार्दन भट्ट

सभ्यता का रहस्य

(१)

यों तो मेरी समझ में दुनिया की ए हज़ार एक बातें नहीं आतीं—जैसे लोग प्रातःकाल उठते बालों पर छुरा क्यों चलाते हैं क्या अब पुरुषों में भी इतनी न कत आ गई है कि बालों का ब उनसे नहीं सँभलता? एक हो सभी पढ़े-लिखे आदमियों आँखें क्यों इतनी कमज़ोर हो गई हैं? दिमाग़ की क ज़ोरी ही इसका कारण है या और कुछ? लोग ख़िता के पीछे क्यों इतने हैरान होते हैं? इत्यादि—लेकिन इ समय मुझे इन बातों से मतलब नहीं। मेरे मन में एक न प्रश्न उठ रहा है, और उसका जवाब मुझे कोई नहीं देता प्रश्न यह है कि सभ्य कौन है, और असभ्य कौन? सभ्य के लक्षण क्या हैं? सरसरी नज़र से देखिए, तो इससे ज़्या आसान और कोई सवाल ही न होगा। बच्चा-बच्चा इस समाधान कर सकता है। लेकिन ज़रा ग़ौर से देखिए, तो प्रश्न इतना आसान नहीं जान पड़ता। अगर कोट-पतलू पहनना, टाई-हैट-कालर लगाना, मेज़ पर बैठकर खा

खाना, दिन में तेरह बार कोको या चाय पीना और सिगार पीते हुए चलना सभ्यता है, तो उन गोरों को भी सभ्य कहना पड़ेगा, जो सड़क पर शाम को कभी-कभी टहलते नज़र आते हैं; शराब के नशे से आँखें सुर्ख़, पैर लड़खड़ाते हुए, रास्ता चलनेवालों को अनायास छेड़ने की धुन ! क्या उन गोरों को सभ्य कहा जा सकता है ? कभी नहीं। तो यह सिद्ध हुआ कि सभ्यता कोई और ही चीज़ है ; उसका देह से इतना संबंध नहीं है, जितना मन से ।

(२)

मेरे इने-गिने मित्रों में एक राय रतनकिशोर भी हैं। आप बहुत ही सहृदय, बहुत ही उदार, बहुत अधिक शिक्षित और एक बड़े ओहदेदार हैं। बहुत अच्छा वेतन पाने पर भी उनकी आमदनी ख़र्च के लिये काफ़ी नहीं होती। एक-चौथाई वेतन तो बँगले ही की भेंट हो जाता है। इसलिये आप बहुधा चिंतित रहते हैं। रिशवत तो नहीं लेते—कम-से-कम मैं नहीं जानता ; हालाँकि कहनेवाले कहते हैं—लेकिन इतना जानता हूँ कि वह भत्ता बढ़ाने के लिये दौरे पर बहुत रहते हैं, यहाँ तक कि इसके लिये हर साल बजट की किसी दूसरी मद से रुपए निकालने पड़ते हैं। उनके अफ़सर कहते हैं, इतने दौरे क्यों करते हो, तो जवाब देते हैं, इस ज़िले का काम ही ऐसा है कि जब तक ख़ूब दौरे न किए जायँ, रिआया शांत नहीं रह सकती। लेकिन मज़ा तो यह है कि राय साहब उतने दौरे वास्तव में नहीं करते, जितने कि अपने रोज़नामचे में लिखते हैं। उनका पड़ाव शहर से ८० मील पर होता है। ख़ेमे वहाँ गड़े रहते हैं, कैंप के अमले वहाँ पड़े रहते हैं, और राय साहब घर पर मित्रों के साथ ग़प-शप करते रहते हैं, पर किसकी मजाल है कि राय साहब की नेकनीयती पर संदेह कर सके ! उनके सभ्य पुरुष होने में किसी को शंका नहीं हो सकती ।

एक दिन मैं उनसे मिलने गया। उस समय वह अपने घसियारे दमड़ी को डाँट रहे थे । दमड़ी रात-दिन का नौकर था ; लेकिन घर रोटी खाने जाया करता था। उसका घर थोड़ी ही दूर पर एक गाँव में था। कल रात को किसी कारण से यहाँ न आ सका था। इसीलिये डाँट पड़ रही थी।

राय सा०—"जब हम तुम्हें रात-दिन के लिये रक्खे हुए हैं, तो तुम घर पर क्यों रहे ? कल के पैसे कट जायँगे।"

दमड़ी—"हजूर, एक मेहमान आ गए थे, इसी से न आ सका।"

राय सा०—"तो कल के पैसे उसी मेहमान से लो।"

दमड़ी—"सरकार अब कभी ऐसी खता न होगी।"

राय सा०—"बक-बक मत करो।"

दमड़ी—"हजूर……"

राय सा०—"दो रुपए जुरमाना !"

दमड़ी रोता हुआ चला गया। रोज़ा बख़्शवाने आया था, नमाज़ गले पड़ गई। २) जुरमाना ठुक गया। ख़ता यही थी कि बेचारा क़सूर माफ़ कराना चाहता था।

यह एक रात को ग़ैरहाज़िर होने की सज़ा थी ! बेचारा दिन-भर का काम कर चुका था, रात को यहाँ सोया न था, उसका यह दंड ! और घर-बैठे भत्ते उड़ानेवालों को कोई नहीं पूछता ? कोई दंड नहीं देता ? दंड तो मिले, और ऐसा मिले कि ज़िंदगी-भर याद रहे ; पर पकड़ना तो मुश्किल है। दमड़ी भी अगर होशियार होता, तो ज़रा रात-रहे आकर कोठरी में सो जाता। फिर किसे ख़बर होती कि वह रात को कहाँ रहा। पर ग़रीब इतना चंट न था।

(३)

दमड़ी के पास कुल छः बिस्वे ज़मीन थी । पर इतने ही प्राणियों का ख़र्च भी था। उसके दो लड़के, दो लड़कियाँ और स्त्री, सब खेती में लगे रहते थे, फिर भी पेट की रोटियाँ नहीं मयस्सर होती थीं। इतनी ज़मीन क्या सोना उगल देती ! अगर सब-के-सब घर से निकलकर मज़दूरी करने लगते, तो आराम से रह सकते थे; लेकिन मौरूसी किसान मज़दूर कहलाने का अपमान न सह सकता था। इस बदनामी से बचने के लिये दो बैल बाँध रक्खे थे। उसके वेतन का बड़ा भाग बैलों के दाने-चारे ही में उड़ जाता था। ये सारी तकलीफ़ें मंज़ूर थीं, पर खेती छोड़कर मज़दूर बन जाना मंज़ूर न था। किसान की जो प्रतिष्ठा है, वह कहीं मज़दूर की हो सकती है, चाहे वह रुपया-रोज़ ही क्यों न कमाय ? किसानी के साथ मज़दूरी करना इतने अपमान की बात नहीं, द्वार पर बँधे हुए बैल उसकी मान-रक्षा किया करते हैं, पर बैलों को बेचकर फिर कहाँ मुँह दिखलाने की जगह रह सकती है !

एक दिन राय साहब उसे सरदी से काँपते देखकर बोले—"कपड़े क्यों नहीं बनवाता, काँप क्यों रहा है ?"

दमड़ी—"सरकार पेट की रोटी तो पूरी ही नहीं पड़ती; कपड़े कहाँ से बनवाऊँ?"

राय सा०—"बैलों को बेच क्यों नहीं डालता? सैकड़ों बार समझा चुका, लेकिन न-जाने क्यों इतनी मोटी-सी बात तेरी समझ में नहीं आती।"

दमड़ी—"सरकार, बिरादरी में कहीं मुँह दिखाने लायक न रहूँगा। लड़कों की सगाई न होने पावेगी; टाट बाहर कर दिया जाऊँगा।"

राय सा०—"इन्हीं हिमाक़तों से तो तुम लोगों की यह दुर्गति हो रही है। ऐसे आदमियों पर दया करना भी पाप है। (मेरी तरफ़ फिरकर) क्यों मुंशीजी, इस पागलपन का भी कोई इलाज है? जाड़ों मर रहे हैं, पर दरवाज़े पर बैल ज़रूर बाँधेंगे।"

मैंने कहा—"जनाब, यह तो अपनी-अपनी समझ है।"

राय सा०—"ऐसी समझ को दूर से सलाम कीजिए। मेरे यहाँ कई पुश्तों से जन्माष्टमी का उत्सव मनाया जाता था। कई हज़ार रुपयों पर पानी फिर जाता था। गाना होता था, दावतें होती थीं, रिश्तेदारों को न्योते दिए जाते थे, ग़रीबों को कपड़े बाँटे जाते थे। वालिद साहब के बाद पहले ही साल मैंने उत्सव बंद कर दिया। फ़ायदा क्या? मुफ़्त में चार-पाँच हज़ार की चपत पड़ती थी। सारे क़स्बे में वावेला मचा, आवाज़े कसे गए; किसी ने नास्तिक कहा, किसी ने ईसाई बनाया; लेकिन यहाँ इन बातों की क्या परवा! आख़िर थोड़े दिनों में सारा कोलाहल शांत हो गया। अजी बड़ी दिल्लगी थी! क़स्बे में किसी के यहाँ शादी हो, लकड़ी मुझसे ले! पुश्तों से यह रस्म चली आती थी। वालिद तो दूसरों से दरख़्त मोल लेकर इस रस्म को निभाते थे। थी हिमाक़त या नहीं? मैंने फ़ौरन् लकड़ी देना बंद कर दिया। इस पर भी लोग बहुत रोए-धोए, लेकिन दूसरों का रोना-धोना सुनूँ, या अपना फ़ायदा देखूँ! लकड़ी से ही कम-से-कम ५००) सालाना की बचत हो गई। अब कोई भूलकर भी इन चीज़ों के लिये मुझे दिक़ करने नहीं आता।"

मेरे दिल में फिर सवाल पैदा हुआ, दोनों में कौन सभ्य है, कुल-प्रतिष्ठा पर प्राण देनेवाला मूर्ख दमड़ी, या धन पर कुल-मर्यादा को वार देनेवाले राय रतनकिशोर?

(४)

राय साहब के इजलास में एक बड़े मार्के का मुक़दमा पेश था। शहर का एक रईस ख़ून के मामले में फँस गया था। उसकी ज़मानत लेने के लिये राय साहब की ख़ुशामदें होने लगीं। इज़्ज़त की बात थी। रईस साहब का हुक्म था कि चाहे रियासत बिक जाय, पर इस मुक़दमे से बेदाग़ निकल जाऊँ। डालियाँ लगाई गईं, सिफ़ारिशें पहुँचाई गईं; पर राय साहब पर कोई असर न हुआ। रईस के आदमियों को प्रत्यक्ष रूप से रिशवत की चर्चा करने की हिम्मत न पड़ती थी। आख़िर जब कोई बस न चला, तो रईस की स्त्री ने राय साहब की स्त्री से मिलकर सौदा पटाने की ठानी।

रात के १० बजे थे। दोनों महिलाओं में बातें होने लगीं। २० हज़ार की बातचीत थी। राय साहब की पत्नी तो इतनी ख़ुश हुईं कि उसी वक़्त राय साहब के पास दौड़ी हुई आईं, और कहने लगीं—"ले लो! ले लो! तुम न लोगे, तो मैं ले लूँगी।"

राय साहब ने कहा—"इतनी बेसब्र न हो। वह तुम्हें अपने दिल में क्या समझेंगी? कुछ अपनी इज़्ज़त का ख़याल भी है या नहीं? माना कि रक़म बड़ी है, और इससे मैं एकबारगी तुम्हारी आए-दिन की फ़रमायशों से मुक्त हो जाऊँगा; लेकिन एक सिविलियन की इज़्ज़त भी तो कोई मामूली चीज़ नहीं है। तुम्हें पहले बिगड़कर कहना चाहिए था कि मुझसे ऐसी बेहूदा बातचीत करनी हो, तो यहाँ से चली जाओ। मैं अपने कानों से नहीं सुन चाहती।"

स्त्री—"यह तो मैंने पहले ही किया, बिगड़कर खू खरी-खोटी सुनाईं। क्या इतना भी नहीं जानती? बेचा मेरे पैरों पर सिर रखकर रोने लगी।"

राय सा०—"यह कहा था कि राय साहबसे कहूँगी, तो मुझे कच्चा ही चबा जायँगे?" यह कहते हुए राय साहब ने गद्गद होकर पत्नी को गले लगा लिया।

स्त्री—"अजी, मैं न-जाने ऐसी कितनी ही बातें कह चुकी, लेकिन किसी तरह टाले नहीं टलती। रो-रोकर जान दे रही है।"

राय सा०—"उससे वादा तो नहीं कर लिया?"

स्त्री—"वादा? मैं तो रुपए लेकर संदूक़ में रख आई। नोट थे।"

राय सा०—"कितनी ज़बरदस्त अहमक़ हो, न-मालूम ईश्वर तुम्हें कभी समझ भी देगा, या नहीं।"

स्त्री—"अब क्या देगा, देना होता, तो दे न दी होती।"

राय सा०—"हाँ, मालूम तो ऐसा ही होता है। मुझसे कहा तक नहीं, और रुपए लेकर संदूक़ में दाख़िल कर लिए! अगर किसी तरह बात खुल जाय, तो कहीं का न रहूँ।"

स्त्री—"तो भई सोच लो। अगर कुछ गड़बड़ हो, तो मैं जाकर रुपए लौटा दूँ। संदूक़ में रख लेने से थोड़े ही गुनाहगार हो जाऊँगी।"

राय सा०—"फिर वही हिमाक़त! अरे, अब तो जो कुछ होना था, हो चुका। ईश्वर पर भरोसा करके ज़मानत लेनी पड़ेगी। लेकिन तुम्हारी हिमाक़त में शक नहीं। जानती हो, यह साँप के मुँह में उँगली डालना है; यह भी जानती हो कि मुझे ऐसी बातों से कितनी नफ़रत है, फिर भी बेसब्र हो जाती हो। अब की बार तुम्हारी हिमाक़त से मेरा व्रत टूट रहा है। मैंने दिल में ठान लिया था कि अब इस मामले में हाथ न डालूँगा, लेकिन तुम्हारी हिमाक़त के मारे जब मेरी कुछ चलने पावे!"

स्त्री—"मैं जाकर लौटाए देती हूँ।"

राय सा०—"और मैं जाकर ज़हर खाए लेता हूँ।"

इधर तो स्त्री-पुरुष में यह अभिनय हो रहा था, उधर दमड़ी उसी वक़्त अपने गाँव के मुखिया के खेत में जुआर काट रहा था। आज वह रात-भर की छुट्टी लेकर घर गया था। देखा, बैलों के लिये चारे का एक तिनका भी नहीं है। अभी वेतन मिलने में कई दिन की देर थी, मोल ले न सकता था। घरवालों ने दिन को कुछ घास छीलकर खिलाई तो थी, लेकिन ऊँट के मुँह में ज़ीरा; उतनी घास से क्या हो सकता था। दोनों बैल भूके खड़े थे। दमड़ी को देखते ही दोनों पूँछें खड़ी करके हुँकरने लगे। जब वह पास गया, तो दोनों उसकी हथेलियाँ चाटने लगे। बेचारा दमड़ी मन मसोसकर रह गया। सोचा, इस वक़्त तो कुछ हो नहीं सकता, सबेरे किसी से कुछ उधार लेकर चारा लाऊँगा।

लेकिन जब ११ बजे रात को उसकी आँख खुली, तो देखा, दोनों बैल अभी तक नाँद पर खड़े हैं। चाँदनी रात थी, दमड़ी को जान पड़ा कि दोनों उसकी ओर अपेक्षा और याचना की दृष्टि से देख रहे हैं। उनकी क्षुधा-वेदना देखकर उसकी आँखें सजल हो आईं। किसान को अपने बैल अपने लड़कों की तरह प्यारे होते हैं। वह उन्हें पशु नहीं, अपना मित्र और सहायक समझता है। बैलों को भूके खड़े देख नींद आँखों से भाग गई। कुछ सोचता हुआ उठा, हँसिया निकाली, और चारे की फ़िक्र में चला। गाँव के बाहर बाजरे और जुआर के खेत खड़े थे। दमड़ी के हाथ काँपने लगे। लेकिन बैलों की याद ने उसे उत्तेजित कर दिया। चाहता, तो कई बोझ काट सकता था; लेकिन वह चोरी करते हुए भी चोर न था। उसने केवल उतना ही चारा काटा, जितना बैलों को रात-भर के लिये काफ़ी था। सोचा, अगर किसी ने देख भी लिया, तो उससे कह दूँगा, बैल भूके थे, इसलिये काट लिया। उसे विश्वास था कि थोड़े-से चारे के लिये कोई मुझे पकड़ नहीं सकता। मैं कुछ बेचने के लिये तो काट नहीं रहा हूँ, फिर ऐसा निर्दयी कौन है, जो मुझे पकड़ ले। बहुत करेगा, अपने दाम ले लेगा। उसने बहुत ठीक सोचा था। चारे का थोड़ा होना ही उसे चोरी के अपराध से बचाने को काफ़ी था। चोर उतना काटता, जितना उससे उठ सकता, उसे किसी के फ़ायदे-नुक़सान से क्या मतलब? गाँव के लोग उसे चारा लिए जाते देखकर बिगड़ते ज़रूर, पर कोई उसे चोरी के इलज़ाम में न फँसाता। लेकिन संयोग से हल्क़े के थाने का सिपाही उधर जा निकला। वह परोस के एक बनिए के यहाँ जुआ होने की ख़बर पाकर कुछ ऐंठने की टोह में आया था। दमड़ी को चारा सिर पर उठाते देखा, तो संदेह हुआ। इतनी रात-गए कौन चारा काटता है? हो-न-हो, कोई चोरी से काट रहा है। डाँटकर बोला—कौन चारा लिए जाता है, खड़ा रह!

दमड़ी ने चौंककर पीछे देखा, तो पुलीस का सिपाही! हाथ-पाँव फूल गए, काँपते हुए बोला—"हजूर, थोड़ा ही-सा काटा है, देख लीजिए।"

सिपाही—"थोड़ा काटा हो या बहुत, है तो चोरी। खेत किसका है?"

दमड़ी—"बलदेव महतो का।"

सिपाही ने समझा था, शिकार फँसा, इससे कुछ ऐंठूँगा; लेकिन वहाँ क्या रक्खा था। पकड़कर गाँव में लाया, और जब वहाँ भी कुछ हत्थे-चढ़ता न दिखाई दिया, तो थाने ले गया। थानेदार ने चालान कर दिया। मुक़दमा राय साहब ही के इजलास में पेश किया।

राय साहब ने दमड़ी को फँसे हुए देखा. तो हमदर्दी के बदले कठोरता से काम लिया। बोले—"यह मेरी बदनामी की बात है। तेरा क्या बिगड़ा, साल-छः महीने की सज़ा हो जायगी, शरमिंदा तो मुझे होना पड़ रहा है। लोग यही तो कहते होंगे कि राय साहब के आदमी ऐसे बदमाश और चोर हैं। तू मेरा नौकर न होता, तो मैं हलकी सज़ा देता; लेकिन तू मेरा नौकर है, इसलिये कड़ी-से-कड़ी सज़ा दूँगा। मैं यह नहीं सुन सकता कि राय साहब ने अपने नौकर के साथ रियायत की।"

यह कहकर राय साहब ने दमड़ी को ६ महीने की सख़्त क़ैद का हुक्म सुना दिया।

उसी दिन उन्होंने उस ख़ून के मुक़दमे में ज़मानत ले ली। मैंने दोनों वृत्तांत सुने, और मेरे दिल में यह ख़याल और भी पक्का हो गया कि सभ्यता केवल हुनर के साथ ऐब करने का नाम है। आप बुरे-से-बुरा काम करें, लेकिन अगर आप उस पर परदा डाल सकते हैं, तो आप सभ्य हैं, सज्जन हैं, जेंटिलमैन हैं। अगर आपमें यह सिफ़त नहीं, तो आप असभ्य हैं, गँवार हैं, बदमाश हैं। यही सभ्यता का रहस्य है।

प्रेमचंद

पेरिस

(पूर्वार्द्ध)

अँगरेज़ी में कहावत है—"All roads lead to Rome." अर्थात् सब सड़कें रोम ही को जाती हैं। शायद ही ऐसा कोई होगा, जिसने पेरिस का नाम न सुना हो। बहुत लोग तो अभी तक यही समझते हैं कि यहाँ की इमारतें शीशे की और सड़कें रबड़ की हैं।

जैसे हिंदोस्तान में लखनऊ अमीरों की ऐश-आराम की जगह माना जाता है, वैसे ही तमाम योरप—नहीं, तमाम संसार—का क्रीड़ा-क्षेत्र पेरिस ही समझा जा सकता है।

भारत के यात्री बंबई से चलने के बाद इँगलैंड जाने के वास्ते मारसेल्स-बंदर पर उतरते हैं। मारसेल्स फ्रांस-देश में, दक्खिनी किनारे पर, एक प्रसिद्ध बंदरगाह है। यहाँ से, रेल के द्वारा, पेरिस होते हुए केले-बंदर तक आते हैं। परंतु यहाँ की भाषा न जानने के कारण बहुधा पेरिस में नहीं ठहरते। जब कुछ समय इँगलैंड में रहकर फ्रेंच-भाषा सीख लेते हैं, तब पेरिस की सैर करने आते हैं।

शहर का हाल लिखने के पहले इसका कुछ संक्षिप्त इतिहास लिखना अनुचित न होगा।

इतिहास

तमाम योरप में सबसे सुंदर नगर माना जानेवाला पेरिस एक बड़ी राजधानी है। यह कुछ-कुछ गोलाकार बसा हुआ है। इसका घेरा क़रीब १९ मील का है। सन् १९११ ई० की मर्दुमशुमारी के समय इसमें प्रायः ३० लाख मनुष्य बसते थे।

सेन-नदी शहर के बीच में होकर पूर्व से पश्चिम को बहती और नगर के दो भाग (उत्तरी और दक्षिणी) कर देती है।

ईसा मसीह से सौ वर्ष पहले गॉल लोगों की 'पारीसी' सेन-नदी के एक टापू पर आ बसी थी। यहाँ पर उन्होंने एक छोटे नगर की स्थापना की, जिसको रोमवाले लुटेशिया पारसीओरम कहने लगे।

पारीसियों ने बहुत समय तक वीरता के साथ रोमन-सेनाओं का सामना किया; परंतु अंत में टाइटस लीबिएनुस (Titus Libienus) नाम के रोमन-सरदार से उन्हें हार माननी पड़ी। विख्यात जूलियस सीज़र ने लुटेशिया को फ़ौजी छावनी बनाया, जो कुछ समय के पश्चात् उत्तरी गॉल की राजधानी हो गई, और एक रोमन-गवर्नर वहाँ रहने लगा।

क्लूनी अजायबघर (Musee de cluny) के पास अभी तक पुराने महलों के चिह्न विद्यमान हैं। पहलेपहल ये महल सन् ३०६ ई० में बनाए गए थे। ५० वर्ष बाद इन महलों में प्रसिद्ध जूलियन ने अपना समय बिताया। उसने अपनी पुस्तक में लिखा है—

"मेरी प्यारी लुटेशिया नदी के बीच में, एक छोटे-से टापू पर, बसी है; और दोनों तरफ़ सुंदर पुलों के द्वारा इसका किनारों से संबंध है। नदी का पानी ऋतु के अनुसार घटता-बढ़ता नहीं, परंतु गरमी और सरदी, दोनों ऋतुओं में इसमें जहाज़ों के आने-जाने के लिये काफ़ी पानी रहता है। नदी का जल पीने में भी बहुत

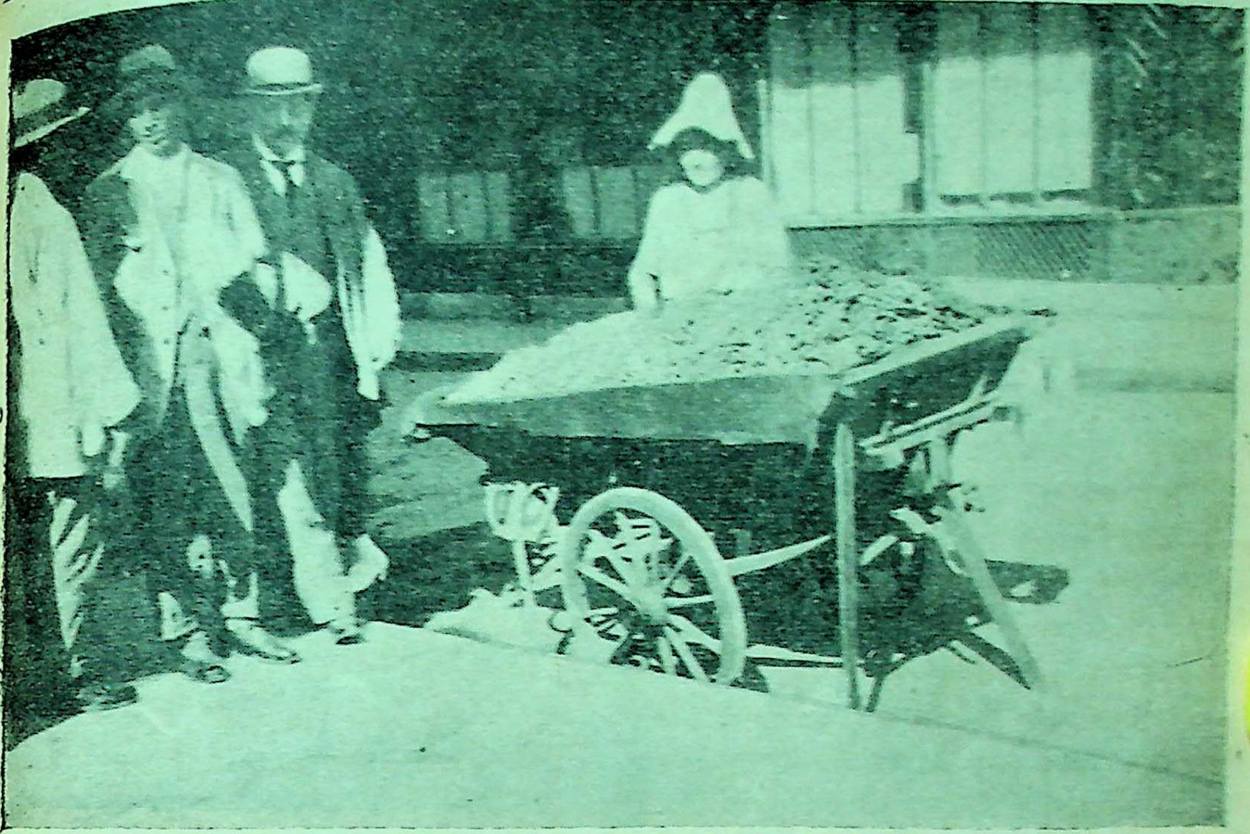

अंगूर की फ़सल में अंगूर दो आने सेर तक बिकते हैं

अच्छा है, और दोनों किनारों पर अंगूर बहुतायत से पैदा होते हैं।"

गॉल-देश पर रोमवालों का क़ब्ज़ा सन् ४७६ ई० तक रहा। उनके हटते ही पास-परोस के सामंतों ने इसको उजाड़ डाला। ४९३ में क्लोविस (Clovis) ने पेरिस (लुटेशिया) को अपनी राजधानी बनाया; और ४९६ ई० में वह, अपनी ईसाई रानी की प्रेरणा से, ईसाई हो गया। उसको राइम्स (Rheims) के मुख्य पुजारी (Archbishop) ने बपतिस्मा दिया। चूँकि यह पश्चिमी राजों में पहला ईसाई हुआ था, इसलिये इसको 'धर्म के ज्येष्ठ पुत्र' की पदवी दी गई।

क्लोविस के बाद जितने फ़्रांस के राजा हुए, सभी ने इस उपाधि को ग्रहण किया। क्लोविस-वंश के राज्य-काल में चार बड़े शहर थे—पारी * (Paris), ऑरलियाँ (Orleon), स्वासाँ (Soissons) और मेट्ज़ (Metz); परंतु राजधानी पेरिस ही में रही।

शारलेमन (Charlamagne) ने अपनी राजधानी एं-ला-शापेल (Aix-la-chapelle) में रक्खी; परंतु थोड़े ही समय बाद ह्यूगो (Huguess capet) ने पुनः पेरिस को अपनी राजधानी बनाया। तभी से यह नगर दिन-दिन तरक़्क़ी करने लगा।

सेन-नदी में काफ़ी पानी होने से इँगलैंड आदि देशों के छोटे-छोटे जहाज़ पेरिस तक तिजारत के लिये आते थे। आजकल भी लूव्र (Louvre) के निकट छोटे-छोटे धूम्रपोत देख पड़ते हैं, जिनके अग्रभाग में "Pour Londres" (लंदन के वास्ते) लिखा हुआ होता है।

धनवान् व्यापारी पेरिस के उत्तरी हिस्से में रहते थे, और शहर में साधारण आदमियों की घनी आबादी थी। दक्खिनी हिस्से में गिरजों और पादरियों का जमघट था। उस समय ईसाई-मत के समस्त पुजारी (और आजकल रोमन कैथलिक संप्रदाय के पुजारी) अपने पूजा-पाठ

---

* Paris का उच्चारण फ़्रेंच लोग 'पारी' करते हैं; परंतु अँगरेज़ 'पेरिस' कहते हैं।

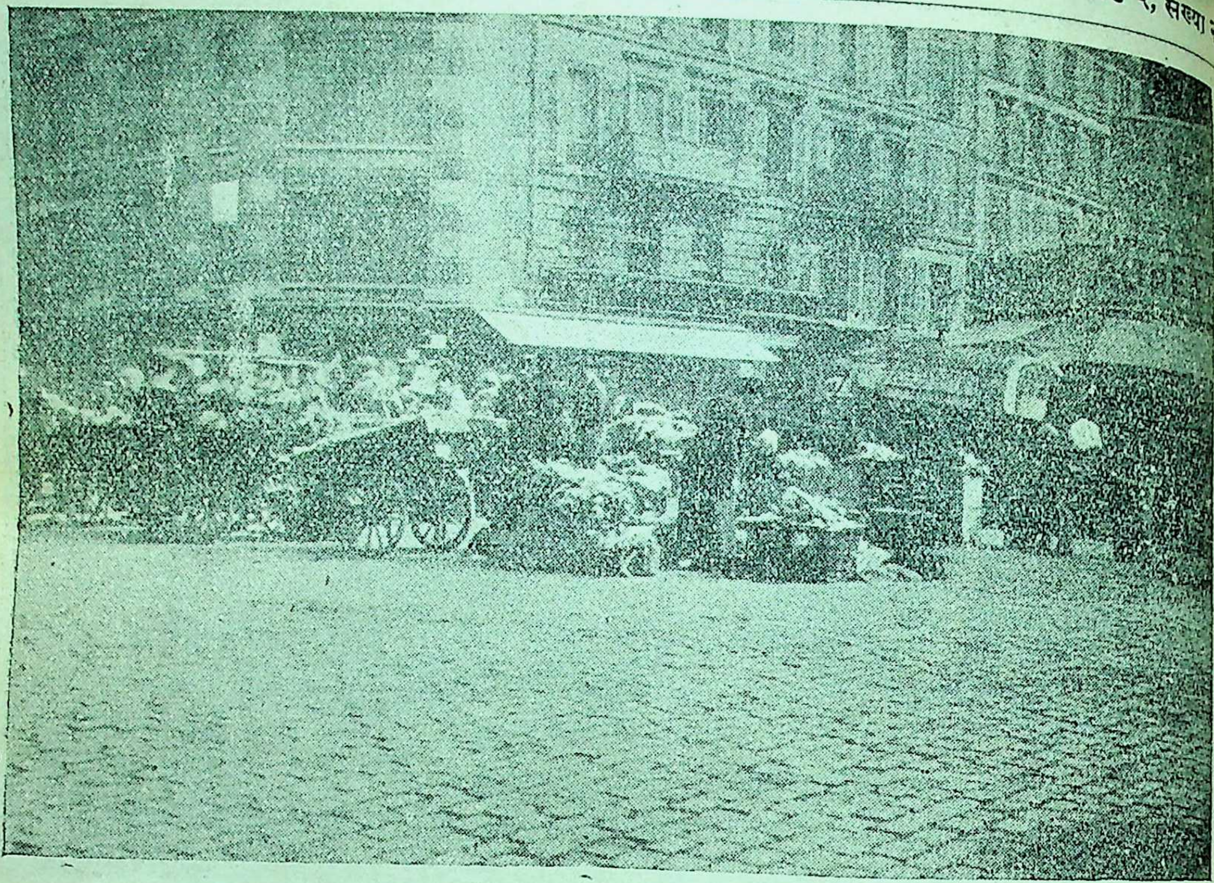

तरकारी का बाज़ार

में केवल लैटिन-भाषा ही का प्रयोग करते थे, इसलिये पेरिस-नगर के जिस भाग में वे रहते थे, उसका नाम 'लैटिन-टोला' (Quartier Latin) हो गया था।

आजकल इस भाग में विश्वविद्यालय (Université de La Sovbonne) और उसके छात्रों के रहने की इमारतें वग़ैरह हैं।

फ़्रांस के राजों को अपनी पूरी हुकूमत में, सामंतों (Feudal Lords & Barons) के उपद्रव से, बाधा का सामना करना पड़ता था। फ़िलिप द्वितीय ने इससे तंग आकर उनकी बाढ़ रोकने के लिये पेरिस-वासियों को म्युनिसिपल-अधिकार दे दिए। फ़िलिप के राज्य में Boureoisic (व्यापारी और मध्य श्रेणी के मनुष्यों) को बहुत कुछ स्वतंत्रता मिल गई। उन्हें बहुत-से अधिकार भी मिले। सिक्के ढालने की आज्ञा भी मिल गई।

सेन-नदी के किनारे पुराने महलों के खँडहरों के ऊपर लूव्र-महल की नींव डाली गई। इसी समय में नोत्र दाम (Notre Dame) का गिरजा बनाया गया, और सड़कों पर पत्थर की पटियाँ लगवा दी गईं। फ़्रांस के प्रत्येक राजा ने अपनी यादगार में एक-न-एक गिरजा (Cathedral) और मॉनस्ट्री (Monastry=विहार) बनवाई हैं।

फ़िलिप चौथे के राज्य-काल में पेरिस की जन-संख्या एक लाख बीस हज़ार के ऊपर थी, और शहर में तीन सौ सड़कें थीं। तमाम योरप के नगरों में यह नगरी प्रत्येक कला में सर्वोच्च समझी जाती थी। उस समय भी यहाँ की इमारतें और देशों के नगरों से सुंदर थीं।

चार्ल्स छठे के राजत्व-काल में पेरिस पर अँगरेज़ों का अधिकार हुआ। परंतु वे यहाँ पर सिर्फ़ सोलह बरस ही रह पाए।

फ़्रांसिस प्रथम ने लूव्र-महल में कुछ रद्दोबदल किया, और तइलरी का विख्यात महल तथा उद्यान (Jardin de Tuilvies) बनवाया।

२४ अगस्त, सन् १५७२ ई० में, सेंट बार्थालोमियू (Saint Bartholomew) के उत्सव के दिन, फ़्रांस में बहुत ही भयानक हत्या-कांड हुआ।

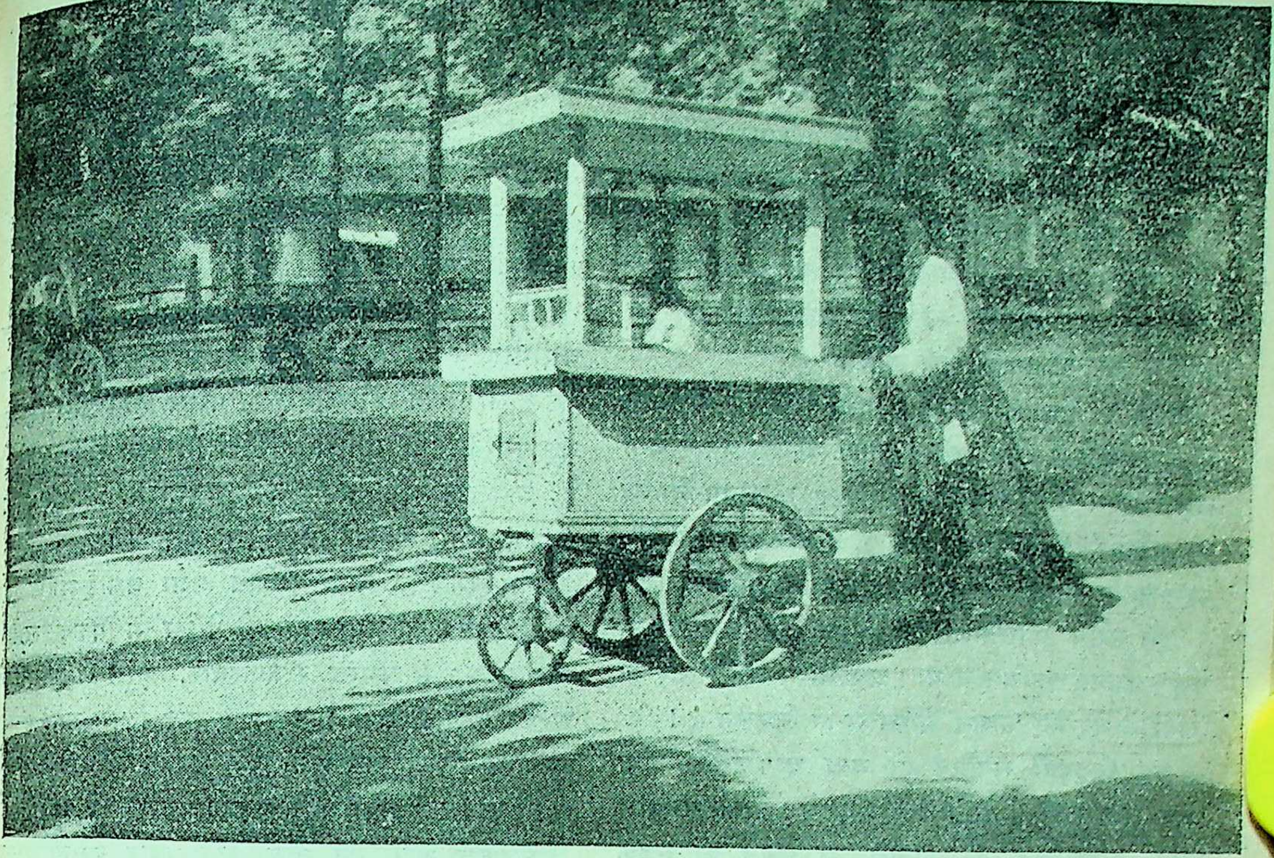

मलाई का बर्फ़

राज्य-भर में ह्यूगनो(Huguenots)-नामक ईसाई-संप्रदाय के लोग मय बच्चों और स्त्रियों के राजा की आज्ञा से क़त्ल कर दिए गए। तुइलरी और लूव्र के महलों में भी बहुतों को प्राण देने पड़े। केवल पेरिस में ही दस हज़ार मनुष्यों की हत्या हुई; और फ़्रांस-भर में तो सत्तर हज़ार मारे गए!

ह्यूगनो की लड़ाई के बाद पेरिस को शांति मिली; और हेनरी काट के समय से धन, बल, सुंदरता तथा कला-कौशल की उन्नति होने लगी।

पेरिस का इतना मान और नाम हो गया कि तमाम योरप के प्रसिद्ध नगर उसी के अनुकरण पर बनाए जाने लगे। पेरिस के शिल्प (Sculptor), भवन-निर्माण की कला (Architecture), चित्र-कला, साहित्य, रहन-सहन आदि को हर जगह के लोग आदर्श मानने लगे।

इस समय फ़्रांसवालों का पेरिस को 'सभ्यता का केंद्र' कहना अनुचित न था। अब भी समस्त संसार की स्त्रियों के नए-नए 'फ़ैशन' पेरिस से ही निकलते हैं।

लुई चौदहवाँ सर्वप्रिय हो गया था। उसको लोग 'राजा सूर्य' (Roi Soleil) कहते थे। उसके समय में पुरानी शहरपनाह की दीवारों पर घूमने की सड़कें (Boulevards)* बना दी गईं; और राजा का आदर करने के लिये पोर्त सैं देनी (Porte Saint Denis) व पोर्त सैं मातैं (Porte Saint Martin) नाम के महराबदार फाटक स्मारक स्वरूप बना दिए गए।

पहले वर्साई (Versailles) लुई तेरहवें के शिकार खेलने की जगह थी; परंतु लुई चौदहवें ने अपने समय में वहाँ एक महल और उद्यान बनवाया, जिसकी बराबरी करनेवाला कोई महल अभी तक सारे योरप में नहीं है।

इसी महल में गत योरपियन महायुद्ध के बाद संधि-पत्र पर हस्ताक्षर हुए थे।

पेरिस की राज्य-क्रांति

लुई सोलहवें के राज्य में टैक्स बहुत बढ़ गए थे। प्रजा अत्यंत दुखी हो उठी थी। परंतु राजकोष में धन का अब भी अभाव था।

प्रत्येक उपाय निष्फल होने के बाद लुई ने प्रजा के मुखियों को जातीय महासमिति (National Council) में पहली बार बुलाया। नेशनल कौंसिल की स्थापना तो बहुत समय पहले ही हो चुकी थी; परंतु प्रजा से अभी तक उसका कुछ संबंध न था।

इस समय योरप-भर की दृष्टि पेरिस की ओर थी। सभी योरपवासी बरसों तक वहाँ होनेवाले भीषण हत्या-कांड देखते रहे।

१४ जुलाई को नागरिकों ने पेरिस के विख्यात कारागार 'बास्ती' * पर आक्रमण करके उसे तहस-नहस कर डाला। अब इस जगह पर पेरिस का 'प्लास दि ला बास्तो'(Place de la Bastille) नाम का चौराहा है, जहाँ पर प्रजा-विद्रोह की यादगार में 'बास्ती-स्तंभ' (Colonne Bastille) बना हुआ है।

कुछ समय के बाद दुःखित प्रजा वर्साई-महल पर धावा करके राजा तथा रानी को पेरिस में पकड़ लाई। जून, १७९१ में समस्त राजपरिवार, फ़्रांस से भागने के अभियोग में, पकड़ा जाकर क़ैद कर लिया गया। कुछ समय पीछे राजा और रानी को घातक की छुरी के नीचे अपने जीवन से हाथ धोना पड़ा।

प्रजातंत्र राज्य की नींव पड़ी, और पुरानी राज-प्रणाली का अंत हुआ।

डॉक्टर गिलोटीन ने अपराधियों के सिर काटने के लिये एक मशीन बनाई थी। वह अभी तक उन्हीं के नामानुसार गिलोटीन के नाम से प्रसिद्ध है। यह मशीन प्लास दि ला रिवोलूसियाँ(Place de la Revolution)† नाम से प्रसिद्ध चौराहे पर लगा दी गई, और रोज़ हज़ारों मनुष्य इसकी भेंट चढ़ने लगे।

सितंबर, १७९२ से जुलाई, १७९४ तक विभीषिका का भीषण राज्य (Reign of Terror) रहा। प्रजा में नेपोलियन के आने तक अशांति बनी रही।

---

* Boulevards—वे चौड़ी सड़कें, जिनके दोनों तरफ़ पैदल चलनेवालों के लिये वृक्षों से ढकी पटरियाँ होती हैं।

* राजा की आज्ञा से कोई भी पुरुष इस कारागार में डाला जा सकता था। मुक़दमा चलाने या किसी अपराध को प्रमाणित करने की ज़रूरत न थी। सामंतों, सरदारों तथा फ़्रांस के राजों ने इसका बहुत दुरुपयोग किया। क़ैद के वारंट का नाम 'लेत्र द काशे' (Lettre de Cachet) था।

† इस चौराहे का आधुनिक नाम "प्लास दि ला कॉंकोर्द" (Place de la Concorde) है।

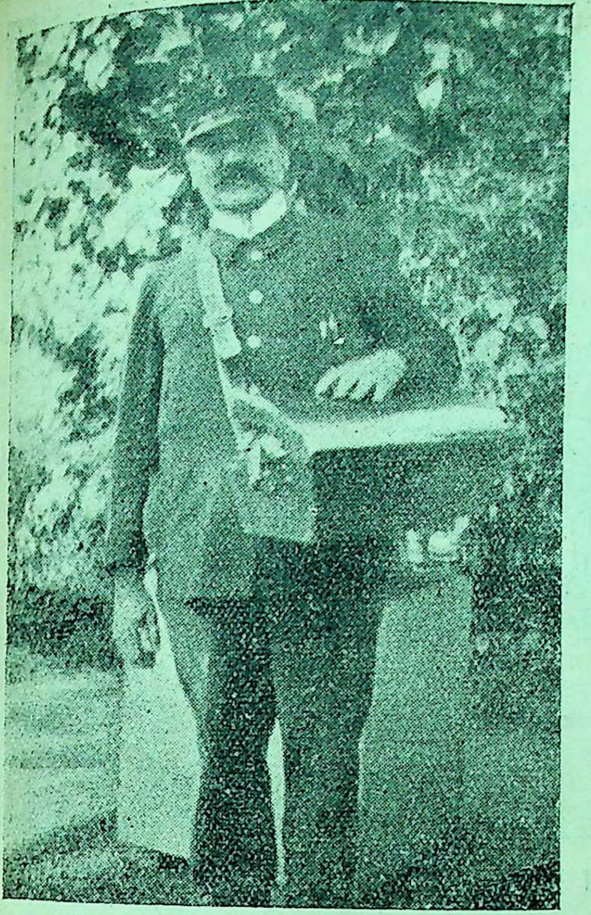

फ़्रांस का डाकिया

हुकूमत की बाग़डोर हाथ में लेते ही नेपोलियन ने मुख्य-मुख्य स्थानों पर तोपें लगाकर बाग़ियों को क़ाबू कर लिया। बोनापार्ट ने सिर्फ़ बाग़ियों ही को नहीं दबाया, बल्कि पुरानी गवर्नमेंट को भी हटा दिया, और सर्वसाधारण की सम्मति प्राप्त कर वह स्वयं फ़्रांस का हर्ता-कर्ता सम्राट् बन बैठा।

नेपोलियन बोनापार्ट कॉर्सिका-टापू का रहनेवाला था। उसके शत्रु उसे कॉर्सिका का दानव (Corsicen Ogre) कहा करते थे। नेपोलियन एक असाधारण चतुर और वीर सेनापति था। उसने अपने रण-कौशल से अनेकों लड़ाइयाँ जीतीं। लड़ाई के मैदान में वह कायर और बुज़दिल सेनापतियों की तरह दूर-ही-दूर नहीं रहता था; हमेशा मैदान में रहकर अपने सिपाहियों को जोश दिलाया करता था।

एक समय पुल पार करके किसी गाँव पर क़ब्ज़ा कर लेना ज़रूरी था। पर दूसरे पक्षवाले दल ने पुल के ऊपर गोले बरसाकर रास्ता बंद कर रक्खा था। इस अग्नि-वृष्टि में आगे बढ़ने के लिये किसी की भी हिम्मत न होती थी। तब नेपोलियन स्वयं पुल पर कूद पड़ा। उसके आगे बढ़ते ही सिपाहियों की हिम्मत बढ़ गई। उन्होंने फ़ौरन् जाकर गाँव पर दख़ल कर लिया।

नेपोलियन की दो विजयों के स्मारक-स्वरूप पॉन्त दि' एना (Pont d' Iena) और पॉन्त दास्त्रेलीज़ (Pont d' Austerelitz) नाम के पुल पेरिस में अब तक मौजूद हैं।

शांज़ एलीज़े (Champs Elisee) का पार्क, आर्क द त्रिओंफ़ (Arch de Triomphe) की मेहराब, वांडोम स्तंभ (Colonne Vendome), मादलेन का गिरजा (Madeleine) आदि नेपोलियन के राजत्व-काल में बनाए गए।

वाटर्लू (Waterloo) के मैदान में नेपोलियन की हार के पश्चात् बूरबाँ-घराने का राज्य शुरू हुआ। सन् १८१७से१८४२ के बीच में बैरन हाउसमान ने पेरिस की बहुत कुछ उन्नति की। अठारह करोड़ रुपए ख़र्च करके तंग गलियों के स्थान पर चौड़ी सड़कें और बूलेवा (Boulevard) बना दिए गए; छोटी और गंदी दूकानें तोड़कर सड़कों के किनारे सुंदर बाज़ार बनाए गए।

१८७० ईसवी में जर्मन-सेना ने पेरिस को घेर लिया। बहुत दिनों तक नगर-निवासी वीरता के साथ लड़ते रहे। अंत को उन्हें खाने की कमी के कारण भारी कष्ट होने लगा।

बाहरी दुनिया से उनका संबंध बिलकल टूट गया था। दूतों और पत्रवाहकों का आना-जाना असंभव था। इसलिये गुब्बारों के ज़रिए वे शहर के बाहर दूत भेजने लगे।

लिओन गांबेटा (Leon Gambetta)-नामक मनुष्य किसी तरह एक गुब्बारे पर बैठकर नगर के बाहर पहुँच गया; और बाहर से घिरे हुए अपने लोगों को सहायता पहुँचाने का उपाय करने लगा। आजकल फ़्रांस में शायद ही कोई ऐसा नगर हो, जहाँ स्मारक-स्वरूप गांबेटा के नाम से संयुक्त एक-न-एक राजपथ न पाया जाता हो।

एक सौ पचीस दिनों के बाद पेरिस को हार माननी पड़ी, और प्रशियन-सेना ने शहर पर क़ब्ज़ा कर लिया।

चिड़ियों का बाज़ार

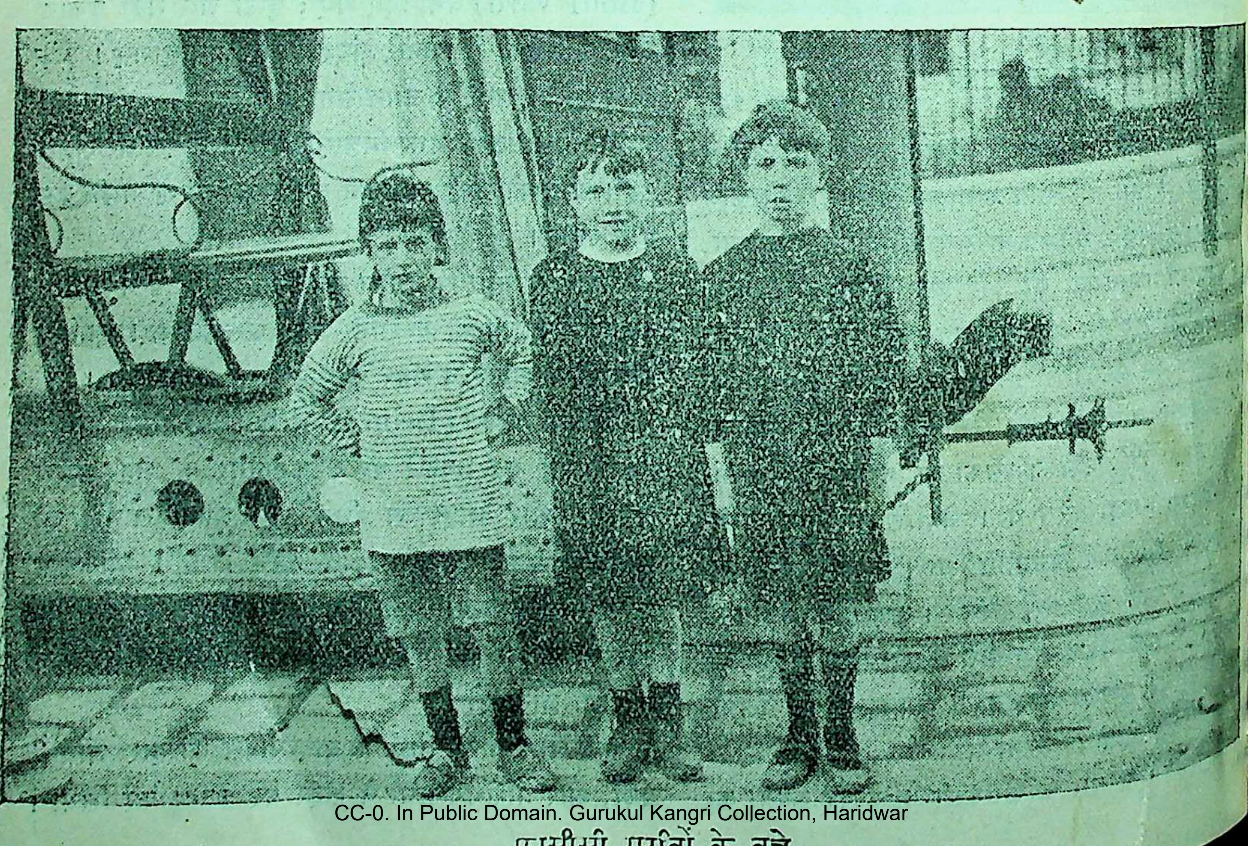

फ़ासीसी ग़रीबों के बच्चे

संधि के बाद जब जर्मन-सेना लौट गई, तब फ़्रांस की जातीय रक्षक सेना (National Guards) बिगड़कर बाग़ी हो गई; और उसने तमाम शहर को उजाड़कर आग लगा दी। यह सेना पेरिस पर दो महीने तक क़ब्ज़ा किए रही। जो कोई फ़्रेंच-सेनापति इनके हाथ में पड़ जाता था, उसे ये तुरंत गोली मार देते थे।

जातीय सेना के इस ७३ दिन के राज्य में अड़तीस राजमहल और दो सौ इकतीस बड़ी इमारतें जलाकर भस्म कर दी गईं। तुईलरी का महल (La Palais de Tiulvies) और वांडोम कालम (Colonne Vendome) भी गिरा दिए गए। अंत तक ये लोग सड़कों पर मोर्चाबंदी किए लड़ते रहे।

इस विद्रोह में पैंतालीस करोड़ रुपए की हानि हुई। विद्रोह-दमन के बाद फ़्रांस में पूर्ण शांति हो गई, और प्रजातंत्र राज्य (Republic) भी दृढ़ रूप से स्थापित हो गया।

टाउनहाल, जो कि जल गया था, दुबारा मरम्मत करके ठीक कर दिया गया। सन् १८७५ में पेरिस का विख्यात नाटक-भवन बनाया गया।

शांति स्थापित हो जाने पर यहाँ प्रदर्शिनियाँ शुरू हुईं। पहली नुमाइश सन् १८७८ ई० में हुई, जिसकी यादगार में लोकादेरो का महल (La Palais de Trocuders) अभी तक मौजूद है। इसमें अब नुमाइश की जगह अजायब-घर (Museum) की सैर करने को मिलती है।

दूसरी नुमाइश १८८९ ई० में हुई। इसी नुमाइश में सारे संसार की मीनारों से ऊँची मीनार—ऐफ़िल टावर—तैयार की गई। इसकी उँचाई पूरी ३०० मीटर (क़रीब ड़ फ़र्लांग) है। पेरिस-यात्रियों को पहलेपहल इसी मीनार के दर्शन होते हैं।

अंतिम प्रदर्शिनी सन् १९०० में हुई। इसमें बनाए गए दो महल—ग्राँ पाले (Grand Palais) और ती पाले (Patit Palais)—अभी तक जातीय त्रशाला का काम दे रहे हैं।

४ अगस्त, १९१४ को योरप का महायुद्ध शुरू हुआ; र चार बरस साढ़े तीन महीने तक संसार भीमकाय पों के गर्जन से काँपता रहा। इस युद्ध में उत्तरी फ़्रांस लकुल बरबाद हो गया।

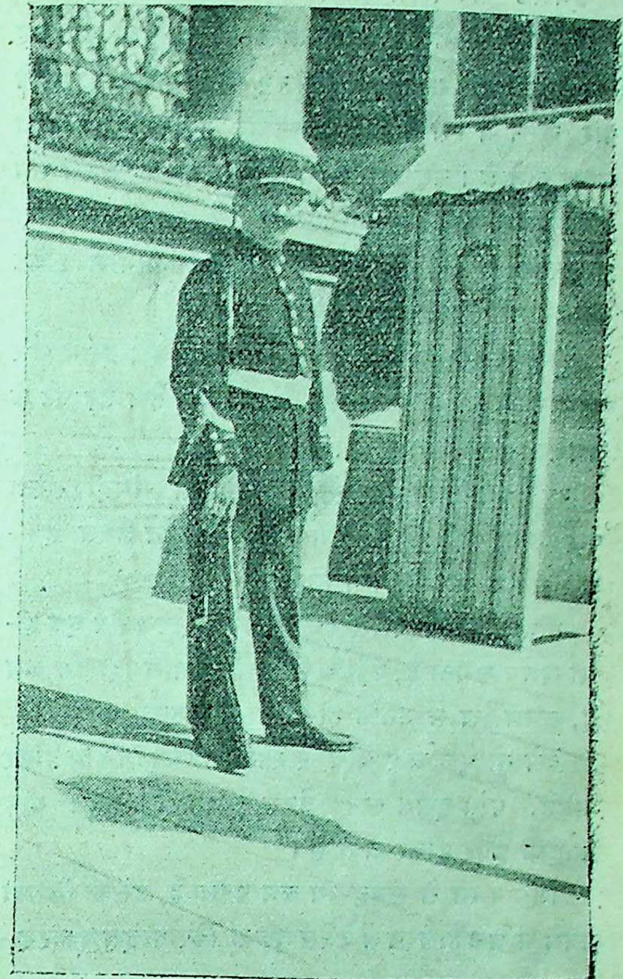

पुलीस का सिपाही

पेरिस को भी अनेक कष्टों और संकटों का सामना करना पड़ा। ज़ेपलिनों (हवाई जहाज़ों) के ज़रिए इस पर कई बार बम के गोले बरसाए गए। सत्तर मील की दूरी से जर्मन-तोपों के गोलों ने इसकी स्थिति को अत्यंत भयानक बना दिया था।

वर्साई-महल में संधि-पत्र पर हस्ताक्षर होने के बाद, आर्क द त्रिओंफ़ के नीचे, रण में मारे गए एक सैनिक की लाश तमाम हताहत सैनिकों की यादगार में दफ़न की गई।

पेरिस-यात्रा

मुझे सितंबर, सन् १९२१ में पेरिस जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। हम लोग लंदन से सुबह दस बजे चलकर ६ बजे शाम को पेरिस पहुँच गए थे।

इँगलैंड से पेरिस जाने के तीन रास्ते हैं—

पहले रास्ते में इंगलिश चैनल—डोवर-कैले की राह से—पार की जाती है। खाड़ी २२ मील चौड़ी है। इसे पार करने में रेल कंपनी के स्टीमर लगभग एक घंटा समय लेते हैं। यह रास्ता इँगलिश चैनल के सबसे तंग हिस्से में है, इसलिये प्रायः यहाँ पर लहरों का ज़्यादा ज़ोर रहता है। एक दफ़े मुझे इसे पार करने में १ घंटे की जगह कई घंटे लग गए थे।

दूसरा रास्ता फ़ोकस्टन-बुलोंइन होकर है। इसमें और पहले रास्ते में कुछ अधिक अंतर नहीं है। डेढ़ घंटे के लगभग समय लगता है।

न्यू हैवन-डिपेप के रास्ते में ७६ मील समुद्री रास्ता पार करना पड़ता है। इसमें समय भी बहुत लगता है—चार घंटे के लगभग समझिए।

तीनों रास्तों से पेरिस तक जाने में क़रीब-क़रीब एक ही-सा समय लगता है; क्योंकि जिन रास्तों में समुद्री पथ कम है, उनमें रेल से उतना ही रास्ता तय करना पड़ता है।

वैसे तो एक और चौथा रास्ता साउथेंपटन-हाव्र होकर भी है, परंतु इसमें समय बहुत लगता है। बहुत थोड़े आदमी इधर होकर जाते हैं।

जिस रास्ते से समुद्र-पथ कम पड़ता है, उसका किराया सबसे अधिक है। लंदन से पेरिस तक का किराया इस प्रकार है —

	फ़र्स्ट क्लास			सेकिंड क्लास			थर्ड क्लास		
	पौं०	शि०	पें०	पौं०	शि०	पें०	पौं०	शि०	पें०
(१) डोवर-कैले	३	५	३	२	५	११	१	११	१
(२) फ़ोकस्टन बुलंइन	२	१६	२	२	१	२	१	६	३
(३) न्यू हैवन डिपेप	२	८	०	१	१३	१	१	४	४

हम लोग न्यू हैवन-डिपेप के रास्ते से पेरिस गए थे। डिपेप-बंदर पर जहाज़ प्लेटफ़ार्म के एक तरफ़ खड़ा हो जाता है, और रेल गाड़ी दूसरी तरफ़। रेल में बैठने के पहले सारे असबाब और पासपोर्ट की जाँच होती है।

बहुत लोग तो अपना असबाब सीधे विक्टोरिया स्टेशन (लंदन का स्टेशन, जहाँ से पेरिस के वास्ते रवाना होते हैं) से रजिस्टर करा देते हैं। ऐसा करने से रास्ते में असबाब की जाँच कराने का झंझट नहीं होता। पेरिस पहुँचकर स्टेशन पर कस्टम(Customs असबाब की जाँच कर लेने के बाद उसे स्टेशन के बाहर ले जाने देते हैं।

पेरिस में कोई एक बड़ा जंकशन स्टेशन नहीं है। हरएक लाइन के स्टेशन अलग अलग पेरिस के चारों तरफ़ बने हुए हैं। यात्रियों को एक स्टेशन से दूसरे स्टेशन तक मोटर या टैक्सी पर जाना पड़ता है।

न्यू हैवन-डिपेप की ट्रेन गार सैं लाज़ार (Gare Saint Lazare) पर शाम को छः बजे पहुँची।

अब मैं यहाँ के कुछ विख्यात स्थानों का सिलसिलेवार हाल लिखता हूँ—

प्लास द ला काँकोर्द (Place de la concorde)

यह सेन-नदी के दक्षिण ओर पूर्व से पश्चिम तक रू द रिवोली-नदी से कुछ ही फ़ासले पर एक बहुत बड़ी सड़क है।

रू द रिवोली के दोनों तरफ़ आलीशान दूकानें हैं और नीचे मेट्रो (Metro) भूगर्भ-रेलवे। एक बूढ़ा आदमी सैनिक अख़बार बेचकर भीख माँग रहा था। यहाँ भीख माँगना एक जुर्म है। परंतु ऐसे लोग कोई न-कोई चीज़ बेचने का बहाना करके राहगीरों के ध्यान को अपनी ओर आकृष्ट करते हैं। परंतु मुँह से भीख माँग कर उन्हें तंग नहीं करने पाते।

इस सड़क के पश्चिमी सिरे पर प्लास दि ला कॉंकोर्द का बहुत ही सुंदर चौराहा है। बीच में बड़े-बड़े फ़व्वारे बने हैं। इसके चारों तरफ़ फ़्रांस के मुख्य नगरों व ज़िलों के स्मारक-स्वरूप अनेक प्रतिमाएँ स्तंभों पर लगी हैं। फ़व्वारों के बीच में लुक्सार की मीनार (Monolith of Luxor) है।

यह स्तंभ ७६ फ़ीट ऊँचा और एक समूचे पत्थर का बना हुआ है। इसे मिसर के ख़दीव मुहम्मदअली पाशा

पेरिस का एक सड़क

'सेन-नदी', शारंतों के पास, घोड़े माल से लदी नाव खींच रहे हैं

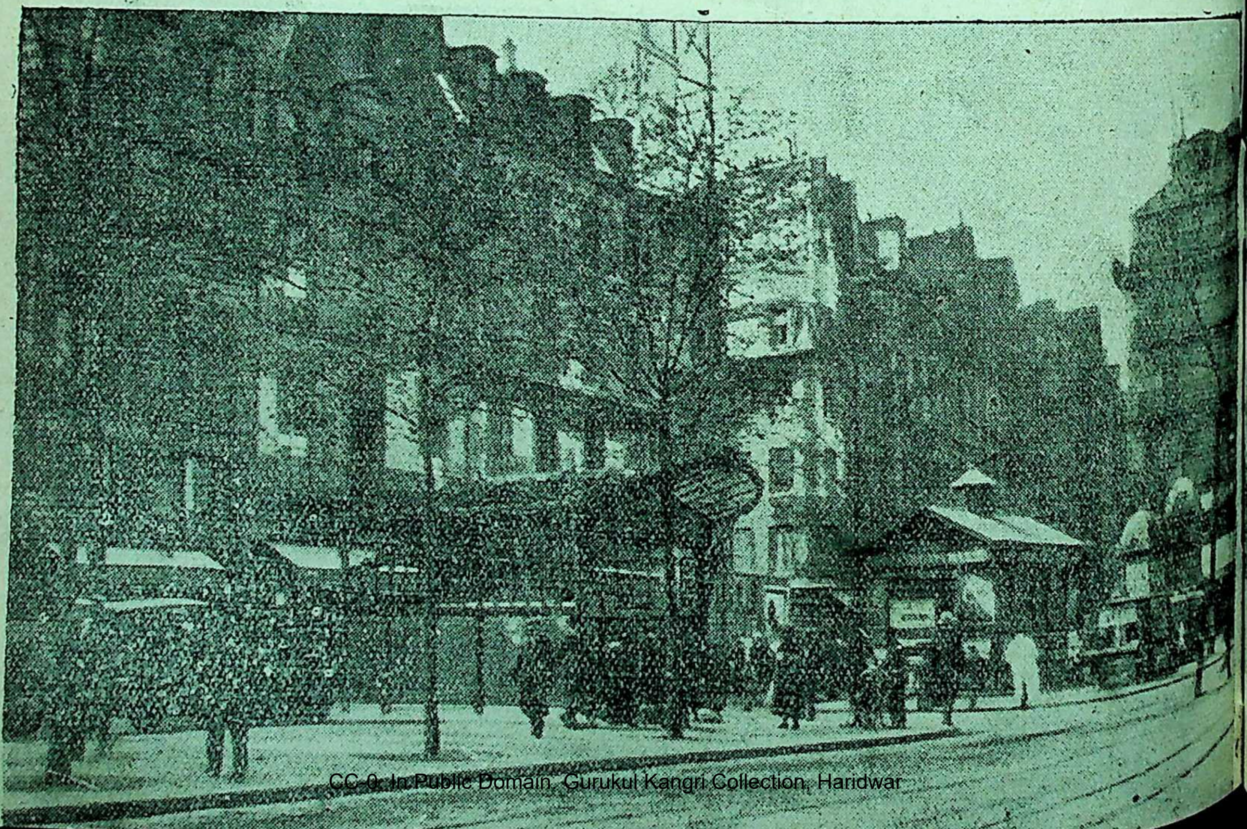

ने फ़्रांस को १८३१ में दिया था । लोग इसको कम-से-कम ६,००० बरस का पुराना बताते हैं ।

इसी चौराहे पर १७९३ ई० में गिलोटीन नाम की मशीन लगाई गई थी, जिसके तेज़ छुरे के नीचे सोलहवें लुई, उसकी रानी और अनेक मनुष्यों को सिर देने पड़े थे।

जिन डॉक्टर गिलोटीन ने इसका आविष्कार किया था, वह भी इसी के नीचे सिर देने को विवश किए गए थे।

रात को जब यह चौराहा बिजली की रोशनी से चमक उठता है, तब संसार में शायद ही ऐसा कोई स्थान हो, जो इसकी बराबरी कर सके।

शांज़ एलीज़े (Champs Elisee)

प्लास दि ला कॉंकोर्द से जो सड़क आर्क द त्रिओंफ़ तक गई है, वह शांज़ एलीज़े के बाग़ से होकर गुज़रती है।

शांज़ एलीज़े का अर्थ है 'स्वर्गीय उद्यान'। है भी यह स्वर्गीय उद्यान ही। इस बाग़ में बहुत-से थिएटर और भोजनालय हैं।

अक्सर स्कूली लड़के और लड़कियाँ यहाँ सैर करने के लिये आती हैं। स्कूल के बच्चों को उनके अध्यापक मोटर शार-ए-बाँ (Chars-a-banc) पर बिठलाकर यहाँ ले आते हैं। चित्र में लड़कों से भरे एक शार-ए-बाँ का चित्र है। यह चित्र शांज़ एलीज़े के बाग़ में लिया गया था। देखिए, बच्चे तमाशा देखने को कैसे उत्सुक हो रहे हैं!

आज इनके चित्त-विनोदार्थ यहाँ पर कठपुतली का तमाशा हो रहा है। इस तमाशे को यहाँ पेती गीनिओल (Petit Guignol) कहते हैं। सामने दर्शकों के वास्ते बेंचें बिछी हैं। नाट्यशाला के ऊपर फ़्रेंच ट्रिकलर (Tricolour) तिरंगा जातीय झंडा लगा है।

एक तमाशा क़रीब आध घंटे में ख़तम हो जाता है। उसके बाद तमाशेवाले की स्त्री और बेटी टोपी लेकर रुपए इकट्ठे करने आती हैं। यह थिएटर पहियों पर रक्खा रहता है। तमाशा ख़तम होने पर घोड़े जोतकर इसको दूसरी जगह ले जा सकते हैं।

पास ही लोगों के मन-बहलाव के लिये मेरी-गो-राउंड (Merry-go-round)-नामक हिंडोला है। ऐसे

स्कूल के बच्चों की सैर

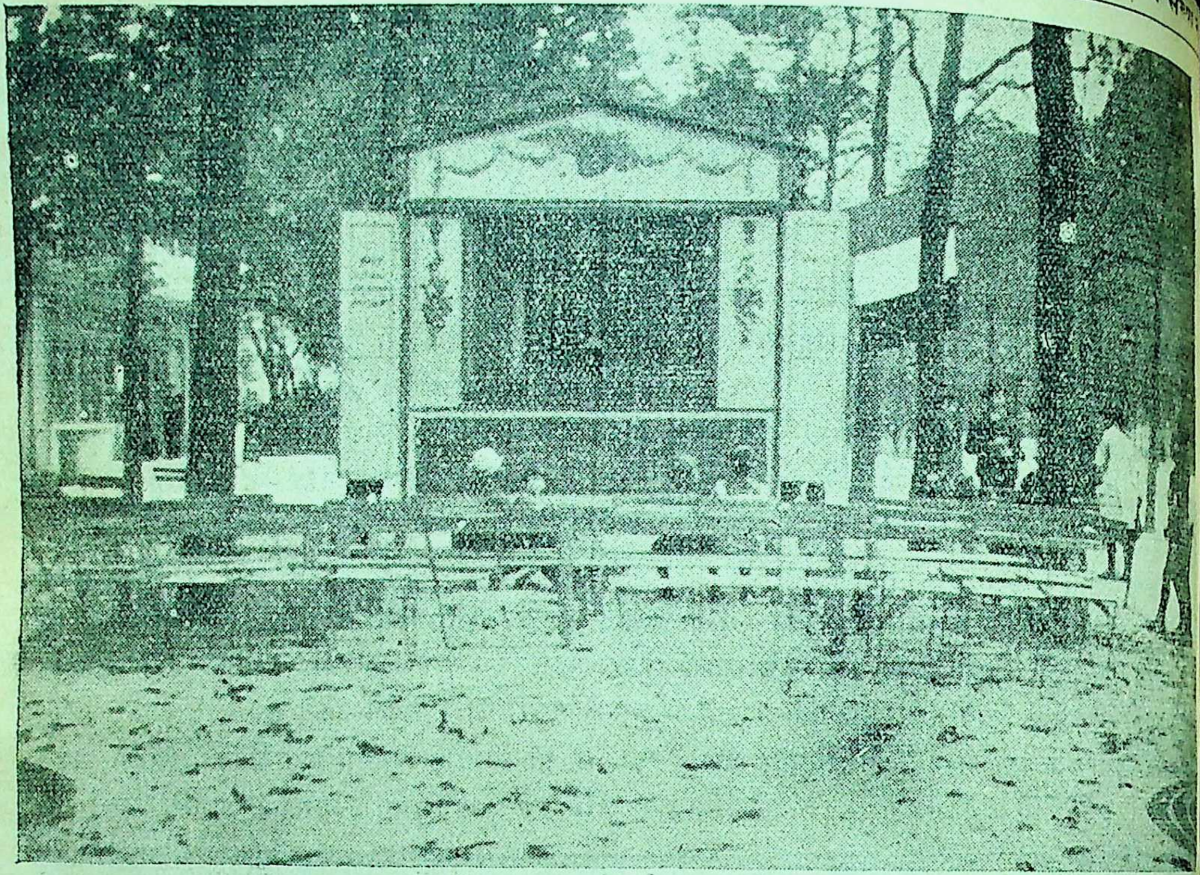

कठपुतली का तमाशा—"शांज़ एलीज़"

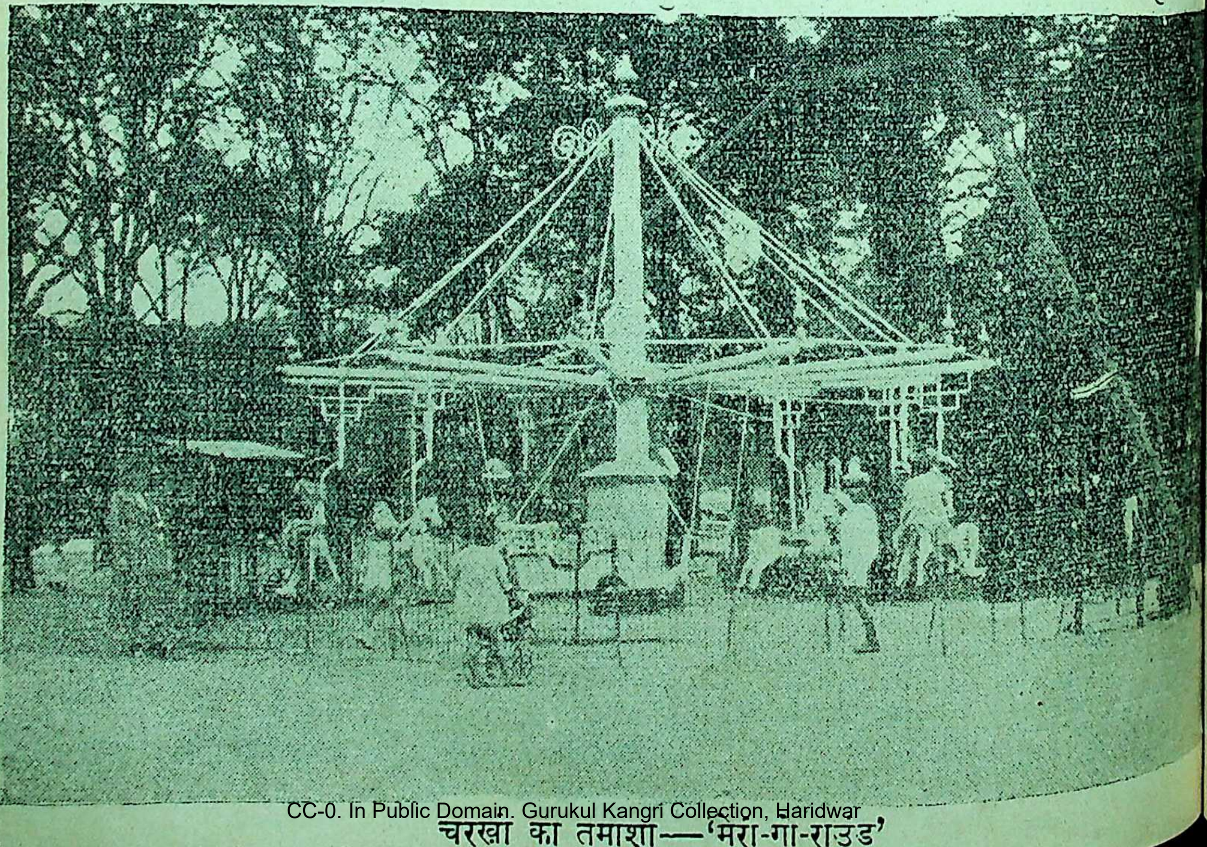

चरख़ा का तमाशा—'मेरी-गो-राउंड'

हिंडोले अक्सर हमारे यहाँ के मेलों में भी देखे जाते हैं। ये बिजली और स्टीम एंजिन की सहायता से घुमाए जाते हैं। बच्चे कैसे चाव से घोड़ों पर सवार हैं। एक छोटी लड़की एक बच्चों की गाड़ी (Perambulator) में गुड़िया को लिटाए तमाशा देख रही है।

इस उद्यान में रविवार को बहुत भीड़ होती है। सिर्फ़ इँगलैंड ही में रविवार को चारों तरफ़ शांति छाई रहती है, पेरिस तथा कॉन्टिनेंट के अन्य नगरों में तो रविवार को अनेक प्रकार के आमोद-प्रमोद के सामान मुहैया रहते हैं।

बाग़ में जगह-जगह पर फ़व्वारों में सुंदर प्रतिमाएँ लगी हुई हैं। चारों तरफ़ स्वच्छ, हरे लान रहते हैं, जिन पर दर्शकगण चाहें, तो बैठ सकते हैं। परंतु पतलून ख़राब होने के डर से अधिकतर लोग नहीं बैठते।

चित्र में माली को देखिए, किस शान से पौदों को सींच रहा है। पीछे की इमारत एक थिएटर है, जो रात को ख़ूब ही प्रकाशित रहती है।

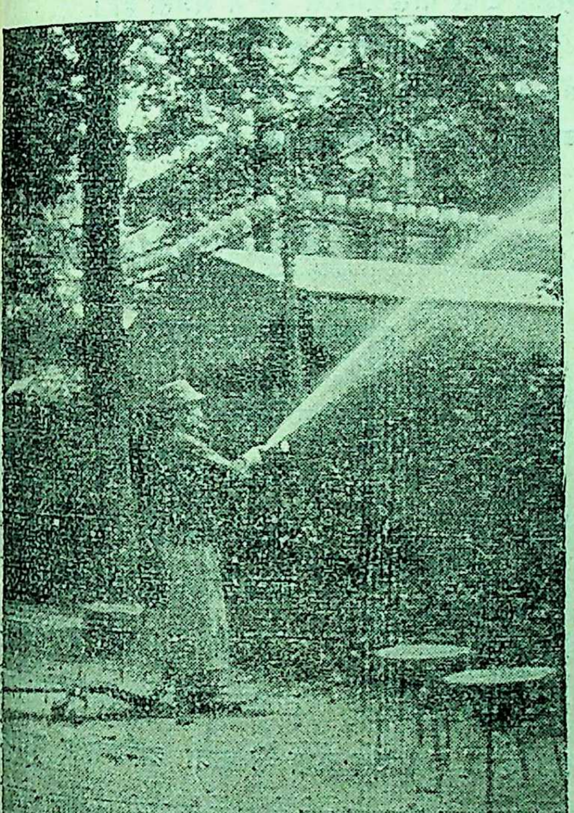

बाग़बान

यहाँ पर ग्राँ और पेती पाले नाम के दो महल हैं। ये महल १९०० की प्रदर्शिनी के वास्ते बनाए गए थे। ग्राँ पाले में अब भी नुमाइश हुआ करती है ; परंतु पेती पाले में जातीय चित्रशाला और शिल्पशाला है।

रात के समय शांज़ एलीज़े में जगह-जगह ख़ूब रोशनी होती है।

आर्क द त्रिओंफ़

शांज़ एलीज़े से होकर एक सीधा रास्ता आर्क द त्रिओंफ़ को गया है। यहाँ पर सात सड़कें आकर मिली हैं। इसलिये इस जगह का नाम 'सितारे की जगह' (Place de'Etoile) पड़ा है।

बीचोबीच में एक बहुत ही सुंदर मेहराब बनी है। यह मेहराब १८०६ ई० में नेपोलियन की आज्ञा से बनाई गई थी। संसार में यह विजय का सबसे बड़ा स्मारक है। इसकी उँचाई १६० और चौड़ाई १६८ फ़ीट है।

इस पर फ़्रेंच इतिहास के बहुत-से चित्र बने हैं। इसमें नेपोलियन के साढ़े छः सौ से भी अधिक सेनापतियों के नाम भी खुदे हैं।

नेपोलियन की मृत्यु के दिन शाम को सूर्य, शांज़ एलीज़े से, मेहराब के बीच में दिखलाई पड़ता है।

इस मेहराब की छत से शहर का बहुत ही सुंदर दृश्य दिखलाई पड़ता है।

मेहराब के नीचे अज्ञात सैनिक की समाधि है। ऊपरी पत्थर पर "विदेशी स्वयंसेवक सेनाओं के बचे हुए मनुष्यों की तरफ़ से अपने अज्ञात सैनिक साथी के वास्ते" लिखा है।

नीचे समाधि-पत्थर पर लिखा है—

"यहाँ पर फ़्रेंच सैनिक पितृभूमि के लिये मरकर शयन करता है। १९१४-१९१८।"

ऐसा कोई दिन नहीं बीतता, जब मृत सैनिकों के रिश्तेदार—अधिकतर उनकी माताएँ और प्रेमिकाएँ—यहाँ आकर समाधि पर फूल न चढ़ाते हों।

त्रोकादेरो का महल (Trocadero)

यह महल सन् १८७८ की प्रदर्शिनी के लिये बनाया गया था। इसके बनने का आधा ख़र्च पेरिसवासियों ने दिया था, और आधा तमाम फ़्रांस ने चंदा करके।

त्रोकादेरो का नाम कादीज़ (Cadiz) के एक क़िले से लिया गया है। कादीज़ स्पेन में एक नगर है, और इस क़िले को फ़्रेंच-सेनापति दांगूलेम (d' Angoleme) ने १८१३ में जीता था।

बीच की इमारत गोलाकार है। किनारों पर छोटी-छोटी दो मीनारें दो सौ सत्तर फ़ीट ऊँची हैं। बीच की इमारत से दोनों तरफ़ अर्द्धचंद्राकार अन्य कमरे बने हैं, जिनमें शिल्पकला के अनेक नमूने रक्खे हैं।

नदी और महल के बीच में एक रमणीय पार्क है।

महल के बड़े हॉल में पाँच हज़ार के लगभग मनुष्य बैठकर संगीत सुन सकते हैं।

ऐफ़िल टावर (Le Tower Eiffel)

नदी के दूसरे तट पर जगत्-विख्यात ऐफ़िल नाम के इंजीनियर की बनाई मीनार है।

यह मीनार लोहे की बनी है। नीचे इसने ढाई एकड़ ज़मीन घेर रक्खी है। इसमें तीन खंड हैं। ऊपर जाने के लिये सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। परंतु चढ़ने के लिये बिजली की लिफ़्ट का इस्तेमाल होता है। लिफ़्ट प्रत्येक खंड पर बदली जाती है।

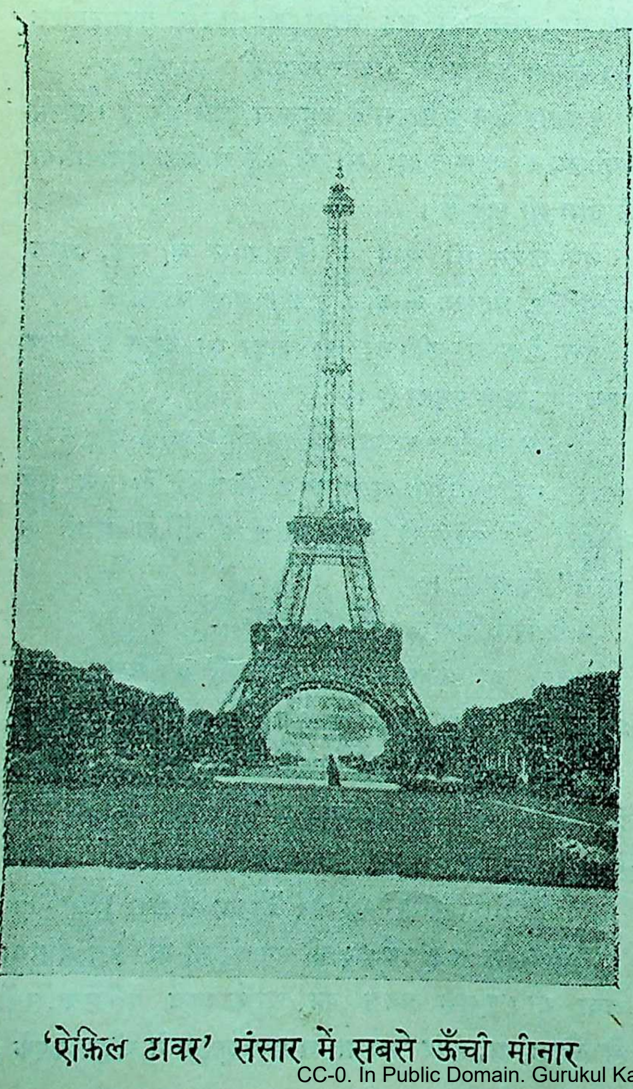

'ऐफ़िल टावर' संसार में सबसे ऊँची मीनार

सबसे ऊपर सैनिक-विभाग का रेडियो (Radio)* तारघर है। आजकल ऐफ़िल टावर से, रेडियो द्वारा, सारे संसार में समय की सूचना और संगीत भेजा जाता है।

कहते हैं, जर्मनी के भूतपूर्व क़ैसर ऐफ़िल टावर पर जर्मन पताका फहराने की प्रबल अभिलाषा रखते थे।

सबसे ऊपर के खंड से पेरिस का बहुत ही रमणीय दृश्य दिखलाई पड़ता है। ऊपर तीन-चार भोजन की दूकानें हैं। एक डाक-घर भी है।

शायद ही कोई ऐसा हो, जो यहाँ एक चित्रकार्ड (Picture postcard) ख़रीदकर अपने दोस्तों को ऐफ़िल टावर पोस्टआफ़िस से न भेजता हो।

चित्र में ऐफ़िल टावर का दृश्य शांदमार (Champs de Mars) से दिखलाया गया है। नीचे मेहराव के उस पार त्रोकादेरो का महल दिखलाई पड़ता है।

(अगली संख्या में समाप्य)

श्यामाचरण

मुख्य-मुख्य रत्न

प्राचीन काल ही से रत्नों की प्रशंसा उनकी सुंदरता तथा उनके शरीर-भूषा के काम में लाए जाने के कारण, होती चली आ रही है। इसका परिचय तत्कालीन ग्रंथों से भली भाँति प्राप्त होता है। ऐसे ग्रंथों के कर्ता अधिकतर यूनानी ही मिलते हैं। उनमें पूर्व के रत्नों का भी उल्लेख कहीं-कहीं आया है। इससे मालूम होता है कि वे लोग या तो प्राच्य देशों में रहते ही रहे हों, या यहाँ कुछ

---

* रेडियो बेतार का तार (Wireless Telegraphy & Telephony.)

काल के लिये आए हों । पूर्व से उनका संबंध इस बात से भी प्रमाणित होता है कि उस समय भारत तथा भारत के उत्तर-पश्चिम भाग में लोग इतने सुसभ्य थे कि प्रकृति के इन आश्चर्य-जनक पदार्थों की परख करना उनको अच्छी तरह मालूम था । हो न हो, यूनानियों ने इधर आकर ही यहाँ के रत्नों का ज्ञान प्राप्त किया हो ।

पहलेपहल रत्नों की प्रशंसा तथा बहुमूल्यता केवल आभूषणों में लगाए जाने के कारण ही नहीं होती थी । उनमें मंत्र और ओषधि-संबंधी बहुत-से और गुण भी बताए जाते थे । मंत्र और ओषधि में उस समय बड़ा घनिष्ठ संबंध था । तदनंतर यूनानी सभ्यता बढ़ी । उसके अनुसार वैज्ञानिक आलोचनाएँ हुई, और रत्नों के विषय में ठीक-ठीक अध्ययन होने लगा । परंतु बहुत दिनों बाद तक भी समाज की दृष्टि में रत्नों में मंत्र और ओषधिवाले गुणों का अभाव न था । यहाँ तक कि अब भी कुछ अज्ञ पुरानी चाल के लोग उनमें वे ही गुण देखते हैं ।

वैज्ञानिक निरूपण की दृष्टि से रत्नों पर बारहवीं शताब्दी में मुहम्मद बिन मंसूर ने एक पुस्तक लिखी । अपने ढंग की यह पहली पुस्तक मिलती है । यद्यपि इसके पहले भी इस विषय पर अनेक पुस्तकें लिखी गई थीं, पर उन सबमें अंध-प्रणाली का ही पूर्ण आश्रय लिया गया था । मंसूर की उक्त पुस्तक में भी प्राचीन विचारों का समावेश है, पर बहुत कम । इसके बाद बहुत दिनों तक किसी अच्छे ग्रंथ का निर्माण नहीं हुआ । १६७२ ई० में राबर्ट ब्वायल ने इस विषय पर एक पुस्तक लिखी । यद्यपि इसमें भी पुराने विचारों का नितांत अभाव नहीं है, पर वर्णित विषय पर प्रशंसनीय प्रकाश डाला गया है । इसके बाद फिर कुछ दिनों तक रत्नों पर कोई अच्छा ग्रंथ नहीं बन सका । इधर उन्नीसवीं-बीसवीं शताब्दी में अब वैज्ञानिकों की दृष्टि इधर बड़ी तेज़ी से घूमी है, और उनके परिश्रम से बहुत-सी पुस्तकें लिखी जा रही हैं ।

हमारे यहाँ इस विषय पर कोई स्वतंत्र पुस्तक नहीं है । इसलिये उसका उल्लेख नहीं किया जा सका । इसका अभिप्राय यह नहीं है कि हमारे प्राचीन पुरुषों को रत्न-संबंधी ज्ञान न था । हमारे प्राचीन साहित्य से पता चलता है कि उस समय भी हमारे यहाँ लोगों को रत्नों की परख ख़ूब थी । कालिदास, भारवि, भवभूति, बाण, माघ और हर्ष इत्यादि कवियों के अद्वितीय काव्यों में कहीं-कहीं प्रसंगानुकूल रत्नों का अच्छा प्राकृतिक वर्णन आया है ! यद्यपि ऐसा वर्णन सदा गौण रूप से ही, किसी मुख्य वर्णन की महत्ता बढ़ाने के लिये, किया गया है, पर इससे यह भली भाँति ज्ञात होता है कि उन महानुभावों को रत्न-विषयक अच्छा ज्ञान था । कौन जाने, उस समय रत्नों पर कुछ अलग ग्रंथ भी लिखे जा चुके हों ! पर अब उनमें से एक भी प्राप्य नहीं है । शोक है कि इस वैज्ञानिक युग में भी हमारी भाषा में ऐसे महत्त्व-पूर्ण विषय पर कोई ग्रंथ अब तक न बन सका । इस बात से हमें और भी लज्जा और ग्लानि का पात्र होना पड़ेगा कि इस देश ही के रत्नों से पाश्चात्यों को उनके विषय में जिज्ञासा हुई । भारत के रत्नों को देखने के पहले शायद ही योरप की किसी जाति ने उन पर कुछ विचार करने का श्रेय प्राप्त किया हो । संक्षेप में इतना तो रत्नों का ऐतिहासिक वर्णन हुआ । अब उनके गुण तथा प्रकार आदि के विषय में लिखा जाता है ।

विशुद्ध रत्नों के तीन बड़े-बड़े गुण हैं—सुंदरता, स्थिरता और दुर्लभता । इनमें से किसी भी गुण से

रहित रत्न बहुमूल्य नहीं कहा जा सकता, चाहे वह आभूषण बनाने के काम में भले ही आ जाय। उदाहरण-स्वरूप मोती को बहुमूल्य रत्नों में स्थान नहीं दिया जा सकता। तथापि उसकी गणना उन्हीं में की जाती है। कारण, उसकी अपूर्व सुंदरता उसकी स्थिरता के अभाव पर विशेष रूप से प्रभावान्वित हो जाती है।

इसमें किसी को भी संदेह नहीं हो सकता कि रत्नों को देखना बहुत सुखद है, उन्हें देखते ही नेत्रों को अपार और अभिनव आनंद होता है। खनिज पदार्थों में से जितने पदार्थों को रत्न की पदवी दी जा सकती है, उनके तीन बड़े-बड़े भाग हैं—(१) निर्मल तथा स्वच्छ (Transparent), (२) सुप्रकाश तथा किरणभेद्य (Translucent), (३) अस्वच्छ तथा किरणाभेद्य (Opaque)। इनमें से पहले प्रकार के रत्नों का मूल्य तथा प्रयोग सबसे अधिक होता है। ये भी दो भागों में विभाजित किए जा सकते हैं—(१) रंगरहित, (२) रंगदार। इन दोनों में पहले प्रकार के (रंगरहित) रत्नों में हीरे का स्थान सर्वोच्च है; क्योंकि इसमें से सदा अद्भुत आलोकमय प्रदीप्त वर्ण का विकिरण हुआ करता है, जो कि आकाश की नीलिमा से प्रज्वलित लालिमा तक के सब रंगों की छटा को विशेष रूप से झलकाया करता है। अन्य रत्न—जैसे प्रदीप्त ज़िरकन, उज्ज्वल नीलम, सफ़ेद पुखराज और स्फटिक मणि—बाह्य तथा आभ्यंतरिक प्रतिबिंबित प्रकाश से भले ही चमकीले हो जायँ, पर इनमें से कोई भी हीरे की तरह अद्भुत प्रकाश नहीं दे सकता। इस प्रकार के रत्नों में सिवा फ़ौलादी नीले रंग के (वह भी बहुत कम) और कोई भी रंग नहीं पसंद किया जाता। पांडु-पीत वर्ण तो नितांत घृणास्पद है। मणिकार के सारे गुणों की परख केवल इसी में होती है कि रत्नों के ऊपरी भाग के कणों को काटने की व्यवस्था देखकर यह निश्चित कर ले कि उनमें से कितना प्रकाश निकल सकेगा। दूसरे प्रकार के (रंगदार) रत्नों की मनोहरता उनके आभ्यंतरिक रंग पर अवलंबित है, न कि उनके काटने के ढंग पर। रंग न बहुत फीका हो, और न बहुत गाढ़ा ही। बहुत फीके रंगवाले रत्न बहुत कम पसंद किए जाते हैं। इसी तरह बहुत गाढ़े रंगवाले अधिक किरणाभेद्य तथा काले मालूम पड़ते हैं। मणिकार इन अवगुणों को इस प्रकार दूर कर सकता है कि बहुत फीके रंगवालों को बहुत भीतर से काटे, और बहुत गाढ़े रंगवालों को बहुत ऊपर से। कुछ अद्भुत रत्नों का किरणभेद्यत्व, और कुछ का रंग, भिन्न-भिन्न दिशाओं में भिन्न-भिन्न होता जाता है। लाल की प्रज्वलित लालिमा, नीलम की विशुद्ध नीलिमा, पन्ने (मरकत-मणि) की दूब के रंग की हरियाली और पुखराज का स्वर्णमय पीत वर्ण—ये विशुद्ध रंग सबसे अधिक प्रशंसनीय तथा कमनीय हैं। इन रत्नों का अपना-अपना शुद्ध वर्ण अप्राकृतिक प्रकाश में भी ज्यों-का-त्यों बना रहता है। हाँ, कुछ नीलम, लालिमा अधिक निकलने के कारण, रात को नील-लोहित प्रतीत होने लगते हैं।

उपर्युक्त रत्नों के तीन बड़े विभागों में से सुप्रकाश तथा किरणभेद्य दूसरे प्रकार का है। ऐसे रत्नों में प्रकाश तो जा सकता है, पर इनकी स्वच्छता तथा निर्मलता इतनी नहीं होती कि ये आरपार देखे जा सकें। इनमें सबसे महत्त्व-पूर्ण दूधिया रत्न (Opal) है। इसके तथा इस प्रकार के अन्य रत्नों के गुणों की प्रशंसा केवल नेत्रों के प्रति

मुख्य-मुख्य रत्न

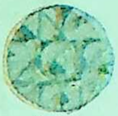
हीरा

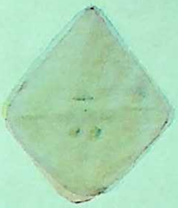
हीरा (क्रिस्टल)

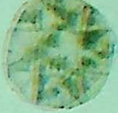
हीरा

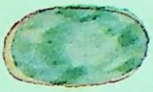
अक्वामैरिन

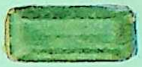
पन्ना

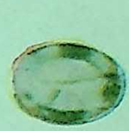
अक्वामैरिन

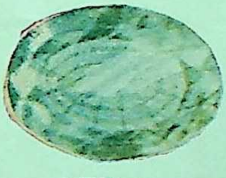
पुखराज

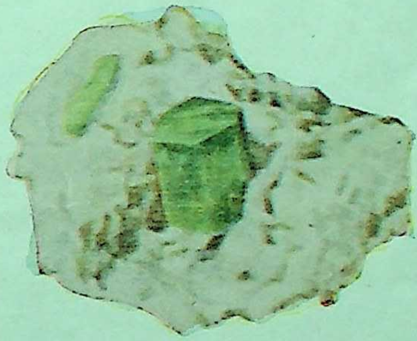
पन्ना

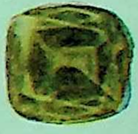
पुखराज

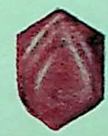
लाल (क्रिस्टल)

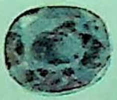
नीलम

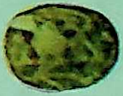
पीला नीलम (प्राच्य पुखराज)

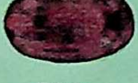
लाल

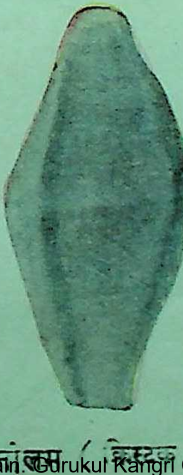
नीलम (क्रिस्टल)

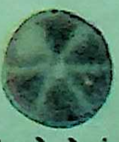
लाल (तारे के रंग का)

आनंदमय प्रभाव प्रकट करने के ही कारण है, न कि इनके आभ्यंतरिक सुरम्य रंग के कारण। इस प्रकार के अन्य रत्न—जैसे चंद्रकांत (Moonstone) और उडुकांत (Starstone) इत्यादि—भीतर से बराबर कुछ-न-कुछ प्रकाश निकाला करते हैं। पर इनसे रंग की चमक तथा विभिन्नता (Play of colour) नहीं प्रकट होती।

तीसरे प्रकार के अस्वच्छ तथा किरणाभेद्य सब रत्न साधारण होते हैं। इनमें केवल फ़ीरोज़ा (Turquoise) ही प्रसिद्ध है। इसमें ऊपर के परतों से, जो तल-भाग के बिलकुल समीप होते हैं, प्रकाश निकलता है। शोषण-शक्ति के कारण इसमें रंग आता है। देखने में बहुत गाढ़े रंगवाले रत्नों की लालिमा का कुछ और ही कारण है। उनमें जानेवाला प्रकाश पूर्णतया उन्हीं में विलीन हो जाता है: उसका कुछ भी अंश बाहर नहीं निकलता। इसीलिये ये गाढ़े काले दिखाई देते हैं। फ़ीरोज़े की जो कुछ प्रसिद्धि है, वह उसकी नीलिमा ही के कारण। हरे रंगवाले रत्नों की माँग कुछ भी नहीं है।

बहुमूल्य रत्नों के विषय में यह इष्ट तथा आवश्यक है कि वे प्रतिदिन के यंत्र-संबंधी (Technical) और रासायनिक (Chemical) प्रभाव को रोकें। थोड़े ही दिनों के बाद कोई भी रत्नों को बदल न सकेगा। बहुमूल्य रत्नों के बहुत दिनों तक रहने की आशा की जाती है। यंत्र संबंधी प्रभाव इस प्रकार पड़ता है—रेत में मिले हुए छोटे-छोटे कण उड़-उड़कर रत्नों पर पड़ते हैं। उनकी रगड़ से घिसने से बचने के लिये रत्नों को कम-से-कम उनके बराबर कड़ा अवश्य होना चाहिए। दूधिया और फ़ीरोज़े को छोड़कर सभी बहुमूल्य रत्न बालू के कण के बराबर अवश्य कठोर होते हैं। रत्नों का नरम होना ही उनको आभूषण के कार्य के लिये अयोग्य बना देता है। आभूषण बनाकर पहने जानेवाले वे ही रत्न रासायनिक क्रिया से (Chemically) कुछ विकृत होते हैं जिनमें छोटे-छोटे छिद्र होते हैं। फ़ीरोज़े को द्रव पदार्थ में—यहाँ तक कि पानी में भी—डुबाना शंकास्पद है; क्योंकि उससे नीले-हरे रंग के घृणित पीत वर्ण में परिवर्तित हो जाने की अधिक संभावना है। दूधिया, चंद्रकांत और उडुकांत रत्नों में रेत तथा चिकने पदार्थ घुस जाने से कोई विशेष हानि नहीं होती; पर होती कुछ अवश्य है। यही बात मोती के विषय में भी विशेष रूप से लागू है। उसका सौंदर्य तल-भाग के प्रकाश की अद्भुत चमक पर ही अवलंबित है। चिकनाहट लगने से उसके रंग में विकृति अवश्य आ जायगी। दूसरे, मोती नरम भी होता है। इन्हीं दोनों कारणों से वह अँगूठी इत्यादि में नहीं लगाया जाता। थोड़े दिन पहनने के बाद अँगूठी के मोती के काले हो जाने से बुरा दूसरा कोई दृश्य नहीं है।

यह बात निस्संदेह है कि मनुष्य दुर्लभ वस्तु को सुंदर वस्तु से अधिक चाहता है। सुलभ वस्तु कितनी ही सुंदर क्यों न हो, उसका उपयुक्त आदर कभी न होगा। इसी कारण संग-माहताब (Garnet) और चंद्रकांत की माँग कम है। केप-रूबी (लाल की एक क़िस्म) और ओलीवीन के लेनेवाले बहुत हैं; पर संग-माहताब को कोई पूछता भी नहीं। कहा जाता है यह तो बहुत सुलभ तथा साधारण है। सच पूछिए तो संग-माहताब प्रथम श्रेणी के रत्नों में से है। यदि उन्नत विज्ञान हीरे बनाने में सफल हो जाय, और हर हीरे का मूल्य

कुछ आने हो जायँ, तो प्राकृतिक हीरों का भी मूल्य उतना ही हो जाय, और उनको बहुमूल्य रत्नों में शायद स्थान भी न दिया जाय।

यद्यपि रत्न बहुत प्रकार के मालूम पड़ते हैं, तथापि मणिकारों की रत्न-मंजूषाओं को देखने से पता चलता है कि भिन्न-भिन्न रत्नों के प्रकार परिमित संख्या ही में हैं। हीरा, लाल, पन्ना, नीलम, मोती, दूधिया, फ़ीरोज़ा, पुखराज और नील-लोहित स्फटिक (Amethyst)—इन्हीं की अधिक माँग है। परंतु अन्य बहुत प्रकार के रत्न भी विचारणीय हैं। इनमें पेरीडॉट (Peridot) और टूरमैलीन (Tourmaline) के नाम बहुत प्रसिद्ध होते जा रहे हैं। उपर्युक्त रत्नों में पहले पाँच रत्नों की माँग सापेक्षिक रीति से स्थिर रहती है, और केवल लोगों की क्रय-शक्ति के साथ घटती-बढ़ती है। परंतु फ़ैशन की चंचलता तथा किसी महिला की विशेष रुचि के कारण कोई अज्ञात साधारण रत्न भी महत्त्व-पूर्ण हो सकता है। उदाहरण-स्वरूप कुछ ही साल पहले नील-लोहित (Violate) रंग गौरांग-महिलाओं को आभूषणों के लिये बहुत प्रिय था, और इसीलिये नील-लोहित स्फटिक स्पर्द्धा की दृष्टि से बहुत प्रयोग में लाया जाता था। परंतु फ़ैशन के परिवर्तन के साथ-साथ वह फिर भी पहले की तरह अप्रसिद्धता की खाड़ी में जा डूबा। इसी प्रकार कोई दूसरा रत्न राजकीय विवाहोत्सव के समय, उसमें प्रयुक्त होने के कारण, प्रसिद्ध हो सकता है। थोड़े समय तक उसका बड़ा प्रचार होता है; परंतु फिर बहुत कम हो जाता है।

मोती, नीलम, पन्ना, लाल और हीरा—ये प्रथम श्रेणी के रत्न गिने जाते हैं। परंतु इसके अतिरिक्त इनमें भी महत्त्वानुसार श्रेणियाँ नहीं बनाई जा सकतीं। प्रत्येक काल में बाज़ार-भाव तथा लोक-सम्मति में परिवर्तन हुआ करता है। ऐसे परिवर्तन का प्रभाव रत्नों पर भी पड़े विना नहीं रह सकता। उनका साधारण मूल्य बाज़ार के भाव पर ही निर्भर है। पर कला-संबंधी मूल्य जन-सम्मति के अधीन है।

मुख्य-मुख्य रत्नों के विषय में हमें आज इतना ही कहना है। फिर कभी हरएक रत्न पर अलग-अलग विस्तार से लिखने की चेष्टा की जायगी। शोक के साथ कहना पड़ता है कि भारतीय विद्वानों की प्रवृत्ति अभी भूगर्भ-विद्या-संबंधी (Geological) विषयों पर इतनी अधिक मात्रा में नहीं हो सकी कि वे हिंदी-साहित्य का भी क्षेत्र उनसे पूर्ण करें। आशा है, हमारे लेख से उनकी प्रवृत्ति इस ओर अवश्य होगी।

शिवमंगल पांडेय
निरंजनलाल शर्मा

पुण्यसलिला

है पुनीत कल्लोल सकल कलि-कलुष-विदारी;
करती है शुचि लोल लहर सुरलोक-विहारी।
भूरि भावमय अभय भँवर है भव-भय खोती;
अमल, धवल जलराशि समल मानस है धोती।
बहु पूत चरित विलसित पुलिन है पामरता-पुंज-यम;
है विमल बालुका पाप-कुल-कदन काल करबालसम।
वंदनीयतम वेद-मंत्र से है अभिमंत्रित;
आगम के गुणगान मंच पर है आमंत्रित।
वाल्मीकि की कांत उक्ति से है अभिनंदित;
भारत के कविता-कलाप द्वारा है वंदित।
नाना पुराण यश-गान से है महान गौरव-भरी;
सुरलोक-समागत, शुचि सलिल, भूसुर-सेवित सुरसरी।
पाहन-उर से हो प्रसूत सुरधुनि की धारा;
द्रवीभूत है परम, मृदुलता चरम सहारा।

रजलुंठित हो रुचिर रजत-सम कांतिमती है ;
असरल गति हो सहज सरलता मूर्तिमती है।
हो निम्नगामिनी कर सकी हिमगिरि-सिर ऊँचा परम ;
संगम द्वारा उसके हुआ पतित पयोनिधि पूज्यतम।
व्रज-भू व्रजवल्लभ पुनीत रस से बहु सरसी ;
है कलिंदनंदिनी अंक में उसके विलसी।
अवध अवधपति वर विभूति से भूतवती बन ;
सरयू उसमें हुई लीन करके विलीन तन।
भारत-गौरव नरदेव के गौरव से हो गौरवित ;
कर सुर-समान बहु असुर को अवनि लसित है सुरसरित।
जो यह भारत-धरा न सुरधुनि-धारा पाती ;
सुजला, सुफला, शस्य-श्यामला क्यों कहलाती।
उपवन अति रमणीय विपिन नंदनवन जैसे ;
कल्प-तुल्य पादप-समूह पा सकती कैसे।
विलसित उसमें क्यों दीखते अमरावति-जैसे नगर ;
जिनकी विलोक महनीयता मोहित होते हैं अमर।
है वह माता दयामयी, ममता में माती ;
है अतीव अनुराग सहित पय मधुर पिलाती।
भाँति-भाँति के अन्य अनूठे फल है देती ;
रुज भयावने निज प्रभाव से है हर लेती।
कानों में परम विमुग्धकर मधुमय ध्वनि है डालती ;
कई कोटि संतान को प्रतिदिन है प्रतिपालती।
भूतनाथ किस भाँति भवानीपति कहलाते ;
पामर परम पुनीत अमर-पद कैसे पाते।
आर्यभूमि में आर्य-कीर्ति-धारा क्यों बहती ;
तीर्थराज में तीर्थराजता कैसे रहती।
क्यों सदृश सती के दूसरी दुहिता पाता हिम अचल ;
क्यों कमला के बदले जलधि पाता हरि-पद-कमल-जल।
राजा हो या रंक, अंक में सबको लेगी ;
चींटी को भी नीर चतर्मुख के सम देगी।
काँटों से हो भरी, कुसुम-कुल की हो थाती ;
सभी भूमि पर सुधा-तुल्य है सुधा बहाती।
जीते है जीवनदायिनी, अमर बनाती है मरे ;
जो तरे न तारे और के, वे सुरसरि-तारे तरे।
चतुरानन ने उसे चतुरता से अपनाया ;
पंचानन ने सिर पर आदर-सहित चढ़ाया।
सहसनयन के सहस नयन में रही समाई ;
लाखों मुख से गई गुणावलि उसकी गाई।
कर मुक्ति-कामना कूल पर कई कोटि मानव मरे ;
पी-पी उसका पावन सलिल अमित अपावन हैं तरे।
फैली हिमगिरि से समुद्र तक सुरसरि-धारा ;
काम हमारा सदा साध सकती है सारा।
विपुल अमानव को वह शुचि मानव कर लेगी ;
जीवित-जाति समान सबल जीवन दे देगी।
जो बल हो, बुद्धि-विवेक हो, वैभव हो, विश्वास हो ;
तो क्यों न बनें सुर-तुल्य हम, क्यों न स्वर्ग-आवास हो।

अयोध्यासिंह उपाध्याय

आँसू

हे मेरी आँखों के आँसू, हे इस जीवन के इतिहास !
छलक पड़ो मत, रहो अंत तक उमड़े इस दुखिया के पास।
हे करुणा के चिह्न, अहो अभिलाषा की नीरव भाषा,
मत छलको, है टँगी हुई तुम पर ही मेरी शुभ आशा।
हृदय-वेदना के परिचायक, निराधार के हे आधार !
अंतस्तल को धोनेवाले, हे मेरे सुमूक उद्गार !
हे मेरी असंख्य भूलों के मूर्तिमान सच्चे अनुताप !
शीतल करते रहो सदा इस दग्ध हृदय का भीषण ताप।
हे कितनी घटनाओं की स्मृति, हे मेरी आँखों की लाज !
क्या जानें क्या तुम्हें छलकता देख कहेगा क्षुब्ध समाज।
कितने स्नेह, शोक के हो उपहार-तुल्य तुम मेरे पास;
बात-बात में मत छलको तुम, उठ जावेगा फिर विश्वास।
बल न उठे जिससे सहसा वह बना रहे सुखदायक शांत—
रक्खा है प्रज्वलित प्रेम को तुममें डुबा अहो उद्भ्रांत !
बार-बार इस नीरस जग को अपना रूप न दिखलाओ,
उषाकाल के तारागण-से इन नयनों में छिप जाओ।
हे मेरे इस जीवन-भर की कठिन कमाई, छिपे रहो,
आवश्यकता नहीं तुम्हारी आई भाई, छिपे रहो।
नहीं सफ़ाई देने की बारी आई है, छिपे रहो,
नहीं झलक अब तक प्रियतम ने दिखलाई है, छिपे रहो।
यों ही ढलक पड़ोगे तो मिट्टी में मिल जाओगे यार !
"लोचन जल ! रहु लोचन कोने", यही विनय है वारंवार।

मोहनलाल महत्तो गयावाल "वियोगी"

मालिक और मज़दूर

[चित्रकार—श्रीयुत गुरुस्वामी]

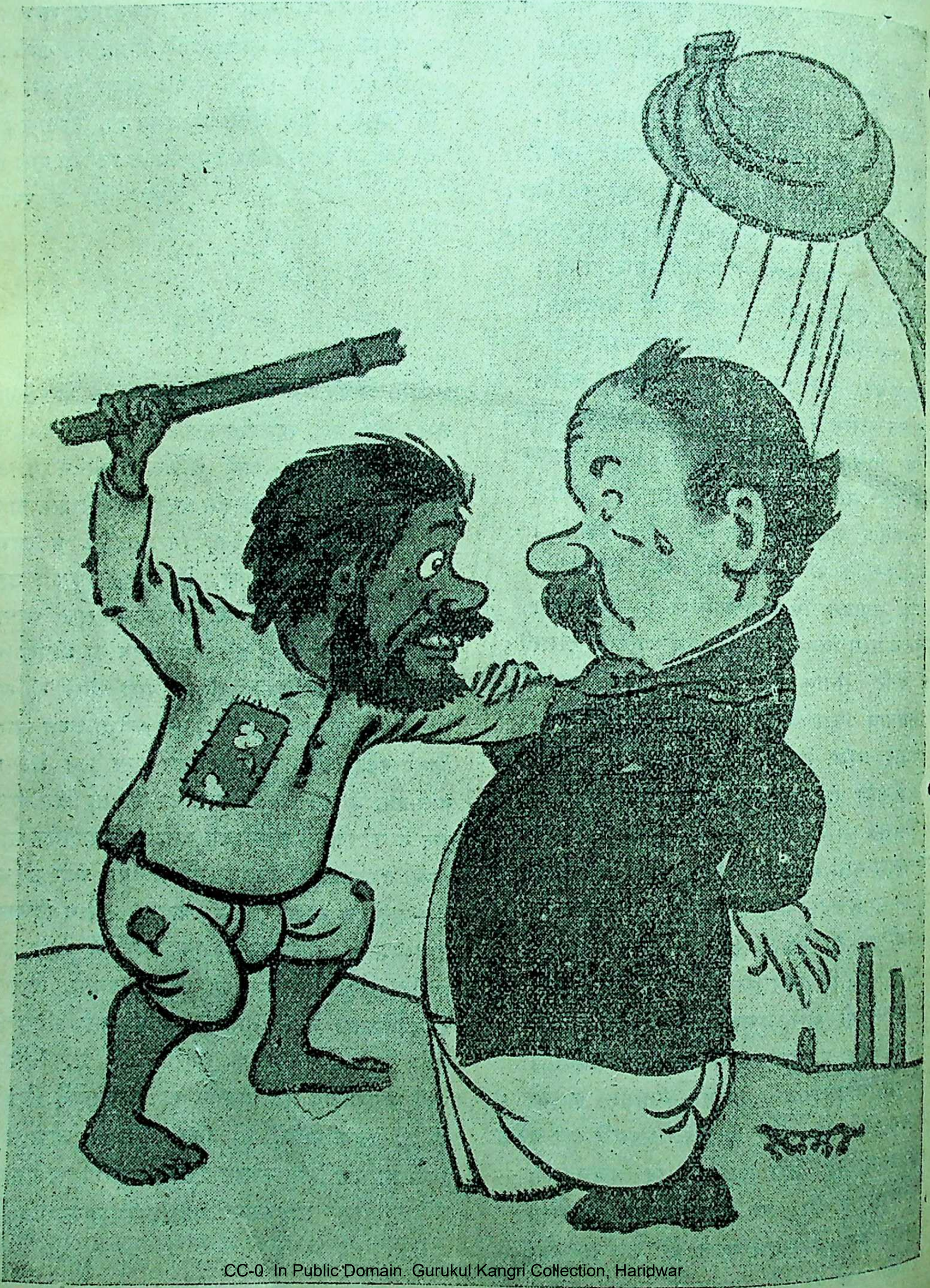

अमेरिका में पत्र-संपादन की शिक्षा

> Let me make the Newspaper and I care not who makes the religion or the law.
>
> — Wendell Phillips.

समाचारपत्रों के संपादन करने की कला भी उसी प्रकार महत्त्व की है, जिस प्रकार डॉक्टर या वकील बनने की कला। परंतु आश्चर्य है कि हमारे यहाँ, भारतवर्ष में, इस कला को सीखने के लिये, न कोई स्कूल है, न कॉलेज! जिस प्रकार डॉक्टरी या वकालत की शिक्षा देने के लिये देश में अनेक कॉलेज हैं, उसी प्रकार समाचारपत्र-संपादन-कला के लिये न तो शिक्षा-विभाग ही ने कोई प्रबंध किया है, और न देश के धनी पुरुषों ने (जिनके दान से प्रत्येक प्रांत में, अनेक कॉलेज और स्कूल खुले हैं) इस शिक्षा की ओर ध्यान दिया है। हमारी सरकार को डॉक्टरों, वकीलों, इंजीनियरों और क्लर्कों इत्यादि की ज़रूरत है, इसलिये उसने इन कलाओं की शिक्षा का उचित प्रबंध कर रक्खा है। परंतु उसे संपादकों की आवश्यकता नहीं, इसीलिये उसने यदि संपादन-कला की शिक्षा का कोई प्रबंध नहीं किया, तो कुछ आश्चर्य की बात नहीं है। परंतु देश के शिक्षित-समाज और दानी पुरुषों का इस ओर ध्यान न जाना बड़े दुःख की बात है।

अमेरिका में, अन्य आवश्यक कलाओं की शिक्षा के समान ही, संपादन-कला की शिक्षा देना भी आवश्यक समझा जाता है। अमेरिका में जो लोग संपादन-कला की शिक्षा प्राप्त करके उसे अपनी जीविका का साधन बनाना चाहते हैं, उन्हें नियमानुसार कॉलेजों में उसी प्रकार शिक्षा प्राप्त करने के लिये परिश्रम करना पड़ता है, जिस प्रकार डॉक्टरी या वकालत के लिये। अमेरिका में कहावत है कि प्रत्येक सभ्य देश में जितनी आवश्यकता 'तलवार' की है, उतनी ही 'लेखनी' की भी। यदि तलवार के आतंक से मनुष्यों को भय दिखाकर उनके शरीर पर शासन किया जा सकता है, तो लेखनी द्वारा ज्ञान प्राप्त कराकर उनके हृदय पर शासन किया जा सकता है।

प्राचीन काल में वहाँ भी संपादन-कला सीखने की आवश्यकता नहीं समझी जाती थी। समाचारपत्रों के ऑफ़िसों में प्रायः इस प्रकार के नोटिस टँगे हुए देख जाते थे—"कॉलेज के ग्रेजुएट या स्कूल में पढ़े हुए भाड़े के टट्टुओं को निवेदनपत्र नहीं भेजना चाहिए।" परंतु अब यह दशा वहाँ नहीं रही। जिस प्रकार एक हृष्ट-पुष्ट मनुष्य सैनिक बनने की योग्यता रखते हुए भी परेट पर क़वायद सीखे और आज्ञा-पालन की शिक्षा पाए बिना कभी योग्य सैनिक नहीं बन सकता, उसी प्रकार चाहे जितना सुशिक्षित मनुष्य हो, संपादन कला की शिक्षा पाए बिना योग्य संपादक नहीं बन सकता। स्कूल अथवा कॉलेज में प्राप्त की हुई शिक्षा अथवा अनुभव संपादन-कला के लिये काफ़ी नहीं है!

कुछ लोग यह भी कहते हैं कि संपादक बनाए नहीं जा सकते : वे तो 'जन्म से ही उत्पन्न' होते हैं। परंतु अब इस बात को सुनकर विद्वान् लोग हँसते हैं। हाँ, यह सच है कि किसी ख़ास काम के करने का अंकुर कुछ लोगों में जन्म से ही होता है; परंतु जिस प्रकार बीज को जल से सींचकर पल्लवित करने से वही एक विशाल वृक्ष बन जाता और फलने-फूलने लगता है, वैसे ही जन्म से ज्ञानरूपी अंकुर होने पर जब विद्यारूपी जल से सींचा जाता है, तब वह भली भाँति फलता-फूलता है। तात्पर्य यह कि जिन लोगों के हृदय में जन्म से ही संपादन कला का भाव मौजूद है, वे शिक्षा द्वारा अधिक योग्य बनकर संपादन-कार्य को अधिक उत्तमता और योग्यता से कर सकते हैं।

अमेरिका में समाचारपत्र और उनका संपादन करने की कला में अब बहुत उन्नति हो चुकी है। वहाँ समाचारपत्रों की संख्या ही नहीं बढ़ी है, बरन् उनके आकार-प्रकार, विषय, शीघ्रता-पूर्वक समाचारों के संग्रह करने का ढंग, छपाई, सफ़ाई, चित्र आदि अनेक बातों में अन्य उन्नतिशील कलाओं के समान ही उन्नति हुई है। इसी कारण वहाँ समाचारपत्रों में प्रतियोगिता का भाव भी खूब बढ़ गया है।

वहाँ प्रायः प्रत्येक विषय के समाचारपत्र अलग-अलग प्रकाशित होते हैं। यदि एक ही समाचारपत्र में कई विषय हुए, तो उसके लिये अलग-अलग संपादक भी रक्खे जाते हैं। खेल-कूद के विषय को लिखनेवाला लेखक

प्रायः राजनीतिक विषय पर अपनी लेखनी नहीं चलाता; और जो लोग व्यवसाय-वाणिज्य पर लेख लिखते हैं, वे सामाजिक विषयों पर लेख लिखने का साहस बहुत कम करते हैं। प्रत्येक मनुष्य अपने ख़ास कार्य-क्षेत्र में उच्च-से-उच्च कार्य करने का प्रयत्न करता है। स्कूल अथवा कॉलेज की साधारण शिक्षा समाप्त करके समाचारपत्र-संपादन-कला सीखने के इच्छुक लोग फिर उन कलाओं में शिक्षा पाने के लिये जाते हैं, जो इस काम के लिये खोले गए हैं। संपादन-कला की शिक्षा के लिये अमेरिका में १०७ कॉलेज और विश्वविद्यालय हैं। इनमें से २८ विश्वविद्यालय और १७ कॉलेज गवर्नमेंट के हैं; बाक़ी संस्थाएँ म्युनिसिपलिटियों या धनी लोगों की सहायता से चलती हैं। इलिनोवस-युनिवर्सिटी में इस कला की शिक्षा के लिये चार वर्ष का कोर्स रक्खा गया है। इस कोर्स में भिन्न-भिन्न विषयों की पढ़ाई का प्रबंध किया गया है। विद्यार्थियों को कोई ख़ास विषय लेने के लिये मजबूर नहीं किया जाता। जिस विषय की जिसे रुचि हो, उसी विषय को वह ले सकता है। साधारणतः दो तरह के कोर्स हैं। जनरल और टेकनिकल। जनरल कोर्स में, अँगरेज़ी भाषा, विदेशी भाषाएँ, अर्थ-शास्त्र, राज्य-शासन, समाज-शास्त्र और दर्शन हैं। टेकनिकल कोर्स के चार विभाग किए गए हैं। आरंभिक विभाग में, **"समाचारपत्र लिखना"**—अर्थात् रिपोर्ट कैसे लेना, किस प्रकार और किस तरह के समाचारों का संग्रह करना बताया जाता है। माध्यमिक विभाग में, रिपोर्टों को बृहत्‌रूप में, और महत्त्व के विषयों पर लिखना सिखाया जाता है। संपादकीय नोटों के लिखने का कार्य भी इसी विभाग में सिखाया जाता है। शिक्षक लोग विद्यार्थियों से पूछते हैं कि कल रात को क्या-क्या घटनाएँ हुईं, और कल सबेरे क्या-क्या कार्य कहाँ-कहाँ होनेवाले हैं, "हाई स्कूल-टीचर्स-कानफ़्रेंस" में कल कौन-कौन-से प्रस्ताव पास हुए, गवर्नर ने व्यवस्थापिका-सभा को क्या संदेश भेजा, व्यवस्थापिका-सभा में, किस किस विषय के प्रस्ताव पास हुए। सामयिक विषयों पर अध्यापक लोग इसी प्रकार के प्रश्न करते हैं; और विद्यार्थी लोग अपने-अपने विचारानुसार उन पर लेख लिखते हैं। फिर अध्यापक लोग उन लेखों को शुद्ध करके विद्यार्थियों को उनके लेखों की त्रुटियाँ बताते हैं। त्रुटियाँ बताने का ढंग भी बड़ा अच्छा है। अध्यापक लेखक से पूछता है कि तुम्हारे लेख में किस बात की कमी है? इस लेख के लिखने में सब प्रकार की जानकारी प्राप्त की है या नहीं? विषय-प्रतिपादन का ढंग अच्छा है या नहीं? विषय का उठान ठीक है या नहीं? विषय के अंत में जिस बात का विश्वास दिलाना चाहते हो, वह विश्वास उस लेख से पाठकों में उत्पन्न होगा या नहीं। लेख की भाषा पढ़ने योग्य, सरल, सुगम है या नहीं? इस प्रकार के प्रश्नोत्तर से जो कमी अथवा त्रुटि लेख में होती है, वह तुरंत शिक्षक विद्यार्थी को अनुभव द्वारा स्वतः सिद्ध करके बता देता है। यदि विद्यार्थी का लेख बिलकुल लचर, अशुद्ध और सारहीन हुआ, तो शिक्षक फिर उसे नए सिरे से लिखने की आज्ञा देता है। इस प्रकार क्रमशः अभ्यास, उद्योग और प्रयत्न करने से रिपोर्टों और नोटों के लिखने की योग्यता आ जाती है।

जब विद्यार्थी को साधारणतः लिखना आ जाता है, तब लेखों के हेडिंग लिखने का ढंग सिखाया और प्रूफ़-संशोधन का कार्य बताया जाता है। इसके बाद फिर संपादन करने के कार्य को सिखाने का अवसर आता है; क्योंकि यह कोर्स सबसे अधिक कठिन है। यह कार्य सीखने में विद्यार्थी को इतिहास, राजनीति-विज्ञान, समाज-शास्त्र आदि के ज्ञान का उपयोग करना पड़ता है। संपादकीय लेखों का लिखना सीखनेवाले को भाषा की गंभीरता, प्रभावशालिता और लेखनशैली की स्पष्टता की ओर विशेष रूप से ध्यान देना पड़ता है। अपने विचार पाठकों के हृदय में जाकर प्रभाव डालें, इस उद्देश्य से विद्यार्थी को अपने लेखों में कभी-कभी मनोहर शब्दों के नमक, मिर्च, मसाले का उपयोग करने की भी आवश्यकता पड़ती है। लेख लिखते समय पाठकों की रुचि और देश-काल का ध्यान रखना पड़ता है। अतएव विद्यार्थी को यदि प्रत्येक विषय का विशेष ज्ञान न हो, तो भी साधारण ज्ञान अवश्य होना चाहिए। शिक्षक प्रत्येक वाक्य ध्यान-पूर्वक पढ़कर विद्यार्थियों के लिखे हुए लेखों की जाँच करता है। वह लेखनशैली की भूलें, विषय-प्रतिपादन की त्रुटियाँ, घटनाओं के अधूरे होने की बात समझाता और सिद्धांतों की गंभीरता की ओर ध्यान दिलाता है।

यह बात सब विद्वानों ने स्वीकार कर ली है कि भविष्य की बात जानने के लिये भूत समय की बात

जानना बहुत आवश्यक है। जो मनुष्य अपने व्यवसाय का पूर्ण ज्ञाता है, वह अपने व्यवसाय के इतिहास, उसमें सफलता प्राप्त करने के रहस्य और असफलता के कारणों को पूर्ण रूप से जानता है। इसीलिये संपादन-कला के इतिहास का अध्ययन करने से विद्यार्थी को इस बात का पता लग जाता है कि इस व्यवसाय में सफलता प्राप्त करने के लिये किन-किन बातों का जानना ज़रूरी है। अतएव इलिनयस-विश्वविद्यालय के संपादन-कला-विभाग में विद्यार्थियों को पुराने समाचारपत्रों की कॉपियाँ पढ़ने को दी जाती हैं। इन पुराने पत्रों को पढ़कर विद्यार्थी यह जान लेता है कि इस कला का विकास किस प्रकार हुआ। सचित्र समाचारपत्रों को निकालना, टाइप का सुधार, पेपर के मेक-अप की उन्नति आदि अनेक बातों का अनुभव विद्यार्थी को प्राप्त होता है। पुराने समाचारपत्रों का अध्ययन करने से इस बात का भी पता चलता है कि अमुक पत्र के संपादक को किन-किन कारणों से सफलता मिली; और अमुक समाचारपत्र के संपादक की निष्फलता का कारण क्या था।

अंतिम कोर्स 'संपादकीय प्रबंध' सीखना है। संपादक का काम केवल इतना ही नहीं है कि वह लेख या नोट लिख ले, अथवा बाहर से आए हुए समाचारों या लेखों को छाप दे। संपादक में प्रबंध करने की भी योग्यता होनी चाहिए। उसे अपने स्टाफ़ पर हर वक़्त निगाह रखनी पड़ती है कि कोई सहकारी संपादक पत्र की पॉलिसी के प्रतिकूल किसी लेख या समाचार को तो छपने के लिये नहीं भेजता है। जनता के विचारों की उन्नति करना, संपादकीय विभाग और संवाददाता-विभाग का संगठन करना और पत्र का सर्वांग-सुंदर बनाना इत्यादि प्रबंध से संबंध रखनेवाली बातों का ज्ञान प्राप्त करना भी उसके लिये बहुत ज़रूरी है। ये बातें लेखन-शैली का काम सीखने से भी कठिन हैं। अतएव विद्यार्थी को इन बातों की शिक्षा ख़ास तौर पर दी जाती है।

उपर्युक्त चारों प्रकार के कोर्स के साथ-साथ संपादन-कला-संबंधी मुख्य-मुख्य ग्रंथों का अध्ययन भी करना पड़ता है। बड़े-बड़े समाचारपत्रों के कार्यालयों में जाकर प्रत्यक्ष कार्य करने की शैली देखना और प्रसिद्ध-प्रसिद्ध समाचार-पत्रों के संपादकों के संपादन-कला संबंधी भाषण सुनना भी ज़रूरी रक्खा गया है। सामयिक बातों की जानकारी प्राप्त करने के लिये प्रत्येक विद्यार्थी को एक दैनिक पत्र अवश्य ख़रीदना पड़ता है। इसके सिवा युनिवर्सिटी की ओर से देश के उत्तमोत्तम बीस समाचारपत्र और पढ़ने को मिलते हैं। युनिवर्सिटी के पुस्तकालय में तीन लाख तीस हज़ार पुस्तकें, पुराने समाचारपत्र, मासिक पुस्तकें और हस्त-लिखित पोथियाँ मौजूद हैं। विद्यार्थी अपनी रुचि के अनुसार पुस्तकालय की इस सामग्री का अध्ययन कर सकता है। वर्तमान समय के सामान्य और विशेष विषयों की ग्यारह सौ मासिक पत्रिकाएँ विद्यार्थियों के पढ़ने के लिये सदैव विश्वविद्यालय में मौजूद रहती हैं।

साल के अंत में विद्यार्थियों की परीक्षा होती है। परीक्षा का क्रम यह रक्खा गया है कि एक फ़र्ज़ी दैनिक पत्र, जिसमें आठ पृष्ठ अर्थात् चालीस कालम होते हैं, सप्ताह-भर में संपादन करने के लिये विद्यार्थी को दिया जाता है। विद्यार्थी पत्र संपादन का सब प्रबंध स्वयं कर लेते हैं। उच्च कक्षा के विद्यार्थी, एक संपादकीय बोर्ड बनाकर, निम्न कक्षा के विद्यार्थियों के सहयोग से (अर्थात् उन्हें संवाददाता बनाकर) पत्र-संपादन करते हैं। नियत समय पर विद्यार्थी लेख लिखना आरंभ करते और चार बजे तक सब काम ख़तम कर देते हैं। संवाददाता परीक्षार्थी को बाहर से समाचार ला कर देते हैं। परीक्षार्थी उन समाचारों को अपनी भाषा में लिख लेता है। जब पूरा समाचारपत्र तैयार हो जाता है, तब उसे टाइप-राइटर द्वारा टाइप करके प्रधान संपादक की मेज़ पर पहुँचा देते हैं। प्रधान संपादक उसे देखकर आवश्यक संशोधन करने के बाद परीक्षक के हाथ में देता है। परीक्षक-लोग विद्यार्थियों को समय का स्मरण कराते रहते हैं। प्रधान संपादक कहता रहता है कि "अब केवल १५ मिनट और बाक़ी हैं।", "अब सिर्फ़ १० मिनट रह गए हैं।" पत्र मिलते ही परीक्षक उसे प्रेस में छपने को भेज देता है। यह भी देखा जाता है कि किसका पत्र सबसे पहले छपकर प्रकाशित हो गया।

उच्च कक्षा के परीक्षार्थी, जो अंतिम परीक्षा में बैठते हैं, निम्न कक्षा के विद्यार्थियों को लेकर अपने पत्र-संपादन-विभाग का संगठन करते हैं। पत्र में सब प्रकार के विषय आ जाने के लिये वे प्रत्येक भिन्न-भिन्न विषय के जानकार एक-एक

विद्यार्थी को अपने स्टाफ़ में ले लेते हैं। वे विद्यार्थी अपने-अपने विषय के समाचार, नोट आदि लिखकर देते जाते हैं। परीक्षार्थी उन समाचारों, लेखों और नोटों द्वारा अपने पत्र को सुसज्जित करता है। कहानियों का लेखक अपनी कहानियाँ लिखकर देता और संपादक उनमें उचित संशोधन करके अपने पत्र में सम्मिलित कर लेता है। यह संशोधन ही उसकी योग्यता का दिग्दर्शन कराता है। समाचारों का चुनाव और संशोधन, संपादकीय नोटों और लेखों का लिखना, बाहर से आए हुए लेखों और कहानियों का संशोधन तथा शीघ्र-से-शीघ्र समाचारपत्र का प्रकाशन इत्यादि बातों से ही परीक्षा का परिणाम देखा जाता है। उपर्युक्त बातों में जैसी योग्यता विद्यार्थी प्रकट करता है, उसी पर विचार करके पास या फ़ेल का निर्णय किया जाता है।

कोर्स का अध्ययन समाप्त करने के पश्चात् उच्च कक्षा के विद्यार्थी "संपादकीय कार्य में व्यक्तित्व का स्थान", "संपादकों के पतन का कारण", "समाचारपत्रों के द्वारा राजनीतिक संस्थाओं का विकास", "देश के जीवन में साप्ताहिक समाचारपत्रों का स्थान", "दैनिक पत्रों में प्रकाशित समाचारों का देश पर प्रभाव" इत्यादि विषयों पर लेख लिखते और विद्वान् अध्यापकों तथा प्रसिद्ध-प्रसिद्ध संपादकों से उनका संशोधन कराते हैं। उपर्युक्त विषयों पर जो लेख अथवा निबंध लिखे जाते हैं, वे बड़े गंभीर होते हैं। उनके लिखने के लिये महीनों का समय दरकार होता है। बड़े विचार और सावधानी के साथ ऐसे लेख लिखे जाते हैं। उनके लिखने में खोज करनी और मालिकत लाना पड़ता है।

'न्यूज़पेपर राइटिंग'-क्लास में, परीक्षार्थियों से प्रायः इस प्रकार के प्रश्न किए जाते हैं—

१—कहानी लिखने का एक प्लॉट (ढाँचा) तैयार करो; और यह बताओ कि प्रत्येक अध्याय में कौन-कौन-सी बातें काम में लाओगे।

२—एक पैराग्राफ़ लिखो, जो लेख की भूमिका हो। अमुक विषय पर लेख लिखने के लिये लेख के आरंभ में परिचय के तौर पर क्या लिखोगे।

३—विस्तारपूर्वक प्रूफ़ का संशोधन करो (एक प्रूफ़ का काग़ज़ संशोधन के लिये परीक्षार्थी को दिया जाता है)।

४—संक्षेप में, परंतु स्पष्ट रूप से, अपने विचारानुसार, यह बताओ कि संपादन कार्य करनेवाले लोगों में किस प्रकार की ख़ास योग्यता होनी चाहिए।

५—अमुक कॉलेज में अँगरेज़ी साहित्य पढ़ाने के लिये एक अध्यापक नियत करने की जो स्कीम विचाराधीन है, उस पर कॉलेज के अधिकारियों से भेंट करके एक लेख लिखो, जो पाँच सौ शब्दों में हो।

अंतिम प्रकार के प्रश्न का उत्तर लिखने के लिये परीक्षार्थियों को परीक्षा-गृह के बाहर जाकर उस कॉलेज के अधिकारियों अथवा उस काम से अनुराग रखनेवाले विद्वानों से मिलने की आज्ञा दी जाती है।

संपादन-कला के स्कूल अथवा कॉलेजों में पढ़ाने के लिये, जो शिक्षक अथवा अध्यापक रक्खे गए हैं, वे सब प्रायः अनुभवी संपादक हैं। वे लोग केवल कॉलेज के पदवीधर ही नहीं हैं, उन्होंने स्वयं बड़े-बड़े समाचारपत्रों में वर्षों तक संपादकीय कार्य किया है। उन्हें संपादन-कला का पूरा अनुभव है। इलिनयस-विश्वविद्यालय में संपादन-कला की शिक्षा के लिये जो विभाग है, उसके मुख्य अधिकारी प्रोफ़ेसर फ़्रैंक डब्ल्यू० स्काट हैं। आप विद्वान् ही नहीं, अनुभवी संपादक भी हैं। आपने "शिकागो डेली ट्रिब्यून" में संपादन का कार्य करके संपादन-कला का अनुभव प्राप्त किया है। इसके सिवा आप युनिवर्सिटी की और भी कई पत्रिकाओं के संपादक हैं। इस विश्वविद्यालय में आपके साथ जो और अध्यापक काम करते हैं, उनमें से कुछ अब भी किसी-न-किसी पत्र का संपादन करते हैं। ये लोग संपादन-कला की जीती-जागती मूर्तियाँ हैं। इनमें विद्युत्-शक्ति के समान कार्य करने की अथक शक्ति पाई जाती है।

अमेरिका में यह पुरानी कहावत है—प्राचीन समय में जब किसी पत्र-संपादक से पूछा जाता था कि कल प्रातःकाल प्रकाशित होनेवाले पत्र के लिये आपको किस सामग्री की आवश्यकता है, तो उत्तर दिया जाता था कि क़लम, दावात, मेज़, कुछ काग़ज़ के टुकड़े, और एक प्याला शराब। परंतु अब यह स्थिति नहीं है। अब वहाँ पत्र-संपादन का कार्य आरामतलब, शराबी अथवा छिछोरे लोग नहीं कर सकते। अब तो ईमानदारी के साथ कठिन परिश्रम करनेवाले विद्वान् लोग ही यह काम कर सकते हैं। वर्तमान समय में यह व्यवसाय चलाने के लिये विद्वत्ता के अतिरिक्त बहुदर्शिता, उ

प्रतिभा और अत्यंत विवेक की आवश्यकता है; क्योंकि संसार के संचालन की बागडोर संपादकों के ही हाथ में है। संपादन-कार्य करने की इच्छा रखनेवाले मनुष्य में यदि मस्तिष्क नहीं है, लिखने और भाव व्यक्त करने की शक्ति नहीं है, काम करने की प्रबल इच्छा नहीं है, तो केवल कॉलेज की शिक्षा, उसे योग्य संपादक नहीं बना सकती। जो लोग कॉलेज की शिक्षा समाप्त करके, पूर्ण रूप से, वैज्ञानिक ढंग पर, इस कला की शिक्षा को प्राप्त कर लेते हैं, वे अवश्य इस कार्य में सफलता प्राप्त करते हैं।

सूर्यकुमार वर्मा

वनस्पति-निरीक्षण

हिंदू-शास्त्रों के अनुसार ब्रह्माजी ने जंगम सृष्टि से पहले स्थावर सृष्टि उत्पन्न की है। डारविन आदि पाश्चात्य वैज्ञानिकों के मत से भी इस बात की पुष्टि होती है। जैसे अन्य छोटी-से-छोटी और बड़ी-से-बड़ी बातों में प्रकृति-देवी की कार्यदक्षता प्रकट होती है, वैसे ही यह बात भी एक बड़े सिद्धांत पर स्थित है। प्रकृति ने नियम रक्खा है कि किसी भी प्राणी की उत्पत्ति से प्रथम ही उसके भोज्य पदार्थ का समुचित प्रबंध हो जाना चाहिए। जंतुओं का निर्वाह वनस्पतियों पर होता है, इसलिये जंतुओं की सृष्टि से पहले ही वनस्पतियों की उत्पत्ति सर्वथा नियमानुकूल है।

कहा जा सकता है कि व्याघ्र-सिंहादि कतिपय वन्य पशु घास-पात नहीं खाते; वे मृगादि जंतुओं के मांस पर गुज़र करते हैं। किंतु मृगादि के शरीर घास-पात खाकर ही बने हैं, इसलिये व्याघ्रादि जंतुओं के आहार का मूल-रूप वनस्पतिवर्ग ही है। इस प्रकार यह बात निर्विवाद रूप से कही जा सकती है कि जंतुओं का जीवन वनस्पतिवर्ग पर ही अवलंबित है।

अब एक बहुत बड़ा प्रश्न यह उपस्थित होता है कि क्या परमात्मा ने वनस्पतियों की सृष्टि केवल इसलिये की है कि वे जंतुओं के काम आवें? क्या हमारे पेड़-पौधों को हरदम हमारे सामने हाथ जोड़कर यही निवेदन करते रहना चाहिए कि प्रभो, हम आपके हैं; हमारी सृष्टि आप ही के लिये हुई है; हमें अपने जीवन का कोई मोह नहीं; हम अपनी चेतना-शक्ति को भी आपके हित के लिये कुछ नहीं समझते; आप जब चाहें, हमें नोचते-खसोटते और काटते रहें? विचार करने पर हमें प्रतीत होगा कि वास्तव में यह बात नहीं है। यदि यह बात एक बार मान ली जाय, तो फिर हमको यह कहने में भी कोई संकोच न होगा कि परमात्मा ने मछलियों, मृगों आदि की सृष्टि भी मनुष्य ही के लिये की है। तब तो हम यह भी कह सकेंगे कि निम्न श्रेणी के मनुष्यों की सृष्टि भी उच्च श्रेणी के मनुष्यों के लिये हुई है। उस दशा में फिर यही साधारण सिद्धांत हो जायगा कि चाहे जो कोई चाहे जिसको बल-पूर्वक अपने वश में रक्खे, उससे जो चाहे, काम ले, उसके साथ चाहे जैसा बर्ताव करे, उसके सुख-दुःख पर विचार न करके स्वार्थसाधन करे, उसे अपना भक्ष्य समझे। वह उसका स्वामी है। तब तो इस अपूर्व सिद्धांत के अनुसार हम यह भी कह सकेंगे कि परमात्मा ने मनुष्य की सृष्टि भी व्याघ्र, सिंह आदि के लिये की है। यदि कोई सिंह मनुष्य का शिकार करने को प्रस्तुत हो, तो मनुष्य को सांजलि निवेदन करना चाहिए कि हे मृगराज, आप सुख-पूर्वक इस अधम शरीर से उदर-पूर्ति करके परमात्मा के बनाए नियम का पालन कीजिए!

परंतु यथार्थ बात तो यह है कि सृष्टि के स्थावर तथा जंगम, सभी प्राणियों को जीवन-रक्षा का अधिकार है; उनको अपने शरीर, अपने कुल, अपनी जाति और अपने सुख के बढ़ाने का पूरा हक़ है। भिन्न-भिन्न प्रकार के जीव और जीवन होने पर भी साधारण बातें प्रायः सबमें समान ही हैं। अध्यापक जगदीशचंद्र वसु की गवेषणाओं ने वनस्पति-वर्ग के जीवन की विशेषताएँ प्रकट कर संसार की आँखें खोल दी हैं। हाँ, यह दूसरी बात है कि अधिक बली होने के कारण हम वनस्पतिवर्ग का संहार करते रहें।

तात्पर्य यह है कि वनस्पतियों का जीवन एक स्वतंत्र जीवन है। वे परिस्थिति के अनुसार अपने जीवन में ऐसी कुशलता दिखलाते हैं, जैसी कोई जंगम प्राणी—विशेष कर मनुष्य—दिखलाता है। यदि हम अवकाश के समय वनस्पति-जीवन की मोटी-मोटी बातों पर विचार करेंगे, तो

उस जगत्कर्ता की दक्षता पर अधिकाधिक आश्चर्य होता जायगा ; और मनोविनोद की पूर्ण सामग्री भी सर्वत्र मिल सकेगी । आजकल शिक्षा विभाग में इस विषय पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है । यह विषय बहुत बड़ा है । इसकी सूक्ष्म बातें जानने के लिये बहुमूल्य यंत्रों और इस विषय के विशेषज्ञों की आवश्यकता है । हमारे इस लेख में कुछ ऐसी बातों का ज़िक्र है, जिन्हें हम प्रतिदिन देखते हुए भी नहीं देखते ।

वनस्पति-जीवन के जिस अंश पर आप दृष्टि डालेंगे, उसी में देखेंगे कि परिस्थिति के अनुरूप सब काम होता है । इसमें चूक हो जाने से वनस्पति-जीवन नष्ट हो जाता या हानि सहता है ।

१. वनस्पतियों के मूल-प्रसार और पल्लव-प्रसार में क्या संबंध है ?—किसी पेड़, उदाहरण स्वरूप किसी नीरोग आम्र-वृक्ष पर दृष्टि डालिए । ऊपर वायु-मंडल में शाखाओं, टहनियों और पत्तियों का प्रसार है । नीचे मिट्टी में जड़ों का फैलाव है । जड़ों के सिरों पर पतले-पतले बालों के समान रेशे होते हैं । इन्हीं के द्वारा वृक्ष मिट्टी से अपना खाद्य लेता है । ऊपर पल्लव बढ़ने के साथ साथ नीचे जड़ें भी फैलती जाती हैं । जितने चक्कर में पल्लव का प्रसार होता है, प्रायः उतने ही चक्कर में मूल का प्रसार भी । पल्लव की एक छतरी-सी बन जाती है; और वृष्टि का जल इस छतरी से ढुलककर वृक्ष के चारों ओर धीरे-धीरे इस तरह गिरता है कि पृथ्वी में सोखता जाय, और प्रायः उसी परिधि के नीचे फैली हुई जड़ों के रेशों तक पहुँचे । इस छतरी के कारण वृक्ष के नीचे की पृथ्वी शीघ्र सूखने नहीं पाती ; और वृक्ष के लिये मिट्टी में अधिक समय तक तरी बनी रहती है । जो माली वृक्ष के तने के पास पानी देकर संतुष्ट हो जाता है, वह वृक्ष की पूरी सेवा नहीं करता ; क्योंकि बड़े वृक्ष की जड़ों के रेशे तने से दूर फैले रहते हैं । इसलिये वे तने के पास डाले हुए जल से पूरा लाभ नहीं उठा सकते । थाले की परिधि कम-से-कम इतनी होनी चाहिए, जितनी पल्लव की परिधि होती है ।

२. वृक्षों के नीचे ठंडक क्यों रहती है ?—यद्यपि इस ठंडक का कारण वह बतलाया जायगा कि वृक्षों के पल्लव छतरी की भाँति फैले रहते हैं, और उनके नीचे धूप नहीं आती, इस कारण ठंडक रहती है, परंतु बात इतनी ही नहीं है । इससे भी बड़ा कारण जल का वह अदृश्य छिड़काव है, जो वृक्षों के द्वारा होता है । वृक्ष अपनी जड़ों के द्वारा मिट्टी से अपना पार्थिव भोजन खींचते हैं । इस भोजन में जल का बहुत बड़ा अंश मिला रहता है । यह कहने में अत्युक्ति न होगी कि सेर-भर पार्थिव खाद्य लेने के लिये वृक्ष को मनों जल खींचना पड़ता है । यह काम बराबर होता रहता है । यदि हिसाब लगाकर देखा जाय, तो एक अच्छा भारी पेड़ सैकड़ों मन पानी हर रोज़ खींचता है । यदि यह सब पानी पेड़ में बना रहे, तो एक वर्ष में एक पेड़ वाटिका की प्रायः संपूर्ण जगह घेर ले । परंतु ऐसा नहीं होता । इसका कारण यह है कि पार्थिव खाद्य वृक्ष में रह जाता और पानी भाप के रूप में उड़ जाता है । यह सब काम पत्तियों के द्वारा होता है । पत्तियों में, नीचे की ओर, अगणित सूक्ष्म छिद्र होते हैं । उनके द्वारा पानी की भाप बराबर निकला करती है । इसका अनुभव आप कई सरल रीतियों से कर सकते हैं । बराबर आकार की दो काँच की शीशियाँ लीजिए । एक में कोई जड़-समेत हरा जीवित पौदा लेकर इस तरह रखिए कि उसका निचला भाग शीशी के भीतर रहे, और पल्लव बाहर वायु-मंडल में । दूसरी शीशी में उसी वज़न की एक सूखी लंबी लकड़ी रख दीजिए । इसके बाद दोनों में बराबर-बराबर पानी और ऊपर से थोड़ा-थोड़ा तेल डालकर काग़ज़ से उनके मुँह यत्न-पूर्वक बंद कर दीजिए । अब तराज़ू के दोनों पलड़ों में एक-एक शीशी रखकर, आवश्यकतानुसार मिट्टी या कंकड़ डालकर, दोनों का वज़न बराबर कर दीजिए । फिर उस तराज़ू की चोटी धूप में किसी ऊँची चीज़ से बाँध दीजिए । दूसरे दिन उसी समय देखिएगा कि पौदे का एक ओर का भार दूसरी ओर के भार से कितना कम हो गया है । जितनी कमी आ गई है, उतना ही जल पौदे के द्वारा, भाप के रूप में, इतने समय में, निकल गया है । स्मरण रहे कि शीशियों के पानी के ऊपर तेल की यथेष्ट मात्रा रहने के कारण पानी भाप बनकर नहीं निकल सकता । और, यदि मान भी लें कि पानी का कुछ-न-कुछ अंश इस प्रकार अवश्य उड़ा होगा, तो भी दोनों शीशियों से समान मात्रा में जल उड़ना चाहिए । फिर पौदेवाली शीशी में इतनी कमी क्यों आ गई ? स्पष्ट है कि पौदे के द्वारा उतना अधिक पानी उड़ा है । हमने स्वयं इसका अनुभव करके देखा है

कि एक छोटे ज़रूरी पौदे के पौदे ने एक दिन-रात में कोई ढाई छटाँक पानी उड़ाया। इस हिसाब से बड़े-बड़े पेड़ों से सैकड़ों मन पानी रोज़ उड़ना कोई आश्चर्य की बात नहीं।

पानी को भाप के रूप में परिवर्तित करने के लिये गरमी की आवश्यकता है; और गरमी चूँकि इस प्रकार ख़र्च हो जाती है, इसलिये वृक्ष के नीचे और आस-पास ठंडक होना स्वाभाविक है। इसी सिद्धांत से मिट्टी के झज्झर का पानी ठंडा हो जाता है। जिन कमरों में ख़स की टट्टियाँ लगती और पानी से छिड़की जाती हैं, उनमें भी इसी कारण शीतलता रहती है।

परमात्मा ने धनी तथा निर्धन, सबके ऊपर समदृष्टि रखकर ये स्वाभाविक फुहारे (पेड़ आदि) प्रायः सर्वत्र बनाए हैं। घने जंगलों से साल-भर में इस प्रकार कितना जल भाप के रूप में निकलता होगा, इसका अंदाज़ गणित के द्वारा नहीं किया जा सकता, केवल कल्पना से मालूम हो सकता है। इतनी बृहत् जलराशि के वाष्पीकरण से वृष्टि में कितनी सहायता मिलती होगी! इसी कारण कहा जाता है कि जंगलों के नष्ट होने से वृष्टि में कमी होती है।

२. पल्लव-प्रसार प्रायः गावदुम या छत्राकार क्यों होता है?—पत्तियों को पेड़ों की नाक कह सकते हैं, मुँह कह सकते हैं, खाल कह सकते हैं, पाचनेंद्रिय कह सकते हैं, मुकुट कह सकते हैं, छत्र कह सकते हैं। क्यों? नाक इसलिये कह सकते हैं कि इनके द्वारा पौदे वायु खींचते और छोड़ते हैं। जो दूषित वायु (Carbon Dioxide) मनुष्य श्वास द्वारा छोड़ता है, और जो मनुष्य के लिये विष है, उसी को पौदे अपनी पत्तियों द्वारा ग्रहण करते हैं। वह उनके लिये अमृत है, उनका खाद्य है। परंतु यह खाद्य पचाने की शक्ति तभी होती है, जब उन पर सूर्य का प्रकाश पड़ता है। उनकी पत्तियों के हरे पदार्थ में कुछ ऐसी शक्ति है कि धूप में, इस विषमय वायु से, उनका भोजन तयार होता है। यह भोजन पतली-पतली नलियों द्वारा उनके समग्र शरीर में पहुँच जाता है। छाया में लगे हुए पौदों को धूप न मिलने के कारण इस खाद्य से वंचित रहना पड़ता है। उनकी उपज का विवरण यदि सुनना है, तो किसी ऐसे किसान भाई से पूछिए, जिसके खेत की मेड़ के पास अत्याचारी ज़मींदार ने अपनी वाटिका लगाई है। रात में सूर्य का प्रकाश न रहने से यह खाद्य दुर्लभ हो जाता है। उस समय पौदे विषमय वायु न खींचकर अमृतमय वायु (Oxygen) खींचते हैं, जिसकी आवश्यकता मनुष्य को भी होती है। तात्पर्य यह कि हमारे वनस्पति-मित्र दिन में विषमय वायु खाकर हमारे ऊपर अतुल अनुग्रह करते हैं। पर रात में वे हमसे स्पर्द्धा करते हैं; और जिस अमृतमय वायु की हमें ज़रूरत है, उसके लिये लाखों पत्र-जिह्वाएँ पसार-पसारकर अपना पहले का उपकार भूल जाते हैं। हमको भी ऐसे तमोगुणी समय में ऐसे मित्रों से दूर रहना चाहिए।

अच्छा, तो पत्तियों ने वायु खींचकर नाक का काम किया, प्रकाश खींचकर मुँह का काम किया, खाद्य पदार्थ तैयार करके पाचनेंद्रिय का काम किया, सैकड़ों घड़े पसीना (भाप) निकालकर खाल का काम किया, आकर्षक शोभा दिखाकर मुकुट का काम किया, नीचे के अवयवों को धूप से बचाकर और ज़मीन की सरदी को शीघ्र उड़ने न देकर छत्र का काम किया, हरे-हरे कच्चे फलों को अपना ही-सा रंग देकर जंतुओं के आक्रमण से बचाया, और वृष्टि का जल, तने से दूर चारों ओर, छोटी-छोटी प्यासी जड़ों को पहुँचाया।

इस दशा में पौदे का यह उद्देश्य स्वाभाविक है कि अधिक-से-अधिक जितना प्रकाश मिल सके, लेना चाहिए; जहाँ तक संभव हो, हर पत्ती को प्रकाश में रहना चाहिए। जब ऊपर की शाखा अपने पल्लव फैलाकर नीचे की शाखा के पल्लवों को छाया में डालना चाहती है, तब नीचे की शाखा अपनी इस दीन दशा पर संतुष्ट न रहकर आगे बढ़ती है, जिससे उसके पल्लवों पर ऊपर की शाखा के पल्लवों की छाया न पड़े। इसी प्रकार होते-होते वृक्ष का आकार गावदुम-सा हो जाता है। इस प्रबंध से वृष्टि का जल भी एक पल्लव से दूसरे पल्लव पर होता हुआ तने से दूर गिरता है। आप किसी पेड़ का भी निरीक्षण कीजिए, पत्तियों का जमाव ऐसा होगा कि अधिक-से-अधिक प्रकाश मिल सके। जब पेड़ या पौदे अधिक घने होते हैं, तब चारों ओर स्वतंत्रता से फैलने का अवकाश न पाकर पौदे बहुत ऊँचे उठते जाते हैं।

यह तो हुई सब वनस्पतियों के लिये साधारण बात। पर भिन्न-भिन्न वनस्पतियों के लिये भिन्न-भिन्न विशेषताएँ भी हैं—जैसे मरुदेश में होनेवाले या कम पानी रहनेवाले (नागफनी आदि) पौदों की पत्तियाँ (या

पट्टों) में ऐसा मोटा कोट चढ़ा रहता है कि भाप के द्वारा पानी निकल ही नहीं सकता, या बहुत ही अल्प मात्रा में निकलता है। हमारे देश में किसी के घर बच्चा पैदा होता है, तो नागफनी का एक फन काटकर किसी आले में दरवाज़े पर रख देते हैं। आप देखेंगे, वह फन महीनों क्या, वर्षों तक हरा-भरा बना रहता है। कभी-कभी तो अनुकूल समय पाकर उसमें नए अंकुर और कोपलें भी फूटती हैं। सिंघाड़ा, कमल, कुमुद आदि जिन पौदों की पत्तियाँ जल पर फैलती हैं, उनकी पत्तियों में ऊपर के धरातल पर सूक्ष्म छिद्र होते हैं। यह विशेषता उन पौदों में कहाँ से आती है, इसका वर्णन इस छोटे-से लेख में नहीं हो सकता।

४. वनस्पतियों की आत्मरक्षा—विविध प्रकार के पौदे विविध प्रकार से अपनी रक्षा करते हैं। गुलाब अपनी रक्षा काँटों से करता है। बेर, बबूल, भटकटैया, नागफनी आदि भी उसी का अनुकरण करते हैं। कुछ-कुछ अनुकरण बैंगन, भिंडी, केवाँच आदि पौदे भी करते हैं। नीम अपनी रक्षा अपनी कटुता के द्वारा करती है; और जंगली तोंबी आदि पौदे उसका अनुकरण करते हैं। कुकरौंधा, बबई आदि पौदे उत्कट गंध द्वारा अपनी रक्षा करते हैं। रामबाँस, पतावर, केवड़ा, केतकी आदि पौदे अपनी असिधाराओं द्वारा अपनी रक्षा करते हैं। लटज़ीरा आदि कई पौदे अपने फलों से अपनी रक्षा करते हैं। बेचारी दूर्वा अपने शत्रुओं के सामने दंडवत् प्रणाम करके, और गाँठ-गाँठ पर अपनी जड़ें से पृथ्वीमाता का अंचल पकड़कर, बचना चाहती है। कूष्मांड की जातिवाले बहुतेरे पौदे अपने तंतुओं द्वारा बड़े पौदों या ऊँची वस्तुओं को पकड़कर ऊपर उठ जाते हैं। इनके सिवा और भी अधिकांश पौदे, जो आत्मशक्ति नहीं रखते या कम रखते हैं, अपनी पत्तियों, फूलों, फलों आदि की रिशवत का प्रलोभन देकर मनुष्य से रक्षित रहने का मार्ग पकड़ते हैं। बड़े और बली पौदे छोटे और निर्बल पौदों को मारकर अपनी उन्नति करते हैं। हमारे वृक्षराज अश्वत्थजी तो दूसरों की छाती पर चढ़कर, उनकी कमाई खाकर, और कभी-कभी उनका सत्यानाश भी करके, अपना अखंड प्रभुत्व स्थापित कर लेते हैं। अमरबेल, जो देखने में कैसी नम्र होती है, वह इस डकैती में वृक्षराज को भी चुनौती देती है। निर्लज्ज बाँदे का क्या कहना! वह सीधा खाद्य का विचार न करके हर पेड़ के घर में 'मान न मान, मैं तेरा मेहिमान'वाली कहावत चरितार्थ करता है। कह नहीं सकते, यह लूट-पाट मनुष्यों ने शायद अपने वनस्पति-बंधुओं से ही सीखी हो।

५. संतति-वृद्धि—आजकल भारतवर्ष में हिंदुओं के शुद्धि-आंदोलन पर अन्यजातीय जन नाहक़ नाक-भौं सिकोड़ते हैं। अपनी जाति की वृद्धि के लिये वनस्पति-वर्ग तक निरुद्यम नहीं हैं। वृद्धि होनी चाहिए—चाहे सीधे-सीधे हो, चाहे रिशवत देकर हो, चाहे दूसरे को चिढ़ाकर हो, चाहे दूसरों के साथ हिल-मिल जाने से हो, चाहे मज़दूरी देकर हो! सब प्रकार के उदाहरण आपको वनस्पतिवर्ग में मिलेंगे।

आम, असरूद, कटहल, शरीफ़ा आदि मीठे फल इसलिये होते हैं कि आप सब जगह से उनको लावें, दूर-दूर इष्ट-मित्रों के पास उपहार में भेजें। मीठा रस या गूदा खाकर आप लोग बीज इधर-उधर फेक दें; और उन्हें सर्वव्यापी होने का अवसर मिले। यह रिशवत नहीं तो और क्या है? फलों का लाल-पीला रंग देखकर तोते आदि पक्षी और गिलहरियाँ आदि अन्य जंतु उन्हें दूर-दूर ले जाकर डालते हैं। यही नहीं, गिलहरियाँ उन्हें मिट्टी में गाड़ती हैं। उन्हें खोदने के लिये यदि वे फिर न पहुँचीं, तो मानो बीज धरती में बो दिया गया। लटज़ीरा कौन बोता है? मनुष्य, गाय, भैंस, जो कोई उधर से निकला, बस, उसी के दामनगीर हो गए! कहीं-न-कहीं झड़कर वह बीज गिरेगा, और आगामी संतति का कारण बनेगा। मदार, पतावर, शाल्मली आदि ने देखा कि हममें न रस है, न गंध, हमें कोई क्यों पूछेगा! इसी से लघुता-रूपी सिद्धि का स्मरण किया। फिर क्या था, बीज पके, और छोटे छोटे पंख लगाकर हवा में उड़ने लगे। किसी की क्या मजाल, जो उनकी गति को रोके। जहाँ कहीं गिरे, दूसरे वर्ष नए पौदे के रूप में तैयार हो गए। गेहूँ, चने, जौ और मटर ने सोचा कि यदि मनुष्य का आश्रय लें, तो वह हर साल लोभवश हमारी खेती करेगा। बहुतेरे पौदों ने अपने बीज पानी में बहाकर प्रसार का उपाय किया। रेंडी, गुलमेंहदी, तथा घास की अनेक जातियों ने मारे क्रोध के चिटक-चिटककर अपने बीज इस तरह फैलाए कि पहले साल यदि अंगुल-भर जगह पर एक पौदा था, तो दूसरे साल बिस्वा-भर ज़मीन में हज़ारों

पौदे उगे। इस प्रकार अनेक उपायों से पौदे अपनी संतति बढ़ाने का यत्न करते हैं। जिस पौदे का जितना क्षय जंतुओं के द्वारा होता है, उसमें उतनी ही फैलने की शक्ति होती है। इस तरह, अनेक शत्रुओं के संघर्ष में भी पौदों की जातियों के नष्ट होने का डर नहीं रहता।

वनस्पतियों की कईएक मोटी-मोटी बातें ऊपर लिखी गई हैं। इनमें वैज्ञानिक बारीकियाँ भरने का यत्न नहीं किया गया। वे बातें केवल उदाहरण के लिये लिखी गई हैं, जिनका ज्ञान केवल निरीक्षण द्वारा हो सकता है। सहृदय पाठकों के सामने ये बातें इसलिये पेश की जाती हैं कि वे प्रकृति-निरीक्षण के महत्त्व पर अधिक विचार करके शिक्षा-विभाग को इस विषय की उन्नति पर सहायता दें, घर पर अपने बच्चों को ऐसे निरीक्षण के लिये उत्साहित करें।

चंद्रमौलि सुकुल

छाया *

नाटक

पहला दृश्य

स्थान—मगध का राजमहल

समय—दोपहर

(छाया और उसकी सहेली कुमारी)

कुमारी—तो वह दिन आ गया, जिसके लिये आप और महाराज, दोनों तड़प रहे थे। सड़कें सजी जा रही हैं, बाज़ार साफ़ हो रहे हैं, और राज-दर्बारी—

छाया—कितनी प्रतीक्षा के बाद यह दिन देखने को मिला है! आज महाराज के हर्ष की कोई थाह नहीं। जब आज प्रातःकाल वह मुझसे मिलने के लिये आए, तब ऐसा प्रतीत होता था, मानो सारे संसार का आनंद उन्हीं को मिल गया है। सखि, तुमसे क्या पर्दा, उनका मुझ पर बड़ा ही प्यार है; और जब वह अपने मुख से उसे प्रकट करते हैं, तो मैं लज्जा से पृथ्वी में गड़ जाती हूँ।

कुमारी—परंतु यह क्यों?

छाया—तनिक उनकी पदवी का ध्यान करो, और फिर मेरी ओर देखो। वह आज भारतवर्ष के सम्राट् हैं। उनके मुख से निकला हुआ एक-एक शब्द क़ानून है। और, मैं एक छोटे-से पहाड़ी राजा की लड़की हूँ। मैं उनके सामने क्या चीज़ हूँ।

कुमारी—राजकुमारी, यह तुम्हारी भूल है—

छाया—परंतु फिर भी, वह मुझे प्यार करते हैं, मुझे चाहते हैं। मेरे बिना रह नहीं सकते।

कुमारी—प्यार के खेल निराले ही होते हैं!

छाया—कहते थे, तुम संसार की प्रियतम वस्तुओं से भी प्रियतम हो। यदि मुझे भारतवर्ष का शासन छोड़ना पड़े, तो तुम्हारे लिये उसे भी छोड़ दूँगा।

कुमारी—क्यों न हो, तुमने दो-दो बार उनका जीवन बचाया है।

छाया—तो क्या वह मुझसे इसलिये प्रेम करते हैं? सखि, तुम महाराज को नहीं जानती। तुम उनकी प्रकृति से नितांत अपरिचित हो। तुमने उनके प्यार का, उनके भाव का, उनके शील का अपमान किया है। क्या मैंने उनके प्राण बचाकर उन पर उपकार किया है?

कुमारी—क्यों नहीं, मेरा तो यही विचार है!

छाया—परंतु यह ठीक नहीं। यदि सेवक अपने स्वामी के प्राण बचाता है, तो क्या उस पर उपकार करता है? यदि एक सैनिक अपने सेनापति पर आक्रमण होते देखकर तलवार निकालकर आगे बढ़ता है, तो क्या वह उस पर उपकार करता है? नहीं, यह उसका कर्तव्य है, यह उसका मनुष्यत्व है। और, यहाँ, मेरी अवस्था में—ओह! तुमने कुछ नहीं समझा। कुमारी! वह भारतवर्ष के लिये लड़ रहे थे, विदेशी आक्रमणकारियों के आक्रमण को रोकने के लिये अपने प्राणों को हथेली पर लिए हुए थे। ऐसी अवस्था में यदि मैंने उनकी रक्षा के लिये कुछ किया, तो वह उन पर कोई उपकार नहीं, वह मेरा धर्म था। क्या मैंने भारत की मिट्टी से जन्म नहीं लिया? क्या मैंने इसका अन्न नहीं खाया, इसका जल नहीं पिया, इसके वायु से श्वास नहीं लिया?

कुमारी—सचमुच तुमने जो कुछ किया, वह तुम्हारा धर्म था। परंतु क्या महाराज इसे भूल सकते हैं? मैं यह नहीं मान सकती।

छाया—वह नहीं भूल सकते, उन्हें न भूलना चाहिए, वह भूलेंगे भी नहीं। परंतु मुझ पर उनके प्रेम का यही कारण है, यह मैं कभी नहीं मान सकती। क्या तुम्हारा यह विचार है कि कल को यदि कोई और स्त्री महाराज

---

* सांकेत नाटक।

पर आई हुई विपत्ति टालने के लिये अपना जीवन जोखिम में डाल दे, तो महाराज उससे प्रेम करने लगेंगे ? कुमारी, पुरुषों के हृदय इतने सस्ते नहीं होते !

कुमारी—तो तुम्हारे विचार में वह तुमसे क्यों प्रेम करते हैं ?

छाया—इसलिये कि वह जानते ही नहीं, बल्कि विश्वास रखते हैं कि छाया मेरी पूजा करती है, मेरे सिवा किसी अन्य पुरुष की ओर नहीं देखती। उनका प्रेम-भरा हृदय मेरे इस भाव पर निछावर है; नहीं तो मुझ-जैसी लड़कियाँ—ओह, मुझ पर वह कितनी दया करते हैं। कुमारी, वह मनुष्य नहीं, देवता हैं। मैं उनकी पूजा करती हूँ।

(चंद्रगुप्त का प्रवेश)

चंद्रगुप्त—किसकी पूजा करती हो ? बस, शरमा गईं ! लो, मैं जाता हूँ। समझ गया, तुम्हें मेरा आना नहीं भाया।

छाया—नहीं—महाराज, नहीं, मैं—

(कुमारी का प्रस्थान)

चंद्रगुप्त—सब समझता हूँ प्रिये, मैं सब समझता हूँ। उठो, तनिक इधर आओ, और बाहर की ओर देखो।

(छाया चंद्रगुप्त के निकट आकर दरीचे से बाहर की ओर झाँकती है)

छाया—ऐसा प्रतीत होता है कि आज प्रत्येक नगर-निवासी अपने शरीर की संपूर्ण शक्तियों से काम कर रहा है।

चंद्रगुप्त—क्यों न करें, आज उनके सम्राट् का विवाह है।

छाया—(एकाएक उदास होकर) परंतु महाराज !—

चंद्रगुप्त—क्यों छाया, यह तुम्हें क्या हो गया ? तुम्हारे मुख का रंग सहसा क्यों बदल गया ? तुम्हारी आँखों में आँसू क्यों आ गए ? तुम्हारा मीठा स्वर एकाएक दुःख और शोक के सागर में क्यों डूब गया ? आज के दिन, जब कि संसार में तुम्हें सबसे अधिक प्रसन्न होना चाहिए, तुम रो रही हो ! कहो, इसका क्या कारण है ?

छाया—महाराज, मैं (फिर रुक जाती है)

चंद्रगुप्त—कहो प्यारी छाया, कहो। मुझे तुम्हारा उदास मुख, शोकातुर नेत्र और कंपित स्वर व्याकुल किए देते हैं।

छाया—महाराज, इसी प्रेम का विचार मुझे अधीर कर रहा है। (एकाएक आँखें उठाती और फिर नीचे झुका लेती है)

चंद्रगुप्त—(व्याकुलता से खड़े होकर) अर्थात् ?

छाया—महाराज मैं ग़रीब हूँ। मैं आपके योग्य नहीं। परंतु आप फिर भी मुझे इतना चाहते, इतना प्यार करते हैं। मैं संसार में सबसे बढ़कर सौभाग्यवती हूँ ; क्योंकि मैंने आपका प्रेम जीत लिया है। पर सोचती हूँ, क्या यह प्रेम इसी प्रकार बना रहेगा। महाराज, यदि आपकी आँखें ज़रा भी बदली हुई दिखाई दीं, तो—(आँखों में आँसू भर आते हैं)

चंद्रगुप्त—(तेज़ी से) छाया, इस व्यर्थ विचार को हृदय से दूर कर दो। क्या तुम मेरे प्रेम की परीक्षा करना चाहती हो—मैं इसके लिये हर घड़ी तयार हूँ।

छाया—(घबराकर) नहीं महाराज, नहीं। मेरा तात्पर्य यह कभी न था।

चंद्रगुप्त—(नम्रता से) तो फिर आज के दिन को, जो मेरे और तुम्हारे जीवन का एक विशेष दिन है, एक कल्पित भ्रम के कारण क्यों नष्ट किए देती हो। छाया, चंद्रगुप्त बाहर सम्राट् है, शक्ति-संपन्न है, गौरवशाली है, परंतु तुम्हारे सामने वह प्रेम केवल प्रेम का भिखारी है। प्रेम ही चाहता है, प्रेम ही माँगता है, उसे और किसी दूसरी वस्तु की आवश्यकता नहीं। राजपाट, शासन, विजय, सब तुम्हारे सामने इसी प्रकार तुच्छ हैं, जिस प्रकार सूर्य के सामने तारे !

छाया—बस महाराज, बस। मुझे और किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं, मैं केवल आपका प्रेम चाहती हूँ।

चंद्रगुप्त—वह सदैव तुम्हारा है।

छाया—और सदैव इसी प्रकार रहेगा ?

चंद्रगुप्त—सदैव।

छाया—ये आँखें इसी प्रकार प्रेम में डूबी रहेंगी ?

चंद्रगुप्त—बराबर।

छाया—तो संसार में मुझ सा भाग्यशाली कोई दूसरा नहीं हो सकता।

चंद्रगुप्त—हो सकता है, प्यारी छाया, तुमसे बढ़कर भी हो सकता है।

छाया—वह कौन ?

चंद्रगुप्त—मैं, मेरी प्यारी छाया, मैं। कुछ घंटों के बाद आज ही रात को तुम मेरी हो जाओगी, और

संसार की कोई भी शक्ति तुम्हें मुझसे अलग न कर सकेगी।

छाया—परमात्मा करे, वह समय शीघ्र आवे। मेरी आत्मा उसके लिये अधीर हो रही है।

चंद्रगुप्त—तुम्हारे पास से उठने को जी नहीं चाहता। परंतु, क्या करूँ, मेरा राजकाज मुझे बाहर बुला रहा है। अच्छा तो, हृदयेश्वरी, आज्ञा है ?

छाया—जाइए महाराज, जाइए।

चंद्रगुप्त—(जाने के लिये उठते हुए) यह महाराज-महाराज सुनते-सुनते तो मैं ऊब गया !

छाया—तो फिर आप क्या चाहते हैं ? (चौंकी सी उठ खड़ी होती है)

चंद्रगुप्त—मुझे किसी और सुंदर शब्द से पुकारो।

छाया—वह कौन-सा सौभाग्यशाली शब्द है, जो मेरे महाराज को पसंद है ?

चंद्रगुप्त—वही, आर्य-स्त्रियाँ अपने पति के लिये जिसका प्रयोग करती हैं।

छाया—अर्थात् ?

चंद्रगुप्त—इस 'अर्थात्' को मेरी अपेक्षा तुम अधिक जानती हो।

छाया—बहुत अच्छा, तो वह शब्द आज रात को आप ही के लिये हो जायगा।

चंद्रगुप्त—और इस समय नहीं ?

छाया—(सलज्ज भाव से) जी नहीं।

चंद्रगुप्त—परंतु, क्यों ?

छाया—विवाह हो जाने दीजिए। कुछ ही घंटे तो बाकी हैं।

(प्रस्थान)

चंद्रगुप्त—प्रेम की देवी प्रेम के सिवा और कुछ नहीं चाहती। मुझे अंतःकरण से प्यार करती है। मेरे भाग्य में किसे संदेह हो सकता है ?

(प्रस्थान)

(छाया और कुमारी का प्रवेश)

छाया—चले गए ? मेरा ख़याल था, अभी यहीं होंगे।

कुमारी—तो बुला लाऊँ, या आप उनसे बाहर ही भेंट करोगी ?

छाया—कौन ? तुम किसकी बात कर रही हो ? मैंने कुछ नहीं सुना। मैं किसी और विचार में मग्न थी। जानती हो, वह विचार क्या था ?

कुमारी—([illegible]) खूब जानती हूँ। आप महाराज के विषय में कुछ सोच रही थीं।

छाया—तुम बड़ी चतुर हो गई हो !

(छाया फिर किसी गहरे सोच में डूब जाती है। कुमारी उसकी ओर देखती रहती है। एकाएक वह अपने विचार से चौंकती है)

छाया—कुमारी,

कुमारी—महारानी,

छाया—मूर्खे, इस शब्द को अभी रहने दे—केवल आज दिन-भर—समझ गई।—हाँ, तुम किसकी बात कर रही थीं ? मुझसे कौन मिलना चाहता है ?

कुमारी—वाचाल बाहर खड़े हैं, और केवल दो-चार घड़ी के लिये आज्ञा चाहते हैं।

छाया—वाचाल ? दो चार घड़ी के लिये आज्ञा ? (सोचती है) बहुत अच्छा, बुला लाओ। मैं उनसे यहीं भेंट करूँगी।

कुमारी—जो इच्छा। (जाती है)

छाया—आज उसके आने का क्या प्रयोजन हो सकता है ? वह मुझसे क्या चाहता है ? अभागा युवक विवाह को अभी तक टालता जा रहा है।

(वाचाल और कुमारी का प्रवेश)

वाचाल—मैं क्षमा चाहता हूँ कि—

छाया—आइए महाराज, आइए, मैं आपका स्वागत करती हूँ। कहिए, आप कुशल से तो हैं ?

वाचाल—परमात्मा की दया से।

छाया—इस समय के शुभागमन का क्या कारण है ?

वाचाल—देवी, मैंने और आपने बरसों एक जगह रहकर बिताए हैं। बाल्यावस्था में हम दोनों एकसाथ खेले हैं। आपको स्मरण होगा, एक बार मैंने आपसे अपना प्रेम प्रकट किया था, और—

छाया—क्या मैंने तब, उसी स्थान पर, नहीं कह दिया था कि मैं यह शब्द तुम्हारे मुख से दूसरी बार नहीं सुनना चाहती।

वाचाल—और क्या मैंने आपकी इस आज्ञा का पूर्ण रूप से पालन नहीं किया ?

छाया—फिर, इस समय—

वाचाल—इस समय के लिये क्षमा कर दीजिए; क्योंकि मैं आपसे सदा के लिये विदा होनेवाला हूँ

फिर दुबारा इस अभागे का मुख आपके सामने न होगा। जब मैंने आपको देखा, उस समय मुझे यह ख़याल न था कि मेरे प्रेम को इस प्रकार निर्दयता से चूर-चूर कर दिया जायगा।—परंतु चंद्रगुप्त सुंदर है, सम्राट् है। तथापि—(ठंडी साँस भरता है)

छाया—इस कहानी को दुहराने की इस समय क्या आवश्यकता है ?

वाचाल—मैं इस प्रतीक्षा में था कि मेरा सोया हुआ भाग्य कदाचित् फिर जाग उठे। परंतु आज अंतिम निश्चय हो गया कि मेरी आशाओं का कोई फल नहीं है, मेरे लंबे स्वप्नों के लिये कोई स्थान नहीं है।

छाया—वाचाल, मैंने तुमसे बहन का-सा प्रेम किया है, और इस समय तक करती हूँ। परंतु क्या तुम समझते हो, किसी पुरुष को यह अधिकार प्राप्त है कि वह किसी स्त्री के विवाह-दिवस को इस प्रकार की दुःखप्रद स्मृति से शोकमय बना दे ?

वाचाल—परंतु मैं आपसे बिदा हो रहा हूँ। इसलिये चाहता हूँ कि बिदाई से पहले अपना हृदय उस स्त्री के सामने रख दूँ, जिसे मैं अपने अंतःकरण में प्रेम करता आ रहा हूँ। (ठहरकर) अब मेरा हृदय भारी हो गया है। मुख से बोलने की शक्ति क्षीण हो रही है। अस्तु, आज्ञा दीजिए, अब बिदा होता हूँ। मैं जब तक जिऊँगा, तुम्हें आत्मा की पूरी शक्ति से प्रेम करता रहूँगा। परंतु तुम्हारे सम्मुख कभी उसे प्रकट न करूँगा, न कभी सामने आऊँगा। मगर हाँ, जो तुम कभी सुनो कि वाचाल मर गया, तो यह विचार करना कि कभी वह जीता था; और उसकी सारी आशाएँ तुम्हारे साथ लगी हुई थीं।

(वेग से प्रस्थान)

कुमारी—अभागा नरेश ! इसकी दशा पर मुझे बरबस दया आ रही है। कितना वीर है, कितना सदाचारी है ! आह—

छाया—बस, जाने दो, मैं सिवा महाराज के और किसी के मुख से प्रेम की बातचीत सुनना नहीं चाहती। और, आज मेरे विवाह का दिन है।—कुमारी ! कुमारी !

कुमारी—महारानी !

छाया—देखो, महाराज कहाँ हैं ?

कुमारी—क्यों ? उनसे अब क्या काम है ?

छाया—मैं उनसे एक बात कहना चाहती हूँ।

(कुमारी जाती और बाहर इधर-उधर देखकर लौट आती है)

कुमारी—महारानी, महाराज तो बाहर चले गए।

* * *

दूसरा दृश्य

स्थान—राजमहल का दूसरा कमरा

समय—तीसरा पहर

(चंद्रगुप्त और वाचाल)

चंद्रगुप्त—वाचाल, यह मैं क्या सुन रहा हूँ। आज के दिन तुम्हारा वियोग ? नहीं भाई, नहीं, यह मैं कभी नहीं मान सकता, मैं कभी नहीं मानूँगा।

वाचाल—महाराज, इस दिन के लिये मैं बहुत समय से तरस रहा था। मैं झुँझला उठता था कि यह दिन क्यों शीघ्र नहीं आता। महाराज के गले में विवाह की जयमाला देखने के लिये मैं व्याकुल हो रहा था। मैं समझता था कि उस दिन आनंद और हर्ष से पागल हो जाऊँगा।

चंद्रगुप्त—परंतु ?

वाचाल—देवतों की क्या इच्छा है, यह मैं नहीं जानता था। आज सारे मगध में मुझ-सा निराश, दुखी, शोकातुर दूसरा कोई मनुष्य न होगा। इसलिये मैं चाहता हूँ कि जितनी जल्दी हो सके, मेरा दुःख और शोकमग्न शरीर इस नगर से दूर हो जाय। मैं इस समय उस उल्लू के समान हूँ, जिसे ब्याह-शादियों के अवसर पर अशुभ समझा जाता है। मैं उस कंकड़ की तरह हूँ, जिसे खीर के थाल में देखना कोई पसंद नहीं करता।

चंद्रगुप्त—वाचाल, यह तुम क्या कह रहे हो ? (आगे बढ़कर और उसके कंधे पर हाथ रखकर) मेरी ओर ध्यान दो, बताओ, तुम्हें क्या दुःख है ? मैं तुम्हें प्रसन्न देखने के लिये अधीर हो रहा हूँ। तुम्हें याद है, तुमने समर-भूमि में मेरे लिये विजय प्राप्त की थी—कई अवसरों पर अपने प्राणों को जोखिम में डाल दिया था ?

वाचाल—(पहलू बदलकर) यह मेरा कर्तव्य था।

चंद्रगुप्त—तुमने अपना कर्तव्य पूरा किया, अब मेरी बारी है। मैं अपना कर्तव्य पूरा करने का यह अवसर हाथ से न जाने दूँगा। संसार क्या कहेगा ! कहेगा, वाचाल ने अपने कर्तव्य के लिये सब कुछ किया; परंतु चंद्रगुप्त ने उसकी बहुमूल्य सेवाओं का कुछ मूल्य न समझा। नहीं-नहीं, मैं यह नहीं होने दूँगा।—वाचाल !

वाचाल—महाराज !

चंद्रगुप्त—कहो, बताओ, तुम्हें क्या दुःख है? मैं उसे दूर करने के लिये सब कुछ करने को उद्यत हूँ, मेरा सुख तुम्हारे दुःख का बोझ नहीं सँभाल सकता।

वाचाल—(चुप रहता है)

चंद्रगुप्त—बोलते क्यों नहीं—उत्तर क्यों नहीं देते?

वाचाल—महाराज, मुझे चुप रहने दीजिए। आपको सुनकर दुःख होगा।

चंद्रगुप्त—इसकी परवा न करो। मैं तुम्हारे दुःख को दूर करूँगा। बतलाओ। मैं तुम्हारा सम्राट् हूँ।

वाचाल—(कुछ आशा-युक्त भाव से) आप उसे दूर कर देंगे?

चंद्रगुप्त—यदि यह किसी सम्राट् की शक्ति में है।

(सेवक का प्रवेश)

सेवक—महाराज की जय हो!

चंद्रगुप्त—कौन है?

सेवक—राजगुरु चाणक्य महाराज आए हैं।

चंद्रगुप्त—गुरुदेव?

सेवक—जी महाराज!

(चंद्रगुप्त और वाचाल, दोनों जाते और चाणक्य के साथ लौटते हैं)

चंद्रगुप्त—महाराज, पधारिए।

चाणक्य—(बैठते हुए) चंद्रगुप्त—

चंद्रगुप्त—(दूसरी चौकी पर बैठकर) महाराज—

चाणक्य—आज तुम्हारा विवाह है?

चंद्रगुप्त—हाँ गुरुदेव।

चाणक्य—तुम मेरे शिष्य हो न?

चंद्रगुप्त—मुझे इसका अभिमान है।

चाणक्य—तुमने सदैव मेरा कथन स्वीकार किया है?

चंद्रगुप्त—और सदैव करूँगा।

चाणक्य—सदैव?

चंद्रगुप्त—हाँ गुरुदेव, सदैव। मेरे कंधे आपके उपकारों से दबे जाते हैं।

चाणक्य—यदि कोई बात तुम्हारे विचार के विरुद्ध हो, तब?

चंद्रगुप्त—मैं यही समझूँगा कि मेरी बुद्धि की भूल है।

चाणक्य—मुझे तुमसे यही आशा थी। अच्छा, तो सुनो, मैं तुम्हारी परीक्षा करना चाहता हूँ।

चंद्रगुप्त—(व्याकुल होकर) गुरुदेव!

चाणक्य—छाया कुमारी से विवाह न करो?

चंद्रगुप्त—(खड़े होकर घबराए हुए) महाराज!

चाणक्य—यह चाणक्य की आज्ञा है।

चंद्रगुप्त—परंतु—

चाणक्य—तुम्हारी बुद्धि भूल करती है। मैं जो कुछ कहता हूँ, सो तुम्हारे ही हित के लिये। यह विवाह न होगा।

चंद्रगुप्त—परंतु, क्यों?

चाणक्य—राजगुरु प्रत्येक प्रश्न का उत्तर देने के लिये बाध्य नहीं किया जा सकता।

चंद्रगुप्त—(सिर झुकाकर) मैं क्षमा चाहता हूँ।

चाणक्य—(दयादृष्टि से देखकर) चंद्रगुप्त!

चंद्रगुप्त—महाराज!

चाणक्य—तुम सम्राट् हो। तुम्हारे शरीर पर देश और जाति का अधिकार है।

चंद्रगुप्त—मैं इसे स्वीकार करता हूँ।

चाणक्य—छाया एक साधारण राजा की कन्या है।

चंद्रगुप्त—इसलिये—

चाणक्य—उससे तुम्हारा विवाह भारतवर्ष को कोई लाभ नहीं पहुँचा सकता।

चंद्रगुप्त—परंतु मेरा हृदय गुरुदेव—

चाणक्य—भारतवर्ष तुमसे बलिदान चाहता है। तनिक बाहर निकलो, और सुनो। लोग तुम्हारी निंदा कर रहे हैं। क्या तुम इसे पसंद करोगे?

चंद्रगुप्त—(अत्यंत नम्रता से) यदि केवल निंदा का प्रश्न है, तो मैं छाया और उसके प्रेम के सामने उसकी कुछ परवा नहीं करता।

चाणक्य—और भारतवर्ष? नहीं, तुम्हें यह विवाह नहीं करना चाहिए।

चंद्रगुप्त—मैं छाया के सामने सारे संसार को तुच्छ समझता हूँ।

चाणक्य—तो क्या यह विवाह नहीं रुकेगा?

चंद्रगुप्त—(दृढ़ विश्वास के साथ) नहीं।

चाणक्य—नहीं?

चंद्रगुप्त—महाराज, छाया का जीवन नष्ट हो जायगा। मैंने उससे प्रेम की प्रतिज्ञा की है। वह मुझे संसार-भर में सबसे अधिक चाहती है। मैं उससे क्या कहूँगा। अभी-अभी मैं उसके सामने प्रेम की शपथ खा रहा था।

अब जब वह सुनेगी — आह! उसका हृदय टुकड़े टुकड़े हो जायगा। वह सोचेगी, क्या यह भी संभव है, क्या यह भी हो सकता है? उसको मनुष्यत्व से घृणा हो जायगी। वह पुरुषों के संसार को झूठा समझने लगेगी। वह इस चोट से जीवित न रह सकेगी।

चाणक्य—तो तुम यह नहीं कर सकते?

चंद्रगुप्त—महाराज, मुझमें यह शक्ति नहीं।

चाणक्य—और तुम यह नहीं करोगे?

चंद्रगुप्त—मैं नहीं कर सकता।

चाणक्य—तो मैंने तुम्हें आज तक न समझा था। तुमने अपनी वीरता से जो कुछ प्राप्त किया है, उसे क्या अब एक लड़की के लिये मिट्टी में मिला दोगे? तुम्हारा देश तुमसे पुकार-पुकारकर कह रहा है कि यह विवाह न करो; परंतु तुम प्रेम में अंधे होकर उसकी कोई परवा नहीं करते। परिणाम यह होगा कि यह राज्य मिट्टी में मिल जायगा। चंद्रगुप्त, तुम्हें सोचना और बतला देना चाहिए कि तुम देश के लिये अपना प्रेम भी निछावर कर सकते हो। देश तुम पर अभिमान करेगा, भावी संतान तुम्हारा नाम लेकर सिर झुकावेगी। बोलो, तुम्हें स्वीकार है?

चंद्रगुप्त—मैं क्या कर सकता हूँ। महाराज, यह परीक्षा बड़ी कठिन है।

चाणक्य—चंद्रगुप्त, वत्स, अपने देश की ओर देखो।

चंद्रगुप्त—इससे उसे क्या लाभ होगा?

चाणक्य—यह मैं जानता हूँ।

चंद्रगुप्त—(ठंडा साँस भरकर) बहुत अच्छा, परंतु—

चाणक्य—अब तुम चंद्रगुप्त के योग्य बात कर रहे हो। उठो, मेरे साथ आओ; और तुम वाचाल—

वाचाल—(सिर झुकाकर) महाराज!

चाणक्य—छाया के पास जाकर उससे कह दो कि यह विवाह नहीं होगा, किसी तरह नहीं हो सकता। यह चंद्रगुप्त का निश्चय है।

वाचाल—बहुत अच्छा!

चाणक्य—आओ बेटा! इसकी घोषणा की जाय, जिससे लोगों को तुम्हारे विषय में मालूम हो जाय कि तुम कितने ऊँचे, कितने बड़े हो।

(दोनों का प्रस्थान)

वाचाल—आशा, क्या तू फिर मुझे धोखा दे रही है? या सचमुच मेरे अंधकारमय जीवन में प्रकाश की किरण चमकने को है? परंतु नहीं, तेरा कोई विश्वास नहीं। तूने मुझे पग-पग पर धोखा दिया है। परंतु क्या अब—कौन, वही आ रही है। परमात्मन्, मैं क्या करूँ, उससे कैसे कह सकूँगा? उसका हृदय इसे कैसे सहन कर सकेगा? हाय! मेरी आँखों के सामने अँधेरा छा रहा है।

(वाचाल कुर्सी को थामकर आँखों पर हाथ रख लेता है। छाया और कुमारी आती हैं। छाया वाचाल के निकट आती और एकाएक चौंक पड़ती है)

छाया—कौन, वाचाल! तुम अभी तक नहीं गए?

वाचाल—यदि मैं अब तक नहीं गया, तो यह मेरा नहीं, महाराज का दोष है।

छाया—महाराज का दोष?

वाचाल—मुझे उन्होंने नहीं जाने दिया। मेरे पास उनका एक आवश्यक संदेश है।

छाया—किसके लिये? क्या मेरे लिये?

वाचाल—हाँ राजकुमारी।

छाया—क्या?

वाचाल—छाया! क्या ही अच्छा होता, यदि यह काम मुझे न सौंपा जाता। महाराज के पास सैकड़ों दास हैं। क्या वह उनमें से किसी दूसरे को न चुन सकते थे।

छाया—बोलो, तुम क्या कहना चाहते हो? मैं अधिक समय तक प्रतीक्षा नहीं कर सकती।

वाचाल—क्रोध न करो। यदि मेरी जगह पर कोई दूसरा होता, तो वह इस समय निस्संदेह आनंद से पागल हो जाता, और एक क्षण भी व्यर्थ गँवाना पसंद न करता। परंतु मैं—ओह! मुझे तुमसे अभी तक प्रेम है, और मैं तुम्हारे तनिक-से दुःख के सामने अपने जीवन की बड़ी-से-बड़ी प्रसन्नता को तुच्छ समझता हूँ। इसीलिये मैं तुमसे वह बात नहीं कह सकता, और न कह सकूँगा। राजकुमारी, मैं जाता हूँ। (जाना चाहता है)

छाया—ठहरो वाचाल, ठहरो। अभी-अभी तुमने कहा है कि तुम मुझे दुःख देना नहीं चाहते, और मेरे तनिक-से कष्ट पर अपने जीवन का बड़े-से-बड़ा सुख निछावर कर सकते हो। तो फिर मेरी ओर देखो, मेरी आँखों के आँसू देखो, और उस कष्ट का विचार करो, जो मेरे हृदय को

अंधकारमय बना रहा है। यदि तुमको मुझसे कभी प्रेम था—(कुछ ठहरकर) कहो, महाराज ने क्या कहा है ?

वाचाल—राजकुमारी—

छाया—परमात्मा के लिये कहो।

वाचाल—नहीं राजकुमारी, मुझे क्षमा किया जाय।

छाया—तो मेरी इच्छा कोई वस्तु नहीं ?

वाचाल—तुम मुझसे घृणा करने लगोगी।

छाया—बोलो, तुम क्या कहना चाहते हो—भारतवर्ष का एक पुरुष किसी स्त्री का इतना अपमान नहीं कर सकता।

वाचाल—तो राजकुमारी तैयार हो जाओ, परमात्मा तुम्हें लोहे का कलेजा और पत्थर का हृदय दे। महाराज ने आज्ञा दी है—

छाया—(घबराहट से) क्या आज्ञा ?

वाचाल—तुमसे कह दूँ कि उनका और तुम्हारा विवाह अब नहीं हो सकता।

छाया—(अत्यंत व्याकुलता से) क्या—विवाह ?—मेरा और उनका ? यह तुम कहते हो ?

वाचाल—राजकुमारी, मैं नहीं, महाराज कहते हैं। यह महाराज ने कहा है। उनके साथ अन्याय न करो। वह रो रहे थे। उनके नेत्रों में आँसू और मुख पर सफ़ेदी थी। हाथ-पैर काँप रहे थे। वह तुमसे प्रेम करते हैं। परंतु यह राज्य, यह सिंहासन—ओह ! राज्य कितना महँगा है। इसे सुरक्षित रखने के लिये वह तुमसे वियुक्त होने को बाध्य किए गए हैं।

छाया—हाय ! कुमारी, तुम सुन रही हो, वह बाध्य किए गए हैं।

कुमारी—एकाएक यह हो जायगा, इसकी तो कोई आशा न थी।

छाया—(रोते हुए) महाराज सदैव मेरे सम्मुख प्यार की नई-नई क़समें खाते थे। वह मुझे इस तरह छोड़ देंगे, इसका मुझे स्वप्न में भी ख़याल न था। मुझे अब भी विश्वास नहीं होता। (रोना बंद करके) वह मुझे नहीं छोड़ सकते, मुझे नहीं छोड़ेंगे। यह जाल, यह कपट केवल मुझे नाश करने के लिये है। यह महाराज का संदेश नहीं। टूटे हुए हृदय का अंतिम वार है—ठुकराए हुए प्रेम का प्रतिकार है। (वाचाल की ओर देखकर) वाचाल !

कुमारी—एक शब्द—

छाया—(अपने कथन को जारी रखते हुए) तुमने जो कुछ कहा, उसके एक शब्द पर भी मुझे विश्वास नहीं है। तुम झूठ बोलते और इस घृणित उपाय से उस स्त्री का प्रेम प्राप्त करना चाहते हो, जो तुमसे प्रेम नहीं करती। महाराज ने तुम पर विश्वास किया—महाराज तुम पर विश्वास करते हैं, और उन्होंने तुम्हें अपने महल के अंदर आने-जाने की अनुमति दे रक्खी है। क्या यह उसी दया का बदला है ? तुम समझते हो, मैं उनसे फिर जाऊँगी, तो तुम्हारे पैरों की ओर दौड़ी आऊँगी। परंतु—

वाचाल—राजकुमारी !

छाया—तुमने स्त्री के हृदय को अब तक नहीं समझा। वह एक ही बार प्रेम करती है, एक ही पुरुष से प्रेम करती है। और जब उसमें विफल होती है, तो संसार-भर के सुखों को लात मार देती है। उसे धोखा देना सहज नहीं।

वाचाल—राजकमारी !

छाया—तुम्हारी चेष्टा असफल रही। मुझे तुम्हारी बात पर रत्ती-भर भी विश्वास नहीं है।—कुमारी, आओ चलें, मैं महाराज से अभी मिलूँगी। पता लगाओ, वह किस कमरे में है ?

(छाया और कुमारी दोनों चली जाती हैं। वाचाल आश्चर्य से खड़ा रह जाता है, मानो वह मनुष्य नहीं, मिट्टी की मूर्ति है। सहसा वेग से जाना चाहता है। फिर रुक जाता और अपने-आप यों बातें करने लगता है)

वाचाल—यह ठुकराए हुए प्रेम का बदला है !—उसने ये शब्द क्यों कहे ? क्या उसने मुझे इतना नीच, इतना कमीना समझ लिया—परंतु नहीं, यह उसका नहीं, प्रेम का दोष है। उसे महाराज से प्रेम है, और प्रेम के आँखें नहीं होतीं। वह सर्वथा निर्दोष है।

(प्रस्थान)

* * *

तीसरा दृश्य

स्थान—छाया का कमरा

समय—संध्या

(छाया उदास बैठी है। कुछ देर तक वह इसी अवस्था में बैठी रहती है। एकाएक उठती और दरवाज़े की ओर जाती है। फिर लौटती है, फिर देखती है, और फिर पागलों की तरह अपने-आप बातें करने लगती है)

छाया—कुमारी अभी तक नहीं आई। ओह! समय की चाल कैसी धीमी हो गई है! मेरा दम घुटा जा रहा है! ऐसा प्रतीत होता है कि सृष्टि का विनाश हो रहा है इस विलंब का कारण क्या हो सकता है? (सोचती है) यही कि कुमारी असफल वापस आवेगी। महाराज उससे नहीं मिलना चाहते। तो क्या वाचाल झूठ नहीं कह रहा था? परमात्मा! परमात्मा! मेरा हृदय इसको नहीं सह सकता—न सह सकेगा! (दौड़कर दरीचे की ओर जाती है) क्या? सब तैयारियाँ रोक दी गईं। सड़कों की सजावट बंद हो गई, और सिपाहियों के पहरे हटा लिए गए। तो यह झूठ नहीं था?

(कुमारी का प्रवेश)

छाया—कहो, बोलो कुमारी, तुम महाराज से मिलीं? वह क्या कर रहे थे? उन्होंने क्या उत्तर दिया? वह कब आवेंगे?

कुमारी—वह इस समय चाणक्य महाराज के पास थे।

छाया—क्या कर रहे थे?

कुमारी—उनकी आँखों में आँसू थे।

छाया—और—

कुमारी—महाराज चाणक्य उनकी कोई बात नहीं मानते।

छाया—(खड़े होकर) तो यह सच है?

कुमारी—हाँ, सच है। परंतु महाराज इससे पागल—

छाया—नहीं कुमारी, नहीं, यह भी धोखा होगा। पुरुष धोखा देने में बहुत चतुर होते हैं। इस मनुष्य ने—महाराज ने मुझे ऐसा धोखा दिया कि मुझे उस पर संदेह तक नहीं हुआ। आज प्रभात तक तैयारियाँ हो रही थीं। परंतु वह इस प्रभात के साथ उस शाम को भी देख रहा था, जो उसके साथ चिमटी हुई थी। मुझे ख़याल भी न था कि मेरे विनाश के बाँधनू बँध रहे होंगे। कुमारी!—

कुमारी—शांत होइए। निस्संदेह आपके हृदय को बड़ा आघात पहुँचा है।

छाया—इधर आओ।

(कुमारी छाया के निकट जाती है)

छाया—ये वस्त्र, ये आभूषण मुझे तुमने पहनाए थे?

कुमारी—(रुद्ध कंठ से) मुझे क्या मालूम था कि—

छाया—अब तुम्हीं इन्हें मेरे शरीर से अलग कर दो। (कुमारी चुप रहती है) तुम नहीं सुनतीं, नहीं मानतीं! अच्छा, लो, इन्हें मैं स्वयं उतारे देती हूँ। (भूषण और ब्याह के वस्त्र उतारकर पृथ्वी पर फेंक देती है)

कुमारी—यह आपने क्या किया?

छाया—महाराज आवेंगे?

कुमारी—हाँ।—लो, वह आ रहे हैं।

छाया—तो कह दो, मैं उनसे मिलना नहीं चाहती।

कुमारी—आप भूल कर रही हैं। महाराज—

छाया—मिलने की कोई आवश्यकता नहीं।

(वेग से प्रस्थान)

(कुमारी जल्दी से छाया के वस्त्र और आभूषण उठाकर छिपा देती है। महाराज अंदर आते हैं)

चंद्रगुप्त—कुमारी!

कुमारी—(सिर झुकाकर) महाराज!

चंद्रगुप्त—छाया कहाँ है? जाकर उससे कहो, मैं मिलना चाहता हूँ।

(कुमारी सिर झुकाकर जाती है। महाराज बैठ जाते हैं)

चंद्रगुप्त—(स्वगत) चंद्रगुप्त! अंत में वह समय आ गया; अब तुम क्या करोगे? वे शब्द सोच लो, जिनसे तुमको इस तपस्विनी बालिका की आशाओं की हत्या करनी है। यह वीरता नहीं, अत्याचार होगा। वह सुनकर क्या कहेगी? हाय! उसे यह कल्पना तक न थी। प्रातःकाल वह कैसी प्रसन्न थी। मैंने उसे विश्वास दिलाया था। परंतु अब रोती हुई सुंदरता का अंतिम दृश्य देख, और वास्तविक सुख से सदा के लिये वंचित हो जा।—गुरुदेव, यह परीक्षा बहुत कठिन है। क्या मैं सफल हो सकूँगा। (उठकर टहलते हैं। सहसा उनकी दृष्टि वस्त्रों और आभूषणों पर पड़ती है। वह उठकर जाते हैं, उन्हें बाहर निकालते और चौकी पर रख देते हैं) अभागी लड़की! पता नहीं, तू अपने मन में क्या कहती होगी। परंतु यह मेरा दोष नहीं है।

(छाया और कुमारी खैंचातानी करती अंदर आती हैं)

छाया—बस, तुम मुझे नहीं रोक सकतीं। मैं चाणक्य को कुछ नहीं समझती। मैं महाराज से भेंट करूँगी। (महाराज से) आप आ गए। बताइए, क्या यह सत्य है!

चंद्रगुप्त—देवि! मुझ पर दया करो, मेरी दशा पर

तरस खाओ। मुझ-सा अभागा मनुष्य आज सारे भारत-वर्ष में न होगा।

छाया—महाराज, मैं उत्तर चाहती हूँ। क्या यह सत्य है?

चंद्रगुप्त—इस समय मैं प्रेम की बात करने नहीं आया। कर्तव्य ने मेरे होठों के लिये शुष्क शब्द चुने हैं—नहीं—क्या? तुम मेरी ओर ऐसी दृष्टि से न देखो। तुमने मुझे कई बार कर्तव्य का मार्ग दिखाया है। इस समय भी वीर बनो। यहाँ हृदय को कोमल नहीं, पत्थर बनाने की आवश्यकता है। यदि तुमने मेरी ओर इसी प्रकार देखा, तो मैं इसे सहन न कर सकूँगा। ओह! कर्तव्य-पथ किस प्रकार काँटों से भरा पड़ा है।

छाया—(सिसकी भरकर) महाराज!

चंद्रगुप्त—देवी!

छाया—आप

चंद्रगुप्त—देश देवी, देश।

छाया—(आँसू रोककर) देश? देश क्या कहता है?

चंद्रगुप्त—यह विवाह अनुचित है।

छाया—क्यों?

चंद्रगुप्त—देश को शक्ति की आवश्यकता है।

छाया—अर्थात्—

चंद्रगुप्त—तुम एक साधारण पहाड़ी राजा की कन्या हो।

छाया—तो—

चंद्रगुप्त—इस विवाह से मेरे राज्य की शक्ति कुछ नहीं बढ़ेगी।

छाया—(निहोरे के रूप में) तो शक्ति बढ़ाने का उपाय क्या सोचा गया है?

चंद्रगुप्त—यह महाराज चाणक्य का प्रस्ताव है, मेरा नहीं।

छाया—परंतु वह प्रस्ताव क्या है?

चंद्रगुप्त—सेल्यूकस की कन्या—

छाया—सच है। वह सुंदरी है। उसका रंग गोरा है। वह बड़े पिता की पुत्री है। उसके पास सेना है, ख़ज़ाना है, शक्ति है। और मैं (रोकर) एक साधारण राजा की कन्या हूँ। परंतु महाराज, आप इस दुःखिनी की बात याद रक्खें, जितना प्रेम आपके लिये इस हृदय में है, उतना संसार-भर के किसी दूसरे हृदय में न होगा।

चंद्रगुप्त—यह सब कुछ मैं भली भांति समझता हूँ, और जानता हूँ कि तुम्हें छोड़कर मैं जीवन-भर के लिये वास्तविक सुख से वंचित हो जाऊँगा। तुम्हारी ठंडी साँसें मेरे जीवन के एक-एक क्षण को दुःखमय कर देंगी। तुम्हारा प्रेम, जो मेरे रोम-रोम के अंदर समाया हुआ है, मुझे प्रतिक्षण अशांत बनाए रक्खेगा, और मैं मरण-पर्यंत यही समझूँगा कि मैंने तुम पर और अपने ऊपर अत्याचार किया है। परंतु, फिर भी, देश यही चाहता है छाया। (विवशता के भाव से) मैं कुछ नहीं कर सकता मैं सम्राट् हूँ।

छाया—(मस्तक ऊँचा करके) क्या आप उस समय सोए हुए थे, जब मेरे आगे नित नई सौगंदों के साथ नवीन शब्दों में प्रेम प्रकट किया करते थे? क्या आप उस समय मुझसे नहीं कह सकते थे कि अभागी राज-कुमारी, मैं सम्राट् हूँ, और तू साधारण राजकन्या; मेरा-तेरा विवाह न हो सकेगा। परंतु तुमने ऐसा न करके मेरा प्रेम से भरा हुआ भोला-भाला हृदय छीन लिया, और उसे आज इस राज्य-सत्ता के पत्थर पर पटककर खंड-खंड कर रहे हो! क्या तुम्हारी यही प्रतिज्ञा थी? बोलो, उस समय यह देश कहाँ सोया पड़ा था?

चंद्रगुप्त—छाया, मैं क्या करूँ, देश का मुझ पर अधिकार है।

छाया—और, तुम्हारा अपने ऊपर कोई अधिकार नहीं? क्या राजा के अपने अधिकार, अपने स्वत्व नहीं होते?

चंद्रगुप्त—मैं कुछ नहीं कर सकता।

छाया—महाराज, यह आप क्या कर रहे हैं, ज़रा विचार कीजिए, मैं आपकी छाया हूँ। (रोने लगती है)

चंद्रगुप्त—अभागे चंद्रगुप्त! तूने क्यों अतीत समय में भविष्य की अवस्था को न देखा, और राज्य के उत्तर-दायित्व पर विचार न किया? तू समझता था कि तू भी दूसरे मनुष्यों की तरह स्वतंत्र है, जो चाहे, वह कर सकता है। पर नहीं, तू सम्राट् है, तेरी स्वतंत्रता तेरे देश की धरोहर है। तेरी इच्छा तेरे देश का सर्वस्व है। तूने असंभव को संभव समझा, और आज उसका यह परिणाम है कि तेरे आँसू तेरे गाल पर बह रहे हैं। तेरा सुख, तेरा संसार, तेरी सबसे बड़ी इच्छा नष्ट हो रही है। तू सामने खड़ा देख-देख रहा है, और कुछ नहीं कर सकता। (सामने छाया की ओर देखकर) परंतु छाया, मुझे शासन करना है।

छाया—तो आपका यही निश्चय है ?

चंद्रगुप्त—हाँ, यही ।

छाया—तो राज्य करो, और अपना बल बढ़ाने के विचार में प्रसन्न रहो । मैं तुम्हें दुखी न करूँगी । मैं केवल यही देखना चाहती थी कि तुम्हारे वे होंठ, जिन्होंने मुझसे सहस्रों बार प्रेम की प्रतिज्ञाएँ की हैं, किस प्रकार और किन शब्दों में मुझसे यह कहते हैं कि अब मेरा-तुम्हारा कोई संबंध, कोई नाता नहीं । अब मैं फिर न आऊँगी, फिर तुमसे कोई बातचीत न करूँगी । लो, बिदा ! यह शब्द मेरे होंठों से बाहर नहीं निकलता । परंतु क्या करूँ, तुम्हारी राज्य-सत्ता मुझसे यही चाहती है, तो मैं क्या कर सकती हूँ । सूर्य निकलेगा, और अस्त हो जायगा । दिन चढ़ेगा, और ढल जायगा । दिन, मास और वर्ष बीत जायँगे, पर यह सूरत न दिखाई देगी, यह स्वर न सुनाई देगा । परंतु—अच्छा, देखा जायगा । तो अब महाराज की जय हो, जाती हूँ ।

(शिवा का तेजी से अंदर आना)

शिवा—ठहर पुत्री, ठहर । (चंद्रगुप्त से) चंद्रगुप्त !

चंद्रगुप्त—माताजी ।

शिवा—यह क्या हो रहा है ?

चंद्रगुप्त—गुरुजी की यही आज्ञा है ।

शिवा—इस प्रेम की पुतली को छोड़ रहे हो ? बेटा, ऐसी लड़की संसार-भर में दिया लेकर ढूँढ़ते फिरोगे, तो भी नहीं मिलेगी ।

चंद्रगुप्त—मुझे इसमें कोई संदेह नहीं माताजी ।

शिवा—तो फिर यह विवाह क्यों रोक दिया गया है ?

चंद्रगुप्त—गुरुजी की आज्ञा है ।

शिवा—परंतु मैं तुम्हारी माता हूँ । मेरी आज्ञा है, इससे ब्याह करो । मैं इस प्रेम और सौंदर्य की मूर्ति सती-साध्वी देवी के नेत्रों में आँसू नहीं देख सकती । वे तुम्हारे राज्य की जड़ों को हिला देंगे ! मैं इसकी ठंडी साँसों को सह नहीं सकती । वे तुम्हारी शक्ति पर बादल बनकर छा जायँगी !

छाया—नहीं माता, नहीं, यह नहीं हो सकता, यह नहीं होगा । मैं कहीं हूँ, किसी दशा में हूँ, परंतु मेरा हृदय इनके लिये कोई शाप नहीं दे सकता । मेरे होंठ इनके लिये सदैव परमात्मा से मंगल-कामना करते रहेंगे । मैं भारतीय नारी हूँ । मैं प्रेम कर चुकी हूँ ।

शिवा—वत्स, इसके भाव समझो, इसके विचार देख

चंद्रगुप्त—परंतु देश मुझसे बलिदान चाहता है ।

शिवा—तो देश का बलिदान करो । इस तपस्वि कन्या के बलिदान का तुम्हें क्या अधिकार है ?

चंद्रगुप्त—माता !

शिवा—मैं आज्ञा देती हूँ, यह ब्याह करो । तुमने सदैव मेरी आज्ञा का पालन किया है ।

चंद्रगुप्त—और मैं अब भी तैयार हूँ ।

शिवा—तैयार हो ?

चंद्रगुप्त—हाँ तैयार हूँ । परंतु इतना सोच लो कि यह राज्य का पौदा, जिसे इतने दिनों सींच-सींचक हमने वृक्ष बनाया है, बहुत जल्द जड़ से उखड़ जायगा

शिवा—परंतु क्यों ?

चंद्रगुप्त—यह गुरुजी की भविष्यवाणी है ।

शिवा—और वह सैल्यूकस की पुत्री, पराए देश की कन् आकर इस उखड़ते हुए वृक्ष को अपने हाथों से थाम लेगी ओह ! कितनी भारी भूल है ! इसी विचार पर इस लड़ की इच्छाओं को मसल रहे हो ?

चंद्रगुप्त—मगर मैं कुछ नहीं कर सकता ।

शिवा—कुछ नहीं कर सकते ? मेरा कहा भी नहीं मा सकते ? तुम्हारा यह साहस ! मुझे यह स्वप्न में भी खया न था कि तुम मेरे वचन का इतना अपमान कर सक हो । भोले बालक ! तुम क्या कह रहे हो ?

चंद्रगुप्त—माता, मैंने निश्चय कर लिया है कि दे की भलाई के लिये अपने निज के सुखों को वार दूँगा । गुरुदेव का विचार पत्थर की लकीर है । मैं मरने को तय हूँ, परंतु देश-हित के मार्ग में बाधा नहीं दे सकता । हा यदि मुझे इससे प्रेम न होता, यदि मेरे स्वप्न इसकी याद में लवलीन न हो चुके होते ! मैं क्या कह सकता हूँ, आप मे माता हैं । मैं अपनी सबसे प्यारी वस्तु देश पर निछावर क रहा हूँ । इसे छोड़ना मेरा सबसे बड़ा बलिदान है । (छाया की ओर उँगली उठाकर) यह मेरे जीवन क सर्वस्व है । परंतु मैं क्या करूँ, गुरु की आज्ञा का उल्लंघ करने से देश मुझे धिक्कार देगा, मेरा सिर नीचे झु जायगा ।

छाया—नहीं महाराज, नहीं । आप सिर ऊँचा करके, छाती उभारकर खड़े हों । देश आपकी प्रशंसा के गी गावे । शक्ति आपके सामने हाथ बाँधे । ऐश्वर्य आपके सिर प

निछावर हो। आप इन बातों की ओर देखें, इनकी परवा करें। परंतु मेरा—(लंबी साँस भरकर) मेरा ख़याल न करें। मैं बिदा होती हूँ। मैं आपके मार्ग का कंटक नहीं बनना चाहती। परंतु आपका प्रेम मेरे हृदय से नहीं निकलेगा। उसे मेरे हृदय में स्मारक के रूप में रहने दें। आपने मुझसे मेरा सुख, शांति, सब कुछ छीन लिया है; परंतु यह प्रेम,यह अंतिम स्मृति संसार में मैं अपने हृदय से पृथक् नहीं कर सकूँगी। जब तक जीती हूँ—पता नहीं कब तक, एक दिन, एक सप्ताह या एक मास—उस समय तक यह धरोहर मेरे पास रहने दें—क्यों आप रो रहे हैं? धीरज धरें। आपने मुझसे साहस माँगा था, मैं आपको साहस दे रही हूँ। आपके इन आँसुओं ने आपका हृदय मेरे आगे खोल दिया है। अब मैं सब कुछ करूँगी। आप मुझसे प्रेम करते हैं, बस, मेरे लिये यही सब कुछ है कुमारी! माताजी! महाराज! मैं जा रही हूँ! महाराज की जय हो।

(वेग से प्रस्थान)

शिवा—वह चली गई। यह नहीं हो सकता। चंद्रगुप्त, चंद्रगुप्त, वत्स!

चंद्रगुप्त—(रोते हुए) माता।

शिवा—देखते हो, छाया चली गई। बोलो, मैं उसे बुला लूँ।

चंद्रगुप्त—क्या?

शिवा—समय हाथ से जा रहा है। शीघ्र बोलो, मैं उसे बुला लूँ।

चंद्रगुप्त—भाग्य से कोई नहीं लड़ सकता, इसका मुझे पता न था।

शिवा—तो तुम क्या कहते हो? जल्दी करो, एक-एक क्षण में बात बिगड़ रही है। मुझे भय है कि छाया कहीं—

चंद्रगुप्त—अपने प्राणों पर खेल जायगी? नहीं यह नहीं हो सकता। जाओ, उसे वापस बुला लाओ। मैं अपना निश्चय बदलता हूँ।

शिवा—पुत्र, तुमने मुझे दुबारा जीवित किया, तुम्हें दूध पिलाना व्यर्थ नहीं गया।

(वेग से प्रस्थान)

चंद्रगुप्त—एक ही दिन में इतनी घटनाएँ हो जायँगी, यह कौन जानता था। इनके सामने मनुष्य की उतनी भी स्थिति नहीं, जितनी नदी के वेग-युक्त प्रवाह के सामने एक तृण की होती है। प्यारी छाया, मैं राज-पाट छोड़ दूँगा और भिखारी बनकर तुम्हारे साथ सुखी रहूँगा। मुझे इस शासन की कोई आवश्यकता नहीं। मेरा शासन—मेरी सत्ता तू है।

(वाचाल का प्रवेश)

वाचाल—महाराज की जय हो।

चंद्रगुप्त—तो अब तुम नहीं जाओगे?

वाचाल—मैं अंतिम बार दर्शनों के लिये उपस्थित हुआ हूँ।

चंद्रगुप्त—नहीं भाई वाचाल, नहीं। मैं यह नहीं सह सकूँगा। मुझे इस संसार में केवल दो वस्तुओं से प्रेम है, तुमसे और छाया से। आज तुम दोनों मुझसे अलग हो रहे थे। छाया को मैं छोड़ रहा था, तुम मुझे छोड़ रहे थे। परंतु अब यह कभी न हो सकेगा। तुममें से एक मेरे दिन की धूप है, दूसरा रात की चाँदनी मैं इन दोनों के विना नहीं रह सकूँगा। मैंने छाया को छोड़ने का विचार छोड़ दिया है, तुम मुझे छोड़ने का विचार छोड़ दो।

वाचाल—हाय! प्रारब्ध ने मुझे फिर धोखा दिया। आशा की छोटी-सी किरण दिखाई दी थी, वह फिर अथाह अंधकार में विलीन हो गई।

चंद्रगुप्त—यह तुम क्या कह रहे हो?

वाचाल—महाराज!

चंद्रगुप्त—कहो भाई वाचाल! कहो, तुम क्या कहना चाहते हो?

वाचाल—जो आप सुनने को तैयार न होंगे।

चंद्रगुप्त—आज मैं सब कुछ सुन लूँगा। आज का दिन ऐसी ही घटनाओं के लिये है, जिनकी कोई आशा न थी। तुम कहो, क्या कहना चाहते हो, जिसकी भूमिका इतनी भयानक है।

वाचाल—महाराज मुझे छाया से प्रेम था।

चंद्रगुप्त—(चौंककर) प्रेम था, और अब?

वाचाल—अब भी उसी प्रकार है। आपने मेरा जीवन नष्ट कर दिया है। मैं इसे लेकर आपके सामने नहीं रह सकता।

चंद्रगुप्त—वाचाल, तुम्हारा यह साहस! तुमको मेरी सत्ता का, मेरी तलवार का भय न था? ये शब्द इस प्रकार

सहज ही में मेरे सामने कह दिए ? यह मेरा, मेरे प्रताप का, मेरी शक्ति का अपमान है।

वाचाल—(उपेक्षा से) यदि यह अपमान है, तो मैं इसका दोषी हूँ ।

चंद्रगुप्त—(क्रोध से) दुष्ट ! निर्लज्ज !

वाचाल—(तलवार पर हाथ रखकर) बस, सावधान ! मैं यह नहीं सुन सकता ।

चंद्रगुप्त—तलवार निकालो । हम लड़ेंगे ।

वाचाल—महाराज, आप मेरे सम्राट् हैं । मैं आपके सामने तलवार नहीं निकाल सकता ।

चंद्रगुप्त—कायर ! ढीठ !

वाचाल—(तलवार निकालकर) बहुत अच्छा, यह अग्नि आपके पत्थर पर पत्थर मारने से निकली है । मैं इसका उत्तरदाता नहीं हो सकता । आ जाइए, मैं तैयार हूँ।

(दोनों लड़ना चाहते हैं । बाहर से रोने का शब्द सुनाई देता है)

चंद्रगुप्त—कौन ! यह माताजी की आवाज़ है। इसके क्या अर्थ ? क्या ओह !

(एकाएक चाणक्य का प्रवेश)

चाणक्य—बस, बिगड़े हुए उन्मत्त शेरो, तलवारें झुका लो । छाया प्राण दे रही है ।

चंद्रगुप्त—(तलवार फेंककर) क्या छाया—इसके आगे आपने क्या कहा ?

चाणक्य—बेचारी लड़की प्रेम की ठोकर को सहन न कर सकी, और उसके विना एक घंटा भी जीवित न रही। उसने विष खा लिया ।

वाचाल—(चंद्रगुप्त से) और इसका उत्तरदायित्व आप पर है महाराज !

चंद्रगुप्त—नहीं इसमें मेरा कोई दोष नहीं । यह सब गुरुदेव—इस ब्राह्मण की करतूत है । छाया ! छाया !!

(तेज़ी से जाना चाहते हैं । छाया गिरती-पड़ती अंदर आती है । राजमाता सहारा दिए हुए हैं)

छाया—महाराज की जय हो ! प्रणाम करती हूँ ।

चंद्रगुप्त—प्यारी छाया ! यह तुमने क्या कर डाला ! क्या तुम्हें मेरा ख़याल न था ? ओह ! मैंने राज-पाट, सिंहासन, सब कुछ त्याग देने का निश्चय कर लिया था । परंतु अब—

छाया—आपने अपना कर्तव्य पूरा किया । मैंने अपना कर्तव्य समझा ।

चंद्रगुप्त—वाचाल, दौड़ो, राजवैद्य को जल्दी लाओ। यह बचेगी, मैं इसे नहीं मरने दूँगा ।

छाया—(तड़पते हुए) नहीं, अब वैद्य कुछ नहीं क सकेगा । मैं—जली—फुँकी—महाराज—

चंद्रगुप्त—(झुककर) छाया ! छाया !!

शिवा—किसे बुला रहे हो ? वह अब इस संसार में नहीं रही ।

चंद्रगुप्त—क्या, मर गई, एक तारा आकाश से टू पड़ा, एक संगीत-लहरी वायु-मंडल में विलीन हो गई, एक फूल मिट्टी में मिल गया, एक बुद्बुदा जल में तन्मय हो गया—और इसका उत्तरदाता मैं हूँ ! इसके मारनेवाला, इस सौंदर्य की हत्या करनेवाला, इस लावण्य को नष्ट करनेवाला मैं हूँ । छाया ! छाया !! मेरी प्यारी !

(बेहोश होकर गिर जाते हैं)

(यवनिका)

सुदर्शन

हृदय का मधुर भार

हृदय, क्यों लाद लिया यह भार—
किसी देश की, किसी काल की छाया का भंडार
कहाँ लिए जाता है मुझको यह जीवन-विस्तार
उठते पैर नहीं हैं मेरे, झुक-झुक वारंब
झाँका करता हूँ मैं तेरे भीतर दृष्टि पसा
अंकित जहाँ मधुरता के हैं वे अतीत आका
जिनके बीच प्रथम उमड़ी थी जीवन की यह धार
लगी रहेगी ताक-झाँक यह सब दिन इसी प्रका
लिपटा था मधुलेप कहाँ का ऐसा अमित अपा
उन रूपों में चिपका जिनकी छाया तक का तार
संचित है जिन रूपों की यह छाया जीवन-स
उनके कुछ अवशेष मिलेंगे बाहर फिर दो-चार
आशा पर बस, इसी, सहे चलता हूँ, हे संसार
तेरे इन रूखे रूपों के कड़वेपन की मा

झलक (१)

नगर से दूर कुछ गाँव की-सी बस्ती एक
हरे-भरे खेतों के समीप अति अभिराम;

जहाँ पत्रजाल अंतराल से झलकते हैं
लाल खपरैल, श्वेत छज्जों के सँवारे धाम।
बीचोबीच वट-वृक्ष खड़ा है विशाल एक,
झूलते हैं बाल कभी जिसकी जटाएँ थाम ;
चढ़ी मंजु मालती-लता है जहाँ छाई हुई,
पत्थर की पट्टियों की चौकियाँ पड़ी हैं श्याम।
बैठते हैं नित्य यहाँ धर्म के धुरीण एक
क्षत्रिय कुलीन वृद्ध 'भद्र' भीष्म के समान ;
नाना इतिहास औ' पुराण के प्रसंग यहाँ
छिड़े हुए रहते हैं करते पवित्र कान।
नीम-तले पास ही पुरोहित का द्वार वह,
रहती है जहाँ शिष्य-मंडली विराजमान ;
पढ़े-लिखे लोगों का निवास ही विशेष यहाँ;
घर हैं दो-चार गोप, नापित भी गुणवान।
पंडित 'श्रीविंध्यजी' की मधुर, सरस वाणी
भारत की भारती की ज्योति को जगाती है ;
वीथियों में स्वच्छ शुभ्र शिष्यों की फिरती हुई
मंडली पुराना दृश्य सामने फिराती है।
परम पुनीत रीति नीति-भरी 'भद्रजी' की
द्वापर की छाया वट-छाया बीच छाती है ;
यों इस भूखंड की निराली आर्य-माधुरी का
नूतन करालता न लोप कर पाती है।
चहल-पहल सदा रहती है; सोहते हैं
प्रकृति के बाँधे रुचि-रंग में सने समाज ;
छाया छिन्न हुई, धूप छिटकी छटा के साथ,
दूबों पर ओप ओस-कण की रही विराज।
जम गई मंडली सयानों की सहास मुख,
जिन्हें है नचाता नहीं आज कोई काम-काज ;
चल पड़ी चर्चा चटकीली चित-चाह-भरी,
घड़ी कोई अड़ी जान पड़ती नहीं है आज।
देखो यह टोली जो कुमारों की निकली अब
बोली औ ठठोली के निकालती अनेक ढंग ;
युगल 'प्रमोदबंधु' और 'वृक' आगे चले,
पीछे मैं 'अरुणजी' को लाता हूँ ढकेले संग।
फिर वे न-जाने किस बात पर लौट पड़े,
मुँह को लटकाते झुँझलाते किए भ्रूभंग ;
हँस-हँस लोटते हैं उधर 'प्रमोदबंधु',
बीच में मैं रहता हूँ देख यह दृश्य दंग।
जाते हैं पूर्व पथ पकड़े हुए 'पुष्कर' का
पनस-रसाल-जाल-बीच से विचरते ;
दोनों ओर फैली हरियाली हृदयों में
ढली पड़ती है, पैर आगे आप से उभरते।
नंदन-वन-वीथी का खंड यह साथ लिए
आते हम मानो स्वर्गधाम से उतरते ;
चलते हैं संग में उमंग-भरे साथी सब,
छेड़ किसी खूसट को अट्टहास करते।
छोड़ पथ 'पुष्कर' के कोने पर आए अब,
पीपल की डाल जहाँ दूर तक छाई है ;
मंडप है शिव का पुराना एक नीचे वहीं,
घाट भी है आगे बँधा देता दिखलाई है।
दाहने कदंब और बाएँ है अशोक खड़ा,
बीचोबीच टूटी हुई ढालुवाँ जुड़ाई है ;
नीम, आम लगे हुए टीलों पर तीन ओर,
कोने पर कुटी एक साधु की बनाई है।
दक्षिण की ओर उस टीले पर देख पड़े
'हरिकेश' हाथ को उठाए औ' पुकारते ;
गन्ने कुछ हाथ में थे उनके, सो बाँट लिए,
जोत उन्हें साथ अब आगे हैं सिधारते।
खेतों में घुमाती चली जाती है डुर्री यह
'शरपत्र' ओर जहाँ नित्य ही पधारते ;
चंदन से चर्चित कलेवर ले 'नंदनजी'
मधुर-मधुर छंद मुख से उचारते।
भूरी, हरी घास आसपास, फूली सरसों है,
पीली-पीली बिंदियों का चारों ओर है पसार ;
कुछ दूर विरल, सघन फिर, और आगे
एक रंग मिला चला गया पीत-पारावार।
गाढ़ी हरी श्यामता की तुंग राशि-रेखा घनी
बाँधती है दक्षिण की ओर उसे घेरघार ;
जोड़ती है जिसे खुले नीले नभमंडल से
धुँधली-सी नीली नगमाला उठी धुआँधार।
लगती हैं चोटियाँ वे अति ही रहस्यमयी,
पास ही में होगा बस वहीं कहीं देवलोक ;
बार-बार दौड़ती है दृष्टि उस धुँधली-सी
छाया बीच ढूँढ़ने को अमर-विलास-ओक।
ओट में अखाड़े वहीं होंगे वे पुरंदर के,
अप्सराएँ नाच रही होंगी जहाँ ताली ठोंक ;

सुनने को सुंदर संगीत वह मंद-मंद
बुद्धि की नहीं है अभी कहीं कोई रोक-टोक।
अंकित नीलाभरक्त, श्वेत, नील सुमनों से
मटर के फैले हुए घने हरे जाल में;
फलियाँ हैं करती संकेत जहाँ मुड़ते हैं;
और अधिकार का न ज्ञान इस काल में।
बैठते हैं प्रीति-भोज हेतु आसपास सब
पक्षियों के साथ इस भरी हुई थाल में;
हाँक पर एकसाथ पंखों ने सराटे भरे;
हम मेड़-पार हुए एक ही उछाल में।
सूखती तलैया के चारो ओर चिपकी हुई
लाल-लाल काइयों की भूमि पार करते;
गहरे पड़े गोपद के चिह्नों से अंकित जो,
श्वेत बक जहाँ हरी दूब में बिचरते।
बैठ कुछ काल एक पास के मधूक-तले,
मन में सन्नाटे का निराला सुर भरते;
आए 'शरपत्र' के किनारे जहाँ रूखे खुले
टीले कँकरीले हैं हिमंत में निखरते।
श्यामल, सघन अमराइयों के बीच जहाँ
धौले, मटियाले घर देखने में आते हैं;
करते निवास उसी ग्राम में हैं 'नंदनजी',
नारद-सा दिव्य रूप नित्य जो दिखाते हैं।
पच्छिम की ओर उस छोटे-से सरोवर के
पार जब दृष्टि हम अपनी दौड़ाते हैं;
पड़ता है दिखाई धाम पूज्य 'वागीशजी' का
बात-बात में जो हास्य-रस बरसाते हैं।
दर्शन की लालसा से सीधे मुड़े उसी ओर
गड्ढों और खाइयों का कुछ भी न ध्यान कर;
टेढ़े-मेढ़े मेंड़ छोड़ चलते हैं खेतों-बीच,
बोलता है कोई, तो न मानते हैं तिल-भर।
बीच से चबूतरे के निकला है पीपल जो,
आए वहाँ बठे मिले साथ दोनों विप्रवर;
ठोकर खा जड़ की ज्यों बोले हम 'पंडितजी !',
हँसे वे हमारे इस झुकते प्रणाम पर।

रामचंद्र शुक्ल

संगठन

देश में आजकल चारों ओर संगठन की पुकार मची हुई है। कोई किसानों का संगठन करना चाहता है, कोई मज़दूरों का; कोई ग्राम-संगठन करना चाहता है, कोई हिंदुओं का। यह पुकार ही इस बात का प्रमाण है कि किसान, मज़दूर अथवा हिंदू असंगठित हैं। हिंदू-संगठन की चर्चा इस समय ज़ोरों पर है, जिससे सूचित होता है कि संगठन की आवश्यकता को वे इस समय सबसे अधिक समझ रहे हैं। हिंदू-जाति की जागृति का भविष्य इतिहास-लेखक उस परम पवित्र मुहूर्त को जी खोलकर धन्यवाद दिए विना न रह सकेगा, जब कि साबरमती के एक आध्यात्मिक जुलाहे को हिंदू-मुसलमानों का परम विश्वासपात्र होते हुए भी कह ही देना पड़ा कि "मुझ पर हिंदुओं के प्रति विश्वासघात करने का दोषारोपण संभवतः किया जा सकता है।" (देखो—यंग इंडिया, पृष्ठ ३५३, तारीख़ २३।१०।२४) इस वाक्य का उच्चारण करके उस जीवन्मुक्त, परंतु नश्वर-देहधारी, व्यक्ति ने २१ दिनों के भयंकर उपवास-सागर में अपने को ढकेल दिया। एक अभूतपूर्व धड़ाके की आवाज़ हुई, और कूदनेवाले के सर्वमान्य निर्दोषत्व के कारण सोनेवालों को जाग जाना पड़ा। इसमें संदेह नहीं कि हिंदुओं पर मुसलमानों के गुंडा-विभाग द्वारा होनेवाले अत्याचार ही इस जागृति के निमित्त-कारण हैं; क्योंकि हिंदुओं को अपनी असहाय अवस्था का ज्ञान जैसा अभी हुआ है, वैसा पहले नहीं हुआ था। परंतु निमित्त-कारण के अतिरिक्त इस जागृति के अन्य कारण भी हैं। अस्तु। इस लेख में हम यह विचार करने का प्रयत्न करेंगे कि सिद्धांत की दृष्टि से संगठन क्या वस्तु है; और वर्तमान हिंदू-जागृति से उसका क्या संबंध हो सकता है।

मनुष्य अपूर्ण प्राणी है। उसका पुरुषार्थ सीमाबद्ध है। वह सकलगुण-संपन्न और सर्वशक्तिमान् नहीं है। इन न्यूनताओं के साथ वह महत्त्वाकांक्षी भी है। अकेला रहकर वह अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति, अधिकारों की रक्षा और ध्येयों की प्राप्ति सदा नहीं कर सकता। इसी लिये उसने

अपने लाभ के लिये अपने को जन्म से ही सामाजिक जीव बना लिया है। यही संगठन की उत्पत्ति का प्रधान कारण है। संसार-भर की मनुष्य-जाति का बँटवारा भी संगठन को जन्म देने का स्वाभाविक कारण होता है। अखिल मानव-सृष्टि अनेक स्वाभाविक तथा कृत्रिम कारणों से अनेक विभागों में बँटी हुई है। इसलिये उसमें विभिन्नता भी पाई जाती है, और विशेषता भी। उन कारणों में भौगोलिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, राजनीतिक तथा सामाजिक कारण प्रधान हैं। मान लीजिए, इस समय पृथ्वी में १५० करोड़ मनुष्य रहते हैं। इनमें स्वाभाविक विभिन्नता और विशेषता देखिए। जल-वायु के कारण इनमें से कुछ करोड़ दृढ़ होंगे और कुछ कमज़ोर, कुछ गोरे होंगे और कुछ काले, कुछ के शरीर की बनावट एक प्रकार की होगी और कुछ की दूसरे प्रकार की। इस तरह पृथ्वी का मनुष्य-समूह टुकड़ों में बँट जाता है। अब दूसरी दृष्टि से देखिए। उसी संख्या में से कुछ हिंदू होंगे और कुछ मुसलमान, कुछ ईसाई होंगे और कुछ बौद्ध, जैनी, पारसी, यहूदी आदि। इस तरह से भी यही संसार दुबारा दूसरे क़िस्म के टुकड़ों में बँट गया। सारांश यह कि मनुष्य-समुदाय अनिवार्य-कारणों से, देश, राष्ट्र, व्यवसाय और धर्म की दृष्टि से, कई हिस्सों में बँट जाता है। जब तक संसार में महाप्रलय न होगा, तब तक मानव विभागों की विभिन्नता का नष्ट होना केवल असंभव ही है। यदि संभव भी मान लिया जाय, तो उनका नाश करना इष्ट नहीं। क्यों? इसीलिये कि वे ही संसार को रहने योग्य बनाते हैं। उनके न रहने पर संसार नीरस हो जायगा। आवश्यकता तो इस बात की है कि विभिन्नता में एकता स्थापित की जाय।

जन्म, कर्म, परिस्थिति, योग्यता, स्वभाव आदि मनुष्य-समाज को जहाँ एक ओर कई हिस्सों में बाँट देते हैं, वहाँ वे उन हिस्सों में कई प्रकार की विशेषताएँ भी उत्पन्न कर देते हैं। कोई विभाग अधिक साहसी होता है, और कोई विभाग कम साहसी। कोई समुदाय मांसाहारी हो जाता है, और कोई शाकाहारी। कोई अल्पसंतोषी हो जाता है, और कोई प्रबल महत्त्वाकांक्षी। परंतु जीने का अधिकार सबको है। यदि एक वर्ग अपने से भिन्न वर्ग को दूषित और नीच समझकर नष्ट करना चाहे, तो प्रतिदिन संसार में विध्वंसक क्रांति ही नज़र आवे, और रचनात्मक विकास का पता ही न रहे। इस कल्पनागम्य भयंकर दशा से बचने के लिये प्रत्येक जाति, समुदाय तथा राष्ट्र का कर्तव्य है कि वह अपने को इतना सबल अवश्य बना ले कि उस पर दूसरे मनमाना, और समय-असमय, अत्याचार न कर सकें। संसार में दुर्बल और कमज़ोर बनना ही अन्याय और मृत्यु को निमंत्रण देना है। देर तक जीने का अधिकारी वही है, जो योग्यता में किसी से कम न हो।

उपर्युक्त बँटवारे की दृष्टि से प्रत्येक देश, राष्ट्र और धर्म में कुछ-न-कुछ ऐसा महत्त्व-पूर्ण गुण अधिकता से रहता है, जो किसी दूसरे देश, राष्ट्र या धर्म में उस दर्जे तक नहीं रहता। अर्थात् विभिन्नता अनिवार्य भी है, और उपयोगी भी। परंतु कब तक? जब तक वह किसी उचित सीमा के भीतर रहे; जहाँ मर्यादा का उल्लंघन हुआ कि संसार का पोषण करने के बदले वही विभिन्नता उसका रक्तपान भी करने लगती है। इसी मर्यादा की रक्षा करने के लिये प्रत्येक मानव-विभाग को वह बल प्राप्त करना पड़ता है, जिसके द्वारा वह अपनी विशेषता की—अपनेपन की—रक्षा और वृद्धि, प्रत्येक दशा में, कर सके। इस बल-प्राप्ति में उस विभाग का एकसाथ मिलकर लग जाना ही संगठन कहलाता है। संगठन का अर्थ है एकसाथ बँध जाना अथवा एक में गठ जाना। उसके लिये सीधा-सादा पर्यायवाची शब्द दृढ़ एकता है। एक सूत्र में बँध जाना, कोई महान् उद्देश रखकर चैतन्यता के साथ काम करना, एक दूसरे के निकट आना, नियमबद्धता, उद्देश तथा कार्यप्रणाली की एकता, संघशक्ति, एकप्राणता आदि संगठन के अर्थ के द्योतक हैं। उत्तम संगठन वह क्रिया अथवा आंदोलन है, जिसके द्वारा किसी स्थान, जाति अथवा राष्ट्र में अंतरंग-समानता की सृष्टि होकर काम करने की ऐसी सम्मिलित स्फूर्ति हो, जिसके द्वारा वह जाति अथवा राष्ट्र अपनी विशेषताओं तथा अधिकारों को लेकर जीवित रह सके।

संगठन कलियुग का बल है। कहते हैं, अन्य युगों में व्यक्ति के सामर्थ्य की सीमा न थी। वह अपने मार्ग की बाधाओं को निजी शक्ति से दूर कर सकता था, और न-जाने क्या-क्या कर सकता था। प्राचीन हिंदुओं की शक्ति का स्मरण कीजिए। और अब? अब तो मनुष्य की शक्तियाँ परिमित हैं। वह मृत्यु को जीत सकने में असमर्थ

है। उसके शाब्दिक शाप से किसी के सिर में दर्द भी नहीं पैदा होता। वह अकेला कोई बड़ा चमत्कार नहीं दिखला सकता। शक्तिहीन, मंत्रहीन, क्रियाहीन होने के कारण वह स्वयं ही एक चमत्कार दयापात्र बन गया है। अतएव अपनी कमज़ोरियों को पूरा करने के लिये वह अपने पड़ोसियों, सजातीयों और देशभाइयों से सहायता और रक्षा की भिक्षा माँगता है। जिसके आगे वह जाता है, वह भी वैसा ही सामान्य व्यक्ति होता है; क्योंकि असाधारण सामर्थ्य एक दुर्लभ बात है। दोनों का मेल या संगठन हो जाने पर लँगड़े को अंधे की टाँगों का लाभ मिल जाता है; और अंधे को लँगड़े की आँखों का। यदि दोनों असंगठित रहना चाहें, तो हानि दोनों की ही होती है। मिल जाने से दोनों की भलाई है।

ऊपर कहा जा चुका है कि प्रत्येक मानव-समूह में कोई-न-कोई ख़ास गुण और विशेषता होती है। उसी की रक्षा के लिये यह आवश्यक हो जाता है कि उस समुदाय के सब आदमी मिल-जुलकर काम करें। विभिन्नताओं के मारे तो संसार यों ही समरांगण बना हुआ है। बाहरी आक्रमण से सामना करने के लिये भीतरी अर्थात् घरू सहयोग की आवश्यकता होती है। एक नाव में यदि सौ आदमी बैठे हैं, तो भलाई इसी में है कि प्रत्येक आदमी उस नाव को किसी एक ही इच्छित दिशा की ओर ले जाने में सहायक हो। यदि कोई उसे पश्चिम की ओर खींचेगा और कोई दक्षिण की ओर, तो नाव उलट जायगी, और दोषी तथा निर्दोष सभी को डूबना पड़ेगा। यह बतलाने की आवश्यकता नहीं कि समस्त हिंदू अपनी प्राचीन सभ्यता की नाव पर बैठे हैं। प्रकृति और सृष्टि-रचना की ओर देखिए। वह भी संगठन की आवश्यकता बतलाती है। पृथ्वी, सूर्य, चंद्र, समुद्र, अग्नि अपने-अपने स्वाभाविक तथा भिन्न-भिन्न गुणों को लेकर इस सुंदरता से नियुक्त हैं कि जिससे चर-अचर सृष्टि को निरंतर जीवन मिल रहा है। गुण और योग्यता में वे भिन्न-भिन्न हैं; परंतु सब मिलकर वे विश्व को चिरजीवी बना रहे हैं। उनकी संहति से एक दिव्य कार्य का साधन हो रहा है। यदि उनमें से कोई अपना स्वाभाविक गुण-धर्म छोड़ दे, अथवा स्थान-भ्रष्ट हो जाय, तो सृष्टि का क्रम तुरंत बिगड़ जाय।

छोटी-छोटी शक्तियों और पदार्थों के मिल जाने पर बड़े-बड़े परिणाम होते हैं। अतएव संगठनरूपी शक्ति की बड़ी महिमा है। एक व्यक्ति के प्रभाव और दस व्यक्तियों के प्रभाव में बड़ा अंतर होता है। छोटे-छोटे तिनकों में कोई मज़बूती नहीं। पर उनको बँटकर रस्सी बना लेने से बड़े-बड़े मस्त हाथी बाँधे जा सकते हैं। निर्बल दीपक में भी अग्नि रहती है, और प्रबल भट्ठे में भी। परंतु हवा दीपक की आग को बुझा देती और भट्ठे की आग को उलटे सहायता देती है। एक पैसे में कोई विशेष बल नहीं। परंतु यदि दस-बीस करोड़ आदमी किसी काम के लिये प्रतिदिन केवल एक पैसा बचाकर दे सकें, तो बड़ा भारी भेद मालूम होगा। छोटी-छोटी ईंटों के मेल से एक बड़ी दीवार बन जाती है। ईंट की ताक़त और दीवार की दृढ़ता में बड़ा फ़र्क़ रहता है। जब भाप शून्य आकाश में इधर-उधर बिखरी रहती है, तब वह किसी काम की नहीं रहती। परंतु वही भाप जब एकत्र कर किसी यंत्र में भर दी जाती है, तब बड़ी-बड़ी चट्टानों को भी फोड़ सकती है। छोटे-छोटे पंचतत्त्वों से ही यह सारी सृष्टि बनी हुई है। रेत के छोटे-छोटे कणों से अनंत समुद्र का किनारा बनता है। छोटे-छोटे पाषाण-खंडों और वृक्षों से ही हिमालय का पहाड़ बना है। छोटे-छोटे कामों के संयोग से ही बड़ा काम होता है। छोटे के आधार से ही बड़े का बड़प्पन है। अपने-अपने उचित स्थान और समय में छोटी चीज़ें भी बड़ी और महत्त्व-पूर्ण हैं। बड़ा, छोटे-छोटे के संगठन के सिवा, और कुछ भी नहीं है।

उत्तम संगठन से अनेक लाभ होते हैं। उसके द्वारा छोटी-छोटी नगण्य चीज़ों का बल और महत्त्व बढ़ जाता है, सम्मिलित शक्ति का जन्म होता है, लाखों-करोड़ों आदमियों की आवाज़ में एक ही ध्वनि सुनाई पड़ती है, और वास्तविक जागृति होकर श्रेष्ठ मार्ग सूझने लगता है। संगठन होने से लोगों को अपनी दशा, गुण-दोष, योग्यता, आवश्यकता आदि का पूरा ज्ञान हो जाता है। विशेष लाभ यह होता है कि व्यर्थ के विवाद-झगड़े, उदासीनता आदि के नष्ट हो जाने के कारण शक्ति का अपव्यय नहीं होने पाता। संगठन के द्वारा आकर्षण, मिलाप और प्रेम की क्रियाएँ काम करने लगती हैं, और विकर्षण, अलगाव तथा घृणा की क्रियाओं का लोप होने लगता है।

संगठन के अभाव में जो हानि और दुर्दशा होती है,

उसका ठिकाना नहीं। उदाहरण के लिये वर्तमान हिंदू-समुदाय को ही ले लीजिए। इस समुदाय की वर्तमान दशा की तुलना एक बालू के ढेर की हालत से की जा सकती है। ज़रा-सी हवा आई कि उस ढेर का एक टुकड़ा टूटकर अलग हो जाता है। थोड़े-से पानी की चपेट से वह गिरकर बह जाता है। यदि बहुत समय तक उस ढेर का एक-एक टुकड़ा हवा से उड़ता रहे, तो एक समय ऐसा भी आ सकता है, जब उस ढेर का कहीं पता ही न रहेगा। उसी बालू के ढेर में सीमेंट की थोड़ी-सी चिकनाई मिलाकर देखिए। तब बड़ी-से-बड़ी आँधी उसकी अचलता को नष्ट नहीं कर सकती, और प्रबल-से-प्रबल जल-प्रवाह आसानी से उसके टुकड़े नहीं कर सकता। सारांश यह कि असंगठन मरने का और संगठन जीने का पूर्व-लक्षण है।

अँगरेज़-सरकार का संगठन हमारे सामने उत्तम संगठन का उदाहरण है। पार्लियामेंट में प्रधान मंत्री और भारत-सचिव आज जो स्वर अलापते हैं, उसी की प्रतिध्वनि कल भारत के बड़े लाट साहब के शब्दों में सुनाई पड़ती है। तीसरे दिन गवर्नर, कमिश्नर, डिपुटी-कमिश्नर इत्यादि भी उसी तरह की आवाज़ उठाते दिखाई पड़ते हैं। यही कारण है कि संसार में आज उसका बोलबाला है। हमारा शरीर भी उत्तम संगठन का एक नमूना है। मस्तक में चोट लगने से शरीर के प्रत्येक अंग को कष्ट पहुँचता है। पेट में उम्दा भोजन पहुँचने पर समस्त शरीर सुखी हो जाता है। पैर जब घर से बाहर चलने लगते हैं, तब हाथ घर में पड़े हुए नींद नहीं लेते। सब अंग आपस में मिलकर काम करते हैं। एक बात और है। शरीर में बड़े-बड़े दोष भी हैं। वह वात, पित्त और कफरूपी विस्फोटक पदार्थों अथवा विभिन्नताओं के उचित मेल से ही जीता है—वह अचानक सन्निपातग्रस्त उसी समय हो जाता है, जब इनमें से कोई अत्यंत न्यून या अधिक हो जाय।

उद्देश जितना व्यापक और कार्यक्षेत्र जितना बड़ा होगा, उतना ही व्यापक और बड़ा संगठन भी करना पड़ेगा। संगठन बिखरे हुए को एकत्र करता है, बिछुड़े हुए लोगों को मिलाता है, और प्रबल विभिन्नताओं के बीच यथार्थ मेल स्थापित करता है। इसलिये वह कोई हँसी-खेल अथवा उतना सहज काम नहीं है। बँटी हुई रस्सी से हाथी बँधता है; परंतु तिनकों को बँटकर रस्सी बना डालना प्रत्येक मनुष्य को नहीं आता। उत्तम संगठन करने के लिये बड़े धैर्य और आत्मत्याग की आवश्यकता होती है। भाग्यवादी, आलसी, जागकर भी आँखें बंद रखनेवाले, कायर और आत्मविश्वास-हीन व्यक्तियों में अपनेपन का भाव जगा देना, और अपनी जातीय सभ्यता पर आंतरिक स्वाभिमान उत्पन्न कर देना, बड़ा ही कष्टसाध्य काम है। महत्त्व-पूर्ण वस्तुओं की प्राप्ति के लिये मूल्य भी बहुत अधिक देना पड़ता है। फिर भी मनुष्य सब काम कर सकता है। कहा भी है—

“चार जने चार हू दिशा तें चारं कोने गहि,
मेरु को हिलाय कै उखारैं, तो उखरि जाय।”

पड़ोसियों में, सजातीय लोगों में, समान कुल-शील-वालों में और एक सभ्यता, एक आचार-विचार रखनेवालों में किसी-न-किसी प्रकार का स्वाभाविक संगठन अवश्य रहता है। यही संगठन किसी एक बड़े उद्देश को सामने रखकर सुदृढ़ और व्यापक किया जा सकता है। यह कार्य किसी प्रवर्तक अथवा नियोजक के बिना कदापि नहीं सिद्ध हो सकता। इसीलिये कहा जाता है—“योजकस्तत्र दुर्लभः।” किसी संयोजक और संचालक के बिना कोई कार्य संयोजित और संचालित नहीं हो सकता। संगठन की बागडोर हाथ में लेनेवाले को स्मरण रखना चाहिए कि छोटी-छोटी शक्तियों का तिरस्कार नहीं किया जा सकता। उनका भी उपयोग होना चाहिए। संगठन के सर्वोच्च स्वरूप को समझने के लिये गीता के 'लोकसंग्रह' का भली भाँति अध्ययन करना चाहिए। लोकसंग्रह के लिये साधुता की रक्षा, दुष्टता का संहार और धर्म का स्थापन आवश्यक है। इन्हीं तीनों कार्यों में सब सांसारिक कर्तव्यों का समावेश हो जाता है। इन तीनों कार्यों को मनुष्य जितनी उत्तमता से कर सकेगा, उतनी ही उत्तमता से वह लोकसंग्रह अथवा संगठन का कार्य कर सकेगा।

संगठन-प्रेमी को पहला मंत्र गुसाईं तुलसीदासजी के शब्दों में यह सीखना और सिखाना चाहिए—

“जहाँ सुमति तहँ संपति नाना;
जहाँ कुमति तहँ बिपति निदाना।”

दूसरा स्मरण रखने योग्य महामंत्र यह होगा कि जिन लोगों का संगठन किया जायगा, वे मनुष्य हैं—देवता नहीं। मनुष्यों से उतनी ही आशा करनी चाहिए, जितनी उनसे साधारणतः की जा सकती है। विधवाविवाह-ऐक्ट और असवर्णविवाह-बिल के पास हो जाने से विधवा-

विवाह और असवर्णविवाह का धड़ाधड़ प्रचार नहीं हो सकता। त्याग की प्रशंसा सुनकर सभी त्यागी नहीं बन जाते। जनसाधारण में कमज़ोरियाँ रहती हैं; उन्हें हर्ष-विषाद होता है, पुरानी आदतों पर कुछ ममता रहती है और आशा-निराशा, माया-मोह आदि सताते हैं। इस संसार में ईश्वर को छोड़कर विशुद्ध उत्तमता किसी में नहीं। फूलों में काँटों का मिलना आश्चर्य की बात नहीं। तीसरी महत्त्व-पूर्ण बात है आपद्धर्म के नियमों पर ध्यान देना। असाधारण परिस्थिति और असंगठित अवस्था में साधारण तथा आदर्श धर्म का पालन नहीं किया जा सकता। संयम, सतर्कता, स्वावलंबन, उद्देश की पवित्रता, कार्यपद्धति की पक्षपात-हीनता आदि संगठन के कठिन कार्य को सरल और स्थायी बना देते हैं। चौथा ध्यान में रखने योग्य सिद्धांत यह है कि दुर्बलता ही विपत्तियों को निमंत्रण देती है। कमज़ोर का अपमान करने में किसी को भय नहीं होता। पराक्रमी से सभी प्रीति रखना चाहते हैं। इन बातों को भूलने से संगठन की सफलता असंभव है।

संगठन करते समय बहुत-से आवश्यक कर्तव्यों पर ध्यान देना होगा। छोटे-बड़े सबको मिलकर मार्ग के बंधनों को ढीला करना पड़ेगा, दृष्टिकोण और सहिष्णुता की परिधि बढ़ानी होगी, परंपरागत रूढ़ियों को समयानुकूल साँचे में ढालना होगा, विरोध सहना होगा, और मानापमान का भाव छोड़ देना होगा। असावधानी से काम करना, घृणा करना और किसी से व्यर्थ छेड़छाड़ करना हानिकारक सिद्ध होगा। पारस्परिक अत्याचार के विरुद्ध आवाज़ उठानेवालों की बातों को ध्यान के साथ सुनना-समझना पड़ेगा। दोष बतलानेवालों का स्वागत करना होगा। जाति को संगठन का महत्त्व समझाना होगा। वैभव और प्रबलता के वातावरण में रहनेवाले पुराने पापियों को अत्याचार से सदाचार की ओर झुकाए बिना काम रुक जायगा। नेता वही हो सकेगा, जो अपनी भाषा की सच्ची आवाज़ को सुनेगा। संगठनरूपी सुंदर होनहार वृक्ष के लिये सबसे बड़ा ज़हर घर और बाहर की ग़लतफ़हमी है। इसलिये जब तक उद्देश स्पष्ट शब्दों में न बतलाए जायँगे, कार्यक्रम का स्वरूप पूर्ण निश्चित न होगा। जब तक सहायकों तथा विरोधियों के मनोभावों को शुद्ध रखने का प्रयत्न न किया जायगा, तब तक कुछ भी हासिल न होगा। एक दिन हमने एक आदमी से सुना कि अछूतोद्धार का अर्थ मेहतरों और चमारों के साथ रोटी-बेटी का संबंध भी स्थापित करना है। उस व्यक्ति को यह समझाने की चेष्टा की गई कि यह अर्थ बिलकुल ग़लत है। उसने अपने अज्ञान पर खेद प्रकट किया। ऐसी दशा में प्रचारक, उपदेशक, समाचार-पत्र आदि का महत्त्व बहुत बढ़ जाता है।

सफल संगठन का स्वप्न देखने के पहले हिंदू-समाज की सतह में दिखलाई पड़नेवाली अमानुषिक विषमता की खाँइयों को पूरना होगा। जो विषमताएँ स्वाभाविक हैं, वे नष्ट न होंगी। चोर और सज्जन तथा मूर्ख और विद्वान् सदा असमान रहेंगे। हिंदू-जाति में एक बड़ा दोष यह है कि वह इच्छा-पूर्वक सुधार बहुत कम करती है—जब लाचारी का वक़्त आ जाता है, तभी वह क़दम बढ़ाने को तैयार होती है। ढेरों समस्याएँ मुँह खोलकर खड़ी हैं। अछूतों का प्रश्न, विधवाओं का प्रश्न, बच्चों की बढ़ती हुई मृत्यु-संख्या का प्रश्न, बेकारी, स्वास्थ्य-रक्षा, प्रायश्चित्त और बहिष्कार का प्रश्न, आत्मरक्षा का प्रश्न, भारतमाता की माता—गऊ—का प्रश्न, शास्त्रों का आदेश, धर्म के ठेकेदारों का 'आर्डिनेंस' आदि सब प्रश्नों पर विचार करना है। यदि इन प्रश्नों की उलझनों को दूर कर सकना कठिन है तो हिंदू-संगठन का कार्य भी कठिन है। आत्मशुद्धि करना, किए पापों का प्रायश्चित्त कराना, मिथ्याभिमान छोड़ना और काल्पनिक तथा अनुचित अधिकारों का मोह त्याग करना इत्यादि प्राथमिक आवश्यकताएँ हैं। हिंदू-संगठन तब तक एक काग़ज़ी शब्द रहेगा, जब तक हीन-से-हीन और दीन-से-दीन हिंदू को, केवल अपने हिंदूपन के बल पर, यह विश्वास न हो जाय कि वह एक जानदार संगठन की छत्रच्छाया में सनाथ और सुरक्षित है। घरू विरोध और बाहरी शत्रुता, दोनों का सामना करना होगा। जो सामाजिक नवाब और मज़हबी महंत अँधेरे में डाकेज़नी और अत्याचार किया करते हैं, वे आपके संगठन को अधर्म-पूर्ण कहेंगे, और उसका नाम 'शास्त्र के विरुद्ध बग़ावत' रक्खेंगे। उनसे कह दीजिए कि धर्म छुईमुई का पौदा नहीं है—वह प्राणांतक नहीं, प्राणप्रद है। बाहरी शत्रु आपको जागते देखकर आपकी ख़ानदानी और प्राचीन उदारता की दुहाई देंगे। याद रखिए, आप सबको एकसाथ खुश रखने का प्रबंध नहीं

कर सकते। यदि हमारा उद्देश उच्च है, यदि हम मुसलमानों पर आक्रमण करना नहीं चाहते, और यदि हम हिंदू-जाति के अंतर्गत भीतरी भेद-भावों को दूर कर केवल अपनी कमज़ोरी हटाना चाहते हैं, तो कभी-न-कभी सब लोग आप ही संतुष्ट हो सकते हैं।

ज्वलंत प्रेमभाव और कार्यशील जागृति संगठित हो जाने का प्रमाण है। यदि कोई कहे, हिंदू-जाति संगठित हो गई, तो इसकी जाँच के लिये बहुत-सी बातों का पाया जाना आवश्यक होगा। बड़े-से-बड़े विधर्मी की अपेक्षा हमें पहले छोटे-से-छोटे हिंदू को अपना भाई समझना होगा। किसी स्थान के हिंदुओं के दुर्दशाग्रस्त होने पर शेष हिंदू-समाज में चैन की नींद आना असंभव हो जायगा। किसी भी हिंदू की बहन-बेटी की बेइज़्ज़ती होने पर अन्य प्रत्येक हिंदू को आप-ही-आप यह अनुभव होने लगेगा कि यह अत्याचार स्वयं उसकी बहन-बेटी के साथ हुआ है। दरिद्र तथा अत्यंत निर्बल हिंदू के प्राणों का मूल्य रईस तथा समर्थ हिंदू के प्राणों के मूल्य के बराबर बनाना होगा। जिस तरह माता के प्रति पूज्य-भाव विना सिखलाए रहता है, जिस तरह पिता का अपमान देखकर आप-ही-आप खून उबलने लगता है, और जिस तरह धार्मिक भावों के कुचले जाने पर कलेजा थर्रा जाता है, उसी तरह का भाव जब हिंदुओं में हिंदूपन के लिये उत्पन्न हो जायगा, तब हिंदू-संगठन एक व्यावहारिक सत्यता की बात होगी। हिंदू-संगठन तब तक सार्थक नहीं कहा जा सकता, जब तक वह अपने 'अपनेपन'—अपनी सभ्यता—का सर्वतोमुखी विकास न कर सके। एक वेद-मंत्र से श्रेष्ठ संगठन की कल्पना की जा सकती है। उसे उद्धृत किए विना हमें संतोष न होगा। वह इस तरह है—

'समानी व आकूतीः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति॥"

अर्थात् "तुम्हारा अभिप्राय एकसमान हो, तुम्हारे अंतःकरण एकसमान हों, और तुम्हारा मन एकसमान हो, जिससे तुम्हारा सुसाह्य अर्थात् संघशक्ति का दृढ़ता होगी।"

प्राचीन हिंदुओं में बड़ा ज़बर्दस्त संगठन था। इसीलिये उन्होंने आश्चर्यजनक कार्य किए हैं। विभिन्नता में एकता रख सकने की उनमें पूरी योग्यता थी। इसके अनेक प्रमाण हैं। हमारे यहाँ सम्मिलित कुटुंब-प्रणाली की स्थापना और गुण-कर्मानसार चार वर्णों की रचना की गई थी, जिससे हमारे आचार्यों की संघ-प्रियता और दूरदर्शिता सिद्ध होती है। त्योहारों की सृष्टि करते समय इस बात का पूरा ख़याल रक्खा गया था कि वे सभी जातियों के लिये हों। विविध वर्णों के लिये मुख्य त्योहार तो अलग-अलग बनाए गए थे; परंतु उन सबमें एक ही सनातनधर्म का धागा पिरोया गया था। तीर्थ-स्थानों की सृष्टि करते समय सबकी अनुकूलता, सुबीते और व्यापकता पर पूरा ध्यान देकर भी उनकी संबद्धता स्थिर रक्खी गई थी। ईश्वरत्व का आदर्श दिखलाते समय मर्यादा-पुरुषोत्तम श्रीरामचंद्र का स्मरण किया गया था। प्राचीन युग में ब्राह्मणों और नेताओं की भाषा-शैली आदेशात्मक न होकर प्रायः सूचनात्मक हुआ करती थी। परंतु यथार्थ श्रेष्ठता के कारण उनकी सूचना और प्रार्थना लोगों की दृष्टि में आज्ञा हो जाती थी। ब्राह्मण के सदा हितकारी उपदेश में जो तान सुनाई पड़ती थी, उसी के स्वर में क्षत्रिय अपनी रण-भेरी बजाया करता था, वैश्य लोग उसी राग के अनुसार गाने लगते थे, और शूद्र उसी ताल पर नाचने लगते थे। बस, वर्ण-व्यवस्था की उस प्राचीन विविधता-पूर्ण संगीतमंडली में मधुरता की एक-मात्र ध्वनि के सिवा कर्कशता कहीं सुनाई न पड़ती थी। सच पूछिए तो प्राचीन वर्णव्यवस्था, संकीर्णताओं से परे होकर, एक प्रकार की कट्टर और उच्च दलबंदी थी। उस ज़माने में आजन्मब्रह्मचारी विवाह-संस्था की श्रेष्ठता का प्रतिपादन करता और विवाहितों को आदर की दृष्टि से देखता था। वह ऐसा समय था, जब कि निर्लोभ तथा हिंसारहित योगी छत्रपतियों को राजधर्म के नाम पर साम, दाम की ही नहीं, दंड और भेद की भी शिक्षा देते थे। उस ज़माने में संन्यासी और भर्तृहरि के सदृश राजर्षि लोग "धन्यो गृहस्थाश्रमः" कहा करते थे, और उस ज़माने में परस्पर-शत्रुता रखनेवाले कौरव-पांडव अपने बाहरी शत्रुओं के लिये अपने को, सौ या पाँच न समझकर, एक सौ-पाँच समझते थे।

ज़माने ने पलटा खाया, और हमारे पतन का प्रारंभ हुआ। हिंदू-जाति, जो किसी समय जगद्गुरु थी, संगठन के महत्त्व को भूलकर छिन्न-भिन्न होने लगी। ब्राह्मण इस श्रेष्ठ वचन को भूलने लगे कि जन्म से वे भी शूद्र हैं—केवल उत्तम संस्कारों से वे द्विज हो सकते हैं।

किसी से सहायता लेकर शत्रु को हराने के बदले उससे लड़ते-लड़ते मर जाने में ही क्षत्रिय को क्षात्र धर्म दिखाई पड़ने लगा। वर्णव्यवस्थारूपी गाड़ी के एक-दो पुर्ज़ों के बिगड़ते ही गड़बड़ और अस्त-व्यस्तता का अंधेरखाता बढ़ने लगा। 'साधन' ही 'साध्य' माना जाने लगा। धर्मशास्त्र चालाक डाकुओं की बपौती हो गया। मानव-जीवन-प्रवाह संदूक़ों में बंद किया जाने लगा। हाथी की टाँग को हम हाथी समझने लगे। अपने अपकार में ही हमें परोपकार दिखने लगा। कर्म को हम भाग्य, और विरक्ति को अकर्मण्यता समझने लगे। अनर्थ ने अर्थ का स्थान ले लिया। आदर्शवाद और अतिधर्म ने लौकिकता तथा साधारण धर्म को नीच समझना शुरू कर दिया। 'अति' सर्वत्र वर्जित है। सद्गुणों के अतिरेक से हिंदू-जाति सन्निपात-ग्रस्त हो गई। परिणाम यह हुआ कि आज हम अपने को दरिद्र, अनाथ तथा जर्जर पाते हैं। अस्तु।

सुविशाल हिंदू-जाति आज एक ऐसे स्थान में आकर खड़ी हो गई है, जिसके आगे दो सड़कें हैं। इधर जाना है या उधर—इस प्रश्न का विचार किए विना हमें आगे न बढ़ना चाहिए। एक सड़क कांग्रेस की ओर ले जाती है, और दूसरा हिंदू-महासभा की ओर। वर्तमान अवस्था को देखकर तो यही कहा जा सकता है कि कम-से-कम इस समय के लिये कांग्रेस और हिंदू-महासभा नाम की दो सड़कें बन गई हैं। आगे चलकर ये, समानांतर रेखा का स्वरूप ग्रहण न कर, कहीं मिल जायँ, तो असंभव तथा अनुचित नहीं; बल्कि आशा तो यही करनी चाहिए कि कुछ दूरी तक अलग रहकर ये दोनों कहीं-न-कहीं अवश्य मिलेंगी। परंतु इस समय की यह सच्ची बात छिपाई नहीं जा सकती कि जहाँ कांग्रेस ने अल्पसंख्यक लोगों की अधिक शुभ-कामना की है, वहाँ उससे बहुसंख्यक हिंदुओं की उचित हितैषिता भी नहीं बन पड़ी है। दो नावों में चढ़ने का नतीजा तब तक बुरा होता है, जब तक वे एक में बाँध न दी जायँ। अतएव यह समझकर कि जो नाव उन्हें गिर पड़ने से बचावे, उसी में बैठना श्रेयस्कर है, अधिकांश हिंदुओं ने हिंदू-महासभा की नैया का सहारा पकड़ा है; और यह ठीक ही हुआ है। Life first and everything else afterwards. "अव्वल ख़ेश, बाद दरवेश।"

अच्छा, तो अब धर्मजीवी, परंतु सन्निपात-ग्रस्त, हिंदू-जाति के लिये एक समयानुकूल तथा नए व्यवहार-शास्त्र की आवश्यकता है; क्योंकि वह व्यवहार में ही ग़ोते खा रही है—वह सिद्धांतों में दरिद्र नहीं है। यह व्यवहार-शास्त्र बीसवीं सदी, तथा बाद के हिंदुओं के लिये बनाया जायगा। पुरानी बातों को नष्ट करने से हमारा पुरानेपन का दावा ही चला जायगा। जीर्णोद्धार से सारा काम बन सकता है। इस नए शास्त्र में जो पहला श्लोक लिखा जाय, वह यह हो कि भविष्य की पीढ़ियों को इस शास्त्र में तरमीम करने का पूरा अधिकार रहेगा। जो वर्तमान का निर्माता नहीं बन सकता, वह भविष्य का भाग्यविधाता भी नहीं बन सकता। अब वे दिन गए, जब कि विना चंदन के गीता पढ़ने से गीता की पवित्रता नष्ट हो जाती थी, नौकरी करने से ब्राह्मणत्व बह जाता था, अथवा गेरुआ पहने विना संन्यास एक झूठी बात हो सकती थी। समय बदल गया है; और अपने व्यवहारों को उसके अनुसार बदले विना काम न चलेगा। खोए हुए गति-साम्य को फिर से प्राप्त करना होगा। अपने सजातीय सभी लोगों को 'विदुर' बना डालनेवाला अकड़बाज़ हिंदू अपने अकेलेपन से इस ज़माने में स्वयं विदुर बन जाता है। हम यह भूल गए हैं कि बहिष्कार-धर्म का पालन करने के साथ प्रायश्चित्त तथा पुनरालिंगन का धर्म भी पालन करना चाहिए। जिस दिन पतित ही न रहेंगे, उस दिन पतितपावन की ज़रूरत भी न रहेगी; और जिस दिन दुराचार बंद हो जायँगे, उस दिन धर्मशास्त्रों से प्रायश्चित्त का अध्याय भी उठ जायगा। दीन-दुर्बलों के अस्तित्व से ही वीरों और उपकारी जीवों की सार्थकता है। राजनीतिक कार्यों में हिंदू, मुसलमान, पारसी, जैनी, ईसाई आदि ने व्यवहार के लिये अपनी एक नई जाति बना डाली है, जिसका नाम है 'भारतीय'। इसी तरह संगठन के कार्य में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि तथा ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यासी, सबका एक नया गोत्र बनाना होगा। हमारे नए शास्त्र में उस गोत्र का एक नया नाम रहेगा। इस गोत्र का नाम होगा 'हिंदू' गोत्र। प्रत्येक ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र हिंदू है। इस बात की ज़रूरत नहीं कि प्रत्येक हिंदू ब्राह्मण भी हो। इस शास्त्र के प्रणेता वे हों, जिन्होंने स्वयं अपना प्रणयन कर लिया हो, जो मनुष्य-स्वभाव, हिंदू-शास्त्र और वर्त-

मान हिंदू-समाज की आवश्यकताओं का पूरा ज्ञान रखते और विभिन्नता तथा विरोध में भी एकता, मर्यादा, व्यवस्था आदि की रक्षा कर सकते हों। वह उन हिंदुओं की सेवा में सादर समर्पित किया जायगा, जो संसार में रहते समय उसे असार न समझते हों, जिनका धर्म लाजवंती के पौदे की तरह केवल छूने से ही न मुरझा सकता हो, जो अपना पहला कर्तव्य अपने को जीवित बनाए रखना समझते हों, जिनका दैनिक जीवन समर्थ नेताओं के आचरण का केवल अनुकरण न करके उनकी आज्ञाओं का पालन भी कर सकता हो, जिनका विश्वास हो कि राजनीतिक पहलू के साथ, हिंदू-संगठन-आंदोलन के, धार्मिक और सामाजिक पहलू भी हैं।

हमारे शुभचिंतकों को प्रतिक्षण स्मरण रखना चाहिए कि हिंदुओं की प्राचीन सभ्यता का लोप करना आत्म-हत्या के बराबर होगा। वह शाश्वत सिद्धांत-रत्नों की सबसे बड़ी निधि है। उसे नष्ट करने से हिंदू-जाति ही नष्ट हो जायगी। फिर उसे नष्ट करना संभव भी तो नहीं है; क्योंकि वह कहीं से उधार ली हुई चीज़ नहीं है। वह स्वयं विकसित, उच्च और जीवनीशक्ति-संपन्न है। उसमें कुछ बुराइयाँ अवश्य घुस पड़ी हैं, और वे प्रबल भी हैं। उन्हें हटा देने से सारा कष्ट दूर हो जायगा। उसमें यथा-स्थान नवीनता की पुट देनी होगी। जो सुधारक हिंदू-समाज में पश्चिमी सभ्यता का पूरा-पूरा प्रचार करना चाहते हैं, वे हमारे रोगों के लिये अयोग्य वैद्य सिद्ध होंगे। वह घड़ी दूर नहीं, जब कि हमारी धार्मिक मूर्खता और सामाजिक बुराइयों को दूर कर देनेवाली अजेय शक्ति का जन्म होगा। आवश्यकता ही आविष्कारों की जननी है। महापुरुष और उद्धारक पैदा नहीं हुआ करते; बल्कि परिस्थिति उन्हें उत्पन्न कर देती है। प्रबल लोकमत तथा जनता की हार्दिक इच्छा वंध्या नहीं है, वह अवश्य ही धूलि-धूसरित रत्नों को प्रकाश में लाती है। हिंदू-समाज एक विकट संक्रमण-अवस्था में है। सोई हुई हिंदू-महा-सभा पहाड़ खोदने के लिये आगे बढ़ रही है, सिर्फ़ चूहा पाकर उसे संतुष्ट न होना चाहिए। हिंदू-जाति जिन रोगों से ग्रस्त है, उनका पता लगाना और उचित ओषध का प्रयोग करना उसका प्रथम कर्तव्य है। उत्तर-भारत में हिंदू-मुसलमानों की, दक्षिण में अछूतोद्धार की तथा सारे देश में हिंदी-भाषा और आत्मरक्षा की समस्या पर उसे विशेष ध्यान देना होगा। यदि वह अपना नाम सार्थक करना चाहती है, तो उसे अपने साध्य और साधन का स्पष्ट निर्णय कर लेना चाहिए। हिंदू-जाति को व्याव-हारिक कार्यक्रम की एक पहली मात्रा देकर वह पहले देख ले; उसके गले के नीचे उतर जाने पर वह दूसरी मात्रा की योजना करे। उन्नति की माप सुंदर तथा उत्तम प्रस्तावों की संख्या नहीं है—छोटे-से और निश्चित कार्य-क्रम का पालन ही उसकी सच्ची माप है। जब समुद्र का मंथन किया ही जा रहा है, तो फिर कुछ-न-कुछ हासिल करके ही दम लेना चाहिए। स्मरण रखिए, विश्व-प्रेम और देश-भक्ति की पहली सीढ़ी स्वजाति-भक्ति और स्वधर्म-प्रेम है। हमवतनी की इमारत हमक़ौमी की नींव पर ही खड़ी हो सकती है। संसार-चक्र संगठन के लिये प्रेरित कर रहा है। अपनों की पहचान करना शुरू कर दीजिए, पराए आप-ही-आप मालूम पड़ने लगेंगे। इसलिये, एक महान् सभ्यता के उत्तराधिकारी हिंदू भाइयो,

“उत्थातव्यं जागृतव्यं योक्तव्य भूतिकर्मसु।”

मोह-निद्रा का त्याग करके जग जाइए, और पारस्परिक सहायता का हाथ आगे बढ़ाकर संसार को बतला दीजिए कि तुम हिंदू पहले, और पीछे भारतीय हो।

मावलीप्रसाद श्रीवास्तव

निर्जीव विकास

(माघ की संख्या से आगे)

देखिए, पदार्थ (Matter) धीरे-धीरे कितना जटिल और रहस्य-पूर्ण होता जाता है, दृश्य किस प्रकार अदृश्य और व्यक्त किस प्रकार अव्यक्त होता है। धीरे-धीरे, हमारी आँखों की तो कौन कहे, हमारी अन्य इंद्रियाँ भी पदार्थ के जानने और उसका अनुभव करने में जवाब दे देती हैं। केवल बुद्धि का ही भरोसा रह जाता है। नहीं, ज़रा ही आगे बढ़ने पर बुद्धि भी चकरा उठती और कह देती है कि अंतिम रहस्य उसकी दृष्टि से भी बाहर है। हवा, गैस, तत्त्व,

भिन्नता के बीच अपूर्व एकता—विचित्र अद्वैत

अणु, परमाणु, एलेक्ट्रन, ईथर इत्यादि स्वरूपों में दृश्य, परिचित और ज्ञात पदार्थ किस प्रकार अदृश्य, अपरिचित, अज्ञात और अतींद्रिय हो जाता है, यह तो हम देख ही चुके; ज़रा ही और आगे बढ़कर विचार करने से **पदार्थ और शक्ति का भेद भी मिट जाता है।** अदृश्य एलेक्ट्रनों और ईथर की उपर्युक्त व्याख्या से हमारे कथन की बेहद पुष्टि होती है। क्या अदृश्य शक्ति और अदृश्य एलेक्ट्रनों के बीच कोई भेद बचा रह जाता है? क्या केवल शक्ति-केंद्र के सिवा इन एलेक्ट्रनों को और कुछ भी कहा जा सकता है? वैज्ञानिक और दार्शनिक तर्कों को जाने दीजिए। पदार्थ और शक्ति की एकता साधारण तौर पर भी स्पष्ट होती है। शक्ति पदार्थ से अलग नहीं देखी जाती, और न कोई पदार्थ ही शक्ति से शून्य है। पदार्थ से शून्य शक्ति की कल्पना भी असंभव है। गति के साथ सदा पदार्थ आबद्ध रहता है। जहाँ गति है, वहाँ पदार्थ भी अवश्य विद्यमान है। गति के व्यक्त होने के लिये किसी वस्तु को गतिशील होना चाहिए। पदार्थ से शक्ति का और शक्ति से पदार्थ का पृथक्करण नहीं हो सकता। तो क्या हम यह नहीं कह सकते कि यथार्थ वस्तु एक ही है, जो पदार्थ और शक्ति, स्थूल और अस्थूल, दृश्य और अदृश्य रूपों में व्यक्त हुआ करती है? सभी करामातें इस एक ही शक्ति की हैं। इस अद्भुत विभिन्नता के भीतर अपूर्व एकता—अनवरत द्वैत के मध्य विलक्षण अद्वैत—का साम्राज्य है।

परंतु अंतिम रहस्य अज्ञात ही है, और वह सदा अज्ञेय ही रहेगा

इस इतने लंबे विवेचन के द्वारा हम सृष्टि-रहस्य को बहुत कुछ सुलझा चुके; भिन्नता को मिटाकर हमने एकता स्थापित कर दी; हज़ारों वस्तुओं के बीच हमने एक ही मूलभूत वस्तु का पता लगा लिया; समस्त सृष्टि को एक ही वस्तु की अभिव्यक्ति साबित कर चुके। परंतु क्या अंतिम रहस्य सुलझ गया? नहीं, अंतिम भेद अभी तक उतनी ही दूर है। हम उस एक मूलभूत शक्ति को नहीं जानते। विज्ञान, दर्शन-शास्त्र, सभी को नम्रता-पूर्वक स्वीकार करना पड़ता है कि यह रहस्य उनकी दृष्टि से बाहर है, और सदा बाहर ही रहेगा। इस रहस्य का विश्लेषण नहीं किया जा सकता। हम नित्य, यथार्थ या संबंध-हीन को कभी नहीं जान सकते। ज्ञान का क्षेत्र कितना ही विशाल क्यों न हो जाय, यथार्थ तत्त्व सदा अज्ञात ही रहेगा। हज़ार उन्नति करने पर भी मनुष्य का विज्ञान अपूर्ण ही रहेगा। एक हद तक ज्ञान प्राप्त कर लेने के पश्चात् तुरत ही यह सवाल उठ खड़ा होगा कि इसके बाद क्या है? कितने ही युक्ति-युक्त और व्यापक कारण बतलाने के बाद तुरत ही यह सवाल पैदा होगा कि इस कारण का कारण क्या है।

इंद्रियज्ञान की अपूर्णता

दर्शन-शास्त्र की जटिलताओं में प्रवेश किए बिना भी पाठकगण मानव-बुद्धि की अपूर्णता और असमर्थता को सहज में ही समझ सकते हैं। मनुष्य को सभी ज्ञान इंद्रियों के द्वारा प्राप्त होते हैं, यह स्पष्ट ही है। हम यथार्थ या वास्तविक को नहीं जानते, हमारी इंद्रियाँ जिस प्रकार बतलाती हैं, हम उसी प्रकार वस्तुओं का अनुभव करते हैं। हमारा ज्ञान इंद्रियानुभव के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं। फिर क्या इंद्रियों के द्वारा हमें वास्तविक तत्त्व का ज्ञान प्राप्त होता है? नहीं, हमारा ज्ञान हमेशा वास्तविक सत्य से पीछे ही रहेगा। हमारी आँखें सभी वस्तुओं को नहीं देख सकतीं; वे अक्सर धोका भी देती हैं। रस्सी में साँप का भ्रम होता है, यह दर्शन-शास्त्र का एक प्रसिद्ध उदाहरण है। अपनी दृक्-शक्ति की न्यूनता और अपूर्णता को समझने के लिये एक दूरदर्शक या सूक्ष्मदर्शक-यंत्र ले लो। आकाश के छोटे-छोटे और टिमटिमाते हुए आलोक-बिंदु या तारे—जिनकी कविगण हज़ारों उपमाएँ दिया करते हैं—तुमको बड़े-बड़े—हमारी पृथ्वी से भी बड़े-बड़े—लोक विदित होंगे। एक साधारण छोटे जल-बिंदु में तुम्हें हज़ारों करामातें देख पड़ेंगी। ऐसी अवस्था में हम, अपनी आँखों की कौन कहे, अपने यंत्रों का भी पूरा-पूरा भरोसा नहीं कर सकते; क्योंकि नित्यप्रति नए और तेज़ यंत्र बनते ही जाते हैं, और मनुष्य के तेज़-से-तेज़ और प्रबल-से-प्रबल यंत्रों के द्वारा भी अंतिम वस्तु के देखे जाने की कोई संभावना नहीं है। इसी प्रकार हमारी श्रवण-शक्ति भी सभी आवाज़ों को नहीं सुन सकती। अपनी स्पर्श-शक्ति के द्वारा हमें वस्तुओं की बाहरी बनावट का ही ज्ञान प्राप्त होता है। हमारी घ्राण-शक्ति सभी गंधों का अनुभव नहीं कर सकती। हमारी स्वाद-शक्ति भी केवल कुछ ही रासायनिक मिश्रणों का पता लगा सकती है। एक शब्द में हमें अपनी इंद्रियों के द्वारा वस्तुओं का आंशिक ज्ञान ही

प्राप्त होता है, और हम अपनी इंद्रियों द्वारा प्राप्त ज्ञान के बल पर कदापि यह नहीं कह सकते कि हम यथार्थ वस्तु को जानते हैं। यदि हम ऐसा कहें भी, तो हमारा कहना हठवाद के अतिरिक्त और कुछ न होगा—हमारा कहना उन अंधे मनुष्यों के कहने से कम हास्यास्पद न होगा, जो एक हाथी के पाँव, दुम, सूँड़ और कान इत्यादि को अपने हाथों से टटोलकर यह ज़िद कर रहे थे कि हाथी वृक्ष के तने, ब्रश, सूप या पानी के नल की तरह होता है।

बाह्य-शून्यवाद—जगत् मिथ्या है

अपने ज्ञान का तनिक और विश्लेषण करने से हमारा ज्ञान वस्तुतः अज्ञान में परिणत होता है। हमारा ज्ञान क्या है? यह आसानी से देखा जा सकता है कि संज्ञा, या चेतना (Consciousness) में परिवर्तन उपस्थित होने को ही ज्ञान कहते हैं। जब हम इस काग़ज़ को देखते हैं, तो हमें अपनी चेतना या संज्ञा यानी अपने में एक परिवर्तन का बोध होता है। सिवा अपनी चेतना के परिवर्तन के हमें और कोई ज्ञान प्राप्त नहीं होता। इसीलिये कुछ दार्शनिक यह कहते हैं कि हमसे स्वतंत्र बाह्य जगत्—किसी बाह्य पदार्थ या वस्तु—का अस्तित्व है ही नहीं: और लोग जिस बाह्य जगत् को यथार्थ अनुमान करते हैं, वह केवल उनकी कल्पना की तसवीर है। हम लोग रूप, रंग, आकार या अन्य गुणों का एकत्रित करते हैं, और इस संयोजन या संश्लेषण को पदार्थ के नाम से अभिहित करते हैं। बर्कले प्रभृति बाह्य-शून्यवादी (idealists) कहते हैं कि यह संयोजन मानसिक और केवल मानसिक ही है, वास्तविक नहीं। पदार्थ और शक्ति मानसिक रचनाएँ हैं, यथार्थ और वास्तविक नहीं। **मन और चेतना से स्वतंत्र कोई वस्तु है ही नहीं।** अब यदि कोई यह कहे कि जगत् मिथ्या और अनित्य है, संसार माया है, सृष्टि भ्रम है, तो हम इसका क्या उत्तर दे सकते हैं? ठीक ही है—

य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम् ;
उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते ।

(गीता २, १९)

मरना जीना यह आना जाना सब, ठहरना चलना फिरना गाना सब;
सब यह करतूत जान माया की, मेहर[1] ताबाँ[2] की एक छाया की।

सब कुछ भ्रम और मिथ्या है—

शीश-मंदिर[1] में एक दफ़ा बुलडॉग[2], आ फँसा, तो हुआ बगोला आन
जौक दर[3] जौक़ पलटनें सग थे। ठठ-के-ठठ लग रहे थे कुत्तों के।
सख्त झुँझलाया यह वे झुँझलाए चार जानिब से तैश[4] में आए।
बिगड़ा मुँह इसका, वे भी सब बिगड़े; जब यह उछला वे सब-के-सब कूदे।
जब यह भूँका सदाएँ[5]-गुंबद से क्या ही औसाँ ख़ता[6] हुए उसके।
“मैं मरा, मैं मरा” समझकर वाय, मर गया डॉग[7] सर को धुनकर वायँ[8]
शीश-मंदिर में आके दुनिया के, अहिले गैर दाँ[9] मरा भुकके।
वेहम[10] में क्यों भरमता जाता है, अपने आपे में क्यों न आता है।

अतएव विज्ञान का क्षेत्र दृश्य और इंद्रिय-जगत् तक ही सीमित है। अंत और यथार्थ तक विज्ञान नहीं पहुँच सकता: वह सदा उसकी दृष्टि से बाहर ही रहेगा। इसलिये हमारे ज्ञान का क्षेत्र चाहे कितना ही विस्तृत क्यों न हो जाय, ज्ञान के बाद अज्ञान ज़रूर उपस्थित होगा—ज्ञान के बाद अज्ञान का साम्राज्य अवश्य उपस्थित होगा। इस अज्ञान-जगत् में पहुँचते ही बुद्धि और तर्क का साम्राज्य समाप्त और कल्पना, अनुमान, भावना, उत्कंठा, आशा और आकांक्षा का साम्राज्य शुरू होता है। इसीलिये यदि लेखक भी यहाँ पर कुछ अपने अनुमान और कल्पना-शक्ति से काम ले, तो आशा है, सहृदय पाठकगण उसे क्षमा करेंगे।

यहीं अज्ञात धर्म और विज्ञान का मिलन-स्थान है—

धर्म और विज्ञान का मिलन और इन दोनों की आवश्यकता

यही अज्ञात धर्म और विज्ञान, दोनों की पवित्र धाराओं का संगम-स्थान है। धर्म और विज्ञान, दोनों धाराएँ जाकर इसी अज्ञात सागर में गिरती हैं। यह अज्ञात सागर कदापि पार नहीं किया जा सकता। यदि इसी अज्ञात का नाम ख़ुदा है, तो कवि का यह कहना अक्षरशः ठीक है—

हज़ार साइंस रंग लाए, हज़ार क़ानून हम बनाएँ:
ख़ुदा की क़ुदरत यही रहेगी, हमारी हैरत यही रहेगी।

धर्म और विज्ञान के संबंध और विरोध की मीमांसा करना इस लेख में असंभव है। हो सका, तो हम इस पर और कभी विचार करेंगे। तथापि अभी ऊपर जो कुछ कहा गया है, उससे यह पूर्ण रूप से स्पष्ट होता है कि इन दोनों के बीच कोई विरोध नहीं है। एक दूसरे को

---

[1] सूर्य। [2] चमकीला।

[1] शीशे का मकान। [2] Bull dog कुत्ता। [3] झुंड-के-झुंड। [4] क्रोध। [5] आवाज़। [6] भय हुआ। [7] कुत्ता। [8] अफ़सोस। [9] दुई देखनेवाला—एक अपने सिवा जगत के अस्तित्व में भी विश्वास करनेवाला। [10] भ्रम।

पूर्ण और सुंदर बनाता है। विज्ञान हमारी धार्मिक कल्पनाओं और विश्वासों को शुद्ध, परिमार्जित और संस्कृत बनाता है, और धर्म विज्ञान को सदा इस अज्ञान की याद दिलाते रहकर उसे नम्र बनाए रखता है, और उसके ऊपर कविता और आदर्शवाद का रंग चढ़ाता रहता है। विज्ञान धर्म को रंजित और संस्कृत करता है, और धर्म विज्ञान को। एक को दूसरे की आवश्यकता है। विश्व में दोनों समान रूप से आवश्यक हैं। विज्ञान और धर्म का विरोध ऊपरी और दिखाऊ है, यथार्थ और आंतरिक नहीं। मान लो, हम ईश्वरवादी हैं, तो अब यह ज़रूर कहा जायगा कि देखो, विकास-सिद्धांत के द्वारा ईश्वरवाद में ज़रूर धक्का पहुँचता है, हमारी धर्म-पुस्तकों में वर्णित सृष्टि-प्रसंग को वैज्ञानिक खोज और अन्वेषण नानी की कहानियाँ सिद्ध करते हैं—सृष्टि में ईश्वर का कोई भाग नहीं रह जाता—तमाम नियम का साम्राज्य उपस्थित हो जाता है। परंतु नहीं, ज़रा ही विचार करो, देखो विज्ञान हमारे ईश्वर या संसार के आदि-कारण की भावनाओं को कितना उन्नत और अनंत बनाता है। निस्संदेह बढ़ई और कुम्हार की तरह के ईश्वर से उस ईश्वर की कल्पना कहीं उन्नत, हृदय-ग्राही और संतोष-प्रद है, जो अणुओं और परमाणुओं के मिलने का, रासायनिक मिश्रणों के बनने का तथा ग्रहों और नक्षत्रों के भ्रमण का नियम बनाता है। हम वैज्ञानिक खोजों के द्वारा रहस्य का परदा जितना ही अधिक उठाते हैं, रहस्य उतना ही अधिक जटिल होता है—हमारा विस्मय और आश्चर्य उतना ही अधिक बढ़ता है—अनंत और अज्ञात हम पर उतना ही अधिक प्राबल्य जमाता है। ईश्वरवाद बुद्धि-संगत और युक्ति-युक्त है या नहीं, हम इस पर विचार करना नहीं चाहते; क्योंकि अभी देख चुके हैं कि अज्ञात जगत् में बुद्धि की पहुँच है ही नहीं—वहाँ तो केवल कल्पना, कविता, भावना और आशा का ही साम्राज्य है, और इसलिये प्रत्येक मनुष्य को अपनी इच्छा और रुचि के अनुसार, अपनी आशा, आकांक्षा और कविता के भावों को तुष्ट करने का पूर्ण अधिकार है—तो भी यदि हम ईश्वरवादी हैं, तो हमें यह देखने में कोई कठिनाई नहीं हो सकती कि एक मनुष्याकार ईश्वर के बदले—जिसमें मनुष्य की सभी कमज़ोरियाँ मौजूद हैं, और जो मनुष्य की ही तरह संतुष्ट, रुष्ट, प्रसन्न और खिन्न होता है—वह ईश्वर कहीं महान् है, जिस तक मानवेंद्रियों की पहुँच नहीं हो सकती—जो अलक्ष्य, अगोचर, त्रिगुणातीत, अतींद्रिय और अनंत है। इसलिये धर्म को विज्ञान पर धावा बोलने का या विज्ञान को धर्म का मज़हका उड़ाने का कोई अधिकार नहीं है। दोनों एक दूसरे के लिये ज़रूरी हैं, और दोनों मनुष्य और संसार की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं।

एक दूसरे को पूर्ण करता है

निराकार और साकार नित्य और यथार्थ की अज्ञेयता को सदा स्मरण रखना चाहिए

पाठक यहाँ पर एक आपत्ति कर सकते हैं। वे कह सकते हैं कि हमें इस निराकार, निर्गुण, अचिंत्य और इंद्रियातीत ईश्वर से संतोष नहीं हो सकता—हमें आदि-कारण या ईश्वर की इस प्रहेलिकामय और अस्पष्ट कल्पना से संतोष नहीं हो सकता। हमें एक ऐसे ईश्वर की आवश्यकता है, जिसके सामने हम अपने हृदय की पवित्र भावनाओं को अर्पण कर सकें—जिसकी हम पूजा और वंदना कर सकें—जो दीन-दुखियों का त्राता हो—जो हमसे एकदम दूर, हमारी समझ और शक्ति के बाहर, न हो—जिसके समीप हम अपने हृदयगत भावों को व्यक्त कर सकें—जिसके सम्मुख हम सुख में कृतज्ञता प्रकट कर सकें, और दुःख या शोक में जिसके द्वारा दुःख और शोक के निवारण की आशा कर सकें। पाठको, यदि तुम्हारा विचार ऐसा ही है, तो इसमें भी कोई हर्ज नहीं। तुम अपनी पवित्र आकांक्षाओं को जिस प्रकार चाहो पूरा करो—अपनी आत्मा की प्यास को जिस प्रकार चाहो तृप्त करो; केवल इतना ही स्मरण रक्खो कि तुम्हारी ऊँची-से-ऊँची कल्पना और उन्नत-से-उन्नत विचार भी उस शक्ति के समीप नहीं पहुँच सकते—मनुष्य का ज्ञान, वेद, बाइबिल या कुरान, सभी उसका पता लगाने में असमर्थ हैं। इसलिये हमें अपनी कल्पनाओं को सदा कल्पना ही समझना चाहिए, यथार्थ और वास्तविक नहीं। सभी मज़हबों ने—हिंदू-धर्म को तो छोड़िए, हठवाद-प्रधान क्रिस्तान और इसलाम मज़हबों ने भी—इस बात को स्वीकार किया है कि वह शक्ति हमारी बुद्धि, अनुमान और इंद्रियों की सीमा से बाहर है। याद रक्खो, असीम और अनंत किसी प्रकार सीमाबद्ध नहीं किया जा सकता; हमारे ऐसा करने से

उसका गौरव बढ़ता नहीं, घटता ही है, ऐसा करने से हम उसका सम्मान नहीं, अपमान ही करते हैं ।

यद्यपि विज्ञान और तर्क, दोनों के द्वारा वह आदि-कारण, शक्ति या ईश्वर अज्ञेय ही सिद्ध होता है, तथापि अज्ञेयवाद आज तक मानव-हृदय को संतुष्ट नहीं कर सका । मनुष्य ने निराकार को अनेक प्रकार से साकार बनाकर पूजा और अपने तन-मन, हृदय-प्राण, सबको उसके ऊपर निछावर किया है । हमें इसमें तनिक भी आपत्ति नहीं, हम साकारवादी हिंदू—जिनके यहाँ राम-कृष्ण इत्यादि अनेक मानव-ईश्वर मौजूद हैं—इसे ज़रा भी बुरा नहीं समझते । साकार और इंद्रियाधीन मनुष्य यदि भाव और भक्ति के आवेश में आकर प्यारे श्रीकृष्ण की याद में आँसू बहाता है, यदि वह भी व्रज-वनिताओं के सदृश भावोन्मत्त होकर श्रीकृष्ण के मिलन के लिये व्याकुल हो उठता है, यदि प्रसन्नता के मारे वह व्रज के पक्षियों की तरह कलोल करता है, तो इसमें कौन-सा दोष; कौन-सी भूल, कौन-सा अपराध है? हाँ, ज़रूरत केवल उपर्युक्त चेतावनी के याद रखने—यह जानते रहने—की है कि यथार्थ वास्तविक और नित्य वस्तु मनुष्य की सभी कल्पनाओं के बाहर है ।

यदि मज़हबी लोग इस बात को, जो कि सभी धर्मग्रंथों में वर्णित है, याद रखते, तो आज संसार में खून की नदियाँ कभी नहीं बहतीं—इतिहास के पृष्ठ पशुता और मज़हबी लड़ाइयों की कलुषित कहानियों से कदापि न भरते—विज्ञान की उन्नति में कोई रोक न डाली जाती—वैज्ञानिकों के ऊपर कोई अत्याचार न होता—पाशविक नरमेध-यज्ञ में वैज्ञानिकों और सत्य के उपासकों के सिर कदापि न उड़ाए जाते—सुकरात को ज़हर का प्याला न पिलाया जाता, और मंसूर, ईसामसीह को सूली न दी जाती—बुद्ध पर अत्याचार न होते, न मंदिर और प्रतिमाएँ तोड़ी जातीं—संसार में कहीं कटुता शेष न रह जाती—सर्वत्र स्नेह, सहृदयता और भ्रातृभाव का साम्राज्य होता ।

अतएव मज़हबी लोगों को सदा अपनी कल्पनाओं की त्रुटि और अपूर्णता याद रखनी चाहिए, और जब कभी विज्ञान के द्वारा उनकी कल्पना सदोष और भ्रम-पूर्ण साबित हो, तो उसे प्रसन्नता-पूर्वक स्वीकार कर लेना चाहिए; क्योंकि इसके द्वारा उस शक्ति का, जिसके कि सभी मज़हब उपासक हैं, गौरव और महत्त्व कहीं अधिक बढ़ जाता है—खुदा की खुदाई और भी अधिक रहस्य-पूर्ण और विस्मयावह हो जाती है । यथार्थ धर्म और शुद्ध विज्ञान में—ज्ञान और अज्ञान में—कोई विरोध और शत्रुता नहीं है; दोनों एक ही वस्तु के दो पहलू हैं । विज्ञान सदा धर्म की और धर्म विज्ञान की सहायता करता है । ज्ञान हमारे सदोष और त्रुटि-पूर्ण विचारों को शुद्ध संस्कृत और परिमार्जित करता है । यदि प्रमाण चाहते हो, तो एक बार अपने वर्तमान विचारों की अपने बचपन के विचारों के साथ—सभ्य मनुष्यों के धार्मिक विचारों की असभ्य जातियों के धार्मिक विचारों के साथ—उन्नत धर्मों के विचारों की अनुन्नत और हठ-प्रधान मज़हबों के विचारों के साथ तुलना करो । देखो, बढ़ते हुए ज्ञान के साथ हमारा धर्म भी किस प्रकार उन्नति करता है । विकास सिद्धांत का यहाँ भी अखंड एकाधिपत्य है ।

जैसे मज़हबी लोगों के लिये अनंत, अज्ञेय को सदा स्मरण रखने की ज़रूरत है, वैसे ही वैज्ञानिकों के लिये भी इसका स्मरण रखना कम ज़रूरी नहीं है । **मज़हबी और वैज्ञानिक, दोनों हठवाद समान रूप से भयावह और त्याज्य हैं ।** इसलिये अपनी सीमा को याद रखते हुए वैज्ञानिकों को भी नम्र ही रहना चाहिए—उन्हें भी धर्म के क्षेत्र पर धावा बोलने का कोई अधिकार नहीं है । और, वस्तुतः हमारी यह धार्मिक प्रवृत्ति या निसर्ग बड़ी ही मूल्यवान् और पवित्र वस्तु है । यह उपेक्षा की चीज़ नहीं है । धर्म भी अनंत विकास का एक अंग है । सभी प्रवृत्तियों और निसर्गों की आवश्यकता और उपयोगिता में विश्वास करनेवाला कोई वैज्ञानिक यह क्योंकर कह सकता है कि धार्मिक निसर्ग हममें बेकार और निष्प्रयोजन ही आरोपित हुआ है । मनुष्य की आत्मा केवल वर्तमान और भौतिक से ही संतुष्ट नहीं हो सकती । इनके द्वारा उसकी आत्मा की प्यास नहीं बुझती । यद्यपि वह अपने इस सेंद्रिय शरीर के द्वारा उस अनंत, अचिंत्य और अगोचर शक्ति तक नहीं पहुँच सकता, तथापि वह इसके प्राप्त करने के लिये सदा उद्विग्न और लालायित रहता है । मनुष्य-स्वभाव में जो दिव्य गुण, जो सौंदर्य-प्रतिभा, सुंदरता और माधुर्य पाए जाते हैं, उन सबका कारण यही स्वर्गीय असंतोष—यही अनंत की चाह—है। इसी के लिये—

जीस्त मजनूँ[1] बना है दीवाना ; दश्ते ग़म छानता है वीराना।
दश्ते-दुनिया में वहशी[3] आवारा ; लैली आनंद के लिये पारा[4]
मनुष्य से इसे छीन लो, आज मानव कुरूप, कुत्सित और सौंदर्य-विहीन हो जायगा।

इसीलिये हमने कहा था कि यह धार्मिक निसर्ग उपेक्षा की वस्तु नहीं है, और मनुष्य को अपनी रुचि और इच्छा के अनुसार इसे तृप्त करने का पूर्ण अधिकार है। इसीलिये इस लेख के अंत में हम भी अपनी शक्ति और सामर्थ्य के अनुसार उस अदृश्य, अतींद्रिय, अज्ञेय और अगोचर की वंदना करते हैं ; हम भी भक्ति-पूर्वक उस अनंत के सामने सिर झुकाते हैं। नहीं, सर्वत्र उसी एक को विद्यमान देखकर—सभी वस्तुओं को उसी का विकास समझकर—उसी अव्यक्त और निराकार को सर्वत्र व्यक्त और व्यापक देखकर—"सियाराममय सब जग जानी"—हम अपने में भी उसी को विद्यमान देखते हैं, और इस प्रकार अपने बंधन और ज़ंजीरों को तोड़कर—अपनी संकीर्णता और क्षुद्रता का परित्याग कर—हम स्वयं अपने को उस अनंत में विलीन कर डालते हैं—हम स्वयं अनंत, सीमा-रहित, सत्-चित्-आनंद बन जाते और कहते हैं—

बुद्धि कल्पना और अनुमान का उत्तुंग शिखर—विशुद्ध अद्वैत

कोई मुझस नहीं है खाली जाँ[5], पूर पवन ज़रा नहीं हिलता।
जाऊँ-आऊँ कहाँ किधर को मैं; हर मकाँ मुझमें हर मकाँ में मैं।
मैं तो गुलशन[6] हूँ आप ख़ुद गुलरेज़[7] ख़ुद ही काफ़ूर[8] ख़ुद ही अंबर[9]-रेज़
सोने-चाँदी की आबो-ताब[10] हूँ मैं, गुल की बू[11] मस्तिए-शराब हूँ मैं।
राग का मीठा-मीठा सुर मैं हूँ, दमक हीरे की, ताब-दुर[12] मैं हूँ।
ख़ुश-मज़ा[13] सब तआम[14] हैं मुझसे, अस्प[15] की ख़ुश ख़िराम[16] है मुझसे।
रक़्स[17] है आबशार[18] का मेरा, नाज़ो-अश्वा[19] है यार का मेरा।

चाँदनी मुस्तआर[1] है मुझसे, सांगो[2] सूरज उधार ले मुझसे।
प्रकृति को तो ईद[3] मुझसे है, माँगूँ अब मैं ? बईद[4] मुझसे है।
ख़ुद ख़ुदा हूँ, सरूर[5] पाक हूँ मैं, ख़ुद ख़ुदा हूँ ग़रूर पाक हूँ मैं।
मुझको काटे कहाँ है वह तलवार, दाग़ दे मुझको है कहाँ वह नार[6]।
मौत को मौत आ न जाएगी, क़स्द मेरा जो करके आएगी।
मेरी वसअत[7] को कौन पाता है, मुझमें अर्ज़ो[8]-समा समाता है।

गोवर्द्धनलाल

सौंदर्य

(१)

तिमिर-गर्विता निशा मलीन,
लुप्त मधुर-छवि-ग्रह-तल्लीन ;
स्नेह-स्वप्न, निद्रा, भय दूर,
मिटा शांति मस्तक सिंदूर ;
करते नव सुख अनुसंधान—
भरे कपोलों में मुसकान ;
छोड़ निरंजन ग्राम्य कुटीर,
बालक-दल सरिता के तीर ;
चौंक, चमक, कुछ सोच अतीत—
सुनते विहगदलों के गीत।

(२)

हँसा-हँसा रति व्योम, ज़मीन,
रवि-किरणें हो क्रीड़ा-लीन ;
ले निज भक्तों से जल-दान,
बढ़ा-बढ़ा दर-दर सम्मान ;
कर सुरभित किशोर उद्यान,
दिखा तरुण मोहन विज्ञान ;
भर प्रिय प्राणों में उत्साह,
फूट रहीं कृषि-मुख पर, वाह !

(३)

बहा मनोहर मधुर समीर,
फैला-फैला फेनिल नीर ;
भर उर-पुर में जीवित जोश,
गरज-गरज कर दारुण रोष ;

---

१. पाठक फ़ारसी-साहित्य की लैली और मजनूँ की अलौकिक प्रेम-कथा से अवश्य परिचित होंगे। मजनूँ लैली का प्रेमी था, और उसके प्रेम में एकदम पागल हो गया था; इसीलिये उसका नाम 'मजनूँ' (पागल) पड़ गया। २. शोक का मैदान। ३. पागल। ४. अर्थात् पारे की तरह बेचैन। ५. जगह। ६. उद्यान। ७. फूल बिखेरनेवाला ८. कपूर। ९. लोबान की गंध फैलानेवाला। १०. चमक-दमक। ११. गंध। १२. मोती। १३. सुस्वाद। १४. भोजन। १५. अश्व। १६. अच्छी चाल। १७. नाच। १८. झरना। १९. हावभाव या कटाक्ष।

१. उधार लेनेवाला। २. आभमाय सूर्य के पीले रंग से है। ३. ख़ुशी; क्योंकि ईद के दिन बड़ी ख़ुशी मनाई जाती है। ४. दूर। ५ आनंद। ६. आग। ७. विस्तार। ८. पृथ्वी और आकाश।

गूँथ-गूँथ मृदु लहर-तरंग,
बना हार भर एक उमंग;
कर कलोल, हो कुछ-कुछ क्लांत
नाच रहा सागर उद्भ्रांत।

(४)

मिटन कठिन घायल दिल-सोज़,
सरोवरों में खिले सरोज;
प्यासे भँवरों की गुंजार,
बहा रही संगीत अपार;
छेद-छेद दृढ़ पर्वत-गात,
झर-झर झरते क्षुद्र प्रपात;
पा विभूति का ओर न छोर,
नाच रहे जंगल में मोर।

(५)

लड़ा-लड़ा दृग लज्जा-पूर्ण,
भर मानस में सुख संपूर्ण;
तोड़-तोड़ कलियाँ रंगीन,
भर आँचल में, ताक ज़मीन;
भूल भविष्य-काल-कल्याण,
बरसा मृदु व्यंग्यों के बाण;
सुना-सुना अपने आमोद,
सखियाँ करतीं मनोविनोद।

(६)

कर मृदु मधुर अधर-रस पान,
भेंट-भेंट, बनकर अनजान;
संग संगिनी लिए अशांति,
भर दृग में मतवाली भ्रांति;
इकटक प्रियतम-रूप निहार,
कर दृग नीचे वारंवार;
विलासिनी बाला स-हुलास,
करती शुचि एकांत-विलास।

(७)

भूल रूप, गृह-कार्य बिसार,
लिए गोद में शिशु सुकुमार;
बार-बार कर आलिंगन,
कर पवित्र शशि-मुख का चुंबन;
हो-होकरके स्नेहाधीन,
उर से लगा, बनीं सुखलीन,
विधवा मा की तृप्ति अनंत,
पाती सुख-सुहाग अत्यंत।

(८)

सुंदर, मोहन, चिकने, गोल,
विनोदिनी के कुसुम कपोल;
धुलते अश्रु-सलिल से आज,
मार रही मारी को लाज;
मूर्च्छित-सा हो रहा शरीर,
देता स्फूर्ति न उसे समीर;
ताक रही वह प्रियतम-राह,
भरता उधर वियोगी 'आह'।

(९)

मैं कवि हूँ नवयुवक सुजान,
है मेरी कल्पना महान;
मैं विरक्त, मैं हूँ ऐश्वर्य,
मैं भीषण, मैं हूँ सौंदर्य;
मुझे न भाते अपने खेल,
दूर किए दुनिया के मेल,
मुझे सुहाती है इस काल,
प्यारी संध्या, प्रातःकाल।

(१०)

मैं बुलबुल, जग चमनिस्तान,
मिसरी-मिली मोहिनी तान;
हे सौंदर्य, तुम्हारी मूर्ति;
देती नहीं किसे है स्फूर्ति?
हे काशी के सायंकाल!
वृंदावन के प्रातःकाल!
तुम बहते जिस ओर अटूट—
जाता धैर्य उधर ही छूट।

(११)

तुम मेरे मन के आघात,
तुम तरुवर के नूतन पात;
ऐ जन्नत के चपल चिराग़!
हूर मेनका के अनुराग!
तिलोत्तमा के प्राणाधार!
रंभा के सुंदर शृंगार!
तुम हो कांता के घूँघट,
गोकुल के उन्नत पनघट।

(१२)

तुम यमुना की तरल तरंग,
वैरिन वंशी की सु-उमंग;
नट नागर के नृत्य, कलोल,
मेरी सजनी के मृदु बोल!
हरिश्चंद्र के सर्बस-दान,
तुम हो मानमयी के मान!
कर फैलाता सखि जिस ओर,
देते बढ़ा उधर तुम छोर!

(१३)

दर्प-दृगों के हे अभिमान!
व्याकुल प्राणों के सम्मान!
हे बादल के मुक्ताहार!
बिजली के पवित्र अभिसार!
जिधर दृष्टि पड़ती हर बार,
सुख त्यों तुम हो एकाकार।
देख तुम्हारा तनिक अभाव,
भूपति रखे भिखारी-भाव!

"गुलाब"

निराश प्रेम

(१)

मैं अपने एक मित्र के दो पुत्रों की बारात में × × × नगर गया। जनवासा एक विशाल जलाशय के किनारे एक बड़ी कोठी में दिया गया। कन्या के पिता उस राज्य के एक उच्च कर्मचारी थे, अतएव हम लोगों का आगत-स्वागत—आदर-सत्कार राजकीय ढंग से किया गया। उस ग्रीष्म-ऋतु में भी ख़स की टट्टियों तथा बिजली के पंखों ने जनवासे में वसंत-ऋतु की छटा दरसा दी। आहा! उन स्प्रिंगदार पलँगों पर कैसे सुकोमल बिछौने बिछाए गए थे! कैसी बर्फ़-सी सफ़ेद चद्दरें और नरम-नरम तकिए शयन करते ही हम लोगों को निद्रादेवी की सुखमय गोद में पहुँचा देते थे! सारा दिन और रात्रि का अधिकांश आमोद-प्रमोद में ही व्यतीत होता था।

प्रातःकाल और सायंकाल बराती लोग मोटरगाड़ियों और चौकड़ियों पर चढ़कर वायु-सेवन तथा नगर-निरीक्षण के लिये, निकला करते थे। मैं बहुधा छड़ी लेकर पैदल ही, चाँदनी में उस जलाशय की अतुल शोभा देखने के लिये, निकल पड़ता था। एक दिन एक मित्र के साथ वार्तालाप करते-करते सायंकाल हो गया। दिन-भर बैठे-बैठे मेरा मन ऊब उठा था, इसलिये मैं चाँदनी रात में उस विशाल जलाशय की ओर टहलने को निकला। उस समय मेरे शरीर में विचित्र शक्ति का संचार हो रहा था, हृदय भी उमंगों से परिप्लावित हो रहा था, आनंद एवं आत्मा की लहरों से हृदय-सागर मानो उछल रहा था। बार-बार घर का स्मरण आ रहा था।

चलते-चलते मैं जलाशय के किनारे एक उपवन में आ पहुँचा, जिसकी शोभा खिली हुई कौमुदी में अत्यंत चित्ताकर्षक प्रतीत होती थी। इसी तरह मैं न-जाने कितनी दूर तक चला गया। अंत को एक ऐसे स्थान पर पहुँचा, जहाँ समाधियाँ-ही-समाधियाँ दिखाई देती थीं। मैं समझ गया, यह श्मशान-भूमि है। अतएव उसे छोड़ने के लिये चेष्टा करने लगा। रात्रि के समय निर्जन वन में श्मशान-सेवन किस को प्रिय हो सकता है? यद्यपि मैं प्रेत-बाधा से इतना नहीं डरता, तथापि रात्रि के समय एक निर्जन मरघट में भ्रमण करना भी मुझे प्रिय न था। शायद ही किसी को हो।

मैंने बहुत प्रयत्न किया कि इस मरघट से निकलकर सड़क पर जाऊँ, और अपने डेरे को शीघ्र ही लौट चलूँ। जलाशय से निकलती हुई वाष्प-पूर्ण वायु के लगने से मुझे गरमी भी लगने लगी, और थकावट का अनुभव भी होने लगा। मेरे हृदय का सारा आनंद जाता रहा, और मैं इस चिंता में पड़ गया कि मार्ग न मिलने से कहीं मुझे सारी रात्रि इसी श्मशान-भूमि में न बितानी पड़े। ऐसा विचार आते ही मेरा हृदय काँप उठा। चिंता और थकावट के मारे मैं एक गिरे हुए पेड़ के ठूँठ पर बैठ गया, और अपनी दुर्गति पर विचार करने लगा। मेरे मन में विचित्र-विचित्र मनहूस ख़याल पैदा होने लगे। एक क़ब्र पर नज़र पड़ी पर मेरे मन में आया कि जिन लोगों ने अपने किसी प्रेमी की लाश इस क़ब्र में रक्खी होगी, उन्हें उस वक़्त इस बात से क्या संतोष हुआ होगा कि एक दिन हमारा सम्मिलन होगा? फिर मैंने सोचा, हृदय की यह धुकधुकी वास्तव में क्या है, जिसके रहते मनुष्य जीवित और बंद होने पर

मृत कहा जाता है ? क्षण-मात्र में एक जीता-जागता मनुष्य मृतक कैसे बन जाता है ? तो क्या यह जीवन विधाता का एक खेल ही है ?

इसी प्रकार के विचारों में मैं निमग्न था कि किसी ओर से एक मधुर ध्वनि मेरे कानों में पड़ी । श्मशान में संगीत ! कैसी विचित्र बात है ! यह सोचता हुआ मैं उसी ओर चलने लगा, जिधर से वह ध्वनि आ रही थी। कुछ दूर जाते ही मैंने देखा, एक क़ब्र के पास सफ़ेद कपड़े पहने एक पुरुष बैठा हुआ कुछ गा रहा है। वह ऊँचा पूरा जवान दुर्बल-सा मालूम पड़ा। उसके विस्तीर्ण ललाट पर उदासी छाई हुई थी। उसका सौंदर्य बिलकुल मुरझा-सा गया था । उसका चेहरा देखते ही मुझे स्पष्ट प्रतीत होने लगा कि यह कोई वियोग का मारा है। वह जैसे-जैसे गाता था, वैसे-वैसे उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बहती थी । उसके कंठ से भी गीत-रूप में करुण-रस का स्रोत बह रहा था। न-जाने क्यों, मेरे मन में प्रबल इच्छा हुई कि इस दुखिया की दुःख-भरी आत्मकहानी सुनूँ। एँड़ी उठाए धीरे-धीरे उसके पीछे जा खड़ा हुआ, और उसके विशाल कंधों पर अपने हाथ रख दिए, जिससे वह ऐसा चमक उठा, मानो उसे सर्प ने काट खाया हो। मुझे देख वह गरजकर बोला—तुम कौन हो ? यहाँ क्या कर रहे हो ? क्या जासूसी कर रहे हो ?

क्रोध के मारे उसकी आँखों से मानो आग की चिनगारियाँ निकल रही थीं। यह देख मेरा हृदय स्तब्ध हो गया। मैं अवाक् हो वैसा ही खड़ा रहा। फिर सावधान होकर कहा—आप शांत हों, मैं न तो जासूस हूँ, और न यहाँ मेरा कोई ख़ास काम ही है। मैं राह भटककर यहाँ आ पहुँचा हूँ।

वह—अच्छा तो जाओ। यह फाटक है, उसी के सामने की सड़क से चले जाओ, अमुक स्थान को पहुँच जाओगे।

मैं भला उसका पिंड ऐसे ही छोड़नेवाला था ? मैंने नम्रता-पूर्वक कहा—भाई साहब, आप बड़े दुखी हैं। मैं भला आपको ऐसी दशा में छोड़कर कैसे चला जाऊँ ? मैं भी तो मनुष्य हूँ, सुख-दुःख मुझे भी व्यापता है। फिर एक ऐसे दुखिया भ्राता के साथ समवेदना कैसे न हो ? मैं सत्य कहता हूँ, आपके इस दुःख से मैं भी दुखी हुआ हूँ। क्या मैं आपकी कुछ भी सेवा नहीं कर सकता, जिससे आपको शांति मिले ? आप मुझे अपना भाई या मित्र समझिए, और अपनी दुःख-कहानी मुझसे कहकर अपना हृदय हलका कीजिए।

इस पर उस वियोगी ने एक गहरी आह भरी। फिर बोला—नहीं साहब, आप मेरे मित्र नहीं हो सकते। आप मेरे लिये इतना ही कर सकते हैं कि यहाँ से चले जायँ, और मैं इस प्रेम की समाधि पर बैठकर कुछ देर उसका स्मरण करते हुए आँसू बहाऊँ।

यह कहकर उसने मेरे चेहरे पर नज़र गड़ाए हुए ख़ूब ध्यान से देखा, जिससे मेरी दृष्टि नीची हो गई। इसी प्रकार कुछ देर तक सोच-विचारकर उसने फिर मुझसे कहा—अच्छा ठहरिए, आप सज्जन-से देख पड़ते हैं। आपको आश्चर्य हो रहा है कि रात को मैं यहाँ बैठा क्या कर रहा हूँ। यदि आप वचन दें कि किसी से न कहिएगा, तो मैं अपनी दुःख-कहानी कहकर आपका कौतूहल शांत करूँ।

मैंने अनायास ही वचन दे दिया।

(२)

उसने कहना शुरू किया—मेरी राम-कहानी दुःखमय है। वह मनुष्य के कोमल हृदय को दहल डालती है। बीस वर्ष पहले मैं तरुणावस्था का सुख लूट रहा था। चलते समय मेरे पैर ज़मीन पर न पड़ते थे। एक बड़े समृद्धिशाली महाजन का इकलौता पुत्र होने के कारण मुझे किसी प्रकार की चिंता न थी। आमोद-प्रमोद में ही मेरा सारा समय व्यतीत होता था। शृंगार मुझे बहुत प्रिय था। बाल सँवारने, गुलाब-जल आदि से स्नान करने, बहुमूल्य वस्त्र और आभूषण पहनने में मेरा बहुत-सा समय बीतता था। माता-पिता मुझे उत्तमोत्तम भोजन कराने में ही बड़े सुखी होते थे। किं बहुना, धन से जो कुछ सुख-सामग्री प्राप्य हो सकती है, वह मुझे प्राप्त थी।

भूत और भविष्यत् का विचार मेरे मन में कभी नहीं आता था। मेरा समय बड़े आनंद से बीत रहा था। मेरे-जैसे जवानों को प्रायः विद्या-व्यासंग नहीं हुआ करता। पर मैं इस नियम का अपवाद था। पढ़ने में मेरी बड़ी अभिरुचि थी। निदान मैं बी० ए० पास कर चुका। एक धनी पुरुष का पुत्र होने से मेरी बड़ी प्रशंसा होने लगी, मानो मैंने कोई अद्भुत कर्म किया हो। अब तो मैं आनंद के उच्चतम शिखर पर पहुँच गया। फिर वही हुआ, जो हुआ करता है; अर्थात् सुख के ऊपर दुःख का चक्र चल गया, और मैं उस शिखर पर से गिरकर शोक के गहरे गर्त में जा पड़ा।

यह दुर्घटना इस प्रकार घटित हुई—एक दिन शाम को मैं अकेला ही हवा खाने जा रहा था। सड़क पर एक चौकड़ी आती देखी। उसे ज़नानी गाड़ी समझ बड़े चाव से उसकी ओर देखने लगा। वह अवस्था ही ऐसी होती है कि स्त्री-दर्शन बड़ा प्रिय प्रतीत होता है। तरुणियों का भी यही हाल होता है; पर उनमें लज्जा विशेष रहने के कारण वे इतनी ढीठ नहीं होतीं। निदान मेरा मनोरथ पूर्ण हुआ। गाड़ी की खिड़की से, जो आधी खुली थी, मुझे एक रूप-राशि युवती के दर्शन हुए। उसका अद्वितीय रूप-लावण्य देखते ही मेरे शरीर में मानो बिजली दौड़ गई हो, ऐसा अनुभव हुआ। मैं अपनी सुध-बुध भूल-सा गया। एक ताँगा करके ताँगेवाले से कहा—उस ज़नानी गाड़ी का पीछा करो, वह नज़र से बाहर न होने पावे। अगर तुम कृतकार्य हुए, तो मुँह-माँगा इनाम पाओगे।

यह सुनकर ताँगेवाले ने घोड़े की पीठ पर चाबुक जमाया, और ताँगा हवा हो गया। उसने उस चौकड़ी से ताँगा मिला लिया। मैंने उससे उसके पीछे-पीछे चलने को कहा। चौकड़ी एक भव्य भवन के सम्मुख खड़ी हो गई। उसमें से उतरकर एक तरुणी और उसकी सहेली उस भवन में घुस गईं। मुझे मालूम था, यह भवन मेरे ही सजातीय एक विख्यात महाजन का है, जिन्हें सरकार ने अभी उस वर्ष राजा की उच्च पदवी से विभूषित किया है। मेरी मनोमोहिनी युवती इन्हीं राजा साहब की अत्यंत लाड़ली, दुलारी इकलौती पुत्री है।

बस, इसी दिन से मेरी बुरी दशा का आरंभ हुआ। मेरा सारा आमोद-प्रमोद उसी रात से काफ़ूर हो गया। मैं दिन-दिन क्षीण होने लगा। खाना-पीना, सोना आदि सब भूल गया। दिन-रात वही मनोमोहिनी मूर्ति मेरे नेत्रों के सम्मुख नाचने लगी। प्रेममयी माता मेरी यह दशा देख तुरंत ही ताड़ गईं कि मैं प्रेम-व्यथा से व्यथित हूँ। उसने बहुत प्रयत्न किया कि मेरे मन से उस चितचोर की चिंता दूर हो, पर सब व्यर्थ था। तब तो माता ने यह बात पिता के कानों तक पहुँचाई। सुनते ही पिताजी मारे क्रोध के आग-बबूला हो गए। उनके और राजा साहब के बीच पुरानी शत्रुता थी, जो कई पुश्तों से चली आती थी। हाल में राजा साहब की विशेष उन्नति एवं प्रतिष्ठा देख पिताजी का ईर्ष्या-भाव और भी उत्तेजित हो रहा था। ऐसे शत्रु की कन्या से मेरा प्रणय उन्हें कब अच्छा लग सकता था? उन्होंने स्पष्ट कह दिया कि यदि तू इस रोग से अपने को मुक्त नहीं कर सकता, तो इस घर से निकल जा; मैं तेरा मुँह नहीं देखना चाहता।

अब तो मेरी हृदय-वेदना का कुछ ठिकाना न रहा। मैंने शक्ति-भर प्रयत्न किया कि उस रूप-राशि को भूल जाऊँ; पर सब चेष्टा निष्फल हुई, और मैं निराशा-रूपी दलदल में प्रतिदिन गहरा डूबने लगा। मेरा गुलाब-सा शरीर सूखकर काँटा हो गया। मैं उसी अपनी प्रेमिका के नाम की माला फेरने लगा।

मेरी यह दुर्दशा देख स्नेहमूर्ति जननी से न रहा गया। उन्होंने पिताजी को अपने रमणी-सुलभ साधन—रुदन—द्वारा एक ही सप्ताह में ठीक कर लिया। पिताजी ने देखा, पुत्र का दुःख अलग रहा, पत्नी के दुःख के कारण तो मेरा सारा सुख मिट्टी में मिल जायगा। इसलिये राजा साहब के पास सँदेसा भेजा। उस पाषाण-हृदय ने देखा कि पुराने शत्रु को नीचा दिखाने का यह अच्छा अवसर हाथ लगा है। उसने दो-चार उलटी-सीधी सुनाकर नाहीं कर दी। इस पर सँदेसा ले जानेवालों ने मेरी शोचनीय स्थिति का वर्णन कर राजा साहब का हृदय पिघलाना चाहा; पर पत्थर भी कहीं पसीजे हैं! यह सुन वह और भी अधिक प्रसन्न हुआ कि शत्रु को उसी के पुत्र द्वारा दंड देने का अच्छा यह मौक़ा हाथ लगा! उस पाषाण-हृदय ने एक न मानी। सूखा जवाब दे दिया कि उनका वंश हमारे साथ ऐसा संबंध जोड़ने के योग्य नहीं है। यह सुन मेरे पिता को बहुत बुरा लगा, और इस अपमान का कारण मैं ही समझा गया। अपनी प्रेमिका के पिता से इतना अनादर होने पर मेरे प्रेम का स्रोत और भी अधिक वेग से बहने लगा। प्रेम का यही तो एक बड़ा रहस्य है कि उसका पात्र जितना ही अधिक दुर्लभ होता है, उसका ज़ोर भी उतना ही अधिक बढ़ता है। माता के आग्रह से पिताजी ने उस दुष्ट राजा को धन आदि का बहुत कुछ प्रलोभन दिया; पर वह हाथ न आया। यही नहीं, उसी दिन से वह अपनी कन्या के विवाह के लिये पात्र ढूँढ़ने लगा। अंत को उसने एक अधेड़, कुरूप, आचार-भ्रष्ट तथा अपने समान नक़ली राजा के साथ अपनी उर्वशी-तुल्य कन्या का विवाह निश्चित कर दिया।

अब तो मेरे हृदयाकाश को निराशा की घटाओं ने

मानो आच्छादित कर लिया। हाँ, आशारूपी प्रकाश की केवल एक किरण शेष रह गई। मैंने अपनी प्रेमिका की एक सहेली को भाँति-भाँति के आभूषण एवं वस्त्र देकर अपने पक्ष में कर लिया था। उससे मुझे विदित हो चुका था कि मेरी प्राणेश्वरी इस अधेड़ से अत्यंत घृणा करती और मुझे हृदय से चाहती है।

जब से मैंने यह सुना कि उसका भी दिल मुझसे लग गया है, तभी से उसे बिना देखे मुझे कल न पड़ती थी। मैं उसी के मुख से उसकी प्रेम-कथा सुनना चाहता था। इस मनोरथ की सिद्धि के लिये मैंने उसी सहेली की शरण ली। पहले मैंने उसे उत्तमोत्तम आभूषण और बहुमूल्य साड़ियाँ भेंट कीं; फिर निवेदन किया कि जैसे बने वैसे एक क्षण के लिये अपनी सखी के साथ मेरा सम्मिलन करा दो—मैं तुम्हारी सेवा इससे भी अधिक करूँगा। उसने पहले तो यही कहा कि एक कुलीन अविवाहिता युवती भला कहीं एक अज्ञात युवक से एकांत में मिल सकती है? पर मेरे बहुत कुछ अनुनय करने पर उसने मेरा निवेदन स्वीकार कर लिया। निदान प्रथम-सम्मिलन की इसी आशा में कई सप्ताह बीत गए। एक दिन सायंकाल को मैं अपने कमरे में बैठा हुआ एक उपन्यास के पन्ने उलट रहा था। अकस्मात् मेरी प्रेयसी की सखी मेरे सम्मुख आ खड़ी हुई। मैंने बड़े चाव से उसका स्वागत किया, और कुशल-प्रश्न पूछा। उसने शीघ्रता-वश इन सब बातों का उत्तर न देकर कहा, आज सायंकाल के ७ बजे आप बाग़ के पिछले द्वार से, इस चाबी से, फाटक खोलकर आइएगा। बग़ल के लता-कुंज में ही मेरी सखी से आपकी भेंट होगी। देखिए, अधिक विलंब न होने पावे, नहीं तो बड़ा अनर्थ हो जाना संभव है। मेरा तो सर्वनाश ही हो जायगा। आशा है, इस सेवा का इतना कड़वा फल न मिलेगा। आप अकेले ही पधारिएगा।

इतना कह वह युवती चुपचाप चलती बनी। मैंने घड़ी में देखा, ६½ बज चुके थे। ठीक पौने सात बजने पर उस लता-कुंज में पहुँच गया। भाग्य-वश उस ऊजड़ बाग़ में माली आदि कोई न था। मैं प्रतीक्षा करते-करते अधीर हो उठा। मेरे चित्त में यह संदेह उत्पन्न हुआ कि कहीं यह कोई षड्यंत्र तो नहीं रचा गया, जिससे प्रेम-सम्मिलन के बदले मुझे चरणदासी-सम्मिलन न प्राप्त हो। इसी समय रेशमी वस्त्रों की खसखसाहट सुनाई दी। ज्यों ही मैंने सिर उठाया, त्यों ही दो युवतियाँ उस लता-कुंज से १० गज़ की दूरी पर पड़ी हुई एक बेंच पर आ बैठीं। उन्हें देखते ही मेरा कलेजा बेतरह धड़कने लगा। ऐसा प्रतीत हुआ, मानो शरीर-भर का रक्त मस्तिष्क की ओर दौड़ रहा है। अपनी षोडशवर्षीया प्रेयसी के रूप-लावण्य-पूर्ण मुखमंडल, मृदु हास्य-पूर्ण ओष्ठ एवं गोल-सुडौल अंग देखकर मैं एकदम उन्मत्त-सा हो गया। मन कहने लगा, चलो, इस हेमलता को हृदय से लगाकर दोनों भुजाओं के बीच बंदी कर लो। मैं बड़ी ही कठिनाई से अपने हृदय-कुरंग को स्थिर कर उन दोनों का प्रेमालाप सुनने लगा—

सहेली—क्यों बहन, भाँवरें किस दिन पड़ेंगी?

प्राण०—(चौंककर) सखी, मैंने तुमसे हज़ार बार कहा कि इस विषय को मत छेड़ा करो। मुझे मर्म-वेदना होती है। पर तुम मानतीं ही नहीं। बार-बार उसी निगोड़ी चर्चा को उठाकर मुझे व्यर्थ कष्ट देती हो।

सहेली—क्षमा करो बहन, भूल हो गई। अब भगवान् की सौगंद, मैं यह बात मुँह से न निकालूँगी।

प्राण०—अच्छा, जाने दो, कोई ख़बर हो, तो बताओ।

सहेली—किस बात की ख़बर बहन?

प्राण०—बड़ी भोली हो न? जान-बूझकर भी अजान बनती हो।

सहेली—(मुँह बिचकाकर) हाँ समझ गई, उसी नवलकिशोर की ख़बर पूछती होगी, जिसकी सलोनी सूरत मेरी एक प्रिय सखी के नयनों में बसी है।

प्राण०—ख़ैर, यही सही; पर ख़बर तो बता, तेरे नवलकिशोर आनंद से तो हैं?

सहेली—मेरे कि आपके? ख़ैर, यही सही। आनंद से? क्या उनकी प्रेयसी से उनका सम्मिलन हो चुका? यह हुए बिना बेचारे को आनंद कहाँ? वह तो मारे विरह के सूखकर काँटा हो रहे हैं। पहचानना ही कठिन है।

प्राण०—(ऊर्द्ध्वश्वास छोड़कर) ऍं? क्या कोई रोग हो गया है?

सहेली—अजी, उन्हें बड़ा भयानक राजरोग हो गया है।

प्राण०—क्या सच कह रही है? वह कौन-सा रोग है? उपचार कौन कर रहे हैं?

सहेली—नगर-भर के वैद्य, हकीम, डॉक्टर, सब हार गए, किसी को भी रोग का पता नहीं लगता। कोई कहता है राजयक्ष्मा है, कोई जीर्णज्वर। डॉक्टर कहता है नरवसडेबिलिटी हो गई है। कोई-कोई लालबुझक्कड़ उन्माद बतलाते हैं। सारांश यह कि रोग का पता ही नहीं लगता, उपचार क्या किया जाय।

प्राणे०—(घबराकर) कुछ विशेष भय तो नहीं है?

सहेली—भय क्या, प्राण संकट समझो।

प्राणे०—(आँसू भरकर) हा दैव, कैसा भयंकर समाचार है!—सखी, उनकी यह व्यथा कैसे दूर हो?

सहेली—आप मुझसे पूछती हैं? धन्य है! कारण तो आप ही हैं। यदि आप चाहें, तो उन्हें जीवन-दान दे सकती हैं।

इस पर उस युवती ने उठकर अपनी सहेली के गले में दोनों हाथ डाले, और अवरुद्ध कंठ से कहा—बहन, हम दोनों एकसाथ पलीं, एकसाथ खेलीं, और अब दो-तन एक-प्राण होकर रहती हैं। हम दोनों में किसी प्रकार का भेद-भाव नहीं है, और न कोई बात एक दूसरी से छिपी है। अब तू किसी बहाने से प्रियतम को अपनी आँख से देख आ कि उनकी दशा कैसी है। देख, बहुत शीघ्र आना, जब तक तू न आवेगी, तब तक मुझे कल न पड़ेगी।

अपनी प्राणेश्वरी के ये वचन सुनकर मैं आपे से बाहर हो गया। लता-कुंज से बाहर हो मैं एक छलाँग में उसके समीप जा पहुँचा, और उसके चरण-कमलों में लोट गया। यह देख मेरी प्राणवल्लभा बहुत घबराई, और सहेली तो वहाँ से क्षण-भर में अदृश्य हो गई। मैंने उसे कातर और घबराहट में देख उठकर अपने को धिक्कारा, और कहा—प्राणेश्वरी, मेरे इस दुस्साहस को यदि आप अपराध समझती हों, तो न्याय करें; क्योंकि मैं अपराधी नहीं हूँ। अपराधी है, तो यह आप पर मेरा प्रगाढ़ प्रणय, जिस पर मेरा वश नहीं। उसके बदले यदि आप मुझे दंड देना चाहती हों, तो दें, मैं आपके हाथों प्राण-दंड भी हर्ष से ग्रहण करूँगा।

मेरी प्यारी अवाक् हो चित्र-सी खड़ी रह गई। उसके अधर-पल्लव तो हिलते हुए प्रतीत होते थे, पर मुख से वचन नहीं निकलता था। उसकी यह गति देख मेरा हृदय व्याकुल हो उठा। मैंने गिड़गिड़ाकर कहा—तो क्या मेरा अपराध इतना भयंकर है कि आप मुझसे घृणा करती हैं, और एक शब्द भी नहीं बोल सकतीं! मैंने तो आपकी बातचीत से अनुमान किया था कि आपके उदार हृदय में मुझे स्थान मिला है। तभी मैंने इतना दुस्साहस किया। यदि मुझे भ्रम हुआ, तो आप स्पष्ट शब्दों में कह दें, मैं आपको अधिक कष्ट न दूँगा, तुरंत यहाँ से चला जाऊँगा। पर क्या आप इतनी निष्ठुर बन सकती हैं? क्या नहीं जानतीं कि आपकी कृपा न रहने से मैं एक क्षण भी नहीं जी सकता? क्या आप मुझे शोक-सागर में डुबा उस पापी अधेड़ को अपना पति स्वीकार करने को तैयार हैं? यदि ऐसा नहीं है, आप इस अभागे पर तनिक भी दया कर सकती हैं, तो बस, मेरे साथ आइए, आपको इस आपत्ति से बचाने और जन्म-भर सुखी रखने का सारा भार मुझ पर है।

चाँदनी के प्रकाश में मैंने देखा, उस सुंदरी का विशाल वक्षःस्थल उठ-बैठ रहा है, उसका कोमल शरीर काँप रहा है, और उसके मुखमंडल पर लालिमा छाई हुई है। उसके मुख से ये शब्द निकले—क्या आप मुझे अपने धर्म से पतित करना चाहते हैं? माता-पिता को छोड़ एक पुरुष के साथ चल देना, चाहे वह पुरुष अपनी आँखों का तारा ही क्यों न हो, आर्य-ललनाओं का धर्म नहीं है। और, अधर्म से प्राप्त किया हुआ सुख कभी फलता-फूलता नहीं। आपका कैसा प्रेम है, जो आप जान-बूझकर मुझे पाप-गर्त में पटकना चाहते हैं?

यह सुन मेरी जो दशा हुई, उसका वर्णन मैं नहीं कर सकता।

शोक, संताप और लज्जा से कातर हो मैंने उत्तर दिया—अच्छा, तो मैं जाता हूँ। नहीं कह सकता, कल तक मेरी क्या दशा होगी। मेरा जीवन आपको उस दिन गाड़ी में देखते ही भार-रूप हो रहा था। अब इस निराशा से उसका बचना कठिन है। मैं आपको इस बात का निश्चय कराता हूँ कि जितने घंटे मैं जीवित रहूँगा, आप ही की मूर्ति मेरे नेत्रों के सम्मुख रहेगी, और आप ही के नाम की रट लगी रहेगी।

इतना कह मैं नीचा सिर किए उन्मत्त के समान उलटे-सीधे पैर रखता फाटक की ओर चला। मेरी यह दशा देख वह तुरंत मेरे सम्मुख आकर कहने लगी—क्या आप पागल हो गए हैं? ऐसी बातें क्यों करते हैं?

क्या आर्य-युवाओं को आपत्ति-काल में इतना अधीर होना और आत्मघात करना उचित है ? क्या हम-आप विधाता के विधान को रोक सकते हैं ? यदि आपको अपने प्राण इतने प्यारे नहीं, तो मेरे ही लिये उन्हें रखिए। आप तो मुझे प्राणेश्वरी कहते हैं। फिर आपको अधिकार ही क्या है कि दूसरे की वस्तु को आप नष्ट करें। इतने अधीर क्यों होते हैं ? यदि विधाता को हमारा संयोग स्वीकृत है, तो कौन आड़े आ सकता है ? इसी विश्वास पर धैर्य धारण कीजिए, और वचन दीजिए कि आप किसी प्रकार का अनर्थ न कर बैठेंगे ?

यह प्रेम-स्वीकृति सुनकर मुझे बड़ा हर्ष हुआ। मैंने कहा—प्राणेश्वरी, मैं इस बात को सहन नहीं कर सकता कि आप उस पापी बूढ़े के चंगुल में फँसकर आजीवन दुखी रहें, और मैं आपके वियोग से जलता हुआ अंत में मर मिटूँ। इसका स्मरण करने से भी मुझे इतनी वेदना होती है, मानो हज़ारों बिच्छुओं ने मेरे एकसाथ ही डंक मारे हों। धीरज धरूँ, तो कैसे धरूँ ? यदि विधाता को यही मंज़ूर है, तो वह अत्यंत निष्ठुर और अन्यायी है। हाँ, मैं आपका आग्रह नहीं टाल सकता, इसलिये वचन देता हूँ कि कोई अनर्थ न कर बैठूँगा। पर यदि वियोग ही हुआ, और आपको आपके पिता ने उस पापात्मा की गोद में ज़बरदस्ती बिठा ही दिया, तो मैं अपने को फिर स्वतंत्र समझूँगा, वचन-बद्ध नहीं।

प्यारी ने उत्तर दिया—अनर्थ होने के पूर्व ही उसके होने की कल्पना कर लेना कौन-सी बुद्धिमानी है ? अभी तो विवाह हो नहीं गया, आप कैसे कह सकते हैं कि अवश्य होगा ?

ऐसा कहते हुए उसने सिर उठाकर ज्यों ही मेरी ओर देखा, त्यों ही उसके उज्ज्वल नेत्रों से मानो मोती बरसने लगे। ऐसी स्थिति में कदाचित् आप धीरज रख सकते, कदाचित् आप इतने जितेंद्रिय हों; पर मेरा तो सारा रहा-सहा धीरज एकदम काफूर हो गया। प्रेम का भूखा मैं दोनों भुजाएँ फैलाकर उसकी ओर लपका। क्षण-भर में हम दोनों के हृदय परस्पर मिल गए। उसने भी मेरे इस दुस्साहस में बाधा न दी। मेरे कंधे पर अपना सिर रख प्रेमाश्रु बहाने लगी। उस समय के हम दोनों के स्वर्गीय सुख का वर्णन कौन कर सकता है ? क्षण-भर के लिये हम अपने सब दुःख भूल मानो प्रेम-समाधि में मग्न हो गए। आज तक उस अधूरे सम्मिलन-सुख को मैं नहीं भूल सका, और न जीते-जी कभी भूलने का। यही स्मृति मेरे दरिद्र जीवन की एक-मात्र संपत्ति है, जिसे मैं अपने हृदय की गुप्त-से-गुप्त तह में सुरक्षित रखता हूँ। बस, इतना ही सुख मैंने इस संसार में पाया है। प्राणेश्वरी तो स्वर्गवासिनी हुई, पर मेरे लिये यही स्मृति छोड़ गई, जो अब मेरे जीवन का एक-मात्र आधार है।

निदान यह सुख-स्वप्न भी भंग हुआ। सहेली के इशारा करने पर हम दोनों अलग हुए, और शीघ्र ही मिलने की आशा से उत्साहित हो अपने-अपने घर लौट गए।

उस सुख-सम्मिलन के बाद तीन सप्ताहों के भीतर एक बार फिर हम लोग मिले। पर उसके बाद मुझे प्यारी की कोई ख़बर तक न मिली। मैंने कई पत्र भेजे, पर उत्तर नदारद। मेरी प्रेयसी का प्रेम मुझ पर तो अगाध था; पर उसकी पितृभक्ति भी उससे कुछ कम न थी, जिससे वह अपने जीवन-सुख को भी पितृ-आज्ञा-पालनार्थ त्यागने को तैयार थी। वास्तव में वह एक देवी थी। मैं उसकी चरण-रज भी अपने मस्तक पर रखने के योग्य न था।

मैं इसी आशा में अपना समय किसी प्रकार काट रहा था कि मेरी प्राणप्यारी अपनी माता की सहायता से अपने पिता को ठीक कर लेगी, और फिर हम दोनों प्रणय-सूत्र में बँधकर इस मर्त्यलोक में भी स्वर्गीय सुख का उपभोग करेंगे। निदान एक दिन एक चपरासी ने एक बड़ा रंगीन लिफ़ाफ़ा लाकर मेरे हाथ में रख दिया। उसमें मेरी प्रियतमा के विवाह का निमंत्रण-पत्र था। मेरी सारी आशाओं पर एकदम पानी फिर गया। मेरे हृदय पर मानो वज्र गिर पड़ा। मेरे कलुषित हृदय में यही भ्रम समा गया कि उसने मेरे साथ विश्वासघात किया। मैं स्त्रीजाति-मात्र को धिक्कारने लगा। मेरा जीवन नितांत कड़वा हो गया। संसार मुझे शून्य-सा दिखाई देने लगा। निदान उस घृणित विवाह के दिन का सूर्य उदय हुआ। मैं अपने कमरे में बैठा न-जाने क्या-क्या सोचता रहा, और विक्षिप्त-सा हो गया। इतने में बारात मेरे घर के सामने पहुँची। मैंने अपनी प्रेयसी

के वर को बड़ी सज-धज के साथ जाते और मुझे देखकर मुसकिराते देखा। मेरे शरीर का रक्त उबलने-सा लगा। मस्तक घूमने लगा, आँखों में अंधकार छा गया। मैं मूर्च्छित हो भूमि पर गिर पड़ा। फिर नहीं जानता, क्या हुआ। दो मास से भी अधिक खाट पर बिताए, तब कहीं मेरी मूर्च्छा दूर हुई।

मैंने उस वियोगी से पूछा कि यह समाधि किसकी है, जिस पर आप अश्रु बहा रहे हैं? उसने उत्तर दिया—जब इतना सुना है, तो थोड़ा और सुनिए। अधीर क्यों होते हैं? यह मेरे प्रेम की समाधि है। इसी में मेरी प्रियतमा के शरीर का भस्म विश्राम कर रहा है, और वह स्वर्ग में मेरी प्रतीक्षा कर रही है।

मैंने अत्यंत खिन्न हो उसके साथ समवेदना दिखलाई, और उस वियोगी से पूछा—उस विवाह का परिणाम क्या हुआ? होने पाया, या नहीं?

वियोगी ने कहा—हाँ, हुआ तो, पर जब नव-सम्मिलन की रात को वह बूढ़ा सज-धज कर शयनागार में गया, तो उसने जिसको अपनी नववधू समझ हृदय से लगाया, वह सजीव स्त्री नहीं, उसका शव निकला। आज २० वर्ष व्यतीत हो चुके। मेरे माता-पिता मेरे दुःख से दुखी हो अंत में स्वर्गवासी हुए। उनके क्रिया-कर्म से निश्चिंत हो मैंने अपनी सब संपत्ति दीन-दुखियों को दे डाली। अब मेरे जीवन की सब आशाएँ, सब महत्त्वाकांक्षाएँ चली गईं। जिस उत्सुकता से एक दिन मैं कामदेव का स्वागत करने को तैयार था, उससे कहीं बढ़कर अब यमदूतों के स्वागत के लिये उत्सुक हूँ। अब मेरी निधि यही एक पत्र है, जिसे मैं छाती से लगाए रखता हूँ।

यह कह उसने अपने कोट की भीतरी जेब से एक पत्र निकालकर इस तरह पढ़ा—

"प्राणेश्वर,

जिस समय मेरी सखी आपको यह पत्र देगी, उस समय मैं यहाँ से बहुत दूर पहुँचूँगी। पर आपके बहुत ही निकट रहूँगी। इतना निकट, जितना जीते-जी नहीं रह सकी। प्यारे, मैं करती, तो क्या करती। मैंने अपना हृदय आपको दे दिया था, और आप ही को अपना पति-देव स्वीकार किया था। फिर इस दूसरे पति को जीते-जी अंग-स्पर्श कैसे करने देती? साथ ही पिता की आज्ञा-भंग कर मैं आपकी कैसे बन सकती थी। इससे मैंने यही उचित समझा कि अपने धर्म की रक्षा करती हुई प्राणोत्सर्ग ही कर डालूँ।

"प्यारे, मेरे लिये दुखी मत होना। संसार बहुत बड़ा है। मुझसे भी बढ़कर सुंदरियाँ आपको मिल सकती हैं। आप अभी तरुणावस्था में प्रवेश कर रहे हैं। आपका जीवन सुखमय होगा; संसार आपके लिये आनंदमय होगा। गुलाबी गालोंवाले हँसमुख बालक आपको घेरे रहेंगे, और पिताजी कहकर आपके हृदय को शीतल करेंगे। अपनी नई धर्मपत्नी के हाव-भाव से, रसीली तिरछी चितवन से, रसमय आलिंगन से मुग्ध होकर आप अवश्य ही मुझे भूल जायँगे। समय आपके नेत्रों से मेरी प्रतिमा दूर कर देगा। उसका स्थान एक दूसरी ही सुखद मूर्ति लेगी। फिर मेरी स्मृति आपको इस तरह व्याकुल न करेगी। बहुत हुआ, तो कभी-कभी स्वप्न की-सी याद आने पर आप एक निश्वास छोड़ मुझे सहज ही भुला देंगे। पर, यदि आप कभी मेरी समाधि के समीप से निकलें, और आपको अवकाश मिले, तो कृपया उस पर एक अश्रु-बिंदु गिरा दीजिएगा। इससे मेरी आत्मा को तृप्ति मिलेगी।

"प्यारे, मैं तो जन्म लेते ही सदा मृदु शय्या पर लेटी हूँ। फिर एक गर्त में गीली भूमि पर बिना तकिए के कैसे पड़ूँगी? पर यह क्या, ११ बज गए! वर आता होगा। अब विलंब न करूँगी। हलाहल पानकर अपने प्राणेश्वर को यह अंतिम पत्र लिखती जाऊँ। अब तो अनंत भगवान् की सुखद गोद में शयन करने का समय आ गया। ओह! मुँह कैसा कड़वा हो गया। पर शरीर में यह विचित्र सुखानुभव कैसा! अब तो कपाल शीतल स्वेदमय हो रहा है। अंग ठंडे पड़ते जाते हैं। शरीर में यह अकड़न कैसी। अब तो सिर घूमने लगा। हाथ से पेंसिल बार-बार गिरने लगी। आहा, क्या ये देवगण हैं! यह मधुर संगीत कहाँ से आ रहा है। अहो, ये कैसे विचित्र चित्र हैं, जिनमें मेरे ही जीवन की सब घटनाएँ चित्रित देख पड़ती हैं। तो अब अंतकाल समीप है। अरे, सिर तो फटा जाता है। सोती हूँ, या जागती! यह क्या! वायुमंडल में उठ रही हूँ! अब तो मूर्च्छित हुई—हे परमात्मन्—प्रेम की समाधि—प्यारे!"

इस करुण पत्र को सुनकर मैं बहुत व्याकुल हुआ।

आँखों से टप-टप आँसू गिरने लगे । मैं नेत्र मूँद चुपचाप बैठा रहा । कुछ देर बाद मैंने उस वियोगी के गले में हाथ डालने की इच्छा से हाथ बढ़ाए; पर वहाँ कोई न था । मैंने आँखें खोलकर इधर-उधर देखा; पर उस अभागे का कहीं पता नहीं । बस, मैं धीरे-धीरे चलता हुआ सड़क पर आ पहुँचा, और जनवासे पहुँच गया । रात बहुत हो गई थी, इससे अपनी शय्या पर चुपचाप लेट रहा ।

मैं नहीं कह सकता कि यह घटना सच्ची थी, या निरा स्वप्न ।

रघुवरदयालु द्विवेदी

सापेक्ष्यवाद

गेलीलियो, न्यूटन और उक्लेदस के सिद्धांत अशुद्ध तथा भ्रमात्मक सिद्ध हो गए । ज्योतिष, गणित, विज्ञान तथा दर्शन के विचारों में बड़ी भारी क्रांति हो गई । समानांतर रेखाएँ मिल जाती हैं । चतुर्थ परिमाण की सत्ता सिद्ध हो गई । किसी ठोस पदार्थ से होकर बाहर निकल जाना संभव है । श्रीयुत अलबर्ट आएन्स्टीन के सापेक्ष्यवाद के ये फल हैं । अलबर्ट आएन्स्टीन इस आविष्कार के कारण अमर हो गए ।

योरप के समाचारपत्र प्रायः इसी प्रकार के लेखों से परिपूर्ण रहते थे, और अब भी ऐसी बातें साधारण लोगों के समझाने के लिये प्रकाशित हुआ करती हैं । जब आएन्स्टीन का यह आविष्कारपत्र प्रथम जर्मनी में प्रकाशित हुआ, तब बहुत लोगों ने इसका घोर विरोध किया । बहुत लोगों ने इसे न्याय तथा बुद्धि के विरुद्ध कहने का साहस किया, और यह भी कहा कि यह सिद्धांत व्यर्थ है, इससे संसार का कुछ भी उपकार नहीं हो सकता । साधारण-सापेक्ष्यवाद का सिद्धांत सन् १९१५ ई० में प्रकाशित हुआ था । इतने अल्प काल में ही सापेक्ष्यवाद की विजय-पताका संसार-भर में फहराने लगी है । यद्यपि अब भी ऐसे लोग हैं, जो इसके किसी विशेष अंश का विरोध करते हैं, परंतु इसकी अधिकांश बातें मुक्त कंठ से सब लोगों ने स्वीकार कर ली हैं । कम-से-कम इतना तो सब लोगों ने स्वीकार ही कर लिया कि सापेक्ष्यवाद का सिद्धांत एक अपूर्व आविष्कार है । इसका प्रभाव दर्शन, गणित, विज्ञान तथा ज्योतिष, सब पर पड़ा है । इसमें संदेह नहीं कि जब तक वैज्ञानिक, गणित-संबंधी तथा दार्शनिक विचार इस भूमंडल में रहेंगे, तब तक उनका नाम अमर और कीर्ति अक्षय रहेगी ।

सूर्यग्रहण की भविष्यद्वाणी

सन् १९१४ ई० के पूर्व अलबर्ट आएन्स्टीन ने यह भविष्यद्वाणी की थी कि सूर्यग्रहण के समय, तारों के प्रकाश की किरणें, सरल रेखा में न आकर, जैसा कि माना जाता है, सूर्य के समीप झुक जायँगी । सब लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ । किसी ने स्वप्न में भी इसकी आशा नहीं की थी । किसी ने कभी किरणों को झुकते हुए देखा ही नहीं था । जो लोग सत्य के प्रेमी थे, वे इस बात को सुनकर बहुत ही प्रसन्न हुए; क्योंकि उन लोगों ने इसी परीक्षा-फल से सापेक्ष्यवाद के सिद्धांत के सत्यासत्य का निश्चय करना नियत किया था । संसार के गणितज्ञों ने तो परीक्षा से पहले ही अपने वोट अलबर्ट आएन्स्टीन के पक्ष में दे दिए थे । यों तो संसार के सभी विद्वानों का अनुराग, सब लोगों के उत्सुक नेत्र इस परीक्षा के फल की ओर आकर्षित हो रहे थे, परंतु जर्मनी और इँगलैंड में एक ऐसी उत्सुकता थी, जो और देशों में नहीं पाई जाती थी । यह कहना व्यर्थ है कि इस उत्कंठा का आधार विद्यानुराग तथा सत्य प्रेम नहीं था, वरन् मत्सर, द्वेष, और एक के प्रति दूसरे की घृणा ही इसका कारण थी । सन् १९१९ ईसवी की २९वीं मई को सूर्यग्रहण लगनेवाला था । अतएव उस समय यह उत्सुकता और भी बढ़ गई । यह एक ऐसा समय था, जब जर्मनी और इँगलैंड में संधि हो चुकी थी, अथवा संधि की शर्तें निश्चित की जा रही थीं । चाहे जो हो, यह काल जर्मनी के साम्राज्य के पतन का था । ऐसी दशा में दोनों देशों के लोगों में द्वेष की अग्नि का प्रज्वलित होना अनिवार्य था । इस द्वेषाग्नि के भड़कने का और भी एक प्रधान कारण था : और विना किसी संकोच के यह बात कही जा सकती है कि यह कारण और सब कारणों से बहुत ही निश्चयात्मक तथा अधिक महत्त्व का था । न्यूटन इँगलैंड का एक प्रधान गणितज्ञ हो गया है,

और अलबर्ट आएन्स्टीन जर्मनी के रहनेवाले हैं। यदि अलबर्ट आएन्स्टीन की भविष्यद्वाणी सत्य प्रमाणित होती, तो न्यूटन के सिद्धांत का महत्त्व घट जाता, और कई अंशों में न्यूटन के मत का खंडन भी हो जाता। उक्त उत्सुकता का यही प्रधान कारण था। सब लोगों ने अपने-अपने विचार प्रकट करना शुरू कर दिया। इसी समय जर्मनी के एक प्रधान वैज्ञानिक ने अलबर्ट आएन्स्टीन के सापेक्ष्यवाद का घोर विरोध किया।

सर ऑलिवर लाज, इँगलैंड के एक प्रधान पुरुष हैं। इनके आविष्कार बहुत ही प्रसिद्ध तथा बड़े महत्त्व के हैं। ग्रहण की परीक्षा २९वीं मई को होनेवाली थी। आपने तीन-चार महीने पहले ही यह विचार प्रकाशित कर दिया था कि अलबर्ट आएन्स्टीन की भविष्यद्वाणी असत्य होगी ; और न्यूटन के सिद्धांत के अनुसार दृश्य दृष्टिगोचर होंगे। जब आफ़्रिका से परीक्षक लोग इँगलैंड पहुँचे, तब यह उत्सुकता और भी बढ़ गई।

टाइम्स इँगलैंड का एक बहुत ही प्रधान पत्र है। उसके एक संवाददाता ने लिखा कि न्यूटन के जीवन के अंतिम २५ वर्ष रॉयल सोसाइटी के सभापतित्व में ही व्यतीत हुए हैं। रॉयल सोसाइटी का स्थान, संसार की संस्थाओं में बहुत ऊँचा है ; और यह पद रॉयल सोसाइटी को न्यूटन के कारण ही प्राप्त हुआ है। अतएव रॉयल सोसाइटी का यह प्रधान कर्तव्य है कि न्यूटन तथा अलबर्ट आएन्स्टीन के सिद्धांतों के मतभेद का निर्णय करने के लिये जो सभा होनेवाली है, उसे स्थगित कर दे।

रॉयल सोसाइटी ने ही इन परीक्षकों को सूर्यग्रहण के दृश्य का अवलोकन करने के लिये आफ़्रिका भेजा था। जब ये परीक्षक इँगलैंड पहुँचे, तब संसार-भर के लोगों की दृष्टि रॉयल सोसाइटी की ओर थी। सब लोग उत्सुक थे कि देखें, रॉयल सोसाइटी क्या निश्चय करती है। रॉयल सोसाइटी स्वयं बहुत ही चिंतित थी कि देखें, ये परीक्षक क्या कहते हैं। इसके लिये एक दिन ठीक किया गया। उसी दिन रॉयल सोसाइटी की बैठक होनेवाली थी। निश्चय हुआ कि पहले सूर्यग्रहण के परीक्षक लोग, अपनी परीक्षा का फल सुनावें, तदनंतर न्यूटन तथा आएन्स्टीन के सिद्धांतों पर वाद-विवाद किया जाय। इसी सभा की बैठक को स्थगित करने के लिये टाइम्स के संवाददाता ने अनुरोध किया था।

नियत दिन आ गया। उस दिन लोगों की भीड़ अधिक थी। सभा का दृश्य देखते ही बनता था। लोग ऐसे उत्सुक थे, जैसे परीक्षा-भवन में जानेवाला विद्यार्थी, ठीक परीक्षा-भवन में भीतर जाने के पहले, उत्सुक रहता है। सर ऑलिवर लाज भी उपस्थित थे। उन्होंने पहले ही कह दिया था कि निर्णय न्यूटन के सिद्धांत के पक्ष में होगा, आएन्स्टीन के पक्ष में नहीं। पाठकगण अपनी कल्पना को दूर तक ले जायँ ; क्योंकि इसके विना सर ऑलिवर लाज की चित्तवृत्ति का अनुभव करना असंभव है।

सब लोग बैठ गए। परीक्षकों ने अपना परीक्षा-फल कह सुनाया। परीक्षा का फल सुनते-सुनते सब लोगों के नेत्र सर ऑलिवर लाज की ओर गए। इसके बाद सभा में वाद-विवाद होनेवाला था ; परंतु सर ऑलिवर लाज ने इस बहस में कुछ भी भाग नहीं लिया, और उठकर धीरे से सभा के बाहर चले गए। जैसे सबका उनकी ओर देखना उनको असह्य हो गया हो। सर ऑलिवर लाज जब बाहर आए, तब उनको अपनी भूल मालूम हुई। उन्होंने सोचा, यदि मैं उसका संशोधन नहीं करूँगा, तो टाइम्स में अवश्य यह समाचार प्रकाशित हो जायगा कि सर ऑलिवर लाज इस बात पर अप्रसन्न हो गए हैं कि प्रकाश की किरणें उनकी इच्छा के अनुसार नहीं चलतीं। अतएव उन्होंने टाइम्स में स्वयं प्रकाशित कर दिया कि "मुझे उस दिन एक विशेष कार्य के लिये छः बजे की गाड़ी से जाना था। इसी कारण मैं वहाँ उपस्थित नहीं रह सका, और वाद-विवाद में भाग भी नहीं ले सका।"

प्रकाश की किरणो, क्या सर ऑलिवर लाज के कथन का उल्लंघन करना ही तुम्हारा उद्देश्य था, अथवा अलबर्ट आएन्स्टीन के कथन का समर्थन!

प्रकृति के नियम, तुम इतने स्वतंत्र क्यों हो? क्या तुम्हें मालूम है कि आज तुमने कितने लोगों की आशा पर पानी फेर दिया ; और साथ-ही-साथ कितने लोगों के हृदय-सागर में आनंद की लहरों को उत्पन्न कर दिया? क्या तुम्हें सर ऑलिवर लाज को इस भाँति अपमानित करना उचित था?

अब सब लोग समझ गए होंगे कि परीक्षा-फल न्यूटन के मत का समर्थन करता था, अथवा आएन्स्टीन के

76324

तथापि यह बात सर ऑलिवर लाज के ही शब्दों में कहना अधिक उत्तम होगा। सर ऑलिवर लाज ने कहा—निस्संदेह इस परीक्षा से न्यूटन पर श्रीमान् अलबर्ट आएन्स्टीन की बड़ी भारी विजय हुई है, किंतु..."

यदि उक्त कथन से 'किंतु' निकाल दें, तो सिद्ध हो जायगा कि आएन्स्टीन के सिद्धांत के सत्य प्रमाणित होने की अधिक संभावना है। अब यहाँ पर परीक्षकों की यात्रा का संक्षेप वर्णन कर देना अनुचित न होगा।

सूर्यग्रहण के परीक्षक यात्री

मि० फ्रेंडलिक जर्मनी के एक प्रसिद्ध ज्योतिषी हैं। आपने सन् १९१४ ई० में रूस जाकर सूर्यग्रहण की परीक्षा करने का विचार किया था। परंतु इसी बीच में योरप के महाभारत का प्रारंभ हो गया, इसलिये यह परीक्षा नहीं हो सकी।

सन् १९१८ ई० में लिक की वेधशाला में सूर्यग्रहण की परीक्षा की गई। परंतु इससे कुछ विशेष लाभ नहीं हुआ; क्योंकि परीक्षा के फल संदिग्ध तथा अप्रमाणित थे।

इन घटनाओं के कारण सन् १९१९ ई० की २९वीं मई का महत्त्व और भी बढ़ गया। सन् १९१७ ई० के मार्च-मास में इँगलैंड के प्रधान ज्योतिषी ने कह दिया था कि सन् १९१९ ई० की २९वीं मई, सापेक्ष्यवाद के सिद्धांत की जाँच करने के लिये बहुत ही उपयुक्त होगी। उस समय बहुत अधिक प्रकाशवाले तारे भी दृष्टिगोचर होंगे, जिसके कारण इस परीक्षा का महत्त्व और भी बढ़ जायगा। ऐसे समय का निर्वाचित करना बहुत ही श्रेयस्कर हुआ; क्योंकि परीक्षा में केवल यही देखना था कि नक्षत्रों के प्रकाश की किरणें सरल रेखा ही में आती हैं, अथवा सूर्य की आकर्षण-शक्ति के कारण कुछ झुक जाती हैं। यदि ग्रहण के समय तारे दृष्टिगोचर न होते, तो परीक्षा किस बात की होती।

इँगलैंड की रॉयल सोसाइटी ने, इस परीक्षा के लिये, तैयारी शुरू कर दी। आदमी दो स्थानों पर भेजे गए; क्योंकि लोगों को डर था, कहीं ऐसा न हो कि एक जगह किसी भौतिक विघ्न के कारण परीक्षा भली भाँति न हो सके।

डॉक्टर ए०सी० डी० क्रामेलिन और सी० डेविसन उत्तरी ब्रेज़िल के सोवाल-नगर में भेजे गए, और ई० टी० कॉटिंगहम और ए० एस्० एडिंगटन पश्चिम आफ्रिका की गिनी की खाड़ी के प्रिंसिप-द्वीप में। इस प्रकार दो भिन्न-भिन्न यात्राएँ हुईं। ग्रीनविच की वेधशाला में सब यंत्र ठीक किए गए। प्रत्येक यंत्र की जाँच बड़ी सावधानी से की गई, जिससे किसी प्रकार की भूल न होने पावे।

प्रिंसिप-द्वीप के यात्रियों का अन्वेषण

ये यात्री सूर्यग्रहण की तिथि से लगभग एक महीना पहले ही प्रिंसिप-द्वीप में पहुँच गए, और वहाँ पर जाकर उचित सामग्री की योजना आरंभ कर दी। इस तैयारी में उन्हें लगभग एक महीना लग गया। परंतु जिस दिन ग्रहण लगने को था, उस दिन ने धोखा दिया। आकाश मेघाच्छन्न हो गया। विघ्नकारक कारणों में यह मुख्य था। परंतु करते क्या? प्रकृति के नियम का परिवर्तन इनके हाथ की बात नहीं थी। ऊपर कहा जा चुका है कि इन यात्रियों में एक एडिंगटन भी थे। सब लोगों ने बड़ी उत्सुकता के साथ फ़ोटो लेना शुरू कर दिया। इन लोगों के चित्त की उस समय की दशा वर्णन नहीं की जा सकती। पाठकगण अनुमान-शक्ति द्वारा उसके कुछ अंश का अनुभव कर सकते हैं। कई फ़ोटो लिए गए। सब काम बड़ी सावधानी से किया गया। अशुद्धता तथा भूल से बचने के लिये बहुत होशियारी और चतुराई से काम लिया गया। एडिंगटन महाशय भी इँगलैंड के ही रहनेवाले थे। इसलिये उनकी यह इच्छा स्वाभाविक थी कि फल न्यूटन के मत का समर्थन करे। परंतु जब उनको यह पता चला कि यह परीक्षा-फल न्यूटन के मत का केवल खंडन ही नहीं करता, वरन् अलबर्ट आएन्स्टीन के मत का समर्थन भी करता है, तब वह बहुत ही हताश हो गए। चार ऐसे फ़ोटो इँगलैंड में लाए गए, जिनकी परीक्षा अभी नहीं की गई थी। एक में नक्षत्रों की यथेष्ट संख्या दृष्टिगोचर हुई, और उससे भी अलबर्ट आएन्स्टीन के ही मत का समथन हुआ।

ब्रेज़िल के यात्रियों का वर्णन

अब किसी को किसी प्रकार का विशेष संदेह नहीं रहा। तथापि सब लोग ब्रेज़िल के यात्रियों की बाट देख रहे थे। ब्रेज़िल के यात्री, उक्त यात्रियों की अपेक्षा, अधिक अच्छी दशा में थे; क्योंकि ऋतु उनके अनुकूल थी। ये यात्री ग्रहण के बाद भी वहाँ पर दो महीने तक सूर्योदय के पूर्व उसी भाग का फ़ोटो लेते रहे, जिस भाग में ग्रहण

लगा था। उनका उद्देश्य यह था कि जिससे कि ये फ़ोटो मिलाए जा सकें, और किसी प्रकार का संदेह न रहे। इनका दूरदर्शक यंत्र भी अपेक्षाकृत बड़ा था। जब तक ये यात्री इँगलैंड नहीं आए, तब तक वहाँ पर सब लोग बड़ी उत्सुकता के साथ इनकी प्रतीक्षा करते रहे। इनके आने पर इन लोगों के फ़ोटो की परीक्षा की गई। यह फल भी अलबर्ट आएन्स्टीन के मत का ही समर्थन करता था। अब सब लोगों को आएन्स्टीन के सिद्धांत में विश्वास होने लगा। इसके अनंतर, इस विषय पर, रॉयल सोसाइटी में वाद-विवाद हुआ। स्थानाभाव के कारण उसका उल्लेख यहाँ नहीं किया जा सकता।

इन यात्रियों की उक्त परीक्षा के कारण साधारण लोगों का विश्वास हो गया कि सापेक्ष्यवाद का सिद्धांत सत्य है। परंतु वैज्ञानिक लोगों का विश्वास शीघ्र किसी सिद्धांत में नहीं होता। कारण, विज्ञान में कई बार ऐसा हो चुका है कि असत्य बात का समर्थन बहुत दिनों तक होता रहा, और अंत में वह बात असत्य प्रमाणित हो गई। यहाँ पर एक बात का और उल्लेख कर देना उचित जान पड़ता है; क्योंकि उससे भी यह बात सिद्ध होती है कि अलबर्ट आएन्स्टीन के सापेक्ष्यवाद के सिद्धांत के सत्य होने की अधिक संभावना है। वह बुध की कक्षा के विषय में है।

बुध की कक्षा के अंतर का स्पष्टीकरण

यदि यह कल्पना कर लें कि इस सूर्य-मंडल में सूर्य और बुध के अतिरिक्त और कोई ग्रह तथा उपग्रह नहीं हैं, और यह भी मान लें कि न्यूटन का सिद्धांत सत्य है, तो बुध का मार्ग सदैव सूर्य के चारों ओर एक विशेष दीर्घवृत्त में होना चाहिए। उक्त कथन का अभिप्राय यह है कि पूर्वोक्त दोनों बातों को स्वीकार कर लेने पर बुध का मार्ग स्थिर हो जाना चाहिए। उसमें किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होना चाहिए। परंतु बात वास्तव में ऐसी नहीं है; क्योंकि और भी बहुत-से ग्रह इस सूर्य-मंडल में विद्यमान हैं। अतएव बुध का मार्ग एक दिए हुए विशेष दीर्घवृत्त में नहीं हो सकता। वह सदा बदला करेगा। यद्यपि और ग्रहों तथा उपग्रहों के कारण इस मार्ग के परिवर्तन में अवश्य सहायता मिलती है, तथापि इनकी मात्रा बहुत ही कम है, और बहुत दिनों के बाद इसका प्रत्यक्ष फल दृष्टिगोचर होता है। हाँ, सौ वर्ष में यह अंतर इतना अधिक हो जाता है कि यंत्रों द्वारा देखने से यह बात स्पष्ट दिखलाई देने लगती है कि बुध के व्यास की दिशा एक नहीं रहती। न्यूटन के सिद्धांत को सत्य मानकर यदि गणित किया जाय, तो सौ वर्ष में बुध की कक्षा का अंतर ५३२ सेकंड होना चाहिए। परंतु यंत्रों द्वारा देखने से पता चलता है कि बुध की कक्षा का उक्त अंतर ५७४ सेकंड होता है। इस प्रकार गणित और परीक्षा में ४२ सेकंड का अंतर पड़ता है। अब यह प्रश्न उत्पन्न हुआ कि यह अंतर क्यों पड़ता है। ज्योतिषियों ने इस बात को समझने का भगीरथ-प्रयत्न किया; परंतु किसी प्रकार यह प्रश्न हल नहीं हो सका।

न्यूटन के सिद्धांत की सहायता से इस कठिन प्रश्न का हल होना असंभव हो गया। तब एक ज्योतिषी ने यह कल्पना की कि बुध और सूर्य के बीच में एक और ग्रह है। उसी के अस्तित्व के कारण बुध की कक्षा में ४२ सेकंड का अंतर पड़ जाता है। लोगों ने बुध और सूर्य के मध्यवर्ती उस कल्पित ग्रह का नाम भी रख दिया; और उसे 'वलकन' के नाम से पुकारने लगे। दूरदर्शक यंत्र की सहायता से आकाश-पाताल एक कर दिया; परंतु 'वलकन' का पता नहीं चला।

बुध की कक्षा के विषय में लोगों का यही विचार था, और यह प्रश्न अभी हल नहीं हो सका था कि उसी समय सापेक्ष्यवाद के सिद्धांत का जन्म हुआ।

मान लीजिए, इस सूर्य-मंडल में केवल बुध और सूर्य हैं, और अलबर्ट आएन्स्टीन का मत सत्य है; परंतु फिर भी तो बुध की कक्षा एक नहीं होगी। वह बदलती रहेगी, और सौ वर्ष में ४३ सेकंड आगे बढ़ जायगी। इस प्रकार गणित और परीक्षा का पूर्वोक्त मतभेद मिट जायगा। इससे यह निर्विवाद सिद्ध हो जाता है कि सापेक्ष्यवाद के सत्य होने की अधिक संभावना है।

सप्तरंजित रेखाओं से प्रमाण

सप्तरंजन-विश्लेषण का स्थान भौतिक विज्ञान में बहुत ही ऊँचा है। इसकी सहायता से विज्ञान की कई महत्त्व-पूर्ण मीमांसाएँ निर्द्धारित की गई हैं। सूर्यलोक की अधिक बातें इसी की सहायता से निकाली गई हैं। यहाँ पर इसका और अधिक उल्लेख नहीं किया जा सकता। परंतु उन बातों का अति सूक्ष्म वर्णन आवश्यक जान पड़ता है, जिनका संबंध सापेक्ष्यवाद से है। सप्तरंजित

रेखाओं के विषय में भी आएन्स्टीन ने अपना विचार प्रकट किया है, और यह उनकी भविष्यद्वाणी कही जा सकती है। उन्होंने कहा है कि यदि सापेक्ष्यवाद का सिद्धांत सत्य है, तो सूर्य की सप्तरंजित रेखाएँ, रश्मिवर्ण (सप्तरंजन) के लाल किनारों की ओर हट जायँगी। इन रेखाओं के हट जाने के विषय में अभी तक कुछ निश्चय नहीं हुआ है। अभी इसके विषय में बहुत कुछ मतभेद है।

सेंट जॉन, स्वारजशीलड, एवरशेड, ग्रेन और वेकेम आदि विद्वानों ने इसके विषय में अन्वेषण किया है। इन लोगों के अन्वेषण से यह पता चलता है कि सप्तरंजित रेखाओं का यह स्थानांतर उतना कदापि नहीं हो सकता, जितना अलबर्ट आएन्स्टीन ने बतलाया है। इन लोगों की राय में यह स्थानांतर उससे बहुत ही कम है।

लोगों का ऐसा विश्वास हो रहा था कि सेंट जॉन के महत्त्व-पूर्ण आविष्कार सापेक्ष्यवाद के विरुद्ध हैं; परंतु सन् १९२० ई० में ग्रेन और वेकेम ने जो एक आविष्कार-पत्र छपवाया, उससे यह सिद्ध होता है कि अलबर्ट आएन्स्टीन की भविष्यद्वाणी ठीक होगी। तथापि यह विषय अभी विवाद-ग्रस्त है। अस्तु।

सापेक्ष्यवाद के समझने-समझाने के लिये एक स्वतंत्र बृहत् लेख की आवश्यकता है; क्योंकि यह विषय बहुत ही गंभीर है। जो लोग केवल इसके नाम से ही डरते हैं, उनसे मेरा यह नम्र निवेदन है कि यह विषय तो बालकों का हौआ नहीं है। विषय गंभीर होते हुए भी बहुत ही सुगम है। प्रत्येक मनुष्य बहुत सुगमता से इसे समझ सकता है। यहाँ पर सापेक्ष्यवाद के सिद्धांत का बहुत ही सूक्ष्म वर्णन किया जायगा। यदि संभव हुआ, तो किसी दूसरे लेख में इसकी बृहत् व्याख्या की जायगी।

अलबर्ट आएन्स्टीन के सापेक्ष्यवाद का इतिहास दो भागों में विभाजित हो सकता है। पहले भाग में विशेष-सापेक्ष्यवाद और दूसरे में साधारण-सापेक्ष्यवाद समझना चाहिए। मिकलसन और मार्ली ने एक परीक्षा की थी। उनके परीक्षा-फल को समझाने के लिये बहुत लोगों ने प्रयत्न किया। अलबर्ट आएन्स्टीन ने भी उक्त परीक्षा-फल के आधार पर, सन् १९०५ ई० में, एक आविष्कारपत्र प्रकाशित किया। इस पत्र में विशेष-सापेक्ष्यवाद का वर्णन है।

विशेष-सापेक्ष्यवाद का सिद्धांत

सब गतियाँ, जिनका हम लोगों को ज्ञान होता है, सापेक्ष हैं, निरपेक्ष नहीं। इसे सापेक्ष्यवाद का विशेष-सिद्धांत कहते हैं। इसका आशय यह है कि संसार में जितनी गतियाँ हैं, सबको किसी-न-किसी वस्तु, क्रम अथवा आधार की अपेक्षा होती है। निरपेक्ष गति का ज्ञान हम लोगों को नहीं होता।

प्रकाश की गति की स्थिरता

प्रकाश की गति, रिक्त स्थान में, १,८६,००० मील प्रति सेकंड है, और यह गति उद्गम स्थान की गति से स्वतंत्र है।

सन् १९०५ ई० के पत्र में विशेष करके उपर्युक्त बातों का वर्णन है। इसके देखने से पता चलता है कि ये सिद्धांत बहुत व्यापक नहीं हैं। इस पत्र के प्रकाशित होने के बाद श्रीमान् अलबर्ट आएन्स्टीन ने यह सोचना शुरू कर दिया कि यदि ये सिद्धांत सत्य हैं, तो इनका अस्तित्व विश्व-भर में सर्वव्यापक होना चाहिए। इसी प्रकार सोचते-सोचते सन् १९११ ई० में उन्होंने एक और सिद्धांत का आविष्कार किया, जिसे समानार्थता का सिद्धांत कहते हैं।

समानार्थता का सिद्धांत

आकर्षण-शक्ति का क्षेत्र कृत्रिम शक्ति के क्षेत्र के समान है; और यदि किसी विशेष देश में दोनों हों, तो किसी प्रकार की परीक्षा से दोनों का पृथक्करण हो ही नहीं सकता। इसको यों भी कह सकते हैं कि शक्तियाँ सापेक्ष होती हैं। समानार्थता के सिद्धांत को शक्ति का सापेक्ष्यवाद कह सकते हैं।

साधारण-सापेक्ष्यवाद का सिद्धांत

सब स्वतंत्र, गतिशील भुजयुग्मों के क्रम के लिये प्रकृति के सब साधारण नियम स्थिर हैं। साधारण-सापेक्ष्यवाद का सिद्धांत सन् १९१५ ई० में प्रकाशित हुआ। सापेक्ष्यवाद के इन सिद्धांतों को मान लेने पर प्रकृति के सब नियम, गणित की सहायता से, निकाले जा सकते हैं। यही इसकी विशेषता है। इस सिद्धांत का प्रतिवाद तथा इसका समर्थन करते हुए बहुत आविष्कार-पत्र अब तक छप चुके और छपते जा रहे हैं।

चतुर्थ परिमाण

अलबर्ट आएन्स्टीन तथा मिनकाउसकी के अनुसार समय को चतुर्थ परिमाण मानने से प्राकृतिक दृश्य बहुत ही सुगमता से समझाए जा सकते हैं। चतुर्थ परिमाण का प्रश्न बहुत ही प्राचीन है। दर्शन-शास्त्र की दृष्टि से यह प्रश्न और भी पुराना कहा जा सकता है। प्रायः चतुर्थ परिमाण का विचार अध्यात्मविद्याओं से सम्मि-

लित माना जाता था। कैंट दर्शन का एक बहुत ही प्रसिद्ध विद्वान् है। वह चौथे परिमाण के अस्तित्व में विश्वास करता था। प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि चौथे परिमाण का आशय क्या है?

एक परिमाण का संसार

मान लो कि एक ऐसा संसार है, जिसमें केवल लंबाई है, चौड़ाई या उँचाई नहीं है। यह बात स्पष्ट है कि उस संसार का आकार अ ब सरल रेखा की भाँति होगा। देखने से मालूम होता है कि अ ब रेखा में लंबाई और चौड़ाई दोनों हैं; परंतु कल्पनाशक्ति की सहायता से चौड़ाई को एकदम निकालकर फेंक देना चाहिए। आशय यह है कि अ ब रेखा को रेखागणित की रेखा स्वीकार कर लेना चाहिए।

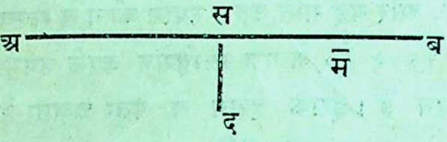

अब ध्यान करके देखना चाहिए कि उस संसार की क्या दशा होगी। उस संसार में केवल लंबाई-ही-लंबाई होगी, चौड़ाई या उँचाई का किसी को ज्ञान ही न होगा। उस संसार का आकार अ ब रेखा की भाँति होगा। उनका संसार, अ और ब, दोनों ओर उसी सरल रेखा अ ब की दिशा में ही घट-बढ़ सकता है, और किसी दिशा में नहीं; क्योंकि और किसी दिशा का ज्ञान ही उन लोगों को नहीं है। वह संसार ब तथा अ की ओर अनंत तक जा सकता है, अथवा किसी परिमित दूरी तक। दोनों ही दशाएँ उस संसार में संभव होंगी। मान लीजिए, उस संसार में एक अपराधी पकड़ा गया, जो बड़ा भारी राजद्रोही है। उस राजद्रोही के अतिरिक्त और सब मनुष्य राजभक्त हैं। मान लीजिए, सब राजभक्तों ने उसे अपने संसार के स स्थान पर क़ैद कर लिया। अब उस संसार के आधे आदमी एक ओर और आधे आदमी दूसरी ओर उसे इसलिये घेरकर खड़े हैं कि वह निकल न जाय। स्पष्ट है कि सब लोग उसी सरल रेखा में खड़े रहेंगे। आधे आदमी स ब की ओर, और आधे आदमी स अ की ओर खड़े रहेंगे। अवश्य ही सब लोग बड़ी सावधानी से उस मनुष्य की रखवाली कर रहे हैं, जिससे वह भाग न जाय।

कल्पना कीजिए कि उस राजद्रोही को दूसरे परिमाण का भी ज्ञान है। ऐसी दशा में वह बड़ी सुगमता से द की ओर निकल जायगा। उसके जाने का मार्ग स द होगा, जैसा कि ऊपर चित्र में दिया हुआ है। सब लोग उसे घेरकर खड़े ही रहेंगे, बड़ी सावधानी से वे उसकी चौकसी में रहेंगे, तथापि वह राजद्रोही, नीचे या ऊपर की ओर से, बड़ी सुगमता से, निकल जा सकता है।

वह राजद्रोही स द के मार्ग से बाहर निकल जायगा। तब उस संसार के लोगों को बड़ा आश्चर्य होगा; क्योंकि उन्हें दूसरे परिमाण (चौड़ाई) का ज्ञान ही नहीं है; और उनके सब पुरखे मिलकर भी यह कल्पना नहीं कर सकते कि वह आदमी स द की ओर से निकल जा सकता है। उसके निकल जाने पर यह प्रश्न भी उठेगा कि वह किस मार्ग से निकल गया; क्योंकि मार्ग बंद और चारों ओर से घिरा हुआ है!

इसमें संदेह नहीं कि वह संसार विचित्र होगा, और उसकी सब घटनाएँ भी विचित्र होंगी। मान लीजिए, उसी संसार के पास ही एक दूसरा संसार है, जो चित्र में म के द्वारा प्रदर्शित हुआ है। यह भी मान लीजिए कि म संसार में लड़ाई हो रही है। शत्रुओं की सेना काम कर रही है, तोप के गोले छूट रहे हैं इत्यादि। इन सब घटनाओं का ज्ञान अ ब संसार में बिलकुल नहीं होगा।

दो परिमाण का संसार

अब एक ऐसे संसार की कल्पना कीजिए, जिसमें लंबाई

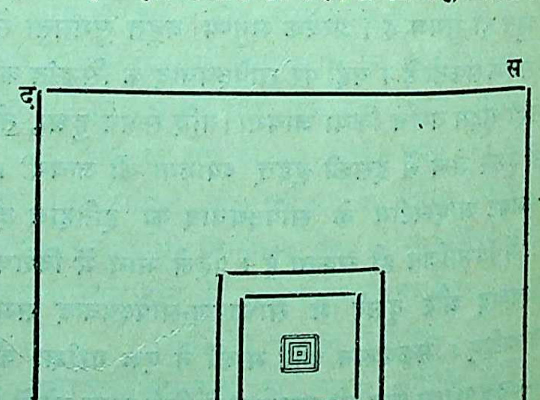

और चौड़ाई है ; परंतु उँचाई या मुटाई नहीं है । उस संसार का कोई भाग अ ब स द है ।

यह संसार चारों ओर काग़ज़ के धरातल में ही इधर-उधर बढ़ सकता है । इस संसार के लोगों को उँचाई का ज्ञान नहीं हो सकता । अच्छा, मान लीजिए, उक्त राजद्रोही इस संसार में पाया गया, और सबसे सुरक्षित स्थान पर क़ैद कर दिया गया । मान लीजिए, वर्ग के केंद्र में ही वह रक्खा गया, और फिर उसके चारों ओर रक्षक रख दिए गए । उन रक्षकों के बाद भी चारों ओर रक्षक रख दिए गए । इस प्रकार रक्षक के बाद रक्षक रखकर, वह कई करोड़ आदमियों से घेर लिया गया । यह भी मान लीजिए कि उस संसार के सब मनुष्य केवल उस राजद्रोही की रक्षा करने में ही तत्पर हैं, जिससे वह भाग न जाय ।

यदि उस मनुष्य को तीसरे परिमाण (उँचाई) का ज्ञान है, जैसा कि हम लोगों को होता है, तो वह राजद्रोही ऊपर उठ जायगा । यदि उसे लेश-मात्र भी कोई आधार मिला, तो वह उसी पर चढ़ जायगा, और उन लोगों के संसार से लुप्त हो जायगा, जो उसे घेरे हुए हैं । उस समय उन राजभक्तों को बड़ा आश्चर्य होगा कि वह किस मार्ग से बाहर निकल गया । देश के सब लोग तो उसकी चारों ओर से रक्षा कर रहे थे कि कहीं वह भाग न जाय !

मान लीजिए, उसे भी तीसरे परिमाण (उँचाई) का ज्ञान नहीं है ; परंतु हम लोगों को है । यदि हम लोग उसे ऊपर उठा लें, तो भी राजभक्तों के संसार में बड़ी हलचल मचेगी, और उस संसार के सब युग के मनुष्यों की बुद्धि के योगफल से भी इस बात का पता नहीं चल सकता कि वह राजद्रोही किस मार्ग से निकल भागा ।

हम लोग, जो इस तीसरे परिमाण से परिचित हैं, उसे एक साधारण घटना समझते हैं ; परंतु उस संसार के लिये यह कार्य बहुत ही आश्चर्य-जनक समझा जायगा ।

तीन परिमाण का संसार

तीन परिमाण का संसार वह है, जिसमें लंबाई, चौड़ाई और उँचाई, तीनों हों । जिस संसार में हम लोग रहते हैं, जिस संसार का ज्ञान हम लोगों को है, वही तीन परिमाण का संसार है । प्रायः संसार के सब पदार्थों में तीनों परिमाण पाए जाते हैं । कोई पुस्तक उठा लीजिए, उसमें लंबाई, चौड़ाई और उँचाई पाई जायगी । तीन परिमाण के संसार में ऐसी वस्तुओं का भी ज्ञान हो सकता है, जिनमें केवल एक ही परिमाण, अथवा केवल दो परिमाण, या तीनों परिमाण हों । संसार के पदार्थों में प्रायः तीनों परिमाण पाए जाते हैं । पतले से भी पतला काग़ज़ का टुकड़ा ले लीजिए । उसमें भी तीनों परिमाण अवश्य ही रहते हैं, यद्यपि उँचाई या मुटाई बहुत ही कम होती है । तीन परिमाण के व्यक्तियों को एक, दो, या तीन, प्रत्येक परिमाण की वस्तुओं का ज्ञान हो सकता है । पर क्या किसी आदमी को ऐसे पदार्थ का भी ज्ञान हो सकता है, जिसमें चार परिमाण हों ? इस विषय में लोगों के भाँति-भाँति के मत प्रचलित हैं । कल्पना कीजिए कि एक क़ैदी को किसी कमरे में बंद करके कमरे में ताला बंद कर दिया गया । अब चारों ओर से लाखों आदमी इस प्रकार उसे घेरकर खड़े हैं कि वह आदमी भाग न सके । फिर भी यदि उस मनुष्य को चौथे परिमाण का ज्ञान है, तो वह उसी चौथे परिमाण के मार्ग से बाहर निकल जायगा, और किसी को पता भी नहीं चलेगा । बात यह है कि चौथे परिमाण का किसी को ज्ञान ही नहीं है ।

इस कथन से यह स्पष्ट है कि जिस व्यक्ति को चौथे परिमाण का ज्ञान होगा, वह ठोस दीवार में से होकर निकल सकता है । इसके सिवा वह और भी अनेक अद्भुत कामों को कर सकता है । यहाँ पर उन सब बातों का उल्लेख नहीं किया जायगा, जो चार परिमाण के संसार में संभव हो सकती हैं ; क्योंकि ऐसा करने से लेख बहुत बढ़ जायगा । बहुत लोगों का विचार है कि हम लोगों का संसार चार परिमाणवाले संसार का एक अंश-मात्र है । यदि वस्तुतः चार परिमाण के संसार की स्थिति संभव है, तो अवश्य ही बहुत-से अद्भुत कार्य इस संसार में किए जा सकते हैं । यहाँ पर चौथा परिमाण देश है ।

अब प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि चौथे परिमाण का अस्तित्व वस्तुतः है, या नहीं ? कैंट एक बहुत प्रसिद्ध दार्शनिक पंडित था । वह चौथे परिमाण में विश्वास करता था । थियासोफ़िकल सोसाइटी के कुछ सदस्यों के लेखों से भी पता चलता है कि उनका विश्वास चौथे परिमाण के अस्तित्व में है । भारतवर्ष के कुछ योगियों

के संप्रदायवाले भी चौथे परिमाण में विश्वास करते हैं। मिनकाउसकी तथा अलबर्ट आएन्स्टीन के मतानुसार भी चौथा परिमाण संभव है। सापेक्ष्यवाद के सिद्धांत के लिये भी चौथे परिमाण की आवश्यकता है। इन लोगों का चौथा परिमाण समय है।

अब प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि देश के चौथे परिमाण तथा समय के चौथे परिमाण में क्या भेद है? क्या दोनों का आशय एक ही है? यदि दोनों का आशय भिन्न-भिन्न है, तो कौन-सी असंभव बात, किस परिमाण में, हो सकती है? क्या अलबर्ट आएन्स्टीन के चार परिमाण के संसार में भी असंभव बातों का होना संभव है, या नहीं? सापेक्ष्यवाद के अनुसार चार परिमाण के संसार से क्या आशय है?

इन प्रश्नों के उत्तर के लिये यहाँ स्थान नहीं है। परंतु इतना कह देना आवश्यक जान पड़ता है कि सापेक्ष्यवाद के अनुसार एक ऐसे संसार में विश्वास किया जाता है, जो चार परिमाण का है; और जिसका चौथा परिमाण समय है।

गणितज्ञ लोग भी इस प्रश्न का उत्तर देते हैं, और इन लोगों का उत्तर बहुत ही स्पष्ट है। इनका कथन है कि हम लोग नहीं जानते कि चौथे परिमाण का अस्तित्व है, या नहीं। यदि चौथा परिमाण है, तो अमुक-अमुक बातें होनी चाहिएँ, और इन बातों का निश्चय प्रकृति करेगी कि ये बातें होती हैं, अथवा नहीं। इस विषय में प्रकृति ही निर्णायक का काम करेगी।

सापेक्ष्यवाद और दर्शन

दर्शन में सापेक्ष्यवाद का वर्णन अति प्राचीन काल से चला आता है। दर्शन-शास्त्र में सापेक्ष्यवाद का दो अर्थों में प्रयोग होता है—

(१) ज्ञान का कोई अंश निरपेक्ष नहीं है। प्रत्येक अंश ज्ञान के और-और अंशों से संबंध रखता है।

(२) हम लोगों को निरपेक्ष वस्तुओं का ज्ञान नहीं होता। वे ऐसी वस्तुएँ हैं, जिनके गुण के आधार पर हम लोगों का ज्ञान है।

दार्शनिक लेखों में प्रायः पहले ही अर्थ में सापेक्ष्यवाद का प्रयोग होता है। परंतु कभी-कभी इस शब्द का प्रयोग दूसरे अर्थ में भी किया जाता है।

डेकार्टे ने भी सापेक्ष्यवाद का प्रयोग अपने विचारों में किया है। बर्कले ने जड़वादियों की युक्तियों का खंडन करने के लिये सापेक्ष्यवाद के सिद्धांत का प्रयोग किया है। ह्यूम ने सापेक्ष्यवाद की सहायता से संशयवादियों के मत का समर्थन किया है। कैंट ने भी इसका प्रयोग किया है। जे० एस्० मिल तथा हर्बर्ट स्पेंसर ने सापेक्ष्यवाद की सहायता से यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि हम लोगों के सब अनुभव का आधार ऐंद्रिय ज्ञान ही है। मिल की पुस्तक (Examination of Sir William Hamilton's Philosophy) में सापेक्ष्यवाद का विस्तृत वर्णन है।

सन् १९११ ई० में 'बोलोना' में दर्शन की एक अंतर-राष्ट्रीय सभा हुई थी। उसमें श्रीयुत पियर लैंगवी ने एक निबंध पढ़ा था, जिसका सापेक्ष्यवाद से बहुत ही घनिष्ठ संबंध है। उक्त निबंध का शीर्षक 'देश और काल का विकास' था। सन् १९१४ ई० में श्रीयुत एच्० कार ने 'एरिटोनियन' सभा के द्वारा एक निबंध प्रकाशित कराया था, और सन् १९१५ ई० में 'दर्शन-समालोचना'-नामक पत्र में सापेक्ष्यवाद पर एक निबंध प्रकाशित किया था। सन् १९१५ ई० से लेकर आज तक, दर्शन-शास्त्र में बहुत आविष्कार-पत्र छपे हैं, जिनका संबंध सापेक्ष्यवाद से बहुत ही घनिष्ठ है।

ऊपर के कथन से यह बात निर्विवाद सिद्ध होती है कि दर्शन-शास्त्र में सापेक्ष्यवाद का प्रश्न बहुत प्राचीन काल से वर्तमान है, और अब भी उसके विषय में विचार किया जाता है। परंतु यह सापेक्ष्यवाद शुद्ध दर्शन से संबंध रखता है। अलबर्ट आएन्स्टीन का सापेक्ष्यवाद इससे भिन्न है।

आएन्स्टीन के सापेक्ष्यवाद के अनुसार देश और काल का विचार

सापेक्ष्यवाद के सिद्धांत के अनुसार हम लोगों को निरपेक्ष देश तथा काल का ज्ञान नहीं होता। जिन देशों का ज्ञान हम लोगों को होता है, वे सापेक्ष हैं। इसी प्रकार काल की भी दशा है।

प्रायः साधारण लोगों को भी देश का कुछ-न-कुछ ज्ञान अवश्य रहता है। परंतु उनका यह ज्ञान बहुत ही स्थूल रहता है। देश का शास्त्रीय ज्ञान बहुत ही कठिन है। इसके विषय में बहुत प्राचीन काल से सब लोग सोचते चले आए हैं, और अब तक सोचते चले जाते हैं।

बहुत तरह के देश दिखलाई देते हैं। अतएव हम लोग इस कठिनाई में फँस जाते हैं कि कौन-सा देश सत्य है।

लगभग दो हज़ार वर्ष से, हम लोग उक्लेदस के देश में विश्वास करते चले आए हैं। इसका एक प्रधान कारण यह भी है कि सब परीक्षाएँ इसके अनुकूल होती आई हैं। परंतु जो परीक्षाएँ पहले हुई थीं, तथा कुछ और परीक्षाएँ जो वर्तमान काल में हुई हैं वे उक्लेदस के देश को मानने के लिये हमें विवश नहीं करतीं। यदि हम लोग उक्लेदस के अतिरिक्त अन्य देश में विश्वास करें, तो परीक्षाएँ उसका खंडन नहीं करेंगी। सापेक्ष्यवाद के सिद्धांत के अनुसार अन्यविध देश भी हो सकता है। उस देश का रेखागणित भी उक्लेदस के रेखागणित से भिन्न होगा। उसकी स्वयंसिद्धियाँ उक्लेदस की स्वयंसिद्धियों से भिन्न हो सकती हैं।

यदि उक्लेदस के रेखागणित से भिन्न अन्य प्रकार के रेखागणित का आविष्कार न हुआ होता, तो इस बात के स्वीकार करने में लोगों को बड़ी कठिनाई पड़ती। परंतु अब सब लोग जानते हैं कि ऐसे रेखागणित भी हैं, जिनकी स्वयंसिद्धि उक्लेदस के विपरीत है। परंतु तो भी वह एक सर्वांगसुंदर रेखागणित का आधार है।

भिन्न-भिन्न रेखागणितों की सत्यता परीक्षा से नहीं हो सकती; क्योंकि परीक्षाओं से किसी का खंडन नहीं होता।

सापेक्ष्यवाद से उक्लेदस से भिन्न रेखागणित भी सार्थक हो जाता है। यों तो शुद्ध गणित के विचार से वह पहले भी सार्थक ही था।

सापेक्ष्यवाद में जब देश-शब्द का प्रयोग होता है, तब उससे उस अर्थ का बोध होता है, जिसका ज्ञान हम लोगों को नाप के द्वारा होता है।

सारांश यह कि सापेक्ष देश का ही ज्ञान हम लोगों को होता है, निरपेक्ष का नहीं। काल भी, जिसका हम लोगों को ज्ञान होता है, सापेक्ष ही है, निरपेक्ष नहीं।

सापेक्ष्यवाद के अनुसार देश और काल का अर्थ, मिनकाउसकी के शब्दों में, बहुत ही अच्छी तरह से स्पष्ट हो जाता है। उसका कथन है कि भौतिक विज्ञान-संबंधी परीक्षा के अनुसार देश और काल की स्थिति आड़ में छिप जाती है, और दोनों (देश और काल) के योग का ही महत्त्व रह जाता है। देश और काल को पृथक्-पृथक् कुछ भी महत्त्व नहीं रहता।

इससे स्पष्ट है कि देश और काल, दोनों सापेक्ष हैं। निरपेक्ष देश और काल का ज्ञान हम लोगों को नहीं होता। आइन्स्टीन के सापेक्ष्यवाद के सिद्धांत के अनुसार देश और काल, दोनों सापेक्ष हैं, निरपेक्ष नहीं।

ऊपर कहा गया है कि दर्शन का सापेक्ष्यवाद आइन्स्टीन के सापेक्ष्यवाद से भिन्न है। अब यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि अलबर्ट आइन्स्टीन के सापेक्ष्यवाद के अनुसार देश और काल की जो व्याख्या की गई है, दर्शन-शास्त्र के पंडितों ने उसके अनुकूल देश और काल की व्याख्या की है, अथवा नहीं? देश और काल का जो अर्थ अलबर्ट आइन्स्टीन करते हैं, उसी अर्थ में किसी दर्शन के पंडित ने उनका प्रयोग किया है, या नहीं?

सापेक्ष्यवाद में जिस अर्थ में देश और काल का प्रयोग होता है, लगभग उसी अर्थ में लीवनीज़ ने उनका प्रयोग किया है। यह बात निम्न-लिखित वर्णन से स्पष्ट होगी।

वेल्स की राजपुत्री की मध्यस्थता

न्यूटन और लीवनीज़ के बीच 'चलन-कलन' के विषय में भी वाद-विवाद हो गया था। परंतु यह विषय गणित से संबंध रखता है। अतएव उसका वर्णन यहाँ नहीं किया जायगा। यहाँ पर केवल उस अंश का वर्णन किया जायगा, जिसका संबंध सापेक्ष्यवाद से है। इस वाद-विवाद में वेल्स की राजपुत्री ने, जो पीछे महारानी केरोलाइन के नाम से विख्यात हुई, और जो द्वितीय जॉर्ज (१७१९ ई०) की धर्मपत्नी थी, भाग लिया था।

पहले लीवनीज़ ने एक पत्र राजपुत्री को लिखा। राजपुत्री ने न्यूटन से उसका उत्तर देने के लिये अनुरोध किया। न्यूटन की ओर से उसके शिष्य क्लार्क ने उत्तर दिया। फिर लीवनीज़ ने उसका उत्तर दिया। दूसरी बार लीवनीज़ ने जो उत्तर दिया, उसका कुछ अंश इस प्रकार है—

"इँगलैंड के वर्तमान काल के कुछ निवासियों का देवता तथा इष्ट 'देश' दृष्टिगोचर होता है। यदि देश एक सत्य पदार्थ है, जैसा कि ये लोग कहते हैं, तो वह नित्य तथा अनंत है, और ईश्वर के समान है। इस मत के अनुसार देश या तो स्वयं ईश्वर है, अथवा परमेश्वर का एक गुण है; उसका एक महत्त्व है। परंतु देश के भाग हो सकते हैं। फिर यह परमेश्वर कैसे हो सकता है? मैं तो कहूँगा कि देश सापेक्ष है, और इसी प्रकार काल

भी सापेक्ष है। देश सहास्तित्व का क्रम है। इसी प्रकार काल परंपरा का क्रम है।"

न्यूटन की ओर से फिर उसका उत्तर क्लार्क ने दिया। जिस प्रकार सापेक्ष्यवाद के सिद्धांत के अनुसार लीबनीज़ का देश और काल है, उसी प्रकार मिकलसन और मर्ली की परीक्षा के अनुसार क्लार्क का वह उत्तर है। ये सब बातें सापेक्ष्यवाद के समझने के लिये बहुत ही आवश्यक हैं। अस्तु।

इससे यह बात सिद्ध हो जाती है कि सापेक्ष्यवाद का सिद्धांत दर्शन-शास्त्र में उतना नया नहीं है, जितना विज्ञान में।

जेनो की गति के विरुद्ध प्रमाण

जेनो यूनान देश का एक बहुत ही प्रसिद्ध तथा प्राचीन दर्शन-शास्त्री है। अपने दार्शनिक सिद्धांतों के लिये वह बहुत ही प्रसिद्ध है। जेनो ईसा के पूर्व पाँचवीं शताब्दी में हुआ था। उसके गुरु का नाम परमेनीदेस था। वह दर्शन-शास्त्र का एक प्रगाढ़ पंडित और 'इलियाटिक' संप्रदाय का मुखिया था। इस समय आयोनिक संप्रदाय का प्रधान हिरेक्लेटस था। इन दोनों संप्रदायों में सदा मतभेद रहा करता था। एक के अनुसार स्थिति का प्रधान सिद्धांत 'सत्ता' और दूसरे के अनुसार 'होना' है। हिरेक्लेटस का विचार 'गति' के पक्ष में था। जेनो का सिद्धांत इसके विरुद्ध था। जेनो ने गति के विरुद्ध चार प्रमाण दिए हैं। गति के विरुद्ध ये चार युक्तियाँ बहुत ही प्रबल तथा न्याय-संगत हैं। यदि कोई मनुष्य उन्हें अशुद्ध सिद्ध करने का प्रयत्न करे, तो उसे न्याय-संबंधी छिद्र नहीं खोजना चाहिए। जेनो की सब युक्तियों का वर्णन यहाँ नहीं किया जा सकता। उनमें से एक का संक्षिप्त वर्णन किया जाता है।

जेनो की गति के विरुद्ध एक प्रमाण

कोई पदार्थ एक स्थान से किसी दूसरे स्थान पर, जो उससे दूर है, नहीं जा सकता; क्योंकि यदि वह एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाय, तो उसे कुछ दूरी तय करनी पड़ेगी। मान लीजिए, दूरी की मात्रा दी हुई है। यह बात स्पष्ट है कि कुल दूरी तय करने के पहले आधी दूरी तय करनी पड़ी होगी, और इस आधी दूरी को तय करने के पहले चौथाई। परंतु इन सबका योग एक नहीं हो सकता, और न इस क्रिया का अंत ही। अतएव कोई पदार्थ एक स्थान से दूसरे स्थान पर नहीं जा सकता। जो लोग गणित में श्रेणी-व्यवहार से परिचित हैं, वे जानते हैं कि $\frac{१}{२}+\frac{१}{४}+\frac{१}{८}+\frac{१}{१६}+\ldots$ इत्यादि का मान एक नहीं हो सकता, जब तक अनंत का हिसाब न करें। जो लोग गणित नहीं जानते, वे भी किसी दूरी अथवा मात्रा को लेकर देख सकते हैं कि उसके आधे, चौथाई इत्यादि अंश मिलकर एक नहीं हो सकता।

उदाहरण के लिये एक रुपया लीजिए। उसके आठ आना, चार आना, दो आना, एक आना, दो पैसा, एक पैसा आदि अंश मिलकर कभी एक रुपया नहीं हो सकते। कुछ-न-कुछ अवश्य ही कम रह जायगा।

इसी प्रकार जेनो की गति के विरुद्ध प्रमाण की सत्यता दृष्टिगोचर होती है। इसके बाद जितने प्रधान दार्शनिक हुए हैं, लगभग उन सबने गति के, तथा जेनो की गति के, विरुद्ध प्रमाणों के विषय में विचार किया है। जगत्प्रसिद्ध तथा पाश्चात्य सभ्यता के जन्मदाता एरिस्टाटल ने भी इन युक्तियों के खंडन का प्रयत्न किया है।

लगभग ढाई हज़ार वर्ष हुए, जेनो ने गति के इस प्रश्न को उठाया था। इस संबंध में बहुत-से दार्शनिकों के विचार आज भी उपलब्ध हैं। प्रायः प्रत्येक प्रधान दार्शनिक ने इनके विषय में कुछ-न-कुछ लिखा है। परंतु केवल दो ही दार्शनिकों ने इस प्रश्न का यथेष्ट उत्तर दिया है। उनके नाम रसल और बर्गसन हैं। ब्रैडले ने भी उत्तर देने का प्रयत्न किया है; परंतु वह यथेष्ट नहीं कहा जा सकता। इस परस्पर-विरोधात्मक गति के विषय में केवल ये दो ही उत्तर यथेष्ट माने जाते थे। रसल की उपपत्ति गणित के अविराम-सिद्धांत पर निर्भर है। महाशय रसल का विचार है कि जेनो का कथन ठीक है, और परस्पर-विरोधात्मक गति का प्रश्न ही नहीं उठता; क्योंकि हम लोग अनंत के गणित-संबंधी सिद्धांत का व्यवहार करते हैं। बर्गसन का कथन है कि जेनो का यह सिद्धांत अशुद्ध है कि गति की स्थिति ही नहीं है। इन्होंने भी गति-संबंधी विरोधाभास को समझाया है।

इस प्रश्न का तीसरा उत्तर सापेक्ष्यवाद के आधार पर दिया जा सकता है। यह उत्तर उन दोनों विद्वानों के उत्तरों से अधिक पूर्ण है; क्योंकि सापेक्ष्यवाद का

सिद्धांत स्वीकार करने पर विरोधाभास का प्रश्न ही लुप्त हो जाता है।

इस प्रकार अलबर्ट आएन्स्टीन के सापेक्ष्यवाद के सिद्धांत की सहायता से अनायास उस कठिन प्रश्न का यथार्थ उत्तर प्राप्त हो जाता है, जिसके हल करने के लिये पचीस सौ वर्ष से दार्शनिक लोग घोर प्रयत्न करते चले आते थे; परंतु दो के अतिरिक्त उसे हल नहीं कर सके थे। इन दोनों महाशयों के उत्तर से भी सापेक्ष्यवाद के सिद्धांत का उत्तर अधिक पूर्ण तथा अधिक महत्त्व का है।

सापेक्ष्यवाद और भारतीय दर्शन-शास्त्र में क्या संबंध है, तथा देश और काल के विचार के विषय में भारतीय दर्शन और सापेक्ष्यवाद परस्पर विरोधी हैं या नहीं, इन बातों पर किसी दूसरे लेख में विचार किया जायगा।

अलबर्ट आएन्स्टीन का जीवनचरित्र

अलबर्ट आएन्स्टीन का जन्म सन् १८७४ ई० में, जर्मनी में, हुआ था। इन्होंने बाल्य-काल ही में अपनी विचित्र प्रतिभा का परिचय देना प्रारंभ कर दिया। गणित-शास्त्र में यह सर्वदा सर्वोच्च रहकर अपनी अलौकिक बुद्धि से अपने सहपाठियों तथा अध्यापकों को चकित करते रहे। अध्यापकों ने इनके लड़कपन ही में कह दिया था कि यह बालक बहुत ही होनहार होगा। जब इनके और सब सहपाठी अपनी निर्द्धारित पुस्तकों के अध्ययन ही से छुट्टी नहीं पाते थे, तब भी यह उच्च गणित के प्रश्नों को हल करने में लगे रहते थे। केवल १२ वर्ष की अवस्था में यह अपने अध्यापकों से उच्च गणित-संबंधी पुस्तकें लेकर पढ़ा करते थे।

विज्ञान की ओर भी इनका मन लड़कपन से ही आकर्षित हो गया था, और अति अल्प काल में इन्होंने विज्ञान-संबंधी सिद्धांतों पर, पक्षपात-रहित होकर, विचार करना आरंभ कर दिया था।

इनके जीवन का मूल मंत्र है—"तस्मात् प्रवर्तय सखे सततं परीक्षाम्।" यह वैज्ञानिक सिद्धांतों पर स्वतंत्र रीति से विचार करते थे, और जब तक कोई बात समझ में न आती, तब तक उसे छोड़ते नहीं थे।

१८ वर्ष की अवस्था में इन्होंने सापेक्ष्यवाद के पूर्व-रूप को जन्म दिया, और २८ वर्ष की अवस्था में सापेक्ष्यवाद के सिद्धांत को एक आविष्कारपत्र के आकार में प्रकाशित किया। इतनी छोटी अवस्था में एक क्रांतिकारी सिद्धांत को जन्म देना इन्हीं का काम था।

१६ वर्ष की अवस्था में, कई कारणों से विवश होकर, इन्हें स्विटज़रलैंड जाना पड़ा था। वहाँ जाकर स्विटज़रलैंड के वासी हो गए। पहलेपहल आपने ज़ूरिच-पोलिटेक्निक में गणितीय भौतिक विज्ञान के प्रोफ़ेसर के पद को सुशोभित किया। परंतु जब जर्मनी में क़ैसर ने एक आविष्कार-भवन खोला, तब आपको फिर जर्मनी लौट आना पड़ा। यह आविष्कारालय बर्लिन में खोला गया था, अतएव आप आकर बर्लिन में रहने लगे। यहाँ पर इनको और कुछ काम नहीं करना पड़ता था, केवल अपने सिद्धांत पर विचार किया करते थे। योरप के महाभारत का प्रारंभ होने के थोड़े ही समय पहले इनको लोगों ने एक दूसरे पद से अलंकृत किया। इस पद पर भी इन्हें वही काम करना पड़ा, जो यह पहले करते थे। सारांश यह कि सोचने के अतिरिक्त इन्हें और कुछ काम नहीं करना पड़ता था।

लड़ाई के समय में भी यह निरंतर सोचा करते थे। जब संसार के प्रायः सब लोग युद्ध-कार्य में भाग ले रहे थे, तब अलबर्ट आएन्स्टीन शांति के साथ सापेक्ष्यवाद के विषय में विचार किया करते थे। एक शताब्दी पहले भी ठीक एक ऐसी ही घटना हुई थी। किसी ने बहुत ही ठीक कहा है कि 'इतिहास की पुनरावृत्ति हुआ करती है।' एक शताब्दी पहले, इसी प्रकार, दर्शन-शास्त्र-वेत्ता कैंट भी क्रांति-युग में शांति-पूर्वक बैठकर सोचा करता था।

संसार के सब लोग योरप के महाभारत से घबरा उठे थे। कोई निश्चिंत नहीं था। पर अलबर्ट आएन्स्टीन शांति पूर्वक अपने विचारों में मग्न थे। उन्हें इस लड़ाई से कुछ लेना-देना नहीं था। परंतु दो बार इनको भी लड़ाई में सूक्ष्म रीति से भाग लेना पड़ा। दोनों बार इनकी बड़ाई हुई।

जर्मनी को निर्दोष सिद्ध करने के अभिप्राय से एक पत्र लिखा गया था। जर्मनी के प्रायः सब लोगों ने उस पत्र पर हस्ताक्षर किए थे। यह पत्र जब अलबर्ट आएन्स्टीन के सामने लाया गया, तब इन्होंने उस पर हस्ताक्षर करना अस्वीकार कर दिया। इसी प्रकार इनको प्रथम

बार लड़ाई में भाग लेना पड़ा था। द्वितीय बार भी साधारण रूप से ही इनको लड़ाई में भाग लेना पड़ा। बात यह थी कि जर्मनी में अल्प काल की संधि पर विचार हो रहा था। उस समय इन्होंने राज्यक्रांति के पक्ष में हस्ताक्षर किया। बस, इसी प्रकार इनको दो अवसरों पर लड़ाई में भाग लेना पड़ा।

एक बार प्रिंसटन-विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने इनको सापेक्ष्यवाद पर व्याख्यान देने के लिये निमन्त्रित किया। वहाँ जाकर इन्होंने, सन् १९२१ ई० में, चार व्याख्यान दिए। चौथे व्याख्यान के अंत में इन्होंने ब्रह्मांड के विषय में अपने विचार प्रकट किए हैं। प्रश्न यह है कि संसार अनंत है अथवा परिमित? सापेक्ष्यवाद के सिद्धांत के अनुसार इसके दो उत्तर दिए जा सकते हैं। देश के विचार से विश्व अनंत भी हो सकता है, और परिमित भी।

(१) यदि विश्व-देश के द्रव्य का दैशिक घनत्व मध्य शून्य हो, तो विश्व का देश अनंत होगा।

(२) यदि विश्व-देश के द्रव्य का दैशिक घनत्व मध्य शून्य से भिन्न होगा, तो देश परिमित होगा।

द्रव्य का घनत्व जितना ही कम होगा, देश उतना ही बड़ा होगा। यद्यपि सापेक्ष्यवाद के सिद्धांत के अनुसार दोनों दशाएँ संभव हैं, तो भी विश्व के परिमित होने की अधिक संभावना पाई जाती है।

अलबर्ट आइन्स्टीन यहूदी हैं, और जेरूसलम में यहूदियों का जो विश्वविद्यालय स्थापित होनेवाला है, उसे सहायता देना इन्होंने स्वीकार किया है।

सब लोग ऐसा कहते चले आए हैं कि पृथ्वी पर सेब को गिरते देखकर न्यूटन ने आकर्षण-शक्ति का आविष्कार किया था। इसी प्रकार आइन्स्टीन के विषय में भी यह कहावत है कि एक आदमी को कोठे से गिरते देखकर इन्होंने सापेक्ष्यवाद का अन्वेषण किया है। आदमी ऊँचे कोठे से गिरा; परंतु उसे चोट नहीं लगी। इसी घटना से सापेक्ष्यवाद का जन्म हुआ।

श्रीमान् अलबर्ट आइन्स्टीन बहुत ही उदार पुरुष हैं। टाइम्स के संवाद-दाताओं ने आपको एक पत्र लिखा था, जिसमें उन लोगों ने सापेक्ष्यवाद के सिद्धांत पर एक लेख लिखने की प्रार्थना की थी। इस पत्र के उत्तर में इन्होंने निम्न-लिखित उत्तर भेजा था—

"आप लोगों की आज्ञा के अनुसार मैं बहुत ही प्रसन्नता से 'टाइम्स' के लिये सापेक्ष्यवाद पर एक छोटा-सा लेख लिख रहा हूँ। मुझे इस बात का बड़ा दुःख है कि योरप के संग्राम के कारण कुछ दिनों के लिये वैज्ञानिक लोगों में भी उस बात का कुछ अभाव-सा हो गया था, जो पहले उनमें पाई जाती थी। मुझे इँगलैंड के ज्योतिषियों तथा वैज्ञानिकों से लिखा-पढ़ी करने में बहुत ही आनंद मालूम हो रहा है। साथ ही अपनी कृतज्ञता भी प्रकट करना चाहता हूँ।

यह बात इँगलैंड के विज्ञान के उच्च तथा गर्व-युक्त संप्रदाय के अनुसार ही हुई है कि इँगलैंड के वैज्ञानिक लोगों ने सापेक्ष्यवाद के सिद्धांत की जाँच के लिये परिश्रम किया तथा अपने अमूल्य समय को दिया। इँगलैंड की संस्थाओं ने उस सिद्धांत की जाँच करने के लिये पर्याप्त सामग्री की योजना की, जो लड़ाई के समय उनके वैरियों के देश में सिद्ध तथा प्रकाशित हुआ है।

यद्यपि सूर्य-संबंधी आकर्षण-शक्ति के प्रभाव का अन्वेषण प्रकाश की किरणों पर एक विषयाश्रित बात है, तथापि मुझे अपने इँगलैंड के समसामयिक वैज्ञानिक लोगों को धन्यवाद देते समय बड़ी प्रसन्नता होती है; क्योंकि उनकी सहायता के बिना मैं अपने सिद्धांत के प्रधान अनुमान को सिद्ध नहीं कर सकता था।"

इस पत्र से आइन्स्टीन महाशय की सरलता तथा देश-भक्ति का भली भाँति परिचय मिलता है।

अवध उपाध्याय

फिर

चमेली की कलियों का हास,
मनोरथ-पुष्पों का वह वास;
सुख-स्मृति का वह कोमल हार,
भ्रमर-मन-मधु-पराग का प्यार,
करके विरह-शीत का अंत;
फिर आ पहुँचा वही वसंत।

"कोई"

जैसे को तैसा

[**चित्रकार**—श्रीयुत मोहनलाल महत्तो]

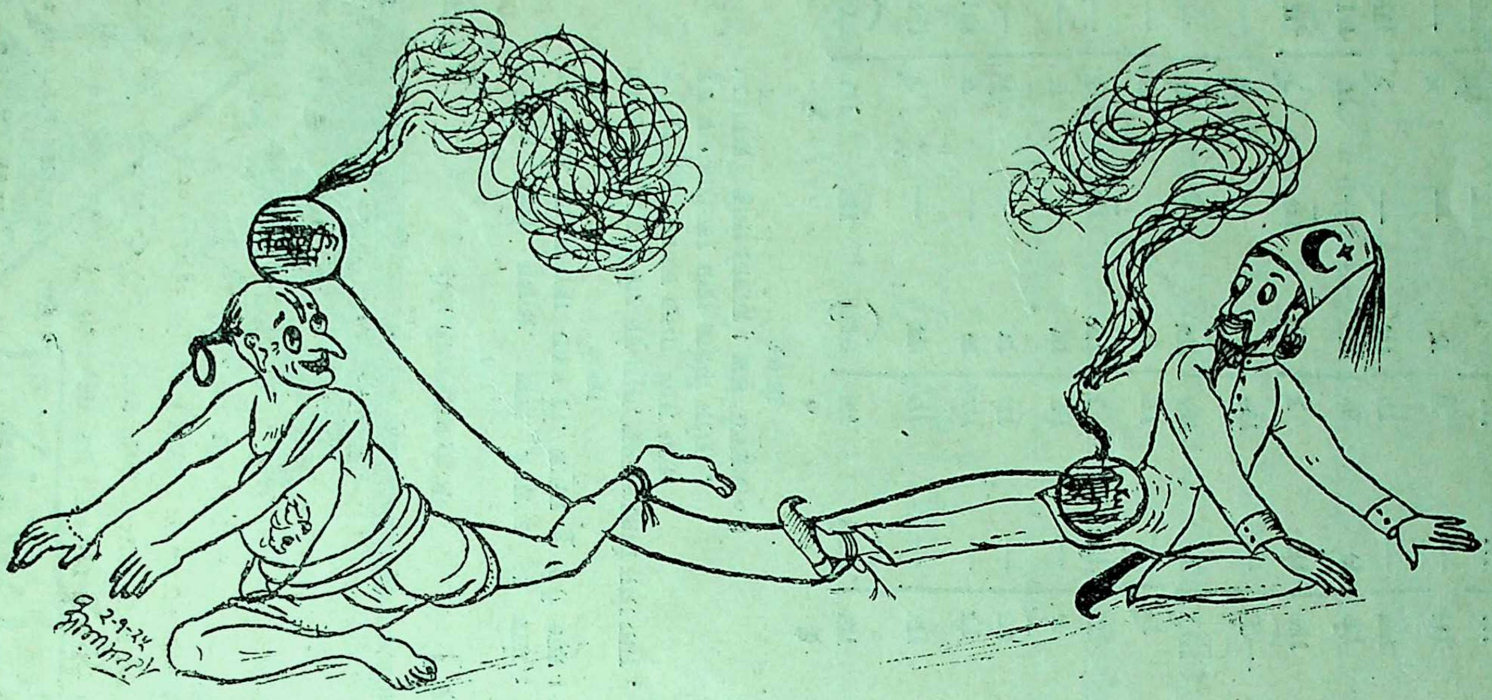

हिंदू-समाज ने शुद्धि-रूपी विस्फोटक द्रव्यों से भरा हुआ गोला मुसलमान-समाज की गोद में आगे लगाकर रख दिया है। किंतु गोला हिंदू-समाज के पैरों में ही बँधा है। इधर मियाँजी ने अपनी टाँग में बाँधकर तबलीग़-रूपी बम-गोला हिंदू-समाज के सिर पर आग लगाकर रख दिया है। परिणाम दोनों का भयंकर होगा। आजकल भारत में सवत्र यही लीला देखने में आती है।

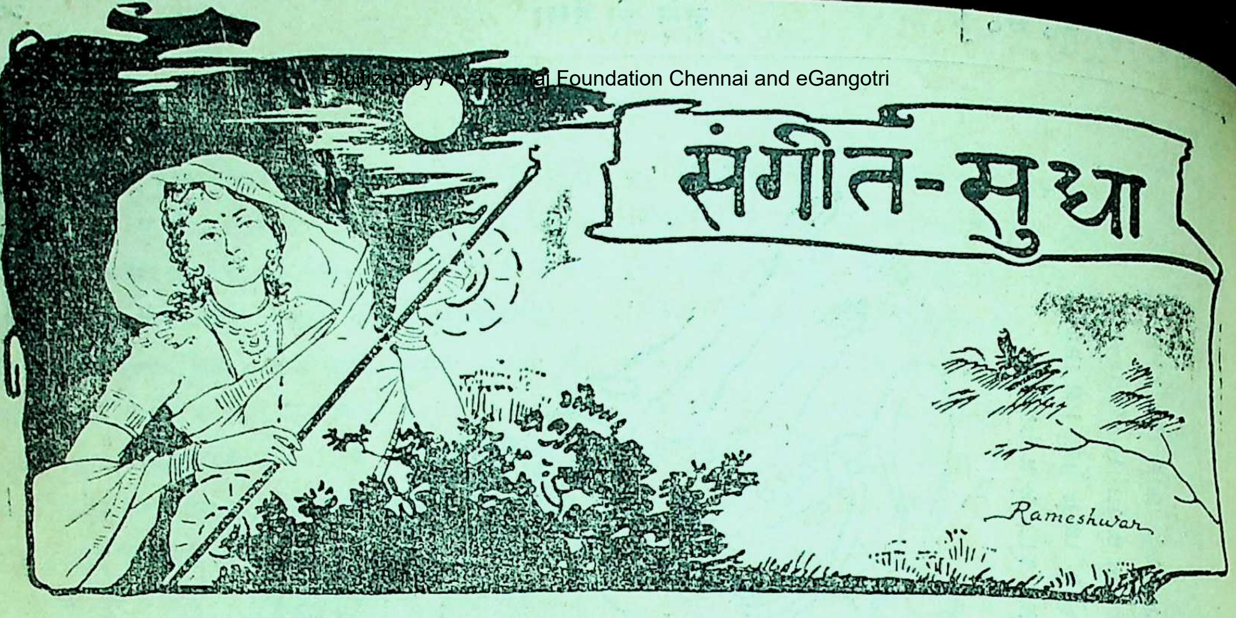

संगीत-सुधा

स्वरकार—"व्याकुल"] होली सिंदूरा-ताल चाचर [**शब्दकार—"व्याकुल"**

गीत

अँखियन मोरी गुलाल, अजी नँदलाल न डारो ;
नैन बचाऊं ता अँगया तकत हो, जानत हूँ तोरी चाल । अजी० ।

अंतरा

एक तो मैं रँग हू में बोर दई ऐसो, चमकन लागो सारो गात ,
दया री मोरा चमकन लागो गोरा गात,
दूजे बरजोरी कर मोरी बहियाँ मरोरी ,
"व्याकुल" कीनी निढाल । अजी नँदलाल० ।

स्थायी

×		२			०		३		
धा	धिन	धा	धा	धिन	ता	तिन	धा	धा	धिन
सा	सा	रे	—	मा	पा	—	धा	—	रें
अँ	खि	य	—	न	मो	—	री	—	गु
सां	—	नी	—	ध	मा	—	नी	—	ध
ला	—	ल	—	अ	जी	—	नँ	—	द
गा	—	रे	गा	सा	रे	नी	सा	—	—
ला	—	ल	—	न	डा	—	रो	—	—
गा	—	गा	—	गा	सा	रे	रेगा	मापा	प
नै	—	न	—	ब	चा	—	ऊँ—	——	तो
मा	गा	रे	गा	सा	रे	नी	सा	—	—
अँ	गि	या	—	त	क	त	हो	—	—
सा	सा	रे	—	मा	गा	—	धा	—	रें
जा	—	न	—	त	हूँ	—	तो—	री	
सां	—	नी	—		...	...	...	...	...
चा	—	ल	—						

अंतरा

				मा	मा	मा	मा	पा	नीं
				प	—	क	—	तो	मैं

सां	नी	सां	—	सां	नी	सां	मां	गां	[illegible]
रँ	ग	हू	—	मैं	चो	—	र	—	दे
सां	रें	नी	—	धा	नी	नी	नी	—	नी
इ	—	ऐ	—	सी	च	म	क	—	न
धा	पा	धा	—	मा	पा	—	—	पा	पा
ला	गो	मा	—	गे	गा	—	—	त	है
धा	सां	रें	—	मां	गां	गां	रें	—	सां
या	गी	मो	—	रा	च	म	क	—	न
नी	धा	पा	धा	मा	पा	—	—	पा	—
ला	गो	गो	—	रा	गा	—	—	त	—
सां	सां	नी	धा	पा	मा	गा	रें	सा	सा
दू	जे	बा	रा	जा	री	क	र	मो	री
रें	गा	रें	गा	सा	रें	नी	सा	—	सा
बहि	याँ	—	—	म	रो	—	री	—	—
सा	सा	रे	—	मा	पा	—	धा	—	रें
ठग	—	कु	—	ल	की	—	नी	—	नि
सां	सां	नी	—	धा	मा	—	नी	—	धा
ढा	—	ल	—	अ	नी	—	नँ	—	द०

कौन ?

हिंदी-पुस्तकों का सबसे बड़ा विक्रेता कौन ?

लखनऊ का गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय

× × ×

हिंदी की अद्वितीय मासिक पत्रिका कौन ?

लखनऊ की माधुरी

× × ×

हिंदी की सर्व-श्रेष्ठ पुस्तकमाला कौन ?

लखनऊ की गंगा-पुस्तकमाला

× × ×

उत्कृष्ट पत्रिका और पुस्तकें पढ़नी हों, तो ऊपर के नाम नोट कर लीजिए । अब आपको इधर-उधर भटकने की ज़रूरत नहीं रही ।

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, २९-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

सुमन-संचय

१. स्वर्गीय नारायणदत्त शास्त्री

संसार के प्रत्येक मनुष्य में कुछ गुण या दुर्गुण स्वाभाविक और परंपरागत होते हैं, और कुछ संगति तथा अभ्यास का परिणाम। अथवा यों कहें कि प्रत्येक प्राणी कुछ स्वाभाविक शक्तियाँ लेकर उत्पन्न होता है, जो नैसर्गिक नियमानुसार नियमित समय तक अनायास पुष्ट होती रहती और फिर मनुष्य के श्रम एवं साधना से विशेष विकसित होती हैं। जीवन की सफलता के कारणों में स्वाभाविक गुणों का भाग अधिक होता है या श्रम और संगति का, यह तो कोई तत्त्ववेत्ता ही शायद निश्चय-पूर्वक कह सके, किंतु साधारणतः यह मानने में कदाचित् किसी को भी संकोच न होगा कि प्रधानता प्रकृति की दी हुई पूँजी को ही प्राप्त है। उर्दू की कहावत "तुख़्म तासीर सोहबत असर" हमारे इस कथन की पुष्ट करती है। "तासीर" को यदि 'परंपरानुक्रम' (heredity) कहा जाय, तो "असर" को 'श्रम एवं संगति' का द्योतक मान सकते हैं। एक सुवर्ण है, तो अन्य मुलम्मा। किंतु मुलम्मा भी तो चाँदी ही पर अच्छा होता है। चिकन का चोखा काम महीन मलमल पर ही बनता है; महात्मा गांधी-जैसे महापुरुष की मुरौवत से भी गाढ़े पर उसी खूबी से नहीं खिलता। सम-

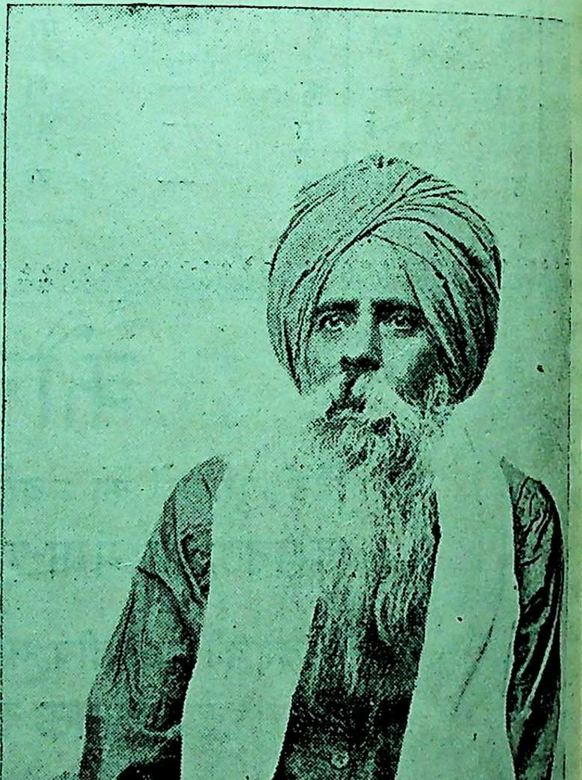

स्वर्गीय नारायणदत्त शास्त्री

मरमर की सादी ग्रीक प्रतिमा (Statuette) की सरल सुघरता मिट्टी के खिलौने की सुरंजित सुंदरता में कहाँ, चाहे वह लखनऊ ही का कला-कुशलता का आदर्श-स्वरूप क्यों न हो। सिंह का जन्म शेरनी की ही कोख

स होना संभव है, 'न प्रभातरलज्योतिरुदेति वसुधातलात्"।

प्राकृतिक अथवा परंपराप्राप्त पूँजी की प्रधानता के विचार से हमारे चरितनायक स्वर्गीय श्रीनारायणदत्तजी शास्त्री के भी विद्यावैभव और गुणसंपत्ति को भली भाँति हृदयंगम करने के लिये उनके पूर्वजों के वृत्त पर एक सरसरी नज़र डाल लेना अनिवार्यतः आवश्यक है। इन पूर्वजों का उल्लेख भला कैसे छोड़ा जा सकता है, जो पृथ्वीवत् हमारे इस विटप के हृदय और मस्तिष्करूपी पुष्पों के स्रोतों में सूक्ष्म और अगोचर नाड़ियों द्वारा रस-संचार करते थे। शास्त्रीजी के पूर्वज संयुक्तप्रांत के भीष्मपुर-नामक ग्राम के कान्यकुब्ज वंशीय पांडेय थे। आज से कई सौ वर्ष पूर्व कूर्माचल के राजा ने यज्ञ के निमित्त दसों श्रेणियों के शिरोमणि विद्वान् ब्राह्मण आमंत्रित किए थे। उनमें कान्यकुब्ज-ब्राह्मण-गौरव भीष्मपुर के श्रीवल्लभ उपाध्याय पांडेय भी एक थे। यज्ञ समाप्त होने पर आमंत्रित सभी ब्राह्मण राजा से पृथ्वी पाकर पहाड़ पर ही बस गए, और वहीं संबंध करने लगे। आज तक उनके वंशजों में उस भूमि का अधिकार चला आता है। यहाँ पर यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि दसों ब्राह्मणों में से राजगुरु होने का गौरव महानुभाव श्रीवल्लभ उपाध्याय पांडेय को ही प्राप्त हुआ था। समय पाकर इन्हीं के वंश में पंडित बलभद्र पांडेय का जन्म हुआ। आप जीविकावश नवाबी में ही लखनऊ आ गए थे। इनमें यद्यपि असाधारण विद्वत्ता तो न था, परंतु यह तज्जनित गुणों से भूषित अवश्य थे। आपके नम्रता, सच्चरित्रता और धर्मभीरुता आदि गुण शास्त्रीजी-जैसे पुरुषरत्न को उत्पन्न करने की योग्यता के सूचक थे। आपकी धर्मभीरुता का एक साधारण एवं असाधारण उदाहरण यह है—सिपाही-विद्रोह के समय रानीकटरे में काश्मीरी ब्राह्मण पं० चंद्रशेखरजी के मकान में बलभद्रजी रहते थे। पं० चंद्रशेखरजी संपन्न व्यक्ति थे। 'भगदर' में भागते समय उक्त पंडितजी अपने रत्न, जड़ाऊ गहने और नगदी बलभद्रजी के पास ही छोड़ गए। शांति स्थापित होने के अनंतर लौटने पर चंद्रशेखरजी ने देखा कि घर लुटा पड़ा है। यह समझकर कि बलभद्रजी के पास की धरोहर भी अवश्य लुट गई होगी, उन्होंने पं० बलभद्रजी से कहा—जो हुआ सो हुआ। आपकी जान बच गई, यही ग़नीमत है। पांडेयजी ने उत्तर दिया कि आपका और सब मालमता भले ही लुट गया हो, पर मुझे जो रक़म सौंप गए थे, वह सर्वथा सुरक्षित है। यह रक़म लगभग एक लाख रुपए की थी। इस समय से पं० चंद्रशेखरजी पांडेयजी का अधिक मान करने लगे और इन्हीं पंडित चंद्रशेखर के मकान में सं० १९२३ के पौष कृ० १३ गुरुवार को पंडित नारायणदत्त शास्त्री का जन्म हुआ।

पं० बलभद्रजी अपने बच्चे को अच्छा विद्वान् बनाने की उत्कट लालसा रखते थे। इसे पूर्ण करने में उन्होंने यथाशक्ति कोई त्रुटि नहीं की, और वह सफल भी हुए—"क्रिया हि वस्तूपहिता प्रसीदति"। अठारह साल की अवस्था में, ई० १८८४ में, हमारे शास्त्रीजी पंजाब-विश्वविद्यालय की प्राज्ञ-परीक्षा में पास हुए। उस साल के सफल विद्यार्थियों में आपका नंबर सातवाँ था। दूसरे वर्ष, १८८५ में, आपने विशारद-परीक्षा पास की, और इस बार चौथा नंबर पाया। साधारणतः शास्त्री-परीक्षा के लिये विद्यार्थी दो साल में तैयार होते हैं। किंतु नारायणदत्तजी ने एक ही साल में तैयारी कर ली। फिर १८८६ में पंजाब-विश्वविद्यालय की शास्त्री-परीक्षा में बैठे, और सफल भी हुए। केवल सफल ही नहीं हुए, वरन् पहला नंबर भी पाया। शास्त्रीजी पढ़ने में जितना परिश्रम करते थे, उतने ही यत्न से पूजन में भी निरत रहते थे। शास्त्री-परीक्षा में एक साल में सफलता होने में जब कोई संदेह प्रकट करता था, तब कहते थे, यदि मेरे जप में विघ्न न पड़ा, तो निस्संदेह उत्तीर्ण हूँगा। प्रातःकाल तीन बजे से सात बजे तक आप जप ज़रूर करते थे। परीक्षा के दिनों में भी इसमें कोई व्यतिक्रम नहीं हुआ। कई वर्ष पूर्व से ही आपने जप को अपने जीवन का मूल मंत्र मानकर अपना लिया था। छात्रावस्था में दो साल तक आपने विद्यापीठ, काशी में रहकर उस समय के विख्यात विद्वान् श्रीतांतिया शास्त्री से भी अध्ययन किया था। इस प्रकार संस्कृत की पूर्ण योग्यता हो जाने के पश्चात् शास्त्रीजी का ध्यान राजभाषा की ओर गया। आप घर ही पर अँगरेज़ी का अभ्यास करने लगे। परिश्रम के प्रताप से अँगरेज़ी में भी उनका पूर्ण प्रवेश हो गया। यद्यपि परीक्षा देकर उपाधि से विभूषित होने की चेष्टा नहीं की, तथापि योग्यता में उपाधिधारियों से कम न थे। संस्कृत-परीक्षाएँ स्थानीय चर्चमिशन हाइ स्कूल से आपने

पास की थीं। शास्त्री होते ही वहाँ के सहायक संस्कृत-शिक्षक के पद पर आप नियुक्त हो गए।

शास्त्री होने के प्रायः दो वर्ष बाद, बाईस वर्ष की अवस्था में, आपका विवाह कूर्मांचल के माला-ग्राम-निवासी पं० टीकाराम जोशी की कन्या से हुआ, तथा एक साल तक और भी ब्रह्मचारी रहने के अनंतर द्विरागमन हुआ। तेईस वर्ष की वयस तक आप सच्चरित्र रहे।

१८८६ से १८९३ तक लखनऊ के कई स्कूलों में संस्कृत-शिक्षण का कार्य करते हुए ई० १८९४ में शास्त्रीजी संटीनियल स्कूल में संस्कृत-शिक्षक नियुक्त हुए, और १९०५ तक इस पद पर बड़ी योग्यता से काम करते रहे। आपकी कार्य-कुशलता और विद्वत्ता से संतुष्ट होकर १९०५ में गुणग्राहक ईसाई अधिकारियों ने आपको अपने रीड क्रिश्चियन कॉलेज का संस्कृताध्यापक नियुक्त किया। इस पद को शास्त्रीजी अठारह साल तक गौरवान्वित करते रहे, और १९२३ के जून मास में, सत्तावन साल की अवस्था में, अवसर ग्रहण किया। कॉलेज-संसार से शास्त्रीजी का यह अवसर ग्रहण करना मानो संसार से प्रस्थान करने का प्रस्थान था; क्योंकि प्रायः ग्यारह महीने ही बाद गत मई मास की १९ तारीख़ को तीन ही चार दिन बीमार रहकर अपने कुटुंबियों, मित्रों तथा सहस्रों भक्तों को बिलखता छोड़ उन्होंने इस नश्वर शरीर को त्याग दिया।

विद्यार्थियों और शिक्षकों में कितना प्रेम होना चाहिए, यह हमारे शास्त्रीजी के जीवन में कोई देखे। उनके विद्यार्थी उन्हें केवल योग्य गुरु ही नहीं मानते थे, प्रत्युत अपना मित्र, अभिभावक एवं आत्मीय समझते थे। विद्यार्थी लोग बराबर उनके घर पर आते और अपना दुख-सुख सुनाकर घरू बातों तक में सलाह लिया करते थे। शास्त्रीजी के प्रति विद्यार्थियों का यह प्रेम किसी जाति, वर्ण या धार्मिक संप्रदाय तक ही परिमित नहीं था। सभी जातियों, वर्णों और धर्मों के छात्र समान भाव से उनके स्नेह में बँध जाते थे। शास्त्रीजी का हार्दिक सार्वभौम प्रेम ही इसका एक-मात्र कारण था। कॉलेज से अवसर ग्रहण करने पर तत्कालीन विद्यार्थियों, भूतपूर्व छात्रों और सहयोगी अध्यापकों की ओर से जो मानपत्र शास्त्रीजी को अर्पण किए गए थे, वे उनके प्रेममय अध्यापक-जीवन पर पूर्ण प्रकाश डालते हैं। स्थानाभाव से हम उन मानपत्रों का सारांश भी यहाँ नहीं दे सके, इसका हमें खेद है।

केवल अध्यापकगण के मानपत्र के कुछ वाक्य उद्धृत किए जाते हैं—"आपके संस्कृत-विषय का परीक्षा-परिणाम प्रतिवर्ष बड़ा ही उत्तम रहा है। आपका कोमल व्यवहार और सहज स्नेह हम लोगों के मनोमंदिर में चिरस्थायी रहेगा। × × × आशा है, आप इसे अतिशयोक्ति अथवा चाटुकारिता न समझेंगे। आपमें संतोष और शील ऐसे अनुपम गुण हैं, जो प्रत्येक प्राणी को मुग्ध कर रहे हैं। आपका सरस, शांत और सरल स्वभाव प्रत्येक सहृदय मनुष्य का मन हरनेवाला है। सुजनता और सौम्यता तो आपमें निसर्ग-सिद्ध हैं × × × संयमी और दयालु भी आप अद्वितीय हैं। × × × कोप तो आपसे कुपित होकर दूर ही भाग गया। आपका कर्तव्य-पालन तथा समय पालन भी श्लाघनीय और अनुकरणीय है। आपने गंभीरता में तो समुद्र पर भी विजय प्राप्त कर ली है। आपके सौमनस्य से पराजित वैमनस्य को कॉलेज में कहीं भी किसी भी व्यक्ति के हृदय में ठौर नहीं मिला। विद्यार्थियों के साथ जैसा कुछ आपका स्निग्ध व्यवहार रहा है, और आपमें उनका जैसा भक्ति-उत्कर्ष है, उसके व्यक्त करने में इस प्रयाण के अवसर पर वे तनिक भी संकोच न करेंगे।"

वस्तुतः हमारे इस संस्कृताध्यापक के अध्यापन का ढंग अद्भुत था। महाविद्यालयों के अध्यापक साधारणतः जिस प्रकार से छात्रों को व्याख्यान द्वारा पढ़ाते हैं, वह क्रम शास्त्रीजी का नहीं था। ये तो कुछ ऐसी अपूर्व रीति से विद्यार्थियों से पाठ्य विषय की बातें-सी करते थे कि वे उसमें तल्लीन हो जाते थे। यह तो स्पष्ट है कि ऐसी पढ़ाई विद्यार्थी को भार कदापि नहीं प्रतीत हो सकती। इसके विपरीत पाठ के साथ-साथ प्रसंग गत अनेक बाह्य विषयों पर आप ऐसे गंभीर, पांडित्य-पूर्ण, सरस तथा मार्मिक उपदेश देते थे कि पाठ अत्यंत रोचक बन जाता था, और उपयोगिता बेहद बढ़ जाती थी। आपकी अध्यापन-शैली की दृष्टि केवल परीक्षा की ओर नहीं रहती थी, बरन् विद्यार्थी को प्रतिपाद्य विषय का पूर्ण ज्ञान करा देना ही उसका अभीष्ट होता था। शास्त्रीजी से

ढ़ने का सौभाग्य प्राप्त करने ही के लिये बहुधा उन विद्यार्थियों को भी कॉलेज में पहुँचकर संस्कृत लेते देखा या, जिनकी दूसरी भाषा पहले उर्दू या फ़ारसी थी। ट-डपट से काम लेना तो शास्त्रीजी जानते ही न थे। नकी कृतकार्यता की कुंजी तो विद्यार्थियों का उत्साह-र्द्धन था। इसी उद्देश्य से त्रैमासिक आदि परीक्षाओं में ह बड़ी उदारता से नंबर देते थे। परिणाम भी सदा नकी इच्छा के अनुरूप ही हुआ करता था। शास्त्रीजी अनोखी अध्यापन-शैली का आदर्श अध्यापकों को दा स्मरण कराते रहने ही के लिये शायद कॉलेज के धिकारियों ने उनका चित्र कॉलेज-हाल में लगा दिया। यह सम्मान किसी भी ग़ैर ईसाई अध्यापक को आज क नहीं नसीब हुआ। सबसे बड़ी और आदरणीय शेषता तो आपके अध्यापन की वह थी, जिसके अभाव र आज इस देश में चारों ओर विलापध्वनि उठ रही है। स्त्रीजी शिक्षा के साथ-साथ विद्यार्थियों के हृदय आस्तिता और प्रगाढ़ धर्म-भाव से परिपूर्ण कर देते थे, जिसके लस्वरूप उनके अनेक ग्रेजुएट विद्यार्थी आज भी अपने त्य-नैमित्तिक कृत्य किए विना जल-ग्रहण करना पाप मझते हैं। प्रसंगवश एक दिन शास्त्रीजी ने कॉलेज के धानाध्यापक से कहा था कि किसी ईसाई अध्यापक को वकाश न हो, तो मैं बाइबिल पढ़ा दिया करूँगा। इसके त्तर में प्रधानाध्यापकजी मुसकिराकर बोले, तब तो सभी द्यार्थी हिंदू हो जायँगे। इसी एक वाक्य से शास्त्रीजी अध्यापन का सर्वांग चित्र खिंच जाता है।

समय का मूल्य आप खूब जानते थे। आप नित्य वेरे तीन बजे जगा करते थे। कभी-कभी तो दो ही जे उठ बैठते थे। कभी स्नानादि से निवृत्त होकर पूजन रू हो जाता था, और कभी विना स्नान किए ही, जिन नों जैसी रुचि हुई।

शास्त्रीजी में तर्क करने की अनुपम शक्ति थी। यद्यपि हित वाद-प्रतिवाद (शास्त्रार्थ) से वह दूर रहते थे, थापि वार्तालाप में प्रसंगवश सनातनधर्म की किसी धि पर तनिक भी शंका या कटाक्ष सुनते ही उनकी खर प्रतिभा का प्रकाश शंकाकुहर और जाड्यांधकार को र किए विना नहीं मानता था। बात-की-बात में बड़े-ड़े आधुनिक पदवीधारी विज्ञ तार्किकों के हृदय में या शास्त्रीजी की बात बैठ जाती थी, या तर्क में असमर्थ होकर उन्हें मौनावलंबन करना पड़ता था। आपकी साधारण बातचीत भी अत्यंत रोचक और शिक्षाप्रद हुआ करती थी। नित्य की साधारण बातों के व्याज से वह गहन विषयों की मार्मिक आलोचना बराबर करते रहते थे। लक्षणा से लदी और व्यंजना से विभूषित उनकी वाग्धारा "कांतासम्मित उपदेश" का उत्कृष्ट उदाहरण थी, जिससे मनुष्य मुग्ध हो जाता था। इसका आनंद वे ही जानते हैं, जिन्हें उनके सत्संग का सौभाग्यवश थोड़ा भी अवसर प्राप्त हुआ है। मंच-महीप धुरंधर वक्ताओं के धार्मिक व्याख्यानों का कतिपय श्रोताओं के ही मन पर स्थायी प्रभाव कदाचित् पड़ता हो; किंतु यह निस्संदेह कहा जा सकता है कि शास्त्रीजी के नम्रालाप को सैकड़ों हृदयों में धर्म-भाव और ऋषियों के धर्म का गौरव अंकुरित करने में सफलता हुई। सरस्वती के इस वरपुत्र की जिह्वा भी अत्यंत तीव्र गति से चलती थी। सप्तशती का पाठ वह सिर्फ़ आध घंटे में कर डालते थे, और मजाल क्या है कि एक मात्रा भी घट-बढ़ जाय। यह उन्हीं का काम था।

असाधारण मितव्ययी होने के कारण आप अपनी अल्प आय से भी कुछ बचा लेते थे, और इस क्षुद्र रक़म को ब्याज पर चलाने का उन्हें अभ्यास हो गया था। यह जानकर पाठकों को आश्चर्य होगा कि देन-लेन का काम करके भी अदालत का द्वार उन्होंने कभी नहीं खटखटाया। अनेक बार प्रतारकों ने उन्हें धोखा दिया, समर्थ से भी प्राप्य धन मिलने के लाले पड़ गए; परंतु अदालत जाने से शास्त्रीजी ने दृढ़ता-पूर्वक सदा इनकार किया। उनकी संतोष वृत्ति ऐसे अवसरों पर उनका सहारा बनती थी। मितव्ययी तो इतने ज़बरदस्त थे कि जीवन के प्रभात में, जब उनकी आय बिलकुल नगण्य थी, तब भी, उन्होंने ऋण कभी नहीं लिया। 'स्वदेशी' का अनुराग उनमें बहुत काल से था। केवल वस्त्र ही नहीं, विदेशी कोई भी वस्तु नहीं ख़रीदते थे। वेष-भूषा में अति साधारणता ही उन्हें प्रिय थी। प्राचीन परिपाटी की पोशाक पहने देखकर उन्हें आधुनिक महाविद्यालय का अध्यापक कोई नहीं कह सकता था। कर्तव्यपरायणता तो उनकी ग़ज़ब की थी। मृत्यु-मुख में जाते-जाते भी उसका ध्यान उन्हें बना रहा। रेलवे-अधिकारियों के अत्याचार से बचाए हुए स्थानीय आलमबाग़ के शिवमंदिरों

की प्रतिष्ठा गत मई मास में हुई थी। हमारे शास्त्रीजी इस यज्ञ के आचार्य थे। यज्ञारंभ के दो दिन बाद रात्रि के समय उन पर पक्षाघात का आक्रमण हुआ। प्रातःकाल आलमबाग जाने के नित्य के समय पर उन्हें कर्तव्य-पालन की चिंता सताने लगी। नित्य के अनुसार जाने का आग्रह करने लगे। परिजनों के निषेध करने पर कलाई में बँधी हुई वरण की मेलों की ओर उन्होंने संकेत किया; क्योंकि जिह्वा ठीक काम नहीं देती थी। ओह! कैसा हृदयस्पर्शी दृश्य था। मृत्यु-शय्या पर पड़े हुए मनुष्य की कर्तव्यनिष्ठा का ऐसा श्रेष्ठ उदाहरण सदा स्मरणीय रहेगा। यदि भारत के थोड़े-से ब्राह्मणों में भी यह भावना जाग्रत् हो जाय, तो देश के लुप्त गौरव का उद्धार हो सकता है।

इधर कुछ वर्षों से शास्त्रीजी को वेद के अध्ययन का शौक़ पैदा हुआ था। जब देखिए, वेद-पाठ हो रहा है। स्वर के कठिन विषय का उन्होंने खूब मनन किया था। हमारे इस प्रांत में उनके जैसे विद्वान् बहुत कम मिलेंगे। कहाँ तक गिनावें, उनके गुणों की गणना कठिन है। यह हमारा दुर्भाग्य है कि ऐसा अपूर्व विद्वान्, वास्तविक ब्राह्मण, लखनऊ का रत्न गत १९ मई को सदा के लिये हमसे बिछुड़ गया। शास्त्रीजी तीन पुत्र और एक कन्या छोड़ गए हैं। कोई भी पुत्र अभी समर्थ नहीं हुआ है। ईश्वर उनकी आत्मा को सद्गति दे, धृष्टता होते हुए भी, यही हमारी प्रार्थना है।

बालमुकुंद वाजपेयी

× × ×

२. भवभूति

(गंगा-पुस्तकमाला नं० ३८ की पुस्तक)

इस ग्रंथ को बँगला-भाषा में स्वर्गीय महामहोपाध्याय सतीशचंद्र विद्या-भूषण ने लिखा था। उसी का यह हिंदी अनुवाद है। जिन ग्रंथों के लिखे जाने के अनंतर कई वर्ष बीत गए हों, उनके अनुवादक यदि निरे अनुवाद से संतुष्ट न होकर बीच के समय में अवगत नवीन बातों का भी समावेश कर दिया करें, तो अनुवाद-ग्रंथों की उपयोगिता बहुत बढ़ जाया करे। जैसे— इस ग्रंथ के पृष्ठ ३१ में यह लिखा है कि "एक प्राचीन पुस्तक से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि भवभूति कुमारिल के शिष्य थे, और उनका नामांतर 'उम्बेकाचार्य' भी था।" संभव है, मेरे मित्र डॉ० सतीशचंद्र के समय तक प्रायः इतना ही पता लगा हो। पर अब तो
लोचक महोदयों का यह सिद्धांत हो रहा है कि 'भव
'उम्बेक', 'मंडन मिश्र', 'सुरेश्वराचार्य' आदि सब
महापुरुष के नाम हैं। मंडन मिश्र कुमारिल के शिष्य
और फिर श्रीशंकराचार्य के भी शिष्य हुए। तब कुमा
का समय 'सप्तम शताब्दी' और शंकराचार्य का
'नवम शताब्दी'—इस सिद्धांत का भी समन्वय
आवश्यक होता है।

यह एक विषय उदाहरणरूप से मैंने सूचित कि
है। ऐसे और भी कई विषय इस ग्रंथ में हैं।

ग्रंथ में जहाँ-जहाँ कुछ मेरे मन में संशय उत्पन्न
है, वह भी संक्षेप में सूचित करना मैं अपना क
समझता हूँ।

पृष्ठ ४ में कहा गया है कि "दार्शनिक मतों में उद
चार्य ने अद्वैतवादी को ही सर्वश्रेष्ठ बताया है;"
उदयनाचार्य नैयायिक थे, और उन्होंने अपने ग्रंथों में
तहाँ अद्वैतवाद का खंडन भी किया है। फिर वह
वाद को सर्वश्रेष्ठ कैसे कह सकते हैं?

पृष्ठ १६ में 'अपूर्वः कोऽपि' आदि वाक्य का जो
और तात्पर्य लिखा गया है सो ठीक नहीं जँचता।
तकि ने वशिष्ठ को 'व्याघ्रो वा वृको वा' कहा। इस
भांडायन खुशी से नहीं, किंतु आक्षेप करते हुए
है—"गुरुजनों के प्रति तुम्हारी ऐसी आदर बुद्धि का
अपूर्व ही कारण है।" आशय यह है कि सामान्
जिसके प्रति लोगों की आदर-बुद्धि होती है, वे उ
प्रति ऐसे शब्दों का प्रयोग नहीं करते, जैसा कि सौधा
ने किया, इसलिये सौधातकि का गुरुजनों के प्रति आ
प्रदर्शन करने का प्रकार निराला ही है।

पृष्ठ ३४ में टिप्पणी की अंतिम पंक्ति में 'विंध्येश्
प्रसाद दोवर' का नाम पाया जाता है। मुझे जहाँ
ज्ञात है, उद्धृत वाक्य के लेखक मेरे मित्र स्वर्गीय
महोपाध्याय पं० विंध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी हैं।

पृष्ठ ३९-४० में 'अंधतामिस्रा' इत्यादि वाक्य प
कुछ कटाक्ष किया गया है, वह अमूलक है। भवभूति
ग्रंथ अथवा ईशोपनिषद् के वाक्य में पाठ 'असूर्या'
है, ठीक पाठ 'असुर्या' है। ऐसी स्थिति में 'असूर्या'
रखकर और उसका अर्थ 'जहाँ सूर्य का प्रकाश नहीं प
चता' ऐसा करके पुनरुक्ति इत्यादि दोष लगाना उ

हीं जान पड़ता। 'असर्या' पद का अर्थ है 'असुरेभ्यो ताः' अर्थात् 'राक्षसों के योग्य' अर्थात् 'नरक'।

पृष्ठ ३६, ३७, ३८, ३९ में जो अँगरेज़ी के पत्र उद्धृत किए गए हैं, उनका ग्रंथ से क्या संबंध है, यह स्पष्ट नहीं ालूम पड़ता।

पृष्ठ ७४ में 'देव उपस्थित है' इस वाक्य का चमत्कार ष्ट रूप से नहीं दिखलाया गया। 'रामचंद्र विरह की त सोच रहे थे, इसलिये उन्होंने इस वाक्य को सुनकर मझा कि विरह उपस्थित है'—ऐसा कहना पर्याप्त नहीं। असल बात यों है कि 'रामचंद्र विरह की बात सोच रहे थे।' इतना ही नहीं, उन्होंने 'विरहः' पद का च्चारण भी किया था। 'किं स्या न प्रेयो यदि पुनरह्यो न विरहः' इसके अनंतर ही 'उपस्थितः' शब्द का च्चारण सुनकर अपने कहे हुए 'विरहः' पद का प्रतीहारी कहे हुए 'उपस्थितः' पद से अन्वय करके चौंक पड़े।

ग्रंथ के अंत में भवभूति के प्रयुक्त कुछ ऐसे पद चुने ए हैं, जो अमरकोष में नहीं पाए जाते, और इससे ह अनुमान किया गया है कि भवभूति नवीन शब्दों को ढ़कर वैदिक तथा अन्य प्राचीन भाषा-संबंधी शब्दों के योग करते थे। पर इस संबंध में हम लोगों को यह रण रखना चाहिए कि अमरकोष में संस्कृत के सभी ब्द नहीं संगृहीत हैं। केवल भवभूति ही नहीं, कालिस, भारवि, माघ, श्रीहर्ष, बाण, सुबंधु इत्यादि कवियों ग्रंथों में भी अनेक ऐसे शब्द पाए जाते हैं, जो अमरष में नहीं हैं।

ंथ के अंत में भाषा-विज्ञान के सिद्धांतों पर बहुत छ लिखे जाने पर भी मेरे-जैसे भाषा-विज्ञान-ज्ञान-शून्य मन में यह बात नहीं आती कि 'गुडगुडायमान' (गुणणायमान पाठ नहीं है) 'झणज्झणित', 'मडमडायिता' त्यादि अनुकरण-शब्द हैं, और इनके प्रयोग से संस्कृत-भाषा 'बढ़िया' होने के बदले जीवित होना ही सिद्ध होता है।

ऊपर जो कुछ मैंने लिखा है, वह दोषारोपण की बुद्धि नहीं। मेरा उद्देश्य इतना ही है कि आधुनिक ग्रंथों जब कभी अनुवाद हुआ करे, तब उनके प्रतिपाद्य षयों पर कुछ और भी विचार कर लेना उचित होगा। रा अनुवाद प्राचीन ग्रंथों ही का ठीक है। आधुनिक थों का अनुवाद समालोचना-सम्मिलित होना चाहिए।

गंगानाथ झा

× × ×

३. परोपकार

ख़ुद खाते फल नहीं वृक्ष दीनों को देते,
पय पीते न पयोद, भवन-भर को भर देते;
दूध सुधा-सा मधुर धेनु धनियों को देती,
खाते हम हैं अन्न, किंतु खाती नहिं खेती;
सुख, संपत्ति, विलासिता जो कुछ है, उपकार है;
खुला स्वर्ग का द्वार है, जीवन का यह सार है।

सदाशिव दीक्षित "विचित्र"

× × ×

४. भारत में पारसियों का प्रवेश

बनारस में, हिंदू-सभा के अवसर पर, एक पारसी विद्वान् ने अपने को आर्य बतलाया था। पारसी-जाति के प्रतिनिधि की हैसियत से हिंदू-महासभा में उनको जैसा व्याख्यान देना चाहिए था, वैसा ही उन्होंने दिया। तभी से मेरे मन में यह प्रबल इच्छा हुई कि पता लगाऊँ, ये पारसी कौन हैं, इनका निवासस्थान कहाँ है, ये किस प्रकार और क्यों भारतवर्ष में आए। बहुत ढूँढ़ने पर मुझे जो कुछ पता लगा है, वह पाठकों की सेवा में उपस्थित करता हूँ।

सन् ६३३ ई० में फ़ारस का राजा यज़्देज़ार्ड था। यज़्देज़ार्ड अपने समय का बहादुर और बड़ा ही नेक बादशाह था। उसी समय अरब में हज़रत मुहम्मद साहब ने इसलाम-धर्म का प्रचार किया, जो मध्य-एशिया में बड़ी तेज़ी के साथ फैला। उस समय इसलाम के प्रचार के लिये प्रचारकगण सिर-तोड़ परिश्रम कर रहे थे। कुछ चुनिंदा चालाक मनुष्यों का गरोह बनाकर वे सर्वत्र घूमते और अन्य धर्मावलंबियों से मुसलमान बनने के लिये कहते थे। जो उनकी बातों के ऊपर विश्वास कर मुसलमान हो जाते थे, वे सब झंझटों से छुटकारा पाकर आराम से जीवन व्यतीत करते थे। किंतु दुर्भाग्यवश जिन्होंने इसलाम के आगे सिर नहीं झुकाया, वे नाना प्रकार से सताए गए। फ़ारस के राजा यज़्देज़ार्ड भी ऐसे ही लोगों में थे। उनके पास १४ मुसलमानों का एक डेपुटेशन गया। डेपुटेशन के मुखिया से उन्होंने पूछा कि चोग़ा, खड़ाऊँ और लाठी (जिनको वे धारण किए हुए थे) का क्या अर्थ है?

मुसलमानों ने उत्तर दिया कि बुर्द, नअल और साथ (- अर्थात् लेना, जलाना और रुलाना)। यह सुनकर राजा बड़ा क्रोधित हुआ। उसने फिर उनसे पूछा कि

तुम लोग यहाँ क्यों आए हो, और पारसियों के विरुद्ध तुमने क्यों तलवार उठाई है? डेपुटेशन के सरदार ने कहा कि अल्लाह का हुक्म। यह सुनकर राजा और भी क्रोधित हुआ, और उसने उन मुसलमानों से कहा कि ऐ साँप और चूहों के खानेवाले, ऐ ऊँट के बालों का कंबल ओढ़नेवालो ख़बरदार, ऐसी बातें फिर न मुँह से निकालना! इस पर मुसलमानों ने कहा कि ठीक है साँप, चूहे और लड़कियों को मारकर हम लोग पहले खाते थे, मगर अब अल्लाह ने एक पैग़ंबर को भेजा है, जिन्होंने हम लोगों को अंधकार से प्रकाश में लाकर हमारे अज्ञान को दूर कर दिया है। तुमको भी हम समझाने आए हैं कि या तो हमारी बातों को स्वीकार करो, अथवा रणभूमि में आकर मुक़ाबला करो। राजा यह सुनकर अत्यंत कुपित हुआ, और बोला कि तुम लोग दूत की हैसियत से यहाँ आए हो, नहीं तो तुमको अभी यमपुर भेज देता। जाओ, अपने बादशाह से कह देना कि कदेसिया के गढ़े में गाड़ने के लिये शीघ्र ही यज़्देजार्ड आवेगा।

सन् ६३६ ई० में कदेसया में पारसियों और मुसलमानों में गहरी लड़ाई हुई। परंतु पारसी हार गए, और कदेसिया से भागकर मदायन (जहाँ उनकी राजधानी थी) गए। वहाँ भी मुसलमानों से हारकर हालवान चले गए। वहाँ भी मुसलमानों ने उन्हें जा घेरा। एक गहरी लड़ाई के बाद वे वहाँ से भागकर नहाँवंद चले गए। परंतु अभाग्यवश उनको वहाँ भी नीचा देखना पड़ा। उसी दिन से अरबों का क़ब्ज़ा ईरान पर हो गया। मुसलमानों ने निरीह पारसियों को खूब लूटा, उनके ऊपर यथेष्ट अत्याचार किया, उनसे ज़बरन् इसलाम-धर्म स्वीकार करवाया। जिसने इसलाम के आगे सिर नहीं झुकाया, वह तलवार के घाट उतारा गया। अधिकांश पारसी प्राणों के भय से मुसलमान बन गए। कुछ ने अंत समय तक मुसलमानों का मुक़ाबला किया, और कुछ लड़ाई-भिड़ाई से परहेज़ कर जहाज़ पर चढ़ हिंदुस्तान की ओर भाग निकले। रास्ते में अनेक कठिनाइयाँ झेलते हुए वे पहले-पहल संजान-नामक स्थान पर पहुँचे। उस समय वहाँ का राजा जादी राना था। पारसियों ने अपने पुरोहित दस्तूर दाराब को राना के पास भेजा। राना ने पुरोहितजी को सम्मान-पूर्वक बिठाया, और आने का कारण पूछा। उन्होंने रानाजी से प्रत्येक बीती घटना का वर्णन हृदय-विदारक शब्दों में किया, और रहने के लिये माँगा। रानाजी ने उनसे जब उनके धर्म के विषय पूछा, तो पुरोहितजी ने संक्षिप्त रूप से अपने धर्म वर्णन करके कहा कि हमारा धर्म आपसे बहुत मिल जुलता है; हम लोग भी आर्य संतान हैं। तब रान शुभ मुहूर्त में पारसियों को संजान में रहने का दिया, और वहाँ पर उनका एक मंदिर भी बनवा दिय उसमें चंदन की लकड़ियाँ एकत्रित करके हवन-कुंड सदृश बनाया। फिर चार मनुष्य चारों ओर बैठकर (मंत्र) जपने लगे, जिससे उस हवनकुंड में प्रज्वलित हो गई। वही अग्नि अब तक विद्यमान जिसमें पारसी भाई दिन में पाँच बार आहुति देते हैं।

उक्त पुरोहितजी के कथनानुसार पारसी-धर्म के नियम ये हैं—

१—हम लोग अहुर्मज़दा (ईश्वर), सूर्य और तत्त्वों की पूजा करनेवाले हैं।

२—जिस समय हम लोग पूजा करते हैं, उस स नहीं बोलते। न स्नान, प्रार्थना, हवन और भोजन समय ही बोलते हैं।

३—हम लोग अपने धर्म के कामों में चंदन, सुगंध का व्यवहार करते हैं।

४—हम लोग गऊ को पूजते हैं।

५—हम लोग सूद्रा (अँगरखा), कुश्टी (सूत्र) टोपी (दोहरा) पहनते हैं।

६—हम लोग शादी के वक़्त बाजा बजाकर गीत गाते हैं।

७—हम लोग अपनी स्त्री को सुगंध और आभूषणों सजाते हैं।

८—हम लोग अपने दान में उदारता दिखलाते कुआँ-तालाब खुदवाते हैं।

९—हम लोगों की सहानुभूति स्त्री और पुरुष, दोनों से है।

१०—गो-मूत्र से हम लोगों की सभी वस्तुएँ पवि होती हैं।

११—हम लोग पूजा करने और खाने के समय कु पहनते हैं।

१२—हम लोग आग में सुगंध डालते हैं।

१३—हम लोग दिन में पाँच बार पूजा करते हैं।

१४—हम लोगों की स्त्री पतिव्रत-धर्म का पालन करती है और पुरुष पत्नीव्रत-धर्म का।

१५—हम लोग प्रतिवर्ष पितृश्राद्ध करते हैं।

१६—स्त्री के गर्भवती होने पर हम लोग ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन करते हैं।

अशर्फ़ी शुक्ल

× × ×

५. श्रीराखालदास वंद्योपाध्याय

श्रीयुत राखालदास वंद्योपाध्याय एम्० ए० बंगाल के सुप्रसिद्ध लेखक, प्राचीन इतिहास के अनन्य प्रेमी और भारतीय पुरातत्त्व-विभाग के सुपरिंटेंडेंट हैं। आप ही सुप्रसिद्ध बँगला के उपन्यास 'करुणा', 'शशांक' और 'धर्मपाल' के लेखक हैं। आपकी पुस्तकों का हिंदी-भाषा में भी अनुवाद हो चुका है। आजकल आप भारत-सरकार के पूर्वोक्त विभाग में सुपरिंटेंडेंट के स्थान पर काम कर रहे हैं।

अभी हाल में आपने मांटगांमरी ज़िले के महेंजोदारो-नामक स्थान में एक ऐसी खुदाई की है, जिसके खुद जाने के उपरांत अब यह बात निर्विवाद और सप्र-

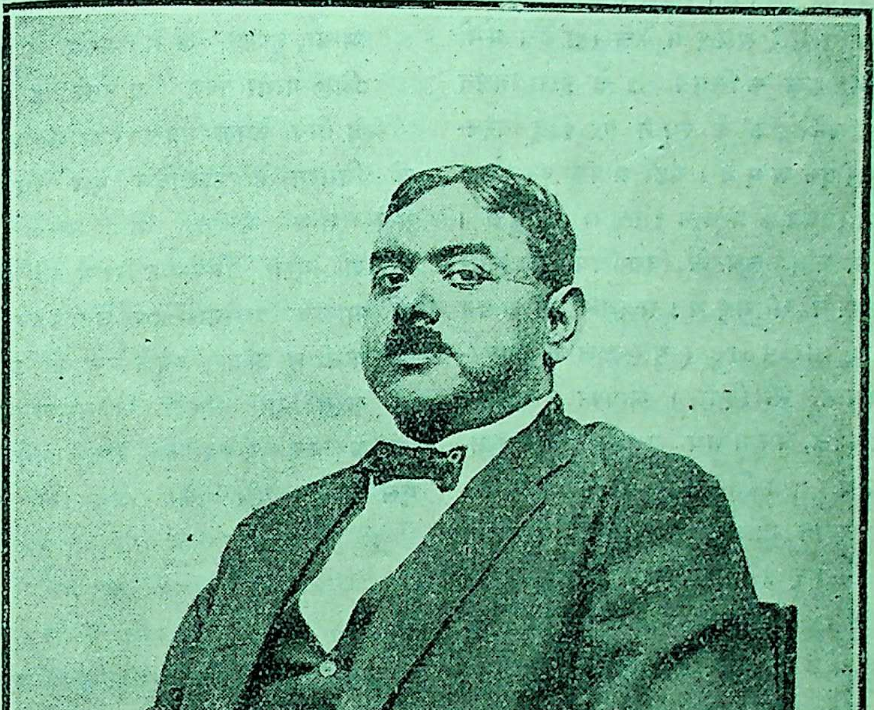

श्रीराखालदास वंद्योपाध्याय एम्० ए०

माण सिद्ध हो गई है कि ईसा मसीह के जन्म से चार हज़ार वर्ष पूर्व भारतवर्ष में ऐसी सभ्यता का विकास हो चुका था, जो मेसोपोटामिया की सुमेरियन-सभ्यता के समान ही उच्च कोटि की थी, तथा उसी अवस्था तक उन्नत हो चुकी थी। सर जॉन मारशल का तो विचार है कि इन दोनों सभ्यताओं के बीच परस्पर बड़ा घनिष्ठ संबंध भी है।

श्रीयुत वंद्योपाध्यायजी के हाथ में उक्त ऐतिहासिक खोज में मिली हुई हँडा है। आप बड़े ही सरल स्वभाव, शांतिप्रिय तथा दयालु पुरुष हैं। महेंजोदारो की खोज के कारण आपकी ख्याति सारे संसार में फैल रहा है। अभी हाल में ही आप महाराज कासिमबाज़ार के द्वारा नियत 'मनींद्रनंदी इतिहास-शिक्षक' के स्थान पर हिंदू-विश्वविद्यालय में लेक्चर देने आए थे। यहाँ आपका व्याख्यान सात दिन तक 'भारतवर्ष के प्राचीन इतिहास' पर हुआ। एक दिन आप विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को साथ लेकर सारनाथ देखने भी गए थे। सारनाथ में आपने Buddhist Architecture (बुद्ध-काल की शिल्प-कला) पर व्याख्यान भी दिया। आपका व्याख्यान सुनने के लिये लखनऊ, प्रयाग तथा अलीगढ़-विश्वविद्यालयों से भी विद्यार्थी तथा शिक्षकगण काशी आए थे। एक दिन रात को आपने महेंजोदारो में खोदे गए स्थानों के छाया-चित्र भी दिखाए थे। इस दिन, तथा इसके पहले भी, काशी के सुप्रसिद्ध विद्वान् बाबू भगवानदास एम्० ए० तथा पटना हाईकोर्ट के बैरिस्टर श्रीयुत काशीप्रसाद जायसवाल एम्० ए० भी आए थे।

हरिहरनाथ

× × ×

६. वीर वैष्णव

औरों का दुख देख जिसे हो पीड़ा मन में,
देख पराई चोट घाव जो समझे तन में;
दंभ और अभिमान न हो जिसके जीवन में,
जो रत रहता सदा दीन के हित-चिंतन में;
प्यारी जाति, समाज का भूषण है गौरव वही;
ईश-प्रेम में लीन है धर्म-भीरु वैष्णव वही।
कभी भूल से करे न निंदा जो पर-जन की,
जिसमें भरी प्रतीति, प्रीति, श्रद्धा गुरुजन की;
आवे चाहे घड़ी सौख्य की या दुर्दिन की,
अविचल रहती किंतु सदा गति जिसके मन की,
ऐसे ही नर-रत्न से हुआ लोक उपकार है;
जननी उसकी धन्य है, जन्म उसी का सार है।
जितने जग के जीव, सभी को जो सम माने,
समझे विश्व कुटुंब सकल जन बांधव जाने;
निज माता-सम पूज्य जिसे औरों की नारी,
जो रहता है दूर पाप-पथ से उपकारी;
सत्य सर्वदा बोलना जिसको प्यारा आन हो;
फिर ऐसे नर-देव का कहो न क्योंकर मान हो?
प्रबल विकारों, पर जो पाता नित्य विजय है,
माया, तृष्णा, लोभ आदि से जो निर्भय है;
मिट्टी पत्थर तुल्य जानता है जो पर-धन,
है प्रिय केवल जिसे राम की भक्ति सजीवन,
जो निमग्न है रात दिन ऐसे विमल विचार में;
सारे तीर्थ पुनीत हैं उसके हृदयागार में।
जो ऐसा निष्कपट सत्य की मूर्ति, भक्त है,
मलिन वासना-रहित वही नर शक्ति-युक्त है;
कभी न करता जिसके मन को क्रोध मलिन है,
करता जो सर्वदा शांति-रस-सुधा-पान है।
जिसके चारु चरित्र का सब जग में सत्कार हो,
ऐसे वैष्णव वीर की जग में जय-जयकार हो।

मिलाप

× × ×

७. हमारा कर्तव्य

हममें बहुत-से लोग ऐसे हैं, जो केवल स्वराज्य की ही धुन के सिवा और कुछ नहीं समझते। ये लोग प्रायः खादी के वस्त्र पहन अपनी बहादुरी विदेशियों को गाली देने ही में समझते और 'नौकरशाही' के ऊपर अनेक प्रकार के आक्षेप करके अपने को प्रथम श्रेणी का राजनीतिज्ञ साबित करते हैं। मेरा कहने का यह मतलब नहीं कि ये लोग देश-भक्त नहीं हैं; पर यह मैं अवश्य कहूँगा कि इनकी भक्ति से देश को बहुत लाभ न होगा। ऐसे लोग बहुधा 'कूप-मंडूक' ही होते हैं। या तो इन लोगों के पास काफ़ी धन होता है, और सदा चापलूसों से घिरे रहने के कारण इन्हें अपने को 'त्रिकालदर्शी' समझने का सौभाग्य प्राप्त हो जाता है; और या ये इतने दीन होते हैं कि किसी 'त्रिकालदर्शी' की वाह-वाह ही में समय बिताकर शाम के खाने का सहारा कर लेते हैं। ऐसे मनुष्यों की संख्या अधिक है या कम, यह तो कहना बहुत कठिन है,

परंतु ऐसे मनुष्यों को सुधारना हरएक सच्चे देश-भक्त का कर्तव्य है। एक मकान को बाहर से साफ़-सुथरा बना देना ही मकान-मालिक का कर्तव्य नहीं है; उसे यह भी देखना पड़ेगा कि भीतर भी सब प्रकार सफ़ाई रक्खी जाय। जूता मेज़ के ऊपर और टोपी फ़र्श पर रक्खी हुई किसी को भी अच्छी न मालूम पड़ेगी। जिसका जो स्थान है, उसको उसी स्थान में रखना एक भले गृह-रक्षक का कर्तव्य है। इसी प्रकार यदि हम देखें कि हमारे समाज में, हमारे राजनीतिक क्षेत्र में ऐसी कोई बुराई घुसी हुई है, तो हमारा यही कर्तव्य है कि हम उसे सुधारें। दूसरों के अवगुणों को दिखाना बहुत सहल होता है; पर जो अपने अवगुणों को मिटाने की कोशिश करता है, वही 'साधु' है, उसी की सदा प्रशंसा होती है। अपने मकान में सफ़ाई रखना आप ही का कर्तव्य है। हमारे देश-रूपी मकान की उन्नति करना हमारे ऊपर ही निर्भर है। मकान चूँकि बहुत बड़ा है, अकेला आदमी भरसक कोशिश करने पर भी थक जायगा, इसलिये हाथ बँटानेवालों की ज़रूरत पड़ती है। इसके लिये क्या चाहिए?—एकता। यह कहने से काम न चलेगा कि दूसरा कम काम करता है, हरएक को यही समझना चाहिए कि मैं भरसक पूरा काम करूँ। आप चाहे हिंदू हैं, चाहे मुसलमान, आपका मकान एक ही है। आप भाई हैं, भाइयों का-सा बर्ताव करें। पुराने द्वेषों को भूलें। आज एक हिंदू उतना ही अनाथ है, जितना कि एक मुसलमान। सिर्फ़ हिंदू-मुसलमान ही नहीं, हरएक मज़हब और उसकी हरएक शाखा समान है। बराबर उनमें मेल रहना चाहिए। अछूत कोई नहीं है। इस भ्रम में जब तक हम पड़े रहेंगे, तब तक हम लायक़ नहीं कहलाए जा सकते। हिंदू, मुसलमान, ब्राह्मण, अब्राह्मण आदि का अलग-अलग स्वराज्य न होगा। ऐसे स्वराज्य को महात्मा गाँधी क्या, स्वयं भगवान् भी आ जायँ, तो वह भी न दे सकेंगे। अब देखना पड़ेगा कि आपके मकान में ग़ैरों ने घुसने का इरादा किया है। ये ग़ैर आपके ही घर से माल ले जाकर उसे भिन्न-भिन्न प्रकार की शक्लों में बदलकर आप ही के हाथ खुलेआम बाज़ार में, दसगुने दामों में, बेच जाते हैं। कभी-कभी तो आपके घर का कूड़ा भी मोल लेकर फिर ऐसे ही दसगुने दामों पर आपके हाथ बेचते हैं। आपकी भूल ही से सब कुछ हो रहा है। आधुनिक काल में यह सौदागरी है, और इसी में एक देश की सभ्यता निर्भर है। इसके लिये क्या करना होगा, यह छोटे बच्चे व बूढ़ों के समझने की बात नहीं है। इसको कमज़ोर व बीमार लोग समझकर लाभ नहीं उठा सकते। इसको समझना भारतीय नवयुवकों का कर्तव्य है। वे समाज के सैनिक हैं। अच्छे सिपाही का कर्तव्य देश की लाज रखना है। पर सिर्फ़ सिपाही ही कुछ न कर सकेगा, उसके लिये धनवानों से धन चाहिए। ऊपर कहे गए 'त्रिकालदर्शियों' को अपना धन देना होगा, उनके चापलूसों को सिपाही बनाना पड़ेगा। इन सिपाहियों का हथियार क्या होगा?—'कला-कौशल की उन्नति'। यही हमारा कर्तव्य है, इसी को हमें सिद्ध करना चाहिए।

"एक सेवक"

× × ×

८. ध्रुव-आग्रह

प्रणय-निधि, अहो, तुम्हारे द्वार—
फिरा मैं आकर कितनी बार।
भटक-भटककर जग-मरु में जब मन मेरा थक जाता है,
और कहीं भी तृष्णा-तोषक शीतल अंबु न पाता है।
समझकर पूरित-सलिलामोद—
ढूँढ़ता है वह तव मृदु गोद।
किंतु कहूँ क्या, तुम मृग-जल की भाँति दूर हट जाते हो,
बढ़ी विकलता लखकर मेरी मंद-मंद मुसकाते हो।
मुझे दे विरह-ताप—दुखद्वंद—
कहो पाते हो क्या आनंद?
प्रेमांजलि का भिक्षुक, प्रिय, तव दिव्य द्वार पर आया है;
तव छवि-सर-मज्जन-बिन व्याकुल युगल मीन-दृग लाया है।
याचना है बस, केवल एक;
उसी की लगी निरंतर टेक।
ध्रुव-आग्रह कर धुनी रमा ली; आशा है, प्रिय आओगे।
नहीं हटूँगा, यहीं मरूँगा, कब तक तरस न खाओगे।
एक-टक देख रहा हूँ बाट,
रहेंगे कब तक बंद कपाट!

रामनारायण मिश्र

× × ×

९. दुःख-वादी

कुत्सित होने पर भी वह निपट मूर्ख न था, और इसीलिये अपने संबंध में यह बात जानते उसे देर न लगी।

उसने सोचा कि मुझमें बुद्धि अवश्य कम है, किंतु तनिक चेष्टा करने से 'चिंताशील' ऋषियों की श्रेणी में आ सकूँगा, और तब इस आध्यात्मिकता से परिपूर्ण देश में अधिक कष्ट नहीं होगा।

वह खूब मोटी-मोटी पोथियों को लेकर एक अँधेरे घर के कोने में बैठकर पढ़ने लगा। उसकी स्मरण-शक्ति तीक्ष्ण थी। वह समझता था कि संसार में बुद्धि को प्रमाणित करने के लिये बड़ी-बड़ी पोथियों को पढ़ना ही अत्यावश्यक है।

उसने अनेक पोथियाँ पढ़ीं। पढ़ते-पढ़ते उसकी आँखें कमज़ोर हो गईं। एक दिन अपनी आँखों को चश्मे से सुसज्जित कर वह उस प्रगाढ़ अंधकारमय कोने से बाहर निकल आया—प्रकृति का सौंदर्य लूटने के लिये नहीं, वरन् लोगों को अपनी दुःख-गाथा सुनाने के लिये। उसकी आँखें गढ़ों में चली गई थीं, उसका शरीर जीर्ण-शीर्ण हो गया था। जब वह कभी व्याख्यान देने के लिये खड़ा होता था, तब यह प्रतीत होता था, जैसे कोई सूखा पेड़ खड़ा कर दिया गया है। उसको देखकर करुणा उत्पन्न हो आती थी।

एक बार व्याख्यान देते समय सबको लक्ष्य कर उसने कहा—"देखो, यह संसार मनुष्यों को विपद् में डालने के लिये प्रकृति द्वारा निर्मित एक जाल है इसलिये—"

बीच ही में एक मोटा युवक, जिसकी शादी हाल ही में हुई थी, बोल उठा—"और, महाशय, प्रेम ?"

एकाएक यह प्रश्न सुनकर वह सन्नाटे में आ गया। कुछ देर के बाद वह ज़ोर से कह उठा—"यह संसार केवल कवियों के लिये ही नहीं बना है। प्रेम कोई वस्तु नहीं। देखना, संसाररूपी पिंजड़े में कहीं फँस न जाना। प्रेम ? छी ! छी !"

बुद्धि होने पर भी उसमें प्रतिभा न थी। वह सोचने लगा कि यदि राजा के यहाँ दर्शन-शास्त्र के अध्यापन का कार्य मिल जाय, तो क्या ही अच्छा हो। उसे रुपयों की आवश्यकता थी।

वह राजा के पास गया। जाकर कहा—"महाराज, लोक-शिक्षा के लिये मुझे नियुक्त करें।" राजा ने पूछा—"तुम किस विषय की शिक्षा दोगे ?" उसने कहा—"मैं बतलाऊँगा कि यह जीवन अर्थहीन और प्रकृति मनुष्य की शत्रु है। उसे वह विपरीत कार्य करने की शिक्षा देती है। अतएव प्रकृति के आदेश अमान्य करना ही मनुष्य के महत् जीवन का एक-मात्र लक्ष्य है। प्रकृति के दान से अपने को वंचित रखना ही मुक्ति पाने के लिये यथेष्ट है।" राजा ने मंत्री से पूछा—"क्या कहते हो मंत्री ?" मंत्री थोड़ी देर तक विज्ञ जनों की भाँति सिर नीचा कर सोचने लगा—"ठीक ही तो कहता है।" उसके बाद राजा से पूछा—"और, सरकार की क्या राय है ?"

राजा ने कहा—"मैं जो कहूँगा, वह तो तुम्हें मानना ही पड़ेगा।" युवक ने सिर झुकाकर अति ही विनम्र भाव से कहा—"मूढ जहीहि धनागमतृष्णाम्।" मंत्री ने कहा—"अच्छा, लोक-शिक्षा का भार तुम्हारे ऊपर दिया गया। प्रतिमास तुम्हें एक सौ स्वर्ण-मुद्रा पारिश्रमिक मिला करेगा। याद रखना, समय पर तुमसे कैफ़ियत भी तलब की जायगी।" कुछ देर सोचने के बाद मंत्री ने फिर कहा—"मैं जानता हूँ, वर्तमान युग में राज्य के बीच ऐक्य संस्थापन करने की आवश्यकता है।" अध्यापक ने मन-ही-मन कहा—"हाँ, यह सब बातें ठीक कह रहा है।"

उसकी नियुक्ति हो गई, और प्रत्येक सप्ताह वह उच्च स्वर से इस प्रकार व्याख्यान देने लगा—

"प्रिय शिष्यगण, देखो मनुष्य-समाज बड़ा दुर्बल है। मनुष्य प्रकृति का साथ छोड़ना नहीं चाहता, और प्रकृति ठीक इसके विपरीत कार्य करती है। इसलिये वह मनुष्य की शत्रु है। स्त्री-जाति प्रकृति की अनुगामिनी है। अतएव सावधान !"

एक ही प्रकार की बातें नित्य कहते-कहते उसे ऐसी बातें सोचने का अभ्यास-सा हो गया। उत्साह के आवेश से उसकी आँखें अंगारे के समान चश्मे के भीतर से झलकने लगती थीं। यही प्रतीत होता था, मानो उसके मन का दृढ़ विश्वास उसकी आँखों से अग्नि की भाँति प्रकाशित हो रहा है।

कभी-कभी वह अपनी कृतियों पर खुश होकर अपने छात्रों से हँसी-मज़ाक़ भी कर लिया करता था। उसके दिन नियमित रूप से बीत रहे थे।

बड़े-बड़े दुःखवादियों का कट्टर अनुयायी होने के कारण उसे अजीर्ण हो गया। इसलिये खाना-पीना भी उसे कम कर देना पड़ा।

इस प्रकार कई वर्षों तक वह किसी प्रकार अपना काम चला सका। इसी बीच में उसके चार बच्चे पैदा हो चुके

थे, और वे बड़े भी हो गए थे ; लेकिन इधर उसका तनिक भी ध्यान नहीं था । आख़िर सबको छोड़कर एक दिन वह मर गया ।

उसके लड़कों ने रो-पीटकर उसकी अंत्येष्टि-क्रिया समाप्त की । वे रीति के अनुसार शोक-चिह्न भी धारण करना नहीं भूलते थे, और सदा उन शोक-चिह्नों के साथ घर से बाहर निकलते थे । उसके छात्र उसके चिरस्मरणीय नाम को याद कर गाना गाते थे । उन लोगों में उत्तेजना यथेष्ट मात्रा में थी । उसकी स्मृति-सभा में उसके अध्यापक बंधुओं ने उसके दार्शनिक अन्वेषणों को लेकर ख़ूब लंबा-चौड़ा व्याख्यान दिया ।

सभा के बाद उसके एक छात्र ने कहा—"ओह ! बेचारा बुड्ढा मर गया !" उसके गले का स्वर विषाद के कारण कुछ भारी हो गया था ।

एक और मनुष्य ने कहा—"वह दुःख-वादी था, तथा दुःख-वाद ही उसके जीवन का एक-मात्र लक्ष्य था ।"

एक तीसरे छात्र ने आकाश की ओर देखकर दीर्घ निश्वास छोड़कर कहा—"वह अत्यंत निर्द्धन था । उसे दोनों वक़्त खाने को भी नहीं मिलता था ।" पास बैठे हुए एक छात्र से उसने धीरे से कहा—"श्राद्ध में तो खाना नसीब होगा न ?"

श्राद्ध में सभी को निमंत्रण दिया गया । अपने परिवार के लिये वह बहुत धन-संचय कर गया था, इसलिये श्राद्ध में ख़ूब तैयारी की गई थी । उस दरिद्र छात्र को भी निमंत्रण दिया गया था । उसने ख़ूब पेट भरकर खाया । ऐसा खाना उसे जीवन में कभी मिला नहीं था । घर जाते समय रास्ते में अपने गुरु की विपुल संपत्ति के विषय में सोचते-सोचते वह हँस पड़ा । बोला—"दुःख-वाद को भी अच्छे कार्य में लगाया जा सकता है, यह केवल अभी देख पड़ा ।" *

श्रीउमेशप्रसादसिंह बख़्शी
श्रीगुरुदेवप्रसादसिंह बख़्शी

---

* Gorki की एक गल्प का छायानुवाद ।

आयुर्वेदीय, शास्त्रोक्त, अनुभवसिद्ध, आश्चर्यकारक निर्भय औषधियाँ बनानेवाला और
आयुर्वेदीय प्रदर्शनों में पदक-प्राप्त किया हुआ लोकप्रिय कारख़ाना

ऊंझा आयुर्वेदिक फ़ार्मेसी (स्थापित—१८९४)
रीची रोड, अहमदाबाद (गुजरात)
जाड़े के ऋतु में सेवन करने योग्य औषधियाँ

मकरध्वज याकुती
और
अमीरी जीवन

ख़ास ताक़त और वीर्य बढ़ाने के लिये अत्युत्तम है । इसमें कस्तूरी आदि क़ीमती औषधियाँ डालकर तैयार की जाती है । वीर्य के समस्त रोगों में आश्चर्यकारक फ़ायदा दिखलाने में इससे बढ़िया दूसरी औषध मिलना मुश्किल है ।

मकरध्वज याकुती गोली ४०, १०) अमीरी जीवन शीशी १, ४)

च्यवन-प्राश

इसके सेवन से वृद्ध च्यवन मुनि ने पुनः युवावस्था प्राप्त की थी । यह चरकोक्त च्यवन-प्राश सेवन करके आप दीर्घायु, बलवान् और बुद्धिमान् होइए । वृद्ध, बाल, युवा व स्त्री-पुरुष सबके लिये हितकर है । क्षय, रक्तपित्त, खाँसी, हृदयरोग, स्वरभंग, पांडु, अम्लपित्त आदि में उपयोगी है । रत्तल १, २॥-)

आयुर्वेद-शास्त्र का अपूर्व ग्रंथ
भारत-भैषज्य-रत्नावली
प्रथम भाग

इसमें आयुर्वेदीय सब औषधियों का बृहत् संग्रह है । यह एक ही ग्रंथ सैकड़ों ग्रंथों का काम देगा । सबके पास अवश्य रहना चाहिए । हिंदी-टीका से ग्रंथ बहुत ही उपयोगी हो गया है । मूल्य ४॥)

सब तरह की आयुर्वेदीय औषधियाँ तैयार मिलती हैं । सूचीपत्र मँगाकर देखिए । औषधियों का मूल्य बहुत कमती है । वैद्यों के साथ रिआयत की जाती है । एजंटों की आवश्यकता है ।

पता—१. ऊंझा आयुर्वेदिक फ़ार्मेसी, ऊंझा (गुजरात) ।
२. ऊंझा आयुर्वेदिक फ़ार्मेसी, रीची रोड, अहमदाबाद ।

विज्ञान-वाटिका

१. भय की औषधि

दक्षिणी अमेरिका से गार्डन मैककीथ-नामक एक अनुसंधानकारी एक ऐसी वस्तु अपने साथ लाए हैं, जो मनुष्यों को भय से मुक्त कर देती है। यह वस्तु एक प्रयोगशाला में बड़ी हिफ़ाज़त के साथ रक्खी गई है। वह वस्तु और कुछ नहीं, केवल कोई जंगली जड़ी-बूटी है। उसका वज़न पाँच सेर से ज़्यादा न होगा; किंतु उसे खोज निकालने तथा लाने में १,५०,००० रु० ख़र्च हुए हैं! कई मनुष्य उसके अनुसंधान में मर मिटे, कितनों ही को बहुत कष्ट उठाने पड़े, कुछ जंगली हिंस्र पशुओं तथा विषैले साँपों के शिकार बने, कुछ के शरीर में जंगली मनुष्यों के विष-बुझे तीरों ने प्रवेश किया, उन्हें भयानक नदियों तथा जंगलों को पार करना पड़ा, और अंत में मिली एक ऐसी वस्तु, जो यदि शस्त्रोपचार के पहले किसी मनुष्य को और जननकाल के पहले किसी माता को खिला दी जाय, तो उनके हृदय से डर भाग जाय।

इस जड़ का नाम कैपी (Caapi) है। वैज्ञानिकों को विश्वास है कि वह भय को दूर भगाती है; किंतु जब तक इस जड़ के रस की प्रामाणिक परीक्षा न हो जाय, तब तक इस बात पर कोई विश्वास नहीं करेगा, और सभी कहेंगे कि इतने मनुष्यों के प्राणों तथा इतने रुपयों की बा हुई है। किंतु जब तक ऐसा नहीं हो लेता, तब तक पाठकों का मनोरंजन दूसरे ही प्रकार करना है। मैं समय यह लिखूँगा कि किस प्रकार यह 'कैपी' खोज नि गई, और सभ्य-संसार के सम्मुख लाई गई।

चिकित्सकों ने बहुत पहले 'कैपी' के विषय में था; किंतु उस पर कोई विश्वास नहीं करता था। के बैरन हमबोल्ड ने ब्रेजिल के जंगलियों के से एक ऐसी बूटी का नाम सुना, जो लड़ाई में भय-रहित बना देती थी। रिचर्ड स्प्रस ने आँखों से कुछ लाल फूलों को देखा, जिनका उनके प्रदर्शक ने 'साहस-पुष्प' के नाम से परिचय वीस नाम के एक अन्य अनुसंधानकारी ने एक इंडियन को शराब-जैसा एक पदार्थ पीते देखा। पूछने पर पड़ा कि उससे कायर-से-कायर व्यक्ति भी साहस-पू जाते हैं। इस प्रकार की बहुत-सी कहानियों ने चिकि शास्त्र के अभिज्ञों के कान भर दिए; किंतु असल को बहुत थोड़े ही लोगों ने देखा था, इसलिये बड़े-बड़े चिकित्सक एक ऐसी दवा की खोज में लगे मनुष्य को भय-रहित बना दे।

यदि मनुष्य के मस्तिष्क को किसी प्रकार वैसा ही बना दिया जाय, जिस प्रकार मनुष्य के शरीर के किसी दवा के प्रयोग द्वारा बनाए जाते हैं, और यदि

म ईथर या क्लोरोफ़ार्म के विना ही—जो हृदय के कार्य लिये भयानक सिद्ध हुए हैं—कर सकें, तो वहुत-से नुष्य, जो केवल डर के मारे प्राण गँवाते हैं, वच जायँ। यह दवा कोलंविया, पेरू, इकुएडर और ब्रेजिल में ई जाती है। तीन लाख वर्ष पूर्व यहाँ ऐंडियन समुद्र हता था। कई भौतिक कारणों से पानी हट जाने पर हाँ पहाड़, तराई आदि वन गए। काल-क्रम से हाँ पौदे तथा जीव भी पैदा होने लगे। कई प्रकार के दे जन्मे, जिनमें कैपी भी एक था। वहाँ सभ्य संसार मनुष्यों का आना-जाना वहुत कम होता है। हाँ, गली मनुष्य वहुत-से रहते हैं। इनको देखना बड़ा कठिन म है; क्योंकि ये सदा छिपकर तीर चलाते हैं। इनके र के सिरे भयानक विष में बुझे रहते हैं। रक्त के साथ नका संसर्ग होते ही मारक हो जाते हैं।

वीमारी आदि से बचने के सभी साधनों को साथ ले, त्रुओं से रक्षा का पूरा प्रबंध कर, शस्त्रों से सुसज्जित कुछ मनुष्यों ने उस प्रदेश की यात्रा की। पानी को टाणु-शून्य करने के सभी साधन उनके पास थे। उनके सों में ज्वर, शीतला, वसंत, सर्प-विष आदि की दवाएँ । टिन में बंद की हुई पचासों मन खाने की सामग्रियाँ होंने साथ ले ली थीं। इन साधनों के रहते हुए भी हुत-से मनुष्य मर गए। डॉ० एच्० एच्० रस्वी वीमार कर घर लौटने के लिये बाध्य हुए। बचे केवल मैकक्रीग, मिल ब्राउन, और जी० एस्० मैक्कार्टी।

वे कोलंविया के कुछ मज़दूरों के सिर पर अपना सबाब लादकर 'राओ निग्रो' नदी के किनारे-किनारे चले। तु कुछ दिनों के बाद मज़दूरों ने धोखा दिया। वे खाने बहुत-सा सामान तथा बारूद का कुछ हिस्सा लेकर त हो गए। मैकक्रीग, ब्राउन और मैक्कार्टी ने उनका छा किया। जंगलों में लगातार तीन दिन खोज-पड़ताल ने पर उनका पता लगा। किंतु उन्होंने अपने कई न्य साथियों के साथ आकर लड़ना शुरू कर दिया। र से भी गोली चलने लगी। कुछ मारे गए, कुछ यल हुए, और कुछ भाग गए। असभ्यों को हार तथा नों सभ्यों की विजय हुई। वे फिर अज्ञात जंगल में आगे । एक दिन जब वे नाव पर चढ़कर एक नदी के किनारे आगे बढ़ रहे थे कि सनसनाता हुआ एक तीर मैकक्रीग सिर के पास से निकल गया, और नदी के पानी में जा गिरा। यदि वह मैकक्रीग के सिर में लगता, तो मार ही डालता; क्योंकि उसकी नोक में विष लगा हुआ था।

नाव खड़ी की गई। तीनों आदमी जंगल में घुस गए, और उस मनुष्य को खोज निकाला। वह क्रोध से काँप रहा था; किंतु मैकक्रीग ने उसे ठंडा किया। उनकी शांत मूर्ति देखकर वह मनुष्य इतना आश्चर्यान्वित हुआ कि उनके पैरों पर गिर पड़ा। उन्होंने पाकेट से विजली की बत्ती निकालकर जलाई। उसे देख वह मनुष्य तथा उसके साथी मैकक्रीग को देवता समझने और उनकी पूजा करने लगे। तब से मैकक्रीग तथा उनके दोनों साथियों के चारों ओर असभ्यों का झुंड जमा रहता था। वह देवता के समान माने जाने लगे। असभ्यों का सरदार मैकक्रीग को अपनी बस्ती में ले गया। वहाँ उसने उनकी ख़ातिर कर उन्हें भुनी हुई चिड़ियाँ, मछलियों के चोंहटे आदि उपहार दिए। उसने कई औरतें भी उन्हें दीं; किंतु मैकक्रीग ने इनमें से कुछ भी नहीं लिया। उन्हें केवल एक वस्तु चाहिए थी, और वह थी—'कैपी'।

एक दिन मैकक्रीग ने सरदार से झूठी लड़ाई दिखाने को कहा। उनकी भाषा तो वह समझ सकता था नहीं, किंतु इशारा समझकर राज़ी हो गया। मैकक्रीग ने उन्हें एक प्रकार के अंगूर-वृक्ष की जड़ काटते हुए देखा। उसे उन्होंने टुकड़े-टुकड़े कर एक हाँडी में डाल दिया, और उसी वृक्ष के पत्तों से उन टुकड़ों को ढक दिया। इसके बाद हाँडी को पानी से भरकर आग पर चढ़ा दिया। प्रायः एक घंटे तक पानी फदकता रहा, और शराब के रंग का होता गया। उधर योद्धा अपने अस्त्र-शस्त्रों को ले लड़ने के लिये तैयार हुए। स्त्रियों तथा बच्चों को युद्ध-स्थल से भगा दिया गया। सब योद्धा हाँडी के चारों ओर दो क़तार में बैठ गए। प्रत्येक मनुष्य को एक-एक प्याला 'कैपी' दी गई। एक के बाद दूसरा मनुष्य साहस से पूर्ण हो गया, और अपने विपक्षी या शत्रु को मारने का, लड़ाई करने का, दृश्य दिखलाने लगा। प्रायः दस मिनट तक वे आपस में लड़ते रहे, और अंत में थककर ज़मीन पर गिर गए, और ख़र्राटे लेने लगे। जगने के बाद उन्होंने अपने अद्भुत स्वप्नों का वर्णन किया, जिन्हें निद्राकाल में देखा था। मैकक्रीग को उनके स्वप्नों से क्या मतलब? उन्हें 'कैपी' मिल गई, और वह उसे लेकर घर लौट पड़े।

× × ×

२. बिजली की आँख

अब यह कहना ठीक नहीं कि केवल मनुष्य और कुछ प्राणी ही देखने की शक्ति रखते हैं। वैज्ञानिकों ने एक ऐसी आँख बनाई है, जो जड़ होने पर भी देख सकती है। यदि कोई विद्युत् का यंत्र वही काम करे, जो हमारी आँखें करती हैं, तो कहा जा सकता है कि वह 'देखना' है। इस यंत्र का नाम 'बिजली की आँख' है।

चोरों का एक अलग विज्ञान होता है। वे अपने विज्ञान की उन्नति में उसी प्रकार लगे हुए हैं, जिस प्रकार अन्य वैज्ञानिक उनको पकड़ने के लिये नई-नई प्रथाओं के आविष्कार में। देखना है, दोनों में कौन बाज़ी मारता है। चोरी करने के समय चोर के सहायक निस्तब्धता और प्रकाश हैं। किंतु वे ऐसा प्रकाश नहीं चाहते, जिसमें उन्हीं के पकड़ जाने का डर हो। इसलिये वे अपने साथ बिजली की बत्तियाँ लेते जाते हैं, और कभी-कभी उन्हें जलाकर अपना रास्ता साफ़ किया करते हैं।

डॉ० अलबर्ट न्यूबरगर कहते हैं कि 'बिजली की आँख' एक ऐसा यंत्र है, जिसमें सेल्युनियम-नामक धातु का एक टुकड़ा लगा रहता है। इस धातु में ऐसा गुण है कि जब उस पर प्रकाश पड़ेगा, तभी विद्युत् उससे होकर जा सकेगी। प्रकाश चाहे जितनी ही थोड़ी देर के लिये क्यों न हो, वह उसी समय चालक का काम करेगा। अँधेरे में वह अचालक (non-conductor) का काम करता है। इसी सिद्धांत पर 'बिजली की आँख' बनी है। उसे दूसरे घर की विद्युत्-घंटी के साथ लगाकर अँधेरे घर में रख छोड़ते हैं। घर में जहाँ थोड़ा-सा भी प्रकाश हुआ कि घंटी ने आपको ख़बर दी। यंत्र को इस प्रकार छिपाकर रक्खा जा सकता है कि चोरों की दृष्टि उस पर न पड़े। दिन में उसे एक काले ढकने से ढक देते हैं। रात में भी जब तक आप प्रकाश जलाकर उस घर में बैठे रहें, यंत्र को ढककर रक्खें, किंतु सोने जाने के समय आवरण हटा दीजिए। उसका संबंध आपके सिर के पास रक्खी हुई घंटी से है। उस घर में चोर ने जहाँ दियासलाई या बिजली की बत्ती जलाई कि आपको पता लगा। हाँ, यदि दूसरा कोई व्यक्ति उस घर में प्रकाश ले जायगा, या रास्ते में जलते हुए प्रकाश की किरण उस पर पड़ गई, तो भी घंटी बज उठेगी। इस यंत्र को घड़ी, बक्स, टेबल आदि के साथ इस प्रकार लगाकर रख सकते हैं, जिसमें किसी अनजान मनुष्य उसकी ख़बर भी न लगे।

× × ×

३. रेडियो द्वारा शिक्षा

गत वर्ष की माघ-मास की 'माधुरी' में एक नो 'रेडियो द्वारा शिक्षा' पर निकला था। उस संबंध कई पत्र मेरे पास आए, जिनमें लोगों ने यह जानने इच्छा प्रकट की है कि रेडियो द्वारा शिक्षा कहाँ दी जाती है, कितने दिनों में शिक्षा समाप्त होती और उसमें कित ख़र्च पड़ता है। 'माधुरी'-संपादक के भी पत्र इस विषय पुनः कुछ लिखने के लिये आए। लोगों का कौतूह निवारण करने के लिये इस विषय पर पुनः प्रकाश डा जाता है।

पहले मैं यह कह देना चाहता हूँ कि वैज्ञानि उज्ज्वल-दर्शी (optimist) होते हैं। किसी काम थोड़ी सफलता पाने पर भी वे उसके अंत तक पहुँ जाने का सुख-स्वप्न देखने लगते हैं। उनका स्वप्न वास् विकता में परिणत भी होता है। इसलिये छोटी-सी सफलता के आधार पर बहुत-सी बातें कह जाना अथ उसके भावी रूप का दिग्दर्शन करा देना वे पसंद क हैं। मेरा पहला 'नोट' इस दोष से बचा हुआ नहीं है।

रेडियो द्वारा अचेतन मस्तिष्क कैसे शिक्षा ग्रह करता है, इसे समझने के लिये चेतन और अचे मस्तिष्क का भेद समझना अत्यावश्यक है। किंतु विषय इतना गहन तथा विस्तृत है कि इसे सर्वसा रण नहीं समझ सकते। इसलिये मैं थोड़े ही में इ विषय को समाप्त करूँगा। चेतन और अचेतन मस्ति के बीच की भेद-रेखा खींचने में वैज्ञानिक अभी तक सफ नहीं हुए। किंतु उन्होंने परीक्षाओं द्वारा ठीक कि है कि अचेतन का स्थान चेतन के ऊपर है। चेतन केवल उ समय कार्यशील रहता है, जिस समय हम लोग रहते हैं, किंतु अचेतन सदा जगा रहता है। इसलि वह सर्वदा कार्य-क्षम है। जिस समय हम लोग सो रहते हैं, उस समय चेतन मस्तिष्क क्रिया-हीन होकर आरा करता रहता है। किंतु अचेतन मस्तिष्क उस समय भी ज रहता और सब कुछ कर सकता है। उसका ज्ञान उ समय भी लुप्त नहीं होता, जिस समय हम लोग गंभी निद्रा की गोद में पड़े रहते हैं। अचेतन मस्तिष्क

चेतन को आज्ञा देता और वह तदनुसार काम करता है। किंतु इससे यह न समझ लेना चाहिए कि अचेतन मस्तिष्क सर्वज्ञाता होता है। उसे भी शिक्षा की आवश्यकता होती है, और शिक्षा ही द्वारा वह विकसित हो सकता है। वह भी ठोकरें खाकर ज्ञानोपार्जन करता है; और जो ज्ञान एक बार प्राप्त कर लेता है, उसे कभी भूलता नहीं। यदि कोई यह प्रश्न करे कि हम लोग किसी बात या घटना को क्यों भूल जाते हैं, तो इसका उत्तर यह है कि किसी बात या घटना को भूलने में जितना दोष हमारे चेतन मस्तिष्क का है, उतना अचेतन का नहीं है। चेतन मस्तिष्क जब कई प्रकार के घटना-चक्रों में पड़कर कोई बात भूल जाता है; तब अचेतन मस्तिष्क उसे याद करने में चेतन मस्तिष्क की सहायता ही करता है।

अब शिक्षा की ओर आइए। मैं ऊपर लिख आया हूँ कि अचेतन मस्तिष्क सर्वज्ञ नहीं होता। मान लीजिए, मैं फ्रेंच नहीं जानता, और उसकी शिक्षा ग्रहण करना चाहता हूँ। इसके लिये यदि मैं रेडियो का यंत्र कान में बाँधकर सो रहूँ, और उसके द्वारा मुझे कोई फ्रेंच की शिक्षा दे, तो मेरा अचेतन मस्तिष्क उसे कुछ भी नहीं समझ सकेगा। विषय उसके बोधगम्य न होने के कारण वह उसे समझने का आग्रह भी नहीं दिखलावेगा। जाग्रत् अवस्था में जैसे हम लोग उन विषयों की ओर ध्यान नहीं देते, जिनमें हमारी कुछ दिलचस्पी नहीं होती, उसी प्रकार निद्रितावस्था में अचेतन मस्तिष्क भी उन विषयों को ग्राह्य नहीं करता, जिन्हें वह समझता नहीं। इसलिये यदि हमें फ्रेंच सीखने की इच्छा हो, तो पहले हमें उस भाषा का आरंभिक ज्ञान साधारण प्रथा द्वारा प्राप्त करना पड़ेगा। इसके बाद हम उस भाषा को रेडियो द्वारा सीख सकते हैं। जो मनुष्य किसी भाषा का एक अक्षर भी नहीं पहचानता, वह उस भाषा की उच्च शिक्षा कैसे पा सकता है। जो मनुष्य गणित के चार आरंभिक नियमों (जोड़, बाक़ी, गुणा और भाग) से परिचित नहीं हैं, उनके लिये संभव नहीं कि वे रेडियो की सहायता से गणित के बड़े-बड़े सिद्धांतों को समझ सकें। यहीं बात अन्य विषयों के बारे में भी कही जा सकती है।

अभी रेडियो द्वारा सब विषयों की शिक्षा नहीं दी जाती। अमेरिका के जहाज़ी विभाग में केवल बेतार के तार की शिक्षा रेडियो द्वारा दी जाती है। छः महीने तक विद्यार्थी को इसकी शिक्षा ग्रहण करनी पड़ती है, और प्रतिदिन उसे केवल दो घंटे इसमें लगाने पड़ते हैं। बेतार के तार पर काम करनेवालों को प्रतिमिनट बीस शब्द भेजना और ग्रहण करना पड़ता है। यह काम इतना कठिन है कि वर्षों बिता देने पर भी जल्दी कोई मनुष्य प्रतिमिनट बीस शब्द नहीं भेज सकता। इस काम में सहायता करने के लिये रेडियो से काम लिया जाता। विद्यार्थी को सबसे पहले कोड सीखना पड़ता है। जब तक वह प्रतिमिनट दस शब्द बेतार द्वारा ग्रहण नहीं कर सकता, तब तक उस निद्राकालीन शिक्षा नहीं दी जाती। ऐसा हो जाने पर वह कान में रेडियो-यंत्र बाँधकर सो रहता है, और आठ घंटे तक उसके कान में कोड के शब्द—प्रतिमिनट पंद्रह शब्द के हिसाब से—भेजे जाते हैं। सोते रहने के कारण उसे इसका कुछ भी ज्ञान नहीं रहता; किंतु दूसरे दिन उठकर जब वह काम करने जाता है; तो देखता है कि वह प्रतिमिनट पंद्रह शब्द के हिसाब से आदान-प्रदान कर सकता है।

इसी परीक्षा के सहारे वैज्ञानिक यह कहने लगे हैं कि वह दिन अब दूर नहीं, जब अन्यान्य विषयों की शिक्षा भी रेडियो द्वारा दी जायगी। ईश्वर वह दिन शीघ्र निकट लावे!

× × ×

४. सूर्य का प्रभाव

हिंदुओं का विश्वास है कि ग्रहों, नक्षत्रों आदि का प्रभाव मनुष्य के जीवन पर पड़ता है। इसीलिये उनके जन्म के समय जन्मपत्री बनाई जाती है, जिसमें मनुष्य के जन्म-समय में ग्रह-नक्षत्र आदि के स्थान लिखे रहते हैं। उन्हीं की गति तथा स्थान-परिवर्तन पर विचार कर ज्योतिषी बतला सकते हैं कि मनुष्य के जीवन में कैसे हेर-फेर होनेवाले हैं। पाश्चात्य देश के वैज्ञानिक इस प्रकार के ज्योतिष—फलित-ज्योतिष—पर विश्वास नहीं करते थे; किंतु फ्रेंच वैज्ञानिक डैनिएल बर्थलॉट ने प्रमाणित किया है कि सूर्य का प्रभाव केवल हमारे शरीर ही पर नहीं पड़ता, प्रत्युत बीमारी, युद्ध, विप्लव, अकाल आदि पर भी पड़ता है। उनका कहना है कि सौर-जगत् का प्रत्येक आंदोलन एक तरंग द्वारा—जो बेतार के तरंग से बहुत कुछ मिलती है—पृथ्वी पर पहुँचता है। उसकी गति वही है जो प्रकाश की, अर्थात् १,८६,००० मील प्रति सेकेंड।

सिद्धांत रूप में बात इस प्रकार है—आप जानते हैं कि रेडियम सदा किरण-विकिरण करता रहता है ; किंतु आकार में बहुत दिनों तक ज्यों-का-त्यों बना रहता है। उसकी किरण मनुष्य के रग-रेशे को प्रभावान्वित कर उनकी कई प्रकार की बीमारियों को अच्छा करती है। सूर्य एक बड़ी शक्ति का केंद्र है। उससे प्रतिक्षण प्रकाश, गरमी और शक्ति निकलकर चारों ओर फैलती रहती है ; किंतु उसके आकार में किसी प्रकार की कमी नहीं होती। चूँकि सूर्य इतनी शक्ति खोते हुए भी आकार में छोटा नहीं होता, इससे जान पड़ता है कि उसकी क्रिया रेडियम की क्रिया-जैसी होती है, और जैसे रेडियम की किरण हमारे शरीर पर अपना प्रभाव डालती है, वैसे ही सूर्य की किरण का भी प्रभाव हमारे शरीर पर पड़ता है।

सूर्य में जब किसी प्रकार का आंदोलन होता है, तब ये किरणें अधिक मात्रा में निकलकर पृथ्वी पर आती और मनुष्य के स्वास्थ्य, प्रकृति आदि पर अपना प्रभाव डालती हैं। इससे हम लोग समझ सकते हैं कि सूर्य का आंदोलन हमें बीमार, स्वस्थ, चिड़चिड़ा आदि बनाता है। लड़ाई, विप्लव, अकाल आदि के विषय में कहा जाता है कि जाति-की-जाति बड़े आंदोलन की तरंगों द्वारा इस प्रकार प्रभावान्वित हो जाती है कि परस्पर गला काटने के लिये उतारू हो जाती है।

Appe Moreau और Edouard Bailland ने भी यह कहकर बर्थेलो के सिद्धांत की पुष्टि की है कि सूर्य में जिस साल अधिक आंदोलन होता है, उसी साल पृथ्वी पर खून-खराबी भी अधिक होती है। नीस के डॉ० सैडन और लेमलाओ के डॉ० करे ने अपने स्वतंत्र 'नोटों' को मिलाकर देखा है कि किसी समय एक प्रकृति के लोग किसी एक ही बीमारी से पीड़ित थे और उसका कारण सूर्य में आंदोलन का होना ही है।

इसी प्रकार अन्य ग्रहों तथा नक्षत्रों का भी हमारे शरीर पर प्रभाव पड़ता हो, तो क्या आश्चर्य है?

× × ×

५. आग से रक्षा

अमेरिका और इँगलैंड में तीस-चालीसमंज़िले मकान होते हैं। यदि ऊपर के किसी मंज़िल में आग लगती है, तो मनुष्यों की रक्षा करना मुश्किल हो जाता है। आग तो पीछे भी बुझाई जाती है, किंतु सर्वप्रथम मनुष्यों की रक्षा करनी पड़ती है। इसके लिये एक नई प्रथा उद्भावित हुई है। रेशम की एक नली का एक हिस्सा ऊपर किसी खिड़की में मज़बूती के साथ बाँध दिया जाता है, और नीचे का हिस्सा कई आदमी पकड़ते हैं। जो आदमी रक्षा चाहता है, वह पहले अपना सिर इस नली में घुसेड़ता है, और फिसलता हुआ नीचे आ पहुँचता है, जहाँ मनुष्य उसे नली से निकाल लेते हैं। नली को ढीला कर या खींचकर फिसलते हुए मनुष्य को आहिस्ते से या जल्दी नीचे उतारा जाता है। रेशम की चिकनी नली होने के कारण फिसलने के समय उससे मनुष्य को किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचती।

× × ×

६. चिल्लानेवाली मछली

डॉ० सी० डब्ल्यू ग्रीन ने Monterey की खाड़ी में एक प्रकार की चमकीली मछलियों का आविष्कार किया है। छोटी-छोटी मछलियों का पीछा करते समय वे एक प्रकार का शब्द करती हैं। उनका कहना है कि उनके शब्द करने का कारण उनके डैनों की विचित्र बनावट है। ये मछलियाँ ३५० चमकीली रोशनियों (Phosphorescent Lights) से युक्त होती हैं।

× × ×

७. जीव-देह पर विष का प्रभाव

विष का प्रभाव सब प्राणियों के शरीर पर एक-सा नहीं पड़ता। जितना विष खाने से मनुष्यों की मृत्यु हो सकती है उतना किसी इतर प्राणी को देने से वह हज़म कर जाता है। जितनी अफ़ीम (मर्फ़िया) खाकर एक हज़ार मनुष्य मर सकते हैं, उतनी एक बकरी खाकर हज़म कर सकती है। बिल्ली के शरीर में भी अफ़ीम का कोई प्रभाव नहीं होता। अधिक अफ़ीम खिलाने से बिल्ली थोड़ी उत्तेजित हो जाती है। एक कबूतर को आठ सौ ग्रेन अफ़ीम खिलाई गई थी। इससे उसकी मृत्यु तो दूर, उसके शरीर को कुछ नुक़सान नहीं पहुँचा। ख़रगोश धतूरे की पत्तियों तथा छाल को इतना अधिक खाता है कि उसका मांस विषाक्त हो जाता है।

केवल आर्सेनिक और निकोटिन विष का प्रभाव सब जीवों पर एक-सा होता है। इन दोनों विषों को खाकर बचाने की शक्ति किसी प्राणी में नहीं है।

रमेशप्रसाद

महिला मनोरंजन

१. राजकुमारी संघमित्रा

लगभग दो हज़ार वर्ष पहले भारतवर्ष में सम्राट् अशोक का राज्य था। अशोक बड़े ही वीर, दानी, उदार, दयालु और धर्मात्मा राजा थे। उन्होंने हिंदोस्तान के बाहर के भी कई देश जीतकर अपने राज्य की वृद्धि की थी। अशोक बौद्ध-धर्म के अनुयायी थे। बौद्ध-धर्म की उन्नति और वृद्धि के लिये उन्होंने बड़ा परिश्रम और प्रयत्न किया था। बौद्ध-धर्म के प्रचार के लिये उन्होंने मिसर और सीरिया-जैसे दूर-दूर के देशों तक प्रचारक तथा उपदेशक भेजे थे। राजकुमारी संघमित्रा इन्हीं प्रतापी सम्राट् की पुत्री थी।

बौद्ध-धर्म पर संघमित्रा का भी बड़ा प्रेम था—वह बौद्ध-धर्म पर बड़ी ही श्रद्धा रखती थी। अशोक-जैसे धर्म-शील पिता के साथ रहने से उसकी वृत्तियाँ बड़ी ही पवित्र हो गई थीं। जैसे जैसे संघमित्रा की अवस्था बढ़ती गई, वैसे-ही-वैसे उसकी धार्मिक श्रद्धा भी बढ़ती गई। अंत में उसने बौद्ध-धर्म की सेवा में ही अपना जीवन अर्पण कर दिया। उसने दृढ़ निश्चय किया कि लोगों को धर्म का उपदेश देकर उनमें जीव-मात्र पर दयाभाव का प्रसार करूँगी, प्यारे बौद्ध धर्म पर मनुष्य-मात्र की श्रद्धा, भक्ति और प्रेम उत्पन्न कराकर अपना मनुष्य-जीवन सार्थक करूँगी! सच तो है, मनुष्य-जीवन सार्थक करने का इससे उत्तम साधन और क्या हो सकता है?

अपने व्रत की सफलता के लिये संघमित्रा ने अपना विवाह नहीं किया। वह आजन्म कुमारी ही रही, और पिता की आज्ञा से सीलोन को—वहाँ की स्त्रियों को—धर्मोपदेश करने गई।

उस समय आज के समान न तो रेलगाड़ियाँ थीं, और न इस प्रकार यात्रा के साधन ही सुलभ थे। संघमित्रा मगध-देश की रहनेवाली थी। सीलोन वहाँ से सैकड़ों मील की दूरी पर था। परंतु धर्म पर मर मिटनेवाली इस देवी ने युवावस्था में इतनी दूरी केवल पैदल चलकर ही तय की थी! राजमहल में रहनेवाली एक ऐश्वर्यशालिनी तथा कोमलांगी युवती के लिये अवश्य ही यह बड़े साहस का कार्य था! स्त्रियों के लिये यह बड़े ही गौरव का विषय है कि वे वैभव की गोद में पलकर भी ऐसे साहस कार्य कर सकती हैं। अस्तु। संघमित्रा के धर्मोपदेश में ऐसी कुछ शक्ति थी कि वह जहाँ जाती, वहीं उसका सम्मान होता—लोग उसे पूज्य-दृष्टि से देखने लगते। उसकी मधुर वाणी का लोगों पर ऐसा प्रभाव पड़ता था कि वे तुरंत ही बौद्ध-धर्म के प्रेमी बन जाते और संघमित्रा से दीक्षा ले लेते थे।

यद्यपि संघमित्रा एक चक्रवर्ती सम्राट् की पुत्री थी, फिर भी वह क्या अमीर और क्या ग़रीब, सभी पर समान दया दृष्टि रखती थी—सभी से मधुर भाषण करती थी।

उसका निर्दोष व्यवहार, शांत वृत्ति और दृढ़ धार्मिक श्रद्धा का लोगों पर बड़ा ही प्रभाव पड़ता था। लोगों की कल्याण-कामना के लिये, बौद्ध-धर्म के प्रचार के लिये वह सीलोन में बहुत समय तक घोर परिश्रम करती रही। लंका की स्त्रियों पर उसके उपदेशों का बड़ा ही प्रभाव पड़ा। शीघ्र ही वहाँ की रानी अनुजा और अनेक प्रतिष्ठित महिलाएँ बौद्ध-धर्म में दीक्षित हो गईं। फिर तो सीलोन में बौद्ध-धर्म का ऐसा प्रवाह बहा कि आज तक वह अजस्र धारा से प्रवाहित हो रहा है। लंका की बौद्ध-जनता आज भी संघमित्रा के सतत परिश्रम की साक्षी दे रही है।

इस देवी ने सेवा-धर्म और कौमार-व्रत के साथ ही संन्यास-व्रत भी धारण कर लिया था। 'संघमित्रा' उसका वास्तविक नाम नहीं जान पड़ता। यह या तो उसकी पदवी या उपनाम रहा होगा। बौद्ध-संन्यासियों का समूह संघ कहलाता था, जिसका उद्देश्य आत्मचिंतन के सिवा धर्म-प्रचार भी रहता था। ऐसे बौद्ध-संघों को विशेष सहायता देते रहने के कारण ही इस देवी का नाम 'संघमित्रा' पड़ गया होगा। यह केवल अनुमान ही है—यथार्थ बात ईश्वर जाने।

जिस वृक्ष के नीचे महात्मा बुद्ध ने तपस्या कर ज्ञान प्राप्त किया था, उसे बोधि वृक्ष कहते हैं। यह वृक्ष बौद्ध लोगों की अत्यंत पवित्र और पूजनीय वस्तु है। संघमित्रा बड़ी ही सावधानी से बोधि-वृक्ष की एक डाली सीलोन लेती गई थी। डाली वहाँ रोपी गई, और कालांतर में उसने विशाल वृक्ष का आकार धारण कर लिया। यह वृक्ष भी सीलोन-वासियों की पूज्य वस्तु थी। इसी कार्य से मालूम होता है कि संघमित्रा कैसी धर्म-प्रेमी और कष्ट-सहिष्णु थी।

राजकुमारी संघमित्रा के साहस, धैर्य, धर्म-श्रद्धा गंभीर एवं शांत प्रवृत्ति, प्रभावशाली एवं हृदयग्राही भाषण-चातुर्य, उत्कृष्ट पवित्र आचरण, कष्ट-सहिष्णुता, लोक-कल्याण-कामना आदि गुणों की जितनी प्रशंसा की जाय, थोड़ी है। इन्हीं गुणों के कारण इतिहास में उसने अमर कीर्ति प्राप्त कर ली है।

संघमित्रा के उदाहरण से यह भी विदित होता है कि भारतीय महिलाएँ केवल वीर, सती एवं देश-प्रेमी ही नहीं, उत्कृष्ट धर्म-प्रेमी, कष्ट-सहिष्णु, त्यागी और उपदेशिकाएँ भी होती हैं।

ज़हूरबख़्श

× × ×

२. अमेरिकन महिला

एक अमेरिका-प्रवासी भारत-वासी ने अपनी आँखों देखी महिलाओं के संबंध की कुछ घटनाओं का उल्लेख किया है। वे ही यहाँ पर उद्धृत की जाती हैं—

भारतवर्ष में अमेरिका के विषय में अनेक बातें सुनी जाती हैं। यहाँ आने पर मुझे इस बात का अनुभव हो गया है कि किसी देश की दो-एक बातों को लेकर पूरा साधारण मत प्रकाशित करने में अनेकों पटु होते हैं। जिस तरह भारत-भ्रमण करनेवाले कितने ही अन्य-देशीय व्यक्ति भारत की कुछ बुराइयों को ही लेकर यहाँ से जाते और अमेरिका, विलायत तथा दूसरे सुदूर देशों में हिंदोस्तान के विषय में उन्हीं का प्रचार करते हैं, ठीक उसी तरह अमेरिका-भ्रमण करनेवाले कतिपय भारतीय भारतवर्ष में लौटकर बहुधा वहाँ की बुराइयों को ही लेकर आते हैं। दोनों दशाएँ विपरीत हैं।

भारतवर्ष के साथ अमेरिका की तुलना करना अति दुष्कर कार्य है। केवल ऐतिहासिक दृष्टि से ही नहीं, सब प्रकार से इन दोनों देशों की जातियों में भिन्नता देख पड़ती है। हाँ, कुछ-कुछ समता भी अवश्य है। अमेरिका की महिलाएँ खुली हवा में विचरण कर एक नई संजीवनी-शक्ति प्राप्त कर रही हैं। वहाँ प्रतिभा और पांडित्य में, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं का दौरदौरा अपेक्षाकृत अधिक देखा जाता है। दूकान में सौदा बेचने, अख़बारों के लिये समाचारों का संग्रह तथा प्रबंध करने, भ्रमण करने और मनो-विज्ञान जाननेवालों में स्त्रियों की संख्या अत्यधिक है। इन विभागों में प्रायः स्त्रियाँ ही अधिक देखी जाती हैं। एक दिन मैंने एक दूकानदार से पूछा—"आप लोग अधिकतर स्त्रियों को ही सौदा बेचने के लिये क्यों रखते हैं?" उसने कहा—"स्त्रियाँ आसानी और शीघ्रता से सौदा बेच सकती हैं। इसके अतिरिक्त व्यावसायिक बुद्धि हमारे यहाँ की स्त्रियों में अपेक्षाकृत अधिक होती है।" यह उत्तर सुनने के बाद मैंने स्वयं अपनी आँखों से अनेक शहरों की बड़ी-बड़ी दूकानों में देखा है कि ख़रीद-बिक्री के सौदे को स्त्रियाँ अच्छे ढंग से सजाकर रखती हैं। कपड़े की दूकानों को सजाने में तो वे कमाल कर दिखाती हैं। क्लीवलैंड शहर में नव लाख मनुष्यों की आबादी है। वहाँ पर स्त्रियों का एक बैंक है। उसका

सब काम स्त्रियाँ ही करती हैं। सुना है, और दूसरे-दूसरे देशों में भी स्त्रियों द्वारा परिचालित बैंक हैं। स्त्रियों द्वारा परिचालित बैंक में केवल स्त्रियाँ ही रुपए जमा करें, ऐसी कोई क़ैद नहीं है। यहाँ पर यह लिख देना उचित है कि इस देश में स्त्रियों के किसी भी काम के विरुद्ध कोई आवाज़ नहीं सुनी जाती। भाव-प्रवणता और महिलाओं को संतुष्ट करने की साधारण विधि यहाँ काम नहीं करती। एक दिन हमारे कॉलेज-भवन के भोजन-घर की नियमावली के परिवर्तन के समय एक युवक ने प्रस्ताव किया कि स्त्रियाँ हम लोगों के टेबुल पर परोसने आदि का काम न किया करें; हम लोग स्वयं इन कामों के लिये काफ़ी हैं। तीन महिलाएँ हमारे साथ खाती थीं वे स्त्रियों के प्रति इस प्रकार की दयनीय व्यवस्था को स्वीकार करने में राज़ी नहीं हुईं। यहाँ की स्त्रियों की सदैव यही इच्छा रहती है कि बारी-बारी से पुरुष और महिलाएँ सभी काम किया करें। लड़कियाँ यहाँ की हृष्ट-पुष्ट और प्रफुल्ल-चित्त रहती हैं, और लड़कों के साथ किसी काम में प्रतियोगिता करने से पीछे पैर नहीं रखतीं। हम लोगों के देश में तथा विलायत में जिसे गर्ल गाइड्स कहते हैं, इस देश में उसका नाम कैंप फ़ायर गर्ल है। ब्वॉय स्काउटों को जो प्रतिज्ञा करनी पड़ती और जिस नियम का पालन करना पड़ता है, वही लड़कियों को भी। कहीं-कहीं कुछ भिन्नता भी है। छुट्टी के दिनों में लड़कियों के स्काउटों का झुंड किसी पहाड़ की चढ़ाई आदि करने को जाता है। बहुधा लड़कियों के साथ लड़कियाँ ही जाती हैं।

इस देश का शिक्षा-विभाग लड़कियों की पढ़ाई पर विशेष लक्ष्य रखता है। पब्लिक-स्कूलों (सर्वसाधारण विद्यालयों) की सभी श्रेणियों में शारीरिक व्यायाम आदि सिखलाया जाता है। साधारणतः स्कूल में लड़के और लड़कियाँ एकसाथ ही पढ़ती हैं। लड़कियों के लिये अलग क्लास भी हैं, जहाँ पर सांसारिक अर्थ-नीति आदि की शिक्षा दी जाती है। इसके अलावा व्यायाम-शिक्षा भी लड़कियों को लड़कों से अलग दी जाती है। उनके लिये प्रत्येक स्कूल में व्यायामागार अलग बना हुआ है। हाँ, टेनिस या इसी प्रकार के कोई दूसरे खेल वे लड़कों के साथ खेलती हैं।

अमेरिका में प्रायः २;७२,००० पब्लिक स्कूल हैं। ५ वर्ष से लेकर १८ वर्ष की उम्र तक लड़के और लड़कियाँ इन स्कूलों में निःशुल्क (विना फ़ीस) पढ़ सकती हैं। यही क्यों, उन्हें पुस्तकें भी मुफ़्त मिलती हैं। केवल पेंसिल और कॉपियाँ ख़रीदनी पड़ती हैं। यह सभी ख़र्च शिक्षा-टैक्स से ही चल जाता है। वाणिज्य-व्यापार के विद्यालयों में अनेक प्रकार के यंत्रों आदि की आवश्यकता पड़ती है। छात्रों को उन्हें भी पैसा ख़र्चकर नहीं ख़रीदना पड़ता। प्राथमिक श्रेणी के विद्यार्थियों की उम्र ५ से ९-१० वर्ष तक होती है। देहात के स्कूलों में १० से १२-१३ वर्ष तक के लड़के भी पाए जाते हैं। हाई स्कूलों में तीन या चार वर्ष तक की पढ़ाई है। वहाँ पर साहित्यिक और व्यावसायिक, इन्हीं दो भिन्न-भिन्न शाखाओं की पढ़ाई होती है। साहित्यिक श्रेणी में अँगरेज़ी-साहित्य, लैटिन या ग्रीक, फ़रांसीसी या जर्मन-भाषा, इतिहास, गणित, रसायन, पदार्थ-विद्या और भूगोल इत्यादि सिखलाए जाते हैं। व्यावसायिक विभाग में शॉर्टहैंड, टाइप-राइटिंग, हिसाब-किताब रखना इत्यादि सिखलाया जाता है। यहाँ पर स्वतंत्र रूप से अपनी इच्छा के अनुसार जिस विषय को चाहे, पढ़ सकते हैं। देहात के स्कूलों में भी शारीरिक व्यायाम की व्यवस्था है। यहाँ पर स्मरण रखना चाहिए कि उपर्युक्त सब प्रकार की शिक्षाएँ मुफ़्त ही मिलती हैं। प्रत्येक पब्लिक हाई स्कूल में जिस प्रकार शारीरिक उन्नति की ओर ध्यान दिया जाता है, ठीक उसी प्रकार सौंदर्य के विकास पर भी दृष्टि रक्खी जाती है। अभी तक मैंने चार-पाँच पब्लिक स्कूलों को देखा है। उन सबमें एक-एक गायकों और वादकों का दल है। १०-१२ प्रकार के बाजे बजते हैं। एक स्कूल में तो मैंने विद्यार्थियों को १९ प्रकार के बाजे बजाते देखा था। ये सब संगीत-श्रेणी के विद्यार्थी थे। कितने ही विद्यार्थी स्कूल के बाहर भी गाने-बजाने का अभ्यास किया करते हैं। प्रत्येक स्कूल में एक बड़ा कमरा रहता है। उसमें प्रतिसप्ताह एक-न-एक सभा-समिति होती ही रहती है। कमरे की दीवार में अनेक प्रकार के चित्रित चित्र टँगे रहते हैं। कुछ चित्र लड़के और लड़कियों के मा-बाप उपहार स्वरूप दे देते हैं, कुछ स्थानीय शिल्प-समितियाँ दान में दे देती हैं, और कुछ स्कूल के पैसे से ख़रीदे जाते हैं।

मैं मासचसेट्स-प्रांत के किसी एक शहर में एक बालिका-विद्यालय देखने गया था। देखा, लड़कियों ने अपने ही

हाथ के बनाए अनेक अच्छे-अच्छे चित्रों से स्कूल के कमरे को चित्रित कर रक्खा है। एक दिन शहर के हाई स्कूल की १३-१४ वर्ष की एक बालिका ने मुझसे भारत-संबंधी अनेक प्रश्न किए। मैंने उन प्रश्नों के उचित उत्तर भी दिए थे। उस दिन उसने जो-जो प्रश्न किए थे, उनमें से दो-चार, जो मुझे याद हैं, यहाँ पर लिखता हूँ—

१—भारत में स्कूल-कॉलेज रहने पर भी आप लोग यहाँ आकर क्यों विद्याध्ययन करते हैं?

२—भारत की जातिभेद-प्रथा की कुछ अच्छी और बुरी बातें कहिए?

३—भारत में क्या साँप और बाघ बहुत हैं?

४—भारतीय महिलाओं के विषय में कुछ कहिए।

ये हैं समझदार लड़कियों के प्रश्न। कुछ वाहियात प्रश्न भी किए गए थे। एक बार न्यूयार्क की एक लड़की ने मुझसे पूछा—"भारत में क्या कोई विश्वविद्यालय है?" देहाती लड़की थी। उम्र २३-२४ वर्ष के लगभग होगी। उस बेचारी ने ऐसे प्रश्न पूछने का कारण भी मुझे बतला दिया। उसने कहा—"मैंने प्राइमरी स्कूल तक शिक्षा पाई है। भारत के संबंध में कुछ भी नहीं जानती। उपन्यास और कुछ साहित्यिक पुस्तकें छोड़ मैंने और कोई विशेष विषय का अध्ययन नहीं किया है। आप लोगों को भारत से पढ़ने के लिये यहाँ आते देख स्वभावतः मन में यह विचार उठता था कि भारत में विश्वविद्यालय हैं ही नहीं, यदि हैं भी, तो कोई अच्छा विश्वविद्यालय नहीं।" किंतु ये श्रमिक महिलाएँ अपने देश की बहुत-सी बातें जानती हैं। इस संयुक्त-राज्य के इतिहास तथा भूगोल को प्रत्येक छात्र और छात्री अच्छी तरह जानती है। उक्त महिला ने नम्र भाव से अपनी अनभिज्ञता स्वीकार की, और दो-चार और भी प्रश्न किए।

शिकागो में ग्रीष्म-ऋतु की छुट्टी के समय किसी एक विद्यालय के ओल्ड मैनुस्क्रिप्ट डिपार्टमेंट में एक महिला से बातचीत हुई थी। वह एक स्वावलंबिनी छात्री थी। समयानुसार ऑफ़िस में टाइपिस्ट का काम करती है। उस दिन ऑफ़िस का हेड ऑफ़िसर वहाँ नहीं था, इसलिये थोड़ी देर तक उससे बातचीत करने का सुअवसर मिला। आगामी वर्ष एम्० ए० की परीक्षा के लिये वह एक गवेषणा-पूर्ण प्रबंध (Thesis) लिख रही थी। इसके बाद वह पब्लिक स्कूल में काम करेगी। तदनंतर रुपए जमा करके योरप और एशिया में भ्रमण करेगी। उसे भारतवर्ष की अपेक्षा बर्मा की जानकारी अधिक थी। कारण, रंगून में उसके अनेक अमेरिकन बंधु-बांधव रहते हैं। शिकागो-विश्वविद्यालय में लड़के और लड़कियाँ प्रायः आधे-आधे हैं। सबसे अधिक लड़कियाँ मनस्तत्त्व, समाजतत्त्व और शिक्षा-श्रेणियों में हैं। लड़कों की अपेक्षा लड़कियाँ अपना पाठ अच्छी तरह याद करके क्लास में आती हैं। किंतु जाँच (Experiment) इत्यादि में लड़कों से बढ़कर नहीं होतीं। मालूम होता है, चूहे आदि जीवों को वे वैसा पसंद नहीं करतीं। यहाँ पर ग्रीष्म-पर्व के विषय में कुछ लिखना असंगत न होगा। इस देश में केवल स्त्रियों के लिये कितने ही प्रसिद्ध कॉलेज हैं। अधिकांश नामी-नामी पब्लिक कॉलेजों में स्त्रियाँ बहुत देखी जाती हैं। अतः सबके सुबीते के लिये ग्रीष्म-ऋतु में जब प्रायः और-और कॉलेज बंद हो जाते हैं, उस समय भी कुछ कॉलेज खुले रहते हैं। इन कॉलेजों में इसी ग्रीष्म-ऋतु में हज़ारों लड़के और लड़कियाँ विद्याध्ययन के लिये जाया करता हैं। इस देश में सभी काम निर्वाचन-प्रणाली से होते हैं। पूरा एक वर्ष का काम तीन ग्रीष्म-ऋतुओं में समाप्त किया जाता है। इस वर्ष ग्रीष्म-पर्व में, शिकागो-विश्वविद्यालय में, प्रायः तीन हज़ार विद्यार्थी तथा विद्यार्थिनियाँ आई हैं। ३५० अध्यापक भिन्न-भिन्न विभागों में भिन्न-भिन्न विषय पढ़ा रहे हैं। यहाँ पर याद रखना चाहिए कि अप्रधान विषय छः सप्ताह में और प्रधान विषय तीन महीने में पढ़ा दिए जाते हैं। ऐसे प्रत्येक वार्षिक ग्रीष्म-पर्व के अंत में परीक्षा देनी पड़ती है, और एक निबंध (३००० शब्दों का या इससे कुछ अधिक) प्रत्येक विषय पर लिखकर दिखलाना होता है।

शिकागो-विश्वविद्यालय इस समय अमेरिका के सर्वश्रेष्ठ दस विद्यालयों में से एक है। इस ग्रीष्म-पर्व में 'वर्तमान काल के शहर' विषय के पाठ में सामाजिक तत्त्व अध्ययन करनेवाले छात्र बहुत दिलचस्पी लेते हैं। मैंने स्वयं दर्शक रूप से शहर के भिन्न-भिन्न स्थानों को देखा है। यह पाठ अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुआ है। इस पाठ का अध्ययन करनेवालों में आधे से अधिक लड़कियाँ हैं। मनस्तत्त्व-विभाग में 'उच्च श्रेणी के विद्यालय और कॉलेजों में व्यक्तिगत-प्रणाली'-शीर्षक विषय पर एक बड़े मार्के का

पाठ दिया जाता है। इस विभाग में भी आधे से अधिक स्त्रियाँ ही रहती हैं। इसके अतिरिक्त भिन्न-भिन्न विभागों में भिन्न-भिन्न पाठ पढ़ाए जाते हैं। यहाँ पर प्रत्येक ग्रीष्म-पर्व के समय संस्कृत की शकुंतला या अन्य पुस्तकें पढ़ाई जाती हैं। मुसलमान-धर्म-संबंधी अच्छी-अच्छी पुस्तकों का भी अध्ययन कराया जाता है। इस समय 'मुसलमान-धर्म' के क्लास में हम चार व्यक्ति हैं। एक सुशिक्षित पादरी, एक काबुली, एक शिक्षा-विभाग की महिला और एक मैं। हमें निष्पक्ष भाव से मुसलमान-धर्म की गूढ़-गूढ़ बातें बतलाई जाती हैं। डॉक्टर स्पेलंगलिंग इस मुसलिम-धर्म-संबंधी पाठ की शिक्षा देते हैं। यह अरबी-भाषा के एक विख्यात विद्वान् हैं। इन्होंने १५ वर्षों तक पूर्वीय देशों में रहकर केवल विद्याध्ययन किया है। एक दिन हमारी जान-पहचान की एक महिला ने किसी जगह पर व्याख्यान देने की इनसे प्रार्थना की। इन्होंने कहा—"मैं शहर से थोड़ी दूर पर रहता हूँ, इससे स्वभावतः मेरे पहुँचने में थोड़ी देर होगी। इसके अलावा मेरे एक गऊ है। मैं गऊ को स्वयं दुहता हूँ। इससे कुछ देर होना और भी संभव है।" हमारे देश के पी-एच्०डी० की उपाधि पाए हुए कितने व्यक्ति स्वयं कृषि-कर्म करते हैं, मुझे नहीं मालूम; किंतु यहाँ पर अनेकों करते हैं। संस्कृत-प्रोफ़ेसर डॉक्टर क्लाक तथा उनकी स्त्री भारतवर्ष में अनेक दिनों तक रहकर अभी हाल ही में अमेरिका लौटे हैं। पति विश्वविद्यालय में प्रोफ़ेसर हैं, और स्त्री सर्व-साधारण की भलाई के काम में लगी रहती है। उक्त क्लार्क-पत्नी कहती हैं—"हम लोग भारत में कुछ सीखने के लिये गए थे। इसलिये वहाँ से कुछ लाए हैं। किंतु हिंदोस्तानी इस देश में आकर कुछ अच्छी बातें सीखने की चेष्टा नहीं करते। संभव है, उन्हें विशेष सुबीता न मिलता हो। इस विषय में कुछ सुधार करना उचित है।" मिसेज़ क्लार्क की इस बात का मैं हृदय से समर्थन करता हूँ। गत एक वर्ष से मैं स्वयं देख रहा हूँ कि यहाँ पर सीखने की बहुत-सी अच्छी-अच्छी बातें हैं। जिस प्रकार भारत केवल साँपों और बाघों का घर नहीं है, उसी प्रकार इस देश में भी केवल लिंचिंग (Lynching) (हबशियों को क़त्ल कर देना) और क्लू-क्लक्स-क्लान-प्रथा की ही भरमार नहीं है। इस देश के ११ करोड़ बाशिंदों में ६ करोड़ K.K.K. के शत्रु हैं। शेष ५ करोड़ में भी अधिकांश शिक्षित व्यक्ति इसके विरोधी हैं। यह अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि K.K.K. प्रथा ने इस देश का बहुत अंशों में उपकार भी किया है। लिंचिंग-प्रथा केवल इस देश के दक्षिण भाग में, जहाँ हबशियों की संख्या अधिक है, जारी है। गत वर्ष १२० लाख हबशियों और १० करोड़ अमेरिकनों के बीच केवल २६-२७ ऐसी घटनाएँ हुई थीं। एक महिला ने मुझसे कहा था—"आपको मुश्किल से ऐसा सच्चा अमेरिकन मिलेगा, जो लिंचिंग-प्रथा को घृणा की दृष्टि से न देखता हो। इँगलैंड में यदि १२० लाख तथा भारत में ३५ करोड़ हबशी रहते, तो वहाँ की क्या हालत होती, कह नहीं सकती। इस देश में जो भाव गोरों-कालों में है, वही—बल्कि उससे कुछ अंशों में बढ़कर—क्या आपके भारत में ब्राह्मणों और शूद्रों के बीच नहीं है?" उक्त महिला तीन वर्ष तक भारत में रह चुकी थी।

गोपीनाथ वर्मा

× × ×

३. भ्रम-संशोधन

'माघ' की माधुरी में 'वीसलदेव रासो का समय'-नामक मेरा जो नोट छपा है, उसमें कुछ ऐसी अशुद्धियाँ हो गई हैं, जिनसे उस लेख का अर्थ ही उलट गया है। मैंने बारह सै 'वहोत्तरहाँ' का अर्थ १२१२ किया है, १२७२ नहीं। संशोधक के भ्रम से सर्वत्र १२१२ के स्थान में १२७२ छपा है। ऐसा न होना चाहिए। वहोत्तरहाँ के स्थान पर बहोत्तरदाँ छप गया है। 'भोजो भोजोपरः' के स्थान पर 'भोजो भोज इवापरः' होना चाहिए।

खेद है कि उक्त अशुद्धियों के कारण वह 'नोट' भ्रमात्मक और उद्देश-च्युत हो गया। कृपा करके पाठकगण उक्त नोट में ये संशोधन अवश्य कर लें।

सत्यजीवन वर्मा

कवि-चर्चा

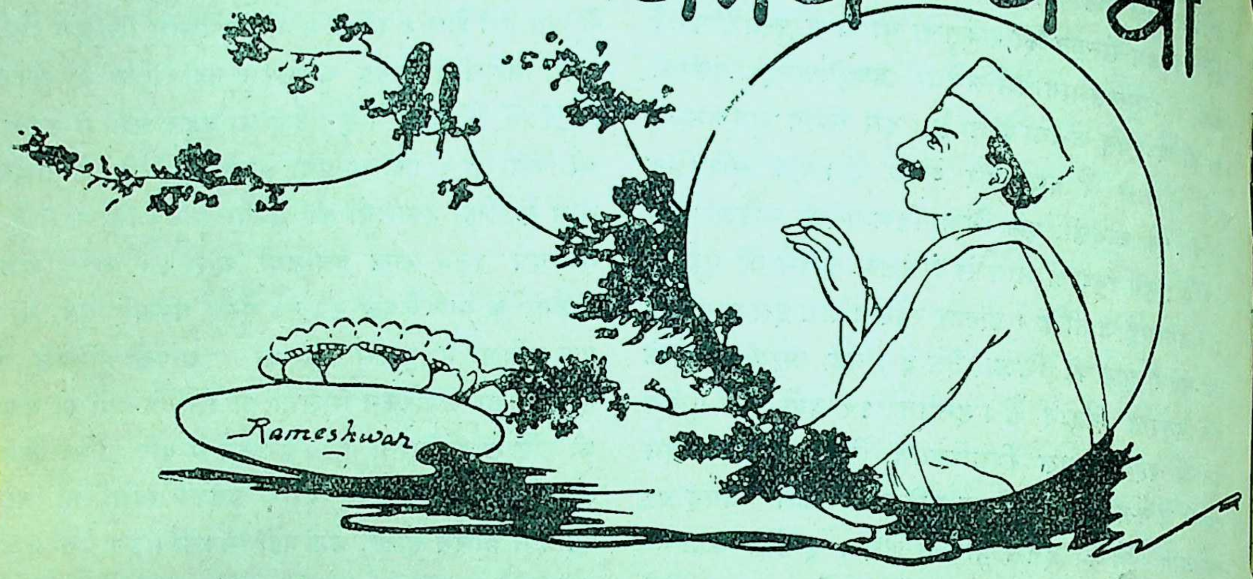

रहीम

सम्राट् अकबर के सेनापति अब्दुलरहीम ख़ाँ (ख़ानख़ाना) की ख्याति अकबर का मंत्री अथवा सेनापति होने के कारण जितनी नहीं हुई, उतनी उनकी सरस, मधुर और नीति-पूर्ण कविता के कारण हुई है। थोड़ी-सी भी हिंदी जाननेवाला रहीम के दो-चार दोहे अवश्य जानता और उनको पढ़कर आनंद पाता है। कविवर भिखारीदास ने अपने 'काव्य-निर्णय' में काव्य का प्रयोजन वर्णन करते हुए लिखा है—

''एकनि कों जस ही को प्रयोजन है रसखानि, रहीम की नाईं''

दासजी के कथनानुसार यदि रहीम ने यश के लिये ही कविता की थी, तो निस्संदेह वह पूर्ण रूप से सफल-मनोरथ हुए हैं। कविता ही के कारण ग्राम-ग्राम में पाठशाला के विद्यार्थी रहीम के दोहे पढ़ा करते हैं।

यह बड़े दुःख की बात है कि इनकी समस्त कविता अब उपलब्ध नहीं है। 'रहीम-सतसई' के तो तीन सौ दोहे भी प्राप्त नहीं हैं। इनकी जो कुछ कविता प्राप्त है, उसका संग्रह (साहित्य-सदन, प्रयाग से) पं० रामनरेश त्रिपाठी ने प्रकाशित कराया है। इसी प्रकार का एक दूसरा संग्रह काशी के बाबू व्रजरत्नदासजी ने किया है। काशीवाला संग्रह प्रयागवाले संग्रह से कहीं अच्छा है। इसका केवल यही कारण नहीं है कि उसमें अधिक दोहे हैं, परंतु अकारादि-क्रम तथा शुद्ध पाठ और अर्थ ने भी इस संग्रह को अधिक उपादेय बना दिया है। इस लेख में जो हवाले दिए गए हैं, वे बाबू व्रजरत्नदासजी के 'रहिमन-विलास' से ही।

हमको रहीम के कुछ छंद ऐसे मिले हैं, जो अब तक रहीम की किसी भी प्रकाशित पुस्तक में नहीं हैं। हम उन छंदों को हिंदी-संसार के सम्मुख रखकर आशा करते हैं कि 'रहिमन-विलास' के नए संस्करण में उन्हें स्थान मिलेगा।

एक बार कवि गंग ने रहीम को निम्न-लिखित दोहा लिखकर भेजा था—

सीखे कहाँ नवाबजू, ऐसी देनी दैन;
ज्यों-ज्यों कर ऊँचे करो, त्यों-त्यों नीचे नैन।

रहीम ने तुरंत इस प्रकार उत्तर दिया—

देनहार कोउ और है, भेजत सो दिन-रैन;
लोग भरम हम पै धरैं, याते नीचे नैन। *

यथार्थ में यह उत्तर रहीम के-जैसे उदार हृदय से ही निकल सकता है। ऊपर वर्णित दोहे के अतिरिक्त अन्य कविताएँ जो अभी तक अप्रकाशित हैं, लिखी जाती हैं—

---

* हमारे पास के 'विविध संग्रह' से उद्धृत।

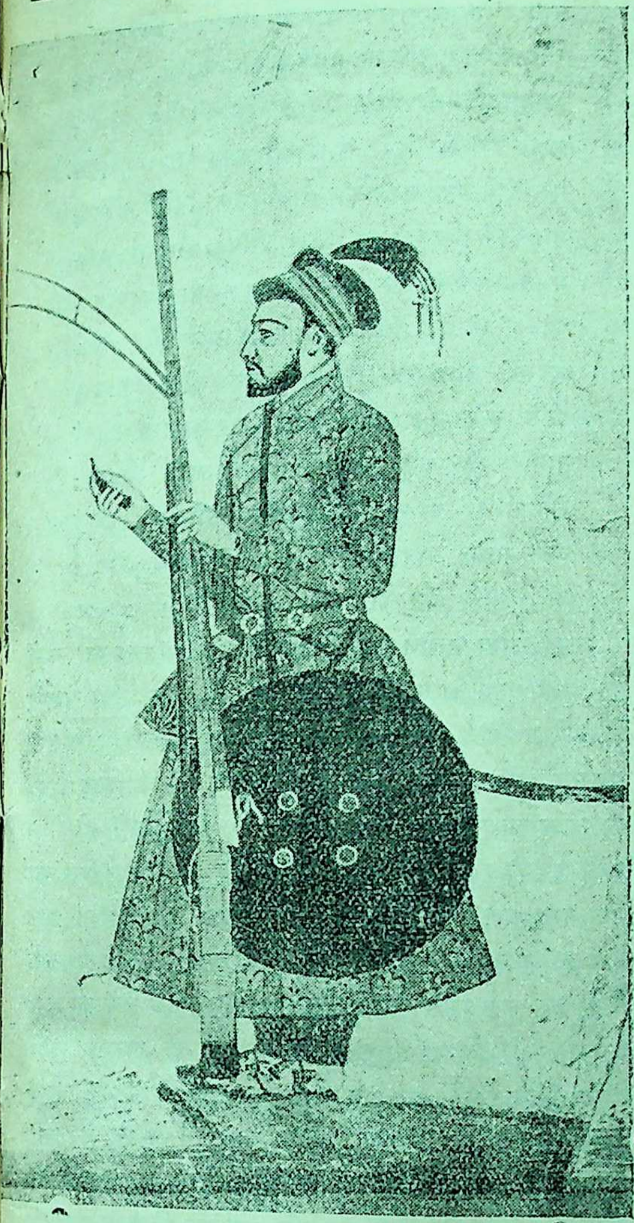

सिपहसालार अब्दुलरहीम ख़ानख़ाना

या झर में घर-घर में मदन हिलोर;
पिय नहिं अपने कर मैं करमैं खोर। *
थोथे बादर क्वाँर के, ज्यों रहीम घहरात;
धनी पुरुष निर्धन भए, करैं पाछिली बात। †

क्या इस दोहे से रहीम की निर्द्धनावस्था का पता नहीं चलता? रहीम को अपनी वृद्धावस्था की निर्द्धनता से बड़ा क्लेश होता था। इस पर उन्होंने कई दोहे बनाए हैं—

बाँकी चितवन चित गड़ी, सूधी ता कछु घाम;
गरमी ते बढ़ि होत दुख, काढ़ि न कढ़त 'रहीम'। *

सीखी हैं ऐसी 'रहीम' कहा इन नैन अनोखे धौं नेह की नाँघन;
ओट भए रहते न बनै कहते न बनै बिरहानल रावन।
पुन्यन प्यारे सों भेंट भई ए पै भो न कुसंग मिल्यो अपराधन;
स्याम-सुधानिधि-आनन की मरिए सखी सूधे चितैबे की साधन। †

अति अनियारे मनो सान दै सुधारे,
महा बिष के बिषारे ये करत परघात हैं;
ऐसे अपराधी देख अगम अगाधी यहै,
साधना जो सार्धा हरि हिय में अन्हात हैं।
बार-बार बोरे याते लाल-लाल डोरे भए,
तोहूँ तो 'रहीम' थोरे बिधि ना सकात हैं;
घाइक घनेरे दुखदाइक हैं मेरे नित
नैन बान तेरे उर बेधि-बेधि जात हैं। †

पट चाहे तन मेट चाहत छदन मन,
चाहत धन (?) जेती संपदा सराहबी;
तेरोई कहाय कै 'रहीम' कहै दीनबंधु,
आपनी बिपति जाय काके द्वार काहबी।
पेट-भर खायो चाहै उद्यम बनायो चाहै,
कुटुम जियायो चाहै काढ़ि गुन लाहबी;
जीविका हमारी जो पै औरन के कर डारो,
व्रज के बिहारी तो तिहारी कहा साहबी। ‡

इनके अतिरिक्त जो छंद हमें मिले हैं, उनसे मुद्रित पुस्तकों के छंदों में पाठांतर बहुत है। पाठांतर होना कोई असंभव बात नहीं है। हम यहाँ उन्हीं छंदों के कुछ पाठांतर देते हैं, जिनसे अर्थांतर भी होता है। हमारा यह आशय नहीं है कि हमारी पुस्तकों का पाठ अधिक ठीक है; परंतु केवल पाठांतर होने ही के विचार से कुछ छंद दिए जाते हैं। साधारण पाठांतर देना हमारा अभीष्ट नहीं है। छंदों के साथ जो नंबर दिया है, वह रहिमन-विलास का है, जिससे पाठकों को पाठ मिलाने में सुगमता हो—

अरज सुनत लरजै तुरत, गरज मिठाई आनि;
कहि 'रहीम' का दिन हुती, हरि-हाथी पहिचान ॥१.१.२॥

---

*प्रोषितपतिका नायिका। नवीन-कृत प्रबोधरस-सुधासागर से।

† हमारे पास की एक प्राचीन हस्त-लिखित पुस्तक से।

* 'मुक्तावली' नामक ग्रंथ से उद्धृत।

† नवीन-कृत 'प्रबोध रस-सुधासागर' से।

‡ हमारी एक प्राचीन हस्त-लिखित पुस्तक से।

काहि 'रहीम' या पेट ने, दुहि बिधि दीन्हीं पींठि;
भूखे भीख मँगावई, भरे डिगावै डीठि ॥१६८॥ *

दीबो चहै करतार जिन्हैं सुख कौन रहीम सकै तिहिं टारे;
उद्यम कोउ करो-न-करो धन आवत है बिन ताके हँकारे।
'देव' हँसे सब आपुस में बिधि के परपंच न कोउ निहारे;
बालक आनकदुंदुभी के भयो दुंदुभी बाजत आन के द्वारे ॥३॥†

बड़ेन सों जान-पहिचान तो कहा 'रहीम',
जो पै करतार ही न सुख देनहार है;
सीतहर सूरज सों प्रीति करी पंकज ने,
तऊ कंज-बनन कों मारत तुषार है;
उदधि के बीच धस्यो शंकर के सीस बस्यो,
तऊ न कलंक नस्यो ससि में सदा रहै,
बड़े रिझवार हैं चकोर दरबार देख्यो
सुधाधर यार ए पै चुगन अंगार है ॥१॥‡

जिहि कारन बार न लायो कछू गहि संभु-सरासन द्वै जु किया,
न हुतो समये बनबासहु को पै निकास पिता बनबास दिया;
भजि भेद 'रहीम' रह्यो न कछू करि राखी हुती उन हारि हिया,
बिधि यों न सिया सुख वार सिया को सुवार सिया परिवार सिया ॥४॥‡

प्रयागवाले 'रहीम के दोहे' में बहुत ऐसे दोहे रहीम के नाम से दिए हैं, जो वास्तव में रहीम के नहीं हैं। काशी से प्रकाशित 'रहिमन-विलास' में सावधानी से काम लिया गया है। इस कारण यह भूल नहीं हुई है। कौन-छंद रहीम का है और कौन नहीं, यह कहना बड़ा कठिन है। परंतु रहीम ने अपनी सतसई के प्रत्येक दोहे में 'रहीम' अथवा 'रहिमन' शब्द दिए हैं। हम नीचे कुछ दोहे लिखते हैं, जिनके रहीम-कृत होने में संदेह है, पर वे 'रहिमन-विलास' में रहीम के नाम से दिए हैं, और फुट-नोट में उसके अन्य किसी कवि के होने का हवाला नहीं दिया गया है। निम्न-लिखित दोहों में 'रहीम' नाम भी नहीं है। यह बात संभव है कि पाठ-भेद से रहीम का नाम न रहा हो। आशा है, रहिमन-विलास के द्वितीय संस्करण में पूर्ण विचार कर इन दोहों का रहीम-कृत होना सिद्ध कर दिया जायगा, या ये दोहे निकाल दिए जायँगे।

राम-नाम लीनो नहीं, रह्यो बिषय लिपटाय;
घास चरै पशु आपसों, गुड़ गाल्योहो खाय ॥२१५॥*

'अहमद' तजो अँगार ज्यों, ओछे को सँग साथ;
सीरो कर कारो करै, तातो जारै हाथ ॥२०९॥*

एक दीप तें गेह की, प्रगट सबै निधि होय;
मन को नेह कहाँ छिपै, नेह दृग दीपक दोय ॥२८॥*

मथत-मथत माखन रह्यो, मह्यो गयो महराय;
'शंकर' सो बड़ मोल जो, भार पर ठहराय ॥१५॥*

'व्यास' बड़ाई जगत की, कूकर की पहचान;
प्रीति करे मुख चाटई, बैर करे तन-हान ।†

तासों ही कछु पाइए, कीजै जाकी आस;
रीते सरवर पै गए, कैसे बुझै पियास ॥८८॥‡

एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय;
जो तू सींचै मूल को, फूलै-फलै अघाय ॥१७॥×

ऊपर लिखे नवीन दोहे कुछ अधिक महत्त्व के नहीं हैं। यदि पूर्ण सतसई मिल जाती, तो उसे हिंदी-संसार के सम्मुख रखते समय हमें बड़ा संतोष होता। परंतु हम सतसई की खोज में सफल नहीं हुए। इन कुछ छंदों के मिल जाने से रहीम के गौरव की वृद्धि नहीं होगी। परंतु हमको इस बात का अपार हर्ष है कि हम रहीम का एक नया ग्रंथ-रत्न हिंदी-संसार के समक्ष रखते हैं। इस ग्रंथ का नाम है "नगरशोभा"। यह हस्त-लिखित पुस्तक मिले हमें कई मास हुए, परंतु इसका परिचय देने का हमें अवसर नहीं मिला। पुस्तक में लिखने का समय नहीं दिया, किंतु इसके प्राचीन होने में कोई संदेह नहीं है। इसके प्रत्येक दोहे में रहीम का नाम न होने पर भी कविता की भाषा-प्रौढ़ता तथा भाव इत्यादि देखने से यह रहीम का ही जान पड़ता है। सबसे विश्वस्त प्रमाण यह है कि पुस्तक के आदि में लिखा है—"अथ नगर-शोभा नवाब खानखाना-कृत।" हम इस ग्रंथ के कुछ अवतरण नीचे देते हैं, जिनसे पाठकों को यह बात पूर्ण रीति से प्रतीत हो जायगी कि यह ग्रंथ रहीम की ही रचना है।

---

* हमारी एक प्राचीन हस्त-लिखित पुस्तक से।

† नवीन-कृत 'प्रबोधरस-सुधासागर' से।

‡ नवीन-कृत 'प्रबोधरस-सुधासागर' से।

* संवत् १७२० में रचित दोहासार से।

† भक्तमाल की टीका से।

‡ वृंदसतसई। कविता-कौमुदी, पृष्ठ २७०, दोहा-नंबर ४।

× [illegible], दोहा-नंबर ७६८।

इस ग्रंथ में १४२ दोहे हैं, और इन दोहों में रहीम का नाम नहीं है। आरंभ में मंगलाचरण होने से प्रतीत होता है कि यह एक स्वतंत्र ग्रंथ है, 'रहीम-सतसई' का अंश नहीं। महाकवि देवजी ने 'जाति-विलास' तथा 'सुख-सागर-तरंग' में जिस रीति से बहुत-सी जातियों की तथा देशों की स्त्रियों का वर्णन किया है, उसी रीति से इस नगर-शोभा-वर्णन में अनेक जाति की स्त्रियों का वर्णन बड़ी सुंदरता से किया गया है। दोहे की शब्द-योजना से वर्णित स्त्री की जाति तथा कर्म का मनोहर चित्र नेत्रों के सम्मुख आ जाता है। यह अनुमान किया जा सकता है कि देवजी ने 'जाति-विलास' कदाचित् रहीम के इस ग्रंथ को देखकर ही बनाया हो। पाठकों के विनोदार्थ हम केवल २० दोहे यहाँ नमूने के तौर पर देते हैं—

आदि रूप की परम द्युति, घट-घट रही समाइ ;
लघु मति ते मो मन रसन, अस्तुति कही न जाइ।
नैन-तृप्ति कछु होत है, निरखि जगत की भाँति ;
जाहि-ताहि में पाइयत, आदि रूप की काँति।
उत्तम जाति बराह्मनी, देखत चित्त लुभाइ ;
परम पाप पल में हरत, परसत वाके पाँइ।
परजापति परमेस्वरी, गंगा रूप समान ;
जाके अंग-तरंग में, करत नैन असनान।
रूप रंग रतिराज में, खतरानी इतरानि ;
मानो रची बिरंचि पचि, कुसुम कनक में सानि।
पारस पाहन की मनो, धरे पूतरी अंग ;
क्यों न होइ कंचन वहू, जो बिलसै तिहि संग।
कबहुँ दिखावै जौहरनि, हँसि-हँसि मानिकलाल ;
कबहूँ चख ते च्वै परे, टूटि मुक्त की माल।
जद्यपि नैननि ओट है, बिरह चोट बिन घाइ ;
पिय-उर पीरा ना करै, हीरा-सी गड़ि जाइ।
कैथिनि कथन न पारई, प्रेमकथा मुख बैन ;
छाती ही पाती मनो, लिखे मैन के सैन।
बरुनि-बार लेखनि करे, मसि काजर भरि लेय ;
प्रेमाखर लिखि नैन ते, पिय बाँचन को देय।
बनिआइन बनि आइ के, बैठि रूप की हाट ;
प्रेम पैक तन हेरि के, गरुवे तारत बाट।
गरब तराजू करत चख, भौंह मोरि मुसक्यात ;
डाँड़ी मारत बिरह की, चित-चिंता घटि जात।
भाँटा बरन सु कोजरी, बेचै सोवा साग ;
निलज भई खेलत सदा, गारी दै-दै फाग।
हरी-भरी डलिया निरखि, जो कोई नियरात ;
झूठे हू गारी सुनत, साँचे हू ललचात।
करे न काहू की सका, सक्किनि जोबन रूप ;
सदा सरम जल ते भरी, रहै चिबुक के कूप।
सजल नैन वाके निरखि, चलत प्रेम सर फूट ;
लोक लाज उर धाक ते, जात मसक-सी छूट।
धुनिआइन धुनि रैनि दिन, धरै सुरति की भाँत ;
वाको राग न बूझही, कहा बजावै ताँत।
काम पराक्रम जब करै, छुवत नरम है जाय ;
रोम-रोम पिय के बदन, रूई-सी लिपटाय।
निसि-दिन रहै ठठेरनी, राजे माँजे गात ;
मुकता वाके रूप को, थारी पै ठहरात।
आभूषण बसतर पहिरि, चितवत पिय-मुख-ओर ;
मानो गढ़े नितंब कुच, गडुवा डार कठोर।

दूसरी रीति के १४२ दोहों में यह ग्रंथ समाप्त हुआ है। पाठकों को 'शृंगार-सोरठा' की भाषा इन दोहों की भाषा से मिलाने पर विदित हो जायगा कि यह ग्रंथ रहीम का ही बनाया हुआ है।

हमें हाल ही में पता चला है कि उदयपुर-राज्य के अंतर्गत काँकरोली-ग्राम में वल्लभ-संप्रदाय के मंदिर के पुस्तकालय में रहीम की कविता का एक ग्रंथ है। यह भी सुना है कि उसकी छंद-संख्या मुद्रित पुस्तकों की छंद-संख्या से कहीं अधिक है। हमें आशा है कि उदयपुर-निवासी कोई हिंदी-प्रेमी इसकी खोज करके, यदि उसमें कुछ नवीन छंद हैं, तो इसे प्रकाशित करने का कष्ट उठावेंगे।

मयाशंकर याज्ञिक
जीवनशंकर याज्ञिक
भवानीशंकर याज्ञिक

पुस्तक-परिचय
Rameshwar

१. इतिहास

भारतवर्ष का इतिहास (प्राचीन समय से १९१९ ई० तक)—लेखक, श्रीयुत मन्मथनाथ राय एम्० ए०, एल्० टी० । पृष्ठ-संख्या ४२२ । मूल्य १॥) ; प्रकाशक, नंदकिशोर ऐंड ब्रदर्स पब्लिशर्स और बुक्सेलर्स चौक, बनारस सिटी ।

यह पुस्तक अँगरेज़ी स्कूलों के ऊँचे दर्जों के विद्यार्थियों के लिये लिखी गई है, अतएव संक्षिप्त है । केवल मुख्य-मुख्य बातों का ही उल्लेख किया गया है । पुस्तक का क्रम विद्यार्थियों के लिये उपयोगी है । प्रत्येक अध्याय के अंत में उस अध्याय के विषय पर अभ्यास के लिये प्रश्न भी दे दिए गए हैं । तिथियों की तालिकाएँ भी यथास्थान लगी हुई हैं । नक़्शे और चित्र भी हैं । इनकी संख्या कम होने पर भी इनसे पुस्तक की उपयोगिता बढ़ गई है । पुस्तक विद्यार्थियों के काम की है ।

स्कूलों के लिये इतिहास लिखना बड़ी ज़िम्मेदारी का काम है । ज़िम्मेदारी का ही नहीं, नाज़ुक भी है । इसलिये हमने इस पुस्तक की समालोचना करते समय उस ओर ध्यान नहीं दिया । किंतु हमें कहना पड़ता है कि इस पुम्तक की भाषा बिलकुल दोष-पूर्ण है । यदि हिंदी के द्वारा इतिहास पढ़ाना ध्येय है, तो उस इतिहास की भाषा शुद्ध और सरल होनी चाहिए । इस पुस्तक में कहीं-कहीं तो बँगला-हिंदी मिलेगी, और कहीं-कहीं साधारण भाषा-संबधी अशुद्धियाँ दिखलाई पड़ेंगी । उदाहरण के लिये एक-दो वाक्य उद्धृत करते हैं—"मिहर-उन्निसा बड़ी होने पर वर्द्धवान के फ़ौजदार शेर अफ़गान से उसकी शादी हुई । आख़िर शेर अफ़गान ने बलवा कर दिया और बंगाल के सूबेदार के हाथ मारा गया । उसने उसके बेवे को आगरा रवाना कर दिया ।", "हुमायूँ की चालचलन अजीब तरह की थी ।", "उसका मन लड़कों के बराबर चंचल था ।", "सहसराम में उसकी मक़बरा अभी तक मौजूद है ।", "वह खुद आमदनी व ख़र्च का जाँच करता था ।" मुसलमानों की जीत के कारण गिनाते समय पहला कारण यह बतलाया गया है—"बौद्ध-धर्म की बदौलत मुसलमान लोग युद्ध-विद्या में उन दिनों के हिंदुओं के बनिस्बत चढ़े-बढ़े थे ।" एक कारण यह भी बतलाया गया है—"फ़ौज में हिंदू लोग जाति-विचार मानकर काम करते थे । इसलिये या तो उनको भूखों लड़ना पड़ता था, या 'बारह कनौजिया की तेरह चुल्हीं' बनानी पड़ती थी ।" एक तीसरा कारण हमारी हार का यह भी बतलाया गया है कि "मुसलमान लोग सर्द मुल्कों से आए हुए थे । इसके कारण उनमें सब्र व तेज़ी हिंदुओं के बनिस्बत ज़्यादा होती थी, वे हार जाने पर भी फिर से लड़ने के लिये मुस्तैद हो जाते थे ।" अतएव हमारे विद्यार्थियों को यह निश्चय कर लेना चाहिए कि हम लोग गरम मुल्क में रहने के कारण सर्द मुल्कों से सदा हारते आए हैं, और सदा हारते रहेंगे ! न हममें

उनके समान 'सब्र' ही आ सकता है, और न 'तेज़ी' ही।

हिज्जों के बारे में भी यही कहना है कि वे बंगाली उच्चारण के अनुसार हैं। यथा 'भाइकाउंट' (Viscount) 'फ़र्रुखसियर', 'मशहरी', 'बख़्त'।

तत्कालीन सामाजिक अवस्था का वर्णन इस पुस्तक की एक विशेषता है। किंतु यदि युक्त-प्रांत की तत्कालीन सामाजिक अवस्था का अधिक वर्णन दिया जाता, तो हमारे विद्यार्थियों को अधिक लाभ होता। हमारा विचार है कि बंगाल के कुलीन ब्राह्मणों की उत्पत्ति जानने की अपेक्षा हमारे विद्यार्थियों को अपने प्रांत की अन्य संस्थाओं का हाल जानना अधिक आवश्यक है।

श्रीनारायण चतुर्वेदी

× × ×

२. काव्य

साहित्य-विहार—लेखक, श्रीयुत वियोगी हरि। प्रकाशक, साहित्य-भवन लिमिटेड, प्रयाग। पृष्ठ-संख्या १६०; कागज़ और छपाई सुंदर; मूल्य |||=); प्रकाशक से प्राप्त।

इस पुस्तक में (१) साहित्य-माधुरी, (२) भक्तों के व्यंग्य, (३) रँगीले भाव, (४) आँख और हिंदी-कवि, (५) सच्चा मनोराज्य, (६) व्रज-मंडल, (७) शिव-सूक्तियाँ, (८) अध्यात्म और भक्ति, (९) साहित्यिक चंद्रमा, (१०) मनमौजी कवि तथा (११) गोपनीय नाम के ११ निबंध हैं। शीर्षकों द्वारा सूचित विषयों पर भिन्न-भिन्न कवियों ने जो कविताएँ की हैं, उनमें से लेखक ने अपनी पसंद की रचनाओं पर आलोचनात्मक निबंध लिखे हैं। अधिकांश कविताएँ हिंदी के पुराने कवियों की हैं; पर नवीन कवियों का बहिष्कार नहीं किया गया है। इनमें के कई निबंध 'मर्यादा' और 'सम्मेलन-पत्रिका' में भी निकल चुके हैं। यह पुस्तक श्रीयुत पं० राधाचरणजी गोस्वामी को समर्पित हुई है, और इसका उपोद्घात श्रीयुत पं० जगन्नाथप्रसादजी चतुर्वेदी ने लिखा है।

श्रीयुत वियोगी हरिजी पुरानी हिंदी-कविता के अच्छे भक्त हैं। वह स्वयं भी व्रजभाषा में कविता करते हैं। व्रजभाषा के प्रति उनका यह अनुराग प्रशंसनीय है। इस पुस्तक में जिस प्रकार के निबंध संगृहीत हैं, उनसे इस समय के पाठकों में व्रजभाषा-कविता की ओर रुचि उत्पन्न की जा सकती है। हमारा अनुमान है कि ऐसे निबंधों के लिखने में वियोगी हरिजी का उद्देश्य भी यही है, और उसमें वह प्रायः सफल भी हुए हैं। हरिजी की लेख-शैली मनोरंजक है; परंतु आलोचनात्मक निबंधों के अनुरूप गंभीरता का कहीं-कहीं उसमें अभाव है। कविताओं के चुनाव के विषय में भी मत-भेद की गुंजाइश है। आँखवाले निबंध को यदि मैं लिखता, तो उसमें नीचे लिखा छंद कभी न देता—

मीन सम थर्थरात उघर दुरत कच्छ,
वामन मन हरिबे तें निहचै हेरे हैं;
नैकु न निहारैं हिय फारत बराह-सम,
अरिबे में परसुराम फिरत न फेरे हैं।
तीखन नृसिंह-नख, बोधक अबोलिबे तें,
तारिबे तें राघव 'गुलाब' चित्त नेरे हैं;
मोहिबे ते मोहन यों कलंकी हैं निष्कलंक,
दसौ अवतार किधौं राधे, नैन तेरे हैं।

इस छंद की शब्द-योजना अच्छी नहीं है। वह शिथिल-बंध दोष से दूषित है। दूसरे पद में ३२ अक्षर होने से छंदोभंग है। नेत्रों में दशावतार का स्थापन किसी अच्छे ढंग से नहीं किया गया।

× × ×

भाषा-भूषण—रचयिता, जोधपुर-नरेश महाराज यशवंतसिंह। संपादक, काशी-नागरीप्रचारिणी सभा के मंत्री श्रीयुत बाबू व्रजरत्नदास। प्रकाशक, श्रीरामचंद्र पाठक, व्यवस्थापक, पाठक ऐंड संस, राजा दरवाज़ा, काशी। इसी पते से प्राप्त। पृष्ठ-संख्या १०० के लगभग। कागज़ और छपाई बढ़िया।

हिंदी-कविता का यह परम सौभाग्य रहा है कि इसके सेवकों में सदा से बड़े-बड़े राजों-महाराजों की गणना होती आई है। मारवाड़ के स्वामी तथा दिल्लीश्वर के दाहने हाथ महाराज यशवंतसिंह को कौन नहीं जानता। आप जैसे शूर-शिरोमणि और शासन-कार्य में कुशल थे, वैसे ही साहित्य पर भी आपका अगाध प्रेम था। आप कवियों के कल्पवृक्ष तो थे ही, किंतु स्वयं एक अच्छे साहित्य-मर्मज्ञ और प्रतिभा-पूर्ण कवि भी थे। आपने अलंकार-शास्त्र पर 'भाषा-भूषण' नाम का एक उत्कृष्ट ग्रंथ लिखा था। प्रस्तुत पुस्तक उसी का एक सुसंपादित संस्करण है। इसका संपादन प्रसिद्ध साहित्य-सेवी श्रीयुत व्रजरत्नदासजी ने किया है। संपादन का क्रम इस प्रकार है—प्रारंभ में आपने प्रायः १९ पृष्ठ की एक भूमिका दी है।

यह भूमिका (१) शब्द-शक्ति, (२) अलंकार, (३) ग्रंथ-परिचय, (४) कवि-परिचय, तथा (५) विनीत निवेदन-नामक पाँच शीर्षकों में विभक्त है। इनमें ग्रंथ और ग्रंथकार के संबंध की प्रायः सभी बातें आ गई हैं। इसके बाद विषय-सूची है, और फिर २९ पृष्ठों में मूल ग्रंथ। फ़ुटनोटों में पाठांतर तथा भिन्न-भिन्न प्रतियों में मिलनेवाले अतिरिक्त दोहे दिए गए हैं। ३०वें पृष्ठ से टिप्पणियों का प्रारंभ होता है, और ६७वें पृष्ठ पर वे समाप्त हो जाती हैं। इनमें शब्दार्थ, भावार्थ एवं लक्षणों का स्पष्टीकरण है। सबके अंत में १४ पृष्ठ की एक अनुक्रमणिका भी दी गई है। इसमें जो नाम आए हैं, उनके पर्यायवाची अँगरेज़ी-शब्द भी दे दिए गए हैं।

भाषा-भूषण का यह संस्करण अच्छा निकला है। संपादक महोदय ने इसे सुबोध बनाने के लिये पर्याप्त श्रम किया है। टिप्पणियों में तथा भूमिका में भी कई ऐसे स्थल हैं, जहाँ हमारा और संपादकजी का मत नहीं मिलता। पर उन सब पर यहाँ प्रकाश डालने के लिये पर्याप्त स्थान नहीं है। फिर भी एक उदाहरण देना अनुचित न होगा। मूल ग्रंथ में विप्रलब्धा नायिका के विषय में पृष्ठ २, छं० नं० १६ में लिखा है—

"बिनु पाए संकेत पिय बिप्रलब्ध तन-ताप।"

इसी विप्रलब्धा के संबंध में संपादक महोदय ने ३२ पृष्ठ पर जो टिप्पणी लिखी है, उसमें आप कहते हैं "विप्रलब्ध—जिसका पति कहीं सबेरे जानेवाला हो।" हमें संपादकजी की इस टिप्पणी पर आपत्ति है।

कृष्णविहारी मिश्र

× × ×

३. दर्शन-शास्त्र

श्रीकृष्ण-विज्ञान (अर्थात् श्रीमद्भगवद्गीता का हिंदी-पद्यानुवाद)—अनुवादक, श्रीयुत पुरोहित रामप्रतापजी तालीमी सरदार और मेंबर कौंसिल जयपुर। सचित्र। पृष्ठ-संख्या १७८। मूल्य १।|) ; छपाई-सफ़ाई सुंदर। काग़ज़ की जिल्द। प्रकाशक, श्रीपारीकहितकारिणी सभा, जयपुर।

यों तो हिंदी में श्रीमद्भगवद्गीता के कितने ही गद्य-पद्यमय अनुवाद प्रकाशित हो चुके और हो रहे हैं, किंतु प्रस्तुत अनुवाद अपने ढंग का निराला ही है। इतना सरस, सरल, सुंदर और शुद्ध अनुवाद अभी तक हमने नहीं देखा था। क्या भाषा की दृष्टि से, क्या कविता की दृष्टि से, और क्या अनुवाद की दृष्टि से यह अनुवाद अत्यंत सुंदर हुआ है। भाषा बोलचाल की है, और किसी विशेष मत की पुष्टि करने के लिये अर्थ तोड़ा-मरोड़ा नहीं गया। पुरोहितजी हिंदी-संसार में सर्वथा अपरिचित नहीं हैं। यह बड़े संतोष और आनंद की बात है कि उनके समान महानुभावों में भी विद्या-व्यसन और हिंदी-प्रेम इतनी अधिकता के साथ विद्यमान है। ये बड़े ही शुभ लक्षण हैं।

हमने यह अनुवाद कई बार पढ़ा, बड़े ध्यान से पढ़ा। अंत में हमें यही कहना पड़ता है कि इस अनुवाद के करने में अनुवादक को बड़ी सफलता प्राप्त हुई है। उदाहरण के लिये हम कुछ पद्य उद्धृत करते हैं—

मूल—ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति ;
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया। (१८,६१)

अनुवाद—

अर्जुन ! ईश्वर सब भूतों को ,
रहकर हृदयदेश में गूढ़ ;
घुमा रहा है निज माया से ,
मानो करके यंत्रारूढ़।

मूल—मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु ;
मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे।
सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ;
अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।

अनुवाद—

मुझमें मन दे, मुझको भज, कर
मेरा यजन तथैव प्रणाम ;
मुझको होगा प्राप्त सत्य मैं
कहूँ मुझे तू है अभिराम !
सब धर्मों को तजकर आ जा
शरण एक मेरी बेरोक ;
मैं तुझको सारे पापों से
मुक्त करूँगा, मत कर शोक।

अधिक उदाहरण देने की आवश्यकता नहीं है। इतने ही से पाठकों को विदित हो जायगा कि यह अनुवाद किस श्रेणी का है। पद्य होने पर भी यह अनुवाद बहुत-से गद्य-अनुवादों से भी सरल और स्पष्ट है।

इस पुस्तक में (अनुवाद में नहीं) यह बड़ा दोष है कि इसका मूल्य इतना अधिक है कि उसके कारण यह सर्वसाधारण की पहुँच से बाहर-सा हो गया है। पुरोहित-

जी ने हमें विश्वास दिलाया है कि वह अगले संस्करण में इस बात का ध्यान रक्खेंगे। श्रीकृष्णजी का चित्र भी, जो आरंभ में दिया गया है, सुंदर नहीं है। उसके भी बदलने की आवश्यकता है। किंतु पाठकों से हम अनुरोध करेंगे कि यदि उन्हें श्रीमद्भगवद्गीता से प्रेम है, तो मूल्य का ख़याल न करके इस पुस्तक की एक प्रति अपने पास अवश्य रक्खें।

श्रीनारायण चतुर्वेदी

× × ×

४. जीवनचरित

गोस्वामी तुलसीदासजी—लेखक, पं० रामचंद्र शुक्ल। प्रकाशक, नागरीप्रचारिणी सभा, काशी। पृष्ठ-संख्या २४१; मूल्य १॥); सजिल्द। आरंभ में गोस्वामीजी का रंगीन चित्र।

यह पुस्तक दो भागों में विभक्त है—१—जीवन-खंड और २—आलोचना-खंड। पहले खंड में गोस्वामीजी की जीवन-संबंधी सभी बातें आ गई हैं। इस संबंध में जो सामग्री प्राप्य है, उस सभी का उपयोग किया गया है। मीराबाई के पत्र के संबंध में जो प्रचलित आख्यायिका है, उसका खंडन ठीक ही किया गया है। गोस्वामीजी के मित्र टोडरमल के संबंध में सर जॉर्ज ग्रियर्सन की सम्मति है कि वह अकबर के प्रसिद्ध मंत्री राजा टोडरमल थे। बा० श्यामसुंदरदासजी ने, कुछ दिन हुए, इसका खंडन किया था। इस पुस्तक में भी बाबू साहब के तर्कों को दुहराया गया है। यह बात प्रमाणित करने के लिये कि राजा टोडरमल गोस्वामीजी के मित्र टोडरमल से भिन्न थे, राजा टोडरमल की मृत्यु-तिथि और तुलसीदासजी के काशी-निवास के समय की तिथि दे देना ही पर्याप्त था। पुस्तक में गोस्वामीजी के चमत्कारों का भी हाल लिखा गया है। बीसवीं सदी में चमत्कारों के बारे में मत प्रकाशित करना बड़े साहस का काम है। किंतु बंदरों द्वारा शाहीकोट का नष्ट होना किसी तत्कालीन इतिहास में नहीं पाया जाता। मुग़ल इतिहास-लेखक ऐसी अनोखी बात अपनी पुस्तकों में न लिखते, यह कठिन मालूम पड़ता है। बात यह है कि जिस प्रकार नीम में रुई के उत्पन्न करने का श्रेय गांधीजी को दिया गया था, उसी प्रकार भोले-भाले लोग सुनी-सुनाई और कल्पनातीत बात को किसी-न-किसी के माथे मढ़ दिया करते हैं।

आलोचना-खंड अधिक योग्यता और खोज के साथ लिखा गया है; किंतु उसमें गोस्वामीजी ने अपनी कृतियों के लिये जिस सामग्री का उपयोग किया था, उसके ऊपर एक स्वतंत्र अध्याय की आवश्यकता थी। लेखक महोदय की राय में "गोस्वामीजी द्वारा प्रस्तुत नव रसों का राम-रसायन ऐसा पुष्टिकर हुआ कि उसके सेवन से हिंदू-जाति विदेशीय मतों के आक्रमणों से भी बहुत कुछ रक्षित रही, और अपने जातीय स्वरूप को और भी दृढ़ता से पकड़े रही।" हम यह मानने को तैयार हैं कि गोस्वामीजी ने हिंदी-भाषा-भाषी लोगों में भगवान् राम के प्रति इधर दो-तीन शताब्दियों में अपूर्व भक्ति उत्पन्न कर दी है। किंतु हम लेखक के उपर्युक्त मत से सहमत नहीं हो सकते। हिंदू-जाति विदेशीय मतों के आक्रमणों से अपने को गोस्वामीजी के जन्म से बहुत पहले ही से बचा रही थी, और उसमें सफल भी हो चुकी थी, फिर हिंदू-जाति केवल हिंदी-भाषा-भाषी लोगों ही में परिमित नहीं है। महाराष्ट्र, गुजरात, बंगाल आदि में भी हिंदू-जाति वर्तमान है। जिस शक्ति ने हिंदू-जाति का अस्तित्व बचाए रक्खा है, वह शक्ति है हिंदू-धर्म के सिद्धांत। गोस्वामीजी होते या न होते, हिंदू-जाति विदेशीय मतों के आक्रमणों से अपनी रक्षा करने में सदा समर्थ है।

गोस्वामीजी की उदारता पर जितना ज़ोर देना चाहिए था, उतना ज़ोर नहीं दिया गया, वास्तव में गोस्वामीजी की विशेषता यही है कि उनकी दृष्टि बहुत ही उदार है। वह किसी को दोष नहीं देते। कैकेयी का दोष नहीं, मंथरा का दोष था। उसका भी नहीं; क्योंकि सरस्वती उसकी जीभ पर जा बैठी थीं। सरस्वती का भी दोष नहीं; क्योंकि देवतों की ऐसी ही आज्ञा थी। देवता भी दोष-भागी नहीं; क्योंकि वे लाचार थे। इसी प्रकार रावण तक के लिये उनके हृदय में उदारता मौजूद है।

पुस्तक अच्छी है। आशा है, इसका उचित सत्कार होगा।

श्रीनारायण चतुर्वेदी

× × ×

५. फुटकल

भारतीय राजस्व (ब्रिटिश भारत के सरकारी आय-व्यय का विवेचन)—लेखक, श्रीयुत भगवानदास केला। अध्यापक, प्रेम-महाविद्यालय, वृंदावन। लेखक ही से प्राप्य। पृष्ठ-संख्या २१४+१६।

इस पुस्तक में दस अध्याय हैं। पहले तीन अध्यायों में राजस्व, राज्य के कर्तव्य, कर के सिद्धांत, करों के भेद आदि सिद्धांत-संबंधी विषयों को समझाकर भारतीय राजस्व को समझने के लिये पाठक को आरंभिक मसाला दिया गया है। इसके बाद भारतीय राजस्व-प्रणाली का वर्णन किया गया है। केंद्रीय और प्रांतीय आय-व्यय के ऊपर अलग-अलग अध्याय हैं। पुस्तक अच्छे ढंग से लिखी गई है, और राजस्व-विषय के बारे में जानकारी प्राप्त करने की इच्छा रखनेवालों के लिये आरंभ में अच्छा काम देगी। राजस्व (किसी राष्ट्र का आय-व्यय) राष्ट्रीय दृष्टि से बड़े महत्त्व का विषय है; क्योंकि सारी राष्ट्रीय उन्नति राष्ट्र की आय और उसके व्यय के ढंग पर निर्भर रहती है। हमारे देश में इस विषय के समझनेवाले बहुत ही कम हैं। सच बात तो यह है कि प्रांतिक कौंसिलों और असेंबली के सदस्यों में भी इस विषय में दिलचस्पी रखने और इसे समझनेवाले लोगों की संख्या बहुत ही परिमित है। परिणाम यह होता है कि बजट के समय उसकी बारीकियों का उचित ढंग से समझना मुश्किल हो जाता है, और साधारण सिद्धांत-संबंधी बहस के सिवा बजट के असली मामलों पर बहुत कम बहस हो पाती है। राजस्व में हिंदोस्तानियों की कितनी गति है, या उन्हें इस विषय में निपुणता प्राप्त करने का कितना मौक़ा मिलता है, इसका अनुमान इसी से किया जा सकता है कि भारतीय और प्रांतिक सरकारों ने राजस्व-सचिव (Finance member) के पद के योग्य अभी तक एक भी हिंदोस्तानी को नहीं समझा। जो विषय भारतीयों के सुपुर्द कर दिए गए हैं, उनकी उन्नति के लिये रुपए की कुंजी राजस्व-सचिव ही के पास रहती है। अतएव जब तक इस भारतीय राजनीतिक विषय का अध्ययन विशेष रूप से नहीं करते, तब तक वे राजस्व के ऊपर विशेष प्रभाव नहीं डाल सकते। सर्वेंट ऑफ़ इंडिया सोसाइटी आदि अन्य इसी प्रकार की संस्थाओं को चाहिए कि जिन विद्यार्थियों की इस विषय की ओर रुचि हो, उन्हें इस विषय का विशेष अध्ययन कराके विशेषज्ञ तैयार करें।

किंतु इस विषय का थोड़ा-बहुत ज्ञान सभी पढ़े-लिखे लोगों को होना आवश्यक है। प्रस्तुत पुस्तक हिंदी-भाषा में अपने विषय की पहली ही है, और रोचक तथा सरल भाषा में लिखी गई है। अतएव इस विषय का ज्ञान फैलाने के लिये लाभदायक है।

अंतिम अध्याय में आर्थिक स्वराज्य के ऊपर ६ पृष्ठ लिखे गए हैं। यह एक ऐसा विषय है कि इस पर अधिक कहना केवल पिष्ट-पेषण करना है। अवश्य ही आर्थिक स्वराज्य हमारे लिये इस समय राजनीतिक स्वराज्य से भी अधिक आवश्यक है। भारतवर्ष का व्यय जिस उत्तरदायित्व-हीन ढंग से होता है, उसका बंद होना तब तक असंभव है, जब तक हमें आर्थिक स्वराज्य न प्राप्त हो जाय।

पुस्तक में अंक आदि देकर लेखक ने उसे अधिक उपयोगी बना दिया है। किंतु इसमें छपाई की अशुद्धियां अधिक हैं, और स्थान-स्थान पर भाषा की शिथिलता देख पड़ती है। हिज्जों की अशुद्धियाँ अधिक खटकती हैं। किंतु इससे पुस्तक की उपयोगिता में अधिक कमी नहीं पड़ी। यह इस योग्य है कि सम्मेलन आदि की परीक्षाओं में इसे स्थान दिया जाय।

श्रीनारायण चतुर्वेदी

× × ×

भारतीय शासन—चौथा संस्करण। लेखक और प्रकाशक, श्रीभगवानदास केला। पृष्ठ-संख्या ११२। मूल्य ॥=); छपाई साधारण! मिलने का पता—भारतीय ग्रंथमाला, वृंदावन।

इस राजनीतिक युग में, जब कि प्राणि-मात्र के हृदय में स्वराज्य की अभिलाषाएँ उठ रही हैं, यह आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य है कि हम अपने देश की शासन-पद्धति से भली भाँति परिचित हों। जब तक हमें यह न मालूम हो कि इस पद्धति में क्या-क्या बुराइयाँ हैं, उनके सुधार की क्या-क्या योजनाएँ हैं, और शासन के किन-किन अंगों के परिवर्तन से हमारा यथेष्ट कल्याण होगा, हम स्वराज्य के आंदोलन में पूरे उत्साह से सम्मिलित नहीं हो सकते। इस पुस्तक से हमें इस विषय की कितनी ही बातें मालूम हो सकती हैं—ब्रिटिश साम्राज्य का शासन, पार्लियामेंट, प्रिवी कौंसिल, भारत-सरकार, भारतीय व्यवस्थापक मंडल, प्रांतिक सरकार, देसी रियासतें, भारतीय शासन के विभाग—इन सभी विषयों की विवेचना की गई है। पुस्तक अप-टु-डेट है। नए सुधारों का ज़िक्र भी किया गया है, और उसके दोष स्पष्ट रीति से दिखाए गए हैं। लेखक ने केवल इन

संस्थाओं की चर्चा ही नहीं की, उनके विषय में अपनी राय भी दे दी है। 'इंडिया कौंसिल' से साधारणतः लोग अनभिज्ञ हैं। लेखक ने उसका विस्तार से वर्णन किया है। आपकी यह राय है कि इंडिया कौंसिल की कोई ज़रूरत नहीं। जब उपनिवेशों के सेक्रेटरी को किसी कौंसिल की ज़रूरत नहीं, तो भारत के सेक्रेटरी को ४० लाख वार्षिक ख़र्च करके एक कौंसिल रखने की क्या ज़रूरत! पुस्तक उन लोगों के लिये बहुत उपयोगी है, जो राजनीति में प्रारंभिक ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं। पंडित दयाशंकर दुबेजी ने इसकी भूमिका लिखी है। भाषा सुबोध है।

× × ×

स्वाधीनता के पुजारी—लेखक, श्रीभूदेव विद्यालंकार। प्रकाशक, प्रताप कार्यालय, कानपूर। पृष्ठ-संख्या २२४। मूल्य १।); काग़ज़ और छपाई साधारण अच्छी।

इस पुस्तक में रूस के १० प्रधान देश-भक्तों की वीर-कथा का संग्रह किया गया है। उनमें कई स्त्रियाँ हैं, कई राजकुमार हैं, कई ऊँचे राज्य-कर्मचारी हैं। इन वीरों ने कितनी दिलेरी से कड़ी-से-कड़ी यातनाएँ झेलीं, देश-भक्ति की वेदी पर कितने प्रफुल्ल विश्वास और अदम्य उत्साह से अपने को बलिदान किया, यह पढ़कर उन वीरात्माओं के प्रति हृदय में श्रद्धा की लहरें-सी उठने लगती हैं। स्वाधीनता की देवी से वरदान पाना कितना कठिन है, इसका अनुमान इन चरित्रों के देखने से हो सकता है। पुस्तक सचित्र है, १३ हाफ़टोन चित्र दिए गए हैं। वर्णन-शैली चित्ताकर्षक है, और बाज़-बाज़ चरित्रों में तो उपन्यासों से कहीं अधिक आनंद आता है।

× × ×

इल्मुल अर्ज़—लेखक, श्रीनत्थनलाल गुप्त। प्रकाशक, कालीचरण स्टोर्स, बुकसेलर, लोअर बाज़ार, शिमला। मूल्य २); पृष्ठ-संख्या ३०२।

यह भूगोल की उर्दू-पुस्तक है। ये लेख पहले लाहौर की वैज्ञानिक उर्दू पत्रिका 'रोशनी' में निकले थे। अब कुछ काट-छाँटकर उन्हें पुस्तक का रूप दे दिया गया है। इसमें भूगोल के उस भाग का वर्णन किया गया है, जो गणित से संबंध रखता है। पृथ्वी की वार्षिक गति, वायु-मंडल, पृथ्वी का आकार, सूर्य-रेखा आदि विषय रोचक और सरल भाषा में खोज के साथ लिखे गए हैं। हमारे ख़याल में यदि कोई स्कूल इस विषय को उर्दू-भाषा में पढ़ाने का निश्चय करे, तो उसे उपर्युक्त पुस्तक के अभाव की शिकायत न करनी पड़ेगी। इस पुस्तक में भूगोल के इस भाग की वे सभी बातें लिख दी गई हैं, जो कोर्स की साधारण अँगरेज़ी-पुस्तकों में नहीं मिल सकतीं। जहाँ कहीं ज़रूरत पड़ी है, लेखक ने चित्रों और नक़्शों से भी काम लिया है। छपाई इससे बहुत अच्छी हो सकती थी। इस पुस्तक में यह विशेषता है कि लेखक ने अपने विषय को ख़ूब स्पष्ट करके समझाया है, और शंकाओं का भी दलीलों से समाधान करने की चेष्टा की है, जिसमें वह बहुत सफल हुए हैं। अब तक हमने हिंदी में ऐसी कोई पुस्तक नहीं देखी।

धनपतराय

× × ×

मेरी जर्मन-यात्रा—लेखक, स्वामी सत्यदेवजी परिव्राजक। प्रकाशक, मैनेजर सत्यग्रंथमाला-ऑफ़िस, अल्मोड़ा। डबल क्राउन सोलहपेजी आकार। काग़ज़ अच्छा, छपाई साधारण। पृष्ठ-संख्या २२४। मूल्य एक रुपया।

स्वामी सत्यदेवजी एक सच्चे परिव्राजक संन्यासी हैं, जिन्होंने देश और हिंदी-साहित्य की सेवा के लिये अपना सर्वस्व त्याग दिया है। आपने पहले अमेरिका की यात्रा करके अपने अमेरिका-संबंधी अनुभव पर कई पुस्तकें लिखी थीं। हिंदी-साहित्य में उनका अच्छा स्थान है। अब आपने अपनी जर्मन-यात्रा पर यह सुंदर पुस्तक लिखकर यात्रा-विषयक साहित्य में एक और उत्तम ग्रंथ की वृद्धि की है। हिंदी-साहित्य में यात्रा-वर्णन की जो थोड़ी-सी पुस्तकें निकली हैं, उनमें बाबू शिवप्रसादजी गुप्त की "पृथ्वी-प्रदक्षिणा"-नामक पुस्तक सचित्र और सुंदर होने के कारण सर्वांगपूर्ण कही जा सकती है, यद्यपि पृथ्वी के संपूर्ण देशों का वृत्तांत उसमें न आने के कारण उसका नाम "पृथ्वी-प्रदक्षिणा" सार्थक नहीं जान पड़ता। जो हो, स्वामी सत्यदेवजी की यह जर्मन-यात्रा भी एक बड़े मार्के की पुस्तक है, और हिंदी-साहित्य के यात्रा-संबंधी ग्रंथों में इसको भी एक अच्छा स्थान मिलेगा।

इस पुस्तक में स्वामीजी ने बर्लिन-प्रवासी भारतीय देश-भक्तों की बहुत ही रोचक कहानियाँ लिखी हैं; और साथ ही देश-द्रोही भारतीय जासूसों का भी अच्छा भंडा-

फोड़ किया है। युद्ध के बाद जर्मनी की जो दरिद्रता-पूर्ण दयनीय दशा हुई, उसका भी आपने अच्छा चित्र खींचा है। बर्लिन के सुंदर भव्य दृश्यों, जर्मनों की परम प्यारी राइन-नदी की नैसर्गिक छटा इत्यादि विषयों का भी मनोरंजक वर्णन किया है। जर्मनी के साथ-साथ आपने फ़्रांस के प्रसिद्ध नगर पेरिस, स्वीडन के स्टाकहोलम, इटली के रोम, आस्ट्रिया के वियना इत्यादि नगरों का भी भ्रमण किया था। अतएव इन स्थानों की भी सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक बातों का भी आपने बहुत ही उपदेशप्रद और मनोरंजक वर्णन किया है। लाला हरदयालजी से स्वीडन में आपका जो पत्र-व्यवहार हुआ था, उससे भी लालाजी के संबंध की बहुत-सी बातें मालूम होती हैं। लालाजी हिंदी-साहित्य की सेवा के लिये बहुत उत्सुक हैं; परंतु आपको अभी तक भारत के किसी भी हिंदी-प्रकाशक ने किसी प्रकार की उत्तेजना नहीं दी। स्वीडन का लालाजी का पता भी इस पुस्तक में दिया हुआ है। हिंदी के प्रकाशकों को लालाजी से पत्र-व्यवहार करके लाभ उठाना चाहिए। अस्तु।

पुस्तक के अंत में स्वामीजी ने सिंहावलोकन-नामक एक बहुत ही उपयोगी अध्याय जोड़ दिया है, जिसमें आपने योरप के ख़ास-ख़ास सद्गुणों की विवेचना की है, और यह बतलाया है कि हमारे देश के लोग उनके उत्तम सद्गुणों से किस प्रकार लाभ उठा सकते हैं। भारतवासियों ने अभी तक योरपियन सभ्यता के दुर्गुणों का ही अनुकरण किया है, उनके सद्गुणों की ओर उन्होंने लापरवाही दिखलाई है। यह बात स्वामीजी ने स्पष्ट रूप से प्रकट कर दी है। स्वामीजी के यात्रा-वर्णन की विशेष खूबी यह है कि आप भारतीय दशा से योरपियन सामाजिक दशा की जगह-जगह तुलना भी करते गए हैं। अतएव पाठकगण इस पुस्तक को पढ़कर अपने देश की दशा सुधारने का बहुत कुछ प्रयत्न कर सकते हैं। हम ऐसी उत्तम पुस्तक हिंदी-साहित्य को भेंट करने के लिये स्वामीजी को बधाई देते हैं।

× × ×

आदर्शपत्नी—लेखक, श्रीयुत संतरामजी बी० ए०; प्रकाशक, श्रीयुत राजपालजी अध्यक्ष सरस्वती-आश्रम, लाहौर। स्कूली साइज़। कागज़ और छपाई-सफ़ाई बहुत सुंदर। पृष्ठ-संख्या ६७। मूल्य बारह आने।

पंजाब के हिंदी-लेखकों में श्रीयुत संतरामजी आजकल हिंदी-साहित्य की बहुत अच्छी सेवा कर रहे हैं। आपने यह स्त्रियों के लिये उपयोगी पुस्तक लिखकर गृहस्थ स्त्रियों का बड़ा उपकार किया है; क्योंकि इसमें एक गृहलक्ष्मी के जानने योग्य सभी व्यावहारिक बातों का संक्षेप में वर्णन आ गया है। अर्थ-संबंधी बातें, भार्या के कर्तव्य, पतिव्रत-धर्म, सास, जेठानी, देवरानी और ननद के साथ बर्ताव, भोजन, गृह-प्रबंध, संतान इत्यादि ऐसे अनेक विषय इस पुस्तक में आ गए हैं, जिनको पढ़कर भारतीय नववधुओं को बड़े काम की शिक्षा मिलेगी। एक विशेषता इस पुस्तक में और है। वह यह कि आपने प्राचीन ऋषि-मुनियों के वाक्यों का आधार लेकर पस्तक लिखी है। इससे यह भारतीय स्त्री-समाज के लिये बहुत ही उपयोगी हुई है। परंतु कुछ बातें आपने इसमें पश्चिमी ग्रंथकारों के आधार पर भी लिखी हैं। जैसे सहेलियों के साथ "चिड़ियाघर या अजायबघर देखने चली जाओ", अथवा "अपने विवाह की वर्षगाँठ मनाया करो", अथवा पति की ओर "प्रेमभरी चितवन से...कटाक्ष करना या अचानक उसके कंधे पर हाथ रख देना" इत्यादि ऐसी बातें हैं, जिनसे शायद यहाँ का समाज सहमत न हो। इसके सिवा स्त्रियों का पति से नमस्ते कहना भी शायद आर्य-समाज के ही क्षेत्र में प्रचलित हो। भारतीय प्राचीन परिपाटी कुछ दूसरी ही है, और उसमें स्त्रियाँ पति के चरणों पर मस्तक रखती हैं। इन पंक्तियों के लेखक का भी यही अनुभव है।

अस्तु। भाषा-संबंधिनी भी कई त्रुटियाँ इस पुस्तक में रह गई हैं—जैसे "भली भाँति समझने के बिना" (पृष्ठ १५), "अपनी-अपनी मरज़ी करते रहने से" (पृ० १४), "उनकी इच्छानुसार" (पृ० ४७) "वह तुम्हारी वास्तविक तक़लीफ़ों को बँटाने की आशा * रखता है" (पृ० ६७), "पति के प्रिय मित्रों का भोजन करो" (पृ० ७२) इत्यादि प्रयोग बिलकुल अशुद्ध हैं। इसी प्रकार कुछ ऐसे कठिन तथा प्रांतीय शब्द भी इस पुस्तक में आ गए हैं, जिनको साधारण स्त्रियाँ नहीं समझ सकतीं। हमारी राय है कि स्त्रियों के लिये जो पुस्तकें लिखी जायँ, उनकी भाषा बहुत ही सरल, बामुहावरा

---

* इच्छा अथवा अभिलाषा के अर्थ में।

होनी चाहिए, और उनके भाव भी बहुत शुद्ध होने चाहिए।

उपर्युक्त त्रुटियों के होते हुए भी यह पुस्तक स्त्रियों के लिये बहुत उपयोगी है। प्रकाशक महाशय ने ९७ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य ॥।) रख दिया है ! यद्यपि इस पुस्तक की छपाई-सफ़ाई और काग़ज़ बहुत उत्तम है, तथापि स्त्रियों में पुस्तक का प्रचार होने के लिये जहाँ तक हो सके, मूल्य भी कम ही रखना चाहिए। फिर भी हम अपनी पढ़ी-लिखी बहनों से इसे पढ़ने की सिफ़ारिश करते हैं ; क्योंकि इस पुस्तक की अनेक शिक्षाएँ उनके लिये बहुत ही हितकारी सिद्ध होंगी।

लक्ष्मीधर वाजपेयी

× × ×

६. क़ानून

(१) डिस्ट्रिक्ट बोर्ड ऐक्ट—अनुवादक, बाबू प्रतापनारायण वकील, बी० ए०, एल्-एल् बी०। पृष्ठ-संख्या १६०। छपाई-काग़ज़ साधारण। मूल्य २)

(२) गाँवों का पंचायत-ऐक्ट—अनुवादक, बाबू प्रतापनारायण वकील, बी०ए०, एल्-एल्०बी०। पृष्ठ-संख्या ९४। छपाई-काग़ज़ साधारण। मूल्य ॥)

(३) अवध रेंट-ऐक्ट—अनुवादक, पं० माधवप्रसाद मिश्र साहित्य-भूषण। पृष्ठ-संख्या ८२। छपाई-काग़ज़ साधारण। मूल्य ॥=)

(४) संयुक्त-प्रांतीय म्युनिसिपलिटीज़-ऐक्ट—अनुवादक, बाबू ब्रजेशबहादुर बी० ए०, एल्-एल्० बी०। सजिल्द। पृष्ठ-संख्या ४६८। छपाई और काग़ज़ कुछ अच्छा। मूल्य ८)

उपर्युक्त चारों पुस्तकों के प्रकाशक पं० चंद्रशेखरजी शुक्ल हैं। आप कानपूर में—रानीमंडी में—स्थित क़ानून-प्रेस के स्वामी हैं। उसी पते से ये सब पुस्तकें मिल सकती हैं। इन चारों पुस्तकों में से अंतिम पुस्तक अर्थात् म्युनिसिपलिटीज़-ऐक्ट सबसे महत्त्व-पूर्ण है। इसमें भिन्न-भिन्न दफ़ाओं से संबंध रखनेवाले नज़ायरों का अपेक्षित हवाला मौजूद है। इन पुस्तकों में जिस हिंदी का प्रयोग किया गया है, वह न तो प्रचलित साहित्यिक हिंदी है, और न उर्दूमय हिंदोस्तानी, जिसका इन प्रांतों की अदालतों में पूरा दौरदौरा है। साहित्यिक विशुद्ध हिंदी और उर्दूमय अदालती हिंदोस्तानी के बीच में की कोई भाषा इन अनुवादों की भाषा है। भाषा-संबंधी विकारों को छोड़कर अनुवाद प्रायः शुद्ध है। जब तक वर्तमान सरकारी क़ानून प्रचलित है, तब तक सर्वसाधारण को उसका ज्ञान रखना ही होगा। उपर्युक्त अनुवादों से तादृश ज्ञान का सर्वसाधारण में प्रचार बहुत कुछ संभव है, इसलिये हम चाहते हैं कि लोग इन पुस्तकों को पढ़ें, और बिना अँगरेज़ी जाने और वकालत की परीक्षा पास किए भी क़ानूनी दाँव-पेंचों से बचें, अथवा उनसे लाभ उठावें।

× × ×

नरेंद्र-हिंदू-ला—लेखक, पं० हरिकृष्ण रतूड़ी। प्रकाशक, नवलकिशोर-प्रेस, लखनऊ। काग़ज़ और छपाई साधारण। मूल्य पुस्तक पर लिखा नहीं है। पृष्ठ-संख्या ९१६। कदाचित् प्रकाशक से प्राप्त।

गढ़वाल में, हिंदुओं में जो रीति-रिवाज प्रचलित हैं, तथा जिनके अनुसार सरकारी अदालतों में मामले होते हैं, उन्हीं के आधार पर यह पुस्तक लिखी गई और अधिकतर गढ़वाल-निवासी हिंदुओं के काम की है। पहाड़ी-प्रदेशों की अदालती भाषा हिंदोस्तानी तथा लिपि देवनागरी है। इस पुस्तक की भाषा भी वही अदालती हिंदोस्तानी है। इसलिये पुस्तक गढ़वाली हिंदुओं के बड़े काम की है।

कृष्णविहारी मिश्र

× × ×

७. पत्र-पत्रिकाएँ

ज़माना (उर्दू मासिक पत्र)—संपादक, मुंशी दयानारायण निगम। वार्षिक मूल्य ५) ; कानपूर से निकलता है।

उर्दू मासिक पत्रिकाओं में कानपूर का 'ज़माना' ही ऐसा है, जो लगभग २५ साल से, लगातार हानि उठाकर, अब तक निकलता चला आता है। इन २५ वर्षों में कितने ही रिसाले धूमधाम से निकले ; लेकिन कोई तो बाल्यावस्था ही में चल बसा, और कोई ज्यों-त्यों करके ५-६ वर्ष चला। यहाँ तक कि लाहौर का 'मख़ज़न' भी, जिसके संपादकों में डॉक्टर सर एक़बाल और मौलाना शेख़ अब्दुलक़ादिर-जैसे नामी सज्जन रह चुके हैं, पाठकों की बेक़दरी का शिकार हो गया। अदीब, कहकशाँ, किस-किसको गिनाएँ। किंतु 'ज़माना' अभी तक सारी विघ्न-बाधाएँ झेलता हुआ उसी पुरानी सज-धज से निकलता

चला आता है। उसके मालिक और संपादक मुंशी दयानारायण निगम के धैर्य और उत्साह की जितनी प्रशंसा की जाय, कम है।

इस वक़्त 'ज़माना' का जनवरी का नंबर हमारे सामने है। इसमें गद्य के १० लेख हैं, और पद्य के ६। पहले लेख में नवाब वाजिदअली शाह के समय के एक कवि की आलोचना की गई है। लेख बड़ी विद्वत्ता और खोज से लिखा गया है। बाबू श्रीनारायण निगम बी० ए० ने स्वर्गीय अनातोले फ्रांस की साहित्यिक चर्चा की है। उन्होंने बहुत ठीक लिखा है। कि "××× एक और बड़ी खूबी यह है कि उसका क़लम ज़माना-सलफ़ व ज़माना-हाज़िर की मुसौवरी पर एक-साँ क़ादिर है"। धनियाँ महरी के नाम से लखनऊ भली भाँति परिचित है। उसके नाम का पुल अभी तक मशहूर है। तीसरे लेख में इसका चरित्र बड़े मनोरंजक ढंग से लिखा गया है। 'जवाहरात आलम' भी दिलचस्प है। पद्य-भाग में उर्दू के लब्ध-प्रतिष्ठ कवियों की ग़ज़लें और कविताएँ दी गई हैं। अंत में वर्तमान राजनीतिक स्थिति पर संपादकीय विचार प्रकट किए गए हैं। संपादक ने लिबरल फ़ेडरेशन के सभापति की वक्तृता की बड़ी निर्भीकता से आलोचना की है। नवीन पुस्तकों की समालोचना और साहित्य-सूचना भी इस पत्रिका की विशेषताएँ हैं। इस अंक की साहित्य-सूचना में हमें यह देखकर बहुत आनंद हुआ कि हमारे मित्र सुदर्शन महाशय को "पंजाब टेक्स्टबुक कमेटी" ने उनकी रचनाओं से प्रसन्न होकर २००) का उपहार दिया है।

माधुरी के पाठकों में से जिन महाशयों को उर्दू-पत्रिकाओं के देखने का शौक़ हो, उनसे हम कहेंगे कि 'ज़माना' से बेहतर उर्दू-पत्रिका आपको नहीं मिल सकती। वार्षिक मूल्य ५) है।

× × ×

८. प्राप्ति-स्वीकार

चित्रमय जगत्—पूने से यह पत्र १५ वर्ष से निकलता है। समालोच्य अंक जनवरी १९२५ का विशेषांक है। इसमें कई सुंदर चित्र और अनेक सुपाठ्य लेख तथा कविताएँ हैं। यदि पर्याप्त प्रोत्साहन मिले, तो यह पत्र हिंदी की बहुत कुछ सेवा कर सकता है। खेद है, हिंदी-संसार इसे उचित रीति से नहीं अपना रहा है। हम पत्र की उन्नति चाहते हैं। मैनेजर, चित्रशाला-प्रेस, पूना से प्राप्य।

अलंकार तथा गुरुकुल-समाचार—यह स्नातक-मंडल गुरुकुल काँगड़ी का मुख-पत्र है। इसके मुख्य संपादक श्रीसत्यव्रत सिद्धांतालंकारजी हैं। समालोच्य छठी संख्या पौष की है। इसके ३२ पृष्ठों में १२ गद्य-पद्य-मय लेख हैं। वार्षिक मूल्य ३) है। कई अच्छे लेख हैं। पत्र होनहार समझ पड़ता है। हम इसकी उन्नति चाहते हैं।

वर्ल्ड-ऐडवर्टाइज़र—इस पत्र के द्वारा विज्ञापन-प्रकाशन का प्रबंध है। यह अँगरेज़ी, गुजराती और हिंदी इन तीन भाषाओं में प्रकाशित होता है। रूप-रंग बहुत अच्छा है। लेख भी अच्छे हैं। वार्षिक मूल्य ३) है। यह १२९ रिचे रोड, अहमदाबाद के पते से मिलता है। हम पत्र की उन्नति चाहते हैं।

द्वितीयवार्षिक रिपोर्ट और ग्रंथ-सूची तथा प्रशस्ति—प्रकाशक, श्रीठाकरसीदास जैन मंत्री, बंबई इसी पते से प्राप्त। यह बहुत ही उपयोगी जैन-संप्रदा के ग्रंथों की सूची है। ऐसी सूचियों से बहुत उपका की संभावना है।

फ्राम डान टू डस्क—भाषा अँगरेज़ी। आका छोटा। लेखक, पं० रामाज्ञा द्विवेदी एम्० ए० (ऑनर्स) कैप्टेनगंज एसोसिएशन, कैप्टेनगंज, बस्ती के पते प्राप्त। पृष्ठ-संख्या ३०। मूल्य पुस्तक पर लिखा नहीं है इस पुस्तक में अँगरेज़ी भाषा में २५ पद्य हैं। कुछ अच्छे हैं।

स्त्री-दर्पण (मासिक पत्र)—संपादिका, श्रीमती कुमारी मेहरोत्रा। वार्षिक मूल्य ३)। स्त्री-दर्पण-कार्याल कानपूर के पते से प्राप्त। इस पत्र को स्त्री-समाज सेवा करते काफ़ी समय हो चुका। अच्छा पत्र है। इसकी विशेष उन्नति चाहते हैं।

स्वयंसेवक—बालिकाओं तथा बालकों का मासिक पत्र। आकार छोटा। काग़ज़ और छपाई साधार पृष्ठ-संख्या ३२। वार्षिक मूल्य १॥≡)

संपादक, माधव। प्रबंधक, 'स्वयंसेवक' दिल्ली के से प्राप्य।

मारवाड़ी अग्रवाल-सभा के सभापति का भाषण—पृष्ठ-संख्या १८। मारवाड़ी अग्रवाल-सभा, रायच से प्राप्य।

श्रीविष्णुप्रियागौरांग स्तवावली—अनुवादक, पं० रामानंद व्याख्यान-विशारद । पृष्ठ-संख्या १६८ । श्रीरामस्वरूप, कटरा, शहनशाही, दिल्ली के पते से प्राप्य ।

पथ-प्रदर्शक—मासिक पत्र । प्रकाशक तथा संपादक, वैद्यराज धर्मदेव । पृष्ठ-संख्या २४ । वार्षिक मूल्य १) ; लाहौर से प्रकाशक के पते पर प्राप्य ।

सुख और शांति के साधन—लेखक, पं० ब्रह्मदत्त मिश्र बी० ए०, अध्यापक गवर्नमेंट हाई स्कूल, अजमेर । पृष्ठ-संख्या ४१ । मूल्य ।=) ; लेखक से प्राप्य । अच्छी पुस्तक है ।

श्राद्ध-गुण-विवरण—अनुवादक, पन्यास सोहन विजय । पृष्ठ-संख्या २६ । मूल्य -)॥; 'मंत्री, श्रीआत्मानंद जैन, ट्रैक्ट सोसायटी, अंबाला' के पते से प्राप्य ।

मनमोहिनी लीला—लेखिका, श्रीमती कृष्णप्यारी । पृष्ठ-संख्या १६ । मूल्य -)

श्यामायन—लेखिका, श्रीमती कृष्णप्यारी । पृष्ठ-संख्या ५० । मूल्य ।); यह पुस्तक तथा 'मनमोहिनी लीला' 'मैनेजर, मतबा तमन्नाई नौबस्ता, लखनऊ' के पते से मिलती हैं ।

श्रीसिद्धाचल तीर्थ के २१ क्षमाश्रमण—पृष्ठ-संख्या ३२ । मूल्य सदुपयोग । श्रीआत्मानंद जैन-सभा लाहौर के पते से प्राप्य ।

सत्य-प्रचारक संस्था—पृष्ठ-संख्या २१ । मूल्य -) श्रीअयोध्याप्रसाद जाखलोन (झाँसी) के पते से प्राप्त ।

शल्यचिकित्सा—लेखक, श्रीअयोध्याप्रसाद 'रत्नाकर', पृष्ठ-संख्या १०० । मूल्य ।-) ; लेखक से जाखलोन (झाँसी) के पते से प्राप्त । अच्छी पुस्तक है ।

वऱ्हाड शालापत्रक—भाषा मराठी । शिक्षा-संबंधी पत्र । संपादक, श्रीगोपाल शिवराम जोगलेकर बी० ए०, एल्-एल्० बी० । इसी पते से अमरावती से प्राप्त ।

हिंदी-भाषा में अँगरेज़ी का बड़ा सामुद्रिक

हस्त-परीक्षा (हिंदीपामिस्ट्री)

यदि आप विना जन्मपत्र के केवल अपने हाथों पर से ही अपनी जिंदगी-भर का संपूर्ण भूत-भविष्य-शुभाशुभ फल जानना चाहते हों, अथवा उत्तम हस्त-परीक्षक बनना, अंट संट भावी फल कहके धोका देनेवाले धूर्तों के प्रपंच से बचना, धंधे-रोज़गार का निर्णय करना, भावी रोगों के हमलों से बचना, कौन किस अधिकार के पद मिलने योग्य है यह जानना, जल-स्थल-यात्रा में से कौन यात्रा होना, सट्टा, लाटरी वग़ैरह से धन मिलना, कब कौन बात होना, इत्यादि अनेक बातें स्पष्ट जानना चाहते हों तो आज ही एक प्रति "हस्त-परीक्षा (हिंदीपामिस्ट्री)" की ख़रीद लीजिए ; जिससे उपर्युक्त सभी बातों का ज्ञान विना किसी गुरु की मदद के आपको अच्छी तरह से हो सकेगा । इस पुस्तक में पाश्चात्य-देशीय समग्र सामुद्रिक-शास्त्र के ग्रंथों का आशय पूर्वीय सामुद्रिक-शास्त्र के साथ तुलना करके सरल हिंदी-भाषा में रेखाओं के अनेक चित्रों-सहित भली प्रकार से वर्णन करने में आया है । हिंदी-भाषा में ऐसी बड़ी परमोपयोगी पुस्तक कहीं भी नहीं छपी होने से धड़ाधड़ बिकी जा रही है । शीघ्रता करो । मूल्य सिर्फ़ ४) है ! आज ही आर्डर दीजिए ।

पता—एस्० एम्० पाठक, राजमहल के पास, रतलाम ।

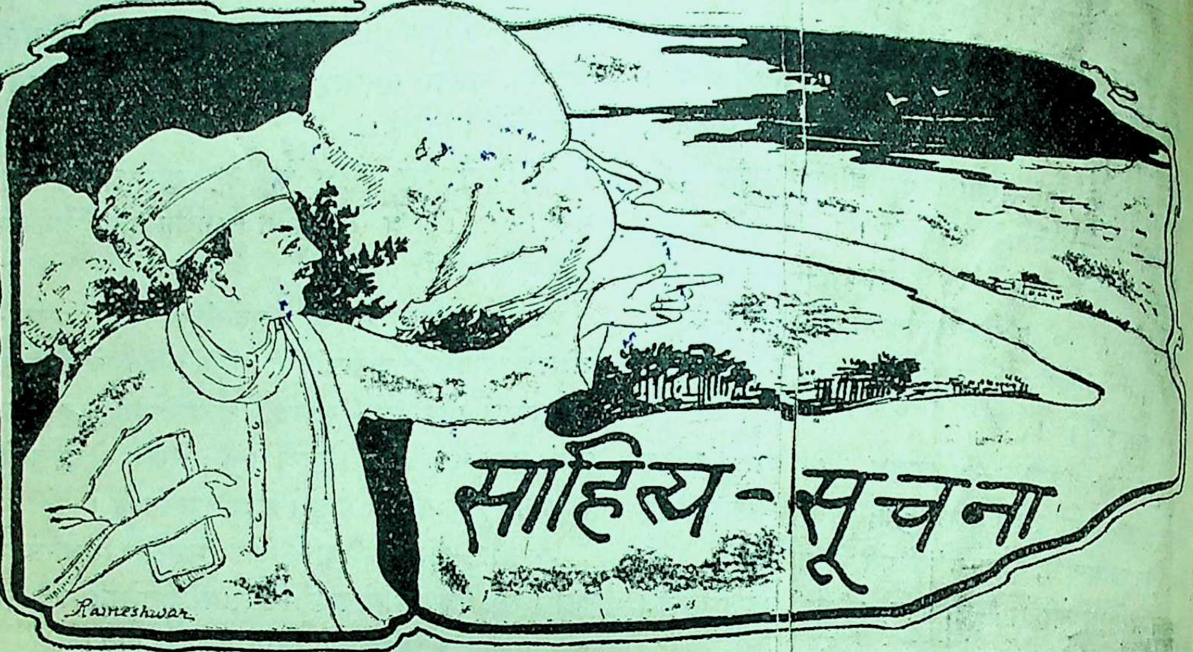

साहित्य-सूचना

इस कॉलम में हम हिंदी-प्रेमियों के सुबीते के लिये प्रति मास नई और उत्तम पुस्तकों के नाम देते रहते हैं। गत मास नीचे लिखी पुस्तकें अच्छी प्रकाशित हुईं—

(१) "गुलदस्तए बिहारी", श्रीदेवीप्रसाद 'प्रीतम' द्वारा बिहारी-सतसई का उर्दू-शेरों में अनुवाद। मू० सादी ॥=), सचित्र १॥)

(२) "साहित्य-परिचय", श्रीयुत पं० रामशंकर त्रिपाठी-लिखित। मू० १)

(३) "भाषा-भूषण", श्रीयुत ब्रजरत्नदास द्वारा संपादित। मू० ॥)

(४) "मार-मारकर हकीम", श्रीयुत जी० पी० श्रीवास्तव-लिखित प्रहसन। द्वितीय बार। मू० १)

(५) "गुरु-शिष्य-सत्संग", श्रीयुत रामकृष्णशरण द्वारा अनुवादित। मू० ॥)

(६) "अंताराष्ट्रिय विधान", श्रीयुत संपूर्णानंद बी० एस्-सी०, एल्० टी० द्वारा लिखित। मू० ३)

(७) "जासूस की डायरी", श्रीयुत कार्त्तिकेयचरण मुखोपाध्याय द्वारा लिखित। मू० १।)

(८) "संस्कृत-बोधोदय", श्रीयुत पंडित देवदत्त त्रिपाठी और पंडित रामदहिन मिश्र द्वारा प्रणीत। मू० ।॥)

(९) "स्वतंत्र होने का सहज उपाय", श्रीयुत राधाकृष्ण गुप्त-लिखित। मू० २), रेशमी जिल्द २॥)

(१०) "स्टाक बाज़ार या सट्टा", श्रीयुत सियाराम दुबे बी० ए०-लिखित अर्थ-शास्त्र-संबंधी पुस्तक। मू० ॥=)

(११) "नोकझोंक", श्रीयुत जी० पी० श्रीवास्तव-लिखित। तृतीय बार। मू० १)

(१२) "देवी चौधरानी", श्रीयुत पं० जनार्दन झा द्वारा अनुवादित। मू० ॥)

(१३) "बाग़बान", श्रीयुत पं० गिरिधर शर्मा नवरत्न द्वारा श्रीरवींद्रनाथ टगोर के 'गार्डनर' का पद्यमय अनुवाद। मू० १)

(१४) "संसार के व्यवसाय का इतिहास", श्री-हरिहरनाथजी बी० ए०-कृत अनुवाद। मू० ॥=)

(१५) "मुद्राराक्षस", श्रीव्रजरत्नदास द्वारा संपादित। मू० १)

(१६) "सूर्योदय", श्रीपं० ईश्वरीप्रसाद शर्मा-लिखित सचित्र नाटक। मू० १), रेशमी जिल्द १॥)

(१७) "चिकित्सा-चंद्रोदय", श्रीयुत हरिदास वैद्य-लिखित पाँचवाँ भाग। मू० ३॥), सजिल्द ४)

विविध विषय

11|025

१. तब और अब

साठ-सत्तर साल पहले भी भारत में धन-धान्य भरा पड़ा था। लोग नीरोग थे, उनमें पुरुषार्थ था, उत्साह था, उमंग थी। अन्न, घी, दूध आदि आवश्यक वस्तुएँ आजकल की तरह महँगी और दुर्लभ नहीं थीं। चार-पाँच रुपए महीने का नौकर उतनी ही आय में परिवार-भर का भरण-पोषण करता था, ब्याह-शादी वग़ैरह करता था, त्योहार मनाता था और भले आदमी की तरह रहता था। इसका कारण यही था कि उस ज़माने के सरल जीवन में आज की-सी विलासिता नहीं थी, नित्य नई आवश्यकता नहीं निकलती रहती थीं, नए-नए अभावों की भरमार नहीं होती थी। उदाहरण के तौर पर उस समय पियरसोप, लवॅडर, तरह-तरह के ओटो, पमेटम आदि का ख़र्च न था। बेसन से सिर मल डाला, हाथ-मुँह धोकर सफ़ाई कर ली। बहुत हुआ, सुगंधित तेल सिर में डाल लिया। अमीर देशी इत्र का व्यवहार करते थे। इसी प्रकार समझ लीजिए कि हमारे जीवन का प्रत्येक अंग सरल था। हमारे पूर्वज चार आने-आठ आने देकर बाल नहीं कटाते थे, नित्य नाई नहीं बुलाते थे। उनके कपड़ों की काट-छाँट और सिलाई का ख़र्च गिन्नियों में नहीं गिना जाता था। वे अच्छा अन्न, व्यंजन और घी, दूध आदि पौष्टिक पदार्थ खाते, देश के बने मज़बूत और साफ़ कपड़े पहनते, और बेफ़िक्र रहकर आनंद से जीवन के दिन बिताते थे। आज की-सी हाय-हाय, लायँ-लायँ, कायँ-कायँ उस ज़माने में नहीं थी। देश के व्यापार, शिल्प, कला-कौशल और खेती का काम मज़े में चल रहा था—विदेशी मुसलमान शासक हमारे व्यापार आदि के पृष्ठ-पोषक ही थे। देश का धन भी देश ही में रहता था। आजकल की तरह रेलें और जहाज़ वग़ैरह हमारे मुँह का कौर छीनकर देश के बाहर नहीं पहुँचाते थे, और न विदेशों की बनी फ़ालतू अनावश्यक भड़कीली चीज़ें यहाँ लाकर हमारी गाढ़ी कमाई का धन और अन्न अन्यत्र ले जाते थे। देश की उपज देश ही में खपती थी। इसी कारण तब न इतनी बेकारी थी, न इतनी ग़रीबी थी, न ऐसी महँगी थी, न इतनी ज़रूरतें थीं, न इतना अभाव था, और न हमारी ऐसी शोचनीय दशा थी।

और अब? अब हमारा क्या हाल है, यह किसी से छिपा नहीं। भारत में बूढ़े से लेकर बच्चा तक वर्तमान 'उन्नति' का कच्चा चिट्ठा और सच्चा रूप जान चुका है। भारत की उन्नति यदि कुछ हुई भी हो, तो इसमें संदेह नहीं कि वह हमें बहुत महँगी पड़ी है। कहा जाता है कि तार,

रेल, ट्राम, मोटर, डॉक्टरी-चिकित्सा, न्यायालय आदि से भारत की उन्नति का पता लगता है। मगर इस उन्नति के साथ जो कुछ अवनति हुई है, इन सुविधाओं ने जो कुछ असुविधा पैदा कर दी है, उसे भी तो देखिए। रेल ने हमें अपाहिज बना दिया है, आज एक अदना कंगाल भी दो-चार कोस तक की यात्रा पैदल नहीं करता, रेल ही पर जाता है। रेल ही अन्न आदि की गरानी का अन्यतम कारण है। ऐसी ही अन्य सब बातें हैं। अदालत की लत देश का कैसा सर्वनाश कर रही है, यह समझाने के लिये बहुत अधिक समय और स्थान चाहिए। अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं है, भारत के प्रत्येक प्रांत में भ्रमण कर आइए, आप कहीं की स्थिति संतोषजनक नहीं पा सकते। देश के कोने-कोने में दरिद्रता का दौरदौरा है, बेकारी बढ़ती जा रही है, अकाल और महामारी का अधिकार अधिकाधिक दृष्टि-गोचर होता है। प्रत्येक समाज और जाति में वैर-विरोध का विकार, वैमनस्य का विस्तार और बुरे व्यसनों का प्रचार ज़ोर पकड़ता जाता है। परस्पर सहानुभूति उठती जा रही है, संपन्न लोग विपन्न की सहायता नहीं करते। विलासिता के आडंबर की विडंबना जीवन के सुख और शांति को मिटा रही है। ज़रूरतें ज़रूरत से ज़्यादह बढ़ती जाती हैं। अभाव ने मनुष्य-हृदय के सभी सद्भाव धीरे-धीरे नष्ट कर डाले हैं। तुच्छ व्यक्तिगत स्वार्थ ने हमें ऐसा अंधा बना दिया है कि हम अपने हाथ से अपने गले पर छुरी फेरने में नहीं हिचकते। कैसा घोर पतन है! यह पतन की परा काष्ठा है! यदि हम अपने जीवन का आडंबर छोड़कर विलासिता की विडंबना से बचने की चेष्टा नहीं करेंगे, सरल जीवन बिताकर, मोटा अन्न खाकर, मोटे कपड़े पहनकर अपने दिन-दिन बढ़ रहे व्यय की मात्रा नहीं घटावेंगे, दिखावे की तड़क-भड़क के साथ बाहर बाबू बनकर निकलना बंद न करेंगे, क़र्ज़ लेकर अमीरी ठाट की ठसक को ठुकरा न देंगे, तो इसमें संदेह नहीं कि हमारा विनाश निश्चित है।

× × ×

२. दलबंदी की दलदल

देश में दिन-दिन नए-नए दल बनते चले जा रहे हैं। क्या राजनीति, क्या समाज, क्या धर्म, क्या साहित्य, प्रत्येक क्षेत्र में काम करनेवाले दलबंदी की दलदल में आकंठ मग्न होते जा रहे हैं। इसमें संदेह नहीं कि मतभेद होना स्वाभाविक है। प्रत्येक कार्य की सिद्धि के साधन प्रकार-भेद से अनेक हो सकते हैं। प्रत्येक देश में, प्रत्येक समाज में, प्रत्येक जाति में राजनीतिकों, देशहितैषियों, समाजसुधारकों अथवा साहित्यिकों और धार्मिकों के भिन्न-भिन्न दल देखे जाते हैं। किंतु उन सब भिन्न-भिन्न दलों का लक्ष्य एक ही होता है, कार्य-प्रणाली केवल भिन्न हुआ करती है। विलायत के ही लिबरल कंज़र्वेटिव, लेबर, इंडिपेंडेंट आदि भिन्न-भिन्न दलों को ले लीजिए। किसी का मत किसी से नहीं मिलता। परंतु महायुद्ध के समय सब विरोध छोड़कर देश की रक्षा में एकमत हो गए थे; अथवा भारत के संबंध में सभी की एक ही नीति देख पड़ती है। किंतु हमारे दलपतियों की लीला ही न्यारी है। यहाँ अपनी प्रधानता बनाए रखने के लिये दलों की सृष्टि की जाती है। यहाँ के दलों के नेता अपनी टेक रखने के लिये, व्यक्तिगत मान, शान या स्वार्थ की रक्षा के लिये देश के गले पर छुरी चलाने में भी नहीं हिचकते। यहाँ जो नित्य नए दल बनते हैं, वे कार्यकर्ताओं में परस्पर द्वेष, वैमनस्य और दुर्भाव बढ़ाते हैं। दलबंदी की दलदल में फँसे हुए सुयोग्य समर्थ सज्जन भी देश, समाज, जाति, धर्म या साहित्य को लाभ की अपेक्षा हानि ही पहुँचाते हैं। इसी से देश में दिन-दिन बढ़ रही इस दलबंदी और उससे उत्पन्न हो रहे दुर्भाव को देखकर प्रत्येक सच्चे देशसेवक का दिल दुख रहा है। इस दलबंदी की दलदल में पड़े हुए देश की दशा इस समय बड़ी शोचनीय हो रही है। देखें, कब इसका अंत होता है।

× × ×

३. ग्राम-सुधार और संगठन

इसमें कोई संदेह नहीं कि जब तक हमारे ग्रामों का सुधार और ग्रामवासियों का संगठन अच्छी तरह नहीं किया जायगा, तब तक भारत के उद्धार की समस्या सहज न होगी। देश के नेताओं का ध्यान ग्रामों और ग्राम-वासियों की ओर गया है, यह हर्ष की बात है। ग्रामों के सुधार और संगठन के लिये बंगाल के देशबंधु दास महाशय उद्योग करनेवाले हैं, यह हमारे पाठकों को मालूम होगा। कवींद्र रवींद्रनाथ ठाकुर अपनी शांति-निकेतन नाम की संस्था के कार्यकर्ताओं की सहायता से इस कार्य

Compiled
1999-2000

111024